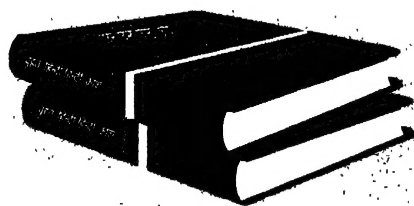
वृहत
हिन्दी-हिन्दी कोश



वृजेन्द्र चतुर्वेदी

अनिल चतुर्वेदी

सहयोग : डॉ. बी. एल. अवस्थी

वृहत हिन्दी-हिन्दी कोश

(भाग-2)

वृहत हिन्दी-हिन्दी कोश

(भाग-2)

वृजेन्द्र चतुर्वेदी
अनिल चतुर्वेदी

परामर्शदाता
डॉ. बी. एल. अवस्थी

बुक्स एन' बुक्स
दिल्ली-110009

प्रकाशक : बुक्स एन' बुक्स
131, मुकर्जी नगर (वैस्ट)
दिल्ली-110009

शब्द-संयोजक : प्रतिभा प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण : अदिति

मुद्रक : बी. के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

धुँधेला–वि. (दे.) छली, हठी, दुराग्रही, धूर्त्त, ठग, धुँधला।
धुअ-धुव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ध्रुव*) ध्रुवतारा, ध्रुव। वि. (दे.) अटल, स्थिर।
धुआँ–संज्ञा, पु. दे.(सं. धूम्र) धुआँ, धूम। **(मुँह) धुआँ होना**–लज्जा, भय से मुँह का रंग स्याह या मैला पड़ना। **मु. धुएँ का धौरहरा (पड़ना)**–थोड़ी देर में नष्ट होने वाली वस्तु। **धुएँ के बादल उड़ना**–बड़ी भारी गप हाँकना। **धुआँ निकालना या काढ़ना**–बढ़ बढ़ कर बातें मारना। भारी समूह।
धुआँकश–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *धुआँ+ फा. कश*) अग्निबोट, स्टीमर, रोशनदान।
धुआँधार–वि. दे. यौ. (हि. *धुआँ+ धार*) धुएँ से भरा, काला, प्रचंड, घोर। क्रि. वि. (दि.) बहुत ज्यादा या बड़े जोर का।
धुआँना–क्रि. अ. दे. (हि. *धुआँ+ ना प्रत्य.*) अधिक धुएँ से किसी वस्तु का स्वाद, रंग या गंध का बिगड़ जाना।
धुआँयँध-धुआँइँध–वि. दे. (हि. धुआँ+गंध) धुएँ के तुल्य महकने वाला। संज्ञा, स्त्री. (दि.) अजीर्णता या अनपच से आने वाली डकार।
धुआँस–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धुवाँस*) उरद की धोई हुई दाल या आटा।
धुक–संज्ञा, पु. (दे.) कलावतून बटने की सलाई।
धुक्कड़-पुक्कड़, धुकुर-पुकुर–संज्ञा, पु. दे.(अनु.) भयादि से होने वाली घबराहट, आगापीछा, मन की अस्थिरता। स्त्री. **धुकपुकी** (दे.)
धुकड़ी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) तोड़ा, थैली, रुपये रखने की थैली, बसनी।
धुकधुकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*अनु. धुकधुक से*) छाती और पेट के मध्य का गढ़ा, कलेजे की धड़कन, कंप, भय, डर, एक गहना। **"सुरगन सभय धुकधुकी धरकी"**–रामा.।
धुकना–क्रि. अ. दे. (हि. *झुकना*) झुकना, लचना, नवना।
धुकनी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *धौंकनी*) धौंकनी, धूनी।
धुकान†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धमकाना*) गरजन, दहाड़ना, घोर शब्द, गड़गड़ाहट।
धुकाना–क्रि. स. दे. (हि. *धुकना*) नवाना, झुकाना, जचाना, गिराना, पटकना, ढकेलना, पछाड़ना। कि. स. दे. (सं. धूम+करना) धूनी देना।
धुकार-धुकारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*धु से अनु.*) नगाड़ा बजाने का शब्द।
धुक्काना–क्रि. अ. दे. (हि. *झुकना*) झुकना, लचना, लचकना, नवना, टूट पड़ना।
धुक्कारना–क्रि. स. (हि. *धुकाना*) लचाना, झुकाना, नवाना, गिराना, पटकना, ढकेलना, पछाड़ना।
धुज-धुजा-धुजी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ध्वजा*) पताका, झंडा।
धुजिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ध्वजा*) चमू, सेना, अनीकिनी, अनी।
धुड़ंगा, धुरंगा*†–वि. दे. (हि. *धूर+ अंगी*) जिसके शरीर पर वस्त्र न हो केवल धूल ही लिपटी हो। यौ. **रंगा-धड़ंगा**।
धुतकार–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *दुतकार*) दुतकार, फटकार, अनादर से हटाने का शब्द।
धुतकारना–कि. स. दे. (हि. *दुतकारना*) दुतकारना, ललकारना।
धुताई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *धूर्त्तता*) छल, धूर्त्तता, पाखंड, कपट, **धूर्तताई** (दे.)।
धुधुकार–संज्ञा, स्त्री. दे. (*धुधु से अनु.*) गरज, घोर शब्द, दहाड़।
धुन–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धुनना*) किसी काम में लगे रहने का स्वभाव, प्रवृत्ति, लगन। यौ. **धुन का पक्का (पूरा)**–जो कार्य को पूर्ण किए बिना न छोड़े। मन की इच्छा या उमंग, मौज, सोच-विचार। **मु. धुन बाँधना (लगाना)**–रटन लगाना। संज्ञा, स्त्री. (सं. *ध्वनि*) ध्वनि, धुनि, गाने का ढंग या तर्ज।
धुनकना–क्रि. स. दे. (हि. *धुनना*) रुई धुनना। प्रे. रूप–**धुनकाना, धुनकधाना।**
धुनकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *धनुष*) धनुही धुनने का धन्वाकार यन्त्र।
धुनना–क्रि. सं. दे. (हि. *धुनकी*) रुई बेहगना, मारना, पीटना, बारम्बार कूटना, कोई कार्य लगातार करना।
धुनवाना, धुनाना–क्रि. स. दे. (हि. धुनना का प्रे. रूप) रुई धुनने का कार्य दूसरे से करवाना।
धुनि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ध्वनि*) शब्द, आवाज, गाने का ढंग।
धुनियाँ–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धुनना*) रुई धुनने वाला, बेहना, धुना (दे.)।
धुनिहाव–संज्ञा, पु. (दे.) शरीर या हड्डी की पीढ़ा, हड़ फूटन,

धुनि लगाना।

धुनी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *ध्वनि*) **नदी सरिता।**

धुनीनाथ–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *ध्वनीनाथ*) **समुद्र, सागर।**

धुपना–क्रि. अ. दे. (हि. *धुलना*) धुलाना, धोया जाना।

धुपाना–क्रि. स. दे. (सं. *धूप*) धूप दिखाना, धूप के धुएँ से सुवासित करना।

धुपेली–संज्ञा, स्त्री. (सं. *धूप*) जन्हौरी, गरमी के दिनों में शरीर पर निकले हुए छोटे छोटे दाने। दि. (दे.) धूप के रंग की, पीत।

धुधला–संज्ञा, पु. (दे.) लहँगा, घाँधरा।

धुमला-धुमारा-धुमिला-धुमैला–वि. (सं. धूम+पैला प्रत्य.) धुएँ के रंग का मटमैला, धूमिल, धूमिला।

धुमलाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धूमिल+आई प्रत्य.*) सी मलिनता।

धुरंधर–वि. (सं.) किसी वस्तु की धुरी या धारण करने या बोझा उठाने वाला, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम।

धुर–संज्ञा, पु. (सं. *धुर*) रथ, गाड़ी, बग्घी आदि की धुरी जिसमें पहिए लगाए जाते हैं, धुरा, धुरी, अच, भार, बोझा, आरम्भ, विश्वासी, ठीक, मुख्य, जैसे–धुर पूर्व। अव्य. (सं. धुर) सचांग ठीक, सीधे सटीक, एकदम या एकबारगी, दूर। **मु. धुरसिर से**–बिल्कुल शुरू से। वि. दे. (सं. ध्रुव) दृढ़, स्थिर, अटल। **धुर से धुर तक**–आदि से अंत तक, इस सिरे से उस सिरे तक। यौ. **धुराधुर**–सीधे, बराबर, जैसे–वे धुराधुर चले गए। **धुरकट**–जेह में दिया गया पेशगी लगान। दे. यौ. **धुरचट**–लगातार।

धुरजटी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *धूर्जटी*) शिवजी, महादेव जी, जिनके शरीर में धूलि जड़ी या लगी है, **धूरजटी।**

धुरना–क्रि. स. (सं. *धूर्वण*) मारना, कूटना, पीटना, बजाना, किसी पदार्थ पर कोई चूर्ण छिड़कना, माड़े हुए अन्न को फिर से माड़ना।

धुरपद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ध्रुपद*) एक गाना, **ध्रुवद-ध्रुवपद** (संगी.)।

धुरषा–संज्ञा, पु. (दे.) मेघ, बादल।

धुरव्य–संज्ञा, पु. (दे.) मेघ, बादल।

धुस्सा–संज्ञा, पु. (हि. *धुस्सा*) एक ऊनी वस्त्र, भुस्सा।

धुरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *धुर*) **धुर।** (संज्ञा, की, अल्पा.) **धुरी**–धुरी अक्ष।

धुरियाना–क्रि. स. दे. (हि. *धूर*) किसी वस्तु पर धूल या मिट्टी डालना, किसी बुराई या ऐब को युक्ति से छिपाना। क्रि. अ. (दे.) किसी पदार्थ का धूलि से ढँक था छिप जाना, बुराई या ऐब का दबाया जाता।

धुरिया मलार–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) एक राग, मदार (संगी.)।

धुरी–संज्ञा, स्त्री. दे.(सं. *धुर हि. धुरा*) अक्ष, छोटा धुरा।

धुरीण, धुरीन (दे.) वि. (सं.) किसी पदार्थ का धुरा या बोझा धारण करने या सँभालने वाला, मुख्य, श्रेष्ठ प्रधान, धुरंधर।

धुरंडी-धुर्लेंडी-धुरेहंडी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *धूलि उड़ाना*) चैत बदी प्रतिपदा को मनाया जाने वाला हिन्दुओं का त्योहार, मदनोत्सव, होली, **धुरेटी, धुरेहटी** (प्रांती.)।

धुरेटना–क्रि. स. दे. (हि. *धुर+पटना प्रत्य.*) धूलि से लपेटना, धूलि लगाना।

धुर्य–वि. (सं.) धुरंधर, धुरीण, बोझा उठाने या धारण करने वाला, भारवाही। संज्ञा, पु. (सं.) ऋषभ नामी औषधि, वृषभ, बैल, प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य, मुखिया, अगुआ।

धुर्रा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धूर*) कण, अणु, परमाणु, भुथा, एक उद्दंड व गँवार व्यक्ति (ब्रज.)। **मु. धुर्रे उड़ाना (उड़ना)**–किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे भाग कर डालना, छिन्न मिन्न या नष्ट-भ्रष्ट कर डालना, बहुत पीटना या मारना।

धुलना–क्रि. अ. (हि. *धोना का अ. रूप*) धोया या साफ किया जाना।

धुलवाना–क्रि. स. दे. (हि. *धुलाना*) धुलाना, धोने का कार्य दूसरे से कराया।

धुलाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धोना*) धोने का भाव या कार्य, धोने की मजदूरी। वि. **धुला, धुली।** यौ. **धुला-धुलाया।**

धुलाना–क्रि. स. दे. (सं. *धवल*) धोने का कार्य दूसरे से कराना, धुलवाना।

धुव*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ध्रुव*) ध्रुवतारा, वि. दे. अटल, स्थिर, दृढ़ ध्रुव।

धुवाँ–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धुआँ*) धुआँ। क्रि. अ. (दे.) **धुर्वाना**–धुएँ से काला होना।

धुवाँस–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धूर+माप आ. धूमसी*) धुऔंस (दे.) उरद का आटा।

धुवाना*–कि. स. दे. (हि. *धुलाना*) *धुलाना,* ***धोवाना।***

धुस्स–संज्ञा, पु. दे. (स. *ध्वंस*) मट्टी आदि का ऊँचा ढेर या टीला, धाँध।

धुस्सा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *द्विवश*) ऊनी वस्त्र (आढ़ने का)।

धूँध-धूँधर-धूँधुर–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धुंध*) धुंध, अँधेरा, धुँधला।

धू–वि. दे. (सं. *ध्रुव*) अचल, अटल, स्थिर।

धूआँ–संज्ञा, पु. (सं. *धूम*) धूम।

धूआँधार–संज्ञा, पु. (दि.) बहुत धुआँ। वि. बे शुमार, अपार, बे सँभाल।

धूई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धूनी*) धूनी।

धूर्जटी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *धूर्जटि*) शिव, **धूजटी** (आ.), **धूरजटी** (दे.)

धूत–दि. (सं.) हिलता या काँपता हुआ, थरथराता हुआ, धमकाया या फटकारा या डाँटा गया, त्यक्त, छोड़ा हुआ। वि. दे. (सं. *धूर्त*) छली, ठग, धूर्त्त। संज्ञा, स्त्री. धूर्तता।

धूतना–क्रि. स. दे. (सं. *धूर्त*) ठगना, धोखा देना, छलना।

धूतपापा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) काशी की एक नदी।

धूती–संज्ञा, स्त्री. संज्ञा. एक पक्षी।

धूधू–संज्ञा, पु. दे. (अनु.) अग्नि के जोर से जलने या दहकने का शब्द।

धूनना–क्रि. स. दे. (हि. *धूनी*) धूनी देना। क्रि. स. (दे.) धुनना।

धूना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धूनी*) एक पेड़, आग में जलाने का एक सुगंधित पदार्थ, **कोलतार** (दे.)

धूनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि.) धूप, धुई। **मु. धूनी देना**–सुगंधित धुआँ उड़ाना या लगाना। साधुओं के तापने की अंगीठी। **मु. धुनी रमाना**–साधुओं सा आग सुलगा कर बैठना। **धूनी लगाना या जलाना**–अँगीठी जलाना, विरक्त होना।

धूप–संज्ञा, पु. (सं.) संगंधियुक्त धुआँ, कई पदार्थों से बना हवन का पदार्थ, सूर्य का प्रकाश और ताप, धाम। **मु. धूप खाना (लेना)**–धूप में बैठना या खड़ा होना। धूप **चढ़ना या निकलना**–दिन चढ़ना। **धूप दिखाना**–धूप में रखना, धूप लगने देना। **धूप में बाल या चूँड़ा सफेद करना**–अनुभव प्राप्त किए बिना बहुत काल व्यर्थ बिता देना।

धूपघड़ी–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि. *धूप+घड़ी*) धूप-द्वारा समय-सूचक यंत्र।

धूपछाँह–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि. *धूप+छाँह*) एक ही जगह बारी बारी से दो रंग दिखलाई देने वाला लाल-हरा कपड़ा।

धूपदान–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *धूप+आधान*) धूप जलाने की डिबिया या पात्र, अगियारी। स्त्री. **धूपदानी।**

धूपना–क्रि. अ. दे. (सं. धूपन) धूप देना, सुगंधित पदार्थ जलाना। क्रि. वि. (दे.) सुगंधित वस्तु जला कर धुआँ पहुँचाना, सुगंधित धुएँ में बसाना या सुगंधित करना. क्रि. स. दे. (सं. धूपन=धांत होना) दौड़ना, हैरान होना, जैसे–दौड़ना-धूपना। **धूपबत्ती**–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि. धूप+बत्ती) सुगंधित पदार्थ लगी सींक या बत्ती जिसके जलाने से सुगंधित धुआँ फैलता है, **अगरबत्ती।**

धूम–संज्ञा, पु. (सं.) धुआँ, अनपच डकार, धूमकेतु, उल्कापात। संज्ञा. स्त्री (धूम=धुआँ) जन-समूह के शोर-गुल मचने का ढंग, रेख-पेल, हलचल, उपद्रव, आन्दोलन, उत्पात, ऊधम। **मु. धूम डालना (मचाना)**–उपद्रव या ऊधम करना। ठाट-बाट, कोलाहल, भारी आयोजन, प्रसिद्धि, ख्याति।

धूमकधैया, धम्मकधैया–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धूम*) उछल-कूद, उत्पात, ऊधम, हल्ला-गुल्ला।

धूमकेतु–संज्ञा, पु. (सं.) आग, अग्नि, केतुग्रह, पुच्छलतारा, शिवजी।

धूम-धड़क्का (धड़ाका)–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *धूमधाम*) धूम-धाम, ठाट-बाट, भारी तैयारी, समारोह, आयोजन।

धूमधाम–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धूम+धाम अनु.*) ठाट-बाट, समारोह, भारी तैयारी।

धूम्रपान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गाँजा, तम्बाकू आदि का धुँआ लेना, किसी औषाधे का धुआँ लेना, धूम्रपान।

धूमपोत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अग्नि-बोट, स्टीमर, वाष्प-शक्ति-संचालित नौका।

धूमर–वि. दे. (सं. *धूमल*) मलीन, मलिन, धुएँ के रंग का।

धूमल, धूमला-धूमिला–वि. दे. (सं. *धूमल*) मलीन, मैला, मटमैला, धुएँ के रंग का।

धूमावती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक देवी।

धूमिल, धूमिला–वि. दे. (सं. *धूमल*) दे. मैला, धुएँ के रंग का।

धूम्र–वि. (सं.) धुएँ के रंग का। संज्ञा, पु. (सं.) लाल-काला

मिला हुआ रंग, शिलाजीत (औष.) एक दैत्य, शिव, भेंढ़ा।

धूम्रपर्ण–वि. यौ. (सं.) धुएँ के रंग का।

धूर-धूरि–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धूल*) धूलि, धूल।

धूरजटी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *धूर्जटि*) शिव जी, धूर्जटी।

धूरधान–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि. *धूर+ धान*) धूलि की राशि, गर्द का ढेर या टीला, विनाश, ध्वंस, बंदूक। स्त्री. **धूर-धानी।**

धूरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धूर*) धूलि, धूल, चूर्ण, चुकनी। **मु. धुरा करना या देना**–शरीर में कोई रोग होने पर सोंठ आदि का चूर्ण मलना।

धूरि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *धूलि*) धूल, धूलि, धूली।

धूर्जटि–संज्ञा, पु. (सं.) शिव, धूर्जटी।

धूर्त–वि. (सं.) छली, ठग, चालबाज। संज्ञा, पु. (सं.) काव्य में शठ नायक का एक भेद, विट् लवण, लोहे का मैल, धतूरा।

धूर्त्तता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ठगी, चालाकी, **धूर्त्तताई** (दे.)।

धूल–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *धूलि*) मिट्टी, रेत आदि का बारीक चूर्ण, गर्द, रज, धूलि। **मु. कहीं धूल उड़ना**–बर्बादी होना, तबाही आना, सन्नाटा या उजाड़ होना। **किसी की धूल उड़ना (उड़ाना)**–भूलों और बुराइयों का सविस्तर वर्णन होना (करना), निंदा या उपहास होना (करना)। **धूल की रस्सी बटना**–अनहोनी बात के पीछे पड़ना, धूर्त्तता से कार्य सिद्ध करना। **धूल चाटना**–अति विनम्र विनती करना। **(आँखों में) धूल डालना** (झोंकना) देखते देखते धोखा देना, चुरा लेना, अंधेर करना। **किसी बात पर धूल डालना**–दबा देना, फैलने न देना, ध्यान न देना। **दर दर की धूल फाँकना (छानना)**–मारा मारा फिरना। **धूल में मिलना (मिलाना)**–नष्ट या चौपट होना (करना)। **पैर (जूतों) की धूल**–अति तुच्छ वस्तु, नाचीज। **सिर पर धूल डालना**–सिर धुनना, पछताना। **मु. धूल समझना**–अति तुच्छ जानना, किसी गिनती में न लाना, धूल सी तुच्छ वस्तु।

धूला–संज्ञा, पु. (दे.) भाग, टुकड़ा।

धूलि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गर्द, धूली, धूल। यौ. **धूली-लव।**

धूवाँ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *धूम*) धुआँ।

धूसना–क्रि. स. (दे.) अनादर करना, कोसना, गाली देना।

धूसर, धूसरा, धूसला–वि. दे. (दे. धुसर) मटमैला, खाकी, मटियारा, कुछ कुछ पांडु वर्ण-धूल भरा (लगा)। यौ. **धूल-धूसर**–धूल से भरा। वैश्यों की एक जाति, दूसर। यौ. **धम-धूसर**–मोटा-ताजा। **लो. ऋण की फिकिर न धन की चोट, ई धमधूसर काहे मोट।**

धूसरित–वि. (सं.) धूल से भरा।

धूहा–संज्ञा, पु. (दे.) धोखा, एक खेल का मध्य स्थान।

धृक-धृग–अव्य दे. (सं. *धिक्-धिग्*) अनादर या अपमान-सूचक शब्द, धिक।

धृत–वि. (सं.) धरा या धारण किया हुआ, स्थिर किया हुआ।

धृतराष्ट्र–संज्ञा, पु. (सं.) एक जन्मांध राजा जो दुर्योधन के पिता और युधिष्ठिर के ताऊ थे। अच्छे राजा से शासित देश, दृढ़ राज्य का राजा। वि. अंधा (व्यंग)।

धृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धारण, ठहराव, धैर्य, धर्म की स्त्री, एक छंद (वि.)।

धृतिमान–संज्ञा, पु. (सं.) स्थिर चित्त, धैर्य्यावलंबी, धीर-गंभीर। स्त्री. धृतिमती।

धृष्ट–वि. (सं.) निर्लज्ज, ढीठ, उद्धत, एक नायक विशेष। स्त्री. धृष्टा।

धृष्टकेतु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिशुपाल का पुत्र जो पांडवों की ओर से महाभारत में लड़ा था।

धृष्टु–वि. (सं.) प्रगल्भ, निर्लज्ज।

धृष्टता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ढिठाई।

धृष्टद्युम्न–संज्ञा, पु. (सं.) महाभारत में राजा द्रुपद का पुत्र।

धृष्य–वि. (सं.) घिसने योग्य, घर्षणीय।

धेंगामुष्टि, धींगामुस्ती–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मुक्कामुक्की, घुस्सघुस्सा। कि. वि. जबरदस्ती।

धेन–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *धेनु*) गाय।

धेनु–संज्ञा, स्त्री (सं.) हाल की ब्याई गाय।

धेनुक–संज्ञा, पु. (सं.) एक दैत्य जिसे बलदेव जी ने मारा था। यौ. **धेनुकासुर।**

धेनुमती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गोमती नदी।

धेय–दि. (सं.) धार्य्य, धारण करने के योग्य, पालन-पोषण करने योग्य।

धेर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) अनार्य्य या नीच जाति।

धेलचा, धेला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *अधेला*) आधा पैसा। स्त्री॰ धेलही पु॰ अधेला (आ॰)।

धेली–संज्ञा, स्त्री दे॰ (हि॰ *अधेला*) अठन्नी। **अधेली** (आ॰) यौ॰ **धेली-रुपया।**

धैताल–दि॰ दे॰ (अनु॰ *धै+ताल हि॰*) चंचल, उद्धत, चपल।

धैर्य्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) धीरज, सब्र, कुसमय में भी मन की स्थिरता, अनातुरता, अनुद्वेग।

धैवत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक स्वर (संगी॰) ('ध')।

धोंकना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰) आग जलाने के लिए धौंकनी से हवा देना। कि॰ अ॰ (दे॰) काँपना।

धोंधा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ढुंढि=गणेश*) लोंदा, भद्दा या बेडौल पिंड। **मु॰ मिट्टी का धोंधा**–मूर्ख, अनारी, सुस्त, निकम्मा।

धोई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ धोना) छिलका निकाली मूँग या उड़द की दाल। संज्ञा, पु॰ (हि॰ धवई) राजगीर, थपई (प्रान्ती॰)। क्रि॰ वि॰ स्त्री॰ (दे॰ कि॰ धोना) धुली हुई।

धोकड़–वि॰ (दे॰) मुस्टंड, हृष्टपुष्ट, हट्टा-कट्टा, दधी, धनी, **धाकड़** (आ॰)।

धोका, धोखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *धूकता*) छल, भुलावा, चालाकी, धूर्तता, भूल, भ्रान्ति, ध्वाखा (आ॰)। यौ॰ **धोखाधड़ी। मु॰ धोखा खाना**–ठगा जाना, भ्रम में डालना। **धोखा देना**–छलना, भ्रम में डालना। **मु॰ धोखे की टट्टी**– शिकारियों का पर्दा, भ्रम में डालने वाला, दिखाऊ, सारहीन। **धोखा खड़ा करना या रचना**–धोखे या भ्रम में डालने के लिए आडंबर या झूठी नकल रचना। अज्ञानता, मूर्खता। **धोखे में या धोखे से**–भूल से, गल्ती से। हानि, जोखों। **मु॰ धोखा उठाना**–भ्रम में पड़कर हानि या कष्ट उठाना। संशय। **मु॰ धोखा पड़ना**–सोच-समझ से उलटा होना। भूल, चूक, प्रमाद। **मु॰ धोखा लगना (लगाना)**–कमी, त्रुटि या भूल होना (करना)। खेत में दिखावटी पुतला, खटखटा, धोखार (आ॰), बेसन का एक पकवान।

धोखेबाज–वि॰ (हि॰ *धोखा+फा॰ बाज*) धूर्त्त, छली, ठग, कपटी। संज्ञा, स्त्री॰ धोखेबाजी।

धोटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *ढोटा*) लड़का, पुत्र।

धोती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *अधोवस्त्र*) एक वस्त्र। **मु॰ धोती ढीली करना (होना)**–डर जाना, भयभीत होना, डर कर भागना। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ धोती) योग की एक क्रिया, धौति-क्रिया।

धोना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *धावन*) पखारन, साफ या शुद्ध करना। **मु॰ किसी वस्तु से हाथ धोना**–गँवा या खो देना, **हाथ धोकर पीछे पड़ना**–सब छोड़कर लग जाना, मिटाना, नष्ट या दूर करना, हटाना। **मु॰ धो बहाना**–न रहने देना। **धो जाना**–इज्जत बिगड़ना, प्रतिष्ठा या मर्यादा का नष्ट होना।

धोप–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) खड़ग, तलवार। क्रि॰ वि॰ (दे॰) झूठ, मिथ्या, धूप, धुप्प (दे॰) धुप्पल।

धोव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *धोवना*) धोये जाने का काम, धुलावट।

धोबिन–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *धोबी*) धोबी की स्त्री, पानी की चिड़िया, **धोबइनि** (आ॰)।

धोबी–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *धोवना*) रजक, कपड़े धोने वाला। स्त्री॰ **धोबिन। मु॰ धोबी का कुत्ता (न घर का न घाट का)**–व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला, निकम्मा।

धोम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *धूम्र*) धुआँ, धूम।

धोर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *धन=किनारा*) निकट, पास, किनारा। क्रि॰ वि॰ (दि॰) धोरे–निकट, पास।

धोरी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *धौरेय*) बोझा, भार या धुरा को उठाने सा धारण करने वाला। वि॰ प्रधान, मुखिया, श्रेष्ठ पुरुष, सरदार, अगुआ (आ॰)।

धोवनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *अधोवस्त्र*) धोती। क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ धोवना)।

धोवन-ध्वावन, धोडना (आ॰)–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ धोना) धोने का भाव, धोने की क्रिया, किसी पदार्थ के धोने से बचा पानी।

धोवना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *धोना*) धोना, पखारना, साफ करना।

धोवाव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *धोना*) धोवन, पानी, अर्क।

धोवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *धोना का प्रे॰ रूप*) धुलाना, धुखवाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) धुलना, धोया जाना।

धौं–अव्य॰ (हि॰ *दँव, दहुँ*) न जाने, ज्ञात या मालूम नहीं, राम जाने, अथवा, या तो, भला, क्योंकि, विधि वाक्यों में जोर देने वाला शब्द। यौ॰ **किधौं, कैधौं** (व॰)।

धौंक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *धौंकना*) धौंकनी की आग में

लगने वाली वायु का झोंका, लालू ताप, गरमी की लपट।

धौंकना–क्रि. स. दे. (सं. *धम=धौंकना*) धौंकनी को दबाकर आग जलाने को वायु का झोंका पहुँचाना, भार डालना, सहना, व्यायाम करना।

धौंकनी--संज्ञा, पु. दे. (हि. *धौंकना*) भाथी, (खाल आदि की) जिसमे वायु देकर आग जलाई जाती है।

धौंका–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धौकना*) लू, लपट, धौकने वाला।

धौंकिया–संज्ञा, पु. (हि. धौंकना) धोंकने या भावी चलाने वाला, टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत करने वाला।

धौंकी–संज्ञा, स्त्री दे. (हि. *धौंकना*) धोंकनी, भाथी।

धौंकैया–संज्ञा, पु. (हि. *धौंकना*) धौंकने वाला।

धौंज–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धौंकना*) दौड़धूप, घबराहट चित्त की उद्विग्नता।

धौंजन–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धौंजना*) दौड़धूप घबराहट चित्त की उद्विग्नता।

धौंजना--क्रि. स. दे. (स. *ध्वंजन*) दौड़ना-धूपना, कोशिश करना। क्रि. स. (दे.) पेरों से रोंदना।

धौंताल–वि. दे. (हि. *धुन+ ताल*) जिसे किसी बात की धुनि लग जाय, चुस्त, फुर्तीला, साहसी, दृढ़, हट्टा-कट्टा, हेकड़ (प्रान्ती.), चतुर, धनी, दुर्जन।

धौंताली–संज्ञा, स्त्री. (हि. *धौताल*) धनबल, दुर्जन, सूमपना।

धौंस–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *दंश*) घुड़की, धमकी, डाँट-डपट, धाक, अधिकार, आतंक, झाँसा-पट्टी, धोखा, भुलावा, छल।

धौंसना–क्रि. स. दे. (सं. *ध्वंसन*) दबाना, दमन करना, घुड़की या धमकी देना, डराना, मारना-पीटना।

धौंसपट्टी–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि *धोंस+ पट्टी*) झांसा-पट्टी, दमदिलासा, भुलावा।

धौंसा–संज्ञा, पु. (*धौसना*) नगाड़ा, डंका, सामर्थ्य।

धौंसिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धोंसना*) धौंस से कार्य सिद्ध करने वाला, झांसा-पट्टी देने या नगारा बजाने वाला।

धौं-धव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *धव*) एक जंगली पेड़, स्वामी, पति, मालिक। जैसे–**सधवा।**

धौत–वि. (सं.) धोया हुआ, साफ, स्नानयुक्त। संज्ञा, पु. (दे.) रूपा, चाँदी। विलो. **कलधौत–सोना।**

धौति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शुद्ध, साफ, शरीर-शुद्धि को योग-क्रिया, आँतें साफ करने की विधि, धौती (दे.)।

धौमक–संज्ञा, पु. (सं.) एक देश।

धौम्य–संज्ञा, पु. (सं.) पांडवों के पुरोहित, एक तारा।

धौर–संज्ञा, पु. (दे.) जंगली कबूतर।

धौरहर–संज्ञा, पु. दे.(हि. *धौराहर*) धरहरा, मीनार, बुर्ज, **धौरहरा।**

धौरा–वि. दे. (सं. *धवल*) उज्ज्वल, श्वेत, धौ का वृक्ष, एक पंडुक। स्त्री. **धौरी।**

धौराहर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धुर-ऊपर+ घर*) ऊँची अटारी, धरहरा, बुर्ज, मीनार।

धौरिया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *धौरेय*) बैल।

धौरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धौरा*) कपिता या सफेद रंग की गाय, एक पक्षी।

धौरे–क्रि. वि. दे. (हि. *धौरे*) धोरे, समीप।

धौल–संज्ञा, स्त्री. दे. (अनु.) थप्पड़, धप्पा, हानि, घटी। वि. (सं. धवल) उजला, श्वेत। **मु. धौल-धूर्त्त–गहरा,** धूर्त्त, धरहरा। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **धौलता।**

धौल जड़ना–क्रि. स. (हि.) मुक्का मारना, पीटना। **धौल मारना (देना लगाना)**–क्रि. स. (हि.) थप्पड़ मारना।

धौल लगना–क्रि. स. दे. यौ. (हि.) हानि या घटी सहना या उठाना, मनोरथ-भंग या हताश होना। यौ.–**धौलधक्का** (धप्पा) मार-पीट, आघात, चपेट।

धौलधप्पड़–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) धक्का-मुक्का, मार-पीट, उपद्रव, उत्पात।

धौलहर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *धौराहर*) मीनार, बुर्ज।

धौला–वि. दे. (सं. *धवल*) श्वेत, उजला, सफेद। स्त्री. **धौली।**

धौलाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *धौल+आई प्रत्य.*) उज्ज्वलता, सफेदी।

धौलागिरि–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि.) धवलगिरि, हिमालय की एक चोटी।

ध्यात–वि. (सं.) चिंतित, विचारित, ध्यान किया हुआ।

ध्यातव्य–वि. (सं.) ध्यान करने या देने योग्य, अति उपयोगी या प्रिय।

ध्याता–वि. (सं. *ध्यातृ*) ध्यान या विचार करने वाला। **स्त्री.** ध्यायी।

ध्यान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोच-विचार, चिंता, अनुसन्धान, ज्ञान, लौ, मानसिक, प्रत्यक्ष, योग का एक अंग। **मु॰ ध्यान में डूबना, लीन या मग्न होना**–सर झुकाकर एक ही बात में मन लगा देना। **ध्यान करना**–मन में खना, विचारना, स्मरण करना, भजना। **किसी के ध्यान में लगना**–किसी का ख्याल या विचार मन में लाकर मग्न होना। मनन, चिंतन, भावना, विचार। **मु॰ ध्यान आना**–विचार प्रकट होना, स्मरण आना। **ध्यान जमना**–विचार (मन) ठहर जाना। **ध्यान बँधना**–सदा विचार, बना रहना, मन लगना। **ध्यान रखना**–विचार या स्मरण बनाए रखना, न भूलना। **ध्यान में आना**–अनुमान या कल्पना में भी न आ सकना। **ध्यान लगना (लगाना)** बराबर लगातार ख्याल या विचार बना रहना (रखना)। मन, चित्त। **मु॰ ध्यान में न लाना**–चिंता, परवाह या विचार न करना। चेत, खयाल। **मु॰ ध्यान जमना**–मन या चित्त का एकाग्र होना। **ध्यान जाना**–मन का किसी ओर आकृष्ट हो जाना। **ध्यान दिलाना**–चेताना, सुझाना, जताना। ख्याल या स्मरण दिलाना। **ध्यान देना**–सोचना, विचारना, गौर करना, मन लगाना, **ध्यान पर चढ़ना, धँसना, बसना, पैठना, बैठना**–मन में बस जाना, दिल में घर कर लेना, जी से न टलना। **ध्यान बँटना**–चित्त का एकाग्र या स्थिर न रहना, विचार का इधर-उधर होना। **ध्यान बँधना (बाँधना)**–किसी ओर चित्त का एकाग्र या स्थिर होना (करना) **ध्यान लगना (लगाना)**–चित्त एकाग्र होना (करना)। समझ, बुद्धि, ज्ञान, धारणा, स्मरण। **मु॰ ध्यान आना**–याद या स्मरण होना। **ध्यान में आना**–अनुमान कर सकना, समझना। **ध्यान दिलाना (कराना)**–याद या स्मरण कराना। **ध्यान करना**–स्मरण करना, सोचना, मन में देखना। **ध्यान पर चढ़ना**–याद या स्मरण होना या आना। **ध्यान रखना**–स्मरण या याद रखना। **ध्यान से उतरना**–भूल जाना, भुला देना। **ध्यान छूटना (टूटना, उखड़ना, उचटना)** चित्त या मन का इधर-उधर हो जाना। **ध्यान धरना**–परमेश्वर की याद में चित्त एकाग्र करना।

ध्यानना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *ध्यान*) ध्यान या विचार करना।

ध्यान-योग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह योग जिसमें सब कर्मों में केवल ध्यान ही प्रधान या मुख्य अंग माना जाए।

ध्यान योग्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विचार ने के योग्य, समाधि-योग, ध्येय।

ध्याना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *ध्यान*) स्मरण या सुमिरन करना।

ध्यानी–वि॰ (सं॰ *ध्यानिन्*) स्मरण करने वाला, समाधि करने वाला, सुधि में मग्न होने वाला, ध्यान-युक्त।

ध्यानीय–वि॰ (सं॰) स्मरणीय, ध्यान करने के योग्य।

ध्यापक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिंतक, विचारक, ध्यान करने वाला, ध्याता।

ध्यावना–क्रि॰ स॰ (दे॰) ध्यान करना या लगाना, भजन करना।

ध्येय–वि॰ (सं॰) ध्यान या स्मरण करने के योग्य, जिसका ध यान किया जाए उद्देश्य, लक्ष्य।

ध्रुपद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ ध्रुवपद) एक प्रकार का गीत या गाना, **धुरपद** (दे॰)।

ध्रुव–(वि॰ सं॰) अचल, स्थिर, नित्य, निश्चित, पक्का, ठीक, दृढ़। संज्ञा, पु॰ आकाश, कील, पहाड़, खंभा, बरगद, धुपद, विष्णु, ध्रुवतारा, राजा उत्तानपाद के भगवद्‌युक्त पुत्र।

ध्रुवता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अटलता, दृढ़ता, स्थिरता, निश्चय।

ध्रुवतारा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ ध्रुव+तारक) वह तारा जो पृथ्वी की अक्ष के सिरे की सीध में उत्तर की ओर दिखलाई पड़ता है।

ध्रुव-दर्शक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुतुबनुमा, कंपास (अं॰) दिग्दर्शक यंत्र।

ध्रुव-दर्शन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विवाह की एक रीति जिसमें वर-कन्या को ध्रुव दिखलाया जाता है।

ध्रुवलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ध्रुव का स्थान।

ध्वंस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाश, विनाश।

ध्वंसक–वि॰ (सं॰) नाश या नष्ट करने वाला।

ध्वंसत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाश करने का कार्य, नाश होने का भाव, विनाश, क्षय। **ध्वंसित, ध्वंसनीय, ध्वस्त।**

ध्वंसी–वि॰ (सं॰ ध्वंसिन्) विनाशक, नष्ट-भ्रष्ट या नाश करने वाला। स्त्री॰ **ध्वंसिनी।**

ध्वज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पताका, झंडा, निशान।

ध्वजभंग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नपुंसकता का एक भेद।

ध्वजा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. ध्वज) झंडा, पताका, निशान, एक छंद (पिं.)।

ध्वजिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सेना, फौज।

ध्वजी–वि. (सं. ध्वजिन्) पताका या झंडा वाला, निशान या झंडेदार। स्त्री. **ध्वजिनी।**

ध्वनि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शब्द, धुनि (दे.) नाद, काव्य का एक अलंकार, आशय, मतलब, गूढ़ाशय।

ध्वनित–वि. (सं.) शब्दित, व्यंजित, वादित, गूढ़ाशय का होना।

ध्वन्य–संज्ञा, पु. (सं.) व्यंग्यार्थ।

ध्वन्यात्मक–वि. यौ. (सं.) ध्वनिमय, ध्वनिस्वरूप, व्यंग-प्रधान (काव्य)।

ध्वन्यार्थ–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *ध्वन्यार्थ*) ध्वनि या व्यंजना से प्रगट अर्थ।

ध्वस्त–वि. (सं.) गिरा-पड़ा, च्युत, टूटा-फूटा, भग्न, नष्ट-भ्रष्ट, पराजित।

ध्वांत–संज्ञा, पु. (सं.) अँधेरा, अंधकार। "ध्वान्तापहं तापहम्"–रामा.।

ध्वांतचर–संज्ञा, पु. (सं.) राक्षस, निशाचर।

न

न–हिंदी-संस्कृत की वर्णमाला के तवर्ग का पाँचवाँ अक्षर या वर्ण, इसका उच्चारण स्थान नासिका है।

न–संज्ञा, पु. (सं.) उपमा, सोना, रत्न। बुद्ध, धंध। (अन्य. दे.) नहीं, मत, निषेध-वाचक शब्द।

नग–संज्ञा, पु. (हि. *नंगा*) नंगापन, नग्नता, छिपा या गुप्त अंग। यौं **नंगनाच**–निर्लज्जता का काम।

नंग-धड़ंग–वि. यौ. दे. (हि. *नंगा+ धड़ंग—धड़+ अंग*) वस्त्र रहित, दिगंबर, निरा या बिलकुल नंगा। **नंगाधड़ंगा** (दे.)।

नंगमुनंगा–वि. यौ. (हि. *नंगा+ नंगा*) नंगधड़ंग, विवस्त्र, निरा नंगा।

नंगा–वि. दे. (सं. *नग्न*) वस्त्रहीन, दिगंबर। यौ. **अलिफ नंगा या नंगा मादरजाद**–बिलकुल नंगा, नंग धड़ंग, निर्लज्ज, पाजी, लुच्चा, खुला। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **नंगई।**

नंगा-झोली (झोरी)–संज्ञा, दे. यौ. (हि. *नंगा+झोरना*) कपड़ों की जाँच या तलाशी।

नंगा-बुखा-नंगा-लुचा–वि. दे. यौ. (हि. *नंगा+लुचा—खाली*) **महा दरिद्र, या कंगाल,** जिसके पास कुछ भी न हो निपट नंगा।

नंगालुच्चा–वि. दे. यौ. (हि. *नंगा+ लुच्चा*) दुष्ट पुरुष, बदमाश, नीच प्रकृति का।

नंगियाना–क्रि. स. (हि. *नंगा+ इयाना प्रत्य.*) नंगा करना, सब छीन लेना, शरीर पर वस्त्रादि कुछ भी न रहने देना, धोती या पैजामा छीन लेना, लँगोट या लंगोटी उतार लेना, निर्लज्जता या नीचता या असभ्यता करना।

नंगी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *नंगा*) विवस्त्रा स्त्री या दिगंबरा स्त्री, वस्त्र-हीना, निर्लज्जा, दुष्टा।

नंगेसिर–वि. यौ. (हि.) सिर खोले, विवस्त्र, सिर। **मु. नंगे नाचना**–निर्लज्जता का काम करना। यौ. नंगे पैर।

नंद–संज्ञा, पु. (सं.) हर्ष, प्रसन्न, आनंद, परमेश्वर, एक निधि, पुत्र, लड़का, श्रीकृष्ण के पालक, एक गोप, बुद्ध के सौतेले भाई, मगध का एक राजवंश (हवि), की संख्या।

नंदक–संज्ञा, पु. (सं.) श्री कृष्ण जी की तलवार। वि. आनंददायक, कुल या वंश का पालक, संतोषप्रद।

नंदकिशोर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्री कृष्ण जी।

नंदकी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विष्णु भगवान।

नंदकुमार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्री कृष्ण, एक बंगाली ब्राह्मण, जो लार्ड क्राइव के मुंशी थे, जिन्हें लार्ड वारिनहेस्टिंग्ज ने फाँसी दिला दी थी (इति.)।

नंदगाँव–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *नंदग्राम*) वृन्दावन के पास एक

गाँव है जहाँ नंद जी रहते थे।

नंदग्राम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नंदगाँव, नंदिग्राम जो अयोध्या के पास है जहाँ भरत जी ने तप किया था।

नंद-नंदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण।

नंद नंदिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) योग-माया, देवी।

नंदन–संज्ञा, पु. (सं.) इन्द्र की पुष्प-वाटिका, देवोपवन, एक विप, शिव, विष्णु, लड़का, पुत्र, एक हथियार, बादल, एक छंद (पि.)। वि. प्रसन्न या हर्षित करने वाला, आनंददायक।

नंदन वन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इन्द्र की पुष्प-वाटिका।

नंदना–क्रि. स. अ. दे. (सं. नंद) प्रसन होना या करना। संज्ञा, स्त्री. (सं. *नंद-बेटा*) बेटी, पुत्री, कन्या।

नंदनी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *नंदिनी*) कन्या, लड़की, पुत्री।

नंदरानी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *नंद+हि. रानी*) नंद की पुत्री, यशोदा।

नंदलाल–संज्ञा. पु. यौ. (सं. *नंद+हि. लाल–पुत्र*) नंद के पुत्र श्रीकृष्ण जी।

नंदवा–संज्ञा, पु. (दे.) मिट्टी का एक पात्र।

नंदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दुर्गा, गौरी, देवी, एक तरह की कामधेनु, बालग्रह, संपत्ति, ननँद, प्रसन्नता। वि. (सं.) आनंद देने वाली, शुभदा।

नंदि–संज्ञा, पु. (सं.) आनन्द, आनन्दमय, परमेश्वर, शिव का बैल नंदी, नाँदिया (दे.)। यौ. **नंदीश्वर**।

नंदिकेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिव जी का बैल, नंदी, एक पुराण।

नंदिघोष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अर्जुन का रथ, वंदिजनों की घोषणा।

नंदित–वि. (सं.) सुखी, प्रसन्न, आनंदित। वि. (हि. नादना) बाजता हुआ।

नंदिन–संज्ञा, स्त्री. (सं. *नंद-बेटा*) बेटी।

नंदिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लड़की, बेटी, रेणुक नामक औषधि, उमा, गंगा, ननँद, दुर्गा, एक छंद (वि.), कलहंस, सिंहनाद, वशिष्ठ की कामधेनु, पत्नी।

नंदिवर्द्धन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिव जी, पुत्र, लड़का, बेटा, प्राचीन विमान। वि. (सं.) आनन्द बढ़ाने वाला।

नंदी–संज्ञा, पु. (सं. *नंदिन्*) धव, बरगद, शिव-गण, बैल, साँड़, विष्णु। वि. (सं.) आनंदयुक्त, प्रसन्न।

नंदीगण–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *नंदी+गण*) शिव के द्वारपाल, शिव का बैल, साँड़।

नंदीमुख–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *नांदीमुख*) जात-कर्म, श्राद्ध विशेष।

नंदीश्वर–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं.) शिव जी का एक गण।

नंदेऊ–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नंदोई*) नंदोई, स्वामी का बहनोई, ननद का पति।

नंदोई–संज्ञा, पु. दे. (हि. *ननद+ओई प्रत्य.*) पति का बहनोई, ननद का स्वामी।

नंबर–वि. (अं.) संख्या, गिनती। संज्ञा, पु. (अ.) गिनती, गणना, अंक, 36 इंच का गज। **लंबर**।

नंबरदार–संज्ञा, पु. (अ. *नंबर+दार फा.*) गाँव के पट्टीदारों का मुखिया, जमींदार, **लंबरदार** (दे.)। स्त्री. **नंबरदारिन**। संज्ञा, स्त्री **नंबरदारी**।

नंबरवार–क्रि. वि. (अ. *नंबर+फा. वार*) क्रमशः, सिलसिलेवार।

नंबरी–वि. (अ. *नंबर+ई प्रत्य.*) जिस वस्तु पर नंबर लगा हो, विख्यात, प्रसिद्ध, (दे. व्यंग्य) सब से बड़ा दुष्ट।

नंबरीगज–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) 36 इंच का गज जो वस्त्र मापने में काम आता है।

नंबरी सेर–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) 80 रुपए भर का लोहे का सेर।

नउँजी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लीची*) लीची फल।

नउ–वि. दे. (सं. *नव*) नव, नया, नूतन, नवीन। वि. (हि. नौ., सं. नव) एक कम दस, नव–9।

नउआ, नउवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नापित*) **नौवा**, नाई, नाऊ। स्त्री. नउनी, नउनिया।

नउका–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नौका*) नौका, नाव।

नउत, नौत–वि. दे. (हि. *नवना*) नीचे की ओर झुका हुआ, **नवत** (सं.)।

नउल–वि. दे. (सं. *नवल*) नया, नवीन।

नओद–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नवोढ़ा*) नवोढ़ा, सुवा या नवीन नायिका।

नककटा–वि. दे. यौ. (हि. *नाक+काटना*) कटी नाक वाला।

वि. जिसकी बदनामी, या दुर्दशा हुई, निर्लज्ज। स्त्री. नककटी।

नकघिसनी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *नाक+घिसना*) अत्यन्त दीनता, दुर्दशा, परेशानी, पृथ्वी पर अपनी नाक रगड़ने का कार्य।

नकचढ़ा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *नाक+चढ़ाना*) क्रोधी, चिड़चिड़ा। स्त्री **नकचढ़ी।**

नकछिकनी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *छिक्कनी*) एक घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती हैं।

नकटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नाक+कटना*) जिसकी नाक कट गई हो, स्त्रियों का ब्याह के समय का एक गीत। वि. जिसकी नाक कटी हो, निर्लज्ज। स्त्री. **नकटी।**

नकड़ा–संज्ञा, पु. (देश.) नाक का एक रोग, लकड़ा। स्त्री. **नकड़ी, नकरी-लकड़ी।**

नकतोड़ा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *नाक+तोड़=गति*) घमंड से नाक-भौं चढ़ाकर नखरे करना या कोई बात कहना।

नकद–संज्ञा, पु. (अ.) रुपया, पैसा। **लो.–नौ नकद न तेरह उधार।** वि. तैयार, वह धन जो तत्काल काम दे सके, खास, नगद (दे.)। (विलो.–उधार)

नकदी, नगदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *नकद*) नकद, नगद। यौ. **नकदा-नकदी।**

नकनकाना–क्रि. स. दे. (हि. *नाक*) नाक से बोलना, **नकनाना** (आ.)। वि. **नकना, नकनहा।**

नकना–क्रि. व. दे. (हि. *नाकना*) लाँघना, फाँदना, उल्लंघन करना। क्रि. अ. दे. (हि. *नकियाना*) नाकों दम होना, परेशान या हैरान होना। क्रि. स. (दे.) नाकों दम करना, नाक से बोलना।

नकन्याना–क्रि. अ. (दे.) नाकों दम होना, हैरान होना।

नकफूल–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि. *नाक+फूल*) नाक में पहनने का एक गहना, कील या लौंग।

नकव–संज्ञा, स्त्री. (अ.) सेंध, दीवाल में चोरों का बनाया छेद।

नकबानी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *नाक+बानी*) नाकों दम, हैरानी, परेशानी, नाक से बोलना, नाक का शब्द।

नकबेसर–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि. *नाक+बेसर*) नथ नामक नाक का गहना, बेसर।

नकमोती–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *नाक+मोती*) लटकन, नाक में पहिनने का मोती, बुलाक।

नकल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) अनुकरण नकल (दे.) अनुकृति, एक लेख के अनुसार दूसरा लिखना, प्रतिलिपि, पूर्ण रूप से अनुकरण, स्वाँग, अनोखा और हँसी के योग्य रूप बनाना, हँसी का छोटा-मोटा किस्सा, चुटकुला। वि. **नकलची, नकली।**

नकलनवीस–संज्ञा, पु. यौ. (अ. नकल+फा. नवीस) दूसरे के लेखों की प्रतिलिपि करने वाला, मुंशी। संज्ञा, स्त्री. **नकलनपोसी।**

नकलची–संज्ञा, पु. (दे.) बहुरूपिया, नकल करने वाला। वि. **नक्काल।**

नकली–वि. (अ.) जो नकल करके बनाया गया हो, बनावटी, झूठा, कृत्रिम, खोटा।

नकश–संज्ञा, पु. दे. (अ. *नकशा*) नक्शा, चित्र, ताश का एक खेल।

नकशा–संज्ञा, पु. (अ. नक्श) जो बनावा या लिखा गया हो, नकल किया या खोदा गया हो, चित्र। यौ. **नकशाकशी।**

नकसीर–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि. नाक+सं. सीर=पाती) नाक से बिना चोट लगे रक्त या खून बहना। यौ. **नकसीर फूटना**–एक नाक से गर्मी के कारण रक्त बहना। **मु. नकसीर भी न फूटना**–थोड़ी भी हानि या कष्ट न होना।

नकाना–कि. अ. दे. (हि. *नकियाना*) नाकों दम या बहुत हैरान होना, नाकों दम आना या होना। क्रि. स. दे. (हि. *नकियाना*) नाकों दम या बहुत हैरान करना, नाक से बोलना।

नकाब–संज्ञा, स्त्री. पु. (अ.) परदा, घूँघट, मुख छिपाने का वस्त्र। यौ. **नकावपोश**–मुख पर पर्दा डाले हुए।

नकार–संज्ञा, पु. (सं.) न, अक्षर या वर्ग न, ना, नहीं, इनकार, अस्वीकार।

नकारना–कि. अ. दे. (हि. *नकार+ना प्रत्य.*) न मानना, अस्वीकार या इन्कार करना, नाहीं करना।

नकारा–वि. दे. (फा. *नकारा*) व्यर्थ, बेकाम, निकम्मा, खराब। स्त्री. **नकारी।**

नकाशना-नकासना–क्रि॰ स॰ दे॰ (अ॰ *नक्काशी*) पत्थर, लकड़ी या धातु आदि पर खोद खोद कर बेल-बूटे या फूल आदि बनाना।

नकाशी-नकासी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *नक्काशी*) किसी चीज पर बेल-बूटे आदि खोद कर बनाना, **नक्काशी**।

नकियाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *नाक+आना प्रत्य॰*) नाकों दम होना, बहुत ही हैरान या दुखी होना।

नकीय–संज्ञा, पु॰ (अ॰) भाट, चारण, बंदीजन, कड़खैत।

नकुआ–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *नाक*) नाक, नेकुआ (आ॰)।

नकुल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नेवला जंतु, सहदेव का बड़ा भाई, पांडु पुत्र। स्त्री॰ **नकुली**।

नकेल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नाक+एल प्रत्य॰*) मुहरा, ऊँट के नाक की रस्सी। **मु॰ किसी की नकेल हाथ में होना**–किसी पर सब तरह का अधिकार होना। **नकेल न मानना**–आज्ञा या शासन न मानना, मनमानी उद्दंडता करना।

नक्का–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नाक*) नाका, सुई का वह छेद जिसमें डोरा रहता है।

नक्कारखाना–संज्ञा, पु॰ (फा॰) नौबत खाना, वह स्थान या ठौर जहाँ नगाड़ा बजता हो। **मु॰ नक्कारखाने में तूती की आवाज (कौन सुनता है)**–बड़ों के सम्मुख छोटों की कौन मानता है।

नक्कारची–संज्ञा, पु॰ (फा॰) नगाड़े का बजाने वाला।

नक्कारा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) नगाड़ा, डंका।

नक्काल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) नकल या अनुकरण करने वाला, भाँड़।

नक्काश–संज्ञा, पु॰ (अ॰) नक्काशी करने वाला।

नक्काशी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) पत्थर, काष्ठ और धातु आदि पर खोद खोद कर बेल-बूटे आदि बनाने का कार्य या विद्या, खोद कर किसी पदार्थ पर बनाए गए बेल-बूटे। वि॰ **नक्काशीदार**।

नक्की–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नाक*) नाक-स्वर से आनुनासिक बोलना, निश्चय, स्थिर, दृढ़। **नाक** (दे॰)।

नक्कीमूठ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) एक प्रकार के जुए का खेल।

नक्कू–वि॰ दे॰ (हि॰ *नाक*) बड़ी नाक वाला, अपने को माननीय या प्रतिष्ठित जानने वाला, सबसे भिन्न और उलटे कार्य करने वाला, आत्माभिमानी, बदनाम, अपयशी।

नक्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संध्या का समय, रात्रि, एक वृत (पि॰), शिव।

नक्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाक या नाका नामक पानी का जंतु, मगर, घड़ियाल, नाक, नासिका, मकर राशि (ज्यो॰)।

नक्ल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *नकल*), अनुकरण, नकल, **अभिनय**।

नक्श–वि॰ (अ॰) जो चित्रित या अंकित किया गया हो, लिखा या बनाया हुआ। **मु॰ मन में नक्श करना या कराना**–अपने या दूसरे के मन में कोई बात भली-भाँति बैठाना। **नक्श होना**–प्रगट होना। संज्ञा, पु॰ (अ॰) चित्र, तसवीर, किसी वस्तु पर खोद या लिख कर बनाए गए बेल-बूटे, मोहर, छाप। **मु॰ नक्श बैठाना**–अधिकार या हक जमाना या स्थिर करना, ताबीज, टोना-टोटका, जादू।

नक्शा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) चित्र, प्रतिमूर्ति, तसवीर, शकल, ढाँचा, आकृति, स्वरूप, तर्ज, दशा, ठप्पा, देशों के चित्र।

नक्शानवीस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (अ॰ *नक्शा+नवीस फा॰*) नक्शा बनाने या खींचने वाला। संज्ञा स्त्री॰ **नकशानवीसी**।

नक्शी–वि॰ (अ॰ *नक्श+ई प्रत्य॰*) नक्काशीदार, बेल-बूटेदार वस्तु।

नक्षत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 27 तारे, जो चंद्रमार्ग में स्थित हैं, मघा, पुष्प, पुनर्वसु आश्लेषादि, नछत्तर। यौ॰ **नक्षत्र-मंडल**।

नक्षत्रनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चन्द्रमा, **नक्षत्रेश, नक्षत्रपति**।

नक्षत्र-पथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा।

नक्षत्र-राज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्र-लोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जिस लोक में नक्षत्र हैं।

नक्षत्रवृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उलका-पात, तारा टूटना।

नक्षत्री–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *नक्षविन्*) चन्द्रमा। वि॰ (सं॰ नक्षत्र +ई प्रत्य॰) भाग्यवली।

नख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाखून, नहँ (आ॰) एक औषधि, टुकड़ा, भाग, खंड। यौ॰ नख-शिख– नख से शिख तक। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फा॰ नाक) पतंग की डोरी।

नखक्षत-नखच्छत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *नखक्षत*) शरीर का वह चिन्ह या दाग जो नाखून गड़ जाने से बना हो,

नखछोलिया।

नखत-नखतर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नक्षत्र*) 27 तारे, जो चन्द्र-मार्ग में हैं।

नखतराज-नखतराय–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *नक्षत्रराज*) चन्द्रमा।

नखतेस–संज्ञा, पु. (सं. *नक्षवेश*) चन्द्रमा।

नखना–क्रि. अ. दे. (*हि. नाखना*) फाँदा या लाँघा जाना, उल्लंघन होना।

नखरा–संज्ञा, पु. (फा.) नाज, चोचला, चुलबुलपन, चंचलता, दुलारापन।

नखरातिल्ला–संज्ञा, पु. यौ. (फा. *नखरा+तिल्ला हि. अनु.*) नाज, नखरा, चोवला, चंचलता।

नखरेला–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं.) नखक्षत, नाखून का घाव, नखों पर रेखा।

नखरेबाज–वि. (फा.) अति नखरा या नाज करने वाला। संज्ञा, स्त्री. **नखरेबाजी**।

नखरौट–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *नखरेखा*) नखक्षत।

नखबिन्दु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मेंहदी या महावर का स्त्रियों के नाखूनों पर बना चिन्ह।

नखशिख–संज्ञा, पु. यौ. (सं. हि. *नखसिख*) नाखून से लेकर चोटी तक के सारे अंग। यौ. नख-शिख-वर्णन–सर्वांग वणन। **मु. नखशिख से**–सिर से पैर तक।

नखांक–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं.) नाखून गढ़ जाने का दाग या चिन्ह, नखनानी गंधद्रव्य।

नखाधुध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बाघ व्याघ्र, शेर, चीता।

नखास–संज्ञा, पु. (स. *मखखाल*) पशुओं या घोड़ों का बाजार।

नखियाना–कि. अ. दे. (सं. *नख+इयाना प्रत्य.*) किसी के शरीर में नाखून गड़ाना।

नखी–संज्ञा, पु. (सं. *नखिन्*) व्याघ्र, शेर, चीता। संज्ञा, स्त्री. (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

नखोटना–क्रि. स. दे. (सं. *नख+ओटना प्रत्य.*) नाखून से नोचना या खरोचना, खरोटना, निकोटना (दे.)।

नग–संज्ञा, पु. (सं.) पहाड़, पेड़, सात की संख्या, सौंप, सूर्य। संज्ञा, पु. (फा. नगीना, सं. नग) नगीना, संख्या।

नगचाई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) समीप, निकट, थवाई, समीपागमन।

नगचाना–क्रि. अ. (दे.) निकट या समीप आना, **नकचाना** (ग्रा.)।

नगचाहट–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सामीप्य, निकटता, पास पहुँचना।

नगज–संज्ञा, पु. (सं.) हाथी। वि. (सं.) जो पहाड़ से उत्पन्न हो।

नगजा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पार्वती जी।

नगण–संज्ञा, पु. (सं.) 3 लघुवर्णों का एक शुभ गण (iii)—पिं.।

नगण्य–वि. (सं.) तुच्छ, गया बीता।

नगदंती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विभीषण की पत्नी।

नगद–संज्ञा, पु. दे. (अ. *नकद*) रुपया पैसा, नकद।

नगदौना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नागदमन*) नागदमन, एक औषधि या जड़ी।

नगधर–संज्ञा, पु. (सं.) श्री कृष्ण चन्द्र।

नगवरन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मगधर*)। श्री कृष्ण, गिरधर, गिरधारी, **नगधारी**।

नगनंदिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पार्वती।

नगन–वि. दे. (सं. *नग्न*) नंगा, दिगम्बर। संज्ञा, पु. व. व. (हि. *नग*)।

नगनिका–संज्ञा, स्त्री. (दे.) क्रीड़ा-फूल।

नगनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. नग्न) लड़की, बेटी, नंगी स्त्री।

नगपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हिमालय या सुमेरु पहाड़, शिव जी, चन्द्रमा।

नगभिन्नक–संज्ञा, पु. (सं.) पाषाणभेद, एक औषधि, परवानभेद (दे.)।

नगर–संज्ञा, पु. (सं.) शहर–वह बस्ती जो कसबे से बड़ी हो, जहाँ अधिक लोग रहते हों।

नगर-कीर्त्तन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जो गाना-बजाना नगर की गलियों में धूम फिर कर हो।

नगर-नारि, नगर-नारी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *नगर-नारी*) वेश्या।

नगर-नायिका–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वेश्या, रंडी।

नगरपाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कोतवाल, **नगर-रक्षक, नगर-पालक**।

नगरवर्ती–वि. (सं. *नगरवर्तिन*) नगर में स्थित, नगर-वासी।

नगरवासी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नागरिक, शहर का रहने वाला, **नगर-निवासी**।

नगरहा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नगर-निवासी।

नगराई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नगर+ आई प्रत्य.*) शहरातीपन, नागरिकता, चतुरता।

नगरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शहर, नगर।

नगरीपाँत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नगर का द्वार या पार्श्व, नगर का निकास, नगर के समीप।

नगस्यरूपिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रमाणिका या प्रमाणी छंद।

नगाड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ ननारा) **नगारा, धौंसा**।

नगारि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र जी।

नगाधिप, नगाधिपति, नगाधिराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिमालय, **सुमेरु**।

नगी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *नग+ ई प्रत्य.*) मणि, नगीना, पार्वती, पहाड़ी स्त्री।

नगीचा–क्रि॰ वि॰ दे॰ (फा॰ *नजदीक*) निकट, पास, नजदीक, समीप। वि॰ (दे॰) **नगीची**।

नगीना–संज्ञा, पु॰ (फा॰) मणि, नग।

नगीनासाज–संज्ञा, पु॰ (फा॰) नग बनाने या किसी वस्तु में जड़ने वाला, जड़िया।

नगेन्द्र-नगेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिमालय, सुमेरु, **नगपति, नगराज**।

नगेसरि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नागकेसर*) नागकेशर, नागकेसर, (औप॰)।

नग्न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नगन (दे॰) नंगा, वस्त्र-रहित, आवरण-रहित, खुला, दिगम्बर।

नग्नता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नंगे होने का भाव, नंगई, भद्दापन।

नग्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नगर*) शहर, नगर।

नघना, नाँघना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लंघन*) फौदना, लाँघना, **नाकना, डाँकना** (आ॰)।

नघाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लंघन*) फँदाना, लँघाना। प्रे॰ रूप—**नघवाना**।

नचना–कि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *नाचना*) नाचना। वि॰ नाचने वाला, लगातार इधर-उधर घूमने वाला। प्रे॰ रूप—**नचवाना**।

नचनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नाचना*) नाच, नृत्य।

नचनियाँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नाचना+ इवा प्रत्य*) नाचने या नृत्य करने वाला।

नचनी–वि॰ स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नाचना*) नाचने या नृत्य करने वाली, लगातार इधर-उधर घूमने या रहने वाली।

नचवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *नाचना का प्रे॰ रूप*) **नाच या नृत्य कराना, नचाना**।

नचवैया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नाचना+ वैया प्रत्य.*) नाचने वाला, नर्तक, नृत्य-कर्त्ता, **नचैया**।

नचहिं–क्रि॰ स॰ ब॰ (हि॰ *नाचना*) नाचता है, नृत्य करता है।

नचाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *नाचना*) नाच या नृत्य कराना, दिक या हैरान करना। **मु॰ नाच नचाना**–चलने फिरने या और किसी कार्य विशेष के लिए विवश करके ढिक या तंग करना, व्यर्थ इधर-उधर घुमाना। **मु॰ आँखें (नैन) नचाना**–चपलता से आँखें इधर-उधर घुमाना। व्यर्थ इधर-उधर दौड़ाना।

नचिकेता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नचकेतस्*) एक ऋषि-पुत्र जिसने काल से ब्रह्मज्ञान सीखा था।

नचौहां–वि॰ दे॰ (हि॰ *नाचना+ औहाँ प्रत्य.*) सदा नाचने और इधर-उधर फिरने वाला।

नक्षत्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नक्षत्र*) नक्षत्र, **भाग्य**। **मु॰ नक्षत्र बली (प्रबल) होना**–भाग्यवान होना। **नछत्र की बात है**–भाग्य का खेल है। **बुरा नक्षत्र**–मन्द भाग्य, बुरा समय।

नछत्री–वि॰ दे॰ (सं॰ *नक्षत्र+ ई प्रत्य.*) भाग्यवान, भाग्यशाली, नक्षत्रबली।

नजदीक–वि॰ (फा॰) समीप, निकट, पास, करीब। (संज्ञा, वि॰ **नजदीकी**) समीपी।

नजम–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *नज्म*) काव्य, कविता।

नजर–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) दृष्टि, निगाह। **मु॰ नजर आना**–देख पड़ना, दिखलाई देना या पड़ना। **नजर पर चढ़ना**–पसन्द आ जाना, अच्छा लगना, प्रिय होना। **नजर पड़ना**–दिखलाई देना या पड़ना। **नजर बाँधना**–मंत्र के बल से और का और दिखाना, दृष्टिबंध करना। कृपा दृष्टि या दया की निगाह से देखना, निगरानी, देखभाल, ध्यान, ख्याल, पहचान, परख, दृष्टि का बुरा प्रभाव। **मु॰ नजर उतारना**–बुरी दृष्टि के प्रभाव को मिटा देना। **नजर लगाना (लगना)**–बुरी दृष्टि का प्रभाव डालना या पड़ना। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) उपहार, भेंट।

नजरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अ॰ *नजर+ ना प्रत्य.*) देखना, नजर

लगाना।

नजरबंद–वि. यौ. (अ. नजर+बंद फा.) वह बन्दी जो कड़ी निगरानी में रक्खा जाचे कि कहीं जा न सके। संज्ञा, पु. इन्द्रजाल का खेल जिसे लोग दृष्टि बन्धन समझते हैं।

नजरबंदी–संज्ञा, स्त्री. (अ. नजर+बंदी फा.) कड़ी निगरानी, नजरवन्द होने की दशा, जादूगरी, बाजीगरी।

नजर बाग–संज्ञा, पु. यौ. (अ.) मकान के चारों ओर या सम्मुख की पुष्पवाटिका या फुलवारी।

नजरहाया, नजरहा–वि. दे. (अ. *नजर+हाया प्रत्य.*) नजर लगाने वाला। स्त्री. **नजरहाई, नजरही।**

नजरानना–क्रि. स. दे. (अ. *नजर+हि. प्रत्य. डालना*) भेंट या उपहार के ढंग पर देना, नजर लगाना।

नजराना–क्रि. अ. दे. (अ. *नजर+हि. आना प्रत्य.*) नजर लग जाना, **नजरियाना**। कि. स. (दे.) नजर लगाना। संज्ञा, पु. (अ.) भेंट, उपहार। **मु. नजर गुजारना**–उपहार देना, आधीनता स्वीकार करना।

नजरि, नजरिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *नजर*) दृष्टि, निगाह।

नजरियाना–क्रि. अ. (दे.) बुरी दृष्टि लगना, नजर लगाना।

नजला–संज्ञा, पु. (अ.) जुकाम, सरदी, **श्लेष्मा** (सं.)।

नज़ाकत–संज्ञा, स्त्री. (फा.) कोमलता, सुकुमारता।

नजात–संज्ञा, स्त्री. (अ.) मोक्ष, मुक्ति, रिहाई, छुटकारा, छुट्टी। **मु. (काम से) नजात पाना**–(किसी से) छुट्टी पाना।

नज़ारा–संज्ञा, पु (अ.) दृष्टि, दृश्य, प्यारे को प्रेम की दृष्टि से देखना।

नजिकाना, नजकाना (आ.)–क्रि. स. दे. (हि. *नजीक, नजदीक+आना प्रत्य.*) समीप, निकट या पास पहुँचना, नचकाना।

नजीक–क्रि. वि. दे. (फा. *नजदीक*) समीप, निकट, **नगीच** (प्रा.)।

नज़ीर–संज्ञा, स्त्री. (अ.) दृष्टांत, उदाहरण, मिसाल।

नजूम–संज्ञा, पु. (अ.) ज्योतिष विद्या।

नजूमी–संज्ञा, पु. (अ.) ज्योतिषी।

नज़ूल–संज्ञा, पु. (अ.) कस्बे या शहर की यह भूमि जो सरकार के अधिकार में हो।

नट–संज्ञा, पु. (सं.) नाटक करने या खेल दिखाने वाला, नाटय-कला निपुण, नाचने वाला, कसरती।

नटई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) गरदन, गला, घाँटी, टेंटुवा, नटई (आ.)।

नटखट–वि. दे. (हि. *नट+खट अनु.*) उत्पाती, उपद्रवी, ऊधमी, चंचल।

नटखटी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *नटखट*) उपद्रव, ऊधम, बदमाशी।

नटता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नटत्व, नट का भाव।

नटना–क्रि. अ. दे. (सं. *नट्*) नटत्व या नाट्य करना, नाचना, (अ.) कहकर बदल जाना, इन्कार करना, मुकुराना (म.)। क्रि. स. दे. (सं. नष्ट) नष्ट करना। क्रि. (दे.) नष्ट होना।

नटनागर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्री कृष्ण।

नटनारायण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सम्पूण्र जाति का एक राग (संगी.), कृष्ण, शिव।

नटनि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नर्तन*) नाच, नृत्य। संज्ञा, स्त्री. प्र. हि. (नटना) इन्कार या अस्वीकार करना।

नटनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नट+नी प्रत्य.*) नट की या नट जाति की स्त्री। **नटमाया**–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छल-विद्या, इन्द्रजाल।

नटवन–क्रि. स. दे. (स. *नट*) नाट्य या अभिनय करना।

नटचर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नाटय-कला में निपुण श्रीकृष्ण। वि. बहुत चतुर, चालाक।

नटसारी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) नटबाजी। छोटी नाटयशाखा।

नटसाल–संज्ञा, स्त्री. (दे.) फाँस या काँटे का वह भाग जो टूट कर शरीर के भीतर रह जाता है, तीर की फाँसी, कसम।

नटिन, नटिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नट*) नट की या नट जाति की स्त्री, **नटनिया।**

नटी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नट जाति या नट की स्त्री, नाचने या नाटक करने वाली।

नटुआ-नटुवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नट*) नट, नटई, चंचल बालक।

नटेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी, नट-नागर, **नटराज, नटराज-राज, नटराय।**

नठना, नठाना–क्रि. स. दे. (सं. *नष्ट*) नष्ट होना। क्रि. स. (दे.) नष्ट करना।

नठिया–वि. (दे.) नष्ट, बुरा (स्त्रियों की गाली)।

नढ़ना–क्रि. स. दे. (हि. *नाथना*) गूंथना, पिरोना, बाँधना, कसना।

नतपाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रणतपाल, शरणागतपाल।

नतर-नतरु–क्रि. वि. दे. (हि. *न+तो*) नहीं तो, नातरु, अन्यथा।

नतांगी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) जवान स्त्री, युवती।

नतांश–संज्ञा, पु. (सं.) ग्रहों की स्थिति जानने का वृत्त।

नति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) झुकाव, प्रणाम, विनय, नम्रता।

नतिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नाती का स्त्री. रूप*) बेटे की बेटी, पुत्र की पुत्री।

ननीजा–संज्ञा, पु. (फा.) फल, परिणाम।

नतु–कि. वि. यौ. दे. (हि. *न+तौ*) **नतरु,** नहीं तो, ना तौ, अन्यथा।

नत्थ–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नाथना*) बेसर, नथ, बड़ी नथुनी।

नत्थी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नाथना*) कागज या कपड़े के कई टुकड़ों को एक ही तार या डोरे में बाँधना, मिराज।

नथ–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *गायना*) बेसर, **नथुनी** (आ.)।

नथना-नथुना–संज्ञा, पु. दे. (सं. नख) नाक का अग्रभाग, नाक के छेद। **मु. नथना फुलाना**–क्रोध करना। क्रि. अ. दे. (हि. नाथना का अ. रूप' किमी के साथ नत्थी होना, एक सूत्र में बँधना, छिदना, छेदा जाना।

नथनी, नथिया, नथुनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नथ*, नथ, नथ-बेसर।

नथी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) छेदी, फँसी, नाथी।

नथुआ–संज्ञा, पु. (दे.) नाथने वाला, छिदुआ, जिसकी नाक छिदी हो, नत्थू।

नथुई–संज्ञा, पु. (दे.) छिदुई।

नथुना–संज्ञा, पु. (दे.) नाक के छेद। स्त्री. **नथुनी**–नथ।

नद–संज्ञा, पु. (सं.) बड़ी नदी या जिसका नाम पुल्लिंग वाची हो।

नदन–संज्ञा, पु. (सं.) नाद या शब्द करना।

नदना-नादना–क्रि. अ. दे. (सं. *नदन–शब्द करना*) पशुओं का शब्द करना, राँभना, रँभाना।

नदराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समुद्र, **नदपति, नदीश, नदराय** (दे.)।

नदार–वि. (दे.) बुरा, निंद्य।

नदारद–वि. (फा.) अप्रस्तुत, लुप्त, गुप्त, गायब, खारिज।

नदिया–संज्ञा, स्त्री. (सं. *नदी*) छोटी नदी।

नदी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दरिया, पानी की वह दैवीधारा जो किसी पहाड़ या झील से निकल कर पानी के किसी भाग में गिरे। यौ. **नदी-नाला। मु. नदी-नाव संयोग**–ऐसा मिलाप जो कभी दैवयोग से हो। यौ. नदी-नद।

नदीगर्भ–संज्ञा, मु. यौ. (सं.) वह ताल या दहार जहाँ से नदी की धारा बहती हा।

नदीज–संज्ञा, पु. (सं.) भीष्म पितामह।

नदीमातृक–वि. यौ. (सं.) वह देश जहाँ नदी के जल से खेती-बारी होती हो।

नदीश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समुद्र, महाभारत पु.।

नदोला–संज्ञा, पु. (दे.) मिट्टी की बड़ी नाँद, जिसमें पशुओं को खिलाया जाता है।

नद्दना–क्रि. अ. दे. (सं. *नदन*) शब्द करना, नाँदना, नदना।

नद्दो–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नदी*) नदी।

नद्ध–वि. (सं.) बँधा हुआ, वद्ध।

नधना–क्रि. अ. दे. (सं. *नद्ध+ना प्रत्य.*) जुतना, जुड़ना, बँधना, जुटना, काम में लगना।

ननका–संज्ञा, पु. (दे.) छोटा बच्चा।

नकारना–क्रि. अ. दे. (हि. *न+करना*) नाहीं करना, नामंजूर या अस्वीकार करना, **नकारना।**

ननद-ननद-ननदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ननद*) स्वामी की बहिन, **नंद, ननंदा।**

ननदोई–संज्ञा, पु. दे. (हि. *ननद+ओई प्रत्या.*) ननद का पति, स्वामी का वहनोई, **नंदोई** (आ.)

ननसार-ननसाल–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *नाना+आला*) नाना का घर या गाँव, नेनाउर, ननियाउर, ननिआउर (आ.)।

ननियाससुर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *नान+ससुर*) पति या स्त्री का नाना। स्त्री. **ननियासास।**

ननिहाल–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नाना+आलय*) नाना का घर, ननसार।

नन्हा–वि. दे. (सं. *न्यंन या न्यून*) छोटा। स्त्री. नन्ही। **मु.**

नन्हा कातना–बहुत सूक्ष्मांश में कुछ करना।

नन्हियाना–क्रि. स. (दे.) नन्हा या महीन करना, बारीक बनाना।

नन्हैया–वि. दे. (हि. *नन्हा*) छोटा।

नपाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नाप+ई प्रत्य.*) नापने का काम, भाव और मजदूरी।

नपाक-नापाक–वि. दे. (फा. *नापाक*) छूत, अपवित्र, अपावन।

नपुंसक–संज्ञा, पु. (सं.) हिजड़ा, नामर्द, क्लीव, षंढ (सं.)।

नपुंसकता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिजड़ापन, नामर्दी, क्लीवता, क्लीवत्व। संज्ञा, पु. **नपुंसकत्व**।

नपुत्रा–वि. दे. (हि. *निपुत्री*) निपूता, नपूता (आ.), निःसंतान, बे-औलाद, संतान या पुत्रहीन।

नप्ता–संज्ञा, पु. (सं. *नप्तृ*) पोता, बेटे का बेटा, नाती (दे.)। स्त्री. नप्ती (सं.) **नातिनि, नतिनी।**

नफ़र–संज्ञा, पु. (फा.) सेवक, दास, नौकर, व्यक्ति, मजदूर, पुरुष।

नफ़रत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) घृणा, घिन।

नफरी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) एक मजदूर का एक दिन का काम या मजदूरी, मजदूरी का दिन।

नफा–संज्ञा, पु. (अ.) लाभ, फायदा।

नफासत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) उम्दापन, अच्छाई, सफाई।

नफीरी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) तुरही, धुतूरा।

नफीस–वि. (अ.) उमदा, साफ, बढ़िया।

नयी–संज्ञा, पु. (अ.) भगवान का दूत, रसूल, पैगंबर, देव-दूत।

नबेड़ना–क्रि. स. दे. (सं. *निवारण*) निपटाना, से करना, चुकाना, समाप्त करना। निबरना (दे.) निवारना।

नबेड़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नबेड़ना*) न्याय, निबटारा, फैसला, निचेरा (अ.)!

नब्ज–संज्ञा, स्त्री. (अ.) नाड़ी, नारी। **मु. नब्ज छूटना/न रहना-नाड़ी** की गति रुक जाना। **नब्ज पहिचानना**–नस-नस से वाफिक होना।

नब्बे–वि. अस्सी और दस। पु. नब्बे की संख्या, 901

नभ–संज्ञा नभस्' का समासगत रूप।-केतन-पु. सूर्य।-क्रांत,-क्रांती (तिन्)-पु. सिंह।-पाँथ पु. सूर्य।-त्राण, श्वास-पु. वायु।-सद पु. पक्षी; देवता, ग्रहादि जो आकाश में विचरते हैं।-सरित, स्त्री. आकाश गंगा/-सुत पु. वायु।-स्थल पु. आकाश रूपी स्थान; शिव।-स्थित वि. आकाश में स्थित। पु. एक नरक

नभ–वि. (सं.) हिंसक। पु. सावन का महीना; आकाश। ग पु. वैक्स्वत मनु का पुत्र; पक्षी इत्यादि। वि. गगन गामी। नाथ पु. गरुड़-चर वि. पु. नभश्चर, आकाशचारी।

नभ (स्) संज्ञा पु. (सं.) आकाश, आसमान; पृथ्वी आदि पाँच तत्त्वों में से एक; सावन का महीना, मेघ; जल; (जन्म) कुंडली में लगन से दशम स्थान; चाक्षुष मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि; वर्षा; विषसूत्र; आश्रम; पास।

नभग–वि. (सं.) भाग्यहीन; नभ में।

नभगेश–संज्ञा पु. (सं.) गरुड़।

नभश–'नभस' का समासगत रूप। चक्षु (स्)-पु. सूर्य। चमस पु. चन्द्रमा; इन्द्रजाल; चित्रापूप। चट वि. आकाश में विचरने वाला। पु. पक्षी; देवता, गन्धर्व आदि जो आकाश में विचरते हैं; बादल, वायु।

नभ संगम–संज्ञा पु. (सं.) दसवें मनवन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

नभस्तल–संज्ञा पु. (सं.) वायुमण्डल, आकाश का निम्न भाग।

नभस्य–वि. (सं.) वाष्पपूर्व, कुहरे से भरा हुआ। पु. भाद्रपद, भादों का महीना; स्वारोचिप मन का एक पुत्र।

नभस्वान–(वत्)-वि. (सं.) बादलों या कुहरे से भरा हुआ। पु. वायु।

नभा–संज्ञा स्त्री. (सं.) पीकदान।

नभाक–संज्ञा पु. (सं.) अंधकार।

नभोंबुप–संज्ञा पु. (सं.) चातक।

नभो–'नभस' का समासगत रूप। ग-वि. जो आकाश में विचरण करता हो; जो कुंडली में लग्न स्थान से दसवें स्थान में हो। पु. पक्षी; देवता गंधर्वादि; दसवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।-गज-पु. बादल।-गति-स्त्री. आकाश में विचरना, उड़ना। वि. नभोग,–गामी (भिन)-वि. पु. दे. नभश्चर।- द-पु. एक विश्वदेव-दुह-पु. मेघ, बादल।-दृष्टि-वि. जिसकी दृष्टि आकाश की ओर हो, अंधा।- द्वीप-धूम-धन-पु. बादल।-नंदिनी-दे. क्रम में।-नदी-स्त्री. आकाश गंगा।-मंडल पु. मंडलाकार आकाश।-मणि पु. सूर्य/- योनि-पु. शिव।-स्व (स्)-पुं.

अंधकार।-रूप-वि॰ आकाश के रंग का, नीला/- रेणु-पु॰ कुहरा।-लय-वि॰ आकाश में लीन हो जाने वाला; पु॰ धुआँ। लिट् (ह्)-वि॰ आकाश को छूने वाला, बहुत ऊँचा, गगन चुंबी। वीयी-स्त्री॰ दे॰ 'छायापथ'।

नभोनंदिनी–संज्ञा स्त्री॰ प्रतिध्वनि।

नभौका (कस)-संज्ञा पु॰ (सं॰) पक्षी; देवता, ग्रह आदि जो आकाश में विचरते हैं।

नभ्य–वि॰ (सं॰) पहिए की नाभि के लिए आवश्यक वस्तु पु॰ धुरा; धुरे में लगाया जाने वाला तेल।

नभ्राट–संज्ञा पुं॰ (सं॰) काला बादल।

नमः(मस)- अ॰ (सं॰) प्रणाम, समर्पण आदि के अवसर पर व्यवहृत किया जाने वाला एक शब्द) पु॰ नमन; वक्र; त्याग; भंट संस्कृत में ये अर्थ भी अव्यय में ही होते हैं।

नभ–वि॰ (फा॰) तर, गीला, आर्द्र।

नमक–संज्ञा पु॰ (फा॰) विशेष प्रकार के स्वाद के लिए, भोग्य वस्तुओं में छोड़ा जाने वाला एक प्रसिद्ध क्षार-पदार्थ, लवण; लावण्य, सलोनापन।- ख्वार दि॰ नमक खाने वाला। - दाव पु॰ नमक रखने का पात्र। - सार-स्त्री॰ नमक निकालने या बनाने की एक जगह। - हराम-वि॰ स्वामी या पालक से छल या द्रोह करने वाला, कृतघ्न। - हरामी वि॰ कृतघ्न/ स्त्री॰ स्वामी या पालक से छल या द्रोह करने की क्रिया या दुर्गुण, कृतघ्नता। **मु॰–अदा करना** स्वामी या पालक की यथोचित सेवा करना, वफादार रहना। **(किसी का) नमक खाना**-(किसी की) कृपा से निर्वाह करना। **कटे पर नमक छिड़कना**–दुखी को और दुख देना। **नमक फूट कर निकलना**-नमकहरामी का कुफल मिलना। **नमक मिर्च मिलाना**-किसी बात को आकर्षक या प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उसमें अपनी ओर से कुछ जोड़ देना, किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना; अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।

नमकीन–वि॰(फा॰) जिसमें नमक छोड़ा गया हो; जिसमें नमक का स्वाद हो; चटखारा; लावण्ययुक्त, सलौना, सुंदर। पु॰ नमक डालकार तैयार किया गया व्यंजन या पकवान।

नमन–वि॰ (सं॰) नत, झुका हुआ, वक्र। पु॰ अभिनेता, धुआँ, स्वामी, बादल; ऊनी कपड़ा (विशेष)।

नमदा–संज्ञा पु॰ (फा॰) जमाया हुआ ऊनी कपड़ा।

नमन–संज्ञा पु॰ (सं॰) नमस्कार करना; नमस्कार, प्रणाम; झुकने की क्रिया। वि॰ दूसरे को झुकाने वाला।

नमना–क्रि॰ अ॰ नत होना; प्रणाम करना।

नमनि–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'नमन'।

नमनीय–वि॰ (सं॰) नमस्कार या प्रणाम करने योग्य, पूज्य।

नमश–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) दूध का थोड़ा जमा हुआ फेन जो जाड़ों के दिनों में उत्तर भारत (उ. प्र) में मिलता है। मलेया; मक्खन-मलाई।

नमस–वि॰ (सं॰) अनुकूल, प्रसन्न।

नमसकारना–क्रि॰ सं॰ नमस्कार करना।

नमस्–अ॰ (सं॰) दे॰ नमः।- करण-पु॰ नमस्क्रिया।: कार पु॰ किसी के प्रति विनय सूचित करने के लिए सर नवाना, हाथ जोड़ना आदि।– कारी- स्त्री॰ लजाधुर, लाजवंती।-कार्य-वि॰ नमस्कार करने योग्य, दंडनीय, पूज्य।-क्रिया-स्त्री॰ दे॰ 'नमस्कार'।–ने-(एक वाक्य जिसका अर्थ है)-'आपको नमस्कार है'।

नमस्य–वि॰ (सं॰) पूज्य, सम्मान्य: नम्र, विनयी।

नमस्या–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) पूजा, अर्चा।

नमाज़–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) मुसलमानों की ईश-प्रार्थना या उपासना की पद्धति।–गाह-स्त्री॰ मस्जिद में नमाज पढ़ने की जगह।- बंद पु॰ कुश्ती का एक पेंच। **मु॰ नमाज का होना**-नमाज का सही समय पर न पढ़ा जा सकना।

नमाज़ी-वि॰ (फा॰) नमाज पढ़ने वाला; नियमित रूप से नमाज़ पढ़ने वाला।–कपड़ा पु॰ वह शुद्ध वस्त्र जिसे केवल नमाज पढ़ने के वक्त ही पहना जाय।

नमाना–क्रि॰ सं॰ झुकाना; वश में लाना; काबू करना।

नमित–वि॰ (सं॰) झुका हुआ; झुकाया हुआ।

नमी–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) तरी, आर्द्रता, सीलन।

नमुचि–संज्ञा पु॰ (सं॰) कामदेव; एक दानव जिसे इन्द्र ने मारा था।– द्विट (स),-रिपु,-सूदन-पु॰ इन्द्र।

नमूदार–वि॰ (फा॰) प्रकट, जाहिर।

नमूदारी–संज्ञा स्त्री॰ प्रकट होना, जाहिर होना।

नमूना–संज्ञा पु॰ (फा॰) बानगी, किसी वस्तु का छोटा अंश जिससे उसके गुण-स्वरूप आदि का पता चले; वह

जिसका अनुकरण कर कोई चीज तैयार की जाए; खाका।

नमेरू–संज्ञा पु. (सं.) रुद्राक्ष का पेड़, सुरपुन्नाग वृक्ष।

नमोगुरू–संज्ञा पु. (सं) आध्यात्मिक गुरु, ब्राह्मण।

नम्य–वि. (सं.) दे. 'नमस्य'; जो बिना टूटे झुकाया जा सके; लचीला।

नम्र–वि. (सं.) झुका हुआ, नत; विनीत; वक्र।

नम्रक–संज्ञा पु. (सं.) बेंत। वि. झुका हुआ।

नम्रित–वि. (सं.) दे. नमित।

नय–संज्ञा पु. (सं.) ले जाने या नेतृत्व करने की क्रिया; नीति; राजनीति; नम्रता; व्यवहार, बरताव; सिद्धान्त, मत; दूरदर्शिता; नैतिकता, नीति; योजना; विधि, ढंग; एक प्रकार का जुआ; विष्णु। वि. नेतृत्व करने वाला; उपयुक्त, उचित।- कोविद,-ज्ञ-वि. नीति निपुण, नीतिज्ञ।-चक्षु(स)-वि. दूरदर्शी, नीतिज्ञ।- नागर वि. नीतिनिपुण, नेता(तृ)-पु. बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ।-पीढ़ी-स्त्री., शतरंज की बिसात।-प्रयोग पु.-नीति कौशल।- वादी (दिन्)-वि. पु. राजनीति का ज्ञाता।- विद,-विशारद वि. राजनीति में माहिर नेता)-शास्त्र- पु. राजनीतिशास्त्र; डिप्लोमेसी।-शाली(लिन्)-दि. विनयी, सदाचारी,- शील-वि. विनयी, नीतिज्ञ।

नयक–संज्ञा पु. (सं.) कुशल व्यवस्थापक; राजनीति निपुण व्यक्ति।

नयकारी–पु. नर्तकों का मुखिया।

नयन–पु. (सं.) ले जाना या नेतृत्व करना; शासन करना; बिताना; यापन। आँख, दृष्टि ।- गोचर वि. दे. 'दृष्टिगोचर' /- च्छद-पु. पलक /- जल पु. आँसू।-पट पु. पलक।- पथ पु. दे. 'दृष्टिपथ'।- पुट-पु. नेत्र-कोटड /- कारि, - सलिल- पु. आँसू /- विषय पु. दृश्य वस्तु; क्षितिज; दृष्टि पथ।

नयना–स्त्री. (सं.) आँख की पुतली, कनीनिका। कि. अ. झुकना, नम्र होना; नमस्कार करना। पु. दे. 'नयन'

नयनाभिधान–संज्ञा पु. (सं.) नेत्र का एक रोग।

नयनाभिराम–दि. (सं.) जो देखने में सुन्दर हो, नेत्रप्रिय, प्रियदर्शन।

नयनामोषी–(षिन्)-वि. (सं.) नेत्र को दृष्टिहीन करने वाला।

नयनी–संज्ञा स्त्री. (सं.) दे. 'नयना'

नयनू–संज्ञा पु. नवनीत, मक्खन; एक तरह का बूटीदार मलमल।

नयनोत्सव–संज्ञा पु. (सं.) दीपक; प्रियदर्शन वस्तु।

नयनोपाँत–संज्ञा पु. (सं.) आँख की कोर, अपांग।

नयनौषधि–संज्ञा पु. (सं.) पुष्प का साँस।

नया–वि. जिसका उत्पादन, निर्माण, प्रकाशन, प्रवर्तन, ज्ञान या आविष्कार कुछ समय पूर्व ही हुआ हो; नवीन; नूतन; ताजा; पुराने का विलो.; कम उम्र का जिससे पहले-पहल साक्षात्कार या परिचय हुआ हो; जो कुछ समय पहले प्रकट हुआ, देखा गया, मिला या पाया गया हो; हाल का बना या बसा हुआ; पहले वाले का स्थाना पन्न; जिसका उपयोग पहले-पहल किया जा रहा हो; जिससे कोई दूसरे ने कभी काम न लिया हो; जिसका आरम्भ या पुनरारंभ अभी हाल में ही हुआ हो। (स्त्री. 'नई')-पन-पु. नया होना, नया होने का भाव, नवीनता /- (ये) सिरे (सिर) से-फिर-से, आरम्भ से।

नयाम–संज्ञा पु. (फा.) तलवार का खोल; म्यान।

नरंग–संज्ञा पु. (सं.) पुरुषेन्द्रिय; मुँहासा।

नरंधि–संज्ञा, पु. (सं.) संसार; भौतिक जीवन।- प-ष-पु. विष्णु।

नर–संज्ञा पु. (सं.) पुरुष, मर्द, नरसिंह के शरीर के नरभाग से उत्पन्न एक दिव्य महर्षि; स्वायंभुव मन्वन्तर में धर्म और दक्ष प्रजापति की कन्या सूती से उत्पन्न एक ऋषि जो ईश्वर के अंशावता माने जाते थे।

;नरदेव; नरदेव के अवतार, अर्जुन; विष्णु; घोड़ा, शतरंज का मोहरा; एक प्रकार का क्षुप; छाया-व्यवहार में छाया द्वारा समय जानने के लिए प्रयुक्त सीधी गाड़ी जाने वाली लकड़ी; शंकु; सेदक; दोहे का एक भेद; एक प्रकार का छप्पय; (ग्रा./) (पानी का) नल; वि. पुरुष जाति का/मद–कंत-पु. राजा, नृप;-कपाल-पु. मनुष्य की खोपड़ी;– की नक-पु.-धर्मगुरु की हत्या करने वाला।-केशरी (रिन्),-केसरी (रिन्)–पु. विष्णु के अवतार नृसिंह; सिंह जैसा पराक्रमी मनुष्य/- केहरी पु. दे. 'नरकेशरी) /- कौतुक पु. मदारी का खेल/- गण पु.

नक्षत्र समूह-विशेष; इस गण में जन्म लेने वाला व्यक्ति।-त्राण पु॰ राजा, कृष्ण।- दारा पु॰ जनखा, नपुंसक।—देव पु॰ राजा, ब्राह्मण।

—द्विट, (ष्) राक्षस।- धि पु॰ संसार /- नाथ,-नायक पु॰ राजा।—नारायण पु॰ बदरीवन के प्रसिद्ध ऋषि द्वय जिनके अवतार क्रमशः अर्जुन और कृष्ण माने जाते हैं/— नारी स्त्री॰ स्त्री—पुरुष; अर्जुन (नर)-द्रौपदी; —नाहर पु॰ दे॰ नटकेशरी /— पति पु॰ राणा /- पद पु॰ दे॰ 'जनपद' /- पशु पु॰ पशुतुल्य मनुष्य /- पाल पुं॰ राजा। पिशाच पुं॰ पिशाच की तरह क्रूर स्वभाव रखने वाला मनुष्य; अत्यधिक नीच मनुष्य /- पुंगव पु॰ श्रेष्ठ मनुष्य /- पुर पु॰ मृर्त्यलोक। प्रिय पु॰ नीम वृक्ष /-बलि स्त्री॰ मनुष्यों की बलि।—भक्षी (क्षिन् /- मुक् (ज) पु मनुष्यों को खाने वाला; राक्षस।— भू/भूमि स्त्री॰ भारतवर्ष/- मानिका /- मानिनी-स्त्री॰/पुरुषों की भाँति) दाढ़ी-मूँछ वाली स्त्री- माला स्त्री॰ मनुष्यों के खोपड़ियों की माला /- मेघ पु॰ यज्ञ पत्र जिसमें मनुष्यों की बलि दी जाती थी; मनुष्यों का सामूहिक संहार /- यान,-रथ पु॰ मनुष्यों द्वारा खींची जाने वाली सवारी (डोली, पालकी, रिक्शा इत्यादि)।- लोक पु॰ मर्त्य लोक, मनुष्य-लोक /- वध पु॰ मनुष्य हत्या ।- वर पु॰ श्रेष्ठ मनुष्य ।- वाहन पु॰ कुबेर; दे 'नरमान' दि॰ नरमान पर चलने वाला /- विष्णव पु॰ राक्षस /- वीर-पु॰ वीर पुरुष, योद्धा /- व्याघ्र पु॰ श्रेष्ठ पुरुष; एक जल जन्तु जिसका ऊपरी हिस्सा बाघ जैसा और निचला हिस्सा मनुष्य जैसा होता है /- शक्र पु॰ राजा /- शार्दूल पु॰ दे॰ नर व्याघ्र।-शृंग पु॰ एक अलोक कथन/मनुष्यों का सींग जिसका होना संभव है)।- संसर्ग पु॰ मानवसमाज / सख पु॰ नारायण /- सार पु॰ नौसादर।- सिंह पु॰ विष्णु का चौथा अवतार।- ज्वर पु॰

तीन दिवस तक रहने वाला एक विशेष ज्वर /- पुराण पु॰ भगवान नरसिंह का वर्णन करने वाला पुराण (भागवत)।-स्कंध पु॰ जनसमूह।- हत्या स्त्री॰ मनुष्यों की हत्या नर वध /- हरि पु॰ भगवान नरसिंह।— हरी पु॰ (हिन्दी का) एक छंद /- हरि पु॰ बड़ा हीरा।

नरई—संज्ञा स्त्री॰ भैंस, घोड़े आदि को खिलाने योग्य, तालाब में होने वाली, एक घास विशेष; घास आदि का पीला डंठल।

नरक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) धर्मशास्त्र (हिन्दू) के अनुसार वह स्थान जहाँ आत्माओं को अपने कुकृत्य का फल भोगने जाना पड़ता है; (ला॰) बहुत ही गन्दी जगह; वह स्थान जहाँ बहुत कष्ट हो; एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था /- कुंड पु॰ नरक में स्थित एक कुंड जिसमें यातना के लिए आत्माएँ छोड़ दी जाती थीं /- गति स्त्री॰ वह कर्म जो नरक में ले जाए।-गामी (मिन्) वि॰ नरक में जाने वाला /- चतुर्दशी, स्त्री॰ दिवाली के ठीक एक दिन पहले पड़ने वाली चतुर्दशी /- देवता पु॰ निर्ऋति /- भूमि-स्त्री यमपुरी की भूमि /- स्था स्त्री॰ वैतरणी नदी।

नरकचूर—संज्ञा पु॰ कचूर।

नरकट—संज्ञा पु॰ पतली लम्बी पत्तियों तथा पतले गाँठदार ठंडल वाला एक पौधा जो कलम, चटाई आदि बनाने के काम आता है।

नरकल, नरकुल—संज्ञा पु॰ नरकट।

नरकांतक—संज्ञा पु॰ (सं॰) (नरकासुर का नाश करने वाले) कृष्ण।

नरकामय—संज्ञा पु॰ (सं॰) प्रेत॰ नरक रूपी रोग।

नरकारि—संज्ञा पु॰ कृष्ण।

नरगिस—संज्ञा पु॰ (फा॰) हल्के पीले रंग का फूल जो उर्दू फारसी साहित्य में आँख का उपमान है।

नरगिसी—पु॰ एक विशिष्ट कपड़ा जिस पर नरगिस जैसे फूल टँके रहते हैं। वि॰ नरगिस का-उस जैसे रूप-रंग का।

नरदा—संज्ञा पु॰ नावदान।

नरमदा—स्त्री॰ दे॰ 'नर्मदा'।

नरम—वि॰ दे॰ नर्म।

नरमर—संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की कपास; सेमर की रुई; एक तरह का मुलायक कपड़ा।

नरमाई—स्त्री॰ दे॰ नरमी

नरमाना—क्रि॰ अ॰ मुलायम होना; शांत होना। क्रि॰ स॰ नरम करना, कम करना, शांत करना।

नरवाई—स्त्री॰ दे॰ 'नरई'

नरसिंगा–सिंधा संज्ञा पु. टेढ़े आकार का एक दाना जो फूँककर बनाया जाता है।

नरसों–अ. बीते हुए परसों के पहले या आने वाले के पीछे वाला दिन।

नरहड़, नरहर–संज्ञा स्त्री. पिंडली के ऊपरी भाग की लम्बी हड्डी।

नरांग–संज्ञा, पु. (सं.) दे. 'नरंग'

नरांतक–संज्ञा पु. सं. रावण का एक पुत्र।

नराच–संज्ञा, पु. वाण; तीर (सं.) एक कर्ण वृत्त।

नरार–संज्ञा, पु. राजा।

नराधम–संज्ञा, पु. (सं.) नीच मनुष्य।

नराधार–संज्ञा, पु. (सं.) शिव।

नरायन–संज्ञा, पु. (सं.) दे. 'नारायण'।

नरिअर, नरियर–संज्ञा, पु. दे. 'नारियल'।

नरियाना–क्रि. अ. चिल्लाना।

नरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्त्री; (फा.) बकरे/बकरी का रंगा चमड़ा; सुनारों की बाँस की बनी फुंकनी।

नरुवा–संज्ञा, पु. (ग्रा.) अनाज वाले पौधों का पोवा ठंडक।

नरेन्द्र–संज्ञा, पु. (सं.) राजा, विषदैद्य। मंडल पु. (प्रिसेज चैम्बर) ब्रिटिश शासन काल में स्थापित देशों राजाओं की परामर्श दात्री समिति।

नरेनर–संज्ञा, पु. (सं.) मनुष्य से भिन्न श्रेणी का प्राणी, जानवर।

नरेली–संज्ञा, पु. (सं.) छोटा नारियल; नारियल की खोपड़ी या उसका बना हुआ।

नरेश, नरेश्वर–संज्ञा, पु. राजा, नृप।

नरों–अ. पु. दे. 'नरसों'।

नरोत्तम–संज्ञा, पु. (सं.) श्रेष्ठ मनुष्य; विष्णु।

नर्क–संज्ञा, पु. (सं.) दे. 'नरक'।

नर्कुट, नर्कुटक–संज्ञा, पु. (सं.) नाक।

नर्त–वि. (सं.) नाचने वाला। पु. नाच, नर्तन।

नर्त्तकी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नाचने वाली, नटी।

नर्त्तन–संज्ञा, पु. (सं.) नाच, नृत्य।

नर्त्तना–क्रि. अ. दे. (सं. नर्त्तन) नाचना।

नर्द–संज्ञा, स्त्री. (फा.) चौपड़ की गोट।

नर्दन–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भयंकर शब्द, नाँदना (दे.)। वि. **नर्दित**।

नर्म–संज्ञा, पु. (सं. *नर्मन्*) दिल्लगी, हँसी, परिहास, हँसी ठट्ठा, रूपक (नाटक) का एक भेद (नाटय.)। वि. (हि.) नरम।

नर्मद–संज्ञा, पु. (सं.) भाँड़, मसखरा।

नर्मदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक नदी, नर्मदा।

नर्मदेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नर्मदा नदी से प्राप्त शिव लिंग या मूर्ति।

नर्मद्युति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नाटक का एक अंग (नाट्य.)।

नल–संज्ञा, पु. (सं.) नरकट, कमल, निपध देश के राजा वीरसेन के पुत्र। राम दल का एक बन्दर। यौ. **नल-नील**। संज्ञा, पु. (सं. नाल) लोहे का पोला गोल लम्बा खंड, पनाला, नाली, बंबा, पाइप (अं.)।

नलकूबर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबेर के पुत्र।

नलसेतु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नख-निर्मित वह पुल जिससे राम सेना लंका गई थी।

नला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नल*) पेशाब उतरने की नली, नल।

नलिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नली, चोंगा, एक गंध भव्य, एक पुराना हथियार, नाल, तरकश, तूणीर, भाषा।

नलिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कमलनी, कमल, अधिक कमल उत्पन्न होने वाला देश, नदी, एक छंद (पिं.)

नली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नल का स्त्री. अल्पा.*) छोटा या पतला नल, छोटा चोंगा, घुटने के नीचे का भाग, पैर की पिंडुली, बन्दूक की नाल।

नलुआ–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नल=गला*) छोटा नल या चोंगा।

नव–वि. (सं.) नूतन, नवीन, नया, नौ की संख्या, 9।

नवक–संज्ञा, पु. (सं.) नौ वस्तुओं का समूह।

नवकुमारी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) नवरात्रि में पूजनीय नौ कुमारी कन्यायें।

नवग्रह–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नौ ग्रह हैं।

नवछावरि, न्यौछावर–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *निछावर*) उतार, उतारा, बारा फेरा, उत्सर्ग, कोई वस्तु किसी के ऊपर उतार कर किसी को देना।

नवदुर्गा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) नौ देवी, शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्री,

महागौरी, सिद्धिदा।

नवधाभक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) नौ तरह की भक्ति, श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, चंदन, सख्य, दास्य, आत्म-निवेदन, **नौधा भगति**–(दे.)।

नवन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नमन*) नमस्कार, प्रणाम, झुकना, नम्र होना।

नवना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं. *नमन*) नम्र होना, झुकना, लचना, प्रणाम करना।

नवनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नवना*) दीनता, नम्रता, झुकने का भाव।

नवनीत, नौनीत (दे॰)–संज्ञा, पु॰ (सं.) मक्खन, नैनू।

नवपदा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) नौ चरण वाला एक छंद (पिं.)।

नवम–वि॰ (सं.) नवीं। स्त्री॰ **नवमी, नौमी** (दे.)।

नवमल्लिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) चमेली, निवाड़ी, मालती।

नवमालिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) नवमालिनी छन्द (पिं.)।

नवमी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) नौमी तिथि।

नवयज्ञ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) वह यज्ञ जो नवीन यज्ञ के निमित्त किया जाता है।

नवयुवक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *नवयुवक*) तरुण, नौजवान। स्त्री॰ नवयुवती।

नवयुवा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (*सं॰ नवयुवक*) तरुण, नौजवान।

नवयौवना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) नौजवान स्त्री, **मुग्धानायिका**।

नवरंग–वि॰ यौ॰ (सं॰ *नव+रंग हि.*) सुन्दर, नए ढंग का, नवेला, नया रंग।

नवरंगी–वि॰ यौ॰ (हि॰ *नवरंग+ई प्रत्य.*) हँसमुख, खुश मिजाज, नए ढंग वाला, प्रति दिन नवीन आनन्द करने वाला।

नवरत्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) नौ जवाहिर. जैसे–हीरा, मोती, मानिक, पन्ना, गोमेद-मूँगा, पुखराज, नीलम, लहसुनिया। विक्रमादित्य की सभा के नवरत्न–कालिदास, धन्वंतरि, छपबाक, अमरसिंह, शंकु, बैतालमह, वररुचि, घटखर्पर, वाराह मिहिर, नवरत्नों का हार या माला।

नवरस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) काव्य के नवरस। शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत।

नवरात्रि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) **नौरात** (दे.) नवदुर्गा, नौदुर्गा, क्वार और चैत-सुदी प्रतिपदा (परिवा) से नवमी तक की नौ रातें–जिनमें दुर्गा देवी के नव रूपों की पूजा होती है।

नवल–वि॰ (सं.) नया, नवीन, नूतन, सुन्दर, युवा, स्वच्छ, उज्वल।

नवलअनंगा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) एक प्रकार की मुग्धा नायिका, नव यौवना।

नवलकिशोर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) श्री कृष्ण।

नवल वधू–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) एक मुग्धा नायिका।

नवला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) जवान स्त्री, युवती।

नवशिक्षित–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) नोपढ़ा, नौ सिखिया, आधुनिक शिक्षा-प्राप्त।

नवसत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *नव+सत=सप्त*) सोलह शृंगार। वि॰ (दे.) सोलह।

नवसर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *नौ+सूक सं.*) नौ जरों या लड़ों का हार या माला। वि॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ नम+वत्सर) नौवुधा, नौ जवान।

नवससि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *नव शशि*) नूतन चन्द्रमा, नया चाँद, द्वितीया का चन्द्रमा।

नवाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नवना*) नव होने का भाव। वि॰ (दे.) नया, नूतन, नवीन।

नवागत–वि॰ यौ॰ (सं.) नवीन आगत, नया आया हुआ।

नवाज, निवाज, नेवाज–वि॰ दे॰ (फा.) दवा या कृपा करने वाला।

नवाजना–क्रि॰ स॰ दे॰ (फा॰ *नवाज*) दया या अनुग्रह दिखलाना, कृपा या दया करना, निवाजना, नेवाअना (दे.)।

नवाड़ा–संज्ञा, पु॰ (दे.) एक तरह की नाव।

नवाढिया– वि॰ (दे.) नया, अनुभव-हीन।

नवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *नवन*) झुकाना, लचाना, प्रणाम करना।

नवान्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) फसल का नूतन अन्न, नया अनाज।

नवाब–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *नव्वाब*) बादशाह का स्थानापन्न, सूबेदार, मुसलमानों की पदवी। वि॰ बड़ी शान शौकत और अमीरी डाट-बाट में रहने वाला।

नवायी–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नवाब+ई प्रत्य.*) नवाब का कार्य पद या दशा, राजत्व काल, नवाबों का सा शासन,

बहुत अमीरी, **अंधेर** (व्यंग्य)।

नवासा–संज्ञा, पु. (फा.) लड़की का लड़का, दौहित्र। स्त्री. **नवासी**।

नवाह्न–संज्ञा, पु. (सं.) किसी पवित्र पुस्तक का पात्र जो नौ दिनों में पूरा हो, **नवान्हिक**।

नवीन–वि. (सं.) नया, नूतन, अपूर्व, अनोखा। स्त्री. नवीना–नौजवान।

नवीनता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नयापन, नूतनता, नव्यता।

नवीस–संज्ञा, पु. (फा.) लेखक, लिखने वाला, जैसे-**नकलनवीस**।

नवीसी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) लिखाई, लिखने की क्रिया या भाव।

नवेद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निवेदन*) निमंत्रण, न्योता, बुलौआ, निमंत्रण-पत्र।

नवेला–वि. दे. (सं. *नवल*) नया, नूतन, नवीन, जवान, तरुण। स्त्री. नवेली।

नवोढा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हाल की ब्याही, नववधू, नौजवान, नवयौवना, समान लज्जा और शील वाली नायिका।

नव्य–वि. (सं.) नूतन, नवीन, नया। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **नव्यता**।

नशना–क्रि. अ. दे. (सं. *नाश*) नष्ट या नाश होना, **नसना** (दे.)।

नशा–संज्ञा, पु. (फा. *वा भ.*) मादक दशा। **मु. नशा किरकिरा हो जाना**–नशे का मजा मिट जाना। **आँखों में नशा छाना**–मस्ती चढ़ना। **नशा जमना**–अच्छा नशा होना। **नशा हिरन होना**–किसी आपत्ति से नशा बिलकुल उतर जाना। मादक वस्तु। यौ. **नशापानी**–मादक वस्तु और उसका सारा सामान, नशे की सामग्री। धन विद्या आदि का घमंड, मद, गर्व। **मु. नशा उतारना** (उतरना)–अहंकार मिटाना (मिटना)।

नशाखोर–संज्ञा, पु. (फा.) नशा सेवी, नशेबाज, **नसेड़ी** (आ.)।

नशाना–क्रि. स. दे. (सं. *नाश*) **नसाना** (दे.) नष्ट करना, **बिगाड़ना**।

नशीन–वि. (फा.) बैठने वाला।

नशीनी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) बैठने की क्रिया या भाव, बैठक। जैसे-**तख्त-नशीनी**।

नशीला–वि. (फा. *नाश+ईला प्रत्य.*) मादक, नशोत्पादक। स्त्री. (दे.) **नशीली। मु. नशीली आँखें**–मदमस्त आँखें, वे आँखें जिनमें मस्ती हो।

नशेबाज़–संज्ञा, पु. (फा.) मद्य या मादक वस्तु सेवी, **नसेड़ी** (आ.)।

नश्तर–संज्ञा, स्त्री. पु. (फा.) **नस्तर** (दे.) छोटा और तेज चाकू या छुरी, जिससे फोड़े आदि चीरे जाते हैं। **मु. नश्तर लगाना**–चीढ़ना, टीका लगाना।

नश्वर–वि. (सं.) नष्ट होने वाला, नाश होने योग्य। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **नश्वरता**।

नषतल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नक्षत्र*) नक्षत्र, नछत्र, नखत (आ.)।

नष्ट–वि. (सं.) जो नाश हो गया हो, जो दिखाई न दे, नीच, व्यर्थ, प्रस्तारादि की एक क्रिया (पिं.)।

नष्टता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नष्ट होने का भाव, दुराचारिता, व्यर्थता।

नष्टबुद्धि–वि. यौ. (सं.) मूर्ख, मूढ़।

नष्टभ्रष्ट–वि. यौ. (सं.) जो बिलकुल नाश, खराब या बरबाद हो गया हो।

नसंक–वि. दे. (सं. *निःशंक*) निडर, निर्भय, बेधड़क, **निसंक** (दे.)।

नस–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्नायु*) नाड़ी, रग। **मु. सूखी नसों का रक्त**–प्राण-प्रिय। **मु. नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना**–रग में दर्द होना। **नस नस में**–सारे शरीर में। **नस नस फड़क उठना**–अति प्रसन्न होना। **(सूखी) नसों में रक्त दौड़ना**–जोश या नया जीवन आना।

नसतरंग–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *नस+तरंग*) जैसा एक बाजा।

नसतालीक–संज्ञा, पु. (अ.) स्वच्छ और सुन्दर लिपि या लेख; अरबी लिपि में लेखन।

नसना–क्रि. अ. दे. (सं. *नशन*) नाश या नष्ट होना, खराब या बरबाद होना। बिगड़ जाना। क्रि. वि. दे. (हि. नटना) भागना। **प्रे. रूप–नसवाना**।

नसल, नस्ल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) जाति, वंश, कुल, औलाद।

नसवार–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नास+धार प्रत्य.*) नास, सुँधनी, पिसी तमाकू।

नसाना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *नाश*) नष्ट, खराब या बरबाद

हो जाना, बिगड़ जाना। क्रि. स. (दे.) नष्ट करना, बिगाड़ना। नसाना (प्रा.)।

नसावना–क्रि. अ. दे. (सं. *नाश*) बिगाड़ना, खराब या नष्ट करना।

नसीनी, नसेनी-नसैनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निःश्रेणी*) सीढ़ी।

नसीब, नसीबा–संज्ञा, पु. (अ.) भाग्य, प्रारब्ध, तकदीर, किस्मत। **मु. नसीब होना**–मिलना, प्राप्त होना। **नसीब जागना (फूटना)**–भाग्य उदय (मंद) होना। संज्ञा, पु. (दे.) अभाग्य, दुर्भाग्य।

नसीबवर–वि. (अ.) भाग्यवान।

नसीहत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) सीख, शिक्षा।

नसूर, नासूर–संज्ञा, पु. (दे.) पुराना घाव, नस पर का घाव।

नसूढ़िया–वि. (दे.) अमंगलकारी, बुरा, मनहूस।

नस्ता–संज्ञा, स्त्री. (दे.) नाक का छेद, नथुना।

नस्य–संज्ञा, पु. (सं.) सूँघनी, वाश।

नस्वर–वि. दे. (सं. *नश्वर*) नाशवान।

नहँ, नहां–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नख*) नाखून। यौ. **नँहै-विष**।

नहछू, नहँछुर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नसक्षौर*) व्याह में वर के नाखून काटने की एक रीति या रस्म, **नाखुर** (आ.)।

नध्न–संज्ञा, पु. (दे.) पुर खींचने की मोटी रस्सी, नार (आ.)। संज्ञा, पु. (दे. दहना) नाँधना, जोतना।

नहना–क्रि. स. दे. (हि. *नाधना*) जोतना, माधना, काम में लगाना।

नहर–संज्ञा, स्त्री. (फा.) वह कृत्रिम जल धारा जो किसी नदी या झील से खेतों की सिंचाई के लिए निकाली गई हो।

नहरन, नहरनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नख+हरणी*) नाखून काटने का हथियार, **नहन्नी** (आ.)।

नहरुआ–संज्ञा, पु. (दे.) एक रोग जिसमें घाव से सूत जैसे कीड़े निकलते हैं।

नहलाई, नहवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नहलाना*) नहलाने का भाव या क्रिया या मजदूरी, **हनवाई, अन्हवाई** (आ.)।

नहलाना–क्रि. स. (हि.) स्नान कराना, **नहुवाना, हनवाना, अन्हेवाना** (आ.)।

नहसुत–क्रि. स. दे. (*नखसुत*) नाखून का चिन्ह या नख रेखा।

नहान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्नान*) नहाने की क्रिया या पर्व, **अन्हान, न्हान, हनान, आसनान** (ग्रा.) स्नान।

नहाना–क्रि. अ. दे. (सं. *स्नान*) स्नान करना, जल से शरीर धोना, या साफ करना। **मु. दूधों नहाना, पूतों फलना**–धन-कुटंब से परिपूर्ण या भरा-पूरा होना। तर हो जाना, अन्हाना, हनाना। स. प्रे. रूप–**नहवाना**।

नहार–वि. दे. (फा. *मि., सं. निराहार*) बासी मुँह, बिना आहार किया।

नहारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (फा. *नहार*) भोर का जलपान।

नहीं, नाहीं–अव्य. दे. (सं. *नहि*) निषेध या अस्वीकार-सूचक अव्यय, न, मत, ना।

नहीं तो–जब कि ऐसा न हो, अन्यथा। **नहीं सही (न सही)**–यदि ऐसा न हो तो कुछ हानि नहीं है।

नहुष–संज्ञा, पु. (सं.) एक राजा, एक नाग, विष्णु।

नहूसत–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ.) अशुभ लक्षण, उदासीनता, अशकुन, मनहूसी।

नांईं–अव्य. (दे.) समान, सदृश, तरह।

नांउँ, नांऊँ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नाम*) नाम। **नाँव** (दे.)। यौ. नाँव-गाँव।

नाँगा–वि. दे. (सं. *नग्न*) नंगा, नग्न। संज्ञा, पु. (हि. नंगा) नंगे रहने वाले नागा, साधु, दिगंबर।

नाँघना–क्रि. स. दे. (सं. *लंघन*) लाँघना, कूद कर इधर से उधर जाना।

नाँठना–क्रि. अ. दे. (सं. *नष्ट*) नष्ट होना, बिगड़ना।

नाँद–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नंदक*) हौदा, मिट्टी का एक बड़ा बरतन, पशुओं के चारा-पानी देने का पात्र।

नाँदना–क्रि. अ. दे. (सं. *नाद*) गर्जना, शब्द करना, छींकना, ललकारना। क्रि. अ. दे. (सं. नंदन) प्रसन्न होना, दीपक का गुझने के पूर्व भभकना।

नाँदिया–संज्ञा, पु. (दे.) शिव जी का नाँदी बैल।

नाँदी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) समृद्धि, बढ़ती, उदय, अभ्युदय, मंगलाचरण (नाट्य.)। संज्ञा, पु. (सं.) नांदी, शिव-गण, बैल। यौ. **नांदीपाठ**।

नाँदीमुख–संज्ञा, पु. (सं.) बालक के जन्म समय का श्राद्ध, जातकर्म। यौ. **नांदीमुख श्राद्ध**।

नांदीमुखी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्ण वृत्त (पिं.)।

नाँव–संज्ञा, पु. दे. (सं. नाम) नाम।

ना–अव्य. (सं.) नहीं, नहिं, मत।

नाइ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नौ*) नाव, नैय्या, नौका। पू. का. दे. (हि. नवाना) **नाव,** नवाकर, फैलाकर।

नाइक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नायक*) **नायक,** स्वामी। स्त्री. (दे.) नाइका–नायिका।

नाइत्तिफाकी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) फूट, विरोध, मतभेद।

नाइन–संज्ञा, स्त्री. (हि. *नाई*) नाई या नाई जाति की स्त्री, **नायनि, नाइनि** (आ.)।

नाइब–संज्ञा, पु. दे. (अ. *नायब*) नायब।

नाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (स. *न्याय*) तरह, समान, तुल्य।

नाई–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नापित*) नाऊ, नउवा, **नौवा** (आ.) बाल बनाने वाला।

नाउँ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नाम*) नाम, **नाँव** (आ.)।

नाउ–संज्ञा, स्त्री. (सं. नौ) नाव, नौका।

नाउन, नाउनि–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नाऊ*) नाइन, **नउनिया** (आ.)।

नाउम्मेद–वि. (फा.) निराश। संज्ञा, स्त्री. (फा.) नाउमेदी।

नांकद–वि. दे. (फा. *ना+ कंदा*) बिना सिखाया हुआ वैल या घोड़ा आदि, अशिक्षित, बिना सिखाया, बिना काढ़ा, अल्हड़।

नाक–संज्ञा, स्त्री. दे. (स. *नक*) नासिका, नाला। मर्यादा, प्रतिष्ठा। यौ. **नाक घिसनी**-विनती, गिड़गिड़ाहट। **नाक रगड़ना**–बड़ी विनय के साथ आग्रह या प्रयत्न करना, दीनता दिखाना, आधीन होना। **मु. नाक कटना**–प्रतिष्ठा या इज्जत मिटना। **नाक रहना (जाना)**–प्रतिष्ठा या मर्यादा रहना (जाना)। **नाक-कान काटना**–कठिन सजा या दंड देना। **किसी की नाक का बाल**–घनिष्ठ मित्र या बड़ा मंत्री, सलाही, सदा का साथी। **नाक चढ़ना (चढ़ाना)**–रोष या क्रोध आना (करना), त्योरी चढ़ना। **नाक लम्बी होना (करना)**–बढ़ी शान या प्रतिष्ठा होना। **नाकों चने चवाना (चवाना)** बहुत ही तंग या हैरान करना (होना)। **नाक-भौं चढ़ाना या सिकोड़ना**–क्रोध या अप्रसन्नता प्रगट करना, घिनाना, चिढ़ना, ना पसंद करना। **नाक में दम करना या लाना (होना, रहना)**–बहुत तंग या हैरान करना (होना), बहुत सताना। **नाक रगड़ना (रगड़ाना)**–बहुत विनती करना (कराना) या गिड़गिड़ाना, मिन्नत करना। **नाकों दम आना (होना)**–बहुत तंग या परेशान होना। **नाक सिकोड़ना**–घिनाना, अरुचि प्रगट करना। दिमाग का मल जो नाक से निकलता है, **रेंट, नेटा** (आ. प्रान्ती.)। **यौ. नाक सिनकना (छिनकना)**–नाक का मल साफ करना। शोभा या प्रतिष्ठा की चीज, मान प्रतिष्ठा। **मु. नाक रख लेना**–प्रतिष्ठा गा इज्जत रख लेना। संज्ञा, पु. दे. (सं. नाक) मगर, घड़ियाल। संज्ञा, पु. (सं.) स्वर्ग वैकुंठ, आकाश, हथियार की एक चोट।

नाकड़ा–संज्ञा, पु. दे. (दि. *नाक+ ड़र प्रत्य.*) नाक पक जाने का एक रोग, **नाका** (दे.)।

नाकदर–वि. (फा. *ना+ अ. कद्र*) प्रतिष्ठा या इज्जत-रहित। संज्ञा, स्त्री. **नाकदरी**।

नाकमा*†–क्रि. स. दे. (सं. *लंघन*) फाँदना, उल्लंघन करना, लाँघना, लड़ जाना, हरा देना, **डाँकना** (आ.)।

नाकबुद्धि–वि. यौ. (हि. *नाक+ बुद्धि सं.*) कमअयक, मंदनति।

नाका–संज्ञा, पु. दे. (हि. *ताकना*) रास्ते का आखीर, मार्ग का छोर, घुसने का द्वार, प्रवेशद्वार, मुहाना, मार्ग का आरम्भ स्थान। **मु. नाका छेंकना या बाँधना**–आने-जाने का रास्ता बंद करना या रोकना, कर या महसूल उगाहने की चौकी, थाने की चौकी, सुई का छेद।

नाकाबंदी, नाकेबंदी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि. *नाका+ बंदी फा.*) किसी मार्ग से आने-जाने की रोक या रुकावट, प्रवेश-मार्ग बंद करना।

नाकिन–संज्ञा, स्त्री. (दे.) वह स्त्री जो नाक के स्वर बोले, नकस्वरी, **नकनकही** (आ.)।

नाकिस–वि. (अ.) खराब, बुरा, दोषपूर्ण।

नाकुली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नकुल,* सर्पविष-नाशक एक जड़ी।

नाकेदार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नाका+ फा. दार*) नाके या फाटक के सिपाही , कर या महसूल लेने वाला अफसर। दि. जिसमें छेद हो।

नाखना–क्रि. स. दे. (सं. *नष्ट*) नाश करना, बिगाड़ना, खराब करना, फैंकना, गिराना। क्रि. स. दे. (हि. ताकना)

उल्लंघन करना।

नाखुना, नाखूना–संज्ञा, पु॰ (फा॰) एक नेत्र-रोग विशेष।

नाखुश–वि॰ (फा॰) नाराज, प्रसन्न। संज्ञा, स्त्री॰ **नाखुशी।**

नाखून–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ नाखुन) नख, नहँ। वि॰ **नाखूनी**– बहुत पतली रेखादार।

नाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साँप, सर्प। स्त्री॰ **नागिन। मु॰ नाग खिलाना (पालना)**–ऐसा कार्य जिसमें मरने का भय हो (शत्रु पालना)। पाताल के देवता, एक देश, पर्वत, हाथी, ढोंगा, धीसा, नागकेसर, पास, एक वायु बादल, आठ की संख्या, बुरा मनुष्य, एक जाति।

नागअरि, नागारि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) *नाग-शत्रु*, गारुड़, सिंह।

नागकन्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) नाग जाति की बेटी जो अति सुन्दरी होती है।

नगकेशर, नागकेसर, नागकेसरी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नाग+केशर*) एक पोधा जिसके फूल औषधि के काम आते हैं, नागचंपा।

नागगर्भ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सिंदूर।

नाग चम्पेय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नागकेसर।

नागज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेंदुर, रंग।

नागझाग*†–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *नाग+झाग*) अफीम।

नागदंत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हाथी दाँत खूँटी।

नागदंतक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) घर में लग खूँटे, ताला वाला।

नागदंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) इंद्र वारुणी।

नागदमन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) *नागदौन* (दे॰ पौध.)।

नागदमनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटा नागदौना।

नागदौन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नागदमन*) एक छोटा पहाड़ी पौधा जिसके पास साँप नहीं आता, नागदौना।

नागनग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गजमोती, (दे॰) गज मुक्ता।

नाग पंचमी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) श्रावण शुक्ल पंचमी, गुड़िया (आ॰)।

नागपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सर्पराज, बासुकी, हाथी, राज, ऐरावत, नागेन्द्र।

नागपाश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक तंतु–विशेष जिससे वैरियों को बाँध लेते थे (प्राचीन)।

नाग-फनी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *नाग+फन*) एक औषधि, कान का एक गहना।

नागफाँस–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *नाग+पाश*) नाग-पाश, नाग-फनी।

नाग-बला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गँगेरन (औष॰)।

नाग-बेल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *नग बल्ली*) पान, पान की बेल।

नागभाषी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पाताल की बोली, प्राकृत भाषा।

नाग-माता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नागों की माँ कद्रू जो कश्यप की स्त्री है।

नागर–वि॰ (सं॰) शहर या नगर-वासी। संज्ञा, पु॰ (सं॰) नगर-वासी चतुर मनुष्य, सभ्य, निपुण, शिष्ट, गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। स्त्री॰ **नागरी।**

नागरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शहरातीपन, सभ्यता, चतुरता।

नागर-बेल–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *नाग बल्ली*) पाग, नागर **बेली**, बल्ली।

नागर-मुक्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नागर-मोथा।

नागर-मोथा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नागर मुक्ता*) एक जड़ी (औष॰)।

नागराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शेषनाग, ऐरावत, नागेश, एक छंद (पि॰)।

नागरिक–वि॰ (सं॰) नगर का, नगर-वासी, शहराती, सभ्य, चतुर।

नागरिकता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चतुरों के द्वारा संग्रह होने की दशा, चतुरता, शहरातीपन, शहर या देश में रहने का प्रमाण।

नागरिपु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नकुल, न्योला, मोर, गरुड़, सिंह, नागारि।

नागरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नगर-निवासिनी स्त्री, चतुर, प्रवीण स्त्री, देवनागरी लिपि या भाषा, हिन्दी।

नागलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाताल।

नाग-वंश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक जाति की एक शाखा जिसका राज्य भारत में कई जगह था।

नागवल्ली, नागवल्लरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पान, नागरबेल, नागबेल।

नागवार–वि॰ (फा॰) असह्य, अप्रिय।

नागा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नग्न*) नंगा। संज्ञा, पु॰ (अ॰ नाग) आसाम की पहाड़ी के जंगली मनुष्य, उनकी पहाड़ी।

संज्ञा, पु. दे. (सं. नागः) अन्तर, बीच, गैरहाजिरी।

नागाहा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) नागदौना, मरुधा (प्रान्ती.) नागदमन।

नागारि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) गरुड़ नकुल, न्यौला, मोर।

नागार्जुन–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक प्राचीन बौद्ध महात्मा।

नागाशन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) गरुड़, मोर, सिंह।

नागिन-नागिनि-नागिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *नाग*) साँपिनी, साँपिन, नाग की स्त्री, मनुष्य आदि के पीठ की लम्बी लोमपंक्ति (अशुभ)।

नागेन्द्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) बड़ा साँप, शेषनाग, वासुकी, ऐरावत, **नागेश, नागेश्वर**।

नागेसर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नागकेशर*) नागकेशर, नागेश्वर, शेष।

नागोद–संज्ञा, पु॰ (दे.) छाती का कवच।

नागौरी–वि॰ दे॰ (हि॰ *नागौर*) नागोर शहर का बैल। वि॰ स्त्री॰ (हि.) नागौर-सम्बन्धी, ग्राम का सरपंच।

नाघना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ लंघन) लाँघना, फाँदना, डाँकना।

नाच–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नाच*) नृत्य, नाव्य। **मु॰ नाच काछना**–नाचने को तैयार होना। **(कठपुतली का) नाच नाचना (तारों पर)**–किसी के आधीन हो उसके इशारे पर कार्य करना। **नाच दिखाना**–उछलना, कूदना, हाथ पाँव हिलाना, अनोखा आचरण करना। **नाच नचाना**–मनमाना कार्य कराना, तंग या हैरान करना। **नंगा नाच नाचना**–निर्लज्जता का कार्य करना। खेल, कर्म।

नाचकूद–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *नाच+कूद*) खेल-कूद, **नाच-तमाशा,** प्रयत्न, आयोजन ढोंग, क्रोध से उछलना।

नाचघर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि.) नृत्यशाला।

नाचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ नाच) नृत्य करना, थिरकना, घूमना, चक्कर लगाना। **मु॰ सिर पर नाचना**–ग्रसना, घेरना, निकट या पास आना। **आँख के सामने नाचना**–प्रत्यक्ष के समाज दिल में जान पड़ना। दौड़ना-धूपना, हैरान होना, काँपना, थर्राना, क्रोध से उछल-कूद मचाना, बिगड़ना।

नाचमहल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *नाच+अ॰ महल*) नाच-घर, नृत्यशाला।

नाचरंग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि.) जलसा, आमोद-प्रमोद।

नाचार–वि॰ (फा.) लाचार, मजबूर, असमर्थ, विवश, निरुपाय। संज्ञा, स्त्री॰ **नाचारी**।

नाचीज़–वि॰ (फ़ा.) पोच, तुच्छ।

नाज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *अनाज*) अनाज, अन्न। यौ॰ **नाजमंडी**।

नाज़–संज्ञा, पु॰ (फा.) नखरा, चोचला। **मु॰ नाज उठाना**–नखरा या चोचला सहना, गर्व, घमंड।

नाजनी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा.) सुन्दरी स्त्री।

नाजायज़–दि॰ (अ.) अयोग्य, अनुचित।

नाज़िम–वि॰ (स.) प्रबन्ध या बन्दोबस्त करने वाला। संज्ञा, पु॰ (अ.) सूबेदार।

नाज़िर–संज्ञा, पु॰ (भ.) देख-भाल करने वाला, निरीक्षक, मीर मुंशी, ख्वाजा, रंडियों का दलाल।

नाजुक–वि॰ (फा.) सुकुमार, कोमल, नरम, पतला, सूक्ष्म, कमजोर। यौ॰ **नाजुक मिजाज**–जो थोड़ी सी भी तकलीफ न सह सके, जोखों का कार्य।

नाट–संज्ञा, पु॰ (सं.) नाच, नृत्य, नकल, स्वाँग, एक देश, उस देश का निवासी।

नाटक–संज्ञा, पु॰ (सं.) लीला या अभिनय करने वाला, नट, रंगशाला में घटनाओं का प्रदर्शन, वह पुस्तक जिसमें स्वाँग के द्वारा चरित्र दिखाया गया हो, दृश्य-काव्य, रूपक। यौ॰ **नाटककार**।

नाटकशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) नाटक होने का ठौर या स्थान, नाट्यशाला।

नाटकाषतार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) एक नाटक के बीच में दूसरे का आविर्भाव।

नाटकिया-नाटकी–वि॰ दे॰ (हि॰ *नाटक*) नाटक का अभिनय करने वाला।

नाटकीय–वि॰ (सं.) नाटक-सम्बन्धी।

नाटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ नाट्य–*बहाना*) प्रतिज्ञा तोड़ देना, वादा पूरा न करना। क्रि॰ स॰ (दे.) नामंजूर या अस्वीकार करना।

नाटा–वि॰ दे॰ (सं॰ *नत–नीचा*) छोटे डील-डौल का, यापन, **बौना**। स्त्री॰ **नाटी**।

नाटिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) दृश्य काव्य जिस में 4 ही अंक होते हैं (नाट्य.) नाटी।

नाट्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नटों का कार्य, नाच-गान और बाजा, अभिनय, स्वाँग।

नाट्यकला–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अभिनय-कला। यौ॰ **नाट्य-कौशल**।

नाट्यकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नाटक करने वाला, नट।

नाट्यमंदिर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नाट्य शाला, रंगशाला, प्रेक्षागृह।

नाट्य रासक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह रूपक या दृश्य काव्य जिसमें एक ही अंक हो।

नाट्यशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह स्थान जहाँ पर नाटक का खेल या अभिनय किया जाये।

नाट्यशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नाच-गाना और अभिनय की विद्या की पुस्तक, भरत मुनि-प्रणीत एक प्राचीन ग्रंथ।

नाट्यालंकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाटक में रोचकता या सौंदर्य बढ़ाने वाला विधान।

नाट्योक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) नाटकों में विशेष पुरुषों के लिए संबोधन, जैसे–(पति के लिए) आर्य-पुत्र।

नाट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नष्ट*) ध्वंस, नाश, अभाव।

नाटना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *नष्ट*) *नाश, नष्ट या ध्वस्त* करना, **नठाना** (आ॰)।

नाठा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नष्ट*) जिसके वारिस या दायभागी न हो, अकेला, असहाय।

नाटिया, नठिया–वि॰ (दे॰) नष्टी, (सं॰) नष्ट, दुष्ट, **नठैल** (आ॰)

नाड़–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *नाल*) गददन, ग्रीवा।

नाड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नाड़ी*) इजारबंद, नीवी, देवताओं को चढ़ाने का रंगीन गंडेदार तागा।

नाड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नली, धमनी, रग। भाव॰। **मु॰ नाड़ी चलना**–हाथ की नाड़ी का हिलना, बोलना। **नाड़ी छूट जाना**–नाड़ी का न चलना। **नाड़ी देखना**–नाड़ी से रोगी की दशा का विचार करना। घाव या नासूर का छेद, बंदूक की नली, समय का भाव जो छे क्षण का होता है।

नाड़ी-चक्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरीर का वह स्थान जहाँ से नाड़ियाँ या रगें सब अंगों-प्रत्यंगों को जाती हैं।

नाड़ी-मंडल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विषुवत रेखा, देह का नाड़ी समूह।

नाड़ी-वलय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समय जानने का एक यंत्र।

नात–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ जाति) सम्बन्धी, नाते या रिश्तेदार, सम्बन्ध, रिश्ता। **नातो**–(ब्र॰)। यौ॰ (प्रा॰) **नातगोत**।

नातर-नातरु–अव्य॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ ना+तर, तरु) नहीं तो और नहीं तो, अन्यथा,

नातवाँ–वि॰ (फा॰) निर्बल, कमजोर, हीन।

नाता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *जाति*) जाति-सम्बन्ध, लगाव, सम्बन्ध, रिश्ता।

नाताकत–वि॰ (फा॰ *न+ताकत अ॰*) निर्बल, हीन, क्षीण। संज्ञा, स्त्री॰ **नाताकती**।

नाती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *जप्त*) लड़के का लड़का। स्त्री॰ **नतिनी, नातिन**।

नाते–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *नाता*) सम्बन्ध से हेतु, वास्ते, लिए।

नातेदार–वि॰ दे॰ (हि॰ *नाता+दार फा॰*) सगा, सम्बन्धी, रिश्तेदार। (संज्ञा, स्त्री॰ नातेदारी)।

नाथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वामी, मालिक, प्रभु, पति। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ नाथना) नाथने का भाव या क्रिया, पशुओं की नकेल या नाक की डोरी।

नाथना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *नाथ्य*) पशुओं की नाक छेद कर उसमें रस्सी डालना, नत्थी करना, लड़ी जोड़ना।

नाथद्वारा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ नाथद्वार) राजस्थान में वल्लभ सम्प्रदाय का एक स्थान।

नाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आवाज, शब्द, संगीत, वर्णोधारण-स्थान, अर्ध चन्द्र। यौ॰ **नादविद्या**–संगीत-शास्त्र।

नादन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नदन*) शब्द या ध्वनि करना, गरजना।

नादना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *नदन*) बाजा बजाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) बजना, गरजना, चिल्लाना, शब्द करना। क्रि॰ अ॰ (सं॰ नन्दन) लहलहाना, लहकना, प्रफुल्लित होना, आरम्भ करना।

नादबिंदु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बिन्दु-सहित अर्ध चन्द्र, योगियों के ध्यान करने का तत्व।

नादली–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) संगयशब की चौकोर टिकिया जो यंत्र के तुल्य बाँधी जाती है।

नादान–वि॰ (फा॰) मूर्ख, मूढ़, अजान, अज्ञान, अनारी, बेसमझ।

संज्ञा, स्त्री॰ नादानी।

नादार–वि॰ फा॰ (संज्ञा, स्त्री॰ **नादारी**) कंगाल, दरिद्र, निर्धन, बुरा, नदार (आ॰)

नादित–वि॰ (सं॰) *ध्वनित, क्वणित,* **निनादित**–*संजात शब्द,* **शब्दयुक्त**।

नादिम–वि॰ (अ॰) शरमिंदा, लज्जित।

नादिया–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *नंदी*) नंदी, शिवगण, वह बैल जिसे साथ लेकर लोग भीख माँगते हैं।

नादिर–वि॰ (फा॰) अनोखा, अद्‌भुत, अजीब।

नादिरशाही–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) बड़ा अन्याय, अंधेर, अत्याचार। वि॰ बड़ा कठोर या उग्र।

नादिहंद–वि॰(फा॰) न देने वाला जिससे धन वसूल न हो सके। **नादेहन्द** (दे॰)।

नादी–वि॰ (सं॰ *नादिन्*) स्त्री॰ **नादिनी**। ध्वनि या शब्द करने वाला, बजने वाला।

नाधना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *नद्ध*) जोतना, जोड़ना, सम्बन्ध करना, गूंथना या गूंधना, प्रारम्भ करना या ठानना।

नाधा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पानी निकलने का मार्ग, बैलों के गले में बाँधने की रस्सी।

नान–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) रोटी, चपाती, वि॰ (दे॰) वारीक, महीन, छोटा।

नानक–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सिक्ख संप्रदाय के आदि गुरु।

नानक-पंथी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ नानक+पंथी) सिक्ख।

नानकशाही–वि॰ (हि॰) गुरु नानक सम्बन्धी, नानक शाह का चेला या शिष्य या अनुयायी सिक्ख, सिख (दे॰)।

नानकार–संज्ञा, पु॰ (फा॰) माफी जमीन, बिना कर की भूमि।

नानकीन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (चीनी नानकिङ्) एक तरह का सूती कपड़ा।

नानखताई–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) टिकिया सी एक सोंधी ख़स्ता मिठाई।

नानबाई–संज्ञा, पु॰ (फा॰ *नानबा, नानबफ*) रोटियाँ बना बना कर बेंचने वाला।

नानसरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) ननिया ससुर, पति या स्त्री का नाना, **ननसार** (दे॰)।

नाना–वि॰ (सं॰) अनेक प्रकार के, बहुत, अनेक। संज्ञा, पु॰ (दे॰) माता का बाप या पिता, मातामह। स्त्री॰ नानी। क्रि॰ स॰ (सं॰ नमन) झुकाना, लचाना, नीचा करना, फेंकना, घुसाना। संज्ञा, पु॰ (अ॰) पुदीना। यौ॰ **अर्क नाना**–*सिरढा-सहित पुदीने का अर्क*।

नानाकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक रूप के, विविध भाँति के।

नानाकारण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भाँति-भाँति के कारण, अनेक प्रकार के हेतु।

नानाजातीय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक प्रकार या तरह के।

नानात्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आत्मभेद। पृथक् पृथक् या भिन्न-भिन्न आत्मा।

नानाध्वनि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक प्रकार के शब्द, अनेक भाँति की ध्वनियाँ।

नानाप्रकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक भाँति, विविध भाँति, बहुविधि।

नानाभाँति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक प्रकार, तरह तरह, रंग रंग के।

नानामत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भिन्न-भिन्न मत। बहुविधि सिद्धान्त।

नानारूप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अनेक भाँति या प्रकार।

नानार्थ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक अर्थ।

नाना-विधि–वि॰ यौ॰ (सं॰) अनेक प्रकार या उपाय।

नानाशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विविध विद्या-विशारद, षट् शास्त्री।

ननिहाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *नानी+आलय=घर*) नाना या नानी का घर या स्थान, **नेनाउर, ननिहाल, ननियाउर** (दे॰)।

नानी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) माता की माता, मातामही। **मु॰ नानी याद आना या मर जाना**–आफत सी आ जाना, दुख सा पड़ जाना।

नानुकर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *ना+करना*) नाहीं या इन्कार करना।

नान्ह–वि॰ दे॰ (सं॰ *रचून*) नन्हा, लघु, छोटा, महीन, पतला, नीच, तुच्छ। **मु॰ नान्ह (नन्हा) कातना**–बहुत ही महीन बारीक या हलका कार्य करना, मद्दा कठिन या दुष्कर कार्य करना।

नान्हक–संज्ञा, पु. (दे. *नानक*) नानक।

नान्हरिया–वि. दे. (हि. *नान्ह*) छोटा।

नान्हा–वि. दे. (हि. *नन्हा*) नन्हा, छोटा।

नाप–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मापन*) माप, तौल, परिमाण।

नाप-जोख-नापतौल–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) नापना+ जोखना=तौल) मात्रा या परिमाण, जो तौल-नाप कर ठहराई जावे।

नापना–क्रि. स. दे. (सं. *मापन*) मापना। **मु. सिर नापना**–सिर काटना। रास्ता नापना–चलते बनना। किसी पदार्थ का परिमाण जानना।

नापसंद–वि. (फा.) अप्रिय, जो अच्छा न हो, अरोचक।

नापाक–वि. (फ़ा.) अपवित्र, मैला-कुचैला, अशुद्ध। संज्ञा, स्त्री. **नापाकी**।

नापित–संज्ञा, पु. (सं.) नाऊ, नाई, हज्जाम।

नाफ़ा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) कस्तूरी की थैली।

नाबदान–संज्ञा, पु. (फ़ा. *ना आय+दान*) नरदा, नरदया, पनाला, पनारा (दे.) थूकने का हिस्सा।

नाबालिग़–वि. (*अ.+फ़ा.*) जो जवान न हुआ हो, न्यून, युवा। संज्ञा, स्त्री. **नाबालिगी**।

नाबूद–वि. (*फ़ा.*) नष्ट-भ्रष्ट, ध्वस्त।

नाभ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नाभि*) नाभि, नाभी, तोंदी, ढेंकी, शिव जी, एक राजा, स्त्री का एक संहार।

नाभादास–संज्ञा, पु. (दे.) भक्तमाल लेखक एक वैष्णव साधु।

नाभाग–संज्ञा, पु. (सं.) एक सूर्यवंशीय राजा।

नाभि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गाड़ी के पहिये के क्षोभ का खंड, चक्र-मध्य, भागी, तोंदी, कस्तूरी। संज्ञा, पु. प्रधान राजा, व्यक्ति या पदार्थ, गोब, क्षत्रिय।

नामंजूर–वि. (फ़ा.) अस्वीकार, जो माना न गया हो। संज्ञा, स्त्री **नामंजूरी**।

नाम–संज्ञा, पु. (सं. *नामन्*) संज्ञा, व्याख्या, किसी पदार्थ का बोधक शब्द, नाँव (आ.)। वि. **नामी**। **मु. नाम उछालना**–बदनामी या निन्दा कराना। **नाम उठ जाना**–चिह्न मिट जाना। **किसी बात का नाम करना**–कोई कार्य नाम मात्र को करना, पूर्ण रूप से न करना। **किसी का नाम करना (होना)**–किसी की ख्याति का प्रशंसा करना (होना)। **नाम का**–नाम धारी कहने भर को। **नाम के लिए या नाम की**–थोड़ा सा, कहने भर को, यथार्थ। **नाम बढ़ना (बढ़ाना)**–नामापली में नाम लिख (लिखा) जाना। **नाम चलना**–नाम की याद बनी रहना।

नाम उछालना–अपयश फैलाना, बदनामी होना। **नाम कमाना,** नाम कमाना प्रसिद्धि अर्जित करना; **नाम करना**–ख्याति प्राप्त करना; **(किसी दूसरे के) नाम धरना**–दूसरे को दोष देना; **नामकरण करना** दोषी ठहराना; **नाम का**–नाम वाला; **नाम मात्र के लिए;** कहने भर को। नाम के लिए-केवल देखने या कहने सुनने के लिए; कहने को। **नाम चार को**–कहने भर को, नाम-मात्र को। (किसी के) **नाम डालना**–(किसी के) नाम के आगे दर्ज करना (ऋण आदि), **नाम डुबाना**–मान-मर्यादा मिटाना, कलंक लगाना। नाम डूबना-मान-मर्यादा नष्ट होना, कलंक लगना। **नाम न लेना**–स्मरण तक न करना; भय, घृणा, खिन्नता आदि के कारण प्रसंग तक न छेड़ना, (उस व्यक्ति से) दूर भागना; बचना। **नाम निकालना**–सुख्याति या कुख्याति फैलाना, तंत्र-मंत्र की क्रिया द्वारा चोर का नाम प्रकट करना, **नाम पैदा करना**–ख्याति प्राप्त करना। **नाम बिकना**–प्रसिद्धि के कारण लोक में बहुत सम्मान प्राप्त करना; इतनी ख्याति प्राप्त करना कि नाम देख कर लोग आपकी पुस्तक-कृति-इत्यादि खरीद लें। **नाम बेचना**–किसी का नाम लेकर दूसरों की सहानुभूति, आदर या कृपा का पात्र बनना। **नाम मिटना**–अस्तित्व का एक भी चिन्ह न रहना, नाम तक न बच पाना। **नाम रखना**–प्रतिष्ठा की रक्षा करना। **नाम लगना**–दोषी ठहराया जाना। **नाम लगाना**–दोषी ठहराना। **नाम लिखना**–भरती करना। नाम लिखाना-भरती होना। **नाम लेना**–नाम पुकारना; याद करना; आद या कृतज्ञता के भाव से स्मरण करना, तारीफ करना; चर्चा चलाना। **नाम होना**–ख्याति या यश फैलना, नाम लिया जाना। **नामो-निशान न रहना**–अस्तित्व की पहिचान समाप्त हो जाना; कालातीत हो जाना।

नाम (न्)–संज्ञा पु. (सं.) वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या समूह का बोध हो; वाचक शब्द, संज्ञा शब्द, आख्या, अभिधान।-करण पु. नाम रखने का संस्कार।-

कर्म(न्)-पु॰ नामकरण संस्कार।–कीर्तन पु॰ गाने-बजाने के साथ ईश्वर का नाम जपना।- कृत–पु॰ किसी वस्तु का असली नाम छिपाकर दूसरा नाम बताना।- ग्रह, – ग्रहण- पु॰ नाम के साथ सम्बोधन या उल्लेख करना। -ग्राम पु॰ नाम और ठिकाना, नाम और पता।- देव पु॰ एक प्रसिद्ध कृष्णोपासक।- द्वादशी- स्त्री॰ अगहन सूर्या तीज को होने वाला एक व्रत जिसमें गौरी, काली आदि बारह देवियों की पूजा होती है। -धन पु॰ एक राग–धरना पु॰ नामकरण करने वाला, पिता।- धराई– नाम रखने का समारोह; अपयश, कुख्याति ।- धातु स्त्री॰ संज्ञा पद से बनाई हुई धातु (व्या॰)।- धारी (रिन) वि॰ नाम का, नामक, नामधारक, तथाकथित।- धेय पु॰ नाम, आख्या, संज्ञा; नामकरण।–नाभिक-पु॰ विष्णु ।- निर्देश पत्र पु॰ (नॉमिनेशन पेपर) दे॰ नामांकन-पत्र; नामजदगी का पर्चा; नामन पत्र।- पट्ट पु॰ साइन बोर्ड, नेम प्लेट; जिस पर व्यक्ति या दुकान इत्यादि का नाम लिखा हो। -पत्र पु॰ लेबल; कागज का वह टुकड़ा जिस पर शीशी या पात्र में भरी दवा इत्यादि का उल्लेख हो।-बोला--वि॰ नाम जपने वाला।-माला-स्त्री॰, - संग्रह पु॰ संज्ञा शब्दों का कोश।- मुद्रा स्त्री॰ वह मुद्रा या मुद्रिका जिस पर नाम खुदा हो।–रासी-दि॰ समान नाम वाला, हमनाम।- लेवा पु॰ नाम लेने वाला; उत्तराधिकारी।- वाचक वि॰ नाम बतवाने वाला। पु॰ व्यक्ति वाचक संज्ञा।–शेष-वि॰ जिसका केवल नाम ही रह गया हो; गत; मृत। पु॰ मृत्यु।–सत्य - पु॰ गुण न होते हुए भी गुण द्योतक नाम का कथन।- हँसाई बदनामी।

नामक–वि॰ (सं॰) नाम का, नाम वाला।

नामघर–संज्ञा पु॰ असमियों का पूजा मंदिर।

नामतः (तस्)–अ॰ (सं॰) नाम से, नाम द्वारा।

नाम लेखन शुल्क–संज्ञा पु॰ नाम लिखने, भरती करने, सदस्य वनाने का शुल्क, (अं॰) (एनरोलमेंट फी)।

नामांक–वि॰ (सं॰) दे॰ नामांकित।

नामांकन पत्र–संज्ञा पु॰ (नॉमिनेशन पेपर) वह आवदेन पत्र जो विधान सभा, लोक सभा, नगरपालिका इत्यादि के चुनाव पर उम्मीदवार को अपनी अर्हता, नाम, प्रामाणिकता आदि का स्पष्टीकरण करते हुए चुनाव के उपयुक्त अधिकारी के सामने उपस्थित करना पड़ता है।

नामांकित–वि॰ (सं॰) जिस पर नाम लिखा या खुदा हो।

नामांतर–संज्ञा पु॰ (सं॰) दूसरा नाम, उपनाम।

नामा–संज्ञा पु॰ नामदेव (फा॰) धन, पैसा, पारिश्रमिक, अर्थ-प्राप्ति।

नामा (मन्)–वि॰ (सं॰) नाम वाला, नामक (केवल बहुब्रीहि समास में उत्तर पद के रूप में प्रयुक्त)।

नामानुशासन–संज्ञा पु॰ (सं॰) कोश; नामाभिधान।

नामावली–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) नामों की सूची; वह कपड़ा जिसपर किसी देवता का नाम सर्वत्र अंकित हो; यथा रामनामी दुपट्टा।

नामि–संज्ञा पु॰ (सं॰) विष्णु।

नामिक–वि॰ (सं॰) नाम-सम्वन्धी।

नामिका–संज्ञा स्त्री॰ कुछ ऐसे लोगों की सूची जिनमें से, किसी विषय पर विवेचन के लिए, एक दो को चुन लेना हो, (पैनल)।

नामित–वि॰ (सं॰) झुकाया हुआ।

नामी–वि॰ नाम वाला, नाम का, प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर; जिसका बड़ा नाम हो।- गिरामी-वि॰ प्रसिद्ध मशहूर, नामवर।

नामोल्लेख–संज्ञा पु॰ (नेमिंग) किसी सदाचरण, अवज्ञा या असंसदीय कार्य के लिए अध्यक्ष द्वारा सदन में सदस्य के नाम का उल्लेख किया जाना।

नाम्य–वि॰ (सं॰) झुकाने योग्य; लचीला।

नाँय–संज्ञा पु॰ दे॰ 'नाम' (ग्रा॰) अ॰ नहीं।

नाय–संज्ञा पु॰ (सं॰) नेता; नेतृत्व; नय, नीति, उपाय, मुक्ति।

नायक–संज्ञा पु॰ (सं॰) राह दिखाने वाला; ले जाने या पहुँचाने वाला; किसी समुदाय या जनता को विशिष्ट उद्देश्य पूर्ति का मार्ग निर्दिष्ट करने वाला प्रभावशाली व्यक्ति या अधिकारी; अग्रेसर; वह सेनापति जिसके अधीन दस और सेनापति हों; बीस हाथियों और घोड़ों के दल का अध्यक्ष; प्रभु, अधीश्वर; हार की प्रधान मणि; श्रेष्ठ पुरुष, किसी समुदाय का अग्रगण्य व्यक्ति; शृंगार का आवंटन रूप-यौवन आदि से सम्पन्न पुरुष (नायक

के चार भेद हैं : धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीर ललित और धीर प्रशान्त। इनमें से प्रत्येक के चार-चार भेद हैं—दक्षिण, धृष्ट, अनुकूल, शठ-इस प्रकार 16 भेद हुए। इनके तीन भेद और हैं: उत्तम, मध्य, अधम।); वह पुरुष जिसके चरित्र को लेकर किसी काव्य या नाटक आदि की रचना की गई हो; एक वर्णवृत्त, एक राग; शाक्य मुनि।

नायका–संज्ञा स्त्री॰ नायिका; वेश्या की माता; कुटनी।

नायकाधिप–संज्ञा पु॰ (सं॰) राजा।

नायकी–संज्ञा पु॰ एक राग।- कान्हड़ा पु॰ एक राग।- मल्लार (मल्हार) पु॰ एक राग।

नायन–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'नाइन'।

नायब–वि॰ (अ॰) स्थानापन्न, सहायक; प्रतिनिधित्व करने वाला। पु॰ सहायक, उप-मुनीम।

नायबी–संज्ञा स्त्री॰ नायक का काम; नायक का पद।

नायिका–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) राह दिखाने वाली; ले जाने या पहुँचाने वाली, यौवन तथा गुण-सम्पन्न स्त्री; नायक की पत्नी; वह स्त्री जिसका चरित्र किसी काव्य में वर्णित हो; नाटक, उपन्यास आदि की प्रधान-पात्री; एक तरह की कस्तूरी; दुर्गा की कोई शक्ति; दे॰ 'अष्ट नायिका'।

नारंग–संज्ञा पु॰ (सं॰) नारंगी का पेड़ या फल; विट, यमज; प्राणी; गाजर; पिप्पली रस।

नारंगी–संज्ञा स्त्री॰ एक तरह का मीठा नीबू, संतरा। वि॰ नारंगी के रंग का।

नार–वि॰ (सं॰) नर-सम्बन्धी, मनुष्य-सम्बन्धी, आध्यात्मिक। पु॰ नर-समुदाय; जल; हाल का पैदा हुआ दहड़ा; सौंठ।- कीट- पु॰ अश्मकीट; छल करने वाला; आशा दिवाकर उसे भंग करने वाला।- जीवन पु॰ सोना।

नार–संज्ञा स्त्री॰ गर्दन; स्त्री; जुलाहों की ढरकी। (ग्रा॰) नावा; घाघरा आदि बाँधने की सूत की डोरी; मोटा रस्सा; आँवक।- बेवार पु॰ नाल, खेड़ी आदि, नारा-पोटी। **मु॰ नार नवाना/नार नीची करना**–लज्जा या संकोच आदि के कारण सिर नीचा कर लेना।

नारक–वि॰ (सं॰) नरक-सम्बन्धी। नरक; नरक में पड़ा हुआ जीव।

नारकिक–वि॰, पु॰ (सं॰) दे॰ 'नारकी'।

नारकी (किन्)–वि॰ (सं॰) नरक भोगी, नरक में जाने योग्य। पु॰ नरक में रहने वाला।

नारकीय–वि॰ (सं॰) नरक भोगी; नरक में जाने योग्य। पु॰ नरक में रहने वाला। ऐसा जैसा नरक भोगी का हो; अनिनिकृष्ट, अति अधम।

नारद–संज्ञा पु॰ (सं॰) एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाते हैं। वीणा बजाकर हरिगुण गान करना, विभिन्न लोकों में घूमना और कलह भी पैदा करना इनके विशिष्ट गुण बताए जाते हैं। इसलिए इनका एक नाम कलहप्रिय भी है। विश्वामित्र के एक पुत्र; एक प्रजापति; एक गंधर्व। पुराण पु॰ एक महापुराण जिसमें सनकादिक ने नारद को सम्बोधित कर कथा कही है और उन्हें उपदेश दिया है।

नारदीय–वि॰ (सं॰) नारद-सम्बन्धी; नारद का।

नारना–क्रि॰ स॰ ताड़ना, समझाना, भाँपना।

नारसिंह–वि॰ (सं॰) जिसमें नरसिंह का वर्णन हो; नरसिंह-सम्बन्धी; नरसिंह का। पु॰ विष्णु।

नारा–संज्ञा पु॰ पूजा या कथा आदि में प्रयुक्त लाल रंग का डोरा, रक्षा सूत्र, चोटी बंधन, इजारबन्द; नवजात शिशु का नाल; पेट की अँतड़ी; बरसाती पानी को मोटी धारा या उससे बना हुआ एक गड्ढा; नाक। किसी माँग या शिकायत की ओर ध्यान दिलाने के लिए बार-बार बुलंद की जाने वाली सामूहिक आवाज।—मूलक साहित्य-किसी राजनीतिक या साहित्यिक मत वाद के प्रचार के लिए लिखा गया साहित्य।

स्त्री॰ (सं॰) जल।

नाराच–संज्ञा पु॰ (सं॰) लौहे का वाण; वाण; एक वर्णवृत्त, 24 मात्राओं का एक छंद; जल हस्ती।

नाराचिका–संज्ञा स्त्री॰ (सं) सुनारों आदि का काँटा; छोटा नाराच।

नाराची–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) दे॰ नाराचिका।

नाराज–वि॰ (फा॰) क्रुद्ध, अप्रसन्न, रुष्ट, गुस्सावर;—गी-संज्ञा स्त्री॰ 'नाराज' होने के भाव, क्रुद्धता, अप्रसन्नता।

नारायण–संज्ञा पु॰ (सं॰) विष्णु, भगवान, परमात्मा; अजामिल का पुत्र; नारायण की सेना; एक अस्त्र; धर्मराज और दक्ष प्रजापति की कन्या से उत्पन्न एक पौराणिक ऋषि

जो ईश्वर के अंशावतार और 'नर' (ऋषि) के भाई माने जाते हैं; एक उपनिषद।- क्षेत्र गंगा किनारे की चार हाथ तक की भूमि।- प्रिय पु. शिव; पीत चंदन।-बलि-स्त्री. आत्मघात आदि से मरे हुए प्राणी की और्ध्वदेहिक क्रिया करने के पूर्व प्रायश्चित के रूप ब्रह्मा, विष्णु, शिव, यम और प्रेत के निर्मित्त दी जाने वाली बलि।

नारायणी–संज्ञा स्त्री. (सं.) लक्ष्मी; दुर्गा; सतावट; मुद्गल मुनि की पत्नी; कृष्ण की सेना जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्र में दुर्योधन की सहायता के लिए दिया था। वि. नारायण सम्बन्धी।

नारायणीय–वि. (सं.) नारायण सम्बन्धी; नारायण का। पु. नारद और नारायण ऋषि का सम्वाद उपाख्यान (महाभारत)।

नाराशंस–संज्ञा पु. (सं.) ऊम, और्व और आख्य-ये तीन पितृगण; वह चमस (चमचा) जिसमें पितरों को सोमरस दिया जाता है; पितरों के निमित्त चमचे में रखा सोमरस; रुद्र दैवत्य मंत्र जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा है।

नारांशसी–संज्ञा स्त्री. (सं.) मनुष्यों की प्रशंसा।

नारि–संज्ञा स्त्री. दे. 'नारी' स्त्री; गरदन।

नारिक–दि. (सं.) जल का; जलीय; आध्यात्मिक।

नारिकेर, नारिकेल–संज्ञा पु. (सं.) नारियल;–क्षीरी-स्त्री. एक प्रकार की गिरी की खीर।

नारिकेरी, नारिकेली–संज्ञा स्त्री. (सं.) नारियल; नारी के पानी के खमीर से बनने वाला एक मद्य।

नारिदान–संज्ञा पु. पनाक।

नारियल–संज्ञा पु. लंबोतरे और तिपहले फलों वाला एक ताड़ की तरह का पेड़ जो गरम देशों में समुद्र का किनारा लिए हुए होता है; इस पेड़ में लगने वाला एक फल।–पूर्णिमा-स्त्री. मुंबई प्रान्त का एक त्यौहार जिसमें लोग समुद्र में नारियल फंकते हैं।

नारियली–स्त्री. नारियल का खोपड़ा, नारियल की ताड़ी; नारियल का हुक्का।

नारी–स्त्री. हरिस में जुआ बाँधने की रस्सी या तस्मा; (ग्रा.) नाड़ी, दे. नावी; एक पक्षी; (सं.) स्त्री, औरत।-[illegible] एक सूर्यवंशी राजा।–तरंगक-पु. स्त्रियों का [illegible] वाला। पुरुष, जार, व्यभिचारी।-तीर्थ–पु. एक तीर्थ जहाँ विप्रशाप से ग्राह बनी हुई पाँच अप्सराओं का अर्जुन ने उद्धार किया था (महाभारत)-दूषण-सुरापान; दुर्जन-संसर्ग आदि जो स्त्रियों के लिए दुर्गण रूप है।- मुख-पु. एक प्राचीन देश।-रत्न-पु.-नारी रूप रत्न; अति गुणवती स्त्री।

नारीय–संज्ञा पु. (सं.) नालिता नामक शाक।

नरिष्टा–संज्ञा स्त्री. (सं.) चमेली।

नारू–संज्ञा पु. जूँ ; अधिकतर गरम देश के लोगों को होने वाला एक रोग जिसमे विशेषकर शरीर के निचले भाग में फुंसियाँ हो जाती हैं और उनमें से डोरे की तरह की पतली-पतली सफेद चीज निकलती है। नहरुवा, नाहरु; नहारु (रोग), नोंन।

नारोपजीवी–संज्ञा पु. समाज में उभरते नारों को पकड़कर अपने को नकली ढंग से आधुनिक दिखने वाला लेखक।

नार्पत्य–वि. (सं.) नृपति सम्बन्धी।

नार्मद–वि. (सं.) नर्मदा सम्बन्धी; नर्मदावाला। पु. नर्मदा में पाया जाने वाला शिवलिंग।

नार्मल स्कूल–संज्ञा पु. (अं.) वह स्कूल जहाँ अध्ययन कला की शिक्षा दी जाय।

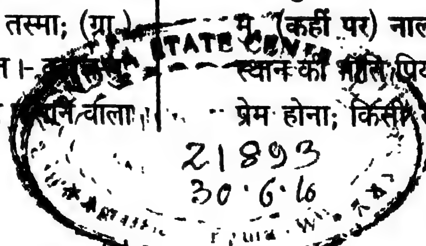
नार्यंग–संज्ञा पु. (सं.) नारंगी का पेड़।

नार्यतिम–संज्ञा पु. (सं.) चिरायंता।

नालंदा–संज्ञा, पु. एक प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय जो मगध में था।

नालंदी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शिव की वीणा।

नाक–वि. (सं.) नरकुल सम्बन्धी या उससे बना हुआ। स्त्री. कमल आदि की डंडी; पौधे का पोला तना, कांड; नली; नाड़ी; बन्दूक की नली। पु. अँवल, हरताल, मूठ, नाला; (ग्रा.) कसरत के लिए बना हुआ भारी गोल पत्थर; जमवट; जुए का अड्डा; जुआ खिलाने को दी जाने वाली रकम; एक जलीय पौधा।- कटाई - स्त्री. (ग्रा.) नाल काटने का काम; नाल काटने की उजरन।- बाँस पु. एक प्रकार का बाँस।- वंश-पु. नरकट, नरसल। मु. (कहीं पर) नाल गड़ा होना–किसी स्थान का जन्म स्थान की भाँति प्रिय होना; किसी स्थान से बहुत अधिक प्रेम होना; किसी स्थान पर स्वत्व/आत्मीयता होना।



नाल–संज्ञा पु॰ (अ॰) रगड़ से बचाने के लिए घोड़े की टाप और जूते की ऐड़ी के नीचे लगाया जाने वाला लोहे का एक अर्धचन्द्रकार टुकड़ा।- बंद पु॰ वह जो घोड़े की टाप या जूते की ऐड़ी में नाल जड़ने का काम करे। बन्दी स्त्री॰ नाल जोड़ने का काम, नालबन्द का पेशा। -शतीरी पु॰ एक प्रकार की लकड़ी की मेहराब जिसमें कई छोटी मेहराब कटी होती हैं।

नालकी–संज्ञा स्त्री॰ एक तरह की लम्बी खुली पालकी।

नाला–संज्ञा पु॰ दूर तक गया हुआ लम्बा चौड़ा गड्ढा जिसमें से होकर बरसात का पानी किसी नदी आदि में पहुँचता है; खार; इसमें से होकर गुजरने वाली जल की धार; रंगीन गंडेदार सूत, नारा। स्त्री॰ (सं॰) कमल दंड, पौधे का फैला तना।

नालि–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰ कमल आदि की डंडी; पद्मपुष्प, एक प्रकार का शाक; नाड़ी, सिरा; घटिका, 24 मिनट; हाथी के कान छेदने वाला; पानी बहने का नाला; घंटा बजाने का घड़ियाल।- जंद पु॰ डोमकौआ।

नालिक–संज्ञा पु॰ (सं॰) कमल; भैंसा; एक तरह की बांसुरी।

नालिका–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) पद्मदंड; नाली; हाथी के कान छेदने का औजार; घटिका; चमड़े का चाबुक; जुलाहों की सूत लपेटने की नली; नालिना नामक एक शाक, पटुआ शाक; एक गंध द्रव्य।

नारिकेट–संज्ञा पु॰, नाविकेली-स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'नारिकेल'।

नालिता–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) एक प्रकार का पटुवा सा जिसके पत्ते का शाक बनता है।

नालिश–संज्ञा स्त्री॰ (फा॰) किसी प्रकार की क्षति या कष्ट पहुँचाने वाले के विरुद्ध ऐसे व्यक्ति या अधिकारी के निकट किया गया आवेदन जो दोषी को उचित दंड दे सके; फरियाद; अभियोग। **मु॰ नालिश दागना**- नालिश करना।

नाली–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) करेमू का साग; कमल; कमल की डंडी; रक्त वाहिनी शिरा, धमनी; दंड भर का समय, घटी; हाथी का कान छेदने वाला; एक वाद्य; (ग्रा॰) मोरी। --व्रण-पु॰ नासूर।

नालीक–संज्ञा पु॰ (सं॰) पोलावण।जिसके केवल मुँह पर लोहा लगा रहता है, भाला। कमलों का समूह; कमलदंड; कमंडलु।

नालीकनी–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) पद्म-समूहः कमलों से पूर्ण जलाशय।

नालीप–संज्ञा पु॰ (सं॰) कदंब।

नालुक–संज्ञा पु॰ (सं॰) एक गंधद्रव्य'।

नाकौर, नालौर–वि॰ कहकर बदल जाने वाला, मुकर जाने वाला (ग्रा॰) नादै।

नाल्ह (नरपति)–संज्ञा पु॰ वीसवदेव रासो के रचयिता एक प्रसिद्ध राजस्थानी कवि।

नाव–संज्ञा स्त्री॰ नौका, नरावी, (फा॰) सफीना/- घाट पु॰ नदी का घाट जहाँ नौका आकर लगें या ठहरें। **मु॰ नाव सूखे में चलाना**–असंभव कार्य करने वाला)।

नावक–संज्ञा पु॰(फा॰) एक प्रकार का छोटा तीर; मधुमक्खी का डंक; मल्लाह या केवट।

नावना–क्रि॰ स॰ झुकाना या नवाना; दावना, घुसाना।

नवनीत–संज्ञा, सं॰ (सं॰) मुलायम, मृदुल।

नावर/नावरि–संज्ञा, स्त्री॰ नाव, नौका; नाव की क्रीड़ा।

नावाधिकरण–संज्ञा पु॰ (एडमिरकटी) राज्य के जहाजी बेड़े, नौ सेना आदि का संचालन करने वाला अधिकारी या उनका प्रधान कार्यालय।

नाविक–संज्ञा पु॰ (सं॰) कर्णधार, माझी, मल्लाह; पोतारोही; नाव पर यात्रा करने वाला।

नावी–संज्ञा पु॰ (सं॰) केवट, मल्लाह।

नावेल–संज्ञा पु॰ (अं॰) उपन्यास।

नाव्य–वि॰ (सं॰) नाव से पार करने योग्य; नौ गम्य (नेर्वागेबिल)। प्रशंसनीय। पु॰ नाव से पार करने योग्य जल; नयापन; नवीनता।- जलमार्ग पु॰ वे नदियाँ इत्यादि जिनमें नाव और जहाज चल सके (नेवीगेबिल वाटरगेज)।

नाश–संज्ञा पु॰ (सं॰) अस्तित्व न रहना, सत्ता न रहना; प्रध्वस, लय, संहार, बरबादी; त्याग; अदर्शन, लोप; पलायन; संकट।- कारी (रिन्)-वि॰ नाश करने वाला।

नाशक–वि॰ (सं॰) नष्ट करने वाला, मिटा देने वाला; मारने वाला, संहार करने वाला।

नाशन–संज्ञा पु॰ (सं॰) नष्ट करना; हटाना; मृत्यु; विस्मरण। वि॰ नष्ट करने या कराने वाला।

नाशना–क्रि॰ स॰ दे॰ 'नासना'।

नाशपाती–संज्ञा स्त्री. एक प्रसिद्ध फल; इसका पेड़।
नाशवान (वत्)–वि. (सं.) जो नष्ट हो जाए; भंगुर, नश्वर, अशाश्वत।
नाशित–वि. (सं. जो नष्ट किया गया हो।
नाशी (शिन्)–वि. (सं.) नाशशील; नश्वर; नाशक।
नाश्ता–संज्ञा पु. (फा.) जलपान, कलेवा, प्रातराश (अं.) ब्रेकफास्ट।
नाश्य–वि. (सं.) नाश-योग्य।
नाष्टिक–वि. (सं.) जिसकी कोई वस्तु खो गई हो। खोई हुई वस्तु सम्बन्धी। पु. खोई वस्तु का मालिक।-धन-पु. खोया हुआ धन।
नास–संज्ञा पु. दे. 'नाश'। स्त्री. नाक के सुरकी या सूँघी जाने वाली औषधि; सुंघनी। ✓-दान-पु. सुंघनी रखने का पात्र।
नासत्य–संज्ञा, पु. (सं.) अश्विनीकुमार।
नासमझ–वि. यौ. (हि.) मंद या अल्पबुद्धि या निबुद्धि। संज्ञा, **नासमझी**।
नासा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नाक, नासिका, नथुना। वि. **नस्य**।
नासपाक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नाक का एक रोग।
नासापुट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नथुना।
नासाभेदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नकछिंकनी घास, नाक छेदने वाला, नाक छेदना।
नासामल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नाक का मैल।
नासा वामावर्त्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नथबेसर, नथुनी, नय।
नासायानि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नपुंसक।
नासिक–संज्ञा, पु. यौ. (सं. नासिक्य) महाराष्ट्र में एक तीर्थ है।
नासिका–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नाक, नासा।
नासीक–वि. दे. (सं. *नाशिन*) **नासक** (दे.) नाशक, नाश करने वाला। स्त्री. **नासिनी**।
नासीर–संज्ञा, पु. (सं.) अग्रसर, अग्रगामी, सेनापति के आगे चलने वाली सेना। संज्ञा, स्त्री. (दे.) नस।
नासूर–संज्ञा, पु. (अ.) नस का पुराना घाव नाड़ी-व्रण (सं.)।
नास्ति–क्रि. अ. यौ. (सं.) नहीं है, अविद्यमानता, अभाव।
नास्तिक–संज्ञा, पु. (सं.) वेदों का प्रमाण, परमेश्वर तथा परलोक को न मानने वाला, अनीश्वरवादी, वेद निन्दक, शरीर-आत्मवादी, पाखंडी, बौद्ध।
नास्तिकता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **नास्तिक्य**। परमेश्वर, परलोक और वेद को न मानने का भाव।
नास्तिकवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परमेश्वर, परलोक और वेद-प्रमाण न मानने का सिद्धान्त। वि. **नास्तिकवादी**।
नास्य–वि. (सं.) नासा सम्बन्धी, नाक का। संज्ञा, पु. (सं.) नाक में पैदा होने वाला, बैल की नाक में लगाने की रस्सी, नाथ।
नाह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नाथ*) स्वामी, पति, प्रभु, अधिपति, मालिक।
नाहक–क्रि. वि. (फा. ना+अ. हक) व्यर्थ. वृथा, निष्प्रयोजन।
नाह-नूह–संज्ञा, स्त्री. (दे.) (हि. *नाही*) नहीं, नाहीं, अस्वीकार, इनकार, **नाहींनूहीं**।
नाहर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नाहरि*) व्याघ्र, बाघ, सिंह, शेर। संज्ञा, पु. (दे.) टेसू का फूल।
नाहरू–संज्ञा, पु. (दे.) नहरुवा रोग, नाहर, सिंह, बाघ, बाज (काश्मीर) चमड़े का टुकड़ा, मोंट खींचने का रस्सा। "मारसि गाय नाहरू लागी"- रामा.।
नाहल–संज्ञा, पु. (दे.) म्लेच्छों की एक जाति।
नाहिं-नाहि–*अव्य*. (दे.) **नाही,** नहीं, **नाहिंन**।
नाहीं–अध्य. दे. (हि. *नहीं*) नहीं।
नाहुपि–संज्ञा, पु. (सं.) राजा नहुष का पुत्र, ययाति।
निंत-नितं–क्रि. वि. दे. (सं. *नित्य*) नित्त, नित्य, सदा, सर्वदा।
निंद–वि. दे. (सं. *निंद्य*) निन्दनीय, निन्दा-योग्य।
निंदक–संज्ञा, पु. (सं.) निंदा करने वाला।
निंदन–संज्ञा, पु. (सं.) **निंद,** निंदा करने का कार्य। वि. **निंदनीय, निंदित**।
निंदना–क्रि. वि. दे. (सं. *निंदन*) निंदा करना, बुराई या बदनामी करना।
निंदनीय–वि. (सं.) बुरा, गह्य, निन्दा करने के योग्य।
निंदरना–क्रि. स. दे. (हि. *निंदना*) निंदा करना, निंदना।
निंदरिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) (दे. *निद्रा*) नींद, **निंदिया** (आ.)।
निंदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) किसी की बुराई करना, अपवाद, बदनामी।
निंदासा–वि. दे. (हि. *नींद+आसा प्रत्य.*) उनींदा, नींद से

व्यथित, जिसे नींद आ रही हो।

निंदास्तुति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) स्तुति के बहाने, निंदा ब्याजस्तुति, हजोमली (फा॰)।

निंदित–वि॰ (सं॰) बुरा, दूषित, खोटा, जिस की लोग निंदा करें।

निंदिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नींद*) नींद।

निंद्य–वि॰ (सं॰) निंदनीय, निंदा करने योग्य, खोटा, दूषित, बुरा।

निंव-निंबा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नीम का पेड़, नींबी (आ॰)।

निंबार्क–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निंबादित्य, आचार्य।

निंबू–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नींबू, **निंबुआ** (आ॰) निब्बू।

निः–अव्य॰ (सं॰ *निस्*) एक उपसर्ग–बिना, नहीं, जैसे–कारण से निष्कारण, चय से निश्चय।

निःशंक, निश्शंक–वि॰ यौ॰ (सं॰) निडर, निर्भय, बेधड़क, अशंक।

निःशब्द–वि॰ (सं॰) शब्द-रहित, शान्त।

निःशेष–वि॰ (सं॰) सम्पूर्ण, समस्त, सब, सर्व, बिना कुछ शेष के।

निःश्रेणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नसेनी (दे॰) सीढ़ी, **सिड्डी, सिढ़िया** (आ॰)।

निःश्रेयस–वि॰ (सं॰) कल्याण, मुक्ति, मोक्ष, भक्ति, विज्ञान।

निःश्वास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाक से निकलने वाली या निकाली वायु, साँस।

निःसंकोच–क्रि॰ वि॰ (सं॰) वेखटके, [illegible]धड़क, बिना संकोच।

निःसंग–वि॰ (सं॰) निर्लिप्त, स्थार्थ-बिना, बेलगाव।

निःसंतान–वि॰ (सं॰) लावल्द, संतान-रहित, निपूता, निपुत्री, **निःसंतति**।

निःसंदेह–वि॰ (सं॰) वेशक, संदेह-रहित।

नि-संशय–वि॰ (सं॰) निःसंदेह, बेशक।

निःसत्व–वि॰ (सं॰) सार या तत्व-रहित।

निःसरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रास्ता, मार्ग, निकास, निवाण, मरण, मुक्ति।

निःसीम–वि॰ (सं॰) अपार, अनंत, असीम।

निःसृत–वि॰ (सं॰) निकला हुआ, वहिर्भूत।

निःस्पृह–वि॰ (सं॰) आकांक्षा, अभिलाषा या इच्छा-रहित, निर्लिप्त, निर्लोभ।

निःस्वार्थ–वि॰ (सं॰) बेमतलब, परोपकार, स्वार्थ-रहित।

नि–अव्य॰ (सं॰) एक उपसर्ग है जिसके कारण इन अर्थों की विशेषता होती है। समूह या संघ, अधोभाव, अत्यन्त, आदेश, नित्य, कौशल, बंधन, अंतर्भाव, समीप, दर्शन। संज्ञा, पु॰ (सं॰) निषाध स्वर का संकेत।

निअर नियर–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *निकट*) मेरे, निअरे (आ॰) पास, निकट, समीप। वि॰ (दे॰) समान, तुल्य, बराबर।

निअराना-नियराना–क्रि स॰ दे॰ (हि *निअर*) पास, समीप या निकट जाना या आना। क्रि अ॰ (दे॰) निकट आना या पास होना या पहुँचना।

निभाउ, निभाव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *न्याय*) न्याय, **न्याष** (दे॰)।

निआन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *निदान*) अंत, अखीर। अव्य॰ (दे॰) अंत में।

निआमत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अलभ्य, अमूल्य, बहुमूल्य या बढ़िया वस्तु। **"तंदुरुस्ती हजार निआमत है"**–लो॰।

निकंटक–वि॰ (दे॰ सं॰ *निष्कंटक*) निष्कंटक, शत्रु-राहित, **निर्बाध**।

निकंदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *नि+कंदन=नाश, वध*) नाश, विनाश, वध।

निकट–वि॰ (सं॰) समीप, पास का। क्रि॰ वि॰ (सं॰) समीप, पास, लिए, वास्ते। **मु॰ किसी के निकट**–किसी के विचार, समझ या लेखे में।

निकटता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नजदीकी, समीपता, **नैकट्य** (सं॰)।

निकटवर्ती–वि॰ (सं॰ *निकट+वर्तिन्*) समीप, निकट या पास वाला। स्त्री॰ **निकटवर्त्तिनी**।

निकटस्थ–वि॰ (सं॰) समीप या पास का।

निकम्मा–वि॰ दे॰ (सं॰ *निष्कर्म*) बे काम, व्यर्थ, बे मसरफ, निष्प्रयोजन। स्त्री॰ **निकम्मी**।

निकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समूह, राशि, निधि।

निकरना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *निकलना*) निकलना (प्रे॰ रूप) **निकराना, निकरपाना, निकारना**।

निकर्मा–वि॰ दे॰ (*निष्कर्म*) आलसी, निकम्मा।

निकलंक–वि॰ दे॰ (सं॰ *निष्कलंक*) निर्दोष।

निकलंकी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *निष्कलंक*) विष्णु का अवतार, कल्कि अवतार। वि॰ (दे॰) कलंक-हीन।

निकल–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक धातु।

निकलना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *निकालना*) कहीं से बाहर आना,

प्रगट या निर्गत होना, उदय होना। **मु॰ निकल जाना**—*आगे बढ़ जाना या चला जाना, नष्ट हो जाना, घट या भाग जाना, अलग या पार हो जाना।* **स्त्री का निकल जाना**—*किसी पुरुष के साथ अपना घर-घर छोड़ कर चली जाना। पार होना।* **निकल चलना**—*अति करना, इतराना, अपनी सामर्थ्य से अधिक कार्य करना, भाग चलना।* किसी नदी आदि से पार होना, उतरना, जाना, उदय होना, दिखाई पड़ना, निश्चित, आरम्भ या सिद्ध होना, फैलाव होना, छूटना, मुक्त होना, आविष्कृत होना, देह के ऊपरी भाग में उत्पन्न होना, बचा जाना, कह कर न करना, नटना (*प्रांती.*) खपना, बिकना, व्यतीत होना, घोड़े बैल आदि को सिखाना।

निकलवाना—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *निकालना का प्रे॰ रूप*) निकालने का कार्य दूसरे से कराना।

निकसना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *निकलना*) निकलना। (प्रे॰ **रूप-निकसाना, निकसवाना) निकासना।**

निकाई—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *निकाय*) समूह। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *नीक*) भलाई, सुन्दरता, खेत से घास आदि काट कर साफ करना, **निकवाई** (आ॰)।

निकाज—वि॰ दे॰ (हि॰ *नि+काज*) निकम्मा, बेकाम।

निकाना—क्रि॰ स॰ (दे॰) खेत से घास आदि छील कर साफ करना, **निकालना** (आ॰)। प्रे॰ रूप—**निकपाना**।

निकाम—वि॰ दे॰ (हि॰ *नि+काम*) खराब, बुरा, निकम्मा, व्यर्थ। क्रि॰ वि॰ (दे॰) व्यर्थ, इच्छा या कामना-रहित, परिपूर्ण।

निकाय—संज्ञा, पु॰ (सं॰) समूह, राशि, झुण्ड, निकाया (दे॰)। "लव-निमेष महँ भुवन निकाया"—रामा॰।

निकारना—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰*निकालना*) निकालना।

निकालना—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *निष्कासन*) भीतर से बाहर जाना, मिश्रित को अलग करना, पार करना, ले जाना, निश्चित या आरम्भ करना, खोलना, चलाना, अलग करना, घटाना, छुड़ाना, बरखास्त करना, हटाना, बेंचना, सिद्ध करना, जारी या आविष्कृत करना, ऋण निश्चित या बरामद करना, पशुओं को सवारी आदि ले चलने की रीति सिखाना, सुई से बेल-बूटे आदि कपड़े पर बनाना।

निकाला—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *निकालना*) निकालने का कार्य, किसी स्थान से निकाले जाने की सज़ा, निष्कासन (यौ॰ *देश निकाला*)।

निकास—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *निकासना*) निकालने की क्रिया या भाव, द्वार, दरवाजा, मैदान, उद्गम, कुटुम्ब का मूल, रक्षा का बल, छुटकारे का उपाय, निर्वाह की रीति, सिलसिला, प्राप्ति की रीति, निकासी, लाभ।

निकासना—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *निकालना*) निकालना।

निकासी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *निकास*) निकालने का भाव या कार्य, रवानगी, प्रस्थान, कूच, मालगुजारी देने पर जमींदार को लाभ, मुनाफा, माल की रवानगी, बिक्री, चुंगी, वर या बारात का ब्याह के लिए घर से प्रस्थान (*रीति*)।

निकासू—वि॰ (दे॰) निकाला हुआ, बहित कृत, निष्कासित। संज्ञा, पु॰ (दे॰) द्वार, निकास।

निकास्ता—संज्ञा, पु॰ (दे॰) धूनी, टेक, स्तंभ, खम्भा, थाम (प्रान्ती॰)।

निकाह—संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमानों के ब्याह या विवाह की रीति। **मु॰ निकाह पढ़ना (पढ़ाना)** ब्याह करना (कराना)।

निकियाना—क्रि॰ स॰ (दे॰) नोच-नाच कर टुकड़े टुकड़े या धज्जी-धज्जी अलग करना।

निकिष्ट—वि॰ दे॰ (सं॰ निकृष्ट) नीच, तुच्छ, अधम।

निकुंज—संज्ञा, पु॰ (सं॰) लताभवन, लतागृह, घनी लताओं से आच्छादित स्थान।

निकुंभ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुम्भकरण का पुत्र, रावण का मंत्री, कुम्भ का भाई, एक शिवगण, एक विश्वेदेव।

निकुंभिला—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मेघनाद का यज्ञ स्थान, राक्षसों का देवालय।

निकुच—संज्ञा, पु॰ (दे॰) अढ़हल।

निकुटी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटी इलायची।

निकृति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अधर्म, पाप, कुकर्म, बुरा काम।

निकृष्ट—वि॰ (सं॰) नीच, तुच्छ, अधम।

निकृष्टता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नीचता, तुच्छता, बुराई।

निकेत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भवन, मंदिर, घर, स्थान, निकेता, निकेतू (दे॰)।

निकेतन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मन्दिर, भवन, घर, मकान, स्थान, जगह।

निकोना, निकोलना–क्रि. स. (दे.) छीलना, ऊपर का छिलका हटाना।

निकोटना– क्रि. स. (दे.) चुटकी काटना, नोचना।

निकोसना–कि. स. वि. (दे.) खिसियाना, दाँत दिखाना, अपमान करना।

निकौनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *निकाना*) निकालने का कार्य या मजदूरी, **निकाई, निकवाई।**

निक्ती–संज्ञा, स्त्री. (दे.) लोहे के पलरों का छोटा तराजू, काँटा।

निक्वण–संज्ञा, पु. (सं.) वीणा, बाजा का शब्द, सितार या तार का शब्द।

निक्षिप्त–वि. (सं.) व्यक्त, अर्पित, न्यस्त, स्थापित, धरोहर, बंधक रखा हुआ, छोड़ा या फेंका हुआ।

निक्षेप–संज्ञा, पु. (सं.) त्याग, समर्पण, समर्पित, धरोहर, अमानत, थाती, फेंकने या डालने की क्रिया का भाव, चलाने, छोड़ने या पोंछने की क्रिया का भाव।

निक्षेपक, निक्षेपकारी–वि. (सं.) स्थापक, स्थापन कर्ता, त्याग करने वाला, समर्पण कर्ता, धरोहर या थाती या गिरों रखने वाला, चलाने, फेंकने, डालने, छोड़ने या पौंछने वाला।

निक्षेपण–संज्ञा, पु. (सं.) छोड़ना, त्यागना, फेंकना, चलाना, डाटना, समर्पण। वि. **निक्षिप्त, निक्षेप्य**। वि. **निक्षेपणीय।**

निखंग–संज्ञा, पु. दे. (सं. निषंग) तरकश, तूणीर, भाथा।

निखंड–वि. यौ. (सं. *निस्+खंड*) मध्य, बीच, मझों माँझ, बीचों बीच, ठीक ठीक, सटीक।

निखट्टर–वि. (दे.) निर्दय, निर्दयी, कठोर हृदयी।

निखट्टू–वि. दे. (हि. *उप. नि–नहीं। खटना–कमाना*) कुछ कमाई न करने वाला, सुस्त, आलसी, निकम्मा, इधर-उधर व्यर्थ घूमने वाला। संज्ञा, पु. (हि.) **निखट्टू पन।**

निखमन–संज्ञा, पु. (सं.) खोदना, बनना, गोड़ना। क्रि. स. (दे.) **निखनना।**

निखरना–क्रि. अ. दे. (सं. निक्षरण) छूटना, साफ, स्वच्छ, या निर्मल होना, रंगत का खुलासा होना।

निखरवाना–क्रि. स. दे. (हि. *निखरना का प्रे. रूप*) धुलवाना, स्वच्छ या साफ कराना, निखराना। संज्ञा, स्त्री. (दे.)। **निखराई, निखरवाई।**

निखरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *निखरना*) पक्की रसोई पूरी आदि। *विलो.* सखरी। सा. भू. स्त्री. (दे.) स्वच्छ, हुई, शुद्ध। वि. स्त्री. (दे.) स्वच्छ, धुली।

निखर्ब–संज्ञा, पु. (सं.) दश खर्व की संख्या।

निखवख*–वि. (सं. *न्यक्षु–सारा, सब*) निश्शेष, सम्पूर्ण सबका सब, सारा।

निखात–संज्ञा, पु. (सं.) परिखा, खाँई, गढ़ा, खत्ती।

निखाद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निषाद*) केवट, मल्लाह, सात स्वरों में से एक स्वर।

निखार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *निखरना*) स्वच्छता, सफाई, निर्मलता, शृंगार।

निखारना–क्रि. स. दे. (हि. *निखरना*) परिमार्जित करना, स्वच्छ या साफ करना, पवित्र या निर्मल करना।

निखालिस–वि. दे. (हि. *नि+खालिस अ.*) मेल-रहित, बिल्कुल स्वच्छ, विशुद्ध।

निखिल–वि. (सं.) सबका सब, सम्पूर्ण, समग्र।

निखुटना, निखूटना–क्रि. अ. (दे.) थक जाना, समाप्त होना। "बाती सूखी तेल निखूँटा"–कबी.।

निखेध–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निषेध*) रोक, मनाही, इन्कार। वि. (दे.) **निखिल निषिद्ध** (सं.)।

निखेधना–क्रि. स. दे. (सं. *निषेध*) रोकना, मना करना।

निखोट-निखोटि–वि. दे. (हि. *उप. नि +खोट*) निर्दोष, विशुद्ध, स्वच्छ, साफ, क्रि. वि. (दे.) संकोच-रहित, बेधड़क।

निखोड़ना–क्रि. स. (दे.) **निकोलना,** छीलना।

निखोरना–क्रि. स. (दे.) नख से नोचना।

निगंदना–क्रि. स. (फा. *निगदः=बखिया*) रजाई आदि रुई-भरे कपड़ों में तागा डालना।

निगंध–वि. दे. (सं. *निर्गंध*) गंध-रहित।

निगड–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हाथी की जंजीर, बेड़ी।

निगडित–वि. (सं.) कैद, बँधा हुआ, बद्ध, बेड़ी पहिनाया हुआ।

निगद–संज्ञा, पु. (सं.) भाषण, कथन, एक औषधि।

निगदना–क्रि. स. (दे.) कहना। संज्ञा, पु. निगदन। वि. **निगदनीय।**

निगदित–संज्ञा, पु. (सं.) भाषित, कथित, उक्त, वर्णित,

उल्लेख किया या कहा हुआ।

निगम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेद, निश्चय, मार्ग, बाजार, मेला, व्यापार।

निगमन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फल, नतीजा। प्रतिज्ञा को फिर कहना फल है।

निगमागम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वेदशास्त्र।

निगर–वि॰, संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *निकर*) समूह, झुण्ड।

निगरना–क्रि॰ स॰ (दे॰) निगलना। संज्ञा, स्त्री॰ (आ॰) **निगरी**–सत्तू की पिंडी।

निगरा–वि॰ (फा॰) रक्षक।

निगरानी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) देख-भाल, देख-रेख, निरीक्षण, चौकसी।

निगरा, निगुरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *नि+गुरु*) हलका, जो भारी या वजनी न हो, बिना गुरु वाला, निगोड़ा (आ॰)।

निगलना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *निगरण*) लील जाना, दूसरे का धन आदि मार लेना या बैठना। प्रे॰ **रूप–निगलाना, निगलवाना**।

निगह–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰ *निगाह*) निगाह, नजर, दृष्टि। संज्ञा, पु॰ **निगहवाँ**।

निगहबान–संज्ञा, पु॰ (फा॰) निरीक्षक, रक्षक। संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) **निगहबानी**।

निगहबानी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) रक्षा, हिफाजत।

निगालिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नग स्वरूपिणी छंद (पिं॰)।

निगाली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *निगाल*) हुक्के की नली, जिसे मुँह में लगाकर धुआँ खींचते हैं।

निगाह–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) नजर, दृष्टि, चितवन, कृपादृष्टि, मेहरबानी, ध्यान, पहिचान। **मु॰ निगाह करना (रखना)**।

निगुण-निगुन–वि॰ दे॰ (सं॰ *निर्गुण*), तीन गुणों से परे, गुण-रहित, मूर्ख।

निगुनी–वि॰ दे॰ (हि॰ *उप॰ नि+गुनी*) गुण-रहित जिसमें कोई गुण न हो।

निगुरा–वि॰ दे॰ (हि॰ *उप॰ नि+गुरु*) जिसने गुरु से शिक्षा न ली हो, अदौछित, अपढ़, मूर्ख। स्त्री॰ **निगुरी**।

निगूढ़–वि॰ (सं॰) अति गुप्त या छिपा। रहस्यमय। संज्ञा, स्त्री॰ **निगूढ़ता**।

निगृहीत–वि॰ (सं॰) पकड़ा या धरा हुआ, आक्रांत, आक्रमित, दुखित, पीड़ित।

निगोड़ा–वि॰ दे॰ (हि॰ *निगुरा*) असहाय, अनाथ, अभागा, दुष्ट, दुराचारी, दुष्कर्मी, नीच। स्त्री॰ **निगोड़ी**।

निग्रह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोक, दमन, अवरोध, बंधन, फटकार, सीमा, दंड।

निग्रहना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *निग्रह*) रोकना, पकड़ना, फटकारना, दंड देना।

निग्रहस्थान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जब कोई उलटी-पुलटी या बेसमझी की बातें कहने लगे तो विवाद रोक दिया जाता है क्योंकि वह पराजय है, इसी को निग्रह-स्थान कहते हैं, ये 22 हैं (न्या॰)।

निग्रही–वि॰ (सं॰ *निग्रहिन्*) रोकने, दबाने या दंड देने वाला।

निघंटु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेद के शब्दों का कोश, शब्द-संग्रह मात्र।

निघटत–क्रि॰ अ॰ (दे॰) कम या न्यून होते ही, घटते ही।

निघटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *घटना*) घटना, चुकना, समाप्त होना या निबट जाना।

निघटा–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *निघटना*) घटा, कम हुआ। स्त्री॰ **निघटी**।

निघटाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *निघटना*) घटवाना, कम कराना। *प्रे॰ रूप*– **निघटापना, निघटवाना**।

निघरघट–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *नि–नहीं+घरघाट*) जिसका धरवाट या ठीक ठिकाना कहीं भी न हो, निर्लज्ज। **मु॰ निघरघट देना**–निर्लज्जता से झूठी सफाई देना।

निघरघटा–वि॰ दे॰ (हि॰ *निघरघट*) जिसके घर-द्वार न हो। स्त्री॰ **निघरघटी**।

निघरा–वि॰ दे॰ (हि॰) जिसके घर-बार न हो।

निघ्र–वि॰ दे॰ (सं॰) वशीभूत, आधीन। शिष्ट, आयत।

निचय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समूह, संचय, निश्चय।

निचल–वि॰ दे॰ (सं॰ *निश्चल*) अचल, स्थिर, अटल।

निचला–वि॰ दे॰ (हि॰ *नीचे+ला प्रत्य॰*) नीचे वाला, नीचे का। स्त्री॰ **निचली**। वि॰ दे॰ (सं॰ *निश्चल*) शांत, अटल, स्थिर, अचल।

निचाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *नीच*) नीचापन, नीचता, कमीनापन, दुष्टता।

निचान–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *नीचा*) नीचापन, ढाल, ढुलान।

निचिंत-निचीत–वि॰ दे॰ (सं॰ *निश्चिंत*) सुचित, बे खटके, निश्चिंत।

निचुड़ना, निचुरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *नि+ चयन*) चूना, टपकना, गरना, दबाव डालने पर रस निकल जाना।

निचै*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *निचय*) समूह, राशि।

निचोड़-निचोर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *निचोड़ना*) सारांश, सार, रस, सत, खुलासा, निष्कर्ष।

निचोड़ना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *निचुड़ना*) किसी गोली या रस या पानी-भरी वस्तु को दबा या ऐंठ कर रस या पानी गिगना, किसी पदार्थ का मूल तत्व या सार भाग निकाल लेना, सब हर खेना, **निचोरना** (दे॰)। **निचोड़ना**।

निचोरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *निचोड़ना*) निचोड़ना।

निचोल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) औरतों की चादर या ओढ़नी।

निचोवना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *निचोड़ना*) निचोड़ना।

निचौहां–वि॰ दे॰ (हि॰ *नीचा+औहाँ प्रत्य॰*) नीचे की तरफ झुका हुआ, नमित। स्त्री॰ **निचौहीं**।

निचौहें–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *निचौहाँ*) नीचे की ओर।

निछक्का–वि॰ दे॰ (सं॰ *निस+चक्र–मंडली*) एकांत, निर्जन स्थान, निराला।

निछत्र–वि॰ दे॰ (सं॰ *निश्छय*) विना छत्र, छत्र हीन, राज्य-चिन्ह-रहित। वि॰ दे॰ (सं॰ *निःक्षत्र*) क्षत्रि -रहित या हीन।

निछनियाँ‡–वि॰ दे॰ (हि॰ *निछान*) निछान, शुद्ध, खालिस, बेमेल।

निछल*–वि॰ दे॰ (सं॰ *निश्छल*) छल रहित, **निश्छल**। संज्ञा, स्त्री॰ **निछलता**।

निछान–वि॰ दे॰ (हि॰ *उप+छानना*) बेमेल, शुद्ध। वि॰ (दे॰) बिलकुल, एकदम।

निछावर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *न्यारावर्त*, मि॰ अ॰ *निसार*) उतारा, उतार, वाराफेरा, उत्सर्ग। **मु॰ किसी का किसी पर निछावर होना**–किसी के लिए मर जाना, वह वस्तु जो निछावर की जाय, इनाम, नेग (विवाहादि में)।

निछोह-निछोहो–वि॰ दे॰ (हि॰ *उप॰ नि+छोह*) प्रेम-रहित, निर्दय, निर्मोही।

निज–वि॰ (सं॰) अपना, आपना, स्वकीय। वि॰ (दे॰) **निजी**–अपना। **मु॰निजका**–खास अपना। **निजी**–खास, प्रधान, मुख्य, यथार्थ, ठीक। अव्य॰ दे॰ निश्चय, ठीक-ठीक। **मु॰ निज करके (निजकै गुरु)**– अवश्य, जरूर, विशेष करके, मुख्यतः।

निजाम संज्ञा, पु॰ (अ॰), बंदोवस्त, इन्तजाम करने वाला, सूबेदार, हैदराबाद के नवाबों की पदवी; शासन; (अं॰) एडमिनिस्ट्रेशन।

निजू‡–वि॰ दे॰ (हि॰ *निज*) अपना, निजका।

निझरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *नि+झरना*) भली भाँति झड़ जाना, सार-रहित या रीता या खाली हो जाना, अपने को निर्दोष सिद्ध करना, सफाई देना।

निझोल–वि॰ दे॰ (दे॰) झोल-रहित, सुडौल।

निटिलाक्ष–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) शिवजी।

निटोल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *उप॰ नि+टोल*) टोला-मुहल्ला, बस्ती, पुरा।

निठल्ला– वि॰ दे॰ (हि॰ *उप नि–नहीं+ टहल–काम काज*) बेकार, बेकाम, कामधंधा या उद्यम-रहित, बैठाठाला।

निठल्लू–वि॰ दे॰ (हि॰ *निठल्ला*) मिठला, बेकार, बैठा ठाला।

निठाल, निठाला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नि+ टहल–कार्य*) एकान्त, खाली वक़्त। फुरसत का समय, जिस समय कोई काम या आमदनी न हो। **मु॰ निठाले**–एकांत में या फुरसत में।

निठुर–वि॰ दे॰ (सं॰ निष्ठुर) निर्दय, क्रूर, निर्मोही।

निठुरई, निठुराई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *निठुरता*) निर्दयता, क्रूरता, कठोरता।

निठुरता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *निष्ठुरता*) क्रूरता, निर्दयता, कठोरता।

निठौर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नि+ ठौर*) बुरा-स्थान, बुरी जगह या दशा, बुरा बाँध।

निडर–वि॰ दे॰ (हि॰ *उप॰ नि+डर*) निर्भय, निश्शंक, साहसी, ढीठ।

निडरपन, निडरपना–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *निडर+पन प्रत्य॰*) निर्भीकता, निर्भयता।

निढाल-निढाला–वि॰ दे॰(हि॰ *नि+ढाल–गिरा हुआ*) अशक्त, शिथिल, थका, सुस्त, निरुत्साह।

नितंत–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *नितांत*) नितांत, बहुत।

नितंब–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमर के पीछे का उभड़ा भाग, चूतर।

नितंबिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दर नितंब वाली स्त्री, सुन्दरी।

नित–अव्य. (सं.) नित्य, प्रति दिन, नित्त, निंनै (अ.)। यौ. नित-नित, नित-प्रति–प्रति दिन, हर रोज। नितनया–सदा नया रहने वाला। सदा, सर्वदा, हमेशा। **नितराम**–अव्य. (सं.) सदा, सर्वदा।

नितल–संज्ञा, पु. (सं.) सात पातालों में से एक (पु.)।

नितांत–वि. (सं.) बहुल, अधिक, एकदम, सर्वथा, बिलकुल, सदैव।

निति–अव्य दे. (सं. *नित*) सदा, सर्वदा, प्रतिदिन।

नित्य–वि. (सं.) जो सदा रहे, शाश्वत, अविनाशी। अव्य. प्रतिदिन, सदा। **मु. नित्य निवाहना**–नित्य कर्म करना।

नित्यकर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रतिदिन का कार्य्य, नित्य क्रिया, पूजन-पाठादि।

नित्यकृत्य–संज्ञा, पु. यौ (सं.) नित्य कर्म।

नित्यक्रिया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) नित्य कर्म।

नित्यगति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वायु, पवन।

नित्यता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नित्य होने का भाव, अनश्वरता, सदा, विद्यमानता, नित्यत्व।

नित्यत्व–संज्ञा, पु. (सं.) नित्यता।

नित्यदान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रतिदिन का कर्त्तव्य या दान।

नित्य नियम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रतिदिन का नियमित कर्त्तव्य या कार्य, प्रतिदिन की रीति, अचल।

नित्य-नैमित्तिक-कर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सन्ध्योपासन, अग्निहोत्रादि कर्म, ग्रहण-स्नान आदि पुण्य या शुभ कर्म।

नित्यप्रति–अव्य. यौ. (सं.) प्रति दिन, सदा, नियम से।

नित्य-प्रलय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चार प्रकार के प्रलयों में से एक, जीवों के प्रति दिन का मरण।

नित्यमुक्त–वि. यौ. (सं.) जीवन-मुक्त, चिरमुक्त, क्रियावान्, कर्मनिष्ट।

नित्य यौवन–वि. यौ. (सं.) स्थिर यौवन, सदा जवान या युवा रहने वाला।

नित्ययौवना–वि. स्त्री. यौ. (सं.) स्थिर या चिर यौवना, सदा युवा या जवान रहने वाली, द्रौपदी, कुन्ती, तारा आदि।

नित्यशः–अव्य. (सं.) सदा, सर्वदा, प्रतिदिन।

नित्यसम–संज्ञा, पु. (सं.) निर्विकार, अमशस्त उत्तर, अयुक्त, खण्डन (न्या.)।

नित्यानित्यविवेक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नित्य और अनित्य या नश्वर और अनश्वर वस्तु का विचार।

नित्यानन्द–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सदा का आनन्द जिसमें हो, परमेश्वर, एक साधु (बंगाल)।

नियंभ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नि+स्तंभ*) खम्भा।

निथरना–क्रि. अ. दे. (हि. *नि+थिर+ना प्रत्य.*) पानी आदि द्रव पदार्थों का स्थिर होना जिससे उसमें धुली वस्तु नीचे बैठ जाए और वस्तु साफ हो जावे।

निथरा–वि. दे. (हि. *निथरना*) स्वच्छ, निर्मल, साफ, उज्वल पानी आदि।

निथार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *निथारना*) साफ पानी, पानी में नीचे बैठी वस्तु।

निथारना–क्रि. स. दे. (हि. *निथरना*) पानी आदि द्रव पदार्थ को ऐसा स्थिर करना कि उसमें धुली वस्तु नीचे बैठ जाए, पानी को साफ करना, **थिराना** (आ.)।

निदई–वि. दे. (सं. *निर्दय*) दया-रहित, निर्दय।

निदग्धिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) श्वेत, छोटी चटाई।

निदरना–क्रि स. दे. (सं. *निरादर*) तिरस्कार, अपमान या अनादर करना, त्यागना, आख करना, सढ़ कर निकलना। पु. का. कि.-**निदरि**।

निदरहिं–क्रि. स. दे. (हि. *निदरना*) अनादर या अपमान करें, न मानें, प्रतिष्ठा न करें।

निदरि–क्रि. स. पूर्व. का. (हि. *निदरना*) अनादर या अपमान करके, निन्दा करके।

निदर्शन–संज्ञा, पु. (सं.) उदाहरण, दृष्टांत।

निदर्शन-पत्र–संज्ञा, पु. यो. (सं.) दृष्टांत-पत्र, उदाहरण-पत्र।

निदर्शन-मुद्रा–संज्ञा, स्त्री. यो. (सं.) मान या प्रतिष्ठा-सूचक मुद्रा।

निदर्शना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक अलंकार जिसमें एक बात दूसरी की पुष्टि करती है।

निदलन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निर्दलन*) निर्दलन, दलना, नाश करना।

निदहना–क्रि स. दे. (सं. *निदहन*) जलाना।

निदाध–संज्ञा, पु. (सं.) ग्रीष्म ऋतु, गरमी, घाम, धूप।

निदान–संज्ञा, पु. (सं.) आदि या मूल कारण, रोग का निर्णय या लक्षण, अंत, नाश। अव्य. (सं.) अन्त में, आखिरकार, वि. निकृष्ट, नीच।

निदारुण–वि॰ (सं॰) कड़ा, कठोर, भयंकर, दुःसह, निर्दय।
निदाह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निदाघ, गरमी, ग्रीष्म।
निदिध्यासन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बारम्बार ध्यान या स्मरण, परमार्थ-चिंतन।
निदेश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आज्ञा, शासन, हुक्म, कथन, अनुमति, नियोग, अनुशासन।
निदेस–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *निदेश*) आज्ञा, शासन, अनुमति, नियोग, कथन।
निर्दोष–वि॰ (सं॰ *निर्दोष*) निर्दोष, शुद्ध, निर्मल।
निद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *निधि*) निधि 9 हैं।
निद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक हथियार।
निद्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नींद, स्वप्न, सुप्ति।
निद्रायमान–वि॰ (सं॰) जो सो रहा हो।
निद्रालु–वि॰ (सं॰) सोने वाला, निद्राशील।
निद्रित–वि॰(सं॰) सोया हुआ।
निधड़क निधरक–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *नि–नहीं+धड़क*) बेखटके, निश्चिन्त। वि॰ (दे॰) उत्साही, साहसी, उद्योगी।
निधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शरण, मरण, नाश, वंश, कुल, वंश का स्वामी, विष्णुः वि॰ (दे॰) कंगाल, निर्धन, दरिद्र।
निधनी–वि॰ दे॰ (हि॰ *नि+धनी*) निर्धन, कंगाल।
निधान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आश्रय, आधार, निधि, लयस्थान, कोष।
निधि–संज्ञा, स्त्री॰ (स॰) खजाना, कोष, नौ निधियाँ, समुद्र, स्थान, घर, विष्णु, शिव, नौ की संख्या।
निधिनाथ, निधिपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) निधियों के स्वामी, कुबेर।
निनरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *निः+निकट, प्रा॰ विनिअड़*) अलग, जुदा, न्यारा, दूर।
निनाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आवाज, शब्द।
निनादी–वि॰ (सं॰ *निनादिन्*) शब्द करने वाला। स्त्री॰ निनादिनी। वि॰ **निनादित**।
निनान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *निदान*) लक्षण, अन्त। क्रि वि॰ (दे) आखिर में, अन्त में। वि॰ (दे) हद दरजे का, बिलकुल, एकदम, बुरा, नीच।
निनानवे, निन्यानवे–वि॰ दे॰ (सं॰ *नदनवति*) नब्बे और नौ। संज्ञा, पु॰ (दे॰) नब्बे और नौ की संख्या। **मु॰ निन्नानवे के फेर में आना (पड़ना)**–धन जोड़ने की फिक्र याधुनि में पड़ना, चक्कर में पड़ना।
निनार–पि॰ (दे॰) बिलकुल, न्यारा, अकेला, **निछला** (आ॰ प्रान्ती॰)।
निनारा–वि॰ (सं॰ *निः+निकट*) जुदा, भिन्न, अलग, दूर। स्त्री॰ **निनारी**।
निनावाँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नन्हा*) मुँह के भीतर निकालने वाले छोटे छोटे दाने।
निनौना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *नयन*) खजाना, झुकाना, नवाना।
निन्यारा–वि॰ दे॰ (हि॰ *निनारा*) जुदा, पृथक्, भिन्न, दूर।
निपंग–वि॰ दे॰ (सं॰ *नि+पंगु*) अपाहिज, लंगड़ा, लूला, **अपंग** (दे॰)।
निपजना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *निष्पत्तते*) उगना, उपजना, बढ़ना, पकना।
निपजी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *निपजना*) लाभ, उपज।
निपत्र–वि॰ दे॰ (सं॰ *निष्पत्र*), ठूंठ, पत्रहीन।
निपट–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *नि+पट*) केवल, सिर्फ, निरा, एकमात्र, बिलकुल।
निपटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *निवर्त्तन*) फुरसत या छुट्टी पाना, निवृत या समाप्त होना, निर्णीत या तै होना।
निपटाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *निवर्त्तन*) चुकाना, निर्णीत करना। संज्ञा, पु॰ निपटारा, **निपटाव**।
निपटेरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *निपटाना*) निर्णय, फैसला, समाप्ति, छुट्टी, **निपटारा**।
निपतन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गिरना, अधःपतन, गिराव। (वि॰ नियतिर, निपतनीय।
निपाटना–क्रि॰ स॰ (दे॰) काट देना, समाप्त करना।
निपात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गिराव, पतन, नाश, मृत्यु, बिना नियम के बना शब्द। वि॰ दे॰ (हि॰ *नि+पत्ता*) बिना पत्तों का।
निपातन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मारने या गिराने का काम, नाश, नीचे गिराना। वि॰ निपातनीय, **निपातित**।
निपातना–क्रि॰ स॰ (दे॰) नष्ट करना, काट गिराना, मार डालना।
निपाती–वि॰ दे॰ (सं॰ *निपातिन्*) गिराने, फेंकने या मारने वाला। *वि॰ निपातित। संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव जी। वि॰ दे॰ (हि॰ *नि+पाती*) बिना पत्ते का।
निपीड़क–वि॰ (सं॰) पेरने वाला।
निपीड़न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुख या कष्ट देना, पेरना, दबाना,

मलना। वि. निपीड़ित। वि. **निपीड़नीय**।

निपीड़ना*– क्रि. स. दे. (*सं. निपीड़न*) दबाना, मलना, पेरना, कष्ट या दुख देना।

निफन–*वि. संपूर्ण, पूरा। अ. पूर्णरूप से, पूरी तरह से।*

निफरना–*क्रि अ. धँसकर आर पार होना; स्पष्ट होना, साफ होना।*

निफल–स्त्री– वि. दे. 'निष्फल'।

निफला–संज्ञा स्त्री (सं.) ज्योतिष्मनी लता।

निफाक–संज्ञा पु. (अ.) अनबन, झगड़ा।

निफारना–क्रि. अ. आर-पार छेद करना, धँसा कर आर-पार करना; स्पष्ट करना, साफ करना।

निफालन–संज्ञा पु. (सं.) देखना; अवलोकन।

निफोट–वि. स्पष्ट, व्यक्त।

निबंध–संज्ञा पु. (सं.) बन्धन; संलग्नता; संग्रह-ग्रन्थ; वह विचारपूर्ण लेख जिसमें किसी विषय का सम्यक् विवेचन किया गया हो (अं. ऐसे); गति; पेशाब रुकने की बामारी; प्रतिबन्ध; हथकड़ी; कारण, नीम; वह वस्तु जिसे देने की प्रतिज्ञा की गई हो; बाँधने या जोड़ने की क्रिया; सरकारी आज्ञा।

निबंधक–संज्ञा पु. (रजिस्ट्रार) दे. पंजीयक'।

निबंधन–संज्ञा पु. (सं.) बाँधने की क्रिया; बंधन; वीणा या सितार की खूँटी; रचना; रोकना, अवरोध करना; बंधन या लगाव का आश्रय, आधार; सम्बन्ध, जुड़ाव; हेतु, कारण; शासनपट्ट आदि। (रजिस्ट्रेशन) दे. 'पंजीयन'।

निबंधनी–संज्ञा स्त्री. (सं.) बन्धन का साधन।

निबंधा(धृ)–संज्ञा पु. (सं.) बाँधने वाला; लेखक; रचयिता।

निबंधी (धिन)–वि. (सं.) बाँधने वाला; जुड़ा हुआ, संबद्ध; कारण स्वरूप; उत्पन्न करने वाला।

निब–संज्ञा स्त्री. (अं.) कलम/होल्डर में खोंसी जाने वाली नुकीली वस्तु जिससे लिखा जाता है।

निबकौरी, निबौरी–संज्ञा स्त्री. नीम का फल या बीज।

निबटना–क्रि. अ. निवृत्त होना, छुटकारा पाना, फुरसत पाना, फरागत महसूस करना, काम का पूरा होना, समाप्त होना, खत्म होना, निःक्षेष होना, तय हो जाना; शौच क्रिया से निवृत्त होना।

निबटाना–क्रि. स. समाप्त करना, खत्म करना; पूरा करना; पूरा हिसाब कर देना, चुकता करना; तय करवाना, निर्णय करना।

निबटारा, निबटारा–संज्ञा पु. दे. निबटेरा।

निबटेरा–*संज्ञा पु. निबटाने का भाव या कार्य,* **फुरसत**, *अवकाश; छुट्टी; समाप्त; खात्मा, निर्णय,* **फैसला**।

निबड़– वि. दे. निविड।

निबद्ध–वि. (सं.) बँधा हुआ; गूँथा हुआ, ग्रथित; लिखा हुआ, लिखित, प्रणीत, रचित; जुड़ा हुआ, सम्बद्ध; जुड़ा हुआ, खचित, जटित, रोका हुआ, अवरुद्ध; आवृत; पंजीबद्ध, पंजीकृत (सरकारी दस्तावेज इत्यादि)।

निबरना–क्रि. अ. फँसा या लगा रहना; बन्धन या लगाव से मुक्त होना; छुटकारा पाना, मुक्त होना, त्राण पाना; बचा रह सकना; निवृत्त होना; फरागत होना, फुरसत पाना, पूरा होना, निभना; निबटना; तय होना, पृथक होना, उलझा न रहना, सुलझना; बना न रहना, खत्म हो जाना, मिट जाना।

निबर्हण–संज्ञा पु. (सं.) मारने या नाश करने की क्रिया, मारण। वि. नाश करने वाला।

निबल–वि. दे. 'निर्बल'।

निबह–पु. दे. 'निर्वह'।

निबहना–क्रि. अ. बच निकलना, त्राण पाना, पार पाना; छुट्टी पाना; निर्वाह होना, ज्यों का त्यों बना रहना, कभी भंग न होना, किसी स्थिति में; सम्बन्ध आदि में फर्क न पड़ना; किया जा सकना; पूरा होता रहना, चालू रह सकना, निभना; पूरा होना, पालन होना।

निबहुर–वि. (ग्रा.) जहाँ पहुँचकर कोई बहुर न सके, लौट न सके (मझदार)।

निबहुरा–वि.(ग्रा.) जो सदा के लिए चला जाए (गाली)।

निबारना–क्रि. स. निवारण करना, रोकना, मना करना; चुकाना, दे. 'निबारना'।

निबाह–संज्ञा पु. निबाहने का काम या भाव; निर्वाह, गुजारा; किसी स्थिति, सम्बन्ध आदि को बनाए या जारी रखने का काम, रक्षा, पालन, पूर्ति; छुटकारे का उपाय, त्राण का मार्ग, बचने का रास्ता, बचाव।

निबाहक–वि. निवाह करने वाला।

निबाहना–क्रि. स. निर्वाह करना, ज्यों का त्यों बनाए रखना,

कभी भंग न होने देना; किसी स्थिति, सम्बन्ध आदि की रक्षा किए जाना; कोई (काम या वादा इत्यादि) किए जाना, पूरा करते रहना, चालू रखना, *निभाना; पालन करना, निकालना, साधना।*

निबिड–वि. (सं.) घना, गहरा; कठिन।

निबुआ–संज्ञा पु. दे. नीबू।

निबुकना–क्रि. अ. बच निकलना, मुक्त होना, छुटकारा पाना, बन्धन से मुक्त होना; बन्धन ढीला होना, खिसकना; संपन्न होना।

निबेड़ना–क्रि. स. बन्धन रहित करना, मुक्त करना, छुड़ाना; गूँथी हुई/ मिली हुई वस्तुओं को पृथक करना; छाँटना; सुलझाना, उलझी न रहने देना; निबटाना, फैसला करना; दूर करना, पृथक करना; पूरा करना, समाप्त करना।

निबेड़ा–संज्ञा पु. छुटकारा; त्राण, बचाव; मिली हुई वस्तुओं को पृथक किए जाने का भाव; सुलझाव; निबटारा, निर्णय; दूरीकरण, हटाव; पूर्ति, पूरा करना।

निबेरना–क्रि. स. दे. 'निवेड़ना' (निबेरना) (यथा न्याय निबेरना) त्यागना; वसूल करना।

निबेरा–संज्ञा पु. दे. 'निवेड़ा'।

निबेसित–वि. 'निवेशित'।

निबेहना–क्रि. स. दे. 'निबेरना'।

निबोध–संज्ञा पु. (सं.) समझना, सीखना, बताना, समझाना।

निबोधन–संज्ञा पु. (सं.) समझने या समझाने की क्रिया।

निबौरी–संज्ञा स्त्री. दे. 'निमकौड़ी'।

निबौली–संज्ञा, स्त्री. दे. 'निमकौड़ी'।

निभ–वि. (सं.) बहुत चमकदार, प्रखर प्रकाश वाला; समान, सदृश (समासांत में)। पु. प्रकाश; व्याज; छल-कपट; प्रकट होना।

निभना–क्रि. अ. दे. निवहना'

निभरम–वि. जिसे या जिसमें किसी प्रकार का खटका न हों; भ्रमरहित। अ. बेखटके; निःशंक।

निभरमा–वि. जिसका भरम या विश्वास उठ गया हो; जिसकी पोल खुल गई हो।

निभरोस–वि. जिसे भरोसा न हो; बिना सहारे का, निराधार।

निभरोसी–वि. जिसका कोई सहारा न हो; बिना सहारे का, निराधार।

निभाऊ, निभाव–संज्ञा पु. दे. 'निवाह'। **वि. भाव रहित।**

निभागा–वि. भाग्यहीन, अभागा।

निभाना–क्रि. स. दे. *'निबाहना'*।

निभालन–संज्ञा पु. (अं.) देखना, दर्शन; *मालूम करना।*

निभूत–वि. (सं.) बीता हुआ, भूत, जो बहुत डर गया हो।

निभृत– वि. (सं.) रखा या धरा हुआ; छिपा हुआ, गुप्त, अंतर्हित; जो अस्त होने जा रहा हो; नम्र, विनीत; अचल, स्थिर, पूर्ण, भरा हुआ, निर्जन, सूना, चुप, शांत जो जोरदार न हो, धीमा, मन्द, बन्द किया हुआ। आवृत्त; धीर, धैर्यवान। पु. नम्रता।

निभृतात्मा (त्मन)–वि. (सं.) धीर, दृढ़।

निभ्रांत–वि. दे. 'निर्भ्रान्त'।

निमंत्रण–संज्ञा पु. (सं.) किसी कार्य, उत्सव आदि या श्राद्ध भोज आदि में सम्मिलित होने का निवेदन, बुलावा, दावत, न्यौता। (निमंत्रण वह न्यौता है जिसका पालन न करने पर मनुष्य दोष का भागी होता है-सिद्धान्त कौमुदी)।-पत्र-पु. वह पत्र जिसमें किसी कार्य, उत्सव आदि में सम्मिलित होने का निवेदन किया गया हो।

निमंत्रना–क्रि. स. निमंत्रण देना, न्यौता देना।

निमंत्रित–वि. (सं.) जो निमंत्रण द्वारा बुलाया गया हो, आहूत।

निम–संज्ञा पु. (सं.) कील, खूँटी, शलाका।

निमक–संज्ञा पु. दे. 'नमक'।

निमकी–संज्ञा स्त्री. दे. (फा. नमक) अचार, नींबू, गेहूँ के मैदे की नमकीन टिकिया। **निमकौड़ी-निमकौरी**–संज्ञा स्त्री. दे. (हि. *निबौरी*) नीम का फल, निबौरी।

निमग्न–वि. (सं.) मग्न, तन्मय, डूबा हुआ। स्त्री. **निमान।**

निमग्ना–वि. दे. (सं. *निम्न*) नीचा, ढलवाँ, निम्न, विनीत, कोमल, दब्बू।

निमज्जन–संज्ञा पु. (सं.) डुबकी लगाकर किया जाने वाला स्नान, अवगाहना। वि. **निमज्जनीय, निमज्जित।**

निमज्जना–क्रि. अ. (सं. *निमज्जन*) डुबकी या गोता लगाना, अवगाहन या स्नान करना, नहाना।

निमज्जित–वि. (सं.) मग्न, डूबा हुआ, स्नान, नहाया हुआ।

निमटना–क्रि. अ. दे. (हि. *निबटना*) निबटना, **निपट।**

निमता*–वि. दे. (हि. *नि+माता*) जो उन्मत्त न हो, बिना माता का।

निमन–**वि. दे.** **(हि.** ***निमनाना*****)** **सुन्दर, मनोरम, दर्शनीय, दृढ़, पोढ़ा, कढ़ा, ठोस।**

निमनाई–संज्ञा स्त्री. दे. (हि. *निमनाना*) अच्छापन, सुन्दरता, दृढ़ता, मनोहरता।

निमनाना–क्रि. स. (दे.) सुन्दर या मनोरम बनाना, सुधारना, पोढ़ा या दृढ़ करना।

निमय–संज्ञा पु. (सं. *नि+मय*) विनिमय, परिवर्तन, बदला।

निमात्ता–वि. दे. (सं. *निमय*) सावधान, सचेत, अप्रमत्त।

निमान–संज्ञा पु. दे. (सं. *निम्न*) गड्डा, नीचा स्थान, ताल, डाल।

निभि–संज्ञा, पु. (सं.) इक्ष्वाकु का एक पुत्र जिससे निमि वंश चला, निमेष, पलकों का वन्द होना, खुलना।

निमिख, निमिष–संज्ञा पु. दे. (सं. *निमेष*) निमेष पलकों का खुलना और बन्द होना, पलक मारने का समय।

निमित्त–संज्ञा पु. (सं.) कारण, हेतु, उद्देश्य, साधन।

निमित्तक–वि.(सं.) किसी हेतु या उद्देश्य से होने वाला, उत्पन्न, जनित।

निमित्तकारण–संज्ञा पु. यौ. (सं.) जिस के द्वारा कोई पदार्थ बनाया जाए, एक कारण (न्या.)।

निमिराज–संज्ञा पु. यौ. (सं.) राजा जनक।

निमिष–संज्ञा पु. दे. (सं. *निमेष*) निमेष।

निमीलन–संज्ञा पु. (सं.) आँख मीचना या मूँदना, पलकें लगाना।

निमीलित–वि. (सं.) पलकों से मुँदे या बन्द, बन्द पलकें।

निमूना–संज्ञा पु. (दे.) (फा. *नमूना*) निमोना।

निमेट–वि. दे. (हि. *नि+मिटाना*) न मिटने वाला।

निमेष–संज्ञा पु. (सं.) पलकों का मूँटना और खुलना, पल, क्षण, निमिष।

निमोना–संज्ञा पु. दे. (सं. *नवाना*) चने या मटर के हरे दानों से बना खालन।

निम्न–वि. (सं.) नीचे, तले, नीचा। यौ. निम्नांकित–नीचे लिखा।

निम्नगा–संज्ञा स्त्री. (सं.) नदी।

नियन्ता–संज्ञा पु. (सं. *नियंतृ*) नियम या व्यवस्था बाँधने वाला, नियम पर चलाने वाला, शासक। वी. **नियंती**।

नियंत्रण–संज्ञा पु. (सं.) नियम में बाँधना या तदनुकूल चलाना। वि. नियन्त्रणीय।

नियंत्रित–**वि. (सं.) नियम से बँधा हुआ, नियमबद्ध, प्रतिबद्ध**

नियत वि. (सं.) नियम के द्वारा स्थिर या बँधा हुआ मुकर्रर, नियोजित, तैनात, स्थापित, निश्चित, ठीक संज्ञा स्त्री. (फा.) नीयत, इरादा।

नियताप्ति–संज्ञा स्त्री. यौ. (सं.) अन्य उपायों को छोड़ एक ही उपाय से फल की प्राप्ति का निश्चय (नाट.)।

नियतात्मा–वि. यौ. (सं.) वशी, यमी, यती, जितेन्द्रिय।

नियताहार, नियताहारी–वि. यौ. (सं.) परिमित भोजन, मितभुक, अल्पाहारी।

नियति–संज्ञा स्त्री. (सं.) नियत होने का भाव, स्थिरता, बन्धेज, भाग्य या भाग्यफल, अवश्यंभावी बात।

नियतेन्द्रिय–वि. यौ. (सं.) *जितेन्द्रिय, संयत शरीर, प्रशांत चित्त*।

नियम–संज्ञा पु. (सं.) दस्तूर, परम्परा, व्यवस्था, कानून-कायदा, शर्त, प्रतिज्ञा, योग का एक अंग।

निर्यमन–संज्ञा पु. (सं.) कायदा बाँधना, शासन। वि. **नियमित, नियम्य**।

नियमबद्ध–वि. यौ. (सं.) कायदे का पावन्द, नियमों से बँधा हुआ।

नियमशाली–वि. (स.) नियमयुत, नियमानुसार, कार्यकर्त्ता।

नियमसेवा–संज्ञा स्त्री. यौ. (सं.) नियम पालन। वि. **नियमसेवी**।

नियमित–वि. (सं.) क्रमबद्ध, नियम या कायदे के अनुसार, नियमबद्ध।

नियर–अव्य. दे. (सं. निकट, अं. *नियर*) समीप, पास। क्रि. वि. (दे.) नियरे, नेरे।

नियराई†–संज्ञा स्त्री. दे. (हि. *नियर+आई प्रत्य.*) सामीप्य, निकटता।

नियराना–क्रि. अ. दे. (हि. *नियर+आना*) पास या समीप पहुँचना या आना।

नियाई–वि. दे. (सं. *न्याय*) न्यायी, न्यायशास्त्रज्ञ।

नियान–संज्ञा पु. दे. (सं. *निदान*) फल, परिणाम। अव्य. (दे.) आखिरकार, अंत में, निदान।

नियामक–संज्ञा पु. (सं.) नियम या व्यवस्था करने वाला, मारने वाला। स्त्री. **नियामिका**। संज्ञा स्त्री.। **नियामिकता**।

नियामत, न्यामत–संज्ञा स्त्री. दे. (अ. *नेअमत*) दुर्लभ या अलभ्य पदार्थ, स्वादिष्ट या उत्तम भोजन, धन

लक्ष्मी। लो.– "तन्दुरुस्ती हजार न्यामत है"।

नियाय, नियाष–संज्ञा पु. दे. (सं. *न्याय*) न्याय, उचित व्यवहार, इन्साफ, **न्याव** (आ.)।

नियार–संज्ञा पु. दे. (सं. *न्यारा*) सोनारों, जौहरियों या सराफों की दूकान का कूड़ा।

नियारा†–वि. दे. (सं. *निर्निकट*) दूर, अलग, जुदा, न्यारा (दे.)।

नियारिया–संज्ञा पु. दे. (हि. *नियारा*) न्यारिया, सुनार आदि की दुकान के कूड़े से सोना-चाँदी आदि का निकालने वाला। वि. (दे.) चतुर, चालाक।

नियारे*– क्रि. वि. दे. (हि. *नियारा*) न्यारे, अलग, जुदा, पृथक्।

नियुक्त– वि. (सं.) तैनात, मुकर्रर, नियोजित, लगाया या सरपर किया हुआ, प्रेरित, स्थिर।

नियुक्ति–संज्ञा स्त्री. (सं.) तैनाती, मुकर्ररी।

नियुत–संज्ञा पु. (सं.) दस लाख की संख्या।

नियुद्ध–संज्ञा पु. दे. (सं.) कुश्ती, मल्लयुद्ध।

नियोक्ता–संज्ञा पु. (सं. नियोक्त) नियोग करने वाला, नियोजित-कर्त्ता।

नियोग–संज्ञा पु. (सं.) नियोजित करने का काम, प्रेरणा, मुक़र्ररी, तैनाती, द्वितीय पति-करण। **नियोगी**–वि. (सं.) नियुक्त, आज्ञा-प्राप्त।

नियोजक–संज्ञा पु. (सं.) तैनात या मुक़र्रर करने वाला, काम में लगाने वाला।

नियोजन–संज्ञा पु. (सं.) मुक़र्रर या तैनात करना, किसी को किसी काम में लगाना। वि. **नियोजित, नियोजनीय, नियोज्य, नियुक्त**।

नियोजित–वि. (सं.) नियुक्त, संयोजित, तैनात।

निरंकार*–संज्ञा पु. दे. (सं. *निराकार*) निराकार, ईश्वर, आकाश।

निरंकुश–वि. (सं.) जिसे किसी का भी डर न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद, निडर।

निरंग–वि. (सं.) जिसके शरीर या अंग न हो, केवल। संज्ञा पु. (सं.) रूपकालंकार का एक भेद (विलो. **सांग**)। दि. (हि. *उप. नि–नहीं +रंग*) बदरंग, ये रंग, विवर्ण, उदास।

निरंजन–वि. (सं.) कज्जल या अंजन-रहित, दोष-रहित, शुद्ध, निर्दोष, आया-रहित। सं., पु. (सं.) **परमात्मा**।

निरंतर–वि. (सं.) घना, मिलित, स्थायी, अविछिन्न, अविचल। क्रि. वि. (सं.) लगातार अभ्यास, स्वाध्याय।

निरंतराल–वि. (सं.) अत्यन्त अंधा, महामूर्ख, अति अंधकार, बहुत अँधेरा।

निरंध–वि. (सं.) अत्यन्त अंधा, महामूर्ख, अति अंधकर, बहुत अँधेरा।

निरंभ–वि. (सं. *निरमम्*) निर्जल, पानी-रहित।

निरंश–वि. (सं.) अंशहीन, जिसका हिस्सा या भाग न हो, बिना अशांश का, निरशांश।

निरकेवलां–वि. (सं. *निस्+केवल*) स्वच्छ, खालिस, बेमेल।

निरक्षदेश–संज्ञा पु यौ. (सं.) भूमध्य या विषुवत रेखा के निकटवर्ती देश।

निरक्षन*–संज्ञा पु. यौ. (सं. *निरीक्षण*) निगरानी, देखरेख, देखभाल, दर्शन, जाँच।

निरक्षर– वि. (सं.) अक्षर-शून्य, **निरच्छर** (दे.) मूर्ख, अपढ़। **यौ. निरक्षर भट्टाचार्य**–अपढ़, मूर्ख।

निरक्षरेखा–संज्ञा स्त्री. यौ. (सं.) निरक्षवृत्त, क्रांति-वृत्त, नाड़ी-मंडल।

निरक्षि–वि. (सं.) नेत्र-विहीन, अंधा।

निरखना–क्रि. स. दे. (सं. *निरीक्षण*) अवलोकन करना, देखना, ताकना। प्रे. रूप (दे.) **निरखाना, निरखवाना**।

निरग*–संज्ञा पु. दे. (सं. *नृग*) एक दानी राजा, नृग।

निरगुन*–वि. दे. (सं. *निर्गुण*) निर्गुण, तीनों गुणों से परे, भगवान।

निरचू–वि. दे. (सं. *निश्चिंत*) निश्चिंत, खाली, छुट्टी या फुरसत वाला, **निहचू; निश्चू;** (आ.)।

निरजर–वि. दे. (सं. *निर्जर*) जो कभी पुराना या जीर्ण न हो, देवता।

निरजोस–संज्ञा पु. दे. (सं. *निर्णय*) निर्णय, निचोड़, सारांश।

निरजोसी–वि. दे. (हि. *निरजोस*) निर्णय करने या निचोड़ या सारांश निकालने वाला।

निरझर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निर्झर*) सोता, चशमा, झरना, निर्झर। स्त्री. (दे.) **निरझरी, निर्झरी**।

निरत–वि. (सं.) तत्पर, लीन, लगा हुआ।

निरतना*–क्रि. अ. दे. (सं. *नर्तन*) नाचना, नृत्य करना।
निरति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अप्रीति, अप्रेम, अस्नेह।
निरतिशय–वि. (सं.) सर्वोत्तम या उत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ, सबसे अच्छा या बढ़िया।
निरधातु–वि. दे. (सं. *निर्धातु*) बल या शक्ति-हीन।
निरधार*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निर्धार*) निर्णय, निश्चय, ठीक, सिद्धान्त।
निरधारना–क्रि. स. दे. (सं. *निर्धारण*) मन में निश्चय या स्थिर करना, समझना, बहुतों में से एक को चुन लेना।
निरनुनासिक–वि. यौ. (सं.) अननुनासिक, नाक की सहायता से उच्चरित वर्ण। जैसे-न, म, छ, न, ण, आदि।
निरन्न–वि. (सं.) निराहार, अन्न या भोजन रहित, भूखा।
निरन्ना–वि. दे. (सं. *निरन्न*) अस-रहित, निराहार।
निरपत्य–वि. (सं.) निस्संतान, पुत्र कन्या-रहित।
निरपना*–वि. दे. (सं. *निर+हि. अपना*) दूसरे का, पराया, अन्य, जो अपना न हो।
निरपराध*–वि. (सं.) निर्दोष, अपराध-रहित। कि. वि. (हि.) कोई कसूर बिना किए।
निरपराधी–वि. (सं.) निर्दोष, अपराध-रहित।
निरपाय–संज्ञा, पु. (सं. निर्+अपाय) पु. रक्षा, निर्वित्र।
निरपेक्ष–वि. (सं.*निर+अपेक्ष*) स्वतंत्र, बेपरवाह, लापरवाह, अनपेक्ष, उदासीन, चाह या भरोसा-रहित, अलग, तटस्थ। संज्ञा, स्त्री. **निरपेक्षा, निरपेक्षी**। वि. **निरपेक्षय, निरपेक्षणीय, निरपेक्षित**।
निरवंश, निरवंशी–वि. दे. (सं. *निर्बंश*) संतान-रहित, वंश या कुटुंब-हीन।
निरबल*–वि. दे. (सं. *निर्बल*) निर्बल, कमजोर, निबल।
निरबहना*–क्रि. अ. दे. (हि. *निभना*) निभना, निबहना।
निरबेद*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निर्वेद*) वैराग्य, त्याग, ज्ञान।
निरबेरा*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *निबेरा*) निबेरा।
निरभिमान–वि. (सं.) गर्व हीन, अहंकार-रहित, अभिमान-शून्य।
निरभियोग–वि. (सं.) अभियोग-रहित।
निरभिलाष–वि. (सं.) इच्छा, आकांक्षा, या अभिलाषा से रहित, **निरभिलाषी**। संज्ञा, स्त्री. **निरभिलाषा**।
निरभ्र–वि. (सं.) मेघ या बादल के बिना।
निरमना–क्रि. स. दे. (सं. *निर्माण*) बनाना, निर्माण करना।
निरमम–वि. (दे.) निर्मम (सं.) ममता-रहित।
निरमर-निरमल*–वि. दे. (सं. *निर्मल*) निर्मल, स्वच्छ, उज्ज्वल।
निरमाता–संज्ञा, पु. (दे.) निर्माता (सं.)।
निरमान*–क्रि. संज्ञा, पु. (सं. *निर्माण*) बनाना, निर्माण करना।
निरमाना*–क्रि. स. दे. (सं. *निर्माण*) रचना, बनाना, तैयार करना।
निरमायल*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निर्माल्य*) *किसी देवता पर चढ़ी वस्तु, निर्माशय*।
निरमित–वि. (दे.) निर्मित (सं.)।
निरमूलना*–क्रि. स. दे. (सं. *निर्मूलन*) जड़ से नाश या निर्मूल करना। संज्ञा, पु. (दे.) **निरमूलन**।
निरमोल–वि. दे. (सं. *निर्मूल्य*) अंमोल, अमूल्य, अनमोल, उत्तम।
निरमोहिल–वि. (दे.) **निर्मोही**।
निरमोही*–वि. दे. (सं. *निर्मोही*) निर्मोही, निर्दय, निर्दयी, मोह-रहित, ज्ञानी।
निरय–संज्ञा, पु. (सं.) नरक, दोज़ख़।
निरयण–संज्ञा, पु. (सं.) अयन-रहित, गणना बिना, वे घर का।
निरर्गल–वि. (सं.) अवाध, अप्रतिषंधक, वे रोक-टोक, अर्गल या जंजीर-रहित।
निरर्थक–वि. (सं.) अर्थ-रहित, बेमानी, एक निग्रह स्थान (न्या.), व्यर्थ, निष्फल, निष्प्रयोजन। संज्ञा, स्त्री. **निरर्थकता**।
निरवच्छिन्न–वि. (सं.) लगातार, क्रमशः, क्रमबद्ध।
निरवद्य–वि. (सं.) दोष-रहित, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष। संज्ञा, स्त्री. **निरवद्यता**।
निरवधि–वि. (सं.) सीमा-रहित, असमी।
निरवयव–वि. (सं.) असमय-रहित, निराकार, निरंग।
निरवलंब–वि. (सं.) अवलंब या आधार हीन, बिना सहारे, निरालय, निरालंबय।
निरवाना–क्रि. स. दे. (हि.) निराई कराना। संज्ञा, स्त्री. निरवा (दे.) निराने का काम या दाम।
निरवाई, निरवार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *निरवाना*) छुटकारा, बचाव, निस्तार, निपटारा, सुलझाव, निवारण, निराने का काम या दाम।

निरवारन*–क्रि. स. दे. (सं. *निवारण*) छुड़ाना, मुक्त करना, सुझलाना, निर्णय करना, तै या अलग करना।

निरवाह*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निर्वाह*) निर्वाह, गुज़ारा।

निरशन–संज्ञा, पु. (सं.) उपवास, लंघन, भोजन न करना, अनशन।

निरसंक‡–वि. दे. (सं. *निःशंक*) निःशंक, निःसन्देह, निर्भय, बे धड़क।

निरस–वि. (सं.) रस या स्वाद-बिना, विरस, फीका, बदमज़ा। (विलो. **सरस**)।

निरसन–संज्ञा, पु. (सं.) हटाना, फेंकना, दूर या रद करना, खारिज करना, निकालना, वध, नाश। वि. **निरसनीय, निरस्य**।

निरस्त–वि. (सं.) स्यक्त, त्यागा या छोड़ा हुआ, शिथिल किया हुआ। प्रत्याख्यात, निराकृत, निवारित, हटाया हुआ। (अं.) एनलड।

निरस्त्र–वि. (सं.) अस्त्र-रहित, खाली हाथ। यौ. संज्ञा, पु. (सं.) **निरस्त्रीकरण**।

निरहंकार–वि. (सं.) घमंड या अभिमान-रहित।

निरहेतु*–वि. दे. (सं. *निर्हेतु*) निर्हेतु, कारण रहित, व्यर्थ।

निरा–वि. दे. (सं. *निराश्रय*) खालिस, शुद्ध, बे मेल, केवल, निपट, बिलकुल, एकदम, एकाबारगी, बहुत, सब का सब, स्त्री. **निरी**।

निराई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *निराश*) निराने का कार्य या मज़दूरी, निरवाई।

निराकरण–संज्ञा, पु. (सं.) फैसला, निपटारा, सन्देह मिटाना, छाँटना, अलग करना, निवारण, परिहार, खंडन। वि. **निराकरणीय, निराकृत**।

निराकांक्षी–वि. (सं.) संतुष्ट, शांत, निस्पृह, परमेश्वर, आकाश संज्ञा, स्त्री. **निराकार**।

निराकार–वि. (सं.) आकार-रहित, परमेश्वर, आकश, ब्रह्म। संज्ञा, स्त्री. **निराकारता**।

निराकुल–वि. (सं.) सावधान, जो घबराया या आकुल न हो, बहुत व्याकुल या घबराया हुआ। संज्ञा, स्त्री. **निराकुलता**।

निराकृत–वि. (सं.) अपमानित, अस्वीकृत, हटाया हुआ।

निराकृति–वि. (सं.) आकार-हीन।

निराखर*†–वि. दे. (सं. *निरक्षर*) बिना अक्षर का, अक्षर-रहित, अशिक्षित, मूर्म, चुप, मौन।

निराचार–वि. (सं.) आचार-रहित, अनाचार, आचार-भ्रष्ट। वि. **निराचारी**। संज्ञा, स्त्री. **निराचारिता**।

निराट–वि. दे. (हि. *निराल*) एक मात्र, निरा, निपट, बिलकुल, सबका सब।

निरातंक–वि. (सं.) निःशंक, निर्भय, बे धाक, **आतंक-रहित**।

निरादर–संज्ञा, पु. (सं.) अपमान, बेईज़्ज़ती।

निराधार–वि. (सं.) बे सहारे, जो प्रमाणों के द्वारा पुष्ट न हो सके, मिथ्या, अयुक्त।

निरानंद–वि. (सं.) आनंद-रहित, दुखी।

निराना–क्रि. स. दे. (सं. *निराकरण*) निकाना, खेत से घासादि खोद कर हटाना।

निरावना (दे.)। प्रे. रूप– **निरवाना**। संज्ञा, स्त्री. **निराई, निरवाई**।

निरापद–वि. (सं.) निर्लिप्त, अनापद, सुरक्षित, विपत्ति-रहित, **निरापत्ति**।

निरापन, निरापुन*–वि. दे. (पु. *निः+हि.अपना*) पराया, जो अपना या निजी न हो।

निरामय–वि. (सं.) निरोग, तंदुरुस्त, स्वस्थ, स्वास्थ्य युक्त।

निरामिष–वि. (सं.) जो माँस न खाता हो, माँस-रहित, **निरामिख** (दे.)।

निरायुध–वि. (सं.) बिना अस्त्र के खाली हाथ, निरस्त्र।

निरार-निरारा–वि. दे. (हि. *निराला*) जुदा, अलग, पृथक्, निराला।

निरालंब–वि. (सं.) सहारा, या अवलंब से रहित, निराधार, निराश्रय।

निरालय–वि. (सं.) मकान या घर-रहित, निर्जन, एकांत, निराला।

निरालस्य–वि. (सं.) चुस्त, फुर्तीला, तत्पर, आलस रहित, **निरालस** (दे.)।

निराला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निरालय*) एकांत घर या स्थान, निर्जन, एकांत। (स्त्री. **निराली**) वि. (दे.) विलक्षण, सबसे अलग या भिन्न, अजीव, अनोखा, अद्भुत अनूठा, उत्तम, अपूर्व।

निरावना–क्रि. स. दे. (सं. *निराना*) निराना। संज्ञा, स्त्री.

निरवाई।

निरावलंब–वि. (सं.) बिना सहारे का, निराश्रय।

निराश-निरास–(दे.)–वि. (सं. *निराश*) नाउम्मेद, आशा-हीन। संज्ञा, पु. (सं.) **नैराश्य, निराशा**।

निराशा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **निरासा** (दे.) नाउम्मेद, हताश।

निराशी*–वि. (सं. *निराशा*) हताश, विरक्त, उदासीन, नाउम्मेद, **निरासी** (दे.)।

निराश्रय–वि. (सं.) आश्रय-विहीन, बे सहारे, असहाय। वि. **निराश्रित**।

निराहार–वि. (सं.) भोजन-रहित, आहार-रहित।

निरिंद्रिय–वि. (सं.) इन्द्रिय-रहित, बिना इन्द्रिय का।

निरिच्छना–क्रि. स. दे. (सं. *निरीक्षण*) देखना।

निरिच्छा–वि. (सं.) इच्छा रहित।

निरीक्षक–संज्ञा, पु. (सं.) देखरेख, निगरानी, चितवन, देखना, **निरीक्षणन** (दे.)। वि. **निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्षणीय, निरीच्छन**।

निरीक्षा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) देखना, **निरीच्छा** (दे.)।

निरीश्वरवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह सिद्धान्त कि परमेश्वर कोई वस्तु नहीं है, ईश्वर की सत्ता के न मानने का सिद्धान्त।

निरीश्वरवादी–संज्ञा, पु. (सं.) परमेश्वर को न मानने वाला नास्तिक।

निरीह–वि. (सं.) चेष्टा-रहित, प्रयत्न या इच्छा-रहित, उदासी, विरक्त, शांतिप्रिय। संज्ञा, स्त्री. **निरीहता**।

निरुक्त–वि. (सं.) निश्चय या ठीक रूप से कहा हुआ, नियुक्त, ठहराया हुआ। संज्ञा, पु. वेद के छै अंगों में से चौथा अंग, जिसमें यास्क मुनि-कृत वैदिक शब्दों की व्याख्या है।

निरुक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शब्दों या वाक्यों की व्युत्पत्ति-बोधक व्याख्या, एक अलंकार जिसमें किसी संज्ञा शब्द के साभिप्राय अर्थान्तर से भाव में संयुक्ति पुष्टि की जाए।

निरुज–वि. (सं. *नीरुज*) रोग रहित, तन्दुरुस्त, निरोग।

निरुत्तर–वि. (सं.) लाजवाब, उत्तर-हीन, जो उत्तर न दे सके, जिसका उत्तर न हो सके।

निरुत्सुक–वि. (सं.) उत्सुकता-रहित, निरुद्वेग, आकुंठित।

निरुत्साह–वि. (सं.) उत्साह-हीन। वि. **निरुत्साही**।

निरुद्ध–वि. (सं.) बँधा या रुका हुआ, घिरा हुआ।

निरुद्यत–वि. (सं.) जो तत्पर न हो।

निरुधम–वि. (सं.) उद्यम या रोजगार से रहित, उद्योग-हीन, बेकार। संज्ञा, **निरुद्यमता**। वि. **निरुद्यमी**।

निरुद्यमी–संज्ञा, पु. (सं. *निरुद्यमिन्*) निकम्मा, बेकार, उद्यम-रहित, निरुयोगी।

निरुद्योग–वि. (सं.) उद्योग रहित, बेकार, निरुद्यम। वि. **निरुद्योगी**।

निरुपद्रव–वि. (सं.) उपद्रव-रहित, शांत।

निरुपद्रवी–वि. (सं. *निरुपद्रविन्*) शांत, जो उपद्रव न करे।

निरुपम–वि. (सं.) उपमा-रहित, बे-मिसाल, बेजोड़, अद्वैत, अनुपम।

निरुपयुक्त–वि. (सं.) अनुपयुक्त, अनुचित।

निरुपयोगी–वि. (सं.) उपयोग रहित, व्यर्थ, निरर्थक। संज्ञा पु. (सं.) **निरुपयोग**।

निरुपाधि–वि. (सं.) उपाधि-रहित, निर्बोध, माया-रहित। संज्ञा, वि. (सं.) ब्रह्म।

निरुपाय–वि. (सं.) उपाय-रहित, जो कुछ उपाय न कर सके, जिसका कोई उपाय न हो सके।

निरुवरना–क्रि. स. दे. (सं. *निवारण*) कठिनता आदि का न होना, सुलझना।

निरुवारा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निवारण*) मोचन, छुटकारा, रक्षा, निबटाना, फैसला, निर्णय।

निरुवारना*–क्रि. स. दे. (हि. *निरुवार*) मुक्त करना, छुड़ाना, सुलझाना, निर्णय, फैसला या तै करना, निबटाना।

निरूढ–वि. (सं.) उत्पन्न, प्रसिद्ध, विख्यात, उत्पन्न, कुँआरा।

निरूढ लक्षणा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक लक्षणाभेद, जिसमें शब्द का ग्रहण किया हुआ, अर्थ रूढ़ हो गया हो (काव्य.)।

निरूढ़ा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) निरूढ लक्षणा।

निरूप– वि.(हि. *निः+रूप*) रूप-रहित, निराकार, कुरूप।

निरूपक–वि. (सं.) निरूपण करने वाला।

निरूपण–संज्ञा, पु. (सं.) दर्शन, विचार, निर्णय, प्रकाश बखान, **निरूपन** (दे.।

निरूपना–क्रि. अ. दे. (सं. *निरूपण*) निश्चित, निर्णय करना,

ठहराना, विचारना, कहना।

निरूपित–वि॰ (सं॰) जिसका निर्णय या निरूपण हो चुका हो। वि॰ **निरूपणीय**।

निरेखना–क्रि॰ स॰ दे॰ (दि॰ *निरखना*) निरखना, देखना, अवलोकन करना।

निरेट–वि॰ (दे॰) पोढ़ा, ठोस, दृढ़।

निरै–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *निरय*) नरक। क्रि॰ वि॰ (दे॰) बिलकुल ही, निरा, निपट।

निरोग-निरोगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *नीरोग*) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोग-रहित।

निरोध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अवरोध, रोक, बंधन, घेरा, नाश।। परिवार नियोजन, हित, एक यंत्र।

निरोधक–वि॰ (सं॰) रोकने वाला।

निरोधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अवरोध, रोक, बंधन। वि॰ **निरोधनीय, निरोधित**।

निरौनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) निराने की क्रिया या मज़दूरी।

निर्ख–संज्ञा, पु॰ (फा॰) दर, भाव। संज्ञा, पु॰ (फा॰) **निर्खनामा**–भावसूचक पत्र।

निर्गंध–वि॰ (सं॰) गंध रहित। संज्ञा, स्त्री॰ निर्गंधता।

निर्गत–वि॰ (सं॰) निकला या बाहर आया हुआ। स्त्री॰ **निर्गता**।

निर्गत्य–क्रि॰ अ॰ पू॰ का॰ (सं॰ *निर्गत*) निकल कर।

निर्गम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निकास, उद्गम। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **निर्गमन**–निकलना।

निर्गमना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *निर्गमन*) निकलना, बाहर आना या जाना।

निर्गुंडी-निर्गुंडिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सँभालू, सिंधवार (औप॰)।

निर्गुण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निर्गुन, तीनों गुणों से परे, **निरगुन** (दे॰) परमेश्वर। वि॰ (सं॰) जिसमें कोई गुण न हो, बुरा। संज्ञा, स्त्री॰ **निर्गुणता, निर्गुणत्व** (पु॰) "गुणा। गुणशेषु गुणा। भवंति, ते निर्गुणम् आप्य भवंति दोषाः।"

निर्गुणिया–वि॰ (सं॰ *निर्गुण+इया प्रत्य॰*) निर्गुण अक्ष का उपासक, युवा रहित। **निर्गुनिया**–(दे॰)।

निर्गुणी–वि॰ (सं॰ *निर्गुण*) मूर्ख, **निरगुनी, निर्गुनी** (दे॰)।

निर्घंट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शब्दकोष, **निघंट**।

निर्घृणा–वि॰ (सं॰) घिन रहित, नीच, निर्दय, निन्दित, घृणा या जुगुप्सा-हीन। वि॰ **निर्घृणी**।

निर्घोष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शब्द, आवाज़। वि॰ (सं॰) **शब्द-रहित**। वि॰ **निर्घोपति**।

निर्छल*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *निश्छल*) छल-रहित, निष्कपट, **निहछल** (अ॰)।

निर्जन–वि॰ (सं॰) निरजन (दे॰), सुनसान, एकान्त, मनुष्य रहित, विजन।

निर्जल–वि॰ (सं॰) जल-रहित, बिना पानी, **निरजल** (दे॰) निरंचु।

निर्जला एकादशी (व्रत)–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) जेष्ठ शुक्ल एकादशी जब निर्जल व्रत किया जाता है (पु॰)।

निर्जित–वि॰ (सं॰) पराजित, परास्त, हारा हुआ, वशीभूत।

निर्जीव–वि॰ (सं॰) बेजान, जीवन या जीव-रहित, जड़, भरा हुआ, उत्साह, या शक्तिहीन, अचैतन्य।

निर्झर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोता, झरना, चश्मा। स्त्री॰ **निर्झरी**।

निर्झरिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नदी।

निर्णय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उचितानुचित का निश्चय, दो पक्षों में से एक को ठीक ठहराना, निश्चय, फैसला, निबटारा, निरमय।

निर्णयोपमा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उपमेय और उपमान के गुण-दोष की विवेचना करने वाला, एक अर्थालंकार (का॰)।

निर्णीत–वि॰ (सं॰) निर्णय किया हुआ, निर्णय-सिद्ध।

निर्णेता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निर्णय करने वाला, निश्चय कर्ता।

निर्त*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नृत्य*) नाच, नृत्य।

निर्तक*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नर्तक*) नाचने या नृत्य करने वाला। स्त्री॰ **निर्तकी**।

निर्तना*†–क्रि॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *नृत्य*) नाचना।

निर्दई*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *निर्दय*) दया रहित।

निर्दय–वि॰ (सं॰) दयारहित, निष्ठुर, बेरहम।

निर्दयता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निष्ठुरता, बेरहमी।

निर्दयी*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *निर्दय*) निठुर, दया-हीनं, **आकरुण**।

निर्दहन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जलाना।

निर्दहना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *दहन*) जलाना।

निर्दिष्ट–वि॰ (सं॰) ठहराया, बतलाया या नियत क्रिया हुआ।

निर्दूषण–वि॰ (सं॰) निर्दोष, दोष-रहित।

निर्देश–संज्ञा, पु॰ (सं.) आज्ञा, आदेश, प्रस्ताव, कथन, निरूपण, निर्णय, उल्लेख, वर्णन, नाम।

निर्दोष–वि॰ (सं.) दोष-रहित, निरपराध, बे कसूर, बे ऐब, **निरदोष** (दे.)।

निर्दोषता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) निरपराधता।

निर्दोषी–वि॰ (सं. *निर्दोषिन्*) दोष-रहित, निरपराध, बे कसूर, बे ऐब, **निरदोषी** (दे.)।

निर्द्वंद-निद्वंद–(दे.) वि॰ (सं.) स्वतंत्र, स्वच्छंद, मान-अपमान, राग-द्वेष, दुख या सुख आदि से परे, अकेला, **विरोध-रहित।**

निर्धन–वि॰ (सं.) कंगाल, धन-रहित, **निरधन** (दे.)।

निर्धनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) कंगाली, गरीबी, **निरधनता** (दे.)।

निर्धार, निर्धारण–संज्ञा, पु॰ (सं.) निश्चित करना, ठहराना, निर्णय, निश्चय, छाँटना, अलग करना, **निरधार, निरधारणा** (दे.)।

निर्धारित–वि॰ (सं.) ठहराया या निश्चित किया हुआ, **निरधारित** (दे.)।

निर्बंध–संज्ञा, पु॰ (सं.) रुकाव, रुकावट, अड़चन, आग्रह, हठ, जिद।

निर्बल–वि॰ (सं.) दुर्बल, बल-रहित, निरबल (दे.)।

निर्बलता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) कमज़ोरी, कमताकती।

निर्बहना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं. *निर्वहन*) दूर या पार होना, अलग होना, निभना, पालन होना, **निवाहना** (दे.)।

निर्बाचन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं. *निर्वाचन*) चुनाव, छँटाव, निश्चय, निर्णय। वि॰ **निर्वाचित, निर्वाचनीय।**

निर्बासन–संज्ञा, पु॰ (सं. *निर्वासन*) देश निकाला, नगर-निकाला, दूर करना। वि॰ **निर्वासित, निर्वासनीय।**

निर्बुद्धि–वि॰ (सं.) बे समझ, मूर्ख, अज्ञान।

निर्बुझ–वि॰ दे॰ (हि॰ *बूझना*) अबूझ, नासमझ, मूर्ख, अज्ञान।

निर्बोध–वि॰ (सं.) अज्ञान, अजान, अबोध।

निर्भय–वि॰ (सं.) निडर, बेधड़क, अशंक।

निर्भयता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) बेख़ौफ़ी, वे धड़की, बेड़रपन, निडरपन।

निर्भर–वि॰ (सं.) परिपूर्ण, खूब भरा, युक्त, अवलंबित, आश्रित, मुनहसर। "निर्भर प्रेम-मगन हनुमाना"– रामा.।

निर्भीक–वि॰ (सं.) निडर, बेधड़क, बेडर।

निर्भीकता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) निडरता, निर्भयता।

निर्भीत–वि॰ (दे.) निडर, अशंक।

निर्भ्रम–वि॰ (सं.) शंका, संदेह या भ्रम से रहित, **निर्भ्रांत।**

निर्भ्रामक-निर्भ्रमात्मक–क्रि॰ वि॰ (सं.) बे धड़क, बे खटके, निर्भय, भ्रम रहित।

निर्भ्रांत–वि॰ (सं.) संदेह, शंका या भ्रम से रहित, जिसमें कोई संदेह न हो।

निर्मम–वि॰ (सं.) मोह या ममता से रहित, निर्मोही, जिसे कोई इच्छा या वासना न हो, त्यागी।

निर्मर्याद–वि॰ (सं.) अनादरकारिणी, मान्यताहीन, अपमानकारी; मर्यादा-विहीन

निर्मल–वि॰ (सं.) स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध, पवित्र, निष्कलंक, **निरमल** (दे.)।

निर्मलता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलंक।

निर्मला–संज्ञा, पु॰ (सं. *निर्मल*) नानक-पंथी, एक प्रकार के साधु। वि॰ स्त्री॰ शुद्धा।

निर्मली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं. *निर्मल*) रीठा का पेड़ या फल जिससे पानी साफ हो जाता है। वि॰ यौ॰ (सं.) **निर्मलीकृत निर्मलीभूत**–स्वच्छ किया हुआ।

निर्मलोपल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) स्फटिक, संगमरमर।

निर्माण–संज्ञा, पु॰ (सं.) रचना, बनावट, सृष्टि-करण, गठन, **निमान** (दे.)।

निर्माता–संज्ञा, पु॰ (सं.) सृजने या बनाने वाला, रचयिता।

निर्मात्रिक–वि॰ (सं.) मात्रा-रहित, बिना मात्रा के, अमात्रिक।

निर्माना†*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं. *निर्गुण*) **निरमाना** (दे.), रचना, सृजना, बनाना।

निर्मान–वि॰ (हि॰ *निः+मान*) अपार, असीम, बेहद। संज्ञा, पु॰ (सं. *निर्माण*) बनाव, सृजन, रचना।

निर्मायल*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं.*निर्माल्य*) किसी देवता पर चढ़ी हुई वस्तु।

निर्माल्य–संज्ञा, पु॰ (सं.) देवता पर चढ़ी हुई वस्तु।

निर्मित–वि॰ (सं.) **निरमित** (दे.)। रचित, सृजित, बनाया हुआ।

निर्मूल–वि॰ (सं.) बे जड़, वे बुनियाद, नाश, नष्ट। वि॰ **निर्मूलित।**

निर्मूलन–संज्ञा, पु॰ (सं.) निर्मूल होना या करना, विनाश,

नष्ट। वि. **निर्मूलीय**।

निर्मोक–संज्ञा, पु. (सं.) सर्प की केंचुली, देह की त्वचा, आकाश।

निर्मोल*†–वि. (सं. *निः*+हि. *मोल*) अनमोल, अमूल्य, अधिक बढ़िया।

निर्मोह–वि. (सं.) मोह-ममता-रहित, कठोर, निर्दय, कड़ा, **निरमोह** (दे.)।

निर्मोहिनी– वि. स्त्री. (हि. *निर्मोह*+*इनी प्रत्य.*) ममता मोह-रहित, निर्दय।

निर्मोही–वि. (सं. *निर्मोह*) मोह-ममता-रहित, निर्दय, कठोर, निठुर, **निरमोही** (दे.)।

निर्यात–संज्ञा, पु. (सं.) रफ़्तगी माल, विदेश भेजा गया माल। अ. एक्सपोर्ट।

निर्यातन–संज्ञा, पु. (सं.) प्रतिहिंसा, बैर-शोधन, बदला चुकाना, प्रतीकार, माल विदेश भेजना।

निर्यास–संज्ञा, पु. (सं.) पेड़ों का गोंद या रस, सत, सार।

निर्युक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) युक्ति-रहित, अनुपयुक्त, अनुचित। वि. (सं.) **निर्युक्ति**।

निर्युक्तिक–वि. (सं.) युक्ति रहित, मनगढ़ंत, अनुचित, अनुपयुक्त।

निर्योगक्षेम– वि. यौ. (सं.) निश्चित, चिंता शून्य, बे खटके।

निर्लज्ज–वि. (सं.) लज्जा-रहित, बे शरम, **निःलज्ज, निलज्ज** (दे.)।

निर्लज्जता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बेशर्मी, बेहयाई।

निर्लिप्त–वि. (सं.) जो लिप्त या आसक्त न हो, साफ़, शुद्ध, निर्दोष। संज्ञा, स्त्री. **निर्लिप्तता**।

निर्लेप–वि. (सं.) लेप या दोष-शून्य, निर्दोष, निष्कलंक, साफ़, शुद्ध।

निर्लेपन–संज्ञा, पु. (सं.) दोष-शून्यता। वि. **निर्लेपनीय, निर्लेपित**।

निर्लेश–वि. (सं.) लेश-रहित, निर्दोष, निष्कलंक, साफ़, शुद्ध।

निर्लोभ–वि. (सं.) लालच-रहित, लोभ-हीन।

निर्लोम–वि. (सं.) लोम या रोम-रहित।

निर्वंश–वि. (सं.) कुल-रहित, कुटुम्ब या परिवार-हीन, जिसका वंश नष्ट हो गया हो। **निरवंस** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **निर्वंशता**। वि. **निर्वंशी**।

निर्वहण–संज्ञा, पु. (सं.) निर्वाह, निवाह, गुज़र, गुज़ारा, समाप्ति। वि. **निर्वहणीय**।

निर्वहना*–क्रि. स. दे. (सं. *निर्वहन*) निभना, चलना गुज़र करना, **निबहना**।

निर्वाचक–संज्ञा, पु. (सं.) चुनने वाला, जो चुने या निर्वाचन करे।

निर्वाचन–संज्ञा, पु. (सं.) अं. इलेक्शन, बहुतों में से एक का चुनना। वि. **निर्वाचनीय**।

निर्वाचित–वि. (सं.) चुना या छाँटा हुआ।

निर्वाण–वि. (सं.) बुझा हुआ दीपक, बुझी हुई आग या बाती, अस्तंगत, साँत, मृत। संज्ञा, पु. (सं.) ठंडा हो जाना, अस्त, मुक्ति, **निरधान** (दे.)।

निर्वात–वि. (सं.) वायु या पवन-रहित स्थान, **निर्वायु**।

निर्वाध–वि. (सं.) बाधा या विघ्न-रहित, कंडक या शत्रु-रहित, सुमन, सरल, अबाध।

निर्वापणा–संज्ञा, पु. (सं.) त्याग, दान, प्राणनाश, वध, बुझाना, नाश।

निर्वायु–वि. (सं.) वायु रहित।

निर्वास–संज्ञा, पु. (सं.) निकाल देना, बाहर कर देना, दूरीकरण।

निर्वासक–संज्ञा, पु. (सं.) निकालने या बाहर करने वाला, देश निकाला देने वाला।

निर्वासन–संज्ञा, पु. (सं.) वध करना, मार डालना, देश आदि से निकाल देना, देश निकाला। वि. **निर्वासनीय**।

निर्वासित–वि. (सं.) दूरीकृत, निकाला गया, बहिष्कृत।

निर्वास्य–वि. (सं.) निकालने-योग्य, देश-निकाले के योग्य, अपराधी।

निर्वाह–संज्ञा, पु. (सं.) गुज़र, निबाह (दे.)।

निर्वाहना*–क्रि. स. दे. (सं. *निर्वाह*+हि. *ना प्रत्य.*) गुज़र या निर्वाह करना।

निर्विकल्प–वि. (सं.) विकल्प या भेद-रहित, परिवर्तन-हीन, निश्चल, स्थिर, नित्य।

निर्विकल्पसमाधि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) समाधि का एक भेद जिसमें ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय का भेद मिट जाता है, परमात्मा का साक्षात्कार।

निर्विकार–वि. (सं.) विकार-रहित, परिवर्तन-हीन, शुद्ध, साफ़,

निर्दोष, स्वच्छ। वि. निर्विकारी—निर्विकार वाला।

निर्विघ्न—वि. (सं.) बाधा-रहित। क्रि. वि. (सं.) विघ्न के बिना। संज्ञा, स्त्री. **निर्विघ्नता**।

निर्विवाद—दि. (सं.) विवाद-रहित, झगड़ा-हीन, बिना हुज्जत।

निर्विवेक—वि. (सं.) विचार-रहित, बुद्धि या ज्ञान से शून्य वि. **निर्विवेकी**।

निर्विशंक—वि. (सं.) निडर, साहसी, निर्भय।

निर्विशेष—संज्ञा, पु. (सं.) परमेश्वर, परमात्मा, जिसने विशेष या अधिक कोई न हो।

निर्विष—वि. (सं.) विष-मुक्त, विष के बिना।

निर्विषी—संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक बाल जिसकी जड़ अनेक विष-दोषों के मिटाने में काम आती है, जदवार प्रान्ती.)।

निर्वीज—वि. (सं.) बीज-रहित, बिना बीज के, कारण-रहित। दे. (सं.) बीज-रहित, बिना बीज के, कारण-रहित। दे. (सं. *निर्वीर्य*) नपुंसक, अशक्त।

निर्वीर—वि. (सं.) वीर विहीन, बिना वीर के। संज्ञा, स्त्री. **निर्वीरता**।

निर्वीर्य्य—वि. (सं.) वीर्य्य-रहित, पौरुष या बल-रहित, कमज़ोर, निस्तेज।

निर्वृत्ति—संज्ञा, स्त्री. (सं.) सिद्धि, निष्पत्ति, वृत्ति-रहित। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **निर्वृत्तिक**।

निर्षेद—संज्ञा, पु. (सं.) अपनी अवज्ञा, अपना अपमान, आत्मावहेलना, एक संचारी भाव (काव्य.)। वैराग्यपूर्ण, उदासीन।

निर्वैर—वि. (सं.) वैर-रहित, अजातशत्रु।

निर्व्यलीक—वि. (सं.) निष्कपट।

निर्व्याज—वि. (सं.) छल-रहित, बाधाहीन, निष्कपट, बिना बहाने के।

निर्व्याध—वि. (सं.) व्याधि रहित, अरोग, निरोग।

निर्हरण—वि. (सं.) शव-वहिष्करण, मृतक या अरथी या मुर्दा निकालना।

निर्हेतु—वि. (सं.) कारण रहित, निष्प्रयोजन।

निर्हेतुक—वि. (सं.) निष्प्रयोजन, अकारण, निष्कारण।

निल—संज्ञा, पु. (सं.) विभीषण का मन्त्री, अव्य. (अं.) शून्य, कुछ नहीं।

निलज्ज—वि. दे. (सं. *निर्लज्ज*) निर्लजा, बेशरम **निलाज** (दे.)।

निलज्जता*†—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निलज्जता*) निर्लज्जता, बेशरमी।

निलज्जी*†—वि. स्त्री. दे. (हि. *निर्लज्ज*) निर्लज्ज, बेशरम स्त्री।

निलय—संज्ञा, पु. (सं.) स्थान, घर, मकान।

निलहा—वि. हि. *नील*) नीलवाला, नील-सम्बन्धी, नील का व्यापारी।

निलीन—वि. (सं.) गुप्त, प्रच्छल, तिरोहित, गूढ़, बहुत ही छिपा हुआ।

निवर—वि. (सं.) निर्णय-कर्ता, निवारण-कर्त्ता, बचाने वाला।

निवरा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) कुमारी कन्या, अविवाहिता।

निवर्त्तन—संज्ञा, पु. (सं.) रोकना, लौटना, वापिस या फिर आना।

निवसन—संज्ञा, पु. (सं. *निस्+बसव*) गाँव, घर, वस्त्र, कपड़ा।

निवसना—क्रि. स. (सं.*निवसन*) निवास करना, रहना, टिकना।

निवह—संज्ञा, पु. (सं.) समूह, यूथ, झुण्ड, सात वायु में से एक।

निवाई—वि. दे. (सं. *नव*) नूतन, नवीन, नया, विलक्षण, अनोखा।

निवाज़—वि. (फा.) कृपा, दया, मेहरवान, दयालु, **निवाजू**, **नेवाज** (दे.)

निवाज़ना*†—क्रि. स. दे. (फ़ा. *निवाज़*) कृपा, दया या अनुग्रह करना, मेहरवानी करना, **नेवाज़ना** (दे.)।

निवाजिश—संज्ञा, स्त्री. (फा.) कृपा, अनुग्रह।

निवाड़ा—संज्ञा, पु. (दे.) छोटी नाव, नाव का एक खेल जिसमें नाव को बार-बार चककर देते हैं, **नाव-नवरिया**, **नावा** (आ.)

निवात—संज्ञा, पु. (सं.) वह स्थान जहाँ वायु न आ सके, वायु-रहित।

निवात-कवच—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रह्लाद का पुत्र, एक दैत्य जिसके नाम से उसके वंशज भी प्रसिद्ध हुए, जिन्हें अर्जुन ने नष्ट किया था।

निवार—संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *नवार*) निवाड़ा, नेवार, मोटे सूत की पट्टी जिससे पलंग बुनते हैं, **निवाड़** (दे.)। संज्ञा, पु. (सं. *सीवार*) एक प्रकार के धान, तिन्नाधान।

निवारक—वि. (सं.) हटाने या दूर करने वाला, रोचक, रोकने

या मिटाने वाला।

निवारण–संज्ञा, पु. (सं.) **निवारन** (दि.) निवृत्ति, छुटकारा, रोक, निरोध। वि. **निवारणीय**।

निवारना–क्रि. स. दे. (सं. *निवारण*) रोकना, हटाना, दूर करना, मिटाना, मना या निपेध करना।

निवारा–संज्ञा, पु. (दे.) निवाड़ा, जलक्रीड़ा, नाव फेरना।

निवारि–पू. का. क्रि. स. दे. (हि. *निवारना*) नवा कर, रोक कर, मना करके, वरज कर।

निवारित–वि. (सं.) छटका, बचाया, रोका, मना किया हुआ।

निवारी-निवाड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नेवाली या नेमाली*) एक लता और उसके फूल।

निवाला–संज्ञा, पु. (फा.) कौर, ग्रास।

निवास–संज्ञा, पु. (सं.) घर, मकान, स्थान।

निवास स्थान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) घर, मकान, जगह, ठौर, रहने की जगह।

निवासी–वि. संज्ञा, पु. (सं. *निवासिन्*) वासी, रहने या बसने वाला। स्त्री. **निवासिनी**।

निविड़–वि. (सं.) घना, गहिरा कठिन।

निविष्ट–वि. (सं.) तत्पर, लगा हुआ, एकाग्र, घुसा या बैटा हुआ, बाँधा हुआ।

निवीत–संज्ञा, पु. (सं.) गले से लटका हुआ, जनेऊ, चादर।

निवृत्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छुटकारा, मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण।

निवेद, नैवेद*†–संज्ञा, पु. दे. (सं *नैवेश*) देववलि, भोग। **मु. निवेद लगाना**–देवार्पित करना।

निवेदक–संज्ञा, पु. (सं.) निवेदन या प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

निवेदन–संज्ञा, पु. (सं.) समर्पण, प्रार्थना, विनय, विनती। वि. **निवेदनीय**।

निवेदना*†–क्रि. स. दे. (हि. *निवेदन*) प्रार्थना या विनती करना, खाने की वस्तु आगे रखना, अर्पित करना, नैवेद्य चढ़ाना। **निवेदित**–वि. (सं.) निवेदन या अर्पित किया हुआ।

निवेरना*†–क्रि. स. दे. (हि. *निबटाना*) निबटाना, चुकाना, बेवाक या पूर्ण करना, हटाना।

निवेरा*–वि. (हि. *निवेरना*) छँटा या चुना हुआ, नया, अनोखा।

निवेश–संज्ञा, पु. (सं.) पड़ाव, डेरा, खेमा, प्रवेश, घर, निवास; पूँजी लगाना; (अं.) इनवेस्टमेंट.

निशंक–वि. (सं. *निःशंक*) निडर, निर्भय, बेधड़क, अशंक, संदेह-रहित, **निसंक** (दे.)। **निश्शंक संज्ञा**, स्त्री. **निशंकता**।

निशंग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निषंग*) तरकस, भाथा, तूणीर, तूनीर (दे.) **निखंग** (दे.)।

निश–संज्ञा, स्त्री. (सं) निशा, रात, रात्रि।

निशचर-निश्चर–संज्ञा, पु. (सं.) राक्षस, **निसचर** (दे.) स्त्री. निशचरी।

निशमन–संज्ञा, पु. (सं.) देखना सुनना।

निशांत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रात्रि का अंत, निशावसान, प्रातःकाल, लड़का, सवेरा, भोर, प्रभात।

निशांध–वि. यौ. (सं.) जिसे रात्रि को दिखलाई न दे, उल्लू।

निशा–संज्ञा, पु. (सं.) राति, रात्रि, रजनी, हरिद्रा, **निसा** (दे.)।

निशाकर–संज्ञा, पु. (सं.) चन्द्रमा, मुरगा, **निसाकर** (दे.)।

निशाख़ातिर–संज्ञा, स्त्री. यौ. (अ. *ख़ातिर*+फ़ा. *निशाँ–खातिर निशाँ*) तसल्ली, निश्चिन्त, दिलजमई, **निसाख़ातिर** (दे.)।

निशागम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रात्रि का आना, साँझ, संध्या, सायंकाल।

निशाचर–संज्ञा, पु. (सं.) राक्षस, स्यार, उल्लू, भूत, चोर, रात में चलने वाला, (निशां चरतीति) सर्प।

निशाचरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राक्षसी, कुलटा, अभिसारिका नायिका।

निशाचारी–वि. पु. (वि. *निशाचारिन्*) रात्रि में चलने वाला। स्त्री. **निशाचारिणी**।

निशाट-निशाटन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राक्षस, चोर, उल्लू।

निशाटी-निशाटिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) राक्षसी, अभिसारिका।

निशात–वि. (सं.) शान दिया हुआ, पैनाया हुआ।

निशाधीश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चन्द्रमा, निशापति, **निशाधिपति**।

निशान–संज्ञा, पु. (फ़ा.) लक्षण, चिन्ह, गग, धब्बा, पता, रण का बाजा। यौ. **नाम-निशान**–लक्षण या चिन्ह,

थोड़ा-सा बचा हुआ, **नामो-निशाँ न रहना**–कुछ भी शेष न रहना। **मु॰ निशान देना (करना, लगाना)**–किसी की पहिचान या पता करना, चिन्ह लगाना, ध्वजा, पताका, झंडा। **मु॰ निशान गाड़ना (खड़ा करना)**–झंडा गाड़ना **मु॰ किसी बात का निशान उठाना या खड़ा करना**–मुखिया या अगुआ बन कर लोगों को अपना अनुचर बनाना।

निशानची–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *निशान+ची प्रत्य.*) ध्वजाधारी, झंडावरदार।

निशानदेही–संज्ञा, स्त्री॰ (फा.) असामी को सम्मन आदि दिलाना; किसी चीज़ को अंकित करना।

निशाना–संज्ञा, पु॰ (फा.) लक्ष्य। **मु॰ निशाना बाँधना**–वार करते समय अस्त्र-शस्त्र को ऐसा साधना कि ठीक लक्ष्य पर लगे। **निशाना मारना या लगाना**–लक्ष्य को ठीक-ठाक कर मारना, जिस व्यक्ति के हेतु व्यंग्य कहा जाए।

निशानाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) चन्द्रमा।

निशानी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा.) यादगार, स्मृति चिन्ह, पहचान, निशान, **चिन्हारी**।

निशापति–संज्ञा, पु॰ (सं.) चन्द्रमा।

निशामणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) चन्द्रमा।

निशामुख–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) संध्या का समय, गोधूली बेला। यौ॰ (सं.) **निशावसान**–प्रभात।

निशास्त–संज्ञा, पु॰ (फ़ा.) गेहूँ का गूदा या सत, माड़ी, कलफ।

निशि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) रात्रि, रात।

निशिकर–संज्ञा, पु॰ (सं.) चन्द्रमा।

निशिचर–संज्ञा, पु॰ (सं.) राक्षस, उल्लू।

निशिचर–राज*–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) विभीषण, **निशिनरेश**।

निशित–वि॰ (सं.) पैना, तीखा।

निशिनाथ–संज्ञा, पु॰ (सं.) चन्द्रमा।

निशिपाल–संज्ञा, पु॰ (सं.) चन्द्रमा। **निशिपालक,** एक छन्द (पिं.)।

निशिवासर*–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) दिन-रात, रातों-दिन, सदा।

निशीथ–संज्ञा, पु॰ (सं.) अर्द्ध रात्रि, आधी रात।

निशीथिनी–संज्ञा, पु॰ (सं.) रात, रात्रि।

निशुंभ–संज्ञा, पु॰ (सं.) हिंसा, मारना, वध, एक दैत्य।

निशुंभ-मर्दिनी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) दुर्गा जी, देवी जी।

निश्चय–संज्ञा, पु॰ (सं.) विश्वास, संशय, संदेह और भ्रम से रहित ज्ञान, दृढ़ या पक्का संकल्प या विचार, **निहचै** (आ॰ व.)। एक अर्थालंकार (काव्य.)।

निश्चयात्मक–वि॰ यौ॰ (सं.) ठीक ठीक, संदेह-रहित, **निश्चित**।

निश्छल–वि॰ (सं.) अटल, अचल, स्थिर।

निश्चलता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) दृढ़ता, स्थिरता, अचलता।

निश्चला–वि॰ स्त्री॰ (सं.) स्थिरा, अचला, भूमि, पृथ्वी।

निश्चित–वि॰ (सं.) बेफिक्र, बेखटके, चिंता-रहित, **चिंताहीनता**।

निश्चिंतता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) बेफिक्री, बेखटकी, चिंताहीनता।

निश्चित–वि॰ (सं.) निश्चययुक्त, निर्णीत, से किया हुआ, पक्का, दृढ़।

निश्चेष्ट–वि॰ (सं.) चेष्टा-रहित, अचेल, निश्चल, स्थिर।

निश्चे*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *निश्चय*) यकीन, निश्चय, विश्वास, प्रतीति।

निश्छल–वि॰ (सं.) छिद्र या दोष-रहित, सीधा। संज्ञा, स्त्री॰ **निश्छलता**।

निश्छिद्र–वि॰ (सं.) छिद्र या दोष-रहित।

निश्रेणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) **नसेनी** (दे.) सीढ़ी, मुक्ति।

निश्रेयस–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *निः श्रेयस*) मुक्ति, मोच, दुख का पूर्ण नाश, कल्याण।

निश्वास–संज्ञा, पु॰ (सं.) पेट से बाहर नाक या मुख के द्वारा आने वाली वायु।

निश्शंक–वि॰ (सं.) निर्भय, निडर, संदेह या शंका से रहित।

निश्शब्द–वि॰ (सं.) सन्नाटा, शब्द-हीन। संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) **निश्शब्दता**।

निश्शेष–वि॰ (सं.) शेष-रहित, सब, सम्पूर्ण।

निषंग–संज्ञा, पु॰ (सं.) तरकश, भाषा, तूण, तूणीर। वि॰ **निषंगी**।

निषण–वि॰ (सं.) उपविष्ट, बैठा हुआ।

निषध–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक देश, पर्वत, निषध देश का राजा, **निषाद** स्वर (संगी.)।

निषाद–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक अनार्य्य जाति, केवट। संगीत सप्तक का स्वर 'नि'।

निषादी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *निषादिन्*) महावत, हाथीवाल, हाथीवान; निषाद (स्वर) का।

निषिद्ध–वि॰ (सं॰) जिसके हेतु रोक या मनाही हो, दूषित, बुरा।

निषिद्धाचरण–वि॰ यौ॰ (सं॰) अधर्म या कुकर्म करना, साख-विरुद्ध कार्य।

निषूदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाश करने वाला।

निषेक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक संस्कार का नाम, गर्भाधान संस्कार।

निषेचन–संज्ञा, (सं॰) एक संस्कार का नाम, गर्भाधान संस्कार।

निषेचन–संज्ञा, (सं॰) खींचना। वि॰ **निषेचनीय, निषेचित**।

निषेध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रुकावट, मनाही, बाधा, वर्जन, न करने की आशा।

निषेधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोकने या मना करने वाला।

निषेधाक्षेप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आक्षेपा लकार का एक भेद (का॰)।

निषेधाभास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक अलंकार, आक्षेप का एक भेद।

निषेचित–वि॰ (सं॰) निपिग्र, रोका या मना किया गया, बुरा, दूषित।

निष्कंटक–वि॰ (सं॰) वाधा, आपत्ति, झंझट-रहित, निर्विघ्न, शत्रु-रहित।

निष्क–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोने का एक सिक्का, प्राचीन चार मासे की तौल (वैद्य.) टंक, सुवर्ण।

निष्कपट–वि॰ (सं॰) छल-रहित, निश्छल, सीधा।

निष्कपटता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छल-विहीनता, निश्छलता, सीधापन, सिधाई।

निष्कर–वि॰ (सं॰) बिना कर, बिना महसूला।

निष्कर्म–वि॰ (सं॰ *निष्कर्मन्*) वह पुरुष जो कर्म करने में लिप्त न हो, अकर्मा।

निष्कर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निश्चय, निष्पत्ति, व्यवस्था, तात्पर्य, सत्य, प्रत्यक्ष, सिद्धान्त, तत्व, सार, निचोड़।

निष्कलंक–वि॰ (सं॰) बेऐव, निदोष।

निष्काम–वि॰ (सं॰) कामना-हीन, अनभिलाषा, बिना इच्छा या असक्ति-रहित कर्म। संज्ञा, स्त्री॰ **निष्कामता**।

निष्कारण–वि॰ (सं॰) हेतु या कारण बिना, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

निष्कासन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निकालना, बाहर करना। वि॰ **निष्कासनीय, निष्कासित**।

निष्क्रमण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाहर निकलना, एक संस्कार। वि॰ **निष्क्रमणीय**। वि॰ निष्क्रांत।

निष्क्रय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेतन, तनख्वाह, विनिमय, बदला।

निष्क्रांत–वि॰ (सं॰) निर्गत, प्रस्थित, निःसृत, बाहर निकला हुआ।

निष्क्रिय–वि॰ (सं॰) व्यापार-रहित, निश्चेष्टा। यौ॰ **निष्क्रय प्रतिरोध**–सत्याग्रह।

निष्क्रियता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

निष्ठ–वि॰ (सं॰) तत्पर, लगा हुआ, स्थिति, भक्ति, श्रद्धा।

निष्ठा–संज्ञा, स्त्री॰ (स॰) निश्चय, विश्वास, श्रद्धा, भक्ति, पूज्य बुद्धि, ज्ञान की अंतिम दशा, निर्वाह, नाश।

निष्ठावान–वि॰ (सं॰ *निष्ठावत्*) जिसमें श्रद्धा-भक्ति हो, (अं॰) लॉपल।

निष्ठीवन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) थूक।

निष्ठुर–वि॰ पु॰ (सं॰) निर्दय, कड़ा, कठिन, क्रूर। स्त्री॰ **निष्ठुरा**।

निष्ठुरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निर्दयता, कठोरता, क्रूरता, कड़ाई।

निष्ठ्यूत–वि॰ (सं॰) निकला हुआ।

निष्णात–वि॰ (सं॰) प्रवीण, चतुर, विज, पंडित, निपुण, पूरा ज्ञानी, पारंगत। वि॰ नहाया हुआ।

निष्पंद–वि॰ (सं॰) कंप-रहित, स्थिर, दृढ़। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **निष्पंदन**–कंपन। वि॰ निष्पंदित, **निष्पंदनीय**।

निष्पक्ष–वि॰ (सं॰) पक्षपात-रहित, तटस्थ। संज्ञा, स्त्री॰ **निष्पक्षता**।

निष्पत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰), सिद्धि, परिपाक, समाप्ति, विचार, मीमांसा, निश्चय, निर्धारण।

निष्पन्न–वि॰ (सं॰) समाप्त, पूर्ण, सिद्ध।

निष्परिग्रह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बैरागी, संन्यासी, योगी, तपस्वी, त्यागी।

निष्पादन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साधन, निष्पत्ति, सिद्धि, संपादन, सिद्धान्त का समाधान करना, प्रतिज्ञा या प्रण का पूर्ण करना। वि॰ **निष्पादनीय, निष्पादित**।

निष्पाप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाप-रहित, निर्दोष, निरपराध।

निष्पीड़न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पेरना, मड़ोरना, निचोड़ना। वि॰

निष्पीडनीय, निष्पीड़ित।

निष्प्रतिभ–वि. (सं.) हतबुद्धि, निर्बोध, मूर्ख, अज्ञानी।

निष्प्रत्यूह–वि. (सं.) निर्लिप्त, निर्बाधा, निरापद, तर्करहित। संज्ञा, स्त्री. **निष्प्रत्यूहता**।

निष्प्रभ–वि. (सं.) कांति या दीप्ति से रहित, प्रभा-रहित, अस्वच्छ, हतमनोरथ।

निष्प्रयोजन–वि. (सं.) निष्कारण, हेतु-रहित, बे मतलब, व्यर्थ। संज्ञा, स्त्री. **निष्प्रयोजनता**। वि. **निष्प्रयोजनीय**।

निष्प्रेही*– वि. (सं. *निस्पृह*) लोभ या लालच-रहित, निस्पृह।

निष्फल–वि. (सं.) निरर्थक, बे मतलब, व्यर्थ, वेकायदा, निष्प्रयोजन, **निफल** (दे.)।

निसंक-निस्संक (दि.)†–वि. दे. (सं. *निश्शंक*) निडर, निर्भय। वि. (सं.) अशक्त, पुरुषार्थ-हीन।

निसंकट–वि. (सं.) संकट-रहित, विपत्ति-मुक्त, अनायास।

निसँठ–वि. दे. (हि. *नि+सँठ–पूँजी*) कंगाल, गरीब। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **निसँठई**।

निसंधाई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) संधि या जोड़ रहित, ठोस, दृढ़, पोढ़ा।

निसंस*†–वि. दे. (सं. *नृशंस*) दुष्ट, क्रूर। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **निसंसई, निसंसता**। वि. (हि. *नि+साँस*) मृतक या मुर्दा के समान।

निसंसना*–क्रि. स. दे. (सं. *निः श्वास*) बड़े ज़ोर से हाँकना, निःश्वास लेना।

निस-निसि*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निशा*) रात्रि।

निसक–वि. दे. (सं. *निःशक्त*) निसत, निर्बल, कमज़ोर।

निसकर, निसाकर†*–संज्ञा, पु. (सं. *निशाकर*) चन्द्रमा।

निसत*‡–वि. दे. (सं. *निः सत्य*) झूठ, असत्य, असाँच।

निसतनाका*†–क्रि. अ. (सं.) छुटकारा या निस्तार पाना।

निसतारना–क्रि. स. दे. (सं. *निस्तार*) मुक्त या निस्तार करना, गुज़र करना, निर्वाह करना।

निसद्योस*†–क्रि. वि. दे. यौ. (सं. *निशि+दिवस*) सदा, सर्वदा, रातोदिन, नित्य।

निसनेहा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निःस्नेहा*) स्नेह या प्रेम-रहित स्त्री। पु. **निसनेही**।

निसवत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) सम्बन्ध, तरल्लुक, लगाव, मँगनी, विवाह, तुलना, मुकाबिला।

निसयाना–वि. दे. (हि. नि+सयाना) बेहोश या बे हवास,* अचेत।

निसरना*–क्रि. स. दे. (हि. *निकलना*) निकलना, बाहर जाना या आना। प्रे. रूप–**निसारना, निसराना, निसरवाना**।

निसर्ग–संज्ञा, पु. (सं.) स्वभाव, प्रकृति, दाम, सृष्टि, आकृति, रूप।

निसवादला‡*–वि. दे. (सं. *निः स्वाद*) बे मजा, स्वाद-रहित।

निसवासर, निसिवासर*†–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *निशिवासर*) रात-दिन। कि. वि. सदा, सर्वदा, नित्य, रातोदिन।

निसस–वि. दे. (सं. *निः श्वास*) अचेत, बेहोश स्वास-रहित, **निसाँस**।

निसाँस-निसाँस*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निः श्वास*) लंबी या ठंडी साँस वि. (दे.) बेदम, मृतप्राय।

निसाँसी–वि. दे. (सं. *नि+श्वासिन्*) दुखी, व्यस्त, उद्विग्न।

निसा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निशा*) रात, रात्रि। संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *निशाँ*) संतोष, धैर्य। **मु. निसाखातिर**–पूर्णतया।

निसाकर–संज्ञा, पु. (दे.) निशाकर, चन्द्रमा।

निसाचर–संज्ञा, पु. (दे.) राक्षस।

निसान–संज्ञा, पु. दे. (फा. *निशान*) नगाड़ा, धौंसा, झंडा, चिन्ह। स्त्री. **निसानी**–चिन्हारी (दे.)।

निसानन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निशानन*) प्रदोषकाल, संध्या समय, रात्रि का मुख, चन्द्रमा।

निसार–संज्ञा, पु. (अ.) निछावर, सदका (दे.) सार-रहित, तत्व-हीन। **निस्सार** (सं.)। संज्ञा, स्त्री. **निसारता**।

निसारना†–क्रि. स. दे. (हि. *निकालना*) निकालना, **निकालना** (आ.) प्रे. रूप (दे.) **निसरवाना**।

निसास*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निःश्वास*) लंबी या ठंडी साँस। वि. दे. (हि. *नि+साँस*) स्वाँस रहित, बेदम।

निसासी*–वि. दे. (सं. *निःश्वास*) साँस-रहित, बेदम, मृतप्राय।

निखि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निशि*) रात, एक वर्णवृत (पिं.)।

निसिकर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निसिकर*) चन्द्रमा, **निसिनाथ, निसिपति** (दे.)।

निसिचर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निशाचर*) राक्षस, **निसचर**। स्त्री. **निसिचरी, निसाचरी** (दे.)।

निसिचारी*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निशाचारिन्*) राक्षस।
निसित–वि. दे. (सं. *निश्चित*) पैना, तीक्ष्ण।
निसिदिन*–क्रि. वि. दे. यौ. (सं. *निशिदिन*)रात दिन।
निसिनिसि–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *निशि निशि*) आधी रात, अर्द्धरात्रि, निशीथ।
निसियर-निसिअर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निशिकर*) चन्द्रमा, निशाकर।
निसीठा-निसीठी–वि. दे. (सं. *निः*+हि. *सीठी*) नीरस, तत्व-हीन, निस्सार।
निसीथ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निशीथ*) मध्य या अर्धरात्रि, आधीरात।
निसु*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निशा*) राति।
निसुका–वि. दे. (सं. *निस्वक*) कंगाल।
निसूदन–संज्ञा, पु. दे. (सं.) नाश करना, मार डालना। वि. **निसूदनीय, निसूदित**।
निसृष्ट–वि. (सं.) त्यागा या छोड़ा हुआ; बिचवानी, मध्यस्थ, प्रेरित, दत्त।
निसृष्टार्थ–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं.) दोनों पक्षों के अभिप्राय का ज्ञाता, दूत, श्रेष्ठ दूत (वाक्य. क.)।
निसेनी-निसैनी†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निश्रेणी*) सीढ़ी, नसेनी (आ.)।
निसेप*–वि. दे. (सं.*निः शेष*) सबका सब, **निश्शेष**।
निसेस–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *निशेश*) चन्द्रमा, **निशेश, निशानाथ**।
निसोग*†–वि. दे. (सं. *निःशोक*) शोक-रहित, प्रसन्न।
निसोत–वि. दे. (सं. *संयुक्त*) शुद्ध, खालिस।
निसोथ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. निसृता) एक रेचक औषधि (वैद्य.)।
निसोधु*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सोध या सुधि*) खबर, समाचार, संदेसा।
निस्केबल–वि. दे. (सं. *निष्केवल*) शुद्ध, बेमेल, खालिस, निर्मल।
निस्तत्व–वि. (सं.) निस्सार, तथ्य हीन।
निस्तब्ध–वि. (सं.) निश्चेष्ट, निश्शब्द।
निस्तब्धता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जड़ता, सन्नाटा, चुपचाप।
निस्तरण–संज्ञा, पु. (सं.) पार या मुक्त होना, तरना। वि. **निस्तरणीय**।
निस्तरना–क्रि. अ. दे. (सं. *निस्तार*) छूटना, मुक्त होना, निर्वाह होना, तरना।
निस्तार–संज्ञा, पु. (सं.) छुटकारा, मोक्ष, मुक्ति, उद्धार, निर्वाह।
निस्तारण–संज्ञा, पु. (सं.) निस्तार या पार करना, छुड़ाना, मुक्त करना।
निस्तारना–संज्ञा, पु दे. (सं निस्तारण) निस्तार या पार करना, छुड़ाना, मुक्त करना।
निस्तारना–क्रि. स. दे. (सं. *निस्तार+ना प्रत्य.*) उद्धार या मुक्त करना, छुड़ाना।
निस्तारा*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निस्तार*) गुज़ारा, निर्वाह, छुटकारा, मुक्ति।
निस्तीर्ण–वि. (सं.) मुक्त, उद्धार, पार, छूटा हुआ।
निस्तेज–वि. (सं. *निस्तेजस्*) प्रताप या तेज-रहित, प्रभा-हीन, मलिन, उदास।
निस्तोक–संज्ञा, पु. (दे.) निर्णय, फैसला, निबटेरा।
निस्तुप–वि. (सं.) निर्लज्ज, बेशरम।
निस्तिंश–वि. (सं.) तलवार, असि, खड्ग।
निस्पृह–वि. (सं.) संज्ञा, निस्पृहा। **निस्पृहता**। निर्लोभ, लालच-रहित, कामना रहित।
निस्फ़–वि. (अ.) आधा, अर्द्ध। यौ. **निस्फ़ानिस्फ़, आधोआध** (दे.)।
निस्वत–संज्ञा, पु. (फा.) अनुपात, सम्बध में; सगाई-सम्बन्ध।
निस्संकोच–वि. (सं.) संकोच-रहित, लजा-रहित, बेधड़क।
निस्संतान–वि. (सं.) संतान-रहित, संतति-हीन।
निःसंदेह–क्रि. वि. (सं.) ज़रूर, अवश्य, वि. (सं.) जिसमें संदेह या शक न हो।
निस्सार–वि. (सं.) सार या तत्व-रहित, व्यर्थ। संज्ञा, पु. (सं.) **निस्सारण**।
निस्सारण–संज्ञा, पु. निकलने का रास्ता या मार्ग, निकलने का भय या क्रिया। वि. **निस्सारणीय**।
निस्सारित–वि. (सं.) निकाला हुआ।
निस्सीम–वि. (सं.) अपार, असीम, बेहद।
निस्सृत–संज्ञा, पु. (सं.) बाहर निकलता हुआ (निःसृत)

निस्स्वार्थ–वि. दे. (सं.) वे मतलब, **स्वार्थ-रहित**–जिसमें अपना कुछ मतलब न हो। वि. **निस्स्वार्थी**।

निहंग, निहंगा–वि. दे. (सं. *निःसंग*) नंगा, अकेला, एक, एकाकी, बेशरम।

निहंग लाड़ला–वि. दे. यौ. (हि.) माता-पिता के अति दुलार से लापरवाह और स्वच्छंद हुआ व्यक्ति)।

निहंता–वि. (सं. *निहंतृ*) मार डालने या प्राण लेने वाला, नाशकर्त्ता। स्त्री. **निहंत्री**।

*निहकाम**†–वि. दे. (सं. *निष्काम*) *निष्काम, इच्छा, कामना या मनोरथ से रहित*।

निहचय*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निश्चय*) अवश्य, निःसंदेह, बेशक, डीफ, **निश्चय**।

निहचल*†–वि. दे. (सं. *निश्चल*) स्थिर, अटल, ध्रुव, अचल, **निश्चल**।

निहत–वि. (सं.) मार डाला गया, नष्ट, सृत, फेंका हुआ।

निहत्थ, निहत्था–वि. दे. (हि. *नि+हाथ*) शस्त्र-हीन, खाली हाथ, निर्धन, कंगाल, **निहथा** (आ.)।

निहनना*†–क्रि. सं. दे. (सं. *निहगन*) मार डालना, मारना। संज्ञा, पु. (सं.) **निहनन**।

निहाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निधात, मि. फा. निहाली*) सुनारों और लोहारों का एक औजार जिस पर रख कर किसी धातु को हथौड़े से पीटते हैं।

निहानो–संज्ञा, स्त्री. (दे.) स्त्री का रजो-दर्शन।

निहायत–वि. (अ.) बहुत, अत्यन्त।

निहार, नीहार–संज्ञा, पु. (सं.) कुहरा, पाला, ओस, बरफ़, हिम।

निहारना–क्रि. सं. दे. (सं. *निमोलन–देखना*) देखना, ताकना, ध्यान-पूर्वक देखना।

निहाल–वि. (फा.) प्रसन्न, संतुष्ट, पूर्ण मनोरथ या पूर्ण काम। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **निहाली**।

निहाली–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) तोशक, गद्दा, निहाई। प्रसन्नता; संतोष।

निहित–वि. (सं.) स्थापित, रखा हुआ।

निहुरना†–क्रि. सं. दे. (हि. नि+*होडन*) नयना, झुकना, लचकना।

निहुराना–क्रि. स. दे. (हि. *निहुरना का प्रे. रूप*) नवाना, बचाना, झुकाना।

निहोरना–क्रि. सं. दे. (सं. *मनुहार*) विनय या प्रार्थना करना, मनाना, कृतज्ञ होना, मनौती करना।

निहारा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मनोहार*) विनती, प्रार्थना, उपकार मानना, कृतज्ञता। भरोसा, आसरा। कि. वे. दे. **निहोरे**–बदौलत, द्वारा, कारण या हेतु से, वास्ते, निमित्त के लिए। स्त्री. **निहोरी**।

निहाद–संज्ञा, पु. (सं.) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद।

नींद–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निद्रा*) *स्वप्न, निद्रा*, **निंदी, निंदिया** (आ.) सोने की दशा या अवस्था। उँघाई, झपकी। **मु. नींद उचटना**–नींद न आना, नींद न लगना। **नींद खुलना या टूटना**–जाग पड़ना, नींद चली जाना। **नींद पड़ना**–नींद आना या लगना। **नींद भर सोना**–मनमाना सोना, जी भर कर सोना। **नींद लेना**–सोना।

नींद सँचरना–नींद आना। **नींद हराम होना**–सोने का त्याग होना, छूट जाना। **नींद हिराना**–नींद न आना।

नींदड़ी-नींदरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नींद*) निद्रा, नींद, स्वप्न सोने की दशा। **निंदरिया**(आ.)।

नींबी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कटि पर सामने साड़ी का बन्धन (स्त्रियों का)। यौ. **नींबी-बन्धन**। संज्ञा, स्त्री. (सं.) नीम।

नींव–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **बुनियाद**।

नीफ-नीका-नीको(अ.)*–वि. दे. (सं. *निक्त=स्वच्छ*) भला, अच्छा, सुन्दर, धोखा। स्त्री. **नीकी**। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **निफाई**। संज्ञा, पु. (दे.) भलाई, अच्छाई, सुन्दरता, उत्तमता, अच्छापन।

नीकि-नीके–(वि.) क्रि. वि. दे. (हि. *नीक*) भली-भाँति, अच्छी तरह।

नीच–वि. (सं.) किसी बात में कम, छोटा, तुच्छ, निकृष्ट, हेठा, क्षुद्र, अधम, बुरा। (विलो. **उच्च, ऊँच**)। यौ. **नीच-ऊँच, ऊँचा-नीचा**–बुरा-भला, गुण-अवगुण, बुराई-भलाई, हानि-लाभ, सुख-दुख, **ऊँचे-नीचे**। **मु. ऊँचे नीचे पैर पड़ना (रखना)**–बुरा-भला करना।

नीचगा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) निमग्ना, नदी, निम्नगामिनी।

नीचगामी–वि. (सं. *नीच गामिन्*) नीचे की ओर जाने वाला, तुच्छ, ओछा। स्त्री. **नीच-गामिनी**।

नीचट–वि. (दे.), **निचाट** (आ.) एकांत, निर्जन, दृढ़, पक्का,

पूरा, **बिलकुल**।

नीचता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अधमता, **निचाई** (दे.) कमीनापन।

नीचा-नीची–वि. दे. (सं. *नीच*) जो गहराई पर हो, गहरा, नि। स्त्री. **नीची**। जो ऊँचा न हो, धीमा, मध्यम, बुरा, ओछा, क्षुद्र। यौ. **नीचा-ऊँचा**–बुरा-भला, बुराई भलाई, गुण-अवगुण, हानि-लाभ, संपद-विपद, दुख-सुख। **मु. नीचा खाना**–अपमानित होना, हारनां, झपना, लज्जित होना। **नीचा दिखाना**–अपमानित करना, हराना, शेखी भावना, लज्जित करना, **नीचा दिखना**–अपमानित होना, तुच्छ बनना। **आँख (नाक) नीची होना (करना)**–लज्जित होना (करना)। **सिर नीचा होना (करना)**–लज्जित होना। **नीची दृष्टि (निगाह) करना**–अपना सिर झुकाना, सम्मुख न देखना। **नीचाई**–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नीचता*) नीचता, छुटाई, नीचपना।

नीचाशय–वि. यौ. (सं.) तुच्छ, ओछा, क्षुद्र।

नीचू†–क्रि. वि. दे. (हि. *नीचा*) नीचे की ओर, एक पेड़ तले। वि. (दे.) नीच।

नीचे–क्रि. वि. दे. (हि. *नीचा*) नीचे की ओर, तले।

नीजू–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *निज*) पानी भरने की ओर, **लेजुरी** (आ.)।

नीझरना-निझरना–क्रि. अ. (दे.) समाप्त होना, चुक जाना।

नीठ–क्रि. वि. दे. (सं. *अनिष्टि*) अरुचि, अनिच्छा, ज्यों-त्यों करके, कठिनता से, किसी-न-किसी भाँति या प्रकार।

नीड़–संज्ञा, पु. (सं.) चिड़ियों का घोंसला

नीत–वि. (सं.) पहुँचाया या लाया हुआ, प्राप्त, स्थापित।

नीति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सदाचार, श्रेष्ठ व्यवहार, अच्छी चाल, कानून, राज विद्या, युक्ति, उपाय, हिकमत, तदबीर।

नीतिज्ञ–वि. (सं.) नीति का ज्ञानी या जानकार, नीति में निपुण या ज्ञानी या जानकार, कुशल, चतुर। संज्ञा, स्त्री. **नीतिज्ञता**।

नीतिमान्–वि. (सं. *नीतिमत्*) नीतिमान्, नीति-परायण, सदाचारी। स्त्री. **नीतिमती**।

नीति-विद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) नीतिशास्त्र।

नीति-शास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नीति-विद्या, कानून।

नींदना*–क्रि. स. दे. (सं. *निंदन*) निंदा करना।

नीधन, नीधना†*–वि. दे. (सं. *निर्धन*) **दरिद्र, कंगाल, निर्धन, निर्धनी**। संज्ञा, स्त्री. **नीधनता, निधनता, निधनई**।

नीवी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नीति*) कमरबन्द, हज़ारबन्द, नारा, धोती, साड़ी। यौ. नीबी बंधन। संज्ञा, स्त्री. (दे.) नीम।

नीबू–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निंबूक, अ. लेमूँ*) एक, खट्टा मीठा फल, कागजी, बिजौरा, अँधेरी, चकोतरा, चार भाँति के खट्टे नीबू, **निब्बू, निंबुआ** (आ.)। **मु. नीबू-निचोड़**–बड़ा भारी कंजूस।

नीम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निंब*) एक पेड़, जिसके फल को **निंबौरी, निमौरी** कहते हैं, **नींव, नींबी** (दे.)।

नीमरज़ा–वि. यौ. (फा.) आधा राजी, अर्द्ध प्रलय या स्वीकृति। मु. *"खामोशी नीमरजा"* (फा.) *मौनम् स्वीकृति-लक्षणम्* (सं.)।

नीमा–संज्ञा, पु. (फा.) जामे के तले का कपड़ा।

नीमास्तीन–संज्ञा, स्त्री. यौ. (फा. *नीम+आस्तीन*) आधी बाहों की कुरती।

नीयत, नियत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) हार्दिक लक्षय, आशय, उद्देश्य, संकल्प, इच्छा। **मु. नीयत डिगना (डोलना) या बद होना, बिगड़ना**–उचित विचार या संकल्प दृढ़ न रहना। **नीयत बदलना (खाम होना)**–विचार या संकल्प का और से और हो जाना, बेईमानी या बुराई की ओर झुकना। **नीयत बाँधना**–संकल्प या इरादा करना। **नीयत भरना**–जी भर जाना, इच्छा पूर्ण होना। **नीयत में फ़र्क आना**–बेईमानी या बुराई की ओर झुकना। **नीयत लगी रहना**–जी ललचाता रहना, इच्छा बनी रहना।

नीर–संज्ञा, पु. (सं.) पानी, जल, नीर, अंशु, तोय, वारि, देवता पर चढ़ाया जल। **मु. *नीर ढलना**–मरते समय आँखों से आँसू बहना। **आँख का नीर ढल जाना**–निर्लज्ज या बेशरम हो जाना, फफोले के भीतर का रस या चेप।

नीरज–संज्ञा, पु. (सं.) जलभव वस्तु, कमल, मुक्ता, मोती।

नीरद–संज्ञा, पु. (सं.) बादल, मेघ। वि. (सं. *निः+रद*) अदन्त, बे दाँत का।

नीरधि–संज्ञा, पु. (सं.) समुद्र, सागर।

नीरनिधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समुद्र, सागर।

नीरमय–वि. (सं.) जलमय, जल-रूप, जल में डूबा।

नीरस–वि. (सं.) **निरस** (दे.) सूखा, रस हीन, स्वाद-रहित, फीका, अरोचक, अरुचिर। संज्ञा, स्त्री. **नीरसता**।

नीरांजन नीराजन–संज्ञा, पु. (सं.) दीपदान, आरती उतारना, बिसर्जन, हथियारों को साफ़ करने का कार्य।

नीराजन–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आरती, दीप दर्शन, हथियार *साफ करना*।

नीरुज–*वि. (सं.) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोग-रहित, निरोग*।

नीरे, नियरे, नेरे–क्रि. वि. दे. (सं. निकट)* पास, निकट, समीप।

नीरोग, निरोग–वि. (सं.) चंगा, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, आरोग्य।

नीरोगी–वि. (सं. *नीरोगिन्*) भला-चंगा, रोग-रहित, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, **निरोगी**।

नील–वि. (सं.) नीले रंग का। संज्ञा, पु. (सं.) नीला रंग, एक पौधा जिससे रंग बनता था। **मु. नील की सलाई फिरवा देना**–अंधा कर देना, आँखें फोड़ना डालना। चोट का काला दाग, कलंक, राम-दल का एक बंदर, नौ निधियों में से एक, नीलम, सौ अरब की संख्या, एक छंद (पिं.)।

नीलकंठ–वि. यौ. (सं.) जिसका गला नीला हो। संज्ञा, पु. शिवजी, मोर, चाप या गौरापक्षी, यात्रा में नाम और इसको बैठा देख लेना शुभ है।

नीलक–संज्ञा, पु. (सं.) नीले रंग का मृग, बीजगणित का प्रमाण।

नीलकमल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कृष्णा कमल, **नीलोत्पल**।

नीलकांत–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक पक्षी, विष्णु, नीलमणि।

नीलकांत–संज्ञा, स्त्री यौ. (सं.) नीले और बड़े फूलों वाली विष्णुकांता लता।

नीलगवय-नीलगाय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नील गाय, रोझ (आ.)।

नीलग्रीव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जगन्नाथ जी के मन्दिर के ऊपरी शिखर का चक्र, एक दंडक वृत्त (पिं.)।

नीलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नीलापन, नीलिमा, **निलाई** (दे.)।

नील-बड़ी, नील-धरी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) नील रंग का टुकड़ा या खंड।

नीलम–संज्ञा, पु. (फा. *मि.* सं. *नीलमणि*) इन्द्रनीलमणि, नीलमणि, नीलकांतमणि।

नीलमणि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नीलकांतिमणि, इन्दुनीलमणि, नीलम।

नीलमाधप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, जगन्नाथ।

नीलमोर–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) कुररी पक्षी।

नीललोहित–वि. यौ. (सं.) बैंगनी रंग, लाल और नीला मिला रंग। संज्ञा, पु. शिव जी, विष्णु, नीलकंठ।

नीलवर्ण–वि. यौ. (सं.) *श्यामरंग, आसमानी रंग*।

नीलस्वरूप नीलस्वरूपक–*संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक वर्णलुप्त (पिं.)*

नीलांजन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नीला या श्याम सुरमा, नीलाथोथा, तूतिया।

नीलांबर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नीले रंग का रेशमी वस्त्र, नीला वस्त्र। वि. नीले वस्त्र पहनने वाला, वस्त्रदेव जी।

नीलाम्बरा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लक्ष्मी जी।

नीलांबुज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नील कमल।

नीला–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वि. दे. (सं. *नील*) नील के रंग का, श्याम या आसमानी रंग का। **मु. नीला-पीला होना**–विगड़ना, क्रोधित होना। **चेहरा नीला पड़ जाना**–मुँह का रंग श्याम हो आना, चित्त की उद्विग्नता या छटा प्रगट हो, जीवन-लक्षण का नष्ट हो जाना।

नीलाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) श्यामला, नीलापन, नौखता।

नीलाथोथा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नील तुल्य*) तूतिया, ताँबे का क्षार।

नीलाम–संज्ञा, पु. दे. (*पुर्त. लीलाम*) बोली बुलाकर माल बेचना। **लिल्लाम** (दे.)।

नीलार्त्त–संज्ञा, पु. (सं.) प्रियावासा, पियावाँसा (औष.)।

नीलावती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.*नीलवती*) चावल का एक भेद।

नीलिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नीलवरी, काली निर्गुंवड़ी, नील सँभालू का पेढ़, नेत्र-रोग, मुख पर का एक रोग।

नीलिमा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नीलिमन्*) श्यामता, स्याही, नीलापन।

नीलीघोड़ी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) **लिल्ली घोड़ी** (दे.) डफालियों

की भीख माँगने वाली कागज़ की घोड़ी।

नीलोत्पल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नील कमल।

नीलोपल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नीलमणि, नीलम।

नीलोफर–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *नीलोत्पल*) नील कबँल।

नीवँ-नीव–संज्ञा, स्त्री. सं. दे. (सं. *नेमि, प्रा. नेह*) किसी मकान या इमारत की बुनियाद या जड़। **मु. नीवँ देना**–गड्ढा खोद कर दीवार की जड़ जमाना। **किसी बात की नीवँ देना**–हेतु, कारण या आधार बताना।

नीवा–संज्ञा, पु. (दे.) **मंदता**।

नीवार–संज्ञा, पु. (सं.) पलही धान।

नीवी, निधि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कटिबंध, फुफुंदी, नारा, साड़ी या धोती, लहँगा।

नीशार–संज्ञा, पु. (सं.) तंबु।

नीसक–वि. (दे.) निर्बल, कमज़ोर।

नीशानी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक छंद (पिं.) उपमान।

नीसारना–क्रि. स. (दे.) निकालना, निकासना, बाहर करना, **निसारना**।

नीहार–संज्ञा, पु. (सं.) कुहरा, पाला, तुषार।

नीहारिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कुहरा, **कुहासा** (दे.) नीहारिकावाद का सिद्धान्त (न्याय.)।

नुकता–संज्ञा, पु. दे. (अ. *नुकता*) बिंदी, बिंदु। संज्ञा, पु. (सं.) चुटकुला, फबती, ऐब।

नुक़ता-चीनी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) दोष या ऐब निकालने का काम।

नुकती–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *नसुही*) बेसन की बारीक बुँदियाँ, एक तरह की मिठाई।

नुकना–क्रि. स. (दे.) छिपना, लुकना।

नुकरा–संज्ञा, पु. (अ.) चाँदी, घोड़ों का सफ़ेद रंग। वि. सफ़ेद रंग का; नुकराई-चाँदी का (सफ़ेद रंग)।

नुकसान–संज्ञा, पु. (अ.) घाटा, घटी, हानि, ह्रास, क्षति, छीज। **मु. नुक़सान उठाना**–घटी या हानि सहना।

नुकसान पहुँचाना (करना)–हानि पहुँचाना। **नुक़सान भरना (देना)**–घटी या हानि पूरी करना। दोष, विकार, अवगुण। **किसी को नुकसान करना**–दोष वजाना, तंदुरुस्ती या स्वास्थ्य के विरुद्ध बचाव करना। वि. **नुक़सानदेह**–हानिकारक।

नुकाना–क्रि. स. अ. (दे.) छिपाना। **प्रे. रूप–नुकवाना**।

नुका–संज्ञा, पु. (दे.) काजल, एक छंद (पिं.)

नुकीला–वि. (हि. *नोक+ईला प्रत्य.*) नोकदार, जिस वस्तु में नोक हो। स्त्री. **नुकीली**।

नुक्कड़–संज्ञा, पु. (हि. *नोक का अल्पा.*) नोक या निकला हुआ कोना, गली का कोना, पतला सिरा।

नुक्स–संज्ञा, पु. (अ.) ऐब, बुराई, दोष, गलती, त्रुटि, कमी।

नुखट्टा–संज्ञा, पु. (दे.) नख का खसोट।

नुचना–क्रि. स. दे. (सं. *लुचन*) नोचा जाना, उखड़ना। क्रि. स. **नुचाना**।

नुचवाना–क्रि. स. दे. (हि. *नोचना का प्रे. रूप*) नोचने का कार्य किसी दूसरे से कराना, **नोचवाना**।

नुति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्तुति, स्तोत्र, खुशामद।

नुत्फा–संज्ञा, पु (अ.) वीर्य, शुक्र।

नुत्फाहराम–वि. यौ. (अ.) वर्ण-संकर (गाली)।

नुनखरा-नुनखरा–वि. दे. यौ. (हि. *नून+खारा*) नमकीन, नमक से सारे स्वादे का।

नुनना–क्रि. स. दे. (सं. *लवन, लून*) *लुनना*, खेत का अनाज काटना।

नुनाई†*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नून*) लुनाई, सुन्दरता, सलोनापन, नमकीनपन।

नुनियाँ–संज्ञा, पु. (दे.) नमक, शोरा बनाने वाली एक नीच जाति, **नोनियाँ** (आ.)।

नुनेरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *नून+एरा प्रत्य.*) नमक बनाने वाला लोनियाँ, नोनियाँ।

नुमाइश–संज्ञा, स्त्री. (फा.) प्रदर्शन, दिखावट, प्रदर्शनी, तड़क-भड़क, सजावट।

नुमाइशी–वि. (फा.) दिखाऊ, **दिखौवा** (आ.) **दिखावटी**।

नुसखा–संज्ञा, पु. (अ.) लिखा कागज़, दवाइयों का रुका।

नूत–वि. दे. (सं. *नूतन*) नवीन, नया, अनोखा, ताज़ा, अनूठा।

नूतन-नूत (दे.)–वि. (सं.) नवीन, नया, अनोखा, ताज़ा।

नूतनता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नयापन, नवीनता।

नूधा–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार की तम्बाकू।

नूनं–अव्य. (सं.) निश्चयार्थक शब्द।

नून–संज्ञा, पु. (दे.) आल, आल की जाति की एक लता।

संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लवण*) नमक, नोन (आ.)। **मु॰ नून-तेल**–गृहस्थी का सामान। *वि॰ दे॰ (सं॰ *न्यून*) न्यून, कम।

नूनताई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ न्यूनता) न्यूनता, कमी।

नूपुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पायजेव, पैंजनी, घुँघरू।

नूर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रोशनी, प्रकाश ज्योति। **मु॰ नूर का तड़का**–प्रातः काल। "रात बीती नूर का तड़का हुआ।" **नूर बरसना**–अधिक कांति होना। शोभा, श्री, कांति। यौ॰ **नूरजहाँ**–जहाँगीर बादशाह की बेगम।

नूरा†–वि॰ दे॰ (अ॰ *नूर*) तेजस्वी, प्रतापी।

नूह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पैग़म्बर (मुस॰), जिनके समय में बहुत बड़ा तूफ़ान आया था।

नृ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनुष्य, नर, आदमी।

नृकपाल, नृकपालिक–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मनुष्य की खोपड़ी।

नृकेसरी–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *नृकेशरिन्*) नृसिंह, नरसिंह, श्रेष्ठ पुरुष, **नरकेसरी**।

नृतक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नर्तक*) नाचने वाला।

नृत्तन*–क्रि॰ अ॰ (सं॰*नृत्य*) नाचना।

नृत्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाच, दर्शन।

नृत्यकी*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नर्तकी*) नाचने वाली, नर्तकी।

नृत्यशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) नाच-घर।

नृदेव, नुदेवता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ राजा, ब्राह्मण।

नृप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा, नरपति, 16 की संख्या।

नृपति, नृपाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा, नरेश, नरपति, **नृपालक**।

नृमेव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नरमेध यज्ञ।

नृवराह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु का वाराह अवतार।

नृशंस–वि॰ (सं॰) निर्दय, दष्ट, क्रूर, अत्याचारी, उद्दंड।

नृशंसता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निर्दयता, क्रूरता, निर्भीकता, उद्दंडता।

नृसिंह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नरसिंह, सिंह रूपी भगवान, मनुष्यों में सिंह या वीर।

नृहरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नृसिंह, नरसिंह, नरहरि, **नरकेहरि**।

ने†–प्रत्य॰ दे॰ (सं॰ *प्रत्य॰ टृ=एण*) सकर्मक क्रिया के भूतकाल के कर्त्ता की विभक्ति या चिन्ह।

नेइँ-नेई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) नींद, बुनियाद। "दीन्हेसि अचल विपति कै नेई"–रामा॰।

नेउला, नेउरा, नेउर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नकुल*) नेवला। वि॰ (प्रांती॰) बुरा, नेवर।

नेक–वि॰ (फ़ा॰) अच्छा, भला, सज्जन। *†वि॰ दे॰ (हि॰ *न +एक*) तनिक, थोड़ा, **नैकु** (अ॰)। क्रि॰ वि॰ (अ॰) तनिक, थोड़ा।

नेकचलन–वि॰ दे॰ यौ॰ (फ़ा *नेक*+हि॰ *चलन*) सदाचारी, सुकर्मी, अच्छे चाल-व्यवहार का। संज्ञा, स्त्री॰ **नेकचलनी**।

नेकनाम–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) अच्छे नाम वाला, यशस्वी। संज्ञा, स्त्री॰ **नेकनामी**।

नेकनियत–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰ *नेक*+*नीयत* अ॰) उत्तम या अच्छे विचार वाला, अच्छे संकल्प का। संज्ञा, स्त्री॰ **नेकनियती**।

नेकी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) भलाई, भलमंसी। (विलो॰–वदी) यौ॰ **नेकी-बदी**।

नेक्ता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पोषक, पालक।

नेग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नैयमिक*) ब्याह आदि में कर्मचारियों या सम्बन्धियों को दिया गया धन, दस्तूरी। वि॰ **नेगी**।

नेगवार–संज्ञा, पु॰ (हि॰) शुभकार्य में धन पाने का अवसर।

नेगजोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) (हि॰ *नेग*+*योग=संयोग*) शुभकार्य में धन पाने का अवसर। वि॰ यौ॰ **नेगी-जोगी**।

नेगटी†*–संज्ञा, पु॰ (हि॰) नेग की रीति का पालन करने वाला।

नेगी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नेग*) पाने वाला।

नेगी-जोगी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) नेग पाने वाला।

नेछावर‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(हि॰) निछावर, **न्यौछावर**।

नेजक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रजक, धोवी, परिष्कारक, शुद्ध करने या कपड़े धोने वाला।

नेजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परिष्करण, शोधन।

नेजा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) भाला, बरछा, निशान।

नेजाबरदार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) भाला, बरछा या निशान या झंडा लेकर चलने वाला।

नेटा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नाक का मल, रेंट।

नेठमी–वि॰ (दे॰) स्थिर, अटल, एक स्थान पर स्थित।

नेड़े†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *निकट*) समीप, निकट, पास, मेरे।

नेत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नियति*) निर्धारण, ठहराव, निश्चय, संकल्प, प्रबन्ध, व्यवस्था। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नेत्र*)

मथानी की रस्सी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक तरह की चादर। संज्ञा, पु॰ दे॰ एक भूषण। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *नीयत*) हार्दिक इच्छा या विचार, आशय, उद्देश्य, संकल्प। **मु॰ नेत बैठना**–डौल लगाना, ठीक होना।

चेतक–संज्ञा, पु॰ दे॰ नरकुल, नरकट, धूनरी।

नेता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *नेतृ*) अगुआ, सरदार, नायक, स्वामी, मालिक, निर्वाहक। स्त्री॰ नेत्री। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नेत्र) मथानी की रस्सी।

नेति–क्रि॰ वि॰ (सं॰ *न+इति*) इतना ही नहीं, अर्थात् अंत नहीं है, अनन्त है।

नेती–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *नेता*) मथानी की रस्सी।

नेती-धोती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *नेत्र*+हि॰ *नेता*+सं॰ *धौति*) कपड़े की एक पतली धजी को गले से पेट में डालकर आँतों की शुद्धि करने की एक क्रिया (हठयोग)।

नेत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नयन, अँरख एक तरह का कपड़ा, मथानी की रस्सी, पेड़ की जड़, रथ, दो की संख्या का सूचक शब्द।

नेत्रच्छद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आँखें बन्द करने वाला चमड़ा, पलक।

नेत्रजल–संज्ञा, पु॰ आँसू।

नेत्रवाला–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दृष्टि वाला।

नेत्रमंडल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आँख का गोला या घेरा।

नेत्रलीत–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बंदी, कैदी, अपराधी।

नेत्रश्राध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आँख से पानी का बहना (रोग)।

नेत्रांबु– संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आँखों का पानी, आँसू।

नेत्री– वि॰ (सं॰) नेत्र वाली।

नेनुष्पा-नेनुषा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) धियातरोई नाम की तरकारी।

नेपचून–संज्ञा, पु॰ (फ्रे॰) एक ग्रह।

नेपथ्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेशभूषा, नाट्यगृह का वह भाग जहाँ स्वरूप साजे जाते हैं। सजावट, शृंगार-गृह (काव्य॰)।

नेपाल-नैपाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नेपाल*) हिमालय का एक पहाड़ी देश।

नेपाली-नेपाली–वि॰ दे॰ (हि॰ *नेपाल*) नेपाल सम्बन्धी, नैपाल निवासी, पर्दो की भाषा।

नेपुर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नीपुर*) पायजेब, घुँघुरू।

नेफा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) लहँगा या पायजामे में नारा या इजारबंद के रहने का स्थान।

नेब*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *नायब*) सहायक, मददगार, मंत्री, नायब।

नेम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नियम*) नियम, कायदा, दस्तूर, रीति आचार। यौ॰ **नेम-धरम**–पूजा-पाठ, उपवास, व्रत।

नेमि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चक्र की परिधि, पहिए का घेरा, कुएँ की जगत्, प्रांत, भाग। संज्ञा, पु॰ एक तीर्थंकर, वज्र।

नेमी–वि॰ दे॰ (सं॰ *नियम*) नियम-व्रत का पालन करने वाला, पूजा-पाठ, व्रज आदि का करने वाला।

नेराना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *निराना*) निराना। क्रि॰ अ॰ दें॰ (हि॰ *नेरे=समीप*) समीप पहुँचना, निकट जाना, **नियराना**।

नेरुवा–संज्ञा, प॰ (दे॰) पयाल, नोली, डोंड़ी।

नेरे†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *नियर*) नियरे, समीप, निकट, पास।

नेव*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *नायब*) नायब, मन्त्री, सहायक। संज्ञा, स्त्री॰ नींव, निहोरे, में, के लिए।

नेवग*–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नेग, रीति, दस्तूर।

नेवज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नैवेद्य*) नैवेद्य, भोग।

नेवता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *न्योता*) नेउता, न्यौता (आ॰)ए निमंत्रण।

नेवर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नूपुर*) नूपुर, पायजेव, नेवला। वि॰ (*प्रान्ती॰*) बुरा, ख़राब।

नेवरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *निवारण*) निवारण, भिन्न, अलग या दूर करना।

नेबल, नेवला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *नकुल*) एक जन्तु, जो साँप का शत्रु है, नेउर, नेउरा (आ॰) न्यौता।

नेवाज–वि॰ दे॰ (फा॰ *निवाज*) **नेवाजू** (आ॰) कृपा या दया करने वाला।

नेवाजिस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *निवाजिश*) कृपा, दया। **निवाजी**–क्रि॰ अ॰ दे॰ (फ़ा॰ *निवाज*) शरण में भी, कृपा की। वि॰ कृपा करने वाला, दयालु।

नेवारना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *निवारना*) निवारना, दूर या अलग करना, हटाना।

नेवारी, नेवाड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *नेपाली*) नेवाड़ी के पेड़ या फूल, वन-मल्लिका (सं॰)।

नेसुक, नैसुक*†–वि. दे. (हि. नेकु) थोड़ा, तनिक, रंच। क्रि. वि. (प्र.) तनिक सा, जरा सा, थोड़ा सा।

नेस्त–वि. (फा.) नहीं है, जो न हो। नास्ति (सं.)। यौ. **नेस्तनाबूद**–नष्ट-भ्रष्ट।

नेस्ती–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) अनस्तित्व, न होना, नाश। (विलो.–हस्ती); आलसी, सुस्त।

नेह*–संज्ञा, पु. दे. (सं. स्नेह) स्नेह, प्रीति, प्रेम, चिकनाई, तेल या घी। क्रि. वि. यौ. (सं.) न इह, नहीं।

नेही*–वि. दे. (हि. नेह+ई प्रत्य.) प्रेमी, स्नेही, मिश्र।

ने–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. नय) नीति, नय। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. नदी) नदी। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) बाँस की नली, हुक्के की निगाली, बाँसुरी। क्रि. अ. (दे.) झुकना।

नैऋत*–वि. संज्ञा, पु. दे. (सं. नैऋत्य) दक्षिणा-पश्चिम के बीच की दिशा, राक्षस।

नैक-नैकु–वि. दे. (हि. नेक, नेकु) रंच, थोड़ा तनिक।

नैकट्य–संज्ञा, पु. (सं.) समीपता, निटता।

नैगम– वि. (सं. निगम या वेद-सम्बन्धी। सज्ञा, पु. उपनिषद्-भाग, नीति।

नैचा–सज्ञा, पु. (फा.) हुक्के की लकड़ी।

नैज–वि. (अं.) निजी, आत्मीय, आत्म सम्बन्धी। **नै जाना**–क्रि. अ. दे. (सं. नम्र) झुक या लच जाना।

नैतिक–वि. (सं.) नीति-सम्बन्धी।

नैन-नैना*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. नयन) नयन, नेत्र, आँख। संज्ञा, पु. दे. (सं. नवनीत) **नेनू** (दे.) मक्खन।

नैनसुख–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) एक सफेद और चिकना सूती कपड़ा। **लो–आँख के अंधे नाम नैनसुख**।

नैनू–संज्ञा, पु. (हि.) एक बूटीदार महीन कपड़ा। †संख्या, पु. दे. (सं. नवनीत) मक्खन, **नेनू**।

नैपाली–वि. (हि. नेपाल) नेपाल देश का निवासी या वहीं उत्पन्न। संज्ञा, स्त्री. नेपाल की भाषा।

नैपुलव–संज्ञा, पु. (सं.) निपुलता, चतुराई, दक्षता, **निपुनाई** (दे.)।

नैमित्तिक–वि. (सं.) किसी कारण या प्रयोजन से होने वाला कार्य।

नैमिष–संज्ञा, पु. (सं.) एक तीर्थ।

नैमिषारण्य–संज्ञा, पु. (यौ.) (सं.) नैमिष तीर्थ के पास का एक वन।

नैया–*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. नौ) निइय्या (आ.) नाव, नौका।

नैयायिक–वि. (सं.) न्याय-वेत्ता, न्याय का पढ़ने या जानने वाला।

नैराश्य–संज्ञा, पु. (सं.) निराशता, नाउम्मेदी। स्फु.।

नैर्ऋत–वि. (सं.) नैर्ऋति सम्बन्धी। संज्ञा, पु. एक राक्षस, दक्षिण-पश्चिम दिशा का स्वामी।

नैर्ऋति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पश्चिम और दक्षिण के बीच की दिशा।

नैर्मल्य–संज्ञा, पु. (सं.) निर्मलता, स्वच्छता, विमलता।

नैवेद्य–संज्ञा, पु. (सं.) देवभोग, देववलि।

नैषध–वि. (सं.) निषध-देश का, निषध-देश सम्बन्धी। संज्ञा, पु. (सं.) राजा नल, ओ हर्ष-रचित एक महा-काव्य।

नैष्ठिक–वि. (सं.) श्रद्धा-भक्ति युक्त। स्त्री. **नैष्ठिकी**।

नैसर्गिक–वि. (सं.) प्राकृतिक, स्वाभाविक, संज्ञा, स्त्री (सं.) **निसर्ग**। संज्ञा, स्त्री. (सं7521) **नैसर्गिकता**। वि. **नैसर्गिकी**।

नैहर–संज्ञा, पु. दे. (सं. शति=पिता+हि. घर) मायका, पीहर, स्त्री के पिता का घर।

नोक–संज्ञा, स्त्री. (फा.) किसी चीज़ का निकला हुआ कोना या अग्र भाग। वि. **नोकदार, नोकीला**। स्त्री. **नोकीली**।

नोकचोक–संज्ञा, स्त्री. (दे.) संकेत या इशारे से बातें करना, लाग-डाँट।

नोक-झोंक–संज्ञा, स्त्री. यौ. (फ़ा. नोक+हि. झोंक) सजावट, ठाट-बाट, आसह, दर्प, व्यंग, ताला, छेड़-छाड़, विवाद।

नोकना–क्रि. स. (दे.) जलपाना, आकृष्ट होना।

नोकदार–वि. (फ़ा.) जिसमें नोक हो, दिल में चुभने वाला, शानदार।

नोका-झोकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. नोक-झोंक) छोड़-छाड़, व्यंग्य, व्यंग्य, बनाव-शृंगार, ठाट-बाट, विवाद।

नोखा†–वि. दे. (हि. अनोखा) अनोखा, अजीव, नवीन। स्त्री. (दे.) **नोखी**।

नोच–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. नोचना) चुटकी, बकोट, काटना, छीनना, नूट। यौ. **नोच-नाच, नरोच-खोंच**।

नोच-खसोट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) छीना-झपटी, ज़बरदस्ती, छीन लेना, लूट। स्त्री॰ **नोचा-खसोटी**।

नोचना–क्रि॰ स॰ (सं॰ *लंचन*) झटके से खींचना, उखेड़ना, नखों से फाड़ना, निकोटना, दुखी करके लेना, चुटकी या बकोट काटना।

नोट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लिखा परचा, सरकारी हुण्डी, संक्षिप्त लेख। यौ॰ **नोटबुक**, करंसी-नोट

नोटिस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विज्ञापन, सूचना-पत्र।

नोदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रेरणा, औगी, पैना।

नोन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *नमक*) **लोन**, नमक, **नून** (आ॰)। वि॰ **नोनहा**–नमकीन।

नोनचा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) अधिक नमकदार, आम की सूखी खटाई। वि॰ (दे॰) **नोनखर, नोनहर** (आ॰) **नमकीन।**

नोना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लवण*) लोनी मिट्टी, शरीफ़ा। †वि॰ (स्त्री॰ *नौनी*) नमक-मिला, खारा, सलोना, सुन्दर। वि॰ **नोनो** (*प्रान्ती*) चोखा। क्रि॰ स॰ (दे॰) नोवना।

नोना चमारी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) विख्यात जादूगरनी, जिसकी यंत्रों में दुहाई दी जाती है।

नोनिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नोना*) लोनिया, एक नमक शोरा बनाने वाली जाति।

नोनी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लवण*) लोनी मिट्टी, एक पौधा, अगलोना। वि॰ स्त्री॰ (*प्रान्ती*) सलोनी, चोखी।

नोना†*–वि॰ दे॰ (हि॰ *नोना*) चोखा, सुन्दर, अच्छा, सलोना।

नोर-नोल–वि॰ दे॰ (सं॰ *नवल*) नया, नवीन, नूतन।

नोवना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *नद्ध*) दूध दुहते समय गाय के पैर बांधना।

नोहर†–वि॰ दे॰ (सं॰ *मनोहर या नापलभ्य*) सुन्दर, मनहरण, अलभ्य, दुर्लभ, अनोखा।

नौ–वि॰ दे॰ (सं॰ *नव*) एक कम दस की संख्या, 9 ग्रह। **लो॰–नए के नौ दाम पुराने के छः।** "जेसे घटत न अंक नौ, नौ के लिखत पहार"–**तुलसी॰ नौ-दो ग्यारह होना**–देखते देखते भाग जाना, **एक दोतीन होना**–चल देना। लो॰–**नौ दिन चलै अढ़ाई कोस**–बढ़ी कठिनता से देर में थोड़ा कार्य होना।

नौकर–संज्ञा, पु॰ (फा॰) सेवक, चाकर, टहलुआ, वैतनिक कर्मचारी। स्त्री॰ **नौकरानी।** संज्ञा, स्त्री॰ **नौकरी।** यौ॰ **नौकर-चाकर।**

नौकरशाही–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फा॰) राज-प्रबन्ध, राज-कर्मचारी के हाथ में रहने वाला 'राज्य-प्रबन्ध।

नौकरानी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰)दासी, मज़दूरनी, टहलुई।

नौकरी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰ *नौकर+ई प्रत्य॰*) सेवा, टहल, खिदमत। यौ॰ **नौकरी-चाकरी।**

नौकर-पेशा, नौकरी-पेशा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) नौकरी-द्वारा जीवन-निर्वाह करने वाला व्यक्ति।

नौका–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाव, तरी, तरणी।

नौछावर†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *निछावर*) निछावर, उतारा, त्याग, **न्योछावर** (दे॰)।

नौज–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *नवद्य, प्रा॰ लवण*) भगवान न करे, ऐसा न हो, न हो, न सही।

नौजवान–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) नवयुवक, नया जवान। संज्ञा, स्त्री॰ **नौजवानी।**

नौजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *लौज*) चिलगोजा, बादाम।

नौतन*–वि॰ दे॰ (सं॰ *नेतन*) नूतन, नया, नवीन।

नौतम*–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *नवतम*) बिलकुल नया, ताज़ा, अति नवीन, ड़ाली।

नौता–वि॰ दे॰ (सं॰ *नव*) नया, नवीन, नूतन। संज्ञा, पु॰ (दे॰) न्योता, निमंत्रण।

नौधा–वि॰ दे॰ (सं॰ *नवधा*) नवधा, नव प्रकार की (नाश में/नहका) नौ तरह की।

नौ-नगा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *नौ+नग*) हाथ के नौ भूषणों का समूह। वि॰ नौ नगों का गहना। स्त्री॰ **नौनगी।**

नौना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *नवना*) लचना, झुकना, नम्र होना।

नौबढ़–वि॰ दे॰ (हि॰ *नौ+बढ़ना*) हाल ही में कंगाल से धनी हुआ व्यक्ति, हाल का बढ़ा हुआ।

नौबत–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) हर्षवाल, सहलाई, ब्याह आदि के नगाड़े, बधाई। **मु॰ नौबत झड़ना**–नौबत बजना, अवसर, मौका। **किसी बात की नौबत न आना**–अवसर या मौका न मिलना। **नौबत बजना**–आनंदोत्सव होना। यौ॰ नौ-पतिया नगाड़ा। **नौबत-खाना**–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) नक्कार खाना, द्वार के ऊपर का स्थान जहाँ शहनाई बजाते हैं।

नौबती–संज्ञा, पु. (फा. *नौबत+ई प्रत्य.*) नक्कारची या शहनाई वाला, नौवत बजाने वाला, पहरेदार, कोतल घाड़ा, बड़ा तम्बू।

नौमासा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *नवमास*) गर्भगत बच्चे का नवें महीने का संस्कार, पुंसवन।

नौमी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नवमी*) नवमी, **नाउसी** (आ.)। "नौमी तिथि मधुमास पुनीता"–रामा.।

नौरंग–संज्ञा, पु. दे. (फा. *औरंग*) 'औरंगजेव बादशाह'। –(भूषण)। यौ दे. नया या 9 रंग।

नौरंगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *नारंगी*) नारंगी, संतरा। वि. यौ. नए या 9 रंग वाला।

नौरतन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *नवरत्न*) हीरा, नीलम, पन्ना, पुखराज, चुन्नी आदि नौ रत्नों का समूह, नौनगाभूषण। संज्ञा, स्त्री. एक प्रकार की चटनी, **नौरतनी**।

नौरोज़–संज्ञा, पु. दे. (फा.) वर्ष का प्रथम दिन, पारसियों का उत्सव दिन। यौ. नौ दिन।

नौ लखा– वि. दे. यौ. (हि. *नौ+लाख*) नौलाख रुपए के भूषण का एक हार, बहु मूल्य जड़ाऊ हार।

नौशा–संज्ञा, पु. (फा.) वर, दूल्हा।

नौसत–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि. *नौ+सात*) सोलह शृंगार, शृंगार।

नौसादर–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *नौशादर*) एक तीक्षण ओपधि (क्षार)।

नौसिखिया-नौसिखुवा–वि. दे. (सं. *नवशिक्षित*) नवा सीखा हुआ, अनुभव रहित, ना तजुर्बेकार।

नौसेना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) जल-सेना, जहाजी लड़ाई की फ़ौज।

नौहड़–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *नव=नया+*हाँड़ी हि.) मिट्टी की नयी हाँड़ी।

न्यग्रोध–संज्ञा, पु. (सं.) वट, बरगद, शमी, शिव, विष्णु।

न्यस्त–वि. (सं.) धरोहर, अमानत, त्यक्त, छोड़ा हुआ।

न्याउ-न्याव†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *न्याय*) न्याय, **नियाव** (आ.)।

न्यात–संज्ञा, पु. दे. (आ.) डौल, मोका, घात।

न्याति*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ज्ञाति* जाति)।

न्याय–संज्ञा, पु. (सं.) प्रमाणों के द्वारा अर्थ का सिद्ध करना, इन्साफ, उचित निपटारा, व्यवहार। सम्बन्ध, लौकिक कहावत, जैसे–तक-कौडि न्यन्याय, वलीवर्दन्याय। तर्क-शास्त्र का गौतम ऋषि प्रणीत एक महान् ग्रंथ।

न्यायकर्त्ता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) न्याय, इन्साफ या निबटारा करने वाला शासक, न्याय-शास्त्र के बनाने वाले गौतम ऋषि। वि. **न्यायकारी, न्यायकारक**।

न्यायपरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) *न्याय-परायणता,* न्यायशीलता, न्यायी होने का भाव।

न्यायवान–संज्ञा, पु. (सं.*न्यायवत्*) न्यायी, न्याय रखने वाला। स्त्री. **न्यायवती**।

न्यायाधीश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) न्याय करने वाला, न्याय-कर्त्ता, मुकदमों का फैसला करने वाला शासक या अधिकारी।

न्यायालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अदालत, कचहरी, **न्यायभवन**।

न्यायी–संज्ञा, पु. (सं.*न्यायिन्*) नीति या न्याय पर चलाने या चलने वाला। वि. (सं.) न्याय करने वाला।

न्याय्य–वि. (सं.) न्यायानुसार, ठीक-ठीक, उचित।

न्यारा–वि. दे. (सं. *निर्निकट*) दूर, पृथक्, न्यारो (अ.), भिन्न, निराला, अनोखा। स्त्री. न्यारी।

न्यारिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *न्यारा*) सुनारों के कूड़े से सोने-चाँदी को अलग करने वाला।

न्यारे-न्यारो–क्रि वि. दे. (हि. *न्यारा*) अलग, भिन्न, दूर।

न्याव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *न्याय*) न्याय, तर्क, ठीक या उचित पात।

न्यास–संज्ञा, पु. (सं.) धरोहर, धाती, त्याग रखना। (वि. *न्यस्त*)।

न्यून–वि. (सं.) अल्प, कम थोड़ा, घट कर।

न्यूनता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कमी, अल्पता, हीनता।

न्योछावर–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *निछावर*) निछावर, उतार।

न्योजी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) लीची फल, चिलगोजा।

न्योतना न्यौतना–क्रि. स. दे. (हि. *न्योता+ना प्रत्य.*) किसी उत्सव में सम्मिलित होने के लिए किसी को बुलाना, नियंत्रण देना, निमंत्रित करना। प्रे. रूप– **न्यौताना, न्योतवाना**।

न्योता-न्यौता–संज्ञा, पु. दे. (सं. *निमंत्रण*) निमंत्रण, बुलाया, दावत, **न्यउता, नेउत, निउता** (आ.)।

न्योला-न्यौला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नकुल*) नेवला, नेउरा (आ.), नकुल।

न्योला-न्यौली–संज्ञा, स्त्री. (सं. *नली*) हटयोगी के पेट के नलों को पानी से शुद्ध करने की एक क्रिया (हटयोग)।

न्हान–संज्ञा, पु. (दे.) **स्नान** (सं.) नहाना।

प

प–संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के पवर्ग का पहला अक्षर, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

पंक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कींच, कींचड़, लेश।

पंकज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, जलज। यौ॰ **पंकज-श्री**–कमल कांति।

पंकजवटिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक वृत्त (पिं॰)।

पंकजात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल।

पंकजासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मा-कमलासन।

पंकरुह- संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, पंकज।

पंकिल–वि॰ (सं॰) कीचड़-युक्त।

पंक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पाँति, कतार, श्रेणी, सतर, एक वृत्त (पिं॰) दंश। **पंगति** (दे॰)। यौ॰ पंक्ति-भेद।

पंक्तिपावन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दान लेने और यज्ञ में बुलाने के योग्य ब्राह्मण।

पंक्तिबद्ध–वि॰ यौ॰ (सं॰) कतार में बँधा या रखा हुआ, श्रेणीवद्ध।

पंख–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पक्ष*) पर, डैना। **मु॰ (चींटी के) पंख जमना (उगना)**–मरने या हानि उठाने का मौका मिलना या समय आना। **पंख लगना**–पक्षी के वेग के समान वेग वाला होना।

पंखड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पक्षय*) पंखुरी, पंखड़ी, **पाँखुरि** (अ॰) फूल के पत्ते, पुष्पदल।

पंखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पंख*) डेना, विजना। स्त्री॰ *अल्पा॰* **पंखी**–छोटा पंखा पाँखी, पतिंगा।

पंखा-कुली–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पंखा+कुली अ॰*) पंखा खींचने वाला नौकर।

पंखापोश–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पंखा+ पोश* फा॰) पंखा ढाँकने का वस्त्र, पंखे का गिलाफ़।

पँखियाँ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पंख*) छोटे-छोटे पंख, भूसी के बारीक या सूक्ष्म टुकड़े, छोटे पर।

पंखी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पक्षी*) पक्षी, पखेरू, चिड़िया, पाँखी, पतिंगा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पंखा*) छोटा पंखा पँखिया।

पंखुड़ा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पक्ष*) पखोर, पखौरा, हाथ और कंधे का जोड़।

पंखुड़ी-पँखुरी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पंख*) पंखड़ी, पाँखुड़ी, पखुरी, फूल की पत्ती, पुष्प-दल।

पँखेरू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पक्षी*) पक्षी, पखेरू, चिड़िया, पंछी।

पंग–वि॰ दे॰ (सं॰ *पंगु*) लँगड़ा, पँगुआ, पंगुवा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक तरह का नमक।

पंगत-पंगति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पंक्ति*) पाँति, पंक्ति, कतार, सभा, समाज।

पंगा–वि॰ दे॰ (सं॰ *पंगु*) पंगु, पँगुआ, पंगुला, लँगड़ा। स्त्री॰ **पंगी**। (पं॰) झगड़ा, परेशानी।

पंगु-वि॰ (सं॰) पाँव का लँगड़ा, पँगुआ, पंगुवा, लँगड़ा। संज्ञा, पु॰ (सं॰) शनैश्चर ग्रह, वात रोग का भेद। संज्ञा, स्त्री॰ **पंगुता**।

पंगुगति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वर्णिक छंदों का एक अवगुण या दोष (पिं॰)।

पंगुल-पंगुला–वि॰ दे॰ (सं॰ *पंगु*) पेंगुआ, रँगुवा, लँगड़ा।

पंच–वि॰ (सं॰) पाँच। संज्ञा, पु॰ (पाँच की संख्या का अंक, लोक, जनता, समाज, सभा, झगड़ा निबटाने वाले, मुखिया, समुदाय, पंचायत का सदस्य, पंचायत। **यौ॰ पंचनामा**–पंचों का निर्णय। **मु॰ पंच की भीख**–सब की दया या कृपा, सबकी असीस। **पंच की दुहाई**–अन्याय मिटाने या सहायता करने की पुकार। **पंच परमेश्वर**–समुदाय कथन परमेश्वर वाक्य सा मान्य है। पंचायत, न्याय सभा। **लो॰**–। **मु॰ किसी को पंच मानना या बदना**–झगड़े के निपटारे के हेतु किसी को नियत करना। जज के 'असेसर' लोग।

पंचक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाँच का समुदाय या समूह, धनिष्ठा से 5 नक्षत्र, पाँचक (दे॰) इनमें शुभ कार्य का निषेध है, पचावत।

पंच-कन्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अहल्या, तारा, कुंती, द्रौपदी, मंदोदरी, जो विवाह होने पर भी कन्या रहीं।

पंचकल्याण-संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऐसा घोड़ा जिसके चारों पैर सफ़ेद हों और माथे पर सफ़ेद तिलक हो, शेष शरीर का रंग लाल या काला कोई हो।

पंचकवल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भेजन के पहले पाँच ग्रास जो

कुत्ते, कौए, रोगी, पतित और कोढ़ी के हेतु निकाले जाते हैं, **पंचकौर** (दे.)।

पंचकोण–वि. यो. (सं.) पाँच कोनों का क्षेत्र, **पँचकोन** (दे.)।

पंचकोश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शरीर बनाने वाले पाँच कोश—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोश।

पंचकोस–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *पंचकोश*) पाँच कोस की लंबाई-चौड़ाई के मध्य में स्थित पवित्र भूमि, काशी। स्त्री. **पंचकोसी**।

पंचकोसी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *पंचकोस*) काशी की परिक्रमा।

पंचकोशा–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पंचकोस, काशी जी।

पंचगंगा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा, और धूतपापा नाामक पाँच नदियों का समुदाय, पंचनद।

पंचगव्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गाय के दूध, घी, दही, गोबर, मूत्र पाँचों पदार्थों का समूह। यौ. **पंचगव्यघृत**।

पंचगौड़–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिली, उत्कल नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय।

पंचचामर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ज, र, ज, र, गु, गु युक्त एक छंद (पिं.) चामर या नाराच छंद, गिरिराज।

पंच–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गंधर्व, देव, पितर, राक्षस और असुर या ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, निषाद का वृंद, मनुष्य समुदाय, पाँच प्राणों का समूह।

पंचजन्य–संज्ञा, पु. (सं.) आकाश, तेज, वायु, जल, पृथ्वी का समुदाय, पंचभूत।

पंचतन्मात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शब्द, रूप, स्पर्श, रस, गंध का समूह।

पंचतपा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *पंचतपस*) पंचाग्नि तापने वाला।

पंचता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मृत्यु, विनाश। पंचत्व (सं.)। **मु. पंचत्व को प्राप्त होना**–मर जाना।

पंचतिक्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चिरायता, गुरिक्ष, भटकटैया, सोंठ, कूट नामक औषधियों का समूह।

पंचतोलिया–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *पाँच+तोला*) एक तरह का महीन या बारीक कपड़ा।

पंचत्व–संज्ञा, पु. (सं.) मृत्यु, मरण।

पंचदेव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिव, गणेश, विष्णु, सूर्य, देवी, इन पाँच देवताओं का समूह, **पंचदेवता**।

पंचद्रविड़–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) द्रविड़, अंध, महाराष्ट्र, करणाट और गुर्जर नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय।

पंचनद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) झेलम, चुनाव, व्यास, रावी, सतलज नामक पाँच नदियों का समुदाय, पंजाब देश। पंच गंगा तीर्थ, काशी।

पंचनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जगन्नाथ, बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, श्रीनाथ, रंगनाथ का ममूह।

पंचनामा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *पंच+ नामा फ़ा.*) वह पत्र जिस पर पंचों का निर्णय लिखा हो।

पंचपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँच पति-पांडव, पंचभर्ता।

पंचपल्लव–संज्ञा, पु. (सं) आम, जामुन, कैधा, बेल और नींबू वृक्षों के पत्ते।

पंचपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक वर्तन (पूजा) श्राद्ध।

पंचपीरिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पंच+फ़ा. पीर*) पाँच पीरों की पूजा करने वाला (**मुसल.**)।

पंचप्राण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नामक पाँच पवनों का समुदाय।

पंचभर्त्तारी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) द्रौपदी।

पंचभूत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पंचतत्व, आकाश, तेज, वायु, जल, पृथ्वी नामक पाँच तत्वों का समूह, **पंचमहाभूत**।

पंचम–वि. पु. (सं.) पाँचवाँ, निपुण, सुन्दर। संज्ञा, पु. (सं.) गान विद्या का पाँचवाँ स्वर, कोयल का स्वर, एक राग (संगी.)। स्त्री. **पंचमी**।

पंचमकार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मछली, मुद्रा, मद्य, माँस, मैथुन, इन पाँचों का समुदाय (तन्त्र.)। वि. **पंचमकारी**–वाममार्गी।

पंचमहापातक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्महत्या, चोरी, सुरापान गुरु पत्नी-मैथुन और इनके करने वाले व्यक्ति का संग। वि. **पंचपातकी**।

पंच महायज्ञ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मयज्ञ (संध्या), देव यज्ञ (अग्निहोत्र या हवन), पितृयज्ञ (श्राद्ध), भूत-यज्ञ (बलिवैश्वदेव), नृयज्ञ (अतिथि-पूजन)।

पंचमहाव्रत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, दान न

लेना, अहिंसा, अस्तेय, (चोरी का त्याग) सूनृता, सत्यभाषणी, यही पंचयज्ञ भी कहते जाते हैं। वि. **पंच महाव्रती**।

पंचमी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पंचमी तिथि, द्रौपदी, अपादान कारक (व्या.)

पंचमुख, पंचमुखी–वि. यौ. (सं. *पंचमुखिन्*) पाँचमुख वाला, शिवजी, सिंह, **पंचानन**।

पंचमूल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँच जड़ों के मेल से बनी औषधि।

पँचमेल–वि. यौ. (हि.) जिसमें पाँच या कई प्रकार की चीज़ें मिली हों।

पंचरंग (सं.-पँचरंगा–वि. दे. यौ. (हि. *पाँच+रंग*) पांच या अनेक रंगों का. स्त्री. **पँचरंगी**।

पंचरत्न–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सोना, हीरा, मोती, लाल, नीलम इनका समूह।

पंचराशिक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चार ज्ञात राशियों से पाँचवीं अज्ञात राशि के निकालने की क्रिया या रीति (गणि.)।

पंचलड़ा-पँचलरा–वि. दे. यौ. (हि. *पाँच+लड़*) पाँच लड़ों का, पाँचलड़ों वाला, हार आदि। स्त्री. **पंचलरी, पँचलड़ी**।

पंचलवण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सेंधा, सोंचर, विट, सामुद्र, काँच नामक पाँच प्रकार के नमक। **पचलोन** (दे.)। वि. **पँचलोना**।

पंचवटी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गोदावरी तट के दंडकारण्य में एक स्थान।

पंचवाँसा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पाँच+मास*) गर्भधारण के पाँचवें महीने का एक संस्कार।

पंचवाण–संज्ञा, पु. यौ. (स.) कामदेव के पाँच वाण–मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण, द्रोपण; काम के आम्र, अशोक, कमल, नीलोत्पल, वनमलिका के पुष्प वाण, कामदेव।

पँचवान–संज्ञा, पु. (दे.) राजपूतों की एक जाति।

पंचशब्द–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सितार, ताल, झाँझ, नगाड़ा, तुहरी का मिश्रित शब्द, कोष, महाभाष्य (वैय्या.)।

पंचशर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कामदेव के दाँव आया, कामदेव, **पंचसायक**।

पंचशिख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नरसिंघा बाजा, कपिल के पुत्र।

पंचसुना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थों से गृहकार्य करने में होती हैं–पीसना, कूटना, आग जलाना, झाड़ू लगाना, पानी का घड़ा रखना।

पंचहज़ारी–संज्ञा, पु. दे. यौ. (फा. *पंचहज़ारी*) पाँच हज़ार सैनिकों का नायक (**मुस.**)

पंचाँग†–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पाँच अंग या पाँच अंगों की वस्तु, औषधि के पंचांग–फल, फूल, पत्ती, छाल, जड़ (वैद्य.)। तिथि पत्र जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण हो. (ज्यो.) पत्रा; प्रणाम की एक रीति, माथा, दोनों हाथ और दोनों घुटने पृथ्वी पर रख आँखें देवता की ओर कर मुख से प्रणाम शब्द बोलना।

पंचाक्षर–वि. यौ. (सं.) जिसमें पाँच अक्षर हों। संज्ञा, पु. एक मंत्र (पिं.)। "नमः शिवाय" वह शिव मंत्र।

पँचाग्नि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पंचन, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य, अन्वाहार्य्य पाँच प्रकार की आग, चारों ओर अग्नि और ऊपर सूर्य-तप में तापने का एक तप। वि. पंचाग्नि तापने या पूजने वाला, पंचाग्नि-विद्या-वेत्त, **पंचागिन** (दे.)।

पंचानन–वि. यौ. (सं.) जिसके पाँच मुख हों। संज्ञा, पु. शिवजी, बाघ, सिंह।

पंचामृत–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) दूध, दही, घी, शक्कर और शहद या मधु मिला पदार्थ जो देवताओं के स्नान के हेतु बनाया जाता है।

पंचायत-पंचाइत–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पंचायतन*) पंचों की सभा, बेठक, कमेटी (अं.) बहुत से लोगों की बातचीत।

पंचायतन–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देवताओं की पंच मूर्त्तियों का समुदाय, जैसे–राम-पंचायतन।

पंचायती–वि. दे. (हि. *पंचायत*) पंचायत का, पंचायत-सम्बन्धी, पंचायत का किया हुआ, साझे का, सब लोगों का।

पंचाल–संज्ञा, पु. (सं.) पांचाल, पंजाब देश, पंजाब देश-वासी, पंजाब का राजा, शिव जी, एक छंद (पि.)। स्त्री. **पंचाली**।

पंचालिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पुतली, गुड़िया, रंडी, नाचने वाली, नटी।

पंचाली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पांचाली, पुतली, द्रौपदी, एक गीत, पीपर (औष.)।

पंचीकरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँचों भूतों या तत्वों का

विभाग।

पंछा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पानी+छाला*) जीवधारियों और वृक्षों से जो पानी टपकता है। फफोले का पानी, रंग (प्रान्ती.) **अँगौछा**।

पंछी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्षी*) पक्षी, चिड़िया।

पंजर–संज्ञा, (सं.) पिंजरा, टट्टर, कंकाल, हड्डियों का समूह या ढाँचा, देह, तन, शरीर। यो. **अस्थि-पंजर**।

पंजहज़ारी–संज्ञा, पु. (फा.) 5 हज़ार सैनिकों का सरदार (मुसल.)।

पंजा–संज्ञा, पु. दे. (फा. *मि. सं. पंचक*) हाथ या पैर की पाँचों अंगुलियों का समूह, नाहीं, पाँच पदार्थों का समूह, चंगुल, शिकंजा। **मु. पंजे झाड़ कर पीछे पड़ना या चिमटना**–हाथ धो पीछे पड़ना, जी-जान से तत्पर होना या लगना। **पंजे में (आना पड़ना)**–पकड़ में, मुट्ठी में, आधीन, अधिकर में। जूते का अग्रभाग, पाँच बूटियों वाला ताश का छत्ता। **मु. छक्का-पंजा**–दाँव-पेंच, चालाकी, छल-अपंच।

पंजाब–संज्ञा, पु. यो. (फ़ा.) पाँच नदियों का एक देश।

पंजाबी–वि. (फ़ा.) पंजाब का। संज्ञा, स्त्री. पंजाब की भाषा (बोली)। संज्ञा, पु. पंजाब का रहने वाला। स्त्री **पंजाबिन**।

पँजारा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पंजिकार*) धुनियाँ।

पंजिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पंचांग।

पँजीरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पाँच जीरा*) चीनी-मेवा मिला घी में भुना हुआ आटा।

पंजेरी–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पाँजना*) बर्तन जोड़ने वाला।

पंडल–वि. दे. (सं. *पांडुर*) पीला, पाँडु वर्ण का।

पँड़वा-पड़वा–संज्ञा, पु. (दे.) भैंस का पधा, **पड़ा** (आ.)।

पंडा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पंडित*) किसी मंदिर या तीर्थ का पुजारी, पुजारी। स्त्री. **पंडाइन**। एक जानवर (अ.)।

पंडाल–संज्ञा, पु. (दे.) सभा की बैठक के हेतु बनाया हुआ मंडप।

पंडित–वि. (सं.) विद्वान, ज्ञानी, चतुर। स्त्री **पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी**। संज्ञा, पु. ब्राह्मण।

पंडिताई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पंडित+आई प्रत्य.*) विद्वता, पांडित्य।

पंडिताऊ–वि. दे. (हि. *पंडित*) पंडितों के ढंग का सा, पंडितों का सा।

पंडितानी–ब *पंडित*) **पंडिताइन,** पंडित की स्त्री, विद्वान स्त्री, ब्रह्माणी।

पंडु–वि. (सं.) श्वेत, पांडु रोग, पीला-पीला, मटमैला। **संज्ञा**, पु. (ब्र.) पांडु राजा।

पंडुक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पांडु*) **पंडुकी, पेड़की** (प्राशती.), कबूतर की जाति का एक पक्षी, पिंडुकी, फ़ाखता। स्त्री **पंडुकी**।

पंडुर–संज्ञा, पु. (दे.) पनिहा साँप, डेड़हा, वि. दे. (सं. *पांडुर*) पांडु वर्ण का।

पँतीजना–क्रि. स. दे. (सं. *पिंजन*) रुई, ओटना, पींजना।

पँतीजो–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पिंजक*) रुई, धुनने की धुनकी।

पंथ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पथ*) पथ, रास्ता, मार्ग, राह, बाट, आचार, पद्धति, रीति, चाल। **मु. पंथ गहना**–चलना, राह पकड़ना, आचरण ग्रहण करना। **पंथ दिखाना**–राह बताना, शिक्षा देना। **पंथ देखना, निहारना या जोहना**–अवसर या प्रतीक्षा करना, बाट जोहना (व.)। **पंथ में (पर) पाँव देना**–आचार ग्रहण करना या चलना। **पंथ पर लगना (होना, आना)** राह पर आना, या होना, ठीक *चाल पकड़ना। **किसी के (को) पंथ लगना (लगाना)**–किसी का (को) अनुचर या अनुयायी होना, बनाना, ठीक रास्ते पर लाना। पीछे लगना, बारम्बार तंग करना। **पंथ सेना**– राह देखना, अवसर करना, आसरा देखना। धर्म-मार्ग, मत, धर्म, संप्रदाय। जैसे–**कबीर-पंथ**।

पंथकी*–संज्ञा, पु. (सं. *पथिक*) अटोही, राही, पथिक।

पंथान*–संज्ञा पु. (सं. *पंथ*) मार्ग, रास्ता।

पंथिक*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पथिक*) बटोही, राही, पथिक (सं.)।

पंथी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पथिन्*) बटोही, राही, पथिक, किसी मत का अनुयायी, जैसे–दादू पंथी।

पंद–संज्ञा, स्त्री. (फा.) सिखावन, उपदेश, शिक्षा, सीख।

पंपा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दक्षिण देश की एक नदी, एक ताल, एक नगरी।

पंपाल–वि. (दे.) बड़ा पापी, पापी।

पंपासर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक ताल, (दक्षिण भारत)।

पँवर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) डयोढ़ी, द्वार, सामान, सामग्री।

पँवरना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रवन*) तैरना। पैरना, थाह लेना, पता लगाना।

पँवरि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुर=घर*) डयोढ़ी, द्वार।

पँवरिआ-पँवरिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पँवरी=और*) दरवान, द्वार-पाल, डयोढ़ीदार, द्वार पर गा गा कर माँगने वाला भिखारी।

पँवरी, पाँवरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पँवरि*) डयोड़ी, द्वार, दरवाज़ा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पाँव*) पाँवड़ी, खड़ाऊँ।

पँवाड़ा-पँवारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रवाद*) विस्तार-युक्त कथा, व्यर्थ विस्तार से कही हुई बात, गीत।

पँवार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परमार*) क्षत्रियों की एक जाति।

पँवारना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रवारण*) फेंकना, दूर करना, हटाना।

पँवाँरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रयाल*) **मूँगा**।

पंसारी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परामशाली*) किराना, मेवा और औषधि बेचने वाला बनिया।

पंसासार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाशूक+सारि–गोटी*) पाँसों का खेल, चौपड़।

पँसुरी-पँसुली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पार्श्व*) पसली, पसुली, **पाँसुरी** (व्र॰)।

पंसेरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पाँच+से॰*, पाँच सेर की तौल का बाट, **पसेरी** (आ॰)।

पइता–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक छंद (पिं॰) पाईता।

पइँती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पवित्री*) पैंती, कुश की मुद्रिका। स्त्री॰ (प्रान्ती॰) दाल।

पइसना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पैठना, पैठना)* घुसना, प्रवेश करना, **प्रविशना**।

पईसार, पैसार†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पइसना*) प्रवेश पैठार।

पउनार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पद्नाल*) पदनाल, कमलदंडी, कंज-नाल।

पउनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पौनी*) नेगी, नेग पाने वाले, नाई, बारी, धोवी आदि।

पकड़–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रकृष्ट*) ग्रहण, धरन; रोक। यौ॰ **पकड़-धकड़**। रसोई में बर्तन पकड़ने का एक यंत्र सड़सी।

पकड़-धकड़, पकर-धकर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पकड़ना+धरना*) भागते हुए पुरुषों के पकड़ने का कार्य, गिरफ़्तारी, कैद।

पकड़ना, पकरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रकृष्ट*) थाँभना, धरना, ब्रह्म करना, वशीभूत, क़ैद का गिरफ़्तार करना, ठहराना, रोक रखना, रोकना, ठोकना।

पकड़वाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पकड़ना का प्रे॰ रूप*) पकड़ने का कार्य दूसरे से कराना।

पकड़ाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पकड़ना*) थमाना, **पकराना** (दे॰) किसी पुरुष के हाथ में कोई वस्तु देना, पकड़ने का काम कराना, **गहाना** (व्र॰)।

पकना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पक*) गल जाना, सीझना, मवाद से भर जाना, गोट का अपने घर आ जाना, पक्का होना। **मु॰ बाल पकना**–बाल सफेद होना। **दिल पकना**–तंग आना, ऊब उठना, आग या सूर्य की गरमी से गलना, सिद्ध या तैयार होना, सीझना। **मु॰ कलेजा पकना**–जी जलना या कुढ़ना।

पकरना†*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पकड़ना*) एकड़ना, थामना, रोकना। प्रे॰ रूप– पकराना।

पकवान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पकान्न*) घी में तला हुआ अन्न का पदार्थ, जैसे–पूड़ी।

पकवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पकाना का प्रे॰ रूप*) पकवाने का कार्य दूसरे से करवाना। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **पकवाई**–पकवाने का भाव या मज़दूरी।

पका–वि॰ दे॰ (सं॰ *पक*) पक्का, गला, सफ़ेद (बाल)।

पकाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पकाना*) पकाने की मज़दूरी, क्रिया या भाव।

पकाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰*पकाना*) गरमी देकर किसी फल या धातु को गलाना, आग से किसी वस्तु को सिझाना, सिद्ध करना, राँधना, तैयार करना, पक्का करना, फोंडे को दवा से मवाद-युक्त करना (गलाना), **पकावना** (आ॰)।

पकावन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पकवान*) पकवान।

पकौड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पक्का+बरी–चड़ी)* बेसन या मीठी की थी तली या फुलाई हुई बरी। स्त्री॰ अपा॰ **पकौड़ी**।

पक्का–वि॰ दे॰ (सं॰ *पक*) **पाक** (दे॰) पक्का या गला हुआ, सिद्ध किया हुआ, आग पर पकाया हुआ, पुष्ट, तैयार, दुरुस्त, पुराना, सफ़ेद (बाल, पान) कंकड़ कुटा मार्ग,

दक्ष, अभ्यस्त, अनुभवी, ठीक, सही, दृढ़, टिकाऊ, ईंट, पत्थर, चूने से दृढ़, पूरा। स्त्री. पक्की। **मु. पक्का भोजन (खाना) पक्की रसोई**-घी में बना भोजन, पदार्थ। **पक्का पानी**-औटाया हुआ स्वास्थ्यकर पानी। निश्चित, तय, प्रामाणिक, चोखा। **मु. पक्का कागज़**-इस्टांप पेपर (अं.)। **पक्की बात**-ठीक और पुष्ट (सत्य शुद्ध या प्रामाणिक) बात। यो **पक्का खाता (पक्की बही)** सही हिसाब-किताब, पक्की-रोकड़ (विलो.-कच्चा, स्त्री. कच्ची)।

पक्क-वि. (सं.) पक्का, पका हुआ, गलित, दृढ़, मज़बूत।

पक्कता-संज्ञा, स्त्री. (सं.) पक्कापन।

पक्कान्न-संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पका हुआ अनाज, घी आदि से पकाया या भूना अन्न।

पक्काशय-संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पेट की वह थली जहाँ भोजन पकता है, मेदा।

पक्ष-संज्ञा, पु. (सं.) पार्श्व, ओर, तरफ़, एक पहले या ढाल, दो भिन्न-भिन्न बातों में से एक, किसी की बात के विरुद्ध अपनी बात को ठीक बताना, पंख, बाजू। (विलो. विपक्ष), **मु. पक्ष गिरना**-ग्रहीत बात का प्रमाणों से सिद्ध न होना, दो में से एक के अनुकूल। **मु. किसी का पक्ष करना**-पक्षपात या तरफ़दारी करना। **किसी का पक्ष लेना**-झगड़े में किसी की ओर हो जाना, सहायक बनना, पक्षपात या तरफ़दारी करना, लगाव, सम्बन्ध, कारण, निर्मित, साक्ष्य की प्रतीक्षा, सेना सहायक, साथी, विवाद या झगड़ा करने वालों के भिन्न समूह, पंख, पाख, पखवारा। (मास के दो विभाग) घर। यौ **पक्षान्तर**-दूसरा पक्ष, कृष्ण पक्ष (वदी), शुक्ल पक्ष (सुदी)।

पक्षपात-संज्ञा, पु. यौ. (सं. तरफ़दारी।

पक्षपाती- संज्ञा, पु. यौ. (सं.) तरफ़दार।

पक्षाघात-संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बात रोग जिसमें शरीर के किसी ओर का आधा भाग क्रिया-रहित हो जाता है, फ़ालिज़, लकवा।

पक्षिणी-संज्ञा, स्त्री. (सं.) चिड़िया, पूर्णमासी।

पक्षिराज-संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गरुड़, एक भाँति का धन।

पक्षिशावक-संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पक्षी का बच्चा।

पक्षी-संज्ञा, पु. (सं. *पक्षिण*) तरफ़दार, चिड़िया, पक्ष वाला, **पक्षवान**।

पक्षीय-वि. (सं.) पक्षवाला, समूह या दल का हिमायती, तरफ़दार।

पक्ष्म-संज्ञा, पु. (सं.) आँख की बरौनी।

पखंड-संज्ञा, पु. (सं. *पाखंड*) ढोंग, छल, कपट, वेदनिन्दा, पाखंड (सं.)।

पखंडी-संज्ञा, पु. दे. (हि. *पाखंडी*) पाखंडी, ढोंगी, वेद-निन्दक, छली, कपटी।

पख-संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. पक्ष) व्यर्थ बढ़ाई हुई बात, बाधक नियम, अडंगा, झगड़ा-बखेड़ा, शर्त, बाधा, तुर्रा, दोष त्रुटि, ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त। **मु. पख लगाना**।

पखड़ी-संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पक्ष्म*) पंखड़ी, **पंखड़ी, पखुड़ी** (आ.), पाँखुरी, पखरी, फूल के पत्ते, पुष्प-दल।

पखराना-क्रि. स. दे. (हि. *पखारना का प्रे. रूप*) धुलवाना, छँटवाना, साफ़ करना। **मे. रूप-पखरवाना**।

पखरी।-संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पाखर*) पाखर, पाखरी। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पक्ष्म*) पंखड़ी, फूल की पत्ती, पुष्प-दल।

पखरैत-संज्ञा, पु. दे. (हि. *पाखर+ऐत प्रत्य.*) लोहे की पाखर वाला, घोड़ा या हाथी आदि।

पखवाड़ा पखवारा-संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्ष+वार*) पन्द्रह दिनों का समय।

पखाना-संज्ञा, पु. दे. (सं. *उपाख्यान*) कहावत, उपाख्यान, मसल, कहनूत, कहतूत, कथा। ‡ संज्ञा. पु. द. (फ़ा. *पाखाना*) पाखाना, टट्टी।

पखारना-क्रि. स. दे. (सं. *प्रक्षालन*) धोना, शुद्ध या साफ़ करना।

पखाल-संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पय--पानी*+हि. *साल*) बैल के चमड़े की मशक, धौंकनी, भुस धोने का बर्तन।

पखावज-संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पक्ष+वज*) मृदंग।

पखावजी-संज्ञा, पु. दे. (हि. *पखवज+ई*) मृदंग या पखावज का बजाने वाला।

पखिया-वि. दे. (सं. *पक्ष*) झगड़ालू,धखेडिया।

पखी-पखीरी*-संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्षी*) पक्षी, पखेरू, **पंछी** (आ.) पच्छी (दे.) चिड़िया।

पखुड़-पखुरी-संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पक्ष्म*) पंखड़ी, **पाँखुरि, पाँखुरी** (आ.), फूल के पत्ते, पुष्प-दल।

पखुवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्ष*) पार्श्व, बगल, **पखौवा, पखौरा** (आ.)।

पखेरू–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्षालु*) पक्षी, चिड़िया, पंछी।

पखौआ-पखौवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्ष*) पंख, पखना, डैना, पक्ष।

पखौटा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्ष*) पंख, पखना, पर, पक्ष।

पखौरा–संज्ञा, पु (दे.) हाथ का धड़ से जोड़, बगल; बखौरा

पग–संज्ञा, पु. (सं. *पदक*) पाँव, पैर, डग, फाल, **पैग** (व.)।

पगडंडी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि *पग+डंडी*) लोगों के पैदल चलने से बनी मैदान या वन में छोटी राह।

पगड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पटक*) **पगिया,** पाग (व.), चीरा, साफा, उष्णीश, **पगरी** (दे.)। पु. **पगड़ा। मु. किसी से पगड़ी अटकना**–समानता या बराबरी होना, मुकाबला होना। **पगड़ी उछालना**–दुर्दशा या बे इज्जती करना, उपहास करना। **पगड़ी उतारना**–मान या प्रतिष्ठा का भंग करना, ठगना लूटना। **किसी को पगड़ी बाँधना**–विरासत मिलना, उत्तराधिकार प्राप्त होना, उच्च पद, प्रतिष्ठा या सम्मान मिलना। **किसी के साथ पगड़ी बदलना**–मैत्री या बंधुता जोड़ना। **पैरों पर पगड़ी रखना**–आधीन हो विनय करना, सम्मान देना।

पगतरी†–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *पग+दासी*) जूता, पगही, खड़ाऊँ।

पगदासी–संज्ञा, स्त्री. दे यौ. (हि. पग+दासी) जूता, पनही, खड़ाऊं, **चरनदासी**।

पगना–क्रि. स. दे. (सं. *पाक*) किसी वस्तु का किसी वस्तु से पूर्ण मेल होना, मिलन, लीन होना, किसी वस्तु में निहित होना, प्रभावित होना।

पगनिया†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पग*) जूता।

पगरा*†–संज्ञा, पु. (दे.) (हि. *पग+रा प्रत्य.*) कदम, पग डग, बड़ी पगड़ी, **पगड़ा**। संज्ञा, पु. दे. (फा *पगाह*) चलने का समय, प्रभात, तड़का, सबेरा।

पगला–वि. पु. (दे.) पागल, विक्षिप्त, बेगाना, सिढ़ी। स्त्री. **पगली**।

पगलाना–क्रि. स. (दे.) पागल होना, पागल करना।

पगहा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ग्रह*) गिरवों, पघा। स्त्री. **पगही। लो.–आगे नाथ न पीछे पगहा**–अनाथ, असहाय।

पगा†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पाग*) पाग, पगिया। वि. (हि. *पगना*) लीन, पगा हुआ, अनुरक्त।

पगाना–क्रि. स. (सं. *पाक*) अनुरक्त या मान करना, मिलाना, ऊपर से चीनी आदि चढ़ाना। प्रे. रूप (पे.) **पगवाना**। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **पगाई. पगवाई**–पगाने, पगवाने की क्रिया या मज़दूरी।

पगार*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रकार*) घेरा, चहार-दीवारी। संज्ञा, पु. दे. (हि. *पग+गारना*) पाँवों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा, पाँवों से पार करने योग्य नदी या पानी, पायाब। वि. (आ.) ढेर, समूह सं. तनख्वाह, वेतन।

पगाह–संज्ञा, स्त्री. (फा.) चलने का वक्त, भोर, सबेरा, तड़का।

पगिआना-पगियाना*†–क्रि. स. दे. (हि. *पगाना*) **पागना,** पगाना, अनुरक्त या मग्न करना।

पगिया*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पगड़ी*) पाग, पगड़ी।

पगुराना†–क्रि. स. दे. (हि. *पागुर*) जुगाली करना, पचाना, दुबारा चबाना, (ग्रा. व्यंग्य) धीरे धीरे बात करना।

पघा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रगट*) पगहा, पगही, बैल आदि के बाँधने की मोटी रस्सी।

पचकना–क्रि. स. दे. (हि. *पिचकना*) किसी उभरे या उठे हुए तल का दब जाना, **पिचकना**। स. प्रे. **रूप**–पचकना, पचकवाना।

पचकल्यान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पंचकल्याण*) वह घोड़ा जिसके चारों पाँव और माथा सफेद हों, शेष शरीर का और रंग हो।

पचखा‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पंचक*) पुंचक।

पंचगुना–वि. दे. यौ. (सं. *पंचगुण*) पाँच गुना।

पचड़ा-पचरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाँच–प्रपंच+ड़ा–प्रत्य.*) झंझट, प्रपंच, बखेड़ा, एक गीत।

पचतोरिया-पचतोलिया–संज्ञा, पु. (दे.) एक तरह का महीन बारीक कपड़ा।

पचन–संज्ञा, पु. (सं.) पाक, पकाने या पचाने की क्रिया का भाव, अग्नि, आग।

पचना–क्रि. स. दे. (सं. *पचन*) हज़म होना, पर धन अपने हाथ ऐसा आवे कि वापिस न हो सके, शरीर गलाने वाला परिश्रम, बहुत तंग या हैरान होना। **मु. बाई**

पचना (**व्यंग्य**)–गर्व दूर होना। **मु॰ पचमरना**–बहुत अधिक परिश्रम करना, हैरान या तंग होना, खपना। क्रि॰ स॰ (दे॰) **पचाना**। प्रे॰ रूप–**पचवाना**।

पचपन–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पंचपंचाशत (सं॰) पचास और पाँच की संख्या, 55।

पचमेल–वि॰ दे॰ (हि॰ *पंचमेल*) पंचमेल, पाँच पदार्थों के मेल से बना पदार्थ।

पचरंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पाँच+रंग*) पंचमेल, पाँच पदार्थों के मेल से बना पदार्थ। पाँच रंग, चौक पूरने का सामान, अबीर, बुक्का, हलदी, मेंहदी की पत्ती, सुरवारी के बीज।

पचरंगा–वि॰ दे॰ (हि॰ *पाँ रंग*) पाँच रंगों से रंगा कपड़ा या कोई और पदार्थ। संज्ञा, पु॰ नव ग्रहों की पूजा का चौक। स्त्री॰ **पचरंगी**।

पचलड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पाँच+लड़ी*) वह हार जिसमें पाँच लड़ी हों। पु॰ **पचलड़ा**।

पचलोना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पाँच+लीन लवण*) वह चूर्ण जिसमें पाँच प्रकार के नमक पड़े हों।

पचहरा–वि॰ दे॰ (हि॰ *पाँछ+ हरा प्रत्य*) पचोहरा (आ॰), पाँच तहों या परतों वाला (ख्यादि), पाँच बार किया हुआ, **पचौहर** (आ॰) **पचौवर**।

पंचहत्तर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सत्तर और पाँच की संख्या।

पचाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पचना*) पकाना, जीर्ण करना, गलाना, हजम करना, नष्ट करना, परधन अपनाना, लीन करना, खपाना।

पचानवे–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पंचानवे, नव्वे और पाँच की संख्या, पचानवे, पचानवे, 95।

पचारना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ प्रचारण) डाँटना, ललकारना, प्रचारना। "लागेसि अधन पचारन मोहीं"–रामा॰।

पचारा–वि॰ दे॰ (सं॰ *पंचाशत् प्रा॰ पंजाखा*) चालीस और दस। संज्ञा, पु॰ एक संख्या, 50।

पचासा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पचास*) एक ही तरह की पचास चीजों का समुदाय।

पचासी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पंचासीति, अस्सी और पाँच, 85 की संख्या।

पचित–वि॰ (सं॰) पचा हुआ, पक्षी किया या जड़ा हुआ।

पचीस–वि॰ दे॰ (सं॰ *पंचविंशत्*) **पच्चीसा** संज्ञा, पु॰ (दे॰) **पच्चीस सौ**–एक सौ पचीस 125।

पचीसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पचीस*) एक ही प्रकार की 25 चीज़ों का समूह, किसी की उम्र के प्रथम के 25 वर्ष, चौपड़ जैसा एक खेल।

पचोतरा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) पाँच रुपये सैकड़ा।

पचौनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पचना*) पाकाशय, आमाशय, अब पचने की जगह, मेदा, ओझ, जोझ।

पचौरी-पचौली†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पंच*) गाँव का सरदार, मुखिया, पंच।

पचौगर–वि॰ दे॰ (हि॰ पाँच+सं॰ *आवत्त*) पाँच परत या तह किया हुआ, पँचपरता, पचहरा, पचौहर (प्रा॰)।

पच्चड़-पच्चर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पचित या पची*) काढ या लकड़ी के जोड़ को कसने के हेतु लगाया गया लकड़ी या काट का पेबंद, ठेक, पचड़ा।

पच्चाँनवे–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पंचानवे, नब्बे और पाँच, 25।

पच्ची–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पचित*) खुदाई, जड़ाई, जड़ाव, एक वस्तु खोद का उसमें दूसरी यों जड़ना कि दोनों का रूप समान रहे। **मु॰ किसी का पच्ची हो जाना**–लीन हो जाना, पूर्ण रूप से मिल जाना। **दिमाग (मगज) पच्ची करना**–व्यर्थ की बात पर बहुत विचार करते रहना।

पच्चीकारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पची+फ़ा॰ कारी*) पच्ची करने की क्रिया का भाव या कार्य, जड़ाई, खुदाई।

पच्चीस–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बीस और पाँच की संख्या, 25, **पचीस** (दे॰)।

पच्छ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पक्ष*) पक्ष, ओर, तरफ़, पार्श्व, दो या अधिक में से एक, पंख, छाया, प्रभाव। यौ॰ **पच्छपात**, वि॰ **पच्छपाती**।

पच्छम-पच्छिम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पश्चिम*) पश्चिम दिशा।

पच्छघात–पच्छाघात–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पक्षाघात*) एक अर्द्धांग-नाशक, वात रोग, फालिज़, लकवा।

पच्छिनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पक्षिणी*) चिड़िया, पक्षी की स्त्री।

पच्छी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पक्षी*) पंछी (आ॰) पक्षी, चिड़िया, पखेरू, पंखी।

पछड़ना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पीछा*) गिर पड़ना, पछाड़ा जाना, पीछे रह जाना या हटना, पिछड़ना।

पछताना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पछताव*) अनुचित कार्य करने पर दुखी होना, पश्चात्ताप करना।

पछतानि*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पछतावा*) पश्चाताप, दुख।

पछतावना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पछताना*) पश्चाताप या शोक करना, दुखी होना।

पछतावा-पछताया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पश्चाताप*) दुख, शोक, पश्चाताप।

पछना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पाछना*) पछ (कट) जाना। संज्ञा, पु॰ वस्तु पाछने का यंत्र, छुरा, चाकू।

पछनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पछना*) कतरनी, छुरी, छोटा चाकू।

पछमन–संज्ञा, वि॰ दे॰ (सं॰ *पश्चात्*) पीछे, (विलो॰ आगे जाना)।

पछरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पछाड़*) पछाव। क्रि॰ वि॰, वि॰ (दे॰) पिछड़ा हुआ, पीछे।

पछलगा-पछलागा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *अनुग*) अनुयायी, अनुगामी, अनुचर, दास।

पछलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पिचलना*) पिछलना, पीछे रहना, पिछड़ना।

पछवाँ–वि॰ दे॰ (सं॰ *पश्चिम*) पश्चिम दिशा का, पश्चिम ओर का। संज्ञा, पु॰ (दे॰) पश्चिमीय वायु।

पछाँह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पश्चिम*) पश्चिम दिशा का देश। वि॰ **पछैंहा**–पश्चिम देश का वासी, **पछाँही**।

पछाँहिया-पछाँही–वि॰ दे॰ (हि॰ *पछाँह+इया प्रत्य॰*) पश्चिम दिशा का, पश्चिमी देश का वासी, **पछहिंया** (दे॰)।

पछाड़–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पीछा*) मूर्छित या अचेत होकर गिरना, **पछार** (आ॰)। **मु॰ पछाड़ खाना**– खड़े होने पर अचेत होकर गिर पड़ना। **पछाड़ खाकर रोना**–रोते रोते गिरना, अचेत होना।

पछाड़ना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पछाड़*) गिरा या पटक देना, गिराना, पटकना। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रक्षालन*) कपड़े साफ करने को उसे जोर से पटकना, **पछारना**।

पछानना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पहचानना*) पहचानना, चीन्हना, **पिछानना** (अ॰)।

पछाना–क्रि॰ स॰ (अ॰) **पछियाना, पिछियाना,** पीछे-पीछे जाना।

पछारना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पछाड़ना*) पछाड़ना, गिराना, पकड़ना, कपड़े को साफ करने के लिए जोर से पटकना, **फींचना** (आ॰) छाँटना।

पछावरि*–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) दूध, दही, और चीनी मिला पदार्थ, मुट्ठे, गुड़ की मूरना।

पछाहीं–वि॰ दे॰ (हि॰ *पछाँह*) पश्चिम का, पछाँह का, **पछैहाँ** (आ॰)।

पछिआना-पछियाना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पीछे+आना*) पीछे चलना, पीछा करना।

पछिताना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पश्चाताप*) पश्चाताप करना, अफसोस करना।

पछितानि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पछिताना*) पश्चाताप, अफसोस।

पछिताव-पछितावा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पछतावा*) पछतावा, पश्चाताप, अफसोस करना।

पछियाव–वि॰ दे॰ (हि॰ *पच्छिम*) पाश्चमीय वायु, पछवा हवा।

पछुवाँ–वि॰ दे॰ (हि॰ *पच्छिम*) पश्चिम की वायु, पच्छिम की पवन।

पछेली-पछेलिया†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पीछे+एली, एलिया प्रत्य॰*) स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक गहना।

पछेवड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पिछौरा*) पिछौरा, चादर।

पछोड़ना-पछोरना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रक्षालन*) सूप से साफ करना, फटकना।

पछौंत, पछौंता*–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *पीछे+औंत*) **पिछौंता,** पीछे की ओर।

पछौंहें*–क्रि॰ वि॰ (म॰) पीछे की ओर।

पछ्यावरि†–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) दूध दही और शक्कर से बनी सिकरन, मुट्ठा और गुड़ से बना पदार्थ।

पजरना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रज्वलन*) जलना।

पजारना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पजरन*) जलाना।

पजावा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *पजावः*) ईंटें पकाने का भट्टा।

पजाखा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मातमपुरसी (फ़ा॰)।

पज्झटिका–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पद्धटिका*) 16 मात्राओं का एक छंद, पद्धटिका (पिं॰)।

पटंवर*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पाटम्बर*) कौषेय या रेशमी

वस्त्र।

पट–संज्ञा, पु. (सं.) कपड़ा, वस्त्र, पर्दा, चिक, चित्रपट, कपास, छप्पर, पलक। संज्ञा, पु. (सं. *पट्ट*) किवाड़, कँवार (आ.)। किसी वस्तु के गिरने का शब्द। **मु. पट उघरना या खुलना**–दर्शन-हेतु मंदिर का द्वार खुलना। सिंहासन, पल्ला, चौरस भूमि, औंधा (विलो. चित्त। **मु. पट पड़ना**–धीमा पड़ना, न चलना। क्रि. वि. (*चट का अनु.*) तुरंत। यौ. **झटपट, चटपट, लटपट, खरपट।**

पटइन-रटइनि–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पटवा*) पटवा की या पटवा जाति की स्त्री।

पटकन, पटकनि*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पटकना*) पछाड़, चपत, तमाचा, खूबी, पटक।

पटकना–क्रि. स. दे. (सं. *पतन+करण*) झोंका देकर नीचे गिराना, उठाकर ज़ोर से नीचे गिराना, दे मारना। क्रि. स. (प्रे. *रूप*) **पटाकाना, पटकवाना। मु. किसी (के सिर) पर पटकना**–बिना मन काम कराना, कोई वस्तु बे-मन सौंपना। क्रि. अ. (दे.) सूजर बैठना या पचकना, आवाज के साथ फटना। यौ. **पटकी-पटका**–कुश्ती।

पटकनिया-पटकनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पटकना*) पटकने का भाव, ज़मीन पर गिर कर पछाड़ खाने या लोटने की दशा या भाव।

पटका–संज्ञा, पु. (दे.) (सं. *पट्टक*) कमरपेच, कमर-बंद, **पटुका** (व.) एक वस्त्र; छोटी पगड़ी।

पटकाना–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पटकनी*) पटकने का भाव, पृथ्वी पर पछाड़ खाकर लोटने की दशा, पचकाना।

पटतर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पट्ट+तल*) उपमा, समता, तुल्यता, समानता, मिसाल (फ़ा.)। वि. चोरस, बराबर, समतल।

पटतरना–क्रि. अ. दे. (हि. *पटतर*) उपमा देना, समान करना।

पटतारना–क्रि. स. दे. (हि. *पटा+तारना*) मारने को अस्त्र सुधार कर लेना या निकालना, सँभालना। क्रि. स. (हि. *पटतर*) सम या बराबर करना, पढ़तालना।

पटधारी–वि. मु. (सं.) बस्त्रधारी, कपड़े पहने हुए।

पटना–क्रि. स. दे. (हि. *पट=भूमि के बराबर*) किसी गढ़े का भरना, समतल होना, भर जाना, परिपूर्ण होना, छत बनाना, सींचा जाना, मन मिलना, निभना, तै हो जाना, *ऋण चुक जाना। संज्ञा, पु. एक शहर, पाटलीपुत्र* (प्राचीन)।

पटनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पटना*) वह भूमि जो सार्वकालिक (इस्तमरारी) प्रबन्ध, (बन्दोबस्त) पर मिली हो।

पटपट–संज्ञा, स्त्री. (अनु. *पट*) हलके पदार्थ के गिरने के शब्द का अनुकरण। क्रि वि. लगातार पट-पट शब्द करता हुआ।

पटपटाना–क्रि. अ. दे. (हि.*पटकना*) भूख आदि से दुख पाना, किसी वस्तु से पट-पट शब्द निकलना, पानी बरसना, शब्द, जलना, भुनना। क्रि. वि. (दे.) पट से पट शब्द उत्पन्न करना, शोक या खेद करना।

पटपर–वि. दे. (हि. *पट+अनु. पर*) चौरस, हमवार, बराबर, समतल।

पटबंधक–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पटना+सं. बंधक*) दखली रेंहन, दखली गिरवी, जिस में लाभ या व्याज निकालने के पीछे मूल धन में शेष रुपया मिनहा दिया जाता है।

पटवास–संज्ञा, पु. (सं.) कपड़े के सुगंधित करने की गंध द्रव्य या वस्तु।

पटवीजना†–संज्ञा, पु. (सं.) (हि. *जुगनू*) जुगनू।

पटमंजरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक रागिनी (संगी.)।

पटमंडप (मंडप)–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) खेमा, डेरा, तंबू, **पट-भवन।**

पटरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पटल*) तख्ता-पतला। स्त्री. *अल्पा.* पटरी। **मु. पटरा होना**– नष्ट या उजाड़ होना। **पटरा कर देना**–मार काट कर बिछा या फैला देना, चौपट कर देना। धोबी का पाट, पाटा।

पटरानी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पट्टरानी*) पाट-महिषी, खास रानी।

पटरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पटरा*) लंबा पतला काठ का तख्ता, 3 फुट के भाव की इंच के निशानों वाली लकड़ी। **मु.– पटरी जमाना या बैठाना**–दिल या मन मिलना, मेल होना या आपस में पटना। लिखने की तीव्रता, बढ़िया, सचल के दोनों किनारे जहाँ से पैदल चलने वाले चलते हैं। बागों की रविश, एक तरह की चूड़ी।

पटल–संज्ञा, पु. (सं.) आवरण, छप्पर, छानी, छत, पर्दा,

तह, परत, पहल, पार्श्व, आँख के पर्दे, पटरा, तख़्ता, पुस्तक के अंश या अध्याय, परिच्छेद, टीका, तिलक, अंवार, ढेर, समूह।

पटलता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पटल का धर्म या भाव, अधिकता।

पटवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाट+वाह*) पटहार, पाट, पटसन, **पटुवा** (आ॰) स्त्री॰ **पटइन, पटवी**।

पटवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पटना का प्रे॰ रूप*) पटना या पाटने का कार्य दूसरे से कराना।

पटवारगरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पटवारी+ गरी फ़ा॰*) पटवारी का पद या कार्य। संज्ञा, स्त्री॰ **पटवारगीरी**।

पटवारी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पट्ट+बार हि॰*) एक सरकारी कर्मचारी जो किसानों और ज़मींदारों का हिसाब रखता है। संज्ञा, स्त्री, (सं॰ *पट+वारी प्रत्य॰*) दासी जो अमीरों को कपड़े पहनाती है। वि॰ स्त्री॰ वस्त्र वाली।

पटवास–संज्ञा, स्त्री, (सं॰) कपड़ों को सुगन्धित करने का नया द्रव्य, तंबु, डेरा, शिविर, लहँगा, घाँघरा।

पटसन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पाट+हि॰ *तन*) एक प्रकार का तन, जूट, पटुआ, पाट (आ॰)।

पटह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नगाड़ा, दुंदभी।

पटहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पटवा*) पटवा। स्त्री **पटहारिन**।

पटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पट*) किर्च जैसा एक लोहे का अस्त्र जिससे तलवार के हाथ सीखे जाते हैं। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पट्ट*) पाडा, पौड़ा, पटरा, पट्टा। यौ॰ **पट्टाबाज़ी**। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **पटावाज़**–पटा चलाने वाला। **मु॰ पटा-फेर**–ब्याह में वर-कन्या के आसन बदलने की रीति, **उलट पीटा** (आ॰) **पटा बाँधन**–पटरानी बनाना।

पटा चलाना–लकड़ी की तलवार के कौशल दिखाना। संज्ञा, पु॰ * (सं॰ *पट्ट*) अधिकार-पत्र, सनद, सर्टीफिकेट (अं॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पटना*) सौदा-क्रय-विक्रय, लेनदेन, चौड़ी लकीर, धारी, खेतों का पट्टा।

पटाई†–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ (हि॰ *पटाना*) पाटने या पटाने की क्रिया, मज़दूरी।

पटाक–संज्ञा, पु॰ दे॰, (अनु॰) किसी छोटे पदार्थ के ऊँचे से गिरने का शब्द।

पटाका–संज्ञा, पु॰ दे॰, (हि॰ *पटु का अनु॰*) पट या पटाक शब्द, एक आतिशबाजी जो पटाक शब्द करती है, तमाचा, चपत, थप्पड़, **पटाखा** (उ॰)।

पटाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पट=समतल*) पाटने का कार्य कराना, पाट कर छत को सम कराना, श्रम चुकाना, मोल तै करना, शांत या चुप होना, लेन-देन का चुकता होना, दूर या अच्छा होना (रोगादि)।

पटापट–क्रि॰ वि॰ दे॰ (*अनु॰ पट*) बारम्बार, लगातार पट-पट शब्द के साथ।

पटापटी–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ (अनु॰) अनेक रंगों के बेल-बूटेदार वस्तु, लेन-देन का चुकता हो जाना।

पटार–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पिटारा, पेटारा, पेटी, पिटारी।

पटाव–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ दे॰ (हि॰ *पाटना*) पाटने की क्रिया का भाव या कार्य, छत की पटान, द्वार के ऊपर का तख़्ता।

पटिआ-पटिया†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पट्टिका*) पत्थर का टुकड़ा जो पतला और आयताकार हो, पलंग की पट्टी, पाटी, सिर के सँवारे हुए बाल, लिखने की तख़्ती या पट्टी, पाटा, पीड़ा। **मु॰ पटिया पारना**–बाल सँवारना।

पटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पट*) कपड़े का कम चौड़ा-लंबा टुकड़ा, पटुका, कमरबंद, परदा।

पटीर–क्रि॰ पु॰ (सं॰) एक चंदन। पपीहा, कत्था, वटवृक्ष, कामदेव।

पटोलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पटाना*) किसी को उलटी-सीधी बातों सके समझाना, परास्त करना, बना या उड़ा लेना, कमाना, उगना, पूरा या समाप्त करना, बलात् हटाना। **मु॰ किसी के मत्थे (सिर) पटोलेना**–किसी के ऊपर छोड़ना।

पटु–वि॰ (सं॰) दक्ष, कुशल, प्रवीण, चतुर, निपुण, चालाक, कठोर हदय, स्वस्थ, तीखा, तीक्ष्ण, प्रचंड, उग्र। संज्ञा, पु॰ (दे॰) परचल, **नमक-करेला** (प्रान्ती॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **पटुता, पटुत्व**।

पटुआ-पटुवा–संज्ञा, पु॰ द॰ (सं॰ *पाट*) पटसन (प्रान्ती॰) जूट,लटियासन, करेमू।

पटुका-पटुका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पट्टिका*) कमर-बंद, कमर-पेंच।

पटुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निपुणता, चतुराई, प्रवीणता, दक्षता। संज्ञा, स्त्री॰ **पटुत्व**।

पटुत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निपुणता, चतुराई।

पटुली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पट्ट*) चौकी, पीढ़ी, झूले का पटला, तख़्ती।

पटूस–संज्ञा, पु. (दे.) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पटुता, चतुरता।

पटेबाज–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पटा+बाज फ़ा.*) पटा खेलने वाला, पटे से लवने वाला, धूर्त्त, व्यभिचारी, पटैत। संज्ञा, स्त्री. **पटेबाज़ी**।

पटेर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पटेरक*) गोंद पटेर।

पटेल-पटैल–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पट्टा +ऐल प्रत्य.*) नम्बदार, ज़मींदार, पट्टा देना वाला, गाँव का मुखिया, चौधरी, एक उपाधि (महारा.)।

पटेला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पाटना*) मध्य भाग्य में पटी नाव, हेंगा, सिलपटिया, **पटैला** (आ.) तख़्ता। स्त्री अल्पा. **एटेली**।

पटैत–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पटेवाज़*) पटेबाज।

पटैला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पटरा*) किवाड़ बंद करने की चौकोर लंबी लकड़ी, डयोंड़ा, तख़्ता।

पटोर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पटोल*) परवर, पटोल, रेशमी कपड़ा, पटोल।

पटोरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पान+ ओरी प्रत्य.*) रेशमी धोती या साड़ी।

पटोल–संज्ञा, पु. (सं.) परवल, रेशमी कपड़ा। "बासापटोल त्रिफला"–वै. जी.।

पटोलिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सफेद फूल की तुरई।

पटोहिया–संज्ञा, पु. (दे.) उल्लू पक्षी।

पटौनी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) पटी नाव।

पट्ट–संज्ञा, पु. (सं.) पाटा, पीढ़ा, पट्टी, तख़्ती, ताम्रपत्र, शिला, पटिया, पट्टा, ढाल, पगड़ी, दुपट्टा, नगर, चौराहा, राज-सिंहासन, रेशम, पटसन। वि. (सं.) प्रधान, मुख्य। वि. (अनु.)। पट। **मु. पट्ट होना (आँखें)**–नेत्र-ज्योति जाना, आँख फूटना।

पट्ट पड़ना–चौपट होना।

पट्ट देवी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पटरानी।

पट्टम–संज्ञा, पु. (वि.) शहर, नगर।

पट्टमहिषी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पटरानी।

पट्टा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पट्ट*) भूमिका, अधिकार-पत्र जो ज़मींदार किसान या असामी को देता है। **सह. कबूलियत**। *कुत्तों के गले की पट्टी, पीढ़ा, चपरास,* कमर-बंद, एक तलवार।

पट्टिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छोटी तख़्ती, कपड़े की छोटी पट्टी, पत्थर की पटिया।

पट्टी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पट्टिका*) तख़्ती, पाटी, सबक, पाठ शिक्षा, उपदेश बहकावा, भुलावा, पलंग की पाटी, सन का कपड़ा, कपड़े की किनारी या कोर, एक मिठाई, टाँगों में लपटने का कपड़ा, कतार, पाँति, पंक्ति, सिर के वालों की पटिया, भाग, पिस्सा, पत्ती, नेग। **मु. पट्टी पढ़ना**–भुलावा देना, बहकाना। यौ. **दम-पट्टी, झाँसा पट्टी**।

पट्टीदार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पट्टी+फा. दार*) अधिकारी, हिस्सेदार, दायभागी।

पट्टीदारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पट्टीदार*) बहुत से भाग या हिस्से होना, पट्टीदार होने का भाव। **मु. पट्टीदारी करना**–बराबरी करना। साझे का धन, भाई-चारा।

पट्टू–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पट्टी या सं. पट्*) पट्टी की शकल का एक ऊनी कपड़ा, तोता, सुग्गा, सुआ, पटुआ (आ.)।

मु. पढ़े पढ़ावे पट्टू–दक्षता अनुभवी और चालाक। **पट्टू का पढ़ाना**–खूब सिखाना।

पट्ठा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुष्ट, प्रा. पुट्ठ*) तरुण, जवान, पाठा (आ.), पहलवान, कुश्तीबाज, लड़ाका, मोटी बसें, पुट्ठा। स्त्री. पट्ठी, **पठिया**। मोटा पत्ता, जेसे धिक्कार का पट्ठा। **मु. पट्ठा चढ़ना**– एक नस कर तन कर दूसरी पर चढ़ जाना, चौड़ा गोटा, कमर और जाँघ का जोड़।

पट्ठी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पट्ठा*) पठिया (आ.) तरुण, युवती, धृष्टा।

पठन–संज्ञा, पु. (सं.) पड़ना। यौ. **पठन-पाठन**–पढ़ना-पढ़ाना।

पठनीय–वि. (सं.) पढ़ने के योग्य। वि. पठित।

पठनेटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पठान+पटा–पेटा प्रत्य.*) पठान या लड़का।

पठवना–क्रि. अ. दे. (सं. *प्रस्थान*) भेजना, **पठावना** (दे.)।

पठवाना–क्रि. स. दे. (हि. *पठाना का प्रे. रूप*) भेजवाना, पठाना। वि. **पठवैया, पठैया**।

पठान–संज्ञा, पु. दे. (*पश्तो. पुख़्ताना*) मुसलमानों की एक

जाति, अफ़गान, काबुली।

पठाना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रस्थान*) भेजना, **पठावना**।

पठानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पठान*) **पठानिन** (दे॰) पटान की स्त्री, पठान की भाषा, शूरता, क्रूरता, पठानों के गुण, पठानपन। वि॰ पठानों का।

पठानीलोध–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पट्टिका लोध्र*) एक जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी और फूल औषधि के काम आते हैं।

पठार–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पर्वतीय मैदान, घास वाली पहाड़ी भूमि (भू॰)।

पठावन†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पठाग*) छूत, पठौना।

पठावनि, पठावनी, पठौनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पठाना*) किसी को कुछ पहुँचाने को भेजना, भेजी वस्तु या मज़दूरी, कन्या के घर से वर के यहाँ भेजी वस्तु (रीति)।

पठित–वि॰ (सं॰) पड़ा हुआ ग्रंथ, पढ़ा-लिखा पुरुष, शिक्षित।

पठिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पाठ+इया प्रत्य॰*) जवान, युवा और तगड़ी स्त्री। **पट्ठी** (दे॰)।

पठौना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पठाना*) भेजना, पठाना।

पठौनी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पठाना*) पठावनी, पठउनी (आ॰)।

पठमान–वि॰ (सं॰) पड़े जाने के योग्य, सुपाठ्य।

पड़छती-पड़छती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पटच्छदि*) दीवालों को बरसात से रक्षित रखने वाला छोटा छप्पर, कमरे आदि के बीच की पाटन, टाँड़, **परछती** (आ॰)।

पड़त-पड़ता–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पड़ना*) किसी वस्तु का क्रय-मोल, लागत। **मु॰ पड़ता खाना या पड़ना**–लागत और चाहा हुआ लाभ मिल जाना। **पड़ते से**–लागत से, व्यय और लाभ दोनों मिल जाने पर। **पड़ता फैलाना या बैठाना**–कुल व्यय और लाभ मिलाकर किसी वस्तु का भाव निश्चित करना। दर, भाव, लगान का दर, सामान्य दर, औसत, मध्यराशि।

पड़ताल-परताल, परतार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *परितोलन*) पड़तालना क्रिया या भाव, छानबीन, लाँच, अनुसन्धान, निरीक्षण, अन्वीक्षण, खेतों की जाँच। **यौ॰ जाँच-पड़ताल**।

पड़तालना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पड़ताल+ना प्रत्य॰*) पड़ताल करना, देख-भाल या जाँच करना, **परतारना** (आ॰)।

पड़ती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पड़ना*) वह भूमि-खंड जहाँ कुछ दिनों से खेती न की जाती हो, **परती** (आ॰)। **मु॰ पड़ती उठना**–पड़ती का जोता बोया जाना या उसमें खेती होना। **पड़ती छोड़ना**–बिना जोते बोए या बिना खेती के छोड़ना जिससे उपज शक्ति अधिक हो जाए। **पड़ती पड़ना**–ठीक समय पर भूमि को जीत-बो न सकने से उसे छोड़ रखना।

पड़ना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पतन*) गिरना, लेटना, ऊँचे से नीचे जाना, पतित होना, मुख में फँस जाना, बीमार होना, परना (आ॰) **मु॰ किसी पर पड़ना**–आड़त या विपत्ति पड़ना, कठिनाई या संकट आ जाना, विछाया या फैलाया जाना, पहुँचाया जाना या पहुँचना, प्रविष्ट या दाखिल होना, दखल देना या हस्तक्षेप करना, टिकना या ठहरना। **मु॰ पड़ा होना (रहना)**–एक ही ठौर ठहरा रहना या वना रहना, रखा रहना, शेष रहना, विश्रामार्थ लेटना, सोना या आराम करना। **मु॰ (पड़ा) पड़े रहना**–कुछ काम किए बिना लेटे रहना, बेकाम रहना, रोगी या बीमार होना, चारपाई पर पड़े रहना, प्राप्त होना, मिलना, पड़ता खाना, गह में मिलना, उत्पन्न होना, ठहरना, इच्छा या धुन होना। **मु॰ क्या पड़ी है**–क्या प्रयोजन है।

पड़पड़ाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰) पड़-पड़ का शब्द होना, चरपराना, तड़पना।

पड़पोता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रपौत्र*) पुत्र का पोता, पोते का लड़का। स्त्री॰ **पड़पोती, प्रपौत्री**। यौ॰-**पड़दादा, पडबाबा, पड़दादी**।

पड़वा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिपदा, प्रा॰ पाड़ेबओ*) हर एक पाख का पहिला दिन। **परीवा**। भैंस का बच्चा, **डाँगर** (आ॰)।

पड़ाक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰) पटाक।

पड़ाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पड़ना का प्रे॰ रूप*) गिराना, झुकाना, रोग से शय्या-मग्न होना।

पड़ाव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पड़ना+आव प्रत्य॰*) यात्रियों के ठहरने या टिकने की जगह।

पड़िया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पेंडवा, पढ़वा*) भैंस का मादा बच्चा। पु॰ विलो॰ **पड़वा**।

पड़िवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिवास,प्रतिवेश*) किसी पुरुष के घर के निकट के घर, **परोस** (ग्रा॰) वृं॰। यौ॰ **पास-पड़ोस**–निकट के घर। **मु॰ पड़िवा-करना**–समीप बसना।

पड़ोसी-परोसी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पड़ोस+ई प्रत्य॰*) पड़ोस में या अपने घर के समीप के घर में रहने वाला, प्रति वासी। स्त्री॰ **परोसिन, पड़ोसिन**।

पढ़ंत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पढ़ना+अन्त प्रत्य॰*) क्रिया का भाव, सदा पढ़ना, मंत्र।

पढ़ंता–वि॰ दे॰ (हि॰ *पढ़ना*) पढ़ने वाला।

पढ़ना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पठन*) बांचना, उच्चारण करना, याद होने के लिए बारम्बार कहना, रटना, तोते का शब्द बोलना, मंत्र या विद्या पढ़ना, अध्ययन करना, शिक्षा पाना या लेना। यौ॰ **पढ़ना लिखना**–शिक्षा पाना। यौ॰ **पढ़ना पढ़ाना**। **पढ़ा लिखा**– शिक्षित।

पढ़वाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हिं॰ *पढ़ना का प्रे॰ रूप*) किसी से किसी को शिक्षा दिलाना या पढ़ने में लगवाना, खिसवाना, बँचवाना।

पढ़ाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पढ़ना+आई प्रत्य॰*) विद्याभ्यास, पढ़ने का भाव, अध्ययन, पठन। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पढ़ाना+आई*) अध्ययन, पाठन, पढ़ौनी, अध्ययन-शैली।

पढ़ाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पढ़ना*) अध्यापन करना, शिक्षा देना, तोते को मनुष्य भाषा सिखाना, समझाना।

पढ़िन-पढ़िना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाठीन*) एक बड़ी मछली, पढ़िका (आ॰)।

पण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतिज्ञा, शर्त, होड़, व्यवहार, लेनदेन का व्यापार, वेतन, मूल्य, व्यवसाय, स्तुति, प्रशंसा, ताँबे का प्राचीन सिक्का, प्रन (दे)।

पणाव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छोटा नगाड़ा, ढोल, एक छंद (पिं॰)।

पणफर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जन्म-कुंडली में 2, 5, 8, 11 घर।

पणाशी–वि॰ (सं॰) नाशक, विनाशक, प्रनाशी।

पणित–वि॰ (सं॰) बेचा गया हुआ, विक्रीत, शर्त या स्तुति किया हुआ, स्तुत।

पणय–वि॰ (सं॰) कम विक्रय योग्य, खरीदने या बेंचने लायक, स्तुति या प्रशंसा के योग्य। संज्ञा, पु॰ माल, सौदा, व्यापार, बाजार, दुकान, व्यवहार की वस्तु।

पणवभूमि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) गोदाम, कोठी, गोला, सौदा या माल जमा करने का स्थान, **पणय-स्थान**।

पणयवीथी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) हाट, बाजार, दुकान, चौक, बाज़ार-गली।

पणयशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दुकान, बाज़ार, हाट, वेश्या, वरांगना।

पतंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्षी, सूर्य, पतिंगा, टीड़ी, पाँखी, गुड्डी, चंग, उड़ने वाले कीड़े। जड़धन, नाव, गेंद। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पत्रज्ञ*) एक पेड़ जिसकी लकड़ी से बढ़िया लाल रंग बनता है।

पतंगज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यम, कर्ण, सुग्रीव। स्त्री॰ **पतंगजा**–यमुना।

पतंगबाज़–संज्ञा, पु॰ दे॰(हि॰ *पतंग+फा॰ बाज*) पतंग उड़ाने की लत वाला।

पतंगबाज़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पतंग बाज*) पतंग उड़ाने की कला या हुनर, काम।

पतंगसुत–संज्ञा, पु॰ यो॰(सं॰) अश्विनी कुमार, यम, कर्ण, सुग्रीव।

पतंगा–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पतंग*) एक कीड़ा, चिनगारी, **पतिंगा** (दे॰)।

पतंचिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धनुष की ताँत की डोरी प्रत्यंचा।

पतंजलि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) योगदर्शन ओर पाणिनि-कृत अष्टाध्यायी के महाभाष्य के रचयिता एक महर्षि।

पत–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पति*) पति, स्वामी, मालिक। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *प्रतिष्ठा*) लज्जा, कानि, प्रतिष्ठा, मर्यादा। यौ॰ **पतपानी**–लज्जा, आबरू। **मु॰ पत उतारना या लेना**–अपमान करना। **पत रखना**–इज़्ज़त बचाना।

पतझड़-पतझर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पत–पत्ता+झड़ना*) वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशर ऋतु, अवनति का समय।

पतझाड़-पतझार†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पतझड़*) पत्ते गिरना, पतझड़, पतझर, शिशिर ऋतु जब वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं।

पततमकर्ष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दस प्रकार का रस दोष (काव्य)।

पतन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गिरना, डूबना, अवनति, अधोगति, तबाही, नाश, मृत्यु, पाप, जाति-बहिष्कार, उड़ान।

पतनशील–वि. (सं.) गिरने के स्वभाव वाला, गिरने वाला, **पतनोन्मुख**।

पतनीय–वि. (सं.) गिरने योग्य।

पतनोन्मुख–वि. यौ. (सं.) जो गिरने की ओर लगा (प्रवृत्त) हो, जिसका विनाश, अधोगति या अवगति निकट आ रही हो।

पत-पानी–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) मान-मर्यादा, प्रतिज्ञा, लज्जा।

पतरा-पतला–वि. दे. (सं. *पावट*) दुबला, कृश, झीना, महीन, बारीक, अधिक द्रव या सरल, असमर्थ, **पातर, पातरो, पतरो** (अ.)। स्त्री. **पतरी, पतली। मु. पतला पड़ना**–बुरी दशा में फँस जाना।

पतला हाल–कष्ट और दुख की दशा, बुरा हाल।

पतलापन–संज्ञा, पु. (हि.) दबला होने का भाव, दुर्बलता, दुबलाई, कृशता, बारीकी।

पतलून–संज्ञा, पु. दे.(अं. *पैंटलून*) अंग्रेजी पायजामा; पैन्ट।

पतवार-पतवारी–संज्ञा, स्त्री. दे.(सं. *पात्रपाल*) नाव के पीछे रहने वाला डॉड जिससे नाव घुमाई जाती है, करिया, कन्हर, (दे.), कर्ण (सं.)।

पता–संज्ञा, पु. (फा.) ठिकाना, खोज, पत्र पर लिखा नाम, ठिकाना, परिचय। यौ. **पता-ठिकाना**–किसी चीज़ का परिचय या उसका ठीक-ठीक स्थान, अनुसन्धान, ढोह, सुराग, खोज, ज्ञान, जैसे–**मु. क्या पता**– न मालूम। यौ. **पता निशान**–नाम-निशान, भेद, रहस्य, गूढ़ सत्व या मर्म, खबर। **मु. पते की या पते की बात**–रहस्य या भेद-सूचक, मर्म या खोलने वाली बात, ठीक, सत्य या उपयुक्त बात।

पताई–संज्ञा, स्त्री. दे.(सं *पत्र*) पत्तियों का ढेर, सूखी गिरी पत्तियाँ।

पताका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) झंडा, फरहरा। **मु. किसी स्थान में (पर) पताका उड़ाना**–अधिकार या राज्य होना, सर्व प्रधान या श्रेष्ठ माना जाना। **किसी वस्तु की पताका उड़ाना**–ख्याति या धूम होना। **पताका बाँधना (खड़ा करना)**–आतंक जमा देना, विजयी होना। **पताका उड़ाना**–अधिकार करना, विजयी होना। **पताका गिरना**–पराजय या हार होना। **विजय की पताका**–जीत का झंडा, पिंगल में छंद-प्रस्तार सम्बन्धी गणित की एक क्रिया।

पताका-स्थान–संज्ञा, पु. यौ.(सं.) झंडा की जगह, बाडंटा (मराठी) नाटकीय एक संधि।

पताकिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सेना, फौज।

पताल-पत्ताल–संज्ञा, पु. दे.(सं. *पाताल*) पातालः दि. **पाताली** (सं. *पातालीय*) यौ. **सरगपताली**–ऐंचाताना।

पताल-आँवला–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *पाताल आमलकी*) एक औषधिक का पुष्प।

पताल-कुम्हड़ा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *पाताल-कूष्मांड*) एक वन-वृक्ष जिसकी गाँठों में शकरकंद या कंद होती है।

पतिंगा–संज्ञा, पु. दे.(सं. *पतंग*) पतंग, पतींगा।

पतिंवरा–वि. स्त्री. यौ. (सं.) स्वयंवरा स्त्री।

पति–संज्ञा, पु. (सं.) स्वामी, अधिपति, मालिक, दूल्हा, शिव, परमेश्वर, प्रतिष्ठा, मर्यादा, इज़्ज़त।

पतिआना-पतियाना†–क्रि. स. दे. (सं. *प्रत्यय+आना प्रत्य.*) **पत्याना** (व.), भरोसा या विश्वास करना, एतवार करना।

पतिआर-पतियार*†–संज्ञा, पु. दे.(हि. *पतिआना, पतियाना*) साख, एतवार, विश्वास।

पतित–वि. (सं.) गिरा हुआ, आचार-विचार या धर्म से गिरा हुआ, पापी, जाति या समाज से च्युत, नीच, अधम। स्त्री. **पतिता**।

पतित-उधारन*–वि. दे. यौ. (सं. *पतित+हि. उधारना*) अधमों और नीचों का उद्धार करने या तारने वाला। संज्ञा, पु. (हि.) परमेश्वर।

पतित-पावन–वि. यौ. (सं.) नीचों या अधमों को पवित्र करने वाला। संज्ञा, पु. परमेश्वर। स्त्री. **पतित-पावनी**।

पतित्व–संज्ञा, पु. (सं.) प्रभुतव, स्वामित्व, पति होने का भाव।

पति देवता-पति देवा–संज्ञा, स्त्री. यौ.(सं.) पतिव्रता।

पतिनी*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पत्नी*) स्त्री, पत्नी, नारी।

पति-प्रीता (प्रिया)–वि. यौ. (सं.) पति-प्रेम वाली।

पतिभक्ता–वि. यौ. (सं.) पतिव्रता।

पतियारा*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पतियाना*) विश्वास, यकीन, एतवार। यौ. (हि.) पति का मित्र।

पतिराखन-पतिराखनहार–वि. यौ. (हि.) लज्जा का रक्षक।

पतिलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वामी के रहने का स्वर्ग या बैकुण्ठ।

पतिव्रती–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) सधवा। सौभाग्यवती।

पतिव्रत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्त्री॰ को अपने स्वामी में अनन्य भक्ति और प्रीति, **पाति-व्रत्य, पतिबरत** (दे॰)।

पतिव्रता–वि॰ (सं॰) सती, साध्वी, पतिभक्ता, **पतिबरता।**

पतीजन-पतीजन*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *प्रतीत+ना प्रत्य.*) पतियाना, विश्वास करना।

पतील‡–वि॰ दे॰ (हि॰ *पतला*) पतला, महीन, बारीक।

पतीली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पातिली=हाँडी*) एक तरह की पतली बटलोई।

पतुकी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हाँढ़ी।

पतुरिया, पतुर, पातुरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पातिली*) रंडी, वेश्या।

पतुली–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक गहना जो पहुँचे में पहना जाता है।

पतुही–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छोटे मटर की छीमी।

पतोखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पत्ता*) दोना, पत्ते का बर्तन। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक तरह का बगुला। स्त्री॰ अल्पा॰ **पतोखी।**

पतोखी-पतौखी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰*पतोखा*) छोटा दोना, दुनियाँ, छोटा छाता, बारीक कटी सुपाड़ी।

पतोह-पतोहू†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुत्र वधू*) लड़के या बेटे की पत्नी, पुत्र वधू।

पत्तन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शहर, नगर।

पत्तर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पत्र*) किसी धातु की पतली चादर।

पत्तल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वध*) पतरी। **मु॰ एक पत्तल के खाने वाले**–आपस में रोटी-बेटी का सम्बन्ध रखने वाले। **किसी के पत्तल में खाना**–किसी से खाने-पीने का सम्बन्ध करना या रखना। **जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना**–जिससे लाभ हो उसी को हानि पहुँचाना, कृतज्ञता करना। पत्तल में रखी हुई भोजन की चीज़ें, एक व्यक्ति का पूर्ण भोजन।

पत्ता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पत्र*) पर्ण, पलाश, पात, पतौवा (आ॰)। स्त्री॰–"**पत्ती। मु॰ पत्ता खड़कना**–कुछ आशंका, खटका या संदेह होना। **लो॰–"पत्ता खटका बंदा सटका।" पत्ता न हिलना**–हवा का न चलना, बिलकुल बन्द होना, किसी भी व्यक्ति का कुछ न करना (होना)। कानों का एक गहना।

पत्तिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेना का एक खण्ड, जिसमें घोड़े, हाथी, रथ, पैदल प्रत्येक दश-दश हों, ऐसी सेना का नायक।

पत्ती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पत्ता+ई प्रत्य.*) छोटा पत्ता, हिस्सा, भाग, साझे का अंश, पट्टी, राजपूतों की जाति।

पत्तीदार–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *पत्ती+फ़ा॰ दार*) हिस्सेदार, साझी।

पत्थ*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पथ्य*) रोगनाशक पदार्थ, स्वास्थ्यकारी पदार्थ, पथ्य।

पत्थर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*प्रस्तर*) जमी हुई अति कड़ी मिट्टी, पाथर क्रि॰ **पथराना**। द॰। वि॰ **पथरीली। मु॰ पत्थर का कलेजा (दिल या हृदय)**–जिसमें दया, कोमलता या करुणा न हो। **पत्थर की छाती**–पक्का या दृढ़ हृदय, पक्का स्वभाव। **पत्थर की लकीर**–अमिट स्थायी। **पत्थर बटाना**–घिस कर धार निकालना या तेज़ करना। **पत्थर तले हाथ आना या दबना**–ऐसे संकट में फँस जाना जिससे छूटन का यत्न न दिखाई दे, बुरी तरह से फँसना। **पत्थर तले से हाथ निकालना**–संकट या विपत्ति से छुटकारा पाना। **पत्थर पर दूब जमना (जमाना)**–अनहोनी या असम्भव बात होना (करना)। **पत्थर पसीजना या पिघलना**–निर्दय के मन में, दया, कठोर में नम्रता और कंजूस में दान की इच्छा होना। **पत्थर से सिर फोड़ना या मारना**–असम्भव के लिए उपाय करना। मील का पत्थर, ओला, इन्द्रोपल। **मु॰ पत्थर-पड़ना**–नष्ट होना, चौपट होना। **पत्थर-पानी**–आँधी-पानी और ओलों का आना। रस, कुछ नहीं, बिल्कुल ख़ाक़।

पत्थरकला-पथरकला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर+कल*) चकमक पत्थर लगी बन्दूक (प्राचीन)।

पत्थरचटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर+चाटना*) **पथरचटा**–एक घास, मछली, साँप, कंजूस।

पत्थर फूल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) छरीला।

पत्थर फोड़–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) एक वनस्पति, **पथरफोर** (आ॰)।

पत्नी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विवाहिता स्त्री, भार्या, बहू,

सहधर्मिणी।

पत्नीव्रत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक ही ब्याही स्त्री से प्रेम का नियम।

पत्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पति होने का भाव।

पत्याना*†–क्रि॰ स॰ दे (हि॰ *पतियाना*) पतियाना, पतिआना।

पत्यारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पतियारा*) पतियारा, पति का मित्र।

पत्यारी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पंक्ति*) पंक्ति।

पत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पत्ता, पत्ती, पर्ण, लिखा कागज़, चिट्ठी, अख़बार, एक कला, पत्रा, चद्दर, पंखा। स्त्री अल्पा॰ **पत्रिका**।

पत्रकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पत्र लिखने वाला, समाचार-पत्र का सम्पादक; समाचार पत्र में खबर नवीस।

पत्रकृच्छ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पत्तों का काढ़ा पीकर रखा जाने वाला एक व्रत (पु॰)।

पत्रपुष्प–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फूल-पत्ते, छोटा उपहार, छोटा सत्कार।

पत्रभंग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुन्दरता के हेतु स्त्रियों के मस्तक, कपोलादि पर रची गई रेखाएँ।

पत्रवाहक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पत्र ले जाने वाला हरकारा, चिट्ठीरसा। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **पत्र-वाहन,** स्त्री॰ **पत्र-वाहिका**।

पत्र-व्यवहार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लिखा-पढ़ी, ख़त किताबत (फ़ा॰)।

पत्रा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पत्र*) जंत्री, तिथिपत्र, पत्रा, पृष्ठ, **पत्तरा** (दे॰)। यौ॰ **पोथीपत्रा**।

पत्रावली–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पत्र-भंग, पत्रों की पंक्ति या समूह।

पत्रिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चिट्ठी, छोटा लेख, छोटा समाचार-पत्र, सामयिक पत्र या पुस्तक।

पत्रित–वि॰ (सं॰) जिसमें पत्ते निकल रहे हों। स्त्री॰ **पत्रिता**।

पत्री–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चिट्ठी, खत, छोटा लेख, पत्रिका। यौ॰ **चिट्ठी-पत्री**। वि॰ (सं॰ *पत्रिन्*) पत्तेदार। संज्ञा, पु॰ छाया, पक्षी, पेड़।

पथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रास्ता, राह, मार्ग, व्यवहारादि की रीति। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पथ्य*) रोगनाशक पदार्थ, पथ्य।

पथगामी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पथगामिन्*) बटोही, पथिक, मुसाफ़िर।

पथ-दर्शक, पथ-प्रदर्शक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रास्ता दिखलाने वाला, मार्ग बताने वाला, नेता। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पथ दर्शन, पथ प्रदर्शन।

पथना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) पथना, कंडे बनाना। क्रि॰ स॰ (प्रे॰ रूप) **पथाना, पथवाना**।

पथरकला–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर या पथरी+कल*) वह बन्दूक जो चकमक पत्थर द्वारा आग पैदा करके छोड़ी जाती थी।

पथरचटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर+चाटना*) पाषाण या पाखानभेद नामी दवा।

पथराना-पथरियाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर+आना प्रत्य॰*) पत्थर के समान कड़ा होना, नीरस, कठोर या कड़ा हो जाना, स्तब्ध हो जाना, निर्जीव हो जाना।

पथरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर+ई प्रत्य॰*) कटोरानुमा पत्थर का बरतन, मूत्राशय का एक रोग, चकमक पत्थर, सिल्ली, कुरंग पत्थर जिससे सान बनती है, पत्थर की कूँड़ी।

पथरीला–वि॰ पु॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर+ईला प्रत्य॰*) पत्थर युक्त, पत्थर-मिलित। स्त्री॰ **पथरीली**।

पथरौटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पत्थर+औटी प्रत्य॰*) पत्थर की कूँड़ी, पथरी।

पथिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बटोही, राही, यात्री, मार्ग चलने वाला।

पथिवाहक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कहार, मज़दूर।

पथी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पथिन्*) बटोही, यात्री।

पथैया–वि॰ दे॰ (हि॰ *पाथना*) पाथने वाला, **पथवैया**।

पथ्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोगी के अनुकूल भोजन, उपयुक्त आहार। **मु॰ पथ्य से रहना**–संयम से रहना। हित, कल्यान, मंगल, सत्य।

पथ्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हर, हरड़, एक **छंद** (दि॰)।

पद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोज़गार, उद्यम, रक्षा, बचाव, दुर्जा, पाँव, चरण देह, छंद का एक चरण), वस्तु, शव, देश, चौथा-भाग, चौथाई, उपाधि, मोक्ष, अधिकार-स्थान, भजन, गीत, दान की वस्तुएँ, विभक्ति-युक्त शब्द

(व्या.)।

पदक–संज्ञा, पु. (सं.) किसी देवता के पद-चिन्ह, तमगा (फ़ा.)।

पदक्रम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पग, डग।

पदग–संज्ञा, पु. (सं.) पैदल, पियादा, पैदल चलने वाला।

पदचर–संज्ञा, पु. (सं.) पैदल, पियादा, प्यादा, पदाति।

पदच्छेद–संज्ञा, पु. (सं.) व्याकरणानुसार किसी वाक्य के पदों को अलग-अलग करना।

पदच्युत–वि. यौ. (सं.) पद या अधिकार से भ्रष्ट या हटाया हुआ।

पदज–संज्ञा, पु. (सं.) पाँव की अँगुलियाँ।

पदतल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पैर का तलवा।

पदत्राण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जूता, जूती।

पददलित–वि. यौ. (सं.) पाँवों से रौंदा हुआ, अपमानित, दबाकर निर्बल किया गया।

पदना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पर्दन*) अधिक पादने वाला, डरपोंक। क्रि. अ. (दे.) भ्रमित होना, तंग होना; अधिक भागना (खेल में)।

पदनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पदना*) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी।

पदन्यास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चलना, चलन, पदों का व्यवस्थित करना, **पद-विन्यास** (काव्य)।

पदपटी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक प्रकार का नाच।

पदपत्र–वि. यौ. (सं.) पुदकरमूल (औष.), कमल का पत्र, अधिकार-पत्र।

पदपीठ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) खड़ाऊँ, जूता, **पाद-पीठ**–पैर रखने की चौकी।

पदम-पदुम–संज्ञा, पु. दे. (सं.*पत्र*) कमल। संज्ञा, पु. दे. (पथकाष्ठ) पद्याख, पद्याक।

पदमक–संज्ञा, पु. (दे.) पद्याक (सं.) **पदमाख औषधि**।

पदमैत्री–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) अनुप्रास, (काव्य)।

पदयोजना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) कविता के हेतु पदों को जोड़ना, **पद व्यवस्था**।

पदरिपु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) काँटा।

पदवी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) उपाधि, अएल, मार्ग, रास्ता।

पदवृत्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मिलित या युक्त शब्द।

पद-विग्रह–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) समासिक पदों का पृथक्करण (आ.)

पद-व्याख्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पदों (शब्दों) का व्याकरणानुकूल परिचय।

पद-सेवा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पैर दाबना।

पदस्थ–वि. (सं.) पदारूढ़, पद पर वर्तमान, **पदस्थित**।

पदांक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँव का चिह्न, पद-लांछन।

पदानुसरण (करना)–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पीछे-पीछे चलना, अनुयायी बनना, अनुकरण करना।

पदाघात–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँव से मारना।

पदाति-पदातिक–संज्ञा, पु. (सं.) प्यादा, पिपादा, पयादा, पैदल, दास, सेवक। यौ. **पदाति-सैन्य**–पैदली सेना।

पदाधिकारी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.), औहदेदार।

पदाना–क्रि. स. दे. (हि. *पादना का प्रे. रूप*) बहुत तंग या दिक करना, दौड़ाना।

पदाम्भोज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **पदाम्बुज,** चरण-कमल।

पदारविंद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चरण-कमल।

पदार्थ–संज्ञा, पु. (सं.) **पदारथ** (दे.) पद का अर्थ, तात्पर्य या प्रयोजन, **नौ या सात पदार्थ,** 5 तत्व, काल, दिक्, आत्मा, मन, वस्तु, चीज, चार पदार्थ–*अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।

पदार्थवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह मत जिसमें आत्मा को छोड़ कर केवल भौतिक पदार्थों ही को सृष्टि-कर्त्ता माना है। **प्रकृतिवाद, तत्ववाद**। वि. **पदार्थवादी**।

पदार्थ-विज्ञान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विज्ञान शास्त्र, चीज़ों की विद्या, तत्व-विद्या।

पदार्थविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) विज्ञान-शास्त्र, तत्वज्ञान।

पदार्पण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) किसी जगह जाना या आना।

पदावली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वाक्य श्रेणी, भजन संग्रह, पदों की पंक्ति, पद-माला।

पदासन–वि. यौ. (सं.) पादपीठ, पीढ़ा, काष्टासन, पैर रखने की चौकी।

पदिक–संज्ञा, पु. (सं.) पैदल फौज। *†संज्ञा, पु. दे. (सं. *पदक*) लुगूमू नामक गहना, हार की चौकी, हीरा। यौ. **पदिकहार**–रत्नहार, मणिमाला।

पदी*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पद*) पियादा-पैदल। वि. (सं.) पदवाली, जैसे **षट्पदी**।

पद्धटिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 16 मात्राओं का एक छन्द, पज्झटिका, पद्धरि (पिं॰)।

पद्धति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मार्ग, परिपाटी, रीति, रस्म, कर्मकाण्ड की पुस्तक, विधि, विधान, प्रणाली।

पद्धरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 16 मात्राओं का एक छन्द, पद्धटिका (पिं॰)।

पद्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, जलज, पंकज, विष्णु का एक अक्ष, एक निधि, देह पर के सफेद दाग, पद्माख पेड़, एक नरक, एक पुराण, एक छन्द (पिं॰) एक संख्या।

पद्मकंद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल की जड़, भसीढ़ा, भिखा, मुदार।

पद्मकाण्ठ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पद्माख।

पद्मगर्भ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मा।

पद्मजन्मा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मा, **नालीकजन्मा**।

पद्मतंतु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल दंडी, मृणाले।

पद्मनाभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु भगवान।

पद्मनेत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु।

पद्मपत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पोहकरमूल, कमल दल।

पद्मपलाश-लोचन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्री कृष्ण, विष्णु।

पद्मपाणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मा, बुद्ध की एक मूर्ति, सूर्य।

पद्म-बंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक प्रकार का चित्र काव्य।

पद्मयोनि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मा जी।

पद्मराग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) माणिक, लाल।

पद्मरेखा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) हाथ की एक रेखा (ल॰गु॰)।

पद्मलांछन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सूर्य, राजा, कुबेर, प्रजापति।

पद्मलोचन–वि॰ यौ॰ (सं॰) कमल-नेत्र।

पद्मस्तुपा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लक्ष्मी, दुर्गा, गंगा।

पद्मबीज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कमलगट्टा।

पद्मव्यूह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सेना को लड़ाई में खड़ा करने का एक ढंग।

पद्मा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लक्ष्मी, भादों सुदी एकादशी।

पद्माकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बड़ा ताल या झील जहाँ कमल हों, हिन्दी का प्रसिद्ध कवि।

पद्माख, पद्माक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पद्मक*) एक औषधि।

पद्मालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मा, पद्म का स्थान।

पद्मालया–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लक्ष्मी जी, लौंग।

पद्मावती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लक्ष्मी, चित्तौड़ की रानी, पटना, उज्जयिनी, स्वर्ण की अप्सरा, एक नदी।

पद्मासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) योग की एक बैठक, ब्रह्मा, शिव।

पद्मिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कमलिनी, छोटा कमल, चित्तौड़ की रानी, लक्ष्मी, उत्तम स्त्री। यौ॰ पद्मिमनी-वल्लभ–सूर्य, कमलयुक्त झील या सरोवर।

पद्य–वि॰ (सं॰) जिसका सम्बन्ध पैरों से हो, जिसमें कविता के पद हों। संज्ञा, स्त्री॰ **पद्यवत्ता**। संज्ञा, पु॰ (सं॰) कविता, काव्य, छन्दमयी कविता। (*विला॰* **गद्य, गद्य-काव्य**)।

पद्यात्मक–वि॰ (सं॰) जो छन्दोबद्ध हो।

पधराना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*सं॰ प्रधारण*) आदर से ले जाना, भली-भाँति बैठाना, स्थापित करना। (*प्रे॰ रूप*) **पधरावना**।

पधरावनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पधरना*) किसी देवता की मूर्ति की स्थापना, किसी को आदर के साथ बैठाने का कार्य।

पधारना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पधारना*) आगमन, आना।

पन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पण*) प्रतिज्ञा, प्रण, संकल्प, विचार। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) *पर्वन्=विशेष दशा*) जीवन के चार भागों में से प्रत्येक।– नरो॰। *प्रत्य॰* (हि॰) भाववाचक संज्ञा के बनाने का प्रत्यय, जैसे–पागल से पागलपन।

पनकपड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पानी+कपड़ा*) पानी से तर वह कपड़ा जो चोट पर बहुधा बाँधा जाता है।

पनकाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पानी+काल*) अति वर्षा के कारण पड़ा हुआ दुर्भिक्ष, अकाल।

पनगोटी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बनी बसन्त, चेचक का एक भेद।

पनघट–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पानी+घाट*) वह घाट जहाँ से लोग पीने के लिए पानी भरते हों।

पनच–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *प्रतंचिका*) प्रत्यंचा, धनुष की ताँत या डोरी।

पनचक्की–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पानी+चक्की*) पानी के बल से चलने वाली चक्की।

पनडब्बा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *पान+डब्बा*) पान रखने का

डब्बा।

पनडुब्बी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पनडुब्बा*) एक पक्षी, एक नाव जो पानी में डूबी हुई चलती है, **सबमेरीन** (अं॰)।

पनपना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पर्णय=हरा होना*) पानी पाने से हरा-भरा हो जाना, तन्दुरुस्त हो जाना, अच्छी दशा में आना।

पनपनाहट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पनपनाना*) सनसनाहट, ज़ोर से हवा चलने का शब्द।

पनबट्टा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पान+बट्टा=डिब्बा*) पानदान, पान रखने का डिब्बा, **पनडब्बा**।

पनबसना–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *पान+वसन*) पान रखने का कपड़ा।

पनव*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रणव*) प्रणव, ओउम् शब्द।

पनवाड़ी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पान+बाड़ी*) पान का बाग़, पानों का खेत, तमोली, पान बेचने वाला।

पनवार-पनवारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पान+वार प्रत्य॰*) पत्तल, पतुरी।

पनस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कटहल, काँटा।

पनसा–वि॰ दे॰ (हि॰ *पानी+सा—समान*) पानी का सा, पानी जैसा स्वाद, फीका।

पनसाखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हिं॰ *पाँच+शाखा*) एक मशाल जिसमें पाँच या तीन फलीते साथ जलते हैं। **मु॰ पनसाखा बढ़ाना (हटाना)**–झंझट या झगड़ा मिटाना, वादविवाद बन्द करना, झगड़ा टालना या हटाना, दूर होना।

पनसारी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पगमशाली*) किराना, मेवा, औषधि बेचने वाला दुकानदार।

पनसेरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पाँच+सेर*) **पंसेरी**, पाँच सेर का बाट, **पसेरी** (आ॰)।

पनहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परिणाह*) किसी वस्तु की चौड़ाई, गूढ़ाशय, गूढ़ तात्पर्य, भेद, मर्म। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रण*) चोरी का पता लगाने वाला।

पनहाना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) दूध उतरने के लिए गाय-भैंस का स्तन सुहराना। **पल्हाना, पलुहाना** (आ॰)।

परहियाभद्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पनही+भद्र=मुंडन सं॰*) इतने जूते सिर पर मारना कि सिर के सब बाल गिर जावें।

पनहीं†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *उपानह*) जूता।

पना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रपानक या पानीय*) आम या इमली के गूदे का शर्बत, प्रपानक (सं॰)।

पनारा-पनाला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परनाला*) परनाला। स्त्री॰ **पनारी-पनाली**।

पनाह–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) रक्षा, बचाव, प्राण। यौ॰ **शहर-पनाह**–रक्षार्थ नगर की चारदिवारी। **मु॰ किसी से पनाह माँगना**–बचने की बिनती करना। शरण, आड़, रक्षा का ठौर। **पनाह मिलना (पाना)**–शरण था रक्षा का स्थान मिलना।

पनिच*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पनच*) प्रत्यंचा, धनुष की तांत।

पनियाँ, पनिहा†–वि॰ दे॰ (हि॰ *पनिहा*) पानी में रहने वाला, पानी-मिला, पानी सम्बन्धी। यौ॰ **पनिहा साँप**। संज्ञा, पु॰ (दे॰) भेदिया, जासूस, पानी।

पनियाना–क्रि॰ स॰ (दे॰) सींचना, पानी देना, पानी भरना।

पनियाढार–वि॰ इमारत इत्यादि को ऐसा तोड़ना कि पानी को ढाल मिल जाय।

पनिहा–वि॰ दे॰ (हि॰ *पानी*+हा प्रत्य॰) पानी का निवासी, पानी मिला, पानी-सम्बन्धी, जैसे—**पनिहा साँप**। संज्ञा, पु॰ जासूस, भेदी, भेदिया।

पनीर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पानी निचोड़ा दही, दूध, फाड़कर निकाला हुआ छैना।

पनीरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) फूलों-पत्तों वाले पौधे जो अन्यत्र लगाने के लिए उगाए गए हों, फूलों-पत्तों के पेड़ या बेहन, वह नगरी जिसमें पनीरी उगाई गई हो, बेड़ या बेहन की क्यारी। वि॰ पनीर वाली।

पनीला–वि॰ दे॰ (हि॰ *पानी+इला—प्रत्य॰*) पानी युक्त, पानी मिला। स्त्री॰ **पनीली**।

पनीहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पानी+हा प्रत्य॰*) पानी के संयोग से बनी हुई वस्तु, जलजंतु, जल में उत्पन्न होने वाला, जल-सम्बन्धी। नीरस, फीका।

पनैला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पनीला=एक प्रकार सन*) एक तरह का चिकना, चमकीला और अति गाढ़ा वस्त्र या कपड़ा, वेलहरा।

पगौटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पान+ओटी*) पानदान, पान रखने का डिब्बा।

पन्न–वि॰ (सं॰) गिरा या पड़ा हुआ, गत, नष्ट।

पन्नग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साँप, सर्प, पद्मकाष्ठ औषधि। (स्त्री॰ **पन्नगी**)।

पन्नगपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शेषनाग। पन्नगेश, **पन्नगाधीश**।

पन्नगारि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गरुड़।

पन्नगाशन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गरुड़।

पन्नगीं–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साँपिनी, सर्पिणी, नागिनी।

पन्ना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्ण*) मरकत मणि, हरित मणि, बरक़, पृष्ठ, एक नगर जहाँ हीरों की खानि है।

पन्नी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पन्ना–पन्ना*) काग़ज़ के समान गँगा या चाँदी आदि के पत्तर, सोने आदि के पानी से रँगा काग़ज़। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पना*) एक खाने-योग्य वस्तु। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बारूद की एक तौल।

पन्नीसाज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पत्नी+फ़ा॰ साज़*) पन्नी का काम करने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **पन्नीसाज़ी**।

पपड़ा, पपरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्पट*) लकड़ी का सूखा छिलका, रोटी का छिलका। स्त्री॰ *अल्पा॰*। **पपरी, पपड़ी**।

पपड़िया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पपड़ी*) छोटा पपड़ा। **पपड़िया कत्था**–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पपड़ी+कत्था*) सफेद पपड़ीदार कत्था।

पपडियाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पपड़ी+आना*) किसी पदार्थ के ऊपरी परत का सूख कर सिकुड़ जाना, पपड़ी पड़ जाना।

पपड़ी-पपरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पपड़ा का अल्पा॰*) किसी पदार्थ के ऊपरी परत का सूखकर जगह-जगह से फटा भाग, एक पकवान, **पपरिया** (दे॰)।

पपड़ीला, पपरीला–वि॰ दे॰ (हि॰ *पपड़ा+ईला प्रत्य॰*) अधिक पपड़े वाला।

पपनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) *बरौनी, बरोनी*।

पपी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य, भानु, रवि।

पपीता–संज्ञा, (अ॰) स्त्री॰ पपीतो, एक बड़े आकार का फल (अं॰) पपाया।

पपीहा, पपिहा, पपीहरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चातक पक्षी।

पपैया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक खिलौना, पपीहा, एक पक्षी।

पपोटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्र+पट*) पलक, दृगंचल।

पपोरना–क्रि॰ स॰ (दे॰) भुजा ऐंठना और अभिमान सहित उनका पुष्ट उभाड़ देखना।

पखनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) त्यौहार, पर्वणी (सं॰)।

पवरना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) निर्वाह होना, काम चलना। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पर्व या त्योहार का दिन।

पबि–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पवि या वज्र।

पमार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परमार*) पवाँर (आ॰) क्षत्रियों की एक जाति।

पय–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पयस्) दूध, मानी।

पयद*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पयोद*) स्तन, थन, बादल।

पयधि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पयोधि*) समुद्र।

पयनिधि*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पयोनिधि*) सागर।

पयस्विनी–संज्ञा, स्त्री॰ (स॰) दूध देने वाली गाय, एक नदी।

पयस्वी–वि॰ (सं॰ *पयस्विन्*) जल-वाला, दूधवाला, दूध-युक्त। स्त्री॰ **पयस्विनी**।

पयहारी–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पयस्+आहारी*) केवल दूध पीकर रहने वाला, तपस्वी, साधु, **पयसाहारी**।

पयार-पयाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पलाल*) धान आदि के छूँछे और सूखे डंठल, पुआल (दे॰)। **मु॰ पयाल गाहना या झाड़ना**–व्यर्थ परिश्रम या सेवा करना। **पयाल तापना**–निस्सार कार्य करना।

पयोज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल।

पयोद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बादल, मेघ।

पयोधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्तन, थन, बादल, नागरमोथा, कसेरू, तालाब, गाय का आयन, पहाड़। दोहा का 11 वाँ और छप्पय का 27 वाँ भेद (पिं॰)।

पयोधि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र।

पयोनिधि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र।

पयोव्रत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूध या जल के आहार पर व्रत करना, या ऐसा व्रत करने वाला।

पयोराशि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र।

परंच–अन्य॰ (सं॰) लेकिन, परन्तु, तो भी।

परंतप–वि॰ यौ॰ (सं॰) बैरियों को दुख देने वाला, इन्द्रयजित।

परन्तु–अन्य॰ (सं॰ *परं+तु*) मगर, लेकिन, किन्तु, पर, तोभी।

परंदा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *परिंदा*) पक्षी, चिड़िया, **परिंदा**।

परंपरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) क्रम से एक के पीछे दूसरा,

पूर्वापर क्रम, अनुक्रम, वंश-परंपरा, प्रणाली, संतति, औलाद, परिपाटी, प्राचीन रीति।

परंपरागत–वि. यौ. (सं.) जो सदा से होता आया हो, सनातन।

पर–वि. (सं.) दूसरा, अन्य, पराया, दूसरे का, जुदा, अलग, भिन्न, अतिरिक्त, पीछे का दूर, तटस्थ, श्रेष्ठ, तत्पर, लीन। प्रत्य. दे. (सं. *उपरि*) भाषा में अधिकरण का चिन्ह, जैसे–कोठे पर। अव्य. (सं. *परम्*) पीछे, पश्चात्, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, तो भी। संज्ञा, पु. (फ़ा.) चिड़ियों का पंख, पखना, डैना, पक्ष। **मु. पर कट जाना**–निर्बल या शक्तिहीन या असमर्थ हो जाना। **पर जमना**–पंख निकलना, शरारत सूझना। **कहीं जाते हुए पर जलना**–साहस या हिम्मत न होना, गति या पहुँच न होना। **पर न मारना**–पाँव न रखना, न आना।

परकटा*–वि. यौ. दे. (फ़ा. *पर+काटना* हि.) जिसके पंख या पखने कट गए हों।

परकसना*–कि. अ. दे. (हि. *परकासना*) प्रगट या प्रकाशित होना, जगमगाना।

परकाज, परकारज–संज्ञा, पु. दे. (सं.*परकार्य*) दूसरे का काम, परोपकार।

परकाजी–वि. दे. (हि. *पर+काज+ई प्रत्य.*) परोपकारी, परस्थायी।

परकाना–क्रि. स. दे. (हि.*परकना*) अभ्यास करवाना, चरका लगाना, परचाना।

परकार–संज्ञा, पु. (फा.) वृत्त खींचने का यंत्र। †संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रकार*) तरह, प्रकार, भाँति।

परकारना–क्रि. स. दे. (हि. *परकार*) परकार के द्वारा वृत्त खींचना, चारों तरफ घुमाना।

परकाल–संज्ञा, पु. दे. (फा. *परकार*) परकार, प्रकार।

परकाला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्राकार या प्रकोष्ठ*) जीना, सीढ़ी, चौखट। संज्ञा, पु. दे. (फा.*परगला*) खंड, भाग, काँच का टुकड़ा, आग की चिनगारी। **मु. आफत का परकाला**–गजब ढहाने वाला, आफत उठाने वाला, भयानक या प्रचंड मनुष्य।

परकीय–वि. (सं.) दूसरे का, पराया।

परकीया–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दूसरे की स्त्री, पति को छोड़ कर पर पुरुष से प्रेम करने वाली नायिका। (विलो.–स्वकीया)

परकीरति-परकीर्ति–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *परकीर्ति*) दूसरे का यश, नेकनामी, बड़ाई।

परकोटा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिकोट*) किसी गढ़ या किले के चारों ओर का रक्षक, घेरा, बाँध, धुस।

परख–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *परीक्षा*) परीक्षा, जाँच, भलीभाँति देख-भाल, पहिचान, अनुसन्धान, खोज, **पारिख़** (आ.)। वि. पारखी।

परखना–क्रि. स. दे. (सं. *परीक्षण*) परीक्षा (जाँच या अनुसन्धान या खोज) करना, देखभाल करना, पहचानना। क्रि. स. हि. (दे. *परेखना*) आसरा देखना, प्रतीक्षा या इन्तज़ारी करना।

परखवैया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *परख+वैया प्रत्य.*) परखने, जाँच या अनुसन्धान करने वाला, इन्तज़ारी करने वाला।

परखाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *परखाना*) परखने का काम या मज़दूरी, इन्तज़ारी।

परखाना–क्रि. स. दे. (हि. *परखना*) लेजाना, परीक्षा कराना, इन्तज़ारी कराना।

परखो–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सूजे के पुण्य एक लोहे का यंत्र, जिससे से बोरे मे अस निकाल कर परखा जाता है।

परखैया–संज्ञा, पु. (हि. *परखना+ऐया प्रत्य.*) परखने या जाँच करने वाला, खोजी इन्तज़ार करने वाला।

परगट–वि. दे. (सं. *प्रकट*) प्रगट, स्पष्ट, **परघट** (आ.)।

परगटना*–क्रि. अ. दे. (सं. *प्रकट*) प्रगट होना, खुलना। क्रि. स. (दे.) जाहिर या प्रगट करना।

परगन-परगना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *परगना*) परगना, तहसील का वह भाग जिसमें बहुत से गाँव हों। (सं. प्रगण)।

परगसना*–क्रि. अ. दे. (सं. *प्रकाशन*) प्रगट या प्रकाशित होना। कि. स. (दे.) **परगासना**।

परगहनी–(आ.) संज्ञा, पु. यौ. (दे.) दूसरे का घर, परघर, पर-स्त्री, परगृहणी (सं.) **परधरमी** (दे.)।

परगाछा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पर+गाछ–पेड़*) दूसरे पेड़ों पर उगने वाले पौधे (गरम देशों में)।

परघनी-परघरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सोना-चाँदी आदि के ढालने का साँचा या परघी।

परचंड*–वि. दे. (सं. *प्रचंड*) अधिक तेज या तीव्र, प्रखर,

भयकर, कठोर, असह्य, वडा भारी।

परचना–क्रि॰ अ दे॰ (स॰ *परिचयन*) हिलना, मिलना, चसका *लगना*।

परचा–*सज्ञा, पु (फा) कागज का टुकडा, चिट, पुरजा,* चिट्ठी, परीक्षा का प्रश्न-पत्र। सज्ञा, पु (स *परिचय*) परिचय, परीक्षा, प्रमाण।

परचाना–क्रि स दे (हि *परचना*) परचावना, चसका लगाना, टेप डालना, हिलाना-मिलाना। क्रि स द (स *प्रज्वलन*) जलाना, सुलगाना।

परचार* -सज्ञा, प दे (स *प्रचार*) *प्रचार* रिवाज़, चलन।

परचारना*–क्रि स॰ दे (स *प्रचारण*) प्रचारना, ललकारना।

परचून–सज्ञा, पु दे (स *पर+चूर्ण*) आटा दाल आदि की सामग्री।

परचूनी–सज्ञा, पु द (हि *परचून*) खाने की सामग्री वचन वाला वनिया, मोदी।

परचा–सज्ञा, पु द (स *परिचम*) परीक्षा, जाच, परिनिग।

परछती-परछती–सज्ञा, स्त्री द (स *परि+छत्र*) कोठरी मे थोडी दूर तक की पटनई, फूस का छोटा छप्पर।

परछन–सज्ञा, स्त्री॰ दे (स *परि+अर्चन*) द्वार पर आए वर की आरती।

परछना क्रि स दे (हि *परछन*) किसी दवता या वर की आरती या पूजन करना।

परछाई-परछाहीं–सज्ञा, स्त्री॰ द (स॰ *प्रतिच्छाया*) छाँही, छाँह, छाया, साया, प्रतिविम्ब।–**मु॰ परछाई से डरना या भागना**–पास तक जाने से डरना, बहुत ही डरना।

परछालना*–क्रि स॰ दे॰ (स॰ *प्रक्षलन*) धोना।

परछिद्र–सज्ञा, पु यौ॰ (स॰) परदोष, दूसरे का ऐब।

परछी–सज्ञा, स्त्री (दे) दूध या दही की मटकी।

परजंक–सज्ञा, पु॰ दे॰ (स॰ *पर्यंक*) पलग, प्रजक (दे)।

परज–सज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (स॰ *पराजिका*) एक रागिनी (सगी)।

परजकर–सज्ञा, पु॰ (दे॰) वह महसूल जो भूमि मे बसने से जमीदार को दिया जावे।

परजन*–सज्ञा, पु॰ दे॰ (स *परिजन*) कुटुम्बी, वश के लोग, नौकर, सेवक।

परजरना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (स॰ *प्रज्वलन*) सुलगना, जलना, रुष्ट होना, डाह करना, कुढना।

परजन्य*–सज्ञा, पु॰ दे॰ (सं *पर्जन्य*) मेघ, बादल, जलद, वारिद।

परजवट–*सज्ञा, पु॰ (दे॰) कर, शुल्क, भाडा, राज भूमि का महसूस*।

परजा–सज्ञा, स्त्री दे॰ (स॰ *प्रजा*) प्रजा, रिआया, रैयत, आसामी, किसान, सेवक, नौकर, दास।

परजान–वि (स) दूसरे से उत्पन्न, दूसरे का पला, दूसरी जाति का।

परजाता–सज्ञा, पु द (स *पारिजात*) पारिजात वृक्ष, हर-सिंगार, **पारजात**।

परजाय*–सज्ञा, पु दे (स *पर्याय*) समान या तुल्य अर्थ वाले शब्द, एक अलकार, परम्परा, प्रकार। यौ द (स *पर+जाया*) पर स्त्री, परजोय, परजाया।

परजारना–क्रि स दे (हि *परजरना*) जलाना।

परजौट–सज्ञा, पु दे (हि *परजा+औट प्रत्य*) मकान बनाने के हेतु वार्षिक भाड़ पर भूमि के लेने-देने का नियम।

परतंत्र–वि (स) पराधीन, परवश।

परतंत्रता–सज्ञा, स्त्री (स) पराधीनता।

परत- अ (स *परतस्*) अन्य या दूसर से, पीछे, आगे।

परत–सज्ञा, स्त्री द (स *पत्र*) तह, स्तर, छिलका, पुट।

परतल–सज्ञा, पु द (स *पट+तल*) डेरा डडा, टट्टू या घोडे पर लादने का गोन या बोरा, खुरजी (आ)।

परतला–सज्ञा, पु दे॰ (स॰ *परितन*) चपरास, चपरास लगाने की पट्टी।

परता-पड़ना–सज्ञा, पु॰ दे (हि *पडता*) किसी वस्तु का मूल्य, खरचे का दाम, लागत। **मु॰ पड़ता पड़ना (खाना)**–पूरा मूल्य आ जाना।

परताल-परतार–सज्ञा, स्त्री द (हि *पडताल*) पडताल, जॉच।

परती-पड़ती–सज्ञा, स्त्री दे (हि *परना=पडना*) वह भूमि जो बिना जोती-बोई पडी हो।

परतीत-परतीति*–सज्ञा, स्त्री दे (स *प्रतीति*) प्रतीति, विश्वास, भरोसा।

परत्र–वि॰ (स) अन्यत्र स्वर्ग, परकाल या परलोक।

परत्थ–सज्ञा, पु (स॰) प्रथम या पूर्व होने का भाव, आगे होने का भाव।

परथन, परेथन–सज्ञा, पु॰ द॰ (हि *पलेथन*) पलथन, गीले

आटे से रोटी बनाने में लगाने का सूखा आटा, व्यर्थ का व्यय या खर्च, परोथन।

परदच्छिना*—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रदक्षिणा*) प्रदक्षिणा, परिक्रमा।

परदनी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *परदा*) धोती।

परदा—संज्ञा, पु॰ (फा॰) पट, चिक, मबनिका, पर्दा। **मु॰ परदा उठाना या खोलना**—गुप्त भेद या छिपी बात प्रगट करना। **परदा डालना**—छिपाना। **परदा रखना**—लजा रखना, इज़्ज़त बचाना। **परदाफाश करना**—भेद या लज्जा की बात प्रगट करना। **आँख पर परदा पड़ना**—देख न पड़ना। **ढँका परदा**—छिपा दोष या कलंक, बनी मर्यादा या प्रतिष्ठा, व्यवधान, ओट, आद, छिपाव। यौ॰ **परदा-प्रथा**—स्त्रियों के अंदर रहने और मुख ढाँके रखने का रिवाज। **मु॰ परदा रखना**—परदे की ओट में भीतर रहना, लज्जा रखना। **परदा होना**—परदा होने का नियम या दुराव होना। **परदे में रहना**—छिपा रहना।

परदादा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्र*+हि॰ *दादा*) दादा का पिता, प्रपितामह। स्त्री॰ **परदादी**।

परदा-नशीन—वि॰ यौ॰ (फा॰) परदे में रहने वाला, अंतःपुरवासिनी। संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) परदे में रहने वाला, अंतःपुरवासिनी। संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) **परदा-नशीनी**।

परदार-परदारा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) **परतिया,** दूसरे की स्त्री, पराई औरत। वि॰यौ॰ **परदार-लंपट**—पर-स्त्रीगामी। संज्ञा, स्त्री॰ **परदार-लंपटता**।

परदुःख—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अन्य की पीड़ा या क्रोश, **परदुख**।

परदुम्भ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रद्युम्व*) प्रद्युम्न, श्री कृष्ण जी के पुत्र।

परदेश, परदेस—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विदेश, अन्य देश, भिन्न देश।

परदेशी, परदेसी—वि॰ (सं॰) दूसरे देश का, विदेशी, अन्य देशवासी।

परदोस*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रदीप*) शाम का वक्त, संध्या समय, त्रयोदशी का शिव-व्रत, बड़ा भारी दोष या अपराध। संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *परदीप*) अन्य या दूसरे की बुराई। यौ॰।

परद्वेष्टा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परहिंसक, परानिष्टकारी, दूसरे की हानि करने वाला।

परद्रोह—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परानिष्ठ, दूसरे का अशुभ, पर-पीड़न।

परद्रोही—वि॰ यौ॰ (सं॰ *परद्रोहिन्*) परानिष्टकारी, पराशुभकारी, परपीड़क।

परधन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अन्य या दूसरे का धन या द्रव्य।

परधान*—वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रधान*) मुख्य, श्रेष्ठ, मंत्री। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परिधान*) आच्छादन, परिधान, वस्त्र, कपड़ा। संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰) पर-धान्य का स्थान।

परधाम—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बेकुंठ, स्वर्ग, परमात्मा, अन्य का धाम, **परमधाम**।

परन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रण*) प्रतिज्ञा, प्रण, टेक, हठ। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ पड़ना) स्वभाव, वान, टेव, आदत। *संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्ण*) वर्न (दे॰) पान, पत्ता, पत्ती। जैसे—**परनकुटी**।

परनगृह—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰) पर्णगृह, पत्तों का झोंपड़ा, प्रणशाला (सं॰) **परनसाला, परनकुटी, पर्णकुटीर** (दे॰)।

परना, पड़ना*†—क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पड़ना*) गिरना, पढ़ना, सो रहना, लेटना।

परनाना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर*+हि॰ *नाना*) नाना का पिता। स्त्री॰ **परनानी**।

परनाम—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *परनामन्*) अन्य या दूसरे का नाम, दूसरा नाम। सज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रणाम*) प्रणाम, नमस्कार।

परनाला—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रणाली*) नावदान, मोरी, पनाल, नरदया। (स्त्री॰ अल्पा॰ **परनाली**)।

परनाह—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पर+माथ*) परपति, **पर-नाथ**।

परनि*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पड़ना*) स्वभाव, प्रकृति, टेव, वान, पड़ने की क्रिया। वि॰ (दे॰) **परनी,** प्रणी (सं॰)।

परनौत*—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *परनवना*) प्रणाम, नमस्कार।

परपंच*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रपंच*) प्रपंच, झगड़ा-बखेड़ा, चालबाज़ी।—रामा॰। वि॰ **परपंची-प्रपंची**(सं॰) स्त्री॰ **परपंचिनी**।

परपंचक—वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रपंच*) झगड़ालू, बखेड़िया, धूर्त्त, मायावी, चालबाज़।

परपट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) *पर्पट* औषधि, पित्तपापरा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पर*+सं॰ *पट=चादर*) चौरस मैदान, समतल भूमि, दूसरे का वस्त्र।

परपटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पर्पटी*) सौराष्ट्र या गुजरात या काठियावाड़ की मिट्टी, गोपी-चंदन, पावड़ी, पपड़ी, स्वर्ण-पर्पटी औषधि (वै॰)।

परपति–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पर+पति*) पर का पति।

परपराना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) तीक्ष्ण लगना, जलना, चुनचुनाना, किसी वस्तु के टूटने का अनुकरण-शब्द। **परपराहट**–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *परपराना*) तीक्षणता, चरपराहट।

परपाजा-परवाजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पराव्य*) बाबा या दादा का पिता।

परपार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूसरी ओर का तट या किनारा।

परपीड़क–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अन्य या दूसरे को कष्ट या दुख देने वाला, बैरी को दंड देने वाला, परंतप।

परपुरुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अन्य पुरुष, दूसरी स्त्री का पति।

परपुष्ट–संज्ञा, पु॰ यो॰ (सं॰) कोकिल, परसुत। वि॰ (सं॰) अन्य द्वारा पोषित, परपोषित।

परपूर–वि॰ दे॰ (सं॰ *परिपूर्ण*) परिपूर्ण, पूरा-पूरा, परिपूरन (दे॰)।

परपैठ-संज्ञा, पु॰ (दे॰) मुख्य हुण्डी की तीसरी प्रति, पहली हुंडी, दूसरी पर पैठ, तीसरी प्रति परपैठ कहलाती थी।

परपोता, पड़पोता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रपौत्र*) पोते का पुत्र, पुत्र का पोता।

परब–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्व*) पुण्यकाल, उत्सव, त्यौहार, पर्व, अंश, भाग, ग्रहण, परबी (आ॰)।

परवत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्वत*) पर्वत, पहाड़। वि॰ परवतिया।

परबल–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रबल*) प्रबल, बलवान, ~~ एक सरकारी, परबल।

परबस–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *परवश*) परतंत्र, पराधीन। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **परबसी**।

परबसताई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पर वश्यता*) परतंत्रता, पराधीनता, परबसी (दे॰) **परबसता**।

परबा–संज्ञा॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिपदा*) प्रतिवदा, परिवा, परीवा (दे॰)।

परचाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रवाल*) प्रबाल, मूँगा।

परवीन*–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रवीण*) प्रवीण, अतुर।

परबेस*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रवेश*) पैठ, गति, विषय-ज्ञान। यौ॰ दूसरे का वेश या रूप।

परबोध–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रबोध*) प्रबोध, शिक्षा, समझौता, यथार्थ ज्ञान, ढाढ़स, दिलासा, चितावनी, जगाना।

परब्रह्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परमात्मा, भगवान, निर्गुण, परमेश्वर, पारब्रह्म(दे॰)।

परभा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रभा*) प्रभा, दीप्ति, प्रकाश, कांति, शोभा, उजेला।

परभाई, परभाउ*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रभाव*) प्रभाव, शक्ति, महिमा, **परभाव, परभाय**।

परभात*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रभात*) प्रभात, सवेरा, लड़का।

परभाती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रभाती*) सबेरे गाने का एक राग या गीत, प्रभाती।

परभाग्योपजीवी–वि॰ यौ॰ (सं॰) पराश्रित, दूसरे के द्वारा जीवन बिताने वाला।

परभुक्त–वि॰ पु॰ यौ॰ (सं॰) अन्य से भोगा हुआ। स्त्री॰ **परभुक्ता**–दूसरे की भागी हुई।

परभृत–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ यो॰ (सं॰) कोकिल, कोयल, कोहली।

परम–वि॰ (सं॰) अत्यन्त, उत्कृष्ट, प्रभाव, श्रेष्ठ, अग्रगम्य, मुख्य, केवल।

परमगति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मुक्ति, मोक्ष, उत्तमगति।

परमतत्व–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परमात्मा, ब्रह्म, मूलतत्व।

पर-धर्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अन्य धर्म।

परमधाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्ग, बैकुंठ। **मु॰ परमधाम पाना (जाना)** मर जाना।

परमपद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुक्ति, मोक्ष।

परमपिता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परमात्मा।

परमपुरुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परमात्मा, परमेश्वर, ब्रह्म, विष्णु, पुरुषोत्तम।

परमफल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मोक्ष।

परमभट्टारक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक छत्र राजाओं की एक पदवी। (स्त्री॰ **परम भट्टारिका**)।

परमत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूसरे का मत या सिद्धान्त, अन्य समाप्ति।

परमल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिमल*) ज्वार या गेहूँ का उबाल कर भुना दाना।

परमलाभ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मोक्ष, अतिशय या अत्यन्त या उत्कृष्ट लाभ।

परमहंस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सन्यासी, योगी, अवधूत, सन्यासियों की ज्ञानावस्था, परमात्मा। संज्ञा, स्त्री. चरमहँसता।

परमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शोभा, सुन्दरता, सौन्दर्य।

परमाणु–संज्ञा, पु. (सं.) किसी पदार्थ का ऐसा छोटे-से-छोटे अंश जिसके फिर विभाग न हो सकें, बहुत ही छोटा अणु।

परमाणुवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बुद्धि को परमाणुओं से रचित मानने का सिद्धान्त।

परमात्मा–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *परमात्मन्*) परमेश्वर, ब्रह्म।

परमानंद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परमानन्द, ब्रह्म के अनुभव का सुख, समाधि का सुख, आनन्दस्वरूप ब्रह्म।

परमान*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रमाण*) प्रमाण सबूत, सत्य या यथार्थ वात, सीमा, हद।

परमान्न–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) उत्कृष्ट या श्रेष्ठ अस्त्र, जैसे–खीर, पूड़ी आदि।

परमायु–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.*परमायुस्*) जीवन-काल की सीमा का हद, मनुष्य की परमाणु भारत में 125 वर्ष है।

परमार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रमार, प्रमेर*) क्षत्रियों की एक जाति, **पँवार**।

परमारथ–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *परमार्थ*) मोक्ष, मुक्ति, सबसे उत्कृष्ट पदार्थ, यथार्थ तत्व।

परमार्थ–संज्ञा, पु. (सं.) सबसे श्रेष्ठ वस्तु, मोच, मुक्ति।

परमार्थ-परमारथवादी–संज्ञा, पु. (सं. *परमार्थ वादिन्*) ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञ, वेदांती।

परमार्थी–वि. (सं. *परमार्थिन्*) यथार्थ तत्व का खोजी, तत्वजिज्ञासु, मुमुद्ध।

परमिति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चरम या अन्त सीमा, मर्य्यादा, सीमित। संज्ञा, स्त्री. **परमितता**।

परमुख*–वि. दे. (सं. *पराङ्मुख*) विमुख, प्रतिकूलाचारी, विरुद्ध।

परमेश-परमेश्वर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं.) भगवान, परमात्मा, ब्रह्म, विष्णु, शिव, **परमेसुर** (दि.)।

परमेश्वरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दुर्गा, देवी, **परमेसुरी** (दे.)।

परमेष्टी–संज्ञा, पु. (सं. *परमेष्टिन्*) ब्रह्मा, विष्णु, शिव।

परमेसर-परमेसुर*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परमेश्वर*) परमेश्वर।

परयंक*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पर्य्यंक, पल्यंक*) पलंग, बड़ी चारपाई, शय्या, **परजंक** (दे.)।

परलउ-परलव-परलै-परलय*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रलय*) सृष्टि का प्रलय या नाश।

परला–वि. दे. (सं. *पर–उधर+ना प्रत्य.*) उधर का, उस ओर का। **मु. परले दरजे या सिरे का**–हद दरजे का, अत्यन्त, बहुत ज्यादा। (स्त्री. **परली**)।

परलोक–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं.) स्वर्ग, बैकुण्ठ, दूसरा लोक या जन्म, दूसरा शरीर। यौ. **परलोकवासी**–मरा हुआ। **मु. परलोक सिधारना (जाना)**–मर जाना, अन्य शरीर धारण, पुनर्जन्म।

परलोक-गमन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मृत्यु।

परवर*–संज्ञा, पु. (सं. *पटोल*) परवल। वि. (फा.) पालने वाला–जैसे, गरीब परवर। संज्ञा, स्त्री. (फा.) **परवरी**।

परवरदिगार–संज्ञा, पु. यौ. (फा.) परमेश्वर।

परवरिश–परवस्ती–(दे.)–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) परवरी, पालन-पोषण, सहायता।

परवल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पटोल*) एक लता या उसका फल जिसकी तरकारी बनती है।

परवश-परवश्य–वि. यौ. (सं.) परतंत्र, पराधीन।

परवश्यता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) परतंत्रता, पराधीनता, **परवशता**।

परवा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रतिपदा*) परिवा, परीवा, पड़वा, एकम। संज्ञा, स्त्री. (फा.) चिन्ता, आशंका, ध्यान, परवाह।

परवानगी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) आज्ञा, हुक्म, अनुमति, मंजूरी।

परवाना–संज्ञा, स्त्री. (फा.) आज्ञापत्र, पतंग, पाँखी, पतिंगा।

परवाय–संज्ञा, पु. (सं. *बाढ़*) ढक्कन, आच्छादन।

परवाल*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रबाल*) प्रवाल, मूँगा।

परवाह–संज्ञा, स्त्री. (फा.) चिन्ता, ध्यान, आसरा। संज्ञा, स्त्री. **परवाही**–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रवाह*) पानी का सोता, बहाव, धारा, काम जारी रहना, चलता हुआ

कम, सिलसिला।

परवी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मर्द*) पर्वकाल, उत्सव-समय, त्यौहार का दिन।

परवीन*–वि. दे. (सं. *प्रवीण*) निपुण, चतुर, दक्ष, कुशल। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **परवीनता,** (फा.) कृत्तिका नक्षत्र।

परवेख*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिवेश*) चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर हलके बादल का घेरा या मंडल।

परवेश-परवेस*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रवेश*) प्रवेश, पैठना, घुसना।

परश–संज्ञा, पु. (सं.) पारस पत्थर। संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्पर्श*) परस, स्पर्श, छूना।

परशु–संज्ञा, पु. (सं.) कुठार, तवर, भलुवा (अ.) फरसा।

परशुराम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जमदग्नि ऋषि के पुत्र, **परसुराम**।

परश्व–अव्य. (सं.) परसों, आने वाला तीसरा दिन।

परसंग*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रसंग*) प्रसंग सम्बन्ध, लगाव, विषय का लगाव, अर्थ की संगति, पुरुष-स्त्री का संयोग, बात, विपल, अवसर, कारण, प्रस्ताव, प्रकरण, विस्तार।

परस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्पर्श*) स्पर्श, छूना। यौ. **दरस-परस**। संज्ञा, पु. दे. (सं. *परस*) पारस पत्थर।

परसन*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सपर्शन*) छूना, छूने का कार्य या भाव। यौ. **दरसन-परसन**।

परसना*–क्रि. स. दे. (सं. स्पर्शन) स्पर्श करना, छूना, छुलाना। क्रि. स. दे. (सं. *परिवेषण*) परोसना।

परस-पखान–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *स्पर्श-पाषाण*) लोहे को सोना करने वाला पारस पत्थर।

परसा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *परसना*) पत्तल, एक पुरुष का भोजन।

परसाद*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परसाद*) प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा, दया, देवता का दिया या उस पर चढ़ाया हुआ पदार्थ, भोजन।

परसाना*–क्रि. स. दे. (हि. *परसना*) छुलाना, भोजन बँटवाना।

परसाल-पारसाल–अव्य. दे. यौ. (सं. *पर+साल फ़ा.*) पिछले वर्ष, आगामी वर्ष।

परसिद्ध*–वि. दे. (*प्रसिद्ध*) प्रसिद्ध, विख्यात।

परसिया–संज्ञा, पु. (दे.) हँसिया, दाँती।

परसु*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परशु*) कुठार, फरसा, परशु।

परसूत*†–वि. संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रसूत*) संजात, उत्पन्न, पैदा, उत्पादक। संज्ञा, पु. (दे.) एक रोग जो प्रसव के पीछे हो जाया करता है।

परसूती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रसूती*) वह स्त्री जिसके हाल में पुत्र उत्पन्न हुआ हो या जिसके प्रसूत रोग हुआ हो।

परसेद*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रसंद*) प्रस्वेद, पसीना।

परसों–क्रि. वि. (सं. *परश्वः*) बीते दिन के पहले का दिन, आगामी दिन के बाद का दिन।

परसोतम*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *पुरुषोत्तम*) पुरुषोत्तम, विष्णु, श्रेष्ठ पुरुष।

परसौंहाँ–वि. दे. (सं. *स्पर्श*) छूने या स्पर्श करने वाला।

परस्पर–क्रि. वि. आपस में, एक दूसरे के साथ, **परसपर** (दे.)।

परस्परोपमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक अलंकार, जिसमें उपमेय और उपमान परस्पर उपमान और उपमेय हों, उपमेयोपमा।

परस्मैपद–संज्ञा, पु. (सं.) क्रिया का एक भेद (सं. व्या.)।

परहरना*–क्रि. स. दे. (सं. *परिहरण*) छोड़ना, त्यागना।

परहार‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रहार*) प्रहार, चोट। संज्ञा, पु. (सं. *परिहार*) त्याग, उपाय, परिहार।

परहित–संज्ञा, पु. यो. (सं.) परोपकार, दूसरों की भलाई।

परहेज–संज्ञा, पु. (फा.) उन वस्तुओं से बचना जो स्वास्थ्य को हानिकारी हों। दोषों, दुर्गुणों या बुराइयों से बचना, संयम।

परहेजगार–संज्ञा, पु. (फा.) संयमकर्त्ता, संयमी।

परहेलना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रहेलना*) तिरस्कार, अनादर, अपमान करना।

परहोंक–संज्ञा, पु. (दे.) बोहनी।

पराँठा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पलटना*) परोठा, परौठा, परंठा, पराठा, तवा पर घी द्वारा सेंकी परतदार पूरी।

परा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दो विद्याओं में से एक, ब्रह्म विद्या, उपनिषद्-विद्या। संज्ञा, पु. (दे.) पाँति, पंक्ति, कतार (फ़ा.)।

पराइ-पराई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पर*) अन्य या दूसरे की। क्रि. अ. (दे.) भागना।

पराक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वृत्तविशेष (पिं॰) प्रायश्चितविशेष, तलवार या खड्ग, ध्रुव रोग-जन्तु, भेद।

पराकाष्ठा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीमांत चरमसीमा, अंत।

पराक्रम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शक्ति, वक्र, पौरुष, उद्योग, पुरुषार्थ। (वि॰ **पराक्रमी**)।

पराक्रमी–वि॰ (सं॰ *पराक्रमिन्*) बलिष्ठ, शक्तिशाली, पुरुषार्थी, वीर।

पराग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रज, फूल की धूल, पुष्प-रज, परग।

परागकेसर–संज्ञा, पु॰ वि॰ (सं॰) फूलों के वे बारीक-बारीक सूत जिनकी नोकों पर पराग होता है।

परागति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गायत्री।

परागना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *उपराग*) अनुरक्त या मोहित होना।

पराङ्मुख–वि॰ यौ॰ (सं॰) विमुख, विरुद्ध, उदासीन, जो ध्यान न दे।

पराजय–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हार, पराभव वि॰ **पराजित**–हारा हुआ।

पराजिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) परज नाम की एक रागिनी (संगी॰)।

पराजिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक लता, विष्णुकांता। वि॰ स्त्री॰ (सं॰) हारी हुई।

पराजेता–वि॰ (दे॰) एक लता विष्णुकांता। वि॰ स्त्री॰ (सं॰) हारी हुई।

पराजेता–वि॰ (सं॰) तवा पर सेंकी हुई घी से बनी परतदार पूड़ी या रोटी। **परेंठा, परौठा** (दे॰)।

परात–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पात्र*) बड़ी थाली कोपर (प्रान्ती॰)

परातिक्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक औषधि, लाल रंग का पुनर्नवा।

पराती–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) परात, थाल, संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रातःकाल गाने के योग्य भजन, प्रभाती।

परात्पर–वि॰ यौ॰ (सं॰) सर्वश्रेष्ठ, सब से बढ़िया। संज्ञा, पु॰ (सं॰) परमात्मा, विष्णु।

परात्मा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परमात्मा।

परादन–संज्ञा, पु॰ (फा॰) फारस देश का घोड़ा।

पराधीन–वि॰ (सं॰) परतंत्र, पर-वश।

पराधीनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) परतंत्रता, पर-वश्यता।

परान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्राण*) प्राण, जीव, जान।

पराना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पलायन*) भागना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्राण।

परानी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्राणी*) प्राणी, जीवधारी।

परान्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पराया अनाज, दूसरे का भोजन।

परापर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फालसा।

पराभव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हार, पराजय, विनाश, अपमान, तिरस्कार।

पराभिक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वानप्रस्थ, जो थोड़ी-सी भिक्षा से ही निर्वाह करते हैं।

पराभूत–वि॰ (सं॰) पराजित, हारा हुआ, नष्ट, ध्वस्त, अपमानित। स्त्री॰ **पराभूता**।

परामर्श–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खींचना, पकड़ना, विचार, विवेचन, युक्ति, सलाह।

परामर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सहना, तिनिक्षा, सलाई, निवृत्ति। फुसलाया, झाँसा, बहकावा।

परामृष्ट–वि॰ (सं॰) पकड़ कर खींचा हुआ, पीड़िता, विचार हुआ, निर्त्तीत।

परायण–वि॰ (सं॰) गया हुआ, गत, तत्पर, प्रवृत्त, लगा हुआ, (दे॰) परायन।

परायत्त–वि॰ (सं॰) परतंत्र, पराधीन, परवश।

पराया, पराय–वि॰ यु॰ दे॰ (सं॰ *पर*) अन्य या दूसरे का, घिराना (दे॰) (स्त्री॰ पराई)।

परायु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मा।

परार–वि॰ दे॰ (सं॰ *पर*) पराया, अन्य या दूसरे का। संज्ञा, पु॰ (दे॰) पयाल।

परारध*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परार्द्ध*) एक शंख की संख्या, ब्रह्मा की आयु का आधा समय।

परारब्ध-परालब्ध–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रारब्ध*) भाग्य, दैव, अदृष्ट।

परारि–वि॰ (सं॰) बीता या आगे आने वाला वर्ष।

परार्थ–वि॰ यौ॰ (सं॰) परोपकार, दूसरे का कार्य, जो दूसरे के अर्थ हो, पर निमित्तक।

परार्द्ध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक शंख की संख्या, ब्रह्मा की अर्ध आयु।

परार्द्धि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु, ऋद्धिवान।

परासूर्य–वि॰ (सं॰) श्रेष्ठ, प्रधान, सर्वोत्कृष्ट।

पलाल–सज्ञा, पु॰ (दे॰) (स॰ *पलाल*) घास, तृष्णा, पलाल (दे॰)।

परावत–सज्ञा, पु॰ (स) फालसा।

परावन–सज्ञा, पु॰ दे॰ (हि *पराना*) भगदड, भागना। अ क्रि॰ (दे॰) **परावना**। सज्ञा, पु॰ (स॰ *पर्व*) पर्व।

परावना–सज्ञा, पु दे (स॰ *पर्व*) पुरुष काल, पर्व।

परावर–वि॰ (स॰) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, पास या दूर का, इधर-उधर का।

परावर्त–सज्ञा, पु॰ (स) लोटना, पलटाव, अदल-बदल, लेन-देन।

परावतन–सज्ञा, पु (स) लौटना, पलटना, पीछे फिरना। (दि **परावर्तित, परावर्तनीय**)।

परावर्तित–वि (स) पीछे फेरा या छलका हुआ, छलकाया।

परावसु–वि (स) असुरो का पुरोहित एक गधर्व, विश्वामित्र का एक पुत्र।

परावह–सज्ञा, पु (स) एक वायु भेद।

पराधा, पराध–सज्ञा, पु (स *पर*) अन्य या दूसर का, **पराव, पराया** (दे)।

परावृत्त–वि (स) फरा, लाटा या बदला हुआ उलटा हुआ।

परावृत्ति–वि (स) पलटाव, मुकदमे का पुनर्विचार, पुनरावृति।

परावेदी–सज्ञा, स्त्री (स) भटकटैया, कटई, कटरी, **कटकारी** (स)।

पराशर–सज्ञा, पु (स) वशिष्ठ और शक्ति के पुत्र (पुरा) एक स्मृतिकार, व्यास के पिता।

पराश्रय–वि वो (स) परतत्र, पराधीनता, परवशता, पर का सहारा। वि पराश्रित।

परास*।–सज्ञा, पु दे (स॰ *पलाश*) एक पेड और उसके पत्ते, टेसु, छिउल।

परासी–सज्ञा, स्त्री (दे) एक रागिनी, (सगी)।

परासु–वि॰ (स) प्राण-हीन, गतप्राण, मृतक, गत-जीवन।

परास्त–वि (स॰) हारा हुआ, पराजित, विजित, पराभूत, ध्वस्त।

पराह–सज्ञा, पु॰ (स) भगदढ, भागाभाग, दश-त्याग, भगाढ। क्रि॰ अ॰ (दे॰) **पराहना**।

पराह–वि॰ (स॰) अपरान्ह, दोपहर के पीछे का वक्त, तीसरा पहर, दिन का दूसरा भाग।

परि- उप (स॰) सर्वताभाव, वर्जन, व्याधि, शेष, इस प्रकार आहवान भाग, वीप्सा, आलिगन, लक्षण, दोषाख्यान, *दोष कथन, निरसन, पूजा, व्यापकता, विस्मृत, भूषण, उपरमा शोक, सतोष, भाषण, चारो ओर, अच्छी तरह,* पूर्णता, अतिशय, विषय-क्रमादि अर्थ सूचक है।

परिक–सज्ञा, स्त्री (स॰) खोटी चॉदी।

परिकर–सज्ञा, पु (स॰) कटि-बधन, कमरबद, पलग, चारपाई, परिवार, सभारम्भ, समूह, वृन्द, सहकारी, विवेक। साभिप्राय विशेषणा वाला एक अर्थालकार (अ॰ पी॰)।

परिकरमा*- सज्ञा, पु दे (स॰ *परिक्रमा*) परिक्रमा, प्रदक्षिणा।

परिकरांकुर–सज्ञा, पु (स) एक अर्थालकार, जिसमे साभिप्राय विशेष्य आता है (अ॰ पी)।

परिकर्म- सज्ञा, पु (स) कुकुम आदि के द्वारा अग-सस्कार, स्नान करना, उबटन लगाना।

परिकर्मा–सज्ञा, पु (स) सेवक, दास, टहलुआ, किकर।

परिकल्पन–सज्ञा, पु (स) प्रबचन, दगाबाजी, धोखाधडी, छल।

परिकल्पना सज्ञा, स्त्री (स) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, उद्योग, कर्म, क्रिया (अ) फैटेसी

परिकीर्ण–वि (स) व्याप्त, विस्तृत, समर्पित।

परकीर्तन–सज्ञा पु (स) प्रस्ताव, स्तुति, बडाई, प्रतिष्ठा या प्रशसाकरण।

परिकूट–सज्ञा, पु (स) वि शहर के फाटक की खाई।

परिक्रम–सज्ञा, पु (स॰) टहलना, फेरी देना, घूमना।

परिक्रमण-सज्ञा, पु (स॰) टहलना, घूमना, परिक्रमा करना। वि **परिक्रमणीय**।

परिक्रमा–सज्ञा, स्त्री (स॰) प्रदक्षिणा, किसी के चारो ओर घूमना, फेरी या चक्कर दना, किसी देव-मदिर आदि के चारो ओर घूमने का मार्ग, **परिकरमा** (दे)।

परिक्षत–वि (स) नष्ट, भ्रष्ट।

परिक्षय- सज्ञा, पु (स॰) छीव।

परिक्षा, परिच्छा–सज्ञा, स्त्री दे (स॰ *परीक्षा*) परीक्षा, इम्तहान, जॉच, दखभात।

परिक्षित, परीछित–सज्ञा, पु दे (स *परीक्षित*) राजा परीक्षित। वि (दे) परीक्षा लिया हुआ।

परिक्षिम–वि॰ (स॰) खॉई आदि से घिरा हुआ।

परिक्षीद्रा–वि. (सं.) निर्धन, कंगाल।

परिखन–वि. दे. (हि. *परिखना*) रक्षक, चौकसी या रखवाली करने वाला।

परिखना†–क्रि. स. दे. (हि. *परखना*) परखना, परीक्षा या जाँच करना, बुरा-भला पहिचानना, प्रतीक्षा करना।

परिखा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) खाँई, खंदक।

परिखना–क्रि. स. दे. (हि. परखना) जँचाना, परखना, परीक्षा या प्रतीक्षा कराना।

परिख्यात–वि. (सं.) विख्यात, प्रसिद्ध।

परिगणन–संज्ञा, पु. (सं.) गिनना, गणना करना। वि. **परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य**।

परिगणित–वि. (सं.) ठीक-ठीक गिना हुआ।

परिगत–वि. (सं.) प्राप्त, लब्ध, विदित, ज्ञात, विस्मृत, गत, वेष्टित।

परिगह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिग्रह*) कुटुंबी, आश्रित जन, संगी-साथी।

परिगहना–क्रि. स. (हि. *परिगह*) ग्रहण या अंगीकार करना।

परिगुंठित–वि. (सं.) ठका या छिपा हुआ।

परिगृहीत–वि. (सं.) मंजूर, स्वीकृत, मिला हुआ, शामिल।

परिगृह्या–वि. स्त्री. (सं.) विवाहिता स्त्री, धर्म-पत्नी।

परिग्रह–संज्ञा, पु. (सं.) स्वीकार, प्रमिग्रह, दान लेना, भार्या, पत्नी, विवाह, परिवार, ग्रहण। वि. **परिग्रहा** (सं.)। धनादि- संग्रह।

परिग्रहण–संज्ञा, पु. (सं.) पूर्ण रूप से लेना, ग्रहण करना, कपड़े पहनना। वि. **परिग्रहणीय।**

परिघ–संज्ञा, पु. (सं.) लोहे की लाठी, अर्गला, घोड़ा, तीर, भाला, बरछी, गदा, मुद्गर, घर, फाटक, बाधा, प्रतिबंध।

परिघोष–संज्ञा, पु. (सं.) शब्द विशेष, मेघध्वनि, कटु शब्द।

परिचय–संज्ञा, पु. (सं.) ज्ञान, जान-पहचान, जानकारी, अभिज्ञता, लक्षण, प्रमाण, किसी पुरुष के नाम, ग्राम, गुण आदि की विशेष जानकारी।

परिचयक–वि. (सं.) ज्ञापक, बोधक, परिचय या जान-पहिचान कराने वाला।

परिसर–संज्ञा, पु. (सं.) सेवक, टहलू (दे.) **टहलुवा** (आ.) रोगी का सेवक, सहायक।

परिचरजा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *परिचर्या*) सेवा, रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दासी, टहलुई।

परिचर्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) टहल, सेवा, रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचायक–संज्ञा, पु. (सं.) जान-पहचान या परिचय कराने वाला, सूचक, सूचित करने वाला।

परिचार–संज्ञा, पु. (सं.) टहल, सेवा, सैर या टहलने की जगह।

परिचारक–संज्ञा, पु. (सं.) भृत्य, सेवक, नौकर-चाकर, रोगी की सेवा करने वाला।

परिचारण–संज्ञा, पु. (सं.) सुश्रूषा या सेवा करना, साथ या संग करना या रहना।

परिचारना*–क्रि. स. दे. (सं. *परिचारण*) सेवा या सुश्रूषा करना।

परिचारिक–संज्ञा, पु. (सं.) दास, सेवक।

परिचारिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सेवकिनी, दासी।

परिचालक–संज्ञा, पु. (सं.) चलाने वाला।

परिचालन–संज्ञा, पु. (सं.) चलाना, हिलाना, गति देना, कार्यक्रम का जारी रखना, चलने की प्रेरणा करना। वि. **परिचालित, परिचालनीय।** क्रि. स. (दे.) **परिचालना।**

परिचालित–वि. (सं.) चलाया या हिलाया हुआ, कार्यक्रम जारी किया हुआ।

परिचित–वि. (सं.) ज्ञात जाना-समझा, जाना-बूझा, परिचय-प्राप्त, अभिज्ञ।

परिचिति–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *परिचय*) जानकारी, अभिज्ञता, लक्षण, प्रमाण।

परिचेय–वि. (सं.) परिचय के योग्य।

परिच्छद–संज्ञा. पु. (सं.) आच्छादन, कपड़ा ढकने का वस्त्र, पट-परिधान, सामान, परिवार, राज-सेवक, राजचिह्न।

परिच्छन–वि. (सं.) छिपा या ढका हुआ, वक्षयुक्त, स्वच्छ किया हुआ।

परिच्छिन्न–वि. (सं.) सीमा या मर्यादा-युक्त, परिमित, विभक्त।

परिच्छेद–संज्ञा, पु. (सं.) टुकड़े या खंड करना, विभाजन, पुस्तक का कोई स्वतंत्र भाग, अध्याय, प्रकरण।

परिछन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *परछन*) **परछन** (दे.) विवाह में द्वाराचार पर वर की आरती आदि की रश्म।

परिछाहीं–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *परछाई)* **परिछाई** (दे॰)ए प्रतिबिम्ब। "जल विलोकि तिनकी परछाँई"–रामा॰।

परिजंक*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्यंक)* पचांग, पर्य्यंक, **प्रजंक, पजक, परजंक** (दे॰)।

परिजटन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्यटन)* पर्यटन, घूमना-फिरना, टहलाना, यात्रा करना।

परिजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परिवार, कुटुम्ब, नातेदार, स्वजन, सेवक।

परिक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ज्ञान, बुद्धि।

परिज्ञात–वि॰ (सं॰) ज्ञात, समझा-बूझा।

परिज्ञान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पूरा ज्ञान।

परिणत–वि॰ (सं॰) परिणाम प्राप्त, पक्क, पका या झुका हुआ, रूपांतरित, बदला हुआ, पचा हुआ।

परिणति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) फल, रूपांतर होना या बदलना, प्रौढ़ता, पुष्टि, परिपाक, पचा हुआ, अंत। (अं॰) कलमिनेशन।

परिणय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विवाह, ब्याह।

परिणाम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रूपांतर प्राप्ति, बदलना, रूप परिवर्त्तन, अवस्थांतर प्राप्ति। विकृति, विकार, स्थिति-भेद (योग॰) विकास, वृद्धि, परिपुष्टि, बीतना, फल, नतीजा, एक अर्थालंकार, जिसमें उपमान उपमेय का कार्य (उससे एक रूप होकर) या कोई कार्य करता है (अ॰ वि॰)।

परिणामदर्शी–वि॰ यौ॰ (सं॰ *परिणाम दर्शिन्)* दूरदर्शी, सूक्ष्मदर्शी, फल को विचार कर काम करने वाला। वि॰ **परिणामदर्शक**। संज्ञा, यौ॰ **परिणामदर्शन**।

परिणामदृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) किसी कार्य के फल के जान जाने की शक्ति।

परिणामवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) संसार की उत्पत्ति और नाश आदि का नित्य परिणाम के रूप में मानना (वाक्य॰) वि॰ **परिणामवादी**।

परिणामी–वि॰ (सं॰ *परिणामिन्)* जो लगातार बराबर बदलता रहे। स्त्री॰ **परिणामिनी**।

परिणय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्याह, विवाह।

परिणायक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वामी, पति, पाँसा खेलने वाला।

परिणायकरत्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बौद्ध चक्रवर्त्तियों के सप्तधन-कोषों में से एक।

परिणाह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विस्तार, विशालता, चौड़ाई, आकर, आकृति, दीर्घस्वाँस।

परिणीत–वि॰ (सं॰) विवाहित, जिसका विवाह हो चुका हो, पूर्ण, समाप्त।

परिणीता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पाणिगृहीता, विवाहिता, ब्याही हुई स्त्री, ऊढ़ा (नायि॰)।

परिणंता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भर्ता, पति।

परिणेय–वि॰ पु॰ (सं॰) ब्याहने योग्य, वि॰ स्त्री॰ परिणेया।

परितः–अ॰ (सं॰) सर्वतः, चारों ओर, चारों ओर से।

परिताप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनस्ताप, संताप, क्लेश, शोक, दुख, पश्चाताप, आँच, ताब। **परितापित**।

परितापन–संज्ञा, पु॰ (हि॰) संताप देना। वि॰ **परितापनीय**।

परितापी–वि॰ (स॰ *परितापिन्)* व्यथित, दुखित, पीड़ा देने या सताने वाला, जिसको परिताप हो। वि॰ (सं॰ *प्रतापिन्)* प्रतापी, **परतापी** (दे॰)।

परितुष्ट–वि॰ संज्ञा, (सं॰ *परितुष्टि)* संतोष संतुष्ट, प्रसन्न, आनन्दित, खुश।

परितुष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सम्बक् संतोष, तृप्ति, आह्लाद, हर्ष, आनन्द

परितृप्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्यक् तृप्त।

परितृप्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तृप्ति, अछाई, सन्तोष, हर्ष, पूर्णता, संतुष्टि।

परितोष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तृप्ति, प्रबलता, संतोष। वि॰ **परितोषित, परितोषी**।

परितोषक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तृप्ति या संतोष करने वाला, प्रसन्न करने वाला।

परितोषण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परितुष्टि, संतोष। वि॰ **परितोषणीय**।

परितोस*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परितोष)* परितोष, संतोष, तृप्ति।

परित्यक्त–वि॰ (सं॰) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, दूर किया या फेंका हुआ। स्त्री॰ **परित्यक्ता**।

परित्याग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) त्यागना, छोड़ना, निकाल या अलग कर देना। वि॰ **परित्यागी**।

परित्याज्य–वि॰ (सं॰) त्यागने-योग्य, छोड़ने के योग्य, अलग या दूर करने योग्य।

परित्राण–संज्ञा, पु. (सं.) रक्षा, बचाव।
परित्रात–वि. (सं.) रक्षित, पालित।
परित्राता–वि. (सं.) रक्षक, पालक।
परिदान–संज्ञा, पु. (सं.) परिवर्तन, विनिमय, बदला, लेन-देन।
परिदेवक–वि. (सं.) विलाप-कर्त्ता, दुख देने वाला, दुखदायी, जुआरी।
परिदेवन–संज्ञा, पु. (सं.) पश्चाताप, पछतावा, विलाप, जुआ का खेल। स्त्री. **परिदेवना**।
परिध–संज्ञा, पु. (सं. परिधि) परिधि
परिधन–*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिधान*) परिधान, धोती, कपड़ा, अधोवस्त्र।
परिधान–संज्ञा, पु. (सं.) वस्त्र धारण करना, कपड़ा पहनना, वस्त्र धोती, कपड़ा।
परिधि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) घेरा, मंडल, कुणदल, गोला, कपड़ा, वस्त्र, परिवेश।
परिधेय–वि. (सं.) पहनने के योग्य। संज्ञा, पु. (सं.) वस्त्र, कपड़ा।
परिध्वंस–संज्ञा, पु. (सं.) अपचय, नाश, ऋति, हानि, एक वर्णसंकर जाति।
परिनय*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिणय*) विवाह, ब्याह, पाणि-ग्रहण।
परिनिर्वाण–संज्ञा, पु. (सं.) पूर्ण मोक्ष, मुक्ति, छुटकारा।
परिनिष्ठित–वि. (सं.) परिज्ञात, ज्ञानी, प्रतिष्ठित, सम्मानित।
परिन्यास–संज्ञा, पु. (सं.) काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूर्ण हों, नाटक में मूल घटना का संकेत से सूचना करना (नाटय.)।
परिपक्व–वि. (सं.) पूर्णतया पका या पचा हुआ। संज्ञा, स्त्री. **परिवकता**–पूर्ण रूप से फूला हुआ, प्रौढ़, अनुभवी, कुशल, प्रवीण।
परिपंथी–संज्ञा, पु. (सं. *परिपंथिन्*) शत्रु, रिपु, विपक्षी, चोर, डग, लुटेरा।
परिपाक–संज्ञा, पु. (सं.) पलना, पकाया जाना, प्रौढ़ता, पूर्णता, अनुभव, निपुणता, कुशलता, चतुरता, जानकारी, बहुदर्शिता।
परिपाटी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रीति, पद्धति, ढंग, शैली, सिलसिला क्रम प्रथा।
परिपार–संज्ञा, पु. (सं. *पालि*) सीमा, मर्यादा।
परिपालन–संज्ञा, पु. (सं.) रक्षा, बचाव, बचाना। वि. **परिचाल्य, परिचालनीय**।
परिपालक–संज्ञा, पु. (सं.) रक्षा-कर्त्ता, पालन करने वाला।
परिपालित–वि. (सं.) रक्षित, पाला हुआ।
परिपिष्टक–संज्ञा, पु. (सं.) सीसा, धातु।
परिपुष्ट–वि. (सं.) जो भली-भाँति पाला-पोषा गया हो, **पोढ़ प्रौढ़** (दे.)।
परिपूत–वि. (सं.) पवित्र, शुद्ध।
परिपूरक–वि. (सं.) पूरा करने वाला।
परिपूरन–वि. दे. (सं. *परिपूर्ण*) परिपूर्ण, पूर्णतृप्त, अघाया हुआ, भरा हुआ, समाप्त किया हुआ।
परिपूरित–वि. (सं.) भली-भाँति या पूरा भरा हुआ, प्रपूर्ण।
परिपूर्ण–वि. (सं.) (वि. *परिपूरित*) पूर्णरूप से तृप्त, भली-भाँति अघाया या भरा हुआ, सब।
परिपोपक–वि. (सं.) पोषण-कर्त्ता, पालने वाला, भरण-पोषण करने वाला।
परिपोषण–संज्ञा, पु. (सं.) पालना और सेना, पालन-पोषण करना। वि. **परिपोषणीय**।
परिपोषित–वि. (सं.) पालित, पोषित, पाला-पोषा हुआ, परिपुष्ट।
परितृप्त–संज्ञा, पु. (सं.) पैरना, तैरना, बाढ़; पूरी तरह से तृप्त।
परिप्लुत–वि. (सं.) डूबा हुआ, भीगा।
परिब्राजक–संज्ञा, पु. दे. (सं.) सन्यासी, अवधूत, सदा घूमने वाला।
परिभद-परिभाष–संज्ञा, पु. (सं.) अपमान, तिरस्कार, अनादर, पराजय, हार, पराभव, अवज्ञा, हेयबुद्धि।
परिभावना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चिंता, सोच, ऐसा वाक्य जो उत्सुकता या कुतूहल सूचित करे (साहि.)।
परिभाषण–संज्ञा, पु. (सं.) निन्दा-सहित कथन, बुरा व्याख्यान या भाषण।
परिभाषा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) परिष्कृत भाषा, प्रज्ञप्ति, सांकेतिक नियम, स्पष्ट गुण-कथन, (सं.) यश-रहित कथन, लक्षण, परिचय।
परिभाषित–वि. (सं.) भली-भाँति कहा हुआ, जिसकी परिभाषा की गई हो।

परिभू–संज्ञा, पु॰ (मं॰) परमेश्वर, भगवान।

परिभूत–वि॰ (सं॰ *परि+भू+क्त*) पराजित, अपमानित, हराया हुआ।

परिभ्रमण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घूमना, टहलना, घूमना, फिरना, चक्कर लगाना, पर्यटन।

परिभ्रष्ट–वि॰ (सं॰) पतित, विनष्ट, गिरा हुआ, च्युत।

परिमंडल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गोला, घेरा।

परिमल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुगंधि, सुवास, संभोग, मैथुन, उबटना, मलना। वि॰ **परिमलित**।

परिमाता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माप, तौल, वि॰ **परिमेय,** वि॰ **परिमित**।

परिमान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) परिष्कारक, परिशोधक, माँजने या धोने वाला।

परिमार्जन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परिष्करण, परिशोधन, माँजना या धोना, वि॰ **परिमार्जनीय, परिमार्जित, परिसृष्ट**।

परिमार्जित–वि॰ (सं॰) शुद्ध या साफ किया जा माँजा-धोया हुआ, परिष्कृत।

परिमित–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीमा बद्ध, निश्चित संख्या में, उचित माप में, कम, थोड़ा, अल्प, संकीर्ण, सीमित।

परिमितव्यय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नियमित या समझा-बुझा, ठीक-ठीक खर्च, किफायतशारी. कम खर्च, मापा, तोला हुआ, ठीक-ठीक। संज्ञा, स्त्री॰**परिमितव्ययता**।

परिमितव्ययी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कम खर्च करने वाला, समझ-बूझ कर खर्च करने वाला, किफायतदार।

परिमिति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तौल, माप, सीमा, मर्यादा, परिमाण।

परिमेय–वि॰ (सं॰) जो तोला या मापा जा सके, तोलने या मापने के योग्य, थोड़ा कम।

परिमोक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पूर्ण मुक्ति या मोक्ष, निर्वाण, परित्याग।

परिमोक्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मोक्ष या मुक्त करना या होना, परित्याग करना, छोड़ना।

परियंक-पर्जंक*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्यंक*) पर्यंक, पलँग, बड़ी चारपाई, **प्रजक, परजंक** (दे॰)।

परियत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्यंत*) पर्यन्त, तक, लौं, **परजंत, प्रजंत** (दे॰)।

परिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*तामिल-पैरयान*) एक नीच जाति दक्षिण भा॰) सा॰ भू॰ कि॰ अ॰ (दे॰) पड़ा।

परिरंभ-परिरंभणा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आलिंगन, गले या छाती से लगा कर मिलना। वि॰ **परिरंभ्य, परिरंभी**। वि॰ **परिरंभणीय**।

परिरंभक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आलिंगन करने या मिलने वाला।

परिरंभना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *परिरंभ+ना प्रत्य॰*) आलिंगन करना, गले या छाती से लगाना।

परिलंघन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भाचक्र का 27 अंश पर एक कल्पित वृत्त रेखा।

परिलेख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चित्र या ढाँचा, खाका, चित्र, तसवीर, चित्र खींचने की कुँची या क़लम, उल्लेख वर्णन।

परिलेखन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी के चारों ओर रेखाएँ खींचना, खाका, चित्र, वर्णन।

परिलेखना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *परिलेख+ना प्रत्य॰*) मानना, जानना, समझना।

परिवर्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चक्कर, फेरा, घुमाव, विनिमय, बदला।

परिवर्तक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घूमने-फिरने या चक्कर खाने वाला, घुमाने या चक्कर देने वाला, उलटने-पलटने या बदलने वाला।

परिवर्तन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आवर्तन, चक्कर, फेरा, घुमाव, अदल-बदल, रूपान्तर, हेर-फेर। वि॰ **परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती**।

परिवर्तित–वि॰ (सं॰) रूपांतरित, बदला हुआ, बदले में प्राप्त।

परिवर्ती–वि॰ (सं॰ *परिवर्तिन्*) बारम्बार बदलने वाला, परिवर्तनशील, जो बराबर घूमे। स्त्री॰ **परिवर्तिनी**।

परिवर्द्धक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परिवर्द्धक, अति बढ़ाने या तरक्की करने वाला।

परिवर्द्धन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परिवृद्धि, तरक्की, बढ़ती **प्रवर्धन**। वि॰ **परिवर्द्धित, परिवर्धनीय**।

परिवर्द्धित–वि॰ (सं॰) उन्नति या वृद्धि किया या बढ़ाया हुआ, प्रवर्धित।

परिवह–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक पवन, अग्नि की जीभ।

परिवा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिपदा*) प्रतिपंदा, पड़िवा, परेवा,

परीवा (आ.)।

परिवाद—संज्ञा, पु. (सं.) अपवाद, निन्दा।

परवादिनी-परिवादिनि—संज्ञा, स्त्री. (सं.) वीणा बजाने वाली।

परिवादी—वि. (सं.) निन्दक, निन्दा करने वाला।

परिवार—संज्ञा, पु. (सं.) आवरण, कोष, वंश, कुटुम्ब, कुल।

परिवास—संज्ञा, पु. (सं.) घर, मकान, सुगन्धि, ठहरना।

परिवाह—संज्ञा, पु. (सं.) जलधारा का तीव्र बहाव, बाढ़, प्रवाह।

परिवृत—वि. (सं.) वेष्टित, आभृत, ढका, छिपा या घिरा हुआ।

परिवृत्ति—संज्ञा, स्त्री. (सं.) वेष्टन, ढकने, घेरने या छिपाने वाला पदार्थ।

परिवृति—संज्ञा, पु. (सं.) वेष्टित, घेरा हुआ, उलटा-पलटा हुआ।

परिवृत्त—संज्ञा, स्त्री. (सं.) वेष्टन, घेरा, घुमाव, चक्कर, समाप्ति, बदला, अर्थान्तर, बिना शब्द परिवर्तन (व्या.)। संज्ञा, पु. एक अलंकार जिसमें लेन-देन या विनिमय का कथन हो (अ. पी.)।

परिवृद्धि—संज्ञा, स्त्री. (सं.) परिवर्द्धन।

परिवेद—संज्ञा, पु. (सं.) पूर्णज्ञान, ज्ञान।

परिवेदन—संज्ञा, पु. (सं.) पूर्णज्ञान, विचरण लाभ, बहस, दुख, बड़े भाई से पहले छोटे का ब्याह होना।

परिवेश—संज्ञा, पु. (सं.) घेरा, वेष्टन।

परिवेष-परिवेषण—संज्ञा, पु. (सं.) भोजन, परोसना, **परसना** (आ.), वेष्टन, घेरा, सूर्यादि के चारों ओर के बादल का मंडल, काट, परकोटा, शहर-पनाह। वि.**परिवेषणीय, परिवेष्टव्य, परिवेष्य**।

परिवेष्टन—संज्ञा, पु. (सं.) आवरण, आच्छादन, घेरा। वि. **परिवेष्टित, परिवेष्टनीय**।

परिव्रज्या—संज्ञा, स्त्री. (सं.) भ्रमण, तपस्या, भिखारी सा गुजर करना या जीवन-निर्वाह।

परिव्राज-परिव्राजक—संज्ञा, पु. (सं.) संन्यासी, परमहंस, ब्रती।

परिब्राट, परिब्राड्—संज्ञा, पु. (सं.) परिब्राज, संन्यासी, साधु।

परिशिष्ट—वि. (सं.) अवशेष, बाकी। संज्ञा पु. (सं.) किसी कारण ग्रंथ में प्रथम न दिया जा सका किन्तु अंत में दिया उपयोगी, आवश्यक या महत्त्वपूर्ण बातों का अंश।

परिशीलन—संज्ञा, पु. (सं.) किसी विषय को भली-भाँति सोचने-विचारने ध्यान लगा कर पढ़ना, स्पर्श करना। "ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे"—गीत गो.। वि. **परिशीलित, परिशीलनीय**।

परिशुद्ध—वि. (सं.) परिष्कृत, परियोजित, पवित्र, शुद्ध, साफ़-सुथरा।

परिशुष्क—वि. (सं.) बहुत सूखा।

परिशेष—वि. (सं.) बाकी, बचा हुआ। संज्ञा, पु. (सं.) अवशेष, परिशिष्ट, अन्त।

परिशोध—संज्ञा, पु. (सं.) पूरी सफ़ाई, पूर्ण, शुद्धि, चुकता, वेबाकी।

परिशोधक—संज्ञा, पु. (सं.) चुकता या बेवाक करने वाला, सफ़ाई या शुद्धि करने वाला। **परिशोधित**।

परिशोधन—संज्ञा, पु. (सं.) पूर्णरूप से शुद्ध या साफ़ करना, चुकता या बेबाकी करना। वि. **परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित**।

परिश्रम—संज्ञा, पु. (सं.) मेहनत, आयास, श्रम, क्रेश, उद्यम, थकावट, श्रांति।

परिश्रमी— *परिश्रमिन्)* मेहनती, उद्यमी, श्रम करने वाला।

परिश्रय—संज्ञा, पु. (सं.) रक्षा या आश्रय का स्थान, परिषद्, सभा।

परिश्रांत—वि. (सं.) थका या हारा हुआ।

परिश्रुत—संज्ञा, पु. (सं.) प्रसिद्ध, विख्यात।

परिषत्-परिषद्—संज्ञा, स्त्री. (सं.) सभा-समाज, किसी विषय पर व्यवस्था देने वाली विद्धत्सभा।

परिष्कार—संज्ञा, पु. (सं.) सफ़ाई, शुद्धि, संस्कार, निर्मलता, स्वच्छता, भूषण, गहना, शृंगार, सजावट।

परिष्क्रिया—संज्ञा, स्त्री. (सं.) शोधन, मार्जन, धोना, सजाना, माँजना, सँवारना।

परिष्कृत—वि. (सं.) शुद्ध या स्वच्छ किया हुआ, धोया-माँजा हुआ, सजाया या सँवारा हुआ, परिमार्जित।

परिष्वंग—संज्ञा, पु. (सं.) आलिंगन समण।

परिसंख्या—संज्ञा, स्त्री. (सं.) गिनती, गणना।

परिसर—संज्ञा, पु. (सं.) निकास, कगर बँधा इलाका, (अं.) कम्पलैक्स।

परिसर्प—परिक्रमण, घूमना, फिरना, टहलना, खोजना। संज्ञा,

पु. **परिसर्पण**–किसी पात्र का किसी की खोज में मार्गगत चिन्हों से भटकना। 11 कुष्ठों में से एक (सुश्रु.)।

परिस्तान–संज्ञा, पु. (फा.) परियों का देश, सुन्दर स्त्रियों के जमाव का स्थान।

परिस्फुट–वि. (सं.) जाहिर, प्रगट, प्रकाशित, खिला हुआ, फूला हुआ। संज्ञा, पु. **परिस्फुटन**।

परिस्यंद–संज्ञा, पु. (सं.) झरना, रसना।

परिहँस, परिहस*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिहास*) हँसी, परिहास, दिल्लगी, ईर्ष्या, डाह।

परिहत–वि. (सं.) मरा, मृत।

परिहरण–संज्ञा पु. छीन लेना, (सं.) परित्याग, छोड़ना, तजना, दोष निवारण, निराकरण। वि. **परिहार्य, परिहर्तव्य, परिहृत।**

परिहरना*–कि. स. (सं. *परिहरण*) तजना, छोड़ना, त्यागना।

परिहरि–क्रि. स. पू. फा. (हि. *व. परिहरना*) त्याग या छोड़कर।

परिहा–संज्ञा पु. (दे.) बारी से आने वाला ज्वर, एक प्रकार का छन्द (पिं.)।

परिहाना*–क्रि. स. दे. (सं. *प्रहार*) प्रहार करना, मारना। संज्ञा पु. (दे.) हँसी दिल्लगी, मजाक, खेल, क्रीड़ा।

परिहार–संज्ञा पु. (सं.) (पि. *परिहारक*) बुराई, ऐब, दोष, अनिष्ट आदि के दूर करने का उपाय या याक्ति, उपचार, औषधि, इजाज, परित्याग, त्यागने का काम, पशुओं के चने की पड़ती भूमि, विजय-धन, छूट, खंडन, तिरस्कार, उपेक्षा, अनुचित कार्य का प्रायश्चित। संज्ञा पु. (सं.) राजपूतों का एक वंश।

परिहारना–क्रि. स. (दे.) प्रहार करना, मारना।

परिहारी–संज्ञा पु. (स. *परिहारिन्*) त्याग, निवारण, दोष या कलंक को छिपाने या मिटाने वाला। संज्ञा स्त्री. (प्रान्ती.) हल की एक लकड़ी।

परिहार्य–वि. (सं.) परिहार-योग्य, बचाव, या त्याग के योग्य, निवारण करने योग्य।

परिहास–संज्ञा पु. (सं.) उपहास, दिल्लगी, कुतूहल, कौतुक।

परिहास्य–संज्ञा पु. (सं.) हँसने या हास्य के योग्य, उपहास्य, हँसी का पात्र।

परिहित–वि. (सं.) वेष्टित, आच्छादित, परिधान किया या पहना हुआ।

परी–संज्ञा स्त्री. (फा.) तेल निकालने की करछी, अप्सरा, देवाँगना, स्वर्ग-वधूटी, परमसुन्दरी, काफ, पहाड़ की कल्पित सुन्दर परदार स्त्री (फा.)।

परीच्छित–वि. (सं.) अन्य या दूसरे का इष्ट या ईप्सित, चाहा हुआ। **परीक्षित**–संज्ञा स्त्री. (सं.) परीक्षित राजा। वि. जाँचा हुआ।

परीक्षक–संज्ञा पु. (सं.) परीक्षा या इम्तिहान लेने वाला, जाँच-पड़ताल करने वाला। संज्ञा, स्त्री. **परीक्षिका।**

परीक्षण–संज्ञा पु. (सं.) जाँच-पड़ताल करना, इम्तहान लेना, निरीक्षण। वि. **परीक्षणीय।**

परीक्षा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) इम्तिहान, जाँच-पड़ताल, निरीक्षण, समीक्षा, गुण-दोष, सत्यासत्य, योग्यतादि का निर्णय, **परिच्छा** (दे.)।

परीक्षित–वि. (सं.) जिसकी जाँच या परीक्षा की गई हो। संज्ञा पु. (सं.) अर्जुन के पोते अभिमन्यु-सुत तक्षक के काटने से इनकी मृत्यु हुई। इनके समय में कलयुग का प्रवेश हुआ था।

परीक्ष्य–वि. (सं.) जाँच या परीक्षा के गोग्य।

परीखना*–क्रि. स. दे. (हि. *परखना*) परखना, जाँचना।

परीक्षा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *परीक्षा*) इम्तहान, जाँच, परीक्षा। **परिच्छा** (दे.)।

परीज़ाद–वि. (फा.) अत्यन्त सुन्दर।

परीताप–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिताप*) परिताप, दुख, शोक।

परीदाह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिदाह*) परिदाह, जलना।

परीषह–संज्ञा, पु. (सं.) जैन धर्मानुसार 22 प्रकार के त्याग, सहन।

परुख*–वि. दे. (सं. परुष) परुष, कटु।

परुखाई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *परुख+आई प्रत्य.*) कठोरता, परुषता, परुखई (दे.)।

परुष–वि. (सं.) (स्त्री. *परुषा*) कड़ा, कठोर, निर्दय, निठुर, बुरी लगने वाली बात।

परुषता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कड़ाई, कठोरता, निर्दयता, कर्कशता। संज्ञा, पु. परुषत्व।

परुषा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) टवर्ग, संयुक्त, वर्ण तथा म, श, प, क्त, दीघ्र समास वाली पर-योजना या वृत्ति (काव्य.),

रावी नदी।

परुषाक्षर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) टवर्ग के कठोर या संयुक्त अक्षर, व्यंग्य या निष्ठुर वचन, कुवचन, कटूक्ति।

परुषोक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कठोर या कड़े वाक्य, नीरसवचन, गाली-गलौज।

परे–अव्य (सं॰ *पर*) उधर, आगे, उस ओर, अलग, बाहर, ऊपर बढ़कर, पीछे।

परेई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *परेवा*) कबूतरी, पेंडुकी, फ़ाख़ता (फ़ा॰)।

परेखना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रेक्षण*) पर खना, जाँचना, राह या आसरा देखना।

परेखा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परीक्षा*) परीक्षा, प्रतीति, विश्वास, पश्चाताप, खेद।

परेग–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अं॰ *पेग*) छोटा काँटा।

परेत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रेत*) प्रेत, भूत।

परेता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परितः*) सूत लपेटने की चरख़ी (जुलाहा॰)

परेताना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पारितः*) चरखी में डोर लपेटना, सूत की फेंटी बनाना।

परेर†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर=दूर, ऊँचा+पर प्रत्य॰*) आसमान, आकाश।

परेवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पारावत*) कबूतर, पेंडुकी, फ़ाख़ता। (फा॰) हरकारा चिट्‌ठी-रसाँ। स्त्री॰ परेई।

परेश–संज्ञा॰ पु॰ यौ॰ (सं॰) परमेश्वर।

परेशान–वि॰ (फ़ा॰) व्याकुल, उद्विग्न, व्यय। संज्ञा, स्त्री॰ **परेशानी**–उद्विग्नता, घबराहट।

परेह–संज्ञा, पु॰ (दे॰) कढ़ी, जूस, रसा।

परों-परौं*†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *परसों*) परसों। यौ॰ **कल-परसों, चरसों-नरसों।**

परोक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अभाव, गैरहाज़िरी। वि॰ (सं॰) जो देखा न गया हो, गुप्त, छिपा। यौ॰ **परोक्ष-भूत**–विगत भूतकाल (व्या॰)

परोजन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रयोजन*) प्रयोजन, मतलब, आवश्यकता।

परोपकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) उपकार, दूसरों की भलाई या हित का कार्य।

परोपकारी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *परोपकारिन्*) दूसरों का हित या भलाई करने वाला, उपकारी। स्त्री॰ **परोपकारिणी।**

परोपदेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूसरों को शिक्षा देना, हित की बात कहना।

परोपदेशक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूसरों को शिक्षा देने वाला, दूसरों से हित की बात कहने वाला।

परोना–क्रि॰ सं॰ दे॰ (हि॰ *पिरोना*) पिरोना, पोहना।

परोरना†–क्रि॰ सं॰ (दे॰) जादू या मंत्र पढ़ कर फूँकना।

परोरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ परवल।

परोल–संज्ञा॰ पु॰ दे॰ (अं॰ *पेरोल*) सैनिकों का संकेत शब्द जिसके कहने से आने-जाने में रुकावट नहीं होती।

परोस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिवास*) पड़ोस। यौ॰ **पास-परोस।**

परोसना‡–क्रि॰ सं॰ दे॰ (हि॰ *परसना*) परसना भोजन देना, **परसना।**

परोसा‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परोसना*) एक व्यक्ति के भोजन का पूरा सामान, पत्तल। **परसा** (आ॰)।

परोसी-पड़ोसी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिवासी*) पड़ोस में रहने वाला। स्त्री॰ **परोसिन।**

परोसैया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परसना*) परसने या परोसने वाला, **परसैया** (आ॰)।

परोहन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परोहण*) सवारी गाड़ी आदि यान, वाहन।

परोहा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चरस, पुरव **परश्वः** (सं॰) पानी भरने का चमड़े का थैला।

पर्कटी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पाकर नामक वृक्ष।

पर्चा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **पुरजा,** परख, जाँच, परीक्षा, अनुभव, चिन्हान, परिचय, **परचौ** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ (फा॰) टुकड़ा, परीक्षा का प्रश्न या उत्तर-पत्र।

पर्चाना–क्रि॰ सं॰ (दे॰) मिलाना, भेंट या परिचय कराना, हिलाना।

पर्चून–संज्ञा, पु॰ (दे॰) यौ॰ (सं॰ *परचूर्ण*) चावल, आटा, दाल और मसाला आदि भोजन की सामग्री या सामान, **परचून** (आ॰)।

पर्चूनिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) आटा, दाल आदि बेचने वाला मोदी।

पर्चूनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) आटा दाल आदि का व्यापार, मोदी

का काम।

पर्छती–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) छोटा छप्पर, छोटी छानी, **परछती** (आ.)।

पर्छा–संज्ञा, पु॰ (दे.) तकुआ, तेकुवा (आ.) सूजा, जला हुआ धान, मिट्टी का घड़ा।

पर्छाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिछाया*) प्रतिबिंब, छाया, परछाहीं।

पर्जंक, प्रजंक*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्यंक*) पलंग, बड़ी चारपाई, **प्रजंक** (दे.)।

पर्ज–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) एक रागिनी (संगीत) (परज)

पर्जनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) दारुहलदी।

पर्जन्य–संज्ञा, पु॰ (सं.) इन्द्र, विष्णु, मेघ, बादल, **परजन्य** (दे.)।

पर्ण–संज्ञा, पु॰ (सं.) वट पात्र, पत्ता, पत्ती, **पात** (आ.), गर्न (दे.) पाना।

पर्णक–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक ऋषि जिनसे पार्णिक गोत्र चला (पु.)

पर्णकपूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पर्णकर्पूर*) पान-कपूर, कपूर-पान।

पर्णकार–संज्ञा, पु॰ (सं.) वरई, तमोली।

पर्णकुटी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) पर्णशाला, पत्रों का झोंपड़ा या झोंपड़ी, **पर्नकुटी**।

पर्णकृच्छ्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) व्रत विशेष जिसमें पाँच दिन तक क्रम से, ढाक, गूलर कमल, बेल और कुश के पत्तों का काढ़ा पिया जाता है।

पर्णखंड–संज्ञा, पु॰ (सं.) वनस्पति, जिस पेड़ में फूल बिना फल होते हों।

पर्णचोरक–संज्ञा, पु॰ (सं.) गंधद्रव्य विशेष।

पर्णनर–संज्ञा॰ पु॰ यौ॰ (सं.) ढाक के पत्तों का बना पुतला जो मृतक के बदले जलाया जाता है।

पर्णभोजन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) वह जीव जो केवल पत्ते खाकर रहे, बकरी, छेरी, **पर्णभोजी**।

पर्णमणि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) हरितमणि, पन्ना, एक प्रकार क अस्त्र।

पर्णमाचल–संज्ञा, पु॰ (सं.) कमरख वृक्ष।

पर्णमृग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) पत्तों में घूमने वाला जीव, गिलहरी, बंदर आदि।

पर्णय–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक दैव्य जो इन्द्र द्वारा मारा गया था (पु.)।

पर्णराह–संज्ञा, पु॰ (सं.) बसंत ऋतु।

पर्णलता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) पान की बेल।

पर्णवल्कल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) एक ऋषि।

पर्णवल्ली–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) पलासी नाम की लता।

पर्णशवर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) देश-विशेष।

पर्णशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) पत्तों की झोंपड़ी, **पणकुटीर**।

पर्णशालाग्र–संज्ञा, पु॰ (सं.) भाद्रश्व वर्ष का एक पहाड़ (पु.)।

पर्णसि–संज्ञा, पु॰ (सं.) कमल, पानी में बना हुआ घर, सागर, समुद्र।

पर्णास–संज्ञा, पु॰ (सं.) तुलसी।

पर्णिक–संज्ञा, पु॰ (सं.) पत्ते बेंचने वाला, बारी।

पर्णिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) शालपर्णी, मान कंद, अग्नि मथने की अरणी।

पर्णिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) मषवन। संज्ञा पु॰ (सं.) सुगंध वाला।

पर्णी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पर्णिन्*) पेड़, वृक्ष, एक औषधि। संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) अप्सरा-भेद।

पर्त–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परत*) परत, तह।

पर्दनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पर्दा*) धोती।

पर्दा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परदा*) परदा, यवनिका, सितार के बंद,कान का परदा। यौ॰ **पर्दानशीन**–पर्दे में रहने वाली स्त्री। **मु॰ पर्दाफाश करना**–गुप्त या गोपनीय बात का प्रगट करना।

पर्पट–संज्ञा, पु॰ (सं.) पित्तपापड़ा, पापड़।

पर्पटी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) गुजरात की मिट्टी, गोपी चंदन, पापड़ी, पपड़ी, स्वर्ण पर्पटी, रस पर्पटी नाम की औषधि (वै.)।

पर्पटीरस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) एक प्रकार का रस (वैद्य.)।

पर्यंक–संज्ञा, पु॰ (सं.) पलंग, बड़ी चारपाई, **प्रयंक, पर्जंक** (दे.)।

पर्यंक-षधन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) एक प्रकार का योग का आसन।

पर्यंत–अव्य॰ (सं॰) तक, लौ।

पर्यंतदेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी देश के अंत का देश सीमांत देश।

पर्यंतभूमि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नदी, नगर या पर्वत आदि के समीप की भूमि, परिसर भूमि।

पर्यटन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भ्रमण, यात्रा, घूमना-फिरना। वि॰ **पर्यटनीय**।

पर्यनुयोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जिज्ञासा, किसी अज्ञात विषय के ज्ञात करने के हेतु प्रश्न।

पर्यावरण–पु॰ (सं॰) आस-पड़ोस, चारों ओर की स्थिति, चारों ओर का वातावरण।

पर्यवसान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चरम, अंत, समाप्ति, शेष, परिमाण, मिलना, अर्थ, पर्य्याय निश्चित करना। वि॰ **पर्य्यवसित**।

पर्याप्त–वि॰ (सं॰) यथेष्ट, पूरा, **काफ़ी** (फा॰), आवश्यकता-नुसार, प्राप्त, समर्थ।

पर्याय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तुल्यार्थवाची शब्द, समान अर्थ वाले शब्द, एकार्थी शब्द, एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का अनेक में और अनेक वस्तुओं का एक में आश्रित होना कहा जाए। पाला, .म, आनुपूर्वी, परिवर्तन, प्रकार, अवसर, निर्माण, ओसरी (दे॰)।

पर्यायवाचक (वाचा)–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एकार्थबोधक।

पर्यायशयन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पहरेदारों का बारी-बारी से सोना।

पर्यालोचना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) समीक्षा, पूरी जाँच-पड़ताल, विचार-पूर्वक देखना, गुण दोष ज्ञात करना।

पर्युत्सुक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) उद्विग्नचित्त।

पयुपासक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दास, सेवक।

पर्युपासन-पर्युपासना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सेवा, दासता।

पर्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पर्द*) पुरुष या धर्मकाल, उत्सव-दिन, त्यौहार, टुकड़ा, भाग, अध्याय।

पर्वकाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुरुप या धर्म-काल।

पर्वणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूर्णमासी, पूर्णिमा।

पर्वत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पहाड़, एक प्रकार के संन्यामी। वि॰ **पर्वतीय**।

पर्वतज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पहाड़ से उत्पन्न।

पर्वतनंनिदनी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पार्वती।

पर्वतराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिमालय या सुमेरू पहाड़।

पर्वतारि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इन्द्र।

पर्वतास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकने से शत्रु-सेना पर पत्थर पड़ने लगते थे या वह सेना पहाड़ों से घिर जाती थी।

पर्वतिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पवर्त+इया प्रत्य॰*) लौकी, कद्दू। वि॰ (दे॰) **पहाड़ी**।

पर्वती–वि॰ दे॰ (सं॰ *पर्वतीय*) पर्वतीय, पहाड़ी, पहाड़ पर रहने या होने वाला, पहाड़-सम्बन्धी।

पर्वतीय–वि॰ (सं॰) पहाड़ पर रहने या होने वाले, पहाड़-सम्बन्धी।

पर्वतेश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिमालय, शिव जी।

पर्वर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *परवल*) परवल, चटोल (सं॰), परवर (दे॰) एक तरकारी।

पर्वरिश–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) **परवरिश,** पालना, पोषना, पालन-पोषण।

पर्व-सन्धि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रतिपदा और पूर्णिमा या अमावस्या के बीच का समय सूर्य का चंद्र-ग्रहण का समय।

पर्वाह–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *परवाह*) परवाह।

पर्विणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पर्व-सम्बन्धी, पर्व की।

पर्हेज़, परहेज़–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) अवश्य या बुराई का त्याग, अलग या दूर रहना, छोड़ना, बचना, त्यागना।

पलंका–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पर+लंका*) बहुत दूर का स्थान या जगह।

पलंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पल्यंक*) पर्य्यक, बड़ी चारपाई। (स्त्री॰ *अल्पा॰* **पलंगड़ी**) **पलंगा** (दे॰)।

पलंगपोश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *पलंग+ पोश फ़ा॰*) पलंग पर डालने की चादर।

पलंगिया†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पलंग+इया प्रत्य॰*) खटिया, छोटा पलंग, चारपाई।

पल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घड़ी का 60वाँ भाग, चार कर्प की तौल, माँस, धान का पयाल, धोखेबाज़ी, तराजू। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पलक*) पलक। **मु॰ पल मारते या पलक मारने में**–अति शीघ्र, आँख झपते, तुरन्त, क्षण में। **मु॰ पल के पल में**–क्षणभर में, अत्यन्त थोड़े काल में।

पलई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पल्लव*) पेड़ की कोमल डाली या टहनी।

पलक–संज्ञा, स्त्री. (सं. *पल+क*) आँख के ऊपर का चमड़ा, पपोटा। **मु. पलक झपते (मारते, लगते)**–बहुत थोड़े काल में, बात कहते, बात की बात में। **किसी के रास्ते में या किसीके लिए पलक बिछाना**–अति प्रेम से स्वागत करना। **पलक-मांजना**–पलक हिलाना। **पलक-मारना**–आँखों से संकेत या इशारा करना, पलक झपकाना या गिराना। **पलक लगना (लगाना)**–आँखें बंद होनाया मुंदना, पलक झपकना, झपकी लगना, नींद आना। **पलक से पलक न लगना**–नींद न आना टकटकी बँधी रहना। **पलक दूर करना**–सामने से हटाना। "पलक-नूर नहिं कीजिए"–वि.।

पलकदरिया†–वि. दे. यौ. (हि. *पलक+दरिया फ़ा.*) अति उदार, बड़ा दानी।

पलक-नेवाज†–वि. दे. यौ. (हि. या. स. क्रो.–130 पलक+ *नेवल*) पलकदरिया, अति उदार, अति दानी।

पलका*–संज्ञा, पु. दे.(सं. *पल्यंक*) पलंग, बड़ी चारपाई। स्त्री. **पलकी**।

पलक्या–संज्ञा, पु. (दे.) पालक का शाक या तरकारी।

पलचर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक प्रकार के उपदेवता।

पलटन–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बटालियन या प्लैटून*) अंग्रेज़ी सेना का एक दल जिसमें 200 के लगभग सिपाही होते हैं, समुदाय, पल्टन (दे.)।

पलटना–क्रि. अ. दे. (सं. *प्रलोठन*) उलट जाना, परिवर्तन होना, बदलना, काया-पलट हो जाना, घूमना-फिरना, लौटना, वापस होना। क्रि. स. बदला करना, उलटना।

पलटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पलटना*) परिवर्तन, परिवर्तित, बदला, प्रतीकार, प्रतिफल। **मु. पलटा खाना**–स्थिति या दशा का फिरना या उलटना। **पलटा लेना**–बदला लेना, लौटा लेना, बैर चुकाना।

पलटाना–क्रि. स. दे. (हि. *पलटना*) उलटाना, फेरना, लौटाना, बदल लेना, बदलना, परिवर्तन करना।

पलटाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पलटाना*) लौटाव, फिराव, अदल-बदल।

पलटें†–क्रि. वि. दे. (हि. *पलटा*) प्रतिफल के रूप में, एवज में, बदने में सं. नवने के बोलों का समूह

पलड़ा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पलट*) तराजू का पल्ला, तुलावट।

पलथा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पर्यस्त*) लोट-पोट। **मु. पलथा मारना**–लोटना-पोटना।

पलथी†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पर्यस्त*) स्वस्तिकासन, एक आसन (वो.)।

पलथा–क्रि. अ. (सं. *पालन*) पाला-पोसा जाना, हुष्ट-पुष्ट होना, तैयार होना। *†संज्ञा, पु. (दे.) पालना।

पलल–संज्ञा, पु. (सं.) आमिष, माँस, पशुओं के खाने की खली।

पलथा*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पल्लव*) अंजुली, चुल्लू, तराजू का पलड़ा, डलिया।

पलवाना–क्रि. स. दे. (हि. *पालड़ाका प्रे. रूप*) किसी से किसी का पालन करना।

पलवार–संज्ञा, पु. (दे.) बड़ी नाव।

पलवारा–संज्ञा, पु. (दे.) बड़ी नाव।

पलधारी–संज्ञा, पु. (दे.) केवट, मल्लाह।

पलवैया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पालना+वैया प्रत्य.*) पालक, पोषक, पालन पोषण करने वाना।

पलस्तर–संज्ञा, पु. दे. (अं. *प्लास्टर*) दीवार पर मिट्टी के गारे या चूने का लेया या लेप। **मु. पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना**–नसें ढीली होना, बहुत परेशान होना।

पलहना*–क्रि. अ. दे. (सं. *पल्लव*) पत्ते निकलना, पल्लवित होना, बहलहाना।

पहला*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पल्लव*) कोमल पत्ते, कोंपल।

पलांडु–संज्ञा, पु. (सं.) प्याज।

पला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पल*) निमिष। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *पलट*) तराजू का पलड़ा, पल्ला, अंचल, किनारा, पार्श्व, पाला हुआ, **डलवा** (प्रान्ती.)।

पलाद–संज्ञा, पु. (सं.) एक राक्षस।

पलान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पल्याण मि. फ़ा. पालान*) जीन, चारजामा। स्त्री. **पलानी**।

पलामना*–क्रि. स. दे. (हि. *पलान+ना प्रत्य.*) घोड़े पर जीन या पलान रखकर कसना, चढ़ाई की तैयारी करना, बुरा भला कहना।

पलाना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *पलायन*) भागना, भाग जाना। क्रि. स. (दे.) भगाना, पलायन कराना।

पलायक–संज्ञा, पु. (सं.) भगोड़ा, भागने वाला।

पलायन–संज्ञा, पु. (सं.) भगना, भाग जाना, (किसी क्रम से)दल निकलना, छोड़कर भागना।

पलायमान–वि. (सं.) भागता हुआ।

पलायित–वि. (सं.) भागा हुआ।

पलाल–*संज्ञा, पु. (सं.) पयाल, पुवाल।*

***पलाश**–संज्ञा, पु. (सं.) **पलास,** टेसू, ढाक, छिउल, पत्ता, राक्षस, कचूर, मगधदेश वि. (सं.) मांसाहारी, निर्दय।*

पलाशी–*वि. (सं. पलाशिन्) मांसाहारी, पत्ते-युक्त, पत्रयुक्त।* संज्ञा, पु. (सं.) राक्षस।

पलास–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पलाश*) टेसू, ढाक, छिउल, एक मांसाहारी पक्षी।

पलित–वि. (सं.) बूढ़ा, बुड्ढा, वृद्ध, पका हुआ, सफेद बाल, ताप, गरमी। (स्त्री. **पलिता**)।

पली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पलिध*) बड़े बरतनों से घी आदि द्रव पदार्थ के निकालने का पात्र या उपकरण, परी।

पलीत–संज्ञा, पु. (दे.) भूत या प्रेत, भूतयोनि, प्रेत योनि। वि. **मैला-कुचैला।**

पलीता–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *फलीत*) लपेटे हुए कपड़े की बत्ती जिसे पंसाखों में लगाते हैं, तोप या बंदूक की रंजक, जलाने वाली बत्ती। वि. बहुत कुछ, आग बबूला। (स्त्री. *अल्पा.* **पलीती**)।

पलीद–वि. (फा.) अशुद्ध, अपवित्र, गंदा, दुप्ट, नीच। संज्ञा, पु. दे. (हि. *पलीत*) भूत-प्रेत। **मु. मिट्टी पलीत या पलीद करना**–बरबाद करना।

पलुआ-पलुवा†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पलना*) पालतू, पालित, पाला हुआ।

पलुआ-पलुवा†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पलना*) पालतू, पालित, पाला हुआ।

पलुहना*†–क्रि. स. दे. (सं. *पल्लव*) हराभरा या पल्लवित होना।

पलुहाना*†–क्रि. स. दे. (हि. *पलुहना*) पल्लवित या हराभरा करना, गाय-भैंस का दूध के लिए आयन सहलाना।

पलेड़ना*†–क्रि. स. दे. (हि. *प्रेरण*) धक्का देना या ढकेलना।

पलेथन, पलोथन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परिस्त*...) सूखा आटा जो रोटी बनाते वक्त रोटी में लगाया जाता है **परोथन, परेथन, परथन** (आ.)। **पलेथन निकलना**–बहुत मार पड़ना या खाना, तंग या परेशान होना, अनावश्यक व्यय होने के पीछे ओर खर्च।

पलाटना–क्रि. स. दे. (सं. *पलोठन*) पाँव दबाना, पलटना। क्रि. अ. दे. (हि. *पलटाना*) कष्ट से लोटना पोटना, तड़फड़ाना।

पलोवना–क्रि. स. दे. (सं. प्रलोठन) पैर दबाना, पाँव लगना, सेवा करना।*

पलोसना*–*क्रि. स. दे. (सं. प्रलोठन) पैर दबाना, पाँव* लगना, सेवा करना।

पलोसना*–क्रि. स. दे. (हि. *परसना*) धोना, मीठी बातें कर ढंग पर लाना, परसना।

पल्लव–संज्ञा, पु. (सं.) नए निकले पत्ते, कोंपल, कड़ा, हाथ का कंकण या कड़ा, बल, विस्तार, एक देश, (पल्लव) दक्षिण का एक राजवंश। **पल्लवाख**–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कामदेव।

पल्लवन†*–क्रि. अ. दे. (सं. *पल्लव*+ना प्रत्य.) नए पत्ते निकलना, पनपना।

पल्लवित–वि. (सं.) जिसमें नवे पत्ते हों, हरा-भरा, लंबा-चौड़, जिसके रोंगटे खड़े हों, सिलय-पाला, पनपा हुआ।

पल्लवी–संज्ञा, पु. (सं. *पल्लविन्*) पेड़, वृक्ष, जिसमें पत्ते हों।

पल्ला–क्रि. वि. दे. (सं.*परवापार*) दूर। संज्ञा, पु. (सं.) दूरी। संज्ञा, पु. (दे.) वस्त्र का छोर, आँचर, दामन। **यौ. पास-पल्ले। मु. पल्ले होना**–पास होना। **पल्ला छूटना**–पीछा छूटना, छुटकारा मिलना। **पल्ला पसारना**–किसी से कुछ माँगना। **पल्ले पड़ना**–प्राप्त होना, मिलना। **पल्ला पकड़ना**–आश्रय लेना। **किसी के पल्ले बाँधना**–जिम्मे किया जाना। **पल्ले बँधना**–गले पड़ना, आश्रित होना। तरफ, पास, अधिकर में। संज्ञा पु. (सं. *पटल*) दुपल्ली टोपी का आधा हिस्सा, पटल, किवाड़, पहल, तीन मन का बोझा। संज्ञा, पु. (सं. *पल*) तराजू का पलड़ा। **मु. पल्ला झुकना या भारी होना**–पक्ष बलिष्ठ या बली होना, **(विलो.)**–**पल्ला हलका होना (पड़ना)** संज्ञा, पु. (सं. *फल*) कैंची का एक भाग। वि. (दे.)।–

परला, अब्बल, प्रथम। मु॰ (पल्ले, परले) दरजे का।

पल्ली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटा गाँव, खेड़ा, पुरवा, कुटी, जाजम, सतरंजी, छिपकली।

पल्लू†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पल्ला*) दामन, छोर, आँचल, पट्टा, चौड़ी गोट।

पल्ले†*–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रलय*) प्रलय, पास।

पल्लेदार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पल्ला*+*फ़ा॰ दार*) अनाज होने या तौलने वाला, यथा।

पल्लेदारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पल्लेदार*+*ई प्रत्य॰*) पल्लेदार का कार्य या मजदूरी।

पल्लौ†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पल्लव*) पल्लव, संज्ञा, पु॰ अनाज की गौन, पल्ला।

पव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गोबर, पाथु।

पवई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पक्षी विशेष।

पवन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वायु, हवा, पौन (अ॰)। **मु॰ पवन का भूसा होना**–कुछ न रहना, सब उड़ जाना। कुम्हार का आवा, जल, साँस, प्राणवायु। संज्ञा, पु॰ (दे॰) पावन, पवित्र।

पवन-अस्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पवनाल*) एक अस्त्र जिसके चलाने से बड़े ज़ोर की वायु चलने लगती थी, पवनास्त्र।

पवन-कुमार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हनुमान्। भीमसेन, पवन-पुत्र, **पवनात्मज, पवनसुत**।

पवनचक्की–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पवन*+*हि॰ चक्की*) हवा-चक्की।

पवनचक्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बवंडर।

पवन-तनय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हनुमान, भीमसेन। **पवनात्मज**।

पवन-पति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वायु के अधिष्ठता,या देवता।

पवन-परीक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) आषाढ़-पूर्णिमा को वायु की दिशा को देख भविष्य कहना।

पवनपुत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हनुमान, भीमसेन, **पवन-पूत** (दे॰)।

पवन-बाण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह बाण जिसके छोड़ते ही बड़े वेग से वायु चलने लगे, **पवन-शर**।

पवनसखा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आग।

पवन-सुत, पवन-सुवन, पवननन्द–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हनुमान, भीमसेन।

पवनायन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) झरोखा, खिड़की, गवाक्ष, वातायन।

पवनाल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पुनेश नामक धान।

पवणावार्ती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) महर्षिकश्यप की एक स्त्री।

पवनाश, पवनाशन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फ़ान, साँप सर्प।

पवनाशी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पवनाशिन्*) सर्प, साँप।

पवनास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक अस्त्र जिसके वेग से वायु चलने लगे।

पवनी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पाना*) नीच प्रजा, नाई, वारी आदि जो गाँव वालों से कुछ पाया करते हैं।

पवमान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चन्द्रमा, वायु।

पवर-पवरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पँवरि*) पँवरि, घर का द्वार, दरवाजा, (ग्रा॰) पौरि।

पवरिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पँवरि*) पौरिया।

पवर्ग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) संस्कृत या हिंदी भाषा की वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग।

पवाँर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परमार*) क्षत्रियों की एक जाति, परमार।

पवारना, पवाँरना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रवारण*) फेंकना, गिराना।

पवाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पाँव*) एक जूता, चक्की का एक पाट, पाने का भाप।

पवाड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रवाद*) पँवाड़ा, लंबा-चौड़ा या विस्तृत इतिहास, कथा। यौ॰ **आल्हा-पँवारा**।

पवाज–संज्ञा, पु॰ (दे॰) गँवार, ग्रामीण।

पवाना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पान=भोजन करना*) जिमाना, खिलाना, भोजन कराना, रोटी बनवाना, पोवाना (आ॰)।

पवि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इन्द्र का अस्त्र, वज्र, बिजली, गाज, वाक्य।

पविताई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पवित्रता*) पवित्रता।

पवित्तर‡–वि॰ दे॰ (सं॰ *पवित्र*) पवित्र।

पवित्र–वि॰ (सं॰) साफ़, शुद्ध, निर्मल, निर्दोष। संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्षा, ताँबा, कुशा, पानी, दूध जनेन्द्र, श्री शहद, शिव, विष्णु।

पवित्रता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सफ़ाई **निर्मलता**, निर्दोषता, शुद्धता।

पवित्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हल्दी, पिपरी, तुलसी, रेशमी माला।

पवित्रात्मा–वि॰ यौ॰ (सं॰ *प्रवित्रात्मन*) शुद्धांत, करण, शुद्धात्मा वाला।

पवित्रित–वि॰ (सं॰) शुद्ध, निर्दोष, साफ़ किया हुआ, *पवित्रीकृत।*

***पवित्री**–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ पवित्र) अनामिका में पहनने की कुशा की अँगूठी या मुद्रिका (कर्मकांड)* **पैंती**(आ॰)।

पविपात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वज्रपात, वज्र पड़ना, बिजली गिरना।

पशम–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *पश्म*) नरम और मुलायम बढ़िया ऊन, उपस्थ, इन्द्री के समीप के बाल, अत्यन्त तुच्छ वस्तु।

पशमी–वि॰ (दि॰)। पशम का बना वस्त्र, पशमीना।

पशमीना–संज्ञा, पु॰ (फा॰) पशम का बना वस्त्र या कपड़ा, पशमी वस्त्र दुशाला आदि।

पशु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चौपाया, चार पैर के जीव-जंतु, प्राणी, देवता।

पशुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पशुत्य, पशुपना, मूर्खता, जड़ता, औद्धत्व।

पशुतुल्य–वि॰ (सं॰) पशु के समान मूर्ख, अज्ञान, अबोध।

पशुत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पशुता, मूर्खता।

पशुधर्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पशुओं का सा आचार, पशुओं के से निंद्य कर्म।

पशुपतास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव जी का त्रिशूल, पाशुपत।

पशुपति–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिवजी, पशुओं का स्वामी। औषधि।

पशुपाल, पशुपालक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पशुओं का चालक या रक्षक, अहीर, गड़रिया, चरवाहा।

पशुराज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिंह, व्याघ्र।

पश्चात्–अव्य॰ (सं॰) पीछे, अनन्तर, बाद, फिर। यौ॰ **तत्पश्चात्।**

पश्चाताप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनुशोक, पछतावा, अनुताप।

पश्चातापी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पश्चातापिन्*) अनुशोक या पछतावा करने वाला।

पश्चाद्वर्त्ती वि॰ (सं॰ *पश्चाद्वर्तिन्*) पीछे रहने या चलने वाला।

पश्चानुताप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पछतावा।

पश्चार्द्ध–वि॰ (सं॰) पीछे का आधा, शेषार्द्ध।

पश्चिम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतीची, **पच्छिम** (दे॰) स्त्री॰ पश्चिमा।

पश्चिम वाहिनी–वि॰ यौ॰ (सं॰) वह नदी जो पश्चिम दिशा को बहती हो।

पश्चिमाचल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अस्ताचल, सूर्यास्त का *एक कल्पित पर्वत।*

पश्चिमी**–वि॰ (सं॰) पश्चिम सम्बन्धी, पच्छिम का,* ***पश्चिमीय।

पश्चिमोत्तर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(सं॰) वायव्य या वायुकोण,* उत्तर और पश्चिम के बीच का कोना।

पश्तो–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अफ़गानों की एक भाषा।

पश्म–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) नरम और बढ़िया ऊन जिसके शाल-दुशाले बनते हैं। उपस्थ इन्द्री के समीप बाल, पशम, **पसम** (दे॰)।

पश्मीना–संज्ञा, पु॰ (फा॰) **पशमीना,** शाल-दुशाले आदि वस्त्र।

पश्यंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नाद की द्वितीय अवस्था जिसमें मूलाधार से हृदय में आता है।

पश्यतोहर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देखते-देखते चुराने वाला, सुनार।

पश्वाचार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वैदिकाचार, वैदिकरीति से संकल्प युक्त देवी की पूजा (तात्रिक)। वि॰ **पश्वाचारी।**

पष, पषा*†–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पक्ष*) पंख, पखना, डैना, ओर, पाख, **पखा** (दे॰)।

पषा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पक्ष*) दाढ़ी, मूँछ।

पषाण पषान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पाषाण*) पाषाण, पत्थर, पाथर (दे॰)।

पषारना, पषालना, पखारना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रक्षालन*) धोना, साफ़, स्वच्छ या निर्मल करना, पछाड़ना।

पसंघा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *पासंग*) पासँग, तराजू के पल्लों को बराबर करने के लिए रखा गया बाट। वि॰ बहुत ही कम या थोड़ा। **मु॰ पसंघा भी न होना**–कुछ भी न होना। अत्यन्त तुच्छ।

पसंती*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पश्यंती*) पश्यंती, दाद की एक अवस्था।

पसंद–वि॰ (फा॰) जो भावे या अच्छा लगे, रुचि-अनुकूल, मनचाहा। संज्ञा, स्त्री॰ अभिरुचि। संज्ञा, स्त्री॰ पसंदगी। दि॰ **पसंदीदा।**

पस–अव्य॰ (फा॰) इस कारण या इसलिए के पीछे।

पसनी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्राशन*) अन्नमाशन, लड़के को पहले पहल अन्न सिखाना।

पसम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *पश्म*) पशम, पश्म।

पसमीना–संज्ञा, पु. दे. *(फा. पश्मीना)* पश्मीना।

पसर–संज्ञा, पु. दे. *(सं. प्रसर)* आधी अँजुली, अर्द्धांजली। †संज्ञा, पु. दे. *(सं. प्रसार)* फैलाव, विस्तार।

पसरना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रसरण*) फैलना, बढ़ना, विस्तृत होना, पैर फैला कर लेना। प्रे. **रूप–पसराना**। **स. रूप–पसराना, पसारना**।

पसरहट्टा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पसारी+ हाट*) बाज़ार का वह भाग जहाँ पसारियों की दुकानें हों, पसरट्टा (आ.)।

पसराना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रसारण*) किसी को पसराने में लगाना, फैलाना।

पसली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पर्शुका*) छाती की हड्डी, **पाँसुरी** (व्र.) **पसुरी, पसुली** (आ.)। **मु. पसली फड़कना या फड़क उठना**–मन में जोश या उत्साह आना। **हड्डी-पसली तोड़ना**–बहुत मारना-पीटना। **पसली चलना**–बच्चों की सर्दी से–स्वास बढ़ जाना।

पसा–संज्ञा, पु. (दे.) अंजली, अँगुली।

पसाई, पसई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) धन-धान।

पसाना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रसावणा*) पके चावलों में से माँड़ निकालना, पसेव गिराना। †*–क्रि. स. दे. (सं.*प्रसन्न*) प्रसन्न होना।

पसार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रसार*) प्रसार, विस्तार, फैलाव, प्रस्तार।

पसारना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रसारण*) विस्तारित करना, फैलाना।

पसारी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रसार*) विस्तार, फैलाव। क्रि. स. (सं. *प्रसारण*) फैलाना, विस्तारना।

पसारी–संज्ञा, पु. दे. (*पंसारी*) पंसारी, किराने और औषधों का दुकानदार।

पसाव-पसावन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पसाना*) चावलों का माँड़, पीच, पानी।

पसित–वि. (दे.) बँधा हुआ, (स.) **पाशित**।

पसीजना–क्रि. अ. दे. (सं. *प्र+स्विद्*) स्वेद या पसीना निकलना, पानी रसना, करुणा या दया से द्रवीभूत होना।

पसीना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रस्वेदन*) स्वेद, प्रस्वेद, श्रमवारि, गर्मी से निकला हुआ देह का जल।

पसुरी-पसुली–*†संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पसली*) पसली, छाती की हड्डी, **पाँसुरी**।

पसेरी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. पांच+सेर ई. प्रत्य) पंसेरी, पाँच सेर का बाट।*

पसोपेश–संज्ञा, पु. (फ़ा.) आगा-पीछा, सोच-विचार, हानि-लाभ, ऊँच-नीच, दुविधा।

पस्त–वि. (फ़ा.) हारा, थका, दबा हुआ।

पस्तहिम्मत–वि. यौ. (फ़ा.) कायर, डरपोक, भीरु। संज्ञा, स्त्री. **पस्त-हिम्मती**।

पस्सी बाबूल–संज्ञा, पु. दे. (दे. *पस्सी+हि. बबूल*) एक पहाड़ी बबूल।

पहँ*–अव्य. दे. (सं. *पार्श्व*) समीप, निकट, पास से।

पहँखुल–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रछ–झुका हुआ+ शूल*) तरकारी काटने का हँसिया।

पहचनवाना–क्रि. अ. दे. (हि. *पहचानना का प्रे. रूप*) किसी से पहचानने का कार्य कराना।

पहचान–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रत्यामिज्ञान*) लक्षण, निशानी, परिचय, चिन्ह, चीन्हा, **चिन्हारी** भेद समझने की शक्ति।

पहचानना–क्रि. स. दे. (हि. *पहचान*) चीन्हना, गुण विशेषतादि से परिचित होना, अभिज्ञान, भेद समझना।

पहटना†–क्रि. अ. दे. (स. *प्रखेट*) खदेड़ना, पीछा करना, धार पैनी करना।

पहटा–संज्ञा, पु. (दे.) खेत चौरस करने का लकड़ी का तख़्ता, हेंगा (*प्रान्ती*)। क्रि. स. (दे.) **पहटाना**।

पहनना, पहिनना–क्रि. स. दे. (सं. *परिधान*) शरीर पर धारण करना, परिधान करना (*प्रे. रूप*) **पहनवाना**, क्रि. स. **पहनाना**।

पहनाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पहनाना*) पहनाने की क्रिया या मज़दूरी।

पहनाना–क्रि. स. दे. (हि. *पहनना*) किसी को वस्त्र-भूषणादि धारण कराना।

पहनाव-पहनावा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पहनना*) मुख्य वस्त्र, पोशाक, परिच्छद, कपड़े पहनने की रीति या चाल।

पहपट–संज्ञा, पु. (दे.) स्त्रियों के गाने का एक गीत, हल्ला-गुल्ला, शोर, कोलाहल, लोप, बदनामी का शोर, छल।

पहपटवाज़–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पहपट+बाज फ़ा.*) शरारती,

झगड़ालू, ठग, धोखे-बाज़। संज्ञा, स्त्री, **पहपटबाज़ी।**

पहर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रहर*) तीन घंटे का वक्त, ज़माना, युग।

पहरना, पहिरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पहनना*) पहनना, धारण करना।

पहरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पहर*) चौकी, निगरानी, रक्षा। यौ॰ **पहरा-चौकी। मु॰ पहरा बदलना**–रक्षक बदलना। **पहरा बैठना, बैठाना**–रक्षक बैठाना, रखवाली करना। **पहरा देना**–रखवाली करना। तैनाती, नियुक्ति, रक्षकदल, गारद, चौकीदार का फेरा या आवाज़, हवालात, हिरासत। **मु॰ पहरे में देना या रखना**–जेल भेजना। **पहरे में होना**–हिरासत में या नज़रबन्द होना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पाँव+रा–पौरा*) आने-जाने का शुभाशुभ अभाव। (दे॰) समय, युग।

पहरावनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पहरावना*) बड़े आदमी के दिए हुए वस्त्र, खिलअत।

पहरी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रहरी*) पहरा देने वाला, चौकीदार, रक्षक, पहरेदार।

पहरुआ, पहरुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पहरु*) पहरु, पहरा देने वाला, रक्षक, चौकीदार, पाहरु (व॰)।

पहरू, पाहरू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पहरा+ऊ प्रत्य॰*) रक्षक, पहरा देने वाला।

पहल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *पहलू मि॰ सं॰ पहल*) ठोस चीज़ के समतल पहलू, बगल, किनारा, पुरानी जमी हुई रुई या ऊन। तह, परत। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पहला*) आरम्भ, शुरु, छेड़। यौ॰ **पहले-पहल।**

पहलदार–वि॰ दे॰ (हि॰ *पहल+फा॰ द्वार*) जिसमें पहल हों, पहलूदार।

पहलवान–संज्ञा, पु॰ (फा॰) कुश्ती लड़ने या मल्ल युद्ध करने वाला, भक्त, बली या डील-डौल वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **पहलवानी।**

पहलवी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *वा सं॰ पहवी*) एक प्रकार की फ़ारसी भाषा।

पहला, पहिला–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रथम*) प्रथम का, आदि का। औयल। संज्ञा, पु॰ (दे॰) पुरानी रुई की तह (रज़ाई आदि की)। (स्त्री॰ **पहली**)।

पहलू–संज्ञा, पु॰ (फा॰) बगल, पार्श्व, पांजर, (दे॰), तरफ, करवट, किसी विषय के भिन्न भिन्न अंग (गुण दोषादि के भाव के पक्ष, पहल। वि॰ **पहलूदार।**

पहले, पहिले–अव्य॰ (हि॰ *पहला*) प्रारम्भ या आदि में सर्व-प्रथम, पूर्व (स्थिति), आगे, बीते या पूर्व समय में।

पहले-पहल, पहिले-पहिल–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *पहल*) सर्व प्रथम।

पहलौठा, पहिलौठा–वि॰ दे॰ (हि॰ *पहला+औठा प्रत्य॰*) प्रथम बार का पैदा हुआ बच्चा। स्त्री **पहलौठी।** "जो पहलौठी बिटिया होय"–घाघ॰।

पहाड़, पहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाषाण*) पर्वत, गिरि, **पहार, पहारू** (दे॰) स्त्री॰ अरुपा॰ **पहाड़ी। मु॰ पहाड़ उठाना** भारी कार्य अपने जिम्मे लेना। **पहाड़ टूट पड़ना या टूटना**–अचानक बड़ी भारी आपत्ति आना, महा संकट आ जाना। **सिर पर पहाड़ गिरना**– बड़ी विपत्ति सहसा आना। **पहाड़ हिलाना**–बड़ कठिन कार्य करना। **पहाड़ से टक्कर लेना**–अधिक बली या जबरदस्त से भिड़ जाना। बहुत बड़ा ढेर या ऊँची राशि, दुष्कर कार्य, अति भारी वस्तु। वि॰ **पहाड़ी**–वर्ततीय।

पहाड़ा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) गुणनफल-तालिका, संकलन की हुई अंकों की सूची, किसी अंक के गुणनफलों की, अनुक्रमणिका, **सहारा, पहार** (आ॰)।

पहाड़िया–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छोटा पहाड़, पहाड़ी। वि॰ पर्वतीय, पर्वत-वासी।

पहाड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पहाड़+ई प्रत्य॰*) छोटा पहाड़, राग या गान। वि॰ (दे॰) पर्वतीय।

पहारू, पाहरू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पहरा*) चौकीदार, पहरे वाला।

पहिचान–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रत्यभिज्ञन*) लक्षण, निशानी, परिचय। यौ॰ **जान-पहिचान।**

पहिचानना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पहचानना*) चीन्हना, परिचित होना। वि॰ पहिचानने वाला। वि॰ (दे॰) **पहिचानी।**

पहित-पहिती*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पहित अस्था*) पकी हुई दाल।

पहिया*‡–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *पहँ*) पास, समीप, निकट, पर, से।

पहिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परिधि*) धुरी पर घूमने वाला चक्र, चक्कर, चक्का, चाका, चाक (दे॰)।

पहिरना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पहनना*) पहनना। क्रि॰ सं॰ **पहिराना,** में रूप– **पहिरवाना**।

पहिरावनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पहनावा*) पहनावा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **पहिराव**।

पहिला–वि॰ दे॰ (हि॰ *पहला*) पहला, प्रथम, प्रथम व्यायी या प्रसूता गाय या भैंस। (स्त्री॰ पहिली)।

पहिले–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *पहले*) पहले।

पहीत*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पहती*) दाल।

पहुँच–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रभूत*) पैठ, प्रवेश, गुज़र, रसाई, पहुँचने की सूचना, रसीद, फैलाव, विस्तार, पकड़ दौड़, परिचय, दखल, समझने की शक्ति या सामर्थ्य, जानकारी, अभिज्ञता की मर्यादा या शक्ति।

पहुँचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रभूत*) एक जगह से चल कर दूसरी जगह प्राप्त होना। स॰ रूप–पहुँचाना **रूप–पहुँचवाना। मु॰ पहुँचा हुआ**–परमेश्वर के समीप पहुँचा हुआ, सिद्ध, पता रखने वाला, जानकार, निपुण, उस्ताद। प्रविष्ट होना, घुसना या पैठना, ताड़ना, समझना, मिलना, अनुभूत होना, समान या तुल्य होना, फैलना, एक दशा से दूसरी में जाना, भेजी या आई हुई वस्तु का मिलना। **मु॰ पहुँचने वाला**–रहस्य या भेद का जानने वाला, जानकार।

पहुँचा–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *प्रकोष्ठ*) मणि बन्ध, कलाई, हाथ की कुहनी से नीचे का भाग। क्रि॰ अ॰ सा॰ भू॰ गया, प्राप्त हुआ।

पहुँचाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पहुँचना का स॰ रूप*) एक जगह से दूसी जगह किसी को प्रस्तुत या प्राप्त कराना, ले जाना, किसी के साथ जाना, भेजना, किसी विशेष दशा में उपस्थित करना, प्रविष्ट कराना, लाकर या ले जाकर कुछ देना, अनुभूत कराना, तुल्य बनाना।

पहुँची–सैज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पहुँचा*) कलाई का एक गहना, युद्ध में पहिनने का एक दस्ताना। क्रि॰ स॰ आ॰ भू॰ गई, प्राप्त हुई।

पहुढ़ना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) **पौढ़ना,** लेटना, कि॰ स॰ **पहुढ़ाना**। प्रे॰ रूप॰ **पहुढ़वाना**।

पहुना†–संज्ञा, पु॰ दे॰(हि॰ *पाहुना*) पाहुना, महिमान, मेहमान, पाहुन। अतिथि।

पहुनाई-पहुनई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(हि॰ *पहुना+ई प्रत्य॰*) अतिथि-संत्कार, मेहमानदारी, अतिथि होकर जाना या आना।

पहुप–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ पुष्प, पुष्प।

पहुमी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूमि*) भूमि।

पहुला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रफुल्ल*) कुमुदिनी।

पहेली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *प्रहेलिका*) सुझौवल, गूढ़ प्रश्न या बात, फेर-फार की बात, समस्या, किसी विषय या वस्तु का सांकेतिक वर्णन। पु॰ **पहेला। मु॰ पहेली बुझाना**–फेर-फारया घुमा-फिरा कर अपने स्वार्थ की बात कहना।

पहवी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰ *वा सं॰पहलव*) फ़ारसी भाषा का प्राचीन रूप।

पाँ-पाँई-पाँउ-पाँय*–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पाद*) पाँव, पैर, पद।

पाँइता*–सज्ञा, पु॰ दे॰(हि॰ *पाँयता*) पाँवता, पाँव की ओर, **पैंता, पैताना** (आ॰) **पाँयता**।

पाँक–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पंक*) पंक, कींच, कीचड़, **कांदौ** (आ॰)।

पाँख†–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पक्ष*) चक्र, पंख, पर। (आ॰) पानी बरसने के पूर्व वायु का शब्द विशेष। **मु॰ (आ॰) पाँख बोलना**–वर्षा के पूर्व वायु में शब्द विशेष होना।

पाँखड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पक्षी*) पतिगा, पक्षी, चिड़िया।

पाँखुरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पंखड़ी*) पंखड़ी, पँखुरी, **पाँखुरी,** पाँखड़ी।

पाँखी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(हि॰ *पंखड़ी*) पँखड़ी, पुष्प पत्र, फूल की पत्ती या पत्ता।

पाँग–संज्ञा, पु॰ (दे॰) कछार, खादर।

पाँगा-पाँगानोन–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पंक*) सामुर्द्रीय या समुद्री नमक।

पाँगुर–वि॰ दे॰ (सं॰ *पंगु*) लँगड़ा, पंगु। संज्ञा, पु॰ (दे॰) लँगड़ा मनुष्य।

पाँच–वि॰ दे॰ (सं॰ *पंच*) चार और एक की संख्या, या अंक (5), बहुत से लोग, पंच। **मु॰–पाँचों अँगुलियाँ घी में होना**–सब प्रकार का आराम या लाभ होना, अच्छी बन पड़ना। **पाँचों सवारों में नाम लिखना**–श्रेष्ठों में अपने को भी गिनना। पांडव, जाति के मुखिया, जन-समूह।

पाँचक–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पंचक*) धनिष्ठा से लेकर पाँच नक्षत्र।

पाँचजन्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अग्नि, कृष्णा या विष्णु का शंख।

पाँच भौतिक, पंचभौतिक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाँचों तत्वों या

भूतों से बना शरीर।

पाँचाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पंचाल; पंजाब।

पाँचालिका-पांचाली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) द्रौपदी, पाँचें। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ पंचमी) किसी पक्ष की पंचमी तिथि, गुढ़िया, नटी, रंडी, 5 या 6 दीघ समासयुक्त कांति गुणपूर्ण पदावलीमय वाक्या विन्यास की प्रणाली या रीत (साहित्य)।

पाँचें–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पंचमी*) किसी पक्ष की पंचमी तिथि।

पाँजना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पणद्ध*) झालना, टाँके लगाना, धातु के टुकड़े टाँकों से जोड़ना।

पाँजर–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पंजर*) बगल और कटि के बीच पसलियों वाला भाग, हड्डियों का पिंजरा या ढाँचा। क्रि॰ वि॰ (आ॰) पास, समीप। संज्ञा, पु॰ (प्रान्ती॰) पसली, पार्श्व (सं॰) बगल।

पाँजी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *पदाति*) नदी का ऐसा घट जाना कि उसे हिल कर पार किया जा सके।

पाँझ–वि॰ दे॰ (सं॰ *पदाति*) पाँजी।

पांडव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पांडु के पुत्र, पांडुतनय, पांडु-सुत, पांडु के पुत्र कुन्ती और माद्री से उत्पन्न युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव, पांडु-कुमार। वितस्ता (झेलम) के तट का देश (प्राचीन)।

पांडव-नगर–संज्ञा, पु॰ यौ॰(सं॰) दिल्ली।

पांडित्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विद्वत्ता, पंडिताई।

पांडु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लाल मिला पीला रंगा, श्वेत रंग, रक्त-विकार जन्य एक रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है, पांडव वंश के एक आदि राजा, युधिष्ठिरादि पाँच पांडवों के पिता, श्वेत हाथी, परमल। यौ॰ **पांडु फली**–परमल या पादली।

पांडुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पीलापन, पाँडुतव, सफ़ेदी।

पांडुर–वि॰ (सं॰) (अप॰ **पांडर**) पीला, सफ़ेद। संज्ञा, पु॰ (सं॰) कोढ़, बगुला, कबूतर, खड़िया, कामलारोग। श्वेतकुष्ठ (वैद्य॰)।

पाँडुलिपि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰(सं॰) मसौदा, पाँडुलेख, कच्चालेख; (अं॰), मैनुस्क्रिप्ट।

पांडुलेख–संज्ञा, पु॰ यौ॰(सं॰) पाँडुलिपि, मसौदा, लेखादि का परिवर्तनशील प्रथम रूप।

पाँडे–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पंडित*) ब्राह्मणों (और कायस्थों की भी) की एक शाखा, पंडित, विद्वान्।

पाँडेय–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पंडित*) पाँडे, ब्राह्मणों की एक शाखा, पंडित, विद्वान्।

पाँतर–संज्ञा, पु॰ दे॰(दे॰) उजाड़, निर्जन।

पाँत, पाँति, पाँती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *पंक्ति*) पंक्ति, पंगति, कतार, एक साथ भोजन करने वाले जात के लोग।

पाँथ–वि॰ (सं॰) बटोही, पथिक, यात्री, विरही, वियोगी।

पाँथ-निवास–संज्ञा, पु॰ यौ॰(सं॰) धर्मशाला, सराय, चट्टी, **पाँथशाला**–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰(सं॰) पाँथ-निवास, सरॉय, धर्मशाला, चट्टी।

पापोश–संज्ञा, पु॰ दे॰(फा॰*पापोश*) जूता, पनहीं।

पाँयँ*†–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰*पाद*) पाँव, पैर, चरण।

पाँयैचा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) क़दमचा, पाखाने में शौच के लिए बैठने का स्थान, पायजामे की मोहरी।

पाँयता–संज्ञा, पु॰ दे॰(हि॰ *पाँय+तल*) पैंता, पैंताना, खाट पर लेटने में जिस ओर पाँव रहते हैं। नीच, पापी, मूर्ख।

पाँव–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पाद*) **गोड़** (प्रान्ती॰) पैर, चरण, पद, पाँय। **मु॰ पाँव उखड़ना (जाना)**–हार जाना, हिम्मत छोड़कर भागना। **पाँव उठाना**–शीघ्रता या वेग से चलना। **पाँच उतरना (उखड़ना)**–पाँव का उखड़ या टूट जाना या फूलना। **पाँव काँपना (डगमगाना)**–डरना, भयभीत होना। **पाँव (किसी का) उखाड़ना**–किसी को किसी स्थान पर ठहरने या जमने न देना। **किसी के गले में पाँव डालना**–तर्क-द्वारा उसी की बातों से उसे दोषी ठहराना। **पाँव घिसना (घिस जाना)** बहुत चलना, चलते-चलते थक जाना। **पाँव चल जाना**–डगमगाना, अस्थिर होना। **पाँव (न) जमना**–दृढ़तापूर्वक (न) स्थिर होना या ठहरना, विचलित हो न हटना। **पाँव ज़मीन पर न ठहरना रखना**–अत्यन्त प्रसन्न होना, मारे हर्ष के फूल जाना। अभियान करना। **पाँव छालना (पैर रखना)**–किसी कार्य को प्रारम्भ करना या करने को उद्यत होना। **पाँव डिगना**–फिसलना, रपटना या किसी कार्य से निराश होना। **पाँव तले मलना (पद-दलित करना)**–गुख या पीड़ा देना, पीड़ित करना, कुचलना। **पाँव तोड़ना**–किसी

के कार्य में विघ्न या बाधा डालना, हानि पहुँचाना, बड़ी दौड़-धूप या कोशिश करना, इधर उधर हैरान हो दोड़ना। आलस में बैठा रहना, अधिक चलना। **पाँव तोड़ कर बैठना (बैठ जाना)** हार कर बैठना, अचल या स्थिर होना। **पाँव धो-धो कर पीना**–अधिक आदर या सत्कार करना, अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति करना, विनय करना। **किसी के पाँव धरना (पकड़ना)**–दीनता से पैर छूकर विजय करना, प्रणा करना। **पाँव निकालना**–मर्यादा छोड़ना, कुल की रीति को ढाँक जाना। **पाँव पकड़ना**–शरण में आना, दीनता से विनती करना। पैर छूना, विनय कर आने से रोकना। **पाँव पर पाँव रखना**–अनुकरण करना, दूसरे की चाल पर चलना, शीघ्रता करना। **पाँव खारना, पैर धोना**–पाँव पाँव चलना पैदल चलना। **पाँव पीटना**–घबराना, अधीर होना, व्यर्थ परिश्रम या निष्फल उद्योग करना। **पाँव पड़ना, (परना)**–पैरों पर गिर कर प्रणाम करना, दीनता से प्रार्थना करना। **पाँव पर गिरना, पाँव पूजना**–भक्ति करना, पृथक् या अलग रहना, ब्याह में कन्या-पक्ष वालों का वर-कन्या के पैर पूजना। **पाँव पसारना**–पैर फैलाना, मरना, आडंबर या ठाठ-बाट बढ़ाना, अति करना, **पाँव (पैर) फूँक-फूँक कर रखना**–सावधान रहना, सावधानी से चलना, विचार-पूर्वक कार्य करना। **पाँव फै॰: कर सोना**-निश्चिन्त या बेधड़क या निर्भय रहना। **पाँव फैलाना**–अधिकार बढ़ाना, प्रवेश या पैठ या प्रसार करना, मचलना, जिद करना, पाकर अधिक के लिए लोभ से हाथ फेलाना। **पाँव बढ़ाना**–वेग से चलना, अधिक्रमण करना, आगे (अधिक) बढ़ना, पैर आगे रखना। **पाँव भर जाना**--श्रात या थाक जाना, थकावट से पैरों का भारी होना। **पाँव भारी होना**–गर्भ रहना। **पाँव भारी पड़ना**–ज़ार से पैर पड़ना, थक जाना। **पाँव रगड़ना**-निष्फल या व्यर्थ काम करना, व्यर्थ उद्योग करना, शोक या दुख पगट करना। **पाँव (पद) रोपना**–प्रण या प्रतिज्ञा करना। "सभा माँझ मन करि पद रोपा"–रामा॰। **पाँव जमना**–ठहरना, प्रणाम करना। **पाँव से पाँव बांधना (बाँध रखना)**–सदा किसी के पीछे लगा रहना, कभी भी नहीं छोड़ना, रक्षा या चौकसी करना। **पाँव भिड़ाना**–बराबरी करना। **पाँव सोना**–पाँव शून्य होना, झुनझुनी उठना। **दबे पाँव (पैर) आना**–धीरे-धीरे आना। **(किसी के) पाँव न होना**–स्थिर न रहने का साहस या वल न होना, दृढ़ता न होना, चल न सकना। **धरती (ज़मीन) पर पाँव (पैर न धरना) रखना**–अति अभिमान करना।

पाँवड़, पाँवड़ा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (ह॰ *पाँव+री प्रत्य॰*) **पाँवड़ा,** जूता, खड़ाऊँ, सीढ़ी, सोपान। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(हि॰ *पौग*) पौरी, ड्योढ़ी, दालान, बैठक।

पाँशु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रज, धूलि, दोष, बालू, खाद, **पाँस** (दे॰)।

पाँशुका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धूलि, रज, रजस्वला।

पाँशुल–वि॰ पु॰ (सं॰) दोषी, मलिन, लंपट, व्यभिचारी। (स्त्री॰ **पांशुला**)।

पाँशुना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दोषिणी, मलिना, व्यभिचारिणी।

पाँस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *पाँशु*) खेत को उपजाऊ करने की सड़ी-गली चीज़ों की खाद, सड़ने से उठा खमीर।

पाँसना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पासँ+ना प्रत्य॰*) खेत में खाद देना। प्रे॰ रूप–**पँसाना, पसधाना**।

पाँसा–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पाशक*) चौपड़ खेलने के हाथ दाँत या हड्डी के चौकोर टुकड़े। **मु॰ पाँसा पलटना**–किसी उपाय या उद्योग का उत्तम फल होना।

पाँसुरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(हि॰ *पसली*) पसली।

पाहीं*†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *पंत*) समीप, निकट-पास से (करण-विभक्ति)।

पाइ*–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पायिक*) पाँव, पाद, पू॰ का॰ क्रि॰ स॰ (हि॰ *पाना*) पाकर।

पाइक*–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पाद*) धावन, दूत, दास, सेवक।

पाइतरी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं *पाद-स्थली*) पाँयताना, पाँयता।

पाइल*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(हि॰ पायल) पायल, पाजेब, **छागल** (प्रान्ती॰)।

पाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *पाद=चरण*) किसी वस्तु का चौथाई भाग, दीर्घ आकार की मात्रा, पूर्ण विराम का चिन्ह, एक ताँबे का सिक्का जो एक पैसे में 3 मिलता था, धुन एक कीड़ा (गेहूँ या धान का), एकाई का चौथाई सूचक संख्या के आगे लगाने की छोटी खड़ी लकीर, मंडल में नाचने की क्रिया।

पाउँ*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. पाद) पाँव, पैर।

पाक–संज्ञा, पु. (सं.) पकाने की क्रिया था भाव, पकवान, रसोई, औषधियों का चाशनी में पाग, पाचन-क्रिया, श्राद्ध के पिंडों की खीर। रामा.। वि. (फ़ा.) शुद्ध, पवित्र, निर्मल, निर्दोष, समाप्त। यौ. **पाक-साफ। मु. झगड़ा पाक करना**–किसी कठिन कार्य को कर डालना, बखेड़ा मिटाना, मार डालना। साफ। यौ. **पाकदामन**–निर्दोष, निष्कलंक। वि. दे. (सं. *पक*)–परिपक। **पाककर्त्ता**–वि. यौ. (सं.) रसोई बनाने वाला, रसोइया।

पाकक्षार–संज्ञा, पु. (सं.) जवाखार।

पाकगृह–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रसोई-घर।

पाकड़–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पाकर*) पाकर पेड़।

पाकदामन–वि. यौ. (फ़ा.) निर्दोष। संज्ञा, स्त्री. **पाकदामनी**–सती, पतिव्रता।

पाकना–क्रि. अ. दे. (हि. *पकना*) पकना, पक जाना, परिपक होना।

पाकपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रसोई के बरतन, थाली, हाँडी आदि।

पाकपटी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) चूल्हा, भट्टी, आँवा।

पाकयज्ञ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गृह-प्रतिष्ठा के समय खीर का हवन, पंच महायज्ञों में से ब्रह्मयज्ञ को छोड़कर शेष 4 यज्ञ, बलि, वैश्य देव, श्राद्ध, अतिथि-भोजन। वि. **पाकयाज्ञिक**।

पाकर-पाकरी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पर्कटी*) पकरिया, पलखन नामक पेड़।

पाकरिपु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इन्द्र।

पाकशाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रसोईघर, **पाकालय, पाकगृह**।

पाकशासन–संज्ञा, पु. (सं.) इन्द्र, पाक नामक दैत्य के मारने वाले, (दे.) **पाक सासन**।

पाक संड़सी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) गरम बटलोई उठाने का हथियार, संडसी।

पाकस्थली–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पक्वाशय, रसोईघर। पु. **पाकस्थल**।

पाका†–वि. दे. (सं. *पक्व*) पका हुआ, पक्का। संज्ञा, पु. (दे.) फोड़ा, मण।

पाकारि-पाकारी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *वा* दे.) पाक दैत्य के शत्रु, इन्द्र।

पाकागार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रसोईघर।

पाकूया–संज्ञा, पु. (दे.) सज्जी खार।

पाक्य–वि. (सं.) पचने या पकने योग्य।

पाक्षिक–वि. (सं.) पक्ष या पखवारा सम्बन्धी, पक्षवाही, दो मात्राओं का एक छंद (पिं.)।

पाखंड–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाषंड*) ढोंग, ढकोसला, आडंबर, धोखा, छल, नीचता, दिखावा, वेद-विरुद्ध आचार। वि. **पाखंडी, पाखंडी** (आ.)। **मु. पाखंड फैलाना**–किसी के ठगने का ढोंग फैलाना, मक्कर रचना। **पाखंड रचना**–दिखाया या धोखे की बात बनाना। **पाखंड करना**–ढोंग करना।

पाख-पाखा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्ष*) एक पक्ष या 15 दिन, **पखवारा** (आ.), त्रिकोणाकार वढ़ेर रखने की चोड़ाई की दीवार, पर, पंख, पखना।

पाखर-पाखरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पक्षर*) बैलगाड़ी में अनाज आदि भरने को टाट की एक बड़ी गोन, हाथी की लोहे की झूल। संज्ञा, पु. (दे.) पाकर वृक्ष।

पाखा–संज्ञा, पु. दे. (*सपक्ष*) छोर, कोना, पाख।

पाखाना–संज्ञा, पु. (फा.) पुरीष, टट्टी, मैला, गृह, मल-त्याग स्थान।

पाग–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पग*) पगड़ी, पगिया। संज्ञा, पु. दे. पाक (सं.), चाशनी में पगी औषधि के लड्डू, शीरे में पके फल, मिठाई का शीरा।

पागना–क्रि. स. दे. (सं. *पाक*) मीठी चीनी में पागना या लपेटना। क्रि. अ. (यू.) अति अनुरक्त होना। क्रि. प्रे. रूप–**पगाना, पगवाना**।

पागल–वि. (दे.) सिड़ी, बावला, विक्षिप्त, मूर्ख, जिसका दिमाग या होश-हवास ठीक न हो। स्त्री. **पगली**। संज्ञा, पु. **पागलपन**–उन्माद, मूर्खता, चित्त, विभ्रम, इच्छा और बुद्धि का विकारक रोग।

पागलखाना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पागल+खानः* फ़ा.) पागलों का औषधालय।

पागा–संज्ञा, पु. (दे.) घोड़ों का समूह। वि. दे. (हि. *पागना*) पागा हुआ।

पागुर†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोमंथन*) जुगाली, खाए हुए को फिर से चबाना।

पागुराना, पगुराना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पागुर*) जुगाली या रोमंथ करना, बातचीत करना।

पाचक–वि॰ (सं॰) पकाने या पचाने वाला, संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाचन-शक्ति अधक औषधि, रसोइया, पाँच पित्तों में से एक पाचन अग्नि।

पाचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पकाना, पचाना, खट्टा रस, अग्नि, भोजन का शरीर की धातुओं में परिवर्तन, जठराग्नि वर्धक औषधि, प्रायश्चित। वि॰ **पाचक।** स्त्री॰ **पाचिका।** संज्ञा, स्त्री॰ **पाचकता, पाचकत्व।** वि॰ पचाने वाला।

पाचन-शक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह शक्ति जो भोजन पचाती है, हाजिमा।

पाचना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पाचन*) भली-भाँति पकाना। वि॰ **पाचित।**

पाचनीय–वि॰ (सं॰) पकाने या पचाने के योगय पथ्य।

पाच्य–वि॰ (सं॰) पाचनीय, पकाने या पचाने योग्य।

पाछ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *प्राछ़ना*) पोस्ता की डोंड़ी से अफीम निकालने के हेतु लगाया हुआ चीरा या किसी पेड़ में रस निकालने के हेतु लगाया हुआ चाकू या चीरा। ‡क संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पश्चात्*) पीछा, पिछला भाग। क्रि॰ वि॰ (दे॰) **पीछे, पाछे।**

पाछना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पाछा*) चीरना, चीरा लगाना।

पाछल-पाछिल–वि॰ दे॰ (हि॰ *पिछला*) पिछला, पीछे का, पीछे वाला।

पाछो, पाछू, पाछ*–क्रि॰ वि॰ (हि॰ *पीछे*) पीछे, पश्चात्।

पाज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाजस्य*) पाँजर।

पाजामा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) पैरों के कमर तक ढाँकने का पाँवों में पहनने का सिला कपड़ा, इसके भेद हैं–पेशावरी, नैपाली, सुथना, चूड़ीदार अग्री, कलीदार, इजार, तमान आदि और पतलूननुमा।

पाजी*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पदाति*) रक्षक, पैदल, सिपाही, पयादा, प्यादा, चौकीदार। वि॰ दे॰ (सं॰ *पाथ्य*) बुद्ध, लुच्चा, गुंडा। संज्ञा, पु॰ **पाजीपन।**

पाजेब–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) नूपुर, छागल।

पाटंबर, पाटांबर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रेशमी कपड़ा, **पटंबर** (दे॰)।

पाट–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पट्ट*) रेशम, राजगद्दी, सिंहासन, पीढ़ा, चक्की का एक पिल, कपड़ा वालों की पटियाँ, फैलाव, नख, रेशम का कीड़ा, एक प्रकार का सन, पीढ़ा। यौ॰ **राज-पाट, पाटाम्बर**–दे॰ पटंबर। नदी की चौड़ाई, चौड़ाई (पत्रादि), भरना।

पाटकृमि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रेशम का कीड़ा।

पाटम्बर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चोर, तस्कर।

पाटन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पाटना*) पटाव, छत, पटनई (दे॰)। साँप का विष उतारने का एक मंत्र, घर के ऊपर की अटारी या छत।

पाटना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पाट*) गढ़े को भर देना, छत बनाना, तृप्त करना, चुकाना (ऋण), सींचना।

पाटमहिषी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पटरानी।

पाटल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाढर का वृक्ष।

पाटला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पाढर का पेड़, लाल लोध, दुर्गा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार का सोना।

पाटलिपुत्र–पाटलीपुत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मगध या बिहार की राजधानी, पटना नगर।

पाटली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पांडुफली, पाडर, पटना की एक देवी।

पाटव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चतुराई, कुशलता, पटुता, दृढता, विज्ञता, नैपुणय, आरोग्यता।

पाटवी–वि॰ (हि॰ *पट*) पटरानी का पुत्र, रेशमी या कौषेय कपड़ा।

पाटसन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पटसन*) पटसन, एक प्रकार का सन।

पाटा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *पाट*) पीढ़ा, पट्टा।

पाटिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पौधा विशेष, छाल, छिलका, एक दिन की मज़दूरी।

पाटिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पटिया, ठुस्सी, गले का एक सोने का बना गहना।

पाटी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रीति, परिपाटी, अनुक्रम, जोड़, बाकी, गुणा आदि का क्रम, पंक्ति, श्रेणी, बालों की पटिया। **मु॰ पाटी पढ़ना**–पाठ पढ़ना, शिक्षा पाना। **पाटी पारना**–माँग के दोनों ओर बालों की पटिया

बनाना, चारपाई की लम्बी पट्टी। चट्टान, खपरैल की नाली का अर्थभाग।

पाछौर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंदन।

पाठ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संस्था, सबक़, किसी पुस्तक को बिना अर्थ के मूलमात्र पढ़ना। धर्म-ग्रंथ का नियमानुसार पठन, पढ़ा या पढ़ाया गया, पढ़ाई, अध्याय, परिच्छेद। **मु॰ पाठ (कुपाठ) पढ़ाना**–स्वार्थ हेतु बहकाना। **उलटा पाठ पढ़ाना**–बहका देना, कुछ का कुछ समझा देना। शब्द या वाक्य-योजना। वि॰ **पाठ्य**।

पाठक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पढ़ने वाला, बाँचने वाला, पाठ करने या पढ़ाने वाला, अध्यापक, धर्मोपदेशक, ब्राह्मणों की एक पदवी या जाति।

पाठदोष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पढ़ने का ऐब या निंदनीय ढंग।

पाठन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पढ़ाना, अध्यापन। यौ॰ **पठन-पाठन**। वि॰ **पाठनीय**।

पाठना*–कि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पढ़ाना*) पढ़ाना।

पाठ-भेद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाठांतर।

पाठशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) चटशाला, विद्यालय, मदर्सा, स्कूल।

पाठांतर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाठ-भेद, दूसरा पाठ, एक ग्रंथ की दो प्रतियों में शब्द वाक्य या क्रम में अन्तर।

पाठा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पाठ नामक लता। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुष्ट*) जवान, हृष्ट पुष्ट, मोटा-ताजा, पट्ठा, भैंसा, बैल आदि। स्त्री॰ **पाठी, पठिया**। मु॰ 'साठा सो पाठा'।

पाठित–वि॰ (सं॰) पढ़ाया हुआ।

पाठी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पाठिन्*) पाठक, पाठ करने या रखने वाला, चीता या चितावर।

पाठीन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मछली का भेद।

पढ़ना (दे॰)।

पाठ्य–वि॰ (सं॰) पढ़ने-योग्य, पानीय।

पाड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पाट*) किनारा, (धोती, आदि कपड़े का) मचान, बाँध, चह, तिकठी (फाँसी की), कुएँ की जाली।

पाड़ना–कि॰ स॰ (दे॰) गिराना, पछाड़ना, पटकना, पारना, लिटाना।

पाड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पट्टन*) पड़ा (प्रान्ती॰) भैंस का बच्चा, मुहड्डा।

पाढ़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाटा*) पाटा, रखवाली वाला मचान।

पाढ़त*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पढ़ना*) जो पढ़ा जाय, जादू-तंत्र, पढ़ना क्रिया का भाव।

पाढ़र-पाढ़ल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाटल*) पाडर नाम का पेड़।

पाढ़ा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चित्रमृग। संज्ञा, स्त्री॰ एक औषधि-लता, **पाठा** (दे॰)।

पाढ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पाठा*) पाढ़ नामक औषधि विशेष।

पाण–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पीना, पत्ता, तांबूल, कपड़े की माँड़ी, पान।

पाणि, पाणी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हाथ, कर, **पानि** (दे॰)।

पाणि-ग्रहण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विवाह की एक रीति जब वर कन्या का हाथ पकड़ता है, ब्याह, विवाह।

पाणिग्राहक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पति।

पाणिघ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हाथों का बाजा, मृदंग, ढोल आदि।

पाणिज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अँगुली, नाखून।

पाणिनि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्याकरण-ग्रंथ अष्टाध्यायी के रचयिता एक प्रसिद्ध मुनि जो ईसा से 3 या 4 सौ वर्ष पूर्व हुए थे।

पाणिनीय–वि॰ (सं॰) पाणिनि मुनि का कहा या निर्माण किया हुआ।

पाणिनीय दर्शन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाणिनि मुनि का व्याकरण शास्त्र (अष्टाध्यायी)।

पाणिपाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कर और चरण, हाथ-पैर।

पाणिपीडन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विवाह, ब्याह, पाणिग्रहण, क्रोधादि से हाथ मलना।

पातंजल– वि॰ (सं॰) पतंजलि कृत। संज्ञा, पु॰ पतंजलि कृत योग-दर्शन और महाभाष्य (व्याकरण का उत्कृष्ट ग्रंथ।)।

पातंजल दर्शन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) योग दर्शन या योग शास्त्र।

पातंजल भाष्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महाभाष्य नामक व्याकरण का प्रख्यात ग्रंथ।

पातंजलसूत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) योग-सूत्र या योग-शास्त्र।

पात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पतन, मृत्यु, नाश, गिरना, पड़ना, नछत्रों की कक्षाओं के क्रांति-वृत्त को काट ऊपर या

नीचे जाने का स्थान (खगोल) राहु। संज्ञा, पु. यौ. (सं. *पत्र*) पत्र, पत्ता। कान में पहनने के स्वर्ण के पत्ते (आभूषण)।

पातक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाप, अधर्म, कुकर्म। वि. **पातकी**।

पातन–संज्ञा, पु. (सं.) पत्तों (अ.), गिराने वाला। क्रि. स. गिराने की क्रिया।

पातर, पातुर, पातुरी†*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पत्र*) पतरी, पत्तल। संज्ञा, स्त्री. (सं. *पातली*) वेश्या, **पतुरिया,** रंडी। *†वि. दे. (सं. *पात्रट=पतला*) पतला, दुबला, क्षीण, सूक्ष्म, बारीक।

पातरि-पातरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पत्र*) पत्तल, **पतरी** (दे.)। वि. स्त्री. (दे.) दुबली, पतली, क्षीण कृश।

पातल–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पातर*) पत्तल। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पातली*) रंडी, पतुरिया। *†वि. दे. (सं. *पात्रट=पतला*) पतला।

पातव्य– वि. (सं.) रक्षा करने या पीने के योग्य।

पातराज–संज्ञा, पु. दे. (सं.) सर्प विशेष।

पातशाह–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *पादशाह*) बादशाह, राजा।

पाताखत†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पात+आखत*) पत्र और अक्षत, तुच्छ भेंट।

पातावा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) पाँवों में पहनने का मोज़ा, जूते का ऊपरी तला।

पातार, पाताल–संज्ञा, पु. (सं.) **पताल** (दे.) पृथ्वी के नीचे 7 लोकों में से एक लोक, अधोलोक, नाग-लोक, गुफा, विदर या बिल, मात्रिक छंदों की संख्या, कला गुरु लघु, आदि का सूचक चक्र (पिं.) बढ़वानल। वि. **पातालीय** (दे.) **पाताली**।

पाताल-खंड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाताल।

पाताल-गरुड़, पाताल-गरुड़ी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) छिरैटा, छिरिहटा।

पाताल-तुंबी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक लता विशेष।

पातालनिलय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक दैत्य, सर्प, जिसका घर पाताल में हो।

पातालनृपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सीसा धातु, पाताल का राजा, धातु।

पातालयंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कड़ी औषधों के गलाने या तेल निकालने का पंथ।

पाति-पाती*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पत्र, पत्री*) पत्ती, पत्ता, दल, पत्र, चिट्ठी।

पातित्य–संज्ञा, पु. (सं.) पतित होने का भाव, पाप, दुराचार, अधःपतन।

पातिव्रत-पातिव्रत्य–संज्ञा, पु. (सं.) पतिव्रता होने का भाव।

पातुर†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पातली*) वेश्या, रंडी, पतुरिया, **पातुरी** (दे.)।

पात्र–संज्ञा, पु. (सं.) बरतन, भाजन, किसी विषय का अधिकारी, उपयुक्त, योग्य, नाटक के नायक, नायिका आदि, नट, अभिनेता, पत्र, पत्ता।

पात्रता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) योग्यता, क्षमता, संज्ञा, पु. **पात्रत्व**।

पात्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छोटा बरतन, बरतन वाला।

पात्रीय–वि. (सं.) पात्र का, पात्र सम्बन्धी।

पाथ–संज्ञा, पु. (सं. *पायस्*) पानी, जल, अग्नि, सूर्य, अन्न, वायु, आकाश। यौ. **पाथनाथ**–सागर। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पथ*) राह, रास्ता, मार्ग, सागर।

पाथना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रथन*) बनाना, गढ़ना, सुडौल करना, ईंटें या खपरे बनाना, थोपना, कंडे बनाना, मारना, पीटना, ठोंकना, पीट या दबा कर बड़ी टिकिया बनाना।

पाथनिधि–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं.*पाथीनिधि*) समुद्र, सागर, **पाथनाथ**।

पाथर*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रस्तर*) पत्थर।

पाथा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाथस्*) जल, पानी, अन्न, आकाश। क्रि. स. **सा.** भू. (हि.) पाथना।

पाथि–संज्ञा, पु. (सं. *पाथस्*) समुद्र, आँख, घाव की पपड़ी, पितरों का जल।

पाथेय–संज्ञा, पु. (सं.) राह या मार्ग का भोजन, राह-खर्च, संबल; पैंडा (ग्रा.)

पाथोज–संज्ञा, पु. (सं.) कमल।

पाथोद–संज्ञा, पु. (सं.) मेघ, बादल।

पाथोधर–संज्ञा, पु. (सं.) मेघ बादल।

पाथोधि–संज्ञा, पु. (सं.) समुद्र।

पाथोनिधि–संज्ञा, पु. (सं.) समुद्र।

पाद–संज्ञा, पु. (सं.) पाँव, चरण, पैर, छंद का चौथाई भाग,

चरण, पद, बड़े पहाड़ के पास का लघु पर्वत, वृक्ष मूल, तल, गमन। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पर्द*) अधोवायु, अपानवायु, गुदा-मार्ग की वायु।

पाद-कटंक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बिछुआ।

पादक–वि. (सं.) चलने वाला, चौथाई।

पादकीलिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पाजेब।

पादकृच्छ्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) व्रत विशेष।

पादखंड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वन, जंगल।

पादग्रन्थि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ऐंढ़ी।

पाद-गंडिर–संज्ञा, पु. (सं.) श्लीपद रोग, पीलगाँव रोग (वैद्य.)।

पादग्रहण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँव छूना।

पादचत्वर–संज्ञा, पु. (सं.संज्ञा, पु. (सं.) बकरा, बालू का टीला, ओला, पीपल का पेड़। वि. निन्दक, चुगलखोर।

पादचारी–संज्ञा, पु. (सं.) पैदल चलने वाला।

पादटीका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वह टीका या टिप्पणी जो किसी ग्रंथ के नीचे लिखी गई हो, फुटनोट (अं.)।

पादतल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँव का तलवा।

पादत्र-पादत्राण–संज्ञा, पु. यौ. (सं. जूता, खढ़ाऊँ, पावड़ी, पीला।)

पादना–क्रि. अ. दे. (सं. *पर्दन*) अधोवायु छोड़ना, वायु सरना।

पादप–संज्ञा, पु. (सं.) पेड़, वृक्ष, बैठने का पीढ़ा।

पादपीट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पीढ़ा, पाटा।

पादपूरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) छंद के किसी चरण को पूरा करने के हेतु रखा गया शब्द, किसी पद का पूरक वर्ण या शब्द।

पादप्रक्षालन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँव धोना।

पादप्रणाम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँव छू कर प्रणाम, साष्टांग दंडवत।

पाद प्रहार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लात मारना, टोकर मारना, **पदाघात**।

पादरक्ष-पादरक्षक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जूता, पनही, खड़ाऊँ, पावड़ी, पौला (आ.)।

पादरी–संज्ञा, पु. दे. (*पुर्त. पैड़े*) ईसाई धर्म का पुरोहित।

पादबंदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँव पड़ कर प्रणाम।

पादशाह–संज्ञा, पु. (फ़ा.) बादशाह।

पादहीन–वि. यौ. (सं.) बिना चरण का।

पादाकुलक–संज्ञा, पु. (सं.) चौपाई छंद।

पादाक्रांता–वि. यौ. (सं.) पददलित, पाँव से रौंदा या कुचिला हुआ, पामाल।

पादाति-पादातिक–संज्ञा, पु. (सं.) पैदल सिपाही, प्यादा, **पयादा** (दे.)।

पादारघ*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *पाद्यार्घ*) पाँव धोने के लिए जल।

पादार्पण-पदार्पण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रवेश करना, पाँव देना या रखना।

पादी–संज्ञा, पु. (सं. *पादिन्*) पाँव वाले जल-जन्तु, जैसे–मगर।

पादीय–वि. (सं.) पद वाला, मर्यादा वाला।

पादुका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) खड़ाऊँ, पावड़ी।

पादोदक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चरणामृत, पाँव का धोवन।

पाद्य–संज्ञा, पु. (सं.) पाँव धोने का जल।

पाद्यक–संज्ञा, पु. (सं.) पाद्य देने का एक भेद विशेष।

पाद्यार्घ–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं.) पाँव धोने का जल, पूजा की सामग्री।

पाधा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *उपाध्याय*) आचर्य्य, पंडित, उपाध्याय, पुरोहित।

पान–संज्ञा, पु. (सं.) पीना, खाना, सेवन करना, जैसे–यौ. **मद्यपान**–शराब पीना यौ. **खानपान**। पेय द्रव्य, पीने की वस्तु, पानी, मथ, कटोरा, प्याला। *संज्ञा, पु. (सं. *प्राण*) प्राण, प्रान (दे.)। संज्ञा, पु. (सं. *पर्ण*) पत्र, ताँवूल। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाणि*) पानि, हाथ। **मु. पान देना**–बीड़ा देना। **पान लगाना**–कत्था- सुपारी आदि से पान वनाना। यौ. **पान-पत्ता**–लगा या बना पान, तुच्छ पूजा या भेंट। यौ. **पानफूल**–सामान्य उपहार या भेंट, अत्यन्त मृदु वस्तु। **पान बनाना**–बीड़ा तैयार करना, **पान लगाना। पान लेना**–बीड़ा लेना, तास के रंगों का एक भेद।

पानगोष्ठी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मद्यपान की मंडली या सभा।

पानड़ी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *पान+ड़ी प्रत्य.*) एक सुगंधित पत्ती।

पानदान–संज्ञा, पु. (हि. *पान*+फ़ा. *दान प्रत्य.*) पान का डिब्बा, पनडुब्बा।

पानरा-पनारा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पनारा*) नावदान, नरदवा, नर्दा (आ.)।

पाना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रापण*) प्राप्त करना, वापस मिलना, भोगना, समर्थ या बराबर होना, भोजन करना, जाना, (साधु) पावना, अधिकार में करना, पता या भेद पाना, सुन या जान लेना, अनुभव या साक्षात् करना, समझना। देखना, जानना, मिलना। वि. **प्रासव्य–पावना**।

पानागार–संज्ञा, पु. यो. (सं.) शराबखाना, मधुशाला, **हौली** (आ.)।

पानात्यय–संज्ञा, पु. यो. (सं.) अति मद्यपान से उत्पन्न एक रोग (वै.)।

पानासक्त- वि. यो. (सं.) मद्यप्रिय।

पानाहार–संज्ञा, पु. यो. (सं.) अन्न-जल, खाना-पीना।

पानि-पानी†*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाणि*) हाथ। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *पानीय*) पानी।

पानिग्रहन*–संज्ञा, पु. दे. यो. (सं. *पाणि-ग्रहण*) विवाह, व्याह।

पानिप–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पानी+प प्रत्य.*) कांति, द्युति, चमक, ओप, आब।

पानिय–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पानीय*) पानी।

पानी–संज्ञा, पु. (सं. *पानीय*) आक्सीजन और हाईड्रोजन गैसों से बना एक द्रव पदार्थ (विज्ञा.), जल, अंबु, तोय। **मु॰ पानी का बतासा या बुलबुला**–नश्वर, क्षणभंगुर वस्तु। पानी का फेन या फफोला–**पानी की तरह बहाना**–अंधाधुंध खर्च करना, बिना सोचे-समझे खर्च करना। **पानी के मोल**–बहुत कम मूल्य पर, बहुत ही सस्ता। **पानी टूटना**–कुएँ ताल में पानी का बहुत ही कम हो जाना। **पानी देना**–सींचना, पितरों के नाम पर पानी डालना, तर्पण करना। **पानी पढ़ना**- मंत्र पढ़कर पानी फूँकना। **पानी परोना**–पानी पड़ना या फूँकना। **पानी पानी होना**–शरम के मारे कट जाना, लज्जित होना। **पानी फूँकना**–मंत्र पढ़कर पानी में फूंक मारना। **किसी पर पानी फेरना या फेर देना (डालना, गिराना)**–मटियामेट या चौपट कर देना। **किसी के सामने पानी भरना**–अधीनता स्वीकार करना, फीका पड़ना। **पानी में आग लगाना**–जहाँ सम्भव न हो वहाँ झगड़ा करा देना। **पानी में फेंकना या बहाना**–बरबाद या नष्ट करना। **सूखे पानी में डूबना**–भ्रम में पड़ना, धोखा खाना। **मुँह में पानी भर आना या छूटना**–स्वाद लेने की इच्छा होना, अति लालच होना। रस, अर्क, जूस, छवि, कांति, जौहर, आब, इज़्ज़त-आबरू, शर्म, पानी-सी द्रव वस्तु, जल-रूप में सार अंश, मान, प्रतिष्ठा। **मु॰ पानी उतारना**–इज़्ज़त उतारना, अपमानित करना। **पानी जाना**–लज्जा या प्रतिष्ठा नष्ट होना या न रहना, इज़्ज़त जाना। **(आँख का) पानी जाना**–लज्जा न रहना। मरदानगी, हिम्मत, वर्ष, (जैसे–पाँच, पानी का बैल), मुलम्मा, वंशगत विशेषता या कुलीनता (पशुओं की)। **पानी रखना**–मान-मर्यादा रखना। **मु॰ पानी करना या कर देना**–किसी का क्रोध मिटाना, चित्त शीतल करना, नष्ट या शिथिल करना। **पानी निकालना**–अति श्रमित या दलित करना। जलवायु, आवहवा, पानी-सी फीकी निःस्वाद वस्तु, बेग, द्वंद युद्ध। **मु॰ पानी लगना**–जलवायु का उपयुक्त न होना, उससे स्वास्थ्य बिगड़ना। **संज्ञा**, पु. (हि.) कांति, धार बाढ़ (अस्त्रादि की) **मु॰ पानी रखना** (खड्ग में)–बाढ़ या धार रखना। **(आँखी से) पानी आना (गिरना)**–आँखों से आँसू गिरना। **(आँखों में)** पानी आना (बहना, गिरना)–आँसू बहते रहना। **मु॰ पानी न माँगना**- तुरन्त मर जाना। **पानी पड़ना**–मेंह बरसना। **पानी पी कर कोसना**–सदा बुरा मनाना, अशुभ चाहना। **पानी भरना (भराना)**–अधीन होना (करना)। **(किसी जगह) पानी भरना**–पानी रुकना, अधीनता स्वीकार करना, तुच्छ होना। **(आँखों का) पानी मरना**–लज्जा न रहना। **पानी पतला करना**–दुख देना, पीड़ा पहुँचाना, दुखी करना। **पानी-सा पतला**- अति तुच्छ, सूक्ष्म या साधारण।

पानीदार–वि. (हि. *पानी+दार फा. प्रत्य.*) इज़्ज़तदार, माननीय, साहसी, धार, बाढ़ या चमक वाला।

पानी देवा–वि. यौ. (हि. *पानी+देवा–देने वाला*) पिंडदान या तर्पण करने वाला, वंशज।

पानीफल–संज्ञा, पु. यौ.(हि. *पानी+फल सं.*) सिंघाड़ा।

पानीय–संज्ञा, पु. (सं.) पानी, जल। वि. पीने के योग्य, रक्षा-योग्य।

पानौरा†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पान+बरा*) पान के पत्ते की पकौड़ी।

पाप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बुरा काम, कुकर्म, पातक, अध, पापी (*विलो.*–पुणय, धर्म)। **मु॰ पाप उदय होना**–बुरे, प्रारम्भ या संचित कुकर्मों या पापों का फल मिलना, पाप कटना, पाप का नाश होना। **पाप कटना**–पाप का नाश होना, बसेड़ा था अनिश्चित काम का दूर होना। **पाप काटना**–पाप मिटाना, पाप का बुरा फल भोगना। **पाप कमाना या पटोरना**–पाप कर्म करना। **पाप लगना**–दोष या पाप होना, कलंक लगना। अपराध, पाप-बुद्धि, अनिल, बुराई, अहित, जुर्म, हत्या, वध, झंझट। **मु॰ पाप कटना**–जंजाल छूटना, झगड़ा मिटना। **पाप मोल लेना**–जान बूझ कर झगड़े में फँसना। **पाप पड़ना**–कठिन हो जाना, दोष होना। यौ॰ **पापग्रह**–मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य, बुरे ग्रह (ज्यों॰)। **पाप-कर्म**–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाप का कर्म, कुकर्म, अशुभ कार्य।

पापकर्मा–वि॰ यौ॰ (सं॰ *चाप कर्मन्*) पापाचारी, पापी, कुकर्मी।

पापगण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ठगण का आठवाँ भेद (पिं॰)।

पापघ्न–वि॰ (सं॰) पापनाशक, पापसूदन।

पापचारी, पापाचारी–वि॰ (सं॰ *पापचारिन्*) पापी, पाप करने वाला। स्त्री॰ **पापचारिणी**।

पापड़-पावर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्पट*) उर्द या मूँग की धोई दाल के आटे की मसालेदार पतली रोटियाँ। **मु॰ पापड़ बेलना**–बड़ा परिश्रम करना, दुख या कठिनता से समय विताना। **बहुत से पापड़ बेलना**–अनेक प्रकार के काम कर चुकना।

पापड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पर्पट*) एक पेड़, **पित्तपापड़ा**।

पापदृष्टि–वि॰ यौ॰ (सं॰) वुरी पाप-पूर्ण दृष्टि, हानि या अनिष्टप्रद दृष्टि।

पाप-नाशन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) पाप का विनाश करने वाला, शिव, विष्णु, **पाप-नाशक,** पापनाशी, प्रायश्चित्त।

पापयोनि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पाप से मिलने वाली कीड़े या पशु-पक्षी की योनि।

पापरोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाप-चरणजन्य रोग, जैसे–उपमा, कुछ, उन्माता, अन्यत, पीनस, मूकता आदि, छोटी माता, बसंत रोग।

पापलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नरक।

पापहर–वि॰ यु॰ (सं॰) पापनाशक।

पापाचार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाप का आचरण, दुराचार। वि॰ **पापाचारी**। स्त्री॰ **पापाचारिणी**।

पापात्मा–वि॰ यौ॰ (सं॰ *पापात्मन्*) दुष्टात्मा, पाप में अनुरक्त, पापी। "पापात्मा पाप-सम्भवः"–स्फु॰।

पापिष्ठ–वि॰ (सं॰) बहुत बड़ा पापी।

पापी–वि॰ (सं॰ *पापिन्*) पाप करने वाला, अधी, नृशंस, निर्दय, क्रूर, पातकी, पर-पीड़क। (स्त्री॰) **पापिनी**।

पापोश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फा॰) जूता।

पाबंद–वि॰ (फा॰) पराधीन, बद्ध, कैद, प्रतिज्ञा-पालन में विवश। संज्ञा, स्त्री॰ पाबंदी।

पाबंदी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) पाबंद होने का भाव, कैद।

पामड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पाँवड़ा*) पाँवड़ा, वृक्षों के रास्ते में विछाने का पख, **पायंदाज** (फ़ा॰)।

पामर–वि॰ (सं॰) दुष्ट, पापी, खल, कमीना, नीच, मूर्ख।

पामरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रावार*) दुपट्टा। (हि॰ *पाँवड़ी*) खड़ाऊँ।

पामाल, पायमाल–वि॰ (*फ़ा॰ पा+माल–रौंदना*) पददलित, चौपढ़, खराव, बरबाद, तवाह। संज्ञा, स्त्री॰ **पामाली**।

पायँ-जेहरि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फा॰ *पायजेव*) पायज़ेब, **पाजेब** (दे॰)।

पायँता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *पाँव स्थान+सं॰*) पैंताना, (विलो॰ **सिराहना, उसीस**) स्त्री॰ **पायँती**।

पायँदाज़–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाँव पोछने का कपड़ा।

पायक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पादातिक, पायिक*) दूत, दास, सेवक, धावन, प्यादा।

पायताबा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) पैर का मोजा, जुर्राब।

पायदार–वि॰ (फ़ा॰) टिकाऊ, दृढ़ मज़बूत। संज्ञा, स्त्री॰ **पायदारी**।

पायरा–संज्ञा, पु॰ (हि॰*पाय+रा*) पैकड़ा, रकाब।

पायल–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पाय+ले प्रत्य॰*) पाज़ेब, नूपुर, तेज चलने वाली हथिनी, उलटा उत्पन्न होने वाला लड़का।

पायस–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) खीर, सलई का गोंद, सरल-निर्यास।

पाया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाद*) पावा, मचवा (प्रान्ती॰), गोड़,

पद, खंभा, ओहदा, सीढ़ी, **सहारा,** आधार। सा॰ भू॰ स॰ क्रि॰ (हि॰ *पाना*) पागया। **मु॰ पाया मज़बूत होना (करना)**–आधार या सहारा, दृढ़ होना (करना)। **(किसी का) मज़बूत पया पकड़ना**–दृढ़ सहारा लेना। **मु॰ पाया दृढ़ करना (होना)**–आधार या स्थिति को सुदृढ़ करना (होना) आधार। **पाया पकड़ना**–सहारा या सहायक पाना या बनाना।

पायी–वि॰ (सं॰ *पाइमेन*) पीने वाला।

पारंगत–वि॰ (सं॰) पूरा ज्ञाता या पंडित, पार गया हुआ, मर्मज्ञ, **पारगामी**।

पारंप्रर्य्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परंपरा का काम, परंपरा, कुल की सदा की रीति।

पार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नदी आदि के दूसरी ओर का तट या किनारा। यौ॰ **आर-पार**–दोनों किनारे, इस किनारे से उस किनारे तक। **यौ॰ आर-वार। मु॰ पार उतरना (उतारना)**–किसी कार्य से छुट्टी मिलना, सफलता या सिद्धि प्राप्त करना, ठिकाने लगना (लगा देना), मार डालना, पूरा करना, मुक्त होना, निकल जाना। **पार करना**–पूर्ण करना, बिताना, तय करना, सह या झेल जाना, नदी आदि तैर कर दूसरे तट पर पहुँचना, निवाहना। **पार लगना**–नदी के एक तट से दूसरे पर पहुँचाना, निबाहना, निर्वाह होना। **पार पाना**–सफलता या मुक्ति पाना, जीतना। **किसी से पार लगना**–पूरा होना, हो सकना, निर्वाह होना, सफल या पूर्ण (सिद्ध) होना। **पार लगाना**–मुक्त या उद्धार करना, निर्वाह करना, दुःख या कष्ट से निकालना, पार उतारना, पूरा करना। **पार होना**–किसी कार्य को पूरा करना, मुक्त होना, किसी वस्तु के बीच से होकर दूसरी ओर पहुँचना। **मु॰ पार पाना**–समाप्ति या पूरा होने तक पहुँचना। **किसी से पार पाना**–जीतना, हरा देना, विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। ओर-छोर, अंत, सीमा, दूसरा, पार्श्व, दो तटों में कोई (एक की अपेक्षा दूसरा)। अव्य॰–आगे, परे, दूर, अलग।

पारख*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि॰ *पारिख*) पारिख, परख, पारखी।

पारखद*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पार्षद*) सेवक, मंत्री, साथ रहने वाला, अंग-रक्षक।

पारखी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पारस+ई॰ प्रत्य॰*) परीक्षक, परखैया, परखने वाला।

पारग–वि॰ पु॰ (सं॰) कार्य पूर्ण करने वाला, पार पाने वाला; पूर्ण ज्ञाता, समर्थ।

पारग्राभिक–वि॰ (सं॰) पराया, विरोधी।

पारचा–पु॰ (फ़ा॰) टुकड़ा, धज्जी; कपड़ा; एक तरह का रेशमी कपड़ा; पोशाक; लिठास; कुएँ के मुँह पर कुछ आगे की ओर बढ़ाकर रखी जाने वाली वह चौड़ी और चिपटी लकड़ी जिसके ऊपर से ही रस्सी लटका कर पानी खींचते हैं।–**फरोश**–पु॰ कपड़ा बेचने वाला, बजाज।–बाफ पु॰ कपड़ा धुनने वाला, जुलाहा।

पारजन्भिक–वि॰ (सं॰) दूसरे जन्म से सम्बन्ध रखने वाला।

पारजात–पु॰ दे॰ 'पारिजात'

पारजायिक–पु॰ (सं॰) परस्त्रीगामी, लंपट, व्यभिचारी।

पारटीट, पारटीन–पु॰ (सं॰) चट्टान, शिला।

पारण–पु॰ (सं॰) किसी व्रत या उपवास के पश्चात् पहना भोजन (पारण से ही उपवास पूर्ण होता है); बादल; तृप्ति, सतोष; पूरा करना; पढ़ना; अध्ययन; सम्यक् विचार के बाद विधान सभा आदि में (प्रस्तावादि का) स्वीकृत किया जाना (पासिंग), पुस्तक का सार विषय;-पत्र (पु॰) (अं॰) पा, किसी विशिष्ट स्थल से बाहर आने-जाने का खास अनुमति पत्र; रेलयात्रा में विशेष छूट वाला अनुमति-पत्र, पास।

पारणा-स्त्री॰ (सं॰) व्रत के बाद का भोजन; भोजन।

पारणीय–वि॰ (सं॰) समाप्त; पूरा करने योग्य

पारतंत्र्य–पु॰ (सं॰) पराधीनता।

पारत–पु॰ (सं॰) दे॰ 'पारा'

पारत्रिक–पु॰ (सं॰) परलोक-सम्बन्धी; परलोक का; परलोक बनाने वाला।

पारव्य–पु॰ (सं॰) परलोक में मिलने वाला फल।

पारथ–पु॰ (सं॰) दे॰ 'पार्थ'; पारथी।

पारथिक–पु॰ राजा; मिट्टी का शिवलिंग। वि॰ मिट्टी-सम्बन्धी; मिट्टी का बना हुआ।

पारद–पु॰ (सं॰) पारा, एक प्राचीन असभ्य जाति।

पारदर्शिता–स्त्री. पदार्थ के आर-पार देख जा सकने की क्षमता या गुण, (अं) ट्रांसपेरेन्सी।

पारदायिक–पु॰ (सं॰) परस्त्रीगामी, बंदर

पारदार्य–पु॰ (सं॰) परस्त्रीगमन

पारदेशिक–वि॰ (सं॰) दूसरे देश का, विदेशी। पु॰ दूसरे देश का निवासी, यात्री।

पारदेश्य–वि॰ पु॰ (सं॰) दे॰ 'पारदेशिक'

पारिधि–पु॰ दे॰ 'पारधी'।–पति-पु॰ धनुर्धरों में श्रेष्ठ, काम देखा।

पारधी–पु॰ बहेलिया, चिड़ीमार; शिकारी; हत्यारा। स्त्री॰ (ग्रा॰) ओट, आड़

पारन–पु॰ दे॰ 'पारण'

पारना–क्रि॰ स॰ जमीन पर डाल देना; गिराना; साँचे या किसी चीज़ में जमा कर कुछ चीज़ तैयार करना; (ग्रा॰) सुलाना; पछाड़ना, रखना; सम्मिलित करना; पहनना; ढाना; डालना; पालन करना; क्रि॰ अ॰ सकना; करने में समर्थ होना।

पारपत्र–पु॰ समुद्र-पार से देश से बाहर जाने का वह अनुज्ञा-पत्र जिसमें यात्रार्थी की सुरक्षा का अभिदमन भी साहीविशिष्ट रहता है; पास-पोर्ट।

पारवती–स्त्री॰ दे॰ 'पार्वती'

पारमासक–पु॰ ऐसे पदार्थ जिनमें से होकर थोड़ा प्रकाश गुजर सकता है, (ट्रांस ल्यूसेन्ट) पर वे पारदर्शी नहीं होते। जैसे–कागज का पृष्ठ, व्यर्णित काँच आदि।

पारमृत–पु॰ उपादन, भेंट, नज़र।

पारमहंस, पारमहंस्य–वि॰ (सं॰) परमहंस सम्बन्धी, परमहंस का।

पारमाणविक–वि॰ (सं॰) परमाणु का, परमाणु सम्बन्धी (ऐटॉमिक)

पारमार्थिक–वि॰ परमार्थ सम्वन्धी

पारमिक–वि॰ (सं॰) पार गया हुआ, श्रेष्ठ; सबसे वड़ा, प्रधान।

पारमिता–स्त्री॰ (सं॰) पूर्णता, उत्कृष्टता (यह छह प्रकार की मानी गई है जो ये हैं: दान, शील, शांति, वीर्य, ध्यान और पूजा। कुछ लोग सत्य, अधिष्ठान, मैत्र और उपेक्षा को सम्मिलित कर इनकी संख्या को दस मानते हैं।)

पारमेश्वर–वि॰ (सं॰) परमेश्वर सम्बन्धी।

पारमेष्ठ्य–वि॰ (सं॰) ब्रह्मा से सम्बन्ध रखने वाला; ब्रह्मा का/ पु॰ प्रधानता, सर्वोच्च पद, सर्वेश्वरता, राजचिह्न।

पारय–वि॰ (सं॰) उपयुक्त, संतोषजनक।

पारविष्णु–वि॰ (सं॰) तृप्तिजनक; पार जाने या पूरा करने में समर्थ।

पारयुगीन–वि॰ (सं॰) परवर्ती युग का; परवत्री युग में होने वाला।

पारलोक्य–वि॰ (सं॰) परलोक सम्बन्धी; परलोक का।

पारलौकिक–वि॰ (सं॰) परलोक सम्वन्धी; परलोक का। पु॰ अंत्येष्टि क्रिया।

पारवत–पु॰ (सं॰) कबूतर

पारवर्ग्य–वि॰ (सं॰) दूसरे वर्ग का, विरोधी।

पारवश्य–पु॰ (सं॰) पराधीनता, परवशता।

पारविषयक–पु॰ (सं॰) दूसरे देश का राज्य का, विदेशी।

पारशव–वि॰ (सं॰) परशु-सम्वन्धी; परशुका; लोहे का बना हुआ। पु॰ लोहा; ब्राह्मण और शूद्रा से उत्सव एक संकट जाति; पराई स्त्री में उत्पन्न पुत्र। एक प्राचीन देश।

पारषद–पु॰ (सं॰) दे॰ 'परिपद्' या 'पार्षद'।

पारस–पु॰ एक प्रकार का पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है; स्पर्श-मणि; वहुत लाभ पहुँचाने वाला पदार्थ; परसा हुआ भोजन; वह पत्तल जिसमें एक आदमी के खाने भर का भोजन रखा गया हो; एक मझोले आकर का पहाड़ी पेड़; भारत के पश्चिम में एक देश (ईरान) का प्राचीन नाम (फारस)।

पारसनाथ–पु॰ पार्श्वनाथ (जैनों प्रसिद्ध तीर्थंकर)

पारसा–वि॰ (फ़ा॰) साधु चरित्र, धर्मात्मा, सती-साध्वी (स्त्री॰)।-ई स्त्री॰ साधुता, धार्मिकता, शुचिता।

पारसिक–वि॰ पु॰ दे॰ 'पारशच'।

पारसी–पु॰ एक अग्नि पूजक जाति। स्त्री॰ (सं॰) फारस देश की भापा, -कोश पु॰ एक ग्रन्थ जिसमें फारसी के शब्दों का अर्थ संस्कृत में दिया है।–विनोद ज्योतिष-खगोल शास्त्र का एक ग्रंथ जिसमें फारसी-अरवी शब्दों की व्याख्या संस्कृत में दी गई है।

पारसीक–पु॰ (सं॰) फारस देश, फारस देश घोड़ा' फारम का निवासी–यनानी-स्त्री॰ खुरासानी अजवाइन

पारसीकेय–वि॰ (सं॰) फारस सम्बन्धी, फारस का।

पारस्कर–पु॰ (सं॰) एक प्राचीन देश; एक गृहसूत्रकार मुनि।

पारस्त्रैणेय–पु. (सं.) पराई स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

पारस्परिक–वि. (सं.) आपस का, आपसी।

पारस्पयर्य–पु. व्यवहार में एक दूसरे का खयाल रखना; परस्पर सुविधा का सिद्धान्त (रेसीप्रॉसिटी)

पारस्य–वि. (सं.) पारस का, फारस देश का।

पारस्यकुलीन–वि. (सं.) दूसरे कुल में उत्पन्न।

पारहंस्य–वि. (सं.) दे. 'परमहस्य'

पारधि–वि. (सं.) अपारदर्शी (अं. ओपेक)

पारांधता–स्त्री. दे. अपारदर्शिता (औपेसिटी)।

पारा–स्त्री (सं.) एक प्राचीन नदी, (हि.) एक प्रसिद्ध, धातु; बड़ी परई, टुकड़ा; एक छोटी दीवार जो वगैर गारे के ईंटों ओर पत्थर के टुकड़े से बनाई गई हो। मु. पारा पिलाना–किसी क्रिया द्वारा भारी बनाना।

पारापत–पु. (सं.) कबूतर

पारापार–पु. (सं.) दोनों किनारे, उभय तट; समुद्र

पारापारीण–पु. (सं.) दे 'पारावारिण'

पारायण–पु. (सं.) किसी ग्रन्थ का आद्यंत पाठ; सम्पूर्णता, पाट जाना।

पारामणिक–वि., पु. (सं.) पारायण करने वाला, पुराणादि का पाठ करने वाला; छात्र

पारायणी–स्त्री. (सं.) सरस्वती;मनन, चिंतन; कर्म प्रकाश।

पारारुक–पु. (सं.) पत्थरशिला।

पारावत–पु. (सं.) कबूतर; पंडुक; बन्दर; पर्वत; एक तरह का सर्प;- घनी स्त्री. सरस्वती नदी।

पाराव्रतांध्रि–स्त्री. (सं.) ज्योतिष्मती नाम की लता। पिच्छ पु. कबूतर का एक प्रकार।

पारावताश्व–पु. (सं.) धृष्टद्युम्न

पारावती–स्त्री. (सं.) ग्वावों का एक प्रकार का गीत, विरहा; कबूतरी।

पारावार–पु. (सं.) दे. 'पारापार'।

पारावारीण–वि. (सं.) जो किसी वस्तु के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुँच गया हो; जिसने किसी, विषय, विद्या या शास्त्र का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। समुद्र गामी'।

पाराशर–पु. (सं.) पराशर के पुत्र वेदव्यास। वि. पराशर द्वारा उक्त या रचित।

पाराशाई–वि. (सं.) शुकदेव; वेदव्यास।

पाराशरी (रिन्)–पु. (सं.) शुकदेव; वेदव्यास।

पाराशरी (रिन्)–पु. (सं.) मंन्यासी; व्यास द्वारा रचित शारीरिक सूत्र का अध्ययन करने वाला संन्यासी।

पारिद्र–पु. (सं.) सिंह।

पारि–स्त्री. दिशा, ओर; नदी, समुद्र आदि का किनारा, मेड़ सीमा।

परिकांक्षक, परीकांक्षी (क्षिम)–पु (सं.) तापस, तपस्वी।

पारिक्षित–पु. (सं.) परीक्षित के पुत्र जनमेजय।

पारीख–वि. (सं.) पारिखा-सम्बधी, पारिखा। पु. पारखी, परखने वाला, गुजरातियों की एक उपजाति।

पारिगर्मिक–पु. (सं.) कबूतर

पारिजात–पु. (सं.) पाँच देव वृक्षों में से एक; हरसिंगार; फरहद, फाली; ऋषि का वि. हरसिंगार का; पु. एक देव वृक्ष; फरहद, शेफालीका।

पारिणामिक–वि (सं.) पचने वाला; जिसका विकास हो सके; जो परिणाम दे।

पारिणाय्य–वि. (सं.) परिणय का, विवाह सम्बन्धी।

पारिणाह्यय–पु. (सं.) चारपाई, चौकी, बरतन आदि घरेलू सामान।

पारित–वि. (अं. पास्ट) (प्रस्ताव, विधेयक आदि का) सभा इत्यादि द्वारा अनुमादित होना।

पारितध्या–स्त्री. (सं. बाल गूहने इत्यादि के काम में आने वाली मोतियों की लड़ी, बालों के बीच (माँग) में पहने जाना वाला एक स्त्रियों का गहना।

पारितोषक–वि. (सं) संतुष्ट करने वाला, प्रसन्न करने वाला, पु. पुरस्कार, ईनाम।

पारिध्वनिक–पु. (सं.) झंडा लेकर चलने वाला।

पारिपांथिक–पु. (सं.) लुटेरा: चोर।

पारीपात्र–पु. (सं.) एक कुल पर्वत।

पारीपार्श्व–पु. (सं.) अनुचर, पार्श्वचर।

पारिप्लव–वि. (सं.) चंचला, क्षुब्ध, आकुल, तिरता हुआ; पु. नाद, जलयान, अकुलाम।

पारिभद्रक–पु. (सं.) देवदारु, फरहद का पेड़, सवई का पेड़, नीम का पेड़, एक कुष्ठौषध।

पारिभाव्य–पु. (सं.) प्रतिभू या जामिन होने का भाव; एक

कुष्ठौषध।–धन-पु. (कॉशन मनी) प्रतिभूति के रूप में जमा कराई गई अग्रिम राशि, धन, रकम'

पारिभाषिक–वि. (सं.) सर्वमान्य; जिसका प्रयोग विशिष्ट अर्थ में किया जाए, जो कोई विशिष्ट अर्थ सूचित करे।–शब्दावली स्त्री (ग्लोज़री ऑफ टेक्नीकल वर्डस) विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की सूची।

पारिमाण्य–पु. (सं.) परीधि; घेरा।

पारमिता–स्त्री., पारमित्य-पु. (सं.) सीमा, हद।

पारीमुख–पु. (सं.) सामने या समीप होने का भाव।

पारिवित्य, पारिवेत्र्य–पु. (सं.) बड़े भाई का अविवाहित होना और छोटे भाई का विवाहिता।

पारिव्राजक, पारिव्राज्य–पु. (सं.) संन्यासी।

पारीश–पु. (सं.) एक वृक्ष, परासपीयव, गर्दभांड।

पारिशील–पु. (सं.) एक तरह का पुआ।

पारिशेष्य–पु. (सं.) बाकी, वह जो शेष रह गया हो।

पारीश्रमिक–पु. (सं.) किए गए परिश्रम के बदले में मिलने वाला धन या मंजूरी; मेहनताना, उजरन। (अं. रेग्यूनरेशन)।

परिषद्–वि. (सं.) परिषद् सम्बन्धी, परिषद् का।

परिषद्य–पु. (सं.) दर्शक; सामाजिक

पारिसपीयन–पु. भिण्डी जाति का एक पेड़।

पारिसीर्य–वि. (सं.) जो बिना जोते-बोए उत्पन्न हो; अपने आप पैदा होने वाला (अन्न)।

पारिहारिक–पु. (सं.) हरण करने वाला, हार या मालाएँ तैयार करने वाला; आवृत्त करने वाला, घेरने वाला। वि. हरण करने वाला, घेरने वाला।

पारिहारिकी–स्त्री. (सं.) एक तरह की पहेली।

पारिहार्य–पु. (सं.) हरण करने की क्रिया, बलप कंकण।

पारिहास्य–पु. (सं.) दिल्लगी, हँसी-मजाक।

पारीन्द्र–पु. (सं.) सिंह, अजगर।

पारी–स्त्री. बारी (क्रिकेट में), मैका, ओसरी, (ग्रा.) गुड आदि का जमाया हुआ बड़ा ढोंका (बारी), (सं.) हाथी के पैर बाँधने का रस्सा, जलराशि, प्याला; दोहनी, पराग।

परिक्षित–पु. (सं.) राज परीक्षित; उनका वंशधर; जनमेजय।

पारीण–वि. (सं.) उस पार तक जाने वाला; उस पार का *(यथा सरयूपारीण); समाप्त करने वाला, जो किसी* विद्या या शास्त्र में पारंगत हो (समासांत में)।

पारीय–वि. (सं.) (समासांत्त में) किसी विषय में दक्ष।

पारीरण–पु. (सं.) कछुआ; डंडा; एक पहनावा।

पारीष–पु. (सं.) दे. 'पारिस पीपल।

पारु–पु. (सं.) सूर्य, अग्नि।

पारुष्ण–पु. (सं.) एक तरह का पक्षी।

पारुष्य–पु. (सं.) परुष (कठोर) होने का भाव (व्यवहार बात चीत में); क़ठोरता, रुखाई; दुर्वचन; इन्द्र का वन, अगर; बृहस्पति।

पारेरक–पु. (सं.) तलवार।

पारेवत–पु. (स.) एक तरह का खजूर।

पारोक्ष–वि. (सं.) परीक्षका; रहस्यमय, गुप्त, अस्पष्ट।

पारोक्ष्य–पु. (सं.) रहस्य।

पारोवर्य–पु. (सं.) परम्परा।

पार्क–पु. (अं.) नगर के अन्दर का वह सार्वजनिक उपवन/ उद्यान जहाँ लोग दिल बहलाव या हवाख़ोरी/ सैर-सपाटे के लिए जाते हैं।

पार्घट–पु. (सं.) धूल या राख।

पार्जन्य–वि. (सं.) मेघ-सम्बन्धी।

पार्टी–स्त्री. (अं.) दल, मंडली; फरीक, वादी या प्रतिवादी पक्ष; (राजनीतिक) दल। प्रीतिभोज या दावत।

पार्थ–संज्ञा, पु. (सं.) पृथ्वीपति, (पृथा-पुत्र) अर्जुन, युधिष्टिर, भीम; अर्जुन–वृक्ष।

पार्थक्य–संज्ञा, पु. (सं.) अलग होना, पृथक्ता, जुदाई, अलगाव, वियोग, भिन्नता, अन्तर।

पार्थवी–संज्ञा, पु. (सं.) भारीपन, स्थूलता, बढ़ाई, मोटाई। वि. पृथु सम्बन्धी।

पार्थिव–वि. (सं.) पृथिवी सम्बन्धी, पृथ्वी से उत्पन्न, मिट्टी का बना, राजसी। संज्ञा, पु. (सं.) मिट्टी का शिव-लिंग।

पार्थिवी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पृथ्वी से उत्पन्न, सीता जी, पार्वती जी।

पार्पर–संज्ञा, पु. (सं.) काल, यमराज।

पार्वगा–संज्ञा, पु. (सं.) पर्व-सम्बन्धी कार्य, किसी पर्व पर किया गया श्राद्ध।

पार्वत–वि. (सं.) पर्वत-सम्बन्धी, पर्वत पर होने वाला।

स्त्री. **पार्वती।**

पार्वती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिमालय की कन्या, गौरी, दुर्गा, गिरजा, गोपी चंदन।

पार्वतीय–संज्ञा, पु. (सं.) पहाड़ी, पहाड़ का, पहाड़ सम्बन्धी, पहाड़, सम्बन्धी, पहाड़ से उत्पन्न।

पार्वतेय–वि. (सं.) पहाड़ पर होने वाला।

पार्श्व–संज्ञा, पु. (सं.) बगल, अगल-बगल, निकट, समीप, पीछे का, पास, समीपता, निकटता। यौ. **पार्श्ववर्ती**–संगी, साथी। **पार्श्वशूल**–दाहिनी या बाँई पसली का दर्द।

पार्श्वग–संज्ञा, पु. (सं.) सहचर, साथी।

पार्श्वनाथ–संज्ञा, पु. (सं.) जैनियों के तेईसवें तीर्थंकर जो काशी के इच्छाकुवंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे।

पार्श्ववर्ती–संज्ञा, पु. (सं. *पार्श्ववर्तिन्*) निकटस्थ, समीपवर्ती, साथ। स्त्री. **पार्श्ववर्तिनी।**

पार्श्वस्थ–वि. (सं.) निकटस्थ, समीपवर्ती। संज्ञा, पु. अभिनव के नटों में से एक (नाव्य.)।

पार्षद–संज्ञा, पु. (सं.) परिषद्, सेवक, अंधी, दाव रहने वाला; काउंसिलर।

पाल–संज्ञा, पु. (सं.) पालक, पालने वाला, चितावरी का पेड़, बंगाल का एक राजवंश। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पालना*) फलों के पकाने की रीति। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पट, पाट*) नाव के मस्तूल में तानने का कपड़ा, शामियाना, चँदोवा, ओहार (पालकी, गाड़ी के ढाकने का)। संज्ञा, स्त्री. दे. (*सं. पालि*) मेंड़, बाँध, कगारा, ऊँचा किनारा।

पालक–संज्ञा, पु. (सं.) पालने वाला, साईस, दत्तक या गोद लिया लड़का। संज्ञा, पु. (सं.) एक शाक विशेष। संज्ञा, पु. (हि. *पलंग*) पलँग।

पालकी–संज्ञा, स्त्री, दे. (सं. *पल्यंक*) डोली, म्याना जिसे आदमी कन्धे पर ले जाते हैं। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. पालक) पालक का शाक।

पालकी गाड़ी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) पालकी-सी छत वाली गाड़ी।

पालट–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पालन*) गोद लिया या दत्तक पुत्र।

पालतू–वि. दे. (सं. *पालन*) पाला या पोषा हुआ (पशु आदि)।

पालथी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पलथी*) सिद्धासन नाम का आसन, पलथी, पार्थी पार्थिव। **मु. पालथी मारना**–दोनों पैरों को एक दूसरे पर रख कर बैठना।

पालन–संज्ञा, पु. (सं.) भरण-पोषण, निर्वाह, अनुकूलाचरण से बात की रक्षा, भंग न करना या न टालना। वि. **पालनीय, पालित, पाल्य।**

पालना–क्रि. स. दे. (सं. *पालन*) परवरिश (फ़ा.), भरण पोषण, पशु-पक्षी को लिखना, ढालना या भंग न करना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पर्य्यंक*) हिंडोला, झूला, गहवारा पिंगूरा (प्रान्ती.)।

पालव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पल्लव*) पत्ता, कोमल पत्ता, पल्लव।

पाला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रालेय*) पृथ्वी के ठंडे होने से उस पर जमी हवा की भाप, **तुषार, हिम, बर्फ। मु. पाला मार जाना**–हिम या शीत से नष्ट हो जाना. **पाला पड़ना**–अति शीत से वायु की भाप का जमकर तुषार हो जाना। संज्ञा, पु. दे. (हि. *पल्ला*) वास्ता, व्यवहार, सयोग। संज्ञा, पु. (दे.) खेल में पक्षों की सीमा। **मु. किसी से पाला पड़ना**–वास्ता या काम पड़ना, संयोग का सम्बन्ध होना। **किसी के पाले पड़ना**–वश में आना, पकड़ या काबू में आना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पट्ट,* हि. *पाड़ा*) मुख्य या प्रधान स्थान, सदर मुकाम, सीमा, सूचक मिट्टी की मेंड़, धुस, अखाड़ा, अब रखने का कच्ची मिट्टी का बड़ा बरतन। **पालागन**–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *पाँय लागन*) नमस्कार, प्रणाम, पैर छूना।

पालि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कान की लौ, पंक्ति, पाँति, कोना, सीमा, मेंड़, भीटा, बाँध, कगार, गोद, किनारा, चिन्ह, परिधि।

पालिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पालने वाली यौ. (नगर पालिका)।

पालित–वि. (सं.) रक्षित, पाला हुआ।

पालिनी–वि. स्त्री. (सं.) पालने वाली।

पाली–वि. (सं. *पालिन्*) रक्षित, रक्षा करने वाला, पालने-पोषने वाला। स्त्री. **पालिनी**। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पालि–पंक्ति*) ब्रह्मादि देशों में संस्कृत की पठित पाठित एक प्राचीन बिहारी भाषा जिसमें बुद्धमत के ग्रंथ लिखे हैं। स्त्री. पली हुई, रचित।

पावँ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाद*) पैर, पावँ, चलने का अंग। **मु. (किसी काम या बात में) पावँ (टाँग अड़ाना)**–व्यर्थ

मिलना; व्यर्थ बोलना, या दखल देना। **पावँ उखड़ जाना**–ठहरने का बल या साहस न रहना, युद्ध से भागना। **पावँ न उठना**–चलने में असमर्थ होना। **पावँ उठाना (न उठाना)**–कदम बढ़ाना, शीघ्रता से चलना, प्रयास करना। **पावँ घिसना**–पैर थक जाना। **पावँ जमना (जमाना)**–दृढ़ रहना (होना) अपने बल पर खड़े होना। **पावँ तले की ज़मीन या मिट्टी निकल जाना**–होश उड़ जाना, भयादि से बड़े जोर से भागना। **पावँ तोड़ कर बैठना**–अचल या स्थिर हो जाना, चलना त्याग देना, हार बैठना। **किसी के पावँ धरना (पकड़ना)**–पैर छूकर प्रणाम करना, दीनता से विनय करना, हा-हा खाना। **बुरे पथ पर पावँ धरना (रखना)**–बुरे-बुरे काम करने लगना। **पावँ पकड़ना**–विनती करके जाने से रोकना, पैर छूना, अति दीनता से प्रार्थना करना। **पावँ पखारना**–पैर धोना। **पावँ पड़ना**–पैरों गिरना, दीनता से विनय करना, प्रवेश करना, जाना। **पावँ पर गिरना (सिर रखना या देना)**–पाँव पड़ना। **पावँ (टाँग) पसारना (फैलाना)**–पैर फैलाना, आराम से सोना, आडंबर बढ़ाना, ठाट बाट करना, मर जाना। **पावँ पावँ (पैरों) चलना**–पैदल या पैरों से चलना। **पावँ पूजना**–अति आद-सत्कार करना, पैर पूजना (ब्याह में वर कन्या के)। **फूंक फूँककर पाँव रखना**– सतर्कता से बहुत बचाकर कार्य करना. बहुत ही सावधानी या होशियारी से चलना। **पाँव फैलाना**– ज्यादा पाने को हाथ फैलाना या मुँह बाना, पाकर और माँगना, मचलना। **पावँ बढ़ाना**–पाँव आगे रखना, तेजी से चलना, ज्यादा बढ़ना। **पावँ भारी (हलका) पड़ना**–जोर से (धीरे) चलना। **पावँ भर जाना**–पैर थक जाना। **पावँ भारी होना**–गर्भ या हमल होना। **पावँ (पद पग) रोपना**–प्रतिज्ञा या प्रण करना। **पावँ लगना**–प्रणाम करना, विनय करना। **पावँ से पावँ बाँध कर रखना**–सदा अपने निकट रखना, चौकसी या रक्षा रखना। **पाँव सो जाना**–पैर झन्ना जाना, शून्य हो जाना। **पाँव (पैर) होना (हो जाना)** चलने या कमाम करने में समर्थ होना। **पाँव न होना**–ठहरने का बल या साहस न होना। **धरती (ज़मीन) पर पाँव (पैर) न रखना**–अति अभिमान करना, अति या ज्यादती करना।

पावँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पाँव+या प्रत्य.*) किसी के आदरार्थ बिछाया गया मार्ग-बिस्तर, पायंदाज।

पावँड़ी (पावँरी)–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पाँव+ड़ी प्रत्य.*) जूता, पादत्राण, खड़ाऊँ।

पावँर*–वि॰ दे॰ (सं॰ *पामर*) दुष्ट, नीच। संज्ञा, पु॰ (हि॰ *पाँवड़ा*) पावँड़ा। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) **पावँड़ी**।

पाव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाद*) चतुर्थांश, चौथाई, एक कि. ग्रा. का चौथाई भाग, रूह 250 ग्राम, पौवा (आ॰)।

पावक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अग्नि, धा, सदाचार, ताप, अग्नि-मन्च (अगेयू) वृक्ष, सूर्य, वरुण। वि॰ शुद्ध या पवित्र करने वाला।

पापकुलक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पादाकुलक*) एक तरह की चौपाइयों का समूह।

पावदान (पायदान)–संज्ञा, पु॰ (हि॰ गाड़ी-हक्के में पैर रखकर चढ़ने का पटरा, पैर रखने का स्थान (वस्तु)।

पावन–वि॰ (सं॰) पवित्र करने वाला, पुनीत, पवित्र, शुद्ध। स्त्री॰ रुद्राक्ष, गोबर, व्यास मुनि, प्रायश्चित्त।

पावनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पवित्रता।

पावना†*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रापण*) पाना, समझना, भोजन करना। संज्ञा, पु॰ लहना (अ॰) पाने का एक हक, जो पाना हों

पावस†–संज्ञा, स्त्री॰ ई॰ (सं॰ *प्रवर्ष*) वर्षाकाल, बरसात।

पावा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पाद*) पाँव, पैर, गोड, चारपाई या पलंग का पाया। सा.भू. स॰ क्रि॰ (हि॰ *पाना*) पाया।

पाश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) डोरी,, फाँसी, रस्सी, पशु-पक्षी आदि के फँसाने का जाल, बंधन, फँसाने वाली वस्तु।

पाशक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चौपड़ के पाँसे।

पाशकेरला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह ज्योतिष-विद्या जिसमें पाँसा फेंक कर विचार किया जाता है, रमल (ज्यो॰)।

पाशभृत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वरुण, पाशी।

पाशव–वि॰ (सं॰) पशुओं का, पशु जैसा, पशु-सम्बन्धी। वि॰ **पाशविक**।

पाशा–संज्ञा, पु॰ (मु॰ फा॰ *पादशाह*) तुर्की सरदारों की उपाधि। संज्ञा, पु॰ (दे॰) चौपड़, जुआ, कर्ण-भूषण विशेष।

पाशित–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाशयुक्त, बँधा।

पाशी–संज्ञा, पु. (सं. *पाशिन्*) वरुण।

पाशुपत–वि. (सं.) शिव का, शिव सम्बन्धी, त्रिशूल। संज्ञा, पु. शिव या पशुपति का उपासक, पशुपति का कहा तंत्र-मंत्र शास्त्र, अथर्ववेद का एक उपनिषद्।

पाशुपत-दर्शन–संज्ञा, पु. (सं.) एक दर्शन साम्प्रदायिक शास्त्र (स. द. स.) नकुलीश पाशुपति दर्शन।

पाशुपतास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिव जी का त्रिशूल।

पाश्चात्य–वि. (सं.) पिछला, पीछे का, पश्चिम दिशा का, पश्चिम में उत्पन्न या निवासी। (विलो.–प्राच्य)।

पाषंड–संज्ञा, पु. (सं.) ढोंग, पाखंड (दे.) दिखावा, वेद-विरुद्ध मत या आचरण।

पाषंडी–वि. (सं. *फयंडिन्*) वेद-विरुद्ध मत या आचार करने वाला, धर्मादि का झूठ आडंबरी, ढोंगी, धूर्त्त, छली, ठग। स्त्री. **पाषंडिनी**।

पाषाण–संज्ञा, पु. (सं.) पत्थर, प्रस्तर, **पखान** (दे.) वि. कठोर, क्रूर।

पाषाण-भेद–संज्ञा, पु. (सं.) पाखान-भेद (दे.) पथरचटा (औ.)।

पासंग, पासँग–संज्ञा, पु. (फ़ा.) पसंघा (दे.) तराजू के पल्लों को बराबर करने के लिए भार। **मु. किसी का पासंग भी न होना**–बहुत कम होना। **पासंग बराबर**–स्वरूप, तुच्छ। **(तराजू में) पासंग होना**–डंडी का बराबर न होना। **पास**–संज्ञा, (दे.) पु. (सं. *पार्श्व* ओर, तरफ, बग़ल, समीपता, निकटता, अधिकार, पल्ला, रक्षा (के से, में, विभक्तियों के साथ) यौ. **पास-पल्ले। पास वाले**–समीपी मित्र। काव्य.-समीप, निकट। यौ. **आस-पास**–चारों ओर, समीप लगभग, अगल-बगल। **मु. (किसी के) पास बैठना**–संगति में रहना। **पास न फटकना**–निकट न जाना। अधिकार, रक्षा या कब्जे, पल्ले में, समीप या जा सम्बोधित कर, किसी से या के प्रति। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाश*) पाश, फाँसी, रस्सी। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाशक*) पाँसा। वि. (अं.) परीक्षा में उत्तीर्ण।

पासनी, पसनी†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्राशन*)अन्न-प्राशन, लड़के को सर्व प्रथम अन्न देने का संस्कार।

पासा, पाँसा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाशक* फा. *पासा*) चौपड़ या चौसर खेलने के हाथ-दाँत या हड्डी के चार या 6 पहल-वाले बिंदीदार पाँसे, पाँसों का खेल, चौपड़, गुल्ली। लो. **"पाँसा परे सो दाँव"। मु. (किसी का) पाँसा पड़ना**–भाग्य खुलना या अनुकूल होना, कार्य (उपाय) लगना, सफल होना। **पासा पलटना**–भाग्य फूटना, युक्ति या उपाय का विरुद्ध फल देना।

पासी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाशिन्*) जाल, फंदा या फाँसी लगा कर हरिण, पक्षी आदि को पकड़ने वाला, एक नीच जाति, बहेलिया। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पाश,* हि. *पास+पास+ई. प्रत्य.*) फाँस, फंदा, फाँसी, घोड़े की पिछाड़ी की रस्सी।

पाहँ, पहँ*–अव्य. दे. (सं. *पार्श्व*) पास, निकट, समीप। विभ. (अव्य.) अधिकरण और कर्म की विभक्ति पर, पै, प्रति, से (व्या.)।

पाहन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाषाण*) पत्थर।

पाहरु*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पहरा*) पहरेदार, पहरा देने वाला।

पाहिं-पाहीं*–अव्य. दे. (सं. *पार्श्व*) समीप, निकट, पास, किसी के प्रति, किसी से।

पाहि–क्रि. स. (सं.) बचाओ रक्षा करो।

पाहुँच†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) पहुँच। (हि.)।

पाहुना, पाहुन–संज्ञा, पु. दे. (सं. प्रघूर्ण) अतिथि, दामाद, अभ्यागत। स्त्री. **पाहुनी**। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **पहुनाई, पहुनई**।

पाहुनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पहुना*) स्त्री अभ्यागत या अतिथि, **पाहुनाई, पहुनाई,** मेहमानदारी, आतिथ्य।

पाहुर†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रभृत*) नजर या नजराना (फा.), सौगात, भेंट।

पिंग–वि. (सं.) पीला, पीत-श्वेत, पिंगल।

पिंगल–वि. (सं.) पीत, पीला, भूरा लाल या पीत तामड़ा, सूँघनी के रंग का। संज्ञा, पु. एक मुनि जो छंद शास्त्र के प्रथम आचार्य थे, छंदः शास्त्र, एक संवत्सर (ज्यो.), बन्दर, एक निधि, उल्लू, पक्षी, अग्नि, पीतल।

पिंगला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मेरुदंड के वाम ओर एक नाड़ी (हठ योग), लक्ष्मी का नाम, शीशम का पेड़, गोरोचन, राजनीति, दक्षिण के दिग्गज की स्त्री, एक वेश्या, एक

रानी।

पिंजड़ा-पींजड़ा, पिंजरा-पींजरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिंजर*) तोता आदि पक्षियों के पालने का घर, देह।

पिंजर–वि॰ (सं॰) पीला, पीत वर्ण का, भूरा लाल। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पंजर) पिंजड़ा, पिंजरा हड्डियों, का ठट्टर, पाँजर, पंजर, भूरे लाल रंग का घोड़ा, सोना।

पिंजरापोल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *पिंजरा+पोल–फाटक*) गोशाला, पशुशाला।

पिंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ठोस, गोला, गोल टुकड़ा, राशि, ढेर, नक्षत्र, तारे, ब्रह्मादि, शरीर, आहार, श्राद्ध में पितरों के लिए खीर का गोला भोजन। **मु॰ पिंड छोड़ना**–साथ न लगा रहना, सम्बन्ध न रखना, तंग न करना।

पिंडखजूर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पिंड खर्जूर*) मीठा खजूर।

पिंडज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) देह से उत्पन्न मनुष्य आदि जीव जो देह-सहित पैदा होते हैं।

पिंडदान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्राद्ध।

पिंडरी-पिंडुरी, पिंडली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पिंडली*) टाँग का पिछला भाग।

पिंडरोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नरक रोग, कोढ़, देह में बसा रोग।

पिंडरोगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पिंड रोग वाला।

पिंडली-पिंडुली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पिंड*) टाँग का ऊपरी माँसल पिछला भग।

पिंडा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिंड*) ठोस गोला, सूत का गोला, श्राद्ध में पितरों के लिए तिल, मधु, खीर का गोला, शरीर, दे। स्त्री॰ **पिंडी। मु॰ पिंडा-पानी देना**–पिंडा पारना, श्राद्ध-तर्पण करना।

पिंडारी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) दक्षिण की एक कृषक हिन्दू जाति, जो फिर मुसलमान होकर लूटमार करती थी (इति॰)।

पिंडालू–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *पिंड+आलू*) एक तरह का शकरकंद, पिंडिया, एक तरह का शक्रतालू या रतालू।

पिंडिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पिंडी, छोटा पिंडा, वेदी, पिंडली, देव मूर्ति की पिंडी।

पिंडी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटा पिंडा, छोटा गोला, बलि वेदी, सूत, रस्सी आदि का छोटा गोला, सत्तू की गोली, पिंड खजूर, घीया कद्दू।

पिया, पिय–वि॰ संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) प्यारा, प्रिय, पति, **पिया** (दे॰)।

पिअर–वि॰ दे॰ (सं॰ *पीत*) पीला।

पिअरवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) प्रिय।

पिअराई*†–संज्ञा, दे॰ स्त्री॰ (सं॰ *पीत*) पीलापन, **पीनाई**।

पिअरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पीली*) पीली धोती जो वर-कन्या को ब्याह में पहनाई या गंगा जी को चढ़ाई जाती है, **पेरी** (आ॰)। वि॰ स्त्री॰ पीली।

पिआज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *प्याज*) प्याज।

पिआरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) प्यारा। स्त्री॰ **पिआरा**।

पिआस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पियासा*) प्यास, तृषा। वि॰ **पिआसा**, स्त्री॰ **पिआसी**।

पिउ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) स्वामी, पति, पीव, पीड (आ॰)।

पिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कोयल। यौ॰ **पिकाली**।

पिघरना-पिघलना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रगलन*) गरमी से किसी वस्तु का गल कर पानी-सा हो जाना, गलना, पिघलना, द्रव रूप होना, मन में दया आना, पसीजना। स॰ रूप–**पिघलाना**, प्रे॰ रूप–**पिघलवाना**।

पिचकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पिथ=दबना*) फूले हुए पदार्थ का दब जाना। स॰ रूप–**पिचकाना**, प्रे॰रूप– **पिचकजाना**। वि॰ मिश्रित, पिथी।

पिचका, पिचक्का†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पिचकना*) पिचकारी, **पिचुक्का**। स्त्री॰ *अल्पा॰* **पिचकी, पिचक्की**।

पिचकारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पिचकना*) पानी आदि के जोर से फेंकने का यंत्र।

पिचु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कपास।

पिचुमंद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नीम का पेड़।

पिच्छ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लांगूल, पूँछ, पंख, चूड़ा मयूर-पुच्छ या चोटी।

पिच्छल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शीशम, मोचरस, आकाशबेल। वि॰ चिकना, रपटने वाला। वि॰ पिछला, चूड़ायुक्त, कफकारी।

पिछड़ना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पिछौड़ी+ना प्रत्य॰*) पीछे रह जाना, पिछड़ जाना, साथ बराबर न रहना। स॰ रूप–**पिछाड़ना, बिछड़ेना**, *प्रे॰ रूप*–**पिछड़वाना**।

पिछलगा–वि॰ संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पीछे+लगना*)

अनुचर, अनुगामी, अनुवर्ती, आश्रित, आधीन, नौकर, दास, पीछे चलने या रहने वाला, **पछलगा (आ.) पिछलगू, पिछलग्गू**।

पिछलगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पिछलगा*) अनुयायी होना, अनुगमन करना, पीछे लगना, **पछलगी** (आ.)।

पिछलयाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पिछला*) भूतिन, चुड़ैल, पिसाचिनी।

पिछला–वि. दे. (हि. *पीछा*) **पाछिल** (आ.) पीछे की ओर का, अंत या पीछे का, बाद या पश्चात् का (विलो. **पहला**) अस्त की ओर का (विलो. **अगला**) स्त्री. पिछली। **मु.पिछला पहर**–अंत का पहर, दोपहर या आधी रात के पीछे का समय। **पिछली रात**–आधी रात के बाद का वक्त। विरास, पुराना, गत बातों में से अन्त की।

पिछवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पीछा*) पीछे की तरफ़ काटने वाला परदा।

पिछवाड़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पीछा+वाड़ा*) घर के पीछे के भाग का स्थान, **पिछवारा** (आ.)।

पिछाड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पीछा*) पीछे का भाग या खंड, पिछला हिस्सा घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी।

पिछौहें, पछौंहें*†–क्रि. वि. दे. (हि. *पाछा*) पीछे, पीछे की ओर, पीछे से।

पिछौरा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पक्षपट*) चादर, दुपट्टा। स्त्री. **पिछौरी**।

पिटत–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पीटना+अंत प्रत्य.*) पीटने की क्रिया या भाव।

पिटक–संज्ञा, पु. (सं.) पिटारा, पिटारी, फुंसी फोड़ा, ग्रंथ-विभाग। स्त्री. **पिटका**।

पिटना–क्रि. अ. (हि.) मारा जाना, मार खाना, ठोका जाना, बजना।

पिटाई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *पीटना*) पीटने का काम या भाव या मजदूरी, भार, आघात, चोट, प्रहार।

पिटारा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पिटक*) **पेटारा** (दे.) बाँस आदि का एक ढक्कनदार पात्र। (स्त्री. *अल्पा.* **पिटारी**)।

पिट्टू–वि. दे. (हि.*पिटना*) मार खाने का अभ्यासी, अति प्रिय।

पिट्टू–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पिठ+ऊ प्रत्य.*) अनुयायी, अनुगामी, सहायक, साथी, खिलाड़ी का कल्पित संगी जिसके स्थान पर वह स्वतः खेले।

पिठर–संज्ञा, पु. (दे.) मोथा, मथानी, थाली, घर, अग्नि।

पिठवन-पिथवन–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पृष्ठ पर्णी*) पृष्ठपर्णी (औष.), **पिथौनी** (आ.)।

पिठी-पिट्ठी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) उरदकी भीगी धोई और पिसी दाल, **पीठी** (प्रा.)।

पिठौरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पिठी+औरी प्रत्य.*) पिठी या पीठी की बरी या पकौड़ी, मिथौरी।

पिड़क (पिड़का)–संज्ञा, पु. दे. (स्त्री.) फोड़ा, फुन्सी, **पिरकी** (आ.)।

पितंबर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *पीतांबर*) पीला वस्त्र, पीली रेशमी धोती, श्री कृष्ण। **पितपापड़ा-पितपापरा**–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पर्पट*) पितपापरा, एक औषधि।

पितर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पितृ*) मृत पूर्वज, मरे पुरखा। यौ. **पितर पच्छ**।

पितरायँध†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पीतल+गंध*) पीतल का कसाव, **पितराइँध** (आ.)।

पितरिहा–वि. दे. (हि. *पीतल*) पीतल का।

पितरीला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पीतल*) पितृ-पूजन का बरतन।

पितलाना–पितराना–क्रि. अ. दे. (हि. *पीतल*) पीतल की कसावट या पितरायँध।

पिता–संज्ञा, पु. (सं. *पितृ का कर्त्ता*) जनक, बाप, **पितु** (दे.)।

पितामह–संज्ञा, पु. (सं.) पिता का पिता, दादा, शिव, भीष्म, ब्रह्मा। स्त्री. **पितामही**।

पितु*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पितृ*) बाप।

पितृ–संज्ञा, पु. (सं.) पिता, मरे पुरखा, प्रेतत्वमुक्त, पूर्वज, एक प्रकार के उपदेवता (सब जीवों के आदि पूर्वज)।

पितृऋण––संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पितरों (पितादि) के प्रति ऋण, जो पुत्र उत्पन्न करने से पटता है।

पितृकर्म––संज्ञा, पु. यौ. (सं. *पितृ कर्मन्*) श्राद्ध, तर्पण आदि पितरों के अर्थ कर्म।

पितृकुल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बाप का वंश।

पितृकुल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बाप का घर, नैहर (स्त्रियों का), **मायका** (दे.)।

पितृतर्पण–*संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) तर्पण, पितरों को जलदान या पानी देना।*

पितृतीर्थ––संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गया तीर्थ, तर्जनी और अंगुष्ठ के मध्य का भाग।

पितृत्व––संज्ञा, पु॰ (सं॰) पिता या पितरों का भाव।

पितृपक्ष––संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कारमास का कृष्ण पक्ष, पिता के सम्बन्धी, पितृ-कुल, **पितर-पच्छ** (दे॰)।

पितृपद––संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पितरों का लोक।

पितृमेधि––संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वैदिक काल में आद्ध से भिन्न अंत्येष्टि कर्म का एक भेद।

पितृयज्ञ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्राद्ध, तर्पण।

पितृयाण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मरने के पीछे जीव का चन्द्रमा के प्राप्त होने का रास्ता।

पितृलोक––संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पितरों का लोक, पितृपद, पितरों का स्थान।

पितृव्य––संज्ञा, पु॰ (सं॰) चाचा, चचा।

पित्त––संज्ञा, पु॰ (सं॰) यकृत में बना शरीर-पोषक एक पीत द्रव धातु, पित्त, पिता। **मु॰ पित्त (पित्ता) उबलना या खौलना**–मन में जोश आना। **पित्त गरम होना**–शीघ्र क्रोध आना।

पित्तघ्न–वि॰ (सं॰) पित्त-नाशक।

पित्तम्बर--संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पैक्षिक ज्वर, पित्त-प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।

पित्तनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शालपर्णी, सरिवन (दे॰) (औष॰)।

पित्त-प्रकृति–वि॰ यौ॰ (सं॰) वह व्यक्ति जिस के शरीर में कफ-बात से पित्त अधिक हो।

पित्तप्रकोपी–वि॰ यौ॰ (सं॰ *पित्तप्रकोपिन्*) पित्त बढ़ाने वाले पदार्थ।

पित्तल–वि॰ दे॰ (सं॰ *पित्त*) पित्तकारी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) भोजपत्र, हरताल पीतल।

पित्ता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पित्त*) पित्ताशय, जिगर में पित्त की थैली। **मु॰ पित्ता-उबलना या खौलना**–अति क्रोध आना, मिजाज उभड़ उठना। **पित्ता निकालना**†‡–अधिक श्रम करना। **पित्ता पानी करना**–अधिक श्रम से या जान लड़ा कर कार्य करना। **पित्ता मरना**–क्रोध न रहना। **पित्ता मारना**–क्रोध दबाना। अरोचक या कठिन *काम से न ऊबना, साहस, हौसला।*

पित्ताशय–*संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जिगर में पीछे और नीचे* वाली पित्त रहने की थैली।

पित्ती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पित्त+ई*) एक रोग जिसमें खुजलाने वाले ददोरे देह पर निकल आते हैं, गर्मी से लाल छोटे दाने, अँधौरी। †‡–वि॰ (दे॰) पित्त प्रकृति वाला।

पिछड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अनु॰) पिद्दी, बहुत छोटी, चिड़िया, नगण्य या तुच्छ वस्तु।

पिद्दा (पिद्दी)–संज्ञा, पु॰ (स्त्री॰) दे॰ (अनु॰) पिछड़ा या पिछड़ी, चिड़िया। **लो॰–"क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा।"**

पिधान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गिलाफ, पर्दा, मुद्दान, आवरण, किवाड़, तलवार का म्यान।

पिनकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पीनक*) (अफीम से) पीनक लेना, ऊँचा, नींद के मारे आगे को झुकना।

पिनपिन‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अनु॰) बच्चों का रोना। वि॰ **पिनपिनहा**।

पिनपिनाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पिन पिन*) रोगी या कमजोर बच्चे का रोना।

पिनाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव-धनु, अजगव, त्रिशूल।

पिनाकी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पिनाकिन्*) शिव जी।

पिन्ना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पीना (आ॰) तिल की ख़ली। वि॰ बहुत रोने वाला।

पिन्नी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पिन्ना*) पीसे चावल के लड्डू। वि॰ स्त्री॰ बहुत रोने वाली।

पिन्हाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पहनाना*) पहनाना।

पिपरामूल या पिपरामूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिप्पलीमूल*) एक औषधि (वै॰)।

पिपासा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्यास, तृषा, लोभ।

पिपासित–वि॰ (सं॰) तृषित, प्यासा।

पिपासु–वि॰ (सं॰) **पिपासु** (दे॰), प्यास, तृषित, लोभी।

पिपील, पिपीलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चीटा, चींटी।

पिप्पल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अश्वस्थ, पीपल पेड़।

पिप्पली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विपरी, पीपल, पीपर (दे॰)।

पिप्पलीमूल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पिपरानूर।

पियर-पियरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *पीत*) पीले रंग का, पीला, **पियरा** (व्र॰)। स्त्री॰ **पियरी**।

पियराई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पियर*) पीलापन।

पियराना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पियरा*) पीला पड़ना या होना।

पियरी–वि॰ स्त्री॰ (दे॰) पीली। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पियर*) पीली धोती (ब्याह की)।

पियाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पिलाना*) पिलाना।

पियार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिगाल*) चिरौंजी का पेड़, पिपाल। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*प्रिय*) प्यार। वि॰ (हि॰ *प्यारा*) **पियारा**।

पियारा–वि॰ दे॰ (हि॰ *पियार*) प्यारा। स्त्री॰ **पियारी**।

पियारी–वि॰ दे॰ स्त्री॰ (सं॰ *प्रिया*) प्यारी, दुलारी। "सासु, ससुर, गुरु-जनहिं पियारी।"

पियाला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *प्याला*) प्याला।

पिपासा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिपासित या पिपासु*) प्यासा, तृषित।

पियासी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पियासा*) प्यासी।

पियासाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पीतसाज, प्रियसालक*) बहेड़े का सा एक वृक्ष।

पियूख*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पीयूष*) पियूष, **पीयूष** (दे॰) अमृत।

पिरकी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पिड़क*) फुन्सी, फुड़िया।

पिरथी*‡–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पृथ्वी (सं॰)।

पिराई–‡*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पियराई*) पियराई, पीलापन, पीड़ा; गन्ने से रस निकालने की प्रक्रिया।

पिराक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिष्टक*) गोझा, गोझिया, एक पकवान। (स्त्री॰) अल्पा॰ **पिरकियाँ**।

पिराना†*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पीड़न*) दुखना, दर्द करना, पीड़ित होना।

पिरीतम‡*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रियतम*) प्यारा, स्वामी, पति, **प्रतिम** (दे॰)।

पिरोजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *फीरोजा*) फीरोजा, एक हरा नग, एक गाड़ा द्रव पदार्थ, ग्रंथ फिरोजा।

पिरोना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रोत*) गूँधना, पोहना (दे॰) छेद में तागा डालना।

पिलई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रीहा*) पिलही, सरबट, तापतिल्ली, पिल्ला का स्त्री॰ लि॰।

पिलक–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक पीत पक्षी।

पिलकना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) गिराना, ढकेलना।

पिलखन–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पाकर का पेड़।

पिलपना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) लिपटना।

पिलड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) गोली, पिगड़ी।

पिलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पिल=प्रेरणा*) एकबारगी घुस या टूट पड़ना, झुक या धँस पढ़ना, भिड़ या लिपट जाना, रस या तेल के लिए दबाया जाना, प्रवृत्त होना।

पिलपिला–वि॰ दे॰ (अनु॰) नरम और गीला। संज्ञा, स्त्री॰ **पिलपिलाहट**।

पिलपिलाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पिलपिला*) किसी गीली वस्तु को ढीला या गरम करना। **पिलवाना**–क्रि॰ अ॰ (दे॰) पिलाना (हि॰) का प्रे॰ रूप, कि॰ स॰ (हि॰ *पेलना*) परवाना।

पिलाना–कि॰ स॰ (हि॰ *पीना*) पान कराना, घुसेड़ना, पीने को देना, ढीला या पतला करना।

पिलुवा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक कीड़ा; पीला रसगुल्ला।

पिल्ला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) कुत्ते का बच्चा। स्त्री॰ **पिल्ली**।

पिल्लू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पीलू=कीड़ा*) सड़े घाव या फलादि का एक लंबा, सफ़ेद कीड़ा।

पिव, पीव*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) **पिउ, पीउ (आ॰)** स्वामी, पति प्यारा।

पिवाना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पिलाना*) पिलाना।

पिशंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पिंगल या पीत वर्ण, पीला रंग। वि॰ पिंगल वर्ण वाला।

पिशाच–संज्ञा, पु॰ (सं॰), भूत बैताल, देव-योनि विशेष, **पिसाच** (दे॰) वि॰ **पैशाचिक**। स्त्री॰ **पिशाची, पिशाचिनि पिशाचिनी**।

पिशाची–पिशाच-सम्बन्धी, भूत का वशकारी।

पिशाचग्रस्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) उन्मत्त, वातुल, सिड़ी, पागल, प्रेत-बाधा-युक्त।

पिशाचशन–वि॰ (सं॰) पिशाच-नाच।

पिशाचक–संज्ञा, पु॰ (सं॰), भूत, पिशाच।

पिशाचकी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुबेर।

पिशित–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आमिष, मांस।

पिशिताशन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰), राक्षस, मांसाहारी, मांस खाने वाला।

पिशुन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुष्ट, छली।

पिसुन (दे॰)–धोखेबाज, क्रूर, निंदक।

पिशुन-बखन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दुर्भाग्य, गाली। यौ. **पिशुम वाक्य**।

पिशुनता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दुष्टता, क्रूरता।

पिशुना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चुगली।

पिष्ट–वि. (सं.) पिसा हुआ।

पिष्टक–संज्ञा, पु. (सं.) पिष्ट, पीठी, कचौरी, पुआ, रोट।

पिष्ट-पेषण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पिसक को फिर पीसना, व्यर्थ बात को दुहराना, **चर्वितचर्वण**।

पिसनहारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पीसना+हारी प्रत्य.*) आटा पीसने वाला।

पिसना–क्रि. अ. दे. (हि. *पीसना*) पिस कर आटा हो जाना, कुचल या दब जाना, बड़ा कष्ट, हानि या दुख उठाना, बहुत थक जाना। क्रि. स. **पिसाना**, *प्रे. रूप*–**पिसवाना**।

पिसाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पीसना*) पीसने का भाव, कार्य या मूल्य, श्रम।

पिसाच–संज्ञा, पु. (दे.) पिशाच (सं.)।

पिसान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पिष्टाग्न*) पीसा हुआ अनाज, आटा, चूर्ण, चून (दे.)।

पिसुन–संज्ञा, पु. (दे.) पिशुन (सं.)।

पिस्ताई–वि. दे. (फ़ा. *पिस्तः*) पिस्ते के रंग का, हरा-पीला मिला रंग।

पिस्ता–संज्ञा, पु. दे. (फा. *पिस्ताः*) पिस्ता का वृक्ष, एक हरा मेवा।

पिस्तौल–संज्ञा, पु. दे. (अं. *पिस्टल*) छोटी बंदूक, तमंचा।

पिस्सू-पिसू–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *पश्शः*) छुटकी, छोटा उड़ने और काटने वाला कीड़ा।

पिहकना–क्रि. अ. दे. (अनु.) कोकिला आदि चिड़ियों की बोली, कूकना।

पिहित–वि. (सं.) छिपा हुआ। संज्ञा, पु. (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का भाव जान क्रिया से अपने आज की सूचना हो।

पींजना–क्रि. अ. दे. (सं. *पिंजन*) रुई धुनना। प्रे. रूप–**पिंजवाना**।

पींजरा-पींजड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पंजर*) पिंजड़ा।

पींड–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पिंड*) देह, शरीर, पिंड, पेड़ का तना, **पेड़ी** (आ.) गीली या सूखी वस्तु का ठोस, गोला, **पींड़ा** (आ.) लड्डू, पिंड खजूर।

पी*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रिय*) प्रिय, पति। संज्ञा, पु. (अनु.) पपीहा की बोली।

पीक–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पिच*) थूक मिला पान-तम्बाकू का रस।

पीकदान–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *पीक+दान फा.*) उगालदान, पीक थूकने का बरतन।

पीकना†–क्रि. अ. दे. (सं. *पिक*) पिहकना, कोयल, पपीहा का बोलना।

पीका†–संज्ञा, पु. (दे.) नया कोमल पत्ता, पल्लव, कोंपल।

पीच–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पिच*) माँड़, लपसी, पीक।

पीछा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पश्चात्*) पीठ की ओर का भाग, पश्चात् भाग, (विलो. लांगा)। **मु. पीछा दिखाना**–पीठ दिखाना, भागना। **पीछा देना** (दे.)–साथ देकर हटना, किनारा करना। किसी घटना के पश्चात् का समय, पीछे चलते हुए साथ रहना। **मु. पीछा पकड़ना**–अनुसरण करना, पीछे या सहारे में चलना। **पीछा करना (पकड़ना)**– तंग करना, गले पड़ना, मारने या पकड़ने को पीछे चलना, खदेड़ना। **पीछा होना**–मर जाना। **पीछा छुड़ाना**–जान छुड़ाना, अप्रिय सम्बन्ध हटाना। **पीछा छूटना**–पिंड छूटना, जान छूटना। **पीछा छोड़ना**– परेशान या तंग न करना, अप्रिय कार्य से सम्बन्ध न रहना, फँसे हुए कार्य को त्यागना।

पीछू, पाछू†*–क्रि. वि. दे. (हि. *पीछा*) पीछे।

पीछे‡–अव्य. दे. (हि. *पीछा*) पश्चात्, पीठ की तरफ़ (विलो.–**आगे, सामने**)। **पाछे** (आ.)। पीछे कुछ दूर पर। **मु. (किसी के) पीछे चलना**–नकल या अनुसरण या अनुकरण करना, अनुयायी होना। **किसी के पीछे छोड़ना या भेजना**–किसी का पीछा करने के हेतु किसी को भेजना। **किसी काम के पीछे पड़ना**–किसी कार्य के पूर्ण होने के हेतु लगातार उद्योग या श्रम करना। **किसी व्यक्ति के पीछे पड़ना**–उसे परेशान या तंग करना, घेरना, बुराई करते रहना। किसी काम को प्रेरणा करना या बारबार कहना। **पीछे लगना (लगाना)**–पीछे-पीछे जाना, पीछा करना (भेजना), अप्रिय वस्तु का साथ हो जाना। **अपने पीछे लगाना (लेना)**–साथ

करना (लेना) आश्रय देना, हानिकारी वस्तु के सम्बन्ध करना। **किसी और के पीछे लगाना**–अप्रिय वस्तु या व्यक्ति से सम्बन्ध करा देना, जिम्मे मढ़ देना, भेद लेने या ताक रखने को साथ करा देना। **मु॰ पांछे छूटना, पड़ना या होना**–पिछड़ा या न्यून होना, पिछड़ जाना, समान व्यक्ति से किसी बात में घट कर हो जाना। **किसी को पीछे छोड़ना**–किसी बात में बढ़ कर या अधिक हो जाना, बढ़ जाना, किसी को पीछे भेजना। मर जाने पर, पश्चात्, अंत में, न होने पर, उपरान्त, हेतु बदौलत, अनन्तर, निमित्त, अभाव या अविद्यमानता में, वास्ते, लिए, पीछे-पीछे।

पीटना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पीडन*) मारना, ठोकना, आघात करना, चोट दे चौड़ा या चिपटा करना। **मु॰ (सिर) छाती पीटना**–दुख या शोक में हाथों से छाती ठोंकना, शोक करना, बुरी-भली भाँति कर डालना, किसी तरह ले लेना, फटकार लेना। संज्ञा, पु॰ मरने का शोक या दुख, आपत्ति। संज्ञा, स्त्री॰ पिटाई।

पीठ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चौकी, पीढ़ा, पाटा, अधिष्ठान, सिंहासन, वेदी, मूर्ति का आधार-पिंड, विष्णु-चक्र से कट कर दक्ष-सुता सती के अंग या भूषण का स्थान (पुरा॰), वृत्त के अंश का पूरक, प्रान्त। संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पृष्ठ*) पेट के पीठ की ओर का भाग, पृष्ठ, पुश्त, पशु-पक्षी के ऊपर का भाग। **मु॰ पीठ चारपाई से लग जाना**–अति दुर्बल या कमजोर हो जाना। **पीठ लहना (पाना)**–जीतना। **पीठ का**–पीठ पर का, पीछे का। **पीठ ठोंकना**–शाबाशी देना, प्रशंसा करना, प्रोत्साहित करना, हिम्मत बँधाना। **पीठ दिखाना**–लड़ाई या तुलना से भाग जाना, पीछा दिखाना। **पीठ दिखाकर जाना**– ममता-मोह का प्रेम-स्नेह त्याग कर जाना। **पीठ दिखा जाना**–हार मान लेना, विमुख हो भाग जाना। **पीठ देना**–विदा या रुखसत होना, चल देना, भाग जाना मुँह मोड़ना, विमुख होना, लेना, आराम करना। **पीठ पर या पीठ पर का**–जन्म-क्रम में पीछे का (अनुज)। **पीठ मींजना या पीठ पर हाथ फेरना (रखना)**–पीड ठोंकना, शाबाशी देना, प्रशंसा करना, प्रोत्साहन देना। **पीठ पर होना**–सहायक होना। **पीठ पीछे**–परोक्ष, में, अनुपस्थिति में। **लो॰–'पीठ पीछे राजा को भी लोग गाली देते हैं'। पीठ फेरना**–चक्का जाना, अनिच्छा दिखाना, भाग जाना, पीठ दिखाना, विदा या विमुख होना, अनिच्छा दिखाना। **चारपाई से पीठ लगाना**–पढ़ना, लेटना, सोना। किसी वस्तु का ऊपरी या पृष्ठ भाग।

पीठना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पीसना*– पीसना।

पीठमर्द–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 4 साखाओं में से नायक का वह सखा जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके, वह नायक जो रुठी हुई नायिका को मना सके। (नाव्य॰)।

पीठस्थान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पीठ, पृष्ठ।

पीठा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) पीढ़ा, पाटा, सिंहासन। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिष्टक*) एक पकवान।

पीठि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पीठ*) पीठ।

पीठिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पीढ़ा, अंश, भाग, अध्याय।

पीठिया-ठोक–वि॰ यौ॰ (दे॰) मिला, सटा या जुड़ा हुआ।

पीठी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पिष्टक*) उर्द की धोई और पीसी हुई दाल, पिट्ठी, पीठ, **पीठि** (आ॰)।

पीड़–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *आपीढ़*) सिर में बालों पर बांधने का एक गहना, पीड़ा, दर्द।

पीड़क–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुख या पीड़ा देने वाला, सताने वाला, दुखदायक।

पीड़न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दबाना, पेरना, दुख या कष्ट देना, उच्छे, अत्याचार करना, दबोचना, नाश। (वि॰ **पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित**)।

पीड़ा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुख, कष्ट, व्यथा, दर्द, व्याधि, वेदना, पीरा (आ॰)।

पीड़ित–वि॰ (सं॰) क्लेमित, दुखित, रोती, दबाया या नष्ट किया हुआ।

पीडुरी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पिंडली*) पिंडली, पिंडुली, **पिंडुरी** (आ॰)।

पीडयमान–संज्ञा, (सं॰) पीड़ा या दुख-युक्त।

पीढ़ा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पीठक*) पाटा, पीठक, सं॰) पीठ। छोटी कम चौड़ी चौकी।

पीढ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पीढ़,* सं॰ *पौठिक*) कुल, परंपरा, किसी व्यक्ति से बाप-दादे या बेटे-पोते आदि के क्रम से प्रथम, द्वितीयादि स्थान, पुशत, वंश-क्रम, **संतति**–

समूह, संतान, किसी वर्ग के व्यक्तियों का समूह। संज्ञा, स्त्री॰ (*अल्प॰*) छोटा पीड़ा (हि॰)।

पीत–वि. (दे॰) पीला, पीले रंग का, कपिल, भूरा। स्त्री॰ **पीता।** वि॰ (सं॰ *पान*) पिया हुआ। पु॰ (सं॰) भूरा या पीला रंग। पुखराज, मूँगा, हड़ताल, कुसुम, हरि चन्दन।

पीतकंद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गाजर।

पीतफ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) केसर, हरताल, हल्दी, पीतल, अगर, शहद, पीला चंदन। वि॰ पीला, पीले रंग का।

पीतकदली–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पीला केला, सोमकेला, चंपक।

पीतकरवीर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पीला कनौर।

पीत चन्दन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हरि चन्दन, पीले रंग का चन्दन (*द्रविड़ देश*)।

पीतता–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ (सं॰) पीलापन, जर्दी।

पीतधातु–संज्ञा, स्त्री॰ संज्ञा, (सं॰) गोपी-चंदन, रामरज, सुवर्ण।

पीतपुष्प–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंपा, कट, सरेया, पीला कन्नेर, तोरई, घिया।

पीतम*–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रियतम*) प्रीतम (दे॰), अतिप्यारा या स्नेही, पति।

पीतमणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुकारना।

पीतरत्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुखराज।

पीतरस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हल्दी।

पीतल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पित्तल*) ताँबे और जस्ते से बनी एक मिश्रित उपधातु, **पीतर** (आ॰)।

पीतला–वि॰ दे॰ (सं॰ *पित्तल*) पीतल का बना, पीतल-निर्मित।

पीतवास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीकृष्ण।

पीतशाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विजयसार।

पीतसार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हरि-चन्दन, पीला या सफ़ेद चंदन, गोमेद, मणि, शिलाजीत।

पीतांबर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पीला वस्त्र, रेशमी धोती, श्रीकृष्ण, विष्णु।

पीन–वि॰ (सं॰ पुष्ट, दृढ़, स्थूल, संपक्ष, पीनी, पीवर। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पीनता।

पीनक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पिनकना*) अफीम के नशे में आगे को झुक-झुक पड़ना, ऊँघना, पिनक। वि॰ **पिनकी**।

पीनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मोटाई, दृढ़ता।

पीनना–क्रि॰ स॰ (दे॰) झुक-झुक पड़ना, झूमना, ऊँघना, पिनकना (दे॰)।

पीनस–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्राण-शक्ति नाशक, नाक का रोग। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फा॰ *फीनस*) पालकी।

पीनसा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) ककड़ी।

पीनसी–वि॰ (सं॰ *पीनसिन*) पीनस रोगी, मोटी या स्थूल सी।

पीना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पाव*) पान करना, घुटुक जाना, गले से द्रव्य वस्तु को घूँट घूँट कर नीचे जाना, सोखना, उत्तेजना, किसी बात या क्रोधादि, मनोविकार को दवा लेना, प्रगट या अनुभव न करना, सह जाना, उपेक्षा करना, मारना, शराब पीना या जुआ बीड़ी आदि का धूआँ अन्दर खींचना। पीना, धूम्रपान। संज्ञा, पु॰ (प्रान्ती॰) तिल की खली।

पीनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पोस्त, तिसी।

पीप–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूय*) मवाद, फोड़े या घाव का सफ़ेद लसीला विकार, पीव (आ॰)।

पीपर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिप्पल*) पीपल।

पीपरपर्न–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पिप्पल-पर्ण*) पीपल का पत्ता, एक कर्ण-भूषण।

पीपरि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिप्पली*) छोटा पाकर, पिप्पली, पीपल।

पीपल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिप्पल*) वट जैसा पीपर का पेड़ जो पवित्र है (हिन्दू)। यौ॰ **चलदल**। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पिप्पली*) एक औषधि।

पीपरामूर-पीपलामूल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिप्पलीमूल*) एक औषधि, पिपरी की जड़, **पिपरामूर**(दे॰)।

पीपा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) तेल या शराब आदि रखने का लोहे का काड़ का वड़ा ढोल जैसा गोल पात्र।

पीव–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूय*) मवाद।

पीय*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) प्रिय, स्वामी, पति, प्यारा, प्रिय।

पीयूस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) अमृत, दूध, 7 दिन की ब्याही गाय का दूध।

पीयूषभानु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चन्द्रमा।

पीयूषवर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चन्द्रमा, कपूर, आनन्द-वर्धक,

एक यांत्रिक छंद (पिं.)। वि. **पीयूषवर्षी**।

पीर–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पीड़ा*) पीड़ा, दर्द सहानुभूति, पीरा (दे.)। वि. (फ़ा.) बूढ़ा, महात्मा, बड़ा सिद्ध। (संज्ञा, स्त्री. पोरी)।

पीरा‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पीड़ा*) पीड़ा, दर्द। वि. दे. (सं. *पीत*) पीला।

पीरी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) बुढ़ापा, वृद्धापन, गुरुवाई, शासन, ठेका, इजारा।

पील–संज्ञा, पु. (फ़ा.) गज, हाथी, शतरंज का एक मोहरा, फील या ऊँट।

पीलपाल*‡–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *फीलवान*) फीलवान, हथबाल।

पीलपाँव–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *पीलया*) श्लीपद रोग (वै.) **फीलपा** (फा.)।

पीलवान–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *फीलवान*) फीलवान, हथवाल।

पीलसाज–(सं.) पु. दे. (फ़ा. *फतीलसोज*) चिरागदान, दीवट, **दीयट** (दे.)।

पीला–वि. दे. (सं. *पीत*) हल्दी सा, पीले रंग का, निस्तेज, कांति-हीन, सोने या केसरिया रंग का, हल्दी या सोने का सा रंग। स्त्री. **पीली। मु. पीला पड़ना या होना**–रोग या भय से मुख पीला पड़ जाना, देह में रक्ताभाव होना।

पीलापन–संज्ञा, पु. (हि.) पीला होने का भाव, पीतता, **पियराई** (दे.)।

पीलिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पीला*) कमल या कमलक रोग (वै.)।

पीलु–संज्ञा, पु. (सं.) पीलू वृक्ष, फूल, फलपान पेड़, हाथी, हड्डी का टुकड़ा, परमाणु।

पीलू–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पीलू*) काँटेदार, एक पेड़ (औष.) सड़े फल आदि के सफेद लम्बे पतले कीड़े। संज्ञा, पु. (दे.) एक राग (**संगी.**)।

पीव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रिय*) प्यारा,

पीउ–(आ.), स्वामी, पति।

पीवना*–क्रि. स. दे. (हि. *पीना*) पीना।

पीवर–वि. (सं.) स्थूल, मोटा, दृढ़, भारी। स्त्री. पीवरा। संज्ञा, स्त्री. **पीवरता**।

पीवरी–संज्ञा, पु. दे. (सं.) सरिवन, सतावर, (औप.) गाय, तरुणी।

पीसना–क्रि. स. दे. (सं. *पेषण*) अनाज, या अन्य वस्तु का आटा बनाना, चूर्ण करना, जल में रगड़ कर महीन करना, कुचल कर धूल-सा करना। **मु. किसी मनुष्य का पीसना**–उसे बड़ी हानि पहुँचाना, चौपट या नष्टपाय कर देना। अति श्रम करना, जान लड़ाना। संज्ञा, पु. पोसी जाने वाली चीज़, एक व्यक्ति के पीसने-योग्य अनाज या वस्तु। स. रूप **पिसाना,** प्रे. रूप–**पिसवाना**।

पीहर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पितृगृह*) स्त्रियों के माँ-बाप का घर, मैका, मायका, प्रियवर।

पीहू-पीहू–संज्ञा, पु. (दे.) एक कीड़ा, पिस्सू।

पुंख–संज्ञा, पु. (सं.) बाण का अंतिम या पिछला भाग जिसमें पर लगे रहते हैं।

पुंग–संज्ञा, पु. (सं.) राशि, समूह, श्रेणी।

पुंगल–संज्ञा, पु. (सं.) आत्मा।

पुगंध–संज्ञा, पु. (सं.) बैल, बर्द, वरद। वि. श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़कर।

पुंगीफल-पूंगीफल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पूंगीफल*) सुपारी।

पुँछार, पुछार*‡–संज्ञा, पु. दे. (*हि. पूँछ*) मोर, मयूर। वि. लम्बी पूँछ वाला।

पुँछाला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पुछल्ला*) बड़ी या लम्बी पूँछ, पीछे लगा रहने वाला, चापलूस, आश्रित, पिछलगा, **पुछल्ल**।

पुंज–संज्ञा, पु. (सं.) ढेर, राशि, समूह। वि. यौ. (सं.) **पुंजीकृत, पुंजीभूत**।

पुंजी*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पुंज,* हि. *पूँजी*) मूलधन, **पूँजी** (दे.)।

पुंड–संज्ञा, पु. (सं.) तिलक, टीका, त्रिपुंड।

पुंडरी–संज्ञा, पु. (सं. *पुंडरिन्*) स्थल, कमल, गुलाब।

पुंडरीक–संज्ञा, पु. (सं.) श्वेत कमल, रेशम का कीड़ा, कमल, बाण, बाघ, तिलक, श्वेत, हाथी, श्वेत कुष्ठ, अग्निकोण का दिग्गज, आग, आकाश (अनेकार्थ)।

पुंडरीकाक्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु। वि. कमल से नेत्र वाला।

पुंड्र–संज्ञा, पु. (सं.) पौंड़ा, गन्ना, तिलक, श्वेत कमल,

भारत का एक प्रदेश (प्राचीन)।

पुंड्रवर्द्धन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पंडुदेश की राजधानी (प्राचीन)।

पुंलिंग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुरुष चिन्ह, लिंग, पुरुषवाची शब्द (व्या॰)।

पुंशक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पौरुष, वीर्य।

पुंश्चली–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) छिनाल, कुलटा, व्यभिचारिणी।

पुंस*‡–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मर्द, पुरुष, नर।

पुंसवन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मर्द, पुरुष, नर।

पुंसवन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) द्विजों के 16 संस्कारों में से गर्भाधान से तृतीय मास का एक संस्कार, वैष्णवों का एक वृत्त, दूध।

पुंसत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुरुषत्व, पुरुष की मैथुन-शक्ति, वीर्य, शुक्र, पुंसकता, पुंसता।

पुआ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पूप*) मोटी और मीठी पूड़ी या टिकिया।

पुआल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पयाल*) पयाल, पयार (दे॰)।

पुकार–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पुकारना*) हाँक, दुहाई, टेर (व॰), प्रतिकार, रक्षा या साहाय्यार्थ, चिल्लाहट, नालिश, गोहार, फरियाद, बहुत माँग, नाम लेकर बुलाना।

पुकारना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रकुश*) टेरना, नाम लेकर बुलाना, साहाय्य या रक्षार्थ चिल्लाना, हाँक या धुन लगाना, नामोसार करना या रटना, घोषित करना, **गोहराना** (प्रा॰) चिल्लाकर कहना या माँगना, नालिश या फरियाद करना।

पुक्कस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नीच, डोम, चांडाल, अधम। स्त्री॰ **पुक्कसी**।

पुख, पुकख†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुष्य*) पुष्य, पुष्प नक्षत्र (ज्यो॰)।

पुखर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*पुष्कर*) तालाब, तड़ाग–**पोखर** (आ॰) स्त्री॰ पोखरी।

पुखराज, पोखराज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुष्पराग*) पीत मणि, पीले रंग का एक रत्न, पुष्पराज।

पुख्य–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पुष्य नक्षत्र (सं॰)।

पुगना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पुजना*) पुजना, पूजना, पूरा करना (प्रान्ती॰)। स॰ रूप–**पुगाना,** प्रे॰ रूप–**पुगवाना**।

पुचकार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पुचकारना*) पुचकारी, प्यार, चुमकार।

पुचकारना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰ *पुच से*+(हि॰) *कार+ना प्रत्य॰*) चुमकारना, चूमने के से शब्द से प्यार प्रगट करना।

पुचकारी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰*पुचकारना*) घूमने का सा शब्द, चुमदार, प्यार प्रगट करना, स्नेह या प्रेम दिखाना।

पुचारा-पुचाड़ा–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰ प्रत्य॰*) गीले वस्त्र से पोंछना, पोता, पोतने का गीला वस्त्र, पानी में घोली पोतने या लेप की वस्तु, पतला लेप करने का कार्य, हलका लेप, छूटी हुई तोप, वंदूक आदि की गर्म नली के ठंडा करने को गीला वस्त्र फेरने का कार्य, प्रोत्साहक या प्रसन्नकारक वाक्य, चापलूसी, बढ़ावा, झूठी बढ़ाई।

पुच्छ–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूँछ दुम, पिछला भाग। संज्ञा, पु॰ केतु (ज्यो॰)।

पुच्छन–वि॰ दे॰ (हि॰ *पुच्छ*) पूँछ वाला, दुमदार। यौ॰ **पुच्छलतारा, केतु**।

पुच्छल्ला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पूँछ+ला प्रत्य॰*) बड़ी-लम्बी पूँछ, पूँछ-सी पीछे जुड़ी वस्तु, आश्रित, पिछलगा, खुशामदी, चापलूस, अनावश्यक साथ लगी वस्तु या पीछे लगा व्यक्ति।

पुछार†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पूछना*) पूछने या सत्कार करने वाला, (दे॰) मोर।

पुछैया–वि॰ (दे॰) पूछने वाला।

पुजना–क्रि॰ अ॰ (हि॰) पूजा जाना, अराधनीय या सम्मानित होना, सत्कार पाना। (स॰ रूप-**पुजाना**, प्रे॰ रूप–**पुजवाना**)।

पुजवना†*–स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ *पूजना*) सफल या पूरा करना, भर देना, भरना, पुजाना।

पुजवाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *पुजना का प्रे॰ रूप*) पूजा में प्रवृत्त करना, पूजा कराना, सेवा-सम्मान करवाना, अपनी पूजा या सेवा कराना। संज्ञा, स्त्री॰ **पुजवाई**।

पुजाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पूजना*) पूजने का भाव या कार्य या पुरस्कार।

पुजाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पूजना*) धन वसूल कराना, भेट चढ़वाना, सेवा-सम्मान करना, पूजा में नियुक्त या प्रवृत्त करना, अपनी पूजादि कराना। क्रि॰ स॰ (हि॰

पूजना—पूरा होना) भर देना, पूरा या सफल करना।

पुजापा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पूजा+पात्र*) देवादि की पूजा का सामान या सामग्री।

पुजारी-पुजेरी—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पूजा+कारी*) देव-मूर्ति की पूजा करने वाला, पूजक।

पुजैया—संज्ञा, पु. (हि. *पूजना*) पूजक, पुजारी। संज्ञा, पु. (हि. *पूजना—भरना*) भरने या पूरा करने वाला। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **पूजा, पुजारिनि**।

पुट—संज्ञा, पु. (अनु.) मिलावट, बोर देना, डुबोना, कम मेल, भावना, हलका छिड़काव, छींटा, बोर। संज्ञा, पु. (सं.) आच्छादन, आच्छादक, दोना, ढक्कन, कटोरा, मुँहबन्द बरतन (पै.), औषधि बनाने का संपुट, या दो बराबर पात्रों के मुँह मिलाकर जोड़ने से बना खूब बन्द घेरा, घोड़े की टाप, अंतः पट, अंतरौटा, दो नगण, मगण, दगण से बना एक वर्ण वृत्त (पिं.)।

पुटकी—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पुटक*) गठरी, पोटली, पोटरी (आ.)। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पटपटाना—मरना*) दैवी विपत्ति या आपत्ति, अचानक मृत्यु। संज्ञा, स्त्री. (हि. *पुट—हलका मेल*) मिलावट, आलन (तरकारी के रस को गाड़ा करने को डाला गया बेसन आदि पदार्थ)।

पुटपाक—संज्ञा, पु. दे. यौ.(सं.) पत्ते के दोनों या दो सम पात्रों में रखकर औषधि पकाने की विधि, मुँह-बन्द बरतन को गढ़े में रखकर औषधि पकाने की रीति (वै.)।

पुटी—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पुट*) छोटा कटोरा या दोना, पुड़िया, लँगोटी, कुछ वस्तु रखने का रिक्त स्थान।

पुटीन—संज्ञा, पु. दे. (अ. *पुटी*) एक मसाला जो किवाड़ों में शीशे लगाने में या लकड़ी के जोड़ भरने के काम देता है।

पुट्ठा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुष्ट, पृष्ठ*) चूतढ़ का ऊपरी भाग , जो कुछ कड़ा हो, घोड़ों या चौपायों के चूतड़, किताब की जिल्द के पीछे का भाग।

पुठवार—संज्ञा, पु. दे. (हि. *पुट्ठा*), पीछे, पार्श्व या बगल में।

पुठवाल—संज्ञा, पु. दे. (हि. *पुट्ठा+वाला प्रत्य.*) सहायक, पृष्ठ-रक्षक।

पुड़ा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुट*) बंडल या बढ़ी पुढ़िया। स्त्री. *अल्पा.* **पुड़िया**।

पुड़िया—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पुटिका*) किसी वस्तु के ऊपर संपुटाका लपेटा कागज, पुड़िया में रक्खी दया की एक मात्रा, घर, स्थान, आधार, भण्डार, खान। यौ. **आफत की पुड़िया**—शैतान।

पुण्य—वि. (सं.) शुभ, अच्छा, पुनीत। संज्ञा, पु. धर्म-कर्म, सुफलप्रद पावन काम, शुभ काय्र का संचय।

पुण्यकर्म—संज्ञा, पु. यौ (सं.) धर्म, पवित्र, या शुभ कार्य।

पुण्यकाल—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शुभ या पवित्र समय, दान-धर्म करने का समय।

पुण्यकृत—वि. (सं.) पुण्यकर्त्ता, धार्मिक, सुकृती, सुकर्मी।

पुण्यक्षेत्र—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) तीर्थ, वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो।

पुण्यगंध—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंपा का फूल।

पुण्यजन—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यक्ष, राक्षस, सजन मनुष्य।

पुण्यजनेश्वर—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबेर।

पुण्यपत्तन—संज्ञा, पु. (सं.) पूना नगर।

पुण्यभूमि—संज्ञा, वि. यौ. (सं.) आर्य्यावर्त्त, भरतखंड, तीर्थस्थान।

पुण्यवान्—वि. (सं. *पुरायवत्*) पुण्यशील, धर्मात्मा, पुण्यकर्म करने वाला, दानी। स्त्री. **पुरायवती**।

पुण्यशील—संज्ञा, पु. (स.) दानी, उदार, धर्मात्मा, सुकर्मी।

पुण्यश्लोक—वि. यौ. (सं.) पवित्र आचरण या चरित्र वाला, यशस्वी, (स्त्री. **पुश्यश्लोका**)। विष्णु, युधिष्ठिर, राजा नल।

पुण्यस्थान—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) तीर्थ-स्थान, **पुण्यस्थल**।

पुण्याई-पुन्याई—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पुण्य, पुन्य+आई प्रत्य.*) सुकृत कर्म, पुण्य का प्रभाव या फल।

पुण्यात्मा—वि. यौ. (सं. *पुण्यात्मन्*) दानी, सुकर्मी, धर्मात्मा, पुण्यशील।

पुण्याह—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पुण्य-जनक, शुभ दिन, अच्छा दिन।

पुण्याहवाचन—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देव कर्मों के अनुष्ठान में स्वस्ति वाचन के प्रथम मंगलार्थ तीनि बार 'पुण्वाह' कहना।

पुतरा, पुतला—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुत्रक*) काष्ठ, तृण, मिट्टी,

वस्त्र आदि से क्रीड़ा-कौतुकार्थ बनी हुई मनुष्य की मूर्ति, गुड्डा। स्त्री॰ **पुतरी, पुतली। मु॰ किसी का पुतला बाँधना**—निन्दा या बदनामी करते फिरना।

पुतरी, पुतली—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुत्रिका, पुतली*) काष्ठ, धातु, तृण, वस्त्र आदि से कौतुकार्थ धनी स्त्री की मूर्ति, छोटा पुतला, गुड़िया, आँख का काला भाग, **पुतरि, पूतरी** (आ॰)। **मु॰ पुतली फिर जाना**—आँखें उलट जाना, नेतृत्व्य हो जाना (मृत्यु-चिन्ह)। **आँख की पुतली बनाना (अख-पूतरी करना)**—अति प्रिय बनाना (करना)। कपड़ा बुनने की मशीन। यौ॰ **पुतली-घर**—कपड़ा बुनने का कार्यालय, कल-कारखाना।

पुताई-पोताई—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पोतना+आई प्रत्य॰*) योतना क्रिया का भाव, पोतने का कार्य या मजदूरी।

पुत्त*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुत्र*) लड़का, बेटा, **पूत** (दे॰)। **पुतवा, पुतुवा, पुत्तू** (आ॰)।

पुत्तरी-पुत्तली*†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुत्री*) कन्या, लड़की, बेटी, पुतली।

पुत्तलिका-पुत्तरिका—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *पुत्रिका*), गुड़िया, पुतली, पुत्री।

पुत्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) लड़का, बेटा, पूत।

पुत्रजीव, पुत्रजीवी—संज्ञा, पु॰ (सं॰) इंगुदी सा एक सुन्दर बड़ा पेड़ जिसकी छाल और बीज दवा में पड़ते हैं।

पुत्रवती—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लड़के वाली, लड़कौरी (दे॰), जिसके लड़का हो, **पती** (दे॰)।

पुत्रवधू—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) लड़के की स्त्री, पतोहु, बहू।

पुत्रवान—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पुत्रवत्*) लड़के-वाला, जिसके लड़का हो। स्त्री॰ **पुत्रवती**।

पुत्रार्थी—वि॰ यौ॰ (सं॰) संतान कांक्षी, संतानेच्छु, पुत्राभिलाषी, पुत्राकांढ़ी।

पुत्रिका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लड़की, वेटी, गुड़िया, आँख की पुतली, मूर्ति, स्त्री का मित्र।

पुत्रिणी—वि॰ स्त्री॰ (सं॰) लड़के वाली, सन्तान-युक्ता, पुत्रवती।

पुत्री—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लड़की, बेटी, सुता, तनुजा, कन्य का, (ग्रा॰) धीय, धीयरुज

पुत्रेष्टि—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पुत्र-प्राप्ति के लिए एक विशेष यज्ञ।

पुदीना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *पोदीनः*) एक पौधा जो सुगन्धित पत्तियों वाला, पाचक और रुचिकारक होता है। **पोदीना**।

पुदगल-पुदनल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) रूप, रस, और स्पर्श गणवाली वस्तु, शरीर (जैन॰), चैतन्य पदार्थ, परमाणु (बौद्ध) आत्मा।

पुनः—अव्य॰ (सं॰ *पुनर्*) फिर, पीछे, पश्चात्। **पुनि** (ग्र॰ अ॰) उपरान्त, दोबारा, अनन्तर।

पुनः पुनः—अव्य यौ॰ (सं॰) फिर-फिर, बार बार, मुहुर्मुहः।

पुन*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुण्य*) पुन्य, दान, धर्म-पुत्र, पुण्य।

पुनरपि—क्रि॰ वि॰ (सं॰) फिर भी, दुबारा भी।

पुनरवसु*‡—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुनर्वसु*) पुनर्वसु नामक नक्षत्र (ज्यो॰)।

पुनरागमन-पुनरागम—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फिर जन्म, दोवारा जन्म, फिर आना।

पुनरावृत्ति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) फिर से घूमना, फिर से आना, दुहराना,फिर से पढ़ना, किए काम को फिर करना (वि॰ **पुनरावृत्त**)।

पुनपरुक्तवदाभास—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक शब्दालंकार जिसमें शब्द के अर्थ की पुनशक्ति का केवल आभास-सा प्रतीत हो।

पुनरुक्तप्रकाश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोचकता के लिए शब्द का पुर्ण्यथोप (दास)।

पुनरुक्ति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक बार कहे शब्द या वाक्य को फिर कहना, कथित-कथन, एक ही अर्थ में व्यर्थ शब्द के पुनः प्रयोग का काव्य दोष। (वि॰ पुनरुक्त)।

पुनरुत्थान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फिर से उठना, दूसरी बार उठना, फिर उन्नति करना, पुनरुक्ति।

पुनर्जन्म—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मर का एक देह छोड़ दूसरी धारण करना, फिर उत्पन्न होना, **पुनरुत्पत्ति**।

पुनर्नव—वि॰ (सं॰) जो फिर से नया हो गया हो।

पुनर्नवा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जो फिर से नया हो गया हो, गदापुत्र, गदहपूरना (औप॰) जो श्वेत रक्त और नील रंग के फूलों के विचार से तीन प्रकार का होता है।

पुनर्भव—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नख, नाखून, बाल, पुनर्जन्म, पुनरुत्पत्ति, पुनर्विवाह, फिर से पैदा होना, अंडज। वि॰

पुनर्भूत। स्त्री॰ **पुनर्भवा**।

पुनर्भू–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दो बार की ब्याही स्त्री, द्विरुढा स्त्री, **पुनर्विवाहिता,** दूसरे से व्याही गई विधवा स्त्री।

पुनर्वसु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 27 नक्षत्रों में से 7 वाँ नक्षत्र, विष्णु, कात्यायन मुनि, शिव, एक लोक।

पुनर्विवाह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दुबारा ब्याह। वि॰ **पुनर्विवाहित**।

पुनवाना–क्रि॰ स॰ (दे॰) अनादर या अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना।

पुनि†*–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *पुनः*) फिर से, पुनः) दुबारा, फिर। यौ॰ पुनि-पुनि।

पुनी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुण्य*) पुण्यात्मा, हाथी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूर्ण*) पूनोतिथि, पूर्णमासी, पूर्णिमा। क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *पुनः*) फिर, दुबारा, पुनि, पुनः।

पुनीत–वि॰ (सं॰) शुद्ध, पवित्र, पावन।

पुन्न, पुन्य–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुण्य*) पुण्य, धर्म। यो॰ **दान-पुन्न**।

पुन्ना–क्रि॰ स॰ (दे॰) गाली देना, अनादर या अपमान करना।

पुन्नाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक प्रकार का चंपा, जायफल, सफ़ेद कमल।

पुन्नार–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चकवड़ का पेड़।

पुन्य–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुण्य*) धर्म कार्य, शुभ कर्म, दान, धर्म। वि॰ (दे॰) शुभ, पवित्र, अच्छा।

पुपली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पोपली*) बाँस की पोली पतली नली। वि॰ स्त्री॰ बिना दाँत वाली। पु॰ **पुपला-पोपला**।।

पुमान्–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुरुष, नर।

पुरंजय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक सूर्य-वंशी राजा जा पीछे से ककुस्थ कहलाए, जिससे सूर्यवंशी काकुस्थ कहलाते हैं; पुर राक्षस के विजेता, इंद्र।

पुरंजर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जय, स्कंध, कंधा, बाहुमूल।

पुरंदर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुर नामक दैत्य के नाशक, इन्द्र, विष्णु, शिव।

पुरंधी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पति, पुत्रादि से सुखी स्त्री, नारी, सुगृहणी।

पुरः–अव्य॰ (सं॰ *पुरस्*) प्रथम, पहले, आगे।

पुरःसर, पुरस्सर–वि॰ (सं॰) आगे चलने वाला, अग्रगामी, अगुआ, सहित, साथी।

पुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शहद, डगर, (स्त्री॰ **पुरी**) अटारी, पद, कोठा, भुवन, लोक, राशि, शरीर, क्रिया। वि॰ (अ॰) भरा हुआ, पूर्ण, पूरा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) चरसा, चरस, चमड़े का डोल।

पुरइन*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुटकिनी*) कमल का पत्ता, कमल, नलिनी, **पुरैनि** (आ॰)।

पुरइया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) तकुआ।

पुरखा, पुरिखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुरुष*) पहले के पुरुष या लोग, बाप, दादा, परदादा आदि, घर का बड़ा, बूढ़ा। (स्त्री॰ **पुरखिन**)। वि॰ (दे॰) बुजुर्ग, अनुभवी। **मु॰ पुरखे तर जाना**–परलोक में पूर्वजों को उत्तम गति मिलना, बड़ा पुण्य या फल होना।

पुरचक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पुचकार*) पुचकार, चुमकार, उत्तेजना, उत्साह-दान समर्थन, तरफ़दारी, प्रेरणा, पक्षपात।

पुरजन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नगर वासी।

पुरजा, पुर्जा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) भाग, खंड, टुकड़ा, पर्चा़द्य काग़ज़ का टुकड़ा, अंश, अंग, धज्जी, कतरन, रुक्का, यंत्र या कल का अवयव, कत्तल। **मु॰ पुरजे-पुरजे करना या उड़ाना**–टुकड़े-टुकड़े या खंड-खंड करना। **मु॰ चलता-पुरजा**–चालाक मनुष्य। यौ॰ **कल-पुरजा**।

पुरट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुरण, सोना, सुवर्ण।

पुरतः–अव्य (सं॰) संमुख, सामने, आगे।

पुरत्राण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परकोटा, आकार, शहर-पनाह, नगर कोट।

पुरना–क्रि॰ स॰ (दे॰) भर जाना, बंद होना, **पूरा या पूर्ण** होना। क्रि॰ स॰ **पुराना,** प्रे॰ रूप– **पुरवाना**।

पुरनियाँ–संज्ञा, पु॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *पुराण*) प्राचीन, पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, एक नगर, **पुर्निया** (बंगाल)।

पुरपाल, पुरपालक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नगर-रक्षक, कोतवाल, जीव।

पुरवला, † **पुरबुला** †–वि॰ दे॰ (सं॰ *पूर्व+ला प्रत्य॰*) पूर्व या प्रथम का, पहले जन्म का, **प्रथम,** पहले या पूर्व का। (स्त्री॰ **पुरवली, पुरबुली**)।

पुरबहु-पुरवहु–क्रि॰ स॰ (दे॰) पुरवना, पूर्ण या पूरा करो, भर दो, पुजा दो।

पुरबा, पुरवा–संज्ञा पु. (दे.) पुरवा, करई, चुकट्टा, पूरब की हवा, पुरवाई, पूर्वा नक्षत्र।

पुरबासी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नगर निवासी, पुरजन।

पुरबिया-पुरबिहा–वि. दे. (हि. *पूरब*) पूर्व देश का निवासी या उत्पन्न, पूर्व का, **पूर्वीय** (सं.)। (स्त्री. **पुरवनी**)।

पूरबी, पूरवी–वि. (दे.) पूर्वीय (सं.)।

पुरवट†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पूर*) चरसा, चरस, मोट, सिंचाई के लिए कुएँ से पानी खींचने का चमड़े का बड़ा डोल।

पुरवना*†–क्रि. स. दे. (हि. *पूरना*) भरना, पुजाना, पूरना, पूरा करना। **मु. साथ पुरवना**–साथ देना। क्रि. अ. पूरा या पर्याप्त होना, काम भर को होना, पूर्ण या यथेष्ट होना।

पुरवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. पुर) खेड़ा, पुरा, छोटा गाँव, पूर्वा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र (ज्यो.)। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुटक*) मिट्टी का सकोरा या कुल्लहड़। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पूर्व+बात*) पूर्व दिशा से चलने वाली बाहु, **पुरवाई, पुरवैया** (आ.)।

पुरवाई-पुरवैया-पुरवइया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पूर्व+वायु*) पूर्व दिशा से चलने वाली हवा।

पुरश्चरण–संज्ञा, पु. (सं.) किसी कार्य की सिद्धि के लिए अनुष्ठान, नियमपूर्वक कार्यसिद्धि के लिए स्तोत्र या मंत्रादि का पाठ या जप करना, पूजा या प्रयोग करना (तन्त्र)।

पुरषा–संज्ञा, पु. (सं. *पुरुष*) पुरखा।

पुरसा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुरुष*) साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप। (फा.) किसी के घर ग़मी में संवेदना प्रकट करने जाना।

पुरस्कार–संज्ञा, पु. (सं.) पारितोषिक, इनाम, आदर, सत्कार या प्रतिष्ठा-पूर्वक दान, उपहार, पूजा, अच्छे कार्य का बदला, धन्यवाद, आगे करना, प्राधान्य स्वीकार। वि. **पुरस्कृत, पुरस्करणीय**)।

पुरस्कृत–वि. (सं.) पूजित, आदत, सम्मानित, स्वीकृत, जिसे पुरस्कार, पारितोषिक, या इनाम मिला हो, आगे किया हुआ।

पुरस्तात्–अव्य. (सं.) पूर्व दिशा, अतीत काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व, पूर्व में।

पुरहूत*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुरुहूत*) इन्द्र, पुरुहूत।

पुरा–अव्य. (सं.) पुराना, प्राचीन या पुराने समय में। वि. पुराना, प्राचीन। संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुर*) गाँव, मुहल्ला। स्त्री. पूर्व दिशा, बस्ती।

पुराकल्प–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पूर्व या पहला कल्प, प्राचीन काल, एक भाँति का अर्थ-वाद जिसमें पुराने इतिहास के आधार पर कार्य करने का विधान किया जाता है।

पुराकृत–वि. (सं.) पूर्व जन्म या समय में किया हुआ।

पुराण-पुरान (दे.)–वि. (सं.) पुराना, प्राचीन, पुरातन। संज्ञा, पु. (सं.) इतिहास, जन-परम्परागत देवदानवादि के वृत्तान्त, हिन्दुओं के 18 धर्म-सम्बन्धी आख्यान-ग्रंथ, जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, प्राचीन ऋषिमुनियों तथा प्रलयादि के वृत्तान्त हैं, 18 की संख्या, शिव।

पुरातत्व–संज्ञा, पु. (सं.) प्राचीन समय सम्बन्धी विद्या, प्रत्र शास्त्र। यौ. **पुरातत्वान्वेषण**–प्राचीन खोज।

पुरातत्ववेत्ता–संज्ञा, पु. (सं.) प्रस्त्र शास्त्र का ज्ञाता, प्राचीन काल सम्बन्धी विद्या का ज्ञाता।

पुरातन–वि. (सं.) पुराना, प्राचीन, पुराण। संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, परमेश्वर, पुराण पुरुष।

पुरातल–संज्ञा, पु. (सं.) रसातल।

पुरान–वि. दे. (सं. *पुराण*) पुराना, संज्ञा, पु. (दे.) पुराण।

पुराना–वि. दे. (सं. *पुराण*) अतीत, प्राचीन, बहुत दिनों या काल का पुरातन, जीर्ण, परिपक्व, बहुत दिनों तक के, अनुभव वाला पुराण। स्त्री. **पुरानी**। यौ. **पुरान-खुर्राट**–वृद्ध, बड़ा चालाक, अनुभवी। **पुराना-घाघ**–बड़ा अनुभवी या चालाक, **पुराना-चावल**। जिसका चलन न रहे, बहुत अगले समय का। क्रि. स. दे. (हि. *पूरना का प्रे. रूप*) पुजवाना, अनुसरण करना, भराना, पूरा (करना) कराना, पालन या अनुसरण कराना (करना)।

पुरारि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पुर राक्षस के शत्रु, महादेव जी, शिव जी।

पुराल†*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पलाल*) पयाल, पयार, पुआल।

पुरावृत्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इतिहास, प्राचीन या पुराना वृत्तान्त या हाल।

पुरि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पुरी, नगरी, शरीर, नदी, संज्ञा, पु. (सं.) राजा, संन्यासियों का एक भेद।

पुरिखा-पुरिपा*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुरुष*) पूर्वपुरुष, पूर्वज, पहले के लोग, बाप-दादा आदि, **पुरखा** (दे.), स्त्री. **पुनिखिन, पुरिपिन**।

पुरी—संज्ञा, स्त्री. (सं.) जगन्नाथ पुरी, छोटा शहर या नगर, नगरी, पुरुषोत्तम-धाम। (दे.) पूर्वी।

पुरीयत्—संज्ञा, पु. (सं.) आँत, नाड़ी, वह नाड़ी, जहाँ सोते समय मन स्थिर रहता है।

पुरीप-पुरीपा—संज्ञा, पु. (सं.) मल मैला, विष्ठा, गू।

पुरु—संज्ञा, पु. (सं.) अमर या देव-लोक, दैत्य, देह, शरीर, पराग, एक राजा जो ययाति का पुत्र था (पुरा.), पंजाब का राजा जो सिंकदर से लड़ा था (इति.)।

पुरुकुत्स—संज्ञा, पु. (सं.) मांधाता-पुत्र।

पुरुख*‡—संज्ञा, पु. (दे.) **पुरुष** (सं.)।

पुरुखा-पुरुखे*‡—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुरुष*) पूर्वज, पूर्व पुरुष, बाप-दादा आदि।

पुरुजित—संज्ञा, पु. (सं.) एक राजा जो अर्जुन का मामा या, विष्णु।

पुरुदस्म—संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु।

पुरुवा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पूर्वा*) पूर्व दिशा, पूर्व दिशा की वायु। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पूर्वा*) एक नक्षत्र, पूर्वावाड, पूर्वा; छोटी बस्ती।

पुरुभोजा—*‡—संज्ञा, पु. (सं.) भेंढ़, भेड़ा।

पुरुराज—संज्ञा, पु. (सं.) पुरूरवा।

पुरुष—संज्ञा, पु. (सं.) नर, आदमी, मनुष्य, आत्मा, जीव, ब्रह्म, विष्णु, सूर्य, शिव, सर्वनाम और क्रिया के रूप का वह भेद जिससे वक्ता, संबोध्य, या अन्य व्यक्ति का बोध हो, पुरुष तीन हैं:-(1) उत्तम कहने वाला) (2) संबोध्य—जिससे कहा जाय, (3) अन्य—जिसके विषय में कहा जाय (व्या.), मनुष्य का शरीर, पूर्वज, स्वामी, पति, प्रकृति-भिन्न एक चैतन्य, अपरिणामी, असंग और अकर्ता पदार्थ (सांख्य)।

पुरुषकार—वि. (सं.) पुरुष का कर्म, चेष्टा, पौरुष, शौर्य।

पुरुष-कुंजर—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पुरुष-पुंगव, पुरुष-श्रेष्ठ।

पुरुषत्व—संज्ञा, पु. (सं.) पुंसत्व, मनुष्य पन, मरदानगी, पौरुष, बल।

पुरुषत्वहीन—वि. यौ. (सं.) पुंसत्व रहित, नपुंसक, हिजड़ा।

पुरुषपुर—संज्ञा, पु. (सं.) प्राचीन गंगाधार की राजधानी, पेशावर नगर (वर्त.)।

पुरुषमेध—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नरवलि वाला यज्ञ, मनुष्य-यज्ञ, (वैदि.) उमृतक मनुष्य की दाह-क्रिया, दाह-कर्म।

पुरुषसिंह—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रेष्ठ या उत्तम या उद्योगी पुरुष।

पुरुषसूक्त—संज्ञा पु. यौ. (सं.) 'सहस्र शीर्षो' से प्रारम्भ होने वाला ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त।

पुरुषाद-पुरुषादक—संज्ञा, पु. (सं.) नरभक्षी, राक्षस।

पुरुषाधम—वि., सज्ञा, पु. यौ. (सं.) निकृष्ठ, नीच, पामर मनुष्य, **नराधम**।

पुरुषानुक्रम—संज्ञा, पु. यौ.(सं.) पुरखों की परम्परा जो क्रम से चली आई हो।

पुरुषारथ*—संज्ञा, पु. दे.(सं. *पुरुषार्थ*) पौरुष, उद्यम, मनुष्य का उद्योग या लक्ष्य, सामर्थ्य, पराक्रम।

पुरुषार्थ—संज्ञा, पु. यौ.(सं.) मनुष्य का लक्ष्य या उद्योग का विषय, पराक्रम, उद्यम, पौरुष, सामर्थ्य, शक्ति।

पुरुषार्थी—वि. (सं. *पुरुषार्थिन्*) उद्योगी, परिश्रमी, जलवान, पुरुषार्थ करने वाला।

पुरुषोत्तम—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष, विष्णु, श्रीकृष्ण, नारायण, जगन्नाथ (उड़ीसा), मल (अधिक) मास।

पुरुहुत—संज्ञा, पु. (सं.) सुरेश, इन्द्र।

पुररवा—संज्ञा, पु.(सं.) राजा इजा के पुत्र (ऋग्वेद) उर्वशी इनकी स्त्री थी, विश्वेदेव।

पुरैन-पुरैनि—संज्ञा, स्त्री. दे.(सं. *पुटकिनी*) कमल का पत्ता।

पुराचन—संज्ञा, पु. (सं.) दुर्योधन का मित्र और सेवक।

पुरोडाश—संज्ञा, पु. (सं.) हवि, होम-सामग्री, यज्ञभाग, सोमरस, और, **पुरोडास** (दे.), यज्ञाहुति के लिए कपाल में पकाई सवादि के चूर्ण की टिकिया।

पुरोधा—संज्ञा, पु. दे.(सं.*पुरोधस्*) पुरोहित।

पुरोवर्ती—वि. (सं. *पुरोवर्तिन्*) असगामी।

पुरोहित—संज्ञा, पु. (सं.) यज्ञादि गृह-धर्म या संस्कार कराने वाला, बालक उपरोहित, कर्मकांडी, **प्रोहित** (दे.)। स्त्री **पुरोहितानो**।

पुरोहिताई—संज्ञा, स्त्री. दे.(सं. *पुरोहित+आई* हि. प्रत्य.)

पुरोहित का कर्म।

पुर्जा–संज्ञा, पु॰ दे॰(फा॰ *पुरजा*) पुरजा।

पुर्त्तगाल–संज्ञा, पु॰ (अं॰ *पोटगाल*) महाद्वीप यूरुप के दक्षिण-पश्चिम में एक देश।

पुर्त्तगाली–वि॰ (हि॰ *पुर्त्तगाल*) पुर्त्तगाल का निवासी या सम्बन्धी, **पोचगीज** (अं॰)।

पुर्त्तगीज–वि॰ (अं॰ *पोर्टगीज*) पुर्त्तगाली।

पुर्सा–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *पुरुषमात्र*) पुरुष की लंबाई भर, 4 हाथ की नाप।

पुल–संज्ञा, पु॰ (फा॰) सेतु, नदी आदि के आर-पार जाने का मार्ग। **मु॰ किसी बात का पुल बाँधना**–झड़ी लगाना, बहुत अधिकता कर देना। **पुल टूटना**–अधिकता होना, जमवट लगना।

पुलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रेम, हर्षादि के उद्वेग से उत्पन्न रोमांच, देह-आवेश, याकूत, एक रख।

पुलकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पुलक+ना* हि॰ *प्रत्य.*) पुलकित या गद्गद होना, हर्षविश से प्रफुल्लित होना।

पुलकाई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पुलकना*) पुलकना का भाव, गद्गद होना।

पुलकालि, पुलकावलि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पुलकावली, प्रेमादि से रोमांचित होना।

पुलकित–वि॰ (सं॰) रोमांचित, गद्गद्।

पुलट†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पलट*) पलट जाना। यौ॰ **उलट-पुलट**।

पुलटिस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अं॰ *पोल्टिस*) पकाने के लिए फोड़े पर चढ़ाया दबा का गाड़ा लेप।

पुलपुलाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *अनु॰*) नर्म चीज को दबाना। वि॰ **पुलपुला**।

पुलपुलाहट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पुलपुलाना*) दबावट, दबनि।

पुलस्त्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रजापतियों और सप्तर्षियों में से एक ऋषि, रावण के दादा, ब्रह्मा के मानस-पुत्र, शिव।

पुलह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्म के मानस पुत्र और प्रजापति सप्तर्षि में से एक ऋषि, शिव।

पुलहना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पल्लव*) पलुहना, पल्लवित या हरा-भरा होना।

पुलाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अकरा नामक अज, भात, माँड़, पुलाव, पीच।

पुलाव–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पुलाक, मि॰* फा॰ *पुलाव*) मांस और चावल की खिचड़ी, माँसोदन; सब्जी और चावल का एक पकवान।

पुलिंद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक प्राचीन असभ्य जाति, इस जाति का देश (भारत)।

पुलिंदा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पूजा*) कागजों, कपड़ों का मोटा बंडल, गड्डी।

पुलिन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पानी से निकली भूमि, किनारा, तट, चर।

पुलिस–संज्ञा, स्त्री॰ (अं॰) प्रजा-रक्षक सिपाही या अफसर।

पुलोम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक दैत्य, इन्द्राणी का पिता।

पुलोमजा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हाथी, इन्द्राक्षी।

पुलोमही–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अफीम।

पुलोमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भृगुमुनि की स्त्री।

पुवा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *धूप*) मीठी पूड़ी।

पुश्त–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) पीठ, पृष्ठ, पीछा, पीढ़ी, शाखा, वंश-क्रम में पिता, पितामह पुत्र पौत्रादि का क्रम से स्थान। यौ॰ **पुश्त-दर-पुश्त**–कई पीढ़ियों तक। **पीढ़ी-दर-पीढ़ी। पुश्त-हा-पुश्त**–वंश परम्परा में।

पुश्तक–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰ *पुश्त*) दोलती, घोड़े आदि का पिछले पैरों से मारना।

पुश्तनामा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) पीढ़ी पत्र, वंशावली, कुरसी-नामा।

पुश्ता–संज्ञा, पु॰ (फा॰ *पुश्तः*) पुट्ठा, पुस्तक की जिल्द का पिछला चमड़ा, दृढ़ता या पानी की रोक के लिए दीवार से लगा मिट्टी या ईंट का ढालू टीला, बाँध, मेंड़।

पुश्ती–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) सहारा, थाम, टेक, पृष्ठ-रक्षा, बड़ा तकिया, पक्ष, सहायता।

पुश्तैनी–वि॰ (फा॰ *पुश्त*) कई पीढ़ियों से चला जाने वाला, पुराना, पुश्त-हा-पुश्त का, आगे पीढ़ियों तक जाने वाला।

पुष्कर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पानी, तालाब, कमल, हाथी की सूँड़ का अग्र भाग, वाण, आकाश, युद्ध, साँप, भाग, पोहकरमूल (औप.), चम्मच की कटोरी, सूर्य, सारस चिड़िया, एक दिग्गज, शंकर, विष्णु, 7 द्वीपों में से एक (पु॰), अजमेर के पास एक तीर्थ-स्थान। यौ॰ **पुष्कर-क्षेत्र**।

पुष्करणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटा तालाब।

पुष्करमूल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पोहकरमूल (औप॰)।

पुश्कल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भरत जी का पुत्र, अब मापने का मान (प्राचीन), चार ग्रास की भिक्षा, शिव। वि॰ अधिक, परिपूर्ण, श्रेष्ठ, पुनीत, उपस्थित, प्रचुर, बहुत।

पुष्ट–वि॰ (सं॰) मोटा-ताजा, तैयार, पाला-पोषा हुआ, बलवान, मोटा-ताजा करने वाला, बल बढ़ाने वाला, पक्का, दृढ़।

पुष्टई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुष्ट+ई हि॰ प्रत्य.*)। वल, वीर्य क्या पौरुष बढ़ाने वाली वस्तु या औषधि, पौष्टिक वस्तु।

पुष्टता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दृढ़ता, मज़बूती।

पुष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बढ़ती, बलिष्ठता, दृढ़ता, पोषण, संतति-वृद्धि, आत-समर्थन।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक–वि॰ सं॰ बल वीर्य या पौरुष की उत्पादक वस्तु या औषधि। **पुष्टिकारी**, स्त्री॰ **पुष्टिकारिणी**।

पुष्टिमार्ग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वैष्णव-भक्ति मार्ग, ईश्वर की कृपा (बल्लभाचार्य-श्रुत)।

पुष्प–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पौधों का फूल, मांस (वाम॰), ऋतु वाली स्त्री का रज, नेत्र रोग या फूली। **पुहूप** (दे॰)।

पुष्पक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फूल, आँख की फूली, कुबेर का विमान जिसे रावण ने छीना फिर रावण से राम ने छीन कर कुबेर को दे दिया।

पुष्प-चाप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।

पुष्पदंत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वायु-कोण का दिग्गज, शिव-सेवक एक गंधर्व।

पुष्पधन्वा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पुष्पधन्धन्*) कामदेव, मदन, मनोज, मनोभव।

पुष्पध्वज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कामदेव।

पुष्पपुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पटना (प्राची॰)।

पुष्पमित्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुष्यमित्र राजा।

पुष्परज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पुष्परजस्*) फूल की धूल, पराग।

पुष्पराग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुखराज मणि।

पुष्परेणु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पराग।

पुष्पवती–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) फूली हुई, फूल-युक्त, रजोवती, रजस्वला।

पुष्पवाटिका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) फुलवाड़ी।

पुष्पवाण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।

पुष्पवृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) फूलों की वर्षा।

पुष्पशर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।

पुष्पसार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फूलों का मूल तत्व, इतर।

पुष्पांजलि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) फूल भरी अँजुली, देवार्पित सुमनान्जलि।

पुष्पिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अध्याय के अन्तिम, समाप्ति-सूचक वाक्य जो इतिश्री से आरम्भ होते हैं।

पुष्पित–वि॰ (सं॰) विकसित, फूला हुआ।

पुष्पिताग्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अर्धसम छंद (पिं॰)।

पुष्पेषु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।

पुष्पोद्यान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फुलवाड़ी।

पुष्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पोषण, दृष्टि, सार वस्तु, वाण की आकृति वाला 8वाँ नक्षत्र (ज्यो॰) तिस्ण, चूस (पौष) मास।

पुष्यमित्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मौर्यों के बाद शुंगराज-वंश का स्थापक एक राजा (मगध)।

पुसाना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पीसना*) पूरा पड़ना, शोभा देना, उचित जान पड़ना, अच्छा लगना, बन पड़ना।

पुस्तक–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किताब, पोथी। स्त्री॰ अल्पा॰ –**पुस्तिका**।

पुस्तकाकार–वि॰ यो॰ (सं॰) **किताबनुगा** (फ़ा॰) पोथी के रूप या वनावट का।

पुस्तकालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुतुवखाना (फा॰), लाईब्रेरी (अं॰) किताबों के रखने का घर, पुस्तकों का संग्रहालय।

पुहकर-पुहुकर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुष्कर*) तालाव, जलाशय।

पुहप-पुहुप*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) अव्य फल।

पुहमी-पुहुमी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भूमि*) भूमि, पृथ्वी।

पुहुपराग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुष्पराग*) पुष्पराग, पुखराज।

पुहुपरेनु*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पुष्परेणु*) पराग।

पूँगफल-पूँगीफल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पूंगीफल*) सुपारी, **पूँगीफल, पूँगफल**।

पूँगी––संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक बाँसुरी, पोंगी।

पूँछ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुच्छ*) पुच्छ, दुम (उ॰), लांगूल, अंतिम भाग, पिछलग्गू, पुछल्ला, उपाधि (व्यंग्य)।

पूँछताछ-पूछपाछ–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **पूछताछ**, जाँच पड़ताल, तहकीकात, दर्याफ्त।

पूँछना-पूछना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पृच्छण*) प्रश्न करना, दर्याफ्त करना, जिज्ञासा करना, पोंछना, साफ करना।

पूँजी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुख*) धन, संपत्ति, जमा-जमा (दे॰) व्यापार में लगा धन, किसी विषय में योग्यता, समूह।

पूँजीदार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पूँजी+दार फ़ा.*) धनवान, रुपये वाला, महाजन।

पूँजीपति–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *पूँजी+पति सं.*) धनवान, रुपए वाला, महाजन, पूँजी रखने या लगाने वाला, पूँजीदार।

पूँठ‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पृष्ठ*) पीठ, पृष्ठ।

पूआ-पुआ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *धूप*) मीठी पूड़ी, मालपुआ, **अपूप** (सं.)।

पूखन–संज्ञा, पु॰ (सं.) सुपारी (वृक्ष या फल) समूह, राशि, ढेर छंद।

पूगना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पूजना*) पूजना, पूर्ण या पूरा होना, मिलना, पास जाना।

पूगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूगफल*) सुपारी।

पूछ–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पूछना*) खोज, तलाश, जिज्ञासा, आदर, चाह, आवश्यकता।

पूछताछ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पूछना*) जिज्ञासा, तलाश, खोज, तहकीकात, जाँच।

पूछना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पृच्छण*) टोकना, प्रश्न या जिज्ञासा करना, खोज-खबर लेना, दरियाफ्त करना, आदर या सत्कार करना, ध्यान देना, गुण या मूल्य जानना। **मु॰ बात न पूछना**–आदर सत्कार न करना, तुच्छ जान ध्यान न देना। यौ॰ संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) **पूछपाछ-पूछताछ**।

पूछरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *पूछ*) पूँछ।

पूछाताछी-पूछापाछी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) पूछताछ, पूछपाछ।

पूजक–संज्ञा, पु॰ (सं.) पूजा करने वाला, पुजारी।

पूजन–संज्ञा, पु॰ (सं.) अर्चन, चन्दन, सत्कार, आराधना, सम्मान, देव-सेवा। (वि॰ **पूजक, पूजनीय, पूज्य, पूतिजतव्य**)।

पूजना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पूजन*) देव-देवी की प्रसन्नतार्थ अनुष्ठान करना, आराधना या अर्चन करना, सम्मान या आदर करना, रिश्वत या धूल देना (व्यंग्य)। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पूर्यते*) पूर्ण या पूरा होना, भरना, चुकता होना, पीसना, पटना, समाप्त होना।

पूजनीय–वि॰ (सं.) अर्चना या पूजने योग्य, दंडनीय, आदरणीय, सत्कार-योग्य, पूज्य।

पूजमान–वि॰ (दे.) पूज्य (सं.)।

पूज्य–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) अर्चन, आराधन, देवी-देवता के प्रति भक्तिमय समर्पण का भाव प्रगट करने का कार्य, अर्चा, आदर सत्कार, सम्मान, धर्मार्थ देवादि पर फलफूलादि चढ़ाना या रखना, घूस, रिश्वत, अंकोर दंड, ताड़न, प्रसन्तार्थ कुछ देना।

पूजित–वि॰ (सं.) अर्चित, आराधित, पूजा किया हुआ। स्त्री **पूजिता**।

पूज्यपाद–वि॰ यौ॰ (सं.) अत्यन्त मान्य या पूज्य जिसके पै पूजने योग्य हों, पिता गुरु आदि।

पूठ–*†संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) पृष्ठ (सं.) पीठ।

पूठ-पूठा–संज्ञा, पु॰ (दे.) पृष्ठ (सं.) पुट्ठा, गाता, जिल्द।

पूड़ा–संज्ञा, पु॰ (दे.) (सं॰ *पूप*) पूआ, पुआ, माजपुआ।

पूड़ा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *धूलिका*) पूरी।

पूर्णा-पूनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) रुई की पहल, पानी (आ.)

पूत–वि॰ (सं.) शुद्ध, पावन, शुचि। संज्ञा पु॰ (सं.) शं सत्य, श्वेत कुश, तिल का पेड़, पलास। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पुत्र*) पुत्र, लड़का, बेटा।

पूतना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) एक राक्षसी जिसे कंस ने बा कृष्ण को मारने के लिए भेजा था। कृष्ण को इस विष-लिप्त स्तन पिलाए और कृष्ण ने दूध पीते-पी इसके प्राण खींच लिए, बालरोग या ग्रह।

पूतनारि-पूतनारी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) श्री कृष्ण जी पूत के शत्रु या बैरी। यौ॰ संज्ञा, स्त्री॰ (हि.) शुद्ध श्री

पूतनासूदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) पूतना के मारने व कृष्ण।

पूतरा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुत्रक*) पुत्र, पुतला। स्त्री॰ **पूत**

पूतरी-पूतली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पुत्रिका*) पुतली, पुत्त **पुतरी**।

पूति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) दुर्गंधि, पवित्रता।

पूतिकणक–संज्ञा, पु॰ (सं.) कान का रोग, कान पकना (वै

पूतिगंधि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) दुर्गन्धि।

पूती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *पात–गड्ढा*) गाँठ रूपी जड़, लहसुन, प्य

पूतीकृत–वि॰ यौ॰ (सं.) पवित्रीकृत, शोधित, रक्षित।

पून–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुण्य*) पुण्य, दान। बाघ॰। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पूर्ण*) पूर्ण।

पूनव, पूनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूर्णिका*) पूर्णिमा, पूर्णमासी **पूनिउँ** (आ॰)।

पूनी-पोनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पिंजका*) धुनी हुई रुई की मोटी बत्ती जिससे चरखे पर सूत काता जाता है।

पूना, पूनौ†*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूर्णिमा*) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनम।

पूप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुआ। यौ॰ **दंडपूप**–एक न्याय (तर्क॰)।

पूय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पीव, मवाद।

पूर–वि॰ दे॰ (सं॰ *पूर्ण*) पूर्ण, किसी पकवान के भीतर भरने का मसाला या अभ्य पदार्थ, जेसे गोझिया में। वि॰ (सं॰) जलसमूह, जल का प्रवाह, प्रवर्धन, जलधारा,

पूरक–वि॰ (सं॰) पूरा करने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्राणायाम की प्रथम विधि जिसमें श्वास को भीतर की ओर बलपूर्वक खींचते हैं (*विलो॰* **रेचक**) गुणक अंक (गणि॰) स्वास छोड़ना, विजोरा नीबू, मृत्यु तिथि से दस दिन तक मृत व्यक्ति के लिए दिए जाने वाले 10 पिंड (हिन्दू)।

पूरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) (विलो॰ झरण) पूरा या समाप्त करना, भरना, अंकों का गुणा करना, पूरक या दशाह पिंड वृष्टि, सागर। वि॰ (दे॰) पूर्ण (सं॰), वि॰ (सं॰) पूरा करने वाला, पूरक। वि॰ **पूरणीय**।

पूरन–* वि॰ दे॰ (सं॰ *पूर्ण*) पूर्ण, पूरा।

पूरनपरब–*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पूर्ण+पर्वन्*) पूर्णमासी, अमावस्या आदि, पुरा पर्व, त्योहार।

पूरनपुरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूर्ण+पूलिका पूरी हि॰*) मीठी कचौरी।

पूरनमासी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूर्णमासी*) पूर्णमासी, पूनो।

पूरना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पूरण*) पूर्ति या पूरा करना, कमी या त्रुटि को पूर्ण करना, ढाँकना, (इच्छा) सफल या सिद्ध करना, शुभावसरों पर आटे या अबीर से चौक बनाना देव-पूजन के लिए वर्गादि बनाना, फैलाना या बटना, जैसे–ढोरा पूरना, बजाना, फूँकना, जैसे–शंख पूरना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *पूर्ण*) भर जाना, पूरा हो जाना, गढ़े आदि को भरना।

पूरब–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पूर्व*) प्राची, पूर्व, सूर्योदय की पूर्व दिशा। विलो॰ **पच्छिम**–*†–वि॰, क्रि॰ वि॰–पहले का, अगला, पुराना, पहले, आगे।

पूरबल, पुरविले*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पूर्व+ल* हि॰ प्रत्य॰) प्राचीन काल, पुराना समय, पूर्व या पहला जन्म।

पूरबला–वि॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *पूर्व+ला प्रत्य॰*) पुराने समय का, पूर्व जन्म का, प्राचीन, पुराना। स्त्री॰ **पुरवली**।

पुरबी–वि॰ दे॰ (सं॰ *पूर्वीय*) पूर्व दिशा या पूर्व का, दिशा या पूर्व सम्बन्धी। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पूर्वीय*) पूर्व देश का एक चावल या तम्माखू, एक राग-धुन (संगी॰)।

पूरा–वि॰ पु॰ दे॰ (पु॰ *पूर्ण*) भरा, परिपूर्ण, समग्र, पूर्ण, भरपूर, काफी, यथेष्ट, समूचा, सम्पन्न। (स्त्री॰ **पूरी**)। **मु॰ किसी बात का पूरा**–जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या बहुत हो, दृढ़, मजबूत। **मु॰ किसी का पूरा पड़ना**–काम पूर्ण हो जाना और सामान न घटना, पूर्णकृत या पूर्णतया संपादित, संपूर्ण। **मु॰ कोई काम पूरा उतरना**–यथेष्ट या यथायोग्य रूप में होना, भली-भाँति होना। **बात का पूरा उतरना**–सत्य या टीक होना। **दिन पूरे करना**–किसी भाँति कालक्षेप करना, वक्त, विताना, समय विताना, काल काटना, पूरे दिनों से होना (स्त्री का), आसन्न प्रसवा होना, गर्भ के समय का पूरा होना। **दिन पूरे होना**–अंतकाल का समय आना।

गाँठ का पूरा–धनी। लो॰–**"आँख का अन्धा गाँठ का पूरा।"**

पूरित–वि॰ (सं॰) भरा हुआ, पूरा, पूर्ण, गुणा किया हुआ, सम्पन्न, तृप्त।

पूरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पूलिका*) खौलते घी में पकी रोटी, पूड़ी, शोख आदि के मुँह का गोल चमड़ा, आस का छोटा पूरा। वि॰ स्त्री॰ (दे॰) पूर्ण। पु॰ **पुरा**।

पूर्ण–वि॰ (सं॰) भरा हुआ, पूरा, इच्छारहित पूर्णकाम, तृप्त, यथेष्ठ, भरपूर, पर्याप्त, अखंडित, समस्त सिद्ध, समाप्त, सफल, **पूरण, पूरन** (दे॰)। यो॰ **पूर्णकाम**–जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो, **पूर्ण-मनोरथ**।

पूर्ण कुंभ–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰) जल भरा घड़ा, मंगल-घट, पूरा कलस।

पूर्णचन्द्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) पूर्णिमा का पूरा चन्द्रमा। "पूर्ण

चन्द्र निभानना"।

पूर्णतः पूर्णतया–क्रि॰ वि॰ (सं॰) पूरी तरह से, पूरी तौर पर, पूर्ण रूप से।

पूर्णता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूर्ण होने का भाव, पूरा होना। **पूर्णत्व**।

पूर्णपात्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी वस्तु से पूर्णतया भरा हुआ बर्तन, हवन-सामग्री से भरा बर्तन।

पूर्ण-प्रश–वि॰ यौ॰ (सं॰ पूरा ज्ञानी। संज्ञा, पु॰ 'पूर्णप्रज्ञ'-दर्शन के निर्माता अध्याचार्य।

पूर्णप्रश-दर्शन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वेदान्त दर्शन के सूत्रों के आधार पर बना हुआ एक दर्शन शास्त्र विशेष।

पूर्णभूत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह भूतकाल जिसे बीते बहुत समय हो चुका हो (व्या॰)।

पूर्णमासी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पूर्णिमा, चाँद मास का अंतिम दिन जब चन्द्रमा सब कलाओं से युक्त होता है। **पूरनमासी, पूनो, पुन्नवासा** (दे॰9।

पूर्ण विराम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वाक्य के पूर्ण होने का चिन्ह (लिपि)।

पूर्णतिथि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, अमावस्या तिथियाँ (ज्यो॰)।

पूर्णायु–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *पूर्णयुस्*) पूरी आयु, सौ वर्ष की आयु। वि॰ सौ वर्ष पर्यंत जीने वाला।

पूर्णावतार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ईश्वर या देवता की षोड्स कला-युक्त पूरा अवतार (श्री कृष्ण)।

पूर्णाहुति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) होम में अंतिम आहुति, किसी काम का अंतिम कृत्य।

पूर्णिमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूर्णमासी।

पूर्णोपमा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमान, उपमेय, वाचक, और धर्म चारों अंग प्रगट हों।

पूर्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुआँ, बावली, देव मन्दिर, बाग, सड़क, धर्मशाला आदि का वन-वाना, पालन। वि॰ पूरित, आच्छादित।

पूर्वविभाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सड़क आदि के बनवाने का विभाग।

पूर्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूरापन, पूर्णता, भरण, गुणन, पूरण, *कार्य का पूर्ण करना, समाप्ति, कूपादि का उत्सर्ग,* कमी के पूरा करने की क्रिया।

पूर्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पूरब (दे॰) प्राचीदिशा, सूर्योदय की दिशा, (विलो॰ **पश्चिम**)। वि॰ स॰) अगला या प्रथम का, आगे का, पिछला, पुराना। क्रि॰ वि॰ पहले, प्रथम। वि॰ यौ॰ **पूर्ववर्ती**। वि॰ (सं॰) **पूर्वीय**।

पूर्वक–कि॰ वि॰ (सं॰) सहित, युक्त।

पूर्वकाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्राचीन काल। वि॰ **पूर्वकालीन**।

पूर्वकालिक–वि॰ यौ॰ (सं॰) पूर्वकाल सम्बन्धी, पूर्व काल का उत्पन्न, पहले समय का।

पूर्वकालिक-क्रिया–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अपूर्ण क्रिया का वह रूप जिसे मुख्य क्रिया के पूर्ववर्ती काल ज्ञात हो, इसका चिन्ह के, कर, या कर के है (ब्र॰ भा॰ में धातु को इकारान्त करने से) कभी-कभी धातु ही इसका कार्य करता है (व्या॰)।

पूर्वज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पूर्व पुरुष, जो प्रथम जन्मा हो, जैसे–बड़ा भाई, पिता, दादा, परदादा आदि, **पुरखा** (दे॰)।

पूर्वजन्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पूर्व जन्मन्*) पहले या पीछे का जन्म, जन्मान्तर।

पूर्व दिन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पहले का दिन, बीता दिन।

पूर्व देश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्राची दिशा का देश।

पूर्व पक्ष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शंका, प्रश्न, विवाद का प्रथम पक्ष (न्या॰) मुदई का दावा, कृष्ण पक्ष (अँधेरा पाख)।

पूर्वपक्षी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पूर्व पक्षिन्*) विवाद में प्रथम अपना पक्ष रखने वाला, कर्ता, मुदई, दावादार। विलो॰ परपक्ष। वि॰ **पूर्वपक्षीय, पूर्वपक्षी**।

पूर्व पुरुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पिता, पितामह, प्रपितामह आदि, प्रथम के लोग, पूर्वज, पुरखा।

पूर्व-फाल्गुनी, पूर्वाफाल्गुनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 27 नक्षत्रों में से 11वाँ नक्षत्र।

पूर्व भाद्रपद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 27 नक्षत्रों में से 25वाँ नक्षत्र (ज्यो॰)।

पूर्व मीमांसा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) महर्षि जैमिनि कृत एक दर्शन (शास्त्र) जिसमें कर्मकाण्ड का वर्णन है। (विलो॰ **उत्तर मीमांसा**)।

पूर्व-याम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रथम या पहला पहर।

पूर्व लिखित–वि॰ यौ॰ (सं॰) पूर्वोल्लिखित, प्रथम का लिखा हुआ, पूर्व-कथित, पूर्वोक्त।

पूर्वरंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाटकारंभ से पूर्व विघ्न-शान्ति के लिए की गई स्तुति या वन्दना, दर्शकों को सजग करने के लिए गान।

पूर्वराग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) संयोग से पूर्व नायक-नायिका की विशेष प्रेमावस्था, प्रथम प्रेम, प्रथमानुराग, पहला अनुराग, **पूर्वानुराग** (काव्य॰)।

पूर्व-रूप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आगम-सूचक चिन्ह या लक्षण, आसार, किसी वस्तु का पूर्व आकार या रूप, उपस्थित होने से पूर्व प्रगट होने वाला, वस्तु-लक्षण, एक अर्थालंकार जो किसी वस्तु के रूपान्तर के बाद उसका प्राथमिक रूप सूचित करे।

पूर्ववत्–क्रि॰ वि॰ (सं॰) प्रथम के तुल्य, पहले की तरह, **यथापूर्व**। संज्ञा, पु॰ वह अनुमान जो कारण के देखने से कार्य के विषय में उससे प्रथम ही किया जाय।

पूर्ववर्ती–वि॰ (सं॰ *पूर्व बर्तिन्*) प्रथम का, जो प्रथम रह चुका हो, पूर्व सम्बन्धी।

पूर्ववायु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुरवा हवा, पुरवैया, पुरवाई, पूर्वीय वायु (सं॰)।

पूर्ववृत्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इतिहास, पहिले का हाल।

पूर्वा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूर्व दिशा, एक नक्षत्र। वि॰ पूर्वज, पूर्व पुरुष।

पूर्वानुराग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी के गुण-लक्षण, चित्र-दर्शन या रूप देखने से उत्पन्न प्रेम, पूर्वराग, प्रेम की प्रथम जागृति, **पूर्वानुरक्ति**।

पूर्वापर–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (सं॰) आगे-पीछे। वि॰ आगे-पीछे का, पिछला-अगला।

पूर्वापर्य्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पूर्वापर का भाग, आगा-पीछा।

पूर्वाफाल्गुनी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) 27 नक्षत्रों में से 11वाँ नक्षत्र।

पूर्वाभाद्रपद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) 27 नक्षत्रों में से 25वाँ नक्षत्र।

पूर्वाभिमुख–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पूर्व दिशा की ओर मुख। वि॰ **पूर्वाभिमुखी**।

पूर्वाभ्यास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रथम या पहले का अभ्यास, पहले की बान।

पूर्वार्द्ध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आरम्भ या आदि (प्रथम या पहले) का आधा भाग। (विलो॰ **पदार्थ, उत्तराध**)।

पूर्वावधि–वि॰ यौ॰ (सं॰) पूर्वकालावधि, चिरकाल पर्यन्त।

पूर्वावस्था–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रथम या पहले की अवस्था या दशा।

पूर्वाषाढ़ा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 27 नक्षत्रों में से 20वाँ नक्षत्र।

पूर्व-संध्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रभात।

पूर्वाह्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सवेरे से दो पहर तक का समय (*विलो॰* पराह्न)।

पूर्वी–वि॰ दे॰ (सं॰ *पूर्वीय*) पूरब का, पूर्व दिशा सम्बन्धी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) पूर्व देश का चावल, या तम्बाकू, एक राग-धुन (संगी॰)।

पूर्वोक्ति–वि॰ यौ॰ (सं॰) प्रथम कथित, पहले का कहा हुआ, मशहूर (फ़ा॰)।

पूला, पूरा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *पूलक*) घास आदि का बँधा हुआ मुट्ठा। स्त्री॰ अरूपा॰ **पूखी**।

पृष–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पौप) पूस या पौष मास।

पृषण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य, पशुओं का पालन-पोषण करने वाला एक देवता (वेद), 12 आदित्यों में से एक।

पृषा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य, पोषक, **पूषण**।

पूस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पौष*) अगहन के बाद का चांद्र मास, पौष।

पृक्का–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) असवरग।

पृक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अन्न, अनाज।

पृच्छक–वि॰ (सं॰) प्रश्न-कर्त्ता, पूछने-वाला, जिज्ञासु।

पृच्छा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जिज्ञासा, प्रश्न, पूर्व पक्ष।

पृतना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) युद्ध, सेना, फौज का एक भाग जिस में 243 हाथी, इतने ही रथ, 729 घोड़े और 1215 पैदल सैनिक रहते हैं।

पृथक्–वि॰ (सं॰) विलग, जुदा, भिन्न, पृथक्। (संज्ञा, स्त्री॰ **पृथक्ता**)

पृथक्करण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भिन्न-भिन्न या अलग-अलग करने का कार्य।

पृथक्क्षेत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भिन्न वर्ग की स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

पृथगात्मा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वैरागय, विवेक, विराग।

पृथग्जन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) साधारण या अन्य लोग, मूर्ख, नीच, पापी, प्राकृत।

पृथग्विधि–अल्व॰ *यौ॰* (सं॰) नाना प्रकार, अनेक प्रकार, विविध, बहुरूप।

पृथवी, पृथिवी पृथ्वी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भूमि, मेदिनी, वसुआ, अवनि, **बसुन्धरा**।

पृथा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कुंतिभोज की कन्या कुंती। संज्ञा, पु॰ (अपत्य॰ सं॰) **पाथ**।

पृथिवी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भूमि, धरती।

पृथिवीश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा।

पृथु–वि॰ (सं॰) विस्तृत, महान्, चौड़ा, विशाल, असंख्य, चतुर। संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु, अग्नि, शिव, राजा वेणु का पुत्र एक विश्वेदेव। वि॰ अधिक यशी।

पृथुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिउड़ा।

पृथुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चौड़ाई, विस्तार।

पृथुमा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पृथ+रोमन्*) मछली, बड़े रोवों वाला। वि॰ (सं॰) मोटा, वड़ा, अति विस्तृत।

पृथुशिवा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लौना वृक्ष।

पृथूदक–संना, पु॰ (सं॰) एक तीर्थ।

पृथूदर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भेड़, भेड़ा। वि॰ यौ॰ (सं॰) बड़े पेट वाला।

पृथ्वी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) इला, अवनि, धरा, सौर जगत् में हमारा ग्रह धरती, भूमि, गंध गुण प्रधान (रूप, रस, गंध, स्पर्श गुण युक्त पाँच तत्वों में से अंतिम तत्व, भूमि का मिट्टी-पत्थर वाला ऊपरी ठोस भाग, मिट्टी, 17 वर्षों का एक वृत्त (पिं॰) **मु॰** देखो "जमीन"।

पृथ्वीका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बड़ी इलायची, स्याह जीरा, कलौंजी।

पृथ्वीतल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धरातल, भूमि का ऊपरी तल, जमीन की सतह, संसार, भूमंडल, भूतल।

पृथ्वीनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा।

पृथ्वीपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा।

पृथ्वीपाल, पृथ्वीपालक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा।

पृथ्वीराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भारत का अंतिम वीर राजपूत राजा। (12वीं शताब्दी)।

पृश्नि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मुफ्त राजा की रानी, चितकबरी गाय, किरण, **पिथपन या पिठवान** (औप॰)।

पृषत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बिन्दु, कल्प, श्वेत बिन्दु-युक्त मृग, एक राजा (पुरा॰)।

पृथक्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वाण, तीर, वार।

पृषदश्व–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृपत् अश्व, पवन वायु, एक राजा (पुरा॰)।

पृष्ट–वि॰ (सं॰) पूछा हुआ, प्रश्न किया।

पृष्ठ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **पीठ** (दे॰) किसी पदार्थ का ऊपरी तल, पीछे का अंग या भाग, किताव के पन्ने (पन्ने) के एक ओर का तल, सफ़ा, पन्ना, पत्रा।

पृष्ठ ग्रंथि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुब्ज, कुबड़ा।

पृष्ठता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पीठ की ओर।

पृष्ठपोषक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सहायता या मदद करने वाला, सहायक, पीठ ठोकने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) पृष्ट पोषण।

पृष्ठ-भाग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) पीठ, पुश्त, पीछे का खंड या भाग, पिछला हिस्सा।

पृष्ठ-वंश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पीठ या रीढ़ की हड्डी, रीढ़, मेरू-दंड।

पृष्ठ व्रण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पीठ का फोड़ा या घाव।

पृष्ठास्थि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पीठ की हड्डी, मेरुदंड, रीढ़।

पेंग, पैंग–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*पटेंग*) झूलते समय झूले का इधर-उधर जाना, झूले का हिलना, एक पक्षी। पोंग (दे॰)। **मु॰ पेंग मारना**–झूले को जोर से चलाना।

पेंठ, पैंठ–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हाट, बाजार, मंडी।

पेंडुकी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पंडुक*) पंडुक चिड़िया, फाख्ता (फ़ा॰ *पुदुकी*), सुनारों की फुंकनी। संज्ञा, स्त्री॰ (प्रान्ती॰) गुझिया। **लो॰ बाप न मारी पेढुंकी बेटा तीरंदाज**।

पेंदा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पिंड) तला, तल, नीचे का भाग जिस पर कोई वस्तु ठहरे। स्त्री॰ *अल्पा॰* **पैंदी**।

पेई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पिटारी, पेटी।

पेउसरी, पेउसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पीयूष*) इंदर (*प्रान्ती॰*) एक तरह का पकवान, **पेवस** (आ॰) व्यायी गाय-भैंस

के दूध की पनीर।

पेखक*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रेक्षक*) दर्शक, देखने वाला, स्वांग बनाने वाला, क्रीड़ा या खेल तमाशा करने वाला।

पेखना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रेक्षण*) देखना, स्वाँग बनाना, क्रीड़ा या खेल-तमाशा करना। "जग पेखन तुम देखनहारे"–रामा॰। क्रि॰ स॰ **पेखाना,** प्रे॰ रूप–**पेखवाना**।

पेखनिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पेखना*) स्वांग करने वाला, बहुरूपिया, दर्शक।

पैखवैया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पेखना+वैया प्रत्य॰*) देखने वाला, देखवैया, प्रेक्षक।

पेखित–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रेषित*) भेजा हुआ।

पेखिय–क्रि॰ दे॰ (हि॰ *पेखना*) देखिए।

पेच-पेंच–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) चक्कर, घुमाव, झंझट, बखेड़ा, उलझन, झगड़ा, चालाकी, धूर्तता, पगड़ी की लपेट, कल, मशीन, यन्त्र, मशीन का पुरजा, आधी दूर तक लकीर या चक्करदार काँटा या कील, स्क्रू (अं॰) उड़ती हुई पतंगों की डोरियों की परस्पर की उलझन, कुश्ती में दूसरे के पछाड़ने की युक्ति, तदवीर, तरकीब, टोपी या पगड़ी के आगे लगाने का सिरपेंच (आभूषण), गोशपेंश (गर्णभूपण)। यौ॰ **दाँव-पेंच**। **मु॰ पेंच घुमाना**–किसी के विचार बदलने की युक्ति करना। **पेंच की बात**–गूढ़ या मर्म की बात। वि॰ पेंखदार, **पेंचीदा, पेंचीला**।

पेचक–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) बटे तागे की अच्छी या गुच्छी, गोली। संज्ञा, पु॰ (सं॰) (स्त्री॰ **पेचिका**), जूँ, उल्लू पक्षी, बादल, पंतग।

पेचकश-पेंचकश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) कीलों के जड़ने या उखाड़ने का यन्त्र, (बढ़ई, लोहार), शीशी या बोतल क काग निकालने का घुमावदार यन्त्र।

पेच-ताब–संज्ञा, पु॰ (फा॰) मन के भीतर ही रहने वाला क्रोध।

पेचदार–वि॰ (फा॰) **पेंचीला,** जिसमें पेंच या कल हो।

पेचवान–संज्ञा, पु॰ (फा॰) बड़ा हुक्का, या उसकी बड़ी लम्बी लचीली सटक।

पेचा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पेचक*) उल्लू पक्षी। स्त्री॰ **पेची**।

पेचिश–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) आमातिसार, मरोड़, आँव के दस्तों की बीमारी या पीड़ा।

पेचीदा–वि॰ (फ़ा॰) पेंचदार, कठिन, चक्करदार, जटिल, टेढ़ा-मेढ़ा। संज्ञा, स्त्री॰ **पेचीदगा**।

पेचीला–वि॰ (फ़ा॰) पेंचदार, पेंचीदा।

पेट–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पेट=थैला*) उदर, जठर, देह में भोजन पचने का थैला। **मु॰ पेट आना**–पेट चलना, अतिसार होना। **पेट काटना**–बचत के लिए कम खाना। **पेट का धंधा**–जीविका का उपाय या काम। **पेट का (में) पानी न पचना**–सह न सकना, गुम बात प्रगट कर देना। **पेट का हलका**–ओछे स्वभाव या क्षुद्र प्रकृति का। **पेट का पानी न हिलना**–बेकार बैठा रहना, हिलना-हुलना नहीं। **पेट का काला (मैला)**–धोखा देने वाला, कपटी, नीच हृदय वाला। **पेट की आग**–भूख। **पेट की बात**–छिपा भेद, भेद की बात, मर्म, सच्चा रहस्य, इरादा। **पेट को दुख देना (दुखाना)**–पेट भरना खाना। **पेट की आग**–भूख। **पेट की आग बुझाना**–भोजन करना, खाना। **पेट गड़बड़ाना**–पेट में पीड़ा या दर्द होना। **पेट गिरना (गिराना)**–गर्भपात या गुप्त भेद ज़ाहिर होना (करना)। **पेट खोलना**–पेट की बात बताना। **पेट चलना**–अतिसार होना, दस्त आना, रोज़ी चलना, निर्वाह होना। **पेट जलना**–बहुत भूख लगना। **पेट दिखाना**–दीनता प्रगट करना। **पेट दुखना**–पेट में दर्द होना। **पेट पालना**–किसी प्रकार निर्वाह करना, दिन काटना। **पेट का पीठ से लगना (पेट-पीठ एक होना)**–दुर्बल या पतला होना, भूखा होना। **पेट पोंछना**–सबसे अन्तिम संतान होना। **पेट पोंसू**–पेटू, खाऊ। **पेट फूलना**–गर्भवती होना (स्त्री के लिए), बहुत उत्सुकता या हँसी के कारण पेट में हवा भर जाना, अफरा या पेट में वायु का प्रकोप हो जाना। **पेट (बढ़ना) बढ़ाना (पेट बड़ा होना)**–अति लालच या लोभ (होना) करना। **पेट बाँधना**–कम खाना। **पेट भरना**–अधा जाना, तृप्त होना, रूखा-सूखा भोजन करना, आवश्यकता न होना, अधिक वेस्वाद लाना।। **पेट में दाढ़ी होना**–लड़कपन ही में बहुत चतुर होना। **पेट में पानी होना**–भोजन का ठीक पाचन न होना, घबराहट महसूस करना। **पेट में पाँव होना**–बहुत कपटी या छली होना, चालाक या चालबाज होना (**कोई**

वस्तु)। पेट में पैठना–बड़े मित्र बनना, भेद लेना। **पेट में रखना**–खा लेना, किसी बात का गुप्त (अपने ही अन्दर) रखना। **पेट से न निकालना**–न कहना। **पेट में लेना**–सहना, झेलना। **पेट लग जाना**–भूखों मरना। **पेट लग रहना**–भूखे रहना। **पेट से सीखना**–स्वभावतः सीख जाना। **पेट हड़बड़ाना**–पेट रोग होना। संज्ञा, पु. (दे.) गर्भ, हमल। **लो. "दाई से पेट छिपाना"– पेट गिरना (गिराना)**–गर्भपात होना या कराना (करना)। **मु. पेट रहना**–गर्भ या हमल रहना। वि. **पेट वाली**–गर्भवती। **मु. पेट से होना (पेट होना)**–गर्भवती होना। **मु. पेट में क्या है**–मन में क्या है। **पेट देखना**–मन देखना। **मु. पेट गुड़गुड़ाना**–वायु-दोष से पेट में शब्द होना। **मु. पेट में घुसना**–गुप्त भेद जानने को मेल बढ़ाना। **पेट में बैठना या पैठना**–गुप्त भेद जान लेना। **मु. पेट के लिए (कारण)** रोजी या जीविका के अर्थ या हेतु।

पेटक–संज्ञा, पु. (सं.) मंजूषा, पिटारा, समूह, राशि।

पेटका, पेटकैंया–क्रि. वि. दे. (हि. *पेट+का, कैया प्रत्य.*) पेट के बल।

पेटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पेट*) बीच या मध्य का भाग, ब्यौरा, पूर्ण विवरण, सीमा, घेरा, वृत्त, भेद, मर्म। **मु. पेटा न मिलना (पाना)**–भेद न जान पाना। **बड़े पेट का होना**–वड़े घेरे का था सामर्थ्य का होना, धनी होना।

पेटागि–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. पेट+अग्नि) भूख, जठराग्नि।

पेटारा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पिटारा*) पिटारा, **पेटार** (आ.)।

पेटार्थी, पेटार्थ–वि. दे. (सं. *पेट+अर्थिन्*) जो व्यक्ति केवल पेट भरने को ही सब कुछ जानता हो, पेटू, भुक्खड़।

पेटिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पेटी, संदूक, पिटारी।

पेटिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पेट+इया प्रत्य.*) प्रतिदिन का भोजन या भोजन की सामग्री।

पेटी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पेटिका*) छोटी संदूक, पिटारी, कमरबन्द, कमरकस, चपरास, छाती और पेटू का मध्यवर्ती भाग, तोंद, नाइयों का छुरा आदि रखने की किसवत। **मु. पेटी पड़ना**–तोंद निकलना।

पेटू–वि. दे. (हि. *पेट*) अधिक खाने वाला, बड़ा भुक्खड़, पेटार्थी।

पेठा–संज्ञा, पु. (दे.) सफेद कुम्हड़ा, उससे बनी मिठाई।

पेड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पिंड*) वृक्ष, तरु।

पेड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पिंड*) खोया की कड़ी गोल चिपटी मिठाई, आटे की लोई।

पेड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पिंड*) पेड़ का धड़ या तना, कांड, पान का पुराना पौधा या उसका पान, प्रति वृक्ष पर लगाया हुआ कर या महसूल, मनुष्य का धड़।

पेड़ु–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पेट*) उपस्थ, गर्भाशय, नाभि और लिंग के बीच का स्थान।

पेन्हाना-पिन्हाना–क्रि. स. दे. (हि. *पहनाना*) पहिनाना। क्रि. अ. दे. (सं. *पयः स्रवन*) गाय आदि के थनों में दुहते समय दूध उतरना, **पल्हाना** (ग्रा.)।

प्रेम*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रेम*) प्रेम।

प्रेमी–वि. दे. (सं. *प्रेमिन्*) प्रेमी।

पेय–वि. (सं.) पीने के योग्य। संज्ञा, पु. (सं.) पीने की चीज, दूध, पानी आदि।

पेरना–क्रि. स. दे. (सं. *पीडन*) किसी वस्तु को ऐसा दबाना कि उसका रस निकल आए, कष्ट या दुख देना, सताना, किसी कार्य में बड़ी देरी करना। क्रि. स. दे. (सं. *प्रेरणा*) प्रेरणा करना, लगाना, पठाना, भेजना, चलाना। **पेराना**–द्वि. फ., **पेरवाना**–*प्रे. रूप*।

पेरू–संज्ञा, पु. (दे.) विलायती मुरगी; दक्षिणी अमेरिका का एक देश

पेलना–क्रि. स. दे. (सं. *पीडन*) धक्का देना, ठेलना, ठँसना, धँसाना, हटाना, ठासना, घुसेड़ना, प्रविष्ट करना, तेल निकालना, दबाना, त्यागना, अवज्ञा करना, ढाल देना, फेंकना, बल प्रयोग करना, **पेरना** (आ.)। क्रि. स. दे. (सं. *प्रेरण*) आगे बढ़ाना। द्वि. क्रि.-**पेलाना,** प्रे. रूप-**पेलवाना**।

पेला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पेलना*) झगड़ा, अपराध, धावा, आक्रमण, चढ़ाई, पेलने का भाव। स्त्री. **पेली**।

पेव–संज्ञा, पु. (दे.) प्रेम।

पेवस-पेवसरी, पेवसी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पीयूष*) हाल की ब्याही गाय। भैंस का कुछ पीला गाड़ा दूध।

पेश–क्रि. वि. (फ़ा.) आगे, **सामने। मु. पेश आना**–व्यवहार या बर्ताव करना, सामने आना, घटित होना। **पेश**

करना–आगे या सामने रखना, दिखाना, भेंट करना। **पेश जाना या चलना**–वश या बल चलना।

पेशकार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) **पेस्कार** (दे॰) एक कर्मचारी जो हाकिम के सामने कागज रखे। संज्ञा, स्त्री॰ **पेशकारी**–पेशकार का काम।

पेशखेमा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) फौज का आगे भेजा लाने वाला सामान, अग्रसेना, **हरावल** (प्रान्ती॰), घटनादि का पूर्ण लक्षण।

पेशगी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) अगाऊ, अगौड़ी, प्रथम (आगे) दिया धन।

पेशतर–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) प्रथम पूर्व।

पेशबंदी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) प्रथम या पूर्व से किया हुआ प्रबन्ध या बचाव की युक्ति, भूमिका।

पेशराज–संज्ञा, पु॰ (फा॰ *पेश+राज–घर बनाने वाला* हि॰) ईट-पत्थर ढोने वाला **मज़दूर**।

पेशवा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) **पेसवा** (दे॰) सरदार, नेता, अगुवा, प्रधानमन्त्री की उपाधि (महाराष्ट्र राज्य में)।

पेशवाई–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) किसी बड़े आदमी का आगे बढ़कर स्वागत करना।

पेसवाई (दे॰) अगवानी। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *पेशवा+ई प्रत्य॰*) पेशवा का कार्य या पद, पेशवा की शासन-प्रणाली।

पेशवाज–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) नाचते समय पहिनने की वेश्याओं की पोशाक या घाघरा।

पेशा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) उधम, रोजगार, धन्धा, व्यवसाय, **जीविकोपाय**।

पेशानी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) माथा, ललाट, संरक्षक, भाग्य।

पेशाव–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) **पेसाव** (दे॰) मूत्र, **मूत** (दे॰)। **मु॰ पेशाब करना**– मूतना, हे या तुच्छ समझना। **पेशाब से चिराग जलना**–बड़ा प्रतापी होना।

पेशाबखाना–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) **मूत्रालय,** मूतने की जगह।

पेशावर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) व्यवसायी व्यौपारी, रोजगारी, एक शहर (पंजाब) अब पाकिस्तान में।

पेशी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) सामने होने की क्रिया, मुकदमें की सुनवाई। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तलवार का म्यान, वज्र, गर्भाशय, बच्चेदानी, शरीर की मांस की गिलटियाँ या गाठें।

पेश्तर–क्रि॰ वि॰ (फा॰) प्रथम, पहले।

पेषण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पीसना। वि॰ **पेषक, पेषित, पेषणीय**।

पेषना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पेषण*) पेखना।

पैंजनी, पैंजनियाँ–संज्ञा, स्त्री॰ (वि॰ *पाँय+अनु॰ झन-झन*) पायजेब, पैर का वजने वाला गहना।

पैंठ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *परायस्थान*) हाट, दुकान, बाजार, बाजार का दिन।

पैंड़-पैंड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पाँय+द प्रत्य॰*) मार्ग, पंथ, रास्ता, डग, उदम; **मु॰ पैंड़े परना**–पीछे पड़ना, बारम्बार तंग करना। घुड़साल, प्रणाली।

पैंत*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पणाकृत*) दाँव, बाजी।

पैंती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पवित्र*) आयूदि के समय अँगुलियों में पहिनने के कुश के छल्ले, पवित्री, **पँइती** (आ॰), दाल, (प्रान्ती॰) **पँहिती**।

पै-पैं*†–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *पर*) पर, परन्तु, लेकिन, अवश्य, निश्चय, पीछे, बाद। यौ॰ **जोपै**–यदि, अगर। विलो॰ **तोपैं**–तो फिर-करण और अधिकरण की विभक्ति; पर से। उस दशा या अवस्था में। (हि॰ *पहँ*) पास, निकट, प्रति, ओर। *प्रत्य॰* दे॰ (सं॰ *उपरि*) ऊपर, पर से, द्वारा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *आपत्ति*) ऐब, दोष। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पय*) दूध, पानी।

पैकार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) छोटा व्यापारी, फेरी लगा कर फुटकर सौदा बेचने वाला। (फ़ा॰) जंग, लड़ाई, मुकाबला।

पैखाना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *पाखाना*) पाखाना, टट्टी, मैला मल त्याग का स्थान।

पैग़म्बर–संज्ञा, पु॰ (फा॰) परमेश्वर का दूत या संदेशवाहक। जैसे–मुहम्मद, ईसा।

पैज*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिज्ञा*) प्रण, पण, (म॰) हठ, प्रतिज्ञा, टेक, अहद, होड़।

पैजामा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **पायजामा** (फ़ा॰)।

पैज़ार–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) जूता, जोड़ा, जूती। यौ॰ **जेती-पैजार (होना)**–जेते की मार-पीट होना, जूता चलना, लड़ाई-झगड़ा होना।

पैठ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रविष्ट*) प्रवेश, गति, पहुँच, दखल, पैठने का भाव।

पैठना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पैठ+ना प्रत्य॰*) प्रविष्ट होना, प्रवेश

करना, घुसना। सं. *रूप*—पैठाना, प्रे. रूप—**पैठवाना**।

पैड़ी—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पैर*) सीढ़ी।

पैतरा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पदांतर*) कुश्ती या युद्ध में खडंग चलाने में पाँव रखने की रीति या मुद्रा, वार करने का ढंग।

पैताना—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पादस्थान*) पावँता।

पैतृक—वि. (सं.) पितृ-सम्बन्धी, पूर्वजों या पुरखों की, पुस्तैनी।

पैदर-पैदल—वि. दे. (सं. *पादतल*) पाँव से चलने वाला। क्रि. वि. पैरों पैरों से। वि. **पैदली**। संज्ञा, पु. (दे.) पैदल सिपाही। **पदाति** (सं.) पद चरण, शतरंज में एक छोटा मुहरा।

पैदा—वि. (फ़ा.) प्रसूत, उत्पन्न, प्रगट, प्राप्त, कमाया हुआ, उपार्जित, प्रभूत। ‡ संज्ञा, स्त्री. (दे.) आय, लाभ, आमदनी।

पैदाइश—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) जन्म, उत्पत्ति।

पैदाइशी—वि. (फा.) जन्म का, प्राकृतिक।

पैदावार—संज्ञा, स्त्री. (फा.) खेत से असादि की उपज, फसल।

पैना—वि. दे. (सं. *पैण*) तेज़, बारीक, नोक या धार वाला। संज्ञा, पु. (दे.), बैल हाँकने की लोहे की नोकदार छोटी छड़ी। स्त्री. **पैनी**।

पैमाइश—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) माप, नाप, माप की क्रिया या विधि।

पैमाना—संज्ञा, पु. (फ़ा.) मानदंड, नापने का यंत्र या साधन, शराब का गिलास।

पैमाल‡—वि. दे. (फा. *पामाल*) पामाल, नष्ट।

पैय†‡—संज्ञा, स्त्री. दे. (*पाँय*) पैर, पाँव। यौ. क्रि. वि. **पैयाँ-पैयाँ**—पैर-पैर।

पैया—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाय्य=निकृष्ट*) बिना सत का अनाज का दाना, खोखला, सुक्ख, दीन-हीन, निर्धन।

पैर—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पाद*) जीवों के चलने का अंग, पाँव, धूलि पर पड़ा पदचिन्ह। मुहावरों के लिए देखो “पाँव”।

पैरगाड़ी—संज्ञा, स्त्री. (हि.) साईकिल, ट्राइसिकिल, साईसिकिल (अं.) बैठकर पैर से दबाने पर चलने वाली हलकी गाड़ी।

पैरना—क्रि. अ. दे. (सं. *पावन*) तैरना। क्रि. स.—**पैराना**, प्रे. रूप—**पैरवाना**।

पैरवा—संज्ञा, स्त्री. (फा.) अनुगमन, पीछे-पीछे चलना, पक्ष लेना, प्रबल, दौड़-धूप, आज्ञा-पालना, पक्ष-समर्थन।

पैरवीकार—संज्ञा, पु. (फा.) पैरवी करने वाला, **पैरोकार** (दे.)।

पैरा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *पैर*) पड़े हुए चरण, पौरा, ऊँचाई पर चढ़ने को लकड़ी के बल्लों से बना मार्ग; (अं.) पैराग्राफ।

पैराई—संज्ञा, स्त्री. (हि. *पैरना*) पैरना या तैरने का भाव या क्रिया, तैराई।

पैराक—संज्ञा, पु. (हि. *पैरना*) तैराक।

पैराव—संज्ञा, पु. (हि. *पैरना*) पैर कर पार करने योग्य गहरा पानी।

पैरेखना*‡—क्रि. स. दे. (सं. *प्रेक्षण*) परखना, जाँचना, औसरे करना, आसरा देखना, बाट जोहना, परेखना।

पैरोकार—संज्ञा, पु. दे. (फा. *पैरवीकार*) पैरवी करने वाला, अनुगामी।

पैले—†*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *पालिती*) अनाज नापने का काष्ठ पात्र, मापपात्र, दूध आदि ढकने का पात्र। स्त्री. *अल्पा.* **पैनी**।

पैवंद—संज्ञा, पु. (फ़ा.) वस्त्र के छेद बंद करने का टुकड़ा, चकती, थिगरी या थिगली, जोड़, फल बढ़ाने या स्वाद बदलने को एक पेड़ की टहनी को काटकर दूसरे में जोड़ना, कलम बाँधना, पेबंद।

पैवंदी—वि. (फ़ा.) पैवंद द्वारा उत्पादित (फलादि)।

पैवस्त-पेयस्त—वि. दे. (फ़ा. *पैवस्तः*) समाया या पैठा हुआ, सोखाया, धुसा हुआ, भीतर प्रविष्ट हो फैला हुआ।

पैशाच—वि. (सं.) पिशाच सम्बन्धी, पिशच देश का, पिशाच का।

पैशाच-विवाह—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो सोती कन्धा को उठा से लाकर या मदमत्त स्त्री को बहका या फुसला कर किया जाए।

पैशाचिक—वि. (सं.) राक्षसी, घोर भयंकर और घृणित या बीभत्स, पिशाचों का।

पैशाची—संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक तरह की प्राकृतिक भाषा, **पिशाची, पिसाची** (दे.) पिशाच का उपासक। स्त्री. **पिशाचिनी**।

पैशुन्य—संज्ञा, पु. (सं.) पिशुनता, छल, दुष्टता, धोखेबाजी,

चुगलखोरी, पर-निन्दा।

पैसा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *पाद या पणाश*) पैसा, ताँबे का एक चलता सिक्का जो एक आने का चौथाई होता था, धन, द्रव्य, रोकड़। वि॰ **पैसे वाला**–धनी। **मु॰ पैसा उड़ाना**–बहुत खर्च करना, अधिक व्यय करना, ठगना, चुराना। **पैसा खाना**–विश्वासघात करके खा लेना या दबा बैठना। **पैसे का मुँह देखना**–रुपए का विचार कर खर्च कर करना। **पैसा डुबोना**–धन गँवाना या नष्ट करना, घाटा उठाना। **पैसा डूबना**–धन मारा जाना या नाश होना, घाटा होना। **पैसा लगाना**–धन लगाना, व्यय या खर्च करना। **पैसे से दरबार बाँधना**–रिश्वत या घूस देकर मनमाना काम कराना। **पैसे को फूस या धूल समझना**–अंधाधुंध व्यय करना।

पैसार–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *पैसना*) प्रवेश, पैठार।

पैहारी–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पयस+आहारी*) केवल दूध ही पीकर रहने वाला।

पोंका–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पौधों पर उड़ने वाला पतिंगा, पोका, **झोंका** (प्रान्ती॰)।

पोंगा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुटक*) धातु या बाँस की गली, पाँव की नली। वि॰ भोला, मूर्ख। स्त्री॰ *अल्पा॰* **पोंगा**।

पोंछन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पोछना*) वस्तु का शेवांश जो पोंछ कर निकाला जावे, झाड़न, शुद्धकरण।

पोंछना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रोछन*) झाढ़ना, शुद्ध या साफ करना, किसी पात्रादि में लगी वस्तु को पोछ कर हटाना। द्वि॰ कि॰–**पोंछाना,** *प्रे॰ रूप*–**पोंछवाना**। संज्ञा, पु॰ पोंछने का वस्त्र। संज्ञा, स्त्री॰ **पोंछनी**।

पोआ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुत्रक*) साँप का वच्चा, दूध पीने वाला छोटा बच्चा। लैय्या (महाराष्ट्र)।

पोइया–पोई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *पोयः*) घोड़े की दो-दो पैर फेंक कर सरपट दौड़।

पोइस–अव्य॰ दे॰ (*फा पोइश*) भागो, हटो, बचो, देखो। संज्ञा, स्त्री॰ सरपट दौड़ (हि॰ *पोइया* फा *पोयः*)। लो॰–पोइस बोलना-बहुत शोर-शराब होना।

पोई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पोदकी*) एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों से भाजी और पकौड़ियाँ बनती हैं। क्रि॰ स॰ दे॰ (दे॰ *पोना*) रोटी बनाना।

पोख–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पोषण*) पोषक के ऊपर प्रेम, हेलमेल, मिलाप।

पोखना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पोषण*) पालना या रक्षा करना, शरण में रखना, बढ़ाना, पोषना। *प्रे॰ रूप*–**पोखवाना,** क्रि॰ स॰–पोखाना।

पोखरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुष्कर*) ताल, तालाब। स्त्री॰ अल्प॰ **पाखरी**

पोगंड-पौगंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाँच से दस वर्ष तक की वाल्यावस्था, किसी छोटे, बड़े या अधिक अंग वाला।

पोच-पोच्यू–वि॰ (फ़ा॰) तुच्छ, निकृष्ट, कायर, डरपोक, क्रुद्ध, हीन, नाबीज, क्षीण। नीच, बुरा। (स्त्री॰ **पोथी**)।

पोथी-पोचाई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **पोषता,** नीचता, हेटी, बुराई। वि॰ **पोच**।

पोट–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पोटली, गठरी, अटाला, ढेर, वकुचा (प्रान्ती॰)।

पोटना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पुट*) बटोरना, समेटना, इकट्ठा करना, फुसलाना। क्रि॰ स॰ पोटना, *प्रे॰ रूप*– **पोटवाना**।

पोटरी-पोटली*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पोटलिका*) छोटी गठरी, छोटा वकुचा, (*अल्पा॰*) (ग्रा॰) पुटरिया।

पोटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुट=थैली*) पेटी की थैली, पित्ता, साहस, समाई, सामर्थ्य, औक़ात, उँगली का छोर, आँख की पलक। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पोत*) चिड़िया का बच्चा। (स्त्री॰ *अल्पा॰*) **पोटी**–उदराशय।

पोढ़ा–वि॰ दे॰ (सं॰ *पौढ़*) कढ़ा, दृढ़, पुष्ट, कठोर। स्त्री॰ **पोढ़ी**।

पोढ़ाई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) प्रौढ़ता (सं॰) पुष्टता, दृढ़ता, **पोढ़ापन**।

पोढ़ाना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *पोढ़ा*) पुष्ट या दृढ़ होना, कठोर या कड़ा होना, पक्का होना। क्रि॰ स॰ (दे॰) पुष्ट या पक्का करना।

पोत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी जीव का छोटा बच्चा, कपड़े की बुनावट, नौका, जहाज, छोटा पौधा, बे झिल्ली का गर्भ-पिंड। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रोता*) माला आदि को छोटी गुरिया सा मनका, काँच की गुरिया। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रवृत्ति*) प्रवृत्ति, ढंग, दाँव, धारी। संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ फोता) भूमिकर, ज़मीन का लगान।

पोतक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुत छोटा बच्चा। पशु-शावक,

मकान बनाने की जगह।

पोतकी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पोई नाम की लता।

पोतड़ा–संज्ञा, पु. छोटे बच्चों के चूतड़ के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा गँड़तरा।-(ड़ो) **के अमीर या रईस**–खानदानी अमीर, ऐसा अमीर जिसका बाप भी अमीर रहा हो।

पोतन–वि. (सं.) पवित्र, शुद्ध; पवित्र करने वाला। दे. 'पोतना'।

पोतनहर†–स्त्री. चौका लगाने की घोली हुई मिट्टी और रखने के काम आने वाला बरतन; घर पोतने का काम करने वाली स्त्री; अँतड़ी।

पोतना–स. क्रि. किसी तरल पदार्थ को अन्य वस्तु पर फैंलाना, लगाना, चुपड़ना; किसी वस्तु पर किसी गीले या सूखे पदार्थ का प्रकार लगाना कि उस पर उसकी तह जम जाय, लेप करना; गोबर आदि से लीपना। पु. पोतने के काम आने वाला कपड़ा।

पोतला–संज्ञा, पु. पराठा।

पोता–संज्ञा, पु. बेटे का बेटा, पौत्र; अंडकोष; लगान; पोतने का कार्य पोतने के लिए तैयार की गई मिट्टी, चूना फेरने के काम आने वाली कूँची; एक प्रकार की मछली; *कलेजा, बूता, सामर्थ्य।

फेरना–दीवार पर चूने आदि की पुताई करना; बरवाद कर देना, चौपट करना।

पोता (तृ)–संज्ञा, पु. (सं.) सोलह प्रकार के ऋत्विकों में से एक; नाती (पुत्र का पुत्र)।

पोताई–स्त्री. दे. 'पुताई'।

पोताच्छादन–संज्ञा, पु. (सं.) वस्त्र कुटीर, खेमा; रावटी।

पोताधान–संज्ञा, पु. (सं.) मछलियों के बच्चों का समूह।

पोताधिरोध–संज्ञा, पु. (इम्वार्गो) किसी देश के नौ-सेना-विभाग का बंदरगाहों पर अन्य देश के जहाजों के आने या वहाँ से जाने पर कुछ समय के लिए लगाया गया प्रतिबंध, घाटबंदी।

पोतारा–संज्ञा, पु. दे. 'पुतारा'।

पोतारी–संज्ञा, स्त्री. पोतने के काम आने वाला कपड़ा।

पोतास–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रकार का कपूर।

पोतिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पोई नामकी लता; वस्त्र।

पोतिया–संज्ञा, पु. तम्बाकू, चूना आदि रखने की थैली जिसे इन वस्तुओं का सेवन करने वाले साथ में लिए रहते हैं; एक तरह का शिकागो पहन कर नहाने का कपड़े का टुकड़ा।

पोती–संज्ञा, स्त्री. बेटे की बेटी, पौत्री; हँड़िया को कड़ी आँच से बचने के लिए उसकी पेंदी पर किया जाने वाला मिट्टी का लेप; अर्क, मद्य चुआते समय भव के पर फेरा जाने वाल पानी का पुतारा; पुतारा फेरने की क्रिया; गुरिया।

पोत्र–संज्ञा, पु. (सं.) नावों या जहाजों का समूह (पोत्या), जहाज, वज्र; हलका फाल; वस्त्र।

पोत्रायुध–संज्ञा, पु. (सं.) सुअर।

पोथनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पलकों पर निकल आने वाले सरसों के बराबर लाल-लाल दाने जिनमें पीड़ा और खुजली होती है।

पोथा–संज्ञा, पु. कागज की बड़ी गुड्डी; बड़ी पोथी।

पोथी–संज्ञा, स्त्री. पुस्तक, ग्रन्थ; लहसुन की गाँठ।

पोदना–संज्ञा, पु. एक छोटी चिड़िया, छोटे कद का आदमी; नाटा आदमी।

पोद्दार/पोतद्दार –संज्ञा, पु. मारवाड़ी वैश्यों की एक जाति/उपाधि।

पोना–क्रि. स. लोई से रोटी गढ़ना; (रोटी) पकाना, गूँथना, पिरोना।

पोप–संज्ञा, पु. (सं.) ईसाइयों के रोमन कैथोलिक संप्रदाय का प्रधान धर्माचार्य/ पोप।

पोपला–वि. जिसमें पोल हो, जो भीतर से खाली हो; बिना दाँत का मुँह; जिसके दाँत न हों।

पोपली–संज्ञा, स्त्री. अमोले की जड़ में लगी हुई आम की गुठली को घिसकर बनाया जाने वाला बाजा जिसे लड़के बजाते हैं।

पोया–संज्ञा, पु. कोंपल; सँपोला; नन्हा बच्चा।

पोर–संज्ञा, स्त्री. ऊँगली की गाँठ; उँगली की गाँठों के बीच का भाग; ईख/बाँस आदि की गाँठों की बीच का भाग, (ग्रा.) पीठ।

पोरा–संज्ञा, पु. लकड़ी का गोला या कुंदा; मोटा ठिगना आदमी।

पोरिया–संज्ञा, स्त्री॰ छल्ले की तरह का एक गहना जो हाथ की उँगलियों की पैरों पर पहना जाता है।

पोर्टर–संज्ञा, पु॰ (अं.) रेलवे-कुली, जहाज का कुली।

पोल–संज्ञा, पु॰ (सं.) पुंज या ढेर; (अं.) ध्रुव (भूगोल); साढ़े पाँच गज का एक पैमाना, लट्ठा; लकड़ी, लोहे आदि का खंभा। स्त्री॰ (हि.) किसी वस्तु के भीतर की खाली जगह; अवकाश; निस्सारता, खोखलापन; प्रवेश द्वार, फाटक के पास की जगह। **मु॰ (किसी की) पोल खुलना**–छिपा दोष प्रकट होना।

पोलकी–संज्ञा, पु॰ एक रत्न।

पोलो–वि॰ जो भीतर से खाली हो, खोखला, निस्सार, निस्तत्त्व। पु॰ परती पर सूत लपेटने से तैयार होने लच्छा। मखाने। (ग्रा.) एक पेड़; एक त्यौहार जिसमें देवों की पूजा होती है और उनकी दौड़ कराई जाती है।

पोलारी–संज्ञा, स्त्री॰ सोनारों का एक आला।

पोविंद–संज्ञा, (सं.) जहाज या नाव का एक मस्तूल। **पोलिका**

पोली–संज्ञा स्त्री॰ (सं.) एक प्रकार की पूरी, पुआ।

पोलिटिकल–वि॰ (अं.) राजनीति-सम्बन्धी, राजनीतिक

पोलिया–संज्ञा स्त्री॰ औरतों का पैर में पहनने का एक पोला गहना। **पु॰ पौरिया**।

पोलो–संज्ञा पु॰ (अं.) गेंद का एक खेल जो घोड़े पर चढ़कर खेला जाता है, चौगान।**-स्टिक**-स्त्री॰ वह डंडा जिससे पोलो खेला जाता है।

पोश–संज्ञा पु॰ (फा.) पहनने की चीज, कपड़ा; पहनने वाला, ढकने वाला (समासांत में-नकाबपोश, पलंगपोश); लोगों को हटाने के लिए धोबियों योंनियों आदि द्वारा प्रयुक्त होने वाला एक शब्द।

पोशाक–संज्ञा स्त्री॰ (फा.) पहनकर निकला। **मु॰**-बढ़ाना-कपड़े उतारना।

पोशीदगी–संज्ञा स्त्री॰ गुप्त होने का भाव, छिपाव।

पोशीदा–वि॰ (फा.) गुप्त, छिपा हुआ।

पोष–संज्ञा पु॰ (सं.) पोसने की क्रिया, पालन; पुष्टि; वृष्टि; ***संतोष**।

पोषक–वि., पु॰ (सं.) पोषण करने वाला; दे॰ 'परपोषी'। बढ़ाने वाला, बर्द्धक; सहायक। **'तत्त्व**-पु॰ (विटामिन) दे॰ 'खाद्योज'।

पोषण–संज्ञा पु॰ (सं.) पोसने की क्रिया, पालन; बढ़ाने की क्रिया, बर्द्धन; सहायता देना।

पोषना*–स॰ क्रि॰ पोषण करना, पालना।

पोषयिता (तृ)–वि., पु॰ (सं.) पोषण करने वाला।

पोषयित्नु–संज्ञा पु॰ (सं.) कोकिल।

पोषिका–संज्ञा स्त्री॰ (एलिमेंटरी कैनाल) गले के नीचे से शुरू होने वाली नली जिससे भोजन पेट में पहुँचता है और जो आगे छोटी तथा बड़ी अंतड़ियों से मिल जाती है, खाद्य-नलिका, **आहारनाल**।

पोषित–वि॰ (सं.) जिसका पोषण किया गया हो, पाला हुआ।

पोषिता (तृ)–वि., पु॰ (सं.) पोषण करने वाला, पोषक।

पोषी (षिन्)–वि., पु॰ (सं.) पोषण करने वाला, पोषक।

पोष्टा (ष्ट)–वि॰ (सं.) पोषक। पु॰ पोषण करने वाला; एक तरह का करंज।

पोष्य–वि॰ (सं.) पोषण के योग्य, पालने योग्य, जिसका पोषण करना कर्तव्य समझा जाय; अभ्युदय करने वाला; प्रभूत। **-पुत्र,-सुत-पु॰** वह जो पुत्र की तरह पाला गया हो, दत्तक। **-वर्ग**-पु॰ माता, पिता, गुरु आदि जिनका पोषण करना पुत्र आदि का कर्त्तव्य माना जाता है।

पोस–संज्ञा पु॰ पोसने की क्रिया या भाव; पालने का नाता; पालने का उपकार।

पोसती*–संज्ञा पु॰ अफीमची।

पोसना–स॰ क्रि॰ आहार आदि देकर बड़ा करना; पालन करना; (पशु-पक्षी को) आहार आदि देकर मनोरंजन या उपयोग के लिए अपने यहाँ रखना; ढाँकना, छिपाना-पोंछना।

पोस्ट–संज्ञा पु॰ (अ.) खंभा; डाक; स्थान, जगह; पद; नौकरी। **आफिस**--पु॰ डाकघर, डाकखाना, पत्रालय।**-कार्ड-पु॰** डाकखाने से खरीदा जाने वाला वह मोटे काग्ज का टुकड़ा जो पत्र-व्यवहार के काम आता है। **-बाक्स-पु॰** किसी की डाक या चिट्ठियाँ सुरक्षित रखने के लिए विशेष रूप से रखी गई पेटी। **-बैग**-पु॰ डाक का थैला।**–मार्क**–पु॰ डाकघर की मुहर।**–मास्टर–पु॰** डाकघर का प्रधान कर्मचारी, डाकपाल। **-॰जेनरल-पु॰** किसी प्रांत के डाक-विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी।

-मैन-पु. डाकखाने का वह कर्मचारी जो लोगों के यहाँ उनकी चिट्ठियाँ पहुँचाता है, डाकिया।

पोस्टमार्टम-वि. (अं.) मृत्यु के बाद का। संज्ञा पु. मृत्यु का कारण जानने के लिए किसी प्राणी के शव को चीर-फाड़कर देखना, शव-परीक्षा।

पोस्टर–संज्ञा पु. (अं.) किसी कागज पर बड़े अक्षरों में छपी हुई वह नोटिस जो जनता की जानकारी के लिए जगह-जगह दीवार आदि पर चिपका दी जाती है।

पोस्टल–वि. (अं.) डाक-घर-सम्बन्धी; डाक-विभाग-सम्बन्धी।

पोस्टल-आर्डर–पु. डाकघर से मिलने वाली एक तरह की हुंडी जो मनीआर्डर- की जगह काम में लाई जाती है, डाकीय आदेश। **-गाइड**-पु. वह पुस्तक जिसमें डाक-तार आदि के नियम और डाकखानों की सूची दी हुई रहती है।

पोस्त–संज्ञा, पु. (फा.) **खाल, चमड़ा;** छाल; तह, परत; अफीम का पौधा; इस पौधे का डोंड़ा।

पोस्ता–संज्ञा, पु. एक पौधा जिसके डोंड़े से अफीम निकलती है, अफीम का पौधा।

पोस्ती–संज्ञा, वि. अफीम का सेवन करने वाला, अफीमची; पोस्त को भिगोकर उसका पानी पीने वाला; **काहिल**। पु. एक खिलौना जो नीचे की ओर भारी होता है और लिटाने पर फिर खड़ा हो जाता है।

पोस्तीन–संज्ञा, पु. (फ़ा.) पामीर, तुर्किस्तान और मध्य एशिया के लोगों-का एक प्रकार का पहनावा जो समूर आदि जानवरों के बालदार चमड़े से बनाया जाता है; बालदार चमड़े का कोट; पुस्तक में जिल्द के साथ लगाया जाने वाला कागज।

पोहना*–स. क्रि. गूँथना, पिरोना; भेदना, छेदना; चढ़ाना, लगाना; जमाना, बैठाना। *वि. **घुसने वाला, धँसने वाला**।

पोहमी*–संज्ञा स्त्री. पृथ्वी।

पोहर†–पु. चरागाह; पशुओं का चारा, चरी।

पोहा†–संज्ञा पु. चौपाया।

पोहिया–संज्ञा पु. चरवाहा।

पौंचा–संज्ञा, पु. साढ़े पाँच का पहाड़ा।

पौंड–संज्ञा पु. दे. 'पाउंड'। **-पावना**-पु. (स्टर्लिंग बेलेसेज) **(अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यादि के परिणामस्वरूप)** ब्रिटेन से किसी देश के पावने की वह रकम जो बैंक आफ इंग्लैंड में जमा रहती है और जो उसके साथ हुए समझौते की शर्तों के अनुसार क्रमशः चुकाई जाती है।

पौंड़ई–वि. पौंड़े के रंग का। पु. एक रंग जो पौंड़े के रंग का होता है।

पौंडरीक–वि. (सं.) कमल-सम्बन्धी; कमल का; कमल का बना हुआ। पु. स्थल पद्म; एक प्रकार का कुष्ठ; एक यज्ञ।

पौंडल–संज्ञा, पु. (अं.) **फुट-पौंड-सेकण्ड पद्वति में बल का मात्रक**। वह बल जो एक पौंड द्रव्यमान को 'एक फुट प्रति सेकण्ड, प्रति सेकण्ड' का त्वरण प्रदान करे।

पौंड़ा, पौंढ़ा–संज्ञा पु. मोटे छिलके और अधिक रसवाली एक प्रकार की लंबी और मोटी ईख।

पौंड़ी†–संज्ञा स्त्री. पौरी।

पौंड़्–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्राचीन देश; इस देश का निवासी या राजा; एक प्रकार की ईख, पौंड़ा; भीमसेन का शंख; सांप्रदायिक चिह्न; एक संकीर्ण जाति (स्मृ.)।

पौंड्रक–संज्ञा, पु. (सं.) पौंड़ा, ईख; एक संकर जाति। एक प्राचीन राजा।

पौंढ़ना–अ. क्रि. दे. 'पौढ़ना'।

पौंनार–संज्ञा स्त्री. दे. 'पौनार'।

पौंरना–अ. क्रि. तैरना।

पौरि, पौंरी*–संज्ञा स्त्री. पौरी।

पौंरिया*–संज्ञा, पु. दे. 'पौरिया'।

पौंश्चलीय–वि. (सं.) कुलटा का पुत्र।

पौश्चलेय–संज्ञा पु. (सं.) कुलटा का पुत्र।

पौंश्चल्य–संज्ञा पु. (सं.) व्यभिचार।

पौ–संज्ञा, स्त्री. प्रातःकाल का प्रकाश; पौसला, प्याऊ; पासे का एक दाँव। *पु. जड़; पाँव। **मु. पौ फटना**–तड़का होना। **पौ बारह पड़ना**–पासे में जीत का दाँव पड़ना; लाभ का मौका मिलना। **-बारह होना**–पासे में जीत का दाँव पड़ना; विजय होना; **लाभ ही लाभ होना;** खूब बन आना।

पौआ–संज्ञा, पु. सेरका चौथा हिस्सा; मिट्टी या धातु का वह

बरतन जिसमें पावभर दूध, पानी आदि अँटे।

पौगंड–संज्ञा पु.(सं.) दे. 'पोगंड'। वि. बालोचित; बालकों पौगंडक-पु. (सं.) दे. 'पोगंड'।

पौठ–संज्ञा, स्त्री. जमीन का एक तरह का बंदोबस्त जिसमें खेत हर साल काश्तकार को जोतने के लिए दिया जाता है।

पौड़ना*–अ. क्रि. दे. 'पौढ़ना'।

पौढ़ना–अ. क्रि. लेटना; झेलना।

पौढ़ाना–स. क्रि. सुलाना, लेटाना, झुलाना।

पौण्य–वि. (सं.) खरा, सच्चा; धर्मात्मा।

पौतव–संज्ञा पु.(सं.) एक तौल।

पौतवाध्यक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) मालकी तौलकी देखरेख करना अधिकारी (कौ.)।

पौतवापचार–संज्ञा, पु.(सं.) कम तौलना, डाँड़ी मारना (कौ.)।

पौतिक–वि. (सं.) दुर्गंध वाले द्रव्य का बना हुआ; (सेप्टिक) जिसमें सड़न पैदा हो गई हो (व्रण)।

पौत्तिक–संज्ञा पु.(सं.) एक प्रकार का मधु।

पौत्र–वि. (सं.) पुत्र सम्बन्धी; पुत्र का। पु. बेटे का बेटा, पोता।

पौत्रिक–वि. (सं.) पुत्र-सम्बन्धी; पौत्र-सम्बन्धी।

पौत्रिकेय–संज्ञा, पु.(सं.) पुत्र के स्थान पर माना हुआ कन्या का पुत्र।

पौत्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पोती; दुर्गा।

पौद–संज्ञा, स्त्री. छोटा पौधा; एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाने लायक छोटा पौधा; संतान; उपज; * पाँवड़ा। (नवी पौद-नई पीढ़ी।) -घर-पु. छोटे-छोटे विविध पौधे लगाने तथा ग्राहकों को बेचने का स्थान (नर्सरी)।

पौदर–संज्ञा, स्त्री. पैर का निशान, चरणचिह्न; लोगों के पैदल चलने से बनी हुई राह, पगडंडी; कोल्हू के चारों ओर का वह मार्ग जिससे होकर उसे खींचने वाला बैल घूमा करता है; मोट खींचने वाले बैलों के कुएँ के पास तक बार-बार आने-जाने वाला ढालवाँ रास्ता।

पौदा–संज्ञा, पु. दे. 'पौधा'; बुलबुल की कमर में बाँधा जाने वाला फुँदना। **-गाह-पु., स्त्री.** वह जगह जहाँ छोटे पौधे लगे हों।

पौद्गलिक–वि. (सं.) पुद्गल-सम्बन्धी; पुद्गलका; भूत-सम्बन्धी, स्वार्थी।

पौध–संज्ञा, स्त्री. उपज, पैदाइश।

पौधन–संज्ञा, स्त्री. खाना परसने का मिट्टी का बरतन।

पौधा–संज्ञा स्त्री. छोटा पेड़; नया पेड़।

पौन-पुनिक–वि. (सं.) बार-बार होने वाला।

पौन–संज्ञा, पु. हवा, वायु; जीव, प्राण; भूत, प्रेत; एक प्रकार का ढगण जिसमें गुरु पहले आता है और लघु पीछे। वि. तीन-चौथाई, पूर्ण से चतुर्थांश कम। **मु. पौन चलाना या माना**–जादू-टोना करना।

पौनरुक्त, पौनरुक्त्य–संज्ञा, पु. (सं.) दुबारा उक्त होने का भाव, आवृत्ति।

पौनर्नव–वि. (सं.) पुनर्नवा-सम्बन्धी।

पौनर्भव–वि. (सं.) पुनर्भू (पुनः विवाह, करने वाली विधवा)-सम्बन्धी; पुनर्भू का; पुनर्भू से उत्पन्न। पु. पुनर्भू का पुत्र जिसकी गणना बारह प्रकार के पुत्रों में है। (स्मृ.); किसी विधवा या परित्यक्ता स्त्री का नया पति।

पौनर्भवा–संज्ञा स्त्री. (सं.) पुनभूकी पुत्री।

पौना–संज्ञा, पु. पौनका पहाड़ा; गोल और चिपटे सिर की छेददार या बिना छेदों वाली लोहे आदि की कलछी।

पौनार–संज्ञा, स्त्री. कमल की नाल।

पौनी–संज्ञा, स्त्री. बढ़ई, नाई, धोबी आदि जिन्हें गाँवों में लोग काम के बदले उपज का कुछ अंश तथा माँगलिक अवसरों पर इनाम देते हैं; छोटा पौना।

पौने–वि. (हि. पौन) किसी पदार्थ का तीन चौथाई (भाग) मु. औने-पौने में-ससों में, घटी कीमत पर।

पौमान–संज्ञा, पु. दे. (सं.) पवमान, वायु, जलाशय, हवा

पौरंदर–वि. (सं.) इन्द्र सम्बन्धी। पु. ज्येष्ठा नक्षत्र।

पौरंध्र–वि. (सं.) स्त्री-सम्बन्धी।

पौर–संज्ञा स्त्री. ड्योढ़ी वि. पुर सम्बन्धी; नगकर का; जो नगर में पैदा हुआ हो; पेटू। पु. पुरवासी, नागरिक; रोहिष नामक घास। महापौर-पु. नगर पालिका का प्रमुख अधिकारी।

पौरक–संज्ञा पु. (सं.) नगर पर घर के पास का वास।

पौरना–क्रि. अ. तैरना।

पौरव–दि. (सं.) पुरु सम्बन्धी; पुरु का (महाभारत कालीन राजा); पुरु के गोत्र के उत्पन्न। पु. पुरु का गोगज; आर्यावर्त का एक प्राचीन देश; इस देश का राजा।

पौरस्त्य–वि॰ (सं॰) पूरक का, पूरकी, प्राप्य; प्रथम, आद्य अगला।

पौरांगना–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) नगर की स्त्री, नागरी।

पौरा–संज्ञा पु॰ रखे हुए चरण, कदम, आगमन।

पौराण–वि॰ (सं॰) प्राचीन काल का; पहले का; पुराण सम्बन्धी; पुराण का

पौराणिक–वि॰ (सं॰) दे॰ 'पौराण', पुराणों का जानकार। पु॰ पुराण का जानकार व्यक्ति; पुराण वाचक।

पौरि–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'पौरी'।

पौरिक–संज्ञा पु॰ (सं॰) नागरिक, नगर का शासक।

पौरिया–संज्ञा पु॰ ड्योढ़ीदार, द्वारपाल।

पौरी–संज्ञा, स्त्री॰ मकान का वह रक्षक जो धुसते ही सबसे पहले मिलता हो (प्राचीन निर्माण में); ड्योढ़ी, खड़ाऊँ; (सं॰) अंतःपुर में रहने वालों की भाषा; हरम के खादियों की जबान।

पौरुष–वि॰ (सं॰) पुरुष सम्बन्धी; पुरुष; संज्ञा पु॰ पुरुष का भाव, पुरुषत्व; मर्दानगी; पुरुषार्थ; पराक्रम; ऊँचाई या गहराई की एक माप; पुरुष की लिंगेन्द्रिय।

पौरुषिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुरुष की पूजा करने वाला।

पौरुषी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्त्री।

पौरुषेय–वि॰ (सं॰) पुरुष सम्बन्धी; पुरुष का; मानवीय; मनुष्य कृत; मनुष्य का कार्य, दिहाड़ी पर काम करने वाला मजदूर।

पौरुष्य–संज्ञा पु॰ (सं॰) साहस, मर्दानगी।

पौरुछूत–वि॰ (सं॰) इन्द्र सम्बन्धी, इन्द्र का

पौरेय–वि॰ (सं॰) नगर के समीप का (स्थान-देश आदि); नागर।

पौरोगन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) (राजा की) पाकशाला का अ यक्ष।

पौरोडाश–वि॰ (सं॰) पुरोडाश-सम्बन्धी; पुराडोश का।

पौरोधस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुरोहित का पद; ऋत्विक; पुरोहिताई।

पौरोभाग्य–संज्ञा पु॰ (सं॰) दोष-दर्शन; छिद्रा-वेषण; द्वेज, दुष्कर्म।

पौरोहित्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुरोहित का पद या कर्म।

पौर्वमास–वि॰ (सं॰) पूर्णिमा सम्बन्धी; पु॰ पूर्णिमा को किया जाने वाल पत्र विशेष।

पौर्णमासिक–वि॰ (सं॰) पूर्णिया-सम्बन्धी; पूर्णिमा के दिन होने वाला।

पौर्णमासी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूर्णमासी; पूनो; प्रतिपदा।

पौर्णमास्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पूर्णिमा को होने वाला पत्र।

पौर्णीय–संज्ञा पु॰ (सं॰) संन्यासी।

पौर्व–वि॰ (सं॰) पहले का; पूरवी (स्त्री॰ पौर्वी)।

पौर्वदेहिक, पौर्वदेहिक–वि॰ (सं॰) पूर्व जन्म सम्बन्धी; पूर्व जन्म का किया हुआ।

पौर्वाद्धिक–वि॰ (सं॰) पूर्वार्द्ध-सम्बन्धी।

पौल–स्त्री॰ रास्ता; सिंह द्वार।

पौलस्ती–स्त्री॰ (सं॰) शूर्पनखा।

पौलस्त्य–वि॰ (सं॰) पुलस्त्य सम्बन्धी; पुवस्त्य गोत्रज। पु॰ रावण, कुबेर, निरीक्षण,; चन्द्रमा।

पौला–संज्ञा पु॰, एक प्रकार की खड़ाऊँ जिसमें खूँटी की जगह रस्सी वर्ग रहती है। पौलिया यौ॰ रूट पौलिया।

पौलि–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'पौली'/ पु॰ (सं॰) कम भूना हुआ अन्न; इस प्रकार के अन्न की रोटी।

पौलि–संज्ञा, स्त्री॰ पौरी ड्योढ़ी; पैर का ऐड़ी से पंजे तक का भाग; चरण चिह्न।

पौलोम–वि॰ (सं॰) पुलोमा सम्वन्धी; पुलोमा का; पु॰ इन्द्र।

पौलोमी–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) इन्द्र की पत्नी शची; इन्द्राणी; पौलोयी-संभव जयन्त (इन्द्र सुत)।

पौवा–संज्ञा पु॰ सेर का चौथा भाग; पाव भर का बाँट; देसी शराब की बोतल का चौथा भाग-पउवा।

पौसा–संज्ञा पु॰ (सं॰) पूस का महीना; एक त्योहार; युद्ध।

पौसी–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) पूस की पूर्णिमा।

पौष्कर–वि॰ (सं॰) नीलकमल सम्बन्धी; पुष्कर का; पु॰ पुष्कर मूल।

पौष्कल–संज्ञा (सं॰) एक प्रकार का अन्त।

पौष्कल्प–संज्ञा (सं॰) प्रचुरता; परिपूर्णता; पूर्ण वृद्धि।

पौष्टिक–वि॰ (सं॰) पुष्ट बनाने वाला; पुष्टिकर; शक्तिवर्द्धक; एक वस्त्र जो मुंडन संस्कार के समय धारण किया जाता है।

पौष्ण–संज्ञा पु॰ (सं॰) रेवती नक्षत्र। वि॰ सूर्य सम्बन्धी।

पौष्पक–संज्ञा पु॰ (सं॰) पुष्पांजन।

पौष्पी–संज्ञा स्त्री॰ एक तरह की शराब जो फूलों से तैयार की जाती हैं; पाटलीपुत्र; पटना।

पौसवा–संज्ञा पु॰ वह स्थान जहाँ प्यासों को धर्मार्थ पानी दिया जाता है।

पौसार–संज्ञा स्त्री॰ करघे में वह लकड़ी जिसे पैर से दबाने पर वह ऊँचा नीचा होता है।

पौसेरा–संज्ञा पु॰ एक पाव का बँट (बाट)।

पौहारी–वि॰ दे॰ 'पयहारी' (सिर्फ दूध पीकर जीवित रहने वाला)।

प्याऊ–संज्ञा, स्त्री॰ सार्वजनिक स्थलों पर धर्मार्थ पानी पिलाने का स्थान दे॰ पौसला।

प्याज–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) उत्कट, तीखी गन्ध वाला प्रसिद्ध मूल जो तरकारी, मसाले और दवा के काम आता है; पवांड़, सुकंद, सुकंदक; मुखदूषण (विशे॰ मुख भूषण-पान)

प्याज़ी–वि॰ (फ़ा॰) हलका गुलाबी रंग, **पियाजी** (दे॰)।

प्यादा–संज्ञा पु॰ (फा॰) पैदल, दूत, सेवक, पियादा (दे॰)।

प्याना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पिलाना*) पिलाना, **पियाना, पियावना** (दे॰)।

प्यार–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रीति*) स्नेह, प्रेम, चाह, **पियार** (ग्रा॰)।

प्यारा–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) प्रेम-पात्र, प्रिय, स्नेही, भला जान पड़ने वाला, **पियारा**। स्त्री॰ प्यारी, **पियारी**। (दे॰)।

प्याला–संज्ञा पु॰ (फ़ा॰) छोटा कटोरा, बेला, पियाला (दे॰), तोप, बन्दूक आदि में रक्षक और बत्ती लगाने का स्थान। स्त्री॰ *अल्पा॰* प्याली, **पियाली** (दे॰)।

प्यावना†*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *पिलाना*) पिलाना, **पियावना, पियाना** (ग्रा॰)।

प्यास–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पिपासा*) तृषा, तृष्णा, **पियास** (ग्रा॰) वि॰ पु॰ **प्यासा,** वि॰ स्त्री॰ प्यासी।

प्यासा–वि॰ दे॰ (सं॰ *पिपासित*) पियासा (दे॰) तृषित, प्यास-युक्त। स्त्री॰ **प्यासी**।

प्यो–संज्ञा पु॰ दे॰ (हि॰ *पिय*) स्वामी, पति।

प्योसर-प्योसरी–संज्ञा पु॰ दे॰ (स॰ *पीयूष*) नई ब्यायी भैंस या गाय का दूध, उससे बनी मिठाई।

प्योसार†–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *पितृशाला*) स्त्री के पिता का घर, मायका, पीदर।

प्यौ-संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रिय*) प्रियतम, पति, स्वामी।

प्र

प्र–उप॰ (सं॰) एक उपसर्ग जो शब्दों में पहले लग कर उनको विशिष्ट अर्थ प्रदान करता है।

प्रकोप–संज्ञा पु॰ (सं॰) कंप, कँपकँपी। वि॰ **प्रकम्पित**–काँपता हुआ। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **प्रकम्पल, वि॰ प्रकंपनीय**।

प्रकट–वि॰ (सं॰) व्यक्त, स्पष्ट, उत्पन्न, प्रत्यक्षीभूत, विदित, प्रगट (दे॰)।

प्रकटन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्पन्न होना, प्रगटना, व्यक्त होना। वि॰ **प्रकटनीय**।

प्रकटित–वि॰ (सं॰) प्रगट, स्पष्ट किया हुआ।

प्रकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फैले हुए कुसुम आदि, समूह, दल।

प्रकरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रसंग, विषय, वृत्तान्त, प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति रूपक का भेद (नाट्य॰), ग्रन्थ-सन्धि, ग्रंथ-विच्छेद, निरूपणीय विषय की समाप्ति, एकार्थ-वाचक सूत्रों का समूह (व्या॰) कांड, सर्ग, अध्याय, ग्रन्थ का छोटा भाग।

प्रकरी–संज्ञा, स्त्री (सं॰) एक तरह का गाना, नाटक में प्रयोजन-सिद्धि के पाँव भेदों में से एक, नाटक खेलने की वेदी (नाटय॰) कुछ काल तक चल कर रुक जाने वाली कथा-वस्तु।

प्रकर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्तमता, उत्कर्ष, बहुतायत, अधिकता, बढ़ाव, बाहुल्य। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रकर्षता**–उत्कृष्टता।

प्रकला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) समय का साठवों भाग (ज्यो॰)।

प्रकांड–वि॰ (सं॰) बहुत विस्तृत या बड़ा।

प्रक्रांत–वि॰ (सं॰) आरव्य, आरंभ या शुरू किया हुआ, अनुचित।

प्रकाम–वि॰ (सं॰) यथेष्ट, अति, मनमाना।

प्रकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भाँति, तरह, किस्म, भेद। परकार (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्राकार*) घेरा, परकोटा, शहर पनाह

(फ़ा.)।

प्रकारान्तर–वि. यौ. (सं.) अन्य विधि या भाँति, अन्य रीति, दूसरी तरह।

प्रकाश–संज्ञा, पु. (दे.) उजेला, दीप्ति, रोशनी, आलोक, **प्रकास** (दे.), कांति, ज्योति, अभिव्यक्ति, विकास, आभा, प्रसिद्धि, ग्रन्थ का भाग, अध्याय, आम, स्फुटन, प्रकट या गोचर होना। वि. **प्रकाशित**। संज्ञा, पु. **प्रकाशक**।

प्रकाशक–संज्ञा पु. (सं.) प्रकट, प्रकाश, या प्रसिद्ध करने वाला, प्रकाश करने वाला। किताबें प्रकासित करने वाला (अं.) पब्लिशर।

प्रकाशधृष्ट–संज्ञा पु. यौ (सं.) प्रकट रूप से ढिठाई करने वाला नायक।

प्रकाशन–संज्ञा पु. (सं.) प्रगट या व्यक्त करना, प्रकाशित करना, फैलाना, विष्णु। वि. **प्रकाशनीय।** (अं.) पब्लिकेशन।

प्रकाशमान–वि. (सं.) विख्यात, शोभायमान, प्रसिद्ध, चमकीला, आलोकित, चमकता हुआ, रोशन।

प्रकाशित–वि. (सं.) प्रकाश-युक्त, चमकता हुआ, प्रकट, प्रसिद्ध, व्यक्त। छपा हुआ/ छपी हुई कृति/ ग्रंथ इत्यादि।

प्रकाशी–संज्ञा पु. (सं.) चमकता हुआ। वि. प्रकाशित करने वाला, प्रकाशक।

प्रकाश्य–वि. (सं.) प्रकट या प्रकाश करने योग्य शीघ्र छपने वाला कि. वि. प्रकट या स्पष्ट रूप से, स्वागत का विलोम (नाटय.)।

प्रकीर्ण–वि. (सं.) विस्तृत, मिश्रित, ग्रंथ-विच्छेद। यौ. प्रकीर्ण-केशी-दुर्गा।

प्रकीर्णक–संज्ञा पु. (सं.) फैलाने वाला, प्रकरण, अध्याय, मिश्रित, स्फुट या फुटकर।

प्रकीर्तन–संज्ञा पु. (सं.) प्रस्तावना, वर्णन, यश का गान, कथन। वि. **प्रकीर्तनीय**।

प्रकीर्तित–वि. (सं.) कथित, भाषित, उक्त, वर्णित, निरूपित; जिसकी कीर्ति का बखान हो!

प्रकूपित–वि. (सं.) क्रोध-युक्त, प्रकुश, कुपित।

प्रकुप्त–वि. (सं.) प्रकोप-युक्त, उग्र, विकार को प्राप्त।

प्रकृत–वि. (सं.) यथार्थ, सच्चा, विकार-रहित। संज्ञा, स्त्री. **प्रकृतता**। पु. **प्रकृतत्व**। संज्ञा, पु. (सं.) श्लेष अलंकार का एक भेद।

प्रकृतार्थ–वि. यौ. (सं.) उचित या ठीक-ठीक अर्थ, यथार्थ, उपयुक्त, मूल भाव।

प्रकृति–संज्ञा स्त्री. (सं.) स्वभाव मिजाज, माया, मूल गुण, प्रधान प्रवृत्ति।

प्रकृति भाव–संज्ञा पु. यौ. (सं.) स्वभाव, विकार-रहित दो पदों की सन्धि का नियम।

प्रकृतिशास्त्र–संज्ञा पु. यौ. (सं.) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक या स्वाभाविक बातों या पदार्थों का वर्णन हो, जैसे–भूगर्भ शास्त्र।

प्रकृतिसिद्ध–वि. यौ. (सं.) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्राकृतिक।

प्रकृतिस्थ–वि. (सं.) स्वाभाविक दशा में रहने वाला, प्राकृतिक।

प्रकृष्ट–संज्ञा पु. (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, उत्कृष्ट, मुख्य, प्रधान।

प्रकृष्टता–संज्ञा स्त्री. (सं.) श्रेष्ठता, उत्तमता।

प्रकोट–संज्ञा पु. (सं.) परिखा, परिकोटा।

प्रकोप–संज्ञा पु. (सं.) क्षोभ, अस्कि क्रोध,•बीमारी की ज्यादती, देह में बात, पित्त, कफ़ का रोगकारी बिकार, चंचलता।

प्रकोष्ठ–संज्ञा पु. (सं.) फाटक के पास की कोठरी, कोठा, बड़ा आँगन, हाथ की कलाई।

प्रकोपण–संज्ञा स्त्री. (सं.) एक अप्सरा।

प्रक्रम–संज्ञा पु. (सं.) उपक्रम, क्रम, सिलसिला, अनुष्ठान, आरम्भ, उद्योग, अवसर।

प्रक्रमण–संज्ञा पु. (सं.) भली-भाँति, घूमना, पार करना, आरम्भ करना, आगे बढ़ना। वि. **प्रक्रमणीय।**

प्रक्रमभंग–संज्ञा पु. (सं.) काव्य में यथेष्ठ क्रम के न होने का एक दोष, व्यतिक्रम, सिलसिला का नष्ट होना। संज्ञा स्त्री. **प्रक्रमभंगता**।

प्रक्रिया–संज्ञा स्त्री. (सं.) युक्ति, प्रकरण, दैवकर्म, क्रिया, देव चेष्टा, रीति, विधि प्रणाली।

प्रक्लिन्न–वि. (सं.) संतुष्ट, तृप्त, पसीना से डूबा हुआ या लथपथ, स्वेदमय।

प्रक्लेद–संज्ञा पु. (सं.) नमी, तरी।

प्रक्षय–संज्ञा पु. (सं.) क्षय, विनाश, खराबी, बरबादी।

प्रक्षाल–संज्ञा पु॰ (सं॰) प्रायश्चित्त।

प्रक्षालन–संज्ञा पु॰ (सं॰) धोना, पखारना, शुद्ध या साफ़ करना। वि॰ **प्रक्षालनीय, प्रक्षालित**। यौ॰ **पाद-प्रक्षालन**।

प्रक्षित–संज्ञा पु॰ (सं॰) फेंका हुआ। पीछे से मिलाया या बढ़ाया हुआ।

प्रक्षिप्त–वि॰ (सं॰) क्षेपक, वाद को मिलाया या बढ़ाया हुआ, फेंका हुआ।

प्रक्षेप-प्रक्षेपण–संज्ञा पु॰ (सं॰) फेंकना, छोड़ना, त्यागना, डालना, बिखराना, मिलाना, बढ़ाना। वि॰ **प्रक्षेपणीय**।

प्रखर–वि॰ (सं॰) निशित, खरा, तीक्ष्ण, तीखा, उग्र, पैना, तीव्र, प्रचंड, घोड़े की जीन या चार जामा। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रखरता**।

प्रखराँशु–वि॰ यौ॰ (सं॰) तीक्ष्ण या तीव्र किरण वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य।

प्रख्यात–वि॰ (सं॰) मशहूर, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी, कीर्तिमान।

प्रख्याति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रसिद्धि, ख्याति।

प्रगट–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रकट*) प्रकट, व्यक्त, विदित, प्रसिद्ध, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, उत्पन्न।

प्रगटना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रकटन*) व्यक्त या प्रकट होना, उत्पन्न या पैदा होना, प्रसिद्ध या विख्यात होना, प्रत्यक्ष या विदित होना। स॰ कि॰-**प्रकटाना** प्रे॰ रूप–**प्रगटपाना**।

प्रगटभ–वि॰ (सं॰) प्रवीण, चतुर, प्रतिभाशाली, साहसी, उत्साही, हाजिरजवाब, उद्धत, निर्भय, उद्दंड, दम्भी, ढीठ। **प्रगल्भता**)।

प्रगल्भ–वि॰ (सं॰) प्रतिभावान, जिसकी बुद्धि अवसर के अनुसार काम करे; साहसी, हिम्मतदार, धृष्ट, ढीठ; वाचाल कुशल, धृष्ट, दक्ष, अभिरुचि।

प्रगल्भवचना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह मध्या नायिका जो बातों-द्वारा अपना क्रोध और दुख प्रगट करे। **प्रगल्भा**।

प्रगाढ़–वि॰ (सं॰) दृढ़, अधिक, कठोर, कड़ा, गहरा या गाढ़ा। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रगाढ़ता**।

प्रगुण–वि॰ (सं॰) सरल, ऋजु, सीधा, उदार। संज्ञा, पु॰ उत्तम स्वभाव।

प्रगृहीत–वि॰ (सं॰) भली-भाँति ग्रहण किया हुआ, संधि-नियम के बिना उच्चरित।

प्रगृह्य–वि॰ (सं॰) ग्रहण करने के योग्य, संधि के नियम के बिना उच्चरण-योग्य।

प्रग्रह-प्रग्राह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तराजू की डोरी, पशु बाँधने की रस्सी, लगाम, **पगहा** (प्रान्ती॰), बंदी। संज्ञा, पु॰ (सं॰) रस्सी, डोरी, बंधन, धारण, ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढंग।

प्रघटक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिद्धान्त।

प्रघटना, परघटन*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रकटना*) प्रगटना, ज़ाहिर होना, पैदा या उत्पन्न होना। **प्रघटाना**। स॰ कि॰– **प्रघटाना**, प्रे॰ रूप–**प्रघटवाना**। वि॰ **प्रघट, प्रघट्टक**।

प्रघट्टक*–वि॰ दे॰ (सं॰) प्रगटना, घर्षण।

प्रघसु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रावण का एक सेनापति।

प्रघासा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) द्वार के बाहर का बरामदा या दालान, **चौपार** (आ॰)।

प्रचंड–वि॰ (सं॰) उग्र, भयानक, प्रखर, भयंकर, तेज, तीव्र, कठिन, तीक्ष्ण, असह्य, भारी, बड़ा। वि॰ स्त्री॰ **प्रचंडी**। संज्ञा, स्त्री॰ प्रचंडता। **मुहा॰ प्रचंड पड़ना**--तीव्र क्रोध करना, कुपित होना, लड़ना।

प्रचंडता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) उग्रता, प्रखरता, तीक्ष्णता, असह्यता, तीव्रता, भयंकरता।

प्रचंडत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उग्रता, प्रखरता।

प्रचंडमूर्ति या रूप–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) भयंकर आकार, **प्रचंडाकार**, प्रतापी, उग्र-स्वभाव या रूप, **प्रचंडाकृति**।

प्रचंडा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुर्गादेवी, चंडी।

प्रचलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रचार।

प्रचलित–वि॰ (सं॰) जारी, चालू, चलतू, चलने वाला, व्यवहृत।

प्रचार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चलना, उपयोग, फैलाव, रिवाज। (वि॰ **प्रचारक, प्रचारित**)।

प्रचारण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चलाना, जारी करना फैलाना। वि॰ (सं॰) **प्रचारणीय**।

प्रचारना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रचारण*) फैलाना, जारी करना, प्रचार करना, चलाना, घोषित करना, ललकारना।

प्रचुर–वि॰ (सं॰) बहुत, अधिक। संज्ञा, पु॰ **प्राचुर्य, प्रचुरता, प्रचुरत्व**।

प्रचुरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अधिकता, बहुतायत, ज्यादती, बाहुण्य।

प्रचुरत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आधिक्य, यथेष्ठता।

प्रचुर पुरुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चोर।

प्रचेता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रचेतस्*) वरुण, पशु का परपोला, प्राचीन वर्हि के दस लड़के।

प्रचेल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पीला चंदन।

प्रचेलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घोड़ा।

प्रचोदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रेरणा, आज्ञा, उत्तेजना, नियम। संज्ञा, पु॰ **प्रचोदक** वि॰ **प्रचोदित, प्रचोदनीय**।

प्रच्छक–वि॰ (सं॰) प्रश्न कर्त्ता, पूछने वाला।

प्रच्छद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्तरीय वस्त्र, चादर, **पिछोरा** (*प्रान्ती॰*)।

प्रच्छन्न–वि॰ (सं॰) ढका या छिपा हुआ, आच्छादित, गुप्त, लपेटा हुआ।

प्रच्छर्दिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वमन, उलटी, उद्गार, कै।

प्रच्छादन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ढाँकना, गुप्त करना, छिपाना, उत्तरीय वस्त्र विशेष। संज्ञा, पु॰ **प्रच्छादक,** वि॰ **प्रच्छादित, प्रच्छादनीय**।

प्रजंक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पर्यंक।

प्रजंत*–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *पर्यंत*) तक।

प्रजनन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सन्तानोत्पादन, दाई का काम, धात्री-कर्म (सुश्रु॰) जन्म।

प्रजरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अतशय जलना। संज्ञा, पु॰ **प्रजरक**। वि॰ **प्रजरित, प्रजरणीय**।

प्रजरना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *उप॰ प्र+जरना* हि॰) खूब जलना।

प्रजष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अतिवेग। वि॰ प्रजवा।

प्रजा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सन्तान, किसी राजा के राज्य का जन-समूह, रैयत, रियाया।

प्रजाकाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुत्र-प्राप्ति की इच्छा, वाला, **प्रजाकामी**।

प्रजाकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रजा उत्पन्न करने वाला, ब्रह्मा, **प्रजापति, प्रजाकारक**।

प्रजागरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अतिशय जागरण, बहुत जागना, अति चिन्ता। वि॰ **प्रजागारित**।

प्रजागरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अप्सरा।

प्रजातंत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा का चुना हुआ। शासक शासन करता हो, **प्रजाधिकार, जनतंत्र** (अं॰) **डेमोक्रेसी**।

प्रजाधिकारी राज्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रजातंत्र राज्य, जहाँ प्रजा का चुना हुआ व्यक्ति शासन करता हो; (अं॰) डैमोक्रेसी।

प्रजापति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सृष्टिकर्त्ता, विरंचि, दक्षादि, मनु, सूर्य, राजा। मेघ, अग्नि, पिता, घर का मुखिया।

प्रजारना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रजारण*) भली-भाँति जलाना।

प्रजावती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जेठे भाई की स्त्री, पुत्रवती स्त्री।

प्रजावान–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रजावत्*) लड़के वाला।

प्रजासत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रजातंत्र।

प्रजासन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रजासन*) प्रजा का भोजन, साधारण आहार।

प्रजित–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विजय करने वाला।

प्रजाहित–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) प्रजा की भलाई, प्रजा का उपकार, प्रजा का शुभ।

प्रजुलित*–वि॰ (सं॰) (**प्रज्वलित**) (सं॰)।

प्रजेश-प्रजेश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ताजा, तृप।

प्रजोग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रयोग*) प्रयोग।

प्रज्झटिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 16 मात्राओं की एक छन्द (पि॰) पद्धटिका, पद्धरी।

प्रज्ञ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ज्ञानी, विद्वान, पणिहुत।

प्रक्षता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विद्वता, पांडित्य।

प्रज्ञप्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निवेदन, संकेत, विज्ञापन, सूचना।

प्रज्ञा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ज्ञान, बुद्धि, समझ, सरस्वती।

प्रज्ञाचक्षु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धृतराष्ट्र। अन्य। वि॰ यौ॰ (सं॰) बुद्धिमान, ज्ञानी, ज्ञान-दृष्टि से देखने वाला।

प्रज्ञापारमिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गुणों की पराकाष्ठा (बौद्ध॰)।

प्रज्ञामय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विद्वान, पंडित, प्रज्ञावान, प्रज्ञावन्त।

प्रज्वलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुत ही जलना। वि॰ **प्रज्वलनीय, प्रज्वलित**।

प्रज्वलित–वि॰ (सं॰) जलता या धधकता हुआ, प्रकाशित, स्पष्ट।

प्रज्वलिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रज्झटिका*) पद्धरी, पद्धटिका।

प्रडीन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्षी की उड़ान, प्रथम, उड़ान, उड़ना।

प्रण–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) प्रतिज्ञा, पण (दे॰) हठ, दृढ़ निश्चय।

प्रणाख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नख का अग्र भाग।

प्रणत–वि॰ (सं॰) दीन, वस्त्र, झुका हुआ, कृत प्रणाम, नम्नीभूत,

नत (दे.)।

प्रणतपाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शरणागत-रक्षक, भक्तों, दासों या दीनों का पालन करने वाला।

प्रणति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रणाम, नमस्कार, नम्रता, दंडवत, विनय, बंदगी।

प्रणामन–संज्ञा, पु. (सं.) प्रणाम करना, नम्न होना, झुकना।

प्रणाम्य–वि. (सं.) प्रणाम करने योग्य। क्रि. स. पू. का. (सं.) प्रणाम करके।

प्रणय–संज्ञा, पु. (सं.) प्रेम-प्रार्थना, स्नहेह, विनय, प्रेम, मोक्ष, विश्वास।

प्रणयन–संज्ञा, पु. (सं.) बनाना, रचना, निर्माण करना।

प्रणयिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रमिका, प्यारी, प्रिया, प्रियतमा, स्त्री, पत्नी।

प्रणयी–संज्ञा, पु. (सं. *प्रणयिन्*) प्रेमी, स्नेही, प्रेम करने वाला, पति। स्त्री. **प्रणयिनी**।

प्रणव–संज्ञा, पु. (सं.) ओऊम्, ओंकार, ब्रह्म, ईश्वर।

प्रणावना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रणमन*) नमस्कार या प्रणाम करना, नम्रीभूत होना।

प्रणाम–संज्ञा, पु. (सं.) नमस्कार, प्रणिथात, **प्रनाम,** परनाम (दे.)।

प्रणामी–वि. (सं.) नमस्कारी, देवताओं के प्रणामार्थ दक्षिणा।

प्रणायक–संज्ञा, पु. (सं.) नेता, मुखिया।

प्रणाल–संज्ञा, पु. (सं.) पनाला, मोरी, नाली।

प्रणाली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जल के दो भागों का संयोजक, पनाली, मोरी, जल मार्ग, नाली, रीति, विधि, परम्परा, चाल, प्रथा, तरीका, ढंग, (अं.) सिस्टम।

प्रणाशन–संज्ञा, पु. (सं.) नाश करने का भाव या क्रिया। संज्ञा, पु. **प्रणाशक**–विनाशक। वि. **प्रणाशनीय**।

प्रणाशी, प्रणाश–संज्ञा, पु. (सं.) ध्वेस, नाश, उत्पात।

प्रणिधान–संज्ञा, पु. (सं.) समाष्ठि, रचा जाना, अत्यंत भक्ति, श्रद्धा या प्रेम, ध्यान, या मन की एकाग्रता, प्रयत्न।

प्रणिधि–संज्ञा, पु. (सं.) दूत, चर, प्रार्थना।

प्रणिपात–संज्ञा, पु. (सं.) प्रणाम।

प्रणिहित–वि. (सं.) रक्षित, स्थापित, समाहित, मनोयोग कृत।

प्रणी–वि. (सं. *प्रणित्*) अटल प्रण या दृढ़ प्रतिज्ञा वाला।

प्रणीत–संज्ञा, पु. (सं.) निर्मित, रचित, बनाया हुआ, संशोधित, भेजा या लाया हुआ।

प्रणेता–संज्ञा, पु. (सं. *प्रणेतृ*) निर्माण कर्त्ता, रचयिता. बनाने वाला। स्त्री. **प्रगोत्री**।

प्रणोद–वि. (सं.) परावर्ती, आधीन, लौकिक, संस्कारयुक्त।

प्रणेदित–वि. यौ. (स.) प्रेरित।

प्रतंचा*†–संज्ञा, स्त्री. (सं. *प्रत्यंचा*) धनुष की डोरी या रोदा, ताँत।

प्रतच्छ*†–वि. दे. (सं. *प्रत्यक्ष*) प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने, **परतच्छ** (दे.)।

प्रतनु–वि. (सं.) क्षीण, दुर्बल, बारीक, महीन, पतला, बहुत छोटा।

प्रतपन–संज्ञा, पु. (सं.) तप्त करना, उत्ताप, गर्मी।

प्रतप्त–वि. (सं.) उष्ण, गर्म, तपा हुआ।

प्रतर्दन–संज्ञा, पु. (सं.) दिवोदास का पुत्र काशी का राजा, विष्णु, एक ऋषि।

प्रतल–संज्ञा, पु. (सं.) सातवाँ पाताल।

प्रतान–संज्ञा, पु. (सं.) विस्तार, कुटिल तंतु।

प्रताप–संज्ञा, पु. (सं.), ताप, तेज, पौरुष, वल, प्रभाव, ऐश्वर्य, पराक्रम, गर्मी, वीरता।

प्रतापी–वि. (सं. *प्रतापिन्*) तेजवान, प्रभावी, ऐश्वर्य्यवान, सताने वाला।

प्रतारक–संज्ञा, पु. (सं.) धूर्त्त, छली, ठग, चालाक, बंचक।

प्रतारणा–संज्ञा, पु. (सं.) धूर्त्तता, छल, ठगी, चालाकी, चंचलता। स्त्री. प्रतारणा।

प्रतारित–वि. (सं.) ठगा या छला हुआ।

प्रतिंचा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रतंचिका*) धनुष की डोरी, रोदा, ताँत, ज्या, चिल्ला।

प्रति–अव्य. (सं.) ओर, सामने, एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाने से अर्थ देता है। विपरीत (प्रतिकूल), हर एक (प्रत्येक), सामने (प्रत्यक्ष), बदले में (प्रत्युपकार), मुकाविला में (प्रतिवादी), सामान (प्रतिनिधि)। सम्मुख, ओर, हेतु। संज्ञा, स्त्री. (सं.) नकल।

प्रतिकार–संज्ञा, पु. (सं.) बदला प्रति क्रिया में किया गया कर्म।

प्रतिकारक–संज्ञा, पु. (सं.) बदला चुकाने वाला।

प्रतिकितव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जुआरी का जोड़ीदार।

प्रतिकूप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खाई, परिखा।

प्रतिकूल–वि॰ (सं॰) विपरीत, विरुद्ध, उलटा। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रतिकूलता**।

प्रतिकृत–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया, चित्र, प्रतिकार, वदला।

प्रतिक्रिया–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वदला, प्रतिकार, प्रयत्न, उपाय, एक क्रिया के फल-स्वरूप दूसरी क्रिया।

प्रतिक्षणा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रत्येक क्षण।

प्रतिगृहीता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विवाहिता, पाणिगृहीता, धर्म-पत्नी।

प्रतिग्या–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **प्रतिज्ञा** (सं॰)।

प्रतिग्रह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वीकार, ग्रहण, पकड़ना, दान, विधिविधान, ग्रह विशेष, अधिकार में लेना, पाणिग्रहण, उपराग।

प्रतिग्रहण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आदान, स्वीकार, ग्रहण, दान लेना, बदला लेना, वस्तु से वस्तु बदलना। वि॰ **प्रतिग्रहणीय**।

प्रतिग्रहीत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बदला या दान लेने वाला, ग्रहण किया हुआ।

प्रतिघात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चोट या आघात के बदले में चोट या आयात करना, रुकावट, वाधा, टक्कर। यौ॰ **घात-प्रतिघात**।

प्रतिघाती–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रतिघातिन्*) शत्रु, वैरी। स्त्री॰ **प्रतिघातिनी**।

प्रतिचिकीर्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रतिकार करने या बदला चुकाने की इच्छा।

प्रतिचिकोर्षु–वि॰ (सं॰) प्रतिकार करने या बदला चुकाने की इच्छा वाला।

प्रतिचिंतन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिंतित का पुनाः चिंतन, बारम्बार ध्यान। संज्ञा, पु॰ **प्रतिचिंतक**, वि॰ **प्रतिचिंतनीय**।

प्रतिच्छा*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रतीक्षा*) प्रतीक्षा, वाट देखना।

प्रतिच्छाया–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रतिबिंब, परछाई, चित्र, प्रतिमूर्ति।

प्रतिछाँइ-प्रतिछाँह–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रतिच्छाया*) प्रतिच्छाया, प्रतिविंब, परछाई।

प्रतिज्ञा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पण, प्रण, हठ, दृढ़ निश्चय, शपथ, सौगन्ध, अभियोग, दावा, वह बात जिसे सिद्ध करना हो (न्याय॰)। **प्ररतिज्ञा, परतिग्या, प्रतिग्या** (दे॰)।

प्रतिज्ञात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतिज्ञा या वादा किया हुआ, स्वीकृत, अंगीकृत।

प्रतिज्ञान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रण, स्वीकार, प्रतिज्ञा, हठ, आग्रह।

प्रतिज्ञा-पत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वीकार-पत्र, इकरारनामा (फ़ा॰) शर्त या प्रतिज्ञा (निश्चय) सूचक पत्र।

प्रतिज्ञाहानि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक प्रकार की पराजय या निग्रह स्थान (न्याय॰)।

प्रतिदर्शन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दर्शन के पीछे दर्शन, पुनः पुनः दर्शन।

प्रतिदान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दान के बदले का दान, विनिमय, बदला, धरोहर या अमानत का लौटाना, परिवर्तन।

प्रतिदिन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रस्पद, अहरहः, दिन-दिन, प्रत्येक दिन।

प्रतिदेय–वि॰ (सं॰) पुनर्दातम्य, लौटाने का परस्पर झगड़ा या मुकाबिला; होड़

प्रतिद्वंद्वी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रतिद्वंद्विन्*) बराबर का लड़ने वाला, वैरी, शत्रु। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रतिद्वंद्विता**।

प्रतिध्वनि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गूंज, प्रति शब्द, एक बार सुनाई देकर फिर उत्पत्ति स्थान पर टकरा कर सुनाई देने वाला शब्द, दूसरे के भावों का दोहराना आना; (अं॰) ऐको

प्रतिना–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पृतना*) पृतना, सेना, फौज।

प्रतिनायक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नायक का प्रतिद्वन्द्वी नायक (नाट्य॰, काव्य)।

प्रतिनिधि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, दूसरे की ओर से काम करने पर नियुक्त व्यक्ति, स्थानापन्न। संज्ञा, पु॰ **प्रतिनिधित्व**।

प्रतिनिर्यातन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अपकार के बदले अपकार।

प्रतिनिवर्तन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लौटाना।

प्रतिपक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दूसरा पक्ष, शत्रु का पक्ष। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रतिपक्षता**।

प्रतिपक्षी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रतिपक्षिन्*) विरोधी, विपक्षी, शत्रु, दूसरे पक्ष वाला।

प्रतिपत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुख्याति, सम्मान, प्राप्ति, सम्भव,

गौरव, प्रगल्भता, पदप्राप्ति, प्रबोध, दान, प्रतिष्ठा, यश, ज्ञान, अनुमान, प्रतिपादन, स्वीकृति, निरूपण।

प्रतिपदा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) परिवा, प्रतिपद, किसी पक्ष की प्रथम तिथि।

प्रतिपन्न–वि॰ (सं॰) ज्ञात, अवगत, प्राप्त, स्वीकृत, निश्चित, प्रमाणित, सिद्ध, शरणागत, माननीय, भरापूरा।

प्रतिपादक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतिपादन या सिद्ध करने वाला, प्रकाशक, बोधक, ज्ञापक।

प्रतिपादन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्पादन, प्रतिपत्ति, बोधन, ज्ञापन, सप्रमाण कथन, प्रमाण, भलीभाँति समझना। वि॰ **प्रतिपादनीय, प्रतिपादित, प्रतिपाद्य**।

प्रतिपार*†–संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रतिपाल (सं॰)।

प्रतिपाल-प्रतिपालक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा, पोपक, रक्षक, पालन-पोपण करने वाला।

प्रतिपालन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पालन पोषण, रक्षण, निर्वाह। वि॰ **प्रतिपालनीय, प्रतिपालित, प्रतिपाल्य**।

प्रतिपालना*†–क्रि॰ स॰ (सं॰ *प्रतिपालन्*) बचाना, पलना-पोसना या रक्षा करना। "जो प्रतिपाले सोई नरेसू"–रामा॰।

प्रतिपाल्य–वि॰ (सं॰) पोषणीय, पालनीय, रक्षणीय, गोपनीय, पोष्य।

प्रतिपुरुष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतिनिधि। यौ॰ प्रत्येक पुरुष या मनुष्य।

पतिप्रसव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निषेध का पुनः विधान, एक बार रोक कर फिर आज्ञादान।

प्रतिफल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छाया, प्रतिबिंब, परिणाम, फल। वि॰ **प्रतिफलित**।

प्रतिबंध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अटकाव, रुकावट, रोक, विघ्न-बाधा, मनाही।

प्रतिबंधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मना करने या रोकने वाला, विघ्न-बाधा डालने वाला।

प्रतिबिंब–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतिच्छाया, परछाँही, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, दर्पण, चित्र। वि॰ **प्रतिबिंबित**।

प्रतिबिंबवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जीव के वस्तुतः ब्रह्म के प्रतिबिंब होने का सिद्धान्त (पेदा॰)। वि॰ **प्रतिबिंबवादी**।

प्रतिभट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समान वीर या शूर, प्रत्येक वीर, बराबर का योद्धा।

प्रतिभा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बुद्धि, ज्ञान, आत्म-शक्ति, मत्युत्पन्नमति, प्रणमता, दीक्षि, विशेष असाधारण मानसिक शक्ति, असाधारण ज्ञान या बुद्धि-बल।

प्रतिभावान्-प्रतिभाशाली–वि॰ (सं॰) प्रतिभा वाला, जिसमें प्रतिभा हो।

प्रतिभाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रत्येक अंश, राज्य के हिस्से।

प्रतिभू–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जामिनदार, मनौतिया, जमानत में पड़ने वाला/जमानत देने वाला

प्रतिम–अव्य॰ (सं॰) सदृश, तुल्य।

प्रतिमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रतिमूर्ति, पत्थर आदि की देव-मूर्ति, अनुकृति, प्रतिकूल, प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, चित्र, **प्रतिबिंब**, एक अर्थालंकार जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु के अभाव पर ससदृश्य, अन्य वस्तु या व्यक्ति का स्थापन और वर्णन हो।

प्रतिमान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया, समानता, तुल्यता, उदाहरण, दृष्टांत, हाथी के मस्तक का एक भाग।

प्रतिमार्ग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रत्येक मार्ग।

प्रतिमास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हर महीने।

प्रतिमुख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाटक की पाँच संधियों में से एक अंगसंधि (नाट्य॰)।

प्रतिमूर्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रतिमा, अनुकृति।

प्रतिमोक्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुक्ति प्राप्ति।

प्रतियत्न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लिप्सा, वाँछा, बंद या निग्रह करने का उपाय, गुणांतर का ग्रहण, संस्कार, संशोधन, प्रतिग्रह।

प्रतियोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विरोध, बैर, शत्रुता, विरुद्ध संयोग।

प्रतियोगिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चढ़ा, ऊपरी, प्रतिद्वंद्विता, विरोध शत्रुता।

प्रतियोगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शत्रु, बैरी, विरोधी, सहायक, हिस्सेदार।

प्रतियोद्धा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बराबर का योद्धा, शत्रु।

प्रतिरथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समान लड़ने वाला।

प्रतिरात्रि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रत्येक रात्रि।

प्रतिरूप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मूर्ति, प्रतिमा, प्रतिनिधि, चित्र। वि॰ समान, तुल्य, बराबर। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रतिरूपता**।

प्रतिरोध–संज्ञा, पु. (सं.) विरोध, रोक, रुकावट, बाधा, विघ्न। वि. **प्रतिरोधक**।

प्रतिरोधक-प्रतिरोधी–संज्ञा, पु. (सं.) चोर, तस्कर, ठग, डाकू, अपहारक।

प्रतिलिपि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लेख की नकल; (अं./कॉपी)।

प्रतिलोम–वि. (सं.) नीचे से ऊपर जाना, विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध, विलोम। (विलो. अनुलोम)। यौ. **प्रतिलोमानु-लोभ**–उलटा-सीधा, ऐसी रचना जिसे उलटा-सीधा दोनों ओर से पड़ सकें (चित्र काव्य)।

प्रतिलोम विवाह–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) उच्च वर्ण की कन्या या नीच वर्ण से विवाह।

प्रतिवस्तूपमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें पृथक् वाक्यों में उपमेय ओर उपमान के साधारण धर्म का कथन हो।

प्रतिवचन–संज्ञा, पु. (सं.) उत्तर, प्रत्युत्तर।

प्रतिवर्त्तन–संज्ञा, पु. (सं.) लौट आना।

प्रतिवर्ष–संज्ञा, पु. (सं.) प्रत्येक वर्ष।

प्रतिवाक्य–संज्ञा, पु. (सं.) उत्तर, प्रत्युत्तर।

प्रतिवाद–संज्ञा, पु. (सं.) खंडन, विरोध, विवाद, वह बात जो किसी मत या विपक्षी को झूठा सिद्ध करने के लिए कही जाय।

प्रतिवादी–संज्ञा, पु. (सं. *प्रतिवादिन्*) खंडन या प्रतिवाद करने वाला, उत्तर दाता, प्रतिपक्षी, वादी का विरोधी; मुद्दालेह।

प्रतिवाधक–संज्ञा, पु. (सं.) निवारक, प्रतिबंधक, बाधक या विघ्नकारीं

प्रतिवास–संज्ञा, पु. (सं.) पड़ोस, निकट-निवास, समीप पास।

प्रतिवासर–संज्ञा, पु. (सं.) प्रति दिन।

प्रतिवासी–संज्ञा, पु. (सं. *प्रति वासिन्*) **परांसी** (ग्रा.) पड़ोसी, पड़ोस का वासी।

प्रतिविधान–संज्ञा, पु. (सं.) प्रतिक्रिया, प्रतीकार, निवारण, उपाय।

प्रतिबिम्ब–संज्ञा, पु. (सं.) प्रतिच्छाया, परछाँही, प्रतिमा, प्रतिकृति, प्रतिमूर्ति। (वि. **प्रतिबिंबित**)।

प्रतिवेश–संज्ञा, पु. (सं.) घर के सामने का घर, पड़ोस।

प्रतिवेशी–संज्ञा, पु. (सं. *प्रतिवेशिन्*) पड़ोसी।

प्रतिशब्द–संज्ञा, पु. (सं.) प्रतिध्वनि। (अं./कॉपी)।

प्रतिशोध–संज्ञा, पु. (सं.) बदला, पलटा। वि. **प्रतिशोधक, प्रतिशोधी**।

प्रतिश्याय–संज्ञा, पु. (सं.) श्लेष्मा, शुकाम।

प्रतिश्रष–संज्ञा, पु. (सं.) अंगीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा, निश्चित कथन।

प्रतिश्रुत–वि. (सं.) प्रतिज्ञा या स्वीकृत किया हुआ; (अं.) कमिटेड

प्रतिषिद्ध–वि. (सं.) जिसके लिए रोक-टोक या मनाही की गई हो; जिसका निषेध हो।

प्रतिषेध–संज्ञा, पु. (सं.) निषेध, रोक-टोक, मनाही, खंडन एक अर्थालंकार, जिसमें किसी प्रसिद्ध अन्तर या निषध का ऐसा उल्लेख हो कि उससे कोई विशेष अर्थ प्रगट हो। वि. **प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक**।

प्रतिष्क–संज्ञा, पु. (सं.) दूत।

प्रतिष्ठा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्थापना, (देव-प्रतिमादि का) गौरव, मान-मर्यादा, कीर्ति, सत्कार, आदर, व्रत का उद्यापन, एक छंद, चार वर्णों का वृत्त (पिं.)।

प्रतिष्ठान–संज्ञा, पु. (सं.) बैठाना, रखना, स्थापित या प्रतिष्ठित करना, एक नगर। संस्थान, संघ (अं.) इंस्टीट्यूशन।

प्रतिष्ठानपुर–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्राचीन नगर जो गंगा-जमुना के संगम पर आजकल के झूँसी के पास था, गोदावरी-तट पर एक नगर (प्राचीन)।

प्रतिष्ठा-पत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सम्मान-पत्र, आनंद, सर्टीफिकट (अं.)।

प्रतिष्ठित–वि. (सं.) आदर-सत्कार प्राप्त, स्थापित किया हुआ, सम्मानित।

प्रतिसीरा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) परदा।

प्रतिस्पर्द्धा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लाग-डॉट, चढ़ा-ऊपरी, दूसरे से किसी कार्य में आगे बढ़ने या पत्र या इच्छा; होड़।

प्रतिस्पर्द्धी–संज्ञा, पु. (सं. *प्रतिस्पर्द्धिन्*) बराबरी या मुकाबला करने वाला।

प्रतिहत–वि. (सं.) निराश, प्रतिरुद्ध, निराकृत।

प्रतिहार–संज्ञा, पु. (सं.) डयोढ़ी, द्वार, दरवाजा, द्वारपाल, ड्योढ़ीवान, नक्कीय, जोरदार, छड़िया, समाचारादि देने वाला रजकर्मचारी (प्राचीन)।

प्रतिहारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रतिहारिन्*) डयोढ़ीवान, द्वारपाल। स्त्री॰ **प्रतिहारिणी**।

प्रतिहिंसा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बदला लेना, बैर चुकाना, प्रतिशोध। वि॰ **प्रतिहिंसक**।

प्रतीक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिन्ह, पता, मुख्य, रूप, आकृति, *प्रतिरूप, स्थानापन्न, प्रतिमा, व्याख्या में किसी श्लोकादि का उद्धृत एक अंश या चरण।*

प्रतीकाश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तुल्य. समान, सदृश, तुलना, उपमा।

प्रतीकोपासना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) किसी विशेष वस्तु में ईश्वर की भावना से उसे पूजना मूर्ति-पूजा।

प्रतीक्षक–संज्ञा, पु॰ (सं॰ राह देखने वाला)।

प्रतीक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किसी कार्य के होने या किसी के आने की राह या बाट देखना, प्रत्याशा, औसेर करना, ठहरे रहना, आसरा। वि॰ पुत्री वेता।

प्रतीची–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पश्चिम दिशा। (*विलो॰* प्राची)।

प्रतीचीन–वि॰ (सं॰) पश्चिम दिशा में उत्पन्न या स्थित, हाल का, आवाचीन। (*विलो॰* प्राचीन)।

प्रतीच्य–वि॰ (सं॰) पश्चिमी। (*विलो॰* प्राच्य)।

प्रतीत–वि॰ (सं॰) विदित, ज्ञात, प्रसिद्ध, आनन्द, प्रसन्न।

प्रतीति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विश्वास, ज्ञान, प्रसन्नता।

प्रतीप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महाराज शान्तनु के पिता, एक अर्थालंकार जिसमें उपमान को ही उपमेय बनाते या उपमेय से उपमान को तिरस्कृत-सा दिखाते हैं। वि॰ प्रतिकूल, विपरीत, आशा से विरुद्ध।

प्रतीयमान–वि॰ (सं॰) प्रतीत या ज्ञात होता हुआ, जान पड़ता हुआ।

प्रतुद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चोंच से तोड़ कर भक्ष्य खाने वाले पक्षी।

प्रतोद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चाबुक, पैना, सामगान विशेष।

प्रतोली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किले या दुर्ग का द्वार, रास्ता, गली, चौड़ी सड़क, राज-मार्ग।

प्रत्र–वि॰ (सं॰) प्राचीन, पुरातन।

प्रत्रतत्व–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुरातत्व।

प्रत्यंचा†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰*प्रतश्विका*) धनुष की डोरी या ताँत, **चिल्ला** (*प्रान्ती*)।

प्रत्यक्ष–वि॰ (सं॰) इन्द्रियों ओर उनके अर्थों से होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान, आँखों के आगे या सामने, इन्द्रियों से ज्ञात, **प्रतच्छ, परतच्छ** (दे॰)। संज्ञा, पु॰–चार प्रमाणों में से एक प्रमाण (व्या॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **प्रत्यक्षता**।

प्रत्यक्षदर्शी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *प्रत्यक्ष दर्शिन्*) प्रत्यक्ष रूप में *अपनी आँखों से देखने वाला, साक्षी, गवाह।*

प्रत्यक्षवादी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *प्रत्यक्षवादिन्*) अन्य प्रमाणों को न मान कर केवल प्रत्यक्ष प्रमाण ही को मानने वाला व्यक्ति। संज्ञा, पु॰ यौ॰ प्रत्यक्षवाद। (स्त्री॰ **प्रत्यक्षवादिनी**)।

प्रत्यनीक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बैरी, विरोधी, प्रतिपक्षी, एक अर्थालंकार, जिसमें किसी के सम्बन्धी या पक्षवाले के प्रति हित या अहित के करने को कथन हो।

प्रत्यपकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अपकार के बदले अपकार (विलो॰ **प्रत्युपकार**)।

प्रत्यभिज्ञा– संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्मृति की सहायता से उत्पन्न ज्ञान।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक दर्शन जिसमें महेश्वर ही परमेश्वर माने गए हैं, महेश्वर सम्प्रदाय।

प्रत्यभिज्ञान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्मृति-द्वारा होने वाला ज्ञान। वि॰ **प्रत्यभिज्ञा**।

प्रत्यभियोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रत्यपराध, अपराध पर अपराध, अपराधी होकर फिर अपराध करना।

प्रत्यभिलाष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अभिलाष पर अभिलाष, पुनरभिलाषा।

प्रत्यभिवाद-प्रत्यभिवादन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रणाम के करने पर दिया गया आशीर्वाद।

प्रत्यय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निश्चय, विश्वास, विचार, ज्ञान, शपथ, अधीन, हेतु, आचार, छिद्र, बुद्धि, प्रमाण, व्याख्या, प्रसिद्धि, प्रख्याति, लक्षण, आवश्यकता, चिन्ह, निर्णय, सम्मति, छन्दों के भेद और उनकी संख्या जानने की 9 रीतियों (पिं॰), वे वर्ण या वर्ण समूह जो किसी धातु या अन्य शब्द के अन्त में उसके अर्थ में कुछ विशेषता लाने को लगाए जाते हैं (व्या॰)।

प्रत्यर्थी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रति+अर्थिन्*) वैरी, शत्रु, प्रतिवादी।

प्रत्यर्पण–वि॰ (सं॰) पुनर्दान, लौटाना।– संधि-देशों द्वारा

एक दूसरे के अपराधियों को समर्पित करने की संधि अं. एक स्टूडीशन ट्रीटी या पैक्ट।

प्रत्यवाय–संज्ञा, पु. (सं.) पाप, दोष, अपराध, अनष्टि, विघ्न, व्याघात।

प्रत्यह–अव्य. (सं.) प्रतिदिन।

प्रत्याख्यान–संज्ञा, पु. (सं.) निरसन, निराकरण, खंडन, अस्वीकार।

प्रत्यागत–वि. (सं.) जाकर लौटा हुआ।

प्रत्यागमन–संज्ञा, पु. (सं.) आकर फिर आना, वापस लौट आना, दोबारा आना।

प्रत्यादेश–संज्ञा, पु. (सं.) निरसन, निराकरण, खण्डन, देवता की आज्ञा, उपदेश, देववाणी, परामर्श।

प्रत्यावर्त्तन–संज्ञा, पु. (सं.) लौट आना।

प्रत्याशा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अभिलाषा, आशा, विश्वास, भरोसा, प्रतीक्षा।

प्रत्याशी–वि. (सं. *प्रत्याशिन्*) अभिलाषी, आकांक्षी, भरोसे वाला। (अं.) केण्डीडेट।

प्रत्यासन्न–वि. (सं.) निकटवर्ती, समीपस्थ, समीप रहने वाला।

प्रत्याहार–संज्ञा, पु. (सं.) इन्द्रिय-निग्रह, इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण करना (अष्टांग योग), व्याकरण में अक्षरों का संक्षेप रूप।

प्रत्युत– अव्य. (सं.) बरुक, बरु (ग्रा.)। वरन्, वल्कि, इसके विपरीत।

प्रत्युत्तर–संज्ञा, पु. (सं.) उत्तर पाने पर दिया हुआ उत्तर, उत्तर का उत्तर। यौ. **उत्तर प्रत्युत्तर**।

प्रत्युत्पन्न–वि. (सं.) जो फिर से या ठीक समय पर उत्पन्न हो, प्रस्तुत। यौ. **प्रत्युत्पन्नमति**–तत्परज्ञानी, तत्पर बुद्धिवाला, तत्कालिक, बुद्धि, तुरन्त उपयुक्त बात या काम सोचने वाला।

प्रत्युपकार–संज्ञा, पु. (सं.) उपकार के बदले में किया गया उपकार। वि. **प्रत्युपकारी, प्रत्युपकारक**।

प्रत्यूष–संज्ञा, पु. (सं.) सवेरा, तड़का।

प्रत्यूह–संज्ञा, पु. (सं.) विघ्न-वाधा, आपद, अटकाव, रुकावट।

प्रत्येक–वि. (सं.) बहुतों में सेक हर एक, अलग-अलग, पृथक्-पृथक्।

प्रथम–वि. (सं.) पहला, अव्वल, पूर्व, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम। क्रि. वि. (सं.) आगे, पहिले। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **प्रथम पुरुष**–परमेश्वर, व्याकरण के पुरुषवाची सर्वनाम में उत्तम पुरुष।

प्रथमतः–संज्ञा, पु. (सं.) ज्येष्ठ, बड़ा।

प्रथमतः–क्रि. वि. (सं.) पहले से, सबसे पहले, प्रथम वार।

प्रथमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मदिरा, (तान्त्रिक) प्रथम या कर्त्ताकारक (व्या.)।

प्रथमी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) पृथ्वी (सं.)।

प्रथा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चलन, व्यवहार, चाल, रीति, नियम, प्रणाली, रिवाज।

प्रथित्–वि. (सं.) विदित, प्रसिद्ध।

प्रथु–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पृथु*) पृथु, विष्णु। वि. बड़ा, मोटा, पीन, स्थूल।

प्रद–वि. (सं.) दाता, दानी, उदार, देने वाला (यौ. में सुखप्रद)।

प्रदच्छिन (प्रदच्छिना)–संज्ञा, पु. (स्त्री.) दे. (सं. **प्रदक्षिणा, प्रदक्षिणा**) परिक्रमा, किसी के चारों ओर घूमना।

प्रदक्षिणा, प्रदक्षिणा–संज्ञा, पु. (स्त्री.) (सं.) किसी देवता (देव-मूर्ति) या महापुरुष के चारों ओर घूमना, परिक्रमा, परिक्रमण।

प्रदत्त–वि. (सं.) दिया हुआ।

प्रदर–वि. (सं.) स्त्रियों का प्रमेह रोग जिसमें गर्भाशय से श्वेत या लाल लसीला-सा पानी गिरता है।

प्रदर्शक–संज्ञा, पु. (सं.) दिखलाने या देखने वाला, दर्शक।

प्रदर्शन–संज्ञा, पु. (सं.) दिखलाने का कार्य। वि. **प्रदर्शनीय;** (अं.) परफोरमेंस।

प्रदर्शनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वह श्याम जहाँ लोगों को दिखलाने के हेतु भाँति-भाँति की वस्तुएँ रखी जावें, नुमाइश।

प्रदर्शित–वि. (सं.) जो दिखलाया गया हो, दिखलाया हुआ।

प्रदल–संज्ञा, पु. (सं.) वाण, तीर, शर।

प्रदाता–वि. (सं. *प्रदस्तु*) देने वाला, दानी।

प्रदान–संज्ञा, पु. (सं.) दान, विवाह में देना, भेंट।

प्रदायक–संज्ञा, पु. (सं.) देने वाला, दानी, दाता। स्त्री. **प्रदायिका**।

प्रदायी–संज्ञा, पु. (सं. *प्रदायिन्*) प्रदायक, देने वाला, दाता, दानी। स्त्री. **प्रदायिनी**।

प्रदाह–संज्ञा, पु. (सं.) शारीरिक जलन।

प्रदिशा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) विदिशा, कोन।

प्रदीप–संज्ञा, पु॰ (सं.) प्रकाश, दीपक, दिआ।

प्रदीपक–संज्ञा, पु॰ (सं.) प्रकाशक, दीपक, दिया। स्त्री॰ **प्रदीपिका**।

प्रदीपति*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रदीप्ति*) प्रकाश उलेजा, कांति, **चमक**, ज्योति, आभा।

प्रदीपन–संज्ञा, पु॰ (सं.) प्रकाश या उजाला (उज्ज्वल) करना, चमकाना।

प्रदीप्त–वि॰ (सं.) प्रकाशवान, रोशन, जगमगाता हुआ, चमकीला।

प्रदीप्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) प्रकाश, उजेला चमक, आभा, कांति, प्रतिभा, प्रभा।

प्रदुमन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रद्युम्न*) प्रघुन्न, श्री कृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र।

प्रदेय–वि॰ (सं.) दान देने योग्य।

प्रदेश–संज्ञा, पु॰ (सं.) अपनी पृथक् रीति-रस्म, भाषा तथा शासन विधि वाला देश, भाग, सूबा, प्रांत, स्थान, अवयव, अंग।

प्रदेशनी-प्रदेशिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) तर्जनी नामक अँगुली।

प्रदोष–संज्ञा, पु॰ (सं.) सूर्यास्त या सायंकाल, संध्या, त्रयोदशी का व्रत जिसमें संध्या को शिव-पूजन कर खाते हैं, बढ़ा अपराध या दोष। स्त्री॰ **प्रदोषा** रात्रि।

प्रद्युम्न–संज्ञा, पु॰ (सं.) कामदेव, श्री कृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र, **प्रदुमन** (दे.)।

प्रद्योत–संज्ञा, पु॰ (सं.) रश्मि, किरण, दीप्ति, कांति, आभा, प्रभा।

प्रद्योतन–संज्ञा, पु॰ (सं.) सर्यू, दीप्ति, चमक। संज्ञा, पु॰ **प्रद्योतक** (सं.), वि॰ **प्रद्योतित, प्रद्योतनीय**।

प्रधान–वि॰ (सं.) मुख्य। संज्ञा, पु॰ (सं.) सरदार, मुखिया, मंत्री, सचिव, सभापति, माया, प्रकृति, परधान (दे.)। संज्ञा, पु॰ **प्राधान्य**।

प्रधानता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) प्रधान का भाव, प्रधान का कार्य, धर्म या पद।

प्रधानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *प्रधान+ई प्रत्य.*) प्रधान का कार्य या पद।

प्रधि–संज्ञा, पु॰ (सं.) पहिये की धुरी।

प्रधी–वि॰ (सं.) उत्कृष्ट या श्रेष्ठ बुद्धि युक्त।

प्रध्वंस–संज्ञा, पु॰ (सं.) नाश, विनाश, नष्ट-भ्रष्ट। यौ॰ **प्रध्वंसाभाव**। वि॰ पु॰ प्रध्वंसक या प्रध्वंसी, स्त्री॰ **प्रध्वंसिका** या **प्रध्वंसिनी**। वि॰ **प्रध्वंसनीय**।

प्रन*†–संज्ञा, पु॰ (दे.) *प्रण* (सं.)।

प्रनति*†–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) **प्रणति** (सं.)।

प्रनमना, प्रनवना*† –क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रणमन*) प्रणमना, प्रणाम करना (दे.)।

प्रनाम*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रणाम*) प्रणाम, नमस्कार, **परनाम**।

प्रनामी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रणामी=प्रणामिन्*) प्रणाम करने वाला (दे.)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रणाम+ई प्रत्य.*) गुरु, विप्रादि बड़ों को प्रणाम करते समय दी गई दक्षिणा।

प्रनास–संज्ञा, पु॰ (दे.) प्रगाश (पु.)।

प्रनासी–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रणाशी=प्रणाशिन्*) नाशवान, नश्वर, अनित्य।

प्रतिपात–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रणिपात*) प्रणाम, नमस्कार।

प्रपंच–संज्ञा, पु॰ (सं.) ढोंग, आडंबर, भव-जाल, झमेला, झगड़ा, जंजाल, विस्तार, संसार सृष्टि, छल, **परपंच** (दे.)। यौ॰ का प्रबंध।

प्रपंची–वि॰ (सं॰ *प्रपंचिन्*) ढोंगी, आडंबरी, कपटी। प्रपंच करने वाला, छली, परपंची (दे.)।

प्रपत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) अनन्य भक्ति या शरणागत होने की भावना।

प्रपन्न–वि॰ (सं.) शरणागत, आश्रित, प्राप्त।

प्रपा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) पौसरा, पौसला, प्याऊ।

प्रपाठक–संज्ञा, पु॰ (सं.) वेदादि या श्रौत ग्रन्थों के अध्यायों का एक भाग।

प्रपात–संज्ञा, पु॰ (सं.) पर्वतों का पार्श्व या किनारा, ऊँचे से गिरती जल-धार, दरी, झरना, सहसा नीचे गिरना।

प्रपितामह–संज्ञा, पु॰ (सं.) परदादा, परमेश्वर, परब्रह्म। (स्त्री॰ **प्रपितामही**)।

प्रपीड़न–संज्ञा, पु॰ (सं.) अत्यंत कष्ट देना। संज्ञा, पु॰ प्रपीड़क। वि॰ प्रपीड़ित, **प्रपीड़नीय**।

प्रपुंज–संज्ञा, पु॰ (सं.) समूह, झुड।

प्रपुत्र–संज्ञा, पु॰ (सं.) पुत्र का पुत्र, पोता।

प्रपुना–संज्ञा, पु. (सं.) पुनर्णवा (सं.) एक औषधि, **पुनर्नवा**।

प्रपौत्र–संज्ञा, पु. (सं.) परपोता, पुत्र का पोता, पोते का लड़का। (स्त्री. **प्रपौत्री**)

प्रफुड़ना, प्रफुलना*–क्रि. अ. दे. (सं. *पफुल्ल*) फूलना, खिलना, प्रसन्न होना।

प्रफुला*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रफुल्ल*) कमलिनी, कुमुदनी, कुई, कमल।

प्रफुलित*–वि. दे. (सं. *प्रफुल्ल*) फूला या खिला हुआ, कुसुमित, विकसित, प्रसन्न।

प्रफुल्ल–वि. (सं.) संज्ञा, विकसित या फूला हुआ, आनंदित, पुष्पयुक्त। संज्ञा, स्त्री. **प्रफुलता**।

प्रफुल्लित–वि. (सं.) बिका खिला या फूला हुआ, **प्रफुलित** (दे.)।

प्रबंध–संज्ञा, पु. (सं.) निबंध लेख या काव्य, उपाय, आयोजन, बंदोबस्त, योजना, मजमून, व्यवस्था, बंधान। वि. प्रबंधक। यौ. **प्रबंधकर्ता**।

प्रबंधकल्पना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सत्या-सत्य कथा, तथ्यातथ्य कल्पित निबंध।

प्रबर–संज्ञा, क्रि. (सं.) अतिश्रेष्ठ।

प्रबल–वि. (सं.) महान्, अति बली, प्रचंड, उग्र, घोर। स्त्री. **प्रबला**। स्त्री, पु. प्राबल्य, संज्ञा, स्त्री. **प्रबलता**।

प्रबाल–संज्ञा, पु. (सं.) विद्रुम, मूँगा।

प्रबुद्ध–वि. (सं.) पंडित, ज्ञानी, खिला हुआ। जगा हुआ, सचेत। संज्ञा, स्त्री. **प्रबुद्धता**।

प्रबोध–संज्ञा, पु. (सं.) परबोध (दे.) जागना, पूर्ण बोध या ज्ञान, समझाना, चेतावनी, तसल्ली, सान्त्वना। (वि. **प्रबोधक, प्रबोधित**)।

प्रबोधन–संज्ञा, पु. (सं.) जागना, लगाना, जताना, समझाना, सात्वना, ज्ञान देना, ज्ञान, यथार्थ बोध, चेताना, चेत, सावधान करना। वि. **प्रबोधनीय, प्रबोधित**।

प्रबोधना*–कि. स. दे. (सं. *प्रबोधन*) नींद से जगाना या उठाना, सचेत करना, जताना, सिखाना, समझाना-बुझाना, सात्वना देना, पाठ पढ़ाना, **परबोधना** (दे.)।

प्रबोधिता–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक वर्ण वृत्ति, मंजुभाषिणी, (पिं.), प्रियंवदा, मुगंदिनी।

प्रबोधिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कार्तिक शुक्रा, देवोत्थान एकादशी। वि. स्त्री. प्रबोध देने वाली।

प्रभंजन–संज्ञा, पु. (सं.) प्रबल धातु, आँधी, नाश, तोड़फोड़, नष्ट-भ्रष्ट। वि. **प्रभंजनीय, प्रभंजक**।

प्रभंजनजाया–संज्ञा, स्त्री. वि. (सं.) वायु-पत्नी। संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रबंधन*) हनुमान, भीमसेन, **प्रभंजनाजात**।

प्रभंजनसुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हनुमान् जी, भीमसेन, **प्रभंजनात्मज**।

प्रभद्र–संज्ञा, पु. (सं.) नीम का पेड़।

प्रभद्रक–संज्ञा, पु. (सं.) एक वर्ण वृत्त। (पिं.)। स्त्री. **प्रभद्रिका**।

प्रभव–संज्ञा, पु. (सं.) एक संवत्सर (ज्यो.) उत्पत्ति का हेतु, जन्मस्थान, सृष्टि, उत्पत्ति, जन्म, पराक्रम, आकार।

प्रभा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कांति, आभा, प्रकाश, प्रतिभा, सूर्य की एक स्त्री, कुवेर की पुरी, एक गोपी, एक द्वादशाक्षर वृत्त (पिं.), मंदाकिनी।

प्रभाउ*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रभाव*) प्रभाव, **परभाष, परभाउ, प्रभाऊ** (दे.)।

प्रभाकर–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, सागर, विभाकर; एक विद्या-उपाधि।

प्रभाकीट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जुगुनू।

प्रभात–संज्ञा, पु. (सं.) सवेरा, तड़का, परभात (दे.)। वि. **प्राभातकी**।

प्रभाती–संज्ञा, स्त्री. (सं. *प्रभात*) सवेरे या तड़के गाने का एक गीत, **परभाती** (दे.)।

प्रभाव–संज्ञा, पु. (सं.) शक्ति, बल, असर, सामर्थ्य, यथेष्ट कार्य करने-कराने का अधिकार, दबाव, उजव, माहात्म्य, महिमा, महत्ता, **परभाव** (दे.)। प्रभावी, प्रभावित।

प्रभावती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सूर्य की एक स्त्री, 13 वर्णों का एक छंद, रुचिरा (पिं.) एक दैत्यकन्या। वि. स्त्री. प्रभा था प्रभाव वाली।

प्रभास–संज्ञा, पु. (सं.) कांति, प्रकाश, ज्योति, दीप्ति, सोम नामक एक प्राचीन तीर्थ।

प्रभासना*–कि. स. दे. (सं. *प्रभासन*) शासित या प्रकाशित होना, दिखाई या समझ पड़ना। संज्ञा, पु. **प्रभासन**।

प्रभु–संज्ञा, पु. (सं.) स्वामी, नायक, अधिपति, परमेश्वर, **प्रभू, परभू** (दे.)।

प्रभुता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) महत्व, वैभव, साहिसी, शासनाधिकार,

हुकूमत, ऐश्वर्य।

प्रभुताई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रभुता*) महत्व, वैभव, ऐश्वर्य, साहिबी।

प्रभुत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रभुता, प्रभुताई।

प्रभू*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रभू*) प्रभु।

प्रभूत–वि॰ (सं॰) उत्पन्न, उद्‌भूत, प्रचुर, बहुत, उन्नत। संज्ञा, पु॰ पंचभूत, पंच तत्व।

प्रभूति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रभाव, उत्पत्ति, उन्नति, प्रचुरता, बहुलता।

प्रभृति–अव्य॰ (सं॰) इत्यादि, आदि।

प्रभेद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अलगाव, भिन्नता, अंतर, भेद, गुप्त बात।

प्रभेव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रभेद*) प्रभेद।

प्रमत्त–वि॰ (सं॰) पागल, नशे में चूर, मतवाला, मस्त, बदहोश। संज्ञा, हि॰ **प्रेमलता।**

प्रमथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मंथन या पीड़ित करने वाला, शिव के गण या सेवक।

प्रमथन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वध या नाश करना, दुखी करना, भवना, प्रमंथन। वि॰ **प्रमथनीय**।

प्रमथगण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव जी का सेवक।

प्रमथना-प्रमथ-पति-प्रमथाक्षिप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव जी, प्रमथेश।

प्रमद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हर्ष, प्रसन्नता, मस्ती, मतवालापन। वि॰ मस्त, मतवाला।

प्रमदा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) युवती। स्त्री॰ मस्त।

प्रमर्दन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भली-भाँति मलना, रौंदना, कुचलना। सं॰ अति मर्दन कर्त्ता।

प्रमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) यथार्थ बोध, शुद्ध ज्ञान (व्याय), माप, नाप।

प्रमाण, प्रमान (दे॰)–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी बात को सिद्ध करने वाली बात, सबूत, एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी का चमत्कृत कथन हो, सत्यता का साधन, सम्मान, निश्चय का हेतु, प्रतीति, मानने योग्य बातें, माननीय बात या वस्तु, मान, मर्यादा, प्रामाणिक बात, इयत्ता, सीमा। वि॰ यौ॰ **प्रमाण-पुष्ट**। वि॰ ठीक, सत्य, सिद्ध, बढ़ाई, आदि में समान, चरितार्थ, प्रमाणित। यौ॰ प्रमाण-पत्र, अव्य॰ तक, पर्यंत।

प्रमाणना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रमाण+ना प्रत्य॰*), प्रमानना (दे॰) प्रमाण मानना, ठीक समझना।

प्रमाण-पत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी बात के प्रमाण का लेख-पत्र, सनद, सार्टीफिकेट (अं॰)।

प्रमाणिक–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रामाणिक*) मानने योग्य, प्रमाणों-द्वारा सिद्ध, सत्य, ठीक।

प्रमाणिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नगस्वरूपिणी या एक वर्णवृत्त।

प्रमाणित–वि॰ (सं॰) साबित, निश्चित, ठीक प्रमाणों से सिद्ध, **प्रमाणपुष्ट**।

प्रमाता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रमातृ*) प्रमाणों द्वारा सिद्ध करने वाला, साबित करने वाला, प्रमा का ज्ञान, ज्ञानकर्त्ता, आत्मा या चेतन, जाँच, साक्षी, दृश्य, प्रमायुक्त। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ पिता की माता) दादी।

प्रमातामह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मातामह या नाना के पिता, परनाना। (स्त्री॰ **प्रमातामही**)।

प्रमाथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रमथन, बलपूर्वक हरण, विलोडन, निकालना। क्रि॰ स॰ (दे॰) **प्रमाथना**।

प्रमाथी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रमाथिन्*) पीड़नकर्त्ता, मारने या मथने वाला, देह ओर इन्द्रियों को दुख पहुँचाने वाला।

प्रमाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भ्रम, भूल, धोखा, बेहोशी, असावधानी, समाधि के साधनों को ठीक न जान उनकी भावना न करना (योग)।

प्रमादिक–वि॰ (सं॰) भ्रमात्मक, भूलचूक करने वाला, भ्रमीभूत। स्त्री॰ **प्रमादिका**।

प्रमादी–वि॰ (सं॰ *प्रमादिन्*) प्रमाद-युक्त, भूल करने वाला, असावधान, नशेबाज। स्त्री॰ **प्रमादिनी**।

प्रमान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रमाण*) प्रमाण।

प्रमानना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रमाण+ना प्रत्य॰*) प्रमाण मानना, साबित या निश्चित करना, स्थिर करना।

प्रमानी*– वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रामाणिक*) मानने या प्रमाण के योग्य, माननीय।

प्रमित–वि॰ (सं॰) ज्ञात, विदित, निश्चित, थोड़ा, परिमित।

प्रमिताक्षरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) द्वादशाक्षरा एक वर्णिक वृत्त (पिं॰)।

प्रमिति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सत्यबोध या ज्ञान।

प्रमीला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शिथिलता, ग्लानि, संज्ञा, थकावट; वि॰ आधारित।

प्रमुख–वि॰ (सं॰) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, प्रतिष्ठित, अगुआ, माननीय। अव्य॰ इत्यादि।

प्रमुदित–वि॰ (सं॰) प्रलक्ष, हर्षित।

प्रमुदितवदना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक द्वादशाक्षर छंद, मंदाकिनी (पिं॰)। वि॰ स्त्री॰ प्रसन्न मुखी।

प्रमेय–वि॰ (सं॰) प्रमाण का विषय या साध्य, प्रतिपादन करने-योग्य, जो प्रमाण द्वारा सिद्ध हो सके, निर्धारणीय, जिसका मान कहा जा सके। संज्ञा, पु॰ प्रमाण द्वारा बोधनीय।

प्रमेह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक रोग जिसमें मूत्र-द्वारा शरीर का क्षीण धातु या शुक्र निकलता है; डाइबिटीज (अं॰)।

प्रमोद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आनन्द, हर्ष।

प्रमोदा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आठ सिद्धियों में एक-से-एक सिद्धि (सांख्य॰)।

प्रयत्न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उद्देश्य-पूर्ति के लिए किया उपाय, चेष्टा, प्रयास, परिश्रम, वर्णोच्चारण किया (व्या॰), क्रिया (प्राणियों की), जीवों का व्यापार (न्याय॰)।

प्रयत्नवान–वि॰ (सं॰ *प्रयत्नवत्*) उपाय करने वाला। स्त्री॰ **प्रयत्नवती**।

प्रयाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गंगा-जमुना के संगम पर एक तीर्थ, इलाहाबाद।

प्रयागवाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रयाग+वाला* हि॰ *प्रत्य*) प्रयाग का पंडा।

प्रयाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यात्रा, प्रस्थान, गमन, युद्ध-यात्रा, हमला, चढ़ाई। यौ॰ **महाप्रवाण**–महाप्रस्थान, मोक्ष, मृत्यु।

प्रयान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रयाण*) प्रयाण।

प्रयास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उद्योग, उपाय, प्रयत्न, श्रम।

प्रयुक्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्मिलित, संयोजित, कार्य में प्रचलित, व्यवहृत।

प्रयुत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दश लाख की संख्या।

प्रयोक्ता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रयोक्त*) व्यवहार या प्रयोग करने वाला, ऋणदाता।

प्रयोग–वि॰ (सं॰) किसी पदार्थ को किसी कार्य में आना, व्यवहार, साधन, आयोजन, बरता जाना, क्रिया का विधान, सादृश, मोहनादि 12 तांत्रिक उपचार, पद्धति, यज्ञादि के अनुष्ठान की बोध-विधि अभिनय, दृष्टांत, विधि, निदर्शन।

प्रयोगातिशय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रस्तावना का एक भेद (नाट्य॰)।

प्रयोगी, प्रयोजक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अनुष्ठान या प्रयोग-कर्त्ता, प्रदर्शक, प्रेरक।

प्रयोजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अभिप्राय, अर्थ, हेतु, उद्देश्य, कार्य, आशय, व्यवहार, तात्पर्य, उपयोग, कारण। वि॰ **प्रयोजननीय, प्रयोजक, प्रयोजित**।

प्रयोजनवतीलक्षण–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रयोजन-द्वारा वाच्यार्थ से पृथक् अर्थ सूचक लक्षणा (काव्य॰)।

प्रयोजनीय–वि॰ (सं॰) कार्य का मतलब का, आवश्यकीय, उपयोगी।

प्रयोज्य–वि॰ (सं॰) कार्य में लाने या प्रयोग करने के योग्य।

प्ररोचना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रुचि या चाह उत्पन्न करना, बढ़ाना, उत्तेजना, नट, या सूत्रधारादि का प्रस्तावना के बीच में नाटककार या नाटक का प्रशंसात्मक परिचय देना (नाटय)।

प्ररोहण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चढ़ाव, जमना, उगना, आरोहण। वि॰ **प्ररोहक, प्ररोहित, प्ररोहणीय**।

प्रलंब–वि॰ (सं॰) लटकता या टँगा हुआ, लंबा, निकला या टिका हुआ। संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक दैत्य।

प्रलंबन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सहारा, अवलंबन। वि॰ **प्रलंबनीय, प्रलंबित, प्रलंबी**।

प्रलंबी–वि॰ (सं॰ *प्रलंबिन्*) लटकने या सहारा लेने वाला। **प्रलंबिनी**।

प्रलपित–वि॰ (सं॰) कथित, उक्त, व्यर्थ का मिथ्या भाषित, षडयंत्र या ऊटपटांग कहा हुआ।

प्रलयंकर–वि॰ (सं॰) प्रलय या नाशकारी, शिव, विनाशक। स्त्री॰ **प्रलयंकरी**।

प्रलय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाश, लय, मिट जाना, संसार के सब पदार्थों का प्रकृति में मिल जाना, विश्व का तिरोभाव, मूर्च्छा, अचेत, एक सात्विक भाव, किसी वस्तु या व्यक्ति के ध्यान में लय होने से पूर्वस्मृति का लोप (साहि॰)।

प्रलयकर्त्ता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *प्रलयकृत*) प्रलय या नाश करने वाला।

प्रलयकारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रलयकारिन्*) प्रलय करने वाला, **प्रलयकारक**।

प्रलाप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बकना, कहना, पागल या व्यर्थ वकवाद या बड़-चढ़। वि॰ **प्रलापी, प्रलापक, प्रलपित**।

प्रलेप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लेप, लेश, पुल्टिश।

प्रलेपन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पोतने या लेप करने या लेपने का कार्य। वि॰ **प्रलेपक, प्रलेप्य, प्रलेपनीय**।

प्रलोभ-प्रलोभन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लालच या लोभ दिखाना। वि॰ **प्रलोभनीय, प्रलोभक**।

प्रवंचना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धूर्तता, ठगी, छल। वि॰ **प्रवंचनीय प्रवंचक, प्रवंचित**।

प्रवक्ता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रवक्त*) भली-भाँति कहने या बोलने वाला, वेदादि का उपदेशक।

प्रवचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भली-भाँति (श्रोता को) समझा कर कहना, वेदांग व्याख्या। वि॰ **प्रवंचनीय**।

प्रवण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) क्रमशः नीची होती हुई भूमि, चौराहा, ढाल, उतार, पेट। वि॰ नट, ढालुवा, झुका या ढालू, नम्र, विनीत, उदार, रत, प्रवृत्त।

प्रवर–वि॰ (सं॰) बड़ा, श्रेष्ठ, मुख्य। संज्ञा, पु॰ संतति, गोत्र में विशेष प्रवर्तक, श्रेष्ठ मुनि, वायु के सात भेदों में एक।

प्रवर्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कार्यारंभ, एक प्रकार के बादल, ठानना; करना। वि॰ **प्रवर्तित**।

प्रवर्त्तक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संचालक, चलाने और प्रारम्भ करने वाला, प्रवृत्त या जारी करने वाला, निकालने या ईजाद करने वाला, उजाड़ने वाला, उत्तेजक; प्रस्तावना का वह रूप जिसमें सूत्रधार वर्तमान काल का कथन करता तथा तत्सम्बन्ध लिए हुए पात्र प्रविष्ट होता है (नाटय॰)।

प्रवर्त्तन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कार्य का आरम्भ करना या चलाना, प्रचार या जारी करना, ठानना। वि॰ **प्रवर्त्तित, प्रवर्त्तनीय, प्रवर्त्य**।

प्रवर्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्षा, एक पहाड़, (किष्किन्धा)।

प्रवाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बातचीत, जनरल, जनश्रुति, अपवाद। यौ॰ **लोकप्रसाद**।

प्रवान*–संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रमाण (सं॰)।

प्रवाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विद्रुम, मूँगा।

प्रवास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विदेश में रहना, परदेश, स्वदेश छोड़ अन्य देश में निवास।

प्रवासी–वि॰ (सं॰ *प्रवासिन्*) परदेशी, विदेशी, दूसरे देश में रहने वाला।

प्रवाह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जल-श्रोत, पानी का बहाव, धारा, चलता हुआ, कार्यक्रम, **सिलसिला,** लगातार, जारी रहना।

प्रवाहित–वि॰ (सं॰) बहता हुआ।

प्रवाही–वि॰ संज्ञा, पु॰ (सं॰ *प्रवाहिन्*) कहने या बहाने वाला। स्त्री॰ **प्रवाहिनी**।

प्रविष्ट–वि॰ (सं॰) घुसा हुआ।

प्रविसना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रविश्*) घुसना, पैठना, अंदर जाना।

प्रवीण–वि॰ (सं॰) पटु, चतुर, दक्ष, वीणा-वादन में निपुण, होशियार, कुशल, **प्रवीन, परवीन** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰- **प्रवीणता**।

प्रवीन–वि॰ दे॰ (सं॰ *प्रवीण*) प्रवीण।

प्रवीर–वि॰ (सं॰) शूर, वीर, बहादुर, योद्धा।

प्रवृत्त–वि॰ (सं॰) उद्यत, तत्पर, तैयार।

प्रवृत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मन की लगन, बहाव, चित्त का लगाव, रुचि, सांसारिक विषयों का ग्रहण, प्रवर्तन, कार्य चलाना, एक यत्र (न्या॰) प्रवाह। (विलो॰ **निवृत्ति**)।

प्रवृद्ध–वि॰ (सं॰) प्रौढ़, पक्का, मज़बूत, बढ़ा हुआ। संज्ञा, पु॰ खण्ड के 32 हाथों में एक।

प्रवेश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घुसना, भीतर जाना, पैठना, पहुँच, गति, रसाई, जानकारी।

प्रवेशिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वह चिन्ह या पत्र जिसके द्वारा कही जा सकें, दाखिला। वि॰ स्त्री॰ प्रवेश करने वाली। पु॰ **प्रवेशक**।

प्रवृज्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) संन्यास।

प्रशंस–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) प्रशंसा (सं॰)। वि॰ (सं॰ *प्रशंस्य*) प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक–वि॰ (सं॰) स्तुति या प्रशंसा करने वाला, चापलूस, खुशामदी।

प्रशंसन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सराहना, गुणगान या कीर्तन, स्तुति

करना। वि. **प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य**।

प्रशंसना*–क्रि. स. दे. (सं. *प्रशंसन*) सराहना, गुण गाना, स्तुति करना, **प्रशंसना, परसंसना** (दे.)।

प्रशंसनीय–वि. (सं.) श्रेष्ठ, सराहने योग्यं

प्रशंसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्तुति, गुण-गान, लड़ाई, तारीफ (फ़ा.)। (वि. **प्रशंसित**)।

प्रशंसोपमा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक अलंकार जिसमें उपमेय की अति प्रशंसा से उपमान की सराहना सूचित की जाय। विलो. **निन्दोपमा**।

प्रशंस्य–वि. (सं.) प्रशंसनीय।

प्रशमन–संज्ञा, पु. (सं.) शांति, विनाश, ध्वंस, बध, मारण, शमन।

प्रशस्त–वि. (सं.) प्रशंसनीय, श्रेष्ठ, उत्तम, होनहार, सुन्दर, **प्रशंसा-पात्र**।

प्रशस्तपाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वैशेषिक, पर पदार्थ धर्म-संग्रह ग्रन्थ के लेखक एक आचार्य (प्राचीन)।

प्रशस्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्तुति, वड़ाई, प्रशंसा, ताम्रपत्र या पत्थर आदि पर खुदे लेख या राजाज्ञा के लेख, पुस्तक के आदि या अन्त में पुस्तक के रचयित, विषय कालादि-सूचक पंक्तियाँ (प्राचीन)। यौ. **प्रशस्ति-पाठ**–कीर्ति कीर्तन या यशोगान।

प्रशांत–वि. (सं.) स्थिर, शान्त, निश्चल। संज्ञा, पु. एशिया और अमेरिका के बीच का महासागर (भूगो.)। संज्ञा, स्त्री. **प्रशांति**।

प्रशाखा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पतली डाली या टहनी, प्रतिशाखा, शाखा की शाखा।

प्रश्न–संज्ञा, पु. (सं.) पूछने की बात, विचारणीय बात, जिज्ञासा, पूछताछ, सवाल, एक उपनिषद्। यौ. **कुशल-प्रश्न**।

प्रश्नोत्तर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सवाल-जवाब, सम्वाद, एक अलंकार जिसमें अनेक प्रश्नों का एक उत्तर हो। (अ. पी.)। वि. स्त्री. **प्रश्नोत्तरी**–प्रश्नोत्तर वाली।

प्रश्रय–संज्ञा, पु. (सं.) सहारा, आधार, आश्रय-स्थान, आसरा, भरोसा।

प्रश्वास–संज्ञा, पु. (सं.) नाक से बाहर निकलने वाला वायु।

प्रश्रित–वि. (सं.) प्रणयी, विनीत, प्रेमी।

प्रश्लय–वि. (सं.) शिथिल, अशक्त।

प्रष्टव्य–वि. (सं.) पूछने के योग्य।

प्रष्टा–वि. (सं.) प्रश्नकर्ता, पृच्छक।

प्रष्ठ–वि. (सं.) अग्रगामी, श्रेष्ठ, प्रधान, गुण्य, अगुआ। संज्ञा, पु. **प्रष्ठा**–श्रेष्ठ, पीठ।

प्रसंग–संज्ञा, पु. (सं.) संगति, सम्बन्ध, विषय का लगाव, अर्थ का मेल, पुरुष स्त्री का संयोग, विषय, बात, प्रकरण, प्रस्ताव, अवसर, कारण, उपयुक्त संयोग, मौका, हेतु, विस्तार, विषयानुक्रम।

प्रसंसना*–क्रि. स. दे. (सं. *प्रशंसन*) प्रशंसना।

प्रसन्न–वि. (सं.) हर्षित, सन्तुष्ट, आनंदित, अनुकूल, प्रफुल्ल।

प्रसन्नचित्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सन्तुष्ट या हर्षितमन, दयालु, **खुशदिल** (फा.)। यौ. **प्रसन्नवदन**।

प्रसन्नता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आनंद, संतोष, हर्ष, खुशी, कृपा, प्रफुल्लता।

प्रसन्नमुख–वि. यौ. (सं.) हँसमुख।

प्रसरण–संज्ञा, पु. (सं.) फैलना, व्याप्ति, आगे बढ़ना, फैलाव, विस्तार, खिसकना, सरकना। वि. **प्रसरणीय, प्रसरित**।

प्रसल–संज्ञा, पु. (सं.) हेमंत ऋतु।

प्रसव–संज्ञा, पु. (सं.) प्रसूति, जनन, बच्चा पैदा करना, जन्म, जनना, संतान उत्पत्ति। यौ. **प्रसव-पीड़ा**।

प्रसविनी–वि. स्त्री. (सं.) प्रसव करने या जनने वाली।

प्रसाद–संज्ञा, पु. (सं.) **परसाद** (दे.) अनुग्रह, दया, कृपा, प्रसन्नता। नैवेध, जो वस्तु देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर छोटों (भक्तों, दासों) को दें, देवता, गुरुजनादि को देकर बची वस्तु, भोजन, देवता पर चड़ी वस्तु। **मु. प्रसाद पाना (मिलना)**–भोजन करना, बुराई का बुरा फल पाना (व्यंग्य)। शुद्ध, शिष्ट, स्पष्ट तथा स्वच्छ भाषा का एक गुण (काव्य.), शब्दालंकार-सम्बन्धी एक वृत्ति, कोमला वृत्ति।

प्रसादना*–क्रि. स. दे. (सं. *प्रसादन*) प्रसन्न या राजी या खुश करना।

प्रसादनीय*–वि. (सं.) प्रसन्न, राजी या खुश करने योग्य।

प्रसादी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रसाद+ई* हि. *प्रत्य.*) नैवेद्य, देवता पर चढ़ी वस्तु, जो बड़े या पूज्य लोग प्रसन्न हो

छोटों को दें, **परसादी** (दे.); (किसी के) श्राद्ध का भोजन।

प्रसाधन–संज्ञा, पु. (सं.) निष्पादन, संपादन, वेश रचना। वि. **प्रसाधनीय**।

प्रसाधनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कंघी (बाल सुधारने की) **ककई** (आ.)।

प्रसाधिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वेश-कारिणी, वेश रचने वाली, शृंगार करने वाली, नाईन।

प्रसार–संज्ञा, पु. (सं.) **पसार** (दे.) फैलाव, विस्तार, गमन, निकाल, निर्गम, संचार।

प्रसारण–संज्ञा, पु. (सं.) फैलाना, प्रस्तारण, विस्तारित करना। वि. **प्रसारित, प्रसारणीय, प्रसार्य**। (अं.) ब्राउकान्टिंग

प्रसारिणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लाजवंती-लता, लजालू, गंध-प्रसारिणी।

प्रसारित–वि. (सं.) फैलाया हुआ।

प्रसारी–वि. (सं. *प्रसारिन्*) फैलाने वाला किराना और औषधियों की दुकान करने वाला, **पंसारी, पंसारी** (दे.)।

प्रसित–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पीब, मवाद।

प्रसिति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रस्सी, रश्मि, ज्वाला, लपट।

प्रसिद्ध–वि. (सं.) विख्यात, अलंकृत, प्रतिष्ठित, भूषित, विशेष सिद्धि प्राप्त।

प्रसिद्धि–संज्ञा, (सं.) ख्याति, भूषा, प्रचार, अलंकृत, शृंगार।

प्रसीद–क्रि. स. (सं.) प्रसन्न हो, कृपा या दया करो।

प्रसुप्त–वि. (सं.) सोया हुआ।

प्रसुप्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नींद, निद्रा।

प्रसू–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जनने या उत्पन्न करने वाली, प्रसूता, **प्रसवा**।

प्रसूत–वि. (सं.) उत्पन्न, पैदा, संजात, उत्पादक। स्त्री. **प्रसूता**। संज्ञा, पु. (सं.) प्रसव के बाद होने वाला स्त्रियों का एक रोग, **परसूत** (दे.)।

प्रसूता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बच्चा उत्पन्न करने वाली स्त्री, जच्चा।

प्रसूति-प्रसूती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कारण, उत्पत्ति, उद्‌भव, जन्म, प्रसव, दक्ष की स्त्री, कारण, प्रकृति।

प्रसूतिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रसूता। यौ. **प्रसूतिका गृह**–जहाँ प्रसूता जनन करे और रहे, **सोवर** (ग्रा.)।

प्रसून–संज्ञा, पु. (सं.) फूल, सुमन, फल।

प्रसृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विस्तार, संतान, तत्पर, लंपट। वि. **प्रसृत**।

प्रसेक–संज्ञा, पु. (सं.) सींचना, छिड़काव, निचोड़, प्रमेह रोग, जिरियान (सुश्रु.)।

प्रसेद*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रस्वेद*) पसीना।

प्रसेव–संज्ञा, पु. (सं.) बीन की तूँबी।

प्रस्कन्दन–संज्ञा, पु. (सं.) फलाँग, झपट, शिव, विरंचन, अतीसार।

प्रस्कन्न–वि. (सं.) पतित, गिरा हुआ।

प्रस्खलन–संज्ञा, पु. (सं.) स्खलना, पतन, गिरना, पक्षों का बिछौना।

प्रस्तर–संज्ञा, पु. (सं.) पत्थर, बिछौना, प्रस्तार। यौ. **प्रस्तरमय**–पथरीला।

प्रस्तरण–संज्ञा, पु. (सं.) बिछौना, बिछावन, प्रस्तार, फैलाव।

प्रस्तार–संज्ञा, पु. (सं.) वृद्धि, फैलाव, परत।

प्रस्ताव–संज्ञा, पु. (सं.) अवार की बात, प्रसंग, प्रकरण, कथानुष्ठान, चर्चा, सभा में उपस्थित मन्तव्य या विचार, भूमिका, विषय-परिचय, प्राक्कथन (आयु.)। वि. **प्रस्तावक, प्रस्ताविक**।

प्रस्तावना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आरम्भ, भूमिका, प्राक्कथन, उपोद्‌घात, उठाया हुआ प्रसंग। अभिनय से पूर्व विषय-परिचायक, प्रसंग कथन (नाटय.)।

प्रस्ताविक–वि. (सं.) यथा समय, समयानुसार।

प्रस्तावित–वि. (सं.) जिसके हेतु प्रस्ताव किया गया हो।

प्रस्तुत–वि. (सं.) कथित, उक्त, उपस्थित, सम्मुख आया हुआ, तैयार, उद्यत, प्रशंसित, वणर्यवस्तु, उपमेय (काव्य.)।

प्रस्तुतालंकार–संज्ञा, पु. (सं.) एक अलंकार जिसमे एक प्रस्तुत कर कही हुई बात का अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत पर घटित किया जाय (काव्य.)।

प्रस्थ–संज्ञा, पु. (सं.) पर्वत पर की समतल भूमि, एक बाट या मान (प्राचीन)।

प्रस्थान–संज्ञा, पु. (सं.) यात्रा, गमन, यात्रा-मुहूर्त पर यात्रा की दिशा में कहीं रखाया गया यात्री का वस्त्रादि।

प्रस्थानी–वि. (सं. *प्रस्थानिन्*) जाने वाला।

प्रस्थापक–वि. *(सं.) भेजने वाला, स्थापना करने वाला।* वि. **प्रस्थापनीय।**

प्रस्थापन–संज्ञा, पु. *(सं.) भेजना, प्रस्थान करना, स्थापन,* प्रेरणा। वि. **प्रस्थापित।**

प्रस्थित–वि. (सं.) ठहराया या टिका हुआ, गत, जो गया हो, दृढ़।

प्रस्नुषा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पोते की स्त्री।

प्रस्फुट–वि. (सं.) खिला हुआ, विकसित।

प्रस्फुटित–वि. (सं.) विकसित, प्रफुल्लित, प्रकाशित, **प्रस्फुरित।** संज्ञा, पु. **प्रस्फुटन-विकास।** वि. **प्रस्फुटनीय।**

प्रस्फुरण–संज्ञा, पु. (सं.) विकसना, निकलना, प्रकाशित होना। फूलना। वि. **प्रस्फुरणीय, प्रस्फुरित।**

प्रस्फोट, प्रस्फोटन–संज्ञा, पु. (सं.) स्फोट, एकवारगी बड़े जोर से फूटना, या खुलना।

प्रश्रवण–संज्ञा, पु. (सं.) निर्झर, सोता, झरना, प्रपात, जल का गिरना या टपक कर बहना। वि. **प्रश्रवणीय, प्रश्रवित।**

प्रश्रय–संज्ञा, पु. (सं.) मूत्र, मूत, पेशाब।

प्रश्राव–संज्ञा, पु. (सं.) झरना, पेशाब।

प्रस्वेद–संज्ञा, पु. (सं.) पसीना, **पसेव** (दे.)।

प्रहर–संज्ञा, पु. (सं.) पहर (दे.) दिन-रात के 8 सम भागों में से एक।

प्रहरपना, प्रहरखना*–क्रि. अ. दे. (सं. *प्रदर्पण*) प्रसन्न, हर्षित या आनन्दित होना।

प्रहरी–वि. (सं. *प्रहरिन्*) पाहरू, पहरुआ (दे.) चौकीदार, पहरेदार, घड़ियाली, पहर पहर पर घंटा बजाने वाला।

प्रहर्ष–संज्ञा, पु. (सं.) आनंद, प्रसन्नता।

प्रहर्षण–संज्ञा, पु. (सं.) आनंद, एक अर्थालंकार जिसमें अकस्मात् बिना वल के अभीष्ट फल की प्राप्ति का वर्णन हो, एक पर्वत, **प्रहरखन** (दे.)। वि. **प्रहर्षित, प्रहर्षणीय।**

प्रहर्षणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णवृत्त (पिं.)।

प्रहसन–संज्ञा, पु. (सं.) परिहास, हँसी-दिल्लगी, चुहल, नाटक या रूपक के 20 भेदों में वह भेद जो काव्यमय और हास्यरस-प्रधान हो (नाट्य)।

प्रहार–संज्ञा, पु. (सं.) चोट, आघात, भार, वार।

प्रहारना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रहार*) मारना, आघात करना, माने को फेंकना।

प्रहारित–वि. (सं. *प्रहार*) प्रताड़ित, जिस पर आघात या चोट की जाय।

प्रहारी–वि. (सं. *प्रहारिन्*) मारने, आघात या प्रहार करने वाला, छोड़ने या चलाने वाला, विनाशक। स्त्री. **प्रहारिणी।**

प्रहित–वि. (सं.) चिप्त, प्रेषित, प्रेरित।

प्रहीण–वि. (सं.) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

प्रहुत–संज्ञा, पु. (सं.) बलिवैश्वदेव, भूत-यज्ञ।

प्रहृष्ट–वि. (सं.) संतुष्ट, प्रसन्न, हर्षित, यौ. **प्रहृष्टमना**–संतुष्ट चित्त।

प्रहेलिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पहेली, बुझौवल, एक अलंकार (काव्य.)।

प्रह्लाद–संज्ञा, पु. (सं.) **प्रहलाद** (दे.)। आनन्द, प्रमोद, हिरण्यकशिपु का पुत्र, एक भक्त दैत्य।

प्रह्व–वि. (सं.) नम्र, विनीत, आसक्त।

प्रांगण, प्राँगन (दे.)–संज्ञा, पु. (सं.), आँगन, सहन, घर के बीच का खुला भाग।

प्रांजल–वि. (सं.) सीधा, सरल, सच्चा, समान। (यौ.) प्रांजल-भाषा।

प्रांत–संज्ञा, पु. (सं.) अंत, छोर, किनारा, सीमा, दिशा, सूवा, जिला, प्रदेश, ओर, सिरा, खंड। वि. **प्रांतिक।**

प्रांतर–संज्ञा, पु. (सं.) अंतर, बिना छाया का मार्ग या धन, दो प्रदेशों के मध्य की खाली जगह।

प्रांतीय, प्रांतिक–वि. (सं.) किसी एक प्रांत सम्बन्धी। संज्ञा, स्त्री. **प्रांतीयता, प्रांतिकता।**

प्राकाम्य–संज्ञा, पु. (सं.) व भाँति की सिद्धियों में से एक।

प्राकार–संज्ञा, पु. (सं.), कोड, परकोटा, शहर-पनाह, नगर-रक्षक, **प्राचीर।**

प्राकृत–वि. (सं.) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्रकृति-सम्बन्धी या जन्म, भौतिक। संज्ञा, स्त्री. किसी समय किसी प्रांत में प्रचलित बोलचाल की भाषा, भारत की एक प्राचीन आर्य भाषा, वह प्राचीन बोली जिससे सब आर्य-भाषाएँ निकली हैं।

प्राकृतिक–वि. (सं.) प्रकृति का, प्रकृति-जन्य, प्रकृति-सम्बन्धी, स्वाभाविक, नैसर्गिक, सहज, कुदरती।

प्राकृतिक भूगोल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भूगोल का वह भाग जिसमें पृथ्वी की बनावट, वर्तमान स्थिति तथा स्वाभाविक दशाओं का वर्णन हो।

प्राक्–वि॰ (सं॰) प्रथम का, अगला। संज्ञा, पु॰ पूर्व, पूरव।

प्राखर्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰), प्रखरता।

प्रागल्भ्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰), प्रगल्भता, साहस, प्रबलता, चातुर्य, धृष्ठता।

प्राग्ज्योतिष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामरूप देश (महाभा॰)। गोहाटी (वर्तमान) प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी।

प्रागभाष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी विशेष समय से पूर्व न होना, किसी वस्तु की उत्पत्ति के पहले का अभाव, जिसका आदि तो हो पर अन्त न हो।

प्राधूर्णिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाहुन, अतिथि, अभ्यागत।

प्राङ् मुख–वि॰ (सं॰) पूर्वाभिमुख, पूर्व दिशा की ओर मुख वाला।

प्राची–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूर्व दिशा।

प्राचीन–वि॰ (सं॰) पुराना, पुरातन, पहले का, वृद्ध, पूर्व का। संज्ञा, पु॰ दे॰ **प्राचीर**।

प्राचीनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पुरानापन।

प्राचीर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परकोटा, शहर-पनाह। (अं॰संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रैमपर्ट।

प्राचुर्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुतायत, बाहुल्य, अधिकता, **प्रचुरता**।

प्राचेतस्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्राचीन, वर्हि के पुत्र, प्रचेतागण, वाल्मीकि मुनि, विष्णु, दक्ष, वरुण का पुत्र, प्रचेत के वंशज।

प्राच्य–वि॰ (सं॰) पूर्व का, पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न, पूर्वीय, पुराना। (विलो॰ **पाश्चात्य**)।

प्राच्य वृत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वैताली वृत्ति का भेद (साहि॰)।

प्राजाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सारथी, रथ लाने वाला।

प्राजापत्य–वि॰ (सं॰) प्रजापति-सम्बन्धी, प्रजापति का, प्रजापति से उत्पन्न एक यज्ञ, 8 प्रकार के विवाहों में से एक।

प्राज्ञ–वि॰ (सं॰) बुद्धिमान, चतुर, विद्वान, पंडित। (स्त्री॰ **प्राज्ञी**)।

प्राड्विवाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) न्यायाधीश, न्याय कर्त्ता, वकील।

प्राण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वायु, पवन, 10 दीर्घ मात्राओं का उच्चारण-काल, श्वास, शरीर में जीव धारण करने वाला वायु, जल, शक्ति, जान, जीव, **परान, प्रान** (दे॰)। यौ॰ **प्राण-पखेरू। मु॰ प्राण उड़ जाना**–हक्काबक्का हो जाना, बहुत घबरा या डर जाना। यौ॰ **प्राण-प्रण**–प्रण ठानना, प्राण देने को उद्यत होना। **मु॰ प्राण का गले तक आना**–मरणासन्न होना। **प्राण या प्राणों का मुँह को आना या चले जाना**–मरणासन्न होना, अत्यंत कष्ट या दुख होना। **प्राण जाना (छूटना, निकलना)**–जीवन का अंत होना, मरना, प्राण का चलना चाहना, मरने के निकट होना। **प्राण डालना (फूँकना)**–जान डालना, जीवन प्रदान करना। **प्राण त्यागना (तजना, छोड़ना)** मरना। **प्राण देना**–मरना, अत्यंत आतुर हो घबराना। **किसी पर या किसी के ऊपर, प्राण देना**–किसी पर अति अप्रसन्न होकर मरना, प्राणों से भी अधिक किसी को प्यार करना या चाहना। **प्राण निकलना (जान निकलना)** मरना, मर जाना, बहुत घबरा या डर जाना। **प्राणपयान (प्रयाण) होना**–प्राण निकलना। **प्राण (प्राणों) पर बीतना**–जीवन का संकट में पड़ना, मर जाना। **प्राण रखना**–जिलाना, जीवन-रक्षा करना, जीना, जीवन छोड़ना, जान बचाना, जीवन देना। **प्राण रहना**–न मरना, जीवन (जान) शेष रहना। **प्राण लेना या हरना**–मार डालना। **प्राण हारना**–मर जाना, साहस टूटना। यौ॰ **प्राणों का प्यासा या गाहक**- अति कष्ट देने वाला। परम शिव, विष्णु, ब्रह्मा, अग्नि, शिव।

प्राण-अधार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अत्यंत प्यारा, पति, स्वामी, प्राणाधार (सं॰) **प्राणप्रिय**।

प्राणघात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वध, हत्या, मार डालना।

प्राणत्याग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मर जाना।

प्राणदंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मार डालने की सजा, फाँसी।

प्राणाद–वि॰ (सं॰) जीवन देने वाला, प्राण-रक्षा करने वाला।

प्राणदाता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *प्राणदातृ*) जीवन देने वाला, जीव-रक्षक।

प्राणदान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जीव बचाना, जीवन-दान, प्राण रक्षा करना, जान छोड़ना, मारे जाने या मरने से बचाना।

प्राणधन–वि॰ यौ॰ (सं॰) परमप्रिय, स्वामी, जीवन-धन, पति।

प्राणधारी–वि. (सं. *प्राणवारिन्*) जीवधारी, जीवित, चेतन, साँस लेता हुआ प्राण युक्त। संज्ञा, पु. प्राणी, जीव।

प्राणनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रियतम, परम प्रिय, प्यारा, पति, एक संप्रदाय-प्रवर्तक क्षत्रिय आचार्य (औरंगजेब-काल)।

प्राणनाथी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वामी, प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय, इस संप्रदाय का व्यक्ति।

प्राणनाश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मृत्यु, हत्या, निधन, जीवनास्यय, प्राणांत, मरण।

प्राणपण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्राण त्याग, जीवन पर्यंत प्रतिज्ञा, अत्यंत आयास, मरूँगा या मारूँगा का प्रण।

प्राणपति–संज्ञा, पु. (सं.) प्रियमतम, पति, प्यारा।

प्राण प्यारा–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रियतम, परम प्रिय, प्राणों सा प्रिय पति। (स्त्री. प्राणप्यारी)।

प्राण-प्रतिष्ठा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) प्राणों के द्वारा नई मूर्ति में प्राणों का संस्थापन, प्रतिमा में देवत्व करण।

प्राणप्रद–वि. (सं.) जीवन-दाता, प्राण, प्रदाता, स्वास्थ्य-वर्धक। (स्त्री. **प्राणप्रदा**)।

प्राण-प्रिय–वि. यौ. (सं.) प्रियतम, जीवन तुल्य, प्रिय, पति।

प्राण-प्रीता–वि. स्त्री. (सं.) प्राणों सी प्रिय, प्रियतमा, प्यारी।

प्राणप्रेयपि– वि. स्त्री. यौ. (सं.) प्रिया, श्री प्यारी।

प्राणमय–वि. (सं. जिसमें प्राण हो।

प्राणमय कोष (कोश)–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पाँच कोशों में से दूसरा जो पाँच प्राणों से बना है और जिसमें पाँचों कर्मेन्द्रियाँ भी सम्मिलित हैं (वेदांत)।

प्राण-वल्लभ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परम प्रिय, पति। स्त्री. **प्राण-वल्लभा,** प्रिया।

प्राणवायु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **प्राणपवन,** प्राण।

प्राण-शरीर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मनोमय सूक्ष्म शरीर।

प्राणासम–वि. यौ. (सं.) प्राण-तुल्य। (स्त्री.**प्राणसमा**)।

प्राणान्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मरण, मृत्यु। यौ. **प्राणान्त पीड़ा (कष्ट)**।

प्राणान्तक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जीव या प्राण लेने वाला, घातक, यमदूत।

प्राणाधार-प्राणाधिक–वि. यौ. (सं.) परमप्रिय, प्यारा। संज्ञा, पु. स्वामी, पति। स्त्री. **प्राणाधार, प्राणाधिका**।

प्राणायाम–संज्ञा, पु. (सं.) प्राणों का वश में करना या रोकना, श्वास प्रश्वास की गति का क्रमशः दमन, अष्टांग योग का चौथा अंग (योग)।

प्राणी–वि. (सं. *प्राणिन्*) जीवधारी। संज्ञा, पु. जीव, जन्तु मनुष्य। †संज्ञा, स्त्री. पु. पुरुष या स्त्री।

प्राणेश, प्राणेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पति, जीवनेश, परमप्रिय, **प्राणाधीश**। (स्त्री. **प्राणेश्वरी**)।

प्रात–अव्य. दे. (सं. *प्रातः*) तड़के, सवेरे, भोर (ग्रा.)। संज्ञा, पु. प्रभात, प्रात काल, सवेरे।

प्रातः–संज्ञा, पु. (सं. *प्रातर्*) प्रभात, सबेरे। यौ. **प्रातःकाल**।

प्रातःकर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्नान संध्यादि प्रभात के काम।

प्रातःकाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) निशान्त में सूर्योदय से पूर्व का समय, इसके तीन भाग हैं, सबेरे, तड़के। **प्रातकाल** (दे.) वि. **प्रातःकालीन**।

प्रातःकृत्य–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) स्नान-संध्यादि, **प्रातःकर्म**।

प्रातः क्रिया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) स्नान संध्यादि, **प्रातःक्रिया** (दे.)।

प्रातःनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *प्रातः+नाथ*) सूर्य।

प्रातःसंध्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सवेरे की संध्या, सबेरे के समय, ब्रह्मध्यान।

प्रातःस्मरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सबेरे भगवान की याद करना।

प्रातः स्मरणीय–वि. यौ. (सं.) सबेरे याद करने के योग्य, पूज्य, श्रेष्ठ। (स्त्री. **प्रातः स्मरणीया**।

प्रातराश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रातःकालीन भेजन, जल-पान, कलेवा।

प्रातिकूल्य–संज्ञा, पु. (सं.) पैपरीत्य, विपक्षता, शत्रुता।

प्रातिपदिक–संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि, धातु, प्रत्यय, और प्रत्यप्रान्त को छोड़ कर अर्थवान शब्द, जैसे—राम।

प्राथमिक–वि. (सं.) प्रारंभिक, आदि या पहले या पूर्व का।

प्रादुर्भाव–संज्ञा, पु. (सं.) प्रकट होना, उत्पत्ति, आविर्भाव।

प्रादुर्भूत–वि. (सं.) उत्पन्न, प्रकटित, आविर्भूत, जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो।

प्रादेश–संज्ञा, पु. (सं.) तर्जनी सहित विस्तृत अंगुष्ठ, वितस्ति, वाती, बालिश्त।

प्रादेशिक–वि. (सं.) प्रदेश का, प्रदेश सम्बन्धी, प्रांतिक संज्ञा, पु. (सं.) सरदार, सामंत।

प्राधा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गंधर्वों और अप्सराओं की माता, कश्यप की पत्नी।

प्राधान्य–संज्ञा, पु. (सं.) मुख्यता, प्रधानता, श्रेष्ठता।

प्रान–संज्ञा, पु. (दे.) प्राण (सं.) स्वाँस, जीव। परान (दे.)।

प्रापण–संज्ञा, पु. (सं.) मिलना, प्राप्ति, प्रेरण। वि. **प्रापक, प्राप्य, प्राप्त, प्रापणीय**।

प्राप्त–वि. (सं.) जो मिला हो, पाया हुआ, समुपस्थित।

प्राप्तकाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) उचित या उपयुक्त समय, मरने योग्य समय। दि. जिसका समय आ गया हो।

प्राप्तव्य–वि. (सं.) पाने या प्राप्त करने योग्य, प्राप्य।

प्राप्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पहुँच, मिलना, उपलब्धि, नाटक का सुखप्रद उपसंहार, अणिमादि 8 सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसमें सब इच्छाएँ पूरी हो जाएँ (योग), आय, लाभ।

प्राप्तिसम–संज्ञा, पु. (सं.) हेतु और साध्य की आपत्ति (न्याय)।

प्राप्य–वि. (सं.) पाने या प्राप्त करने योग्य, प्राप्तव्य. मिलने के योग्य, गम्य।

प्रावल्य–संज्ञा, पु. (सं.) प्रबलता।

प्रामाणिक–वि. (सं.) सत्य जो प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो, मानने योगय प्रमाण पुष्ट, माननीय, ठीक।

प्रामाणय–संज्ञा, पु. (सं.) प्रमाणता, मानमर्यादा।

प्राय–संज्ञा, पु. (सं.) समान, लगभग, बराबर, तुल्य, जैसे–प्रायद्वीप, मृतप्राय।

प्रायः–वि. (सं.) लगभग, बहुत करके, बहुधा, अक्सर, विशेष करके।

प्रायद्वीप–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रयोद्वीप*) वह भू-भाग जो तीन ओर जल से घिरा हो। (भूगो.)।

प्रायशः–कि. वि. (सं.) बहुधा, प्रायः।

प्रायश्चित–संज्ञा, पु. (सं.) पाप मिटाने के लिए शास्त्रानुकूल कर्म या कृत्य।

प्रायश्चित्तिक–वि. (सं.) प्रायश्चित्त के योग्य, प्रायश्चित्त-सम्बन्धी।

प्रायश्चित्ती–वि. (सं. *प्रायश्चितिन्*) प्रायश्चित्त करने वाला या उसके योग्य।

प्रारम्भ–संज्ञा, पु. (सं.) आदि, आरम्भ।

प्रारम्भिक–वि. (सं.) प्राथमिक, आदि का, आदिम, **प्रारंभ** का।

प्रारब्ध–वि. (सं.) प्रारंभ या शुरू किया हुआ। संज्ञा, पु. तीन प्रकार के कर्मों में एक, वह कर्म जिसका फल-भोग हो चला हो भाग्य, पूर्वकृत कर्म। वि. **प्रारब्धी**–भाग्यवान।

प्रार्थना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) निवेदन, बिनती, माँगना, विनय, याचना। वि. **प्रार्थनीय**, क्रि. स. विनय करना।

प्रार्थना-पत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) निवेदन या विनय-पत्र, अर्जी, सवाल, दर्ख्वास्त (फ़ा.)।

प्रार्थना-समाज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्म-समाज सा एक नया संप्रदाय।

प्रार्थित–वि. (सं.) माँगा, जाँचा।

प्रार्थनीय–वि. (सं.) प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी–वि. (सं. *प्रार्थिन्*) निवेदन या प्रार्थना करने वाला। (स्त्री. **प्रार्थिनी**)।

प्रालेय–संज्ञा, पु. (सं.) तुषार, हिम, बर्फ।

प्रावृट्–संज्ञा, पु. (सं.) बरसात, वर्षाऋतु।

प्राशन–संज्ञा, पु. (सं.) भोजन, खाना, चखना। (यौ. **अन्न-प्राशन**)

प्राशी–वि. (सं. *प्राशिन्*) भोजन करने या खाने वाला। (स्त्री. **प्राशिनी**)।

प्रासंगिक- वि. (सं.) प्रसंग से प्राप्त, प्रसंग सम्बन्धी, प्रसंग का।

प्रासाद–संज्ञा, पु. (सं.) राज-सदन, विशाल भवन, महल।

प्रियंवद–वि. (सं.) प्रियभाषी, प्रिय वचन कहने वाला। (स्त्री. **पियंवदा**)।

प्रिय–संज्ञा, पु. (सं.) पति, स्वामी। वि. प्यारा, सुन्दर, मनोरम। (स्त्री. **प्रिया**)।

प्रियतम–वि. (सं.) परम प्रिय, बहुत प्यारा। संज्ञा, पु. पति, स्वामी। (स्त्री. **प्रियतमा**)।

प्रियदर्शन–वि. यौ. (सं.) सुन्दर, मनोहर, जो देखने में प्यारा लगे। (स्त्री. **प्रियदर्शन**)।

प्रियदर्शी–वि. यौ. (सं. *प्रियदर्शिन्*) सब को प्यारा देखने वाला, सब से प्रेम करने वाला।

प्रियभाषी–वि. यौ. (सं. *प्रियभाषिन्*) मधुर और प्यारे वचन बोलने वाला। (स्त्री. **प्रियभाषिणी**)।

प्रियवर–वि. (सं.) बहुत प्यारा, अति प्रिय।

प्रियवादी–संज्ञा, पु. (सं. *प्रियवादिन्*) प्रियभाषी, प्यारा बोलने वाला। (स्त्री. **प्रियवादिनी**)।

प्रिया–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रेमिका, प्यारी, स्त्री, नारी, पत्नी, एक वृत्त, मृगी, 16 मात्राओं का एक छंद (पिं.)।

प्रोत–वि. (सं.) प्रीतियुक्त। *संज्ञा, पु. (दे.) प्रीति, प्रेम, प्यार, मैत्री।

प्रीतम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रियतम*) अति प्रिय, स्वामी, पति।

प्रीति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रेम, तृप्ति, स्नेह, मैत्री, हर्ष।

प्रीतिकर-प्रीतिकारक-प्रीतिकारी–वि. (सं.) प्रेम-जनक, प्रेमोत्पादक, प्रसन्नता करने वाला। स्त्री. **प्रीतिकारिणी**।

प्रीतिपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रेम करने योग्य। प्रीति-भाजन, प्रेमी।

प्रीतिभोज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रिय मित्रों और बंधुओं का सप्रेम सम्मिलन और भोजन।

प्रीत्यर्थ–अव्य. यौ. (सं.) प्रेम के हेतु, प्रसन्नतार्थ, स्नेह के कारण, प्रीति के लिए।

प्रूम–संज्ञा, पु. (सं.) समुद्र की गहराई नापने का शीशे आदि का लट्टू जैसा यन्त्र।

प्रेखण–संज्ञा, पु. (सं.) भली-भाँति झूलना या हिलना, रूपक के 18 भेदों में से एक।

प्रेक्षक–संज्ञा, पु. (सं.) दर्शक, देखने वाला।

प्रेक्षण–संज्ञा, पु. (सं.) नेत्र, (अं. आब्जरवर आँख, देखना। वि. **प्रेक्षणीय, प्रेक्षित, प्रेक्ष्य**।

प्रेक्षा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नाच-तमाशा देखना, दृष्टि, बुद्धि, ज्ञान, प्रज्ञा।

प्रेक्षागार-प्रेक्षागृह–संज्ञा, पु. यौ.(सं.) राज-संग्रणगृह, रंगशाला, नाटयशाला।

प्रेत–संज्ञा, पु. (सं.) मृतक, मरा मनुष्य, एक देवयोनि, मरणोपरान्त राख कल्पित शरीर (पुरा.), नरक-निवासी।

प्रेतकर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *प्रेत कर्मन्*) प्रेत कार्य (हिन्दू)।

प्रेतगेह-प्रेतगृह–संज्ञा, पु. (सं.) प्रेतगृह, मरघट, श्मशान।

प्रेतत्व–संज्ञा, पु. (सं.) **प्रेतता,** प्रेत का भाव या धर्म।

प्रेतदाह–संज्ञा, पु. (सं.) मृतक के जलाने आदि का कार्य।

प्रेतदेह–संज्ञा, पु. यौ. (सं. मृतात्मा का मरण से सपिंडी के समय तक का कल्पित शरीर।

प्रेतनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.*प्रेत+नी प्रत्य.*) भूतिनी, चुड़ैल, पिशाचिनी।

प्रेतयज्ञ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रेत योनि को प्राप्त करने वाला यज्ञ।

प्रेतलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यमलोक।

प्रेता–संज्ञा, पु. (सं.) पिशाची, भूतिनी, कात्यायिनी देवी।

प्रेत-विधि (गति)–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मृतक का दाहादि संस्कार।

प्रेतराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यमराज।

प्रेताशिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) देवी, भगवती।

प्रेताशौच–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) किसी के मरने पर लगी अशुद्धता, शूंदक (सूतक) (हिन्दू)।

प्रेती–संज्ञा, पु. (सं.*प्रेत+ई प्रत्य.*) प्रेत-पूजक,*प्रतोपासक।

प्रेतोन्माद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक प्रकार का उन्माद, **भूतोन्माद**।

प्रेम–संज्ञा, पु. (सं.) रूप, गुण या काम-वासना जनित, अनुरक्ति, स्नेह, प्रीति, अनुराग, प्यार, एक अलंकार (केशव)

प्रेमगर्विता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पति से प्रेम रखने वाली नायिका का घमंड।

प्रेमपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्नेह करने योग्य, स्नहेभाजन, जिससे प्रेम किया जाय।

प्रेमभक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) स्नेह, श्रद्धा।

प्रेमवारि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रेमाश्रु, प्रेमाखु, आँसू, नेह-नीर, स्नेह-सलिल।

प्रेमा–संज्ञा, पु. (सं. *प्रेमन्*) स्नेह, इन्द्र, वायु, उपजाति वृत्त का 11वाँ भेद।

प्रेमाक्षेप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आक्षेपालंकार का वह भेद जिसमें प्रेम के वर्णन में आधा सी सूचित हो (केश.)।

प्रेमालाप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्नेह-संलापन, **प्रेम वार्ता**।

प्रेमालिंगन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्नेह से गले लगाकर मिलना।
प्रेमाश्रु—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्नेह के कारण निकले आँसू।
प्रेमास्पद—वि॰ यौ॰ (सं॰) स्नेह भाजन, प्रणयपात्र, प्रणयी, स्नेही।
प्रेमिक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रेमी, स्नेही। स्त्री॰ **प्रेमिका।**
प्रेमी—संज्ञा, पु॰ (सं॰*प्रेमिन्*) स्नेही, मित्र।
प्रेय-प्रेयस—संज्ञा, (सं॰) एक अलंकार, जिसमें एक भाव दूसरे भाव या स्थायी का अंग हो (काव्य॰), प्यारा।
प्रेयसी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रेमिका, प्यारी।
प्रेरक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रेरणा करने वाला।
प्रेरणा—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आज्ञा देना, भेजना।
प्रेरणा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जोर या दबाव, उत्तेजना, कार्य में प्रवृत्त करना।
प्रेरणार्थक क्रिया—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) क्रिया का यह रूप जो यह सूचित करे कि कर्त्ता किसी की प्रेरणा के कार्य करता है। कभी-कभी क्रिया में एक साधारण और दूसरा प्रेरक दो कर्त्ता होते हैं।
प्रेरयिता—संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रेरणा करने या कार्य में लगाने वाला, भेजने वाला।
प्रेरित—वि॰ (सं॰) प्रेषित, भेजा हुआ।
प्रेषक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भेजने वाला।
प्रेषण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भेजना, प्रेरणा करना। वि॰ **प्रेषित, प्रेषणीय।**
प्रेषित—वि॰ (सं॰) प्रेरित, भेजा हुआ।
प्रेष्ट—वि॰ (सं॰) प्रिय, प्रेषणीय।
प्रेष्य—वि॰ (सं॰) प्रेरणीय, प्रेपणीय, भेजने योग्य, दास, सेवक, भृत्य।
प्रैप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कष्ट, दुख, मर्दन, उन्माद, भेजना।
प्रैप्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) दास, सेवक।
प्रोक्त—वि॰ (सं॰) कथित, वदित, कहा हुआ।
प्रोक्षण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पानी छिड़कना, पानी का छींटा, पोंछना।
प्रोत—वि॰ (सं॰) छिपा, पोहा या पोश्रा, मिलिप। पु॰ कपड़ा। यौ॰ **ओत-प्रोत**—परस्पर मिला, उलझन; भरा-पूरा; प्रचुर
प्रोत्साह—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अत्यंत उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अत्यंत उत्साह बढ़ाना, साहस देना। वि॰ **प्रोत्साहनीय, प्रोत्साहित।**
प्रोत्साहित—वि॰ (सं॰) जिसका उत्साह या साहस बढ़ाया गया हो।
प्रोषित—वि॰ (सं॰) विदेश जाने वाला, विदेशी, प्रवासी।
प्रौढ़—वि॰ (सं॰) समाप्तप्राय, युवावस्था वाला, जवान, युवा, पक्का, दृढ़, गूढ़, गंभीर, चतुर। (स्त्री॰ **प्रौढ़ा**)।
प्रौढ़ता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रौढ़त्व, जवानी।
प्रौढ़ा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रायः 30 से 50 वर्ष तक की आयु वाली काम कलादि में चतुर नायिका (काव्य॰)।
प्रौढ़ अधीरा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पतिवियोग से अधीर प्रौढ़ा नायिका (काव्य)।
प्रौढ़धीरा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) व्यंग्य से निज क्रोध प्रगट करने वाली प्रिय-वियोग में धीर रहने वाली प्रौढ़ा नायिका (काव्य॰)।
प्रौढ़ा-धीराधीरा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रिय वियोग से धीर अधीर, प्रौढ़ा नायिका (काव्य॰)।
प्रौढ़ोक्ति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक अलंकार जिसमें किसी के उत्कर्ष का आहेतु ही हेतु रूप में कहा जाय।
प्लक्ष—संज्ञा, पु॰ (सं॰) **पिलखा** (दे॰) पाकर पेड़, पीपल, सात कल्पित द्वीपों में से एक (पुरा॰)।
प्लवंग—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वानर, बंदर, मृग, हिरन, पकार वृक्ष।
प्लप्रवंगम—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक मात्रिक छंद, (पिं॰) बंदर।
प्लंगम—संज्ञा, पु॰ (सं॰) तैरना, उछलना, कूदना। वि॰ **प्रवनीय।**
प्लवन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाढ़, तैरना, खूब धोना।
प्लावित—वि॰ (सं॰) पानी में डूबा हुआ, जल मग्न।
प्लीहा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तिल्ली।
प्लुत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चक्रगति, उछाल, 3 मात्रा वाला-स्वर का एक भेद।
प्लुप्ति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कूदना, फाँदना, उछलना।
प्लप्त—वि॰ (सं॰) जला हुआ, दाद।
प्लीत—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मुँह से गिरा दिया।
प्लीप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) दाद, जलन।

फ

फ–हिंदी-संस्कृत की वर्ण माला में पवर्ग का दूसरा वर्ण 22वाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

फ–संज्ञा, पु. (सं.) कटु और रूखा वाक्य, फुफकार, व्यर्थ की बात।

फँक–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *फक्किका*) फाँक, फाँकी, चीरी हुई वस्तु का एक भाग या टुकड़ा।

फंका*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *फाँकना*) किसी वस्तु का उतना भाग जो एक बार में फाँका जाए, टुकड़ा, भाग, अंधा। स्त्री. **फंकी।**

फँकाना–क्रि. स. (दे.) किसी को फाँकने में लगाना।

फंकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फंका*) उतनी औषधि जो एक बार में फाँकी जा सके, फाँकने की औषधि। †संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फाँक*) छोटी फाँक़।

फंद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पंथ,* हि. *फंदा*) बंधन, फंदा, फाँस, जाल, कपट, धोखा, मर्म, दुःख, नथ की गूँज, रहस्य, कष्ट।

फँदना*–क्रि. अ. दे. (सं. *बंधन,* हि. *फंदा*) फँसना, फंदे में पड़ना। स. कि. (हि. *फाँदना)* फाँदना, उलाँघना।

फँदवार–वि. दे. (हि. *फंदा*) जाल या फंदा लगाने वाला।

फंदा–संज्ञा, पु. (सं. *पाश, बंध*) फंसाने को तागे का रस्सी का पाश, फाँस, जाल, फाँद, बंधन, दुःख। **मु. फंदा-लगाना**–फँसाने को जाल लगाना, धोखा देना। **फंदे में पड़ना (आना)**–धोखे में पड़ना, वश में होना।

फँवाना–क्रि. स. दे. (हि. *फंदना*) जाल में फँसाना, फंदे में लाना। प्रे. रूप।

फँदावना, फँदवाना–क्रि. स. (सं. *स्पंदन*), कुदाना, लँघवाना।

फँसना–क्रि. स. दे. (हि. *फाँस*) उलझना, अटकना, फंदे या बंधन में पड़ना, धोखे में पड़ना। **मु. बुरा फँसना**–विपत्ति में पड़ना। **चंगुल में फँसना**–क़ब्ज़े में आना।

फँसाना, फँसावन (दे.)–क्रि. स. (हि. *फँसना*) फंदे में लाना, बझाना, वशीभूत, या वश में करना, अटकाना। *प्रे. रूप*–**फँसवाना**। संज्ञा, पु. (दे.) **फंसाव**। धोखे में या उलझन में डालना।

फक–वि. दे. (सं. *स्फटिक*) (अ. फ़क़) साफ़, सफ़ेद स्वच्छ, बदरंग। **मु. रंग (चेहरा) फक हो जाना या पड़ना**–घबरा जाना, चेहरे पर उदासी छा जाना, मुख फीका पड़ना; मुँह पर सफ़ेदी छा जाना।

फ़कत–वि. (अ.) पर्याप्त, सिर्फ, केवल, बस, अलम, इति।

फ़कीर–संज्ञा, पु. (अ.) निर्धन, भिक्षुक, साधु, भिखारी, त्यागी, योगी। संज्ञा, स्त्री. **फ़क़ीरी** वि. स्त्री. **फ़क़ीरिन, फ़क़ीरनी**।

फ़कीरी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *फ़क़ीर+ई, प्रत्य.*) साधुता, निर्धनता, कंगाली, भिक्षुकता। वि. फ़क़ीर की।

फक्कड़–वि. (दे.) निर्धन और मस्त, लापनवाह। संज्ञा, स्त्री. **फक्कड़ी, फक्कड़ता**।

फ़खर–संज्ञा, पु. दे. (फा. *फख*) वर्ष, गौरव।

फगुआ, फगुवा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *फागुन*) होली, होली का उत्सव, फागुन में आमोद-प्रमोद, फाग, फाग खेलने पर दिया गया उपहार, होली के अश्लील गीत। **मु. फगुआ खेलना या मनाना**–होली के उत्सव में दूसरों पर रंग-गुलाल डालना; गीत गाना)

फगुनाहट–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फागुन+हट प्रत्य.*) फागुन की हवा, फागुन सम्बन्धी।

फगुहरा, फगुहारा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *फगुआ+हारा प्रत्य.*) फाग खेलने वाला। स्त्री. **फगुहारी, फगुहारिन**।

फ़जर–संज्ञा, स्त्री. (अ.) सवेरा, तड़का, **फ़जिर** (दे.)।

फ़ज़ल–संज्ञा, पु. दे. (अ. *फ़ज़ूल*) कृपा, दया, अनुग्रह।

फ़ज़ीलत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता। **मु. फज़ीलत की पगड़ी**–श्रेष्ठता या विद्वता-सूचक चिन्ह या पदक।

फ़ज़ीहत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) **फजीहति,** (दे.) दुर्गति, दुर्दशा, बेइज्जती। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **फजिहतताई**

फ़ज़ूल–वि. (सं.) व्यर्थ, बाकी बचा, बेकाम, बहुत, निरर्थक।

फ़ज़ूल-खर्च–वि. यौ. (फा.) बहुत खर्च करने वाला, अपव्ययी। संज्ञा, स्त्री. **फ़ज़ूल-खर्ची**।

फट–संज्ञा, स्त्री॰ (अनु॰) हलकी या पतली वस्तु के गिरने का शब्द, एक अस्त्र, मंत्र (तंत्र) जैसे–ऊँ हूँ फट स्वाहा"। क्रि॰ वि॰ (हि॰) **फट से**–झट से।

फटक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्फटिक*) बिल्लौर, संगमरमर, **फटिक** (दे॰)। कि॰ वि॰ (अनु॰) झट, तत्क्षण।

फटकन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फटकना*) अनाज के फटकने पर निकला भूखा या कूड़ा।

फटकना–क्रि॰ स॰ दे॰ (अनु॰ *फट*) पटकना, झटकना, फटफटाना, फेंकना, चलाना, मारना, हिलाकर सूप से अन्न साफ़ करना, रुई धुनना। **मु॰ फटकना-पछोरना**–सूप से साफ करना, जाँचना या परखना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰) जाना, पहुँचना, अलग होना, हाथ-पाँव हिलाना या पटकना, श्रम करना, तड़फड़ाना। स॰ रूप–**फटकाना,** प्रे॰ रूप–फटकवाना।

फटका†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰) रुई धुनने को धुनकी, रस-गुण-रहित कविता, तुकबंदी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) फाटक।

फटकाना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि *फटकना*) फटकने का कार्य दूसरे से कराना, फेंकना, अलग कराना, **पछोरवाना**।

फटकार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फटकारना*) झिड़की, दुतकार, डाँट।

फटकारना–क्रि॰ स॰ दे॰ (अनु॰) चादर आदि को झटका देकर उसमें लगे पदार्थ को गिराना, झाड़ना, लाभ उठाना, वस्त्रादि को पटक-पटक कर भली-भाँति धोना, झटके से दूर फेंकना, किसी को डाँटना या झिड़कना, कड़ी या खरी बात कह कर चुप कराना, प्राप्त करना, लेना। (अन्नादि से) मारना, चलाना, छितराना। यौ॰ **डाँटना-फटकारना**।

फटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *फाड़ना*) किसी पोले पदार्थ का ऐसा दरक जाना कि उसके भीतर की वस्तु बाहर आजाएँ या दिखाई देने लगें, **फाटना** (दे॰)। **मु॰ छाती फटना**– दुसह दुख पड़ना, लज्जा आना। **(किसी से) से दिल या चित्त का फट जाना (फटना)**–मन हट जाना, सम्बन्ध की रुचि न रहना, विरक्ति होना, किसी विकार से दूध आदि के पानी और सार भाग का पृथक् हो जाना, छिन्न-भिन्न, विलग या पृथक् हो जाना, कटकर छिन्न-भिन्न हो अलग होना, अति कष्ट या पीड़ा होना, दीवाल आदि का टूट-फूट जाना (पड़ना), किसी बात या वस्तु का अति अधिक होना, सहसा टूट पड़ना। **मु॰ फट पड़ना (फाट परना)**–अचानक आ जाना।

फटफटाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (अनु॰) **फड़फड़ाना,** व्यर्थ यत्न या बकवाद करना, हाथ-पैर पटकना या मारना; परिश्रम करना, इधर-उधर टक्कर खाना। क्रि॰ अ॰ फट-फट शब्द होना।

फटा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *फटना*) छेद, छिद्र। स्त्री॰ **फटी। मु॰ (किसी के) फटे में पाँव देना**–दूसरे की विपत्ति अपने सिर पर लेना। यौ॰**-मु॰ फटे हाल (फटी हालत)**–दुर्दशा, ग़रीबी।

फटिक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्फटित*) स्फटिक, संगमरमर, बिल्लौर।

फट्टा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फटना*) बाँस को चीड़ कर बनाया गया लट्ठा, कपड़े का टुकड़ा। स्त्री॰ **फट्टी**।

फड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पण)* जुए का दाँव जिस पर बाजी लगाई जाती है, जुआ का अड्डा, बनिये का बैठ कर माल बेचने, या होने का स्थान, दल, पक्ष। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पटल या फल*) तोप चढ़ाने या रखने की गाड़ी, चरख। **मु॰ फड़ पाना**–जीतना, बाजी मारना।

फड़क, फड़कन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अनु॰) **फरकना** (दे॰) फड़कने का भाव या क्रिया।

फड़कना–क्रि॰ स॰ दे॰ (अनु॰) **फरकना** (दे॰) उछलना, फड़फड़ाना, ऊपर-नीचे या इधर-उधर बारम्बार हिलना। कि॰ स॰ **फड़काना**। प्रे॰ रूप-**फड़कवाना। मु॰ फड़क उठना या जाना**–प्रसन्न, हर्षित या मुग्ध होना, किसी अंग का अचानक हिलना (शकुन, अपशकुन)। **मु॰ बोटी-बोटी (रग-रग) फड़कना**–बहुत ही चंचलता होना, किसी कार्य पर उद्यत होना, बड़ाई, विरोध या बदला लेने के लिए तैयार होना।

फड़नवीस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *फ़र्दनवीस*) मरहटों के राज्य-काल में एक राज-पद।

फड़फड़ाना–क्रि॰ स॰ अ॰ दे॰ (अनु॰) फटफटाना, फड़ फड़ शब्द करना।

फड़बाज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फड़*+फ़ा॰ *वाज*) वह व्यक्ति जो अपने घर में लोगों को जुआ खिलाता हो, जुआरी।

फण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **फन** (दे॰) साँप का सिर, रस्सी का फंदा।

फणधर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) साँप, नाग।

फणिक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फणी*) **फनिक** (दे॰) साँप, नाग।

फणिपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शेषनाग, वासुकी, बड़ा साँप।

फणिमुक्ता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) साँप की मणि।

फणींद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वासुकी, शेषनाग, बड़ा भारी सर्प **फनीन्द, फनिंद** (दे॰)।

फणी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *फणिन्*) **फनी** (दे॰) साँप, नाग, नागफनी नामक वृक्ष।

फणीश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शेषनाग, वासुकी, **फनीस** (दे॰)।

फ़तवा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अपने धर्म-शास्त्री मुकुल किसी कार्य के उचित या अनुचित होने की मोलवियों की दी हुई व्यवस्था।

फ़तह–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) जीत, जब, सफलता, कृतार्थता **फते** (दे॰)।

फतिंगा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पतंत*) एक उड़ने वाला क्रीड़ा, पतिंगा, पंतग। स्त्री॰ **फतिंगी**।

फतीलसोज़–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक या कई दिए (ऊपर नीचे) रखने की पीतल की दीवट, चौमुखी, चिरागदान।

फतीला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *फलीतः*) बत्ती, पलीता, फलीता।

फ़तूर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) खुराफात, दोष विकार, विध्न वाधा, उपद्रव क्षति।

फ़तूरिया–वि॰ दे॰ (अ॰ *फतूर+इया प्रत्य॰*) उपद्रवी, वखेड़िया, झगड़ालू।

फ़तूह–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *फतह का बहु वचन*) जीत, विजय, लड़ाई या लूट में मिला धन।

फ़तूही–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) **बंडी** (दे॰) बिना बाहों की कुरती, **फतुही** (दे॰), सदरी (प्रान्ती॰), जीत या लूट का माल।

फतेह–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *फतह*) विजय।

फदकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰) फद-फद शब्द करना, फुदकना।

फन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फण*) छत्राकार फैला हुआ सौंप का सिर, कण।

फ़न–संज्ञा, पु॰ (अ॰) हुनर, गुण, विद्या, वक्र, छलने का ढंग, कला-कौशल।

फनकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) सनसन शब्द करते वायु में चलना या हिलना।

फनकार–संज्ञा, स्त्री॰ (अनु॰) फुफकार, साँपादि के फूँकने या वैलादि के साँस लेने से फन शब्द, फुंकर, फुसकार, **फुत्कार** (सं॰)।

फनगा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पतंग*) फतिंगा, पतिंगा।

फनफनाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰) फन फन शब्द करते हुए वेग से चलना, क्रोध से दौड़ना।

फ़ना–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) नाश, लय, खराबी; तिरोहित हो जाना।

फनिराज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फणि राज*) **फनिपति**, शेप।

फनी*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फणी*) साँप।

फनूस*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *फनूस*) फानूस। यौ॰ **झाड़-फानूस**।

फन्नी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *फण*) पंचर, किसी ढीली वस्तु के कसने को ठोंका गया काठ का टुकड़ा।

फफूँदी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फुवती*) धोती या साड़ी का बंधन, नीवी, लकड़ी आदि पर बरसात में सफ़ेद काई सी जमी चीज, भुकड़ी।

फफोला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रस्फोट*) पानी-भरा ऊपरी चमड़े का उभार, छाल, झलका। **मु॰ दिल के फफोले फोड़ना**–दिल का क्रोध प्रगट करना।

फबती–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *फबना*) समयानुकूल बात, किसी पर घटती हुई हँसी की चुभती बात, व्यंग्य, चुटकी। **मु॰ फबती कसना**–चुभती हुई हँसी का बात कहना।

फबन–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *फबना*) सुन्दरता, छवि, शोभा, छटा, **फबनि** (ब्र॰)।

फबना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रभवन*) घटित या शोभा देना, छजना, सोहना, चरितार्थ होना, सुन्दर या भला लगना। कि॰ स॰ **फबाना**।

फबीला– वि॰ दे॰ (हि॰ *फवि+हैला प्रत्य॰*) सुन्दर, शोभायमान। स्त्री॰ **फबीली**।

फर*†–संज्ञा, पु॰ बालों/रोयों वाला मुलायक वस्त्र या खाल।

फरक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फरकना*) फड़क, फड़कने का भाव। पु॰ (दे॰) **फर्क़** (फ़ा॰)।

फ़रक़–संज्ञा, पु. दे. (अ. *फ़र्क़*) अंतर, दूरी, अन्यता, भिन्नता, दुराव, अलगाव, भेद, कमी। **फ़रक** (दे.)। **मु. फ़रक़ फ़रक़ होना**–हटो, बचो, भागो, दूर हो का शब्द होना, अलग-अलग होना।

फरकन–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फरकना*) फड़कने या फरकने का भाव, *फड़क,* फरक, **फरतिक** (प्रे.)।

फरकना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *स्फुरण*) पृथक् या विरुद्ध होना, फड़कना, कूदना, उछलना, हिलना, उमड़ना, उड़ना, आप ही बाहर होना। क्रि. स. **फरकाना**। रूप–**फरकवाना**। **मु.** अग फरकथ (फड़कना) कोई पूर्वाभास होना।

फरका–संज्ञा, पु. दे. (स. *फलक*) बंड़ेर के एक ओर का छप्पर, जो अलग बना कर चढ़ाया जाता है, द्वार का टट्टर, पल्ला।

फरकाना–क्रि. स. दे. (हि. *फरकना*) हिलाना, फड़फड़ाना, अलग या पृथक् करना।

फ़रज़ंद–संज्ञा, पु. (फा.) लड़का, बेटा, पुत्र।

फ़रज़ी–संज्ञा, पु. (फा.) शतरंज में वजीर का मोहरा। वि. बनावटी, कल्पित, नकली, **फरज़ी** (दे.)।

फ़रद–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *फर्द*) स्मरणार्थ एक कागज पर लिखी वस्तुओं की सूची या लेखा, बहुतों में से एक वस्तु एक से कपड़ों के जोड़े में ऐ एक रजाई या दुलाई का एक पल्ला, दो पदों की कविता, विछौना, जाज़िम। वि. अनुपम, बेजोड़, अनोखा। पु. व्यक्ति।

फरना*‡–क्रि. स. दे. (सं. *फल*) फलना। **मु. मकड़ी फरना**–मकड़ी के स्पर्श से दाने-ददोरे हो जाना।

फरफंद–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *अनु. फर+फंदा-जाल*) कपट, छल, दाव-पेंच, प्रपंच, माया, चोचला, नखरा, मकर। वि. **फरफंदी**।

फर-फर–संज्ञा, पु. (*अनु.*) उड़ने या फड़कने का शब्द।

फरफराना–क्रि. स. दे. (अ.) फड़फड़ाना, फट-फटाना, फर फर शब्द कर जलना। संज्ञा, स्त्री. **फरफराहट**।

फरमा–संज्ञा, पु. दे. (अं. *फ्रेम*) कालबूत, जूते का साँचा या ढाँचा। संज्ञा, पु. दे. (सं. *फार्म*) प्रेस में एक बार में छपने का काग़ज़ का एक तख़्ता।

फरमाइश–संज्ञा, स्त्री. (फा.) आज्ञा, किसी वस्तु के तैयार करने या जाने की आज्ञा।

फरमाइशी–वि. (फा.) विशेष रूप से आज्ञा देकर बनवाई या मंगाई गई वस्तु।

फ़रमान–संज्ञा, पु. (फा.) राजाज्ञा-पत्र, अनुशासन-पत्र। यौ. **फरमानशाही**।

फ़रमाना–क्रि. स. दे. (फ़ा.) आज्ञा देना, इजाज़त देना, कहना।

फरराना, फर्राना†–क्रि. अ. दे. (हि. *फहराना*) फहरना, फहराना, उड़ना।

फरवी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं *स्फुरण*) लाई, मुरमुरा, भुना चावल।

फरलाँग फर्लांग–संज्ञा, पु. (अं.) 220 गज।

फरश, फरम–संज्ञा, पु. दे. (अ. *फ़र्श*) बिछौना, धरातल, समतल भूमि।

फ़रशबंद–संज्ञा, पु. दे. (अ. *फर्श+बंद* फ़ा.) फ़रश।

फ़रशी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) धातु का बड़ा हुक्का, गुड़गुड़ी।

फरस, फरसा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परशु*) पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी, कुठार, फावड़ा। संज्ञा, पु. (दे.) फर्श।

फरहद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पारिभद्र*) एक पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग बनता है।

फरहर–वि. (दे.) वृष्टि के बाद धूप और हवा से भूमि का कुछ सूख जाना, थकी कम होना, उत्तेजना आना।

फरहरना†–कि. अ. (अ. *फर फर* फहराना, फरफराना।

फरहरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *फरहरना*) पताका, झंडा। स्त्री. **फरहरी**। वि. (दे.) फरहर, फरहार, फलाहार।

फराँक*–संज्ञा, पु. दे. (*फ़ा. फराख़*) मैदान। वि. विस्तृत, लंबा, चौड़ा।

फराख़–वि. (फा.) लंबा-चौड़ा, **फ़राख**। संज्ञा, स्त्री. (फा.) **फराखी**–चौड़ाई, सम्पन्नता, विस्तार।

फराकत-फराग़त–वि. दे. (फ़ा. *प्राराख*) मैदान जो लंबा-चौड़ा और समतल हो, विस्तृत, **फरागत** (दे.)। संज्ञा, पु. दे. (अ. *फरागत*) मुक्ति, छुट्टी, निवृत्ति, फुरसत, निश्चिंतता, गल-त्याग। यौ. **दिसा फरागत**।

फ़रामोश–वि. (फ़ा.) विस्तृत, थूला हुआ। संज्ञा, स्त्री. **फरामोशी**। यौ. **एकसान फ़रामोश**।

फरार–वि. (अ.) भागा हुआ।

फरिया–*संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ फरना) सामने न सिला हुआ एक प्रकार का घाँघरा या लहँगा, सारी।*

फ़रियाद–*संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) न्याय-रक्षार्थ, पुकार, नालिश, प्रार्थना, शोर, शिकायत,* **गुहार** *(ब्र॰)।*

फ़रियादी–वि॰ (फ़ा॰) फ़रियाद या शोर करने वाला, प्रार्थी।

फरियाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *फली करण*) साफ या शुद्ध करना, तै करना, निपटाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) छँट कर अलग होना, साफ या शुद्ध होना, निपटना, समझ पड़ना।

फरिश्ता–संज्ञा, पु॰ (फा॰) भगवान का सेवक जो पैराम्बरों के पास भगवान का आदेश लाता है, देवता, देव-दूत, ईशाज्ञाकारी।

फरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *फल*) कुशी, फाल, गाड़ी का हरिसा, फड़, गदके की चोट रोकने की चमड़े की छोटी ढाल।

फ़रीक़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) विरोधी, विपक्षी दो पक्षों में से किसी पक्ष का कोई व्यक्ति। यौ॰ **फ़रीक़ सानी**–प्रतिवादी, विपक्षी (कानून॰)।

फरुही–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फावड़ा*) मथानी, छोटा फावड़ा। पु॰ **फरुहा**। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *स्फुरण*, फरवी, लाई, गुरमुरा।

फरेंदा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं *फलेंद्र*) बढ़िया जामुन। स्त्री॰ **फरेंदी**।

फरेब–संज्ञा, पु॰ (फा॰) कपट, छल, धोखा। यौ॰ **जाल-फरेब**।

फ़रेबी–संज्ञा, पु॰ (फा॰) कपटी धोखेबाज, छली, ढोंगी, मल्लार।

फरेरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फल+री प्रत्य॰*) बन फल, बन की मेवा।

फ़रोख्त–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) बेचना, बिक्री।

फ़रोश–वि॰ (फा॰) बेचने वाला, जैसे–**मेवा-फ़रोश**।

फ़र्क़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अन्तर, दूरी, भेद, अन्यता, अलगाव, कमी, **फरक** (दे॰)।

फ़र्ज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कर्त्तव्य-कर्म, धर्म, कल्पना, मान लेना।

फ़र्ज़ी–वि॰ (फा॰) **फरजी** (दे॰) *माना या ठहराया हुआ, कल्पित , नाम मात्र का, सत्ताहीन।* संज्ञा, पु॰ (दे॰) *शतरंज में वजीर नाम का मोहरा।*

फ़र्द–*संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) लेखा या सूची का काग़ज़, विवरण या* सूची-पत्र, शाल या रजाई आदि का ऊपरी पल्ला, चादर, **फरद** (दे॰) स्त्री॰ **फर्दी**।

फर्राटा–संज्ञा, पु॰ (अनु॰) वेग, तेजी, शीघ्रता, क्षिमता, खर्राटा।

फर्राश–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बिछौना, बिछाने या डेरा लगाने वाला नौकर।

फर्राशी–वि॰ (फा॰) फर्श या फर्राश के कार्य से सम्बन्ध रखने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ फार्राश का काम, पद या मज़दूरी। यौ॰ **फर्राशील पंखा**–बंद पंखा जिससे बिस्तर पर भी हवा की जा सके। **फर्राशी (फर्शी) सलाम**–बहुत झुक कर सलाम।

फर्श–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बिछौना, चाँदनी।

फर्शी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) बड़ा हुक्का वि॰ फ़र्श का फ़र्श-सम्बन्धी।

फल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऋतु विशेष में फूलों के बाद उत्पन्न गूदेदार पेड़ों का वीज कोश, लाभ, कार्य का परिणाम या नतीजा, शुभा-शुभ कर्मों का सुखद या दुखद परिणाम, कर्म-विपाक, शुभ कर्मों के चार परिणाम-अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष (सांख्य॰) प्रतीकार, बदला, चाकू, भाला, वास्त्रादि का पैना अग्र भाग, धार, हल की काल, ढाल, मतलब पूरा होना, प्रवृत्ति और दोप से उत्पन्न अर्थ न्याय॰)। गणित में किसी क्रिया का परिणाम, त्रैराशिक की तृतीय राशि की प्रथम निष्पत्ति का दूसरा पद, ग्रहों के योग का सुखद या दुखद परिणाम (फ॰ ज्यो॰)।

फलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पट्टी, पटल, पृष्ठ, चादर, वरक, पत्र, हथेली, फल, तख्ता।

फलक–संज्ञा, पु॰ (अ॰) स्वर्ग, आसमान।

फलकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰) उमगना, छलकना, फरकना।

फल कर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *फल+फर*) वृक्षों के फलों पर लगा हुआ महसूल।

फलका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्फोटक*) छाला, फफोला, झलका।

फलजनक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फलद।

फलतः–अव्य॰ (सं॰) परिणाम या फलस्वरूप, इस हेतु, इस कारण, इसलिए।

फलद-फलप्रद–वि॰ (सं॰) फल देने वाला।

फलदाता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *फलदातृ*) फल देने वाला, फलप्रद, **फलदायक**।

फलदान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) तिलक, विवाह की एक रीति, **वरेच्छा, पर रक्षा**।

फलदार–वि॰ (हि॰ *फल+दार-रखने वाला*) फ़ा॰ *प्रत्य॰* फलों वाला, फल युक्त वृक्ष।

फलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *फलन*) फल लगाना, सफल होना, फल युक्त होना, फल देना, लाभदायक होना। यौ॰ **फलना फूलना**–सब भाँति सुखी और संपन्न होना।

फलमूल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फल और जड़।

फलयोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि था प्रयत्न के फल की प्राप्ति का स्थान।

फल-लक्षणा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक लक्षण (काव्य॰)।

फलवान्–वि॰ (सं॰ *फलवत्*) फलयुक्त, सफल, सार्थक, **फलवंत**।

फलहरी†–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *फल+हरी* हि॰ *प्रत्य॰*) बनफल, वनमेवा। वि॰ (दे॰) बिना अन्न की मिठाई, **फरहरी** (दे॰)।

फलहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *फलाहार*) केवल फल खाकर रहना और अन्नादि न खाना, बिना अन्न का भेजन, **फरहार** (दे॰)।

फलहारी–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *फलाहारिन्*) केवल फल खाकर रहने वाला, **फलाहारी**। (वि॰ हि॰ *फलहार+ई प्रत्य॰*) केवल फलों से बना हुआ, बिना अन्न का भोजन। **फरहरी, फलहरी** (दे॰)।

फलाँग–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *प्रलंवन*) कुदान, चौकड़ी, उछाल, फलांग या उछाल की दूरी।

फलाँगना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *फलाँग+ना प्रत्य॰*) कूदना, फाँदना, उछलना, एक स्थान से उछलकर दूसरे पर जाना।

फलांश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) निष्कर्ष, सारांश, तात्पर्य।

फलागम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरदऋतु, फल लगने की ऋतु, नाटकीय कथा में नायक के उद्देश्य की जहाँ सिद्धि हो (नाव्य॰)।

फलादेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जन्मपत्रानुसार ग्रहों का फल कहना (ज्यो॰)।

फलाना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *फलाँ +ना प्रत्य॰*) **फलाना, फलान** (दे॰), अमुक, कोई। (स्त्री॰ **फलानी**)।

फलाफल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰), लाभालाभ, हिताहित।

फलार्थी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *फलार्थिन्*) फलकामी, फल की चाह रखने वाला।

फलालीन, फलालेन, फलालैन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *फ्लैनेल*) एक ऊनी कपड़ा।

फलाहार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं) केवल फल ही खाना, फल-भोजन, विना अन्न का भेजन, **फराहार, फरहार, फलहार** (दे॰)।

फलाहारी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *फलहारिन्*) केवल फल खाकर रहने वाला। स्त्री॰ **फलाहारिणी**। वि॰ (हिं॰ *फलाहार+ई प्रत्य॰*) केवल फलों से बना पदार्थ, फलाहार-सम्बन्धी, **फलहारी, फरहारी, फलहरी, फरहरी** (दे॰)।

फलित–वि॰ (सं॰) फूला हुआ, पूर्ण, संपन्न, फल या परिणाम को प्राप्त। यौ॰ **फलित** ज्योतिष–ज्योतिष का वह भाग जिसमें ग्रहों की चाल से अच्छे या बुरे फल का विचार किया जाता है।

फलितार्थ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सिद्ध अर्थ, सिद्धान्त, तात्पर्यार्थ। वि॰ पूर्ण मनोरथ।

फली–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *फल+ई प्रत्य॰*) छेमी, छोटे-छोटे लंबे बीजदार फल, फलियाँ।

फलीता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *फतीला*) वत्ती, **पलीता** (दे॰)।

फलीभूत–वि॰ यौ॰ (सं॰) फलदायक, फल या परिणाम को प्राप्त, जिसका कुछ परिणाम या फल हो।

फलप्तमा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दाख, द्राक्षा, मुनक्का।

फलोदय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मनोरथ की सिद्धि, लाभ, भक्ति, आनन्द।

फल्गु–वि॰ (सं॰) छुद्र, तुच्छ, छोटा, निस्सार। संज्ञा, स्त्री॰ **फलगू नदी**।

फल्का, फलका–संज्ञा, पु॰ (दे॰) छाला, फफोला, झलका।

फव्वारा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) फुहारा, **फौवारा**।

फसकड़, फसकड़ा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पलथी लगा या पैर फैला कर बैठना।

फसकना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) फटना, फिसलना, धँसना, फूटना। स॰ रूप–**फसकाना;** प्रे॰ रूप–**फसकवाना**।

फसना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) उलझना, वझना, रुकना, फँसना। स॰ रूप–**फसाना,** प्रे॰ रूप–**फसवाना**।

फसफसा–वि॰ (दे॰) पिलपिला, निर्बल।

फ़सल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *फ़सल*) ऋतु, मौसम, समय, काल, अनाज, खेत की उपज, **फसिल** (दे॰)।

फसली–वि॰ दे॰ (अ॰ *फ़स्ली*) ऋतु-सम्बन्धी। संज्ञा, पु॰ अकबर का चलाया एक सन् जो उत्तरी भारत में कृषि कार्य में चलता है।

फ़साद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बलवा, बिगाड़, विकार, विद्रोह, बखेड़ा, उपद्रव। (वि॰ **फ़सादी**)। यौ॰ **झगड़ा-फसाद**।

फ़सादी–वि॰ (फ़ा॰) झगड़ालू, उपद्रवी।

फ़स्द–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शरीर की नस में नशतर या छेद लगा कर दूषित लोहू निकालने का कार्य। **मु॰ फ़स्द खुलवाना या लेना**–शरीर का बुरा लोहू निकलवाना (अं॰ डाइलिसिस) होश या अक्ल की औषधि करना।

फ़हम–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) समझ, ज्ञान, बुद्धि। यौ॰ **आम फहम**–सबके समझने योग्य।

फहरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रसरण*) वायु में इधर-उधर उड़ना। स॰ रूप–**फहराना** प्रे॰ रूप कहरवाना।

फहरान, फहरनि, फहरानि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फहराना*) फहराने का भाव या क्रिया।

फ़हश–वि॰ दे॰ (अ॰ *फुहश*) अशलील, भद्दा, फूहड़, पोच। **फोश** (दे॰)।

फाँक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *फलक*) टुकड़ा, दरार खंड।

फाँकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *फंकी*) भुरभुरी वस्तु को दूर से मुँह में डालना, फाँक काटना। **मु॰ धूल फाँकना**–दुर्दशा में रहना।

फाँग, फाँगी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक साग।

फाँद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फाँदना*) उछाल, कुदान, फँदान। यौ॰ **कूद-फाँद**। संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ (दे॰) फंदा (हि॰) वाश।

फाँदना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *फणान*) कूदना, उछलना, लाँघना। क्रि॰ स॰ कूद कर लाँघना। क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *फंदा*) फंदे में फँसाना। स॰ रूप–**फँदाना,** प्रे॰ रूप–**फँदवाना**।

फाँदी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) गन्नों का बोझा।

फाँस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पाश*) फंदा, बंधन, पशु-पक्षी के फँसाने का फंदा, तीली, खपौंच। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पनस*) बाँस आदि का महीन या बारीक टुकड़ा जो शरीर में घुस जाता है, कमाची।

फाँसना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *पाश*) जाल आदि में फँसाना, धोखा देकर अधिकार में करना।

फाँसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *पाश*) पाश, फंदा, रस्सी का वह फंदा जो गले में पड़कर मार डालता है, अति दुखद वात, या विपत्ति। **मु॰ फाँसी चढ़ना**–फाँसी द्वारा प्राण-दंड पाना, अपराधी को फंदे द्वारा मार डालने का दंड। **फाँसी देना**–रस्सी का फंदा गले में डालकर मार डालना। **फाँसी पड़ना**–मारा जाना, प्राण-दंड पाना। **फाँसी लगाना**–फंदे से गला घोंट कर मार डालना।

फ़ाका–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *फ़ाक*) उपवास।

फ़ाक़ामस्त, फ़ाक़ेमस्त–वि॰ यौ॰ (फा॰) जो भोजनादि का दुख सह कर भी निश्चिंत रहे। संज्ञा, स्त्री॰ **फाकेमस्ती**।

फ़ाख़ता–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पंडुक पक्षी, **धवँरखा** (प्रान्ती॰)।

फाग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फागुन*) फागुन या होली का उत्सव, जब रंग, अबीर चलता है, होली के गीत।

फागुन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फाल्गुण*) माघ के बाद एक हिन्दी महीना। कि॰ वि॰ **फगुनहटे**–फागुन के समीप। संज्ञा, पु॰ **फागुनहटा**।

फाज़िल–वि॰ (अ॰) ज़रूरत से ज़्यादा, आवश्यकता से अधिक, विद्वान। यौ॰ **आलिम फाज़िल**।

फाट–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भाग, हिस्सा, चौड़ाई। यौ॰ नदी का फाट

फाटक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *कपाट*) तोरण, बहुत बड़ा द्वार या दरवाज़ा, काँजीहौस, मवेशीखाना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फटकना*) अन्न फटकने से बची भूसी, फटकना, पछोरना, फटकन।

फाटका–संज्ञा, पु॰ (दे॰) वस्तु के भाव के अनुमान पर एक प्रकार का जुआ। यौ॰ **सट्टा-फाटका** (व्याया॰)

फाटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *फटना*) फट जाना, फटना, टूट पड़ना।

फाड़न–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फाड़ना*) फाड़ने से निकला कपड़े आदि का टुकड़ा।

फाड़ना, फारना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *स्फाटन*) विदीर्ण करना, चीरना, टुकड़े-टुकड़े करना, धज्जियाँ उड़ाना, संधि या जोड़ खोलना, द्रव वस्तु के पानी और सार भाग का अलग-अलग करना स॰ रूप—**फड़ाना, फड़ावना,** प्रे॰ रूप। **फड़वाना।**

फातिहा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मृतक पुरुषों के नाम पर दिया जाने वाला दान, प्रार्थना।

फ़ानूस–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक बढ़ी लालटेन, बत्तियाँ जलाने को छड़ में लगे शीशे के गिलास, कंदील। यौ॰ **झाड़फ़ानूस**।

फाफर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) कूटू।

फ़ायदा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) नफ़ा, लाभ, सफल, प्रभाव, अच्छा असर, उद्देश्य, सिद्धि, प्राप्ति, अच्छा फल या परिणाम।

फ़ायदामंद, फ़ायदेमंद–वि॰ (फ़ा॰) लाभदायक, लाभपूर्ण, गुणकारी।

फारखती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (अ॰ *फारिग़+खती*) बेबाकी, चुकती, ऋण की अदायगी के सबूत का लेख।

फ़ारस, फ़ारिस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पारस्य*) भारत से पश्चिम में एक देश, ईरान, **परशिया** (अं॰)।

फारसी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) ईरानी या फ़ारस की भाषा।

फारा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फाल*) फाल, फाँक, कतरा, कटी फाँक, (दे॰) फाख।

फाल–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हल के नीचे लगी लोहे की नुकीली छड़ या कुसी, **फार** (आ॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *कलंक*) कटी सुपारी या छालिया, काटा हुआ टुकड़ा, कतरा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *प्रव*) फलाँग, डग। **मु॰ फाल बाँधना**– उछल कर लाँघना, निरंतरता कायम रहना, एक कदम की दूरी, **डग** (हि॰), **पैंड़** *(प्रान्ती॰)*।

फ़ालतू–वि॰ (हि॰ *फाल—टुकड़ा+तू प्रत्य॰*) ज़रूरत से ज़्यादा, आवश्यकता से अधिक, व्यर्थ, निकम्मा, अतिरिक्त।

फ़ालसई–वि॰ (फ़ा॰ *फ़ालसा*) फ़ालसा के रंग का, ललाई लिए हलका ऊदा रंग।

फ़ालसा–संज्ञा, पु॰ फ़ा॰ (सं॰ *परूपक*) मटर जैसे बैंगनी रंग के खट्टे-मीठे फलों का पेड़।

फ़ालिज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पक्षाघात रोग, जिसमें आधा अंग शून्य (जड़) हो जाता है; **पैरवैसिस** (अं॰)।

फालूदा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) गेहूँ के सत से बने एक प्रकार के लच्छे।

फाल्गुन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **फागुन** (दे॰)। माघ के बाद का चाँद्र महीना, अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूर्वा या उत्तरा फाल्गुनी नाम के नक्षत्र (ज्यो॰)। वि॰ फाल्गुन-सम्बन्धी।

फावड़ा, फावरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फाल*) मिट्टी खोदने का हथियार। **फरुहा** (दे॰)। **करसी**–*(प्रान्ती॰)*। स्त्री॰ अल्पा॰ **फावड़ी, फावरी** (दे॰ फरुही)

फ़ाश–वि॰ (फ़ा॰) खुला, प्रगट।

फ़ासला-फ़ासिला–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अंतर, दूरी।

फाहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *फाल*) तेल, घी या किसी द्रव वस्तु के तर रुई, फ़ाया, **फीहा** (आ॰)।

फ़ाहिशा–वि॰ स्त्री॰ (अ॰) पुश्चली, छिनाल स्त्री, कुलटा।

फ़िक़रा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) वाक्य, व्यंग्य, ताना, झाँसापट्टी। वि॰ **फ़िक़रेबाज़**। संज्ञा स्त्री॰—**फ़िक़रेबाज़ी**। **मु॰ फ़िक़रा कसना**—व्यंग्य वाक्य कहना, ताना मारना।

फिकरना-फेकरना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) स्यार का रोदन सा शब्द करना।

फ़िकिर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *फ़िक्र*) चिंता, उपाय, कल्पना।

फिकैत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फेंकना*) गदका, फरी चलाने वाला।

फ़िक–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) चिंता, खटका, सोच, विचार, यत्न, उपाय।

फिक्रमंद–वि॰ (अ॰ *फ़िक्र*+फ़ा॰ मंद) चिंतित, सोच-विचार या खटके में पड़ा हुआ।

फिचकुर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पिछ=लार*) मूर्च्छा में मुँह से निकला फेन।

फिट–अव्य॰ (अनु॰) छी छी, धिक, धुड़ी। वि॰ (अं॰) ठीक, मूर्च्छा।

फिटकार–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) लानत, डाँट, शाप, धिक्कार, कोसना, फटकार।

फिटफिरी-फटकरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *स्फटिक*) मिश्री या स्फटिक सी एक श्वेत खनिज वस्तु।

फिटन–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) चार पहिए वाली खुली गाड़ी।

फिट्टा–वि॰ दे॰ (हि॰ *फिट*) अपमानित, डाँट-फटकार खाया हुआ, श्रीहत।

फ़ितना–संज्ञा, पु॰ (अ॰) फसाद, झगड़ा, दंगा; एक प्रकार इत्र।

फितरत–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बखेड़ा, पत्र; प्रकृति यौ॰ **हिकमत-फितरत**।

फ़ितूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *फ़ुतूर*) उपद्रव, झगड़ा, बखेड़ा, ख़राबी, बिकार। वि॰ **फितूरी, फितूरिया**।

फ़िदवी–वि॰ (अ॰ *फिदाई* से फ़ा॰) आज्ञाकारी, स्वामि-भक्त। संज्ञा, पु॰ दास। स्त्री॰ **फिदविया**।

फिनिया–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कान का एक गहना।

फिनैल–संज्ञा, पु॰ (अं॰ *फिनायल*) एक तीव्र गंध वाला द्रव पदार्थ जिससे कीड़े मर जाते हैं।

फ़िरंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *फ्रॉक*) यूरोप महाद्वीप के देश; **फिरंगिस्तान,** गोरों का देश। यौ॰ **फिरंगरोग**–गरमी, आतशक और और मूत्रकच्छ् या सूजाक का रोग।

फिरंगी–वि॰ दे॰ (अ॰ *फ्रांक*) फिरंग देश का वासी, या वहाँ उत्पन्न, गोरा। संज्ञा, स्त्री॰ विलायत की बनी तलवार।

फिरंट–वि॰ दे॰ (हि॰ फिरना, अं॰ फ्रॉट) ख़िलाफ़, विरुद्ध, फिरा हुआ, सम्मुख, लड़ने को तैयार।

फिर–क्रि॰ वि॰ (हि॰ *फिरना*) पुनः, दोबारा, पुनर्वार, बहुरि, **फेरि** (म॰) **फिरि** (दे॰)। यौ॰ **फिर-फिर**–बार-बार, लौट लौट कर, कई बार। अनन्तर, दूसरे समय, पीछे, उपरांत, उस दशा में, तब इसके अतिरिक्त, इसके सिवाय आगे चलकर। **मु॰ फिर क्या है**–तब क्या पूछना है, तब तो कोई अड़चन ही नहीं है।

फ़िरका–संज्ञा, पु॰ (अ॰) जाति, संप्रदाय, पंथ, मार्ग, जत्था, समूह।

फिरकी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फिरना*) लड़कों का एक बीच की कील पर घूमने वाला गोल खिलौना, चकई, **फिरहरी,** चरखे के तकले में लगाने का चमड़े का गोल टुकड़ा।

फिरता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फिरना*) वापसी, अस्वीकार। वि॰ वापस लौटाया हुआ। (स्त्री॰ **फिरती**)।

फिरना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *फेरना का अ॰*) घूमना, टहलना, भ्रमड़ करना, विचरना, सैर करना, चक्कर लगाना, ऐंठ जाना, लौटना, पलटना, विरोधी हो जाना, मरोड़ना, मुड़ना। स॰ रूप–**फिराना,** प्रे॰ रूप–**फिरवाना**। **मु॰ किसी ओर फिरना**–प्रवृत्त होना। **भाग्य फिरना**–दुर्भाग्य या सौभाग्य आना। **दिल या जी फिरना**–चित्त उचट जाना। **दिन फिरना**–सौभाग्य के अच्छे दिन आना, लौटना, विपरीत होना, लड़ने को तैयार हो जाना, उलटा होना। **मु॰ सिर-दिमाग़ फिरना**–बुद्धि नष्ट या भ्रष्ट होना। **आँखें फिरना**–मूर्च्छित होना, मर जाना। झुकना, टेढ़ा होना। घोषित होना। चढ़ाया या पोता जाना, बात पर दृढ़ न रहना, इधर-उधर घूमना या चलना।

फ़िराक़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बिछोह, वियोग, अलगाव, खोज, चिंता सोच।

फिराना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *फिरना*) इधर या उधर घुमाना, ऐंठना, मरोड़ना, बार-बार चक्कर या फेरे देना, पलटाना, टहलाना, उलटाना, **लौटाना फेराना** (दे॰)।

फिरार, फरार–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भाग जाना, भागना। वि॰ **फिरारी, फरारी**।

फिरि†*–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *फिरना*) **फेर, फेरि** (दे॰) फिर, आगे पीछे, पुनः, दोबारा। पु॰ का॰ कि॰ (व॰) फिर या लौटकर।

फिल्ली–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पिंडली।

फिस–वि॰ (अ॰) कुछ नहीं। **मु॰ टाँय टाँय फिस**–धूमधाम तो बहुत थी पर कल कुछ भी न हुआ। **(मामला) फिस होना (करना)**–किसी कार्य या बात का व्यर्थ होना (करना)।

फिसड्डी, फसड्डी–वि॰ दे॰ (*अनु॰ फिस*) जो काम में सब से पीछे हो, जो कुछ भी न कर सके।

फिसलन–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *फिसलना*) झुकना, प्रवृत्त होना, रपट, रपटन, गीलेपन और चिकनाहट से पैर का स्थिर न होना। संज्ञा, पु॰ **फिसलाहट**।

फिसलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रसरण*), रपटना।

फिहरिस्त, फेहरिश्त–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सूची-पत्र, खाता।

फींचना–क्रि. स. (दे.) कपड़े धोना। स. रूप–**फिंचाना,** प्रे. रूप–**फिंचवाना**।

फ़ी–अव्य. (अ.) प्रत्येक, हर एक। संज्ञा, स्त्री. (अ.) परिश्रम, फल, मज़दूरी, **फीस** (अं.)।

फोका–वि. दे. (सं. *अपक्य*) नीरस, सीठा, स्वाद-रहित, मलिन, कांति-हीन, उदास, मैला, निष्फल, व्यर्थ, प्रभावहीन, धूमल। स्त्री. **फीकी**।

फ़ीता–संज्ञा, पु. (फ़ा.) कोर, किनारी, पतली धज्जी जिससे कुछ लपेटते या बाँधते हैं, **फीता** (दे.)।

फ़ीरनी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *फिरनी*) एक तरह की खीर।

फ़ीरोज़ा–संज्ञा, पु. (फा.) नील मणि, गीलापन लिए हरे रंग का एक पत्थर या नग, **फ़िरोज़ा** (दे.)।

फ़ीरोज़ी–वि. (फा.) हरापन लिए नीले रंग का, **फ़िरोज़ी** (दे.)।

फ़ील–संज्ञा, पु. (फा.) हाथी, शतरंज का एक मोहरा **फीला**।

फ़ीलख़ान–संज्ञा, पु. (फा.) हथियार, हस्तिशाला, हाथी बाँधने का स्थान।

फ़ीलपा, फीलपाँव (दे.)–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) खम्भा, एक रोग जिसमें पैर सूज कर भारी हो जाते हैं।

फ़ीलवाना–संज्ञा, पु. (फा.) हथवाल, हाथीवान।

फ़ीली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पिंड*) पिंडली।

फुँकना, फुकना–क्रि. स. दे. (हि. *फूँकना*) जलना, भस्म होना, नष्ट या बरबाद होना। स. रूप–**फुँकाना,** प्रे. रूप-**फूकवाना**। संज्ञा, पु. (हि. *फुँकनी*) मूत्राशय।

फुँकनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फूँकना*) वह नली जिससे फँककर आग जलाते हैं, धौंकनी, भाथी।

फुँकरना–क्रि. अ. दे. (सं. *फुँकार*) फूत्कार या फुँकार छोड़ना।

फुँकार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *फूत्कार*) मुँह से हवा छोड़ने का शब्द, फुटकर, फूँक।

फुँदना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *फूल+फंद*) झब्बा, फुलरा, फूल जैसी सूत की गाँठें।

फुँदिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फुँदना*) झब्बिया, फुलरी।

फुँदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फंदा*) गाँठ, फंदा। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. बिंदी) बेंदी, टीका, बिंदी।

फुँसी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पनसिका*) छोटी फुड़िया। यौ. **फोड़ा-फुँसी**।

फुचड़ा, फुचरा–संज्ञा, पु. (दे.) बुने कपड़े से बाहर निकला हुआ सूत का रेशा।

फूट–वि. दे. (सं. स्फुट) अकेला, एकाकी, अलग, भिक्ष, पृथक्। संज्ञा, पु. (अं., फुट) 12 इंच की लम्बाई की माप।

फुटकर-फुटकर–वि. दे. (सं. *रफुट+कर प्रत्य.*) भिन्न-भिन्न, अलग-लग, पृथक्-पृथक्, धोखा थोड़ा, विषम, अकेला। कई प्रकार या मेल का। (विलो.–थोक)।

फुटका–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्फोट*) फफोला ज्वार आदि का भूजने से फूला और बिखरा दाना, लावा।

फुटकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *फुटक*) लूथ आदि जमी हुई द्रव वस्तु के छोटे बुलबुले, पीब, खून आदि के छींटे।

फुटेहरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *फूटना+हरा प्रत्य.*) चने या मटर का भूनने से बिखरा और फूला हुआ दाना।

फुट्टल-फुट्टैल–वि. दे. (सं. *स्फुट*) झुंड, या जोड़ से अलग या भिन्न। वि. (हि. *फूटना*) अभागा, फूटे भाग्य वाला।

फुड़िया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं स्फोट) छोटा फोड़ा फुंसी।

फुत्कार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *फुत्कार*) दुत्कार, तिरस्कार, फुसकार।

फुदकना–क्रि. अ. (अनु.) उछल-उछल कर कूदना, उमंगित होना।

फुदकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*फुदकना*) एक बहुत छोटी चिड़िया।

फुनँग-फुनगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *पुलक*) अंकुर, पौधों या पेड़ों की डालियों का अग्रिम खंड।

फुप्फुस–संज्ञा, पु. (सं.) फेफड़ा।

फुफँदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *फूल+फंद*) नीथी, स्त्रियों की धोती की गाँठ या घांघरे (लँहगे) का नारा, इजारबंद, कमरबंद।

फुफकना–अ. (दे.) फुफकारना। (सं. रूप–**फुसकाना**); आवाज़ करते हुए रोना।

फुफकार–संज्ञा, पु. (*अनु.*) फुँकार, फुसकार, साँप के मुख से निकली वायु का शब्द।

फुफकारना–क्रि. अ. दे. (*फुफकार*) साँप के मुख से वायु निकालना, फुसकारना, फुस्कार छोड़ना।

फुकी-फुफू*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (*अनु.*) बाप की बहन, बुआ।

फुफी, फूफू, पु. **फूफा।**

फुफेरा–वि. दे. (*हि. फूफा+रा प्रत्य.*) फूफा का पुत्र, फूफा से उत्पन्न। स्त्री. **फुफेरी।**

फुर, फुरु†–वि. दे. (*फुरना*) सच, सत्य फलीभूत होना। संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) पक्षी के उड़ने में पंखों का शब्द।

फुरती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्फूर्ति*) तेज़ी, जल्दी, शीघ्रता।

फुरतीला–वि. दे. (हि. *फुरती+ईला प्रत्य.*) तेज, फुरतीवाला। स्त्री. **फुरतीली।**

फुरना*–क्रि. अ. दे. (सं. *स्फुरण*) प्रगट या अद्भुत होना, उच्चारित या प्रकाशित होना, फड़कना, चमक जाना, सत्य ठहरना, पूरा उतरना, प्रभाव उत्पन्न करना या दिखना, निकलना। स. *रूप*–**फुराना,** प्रे. *रूप*–**फुरवाना।**

फुरफुराना–क्रि. स. दे. (*अनु फुरफुर*) उड़ना, पंखों का शब्द करना, वायु में लहराना, फरफराना। क्रि. अ. किसी हलकी वस्तु का फुरफुर शब्द कर हिलना।

फुरफुरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*अनु.*) फुरफुर शब्द होने या पंख फड़फड़ाने का भाव; शरीर में उठी हल्की सिहरन)

फुरमान–संज्ञा, पु. (दे.) फरमान (फ़ा.) राजाज्ञा।

फुरमाना–क्रि. स. दे. (*फा.* **फरमाना**) आज्ञा देना, कहना, स्फुरित या प्रकट करना।

फुरसत–संज्ञा, स्त्री. (*अ.*) अवकाश, अवसर, निवृत्ति, छुट्टी, आराम, रोग-मुक्ति।

फुरहरना–क्रि. स. दे. (*सं. स्फुरण*)। निकलना, स्फुरित, या उद्भूत होना।

फुरहरी–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) कँपकँपी, फड़कना, पक्षी के उड़ने से परों का शब्द, हवा में वस्त्रादि के उड़ने का शब्द, फरफराहट, रोमांच युक्त कंप, सींक के छोर पर अतर में डूबी रुई का फ़ाहा, **फुरेरा।**

फुरेरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*हि. फुरफुराना*) सींक के सिरे पर इतर में डूबी हलकी लिपटी रुई, फुरहरी, रोमांच-युक्त कंप। **मु. फुरेरी लेना**–फड़कना, भय या शीत आदि से रोमांचित होना या काँपना, थरथराना, हिलना, **थरथराना।**

फुलका–संज्ञा, पु. दे. (*हि फूलना*) झलका, छाला, फफोला, पतली और छोटी रोटी, चपाती। स्त्री. अल्पा.–**फुलकी।**

फुलचुही–संज्ञा, स्त्री. दे. (*हि फूल+चूसना*) एक काली चिड़िया।

फुलझड़ी, फुलझरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*हि. फूल+झड़ना*) एक *तरह की आतिशबाज़ी, उपद्रव या फसाद पैदा कराने वाली बात।*

फुलरा–संज्ञा, पु. दे. (*हि. फूल+रा प्रत्य.*) फुँदना, सूत या ऊन का फूल जैसा गुच्छा।

फुलवर–संज्ञा, पु. दे. (*हि. फूल+वार*) बूटीदार एक रेशमी वस्त्र।

फुलवाई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (*सं. पुष्पवाटिका*) उद्यान, पुष्पवाटिका, काग़ज़ के पुष्प-वृक्ष जो बरात में निकाले जाते हैं, **फुलवारी।**

फुलवार–वि. दे. (हि. *फूल+वारा*) प्रसन्न, प्रफुल्ल।

फुलवाड़ी-फूलवारी-फुलवारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*सं. पुष्पवाटिका*) बाग, पुष्पवाटिका, बगीचा, उद्यान, फुलवाई। बरात में काग़ज़ के फूल, वृक्ष।

फुलहथा–संज्ञा, पु. (दे.) लाठी की मार।

फुलहारा–संज्ञा, पु. दे. (*हि. फूल+हारा प्रत्य.*) माली, फूलवाला। स्त्री. **फुलहारी, फुलहारिन।**

फुलाना–क्रि. स. (*हि. फूलना*) वायु आदि भर कर किसी पदार्थ का विस्तार बढ़ाना। **मु. (गाल) मुँह फुलाना**–रूठना, मान करना। पुलकित या हर्षित कर देना, गर्व पैदा करना, विकसित या कुसुकित करना, पुष्पयुक्त करना। कि. अ. (दे.) **फूलाना।** प्रे. रूप-**फुलावना, फुलवाना।**

फुलायल*–संज्ञा, पु. दे. (*हि. फुलेल*) फुलेल, सुगंधित तेल।

फुलाव–संज्ञा, पु. दे. (*हि. फूलना*) फूलने की क्रिया का भाव, सूजन, उभार।

फुलिग-फुलिंगा*–संज्ञा, पु. दे. (*सं. स्फुलिंग*) आग की चिनगारी।

फुलिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (*सं. स्फोट*) फुड़िया। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. फूल) छेटा फूल, नाक की लौंग, फूल जैसे सिरे वाली कील।

फुलेल–संज्ञा, पु. दे. (*हि. फूल+तेल*) सुगंधित तेल, फुलायल। यौ. **तेलफुलेल।**

फुलेहरा†–संज्ञा, पु. दे. *(हि. फूल+हार) रेशम या सूत के बंदनवार।*

फुलौरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (*हि. फूल+वरी*) बेसन या चने के महीन आटे की पकौरी।

फुल्ल–वि. (सं.) विकसित, खिला या फूला हुआ।

फुल्ली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*हि॰ फूल*) *आँख का जाला*, **फूली,** *नाक का एक गहना*, **पुल्ली।**

फुस–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰*) धीमा शब्द।

फुसकारना*†–क्रि॰ अ॰ (अनु॰) फूत्कार छोड़ना, फूँक मारना, फुफकारना।

फुसफुस–संज्ञा, पु॰ (दे॰) फुस्फुस, फेफड़ा।

फुसफुसा–वि॰ दे॰ (हि॰ *फूस, अनु॰ फुस*)। निर्बल, मंदा, जो दबने से टूट या चूर हो जाय। **फुसफुस** (दे॰) **फुसफुसहा** (आ॰)।

फुसफुसाना–क्रि॰ स॰ (अनु॰) बहुत ही धीमे स्वर से बोलना।

फुसफुसाहट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *फुसफुसाना*) धीमे स्वर से बोलने का भाव।

फुसलाऊ–वि॰ दे॰ (हि॰ *फुसलाना*) फुसलाने या बहकाने वाला।

फुसलाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*हि॰ फिसलाना*) चकमा देना, बहकाना, झाँसा देना, अनुकूल बनाने को मीठी मीठी बात करना।

फुसलावा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*हि॰ फुसलाना*) झाँसा, चकमा, बहकाया, भुलावा।

फुसाहिंदा–वि॰ (दे॰) घिनौना, घृणास्पद, दुर्गंधी।

फुस्का–वि॰ (दे॰) दुर्बल, निर्बल, ढीला। संज्ञा, पु॰ (दे॰) छाला, फफोला।

फुहार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*सं॰ फूत्कार*) सूक्ष्म जल-कण, जल के बारीक छींटे, छोटी छोटी बूँदों की झड़ी, **झींसा** (प्रान्ती॰)।

फुहारा–संज्ञा, पु॰ (*हि॰ फुहार*) पानी के बारीक छींटे, एक जल यंत्र जिससे दबाव के कारण, पानी के सूक्ष्म कण या धार वेग से ऊपर निकलते हैं, **फव्वारा।**

फुही, फुहीर–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) फुहार (हि॰)

फूँ–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰*) साँप की फुसकार।

फूँक–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰ फूँ फूँ*) संकुचित मुँह से वेग के साथ छोड़ी वायु, साँस। **मु॰ फूँक निकल जाना**–प्राण या जान निकल जाना। मंत्र पढ़कर मुँह से छोड़ी हुई हवा। यौ॰ **झाड़-फूँक**–मंत्र-तंत्र का उपचार।

फूँकना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*हि॰ फूँका*) संकुचित मुँह से बड़े वेग से वायु छोड़ना। द्वि॰ स॰ *रूप*–**फुँकाना,** *प्रे॰ रूप*–**फुँकवाना। मु॰ फूँक-फूँक कर पैर रखना या चलना**–कोई काम बड़ी सतर्कता या सावधानी से करना। मंत्रादि पढ़कर *किसी पर फूँक डालना, शंख, बाँसुरी आदि को फूँक कर बजाना, फूँक कर आग जलाना, भस्म करना,* अपव्यय या व्यर्थ खर्च करना, उड़ाना, गुरु-मंत्र देना। **मु॰ कान फुँकना**–गुरु-मन्त्र या दीक्षा देना। यौ॰ **फुँकना तापना**–व्यर्थ खर्च कर देना।

फूँका–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *फूँक*) जलन पैदा करने वाली दवा भर कर स्तन में लगा बाँस की नली से फूँक कर गाय आदि का सब दूध निकालने की विधि, फूँका मारने की नली, फफोला, किसी वस्तु में मुँह की फूँक भर देना।

फूँकारना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) फनफनाना, फुफकारना, फुसकारना, क्रोध का निश्वास।

फूँद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फुँदना*) फुँदना, झव्या।

फूँदा*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फुँदना*)
फुँदना, झव्या, फंदा। यौ॰ **फूँदफुँदारा**–फुँदने वाला, फुफूँदी। स्त्री॰ **फुँदी।**

फूआ, फुआ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फूफी*) बुआ, फूफी।

फूट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *फूटना*) फूटना क्रिया का भाव, विरोध, बिगाड़, भिन्नता, अलगाव, मत-भेद, एक बड़ी मोटी, पकी ककड़ी।

फूटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *स्फुटन*) किसी कड़ी वस्तु के आघात से किसी खरी नरम वस्तु का टूटा जाना, फट जाना, करकना, दरकना, मुँह से शब्द निकलना, नष्ट होना, बिगड़ जाना, पोली या नर्म चीज़ से भरी वस्तु का फटना, कली का खिलना, अंकुर या नए पत्ते शाखादि का निकलना, प्रस्फुटित होना, बिखरना। **मु॰ फूट (फूट-फूट) कर रोना**–विलाप करके रोना। **फूट मिलना**–किसी स्वजन से विरोध कर विलग हो उसके शत्रु से जा मिलना। **फूट पड़ना (होना)**–विरोध होना या बढ़ना, बिगाड़ या बिलगाव होना। **फुट रहना (जाना)**–विरोध से अलग हो जाना, बिगाड़ या विरोध रहना, (विरोध से विलग हो जाना)। **फूट होना**–बिगाड़ या विरोध होना, बिलगाव होना। **फूट डालना**–बिगाड़ या वैर पैदा करा देना। एक पक्ष छोड़ दूसरे में हो जाना, देह पर दाने या घाव निकल आना, सवेग फोड़ कर बाहर आना, व्याप्त होना, व्यक्त या प्रगट होना। **मु॰ भेद फूटना**–गुप्त बात का प्रगट हो जाना। **फूटी आँखों**

न भाना (सुहाना)–रंग भी न सुहाना, बुरा लगना। **फूटी आँखों न देख सकना**–बुरा मानना, कुढ़ना, जलना। बाँध आदि का टूट जाना, जोड़ों में पीड़ा होना।

फूत्कार–संज्ञा, पु. (सं.) फुफकार, फुसकार, फूँक, मुख से निकली वायु का शब्द। **फूफकार** (दे.)।

फूफा–संज्ञा, पु. (*अनु.*) पिता का वहनोई, बुआ या फूफी का पति।

फूफी–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) पिता की बहिन, भुआ, वुआ, फूआ, फूफू।

फूल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुष्प*) पुष्प, सुमन, कुसुम, पौधों की फलोत्पादक शक्ति वाली ग्रंथि या गोठ। **मु. (मुख से) फूल झड़ना**–मधुर या प्रिय बवचन वोलना। **फूल सा**–अति सुकुमार या कोमल, सुन्दर, हलका। **फूल सूँघकर रहना**–बहुत कम खाना (व्यंग्य)। **पान, फूलसा**–बहुत ही सुकुमार, पुष्पाकार बेल-बूटे, कसीदे, नक्काशी, पुष्प-सा भूषण, जैसे–शीश-फूल, करण फूल, हथफूल (हिन्दू), कुष्ट-जनित शरीर के सफ़ेद या लाल दाग, स्त्रियों का रज, जलने के पीछे मस्तक की बची हड्डी, ताँवा ओर राँगे से बनी एक धातु, पीतल आदि की गोल फूल-सी गाँठ। संज्ञा, स्त्री. (हि. *फूलना*) फूलना का भाव, आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, उत्साह, उमंग।

फूलगोभी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) गोभी (फूलदार) गाँट गोभी, बँधे पत्तों के पिंड वाली गोभी।

फूलदान–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *फूल+दान फ़ा.*) पीतल या काँच आदि का गिलास-नुमापात्र जिसमें गुलदस्ता रखा जाता है।

फूलदार–वि. (हि. *फूल+ दार* फ़ा.) वह पदार्थ जिस पर फूल-पत्ते बने हों, फूलवाला।

फूलना–क्रि. अ. (हि. *फूल+ना प्रत्य.*) पुष्पित या कुसुमित होना, सुमन युक्त होना, खिलना, विकास को प्राप्त होना, कली का संपुट खुलना, कुछ कर जाने से किसी वस्तु का फैलकर बढ़ना। **मु. फूलना-फालना**–धनी और सुखी होना, कूटनीति करना। **फूलना-फलना**–प्रसन्न या हर्षित होना, उल्लास में रहना। शरीर के किसी अंग का सूजना, मोटा या स्थूल होना, इतराना, घमंड करना, प्रसन्न होना। **मु. फूला-फूला फिरना**–हर्ष में ..ना। **फूले (अंग) न समाना**–बहुत प्रसन्न होना। **मुँह फुलाना**–माना करना, रूठना।

फूलमती–संज्ञा, स्त्री. (हि. *फूल+मती प्रत्य.*) एक देवीं

फूली–संज्ञा, स्त्री. (हि. *फूल*) जाला, सफेद मोंढ़ा, आँख की पुतली पर पड़ा छोटा दाग।

फूस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *तुप*) छप्पर में लगाई जाने वाली लंवी दृढ़ घास, गाडर, तिन (दे.) सूखा तृण, खर। यौ. **घास-फूस, फूस-फास**।

फूहड़-फूहर–वि. दे. (सं. *पव–गोवर+घट–गढ़ना*) निर्बुद्धि, वे शऊर, वे ढंगा, भद्दा।

फूही–संज्ञा, स्त्री. दे. (स. *फूत्कार*) फुहार।

फेंकना–क्रि. स. दे. (सं. *प्रेषण*) एक स्थान से उठाकर वल-पूर्वक दूसरे स्थान में डालना या गिराना, भूल से इधर-उधर छोड़ना, गिराना, अनादर से छोड़ना, अपव्यय करना। द्वि. *रूप*–**फेंकाना,** *प्रे. रूप*–**फेंकवान**।

फेंकरना*†–कि. अ. (*अनु. फें फें करना*) बड़े जोर से चिल्ला कर रोना। जैसे–स्यार।

फेंकारना–कि. स. (दे.) बाल खोले नंगे सिर रहना।

फेंट–संज्ञा, पु. दे. (हि. *पेट–पेटी*) फेरा, घुमाय, कटि मंडल, कमर का घेरा, कमर में लपेट कर बाँधा गया धोती या वस्त्र का छोर। **पटुका** (व्र.) लपेट, कमर-बंद, फेंटा (दे.), **परिकर। मु. फेंट धरना या पकड़ना**–कमरबंद को ऐसा पकड़ना कि भाग न सके। **फंट (परिकर) कसना या बाँधना**-कमर बांधकर तैयार होना। संज्ञा, स्त्री. (हि. *फेंटना*) फेंटना का भाव।

फेंटना–क्रि. स. दे. (सं. पिट) गाढ़े द्रव पदार्थ को अँगुलियों और हथेला से रगड़ना, ताशों को उलट-पुलट कर मिलाना।

फेंटा–संज्ञा, पु. दे. (हि *फेंट*) फेंट, पटुका, कमरबंद, छोटी पगड़ी।

फेण–संज्ञा, पु. दे. (सं.) **फेन**–नन्हें नन्हें बुलबुलों का गठा समूह, फेना, झाग। (वि. **फेनिल**)।

फेनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *फेनिका*) सूत के लच्छे जैसी एक मिठाई, **सूतफेनी**।

फेफड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *फुप्फुस+का प्रत्य.*) फुप्फुस, प्राणियों की छाती के भीतर साँस लेने का अवयव।

फेफडी-फेफरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *पपड़ी*) पपड़ी, होंठों के

चमड़े की पपड़ी।

फेर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फेरना*) फिरने या घूमने की क्रिया, दशा, या भाव, चक्कर, घुमाव, रद्दोबदल, परिवर्तन। प्रेत-बाधा, धोखा, जाल, छल, संदेह, भ्रम, मोड़, झुकाव, झंझट, चालबाज़ी, बखेड़ा। **मु॰–फेर खाना**–सीधी राह न जाकर टेढ़ी राह से अधिक चलना, चक्कर खाना, भटकना। **फेर देना**–लौटा था वापिस कर देना। **फेर-फार**–पेंच, घुमाव-फिराव, जटिलता, अदल-बदल, अंतर, बहाना, चक्कर, इधर-उधर, छल-कपट। **मु॰ फर्मो या (समय) दिनों का फेर**–दशान्तर, विपत्ति का समय, अच्छी से बुरी दशा होना। अंतर, भेद, उलझन। **मु॰ फेर में पड़ना (आना)**–भ्रम, धोखा, संदेह, संशय, असमंजस या झंझट में पड़ना (आना)। षट्चक्र, षड्यंत्र। **फेर पड़ना (होना)** भूल या अंतर पड़ना। **मु॰ निन्यानबे का फेर**–रुपया जोड़ने या बढ़ाने का चसका, 99 से 100 रुपए पूरे करने की चिंता। क्रिकेट खेल में 99 से शतक प्राप्त करने का प्रयत्न। **फेर (लगाना) बाँधना**–लेन। देन या आदान-प्रदान का क्रम लगाना, युक्ति, ढंग, उपाय, एवज, बदला। **यौ॰ उलट-फेर**–उलटा-पलटा। **चाल–फेर**–आना-जाना, कल, धोखा। **जाल-फेर**–छल-कपट। हेर-फेर–लेन-देन, व्यवसाय, आदान-प्रदान। घाटा, हानि, भूत-प्रेत का प्रभाव, दिशा, ओर। अव्य॰ दे॰ फिर, पुनः, दोबारा।

फेरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *प्रेरण*) मरोड़ना, घुमाना, लौटाना, वापिस करना या लेना, लौटा लेना (देना), चक्कर देना, ऐंठना, मोड़ना, पोतना, पीछे चलाना, इधर-उधर ऊपर स्पर्श करना, तह चढ़ाना। **मु॰ पानी फेरना**–नष्ट-भ्रष्ट करना। घोषित या प्रचारित करना, घोड़े आदि पशुओं को चलना सिखाना, उलट-पलट या इधर-उधर करना, बदलना, परिवर्तन करना। **मु॰ आँखें फेरना (फेर लेना)**– मर जाना। **मुँह फेरना**–विमुख होना, उपेक्षा करना, उदासीन होना।

फेरा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *फेरना*) परिक्रमण, कील पर चारों ओर घूमना, चक्कर, मोड़, एक बार की लपेट, बारंबार आना-जाना, घूमते-फिरते आ जाना या पहुँचाना, फिर लौटकर आना, मण्डल, आवर्त, घेरा, ब्याह में भाँवर।

फेरि*–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *फिर*) फिर, पुनः क्रि॰ स॰ पूर्व॰ (ब्र॰) घुमाकर।

फेरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *फेरना*) फेरा परिक्रमा, लौटकर आना, चक्कर, साधु या भिखारी का भिक्षार्थ गाँव या बस्ती में बराबर घूमना या आना-जाना। **मु॰ फेरी करना या लगाना**–सौदा बेचना (घूम घूम कर), फिर फिर आना-जाना।

फेरीवाला–संज्ञा, पु॰ (हि॰) घूम-फिर कर सौदा बेचने वाला व्यापारी।

फ़ेल, फेल (दे॰)–संज्ञा, पु॰ (अ॰) काम, क्रिया, कार्य, कर्म। क्रि॰ अ॰ (अं॰) गिर जाना, चूकना, असफल या अनुत्तीर्ण होना।

फ़ेहरिस्त–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *फ़िहरिस्त*) विषय-सूची, तालिका।

फैल*‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *फेल*) कार्य्य, खेल, नखरा, क्रीड़ा, कौतुक।

फैलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *प्रसूत*) पसरना, वृद्धि या बढ़ती होना, विस्तृत होना, बढ़ना, छितराना, बिखरना, अति बड़ा या लंबा-चौड़ा होना, प्रचार पाना, प्रसिद्ध होना, मोटा या स्थूल होना, आग्रह या हठ करना, भाग का ठीक-ठीक पूर्ण रूप से लग जाना, प्रचुरता या अधिकता से मिलना, किसी ओर तनकर बढ़ना। स॰ रूप–**फैलाना,** प्रे॰ रूप–**फैलवाना।**

फैलाना–क्रि॰ सं॰ (हि॰ *फैलना*) पसारना, बखेरना, छितराना, विस्तृत करना, बढ़ाना, भर या छा देना, व्यापक, प्रसिद्ध या प्रचलित करना, दूर तक पहुँचाना, सब ओर प्रगट करना, गुणा-भाग की शुद्धता की परीक्षा करना, लेखा या हिसाब लगाना, दूर तक पृथक्-पृथक् कर देना, बढ़ती करना।

फैलाव–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *फैलाना*) विस्तार, प्रसार, प्रचार, बढ़ती।

फ़ैसला–संज्ञा, पु॰ (अ॰) निपटारा, मुकदमे में निर्णय, अदालत का अंतिम निर्णय।

फोंक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पुंख*) वाण के पीछे की नोक जहाँ पर लगे रहते हैं।; (प्रा॰) घमंड, दर्प।

फोंदा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फुँदना*) फुंदना, झब्बा, फंदा (दे॰)।

फोक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *फोकला*) तुप. किसी वस्तु का सार निकल जाने पर बचा हुआ भाग या अंश, भूसी,

बकला, सीठी, नीरस या फीकी वस्तु।

फोकट–वि॰ (हि॰ *फोक*) निःसार, मूल्य-रहित, निर्मूल्य, व्यर्थ। **मु॰ फोकट में**–मुफ़्त में, योंही। **फोकट का माल**।

फोकला†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वल्कल*) छिलका, बकला, बोकला, (आ॰) वकल।

फोट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्फोट*) फोड़ा, फुंसी।

फोड़ना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *स्फोटन*) खरी चीज़ को चूर-चूर करना, विदीर्ण करना, भंग करना, तोड़ना, अंकुर, डाली या टहनी निकलना, आघात या दवाव से भेदना, दूसरे पक्ष से अपने पक्ष में मिलाना या कर लेना, भेद-भाव पैदा करना, फूट ढालकर अलग-अलग करना, भेद या रहस्य का सहसा खोलना, देह में विकार से फोड़े या घाव हो जाना।

फोड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्फोटक*) बड़ी फुंसी, शोध, स्फोड़, प्रण, फुही, दोप-संचय से उत्पन्न पीव के रूप में सड़े रक्त की सूजन। स्त्री॰ अपपा॰ **फोड़िया, फुड़िया** (दे॰)।

फ़ोता–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) भूमिकर, ज़मीन का लगान, पोत, मेला, कोप, अंडकोष।

फोतेदार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कोषाध्यक्ष, खजानची। **पोतदार** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **फातेदारी-पोतदारी**।

फौआरा, फौवारा, फव्वारा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *फुहारा*) फुहारा।

फ़ौज–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) सेना, जत्था, झुंड, लश्कर। वि॰ **फ़ौज़ी**।

फ़ौजदार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) सेनानायक, सेनापति।

फ़ौजदारी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) मारपीट, लड़ाई, वह कचहरी जहाँ मार-पीट के झगड़े (मुक़दमें) निपटाए जाते और अपराधी को दंड (शारीरिक) दिया जाता है; फ़ौजदारी मुकदमे (अ॰) क्रिमिनल केसेज़।

फ़ौज़ी–वि॰ (फ़ा॰) सेना सम्बन्धी, सैनिक।

फ़ौत–वि॰ (अ॰) मरा हुआ, मृत, मृतक, गत। संज्ञा, स्त्री॰ **फौती**; यौ॰ फौत नामः मृत्यु प्रमाण पत्र।

फ़ौरन–क्रि॰ वि॰ (अ॰) तत्काल, तुरन्त, झटपट, शीघ्र, चटपट।

फ़ौलाद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *पोलाद*) कड़ा, अच्छा और साफ़ लोहा, खेड़ी; (अं॰/स्टील) वि॰ **फ़ौलादी**।

फ़्रांसीसी–वि॰ (*फ़्रांस*) फ्रांस निवासी, फ्रांस का, **फरासीसी** (दे॰)।

ब

ब–हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला का 23वाँ तथा पवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ट है। संज्ञा, पु॰ (सं॰) संगंधि, वरुण, पानी, सागर।

बंक–वि॰ (सं॰ *वक्र, बंक*) तिरछा, टेढ़ा, पराक्रमी, विक्रमी, पुरुषार्थी, दुर्गम, अगम। **बंका** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **बंकता**। संज्ञा, पु॰ (*अं॰ बैंक*) लेन-देन करने वाली एक संस्था।

बंकट–वि॰ दे॰ (सं॰ बंक) टेढ़ा तिरछा।

बंकराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ बंकराज) एक तरह का सांप।

बंका†–वि॰ दे॰ (सं॰ *बंक*) वक्र, तिरछा, टेढ़ा, पराक्रमी, वाँका।

बंकाई†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वक्रता*) **बंकुरता** (दे॰) टेढ़ाई, **बंगई** (दे॰)।

बंकुरता–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) *वक्रता* (सं॰)।

बंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पौष्टिक औषधि, (रसायन), अंग देश, बंगाल। वि॰ (दे॰) वक्र, बंक।

बँगला–वि॰ दे॰ (हि॰ *बंगाल*) बंगाल देश का, बंगाल-सम्बन्धी। संज्ञा, स्त्री॰ बंगाल देश की भाषा। संज्ञा, पु॰ चारों ओर बरामदों वाला एक मंज़िला घर जो खुले ठौर पर हो, छोटा हवादार अटारी पर का कमरा, बँगाले का पान, (अं॰) बंगनी।

बँगली–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बंगला*) हाथ का एक गहना, बनियाँ, छोटा बँगला, **बँगलिया** (दे॰)।

बंगा–वि॰ दे॰ (सं॰ *वक्र*) वक्र, उद्दंड, मूर्ख।

बंगाल, बंगाला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ बंगाल) अंग या बंगाल देश, बंगालिका नाम की एक रागिनी (संगी॰)।

बंगाली–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बंगाल*+ई॰ प्रत्य॰) बंगाल का

वासी। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. बंग) बंगाल की भाषा।

बंचक—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वंचक*) ठग, पाखंडी, छली, धूर्त्त। संज्ञा, स्त्री. **बंचकता**।

बंचकता-बंचकताई*‡—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. बंचकता) धूर्त्तता, ठगी, छल।

बंचनता—संज्ञा, स्त्री. (सं. *वंचकता*) ठगी, धूर्त्तता, छल।

बंचना—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वंचना*) छल, ठगी, धूर्त्तता, पाखंड। *‡क्रि. स. दे. (सं. *वंचन*) छलना, ठगना।

बँचाना, बँचवाना—क्रि. स. दे. (हि. *बाँचना*) पढ़ाना, पढ़वाना।

बंछित, बांछित*‡—वि. दे. (सं. *वाँछित*) चाहा हुआ, इच्छित, अभिलषित।

बंज†—संज्ञा, पु. (हि. *बनिज*) बनिज, वाणिज्य, व्यापार।

बंजर—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वन+ऊजड़*) ऊसर, ऊसर भूमि।

बंजारा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बनजारा*) बनजारा, व्यापारी। स्त्री. **बंजारिन**।

बंजुल—संज्ञा, पु (सं.) रतवक, गुच्छा।

बंझा—वि. संज्ञा, स्त्री. (दे.) **बंध्या** (सं.), **बाँझ**।

बँटना—क्रि. अ. दे. (सं. *वितरण*) हिस्सा या विभाग होना, कई पुरुषों को भिन्न-भिन्न भाग दिया जाना। स. रूप. **बँटाना,** प्रे. रूप. **बँटवाना**।

बँटवारा, बटवारा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाँटना*) विभाग, तकसीम, वाँटने की क्रिया। यौ. **अमान बँटवारा**।

बंटा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वटक*) गोलाकार छोटा बच्चा। (स्त्री. अल्पा. **बँटी**)। यौ.—अंटा-बंटा।

बँटाई, बटाई—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाँटना*) बाँटने का भाव या क्रिया, लगान के रूप में खेत की पैदावार का कुछ भाग लिया जाना।

बंडा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बँटा*) एक तरह का अरुई। वि. (प्रान्ती.) अकेला।

बंडी—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाँडा=कटा*) आधी बाँह की कुरती, फतुही, बगलबंदी;

बंद—संज्ञा, पु. (फा. मि. सं. *बंध*) बाँधने की वस्तु, बाँध, पुश्ता, मेंड़, तनी, बंधन, देह के अंगों के जोड़, क़ैद। वि. (फ़ा.) जो खुला न हो, ढँका, स्थगित या रुका हुआ, क़ैद में किवाड़, ढकने या ताले से ऐसा अवरुद्ध मुख या मार्ग, कि बाहर-भीतर आना-जाना न हो सके, अवरुद्ध।

बंदगी—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) ईश्वर की बंदना, सेवा, प्रणाम, सलाम।

बंदगोभी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) पात गोभी, करमकल्ला।

बंदन—संज्ञा, पु. (सं. *बंदन*) स्तुति, प्रणाम। संज्ञा, पु. (सं. *बंदनी=गोरोचन*) रोचन, सेंदुर, ईंगुर, रोली।

बंदनता—संज्ञा, स्त्री. (सं. *बंदनता*) बंदनीयता, बंदना या आदर के लिए योग्यता।

बंदनवार—संज्ञा, पु. दे. (सं. *बंदनमाला*) तोरण, द्वार पर बाँधने की पत्तों और फूलों की झालर (मंगल-सूचनार्थ)।

बंदना—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बंदना*) स्तुति, प्रणाम। क्रि. स. (दे.) प्रणाम करना।

बंदनी*—वि. दे. (सं. *बंदनीय*) स्तुति या प्रणाम करने योग्य, **बंदनीय**।

बंदनी माल—संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *बंदनमाल*) गले से पैर तक लटकती हुई माला।

बंदर—संज्ञा, पु. दे. (सं. *बानर*) कपि, मर्कट, वानर, मनुष्य से मिलता हुआ एक चौपाया। **मु. बंदर घुड़की या बंदर भभकी**—केवल डराने या धमकाने के लिए डाँट-डपट या धमकी। संज्ञा, पु. (दे.)—बंदरगाह।

बंदरगाह—संज्ञा, पु. (फ़ा.) समुद्र के किनारे पर जहाज़ों के ठहरने का स्थान।

बंदसाल†—संज्ञा, पु. दे. (सं. *बंदीशाला*) जेल, बंदीगृह, कारागार।

बंदा—संज्ञा, पु. (फा.) दास, नौकर। संज्ञा, पु. वि. (सं. *बंदी*) क़ैदी, बंदो।

बंदारु—वि. (सं. *बंदारु*) वंदनीय, सम्माननीय, पूजनीय।

बंदाल—संज्ञा, पु. (दे.) देवदाली, एक प्रकार की घास।

बंदि—संज्ञा, स्त्री. (सं. *बंदिन्*) क़ैद, बंदीजन। पू. क्रा. (म. अ.) बंदना करके।

बंदिया—संज्ञा, स्त्री. (हि. *बंदनी*) मस्तक पर बाँधने का एक गहना, बेंदी, बेंदिया, दासी, टहलुई, बाँदी।

बंदिश—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) प्रबंध, बाँधने की क्रिया, योजना, रचना, षड्यंत्र। **मु. बंदिश बाँधना**—आयोजन करना (संशो.) गीत को सुरों में नियोजित करना।

बंदी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *बंदिन्*) चारण राजाओं का यशोगान करने वाली एक जाति, भाट। यौ॰ **बंदीजन**। संज्ञा, स्त्री॰ (वि॰ *बंदनी*) एक सिर-भूषण, **बेंदी, बेंदिया** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कैदी।

बंदीख़ाना, बंदीगृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) जेलख़ाना, कारागार, **बंदीघर** (हि॰)।

बंदूक–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) बारूद से गोली फेंकने वाला लोहे की नली-जैसा एक अस्त्र।

बंदूकची–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) बंदूक चलाने वाला, सिपाही।

बंदोबस्त–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) इन्तजमा, प्रवंध, खेती की भूमि को नाप कर लगान नियत करने का कार्य, इस प्रबंध का एक सरकारी विभाग।

बंदोल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) दासी-पुत्र।

बंध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) योग की मुद्रा या आसन (योग॰), रति के आसन (कोक॰), गिरह, लगानबंद, गाँठ, वंधन, क़ैद, बाँध, गद्य या पद्य में निवंध रचना, शरीर, किसी विशेष आकृति या चित्र के रूप में छंद के वर्णों की व्यवस्था (चित्र का॰) फँसाव, लगाव।

बंधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रेहन, ऋण के बदले में ऋणी के यहाँ रखी गई वस्तु, व्यक्ति (अं॰) हॉस्टेज गिरवी, धाती, रति या योग का आसन, **बंध** (सं॰)।

बंधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रस्सी, बाँधने की क्रिया या वस्तु, कारागार, शरीर के जोड़, वध, प्रतिवंध, स्वतंत्रता का वाधक।

बंधना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *बंधन*) वाँधा जाना, बन्द होना, कैद मे जाना, प्रतिज्ञा या वचन से वद्ध होना, क्रम का स्थिर होना, ठीक या सही होना, प्रेम-पाश में बँधना, मुग्ध होना, अटकना, फँसना, प्रतिवंध में रहना। स॰ रूप–**बंधाना, बँधावना,** प्रे॰ रूप–**बँधवाना**। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *बंधन*) बाँधने की वस्तु या साधन।

बंधनि–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बंधन (सं॰) बाँधने, उलझाने या फँसाने की चीज़ का साधन।

बंधान, बँधान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बंधना*) पानी के रोकने का धुस्स या बाँध। व्यवहार या लेन-देन की निश्चित परिपाटी, इस परिपाटी से दिया-लिया धन, ताल का भीटा, बंदिश, आयोजन। **मु॰ बंधान बाँधना**–विधान बनाना। ताल-स्वर का सम (संगी॰) बंधान, निश्चितकार्य-क्रम।

बंधी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बंधिन्*) बँधा हुआ। †संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बँधना*) बंधेज।

बंधु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भ्राता, भाई, सहायक, मित्र, दोधक छंद, एक वर्णवृत्त (पिं॰)। **बंधूक फूल**। संज्ञा, स्त्री॰ **बंधुता, बंधुतव**। यौ॰ **बंधु-बांधव**।

बँधुआ, बँधुवा–संज्ञा, पु॰ वि॰ (हि॰ *बँधना*) बंदी, क़ैदी।

बंधुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुपहरिया का फूल।

बंधुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बंधुत्व, भाईचारा, मित्रता, बंधु का भाव।

बंधुत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बंधुता, बंधु का भाव।

बंधुर–संज्ञा, पु॰ (स॰) मुकुट, दुपहरिया का फूल, हंस, बगुला, बहिरा मनुष्य। वि॰ (सं॰) सुन्दर।

बंधूक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बंधुक*) बंधु, दुपहरिया का फूल, बंधुक, दोधक छंद (पिं॰)।

बंधेज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बंधना+एज प्रत्य॰*) प्रतिवंध, नियम, रुकावट, नियत रूप और समय से लेने-देने का पदार्थ या धन, वाँधने की युक्ति या क्रिया। एक प्रकार की विशिष्ट साड़ी।

बंध्या–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) **वाँझ, बाँझिनी** (दे॰) संतान न पैदा करने वाली स्त्री।

बंध्यायन–संज्ञा, पु॰ दे॰ से॰ (*बंध्य+अयन* हि॰ *प्रत्य॰*) बाँझपन, वंध्यारोग (वैद्य॰)।

बंध्यापुत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बाँझ का लड़का, अनहोनी वस्तु, बंध्यापुत्र स्त्री, असंभव वात।

बंब–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰*) युद्ध के आरम्भ से पूर्व वीरों का उत्साह बढ़ाने वाली घोर ध्वनि, हल्ला, रण नाद, उंका, दुन्दुभी, नगाड़ा। **मु॰ बंब बजाना**–रण या लड़ाई के लिए तैयार होना।

बंबा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मंबा*) पंप, श्रोता, जल का यंत्र, जल-कल, वच्चों को डराने का कल्पित नाम।

बबाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) राँभना, गाय आदि का बाँ-बाँ बोलना।

बंबू–संज्ञा, पु॰ (*मलाया॰ बैंबू=बाँस*) चंडू पीने की साँस की पतली छोटी नली (अं॰) बाँस।

बंस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वंश*) वंश, कुल, बाँस।

बंसकार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वंश बाँसुरी*)।

बंसलोचन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वंश+लोचन*) बंस कपूर, सफ़ेद और नीले रंग का बाँस का सार भाग (औष॰)।

बंसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वंशी*) बाँस की नली से बना एक मुँह का बाजा बाँसुरी, मुरली, मछली फँसाने का वंध, विष्णु, राम, कृष्णादि के पद-तल की एक रेखा-चिन्ह (सामु॰)।

बंसीधर–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वंशीधर*) श्रीकृष्ण।

बँहगी, बँहिगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰*वह*) बोझा ढोने को एक वाँस की लंवी खपाच के सिरों पर लटके हुए छींके। पु॰ **बँहिगा**।

बक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बक*) बगुला, बगला, अगस्त्य का एक फूल या वृत्त, कुवेर, बकासुर। वि॰ बगले सा सफ़ेद। यौ॰ **बकध्यान**। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *वकना*) बकवाद, प्रलाप। मु॰ **बक खुलना**–वकवास करना।

बक्तर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) **बखतर** (दे॰) सनाह, कवच, युद्ध में देह-रक्षार्थ पहिनने का लोह-वस्त्र, जिरह-बक्तर।

बकता*–वि॰ दे॰ (सं॰ *वक्ता*) कहने वाला।

बकध्यान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *बकध्यान*) बनावटी, साधुपन, पाखंड, दुष्ट उद्देश्य के साथ दिखावटी साधु-चेष्टा। वि॰ **वकध्यानी**।

बकना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वचन*) बड़-बड़ाना, व्यर्थ प्रलाप करना, व्यर्थ बेढंगी बातें कहना, डाँटना, क्रोध से डपटना। द्वि॰ स॰ रूस--**बकाना**, प्रे॰ रूप--**बकवाना**।

बकबक–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *बकना*) बकने का भाव या क्रिया।

बकवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *बक+वाद* सं॰) व्यर्थ बकना, बकवास। वि॰ **बकवादी, बक्की**–व्यर्थ बकने वाला।

बकमौन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए बगुले के समान दिखावटी साधु-भाव से चुप रहना। वि॰ चुपचाप अपना उद्देश्य साधने वाला।

बकरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बकना*) अपना अपराध आप ही कहना, आप-ही-आप बकना, बड़बड़ाना, **बकुरना, बक्कुरना** (ग्रा॰)। स॰ रूप–**बकराना**, प्रे॰ रूप–**बकरवाना**।

बकरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वकीर*) छोटे झुके सींग, लम्बे बालों, छोटी पूँछ और फटे खुरों वाला एक पशु, **बुकरा, बोकरा** (दे॰)।

बकलस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*अं॰ बकलस*) बकसुआ, किसी बंधन के दो सिरों को मिलाकर कसने की अँकुसी (विला॰)।

बकला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बल्कल*) पेड़ की छाल, फल का छिलका, **बोकला, बक्कल** (आ॰)।

बकवाद–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) व्यर्थ्य की बकबक या बात, **बकवास** (दे॰) वि॰ **बकवादी**।

बकवादी–वि॰ (हि॰ *बकवाद)* बक्की; बम्का, बकवास करने वाला।

बकवास–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बकवाद*), थकवाद, बकवक, व्यर्थ का प्रमाप।

बकस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *बाक्स*) **बाकस** (दे॰), संदूक, डिब्बा, खाना।

बकसना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (फ़ा॰ *बख़्स+ना* हि॰) प्रसन्नता या कृपा-पूर्वक देना, क्षमा करना। स॰ रूप–**बकसाना, प्रे॰** रूप–**बकसवाना**।

वकसी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *बख़्शी*) पुंशी।

बकसीस*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *बख़्शिश*) पारितोषिक, इनाम, दान।

बकसुआ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *वकलस*) वकलस।

बकाउर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बकावली*) एक पौधा जिसके फूल अति सुगंधित होते हैं।

बकाना–क्रि॰ स॰ (दे॰) बकना का प्रे॰ रूप, रटाना, बकवाद कराना

बकायन, बकाइन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बड़का+नीम*) नीम जैसा एक पेड़।

बकाया–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बचत, बचा हुआ, शेष, बाकी।

बकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व वर्ण। (फ़ा॰) कार्यार्थ। जैसे–**बकार-सकार**।

बकारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *व, कार या वाक्य*) मनुष्य के मुँह से निकलने वाला शब्द।

बकावर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बकाउर, (दे॰) बकावली (सं॰)।

बकावली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गुलबकावली, एक पौधा जिसका फूल श्वेत और सुगंधित होता है। यौ॰ वक्र-पंक्ति।

बकासुर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *बकासुर*) वक्र रूपी एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था (भाग.)।

वकुचना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विकुंचन*) सिकुड़ना, सिमटना, संकुचित होना।

वकुचा, बकचा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बकुचना*) छोटी गठरी, बकचा, स्त्री. **बकची, बकुची** (दे.)।

बकुची–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वाकुची*) एक औषधि का पोधा। संज्ञा, स्त्री. (हि. *बकुचा*) छोटी गठरी, **बंकची** (आ.)।

बकुल–संज्ञा, पु. (सं.) मौलसिरी।

बकुला†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बगला*) वक्र (सं.), एक जल-पक्षी।

बकैयाँ, बकइयाँ–संज्ञा, पु. दे. (सं.*वक्र+ऐया प्रत्य.*) बच्चों का घुटनों के बल चलना।

बकोट–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *प्रकोष्ठ या अभिकोष्ट*) बकोटने की क्रिया या भाव।

बकोटना–क्रि. स. दे. (हि. *वकोट*) खरोंचना, नाखूनों से नोचना, निकोटना, पंजा मारना, खसोटना।

बकौरी*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बकावली*) बकाउर, गुलबकावली।

बक्कम–संज्ञा, पु. दे. (अ. *बकम*) एक कटीला छोटा पेड़ जिसके लाल रंग निकलता है, पतंग।

बक्कल–संज्ञा, पु. दे. (सं.*बल्कल*) बकला, छाल, छिलका।

बक्काल–संज्ञा, पु. (अ.) बनियाँ।

बक्की–वि. दे. (हि. *बकना*) बहुत बकने वाला, वड़बड़िया, बकवादी।

बक्खर–संज्ञा, पु. (दे.) हल के जोड़ का खेत जोतने का एक यंत्र, चीनी का शीरा।

बक्स–संज्ञा, पु. दे. (अं. *बॉक्स*) संदूक।

बक्षोज–संज्ञा, पु. (सं.) उरोज, उरज, स्तन।

बख़त–संज्ञा, पु. (दे.) वक़्त (फ़ा.)।

बख़तर, बख़्तर–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा *बक्तर*) कवच, सनाह, **बकुतर** (दे.)।

बख़तर–संज्ञा, पु. (दे.) बक्खर, बखार, बाखर।

बख़रा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *बख़रा*) हिस्सा, भाग, बाँट, वाखर।

बखरी‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बखार*) घर, मकान, **बख़ारी** (आ.)।

बखसीस*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *बख़्शिश*) पारितोषिक, इनाम, बकसीस, दान।

बखान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्याख्यान*) कीर्तन, कथन, वर्णन, प्रशंसा, स्तुति, बढ़ाई, प्रशंसा।

बखानना–क्रि. स. दे. (हि. *बखान+ना प्रत्य.*) प्रशंसा या स्तुति करना, सराहना, वर्णन करना, कहना, निंदा करना, गाली देना (व्यंग्य)।

बखार†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्राकार*) अन्न भरने का कोठा। (स्त्री.*अल्पा.* बखारी)।

बख़िया–संज्ञा, पु. (फ़ा.) एक तरह की महीन सिलाई।

बखियाना–क्रि. स. दे. (फ़ा. *बख़िया+नाहि. प्रत्य.*) वख़िया की सिलाई करना।

बखीर†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *खीर का अनु.*) मीठे रस में पका चावल, मीठा-भात।

बखोल–वि. (अ.) सूम, कंजूस, कृपण। संज्ञा, स्त्री. **बख़ीली**–कंजूसी।

बख़ूबी–क्रि. वि. (फ़ा.) भली-भाँति, अच्छी तरह, पूर्णतया।

बखेड़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बखेरना*) व्यर्थ विस्तार, आडंबर, झंझट, झगड़ा, टंटा, उलझन, विवाद, कठिनाई।

बखेड़िया–वि. दे. (हि. *बखेड़ा+इया प्रत्य.*) झगड़ालू, फ़सादी।

बखेरना–क्रि. स. दे. (सं. *विकरण*) **बिखारना** (दे.), छितराना, फैलाना, **बिथराना** (आ.)।

खोरना‡–क्रि. स. दे. (हि. *बकुर*) छेड़ना, टोकना, बोलना।

बख़्त–संज्ञा, पु. (फ़ा.) भाग्य, तक़दीर। यौ. **बदबख़्त, नेकबख़्त, कमबख्त**। **बख़्त** (दे.) वक़्त। (फ़ा.)

बख़्तर–संज्ञा, पु. (फ़ा.) कवच, सनाह, बकतर, **बक्तर**।

बख़्शना–क्रि. स. दे. (फा. *बख़्श+ना* हि. *प्रत्य.*) दान या क्षमा करना, दे डालना, त्यागना। द्वि. रूप-**बख़्शाना,** प्रे. रूप–**बख़्शवाना**।

बख़्शिश–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) उदारता, कृपा, क्षमा दान।

बगई‡–संज्ञा, स्त्री. (दे.) कुत्तों की मक्खी।–**कुकुरमाछी** (आ.), एक प्रकार की घास।

बगछुट-बगटुट–क्रि. वि. दे. (हि. *बाग+छुटना या टूटना*) सरपट, बड़े वेग से, वे लगाम भागना।

बगदना‡–क्रि. अ. दे. (हि. *बिगड़ना*) लुढ़क जाना, बिगड़ जाना, ठीक मार्ग से हट जाना, खराब हो जाना,

बिखरना, गिरना, भटकना, भ्रम में पड़ना। स. रूप—**बगदाना,** प्रे. रूप—**बगदवाना**।

बगदहा*‡—वि. दे. (हि. *बगदना+हा प्रत्य.*) बिगड़ैल, चौंकने या बिगड़ने वाला। स्त्री.**बगदही**।

बगना*‡—क्रि. अ. दे. (सं. *वक*) घूमना, भ्रमण करना, फिरना।

बगनी—संज्ञा, स्त्री. (दे.) बगई घास।

बगमेल—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाग+मेल*) वाग से वाग मिलाकर चलना, बराबर-बराबर चलना, बराबरी, तुलना। क्रि. वि. साथ-साथ, वाग मिलाए हुए चलना।

बगर*†—संज्ञा, पु. दे. (सं. *प्रवण*) प्रासाद, महल, घर, आँगन, सहन, गोशाला, बगार, कोठरी। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *बगल*) वग़ल, आड़ी।

बगरना*†—क्रि. अ. स. दे. (सं. *विकरण*) बिखरना, फैलना, छिटकना, छितराना। स. रूप—**बगराना,** प्रे. रूप—**बगरवाना**।

बगरी†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बखरी*) घर, मकान, बखरी, कुत्ते की मक्खी, (दे.) दले हुए धान।

बगरूरा*—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बगूला*) वायु का चक्कर, **बगूला** (उ.)।

बग़ल—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) काँख, छाती के दोनों ओर बाहु मूल के नीचे के गढ़े, पार्श्व, ओर। **मु. बग़ल में दवाना या धरना**—अधिकारा करना, ले लेना। **बग़लें बजाना**—अति हर्ष प्रगट करना, अति प्रसन्नता मनाना। इधर-उधर या किनारे का हिस्सा। **मु. बग़लें झाँकना**—भागने का उपाय करना। **बग़ल गर्म करना**—किसी की वग़ल में प्रेम से मिलकर बैठना। पास या समीप का स्थान, कुर्त्ते आदि में बगल या कंधे के नीचे जोड़ का कपड़ा।

बग़लगंध—संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा. *बग़ल+गंध* हि.) बग़ल से अति दुर्गंधियुक्त पसीना निकलने का रोग, बग़ल का फोड़ा, कँखवार।

बग़लबंदी—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) एक तरह की कुरती या मिरजई।

बगली—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वक+ला. प्रत्य.*) लंबी चोंच, टाँगें और गला वाला एक श्वेत पक्षी, **बगुला,** बक। स्त्री. **बगली**। **मु. बगला भगत**—पाखंडी, ढोंगी, धर्मध्वजी, धोखेबाज, छली, कपटी।

बगलामुखी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) एक देवी (तंत्र.)।

बगलियाना—क्रि. अ. दे. (हि. *बगल+दबाना प्रत्य.*) बग़ल से जाना, हटकर चलना, एक ओर हटना। क्रि. स. अलग करना, काँख में करना या लेना (दबाना)।

बगली—वि. दे. (हि. *बगल+ई प्रत्य.*) बग़ल संबंधी, बग़ल का, वग़ल की ओर से। **मु. बगली घूँसा**—वह चोट जो ओट में छिपकर या धोखे से की जाए। दरजियों के सुई-तागादि रखने की थैली, तिलादानी। संज्ञा, स्त्री. कुरते आदि में कंधे के नीचे का भाग, बग़ल।

बगसना*‡—क्रि. स. दे. (हि. *बख्शना*) बकसना, बख्शना, दान या पारितोषिक देना।

बगहा—संज्ञा, पु. (दे.) बाग (फ़ा.), व्याघ्र (सं.) बाघ।

बगहंस—संज्ञा, पु. (दे.) एक हंस विशेष। **बगा, बागा*†**—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बागा*) जामा। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *वक*) बगला।

बगाना*‡—क्रि. स. दे. (हि.*बगना का द्वि. रूप*) घुमाना, फिराना, सैर कराना, टहलाना। क्रि. अ. (दे.) भागना, वेग से जाना।

बगार—संज्ञा, पु. (दे.) वह स्थान जहाँ गायें बाँधी या चराई जाती हैं, बगर, घाटी।

बगारना—क्रि. स. दे. (स. *वितरण*) (हि. *बगरना का स. रूप*) छिटकाना, फैलाना, बिखेरना, बगराना, **बगरावना** (आ.)।

बग़ावत—संज्ञा, स्त्री. (अ.) बागी कोने का भाव, राजद्रोह, बलवा, विद्रोह।

बगिया*†—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *बाग़+इया* हि. *प्रत्य.*) छोटा वारा या उपवन, वाटिका।

बगीचा—संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *बागचा*) छोटा उपवन या बाग़, **बग़ीचा**। स्त्री. अल्पा. **बगीची, बागीची**।

बगुला—संज्ञा, पु. दे. (हि.) बगला।

बगूरा, बगूला—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाउ+गोला*) किसी एक जगह भँवर-सी चक्कर खाती हवा, बतचक्र, बवंडर।

बगेरी—संज्ञा, स्त्री. (दे.) टिटिहिरी, **भरुही,** बघेरी (प्रान्ती.), एक मटमैले रंग का पक्षी।

बग़ैर—अव्य. (अ.) बिना।

बग्गी, बग्घी—संज्ञा, स्त्री. दे. (अं. *बोगी*) चार पहियों की

छायादार घोड़ागाड़ी।

बघंबर, बाघंबर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *व्याघ्रांवर*) शेर या बाघ का चमड़ा। देव.। वि. **बघंबरी**।

बघछाला–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *व्याघ्र+छाल*) बाघ की खाल, बघंबर, बाघंबर।

बघनहाँ†–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *व्याघ्र+नख*) शेर के पंजे सा चिपटे टेढ़े काँटेदार अस्त्र, शेर-पंजा, वर्णों के गले का गहना जिसमें बाघ के नख सोने या चाँदी में कुछ-कुछ गड़े रहते हैं, **बघनख, बघनखा**। स्त्री. अल्पा–**बघनहीं**।

बघनहियाँ*†–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (सं. *व्याघ्रनख*) बघनहों, **बघनख**।

बघना*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्याघ्रनख*) बघनहाँ।

बघरूरा‡–संज्ञा, पु. दे. (हि. *वायु+गोला*) बवंडर, वायुचक्र, बगरूरा।

बघार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बघारना*) गर्म घी में पड़ा मसाला, छौंक, तड़का।

बघारना–क्रि. स. दे. (सं. *अवधारणा*) तड़का देना, छौंकना, अपनी योग्यता से अधिक बोलना, दागना। **मु. शेखा बघारना**–शान दिखाना।

बघी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) डाँस, मधुमक्खी, पशुओं की मक्खी।

बघेल, बघेला–संज्ञा, पु. (दे.) राजपूतों की एक जाति, **डाँवरू** (प्रान्ती.), बाघ का बच्चा। यौ. **बघेलखंड**–बघेल क्षत्रियों का प्रदेश, रीवों के चारों ओर का इलाका।

बच*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वचः*) बचन, वाक्य। संज्ञा, स्त्री. एक पौधा जिसके पत्ते और जड़ औषधि के काम आती हैं। यौ. **दुधवच**।

बचका–संज्ञा, पु. (दे.) एक पकवान, गठरी, पुटकी। स्त्री. **बचकी**।

बचकाना‡–वि. दे. (हि. *बचा+काना प्रत्य.*) बच्चों के योग्य, बच्चों का सा। स्त्री. **बचकानी**। क्रि. स. (दे.) बचके में बाँधना, **बचकियाना** (आ.)

बचत-बचती–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बचना*) बचने का भाव, शेष, बाकी, बचाव, लाभ, रक्षा, रिहाई।

बचन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वचन*) वाणी, बात, वाक्। **मु. बचन देना (लेना)**–वादा या प्रतिज्ञा करना (कराना)। **बचन निभाना**–कही हुई बात का प्रतिपालना या पूरा करना। **बचन मानना**–आज्ञा पालन करना। **बचन लेना**–आज्ञा लेना, प्रतिज्ञा कराना। **मु. बचन डालना**–माँगना। **बचन टालना (पेलना)**–वादा या आज्ञा न मानना। **बचन तोड़ना या छोड़ना**–प्रतिज्ञा भंग करना, वादा पूरा न करना। **यौ. बचन-बद्ध**–प्रतिज्ञा से बँधा हुआ। **बचन दत्त**–वादा किया हुआ, मँगतेर, वाग्दत्ता; सगाई किया हुआ। **बचन बाँधना**–प्रतिज्ञा कराना। **बचन हारना**–प्रतिज्ञावद्ध होना। **बचनों पर रहना**–वादे पर रहना, प्रतिज्ञा का ध्यान रख उसे पूरा करना।

बचना–क्रि. अ. दे. (सं.*वंचन–न पाना*) प्रभावित न होना, रक्षित रहना, विपत्ति दुख या झगड़े से अलग रहना, छूट या रह जाना, बुरी बात से दूर रहना, खर्च न होना, शेष या बाक़ी रहना, छिपाना, चुराना क्रि. स. (सं. *वचन*) कहना। स. रूप–**बचानाए** *प्रे.* रूप–**बचवाना**। **मु. बच (बचा) कर चलना**–सँभल कर सतर्कता से व्यवहार या काम करना।

बचपन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बच+पन प्रत्य.*) लड़कपन, छोटापन, अबोधता।

बचाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बचाना*) प्राण, रक्षा, हिफ़ाज़त।

बच्चा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) किसी जीव का छोटा छौना, लड़का, बालक। स्त्री. बच्ची। **मु. बच्चों सा बोलना**–तुतलाना। **बच्चों का खेल**–सरल कार्य। वि. अज्ञान, अनजान। **मु. बच्चा बनना (होना)**–अजान या अबोध बनना (होना)।

बच्चादान–संज्ञा, पु. (फ़ा.) गर्भाशय। स्त्री. **बच्चदानी**।

बच्छ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वत्स*) बेटा, बच्चा, गाय का बछड़ा।

बच्छल*†–वि. दे. (सं. *वत्सल*) वत्सल, दयालु, कृपाणु, **बछुल** (आ.)।

बच्छस*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. वक्षस्) छाती, वक्षस्थल।

बच्छा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वत्स*) गाय का बच्चा, बछड़ा, **बछवा** (आ.)। स्त्री. **बछिया**।

बछड़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *वच्छ दा प्रत्य.*) गाय का बच्चा। स्त्री. **बछड़ी, बछिया**।

बछनाग-बच्छनाग–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वत्सनाम*) सींगिया, तेलिया, मीठा, स्थावर विष, एक नैपाली विष वृक्ष की जड़।

बछरा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं *वत्स.*) बछड़ा।

बछरू, बछेरू*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ वत्स) बछड़ा, लयेरू (आ॰)।

बछल*†–वि॰ (दे॰) वत्सल (सं॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **बछलता, वत्सलता**।

बछवा‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं *वत्स*) बछड़ा। स्त्री॰ **बछिया**।

बछेड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं *वत्स*) घोड़े का बच्चा। स्त्री॰ **बछेड़ी**।

बजंत्री–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाजा*) बजनियाँ, बाजा बजाने वाला।

बजड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं *वज्रा*) घर जैसी नौका, बजरा, बाजरा (अन्न)।

बजना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *बाजा*) किसी बाजे या वस्तु से चोट लगने पर शब्द प्रगट होना, बोलना, हथियारों का चलना, हट या आग्रह करना, विख्यात होना, लड़ाई होना। स॰ रूप–**बजाना, बवावना,** प्रे॰ रूप–**बजवाना**।

बजनियाँ बजनिहा–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बजना*) वाला बनाने वाला।

बजनी–वि॰ दे॰ (हि॰ *बजना*) जो बजता या बजाता हो।

बजबजाना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) सड़ने से झाग उठना।

बजमारा*†–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *वज्र+मारा*) वज्र से मारा हुआ, जिस पर वज्र गिरा हो। स्त्री॰ **बजमारी**।

बजरंग, बजरंगी*–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वज्रांग*) वज्र-सा कठोर शरीर वाला, हनुमान जी।

बजरंगबली–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वज्रांग+वली*) हनुमान जी, महावीर जी।

बजर*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वज्र*) वज्र, **बज्जुर** (प्रा॰)।

बजरबट्टू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बज्र+बट्टा* पु॰) एक पेड़ का बीज जिसे दृष्टि-दोष से बचाने के लिए बच्चों को पहिनाते हैं।

बजरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बज्रा*) **बजड़ा,** बढ़ी पटी हुई कमरे सी नाव। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाजरा*) बाजरा (अन्न)।

बजरागि, बजरागी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *बज्राग्नि*) बिजली, विद्युत। **बजरी**†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰*बज्र*) कँकड़ी, छोटे-छोटे कंकड़, छोटा बाजरा, क़िले आदि पर छोटा दिखावटी कँगरा, ओला।

बजवैया†–वि॰ दे॰ (*बजवाना*) बजाने वाला, जो बजाता हो, **बजैया** (दे॰)

बजा–वि॰ (वि॰ (फ़ा॰) ठीक, उचित, सही। (*विलो॰***बेजा**)। स॰ रू॰ जा। यौ॰ **जा बजा**–जहाँ-तहाँ, इधर-उधर। **जा बेजा**–उचितानुचित। **मु॰बजा लाना**–कर लाना, पालन या पूर्ण करना। **बजाकर**–डंका पीटकर, खुल्लम-खुल्ला। **ठोंक-बजाकर**–भली-भाँति जाँच कर।

बजाक–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सर्प विशेष।

बज़ाज़, बजाज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *बज्ज़ाज़*) कपड़े की दुकान करने वाला, वस्त्र-व्यापारी। स्त्री॰ **यजाजिन**।

बजाजा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) वह बाजार जहाँ बजाज़ों की दुकानें हों।

बजाजी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) बज़ाज़ का कार्य, पेशा या दुकान।

बजाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *बाजा*) बाजे आदि पर चोट पहुँचा या हवा का दबाव डालकर शब्द करना, मारना, आघात करना, पूरा करना। प्रे॰ रूप–**बजवाना**। संज्ञा, स्त्री॰ **बजवाई**। **मु॰ ठोंकना बजाना**।

बजाय–अव्य॰ (फ़ा॰) बदले, एवज़, स्थान या जगह पर। पू॰ क्रि॰ (हि॰ *बजाना*) बजाकर।

बजार*‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा *बाज़ार*) हाटा, बाजार, बजारू (दे॰) वि॰ बजारू (दे॰) ए **बाज़ारू** (हि॰) बाज़ार का (ला॰ सस्ता, भौड़ा।

बजूखा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) काली हाँड़ी जो खेतों में लगाई जाती है, **बिजूखा** (प्रान्ती॰)।

बक्कर, बज्जुर*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वज्र*) बज्र।

बझना, बझावना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *वद्ध*) बँधना, हठ करना, उलझना, फँसना, भिड़ना। स॰ रूप–**बझानाए** प्रे॰ रूप–**बझवाना**।

बट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*वट*) बरगद का पेड़, बड़ा या भरा (भोजन) वाट (वटखरा) रस्सी की ऐंठन, बटाई, गोला, लोढ़ा, पट्टा।

बटई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰*वर्त्तक*) बटेर पक्षी।

बटखरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बटक*) पत्थर का बाट जिससे वस्तुएँ तौली जाती हैं।

बटन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बटना*) ऐंडम, बटने क्रिया का भाव या काम। संज्ञा, पु॰ (अं॰) कपड़े की घुंडी, बोताम।

बटना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वट=वटना*) वितरित होना, बँटना, कई ताबों या तारों को मिलाकर ऐंठना जिससे **सब**

मिलकर एक हो जाएँ। द्वि रूप–**बटाना,** प्रे॰ *रूप*–**बटवाना।** क्रि॰ अ॰ (दे॰) सिलपर लोढ़ा से पीसना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *उद्वर्त्तन, प्रा॰ उब्बटन*) चिरौंजी या सरसों आदि का देह पर लगाने का उबटन या लेप, बाँटने या पीसने का लोढ़ा।

बटपरा, बटपार†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बटमार*) बटमार, रास्ते में मारकर सामान छीन लेने वाला।

बटमार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बट+मार*) डाकू, ठग, लुटेरा।

बटमारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बटमार*) डकैती, धूर्त्तता, ठगी।

बटला-बटुआ-बटुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वर्त्तुल*) देगचा, देग, हंडा, दाल-चावल पकाने का चौड़े मुँह वाला बरतन। पैसे का पैना, (अं॰) पर्स। स्त्री॰ **बटली, बटलोई, बटलोही, बटुई** (आ॰)।

बटवार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाटवाला*) पहरे वाला, राह का कर लेने वाला।

बटवारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाटना*) भाग, हिस्सा, विभाजन।

बटा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बटक*) गोला, गेंद, ऐला, रोड़ा, ढोंका, पथिक, बटोही, यात्री। स्त्री॰ *अल्पा॰* **बटिया।** वि॰ (हि॰ *बटना*) ऐंठा या पिसा हुआ संज्ञा, पु॰ (हि॰) भिन्न का हर, जैसे–तीन बटा चार (3/4)।

बटाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बटना, बाँटना*) बटने या बाँटने का कार्य या मज़दूरी (दे॰)ए आधा साझा (कृषि या बछवा आदि चराने में)।

बटाऊ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाट+आऊ*) पथिक, बटोही, मुसाफिर। वि॰ (आ॰) हिस्सा बँटाने वाला। (हि॰ *बँटाना*)। **मु॰ बटाऊ होना**–चल देना।

बटाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बटना*) पिसाना, बँटवाना (हि॰ *बाँटना*)। क्रि॰ अ॰ दे॰ (पू॰ हि॰ *पटाना*) बंद होना, जारी न रहना।

बटिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बटा=गोला*) छोटा गोला या बट्टा, लोढ़िया। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *वाट=मार्ग*) छोटा मार्ग या पंथ, पगदंडी।

बटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वटी*) गोली एक पक्वान्न, अड़ी। ***–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰** (सं॰ *बाटी*) बाटिका, उपवन। वि॰ **(हि॰** *बढ़ना*) ऐंठी हुई।

बटुआ–बटुवा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) (सं॰ **पर्तुल**), बड़ी बटलोई, कई खानेदार गोल थैला। स्त्री॰ अल्पा॰ **बटुई, बटुइया** (दे॰), संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बटना*) पीसा हुआ।

बटुरना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *बर्त्तुल+ना प्रत्य॰*) सिमटना, सिकुड़ना, एकत्रित या इकट्ठा होना, झाड़ू से साफ़ होना, **बटुरियाना** (आ॰)। स॰ रूप–बटुराना, प्रे॰ रूप–**बटुरवाना।**

बटेर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्त्तक*), लवा पक्षी।

बटेरबाज–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बटेर*+बाज फ़ा॰) बटेर लड़ाने का पालने वाला। संज्ञा स्त्री॰ **बटेरबाज़ी।**

बटोर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बटोरना*) जमघट, जमाव, भीड़, वस्तुओं का समूह।

बटोरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बटुरना*) बिखरी चीजों को समेटना, चुनकर इकट्ठा करना, मिलाना, जुटाना, एकत्र करना झाड़ू से कूड़ा साफ करना। प्रे॰ रूप। **बटोराना, बटोरवाना।**

बटोही–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *वाट+वाह प्रत्य॰*) पथिक, राही, यात्री, बटाऊ।

बट्ट–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ बटा)* बटा, गेंद, गोला।

बट्टा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वार्त्त, प्रा॰ बाट्ट=बनियाई*) किसी वस्तु या सिक्के के असली मूल्य में कमी, दस्तूरी, दलाली। **मु॰ बट्टा लगना (लगाना)**–दोष या कलंक (धब्बा) लगना। घाटा, हानि, टोटा, क्षति। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बटक*) लोढ़ा, गोल पत्थर, जमी हुई गोल वस्तु, छोटा गोल डिब्बा। स्त्री॰ अल्पा॰ **बटी, बटिया।**

बट्टाखाता–संज्ञा, पु॰ (हि॰) डूबे हुए धन का लेखा या बही। **मु॰ बट्टे खाते में जाना (पड़ना, लिखना)**–रकम का डूब या मारा जाना, घटी होना।

बट्टाढाल–वि॰ यौ॰ (हि॰ *बट्टा+टालना*) समतल और चिकना।

बट्टी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बट्ट*) छोटी गोल लोढ़िया, टिकिया। जैसे–साबुन की बट्टी।

बट्टू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बजर बट्टू। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बर्वट*) **लोबिया, बोड़ा** (प्रान्ती॰)।

बड़–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*अनु॰ बड़बड़*) बकवाद। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वट*) बरगद वृक्ष। †वि॰ (दे॰) बड़ा।

बड़प्पन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बड़ा+पन*) महत्व, बड़ाई, श्रेष्ठता, गुरुता।

बड़बड़–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) *प्रलाप, बकवाद।*

बड़बड़ाना, बरबराना–क्रि. अ. दे. (अनु. *बड़बड़*) रुष्ट होकर कुछ बकना, व्यर्थ बकबक या बकवाद करना, कुछ बुरा लगने पर मुँह में ही कुछ कहना, बुड़-बुड़ाना।

बड़बड़िया–संज्ञा, पु. दे. (*हि. बड़बड़+इया प्रत्य.*) गप्पी, पक्षी।

बड़बेरी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *बड़ी+बेरी*) झड़बेरी। संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि. *बड़ी+बेर*) बड़ी विलंब।

बड़बोल, बड़बोला–वि. दे. यौ. (हि. *वड़ा+बोल*) सीटने वाला, बढ़चढ़ कर बातें करने वाला।

बड़भाग-बड़भागी–वि. दे. यौ. (हि. *वड़ा+भाग्य*) भाग्यवान, तक़दीरवर।

बड़रा*–वि. दे. (हि. *बड़ा*) विशाल, बड़ा। स्त्री. **बड़री**।

बड़वाग्नि–संज्ञा, पु. यौ. (*सं.*) समुद्र के अन्दर की आग, बड़वानल, **बाड़वाग्नि, बड़वागी** (दे.)।

बड़वानल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वड़वाग्नि।

बड़वार–वि. दे. (हि. *बड़ा*) बड़ा।

बड़वारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बड़वार*) संज्ञा बड़ा होने की प्रक्रिया। महत्व या महत्ता, गौरव, बड़प्पन, गुरुता, बड़ाई, स्तुति। — रघु.।

बड़हन†–संज्ञा, पु. दे. (*हि. बड़ा+धान*) एक तरह का धान।

बड़हर, बड़हल–संज्ञा, पु. दे. (*हि. वड़ा फल*) शरीफे जैसे बड़े और बेडौल खट्टेमिट्टे फल वाला एक वृक्ष विशेष।

बड़हार–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *बर+आहार*) विवाह के पीछे बरात की ज्योनार **बढ़ार** (आ.)।

बड़हेला–संज्ञा, पु. (दे.) जंगली या बनैला सुअर।

बड़ा–वि. दे. (सं. *वर्द्धन*) विशाल, खूब लंबा और चौड़ा, विस्तृत, वृहत्, दीर्घ, महान्, भारी, अधिक, बुजुर्ग, वृद्ध, गुरु, श्रेष्ठ, आयु, धन, प्रतिष्ठा या योग्यता में अधिक, परिमाण, मान, माप, विस्तारादि में ज़्यादा। स्त्री. **बड़ी। मु. बड़ा घर**–कारागार, जेलख़ाना। संज्ञा, पु. (सं. *बटक*) उर्द की पिसी दाल की छोटी तेल या घी में भुनी और दही या मठे में भीगी टिकिया, **बरा** (दे.)। स्त्री. अल्पा. **बड़ी या बरी** (दे.)।

बड़ाई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बड़ा+ई प्रत्य.*) बड़े होने का भाव, गौरव या गुरुता, बड़प्पन, श्रेष्ठता, महत्व, महिमा, प्रशंसा, परिमाण, विस्तार, आयु, मर्यादादि की अधिकता। **मु. बड़ाई देना**–आदर-सम्मान करना। **बड़ाई करना**–सराहना। **बड़ाई मारना (हाँकना)**–शेखी बघारना।

बड़ा दिन–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) 25 दिसम्बर का दिन, जो इसाइयों का त्योहार है, **क्रिसमस** (अं.)।

बड़ापा–संज्ञा, पु. (दे.) महत्व, बड़ाई, बड़प्पन, गुरुता।

बड़ी–वि. स्त्री. (हि. *बड़ा*) विशाल, महत्, महान्। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बड़ा, बुरा*) पेठा आदि मिली मूंग की धुली पिसी मसालेदार दाल की सूखी गोलियाँ, या टिकिया, बरी, कुन्हड़ौरी।

बड़ीमाता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) शीतला, चेचक, कई, माताओं में से बड़ी।

बड़ूखा–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार की ईख।

बडेमियाँ–संज्ञा, पु. (दे.) बूढ़ा, वृद्ध, मूर्ख, निर्बुद्धि (व्यंग्य)।

बड़ेरर–संज्ञा, पु. (दे.) चक्रवात, बवंडर, एक स्थान पर ठहर कर चक्कर देने वाली वायु का झोंका। **यौ. आँधी-वडेर।**

बड़या†*–वि. दे. (हि. *बढ़ा+परा प्रत्य.*) महान्, वृहत्, प्रधान, मुक्त। स्त्री. **बडेरी**। संज्ञा, पु. दे. (सं. *बडमि*) छप्पर में बीच की मोटी बड़ी लकड़ी। स्त्री. अल्पा. बड़ेरी।

बढ़ई–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर्द्धकि*, प्रा. *वड्ढइ*) काठ का कारीगर। स्त्री. **बढ़इनि**। संज्ञा, स्त्री. **बढ़ईगीरी**–बढ़ई का काम या पेशा।

बढ़ती–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बढ़ना+ती प्रत्य.*) मात्रा, गिनती या तौल में अधिकता, ज्यादती, सुख-सम्पत्ति आदि की वृद्धि, उन्नति, **बढ़वारी**। विलो. घटती।

बढ़ना–क्रि. अ. दे. (सं. *वर्द्धन*) उन्नति करना, अधिक होना, ज़्यादा होना, वृद्धि को प्राप्त होना, नाप, तौल, विस्तार, गिनती, परिमाण आदि में अधिक होना। **स. रूप–बढ़ाना, प्रे. रूप–बढ़वाना। मु. बढ़कर चलना**–घमंड करना, इतराना। दुकान बंद होना, दिया का बुझाना, विद्याबुद्धि, सुख-सम्पत्ति, मान-मर्यादा या अधिकारादि में अधिक होना, आगे जाना या चलना, अग्रसर या आगे होना, किसी से किसी बात में अधिक होना, लाभ होना, दुकान आदि का समेटा जाकर बंद होना।

बढ़ाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *बढ़ना*) गिनती, नाप, तौल, विस्तार, परिमाण आदि मैं अधिक करना, फैलाना, लंबा करना, आगे चलाना, उत्तेजित करना, अधिक व्यापक, स्थल या तीव्र करना, उन्नत करना, दीपक बुझाना, दुकान बंद करना, सस्ता बेचना, दाम अधिक करना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) समाप्त होना, चुकना। प्रे॰ रूप–**बढ़वाना,** द्वि॰ रूप–**बढ़ावना** (व॰ आ8941)। वि॰ **बढ़ैया बढ़वैया**।

बढ़नी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ मर्द्धनी) झाड़ू, बुहारी (प्रान्ती॰)।

बढ़ाव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बढ़ाना+आ प्रत्य॰*) वृद्धि, वढ़ना क्रिया का भाव। स्त्री॰ **बढ़वारी**–बढ़ने की भाव, वृद्धि।

बढ़ावा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बढ़ाव*) मन को उमगाना, उत्तेजना, प्रोत्साहन, साहस या हिम्मत उत्पन्न करने वाली बात। **मु॰ बढ़ावा देना**–प्रोत्साहन या साहस देना।

बढ़िया–वि॰ दे॰ (हि॰ *बढ़ना*) अच्छा, चोखा, उत्तम, बहुमूल्य। विलो॰ **घटिया**।

बढ़ैया†–वि॰ दे॰ (हि॰ *बढ़ाना, वढ़ना+ऐया प्रत्य॰*) बढ़ने या बढ़ाने वाला, बढ़वैया (दे॰)। † संज्ञा, पु॰ (दे॰) बढ़ई।

बढ़ोत्तरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *बाढ़+उत्तर*) उन्नति, वढ़ती, क्रमशः वृद्धि, बढ़वारी।

बणिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बनिक (दे॰), सौदागर, विक्रेता, बनियाँ, व्यापारी, व्यवसायी।

बणिज्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **बनिज** (दे॰), सौदागरी, व्यापार, व्यापारी।

बणियाँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वणिक*) बनियाँ।

बत–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बात, करार, एक जल जीव, बतख, एक कीड़ा।

बतकहा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बातूनी, गप्पी।

बतकही–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *बात+कहना*) बातचीत, वार्तालाप, वाद-विवाद।

बतख़–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *बत*) हंस की जाति का एक जल-पक्षी।

बतचल–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *बात चलाना*) वकवादी।

बतबढ़ाव–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *बात+बढ़ाना*) झगड़ा बड़ाना, बातों बातों में व्यर्थ ही विरसता बढ़ाना।

बतविना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **बातूनी** (हि॰)।

बतरस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *बात*+रस) बातें करने का आनन्द, बातचीत का स्वाद या मज़ा।

बतराना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *बात+आना प्रत्य॰*) बातें या बातचीत करना। क्रि॰ अ॰ **बतरावना** (दे॰) बतलाना।

बतहा–वि॰ (दे॰) बात-रोगी, वायु-दोष कारक।

बतलाना-बताना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बात+ना प्रत्य॰*) **बतलावना, बतावना** (दे॰), कहना, जताना, समझाना, भाव बताना, ठीक करना, मार-पीट कर ठीक करना, बात करना, **बतियाना** (प्रान्ती॰) वि॰ (दे॰) **बतैया, बतवैया**।

बतवाना–क्रि॰ स॰ (दे॰) बात करने में लगाना, कहवाना, उत्तर दिलाना।

बताना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बात+ना प्रत्य॰*) बतलाना, जताना, समझाना, प्रदर्शित या निर्देश करना, नाचगान में हाथ आदि से भाव प्रगट करना, दिलाना, ठीक करना (मार पीट कर व्यंग्य) प्रे॰ रूप–**बतवाना** (दे॰) **बतावना**।

बतास‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बातसह*) वायु, पवन, बात-रोग, गहिया, **बतास**। संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *बात+आस*) बातचीत करने की लालसा।

बतासा-बताशा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बतास=हवा*) चीनी की चाशनी से बनी एक मिठाई, एक प्रकार की आतशबाज़ी, बुद्बुद्, बुलबुला, वायु, पवन, बतास।

बतिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्त्तिका, प्रा॰ बत्तिआ–बत्ती*) नवजात, कोमल, छोटा कच्चा फल, बात।

बतियाना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *बात*) वार्तालाप या बातचीत करना।

बतियार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बात) बातचीत।*

बतीसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बत्तीस*) बत्तीसों दाँत।

बतू, बत्तू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) कलाबत्तू।

बतूनी–वि॰ दे॰ (हि॰ *बात*) बक्की या बाचाल, **बातूनी,** बहुत बात करने वाला।

बतोली–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) भाँड़पन, गप्पी भाँड़ों का काम, भँड़ौती। वि॰ **बतोलेबाज़**। संज्ञा, स्त्री॰ **बतोलेबाज़ी**।

बतौर–क्रि॰ वि॰ (अ॰) सदृश, समान, तरह पर, तरीक़े पर, रीति से।

बतौरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बतौर,* वायु-दोष से उत्पन्न सूजन, बरतोर।

बत्तिस-बत्तीस–वि॰ दे॰ (सं॰ *द्वाविंशत् प्रा॰ बत्तीसा*) गिनती

में तीस से दो अधिक। संज्ञा, पु॰ तीस और दो की संख्या और अंक (32)। संज्ञा, पु॰ (हि॰) दाँत (लचवार्थ)।

बत्ती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्ति, प्रा॰वर्ति*) जानी, दीप में तेल से जलने वाला रुई या सूत का बड़ा टुकड़ा। (आ॰) दीपक, स्लेट की पेंसिल, मोमबत्ती, पलीता, प्रकाश। सलाई जैसी लम्बी पतली वस्तु, घास-फूस का मूठा या पूला, घाव साफ़ करने की कपड़े की धज्जी, (पाचक और पौष्टिक)।

बत्तीसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बत्तीस*) बत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे ऊपर के सब दाँत, **बतीसी** (आ॰)।; बत्तीसी (आ॰)। बत्तीस कहानियों, कविताओं वाला ग्रन्थ, यथा सिंहासन बत्तीसी।

बत्सा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वत्स*) एक प्रकार का चावल, बछवा। वि॰ स्त्री॰ बछवे वाली गाय।

बथुआ-बथुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वास्तुक*) एक छोटा पौधा जिसके पत्तों की भाजी बनती है। स्त्री॰ **बथुई**।

बद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्ध्म=गिलटी*) पेड़ और जाँघा के जोड़ में फोड़े के रूप में एक रोग, बावी, **गोहिया** (प्रान्ती॰)। वि॰ (फ़ा॰) ख़राब, बुरा, निकृष्ट, दुष्ट, नीच। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्त्त*) बदला, पलटा। **मु॰ बद में**–बदले में।

बद-अमली–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰ *वद+अ॰ अमल*) अशांति, हलचल, बुरा बंदोबस्त, कुप्रबंध।

बदकार–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) व्यभिचारी, कुकर्मी। संज्ञा, स्त्री॰ **बदकारी**।

बदक़िस्मत–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰ *बद+अ॰ किस्मत*) अभागी, मंद भाग्य। संज्ञा, स्त्री॰ **बदक़िस्मती**।

बदचलन–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) लंपट, व्यभिचारी, कुमार्गी। संज्ञा, स्त्री॰ **बदचलनी**।

बदज़ात–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰ *बद+जात अ॰*) नीच, तुच्छ, खोंता। संज्ञा, स्त्री॰ **बदज़ाती**।

बदतर–वि॰ (फ़ा॰) किसी की अपेक्षा बुरा, बहुत बुरा, बत्तर (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **बदतरी**।

बद्दुआ–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰ *बद+दुआ अ॰*) शाप, श्राप, **सराप** (दे॰)।

बदन–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) देह, गात। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बदन*) मुख।

बदनसीब–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰ *बदनसीब*) अ॰ अभागा, मंद-भाग्य। संज्ञा, स्त्री॰ **बदनसीबी**।

बदना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वद=कहना*) वादा (प्रतिज्ञा) करना, कहना, वचन देना, बखान या वर्णन करना, नियत या स्वीकार करना, ठहराना, निश्चित करना, मान लेना। **मु॰ बदा होना**–भाग्य में (लिखा) होना। **बदकर करना**–जान-बूझ कर, ललकार कर; हठपूर्वक बाज़ी या शर्त लगाना, कुछ समझना, बड़ा या महत्त्वपूर्ण मानना। **मु॰ किसी को कुछ (न) बदना**।

बदनाम–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) निंदित, कलंकित। लो॰–**बद अच्छा** बदनाम बुरा।

बदनामी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) लोकनिंदा, अपयश, अकीर्ति।

बदनीयत–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰ *बद+नीयत*) अ॰) जिसकी इच्छा बुरी हो, धोखेबाज। संज्ञा, स्त्री॰ **बदनीयती**।

बदबू–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰); बदबोय (आ॰) दुर्गन्ध, बुरी महक। वि॰ **बदबूदार-बदबोयदार**–(दे॰–बेनी कवि)।

बदमाश–वि॰ (फ़ा॰ *बद+अ॰ मअश–जीविका*) **बदमास** (दे॰) दुष्ट, दुर्वृत्त, पाजी, दुराचारी, लुच्चा, कुकर्मी, दुष्कर्मोपजीवी, बुरे काम से जीविका पैदा करने वाला।

बदमाशी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰ *बद+मअश+ई प्रत्य॰*) दुष्टता, दुष्कर्म, व्यभिचार, पाजीपन, **बदमासी** (दे॰)।

बदमिज़ाज़–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) बुरे स्वभाव वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **बदमिज़ाजी**।

बदरंग–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) विवर्ण भद्दे या बुरे रंग का, जिसका रंग बिगड़ गया हो।

बदर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बेर का वृत्त या फल। स्त्री॰ **बदरी, यौ॰ बदरी-फल**।

बदरा‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰) बादल, मेघ, बादर।

बदराह–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) दुष्ट, कुमार्गी। संज्ञा, स्त्री॰–**बदराही**–दुष्टता, बुराई।

बदरि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बेर का पौधा या फल, बदरी (दे॰)।

बदरिकाश्रम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिमालय पर बद्रीनाथ का तीर्थ विशेष, जहाँ नर-नारायण तथा व्यास का आश्रम है।

बदरिया‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बादल*) बदली, छोटा बादल।

बदरी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बेर का वृक्ष या फल। बदर। **संज्ञा,**

स्त्री॰ पु॰ (हि॰ *बादल*) बदली, बादल का टुकड़ा।

बदरीनाथ—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बदरी नारायण, **बद्रीनाथ** (दे॰)।

बदरी-नारायण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) **बद्री-नारायन** (दे॰) बदरी नाथ।

बदरौहाँ†—वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *बद्र+रौंहा चाल*) बदचलन, कुमार्गी। † संज्ञा, पु॰ दे॰ (यौ॰ *बादर+औहाँ प्रत्य॰*) बदली का आभास या सूचक।

बदल—संज्ञा, पु॰ (अ॰) परिवर्तन, एवज (अ॰) हेर-फेर, प्रतिकार, पलटा।

बदलना—क्रि॰ अ॰ (अ॰ *बदल+ना प्रत्य॰*) प्रतिकार करना, एक के स्थान पर दूसरा नियत करना, विनिमय करना, परिवर्तित होना, एक जगह से दूसरी जगह नियुक्त होना। स॰ रूप—**बदलना,** प्रे॰ रूप—**बदलवाना**। **मु॰ बात बदलना**—कहीं बात के पीछे और कहना, (उससे विरुद्ध बात)। क्रि॰ स॰ वास्तविक रूप से भिन्न करना, रूपान्तरित करना, एक वस्तु की पूर्ति दूसरी से करना।

बदला—संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बदलना*) लेने-देने का व्यवहार, विनिमय, एवज, पलटा, प्रतिकार, किसी व्यवहार के उत्तर में पैसा ही व्यवहार, एक वस्तु की क्षति या स्थान की पूर्ति के लिए दूसरी वस्तु। **मु॰ बदला देना (लेना)**—बुराई के बदले बुराई करना। नतीजा, परिणाम।

बदली—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बादल*) **बदरी** (दे॰) हलका या छोटा बादल, घन का फैलाव। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बदलना*) एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति, तबादिला, तबदीली, एक वस्तु के स्थान पर दूसरी रखना।

बदलौबल—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बदलना*) हेर-फेर, अदल-बदल, बदलने का काम।

बदस्तूर—क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) जैसा का तैसा, नियम या क़ायदे के अनुकूल, ज्यों का त्यों, जैसा या वैसा ही।

बदहज़मी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰) अजीर्ण, अपच (रोग)।

बदहवास—वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) उद्विग्न, अचेत, व्याकुल, विकल, बेहोश।

बदा—वि॰ दे॰ (हि॰ *बदना*) भाग्य में लिखा, विधि-विधान।

बदान—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बदना*) बदना क्रिया का भाव।

बदाबदी—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बदना*) दो पक्षों की परस्पर प्रतिज्ञा, लाग-डॉट, हठ, शर्त या बाज़ी, भाग्य-विचार।

बदाम—संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *बादाम*) बादाम।

बदि*†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्त*) बदला पलटा। *अव्य* (दे॰) बदले में, हेतु, वास्ते।

बदी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अँधेरा पाख, कृष्ण पक्ष। संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) अहित, बुराई यौ॰ विलो॰ **नेकी-बदी**।

बदौलत—क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) द्वारा, प्रताप या सहारे से, कारण या कृपा से।

बद्ध—वि॰ (सं॰) बँधा हुआ, कैद, भव-जाल में फँसा, सीमित, निर्धारित, जिसके लिए रोक या सीमा ठहराई गई हो, मुक्ति रहित। संज्ञा, स्त्री॰ **बद्धता**।

बद्धकोष्ठ—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दस्त साफ़ न होना, मलबद्ध या क़ब्ज़ (रोग)।

बद्ध-परिकर—वि॰ (सं॰) तैयार, कटिबद्ध प्रस्तुत, कमर बाँधे (कसे) हुए।

बद्धांजलि—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रणामार्थ दोनों हाथ जोड़ना।

बद्धी—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बद्ध*) बाँधने या कसने का तसमा, डोरी, रस्सी, गले का चार लड़ों का एक गहना।

बध—संज्ञा, (सं॰) हत्या, हनन, मारना।

बधना—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *बध+ना प्रत्य॰*) वध या हत्या करना, मार डालना। प्रे॰ रूप। **बधना, बधवाना**। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वर्द्धन*) मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

बधस्थान—संज्ञा, पु॰ (सं॰) जीवों के मारे जाने की जगह।

बधाई—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्द्धन*) बढ़ती, मंगलाचार, शुभ समय पर गाना-बजाना, उत्सव, शुभावसर पर आनन्द या प्रसन्नता सूचकवचन।

बधाया-बधावा—संज्ञा पु॰ दे॰ (हि॰ *बधाई*) बधाव, बधाई, सम्बन्धियों या मित्रों के यहाँ से मंगलोत्सव पर आई भेंट या वस्तु। यौ॰ **उच्छव-बधाव**।

बधिक—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *बधिक*) हत्यारा, व्याध, बहेलिया, जल्लाद।

बधिया—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *वध*) आखता, खस्सी, अंडकोष-हीन षंड-बैल आदि पशु।

बधियाना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *वध, बधिया*) बधना, बधिया करना।

बधिर—संज्ञा पु॰ (सं॰) बहरा, श्रवण-शक्तिहीन। संज्ञा, स्त्री॰

बधिरता।

बधू–संज्ञा स्त्री॰ (सं॰ *वधू*) पतोहू, भार्या, स्त्री॰ **बहू** (दे॰)।

बधूटी–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *बधूटी*) पतोहू, सुहागिन स्त्री, नवीन बहू, स्त्री। यौ॰ **देव बधूटी**–अप्सरा, **स्वर्ग-बधूटी**।

बधूरा†–संज्ञा पु॰ दे॰ (हि॰ *वहुधूर*) एक बवंडर, बगूला वायु-चक्र।

बध्य–वि॰ (सं॰ वध के योग्य।

बन–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *वन*) कानन, जंगल, पानी, आग, कपास का पौधा, समूह।

बनकंडा–संज्ञा पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *बनस्कंदन*) जंगली उपले।

बनक*‡–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनना*) भेष, सजावट, वाना, सजधज, **बानक**।

बनकर–संज्ञा पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ वनकर) जंगली उपज का महसूल।

बनखंड–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *वनखंड*) जंगली प्रदेश।

बनखंडी–संज्ञा स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *बन+खंड*) छोटा वन का कोई भाग। संज्ञा, पु॰ बनवासी, बन में रहने वाला।

बनचा-बनेचर–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *बनेचर*) बन में रहने वाला, बन का पशु, जंगली जीव या आदमी, **वन-मानुस**।

बनचारी–वि॰ यौ॰ (सं॰ *वनचारिन्*) वन में घूमने या रहने वाला, वानर। स्त्री॰ बनचारिणी।

बनज–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *वनज*) जल से उत्पन्न पदार्थ, कमल, मोती, बन में होने वाली वस्तु। संज्ञा पु॰ (दे॰) वाणिज्य (सं॰) व्यापार, **बनिज** (दे॰)।

बनजर–संज्ञा पु॰ (दे॰) पड़ती या ऊसर भूमि, **बंजर** (आ॰)।

बनजात–संज्ञा पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *बनजात*) कमल, जल या वन में उत्पन्न।

बनजारा, बंजारा–संज्ञा पु॰ दे॰ (हि॰ *वनिज+हारा*) बैलों पर माल ले जाने या ले आने वाला व्यापारी **टँडिया** (प्रान्ती॰)। स्त्री॰ **बनजारिन**।

बनजारी–संज्ञा स्त्री॰ (हि॰ *बनजारा*) बनजारा की स्त्री, वनजारा की वस्तु।

बनजी*†–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *वाणिज्य*) व्यापार, व्यापारी।

बनजोत्स्ना–संज्ञा स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *वन-ज्योत्स्ना*) माधवी लता, **बनजोति** (दे॰)।

बनत–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनना+ता प्रत्य॰*) बनावट, रचना, मेल, सामंजस, अनुकूलता तैयार या सिद्ध होना, एक बेल, **बनताई** (दे॰)।

बनतरोई–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनतारा*) एक पौधा।

वनताई*†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बन+ताई प्रत्य॰*) बन की भयानकता या सघनता, बनावट, बनत।

बनतुलसी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बनतुलसी*) बबई नामक पौधा, बर्बरी।

बनदेव–संज्ञा पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वनदेव*) वन का अधिष्ठाता-देवता। स्त्री॰ **बनदेवी**।

बनधातु–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वनधातु*) गेरू आदि रंगीन मिट्टी।

बनना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *वर्णन*) रचा जाना, प्रस्तुत या तैयार होना, किसी का अजान या प्रगट करना (होना) (व्यंग्य)। स॰ **रूप–बनाना, प्रे॰ रूप–बनवाना, मु॰ बन-ठन के**–सजधज कर, श्रृंगार करके। **बना रहना**–जीता या उपस्थित रहना, उपयोग होना, रूपान्तरित होना, बदल जाना, भाव या सम्बन्ध में अन्तर हो जाना, विशेष पद आदि पाप्त करना, उन्नति को पहुँचना, प्राप्त या सम्भव होना, वसूल या दुरुस्त होना, पटना, निभना, मित्रभाव होना, सुयोग (अवसर) मिलना, स्वादिष्ट या सुन्दर होना, उन्नति करना, स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना, अपने को अधिक योग्य या गम्भीर सिद्ध करना, दुरुस्त होना, निभाना। **मु॰ बना हुआ**–चालाक व्यक्ति जो कुछ कहे और कुछ करे। **बनकर**–भली-भाँति, अच्छी तरह सजना।

बननिधि–संज्ञा पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वननिधि*) समुद्र, जल राशि, बनधि।

बननी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनीनी*) बनीनी, बनिया की स्त्री, **बानिन**।

बनपट*–संज्ञा पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰*बनपट*) वृक्षों की छाल के वस्त्र, सूती कपड़ा।

बन पड़ना (जाना)–क्रि॰ स॰ यौ॰ (हि॰) सुधरना, सुअवसर मिलना, हो सकना, निभना, सद्गति प्राप्त होना, निबहना, यथेष्ठ कार्य होना।

बनपाती*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वनस्पति*) वनस्पति, जंगल के पेड़।

बनफल–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) जंगली फल।

बनफशा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) एक वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियों औषधि काम में आती हैं।

बनवास–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *बनवास*) वन में रहना।

बनबासी–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वनवासि*) वन में रहने वाला, जंगली।

बनविलाव–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) जंगली बिल्ली। **ऊदबिलाव** (दे.)।

बनमानुस–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *वनमानुष*) जंगली आदमी, **गोरिल्ला** आदि बनैले मनुष्य-जैसे जंतु।

बनमाला–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वनमाला*) पारिजात, मंदार, कमल, कुंद और तुलसी के फूल-पत्तों से बनी माला, फूल पत्तों से बनी माला, **बनमाल** (दे.)।

बनमाली–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वनमालिन्*) बनमाला पहनने वाला, नारायण, श्री कृष्ण, विष्णु, मेघ, बादल, घने बन या बादल का प्रदेश। यौ. उपवन का माली।

बनरखा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वन रक्षक,* हि. *बन+रखना*) जंगल की रखवाली करने वाला, जन-रक्षक, बहेलियों की एक जाति।

बनरपकड़–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) दुराग्रह, निंदित हठ।

बनरा*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वानर*) बंदर, वानर, **बंदर** (दे.)। संज्ञा, पु. दे. (हि. *बनना*) दूल्हा, दुलहा, बर, विवाह के समय का एक गीत। स्त्री. **बनरी**।

बनराज-बनराय*†–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वनराज*) सिंह, बाघ, शेर, बहुत बड़ा पेड़।

बनराजी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) वनों-पवनों की पंक्ति या बन का समूह, **वनराजि** (सं.)।

बनरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (दे. *बनरा*) बानरी, बँदरिया, नववधू, **दुलहिन**।

बनरुह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बनरुह*) जंगली पेड़, कमल।

बनवना*‡–क्रि. स. दे. यौ. (हि. *बनाना*) बनाना, **बनावना** (दे.)।

बनवसन*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *बनवसन*) पेड़ों की छाल का वस्त्र, सूती कपड़ा।

बनवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बनवाना*) बनवाने का कार्य, बनवाने की मज़दूरी।

बनवारी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वननाला*) कृष्ण। **दे. यौ.** (हि. *बनवारी*) बाग-वाटिका, वन का जल। वि. **बनवाली**।

बनवैया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बनाना+वैया प्रत्य.*) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला।

बनसी, बंसी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बंशी*) बाँसुरी, बंसी, मुरली, मछली फँसाने का काँटा।

बनस्थली–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *वनस्थली* पु. *वनस्थल*) धन-खंड, जंगल का कोई हिस्सा या प्रदेश।

बना, बन्ना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बनना*) पर, दुलहा, दूल्हा। स्त्री. **बनी**। संज्ञा, पु. (दे.) दंडकला छंद (पिं.)।

बनाइ-बनाय–क्रि. वि. दे. (हि. *बनाकर=भली-भाँति*) नितांत, अत्यंत, बिलकुल, अच्छी तरह, भली-भाँति। स्फु.। पू. का. क्रि. (व्र. आ.) बनाकर (हि.)।

बनाग्नि–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *बनाग्नि*) दावानल, जंगल की आग, **बनागि** (दे.)।

बनात–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाना*) एक बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाना–क्रि. स. (हि. *बनना*) निर्माण या तैयार करना, रचना, भावान्तर या सम्बन्धान्तर रखने वाला करना, रूपान्तरित कर उपयोग के योग्य करना, एक वस्तु को बदल कर दूसरा करना। **मु. बनाकर**–भली-भाँति, अच्छी तरह। कोई। बड़ा पद या शक्ति आदि देना, उन्नत दशा में पहुँचाना, उपार्जित, प्राप्त या उसूल करना, मरम्मत करना, मूर्ख ठहराना, उपहास-योग्य करना, दोष दूर कर ठीक करना, ठीक रूप या दशा में लाना।

बनाफर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बन्यफल*) क्षत्रियों की एक जाति।

बनाम–अव्य. (फ़ा.) किसी के प्रति या नाम पर, नाम से।

बनाय–क्रि. वि. दे. (हि. *बनाफर*) निपट, बिलकुल, भली प्रकार। पू. का. क्रि. (व्र. भा.) बनाकर।

बनायुज–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बनायुज=बनायु—फारिस+ज—उत्पन्न*) फारिस या ईरान देश में उत्पन्न होने वाला घोड़ा, अरबी घोड़ा।

बनाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बनना+आव प्रत्य.*) रचना, शृंगार, बनावट, सजावट, ढंग, मुक्ति।

बनावट–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बनाना+वट प्रत्य.*) गढ़न, आडंबर, ऊपरी दिखाब, बनने (बनाने) का भाव।

बनावटी–वि॰ दे॰ (हि॰ *बनावट+ई प्रत्य.*) कृत्रिम, नकली, बनाया हुआ, दिखावटी, झूठ।

बनासपती-बनासपाती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वनस्पति*) जड़ी-बूटी, फल-फूल, साग, पात, कंदमूल।

बनि*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *बनाना*) सप, समस्त, बिलकुल। पू॰ का॰ (ब्र.) बनकर।

बनिज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाणिज्य*) सौदागरी, व्यापार, रोज़गार, सौदा, व्यापार का माल।

बनिजना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वाणिज्य*) वाणिज्य या व्यापार करना, बेचना, खरीदना, अपने वश कर लेना।

बनिजारिन-बनजारी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनजारा*) बनजारे की स्त्री।

बनित*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनना*) साज-बाज, बानक, वेष, ठाठवाठं।

बनिता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बनिता*) पत्नी, भार्या, स्त्री, औरत।

बनियाँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वणिक*) वैश्य, वणिक, व्यापारी, सौदागर, गोदी। स्त्री॰ **बानिनि, बनियाइन, बनोनी**।

बनियाइन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वैविधन*) एक प्रकार की बुनावट की चुस्त बंडी या कुरती, गंजी; बनियान।

बनिस्बत–अव्य॰ (फ़ा.) अपेक्षा, मुकाबले में।

बनिहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बनी+हार प्रत्य.*) कृषि के कार्यार्थ नियुक्त सेवक।

बनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बन*) वन का एक खंड, बनस्थली, बाग, वाटिका। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बना*) **दुलहिन**, नववधू, स्त्री, नायिका। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वणिक्*) बनिया। संज्ञा, स्त्री॰ (आ॰) कृषि के मजदूरों का मजदूरी में दिया गया अन्न।

बनीनी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बनियाँ+ईनी प्रत्य.*) वैश्य जाति या बनियाँ की स्त्री, बनैनी (आ.)।

बनीर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बानीर*) बेंत।

बनेठी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बन+सं॰ यष्टि*) पटेबाज़ों की लाठी, जिसके सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला–वि॰ दे॰ (हि॰ *वन+ऐला प्रत्य.*) वन्य, वन सम्बन्धी, जंगली। **स्त्री॰ बनैली**।

बनौटिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनावट*) कपासी रंग, कपास के रंग के समान।

बनौठी–वि॰ दे॰ (हि॰ *वन+औठी प्रत्य.*) कपास के फूल जैसे रंग वाला, कपासी रंग।

बनौरी‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वन–पानी+ओला*) छोटा ओला, पत्थर।

बन्हि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ **बन्हि**) अग्नि, आग।

बप*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वप्र*) पिता, बाप, **बापा, बप्पा** (दे.)।

बपतिस्मा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *बैप्टिज़्म*) किसी को ईसाई बनाने का संस्कार (ई.)।

बपना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *बपन*) बीज आदि बोना। संज्ञा, पु॰ (दे.) बपन, बीज बोने का कार्य।

बपु*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बपुस्*) देह, रूप, शरीर, तनु, अवतार।

बपुख-बपुष*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बपुस्*) देह, शरीर।

बपुरा, बापुरा†–वि॰ दे॰ (सं॰ *बराक*) दुखिया, बेचारा। ब्र॰ भा॰ **बापुरो**।

बपौती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाप+औती प्रत्य.*) बाप का धन, पैतृक सम्पत्ति।

बप्पा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ बाप) बापा (आ.) बाप, पिता, जनक, बापू (दे.)।

बफारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भाफ+आरा प्रत्य.*) औषधि मिले पानी की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेकना।

बबकना–क्रि॰ अ॰ (*अनु.*) उत्तेजित होकर बोलना, उछलना, **बमकना** (दे.)।

बबर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा.) बवर देश का सिंह, बड़ा शेर, बब्बर (दे.)।

बबा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाबा*) बाबा, दादा, पिता।

बबुआ-बबुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाबू*) ज़मींदार, रईस, लड़के बच्चे या दामाद के लिए प्यार का शब्द। स्त्री॰ **बबुआइन, बबुवानी, बबुई**।

बबूर, बबूल, बंदूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बब्बूर*) काँटेदार पेड़।

बबूला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाउ+गोला*) बगूला, बवंडर, वायु चक्र, **मु॰ आगबबूला होना**–गुस्से से भनकने लगना (दे.) **बुलबुला**।

बबेसी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) अर्श रोग, बवासीर रोग।

बब्बी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) चूमा, चूमी, चुम्बन, मच्छी।

बभूत–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विभूति*) धन, लक्ष्मी, ऐश्वर्य, प्रताप, भस्म, **भभूत** (आ.)।

बम–संज्ञा, पु. दे. (अं. *बाँब*) विस्फोटक वस्तुओं से भरा लोहे का गोला। संज्ञा, पु. (*अनु.*) शिवोपासकों का बम बम शब्द। यौ. **बमशंकर, बमभोला। मु. बम बोलना या बम बोल जाना**–कुछ न रह जाना, धन-ऐश्वर्य का मिट जाना। संज्ञा, पु. (कनाड़ी **बंबू–बाँस**) बग्घी, एक्के आदि के धागे घोड़े जोतने के लिए निकला एक या दो बाँस या लट्ठे। **मु. बम बजना**–लड़ाई में लाठी या अस्त्र चलना।

बमकना–क्रि. अ. दे. (*अनु.*) बहुत शेखी या डींग हाँकना, क्रोध में ज़ोर से बोलना।

बम-पुलिस–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बंपुलिस*) जन साधारण के लिए म्यूनिसिपैलिटी-द्वारा निर्मित पाखाना।

बमूजिब–क्रि. वि. (फा.) अनुसार, मुताबिक, मुआफिक़, अनुकूल।

बम्हनी-बम्हनौती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.*ब्राह्मण*) छिपकली जैसा एक पतला लाख कीड़ा, नेत्र रोग, आँख की पलक पर फुंसी, **बिलनी** (दे.), (आ.) ब्राह्मण सा दुरामर्ष, अपना दोष न मान कर रुष्ट हो हठ करना। क्रि. अ. (दे.) **बम्हनियाना**।

बयन-बैन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वचन*) बात, वाणी, बचन, **बयन** (दे.)।

बयना*†–क्रि., सं. दे. (सं. *वचन*) कहना, बखान करना। संज्ञा, पु. दे. (हि. *बैना*) बैन, वचन, बैना, इष्ट मित्रों या बंधुओं के यहाँ उत्सवों पर भेंट या व्यवहार-रूप में कुछ खाने-पीने की वस्तुएँ भेजना, **बायना** (दे.)।

बयनी*†–वि. दे. (हि. *बयन*) बोलने वाली

बयस–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बयस्*) उम्र, अवस्था, वय, **बैस** (दे.)।

बया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बयन–बुनना*) रंग-रूप में गौरेया का सा एक पक्षी, इसका घोंसला बड़ी चतुरता तथा कौशल से सुन्दर बना होता है। संज्ञा, पु. दे. (अ. *बायः–बेचने वाला*) अनाज आदि तौलने वाला।

बयान–संज्ञा, पु. (फ़ा.) हाल, वर्णन, बखान, वृत्तांत, विवरण, पाठ, अध्याय, **बयाँ**।

बयाना–संज्ञा, पु. (अ. *बै+आना* फा. *प्रत्य.*) किसी बातचीत को पक्का करने के लिए अग्रिम दिया गया कुछ धन, मूल्य या पुरस्कार का निश्चयसूचक अग्रिमांश, पेशगी। क्रि. स. (दे.), बकना, कहना।

बयान-बयारि*†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) (सं. *वायु*) वायु, पवन, हवा। **मु. जैसी बयारि बहना**–जैसी परिस्थिति हो, जैसा स्थान और समय हो।

बयारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वायु*) वायु।

बयाला†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बाह्य+आला*) झरोखा, दिवाल में बाहर झाँकने की झँझरी, आला, **अरवा** (ग्रा.) ताक़, क़िलों में तोपें लगाने के स्थान।

बर–संज्ञा, पु. दे. (सं.*वर*) दूल्हा, दुलहा, आशीर्वाद-रूपी वचन, वरदान। वि. श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। **मु. बर पड़ना**–श्रेष्ठ होना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *बल*) शक्ति, बल। संज्ञा, पु. दे. (सं. *बट*) बट, बरगद का पेड़। संज्ञा, पु. (हि. *बल=सिकुड़ना*) लकीर, रेखा। **मु. बर खींचना**–अति दृढ़ता, सूचित करना, हठ करना। अव्य. (फ़ा.) ऊपर। **मु. बर आना या पाना**–बढ़कर निकलना, तुलना में बढ़ जाना या अच्छा ठहरना। वि. बढ़ा-चढ़ा, पूर्ण, श्रेष्ठ, पूरा। *अव्य. दे. (सं. *वर*) बल्कि, वरन्, **बरूक, बरू** (दे.)।

बरई†–संज्ञा, पु. (हि. *बाड़=बयारी*) तमोली। स्त्री. **बरइनि**। क्रि. स. (दे.) बरे, बरण करे।

बरकंदाज–संज्ञा, पु. यौ. (अ.+*फ़ा.*) तोड़ेदार, बंदूक या बड़ी लाठी रखने वाला सिपाही।

बरकत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) बहुतायत, बाहुल्य, यथेष्ट से अधिक लाभ, ज्यादती, अधिकता, बढ़ती, प्रसाद, कृपा धन-दौलत, समाप्ति, एक की संख्या; समृद्धि।

बरकती–वि. (अ. *बरकत+ई प्रत्य.*) बरकत वाला, बरकत-सम्बन्धी, बरकत का।

बरक़रार–वि. यौ. (फ़ा. *बर+करार* अ.) स्थिर, अटल, दृढ़, कायम, उपस्थित।

बरकाज–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *बर*+कार्य्य) ब्याह, विवाह, श्रेष्ठ कार्य।

बरकाना–क्रि. स. दे. (सं. *वारण, बारक*) निवारण करना, बचाना, बहलाना।

बरखा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वर्षा*) वर्षा।

बरखास्त–वि. (फ़ा.) विसर्जन करना, मौक़ूफ़, नौकरी से छुड़ाया गया। संज्ञा, स्त्री. **बरख़ास्तगी**।

बरख़िलाफ़–क्रि. वि. यौ. (फ़ा. *बर+ख़िलाफ़* अ.) विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा।

बरगद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वट*) धनी और ठंडी छायादार पीपल की जाति का चौड़े मोटे पत्तों वाला एक पेड़, वट, **बड़** (हि.)।

बरगदाही–वि. संज्ञा, स्त्री. (दे.) वह अमावस्या जिसमें स्त्रियाँ वट-पूज करती हैं।

बरगा–संज्ञा, पु. (दे.) कड़ा तख़्ता।

बरछा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्रश्चन=काटने वाला*) भाला (अस्त्र)। स्त्री. **बरछी**।

बरछैत–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बरछा+ऐत प्रत्य.*) भाला-बर्दार, बरछा चलाने-वाला।

बरजन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर्जन*) रोकना, वर्जन, निषेध या मना करना। क्रि. स. (दे.) **बरजना-बर्जना**।

बरज़बान–वि. (फ़ा.) कंठस्थ, मुलाम, **मुहजबानी** (दे.)। क्रि. वि. (दे.)। **बरज़बानी**।

बरज़ोर–वि. दे. (हि. *बल+और* फ़ा.) बलवान, प्रबल, ज़बरदस्त, अत्याचारी क्रि. वि. (दे.) ज़बरदस्ती, बलपूर्वक।

बरज़ोरी*†–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) जबरदस्ती, बल-प्रयोग। क्रि. वि. (दे.) ज़बरदस्ती से, बलपूर्वक। यौ. (*वरजो=रोका+री=अरी*) रोका, मना किया। यौ. (*वर+जोरी*) अच्छी जोड़ी, वर युग्म।

बरत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्रत*) व्रत, उपवास। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बरना=बटना*) रस्सी। क्रि. वि. (दे. *बरना*) जलना हुआ।

बरतन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बर्तन*) खाने-पीने के पदार्थ रखने की धातु या मिट्टी से बनी वस्तुएँ, पात्र, भाँड़ा, भँड़या (दे.) बर्तन, **भाँड़** (सं.) **बासन** (दे.)।

बरतना–क्रि. अ. दे. (सं. *बर्तन*) प्रयोग में लाना, बरताव या व्यवहार करना। क्रि. स.–व्यवहार या कार्य में लाना, इस्तेमाल या उपयोग करना।

बरतरफ़–वि. यौ. (फा. *बर+तरफ़* अ.) एक ओर, अलग, किनारे, मोक़ूफ़, बरख़ास्त, नौकरी से अलग।

बरताना–क्रि. स. दे. (सं. *बर्तन=वितरण*) बाँटना, वितरण करना।

बरताव, बर्ताव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बर्तन या वितरण*) व्यवहार, बरतने का ढंग, **बर्ताव** (दे.) बाँटने का भाव।

बरती–वि. दे. (सं. *व्रतिन्*, हि. *व्रती*) व्रत या उपवास करने वाला, उपासा। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वर्ती, वरित*) बत्ती।

बरतोर, बरतोरु†–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *बाल+तोड़ना*) जो फोड़ा-फुंसी जो वाल टूटने से उत्पन्न हो, फोड़ा, फुड़िया, फुंसी।

बरतौनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बरताना*) ब्याह में कन्या के पिता या भाई का वर के बंधु-बांधवों तथा बरातियों में प्रेमोपहार-स्वरूप धनादि के वितरण की रीति।

बरद-बरदा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बर्द*) बैल, **बरधा** (आ.)। वि. पु. (स्त्री.) यौ. दे. (सं. *बरद*, स्त्री. *बरदा*) वरदान देने वाला देवता या देवी।

बरदाना†–क्रि. स. दे. (*वर्द*) गाय और बैल का संयोग कराना, जोड़ा खिलाना। क्रि. अ. जोड़ा खाना, संयोग करना। प्रे. रूप–**बरदवाना**।

बरदार–वि. (फ़ा.) धारण करने या मानने वाला, लेने या पालने वाला, वहन करने या ढोने वाला, जैसे–**झंडा बरदार**।

बरदाश्त–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सहन करने का भाव या सहन-शक्ति।

बरधा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बर्द*) **बैल, बली-बर्द, बरदा** (दे.)।

बरन*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर्ण*) वर्ण, अक्षर, जाति, रंग। अव्य. (दे.)। बणिक, बरुक। **बरन्** (सं.)।

बरनन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर्णन*) वर्णन, बखान, वृत्तान्त, बर्नन (दे.)।

बरना–क्रि. स. दे. (सं. *वरण*) ब्याहना, विवाह करना, चुनना, नियुक्त करना, दाम देना। ‡क्रि. अ. (दे.) जलना।

बरनी–संज्ञा, स्त्री. दे. वि. (सं. *वरणिन्*) वरण किया हुआ, बरोनी।

बरपा–वि. (फ़ा.) खड़ा, उठा, मचा हुआ।

बरफ़–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *बर्फ़*) वर्फ़, हिम, तुषार, पाला।

बरफ़ी–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *बर्फ़*) खोये और चीनी से बनी एक मिठाई।

बरबंड, बरिबंड*‡–वि. दे. (सं. *बलवंत*) उद्धत, प्रतापी, प्रचंड, अति वलवान, प्रखर, उद्दंड, **बरबंडा*** (दे.)।

वरबट*–क्रि. वि. दे. (सं. *बल+वट*) ज़बरदस्ती, बलपूर्वक, विवस, **वरबस**।

बरबर†–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) बकबक, झकझक। संज्ञा, पु. शेर बवर, सिंह, **बर्बर**, जंगली या असभ्य मनुष्य।

वरबस–क्रि. वि. दे. (सं.*बल+वश*) ज़बरदस्ती, हठात्, बलपूर्वक, व्यर्थ।

बरबाद–वि. (फ़ा.) चौपट, नष्ट, नाश, खराव, तबाह। संज्ञा, स्त्री. **बरबादी**।

बरबादी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) ख़राबी, तवाही, नाश।

बरम*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर्म*) देह-त्राण, कवच, सनाह, जिरह-वक्तर; (फ़ा.) **सूजन**।

बरमा–संज्ञा, पु. (दे.) लकड़ी आदि में छेद करने का एक लोहे का औज़ार। (अं.) ब्रह्म देश। स्त्री. *अल्पा.* **बरमी**।

बरम्हाव*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ब्रह्म+आव प्रत्य.*) ब्राह्मण का आशीष, ब्राह्मणत्व।

बरराना, बर्राना–क्रि. स. (दे.) **बयाना** (ग्रा.) प्रलाप या बकवाद करना, स्वप्न में बकना, ऐंठ या ऐंठ जाना।

बरवट–संज्ञा, स्त्री. (दे.) तिज्जी रोग, बावट (आ.)।

बरवा-बरबै–संज्ञा, पु. (दे.) 19 मात्राओं का एक छंद (पिं.), कुरंग, ध्रुव, मछली फँसाने का काँटा, एक रागिनी (संगी.)।

बरपना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *वर्षण*) बरसना। स. रूप–**बरपाना, बरपावना** प्रे. रूप–**बरपवाना**।

बरपा, बरिपा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वर्षा*) **बरसा** (दे.) वृष्टि, बरसात, वर्षाकाल।

बरस, बरिस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर्ष*) 12 मासों का वृंद, वर्ष, साल, बरष, पु. (दे.)।

बरसगाँठ–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *वर्ष ग्रंथि*) सालगिरह, जन्म-गाँठ, जन्म-दिन।

बरसना–क्रि. स. दे. (सं. *वर्षण*) मेह पड़ना, पानी गिरना, पानी के समान गिरना। स. रूप **बरसाना,** स. रूप, **बरसवाना** प्रे. रूप **बरसावना**–अधिक मात्रा में सब ओर से आना, झलकना, प्रगट होना। **मु. बरस पड़ना**–अति क्रुद्ध होकर डाँट-फटकार बताना, भूसा अलग करने को अन्न को वायु में उड़ाना, ओसाया जाना।

बरसाइत†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वट+सावित्री*) **बरगदाही** (ग्रा.) जेठ बदी अमावस्या जब वट की पूजा होती है।

बरसात–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वर्षा*) वर्षा काल, वर्षा ऋतु।

बरसाती–वि. दे. (सं. *वर्षा*) बरसात सम्बन्धी, बरसात का, एक प्रकार का कपड़ा जिससे वर्षा में शरीर नहीं भीगता।

बरसाना–क्रि. स. (हि. *बरसना का प्रे. रूप*) वृष्टि या वर्षा करना, वृष्टि-जल सा अधिक गिरना, अधिक मात्रा या संख्या में सब ओर से मिलना, डाली देना, ओसाना। संज्ञा, पु. ब्रजमण्डल का एक प्रसिद्ध स्थल; राधा का गाँव।

बरसी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *वरस+ई. प्रत्य. मृतक का वार्षिक श्राद्ध।*

बरसौड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बरस+औड़ी प्रत्य.*) वार्षिक कर या भाड़ा।

बरहा–संज्ञा, पु. दे. (हि. बहा) खेतों में सिंचाई के लिए छोटी नाली। संज्ञा, पु. (दे.) मोटा रस्सा। संज्ञा, पु. (सं. *वर्हि*) मयूर, मोर, मयूर-शिखा। स्त्री. **बरही**।

बरही–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बर्हि*) मोर, मयूर, मुर्गा, साही जंतु। संज्ञा, स्त्री. (दे.) मोटी रस्सी, जलाने की लकड़ियों का वोझ, प्रसूता के 12वें दिन का स्नानादि कृत्य, बरहां (आ.)।

बरहीमुख*†–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं.*वहिमुख*) अग्निमुख, देवता।

बरहौं–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बारह+औ प्रत्य.*) बारहवें दिन का सूतिका स्नान, **बरही** (दे.)।

वरह्मंड, बरह्मांड–संज्ञा, पु. दे. (सं.*ब्रह्मांड*) ब्रह्मांड, सारा संसार, खोपड़ी।

बरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वटी*) उड़द की पिसी दाल से बना एक पक्वान, **बड़ा**। संज्ञा, पु. (दे.) टाड़, बहुँटा, बाँह का एक भूषण, बरगद, वट वृक्ष।

बराई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बड़ाई*) बड़ाई, आधिक्य, श्रेष्ठता।

बराक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बराक*) शिव, युद्ध। वि॰ बेचारा, नीच, बापुरा, शोचनीय, अधम।

बराट, बराटक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वराटिका*) कौड़ी।

बरात–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वरयात्रा*) वर के साथ कन्या के यहाँ जाने वाले लोगों का समूह।

बराती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बरात+ई प्रत्य॰*) वर के साथी। विलो॰ **घराती**।

बराना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *वारण*) प्रसंग पर भी बात न कहना, बचाना, रक्षा करना। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वरण*) **बेराना** (आ॰)। छाँटना, चुनना, **बाँछना** (दे॰)। † क्रि॰ स॰ बालना, जलाना, जलवाना। बरावना *प्रे॰* रूप–**बरवाना**।

बराबर–वि॰ (फ़ा॰) गुण, मूल्य, मात्रादि में समान, तुल्य, समान, समतल भूमि। **मु॰ बराबर करना**–समान या बुरा करना, समाप्त करना। **मु॰ ले-दे कर बराबर करना**–क्रि॰ वि॰ लगातार, सदा, निरंतर, एक साथ, एक ही पंक्ति में।

बराबरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बराबर+ई प्रत्य॰*) तुल्यता, समानता, सादृश्य, सामना, विरोध, मुकाबिला। यौ॰ **बड़ा और बरी**।

बरामद–वि॰ (फ़ा॰) बाहर आया हुआ, खोई या चोरी गई वस्तु का कहीं से निकालना। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) निकासी, आमदनी।

बरामदा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) दालान, ओसारा, घर का छाया हुआ बाहर का भाग, छज्जा, बारजा।

बराय–अव्य॰ (फ़ा॰) हेतु, वास्ते, लिए। जैसे–**बराय मेहरबानी**।

बराव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बराना+आव प्रत्य॰*) दुराव, बवाव, रक्षा, परहेज़, बराना का भाव। क्रि॰ स॰ (दे॰) **बरावना**।

बरास–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *पीतास*) भीमसेनी कपूर।

बराह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बराह*) शूकर। क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) द्वारा, तौर पर से।

बराहरास्त–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) ठीक रास्ते पर से।

बरियाई†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *बलात्*) ज़बरदस्ती, बलपूर्वक, हठात्। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बलवान का भाव।

बरियारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वली*) बड़े-बड़े वीर या बलवान, एक औषधि, **खिरेंटी**, लुनमेथी, धीयवद। स्त्री॰ **बरियारी**।

बरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वटी*) मूँग या उरद की पिसी दाल की सुखाई हुई छोटी-छोटी बटिकाएँ। वि॰ (फ़ा॰) छूटा हुआ, मुक्त। *वि॰ (दे॰) बली।

बरीस‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वर्ष*) वर्ष, साल।

बरीसना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *बरसना*) बरसना।

बरु†*–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *वर–श्रेष्ठ, भला*) चाहे, भलेही। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वर*) वर।

बरुआ-बरुवा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बटुक*) ब्रह्मचारी, वट, उपनयन, विप्र-कुमार, जनेऊ।

बरुक–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *वरु*) चाहे, भलेही।

बरुनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वरण लोमिका*) **बरौनी** (आ॰), पलकों के बाल।

बरूथी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वरुथ*) सई, गोमती के मध्य की एक छोटी नदी, छोटी सेना।

बरेंड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बरंडक*) छप्पर या खपरैल के मध्य की मोटी लम्बी शहतीर या ऊपर का मध्य भाग। स्त्री॰ **बरेंडी**।

बरे*†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *बल*) बलपूर्वक या ज़ोर पर, ज़बरदस्ती, ऊँचे स्वर से। अव्य॰ दे॰ (सं॰ *वर्त्त*) बदले में, वास्ते, हेतु, लिए।

बरेखी-बरेषी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बाँह+रखना*) स्त्रियों का भुज-भूषण। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बरदेखी*) वर देखना, ब्याह की ठहरौनी, वर्षा।

बरेज–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पानवाड़ी, पान का खेत।

बेरठा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) धोबी, रजक। स्त्री॰ **बरेठिन**।

बरेरा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पान का खेत, बिरनी, हाड़ा।

बरै–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बरई, तमोली।

बरैन–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बरइनि, तमोलिन।

बरोक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बर+रोक*) बरेच्छा, फलदान, ब्याह पक्का करने को कन्या-पक्ष-द्वारा वर-पक्ष को दिया गया द्रव्य। *संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बलौक*) सेना। क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *बलौकः*) ज़बरदस्ती।

बरोठा, बरौठा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ द्वार+*फोट,* हि॰ *बार+कोठा*) पौरी, बैठक, ड्योढ़ी, दीवानखाना, द्वार के निकट की दालान। **मु॰ बरोठे का चार**–द्वारपूजा, **द्वाराचार** (सं॰)।

बरोरु*–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *बरोरु*) अच्छी जाँघों वाला या वाली।

बरोह–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बट+रोह–उगना*) बरगद की जटा, वट शाखाओं से नीचे लटकी जड़ों जैसी शाखाएँ जो पृथ्वी पर जम कर जड़ें हो जाती हैं।

बरौठा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बरोठा, बरेठा*) बरोठा, बरेठा, धोबी।

बरौनी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वरलोमिका*) वरोनी, पलकों के बाल, **बरूनी**।

बरौरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बड़ी, बरी*) वरी या बड़ी नाम का पकवान।

बर्क–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) विद्युत, बिजली। वि॰ चालाक, तेज़।

बर्ज–वि॰ दे॰ (सं॰ *वर्य्य*) श्रेष्ठ।

बर्जना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बरजना*) रोकना।

बर्णन, बर्नन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वर्णन*) बयान, कथन, वर्णन, **वरनन**। क्रि॰ स॰ (दे॰) **वर्णना**।

बर्तन–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बरतन (हि॰)।

बर्त्तना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बरतना*) व्यवहार करना, **बरतना**।

बर्न*–संज्ञा, पु॰ (दे॰) वर्ण (सं॰) अचर, रंग, जाति, बरन।

बर्फ़–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) शीत से जमकर गिरने वाली वायु में पानी की भाप, हिम, बरफ़, अति ठंडक से जम कर ठोस और पारदर्शक हुआ पानी, कृत्रिम उपयों या मशीन से जमाया जल, दूध या फलों का रस। वि॰ **बर्फ़ीला**, स्त्री॰ **बर्फ़ीली**।

बर्फ़िस्तान–स्त्री॰ पु॰ (फ़ा॰) हिम-स्थल, हिम का देश।

बर्फ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *बर्फ़*) बरफ़ी नाम की मिठाई।

बर्बर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्णाश्रम-रहित, असभ्य मनुष्य, अस्त्रों की झनकार, घुंघराले बाल। वि॰ जंगली, उद्दंड, असभ्य। संज्ञा, स्त्री॰ **बर्बरता**।

बर्बरी–संज्ञा, बन-तुलसी।

बर्राक़–वि॰ जगमगाता हुआ, चमकीला, तीव्र, चतुर, सफ़ेद।

बर्राना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰ वर वर*) व्यर्थ बकना या बोलना, नींद या अचेत होने पर बकना, बड़बड़ाना, बरराना, ऐंठ जाना।

बर्रै, बर्र†–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *बरबट*) ततैया, भिड़, **बरैया** (आ॰)।

बलंद, बुलंद (दे॰)–वि॰ (फ़ा॰) ऊँचा। संज्ञा, स्त्री॰ **बलंदी, बुलंदी**।

बलंद-अकबाल–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰+अ॰) उच्च भाग्य, भाग्यवान, तक़दीर वाला।

बल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शक्ति, ज़ोर, ताकत, सामर्थ्य, बूता, **बिर्ता** (दे॰) भरोसा, आश्रय, सेना, पार्श्व, सँभार, सहारा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बलि*) मरोड़, ऐंठन, लपेट, मोड़, लहरदार, घुमाब, फेरा, शिकन। **मु॰ बल खाना**–टेढ़ा होना, घाटा या हानि सहना, झुकना, लचकना, चूकना। टेड़ापन, लचक, झुकाव, कसर, कमी। **बल पड़ना**–भेद होना, भूल-चूक होना, सिकुड़न पड़ना।

बलकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) खौलना, उबलना, जोश में आना, उमँगना, उत्तेजित हो उभड़ना। स॰ रूप–**बलकाना**, *प्रे॰* रूप–**बलकवाना**।

बलकारक, बलकारी–वि॰ (सं॰) पुष्टकारक, बल-जनक, बल -वर्द्धक, **बलकर**।

बलकल*‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वल्कल*) छाल के कपड़े।

बलग़म–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कफ श्लेम्मा। वि॰ स्त्री॰ **बलगमी**।

बलद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बर्द*) **बरद** (दे॰) बैल। वि॰ बल देने वाला।

बलदाऊ, बलदेव–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बलराम।

बलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *वर्हण*) वरना (दे॰) जलना, दहकना। स॰ रूप–**बालना**, प्रे॰ रूप–**बलवाना**।

बलबलाना–क्रि॰ अ॰ दे॰(*अनु॰*) ऊँट का बोलना, व्यर्थ बकना, जोश में सगर्व बड़ी-बड़ी बातें करना।

बलबलाहट, बलबली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बलबलाना*) ऊँट की बोली, व्यर्थ की बकबक, मिथ्या गर्व का जोश।

बलवीर*–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बल–बलराम+वीर–भाई*) बलदेव जी के भाई श्रीकृष्ण।

बलभद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बलराम जी।

बलभी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बलभि*) घर में सब से ऊपर वाला कोठा, **चौबारा** (प्रान्ती॰)।

बलम-बलमा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वल्लम*) पति, स्वामी, नायक, **बालम** (दे॰)।

बलमीकि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाँबी।

बलय*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वलय*) कंकण।

बलराम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) बलदेव जी।

बलवंड*–वि॰ दे॰ (सं॰ *बलवतः*) बलवान्, प्रतापी, **बरबंड** (दे॰)।

बलवंत–वि. (सं. *बलवत:*) बली।

बलवा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) विद्रोह, बगावत, हुल्लड़, विप्लव, दंगा, **बलवा** (दे.)।

बलवाई–संज्ञा, पु. (फ़ा. *बलवा+ई प्रत्य.*) विद्रोही, उपद्रवी, विप्लवी।

बलवान्–वि. (सं. *बलवत्*) सामर्थ्यवान्, बली। स्त्री. **बलवती**।

बलवार–वि. (दे.) बलवान्।

बलशाली–वि. (सं.) बली, बलवान्।

बलशील–वि. (सं.) बलवान, शक्तिशाली।

बलही–संज्ञा, स्त्री. (दे.) बोझा, लम्बी और पतली लकडियाँ।

बलहीन–वि. यौ. (सं.) कमज़ोर, निर्वल, **बल-रहित**।

बला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बरियारी नामक पौधा (औषधि), पृथ्वी, लक्ष्मी, भूख-प्यास, एक प्रकार की विद्या। यौ. **बला अतिबला**। संज्ञा, स्त्री. (अ.) विपत्ति, कष्ट, दुःख, आफ़त, **बलाय** (दे.), बुराई, व्याधि, भूत-प्रेत की बाधा। **मु. बला का**–अत्यंत, घोर।

बलाई-बलाय–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *बला*) बला, आफ़त, विपत्ति।

बलाक–संज्ञा, पु. (सं.) वक, बगुला, बगला। स्त्री. **बलाका**।

बलाका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बगली, बगलों की पंक्ति। वि. स्त्री. **बलाकिनी**।

बलाग्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सेनापति, सेना का अगला भाग। वि. बलवान्, बली।

बलाढ्य–वि. यौ. (सं.) बलवान्।

बलात्–क्रि. वि. (सं.), हठात्, हट या बल-पूर्वक, ज़बरदस्ती।

बलात्कार–संज्ञा, पु. (सं.) ज़बरदस्ती किसी स्त्री के साथ हठात् कुछ करना, इच्छा के विरुद्ध **संभोग करना**।

बलाध्यक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) सेनापति।

बलाह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बोल्लाह*) बुलाह घोड़ा।

बलाहक–संज्ञा, पु. (सं.) बादल, मेघ, एक नाग, एक दैत्य, एक तरह का बगला, एक पर्वत (शाल्मली द्वीप)।

बलि–संज्ञा, पु. (सं.) राजकर, कर, लगान, भेंट, उपहार, पूजा का सामान, भूतयश, चड़ावा, भोग, देवता के नैवेद्य का पदार्थ, किसी देवता पर चढ़ाने को काटा गया पशु। **मु. बलि चढ़ना (चढ़ाना)**–मारा जाना। **बलि चढ़ाना**–देवता को भेंट चढ़ाना या पशु वध करना। **बलि जाना**–बलिहारी जाना, निछावरि होना। **मु. बलि-बलि जाऊँ**–मैं तुम पर निछावर हूँ। प्रहलाद का पौत्र एक दैत्य-राज। संज्ञा, स्त्री. (सं. *बला*) छोटी बहन, सखी।

बलिदान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवार्थ नैवेद्य आदि चढ़ाना, भेंट देना, देवतार्थ बकरे आदि पशु का वध, उत्सर्ग।

बलिपशु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवार्थ बलिदान करने (किया गया) का पशु।

बलिपुष्ट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) काग, कौआ।

बलिप्रदान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बलिदान।

बलिया–वि. दे. (सं. *बल*) बलवान्।

बलिरसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गंधक।

बलिवर्द–संज्ञा, पु. (सं.) साँड़, बैल।

बलिवेदी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बलि के लिए एक निश्चित स्थान या चबूतरा।

बैलिवैश्वदेव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गृहस्थ के पंच महायज्ञों में से एक, जिसमें भोजन से एक-एक ग्रास पृथक् रखता है।

बलिष्ठ–वि. (सं.) अधिक बली।

बलिसंग–संज्ञा, पु. (सं.) अंकुश, चाबुक, वानरों का समूह।

बलिहारना*–क्रि. स. दे.(हि.) निछावर कर देना।

बलिहारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बलिहारना*) निछावर, प्रेम, भक्ति, श्रद्धादि के कारण अपने तई त्याग, आत्मोत्सर्ग। **मु. बलिहारी जाना (बलि जाना)** निछावर होना, बलैया लेना। **बलिहारी लेना**–प्रेम दिखाना, बलैया लेना।

बली–वि. (सं*बलिन्*) बलवान्।

बलीमुख*–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *बलिमुख*) बंदर।

बलीयान्–वि. (सं.) बलवान्।

बलुवा, बलुआ–वि. दे. (हि. *बालू*) बालू मिला, रेतीला। स्त्री. **बलुई**।

बलूच–संज्ञा, पु. (दे.) बलूचिस्तान के मुसलमानों की एक जाति।

बलूचिस्तान–संज्ञा, पु. (दे.) बलूचों का एक देश जो भारत के पश्चिम पाकिस्तान में है।

बलूची–संज्ञा, पु. (दे.) बलूचिस्तान का निवासी।

बलूत–संज्ञा, पु. (अ.) माजूफल की जाति का एक वृक्ष।

बलूरना–क्रि. स. (दे.) खुरचना, नोचना।

बबूला–संज्ञा, पु. (दे.) बुलबुला, बुदबुदा।

बलैया–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *बला+हि. बलाय*) बला, बलाय। **मु. (किसी की) बलैया लेना–(किसी का)** रोग, दोष या दूध अपने ऊपर लेना, मंगल या कल्याण चाहते हुए प्यार करना, आरमोत्सर्ग करना।

बल्कि–*अव्य* (फ़ा.) परन्तु, अन्यथा, इसके विरुद्ध, प्रत्युत, और अच्छा है।

बल्लभ–संज्ञा, पु. (सं.) प्रिय, पति, स्वामी।

बल्लभी–संज्ञा, स्त्री. (स.) प्रिया, प्यारी, गोपी।

बल्लभ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वल*, हि. *बल्ला*) छड़, बरछा, सोंटा, बल्ला, डंडा, राजाओं के चोबदारों की सोने या चाँदी की छड़ी, भाला।

बल्लभ-बर्दार–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *बल्लभ+वदार* फ़ा.) राजा की सवारी या बरात में आगे बल्लम लेकर चलने वाला।

बल्लरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक प्रकार की लता, लता, पल्ली।

बल्ला–संज्ञा, पु. (सं. बल) बाँस या और किसी पेड़ का लंबा खंड, नाव, खेने का बाँस, (डाँड़) गेंद खेलने का काठ का **बैट** (अं.) स्त्री. *अल्पा.* **बल्ली।**

बल्ली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लता। (दे.) बाँस की लग्गी, छत में लगाने की गोल मोटी लकड़ी।

बधँड़ना†–क्रि. अ. दे. (सं. *व्यावर्त्तन*) व्यर्थ फिरना, इधर-उधर घूमना, **बौंडना, बौंड़ियाना** (आ.) लता का बढ़कर फैलना।

बबंडर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वायुमंडल*) चक्रवात, बगूला, चक्र सी घूमती आँधी, पेंचीदा बात।

बबघूरा*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बबंडर*) चक्रवात, बगूला, बवंडर।

बवन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बमन*) वमन, कै, उलटी।

बवना*–क्रि. स. अ. दे. (सं. *बपन*) **बोना,** बिखराना, छितराना, क्रै करना (सं. *वमन*) सज्ञा, पु. वामन, नाटा, **बौना** (दे.)।

बवरना–क्रि. अ. (दे.) बौरना।

बवासीर–संज्ञा, स्त्री. (अ.) अर्श या गुदेन्द्रिय में मस्से होने का रोग (वै.)।

बसंती–वि. दे. (हि. *बसंत*) बसंत ऋतु सम्बन्धी, बसंत का, पीले रंग का।

बसंदर-बैसंधर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वैश्वानर*) आग।

बस–वि. (फ़ा.) बहुत, काफी, पूर्ण, पर्याप्त, पूरा। अव्य. अलम् (सं.) पर्याप्त, केवल, काफी। संज्ञा, पु. दे. (सं. *वश*) आधीन, वश, अधिकार, सामर्थ्य, शक्ति, बल, ज़ोर।

बसती-बस्ती–संज्ञा, स्त्री. (दे.) गाँव, आबादी। यौ. **गाँव-बस्ती।**

बसन–संज्ञा, पु. (सं.) कपड़ा, वस्त्र।

बसना–क्रि. अ. (सं. *बसन*) रहना, निवास करना, आबाद होना, डेरा करना, ठहरना, टिकना। स. रूप–**बसाना** प्रे. रूप–**बसवाना। मु. घर बसना**–गृहस्थी का बनना, सकुटुंब सुखी रहना, स्त्री-पुत्र समेत होना। **घर में बसना**–सुख से गृहस्थी करना, टिकना। **मु. (हृदय) मन (नैनों-आँखों) में बसना**–ध्यान या स्मृति में बना रहना, बेठना, पैठना। क्रि. अ. दे. (हि. *बासना*) बासा जाना, सुगंधि या महक से भर जाना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *वसन*) किसी वस्तु पर लपेटने का वस्त्र, बेठन, वेष्टन, जैसे–**पन-बसना।**

बसनि*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बसना*) निवास, बास, रहनि।

बसनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.*बसन*) रुपए भरकर कमर में लपेटने की पतली थैली।

बसवास–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *बसना+वास*) निवास-योग्य परिस्थिति, रहना, निवास, स्थिति, ठिकाना, ठहरने का टिकने की सुविधा।

बसवैया–वि. (दे.) बसाने या बसने वाला।

बसर–संज्ञा, पु. (फा.) निर्वाह। यौ. **गुज़र-बसर।**

बसराना–क्रि. स. (दे.) समाप्त या पूरा करना।

बसह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृषभ*) बैल।

बसा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बसा*) चरबी, भेद। संज्ञा, स्त्री. (दे.) बर्रै, भिड़।

बसाना–क्रि. स. दे. (हि.*बसना*) बसने, ठहरने या टिकने को स्थान देना, आबाद करना। **मु. घर बसाना**–गृहस्थी जमाना, सकुटुंब सुख से रहने का ठिकाना (प्रबन्ध) करना, ब्याह करना, स्त्री-सहित होना। क्रि. स. दे. (सं. *वेशन*) रखना, बैठाना। *क्रि. अ. रहना, बसना,

ठहरना, दुर्गन्ध देना, गंध-युक्त करना, सुवासित होना। क्रि॰ अ॰ (हि॰ *वश*) वश चलना, ज़ोर चलना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *वास*) महकना, सुवास देना।

बसिऔरा-बस्यौरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बासी*) बासी, भोजन, **बसौड़ा** (आ॰)। बासी भोजन खाने की कुछ तिथियाँ।

बसीकर–वि॰ दे॰ (सं॰ *वशीकर*) आधीन या वश में करने वाला।

बसीकरन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वशीकरण*) वश में या अधीन करने वाला।

बसीठ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्रवसृष्ट*) संदेसा ले जाने वाला, दूत, धावन।

बसीठी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बसीठ*) दूत कर्म, दूतता, दूतत्व।

बसीना*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बसना*) रहन, **रहाइस** (दे॰)।

बसूला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वासि+ला प्रत्य॰*) लकड़ी छीलने या गढ़ने का एक लोहे का औज़ार। स्त्री॰ *अल्पा॰* **बसूली**।

बसेरा–वि॰ दे॰ (हि॰ *बसना*) बसने या रहने वाला। संज्ञा, पु॰ ठहरने या टिकने का स्थान, पक्षियों के रात बिताने या रहने का घोंसला, रहने या टिकने का कार्य या भाव। **मु॰ बसेरा करना**–बसना, डेरा या निवास करना, रहना, ठहरना, घर बनाना। **बसेरा लेना**–रात बिताने को रहना, निवास करना, टिकना। **बसेरा देना**–आश्रय देना।

बसेरी–वि॰ दे॰ (हि॰ *बसेरा*) निवासी, रहने या बसने वाला।

बसैया*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *बसना*) बसने वाला, **बसवैया**।

बसोबास–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *बास+आवास*) रहने का स्थान।

बसौंधी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बास+औंधी*) सुगंधित लच्छेदार रबड़ी।

बस्ता–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कागज-चक्र या पुस्तकादि बाँधने का चौकोर कपड़ा, ऐठन।

बस्ती, बसती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बसति*) गाँव, आबादी, निवास, जनपद। घर बना कर रहने का कार्य या भाव।

बस्तु-बस्तू–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वस्तु*) पदार्थ, द्रव्य, चीज।

बस्साना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*हि॰ बास*) **दुर्गंधि देना**, बसाना।

बहंगी-बहिंगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विहंगिका*) **बोझ ले जाने** का तराजू जैसी चीज़, काँवर, काँवरि। **संज्ञा, पु॰ बहिंगा**।

बहकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *बहना*) सही रास्ते से भूल कर अन्य ओर जाना, भटकना, भूलना, चूकना, भुलावे में आ जाना, धोखा खाना, बहलना (बच्चों का) किसी कार्य या बात में पड़कर शान्त हो जाना, मद या रस में चूर होना, आपे में न रहना, ठीक लक्ष्य से अन्यथा लाना। **मु॰ बहकी बहकी बातें करना**–उन्मादी की सी बातें करना, बढ़ी-चढ़ी या भुलावे की बातें करना। स॰ रूप–**बहकाना**, प्रे॰ रूप–**बहकवाना**।

बहकाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *बहकना*) सही स्थान, लक्ष्य या मार्ग से दूसरी ओर ले जाना या कर देना, भुलवाना, बहलाना, भरमाना, फुसलाना, बातों से शांत करना।

बहकाव-बहकावट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बहकौना*) बहकाने का भाव।

बहन-बहनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भगनी*) बहिन। **संज्ञा**, स्त्री॰ (हि॰ *बहनों*) बहना किया का भाव।

बहना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *बहन*) प्रवाहित होना, पानी आदि प्रख वस्तुओं का किसी ओर जाना, हटना, दूर होना, कुमार्गी या आवारा होना, फिसल जाना, बिगड़ना, वायु का चलना, स्थान या वचन से सरक जाना, अढ़ाना (बहुओं का), बुरा होना, अधिक या सस्ता मिलना, गर्भ गिरना, नष्ट होना, डूब जाना (रुपया आदि), खींच या लाद कर ले चलना, चलना, निर्वाह करना, धारण या बहन करना, उठना, मारा-मारा फिरना, पानी की धार के साथ चलना, धार या बूँद के रूप में निकल चलना, साबित होना। स॰ रूप–बहाना। **मु॰ बहती गंगा में हाथ धोना**–जिससे लोग लाभ उठा रहे हों उससे लाभ उठाना।

बहनापा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बहिन+आपा प्रत्य॰*) बहिन का-सा सम्बन्ध या नाता।

बहनि, बहनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) प्रवाह, बहना, अनुजा, **बहिन, बहिनीं**

बहनी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बहि*) आग, अग्नि।

बहनोई–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भगिनी-पति*) बहिन का पति, **जीजा** (प्रान्ती॰)।

बहरा-बहिरा–वि. दे. (सं. *बधिर*) जिसे कम या कुछ न सुनाई दे। स्त्री. **बहिरी, बहरी**। संज्ञा, पु. **बहरापना**।

बहराना-बहलाना–क्रि. स. दे. (हि.*बहराना या बहलाना*) दुख, चिंतादि के भुलवाने वाली मनोरंजक बातें कहना, फुसलाना, भुलाना, बहकाना।

बहरियाना†–क्रि. स. दे. (हि. *बाहर+इयाना प्रत्य.*) निकालना, जुदा या विलग करना, बाहर करना। क्रि. स. (दे.)–जुदा या अलग होना, निकलना।

बहरी–संज्ञा, स्त्री. (अ.) सामुद्रीय बाज जैसे एक शिकारी पक्षी। वि. स्त्री. (दे.) वधिर।

वहल, वहली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वहन*) रथ जैसी छोटी हलकी बैल-गाड़ी। **खड़खड़िया** (प्रान्ती.)।

बहलना–क्रि. अ. दे. (हि. *बहलाना*) मनोरंजन होना, प्रसन्न होना, चिन्ता या दुख दूर हो मन का अन्य ओर लगना।

बहलाना–क्रि. स. दे. (फ़ा. *बहाल*) मन प्रसन्न करना, मनोरंजन करना, बहकाना, भुलाया देना, फुसलाना, चिंता या दुख भुलवा कर चित्त का अन्य ओर या बातों में लगाना।

बहलाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बहलाना*) प्रसन्नता, मनोरंजन, बहलाने का भाव।

बहस–संज्ञा, स्त्री. (अ.) वाद-विवाद, तर्क, दलील, झगड़ा, बदाबदी, होड़, खंडन-मंडन की युक्ति, हुज्जत। वि. **बहसी**।

बहसना*–क्रि. अ. (दे.) बहस या विवाद करना, बदाबदी या होड़ लगाना।

बहादुर–वि. (फ़ा.) पराक्रमी, शूरवीर, उत्साही, साहसी। वि. पु. **बहादुराना**, संज्ञा, स्त्री. **बहादुरी**।

बहाना–क्रि. स. दे. (हि. *वहाना*) प्रवाह (धार) में छोड़ना, लुढ़काना, ढालना, फेंकना, प्रवाहित करना, हवा चलाना, गँवाना, धन खोना, व्यर्थ व्यय करना, धार या बूँद के रूप में बराबर छोड़ना, सस्ता बेंचना, डालना, द्रव वस्तु का नीचे की ओर चलाना या छोड़ना। संज्ञा, पु. दे. (फ़ा.) मतलब निकालने या किसी बात से बचने के लिए झूठी बात कहना, मिसम्याज, हीला, कहने या सुनने का एक हेतु या कारण, स्वार्थ-सिद्धि के लिए मिथ्या बात।

बहार–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) बसंत ऋतु, यौवन का विकास, आनंद, प्रफुलता, मौज, जवानी का रंग, रौनक़, मज़ा, कौतुक, तमाशा। यौ. **फसले-बहार**।

बहाल–वि. (फ़ा.) प्रथम के समान स्थित, जैसे का तैसा, प्रसन्न, स्वस्थ, मुक्त, (अं.) रीइन्सटेट।

बहाली–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) फिर से नियुक्ति, फिर उसी पद पर होना। संज्ञा, स्त्री. (हि. *बहलाना*) ब्याज, मिस, बहाना।

बहाव–संज्ञा, पु. (हि. *बहना*) बहने का भाव, प्रवाह, धारा, बहता पानी।

बहि–अव्य. (सं. *बहिस्*) बाहर।

बहिक्रम*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वयः क्रम*) उम्र, अवस्था।

बहित्र–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बहित्र*) नाव।

बहिन–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भगिनी*) भगिनी, बहिनी।

बहियां‡*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बाहु*) हाथ, बाहु, भुजा, बाँह।

बहिरँग–वि. (सं.) बाहिरी, बाहर वाला। (विलो. **अंतरंग**)।

बहिरत‡*–अव्य. दे. (सं. *नहिः*) बाहर।

बहिर्गत–वि. यौ. (सं.) बाहर आया या निकला हुआ, **बहिरागत**।

बहिर्भूमि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बस्ती या आबादी से बाहर वाली ज़मीन।

बहिर्मुख–वि. यौ. (सं.) विरुद्ध, प्रतिकूल, विमुख।

बहिष्कार–संज्ञा, पु. (सं.) निकालना, हटाना, बाहर करना। (वि. **बहिष्कृत**)। बही संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वद्ध*, हि. *बँधी*) हिसाब-किताब लिखने की किताब।

बहीर–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भीड़*) जन-समूह, सेना की सामग्री, तथा उसके साथ के सेवक, सईस, दुकानदार आदि। *‡अव्य. (सं. *बहिस्*) बाहर।

बहु–वि. (सं.) अनेक, अधिक, ज़्यादा, बहुत। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वधू*) बहू, बधू, पतोहू, स्त्री।

बहुगुना–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *बहुगुण*) चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन, **तसला,** भगौना (आ.) वि. कई गुना।

बहुल–वि. (सं.) बड़ा जानकार। संज्ञा, स्त्री. **बहुलता**।

बहुत–वि. दे. (सं. *बहुतर*) अनेक, एक या दो से अधिक,

ज़्यादा, यथेष्ट, काफी, बस, बहु (दे.)। **मु० बहुत अच्छा**—स्वीकार सूचक वाक्य। **बहुत करके**—अधिकतर, प्रायः, बहुधा। **बहुत-कुछ**—कम नहीं। **बहुत खूब**—बहुत अच्छा, बाह क्या कहना है। क्रि० वि० अधिक तौल में, ज्यादा।

बहुतेरा—वि० दे० (हि० *बहुत+मरा प्रत्य०*) अधिक, बहुत-सा। क्रि० वि० (दे.) अनेक प्रकार से, बहुत (स्त्री. **बहुतेरी**)।

बहुतेरे—वि० दे० (हि० *बहुतेरा*) अनेक, बहुत से (बहुतेरा का ब० व०)।

बहुत्व—संज्ञा, पु० (सं.) अधिकता।

बहुदर्शिता—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बहुलता।

बहुदर्शी—संज्ञा, पु० (सं.*बहुदर्शिन्*) अनुभवी, जानकार, बहुज्ञ, बहुत देखने वाला, बहुसोची।

बहुधा—क्रि० वि० (सं०) प्रायः, बहुत करके, अक्सर, अनेक प्रकार से।

बहुनैन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० *बहुनयन*) इन्द्र, सहस्राक्ष, सहसाखी।

बहुवाहु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण, सहस्रबाहु।

बहुमत—संज्ञा, पु० यौ० (सं.) बहुत से लोगों की भिन्न-भिन्न सम्मति, बहुत से लोगों की मिलकर एक रायः (अं.) मैजोरिटी।

बहुमूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं.) बहुत मूत्र होने का एक रोग।

बहुमूल्य—वि० यौ० (सं.) दामी, क़ीमती, बढ़िया, बड़े दाम का।

बहुरंगा—वि. यौ० (हि० *बहुरंग*) कई रंगों का, चित्र विचित्र, मनमौजी, बहुरूपिया।

बहुरंगी—वि० यौ० (हि० *बहुरंगा+ई प्रत्य.*) अनेक करतब करने वाला, अनेक रंगवाला, कौतुकी, बहुरूपिया।

बहुरना†—क्रि० अ० दे० (सं० *प्रघूर्णन*) लौटना, फिरना, वापिस आना। स० रूप—**बहुराना,** प्रे० रूप—**बहुरवाना**।

बहुर-बहुरि*†—क्रि० वि० दे० (हि० *बहुरना*) फिर, फिरि, पीछे, उपरांत, पुनः। पू० का० क्रि० (दे.) लौटकर।

बहुरा-चौथ—संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) एक चौथ का त्योहार जब बहुरी चबाई जाती है।

बहुरिया*—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं० *बधूटी*) बहू, वधू, दुलहिन, नववधू।

बहुरी—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि० *भीरना=भुवना*) भूना हुआ खड़ा अनाज, चबैना, चर्वण।

बहुरूपिया—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० *बहु+ रूप*) स्वाँगी, तमाशिया, जो अनेक रूप धरकर दिखाता है, जीव, **बहुरूपी**।

बहुल—वि० (सं०) अधिक, बहुत।

बहुलता—संज्ञा, स्त्री० (सं.) बाहुल्य, अधिकता, बहुतायत।

बहुला—संज्ञा. स्त्री० दे० (सं० *बहुला*) इलायची।

बहुवचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं.) शब्द का वह रूप जिससे एक से अधिक वस्तु का ज्ञान हो (व्या)।

बहुव्रीहि—संज्ञा, पु० (सं.) 6 प्रकार के समासों में से वह समास जिसके दो या अधिक पदों से बने समस्त पद से अन्य पदार्थ का बोध हो और जो किसी पद का विशेषण सा हो (व्या०)।

बहुश्रुत—वि० यौ० (सं०) अनेक विषयों का ज्ञाता, जिसने बहुत सुना हो।

बहुसंख्यक—वि० यौ० (सं.) जो गिनती में बहुत अधिक हो, अगणित, **बहुसंख्यात**।

बहूँटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० *बाहुरथ*) बाँह का एक गहना, **बहुँटा**। स्त्रीर *अल्पा०* **बहूँटी, बहुँटी**।

बहू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० *बधू*) पतोहू, पुत्रवधू, पत्नी, **दुलहिन**।

बहूपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें एक ही धर्म से एक ही उपमेय के अनेक उपमान कहे गए हों (अ० पी०)।

बहेड़ा-बहेरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० *विभीतक, प्रा० बहेड़ओ*) एक पेड़ जिसके फल औषधि के काम में आते हैं।

बहेतू—वि० दे० (हि० *बहना*) मारा-मारा फिरने वाला, कुमार्गी।

बहेरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० *बहराना*) मिस, बहाना, छीला।

बहेलिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० *वध+हेला*) किरात, व्याधा, हिंसक, शिकारी, चिड़मार, पशु-पक्षियों के पकड़ने या मारने का व्यवसाय करने वाला।

बहोर, बहोरि*†—संज्ञा, पु० (हि० *बहुरना*) वापसी, फेरा। क्रि० वि० **बहोरि**—फिर।

बहोरना†—क्रि० स० दे० (हि० *बहुरना*) फेरना, लौटाना, वापिस करना।

बहोरि-बहोरी†*—अव्य० दे० (हि० *बहोर*) फिर पुनः, पश्चात् को।

बह्मनेटा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *ब्राह्मण*) ब्राह्मण का पुत्र (तिरस्कार-सूचक है)।

बाँ—संज्ञा, पु. (*अनु.*) बैल या गाय के बोलने का शब्द। †संज्ञा, पु. दे. (हि. *वेर*) वार, बेर, दफा।

बाँक—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बंक*) बाँह का एक भूषण, पैरों का चाँदी का एक गहना, एक प्रकार का चाकू, धनुष, हाथ की एक चौड़ी चूड़ी। संज्ञा, पु. (दे.) वक्रता, टेढ़ाई वि. (सं. *बंक*) टेढ़ा, तिरछा, **बाँका** (दे.)।

बाँकड़ी—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बंक+डी प्रत्य.*) बादले और कलाबत्तू का सोनहला या रूपहला फीता।

बाँफना†—क्रि. स. दे. (सं. *बंक*) टेढ़ा करना। ‡ क्रि. अ. (दे.) टेढ़ा होना।

बाँकपन, बाँकपना, बाँकापन—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाँका+पन प्रत्य.*) तिरछापन या टेढ़ापन, छैलापन।

बाँकड़ा-बाँकरा-बाँकुरा—वि. दे. (सं. *बंक,* हि. *बाँका*) बहादुर, शूरवीर।

बाँकड़ी—संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक प्रकार का गोटा।

बांका—वि. दे. (सं. *बंक*) तिरछा, टेढ़ा, अच्छा, चोखा, वीर, छैला, बना-ठना, सुन्दर।

बाँकुड़ी—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बक*) फीता।

बाँग—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) नमाज का समय सूचनार्थ मुल्ला का मसज़िद में अल्लाह आदि ऊँचा शब्द, अजान, पुकार, आवाज़, प्रातः समय मुर्गे का शब्द।

बाँगड़—संज्ञा, पु. (दे.) हरियाना, करनाल, रोहतक और हिसार का इलाका, **हिसार**।

बाँगड़—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाँगड़*) बाँगड़ प्रान्त की बोली, जाटूभाषा, **हरियानी** (प्रान्ती.); हरयानवी।

बाँगुर-बागुर—संज्ञा, पु. (दे.) पशु-पक्षी के फँसाने का फंदा, जाल।

बाँचना†—क्रि. स. दे. (सं. *वाचन*) पढ़ना, पाठ करना। क्रि. स. (दे.) बचना, छुड़ाना, बचाना। स. रूप—**बँचाना,** प्रे. रूप—**बँचवाना**।

बाँछना-बाछना†*—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बाँछा*) इच्छा, कामना, मनोरथ। †स. क्रि. (दे.) चाहना, इच्छा करना, छाँटना, चुनना, बीनना।

बाँछा*—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बाँछा*) कामना, इच्छा, अभिलाषा।

बाँछित*—वि. दे. (सं. *बाँछित*) इच्छित, अभिलाषित।

बाँछी*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाछिन्*) चाहने वाला, इच्छा या अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी।

बाँजर—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बंजर*) बंजर, ऊसर।

बाँझ—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. बंध्या) बंध्या।

बाँझपन-बाँझपना—संज्ञा, पु. दे. (सं. *बंध्या+पन, पन* हि. *प्रत्य.*) बंध्यात्व, बंध्या का भाव।

बाँट—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाँटना*) भाग, खंड, हिस्सा, अंश, बाँटने का भाव। **मु. बाँट पड़ना**—हिस्से में आना।

बाँटना—क्रि. स. दे. (सं. *वितरण*) हिस्सा या विभाग करना या लगाना, हिस्सा देना, वितरण करना, **बरताना** (आ.)।

बाँटा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाँटना*) भाग, हिस्सा।

बाँड़ा—वि. (दे.) पूँछ-हीन पशु, अकेला, **बंडा** (आ.) स्त्री. **बाँड़ी**।

बाँड़ी—संज्ञा, स्त्री. (दे.) छडत्रे, लाठी, डंडा। वि. स्त्री.—पूँछ-हीन, अकेली।

बाँद†—संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *बंदा*) सेवक, दास, नोकर, बंदा। स्त्री. **बाँदी**।

बाँदर—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वानर*) बंदर, वानर। स्त्री. **बाँदरी, बँदरिया**।

बाँदा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *बंदाक*) एक प्रकार का वनस्पति जो दूसरे पेड़ों पर उगती और बढ़ती है, **बंदाल** (आ.)।

बाँदी—संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *बंदा*) दासी, चेरी, लौंडी।

बाँदू—संज्ञा, पु. दे. (सं. *बंदी*), क़ैदी, बंधुवा।

बाँध—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाँधना*) नदी तालादि के जल रोकने का मिट्टी, पत्थर आदि से बना धुस्स, बंद, बंध।

बाँधना—क्रि. स. दे. (सं. *बंधन*) घर आदि बनाना, पानी रोकने को बाँध बनाना, जकड़ना, कसना, कुछ जकड़ने या कसने को रस्सी, बस्त्रादि से घेर या लपेट कर गाँठ लगाना, रोकना, योजना या उपक्रम करना, व्यवस्था, विधान या क्रम ठीक करना, कोई अस्त्र-शस्त्र साथ रखना, नियत या स्थिर करना, पकड़ कर बंद या क़ैद करना, मन में धरना, नियम, प्रतिज्ञा, शपथ या अधिकार से मर्यादित रखना, मंत्र-तंत्र के द्वारा गति या शक्ति रोकना, प्रेम-पाश में जकड़ना।

बाँधनू—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाँधना*) उपक्रम, मंसूबा, विचार,

मनगढ़ंत बात, ख्याली पुलाव, झूठा दोष, कलंक, रंगरेज का कपड़ा, लहरियादार रँगाई के पहले वस्त्र में गाँठें लगाना, इस प्रकार रँगी चुनरी, किसी बात को संभव जान तत्सम्बन्ध में पहिले से ही विचार बनाना।

बाँधव–संज्ञा, पु. (सं.) बंधु, भाई नातेदार, मित्र। यौ. **बंधु-बाँधव**।

बाँवी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वाल्मीक*) साँप का बिल, बँबीठा (आ.), साँप का बिल, दीमकों का बनाया मिट्टी का भीटा।

बाँभन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ब्राह्मण*) ब्राह्मण, विप्र, **बाम्हन** (आ.)।

बाँस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वंश*) कई पोले कांडों और गोंठों वाला तृण जाति का एक प्रकार की वनस्पति पेड़ **मु. बाँस पर चढ़ना (चढ़ाना)**–बदनाम होना (करना)। **बाँस पर चढ़ाना**–बदनाम करना, बहुत बड़ा देना, अति आदर देकर ढीठ या घमंडी कर देना। **बाँसों उछलना**–बहुत अधिक प्रसन्न होना। सवा तीन गज की नाप, लाठी, नाव खेने की लगगी, रीढ़। **मु. कुशों में बाँस छोड़ना**–खुद ढूँढ़ना।

बाँसपुर–संज्ञा, पु. दे. (*बाँस+पूरना*) एक बारीक वस्त्र।

बाँसली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाँस+ली प्रत्य.*) बंशी, मुरली, **बाँसुरी, हिमयानी** (प्रान्ती.)। रुपए-पैसे रख कमर में कसने की जालीदारी लम्बी थैली, बसनी।

बाँसा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वँश=रीढ़*) नाक के दोनों नथनों के बीच की हड्डी, पीठ की हड्डी, रीढ़।

बाँसी–संज्ञा, स्त्री. पु. दे. (हि. *बाँस*) एक नरम बाँस, एक धान या चावल।

बाँसुरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वंश+स्वर*) वंशी, बाँस से बना, और मुँह से बजाने का एक बाजा, **बँसुरी, बाँसुरिया, बँसरिया**।

बाँह-बाँही–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वाहु*) हाथ, भुजा, बाहु, **बँहिया** (आ.)। **मु. बाँह गहना या पकड़ना**–सहारा देना, मदद करना, अपनाना, ब्याह करना। **बाँह देना**–सहायता या सहारा देना। **यौ. बाँह-बोल**–सहायता देने या रक्षा करने का वचन। बल, सहायक, रक्षक, शक्ति। **मु. बाँह टूटना**–भाई, रक्षक का सहायक न रह जाना, दो आदमियों के मिलकर करने की एक कसरत, भरोसा, सहारा, शरण, आस्तीन, कुरते, कोट आदि कि वह मोहरीदार भाग जिसमें बाँह डालते हैं। **मु. बाँह गहे की लाज**–रक्षा करने के प्रण को अनेक कष्ट भोगते हुए भी न छोड़ना।

बा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वा=जल*) पानी। संज्ञा, पु. (फ़ा. *बार*) मरतबा, बार, दफा।

बाई-बाय–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वायु*) धातु, रोग। **मु. बाई की झोंक**–आवेश, वायु का प्रकोप। **बाई चढ़ाना**–वायु का कुपित होना. घमंड से व्यर्थ बकना, करना। **बाई पचना**–वायु दोष का शान्त होना, घमंड टूटना। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाधा, धाबी*) स्त्रियों के लिए आद का शब्द; यह कहीं कहीं रंडियों के नाम के पीछे बोला जाता है।

बाईस, बाइस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *द्वाविंशति*) बीस और दो की संख्या या तत्सूचक अंक। वि. जो बीस और दो हो। **मु. सब धान बाईस पसेरी होना**–सभी की एक सी कदर करना।

बाईसी, बाइसी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाईस+ई प्रत्य.*) बाइस पदार्थों का समूह।

बाउ-बाऊ‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वायु*) वायु, हवा, बाव, बाय (आ.)।

बाउर†–वि. दे. (सं. *वातुल*) पागल, बावला, सिढ़ी, सीधा-सादा, मूर्ख, बउरा, बौरा (आ.) गूंगां

बाएँ–क्रि. वि. दे. (सं. *वाम*) बाएं या बाँई ओर, वाम बाहु की ओर।

बाकचाल†–वि. दे. (सं. *वाक्*+हि. *चलना*) नक्की, वाचाल, बातूनी।

बाकना*‡–क्रि. अ. दे. (सं. *वाक्*) बकना।

बाकल†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बल्फल*) बकला, **बक्कल**।

बाकला–संज्ञा, पु. (अ.) एक बड़ी मटर, एक तरकारी, बकला।

बाकस–संज्ञा, पु. (दे.) अड्सा, वासा, रुसा, संदूक, पेटारी, बुरा और फीका स्वाद।

बाक, बाका*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वाक्*) वाणी, गिरा।

बाकी–वि. (अ.) शेष, बचत, अवशिष्ट। संज्ञा, स्त्री. दो संख्याओं के घटाने पर बची संख्या; दो मानों के अंतर

निकालने की क्रिया या विधि (गणि.)। अव्य. परन्तु, लेकिन, मगर, किन्तु। संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक धान।

बाखर-बाखरि*†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बखरी*) आँगन, चौक, **बखरी** (आ.) घर।

बाग—संज्ञा, पु. (अ.) **बाग** (दे.) उपवन, बाटिका। संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. बाग) लगाम, बहगा (सं.)। **मु. बाग़ मोड़ना (मरोड़ना)**—किसी ओर प्रवृत्त होना या करना, घूमना, चेचक के दानों का मुरझाना।

बागडोर—संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) लगाम में बँधी डोरी, लगाम।

बागना—क्रि. अ. दे. (सं. *वक=चलना*) चलना, टहलना, घूमना, फिरना। ‡क्रि. अ. दे. (सं. *वाक्*) बोलना।

बागवान—संज्ञा, पु. (फ़ा) माली।

बागवानी—संज्ञा, स्त्री. (फा.) माली का कार्य्य।

बागर—संज्ञा, पु. (दे.) नदी का वह ऊँचा किनारा जहाँ बाढ़ का भी जल कभी नहीं पहुँचता, **बाँगर** (दे.)। (विलो. **खादर**)

बाँगल*†—संज्ञा, पु. दे. (सं. *बक*) बगला, बक, बगुला, बकुला (आ.)।

बागा—संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *बाग*) एक प्रकार का अँगरखा, जामा, खिलअत।

बाग़ी—संज्ञा, पु. (अ.) राजद्रोही, विद्रोही, बलवाई। संज्ञा, पु. **बगावत**।

बागुर—संज्ञा, पु. (दे.) जाल, फंदा।

बागुरा—वि. (दे.) अधिक बोलने वाला, बक्की, बकवादी।

बागेसरी‡—संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *बागीश्वरी*) सरस्वती, एक रागिनी, बागेश्वरी (संगी.)।

बाघंबर, बघंबर—संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्याघ्रांवर*) शेर या बाघ की खाल, एक कंबल।

बाघ—संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्याप्त*) एक हिंसक जंतु, शेर। स्त्री. **बाघिनी** (सं. *व्याघ्रणी*)।

बाघी—संज्ञा, स्त्री. (दे.) गरमी के रोगी के पेडू और जाँघ के जोड़ की गिलटी।

बाचना‡—क्रि. अ. दे. (हि. *बचना*) बचना। क्रि. स. (दे.) बचाना, रक्षित रखना।

बाचा—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बाचा*) वाणी, बचत, वाक्य, वाक् शक्ति, प्रण।

बाचाबंध*—वि. दे. यौ. (सं. *वाचावद्ध*) प्रणवद्ध, प्रतिज्ञावद्ध, प्रण करने वाला।

बाछ, बाँछ—संज्ञा, स्त्री. (दे.) चुनाव, निर्वाचन, छाँट। क्रि. स. (दे.) **बाँछना**—चुनना।

बाछा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वत्स, प्रा. वच्छ*) गाय का बछड़ा, लड़का, **बच्छा**। (स्त्री. **बाछी**)।

बाज़—संज्ञा, पु. दे. (अ. *बाज*) एक शिकारी पक्षी। प्रत्य. (फ़ा.) जो शब्दों में लगकर रखने, करने, खेलने के शौकीन का अर्थ देती है। जैसे—नशेबाज़, दगाबाज़। वि. (फ़ा.) रहित, वंचित। **मु. बाज़ आना**—पास न जाना, त्यागना, छोड़ना, दूर होना। **बाज करना**—रोकनां **बाज़ रखना**—मना करना। वि. (अ. *अश्रज*) विशिष्ट, कोई-कोई, कुछ थोड़े से। क्रि. वि. बगैरह, बिना। संज्ञा, पु. (सं. *वाजिन्*) घोड़ा, **बाज़ी**। संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाद्य*) बाजा, बाजे का शब्द।

बाज़दावा—संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) अपने दावे, अधिकार या स्वत्व का त्याग देना।

बाजन*†—संज्ञा, पु. दे. (हि. *बाजा*) बाँजा।

बाजना—क्रि. अ. दे. (हि. *वजना*) बाजे का शब्द करना, **बजना** (दे.), झगड़ना, लड़ना, पुकारा जाना, प्रसिद्ध होना, लगना, चोट पहुँचना।

बाजरा, बजरा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाद्य*) वाद्य, राग-रागिनी, स्वर-ताल के लिए बजाने की मशीन का यंत्र। यौ. **बाजा-गाजा (बाजे-गाजे)**—बजते हुए बाजों का समूह। **बाजे गाजे से**—धूम-धाम सें

बाजाप्ता—क्रि. वि. (फ़ा.) कानून या जाब्ते के साथ; नियमानुसार। वि. जो नियमानुकूल हो।

बाज़ार—संज्ञा, पु. (फ़ा.) जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थ बिकते हों, **बज़ार-बाज़ार** (दे.), हाट, पैठ। **मु. बाजार करना**—बाजार में चीजें लेना। **बाज़ार गर्म होना**—रौनक अधिक होना, गाहकों और माल का अधिक होना, खूब कार्य चलना। **बाज़ार तेज (मंदा) होना**—वस्तुओं का मूल्य बढ़ (घट) जाना। काम जोरों पर होना। **बाज़ार उतरना, गिरना या मंदा होना**—दाम घटना, वस्तुओं की माँग कम होना, कम काम चलना, किसी नियत समय पर दुकानें लगने का स्थान।

बाजारी–वि. (फ़ा.) बाज़ार का, बाज़ार-सम्बन्धी, साधारण, अशिष्ट।

बाजारू, बजारू–वि. दे. (फ़ा. *बाजारी*) बाजारी, मामूली, अशिष्ट। संज्ञा, पु. (दे.) बाज़ार।

बाजि-बाजी*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाजिन्*) घोड़ा, पक्षी, बाण, अडसा या रूसा। वि. चलने वाला; (व्रज.) कोई-कोई।

बाज़ी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) हार-जीत पर कुछ लेन-देन की शर्त या दान, दाँव या शर्त के साथ आदि के अंत तक पूरा खेल। संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाजिन्*) घोड़ा। **मु. बाज़ी मारना (ले लेना)**–दाँव या बाजी जीतना। **बाज़ी ने जाना**–जीत जाना, बढ़ जाना, बाज़ी, लगाना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाजिन्*) घोड़ा।

बाज़ीगर–संज्ञा, पु. (फ़ा.) जादूगर। संज्ञा, स्त्री. **बाज़ीगरी**। (स्त्री. **बाज़ीगरनी**)।

बाजु–अव्य. दे. (सं. *वर्जन, मि. फा. वाज*) बिना, सिवा, अतिरिक्त वगैर। संज्ञा, पु. (दे.) बाजू, बाँह।

बाजू–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *बाज़ू*) बाहु, भुजा, बाँह, एक गहना, बाजूबंद। सेना का एक पक्ष, सदा सहायक, चिड़िया के पंख।

बाजूबंद–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) बाँह पर बाँधने का (भुजबंद), गहना, बिजायठ, बाजू।

बाझ–वि. दे. (हि. *बाझना*) रहित, पेंच।

बाझन*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बझना*) फँसने का भाव, फँसावट, उलझन, झंझट, बखेड़ा, पेंच।

बाझना–क्रि. अ. दे. (हि. *बझना*) फँसना, उलझना, झगड़ना।

बाट–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाट*) राह, रास्ता, मार्ग। **मु. बाट करना**–मार्ग बनाना। **बाट जोहना या देखना**– इन्तज़ारी करना, प्रतीक्षा करना। **बाट काटना**–राह तै करना। **बाट पड़ना**–पीछे पड़ना, तंग करना, डाका पड़ना, घाटा (बट्टा) होना।

बाट पारना–डाका मारना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *वटक*) तौलने का भार, बटखरा, माप, बट्टा, घाटा, कमी, सिल पर पीसने का पत्थर।

बाटना–क्रि. स. दे. (हि.*वाट*) शिला पर लोढ़े से पीसना, पिसान करना। क्रि. स. (दे.) बटना, उबटना। **बाँटना**।

बाटिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) फुलवारी, वह गद्य जिसमें गुच्छ और कुसुम गद्य सम्मिलित हों।

बाटी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वटी*) पिंड, गोली, वाटिका, उपलों या अंगारों पर सेंकी एक प्रकार की रोटी अंगाकड़ी, **अंकुरी** (दे.) **लिट्टी** (प्रान्ती.)। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बर्तुल मि. हि. बटुआ*) कम गहरा और चौड़ा कटोरा, बंटी।

बाड़व–संज्ञा, प. (सं.) बड़वानल, बढ़वाग्नि, वि. बड़वा-सम्बन्धी।

बाड़वानल–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) **बड़वानल** (सं.) बड़वाग्नि, **बड़वागी**।

बाड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वाट*) अहाता, पशुशाला, सब ओर से घिरा बड़ा मैदान, तांता (प्रान्ती.)।

बाड़ी†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वारी*) बाटिका, मुहल्ला।

बाढ़, बाढ़ि–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बढ़ना*) वृद्धि, बढ़ाव, बढ़ती, ज़्यादती, अधिकता, अति बर्वादि से नदी में पानी की अधिकता, सैलाव, जलप्लावन, व्यापार का लाभ, तोपों, बंदूकों का लगातार छूटना। **मु. बाढ़ दगना**–तोपादि का लगातार छूटना। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वाट*) (हि. वारी) तलवार आदि हथियारों की धार, सान, उत्साह, उत्तेजना। **मु. बाढ़ (पर) रखना**–उत्तेजित या उत्साहित करना, धार तेज़ करना।

बाढ़ना*†–क्रि. अ. दे. (हि. *बढ़ना*) बढ़ना।

बाण–संज्ञा, पु. (सं.) सायक, शर, तीर, शर का अग्र भाग, गाय का थन, निशाना, लक्ष्य, अग्नि, पाँच की संख्या, एक वाणासुर दैत्य, कादंबरीकार एक कवि।

बाणगंगा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक नदी।

बाणभट्ट–संज्ञा, पु. दे. (सं.) संस्कृत के गद्य काव्य कादम्बरी के निर्माण-कर्त्ता।

बाणलिंग–संज्ञा, पु. (सं.) नमदा नदी से प्राप्त शिव लिंग।

बाणसर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा बलि के सौ पुत्रों में से सर्व श्रेष्ठ, जिसके हजार हाथ थे; (सहस्रबाहु)।

बाणिज्य–संज्ञा, पु. (सं.) सौदागरी व्यापार, रोजगार, **वणिज, बनिज** (दे.)।

बाणी, बानी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वाणी*) सरस्वती, भाषा, गिरा, जिह्वा, बोलो, वाग्।

बात–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वार्त्ता*) वाणी, वचन, सार्थक शब्द

या वाक्य, कथन। **मु॰ बातों में आना (पड़ना)**–बहकाने या भुलावे में पड़ना। **(पुरानी) बात उखाड़ना**–(पुरानी) चर्चा छेड़ना, भूली बातों की स्मृति दिलाना, प्रसंग उठाना, बुरी बातें छेड़ना। **बात उठाना (सहना)**–कड़ी बातें सहना, बात मानना। **बात काटना**–किसी की बातों के बीच में बोलना, बातों का खंडन करना। **बातें गढ़ना**–प्रसन्नकारी, चिकनी-चुपड़ी अच्छी बातें करना, झूठी बातें करना। **बात की बात में**–तुरंत, झटपट। **बात पर जमना**–अपने कथन से न बदलना। **बात ही बात में**–बातचीत करने में। **बात रहना**–जो कहा है उसका सही होना, वही होना। **बात पर आना (अड़ना)**–आग्रह या हठ करना। **बात (खाली) जाना**–प्रार्थना या बिनती का मंजूर न होना, निष्फल जाना। **बात से टलना**–अपने कथन से हट जाना। **बात टालना**–कहना व्यर्थ होना। **बात टालना**–सुनी अनसुनी करना, किसी बात को छोड़ दूसरी छेड़ना। **बात न पूछना**–तनिक भी आद या परवाह न करना। **किसी की बात पकड़ना**–सारे प्रसंग को छोड़ किसी एक ही बात को ले लेना। **बात पर जाना**–बात पर ध्यान देना, कहने का भरोसा करना। **बात तक न पूछना**–कुछ भी ध्यान न देना, रंचमात्र भी आदर न करना। **बात पूछना**–खोज़-ख़बर लेना, आदर करना। **बात बढ़ना**–विवाद या झगड़ा हो जाना, किसी विवाद, प्रसंग या घटना का विकट रूप होना। **बात बढ़ाना**–विवाद का झगड़ा करना। **बात बनाना**–बहाना करना, झूठ बोलना, धोखे की बात करना। **बातें बनाना**–झूठमूठ बातें करना, बहाना या खुशामद करना। **बातों में उड़ाना**–बातों या हँसी में टालना, टाल-मटूल करना। **बातों में लगाना**–बातों में फँसा रखना। चर्चा, प्रसंग, वर्णन। **मु॰ बात उठाना**–चर्चा या प्रसंग चलाना या छेड़ना। **बात चलाना या छेड़ना**–चर्चा होना, प्रसंग आना। **बात लगना**–किसी कथन या संकल्प का दृढ़ होना, बात का प्रभाव पड़ना, बात का बुरा लगना। **बात निकालना**–बात चलाना। **बात को (के लिए) मरना**–अपनी बात रखने का प्रयत्न करना, बचनों से अपना महत्व प्रगट करना। **बात पर मरना**–अपने कथन या संकल्प की चरितार्थता का पूर्ण प्रयत्न करना, तद्र्थ सर्वस्व त्यागना। **बात पड़ना**–चर्चा छेड़ना। **बात पूछना, बात की जड़ पूछना**–किसी विषय पर व्यर्थ कार्य कारण सम्बन्धी प्रश्न करना, व्यर्थ खोज करना। अफवाह, किंवदन्ती, प्रवाद। **मु॰ बात उड़ना (उड़ाना)**–चर्चा फैलना (निंदा करना), किसी प्रसंग का समाप्त होना। **बात कहना**–सब ओर ख़बर फैलाना, बुरा भला कहना। व्यवस्था माजरा, हाल। **मु॰ बात का बतंगड़ करना (बढ़ाना)**–छोटे से कार्य को व्यर्थ बहुत सा बढ़ा देना। **बात पर बात कहना**–उत्तर-प्रत्युत्तर देना। **बात का बवंडर बनाना**–व्यर्थ बात को विस्तार देना, बातों की उलझन बढ़ाना। **बात न पूछना**–दशा पर कुछ विचार न करना, ध्यान न देना, आदर न करना। **बात बढ़ना (बढ़ाना)**–किसी बात का भयंकर रूप में (विस्तृत) प्रगट होना (करना), झगड़ा होना। **बात बनना**–काम पूर्ण रूप से बनना या ठीक हो जाना, यथेष्ट रूप से सफलता होना, अच्छी परिस्थिति या स्थिति होना, मतलब पूरा होना। **बात बनाना या सँवारना**–कार्य बनाना या सिद्ध करना। **बात बात पर या (बात बात में)**–हर एक कार्य में। **बात बिगड़ना**–विफलता होना, कुछ बुराई होना, कार्य नष्ट होना। वार्तालाप, गपशप, घटित होने वाली दशा, वाग्विलास, संदेशा, प्राप्त संयोग, परिस्थिति। **मु॰ बातों बातों में**–साधारण बात में, बातें करते समय। **बात ठहरना (पक्की होना)**–विवाह या सम्बन्ध स्थिर होना, कुछ तय करने को उसकी चर्चा होना। **बातों में आना या जाना**–कथन से धोखा खाना, व्यवहार से ठगा जाना। धोखा या भुलावा देने या फँसाने को कहे हुए शब्द या किए हुए व्यवहार, बहाना, प्रतिज्ञा, झूठ या बनावटी कथन, प्रतिज्ञा, वादा, बहाना, वचन, हठ। **मु॰ बात का धनी या पक्का या पूरा**–दृढ़ प्रतिज्ञ, प्रणापालक। **यौ॰ पक्की–(विलो॰ कच्ची बात) बात**–ठीक निश्चित या सत्य बात। **मु॰ बात पक्की करना**–सम्बन्ध व्यवहारादि स्थिर करना, दृढ़ निश्चय करना, तय करना, प्रतिज्ञा (संकल्प) पुष्ट करना। **(अपनी) बात रखना**–वचन या प्रतिज्ञा पूर्ण करना। **अपनी ही बात रखना**–अपना ही हठ रखना।

बात हारना–वचन देना, मामला, हाल, प्रतीति, विश्वास, साख। **मु॰ बात खोना**–प्रतीति या सम्मान गँवाना। **बात न रहना**–साख या विश्वास न रहना। (**किसी की) बात जाना**–प्रतिष्ठा या विश्वास जाना। **बात खोना**–साख बिगाड़ना, वचन का निष्फल कराना। **बात बनना**–कार्य सिद्ध होना, विश्वास रहना, प्रतिष्ठा पाना। चिंता, परवाह, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त। **बात जाना**–इज़्ज़त जाना। **बात बनाना (सँवारना)**–कार्य सिद्ध करना। **बात बनना**–अभीष्ठ प्राप्त होना, काम बनना, इज़्ज़त मिलना, बोलबाला होना, अच्छी दशा होना, आदेश, गुण, योग्यतादि का कथन, उपदेश। रहस्य, प्रशंसा की बात, उक्ति, तात्पर्य, गूढ़ार्थ, चमत्कृत या वैचित्रपूर्ण वचन। **मुहा॰–बात पाना**–गूढ़ार्थ जान जाना। प्रश्न, समस्या, इच्छा, ढंग, विशेषता, अभिप्राय, कथन का सार, मर्म, कर्म, व्यवहार, आचरण, लगाव, कार्य, सम्बन्ध, गुण, चिंता, परवाह, प्रवृत्ति, पदार्थ, लक्षण, स्वभाव, मामला, घटना, विषय, उपाय, कर्तव्य, मूल्य। संज्ञा, पु॰ (दे॰) बात। क्रि॰ वि॰ (हि॰) **क्या बात है (अच्छी बात है)**। यौ॰ **लम्बी चौड़ी बातें**–झूठी शान या गर्व की बातें। **बड़ी बात**–कठिन कार्य, सराहनीय, महान् या आदर्श काम, प्रशंसा, महिमा, महत्ता। **छोटी बात**–तुच्छ या नीच कार्य, निंदित या अनुचित कथन, अपमानजनक आचार-व्यवहार। **साधारण बात**–सरल या मामूली काम। **मु॰ कोई बात नहीं**–कोई चिंता या परवाह नहीं, कोई कठिन काम नहीं। **बात पड़ने पर**–प्रसंग या अवसर आने पर। **बहुत बड़ी बात कहना**–लज्जा या अपमानजनक वाक्य कहना, गूढ़ या गंभीर भावपूर्ण विचारणीय वाक्य कहना। **पते-मार्के की बात**–गूढ़ (रहस्य) या मर्म-वाक्य, उपयुक्त या ठीक कथन, विचारणीय या स्मरणीय वचन। **हल्की या छोटी बात**–छोटी बात, साधारण या स्वल्प कार्य। (विलो॰ **भारी बात**)।

बातें कहना–क्रोध से बकना, बुरा-भला कहना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) वायु, देह के तीन गुणों (वायु, पित्त, कफ में से एक)। **यौ॰ बात रोग**–वायुरोग। **जहरबात**–वायु-विकार-जन्य एक रोग (वैद्य॰)। **मु॰ बात बनी होना**–साख, प्रतिष्ठा या मर्यादा का स्थिर रहना, अच्छी दशा होना।

बातचीत–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *बात+चिंतन*) वार्तालाप, परस्पर कथोपकथन। **बाति, बाती**†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बत्ती*) बत्ती, दिया की बत्ती, **बर्ती** (सं॰)। यौ॰ **बाती-मिलाई**–ब्याह में दीपक की दो बत्तियों को मिलाने की रस्म। **बाती देना (बत्ती लगाना)**–विस्फोटक पदार्थों में बत्ती से अग्नि-संचार करना।

बातुल–वि॰ दे॰ (सं॰ *बातुल*) सनकी, सिड़ी, पागल।

बातूनियाँ-बातूनी–वि॰ दे॰ (हि॰ *बात+ऊनी प्रत्य.*) बकवादी, कक्की, गप्पी, वाचाल, वाचाट।

बाद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाद*) तर्क, विवाद, बहस, झगड़ा, शर्त, बाज़ी, पृथक्, विलग। **मु॰ बाद मेलना**–बाज़ी लगाना। अव्य॰ (अ॰) पश्चात्, पीछे, अनंतर। अव्य॰ दे॰ (सं॰ बाद) निष्प्रयोजन, व्यर्थ, वृथा। वि॰ अलग किया गया, छोड़ा हुआ, दस्तूरी, कमीशन, सिवाय, अतिरिक्त। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) वायु, बात, हवा, पवन। यौ॰ **बाद-सवा**–प्रभात-वायु।

बादना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वाद+ना प्रत्य.*) बोलना; तर्क-वितर्क या बकवाद करना, तकरार करना, शर्त लगाना, अलग करना, ललकारना, हुज्जत करना।

बादवान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पाल।

बादर, बदरा†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वारिद*) **बद्दल** (आ॰) बादल, मेघ। स्त्री॰ **बादरी (बदरी)**। वि॰ (दे॰) प्रसन्न, हर्षित आनन्दित।

बादरायण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेदव्यास।

बादल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वारिद*) मेघ, **बादर–मु॰ बादल उठना या चढ़ना**–बादलों का किसी ओर से घिर आना। **बादल गरजना**–बादलों का टकरा के शब्द करना। **बादल घिरना**–मेघों का चारों ओर से भली-भाँति छा जाना। **बादल छँटना**–आकाश साफ़ हो जाना। **बादला**–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *पतला*) सोने, चाँदी का चिपटा तार, कामदानी का तार, एक रेशमी कपड़ा। पानी की एक विशिष्ट थैली।

बादशाह–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) **पादशाह** (फ़ा) बड़ा राजा, सम्राट स्वतन्त्र शासक, मनमानी करने वाला, शतरंज का एक

मुहरा, ताश का एक पत्ता।

बादशाहत–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) राज्य, शासन, हुकूमत।

बादशाही–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) राज्य, हुकूमत, शासन, स्वतन्त्रता, मनमाना, व्यवहाराचार। वि॰ बादशाह सम्बन्धी।

बादहवाई–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (फ़ा॰ *बाद+हवा अ॰*) फ़जूल, व्यर्थ, निरर्थक, नीं ही।

बादाम–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) बड़े कड़े छिलके और मींगी वाला एक मेवा, उसका वृक्ष। **बदाम** (दे॰)।

बादामी–वि॰ (फ़ा॰ *बादाम+ई प्रत्य॰*) बादाम के छिलके के रंग का आकार का, कुछ लालिमा लिए पीतवर्ण का। संज्ञा, पु॰ एक तरह की छोटी डिब्बी, एक पक्षी, किल-किला, बादाम के रंग का घोड़ा।

बादि–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *वादि*) फ़जूल, नाहक, व्यर्थ।

बादिनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वादिनि*) बोलने वाली, झगड़ालू।

बादी–वि॰ (फ़ा॰) वायु-सम्बन्धी, बात-विकार सम्बन्धी, वायु रोग का पैदा करने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ वात-रोग, वायु-विकार।

बादुर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चमगीदड़।

बाध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अड़चन, रुकावट, बाधा, पीड़ा, मुश्किल, कठिनाई, अर्थ की संगति न होना, व्याघात, वह पक्ष जो साध्य-रहित सा ज्ञात हो (न्याय॰)। †संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बद्ध*) मूँज की रस्सी।

बाधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विप्ल-कारक, विघ्न डालने या बाधा पैदा करने वाला, दुखदायी।

बाधकता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विघ्न, बाधा, रुकावट, अड़चन।

बाधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विघ्न, बाधा या रुकावट डालना, दुख या कष्ट देना। (वि॰ **बाधित, बाध्य, बाधनीय**)।

बाधना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *बाधन*) रोकना, विघ्न या बाधा डालना, दुख देना।

बाधा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रुकावट, विघ्न, रोक, अड़चन, दुख या कष्ट, संकट।

बाधित–वि॰ (सं॰) विघ्न या बाधा-युक्त, रोका हुआ, जिसके साधन में विघ्न या रुकावट पड़ी हो, असंगत, तर्क-विरुद्ध, ग्रसित, गृहीत।

बाध्य–वि॰ (सं॰) रोकने या दबाने के योग्य, जो रोका या दबाया जाने वाला हो, विवश होने वाला, **बाधनीय**।

बान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बाण*) तीर, शर, बाण, एक तरह की अग्नि-क्रीड़ा या आतशबाज़ी, ऊँची लहर। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बनना*) वेश-विन्यास, बनावट, शृंगार, सज-धज स्वभाव, टेंव (आ॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वर्ण*) काँति, आभा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बाण*) बान, हथियार। संज्ञा, पु॰ (दे॰) गोला।

बानक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनाना*) भेस, सजधज, वेश, बननि।

बानगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बयाना*) नमूना।

बानर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वानर*) बंदर। वि॰ **बानरी,** स्त्री॰ **बानरी**।

बानरेन्द्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वानरेन्द्र*) सुग्रीव, **बानरेश**।

बाना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बनाना*) पोशाक, पहनावा, भेष, रूप, चाल, स्वभाव, रीति, वाण। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाण*) भाला या तलवार जैसा सीधा, एक दुधारा हथियार। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वयन–बुनना*) बुनना, बुनाई, बुनावट, कपड़े में ताने के आड़े तागे, **भरनी** (आ॰), पतंग उड़ाने की डोरी। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *व्यापन*) फैलने और किसी सिकुड़ने वाले छेद को फैलाना।

बानि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनना या बनाना*) सजधज, बनावट, स्वभाव, टेंव। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्ण*) आभा, कांति। * संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वाणी*) बोली, वाणी, बात, गिरा, वचन, सरस्वती। यौ॰ **बोली-बानी**।

बानिक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्णक या हि॰ बनना*) बनाव, सिंगार, वेश, सजधज, भेस, बानक।

बानिन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बनियाँ*) बनियों की स्त्री, बनैनी (आ॰)।

बनियाँ-बनिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वणिक्*) व्यापारी, दुकानदार, मोदी।

बानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वाणी*) गिरा, वाणी, वचन, सरस्वती, प्रतिज्ञा, साधु-शिक्षा, जैसे–कबीर की बानी, मनौती, एक अस्त्र, बाण, गोला। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वणिक*) बनियों। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्ण*) चमक, कांति। संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रवर्त्तक, जड़ जमाने वाला, चलाने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **वाणिज्य**।

बानूवा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) जल-पक्षी।

बाप–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बाप–बीज बोने वाला*) पिता, जनक, **बापा, बप्पा, बापू** (दे॰)। **मु॰ बाप-दादा**–पूर्व पुरुष। **मा॰, बाप (बाप-माँ)**–रक्षक, पालक, पोषक, **माई-बाप,** (दे॰)।

बापिका, बापी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बापिका*) बावली।

बापुरा-बापुरो–वि॰ दे॰ (सं॰ *बर्बर–तुच्छ*) अकिंचन, नगण्य, तुच्छ, बेचारा, दीन। स्त्री॰ **बापुरी**।

बापू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाप*) बाप, पिता, बाबू, **बप्पू, बापू, बापा** (दे॰); महात्मा गाँधी (आ॰)।

बाब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अध्याय, परिच्छेद।

बाबत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) विषय में, मध्ये, सम्बन्ध में।

बाबर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **बबर,** बड़ा, शेर, अकबर बादशाह का दादा, **बब्बर** (आ॰)। वि॰ **बाबरी**–बावर-सम्बन्धी, बाबर की।

बाबा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पिता का पिता, पितामह, दादा, बाबा (अ॰) पिता, श्रेष्ठ मनुष्य, बूढ़ा, साधुओं के लिए आदर-सूचक शब्द, सम्बोधन का साधारण शब्द, जैसे–अरे बाबा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ वेबी) बच्चा, लड़का।

बाबी*‡–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बाबा*) संन्यासिनी, साधु स्त्री, छोटी बच्ची, दादी।

बाबुल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाबा*) राजवंशीय या रईस क्षत्रियों का प्रतिष्ठा-सूचक शब्द। किरानी, लिपिकों के लिए भी प्रयुक्त। यौ॰ **राजा-बाबू**–आदर सूचक शब्द, भला मानुष, पिता का संबोधन शब्द, दफ्तर का क्लर्क (मुन्शी) या हाकिम, **बबुआ** (दे॰)। स्त्री॰ **बबुआइन**।

बबूना–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक छोटा पौधा जिसके फूलों से तेल बनता है।

बाभन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ब्राह्मण*) ब्राह्मण, भूमिहार, **बाँभन, बाम्हन** (दे॰)।

बाम–वि॰ दे॰ (सं॰ *बाग*) दाहिने के विरुद्ध, विरुद्ध, प्रतिकूल। संज्ञा, स्त्री॰ **बामता**। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कोठा, अटारी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बामा*) स्त्री॰।

बायँ-बावँ–वि॰ दे॰ (सं॰ *वाम*) बायों, बाम, चूका हुआ, दाँव पर न बैठा हुआ। **मु॰ बायँ देना**–छोड़ देना, बचा जाना, कुछ ध्यान न देना, तरह देना, फेरा लगाना, चक्कर देना।

बाय†*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वायु*) वायु, बाई, **बात** रोग। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बापी*) बाबली, बापिका, बेहर (प्रान्ती॰)।

बायक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाचक*) दूत, धावन, कहने, पढ़ने या बाँचने वाला, बताने वाला। **बायन–बायना***–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वायन*) उत्सवादि पर बंधुवों या मित्रों के यहाँ भेजी गई मिठाई आदि, भेंट, उपहार, सहना, बैना (आ॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *बयाना*) अगाऊ, बयाना। **मु॰ बायन देना**–छेड़छाड़ करना; चुनौती देना।

बायब–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वायव्य*) वायव्य कोण। क्रि॰ वि॰ (दे॰) अलग, दूर, अन्य, दूसरा। क्रि॰ स॰ (दे॰) **बयबियाना**।

बायबिड़ंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विडंग*) एक पेड़ जिसके काली मिर्च से कुछ छोटे फल औषधि के काम आते हैं।

बायबी–वि॰ दे॰ (सं॰ *बायवीय*) बाहरी, अपरिचित, अजनबी, नवागंतुक। वि॰ (दे॰) वायव्यीय, वायव्य कोण का।

बायव्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वायु-कोण, पश्चिम और उत्तर के मध्य का कोण। वि॰ (सं॰) वायु-सम्बन्धी।

बायाँ–बाँवाँ–वि॰ दे॰ (सं॰ *वाम*) दाहिने का विरोधी, वाम, किसी प्राणी की देह का वह पार्श्व जो पूर्वाभिमुख होने पर उत्तर की ओर हो। (स्त्री॰ बाईं)। **मु॰ बायाँ देना**–बचाकर निकल जाना, जान-बूझ कर छोड़ देना। उलटा, विरुद्ध, प्रतिकूल। यो॰ **दाहिना-बायाँ।** संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वामीय*) बाएँ हाथ से बजने वाला तबला।

बाएँ–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *बायाँ*) वाम ओर, विपरीत, विरुद्ध, प्रतिकूल। यौ॰ **दाहिने-बाएँ**।–रामा॰ **मु॰ बाएँ (वाम) होना**–प्रतिकूल या विरुद्ध होना, अप्रसन्न होना।

बारंबार–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *बारंबार*) पुनः पुनः, बार-बार, लगातार, निरंतर।

बार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बार*) ठिकाना, आश्रय, द्वार, दरवाज़ा, दरबार। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰) मरतबा, दफ़ा, विलंब, देरी। **बेर,** समय। **मु॰ बार बार**–फिर फिर। **बार लगाना**–विलंब करना, देरी लगाना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाट*) किनारा, छोर, किसी स्थान के चारों ओर का घेरा, धार, बाढ़। †संज्ञा, पु॰ (दे॰) बाल। संज्ञा, पु॰ दे॰

(सं. *वाल*) लड़का, स्त्री.। यौ. **बालबच्चा**। संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *मि. सं. भार*) वोझ, भार। वि. (दे.) वाला, बाल।

बारगह-बारगाह–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा.*बारगाह*) ड्योढ़ी, द्वार, तंवू, डेरा, खेमा।

बारजा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बार=द्वार*) द्वारा पर का कोठा, अटारी, द्वार के ऊपर बढ़ाया हुआ पाट कर बना बरामदा, कमरे के आगे छोटा दालान।

बारतिय, बारतिया*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बारस्त्री*) वेश्या, रंडी, पतुरिया, बारवधू।

बारदाना–संज्ञा, पु. (फ़ा.) व्यापार के पदार्थों के रखने के पात्र, सेना के खाने-पीने की सामग्री, रसद, राशन (अ.)।

बारना–क्रि. अ. दे. (सं. *वारण*) रोकना, निषेध या मना करना, निवारण करना। क्रि. स. दे. (हि. *बरना*) जलाना, बालना। क्रि. स. दे. (सं. *बारन*) निछावर करना।

बारनारी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *बार-नारी*) वेश्या, रंडी, पतुरिया।

बारवधू, बारबधूटी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *वार वधू*) वेश्या, रंडी।

बार-बरदारी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सामान ढोने का काम या मज़दूरी।

बारमुखी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बार मुख्या*) रंडी, पतुरिया, वेश्या।

बारह–वि. दे. (सं. *द्वादश*) बारा (आ.) दो अधिक दश, द्वादश, आभूषण। वि. **बारहवाँ**। **मु. बारहबाट करना या घालना**--नष्ट-भ्रष्ट या छिन्न-भिन्न या इधर-उधर कर देना, तितर-बितर करना। **बारहबाट जाना या होना**–तितिर-बितर होना, फुट फैल होना, नष्ट-भ्रष्ट होना। संज्ञा, पु. बारह की संख्या या अंक (12)।

बारह-खड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *द्वादशाक्षरी*) व्यंजनों में से प्रत्येक के वे बारह रूप जो स्वरों की मात्राओं के योग से बनते हैं।

बारहदरी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बारह+दरी* फा.) वह खुला हुआ कमरा जिसमें तीन तीन द्वार चारों ओर हों।

बारहवान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *द्वादशवर्ण*) बहुत ही बढ़िया एक तरह का सोना।

बारहबाना–वि. दे. (सं. *द्वादश वर्ण*) सूर्य के समान चमकने वाला, वहुत ही बढ़िया सोना, खरा, चोखा, सच्चा, निर्दोष, पक्का, पूर्ण।

बारहबानी–वि. दे. (सं. *द्वादशपूर्ण*) सूर्य का चमकने वाला, चोखा, खरा, सच्चा सोना, निर्दोष, पक्का। संज्ञा, स्त्री. सूर्य की सी दमक।

बारहमासा–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि. वद बिरह-गीत या पक्ष जिसमें प्रत्येक महीने की प्राकृतिक दशा का वर्णन वियोगी द्वारा हो।

बारहमासी–वि. (हि.) बारहों महीने होने वाला, सदा-बहार, सदा फल, सब ऋतुओं में फलने-फूलने वाला।

बारहवाँ-बारहाँ–वि. (हि.) ग्यारहवाँ के बाद वाला।

बारहसिंघा, बारहसिंगा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *बारह+सींग*) एक प्रकार का हिरण, जिसके कई सींग होते हैं।

बारहा–क्रि. वि. (फ़ा.) कई बार, कई मरतबा, बारम्वार, बहुधा, वहुतेरा।

बारहीं–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बारह*) जन्म से बारहवें दिन का पुत्र-जन्मोत्सव, **बरही, बरहौं** (आ.)।

बारा–वि. दे. (सं. *वाल*) बालक, छोटा बच्चा। संज्ञा, पु. दे. लड़का, बालक। संज्ञा, पु. (दे.) बारह। क्रि. वि. (दे.) बेर, विलंब।

बारात–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बरयात्रा*) वर या दूल्हे के साथ उसके बंधु-बांधवों या मित्रों का जुलूस, वर-यात्रा, **बरात** (दे.)। वि. **बाराती, बराती**।

बाराह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बराह*) शूकर।

बारि–संज्ञा, पु. (दे.) पानी, **वारि** (सं.)।

बारिगर*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बारी+गर*) सिकलीगर, हथियारों में धार रखने वाला।

बारिधर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वारिधर*) मेघ, बारिद, वारिध, बादल, एक वर्ण वृत्त (पिं.)।

बारिश–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) बरसात, वर्षा ऋतु, वर्षा, वृष्टि।

बारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *अवार*) तट, किनारा, हाशिया, खेत, बाग़, आदि के चारों ओर की मेंड़, घेरा, बाढ़, बरतन के मुँह का घेरा, औंठ, धार। संज्ञा, स्त्री. दे.

(सं. *बाटी*) क्यारी, बाटिका, फुलवारी, घर, मकान, झरोखा, खिड़की, बंदरगाह। संज्ञा, पु. एक जाति जो दोना-पत्तल बनाती है। संज्ञा, स्त्री. (हि. *बार*) **बेर,** पारी (आ.)। क्रमानुगत अवसर, मौका। **मु. बारी-बारी से**–कल या स्थान से क्रम से, एक के बाद एक। **बारी बाँधना (लगाना)**–क्रमानुसार आगे पीछे प्रत्येक का पृथक्-पृथक् समय नियत कर देना। वि. (दे.) कम उम्र की संज्ञा, स्त्री. (हि. *बार=छोटा*) कन्या, लड़की, बच्ची, नवयौवना। संज्ञा, स्त्री. (दे.) कान की बाली।

बारीक–वि. (फ़ा.) महीन, पतला, सुक्ष्म, जो कठिनता से सोचा-समझा जावे, जिसके बनावट में कला, पटुता तथा दृष्टि सूक्ष्मता प्रगट हो। संज्ञा, स्त्री. **बारीकी।**

बारीकी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) महीनता, सूक्ष्मता, दुर्बलता, खूबी, गुण, विशेषता।

बारुनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वारुणी*) मदिरा, **दारू** (दे.)।

बारूद–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वारूत*) तोप या बंदूक छुड़ाने का मसाला या बुकनी, एक तरह का धान, दारु (प्रान्ती.)। **मु. गोली-बारुद**–लड़ाई का सामान।

बारे–क्रि. वि. (फ़ा.) निदान, अत या आखिर को। संज्ञा, पु. बालक, लड़के, बच्चे।

बारे में–अव्य. दे. (फ़ा. *बारा+में* हि.) विषय या सम्बन्ध में, **प्रसंग में।**

बारोठा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *द्वार*) बरोठा, ब्याह में बर के द्वार पर आने के समय की एक रस्म।

बाल–संज्ञा, पु. (सं.) बालक, लड़का, बच्चा, मूर्ख, नासमझ। स्त्री. **बाला**। यौ.–**बाल-बच्चे, बाल-गोपाल**। संज्ञा, स्त्री. **बाला,** नवयौवना स्त्री। वि. जो छोटा हो, पूरा न बड़ा हो, थोड़ी देर का हुआ या प्रगटा। संज्ञा, पु. (सं.) लोम, केश। **मु. बाल बाँका (टेढ़ा) न होना**–कुछ भी हानि या कष्ट न होना। **बाल न बाँकना**–बाल बाँका न होना। **(किसी काम में) बाल पकाना**–बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना (काम करते करते) बूढ़ा हो जाना। **बाल बाल बचना**–विपत्ति या हानि पहुँचने में थोड़ी ही कसर रहना, साफ या बिलकुल बच जाना। **धूप में बाल सफ़ेद न करना**–बड़ी मेहनत से (किसी) उपलब्धि को प्राप्त करना। संज्ञा, स्त्री. दे. **बाली,** कुछ अनाजों के डंठलों के आगे का खंड जिसमें दाने रहते हैं।

बालक–संज्ञा, पु. (सं.) शिशु, बच्चा, पुत्र, लड़का, अजान, नादान, केश, बाल, हाथी-घोड़े का बच्चा।

बालकता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लड़कपन।

बालकताई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बालकता+ई प्रत्य.*) बाल्यावस्था, नादानी।

बालकपन†–संज्ञा, पु. (सं.*बालक+पन प्रत्य.*) लड़कपन, नादानी।

बालकृष्ण–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बालक कृष्ण, लड़कपन के कृष्ण, **बाल-गोपाल।**

बालखिल्य–संज्ञा, पु. (सं.) अँगूठे के बराबर के ऋषियों का समूह (पूरा.)।

बालखोरा–संज्ञा, पु. (दे.) सिर के बाल झड़ने का रोग, गंजरोग; बाल झाड़ने वाली वस्तु।

बालगोविंद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बाल-कृष्ण।

बालछड़, बालछर–संज्ञा, स्त्री. (दे.) जटामासी औषधि।

बालटी–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *बकेट*) एक हलका डोल।

बालतंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (अं. *बकेट*) एक हलका डोल।

बालतंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कौमार-भृत्य, दायागिरी, संतान-पालन विधि।

बालतोड़, बलतोड़–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *बाल+तोड़ना*) बाल टूटने से हुआ फोड़ा, **बरतोर** (आ.)।

बालधि, बालधी–संज्ञा, पु. (सं.) पूँछ, दुम।

बालना, बारना–क्रि. स. दे. (सं. *ज्वलन*) जलाना। *प्रे. रूप*–**बलवाना।**

बालपन-बालापन–संज्ञा, पु. (सं. *बाल+पन प्रत्य.*) लड़कपन, शिशुपन।

बाल-बच्चे–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *बाल+बच्चा* हि.) लड़के वाले, औलाद।

बालबोध–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) शिशु ज्ञान, देवनागरी लिपि।

बालभोग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रातःकाल का नैवेद्य जो देवताओं या बलराम और कृष्ण की मूर्तियों के आगे रखा जाता है।

बालम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मल्लय*) प्रियतम, प्रेमी, स्वामी, पति।

बालमखीरा–संज्ञा, पु. (हि.) एक तरह का बड़ा खीरा।

बालमीकि–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बाल्मीकि*) आदिकाव्य रामायण के कर्त्ता एक मुनि।

बालमुकुंद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिशु-कृष्ण।

बाललीला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बच्चों का चरित या खेल।

बालवत्स–संज्ञा, पु. (सं.) कबूतर, छोटा बछया, लड़कों पर दयालु।

बालविधु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शुक्र पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।

बालसुख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रातःकाल का सूर्य, **बालरवि**।

बाला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) युवती, 12 या 13 वर्ष से 16 या 17 वर्ष तक की जवान स्त्री, स्त्री, पत्नी, औरत, दो वर्ष की कन्या, पुत्री, 10 महाविद्याओं में से एक महाविद्या, एक वर्णिक छंद (पिं.), हाथ का कड़ा, वलय। वि. (फ़ा.) जो ऊपर हो, ऊँचा। **मु. बोल बाला रहना**–मान-सम्मान सदा अधिक होना। संज्ञा, पु. (हि. *माल*) जो लड़कों के समान हो, सरल, निष्कपट, अज्ञान। यौ. **बाला-भोला**–भोला-भाला, बहुत ही सीधा सादा। त्रि. (फ़ा.) ऊपर का, ऊपरी, आय से अतिरिक्त।

बालाई–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *बाला+ई प्रत्य.*) गर्म दूध का ऊपरी सारांश, मलाई। वि. (फ़ा.) ऊपरी, ऊपर का, वेतन के अलावा।

बालाखाना–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) मकान या कोठे के ऊपर का कमरा या बैठका।

बालापन–संज्ञा, पु. (हि.) बालापन।

बालार्क–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रातःकाल का सूर्य, **बालरवि**।

बालि–संज्ञा, पु. (सं.) सुग्रीव का भाई और अंगद का पिता, किष्किंधा का राजा।

बालिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कन्या, पुत्री, छोटी लड़की।

बालिग–संज्ञा, पु. (अ.) प्राप्तवयस्क, जवान, युवा। (*विलो.* **नाबालिग़**)।

बालिश–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) तकिया। वि. (सं.) अज्ञान, मूर्ख, अबोध, **बालिस** (दे.)।

बालिश्त–संज्ञा, पु. (फ़ा.) बित्ता, बीता; नौ इंच की नाप।

बालिस–वि. दे. (सं. *बालिश*) मूर्ख।

बाली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बालिका*) कान का एक गहना, **बारी** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बाल*) जौ, गेंहूँ आदि की बाल। यौ. **भुट्टा बाली**। संज्ञा, पु. दे. (सं. *बालि*) बालि नामक वानर।

बालुका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बालू, रेत।

बालू, बारू–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बालुका*) पहाड़ों से वह आकर नदियों के तटों पर जमा हुआ पत्थरों का बारीक चूर्ण, रेणुका, वालुका, रेत। **मु. बालू की भीत**–शीघ्र नष्ट होने वाला पदार्थ, अस्थायी वस्तु या कार्य।

बालूदानी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *बालू+दानी* फ़ा.) झँझरीदार डिबिया जिसमें बालू रखते हैं और स्याही सुखाने का कार्य लेते हैं।

बालूसाही–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *बालू+शाही* फ़ा.) एक मिठाई।

बाल्य–संज्ञा, पु. (सं.) बचपन, लड़कपन, बालक होने की अवस्था। वि (सं.) बालक का या लड़कपन का।

बाल्यावस्था–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लड़कपन, 16 या 17 वर्ष तक की अवस्था, **बाल्यकाल**।

बावड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बावली*) बावली।

बावन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *वामन*) छोटे शरीर का मनुष्य, बौना, वामन का अवतार। संज्ञा, पु. दे. (सं. *द्विपंचाशत*) पचास और दो की संख्या, 52। वि. पचास और दो। **मु. बावन तोले पाव रत्ती**–बिलकुल ठीक, सही या दुरुस्त। **बावनवीर**–बड़ा, शूर-वीर या बहादुर, बड़ा चालाक। **लो.**

बावर, बावरा*†–वि. दे. (हि. *बावला*) पागल, सिड़ी, बावला, **बौरा, कउर** (आ.)। संज्ञा, पु. (फ़ा.) विश्वास।

बावरची–संज्ञा, पु. (फ़ा.) रसोइया।

बावरची-खाना–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) भोजनालय, रसोईघर।

बावला–वि. पु. दे. (सं. *वातुल, प्रा. बाउल*) सिड़ी, पागल, मूर्ख, **बौरा** (आ.)। स्त्री. **बाउली**।

बावलापन–संज्ञा, पु. (हि.) सिड़ीपन, झक, पागलपन।

बावली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बाव+ली प्रत्य.*) चौड़े मुँह का

सीढ़ीदार कुआँ, वापिका, वापी।

वाशिंदा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) रहने वाला, निवासी। (ब॰ व॰ **बाशिंदगान**।)

बाष्प–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाष्प*) भाफ, भाप, अश्रु, आँसू, लोहा, **वाक** (आ॰)। यै॰ **बाष्पकण**–अश्रुकण (बिंदु)।

बास–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बास*) निवास, स्थान, रहने की जगह, गंध, महक, एक छंद (पिं॰), कपड़ा, वस्त्र, रहने का भाव। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ वसन) कपड़ा, छोटा वस्त्र। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वाशि*ः) अग्नि, आग, एक हथियार, पैने चाकू, छुरी आदि छोटे अस्त्र जो तोपों के द्वारा फेंके जाते हैं।

बासन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बरतन-भाँड़ा, वस्त्र, कपड़ा। यौ॰ **भँड़वा-बासन**।

बासना–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वासना*) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ। क्रि॰ स॰ (दे॰) सुगंधित या सुवासित करना, महकाना, वास देना। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *वास*) गंध, महकवू।

बासमती–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बास–महक+मती प्रत्य*) एक सुगंधित धान या चावल।

बासर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बाखर*) दिन, सवेरा, प्रातःकाल, सवेरे का राग। यौ॰ **निसि-बासर**।

बासव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इन्द्र।

बासा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बास*) वह स्थान जहाँ पकी रसोई बिकती हो। संज्ञा, पु॰ निवास, वास, कई दिन का रखा पदार्थ (भोजन)।

बासिग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*बासुकी*) वासुकी नाग।

बासी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वासिन्*) निवासी, रहने वाला। वि॰ दे॰ (सं॰ *वास–गंब*) देर का रखा भोजन का पदार्थ, जिसमें, महक आने लगे, बहुत दिनों का बना पदार्थ, सूखा या कुम्हलाया हुआ। **मु॰ बासी कढ़ी में उबाल आना**–बुढ़ापे में जवानी की तरंग उठना, किसी बात का समय बीत जाने पर उसकी वासना होना।

बासौंधी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बसौंधी*) लच्छेदार रबड़ी।

बाह–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) जोत धारण करना, ले जाना।

बाहक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाहक*) वहन करने या ले जाने वाला, सवार, कहार, पालकी ले चलने वाला कहार।

बाहकी*–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *वाहक+ई प्रत्य॰*) कहारिन, पालकी ले चलने वाली स्त्री।

बाहन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाहन*) सवारी।

बाहना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वहन*) लादना, ढोना, चढ़ा कर ले चलना, हाँकना, पकड़ना, चलाना, फेंकना, धारण करना, प्रवाहित होना, खेत जोतना, लेना।

बाहनी, बाहिनी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वाहिनी*) फौज, सेना, कटक, नदी, सवारी।

बाहम–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) आपस में, परस्पर।

बाहर–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *वाह्य*) किसी निश्चित सीमा से अलग हट कर निकला हुआ। वि॰ **बाहिरी**। **मु॰ बाहर आना या होना**–सम्मुख आना, अलग होना, प्रगट होना। **बाहर करना**–हटाना, दूर करना। **बाहर-बाहर**–अलग या दूर से, बिना किसी को बताए, दूसरे स्थान या नगर में, सम्बन्ध। अधिकार या प्रभाव से, अलग, सिवा, बिना, बगैर। **मु॰ बाहर का**–पराया, बेगाना।

बाहरी–वि॰ (हि॰ *बाहर+ई प्रत्य॰*) बाहर वाला, बाहर का, पराया, ऊपरी, सम्बन्ध से अलग, अपरिचित, जो बाहर से देखने भर को हो, **बाहिरी** (दे॰)।

बाहाँजोरी–क्रि॰ वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *बाँह जोड़ना*) हाथ से हाथ मिलाकर।

बाहीं–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बाहु (सं॰) बाँह (दे॰)।

बाहु–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हाथ, भुजा, **बाहू** (दे॰)।

बाहुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा नल का नाम (अयोध्या-नरेश के सारथी रूप में) नकल।

बाहुत्राण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हाथों के रक्षार्थ दस्ताना (सैनिक)।

बाहुबल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हाथों के बल, शक्ति, पराक्रम। वि॰ **बाहुबली**।

बाहुपाश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हाथों को मिलाकर बनाया गया फंदा।

बाहुमूल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हाथ और कंधे का जोड़, हाथ की जड़।

बाहुयुद्ध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुश्ती, महायुद्ध।

बाहुल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अधिकता, ज़्यादती, बहुतायत, **बहुलता**।

बाहुहजार–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सहस्र वाहु*) राजा सहस्रबाहु।

बाहा–वि. (सं.) बाहरी, बाहर का, बहिरंग। संज्ञा, पु. (सं.) सवारी, यान, भार-वाहिक पशु।

बाहूलीक–संज्ञा, पु. (सं.) काम्पोज के उत्तरीय प्रदेश, बलख का प्राचीन नाम।

बिंग*†–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *व्यंग*) व्यंग।

बिंजन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यंजन*) व्यंजन, भोज्य पदार्थ।

बिंद*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिंदु*) धीर्य या पानी की बूंद, भृजों का मध्य स्थान, बिंदी, मस्तक पर का गोल तिलक।

बिंदा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वृंदा*) एक गोपी का नाम, तुलसी। संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिंदु*) मस्तक का बड़ा और गोल टीका, **बेंदा, बुंदा** (दे.)।

बिंदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बिंदु*) बिंदु, शून्य, सिफ़र, मस्तक का गोल छोटा टीका, बेंदी, बिंदुली, टिकुलीं

विंदुका–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिंदु*) बिंदी।

बिंदुली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बिंदु*) टिकुली, बिंदी।

बिंध†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विंध्य*) विंध्याचल पहाड।

बिंधना–क्रि. अ. दे. (सं. *बेधन*) बींधा या छेदा जाना, फँसना।

बिंब–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिम्ब*) छाया, आभास, प्रतिबिंब, प्रतिमूर्ति, कुन्दरू फल, चन्द्र या सूर्य का मंडल, कमंडल, एक छन्द (पिं.)।

बिंबा–संज्ञा, पु. (सं.) कुन्दरू, प्रतिबिंब। यौ. **बिंबा-फल।**

बिंबिसार–संज्ञा, पु. (सं.) पटना नरेश, अजातशत्रु के पिता जो गौतम बुद्ध के समकालीन थे (इति.)

बिआज–संज्ञा, पु. (दे.) *ब्याज* (हि.) सूद, बहाना। वि. **बिआजू**।

बिआना–क्रि. स. दे. (हि. *ब्याह*) बच्चा जनना या देना (पशु के लिए) ब्याना। (दे.)।

बिआहुता†–वि. दे. (सं. *विवाहिता*) विवाहिता, ब्याही हुई, विवाह-सम्बन्धी, ब्याह का।

बिक-बिग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृक*) भेंड़िया।

बिकट–वि. दे. (सं. *विकट*) भयंकर, डरावना, कठिन।

बिकना–क्रि. अ. दे. (सं. *विक्रय*) बेचा जाना, विक्रय होना। (स. रूप–**बिकाना,** प्रे. रूप–**बिकवाना**)। **मु. किसी के हाथ बिकना**–किसी का दास या सेवक होना। **बिना मूल्य बिकना**–बिना किसी मूल्य के दास हो जाना।

बिकल†–वि. दे. (सं. *विकल*) बेचैन, अचेत, व्याकुल, घबराया हुआ। संज्ञा, स्त्री. **बिकलता**।

बिकसना–क्रि. अ. दे. (सं. *विकसन*) फूलना, खिलना, प्रसन्न होना। सं. रूप–**बिकसाना, प्रे.** रूप–**बिकसवाना**।

बिकसित–वि. दे. (सं. *विकसन*) फूला या खिला हुआ।

बिकाऊ–वि. दे. (हि. *बिकना+आऊ प्रत्य.*) जो बिकने के हेतु हो, बिकने वाला।

बिकार*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विकार*) बिगाड़, अवगुण, बुराई, खराबी, हानि। संज्ञा, पु. वि. (दे.) विकराल, विकट, भीषण। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **बिकारता**।

बिकारी†–वि. दे. (सं. *विकार*) बदला हुआ, रूपान्तरित, परिवर्तित रूप वाला, हानिकारक, बुरा। संज्ञा, स्त्री. (सं. *विकृति श्रवंक*) एक टेढ़ी पाई जिसे रुपए आदि के लिखने में संख्या के मान या मूल्यादि के सूचनार्थ आगे लगा देते थे, जैसे–

बिकास–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विकास*) प्रस्फुटन, खिलना, फूलना, प्रसार, फैलाव, वृद्धि, उन्नत होना। यौ. **विकासवाद**–एक पशिचमीय वृद्धि सिद्धान्त, आनन्द, हर्ष। वि. **विकास्य, विकासनीय, विकासित**। क्रि. स. (दे.) **बिकासना**।

बिक्री–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विक्रय*) विक्रय, बेचने से मिला धन, बेचने की क्रिया या भाव।

बिखरना, बिखेरना–क्रि. अ. दे. (सं.*विकीर्ण*) छितराना, तितिर-बितर हो जाना, फैल जाना। स. रूप–**बिखराना या बिखरना, बिखेरना,** प्रे. रूप–**बिखरवाना**।

बिगड़ना–क्रि. अ. दे. (सं. *विकृत*) किसी वस्तु के रूप, गुणादि में विकार हो जाना, बुरी दशा को प्राप्त होना, खराब होना, किसी दोष से किसी वस्तु का बनकर ठीक न उतरना, बिकार होना, कुमार्गी, नष्ट या भ्रष्ट होना, नीति के पथ से च्युत होना, अप्रसन्न या नाराज़ होना, विद्रोह करना, विरोध या वैमनस्य होना, स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना, व्यर्थ व्यय होना।

बिगड़ेदिल–संज्ञा, पु. यौ. (हि. बिगड़ना+*दिल* फा.) झगड़ालू, बखेड़िया, कुमार्गी, क्रोधी; उलखर्च; पैसा व्यर्थ लुटाने वाला।

बिगड़ैल–वि. दे. (हि. *बिगाड़ना+ऐल प्रत्य.*) हठी, जिद्दी, क्रोधी, झगड़ालू, कुमार्गी।

बिगर, बिगिरा†–क्रि. वि. (दे.) बगैर (फ़ा.) बिना।

बिगरना–क्रि. अ. (दे.) **बिगड़ना**।

बिगाड़–संज्ञा, पु. दे. (*बिगड़ना*) दोष, खराबी, वैमनस्य, झगड़ा, मनोमालिन्य।

बिगाड़ना–क्रि. स. दे. (सं. *विकार*) किसी चीज़ में दोष या विकार पैदा कर उसे ठीक न होने देना, बुरी दशा या अवस्था में लाना, कुमार्गी करना, बुरा स्वभाव डालना, स्त्री का सतीत्व भ्रष्ट करना, बहकाना, खराब करना, किसी वस्तु के वास्तविक रूप, गुणादि को नष्ट करना, व्यर्थ व्यय करना।

बिगुल*†–संज्ञा, पु. (अं.) अंग्रेज़ी, सैनिकों की एक प्रकार की तुरही; व्यूगुल।

बिगूचन–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विकुंचन या विवेचन*) मनुष्य के किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होने की दशा, अड़चन, कठिनता, असमंजस, हैरानी, दिक्कत, परेशानी, द्विविधा।

बिगूचना–क्रि. अ. दे. (सं. *विकुंचन*) असमंजस या अड़चन में पड़ना, पकड़ा या दबाया जाना, द्विविधा में आना। क्रि. अ. दे. (सं. *विकुंचन*) छोप लेना, धर दबाना, दबोचना।

बिगोई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बिगोना*) भ्रम, भुलावा, छिपाव, दुराब, तंग या दिक करना, नष्ट किया।

बिगोना–क्रि. स. दे. (सं. *विगोपन*) बिगाड़ना या नष्ट-भ्रष्ट करना, दुराना, छिपाना, दिक या तंग करना, बहकाना या भ्रम में डालना, बिताना, सोना।

बिग्गाहा–संज्ञा, पु. दे.(सं. *बिगाया*) आर्य्या छंद का एक भेद, उद्गीति (पिं.)।

बिग्रह–संज्ञा, पु. दे.(सं. *विग्रह*) विभाग करना, यौगिक या सामाजिक पदों को अलग-अलग करना, कलह, झगड़ा, लड़ाई, युद्ध, विरोधियों के पक्ष में फूट या झगड़ा कराना, शरीर, देह। वि. **बिग्रही**।

बिघटना–क्रि. स. दे. (सं. *विघटन*) बिगाड़ना या विनाश करना, तोड़ना, नष्ट करना।

बिघन–संज्ञा, पु. दे.(सं. *विघ्न*) उपद्रव, विघ्न, बाधा, रोक-टोक, उत्पात, मनाही, छेड़छाड़।

बिघनहरन*†–वि. दे. यौ. (सं. *विप्रहरण*) विघ्न-बाधा को मिटाने वाला, **बिघन-बिदारन**। संज्ञा, पु. (दे.) गणेशजी।

बिच*†–क्रि. वि. दे. (सं. *विच्=अलग करना*) किसी वस्तु का मध्यभाग, मध्य, आधो-आध (?) **बीच**। यौ. **बिच-बिच**।

बिचकना–क्रि. अ. (*अनु.*) भड़कना, चौंकना, चिढ़ना, सतर्क होना, भड़कना, मुँह बनाना या टेढ़ा करना। (सं. रूप–**बिचकाना**, प्रे. रूप–**बिचकवाना**।

बिचच्छन*†–वि. दे. (सं. *विचक्षण*) पंडित, चतुर, निपुण, प्रवीण, विद्वान, बुद्धिमान। संज्ञा, स्त्री. **बिचच्छनता**।

बिचरना–क्रि. अ. दे. (सं. *विचलन*) इधर-उधर हटना, हिम्मत हारना, डिगना, हिलना, कहकर इन्कार करना, मुकरना, विचलित होना, तितर-बितर होना, भागना। स. रूप–**बिचलाना**, प्रे. रूप–**बिचलवाना**।

बिचला–वि. दे. (हि. *बीच+ला प्रत्य.*) बीच का, मध्यवाला। स्त्री. **बिचली**।

बिचलित–वि. (दे.) हटा हुआ, घबराया, विकल, व्याकुल।

बिचवान, बिचवानी–संज्ञा, पु. दे.(हि. *बीच+वान*) मध्यस्थ, मध्यवर्ती, बीच-बचाव करने वाला, मिलाने वाला।

बिचार–संज्ञा, पु. (दे.) विचार, भाव, सोच, ध्यान, इरादा।

बिचारना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *विचार+ना प्रत्य.*) सोचना, समझना, और करना, पूछना। सं. रूप–**बिचराना**, प्रे. रूप **बिचरवाना**। वि. **बिचारनीय**।

बिचारमान–वि. (हि. *विचार*) विचारने योग्य, विचार करने वाला।

बिचारवान–वि. (दे.) विचारवान, बुद्धिमान, अग्रसोची, दूरदर्शी।

बिचारा–वि. दे. (फा. *बेचारा*) दुखिया, विवश, बापुरा।

बिचारित–वि. दे. (सं. *विचारित*) सोचा या निश्चय किया हुआ।

बिचारी*†–संज्ञा, पु. (सं. *विचारित*) सोचा या निश्चय किया हुआ।

बिचारी*†–संज्ञा, पु. (सं. *विचारिन्*) विचार करने वाला।

वि॰ स्त्री॰ (हि॰ *बेचारा*) दुखिया।

बिचाल*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विचाल*) अलग करना, अंतर।

बिचाली—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पुआल, सूखी घास, चटाई।

बिचौनिया-बिच्चौनिया—संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ (हि॰ *बीच*) मध्यस्थ, बिचवाई, बिचवानी।

बिच्छित्ति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शृंगार रस के 11 हावों में से एक जिसमें कुछ शृंगार ही से पुरुष के वश में करने का वर्णन हो, वक्रोक्ति, वैचित्य, चमत्कार (काव्य)।

बिच्छी, बिच्छू—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वृश्चिक*) एक विषैले डंक वाला छोटा कीड़ा, एक विषैली घास, **बीछी, बीछू** (आ॰)।

बिच्छेप*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विक्षेप*) फेंकना, चित्त की चंचलता, विघ्न, वाधा, रोक।

बिछना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विस्तरण*) बिछाया जाना, फैलना, पसरना। स॰ रूप—**बिछाना, बिछावना**, प्रे॰ रूप—**बिछवाना**।

बिछलता—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विचलता*) रपट, फिसलाना, **बिछलन** (आ॰)।

बिछलन—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) फिसलन,

बिछलना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰*विचल*) रपटना, फिसलना, डगमगाना, **बिछुलना** (दे॰)। स॰ रूप—**बिछलाना**, प्रे॰ रूप—**बिछलवाना**।

बिछावन†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बिछौना*) बिछौना, बिस्तर। क्रि॰ स॰ (दे॰) **बिछावना**—बिछाना।

बिछिया, बिछुआ†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बिच्छी*) एक करधनी, पैर की अँगुलियों का गहना या छल्ला, एक हथियार, **बछुआ बीछू**, (दे॰) **बिच्छू**।

बिछिप्त, बिच्छिप्त—वि॰ (दे॰) विक्षिप्त (सं॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **बिछिप्ति**।

बिछुड़न, बिछुरन†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बिछुड़ना, बिछुरना*) वियोग, बिछोह।

बिछुड़ना, बिछुरना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विच्छेद*) बिछोह या वियोग होना, जुदाई होना, प्रेमियों का अलग होना।

बिछोड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बिछुड़ना*) विरह, वियोग, बिछोह।

बिछोय, बिछोह, बिछोहा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बिछुड़ना*) वियोग, बिछोह, बिरह। वि॰ **बिछोही**।

बिछौना—संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बिछाना*) बिस्तर, बिछाने का वस्त्र, **बिछावन** (दे॰)।

बिजन*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*उथलन*) पंखा, बेना, बिनयाँ, **बिजना** (आ॰)। वि॰ दे॰ (सं॰ *विजन*) जन-रहित, निर्जन, एकांत, अकेला। भू॰। क्रि॰ स॰ (फ़ा॰ *बिज़न*) भारो, मार, मारिए। **मु॰ विज़न बोलना**—मारने की आज्ञा देना, धावा मारना।

बिजना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यजन*) बेना, पंखा। स्त्री॰ अल्पा॰ **बिजनी, बिजनियाँ**।

बिजय, बिजै—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विजय*) जीत, जय। संज्ञा, पु॰ विष्णु का सेवक या पार्षद।

बिजयसार—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विजयसार*) एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष।

बिजया—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विजया*) भंग—दशमी; दशहरा।

बिजली—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विद्युत्*) **बिजुली** (आ॰) चपला, दामिनी, वातावरण की बिजली से उत्पन्न एक बादल से दूसरे में जाने वाली प्रकाश-रेखा, विद्युत, वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण करने वाली एक शक्ति, जिसमें कभी-कभी ताप और प्रकाश भी हो। **मु॰ बिजली गिरना या पड़ना**—गाज गिरना, वज्रपात होना या पड़ना, आकाश से भूमि की ओर बिजली का वेग से आना और मार्ग की वस्तुओं को जलाना। **बिजली फड़कना**—बिजली चमकने पर वादलों की रगड़ से बड़े ज़ोर का शब्द या गरज होना। आम की गुठली की गिरी; गले और कान का गहना। वि॰ अति चंचल या तेज़, बहुत चमकने वाला।

बिजान*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *वि+ज्ञान*) अजान, अनजान, बेसमझ, विज्ञान।

बिजायट, बिजायठ—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विजय*) भुज-बंद, कंकन, बाजूबंद, अंगद।

बिजार—संज्ञा, पु॰ (दे॰) बैल, वृषभ, साँड। वि॰ (दे॰) बीजवाला। वि॰ (दे॰) बीमार, **बेजार** (ग्रा॰) संज्ञा, स्त्री॰ (आ॰) **बिजारी-बेजारी**—बीमारी।

बिजारा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) बीज वाला, बीज-युक्त, **बिजार** (दे॰)।

बिजुरी, बीजुरी*†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विद्युत्*) बिजली, दामिनी, विद्युत्।

बिजूका, बिजूखा‡–संज्ञा, पु. दे. पशु-पक्षियों को डराने को खेतों में लकड़ी पर रखी हुई काली हाँड़ी।

बिजोरा–वि. दे. (सं. *वि+जोर* फ़ा.=*बल*) निर्बल, अशक्त।

बिजोहा–संज्ञा, पु. (दे.) विमोह, विज्जूहा, एक वर्णिक छंद (पिं.)।

बिजौरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बीजपूरक*) एक प्रकार का बड़ा तीव्र नींबू।

बिज्जूल*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिज्जुल*) छाल, खाल, त्वचा, छिलका, चमड़ा। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विद्युत्*) बिजली।

बिज्जू, बीजू–संज्ञा, पु. (दे.) बिल्ली-सा एक जंगली जंतु।

बिज्जूहा–संज्ञा, पु. (दे.) बिजोहा, बिमोहा, एक वर्णिक छंद (पिं.)

बिझकना, बिझुकना*–क्रि. अ. दे. (हि. *झौंका*) भड़कना, बिचकना, डरना, तनना, वक्र होना। स. रूप–**बिझकाना, बिझुकाना**। प्रे. रूप–**बिझकवाना**।

बिट–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विट*) वैश्य, धनी, खल, नीच, नायक का कला-निपुण सखा (काव्य, नाट्य.)।

बिटना–क्रि. अ. (दे.) बिथरना, छिटकना, छिटकजाना। स. रूप--**बिटाना,** प्रे. रूप–**बिटवाना**।

बिटप, बिटपी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विटप*) पेड़, वृक्ष।

बिटरना–क्रि. अ. दे. (सं. *विलोड़न*) गंदा होना, घँघोरा जाना। (स. रूप–**बिटारना,** प्रे. रूप–**बिटरवाना**)।

बिटिया, बिटिनियाँ‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बेटी*) बेटी, पुत्री, लड़की, **बिटीवा**।

बिटौरा, भिटौरा–संज्ञा, पु. (दे.) उपलों या कंडों का ढेर, चींटों का भीटा।

बिट्ठल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विष्णु*) विष्णु भगवान, पंढरपुर की विष्णु-मूर्ति (बम्बई), वल्लभाचार्य के शिष्य विट्ठलनाथ।

बिडंब–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विडंब*) आडंबर, ढोंग।

बिडंबना*–क्रि. अ. दे. (सं. *बिडंवन*) स्वरूप बनाना, नक़ल उतारना। संज्ञा, स्त्री. उपहास, निंदा, हँसी दम्भ।

बिड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिट*) वैश्य, नीच, धनी।

बिड़र–वि. दे. (हि. *बिड़रना*) तितर-बितर, अलग-अलग, दूर-दूर, छितराया हुआ। वि. (हि. *बि=बिना+डर*) ढीठ, निडर, निर्भीक, धृष्ठ।

बिड़रना–क्रि. अ. दे. (सं. *बिट्*) इधर-उधर होना, बिचकना (पशुओं का) तितर-बितर या नष्ट होना। स. रूप–**बिड़राना,** प्र. रूप–**बिड़रवाना**।

बिड़ारना–क्रि. स. (हि. *बिड़रना*) डराकर भगाना, बिचकाना, तितर-बितर या नष्ट करना।

बिड़ाल–संज्ञा, पु. (सं.) बिलार, बिल्ली, दुर्गा द्वारा मारा गया बिड़ालाक्ष दैत्य, दोहे का बीसवाँ रूप (पिं.)।

बिड़ौजा–संज्ञा, पु. (सं.) इन्द्र।

बिढ़तो*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बढ़ना*) कमाई, लाभ।

बिढ़वना*†–क्रि. स. दे. (हि. *बढ़ाना*) कमाना, जोड़ना, संचय करना, पैदा करना।

बिढ़ाना*†–क्रि. स. दे. (हि. *बढ़ाना*) कमाना या पैदा करना, जोड़ना, संचय करना।

बित*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वित्त*) शक्ति, द्रव्य, धन, दौलत, आकार, सामर्थ्य।

बितरना*†–क्रि. स. दे. (सं. *वितरण*) बाँटना, **बरताना** (आ.)।

बितवना, बितावना*†–क्रि. स. दे. (सं. *व्यतीत*) बिताना, व्यतीत करना, काटना।

बिताना–क्रि. स. दे. (सं. *व्यतीत*) व्यतीत करना, काटना, गुज़ारना (फ़ा.) प्रे. रूप–**बितवाना**।

बित्त–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वित्त*) धन, सामर्थ्य, औकात, हैसियत।

बित्ता–संज्ञा, पु. (दे.) पूर्णतया फैले हुए पंजे में अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी, चौथाई गज़, **बालिश्त** (फ़ा.) **वीता, बिलस्ता** (प्रान्ती.)।

बियकना–क्रि. स. दे. (हि.*थकना*) हैरान या परेशान होना, थकाना, मोहित या चकित होना। वि. (हि.) **बिथकित**।

बिथा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *व्यथा*) व्यथा, पीड़ा, कष्ट, दुख।

बिथित*–वि. दे. (सं. *व्यथित*) व्यथित, दुखित, पीड़ित।

बिथोरना*–क्रि. स. दे. (हि. *बिथरना*) फाड़ना, पृथक् करना, बिछराना, छितराना।

बिदकना–क्रि. स. दे. (सं. *विदारण*) घायल होना, फटना, चिरना, भड़कना, चिरना, भड़कना, बिचकना। स. रूप–**बिदकाना,** प्रे. रूप–**बिदकवाना**।

बिदर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विदर्भ*) बरार या विदर्भ देश, बीदर, ताँबे और जस्ते से बनी एक उपधातु।

बिदरन*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विदीर्ण*) दरार, दरज, छेद। क्रि. अ. (दे.) **बिदरना**–फटना। वि. चीरने या फाड़ने वाला।

बिदरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विदर्भ*) बिदर, बिदर की धातु का बना चाँदी-सोने के तारों का नक्काशीदार सामान।

बिदा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विदाश्र*) **गवन** (दे.) गमन, रुखसत, गौना, प्रस्थान, प्रयाण, द्विरागमन, जाने की आज्ञा। **मु. बिदा माँगना**–प्रस्थान की आज्ञा लेना। **बिदा देना**–जाने की आज्ञा देना। **बिदा करना (कराना)** बहू-बेटी को भेजना (लिवा लाना)।

बिदाई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बिदा*) बिदा होने की क्रिया का भाव, बिदा होने का हुक्म, वह धन जो बिदा होते समय दिया जाए।

बिदारना–क्रि. स. दे. (सं. *विदारण*) फाड़ना, चीरना, नष्ट या विदीर्ण करना।

बिदाहना–क्रि. स. दे. (सं. *बिदहन*) बोये-जमे खेत को दूर-दूर जोतना।

बिदुराना*†–क्रि. स. दे. (सं. *विदुर=चतुर*) धीरे-धीरे हँसना, मुसकुराना, मुसपयाना।

बिदुरानि, बिदुरानी*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बिदुराना*) मुसक्यान, मुसकुराहट।

बिदुपन–संज्ञा, पु. बहु. दे. (सं. *विदुप*) पंडित या विद्वान लोग।

बिदूपन*†–क्रि. अ. दे. (सं. *विदूषण*) कलंक, दोष या ऐब लगाना, बिगाड़ना।

बिदेश–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विदेश*) परदेश, अन्य देश, **बिदेस**।

बिद्दत–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *बिदश्रत*) बुराई, दोष, खराबी, आपत्ति, अत्याचार, कष्ट, दुर्दशा।

बिधँसना*–क्रि. स. दे. (सं. *विध्वंसन*) नष्ट या विध्वंस करना।

बिध, बिधि–संज्ञा, स्त्री. पु. दे. (**सं.** *विधि*) तरह, प्रकार, भाँति, ब्रह्म। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विधा=लाभ*) आय-व्यय का लेखा, जमा-खर्च का हिस्सा। **मु. बिध मिलाना**–यह देखना कि जमा-खर्च ठीक लिखा है या नहीं; अयक वर= कन्या के ग्रहों का मेल बैठाना) **बिधना, बिधिना** –संज्ञा, पु. दे. (सं. *विधि*) ब्रह्म, विधाता, स्रष्टा, विरंचि। यौ. **विधिनाक्षरी**–भागय-लेख, बुरा लेख (व्यं.)। क्रि. अ. (दे.) बिंधना, छिदना। संज्ञा, स्त्री. **बिधाई**–बेचने की क्रिया।

बिधवा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विधवा*) पति हीना, राँड, बिना स्वामी की।

बिधाँसना*†–क्रि. स. दे. (सं. *बिध्यंसन*) नष्ट या विध्वंस करना।

बिधाई*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विधायक*) विधायक, विधान करने वाला।

बिधाना–क्रि. स. दे. (हि. *बिचना*) **बिधावना** (दे.) छेदवाना। **प्रे.** रूप–**बिधवाना**।

बिधानी*†–संज्ञा, पु. (सं. *विधान*) विधान करने वाला, रचने या बनाने वाला।

बिधि–संज्ञा, स्त्री. पु. दे. (सं. *विधि*) रीति, कायदा, व्यवस्था, नियम, ब्रह्म।

बिधिना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विधिना*) ब्रह्मा, बिधाता, विरंचि।

बिधुर–वि. (सं. *विधुर*) व्याकुल, भयभीत, असमर्थ, दुखित, रंडुआ। स्त्री. **बिधुरा**।

बिन, बिनु*†–अव्य. दे. (हि. *बिना*) बिना।

बिनई*†–संज्ञा, पु. दे. (सं.*विनयी*) विनयी, नम्र, नीतिज्ञ।

बिनउ, बिनव*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विनय*) विनय।

बिनति, बिनती, बिन्ती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विनय*) विनय, निवेदन, प्रार्थना।

बिनना, बीनना–क्रि. स. दे. (सं. *वीक्षण*) चुनना, छाँटना, अलग करना, वस्त्रादि बुनना।

बिनवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बिनावना*) बिनने का काम, बिनने की मज़दूरी, **बिनाई**।

बिनसना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *विनाश*) नाश होना, बरबाद या खराब होना, नष्ट-भ्रष्ट होना, मिट जाना। स. रूप–**बिनसाना, प्रे.** रूप–**बिनसवाना**। क्रि. स. (दे.) नष्ट करना।

बिना–अव्य. दे. (सं. *बिना*) रहित, छोड़, कर, बगैर। **बिना रोये कुछ भी नहीं मिलता। मु. बिना भय प्रीति नहीं**–पराक्रम दिखाए बिना प्रभाव नहीं जमता।

बिनाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बिनना*) बिनवाई, बिनने या चुनने की क्रिया, भाव या मज़दूरी, बुनना क्रिया का

भाव या मज़दूरी।

बिनाती, बिनती†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विनती*) विनय, नम्रता।

बिनावट–संज्ञा, स्त्री. (दे.) बुनावट (हि.)।

बिनासना–क्रि. स. दे. (सं. *विनष्ट*) नाश या बरवाद करना, नष्ट-भ्रष्ट या संहार करना।

बिनि, बिनु*–अव्य. दे. (हि. *बिना*) बिना, बगैर, सिवाय।

बिनूठा*†–वि. (दे.) शुद्ध, पवित्र, अनोखा, **अनूठा** (हि.)।

बिनै*†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) नम्रता, **विनय** (सं.) **बिनय, बिनती**।

बिनौना–क्रि. स. दे. (सं. *विनय*) विनय या बिनती करना, अर्चना, पूजना, ध्यान करना, छाँटना।

बिनौला–संज्ञा, पु. (दे.) **बिनौर** (दे.)। कपास का बीज, **कुकटी** (प्रान्ती.)।

बिपच्छ*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विपक्ष*) बैरी, विरोधी शत्रु। वि. प्रतिकूल, विरुद्ध, विमुख, नाराज़।

बिपच्छी*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विपक्षिन्*) विरोधी पक्ष का, शत्रु।

बिपत, बिपति, बिपद*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विपत्ति*) आपत्ति, क्लेश, आफत, कष्ट, दुख।

बिपता, बिपदा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विपत्ति*) विपत्ति, आफत, आपत्ति, क्लेश, कष्ट, दुख।

बिपर, बिप्र*†–संज्ञा, पु. (दे.) ब्राह्मण, **बिप्र** (सं.)। संज्ञा, स्त्री. **बिप्रता**।

बिपरीत–वि. दे. (सं. *विपरीत*) प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा।

बिपाक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विपाक*) पकना, फल, नतीजा, दुर्गति।

बिपादिका–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विपादिका*) पैरों के फट जाने का रोग, बिमाई, **बिबाई**।

बिफर, बिफल*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विफल*) निष्फल, फल-रहित, व्यर्थ।

बिफरना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *विक्पवन*) विद्रोही या बागी होना, बिगड़ उठना, नारा होना, ढीठ होना।

बिबर–संज्ञा, पु. (दे.) गुफ़ा, छिद्र, गड्ढा, विवर (सं.)।

बिबरन*–वि. दि. (सं. *विवर्ण*) बदरंग, जिसका रंग बिगड़ गया हो, कांति-हीन, गतश्री। संज्ञा, पु. (दे.) व्याख्या, विवेचन, भाग्य, टोका, वृत्तांत, हाल, **विवरण** (सं.)।

बिबस*‡–वि. (दे.) लाचार, मजदूर, पराधीन, परतंव, **विवश** (सं.) **बेबस**। संज्ञा, स्त्री. **विवसता**। क्रि. वि. (दे.) विवश या लाचार होकर।

बिबहार*†–संज्ञा, पु. (दे.) बर्ताव, कार्य, व्यापार, **व्यवहार** (सं.), **ब्यौहार**।

बिबाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विपादिका*) पैर का एक रोग जिसमें तलवों की खाल फट जाती है, बिमाई, बेवाई। लो. "जेहि के पाँव न जाय बिवाई, सो का जानै पीर पराई।"

बिबाक*–वि. दे. (फ़ा. *बेबाक*) चुकता किया या चुकाया हुआ, उद्धार, उरिन (सं. *उऋण*) **बेबाक**।

बिबाह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विवाह*) ब्याह।

बिबाहना–क्रि. अ. दे. (सं. *विवाह*) ब्याह करना, ब्याहना, **बिआहना, बिवाहना** (आ.)।

बिभचार, बिभिचार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यभिचार*) दुष्कर्म, दुराचार, बदचलनी।

बिभचारी, बिभिचारी*–वि. दे. (सं. *व्यभिचारिन्*) कुकर्मी, दुराचारी, बदचलन। स्त्री. **बिभिचारिनी**।

बिभाना–क्रि. अ. दे. (सं. *विभा*) शोभा पाना, चमकना, देख पड़ना।

बिभावरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) तारों वाली रात, **बिभावरी** (सं.)।

बिभु–संज्ञा, पु. (दे.) स्वामी, परमेश्वर, **विभु** (सं.)। वि. सर्वव्यापक, महान्।

बिभौ–संज्ञा, पु. (दे.) ऐश्वर्य, संपत्ति, वैभव, **विभव** (सं.)।

बिमन*†–वि. दे. (सं. *विमनस्*) उदास, सुस्त, दुखी, उन्मन। क्रि. वि. बिना मन के, अनमना होकर। (सं.) स्त्री. **बिमनता**।

बिमाता–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बिमाता*) सौतेली माँ।

बिमान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विमान*) आकाशीय सवारी, वायु-यान, रथ आदि सवारी, अनादर, मान या अभिमान रहित। विमानन सं. एविएशन।

बिमानी*†–वि. दे. (सं. *विमानिन्*) आदर या सत्कार रहित, मान-रहित, निरभिमानी।

बिमोहना–क्रि. अ. दे. (सं. *विमोहन*) लुभाना, मोहना, मोहित करना। क्रि. अ. (दे.) मोहित होना, लुभाना।

बियत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वियत्*) आकाश, नभ, व्योम,

गगन।

बियाज–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्याज*) बहाना, सूद, मिस, व्याज।

बियाधि, बियाध, बियाधा*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *व्याधि*) व्याधि, रोग, कष्ट, **बिधायी** (आ.)।

बियाना†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *ब्यान*) ब्यान, ब्याना, उत्पन्न करना।

बियाना–क्रि. अ. दे. (हि. *ब्याना*) जनना, बच्चा पैदा करना।

बियाबान–संज्ञा, पु. (फ़ा.) जंगल, उजाड़ स्थान, मरुस्थल।

बियारी, बियालू*†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **ब्यालू** (हि.), रात का भोजन, **बिआरी** (आ.)।

बियाल–संज्ञा, पु. (दे.) साँप, शेर, **बियाल**।

बियाह*†–संज्ञा, पु. (दे.) विवाह (सं.), बिआह, ब्याह। वि. **बियाहा,** स्त्री. **बियाही**।

बियाहता‡–वि. स्त्री. दे. (सं. *विवाहता*) जिसके साथ विवाह हुआ हो।

बियोग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वियोग*) बिछोह। वि. **बियोगी,** स्त्री. **बियोगिनी**।

बिरंग–वि. (हि.) कई रंग का, बेरंग का।

बिरकत–वि. दे. (सं. *विरक्त*) विरक्त, योगी, संन्यासी।

बिरख, बिरिख–संज्ञा, पु. (दे.) **बृष** (सं.)।

बिरखभ–संज्ञा, पु. (दे.) बैल, **बृषभ** (सं.)।

बिरचना–क्रि. स. दे. (सं. *विरचन*) बनाना। क्रि. अ. (दे.) मन उचटना।

बिरचुन, बेरचुन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *बदरचूर्ण*) बेर का चूर्ण; (ब्रज.) विच्चन।

बिरछ, बिरछा*†–संज्ञा, पु. (दे.) **वृक्ष** (सं.), पेड़, **बिरिछ** (आ.)।

बिरझना†–क्रि. अ. दे. (सं. *विरुंद्ध*) झगड़ना। **बिरझाना**–मचलना, आग्रह करना, **बिरुझाना, बिरुझना** (आ.)।

बिरत–वि. (दे.) **विरत,** (सं.) वृत, बैरागी, विरक्त। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **विरति,** विरति (सं.)।

बिरनद†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *विरद+ऐत प्रत्य.*) अति विख्यात, शूरवीर योद्धा। वि. प्रसिद्ध, विख्यात, **बिरुदैत** (अ.)।

बिरमना, बिलमना†–क्रि. अ. दे. (सं. *विलंबन*) सुस्ताना, विश्राम या आराम करना, मोहित हो फँस रहना, ठहरना, रुकना। सं. रूप–**बिरमाना, बिरमावना बिरमवाना**।

बिरल, बिरला–वि. दे. (सं. *विरल*) अलग, जुदा, कोई, एक, **इक्का-दुक्का**।

बिरव, बिरवा, बेरवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृक्ष*) पेड़, वृक्ष, चने का फला हुआ पौधा, हो रहा, **बूँट** (प्रान्ती.)।

बिरसता–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बिरसता*) झगड़ा, मनमुटाव, नीरसता। वि. **बिरस**–रस-रहित, नीरस।

बिरसना–क्रि. अ. (दे.) रहना, ठहरना, टिकना, विरस या उदास होना।

बिरह, बिरहा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विरह*) वियोग, विछोह, जुदाई, अहीरों का एक राग या गीत।

बिरहाना–क्रि. अ. दे. (सं. *विरह*) विरह पीड़ित होना।

बिरहनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बिरहिनी*) वियोगिनी, बिछोहिनी, **बिरहिनि** (ब्र.)।

बिरहिया–वि. दे. (सं. *विरहिन्*) वियोगी। वि. स्त्री. वियोगिनी।

बिरही–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विरहिन्*) वियोगी, विछोही।

बिराग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विराग*) विरक्ति, उदासीनता। वि. **बिरागी**।

बिरागना–क्रि. अ. दे. (सं. *विराग*) विरक्त होना।

बिराजना–क्रि. अ. दे. (सं. *विराजन*) बैठना, शोभित होना।

बिरादर–संज्ञा, पु. (फ़ा.) भाई, भ्राता, बंधु बांधव। यौ. **भाई-बिरादर**।

बिरादरी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) भाई-चारा, एक जाति के लोग, जाति।

बिरान, बिराना*–वि. दे. (फ़ा. *बेगाना*) दूसरे, गैर, पराया, अन्य, अपर।

बिराना, बिरावना–क्रि. अ. (दे.) चिढ़ाना, मुँह बनाना।

बिराम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विराम*) विश्राम, देरी, वाक्य की समाप्ति-सूचक चिन्ह।

बिरिख*†–संज्ञा, पु. (दे.) **बृष** (सं.), बैल, दूसरी राशि (ज्यो.) संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृक्ष*) वृक्ष, पेड़।

बिरिछ*†–संज्ञा, पु. (दे.) **वृक्ष** (सं.)।

बिरिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वेला*) समय, वक्त, मौक़ा,

बेरा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वार*) बार, दफ़ा।

बिरी, बोरी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बीड़ी*) पान की बीड़ा, पत्ते में लिपटी तमाखू या बीड़ी।

बिरुझना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विरुद्ध*) झगड़ना, मचलना। स॰ रूप–**बिरुझना**, प्र॰ रूप–**बिरुझवाना**।

बिरुद्ध–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विरद*) प्रशंसा, यश-कीर्तन।

बिरुदैत–वि॰ दे॰ (हि॰ *बिरद+ऐत प्रत्य॰*) विख्यात, प्रसिद्ध। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *विरदैत*) प्रतिज्ञावाला, नामी वीर।

बिरुधाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वृद्धता*) बुढ़ापा, बुढ़ाई, **बिरधापन**।

बिरूप–वि॰ दे॰ (सं॰ *विरूप*) कुरूप, बदला रूप, बिलकुल भिन्न। संज्ञा, स्त्री॰ **बिरूपता**।

बिरोज़ा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चीड़ के पेड़ का गोंद, गंधाबिरोजा।

बिरोधना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विरोध*) बैर या विरोध करना, द्वेष करना।

बिलंद–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *बुलंद*) ऊँचा, कड़ा, बिफलीभूत (व्यंग्य)।

बिलंबना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विलंब*) देर करना, रुकना, ठहरना, **बिलमना**।

बिल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बिल*) बन के जंतुओं का खोद कर बनाया हुआ गढ़े सा रहने का स्थान, माँद, विवर, छेद, गुफ़ा; हिसाब का लेखा (अं॰)।

बिलकुल–क्रि॰ वि॰ (अ॰) संपूर्ण, समस्त, सब का सब, पूरा पूरा, सारा, सब, निपट, निरा, आदि से अन्त तक।

बिलखना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विकल*) फूट-फूट कर ज़ोर से रोना, विलाप करना, दुखी होना, संकुचित होना, **बिलगना**। स॰ रूप–**बिलखाना, बिलखावना**।

बिलग–वि॰ (हि॰ *वि+लगना प्रत्य॰*) पृथक्, अलग। संज्ञा, पु॰ (हि॰) पार्थक्य, द्वेष, बुरा भाव, दुख, रंज। **मु॰ बिलग मानना**–बुरा या माख मानना।

बिलगाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰) पृथक् या अलग होना, दूर होना। क्रि॰ स॰ (दे॰) पृथक् या अलग करना, दूर करना, चुनना, छाँटना।

बिलच्छन–वि॰ (दे॰) अनोखा, अपूर्ण, अद्भुत, **बिलक्षण** (सं॰)।

बिलटी, बिल्टी–संज्ञा, स्त्री॰ (अं॰ *बिलेट*) रेल से माल भेजने की रसीद।

बिलच्छन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बिल*) काली पतली भौंरी जो दीवारों पर बाँबी बनाती है। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) आँख की पलक पर छोटी फुंसी, **गुहाँजनी** (प्रान्ती॰)।

बिलपना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विलाप*) रोना, चिल्लाना, रोना-पीटना, विलाप करना। स॰ रूप–**बिलपाना, प्रे॰** रूप–**बिलपवाना**।

बिलफेल–क्रि॰ वि॰ (अ॰) इस वक़्त, इस समय।

बिलबिलाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) छोटे-छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना, व्याकुल होकर बकना, रोना, चिल्लाना, घबराना।

बिलम, बेलम*†–सज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विलंब*) देरी, विलंब, देर वेर।

बिलमना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विलंब*) देर या विलंब करना, ठहर जाना, रुक रहना, **बिरमना**। स॰ रूप–**बिलमाना,** प्रे॰ रूप–**बिलमावना**।

बिलसना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विलसन*) शोभित होना, अच्छा लगना। स॰ क्रि॰ (दे॰) रूप–**बिलसाना, प्रे॰** रूप–**बिलसवाना**।

बिलहरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बेल*) पान रखने का बाँस की पतली तीलियों का संपुटाकार छोटा डब्बा, **बेलहरा**।

बिला–अव्य॰ (अ॰) बिना, वग़ैर।

बिलाई–संज्ञा, स्त्री दे॰ (हि॰ *बिल्ली*) बिल्ली, **बिलारी,** कुएँ का काँटा, किवाड़ की सिटकिनी, कद्दूकस।

बिलाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *बिलमन*) नाश या नष्ट होना, लोप या अदृश्य होना, मिट जाना। स॰ रूप–**बिलावना,** प्रे॰ रूप–**बिलवाना**।

बिलापना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विलाप*) रोना। **बिलपना**–विलाप करना।

बिलायत, बिलाइत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰*विलायत*) अन्य देश। वि॰ **बिलायती**।

बिलार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बिडाल*) बिल्ली। स्त्री॰ **बिलारी**।

बिलारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बिडाल*) बिल्ली।

बिलावल–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक रागिनी (संगी॰)।

बिलासना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विलसन*) बिलसना, भोगना, उपभोग करना, बरतना।

बिलासिनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विलासिनि*) भोग करने वाली।

बिलासी–वि. (सं. *विलासिन्*) भोगी।

बिलैया‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विडाल*) बिल्ली।

बिलोकना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विलोकन*) देखना, परीक्षा या जाँच करना।

बिलोकनि†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विलोकन*) कटाक्ष, दृष्टिपात, चितवनि।

बिलोचन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विलोचन*) नेत्र, आँख।

बिलोड़ना*–क्रि. स. दे. (सं. *विलोड़न*) दही मथना, अस्त-व्यस्त करना। संज्ञा, पु. **बिलोड़न**। वि. **बिलोड़नीय, बिलोड़ित**।

बिलोन–वि. दे. (सं. *वि+लवण*) लवण-बिना, नीरस, निरुस्वाद, विरस, कुरूप।

बिलोना–क्रि. स. दे. (सं. *विलोड़ना*) दूध या दही मथना, बिगाड़ना, गिराना, ढालना, अस्त-व्यस्त करना।

बिलोरना*–क्रि. स. दे. (सं. *विलोड़ना*) बिलोड़ना, मथना, छिन्न-भिन्न करनां

बिलोलना–क्रि. स. दे. (सं. *विलीलन*) हिलना, बोलना। वि. **बिलोल**–चंचल।

बिलोवना*–क्रि. स. दे. (सं. *विलोडन*) बिलोना, मथना।

बिल्मुक्ता–वि. (अ.) जो घट बढ़ न सके। संज्ञा, पु. सार्वकालिक कर या लगान।

बिल्ला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विडाल*) बिलार, मार्जार, नर बिल्ली। स्त्री.–**बिल्ली**। संज्ञा, पु. (सं. *पटल,* हि. *पल्ला, बल्ला*) एक प्रकार की चपरास, **बैज** (अं.)।

बिल्ली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विडाल,* हि. *विलार*) सिंहादि की जाति का एक छोटा माँसाहारी जंतु, **बिलारी,** सिटकिनी, कद्दूकश। **बिलैया** (दे.)।

बिल्लौर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वैडूर्य्य मि. फ़ा. बिल्लु*) स्फटिक, एक प्रकार का साफ़ सफ़ेद पादर्शक पत्थर, अति स्वच्छ शीशा।

बिल्लौरी–वि. (हि. *बिल्लौर*) बिल्लौर का।

बिवाई, बेवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विपादिका*) पद-रोग विशेष।

बिषया–संज्ञा, स्त्री. (सं. *विषय*) विषय,भोगों की इच्छा।

बिपान, बिखान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विषाण*) सींग।

बिसंच*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विसंचय*) भय, संचय का नाश, बे परवाही, वाधा, कार्य-हानि।

बिसंभर*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विश्वंभर*) परमेश्वर, भगवान। *†वि. दे. (हि. *विसंभार*) बेसँभार, संभार रहित, असावधान, अचेत, बेखबर, अव्यवस्थित।

बिसंभार†–वि. दे. (हि.) बेहोश, अचेत, असावधान।

बिस, बिप–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विष*) ज़हर, गरल।

बिसखपरा, बिसखापड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विषखर्पर*) एक विषैला गोह की जाति का जंतु, एक जंगली बूँटी।

बिसतरना, बिसतारना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विस्तरण*) फैलना, फैलाना, बढ़ना बढ़ाना, विस्तार करना।

बिसद*–वि. दे. (सं. *विशद*) स्वच्छ, साफ़, सफ़ेद, बड़ा, विस्तृत।

बिसन*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यसन*) शौक, स्वभाव, टेंव, व्यसन, लत।

बिसमउ, बिसमय*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विस्मय*) दुख, विपाद, संदेह, आश्चर्य।

बिसमिल–वि. दे. (फ़ा. *बिस्मिल*) घायल।

बिसमिल्ला–क्रि. वाक्य (अ. *विस्मिल्ला*) श्रीगणेश करना, आरंभ करता हूँ–भगवान के नाम से। **मु. बिसमिल्ला करना**– शुरू करना।

बिसयर्क*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विस्मरण*) भूलना, भूल जाना। स. रूप–**बिसराना, बिसरावना**, प्रे. रूप–**बिसरपाना**।

बिसराना–क्रि. स. दे. (सं. *विस्मरण*) भूलना, भुलाना, **बिसरावना**।

बिसराम†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विश्राम*) विश्राम, आराम।

बिसरावना†*–क्रि. स. (दे.) **बिसराना** (हि.) भुलाना, भूलना।

बिसवास*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विश्वास*) प्रतीति, भरोसा।

बिसवासी–वि. दे. (सं. *विश्वासिन्*) जिसका विश्वास हो, विश्वास करने वाला। स्त्री. **बिसवासिनी**। वि. (दे.) (*विलो.* **अबिसवासी**) अविश्वासी, विश्वासघाती।

बिसबिसाना–क्रि. स. (दे.) सड़ना, बज-बजाना।

बिससना*–क्रि. स. दे. (सं. *विश्वसन*) एतवार, प्रतीति या विश्वास करना। क्रि. स. दे. (सं. *विशसन*) घात करना, काटना, मारना, बध करना।

बिसाँयँध, बिसाँइध–वि. दे. (सं. *बसा=चरबी+गंध*) जिसमें

सड़ी मछली की सी दुर्गंध हो। संज्ञा, स्त्री. (दे.) सड़े मांस की सी दुर्गंधि।

बिसाख, बिसाखा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विशाखा*) एक नक्षत्र।

बिसात–संज्ञा, स्त्री. (अ.) वित्त, सामर्थ्य, समाई, औकात, स्थिति, हैसियत, जमा-पूँजी, चौपड़ या शतरंज के खेल का खानेदार वस्त्र।

बिसाती–संज्ञा, पु. (अ.) तरकी, चूड़ी, सुई, तागा, खिलौने आदि को बेचने वाला।

बिसाना–क्रि. अ. दे. (सं. *वश*) वश या वल चलना, काबू चलना, **बसाना** †अ. क्रि. दे. (हि. *विष+ना प्रत्य.*) विष का प्रभाव करना, **बिसताना** (आ.)।

बिसारद*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विशारद*) पूर्ण ज्ञाता, विद्वान, दक्ष, कुशल।

बिसारना–क्रि. स. दे. (सं. विस्मरण) ध्यान न रखना, भुलाना, **बिसराना, बिसरावना** (दे.)।

बिसारा*–वि. दे. (सं. *विषालु*) विषैला, विष-भरा, विषाक्त। स्त्री. **बिसारी**। सा. भू., स. क्रि. दे. (हि. *विसारना*) भुलाया, भुला दिया।

बिसास*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विश्वास*) विश्वास, प्रतीति, भरोसा, एतबार।

बिसाहा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *विसाहना*) मोल की वस्तु, सौदा-पाती, **बिसाहनी**।

बिसिख*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विशिख*) बाण, शर, तीर। यौ. **बिसिखासन**–धनुष।

बिसूरना–क्रि. अ. दे. (सं. *विसूरण=शोक*) मन में दुख मानना, शोक या खेद करना, स्मरण करना। संज्ञा, स्त्री. सोच, चिंता।

बिसेखना†–अ. क्रि. दे. (सं. *विशेष*) विशेष रूप से ब्यौरेवार बयान करना, निश्चय या निर्णय करना, विशेष रूप से जान पड़ना।

बिसेस*–वि. दे. (सं. *विशेष*) अधिक, ज़्यादा, बढ़कर, भेद, अंतर, दोष (आ.)।

बिसेसर*‡–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *विश्वेश्वर*) जगदीश्वर, महादेव जी।

बिस्तर–संज्ञा, पु. (फा. सं. *बिस्तर*) बिछौना, बिछावन, विस्तार, बढ़ाव, **बिसतर** (सं.)।

बिस्तरना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विस्तरण*) फैलना, चारों ओर बढ़ना। संज्ञा, पु. (दे.) **बिस्तरन**। स. क्रि. दे. बढ़ाना, फैलाना, बढ़ाकर कहना।

बिस्तार–संज्ञा, पु. (दे.) (वि. *विस्तार*) फैलाव, बढ़ाव। वि. **बिस्तारित**।

बिस्तारना–क्रि स. दे. (सं. *विस्तरण*) फैलाना, विस्तार करना। संज्ञा, पु. **बिस्तारन**।

बिस्तुइया, बिसतोया†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *विष+तूना–पकना*) गृह-गोधा, छिपकली।

बिस्वा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बीसवाँ*) एक बीघे का बीसवाँ भाग, कान्यकुब्जों की जाति मर्यादा-सूचक एक शब्द, **बिसा** (ग्रा.)। **मु. बीस बिस्वा**–ठीक-ठीक निश्चय, निस्संदेह, **बीसौ बिसे** (ग्रा. ब्र.) संज्ञा, स्त्री. (दे.) **वेश्या** (सं.)।

बिस्वास–संज्ञा, पु. (दे.) (वि. *विश्वास*) प्रीति, एतबार, भरोसा, **बिसास** (ग्रा.)। वि. **बिस्वासी**।

बिहंग, बिहंगम–संज्ञा, पु. (दे.) (सं. *विहंग*) पक्षी, चिड़िया।

बिहंडना–क्रि. अ. दे. (सं. *विघटन, प्रा. विहंडन*) तोड़ना, नष्ट करना, टुकड़े-टुकड़े करना, मार डालना।

बिहँसना–क्रि. अ. दे. (सं. *विहसन*) मुसकुराना, हँसना।

बिहँसाना–क्रि. स. (हि. *विहँसना*) हर्षित या प्रफुल्लित करना, हँसाना।

बिहँसौंहा–वि. दे. (हि. *विहसना*) हँसता हुआ।

बिहग*–संज्ञा, पु. (दे.) (सं. *विहग*) पक्षी।

बिहवल*–वि. दे. (सं. *विहल*) व्याकुल, बेचैन, विकल।

बिहरना–क्रि. अ. दे. (सं. *विहरण*) भ्रमण या यात्रा करना, घूमना, फिरना, सैर करना। संज्ञा, पु. (दे.) **बिहरन**।

बिहराना†*–क्रि. अ. दे. (सं. *विहरण*) फटना।

बिहाग–संज्ञा, पु. (दे.) एक राग (संगी.)।

बिहान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विभात*) सवेरा, कल, अग्रिम दिन, भोर, प्रातःकाल, **भिहान** (ग्रा.)।

बिहाना*–क्रि. अ. दे. (सं. *वि+हा–त्याग*) त्यागना, छोड़ना। पू. का. रूप–**बिहाय, बिहाइ**। क्रि. अ. (दे.) बीतना, व्यतीत होना, गुज़रना।

बिहार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विहार*) आनंद, सैर, क्रीड़ा, केलि; आज का एक भाग (प्रांत)।

बिहारना–क्रि. अ. दे. (सं. *विहरण*) बिहार, केलि या खेल करना, क्रीड़ा करना।

बिहाल–वि. दे. (फा. *बेहाल*) वेचैन, व्याकुल, विकल। यौ. **हाल-बिहाल**–(हाल-बेहाल)।

बिहिश्त–संज्ञा, पु. (फ़ा.) वैकुंठ, स्वर्ग।

बिही–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) अमरूद, बीही, अमरूद से फलों वाला एक वृक्ष। अव्य. (ग्रा. प्रान्ती.)। बिही के पेड़ के फलों के दाने, गाय के हाँकने का शब्द।

बिहीदाना–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) औषधि।

बिहीन, बिहीना, बिहून–वि. दे. (सं. *विहीन*) बिना, रहित, बगैर।

बिहोरना–क्रि. अ. दे. (हि. *विहरना*) अलग होना, बिछुड़ना, लौटाना, फेरना, **बहोरना** (ग्रा.)।

बींधना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विद्ध*) फँसना। क्रि. स. (दे.) फँसाना, छेदना, बेधना, विद्ध करना, **बिंधना**।

बी–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *बीबी*) बीबी, स्त्री, पत्नी, कुलवधू, (प्रान्ती.) बहिन, लड़की।

बीका†–वि. दे. (सं. *वक्र*) टेढ़ा, बाँका। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **बीकाई**।

बीघा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विग्रह*) खेत की 20 बिस्वे की नाप का एक परिमाण (3025 वर्ग गज)।

बीच†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिच=अलग करना*) किसी पदार्थ का मध्य भाग, मध्य, भेद, अंतर, बिलगाव। **मु. बीच करना**–झगड़ा निपटाना या मिटाना, लड़ने वालों को अलग-अलग करना, झगड़े तय करना। यौ. **बीच-बचाव**–झगड़े का निपटारा। **बीच खेत**–खुले मैदान, सबके संमुख। थोड़े-थोड़े अंतर पर। **बीच-बीच में**–थोड़ी-थोड़ी देर में। **बीच में पड़ना**–झगड़ा तय करने को मध्यस्थ होना या पंच बनना, प्रतिभू होना, ज़िम्मेदार बनना। **बीच पड़ना**–अंतर आना। **मु. बीच पारना या डालना**–पार्थक्य या अलगाव करना, भेद डालना, परिवर्तन करना। **बीच रखना**–भेद या दुराव रखना, गैर समझना। **बीच में कूदना**–वृथा हस्तक्षेप करना, व्यर्थ टाँग अड़ाना। **(ईश्वर आदि को) बीच में रख के कहना**–ईश्वरादि की) शपथ या कसम खाना। अवकाश, अवसर, बीच का अंतर, मौक़ा। क्रि. वि. (दे.) अंदर, भीतर, में। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बीचि*) लहर, तरंग–रामा.।

बीचु*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बीच*) भेद, अंतर, दूरी, अवसर, मौक़ा।

बीचोंबीच–क्रि. वि. यौ. (हि. *बीच*) ठीक मध्य में, बिलकुल बीच में।

बीछी*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वृश्चिक*) बिच्छू, **बिच्छी** (ग्रा.)।

बीज–संज्ञा, पु. (सं.) फूल वाले पेड़ों का गर्भादि जिससे पेड़ निकलता है, दाना, **बिया** (ग्रा.), **तुख़्म** (फ़ा.) मूल, जड़, प्रकृति, प्रमुख कारण, हेतु, कारण, वीर्य्य, शुक्र, अव्यक्त संकेत वर्ण या शब्द, अव्यक्त संख्या-सूचक चिन्ह। जैसे–**बीजगणित**। किसी देवता के प्रसन्न करने की शक्ति वाली अव्यक्त ध्वनि या शब्द (तंत्र.)। यौ.**बीजमंत्र**। *संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विद्युत्*) बिजली, दामिनी।

बीजक–संज्ञा, पु. (सं.) सूची, तालिका, फ़ेहरिश्त, माल के दर, मूल्यादि ब्यौरे की सूची, गड़े धन की सूची, कबीर की रचना की तीन संग्रहों में से एक।

बीजगणित–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह गणित विद्या जिसमें अज्ञात राशियों के वर्णों को संख्यासूचक मानकर उनके द्वारा नियत नियमों से निकालते हैं।

बीजत्व–संज्ञा, पु. (सं.) बीच का भाव।

बीजन, बीजना*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यजन*) पंखा, **बेना, बिनवाँ, बिजना** (ग्रा.)।

बीजपुर, बीजपूरक–संज्ञा, पु. (सं.) चकोतरा, विजौरा, नींबू।

बीजबंद–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *बीज+बाँधना*) बरियारी के बीज, खिरैंटी के बीज, **बला** (प्रान्ती.)।

बीजमंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) किसी देवता के प्रसन्न करने की शक्ति वाला मूलमंत्र, गुर, तत्त्व, सारांश।

बीजरी, बीजू, बीजुरी*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विद्युत्*) बिजली, दामिनी।

बीजा–वि. दे. (सं. *द्वितीय*) दूसरा। संज्ञा, पु. दे. (सं. *बीज*) बिया, दाना, बीया, बीज।

बीजाक्षर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बीज मंत्र का प्रथम वर्ण।

बीजी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बीज+ई प्रत्य॰*) मींगी, गिरी, गुठली।

बीजू–वि॰ दे॰ (सं॰ *बीज+ऊ* हि॰ *प्रत्य॰*) जो बीज से उत्पन्न हो, पेड़ आदि। (विलो॰ **कलमी**)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **बिज्जू** (हि॰) बिजली।

बीझ, बीझा*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *विजन*) निर्जन, एकांत, शून्य।

बीट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विट*) चिड़ियों का मल या मैला, विष्ठा।

बीड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वीटक*) पान की गिलौरी, लगा या मसाला सहित लपेटा पान, **बीरा** (दे॰)। **मु॰ बीड़ा उठाना (लेना)**–किसी कार्य के करने का संकल्प करना या भार लेना, उद्यत या तैयार होना।

बीड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वीणा*) सितार जैसा एक बाजा, **बीना** (दे॰)।

बीतना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *व्यतीत*) समय व्यतीत या विगत होना, गुज़रना, घटना, दूर होना, पढ़ना, संघटित होना, चला जाना।

बीता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *बलिश्त*) नौ इंच की चौथाई भाग, बालिश्त, **बित्ता, बिलस्ता** (ग्रा॰)। वि॰ व्यतीत हुआ, गुजरा।

बीथि, बीथी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वीथी*) सड़क, गली, मार्ग रास्ता।

बींधना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विद्ध*) फँसना। क्रि॰ स॰ (दे॰) छेदना, बेधना।

बीन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वीणा*) वीणा, बीना (दे॰), सितार की तरह का एक बाजा।

बीनना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विनयन*) चुनना, उठाना, छाँटना, छोटी चीज़ें अलग करना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) बींधना। क्रि॰ स॰ (दे॰) बुनना।

बीफै–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बृहस्पति*) गुरुवार, वृहस्पति, **बिप्फै** (ग्रा॰)।

बीबी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) (बीवी) कुलीन स्त्री या कुलवधू, पत्नी, बहू; कन्या, बहिन।

बीभत्स–वि॰ (सं॰) काव्य के नौ रसों में से 7 वाँ रस जिसमें मांस, मज्जादि घृणित वस्तुओं का वर्णन हो (काव्य॰)।

बीमा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *बीम–भय*) आर्थिक हानि की ज़िम्मेदारी जो कुद नियत धन लेकर बदले में की जाए, वह पारसल या पत्रादि जिसकी यों ज़िम्मेदारी ली गई हो।

बीमार–वि॰ (फ़ा॰) रोगी, जिसे कोई रोग हो।

बीमारी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) व्याधि, रोग, मर्ज, बखेड़ा, बुरा स्वभाव, झंझट (व्यंग्य॰)।

बीर–वि॰ दे॰ (सं॰ *वीर*) बहादुर, शूर। संज्ञा, स्त्री॰ **बीरता**। संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ *बीर*) भ्राता, भाई। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वीर*) सखी, सहेली, संगिनी। कलाई और कान का एक गहना, तरना, बीरी, चरागाह।

बीरता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वीरता*) बहादुरी, शूरता।

बीर-बहूटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वीर वधूटी*) इन्द्रप्रस्थ, एक लाल बरसाती छोटा कीड़ा।

बीरन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वीर*) भाई, राजा बीरबल, वीर।

बीरा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वीडा*) देव-प्रसाद के रूप में दिया गया फल फूल, पान का बीड़ा। वि॰ (दे॰) वीर।

बीरासन–संज्ञा, पु॰ दे॰ यो॰ (सं॰ *वीरासन*) वीरों के बैठने का ढंग या आसन।

बीरी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बीड़ा*) पान का बीड़ा कान का एक गहना, **तराना**।

बीस–वि॰ दे॰ (सं॰ *विंशति*) जो गिनती में उन्नीस से एक अधिक हो। संज्ञा, पु॰ (दे॰) बीस का अंक या संख्या, 20। **मु॰ बीस बिस्वे (बीसौ बिसे)**–निश्चय, ठीक, संभवतः। श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।

बीसा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बीस नाखून वाला कुत्ता, **बिसहा** (ग्रा॰), वैश्यों की एक जाति।

बीसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बीस*) बीस पदार्थों का समूह, कोड़ी, नाप नापने की नाप, साठ संवत्सरों का एक तिहाई भाग (ज्यो॰)।

बीहड़–वि॰ दे॰ (सं॰ *विकट*) ऊँचा-नीचा जंगल, ऊबड़-खाबड़, विकट, विषम।

बुँदकी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विंदु+की प्रत्य॰*) छोटी गोल बिंदी, छोटा गोल धब्बा या दाग़। वि॰ **बुँदकीदार**।

बुँदा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बिंदु*) बुलाक जैसा कान का एक गहना, **लोलक** (प्रान्ती॰) मस्तक पर की टिकुली।

बुँदिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बूँदी*) छोटी बूँदे, एक मिष्ठान।

बुंदीदार–वि. दे. (हि. *बूँदी+दार फ़ा. प्रत्य.*) जिस पर छोटी-छोटी बिंदिया हों।

बुंदेलखंड–संज्ञा, पु. यौ. (*हि. बुंदेला+खंड*) बाँदा, जालौन, झाँसी का प्रदेश, जहाँ पहले बुंदेलों का राज्य था।

बुंदेलखंडी–वि. दे. (हि. *बुंदेलखंड+ई प्रत्य.*) बुंदेलखंड का, बुंदेलखंड संबंधी। संज्ञा, पु. बुदेलखण्ड का निवासी। संज्ञा स्त्री.--बुंदेलखण्ड का निवासी। संज्ञा, स्त्री.–बुंदेलखण्ड की बोली या भाषा।

बुंदेला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बूंद+एला प्रत्य.*) क्षत्रियों की गहरवार जाति की एक शाखा, बुंदेलखण्ड का निवासी।

बुआ, बुवा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) बाप पिता की बहिन, फूफी, बड़ी बहिन।

बुक–संज्ञा, स्त्री. (अं. *वकरम*) कलफ़ किया हुआ एक बारीक़ कपड़ा।

बुकचा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बुकचा*) गहरी, गुठरी, गुट्ठा, मोट। स्त्री. अल्पा. **बुकछी**।

बुकची–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बुकचा+ई प्रत्य.*) छोटी गठरी या मुटरी, सुई-तागा रखने की दरज़ियों की थैली।

बुकनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि.*बूकुना+ई प्रत्य.*) बारीक, चूर्ण, बुकनू (ग्रा.)।

बुकुन†–संज्ञा, पु. दे. *(हि. बूकना)* पुकनी, चूर्ण, बुकुनू (आ.)।

बुक्का–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बूकना–पीसना*) अभ्रक का चूर्ण।

बुक्की–संज्ञा, स्त्री. (दे.) कंधे पर डालने का कपड़ा।

बुख़ार–संज्ञा, पु. (अ.) भाफ, ज्वर, ताप, शोक, क्रोध, दुःखादि का आवेग, छाते के ऊपर का कपड़ा।

बुज़दिल–वि. (फ़ा.) डरपोक, कायर, भीरु। संज्ञा, स्त्री. **बुजदिली**।

बुजुर्ग–वि. (फ़ा.) बड़ा, बूढ़ा। संज्ञा, पु. बाप-दादा, पुरुषा, पूर्वज, **बुजुरुग** (दे.)।

बुझना–क्रि. अ. (दे.) आग की लपट शान्ति होना, पानी से गर्म पदार्थ का ठंडा होना, गर्म चीज़ पर पानी का छौंका जाना, उत्साहादि मन के वेग का धीमा होना। स. रूप–**बुझाना**, प्रे. रूप–**बुझवाना**।

बुझाई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बुझाना*) बुझाने की क्रिया का भाव।

बुझाना–क्रि. स. (हि.) अग्नि का जलती वस्तु को शान्त या ठंडा करना, तपी हुई वस्तु को पानी से ठंडा करना, आवेग रोकना। **मु. ज़हर से बुझाना**–किसी हथियार की नोक या धार को गरम करके विष जल से बुझाना ताकि उसमें भी विष या जावे, उत्साहादि मनोवेग को शान्त करना, पानी से छौंकना। क्रि. स. (हि. *बुझना का प्रे. रूप*) संतोष देना, समझाना। स. रूप–**बुझावना**, प्रे. रूप–**बुझवाना**।

बुझौवल–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बुझाना*) पहेली, दृष्टकूट।

बुड़बुड़ाना–क्रि. अ. (*अनु.*) मन-ही-मन कुढ़ना, बड़बड़ाना।

बुड़भस–संज्ञा, पु. (ग्रा.) बुढ़ाई की मूर्खता।

बुड्ढा†–वि. दे. (सं. *वृध्द*) वृद्ध, **बूढ़ा**। स्त्री. **बुड्ढी**।

बुढ़वा‡–वि. दे. (सं. *वृध्द*) वृद्ध, बुड्ढा।

बुढ़ाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वृद्धता*) बुढ़ापा।

बुढ़ाना–क्रि. अ. दे. (हि. *बूढ़ा+ना प्रत्य.*) बूढ़ा या वृद्ध होना, वृद्धावस्था को प्राप्त होना।

बुढ़ापा–संज्ञा, पु. (हि. *बूढ़ा+पा प्रत्य.*) वृद्धावस्था, बुढ़ाई, वृद्धता।

बुढ़ौती†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बुढ़ापा*) बुढ़ापा, वृद्धता, वृद्धत्व।

बुत–संज्ञा, पु. (फ़ा. *मि.* सं. *बुद्ध*) पुतला, प्रतिमा, मूर्ति, प्रियतम। वि. मूर्ति के समान शांत और मौन। अव्य. (ग्रा.) अच्छा, भला।

बुतपरस्त–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) मूर्ति-पूजक।

बुताना--क्रि. अ. (दे.) बुझना। क्रि. स. बुझाना।

बुत्ता–संज्ञा, पु. (दे.) छल, धोखा, झाँसा-पट्टी, बहाना, हीला। यौ. **बाख-बुत्ता**।

बुदबुद–संज्ञा, पु. (सं.) बुलबुला, बुल्ला।

बुद्ध–वि. (सं.) जागा हुआ, जागरित, विद्वान, पंडित, ज्ञानी, सचेत। संज्ञा, पु. शक्य वंशीय राजा शुद्धोदन और रानी माया के कुमार गौतम जो युद्धमत के प्रवर्त्तक एक महात्मा हुए (550 पू. ई.)। इनका जन्म कपिलवस्तु के लुंबिनी नगर (नैपाल) तराई की में हुआ था (इति.)

बुद्धि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विवेक-शक्ति, ज्ञान, समझ, उपजाति वृत्त का 14 वाँ भेद, एक छंद, लछमी, छप्पय का 42 वाँ भेद, (पिं.)।

बुद्धिपर–वि॰ (सं॰) समझ से बाहर या दूर, जहाँ बुद्धि न पहुँचे।

बुद्धिमत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) समझदारी, होशियारी, अक्लमन्दी।

बुद्धिमान–वि॰ (सं॰) बहुत होशियार या समझदार, बड़ा अक्लमन्द।

बुद्धिमानी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बुद्धिमत्ता, होशियारी, अक्लमंदी, समझदारी।

बुद्धिवंत–वि॰ (सं॰) बुद्धिमान, समझदार, **बुद्धिवान्** (दे॰)।

बुद्धिहीन–वि॰ यौ॰ (सं॰) मूर्ख, अज्ञानी, बेसमझ, निर्बुद्धि।

बुध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्र-सुत, सूर्य के सब से अधिक समीप रहने वाला एक ग्रह, (ज्यो॰), देवता, पंडित, विद्वान, ज्ञानी, नौग्रहों में से चौथा।

बुधवान्, बुद्धवान*†–वि॰ (सं॰) बुद्धिमान, ज्ञानी, समझदार।

बुधवार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मंगलवार और गुरुवार के बीच का एक दिन, रविवारादि सात दिनों में से चौथा दिन।

बुधि*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बुद्धि*) बुद्धि, अकल, समझ यौ॰ **सुधि-बुधि**।

बुनना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वयन*) बिनना, जुलाहों के सूतों से कपड़ा बनाने की क्रिया, वस्त्र बनाना। **बुनवाना, बुनावना**।

बुनाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बुनना+ई प्रत्य॰*) बुनावट, बुनन, बुनने की मज़दूरी या क्रिया।

बुनावट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बुनना+आवट प्रत्य॰*) बुनाई, बुनन, बुनने का भाव, बुनने में सूतों के मिलाने का ढंग।

बुनियाद–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) नींव, जड़, मूल, वास्तविकता।

बुबुकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) चिल्ला चिल्ला कर रोना, ढाड़ें मारना, सुलग-सुलग कर बलना।

बुबुकारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*अनु॰ बुबुक+आरी प्रत्य॰*) ज़ोर से चिल्लाना, फूट-फूट कर या ढाड़ मारकर रोना।

बुभुक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भूख, क्षुधा।

बुभुक्षित–वि॰ (सं॰) क्षुधित, भूखा।

बुरकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) किसी वस्तु पर चूर्ण आदि छिड़कना, **भुरभुराना**। द्वि॰ रूप–**बुरकाना,** *प्रे॰* रूप–**बुरकवाना**।

बुरक़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमान स्त्रियों का एक कपड़ा जो सिर से पैर तक सारे शरीर को ढाँक लेता है।

बुरा–वि॰ दे॰ (स॰ *विरूप*) खराब, निकृष्ट, मंदा, अधम। **मु॰ बुरा मानना**–द्वेष रखना, जलना, नाराज़ होना। यौ॰ **बुरा-भला-नेकी-बदी**–हानि-लाभ, खोटाखरा, गाली, गलौज। **अच्छा-बुरा**–लानत मलामत, गाली-गलौज।

बुराई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बुरा+ई प्रत्य॰*) दोष, खोटापन, दुर्गुण, ख़राबी, ऐब, गुण, निंदा, नीचता, शिकायत।

बुरादा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) लकड़ी चीरने से निकला चूर्ण, कुनाई (ग्रा॰)।

बुर्ज़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मीनार का ऊपरी भाग, **गरगज** (ग्रा॰) गुंबद, किले आदि की दीवाल पर उठा हुआ गोल या पहलदार खण्ड जिसमें नीचे बैठक हो। स्त्री॰ अल्पा॰ **बुर्जी**।

बुर्द–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) ऊपरी लाभ या आमदनी, होड़, बाजी, शतरंज के खेल में सब मुहरों के मर जाने पर केवल बादशाह के रह जाने की दशा। **मु॰ (मामला) बुर्द होना**–काम बिगड़ना।

बुलंद–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *बुलंद*) बहुत ऊँचा, अति उत्तुंग, भारी। संज्ञा, स्त्री॰ **बुलंदी**।

बुलबुल–संज्ञा, पु॰ (अ॰ फ़ा॰) एक छोटी काली गाने वाली चिड़िया।

बुलबुला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बुदबुद*) पानी का बुल्ला, बुदबुदा, जल का फफोला। क्रि॰ अ॰ (दे॰)। **बुलबुलाना**।

बुलाक–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ (स॰) नाक में पहनने का एक लंबा सा सुराहीदार गहना।

बुलाकी–संज्ञा, पु॰ (स॰ *बुलाक*) घोड़े की एक जाति।

बुलाना, बुलावना (ग्रा॰)–क्रि॰ स॰ (हि॰) न्यौता देना, पुकारना, टेरना, बोलने में प्रवृत्त करना, पास आने को कहना। प्रे॰ रूप–**बुलवाना**।

बुलाया–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बुलाना+आव प्रत्य॰*) न्यौता, निमंत्रण, **बुलौवा** (ग्रा॰)।

बुलाह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बुलबुला*) बुलबुला।

बुहनी, बोहनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पहली बिक्री।

बुहारना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*सं॰* बहुकर+*ना प्रत्य॰*) झाड़ना, झाड़ू लगाना।

बुहारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बुहारना+ई प्रत्य॰*) **सोहनी** (प्रान्ती॰),

बढ़नी, झाड़ू।

बूँद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बिंदु*) बिंदु, जलादि का थोड़ा गोला सा अंश, कतरा, **टोप** (प्रान्ती॰)। **मु॰ बूँदें गिरना या पड़ना**–धीमी-धीमी वर्षा होना। एक प्रकार का वस्त्र, वीर्य।

बूँदा-बाँदी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *बूँद+बाँद अनु॰*) थोड़ी या हलकी वृष्टि।

बूँदी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बूँद+ई प्रत्य॰*) एक प्रकार का मिष्ठान, **बुँदिया** (दे॰)। वर्षा के पानी की बूँद, एक शहर।

बू–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) गंध, वास, महक, दुर्गंधि।

बूआ, बूवा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) फूफी, बाप की बहिन, बड़ी बहन। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बकोटा*) बकोटा, चंगुल।

बूकना–क्रि॰ स॰ (दे॰) किसी वस्तु को बारीक पीसना, चूर्ण बनाना, गढ़-गढ़ कर बातें बनाना।

बूचड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *बुचर*) कसाई।

बूचड़खाना–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *बूचड़+खाना* फ़ा॰) कसाईबाड़ा।

बूचा–वि॰ दे॰ (सं॰ *वुस=विभाग करना*) जिसका कान कटा हो, कनकटा, कुरूपकारी अंग का कटना। स्त्री॰ **बूची**। यौ॰ **नंगा-बूचा**।

बूजना–क्रि॰ स॰ (दे॰) धोखा देना।

बूझ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बुद्धि*) ज्ञान, बुद्धि, समझ, अक्ल, पहेली। यौ॰ **समझबूझ, जानबूझ**। वि॰ **बुझैया**।

बूझन*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बूझ*) ज्ञान, बुद्धि, समझ, अकल, पहेली। वि॰ **बुझवार, बुझवैया**।

बूझना–क्रि॰ स॰ (दे॰ *बूझ=बुद्धि*) समझना, जानना, पूछना, ताड़ना। स॰ रूप–**बुझाना, बुझवाना**।

बूट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विटप,* हि॰ *बूटा*) चने का हरा पौधा या दाना, वृक्ष, पौधा। संज्ञा, पु॰ (अं॰) जूता।

बूटा–संज्ञा, पु॰ दे (सं॰ *विटप*) पौधा, छोटा वृक्ष, वस्त्रों या दीवाल आदि पर बनाने के फलों-फूलों, बेलों और वृक्षों के चिह्न। यौ॰ **बेल-बूटा**। स्त्री॰ अल्पा॰–**बूटी**।

बूटी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बूटा*) जड़ी, वनस्पति, वन-औषधि, भाँग, भंग, वस्त्रादि पर छोटा बूटा, खेलने के ताश की बूँदें या टिपकियाँ। यौ॰ **जड़ी-बूटी, भाँग-बूटी**।

बूड़ना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *बुड़=डूबना*) निमग्न होना, डूबना, लीन या विलीन होना।

बूड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *डूबना*) अति वृष्टि, **बूढ़ा**‡–वि॰ दे॰ (सं॰ *वृद्ध*) बुड्ढा, वृद्ध, बुकरा, डोकरा। संज्ञा, पु॰ (प्रान्ती॰) लाल रंग, बीरबहूटी।

बूढ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वृद्धा*) वृद्धा, बुढ़िया, डुकरिया, **बुड्ढी** (दे॰)।

बूता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वित्त*) बल, सामर्थ्य, पौरुष, शक्ति, **बूत** (ग्रा॰)।

बूरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भूरा*) शक्कर, भूरे रंग की कच्ची चीनी, साफ़ चीनी, चूर्ण।

बूष, बृषभ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वृष*) बैल, दूसरी राशि (ज्यो॰) बुषकेतु; शिवजी।

बृषध्वज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वृषकेतु, वृष ध्वज*) शिवजी, महादेव जी, **बृषकेतु**।

बृहती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भटकटैया, **कटैया,** बनभौंटा, **बरहंडा** (प्रान्ती॰), विश्वावसु गंधर्व की वीणा, उपरना, उत्तरीय वस्त्र, 9 वर्णों का एक वर्ण वृत्त (पिं॰)।

बृहत्, बृहद्–वि॰ (सं॰) विशाल, बहुत ही बड़ा, बलिष्ठ, दृढ़, ऊँचा (स्वरादि)।

बृहदारण्यक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शतपथ ब्राह्मण का एक उपनिषद्।

बृहद्रथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र, राजा शतधन्वा के पुत्र और जरासंध के पिता का नाम (महा॰)।

बृहन्नल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अर्जुन का एक नाम, जब वे अज्ञातवास में विराट के यहाँ स्त्री-वेष में रह कर उत्तरा का नाच-गान सिखाते थे (महा॰)।

बृहन्नला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अर्जुन।

बृहस्पति–संज्ञा, पु॰ (सं॰) देवताओं के गुरुदेव जो अंगिरा के पुत्र और भरद्वाज के पिता हैं (वैदिक), देवगुरु, सौरमण्डल का 5 वाँ ग्रह (ज्यो॰) महाविद्वान।

बेंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भेक*) मेंढ़क।

बेंट, बेंठ–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हथियारों में लगा काठ आदि का दस्ता, मूठ।

बेंड़†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बेड़ा*) चाँड़, टेक।

बेंड़ा†–वि॰ दे॰ (हि॰ *आड़ा*) आड़ा, तिरछा, टेढ़ा, क्लिष्ट, कठिन।

बेंत-बेत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बेतस्*) एक लता। **मु॰ बेंत की**

तरह काँपना–भय से थर-थर काँपना, बहुत डरना। **बेंत-नीति**–भार पड़ने पर झुक जाना और फिर सीधा खड़ा हो जाना।

बेंदा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बिंदु*) टीका, बेंदी, सिर का एक गहना, टिकली, बिंदी।

बेंदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बिंदु*, हि. *बिंदी*) बिंदी, टिकजी, बिन्दु, **दावनी** (प्रान्ती.), **शून्य, सुन्ना** (दे.), **बँदिया** (ग्रा.)।

बे–अव्य. (फा. *वे, मि.* सं. *वि*) बिना, बग़ैर, जैसे–वेजान। (विलो.–**बा**)। अव्य. (हि. *है*) छोटों का संवोधन।

वेअंत*†–क्रि. वि. दे. (हि. *वे+अंत*) सं.) अनंत, असीम।

बेअकल–वि. दे. (फ़ा. *वे+अक्ल* अ. निर्बुद्धि, मूर्ख, बेअकल। संज्ञा, स्त्री. **बेअक़ली, बेअक्ली**।

बेअदब–वि. (फ़ा. *वे+अदब* अ.) जो बड़ों का आदर-सत्कार न करे (विलो. **बाअदब**। संज्ञा, स्त्री. **बेअदवी**।

बेआव–वि. (फ़ा. *वे+आब* अ.) जिसमें चमक न हो, तुच्छ।

वेआवरू–वि. (फ़ा.), वेइज़्ज़त।

बेइज्जत–वि. (फ़ा. *वे+इज़्ज़त* अ.) अप्रतिष्ठित, अपमानित। संज्ञा, स्त्री. **बेइज़्ज़ती**। (विलो. **बाइज़्ज़त**)।

वेईमान–वि. (फ़ा.) अधर्मी, अनाचारी, दली, धोखा देने वाला, अन्यायी। संज्ञा, स्त्री. **बेईमारनी**। (विलो वेइमान)।

बेउज्र–वि. (फ़ा *वे+उज्र* अ.) आज्ञा-पालन में आपत्ति न करने वाला, **बेउजुर** (दे.)।

बेक़दर–वि. (फ़ा) बेइज़्ज़त, अप्रतिष्ठित। संज्ञा, स्त्री. **बेकदरी**।

वेक़रार–वि. (फ़ा.) विकल, बेचैन, व्याकुल, अधीर, बेचैन। संज्ञा, स्त्री. **बेकरारी**। वि. बिना करार या वादा के।

बेकल*†–वि. दे. (सं. *विकल*) व्याकुल, बैचेन, विह्वल, विकल। संज्ञा, स्त्री. **बेकली**।

बेकली–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बेकल+ई. प्रत्य.*) व्याकुलता, बेचैनी, घबराहट।

बेक़सूर–वि. (फ़ा. *बे+कुसूर* अ.) निरपराध, निर्दोष।

बेकहा–वि. (हि.) जो कहना ना माने।

बेकाबू–वि. (फ़ा. *बे+काबू* अ.) वश से बाहर, विवश, मजबूर, लाचार, जो अधिकार या वश में न हो।

बेकाम–वि. (हि.) निकम्मा, जिसे कोई काम न हो, निठल्ला, व्यर्थ, जो काम में न आ सके, निरर्थक, **बेकार, निकाम** (दे.)।

बेक़ायदा–वि. (फ़ा. *वे+क़ायदा* अ.) नियम के विरुद्ध। विलो. **बाकायदा**।

बेकार–वि. (फ़ा.) व्यर्थ, निकम्मा, जिसके कोई काम न हो, निठल्ला, निरर्थक, वेकाम। **निकाम**। संज्ञा, स्त्री. **बेकारी**।

बेक़ुसूर–वि. (फ़ा. *वे+कुसूर* अ.) निरपराध, निर्दोष।

बेखटके–क्रि. वि. दे. (हि. *वे+खटका*) बेधड़क, निश्चिंत, निर्भय, निःसंकोच।

बेख़बर-वि. (फ़ा.) बेसुध, बेहोश, अनजान। संज्ञा, स्त्री. **बेख़बरी**।

बेग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वेग*) गति की तीव्रता, तेज़ी, शीघ्रता, प्रवाह, धारा।

बेगम–संज्ञा, स्त्री. (सं. *वेग का* स्त्री.) रानी, महारानी, राजपत्नी, महिषी।

बेग़रज़–वि. (फ़ा. *वे+गरज* अ.) बेमतलब, बेपरवाह, **बेगरज, बेगरजू** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **बेगरजी**।

वेगवती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जो बड़े बेग से चले, एक वर्णार्द्ध वृत्त (पिं.)। वि. पु. **वेगवान**।

वेगवन्त–वि. (सं.) शाघ्रगामी, **बेगवान**।

बेग़ाना–वि. (फ़ा.), दूसरा, अन्य, पराया। संज्ञा, स्त्री. **बेगानगी**।

बेगार–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) बलात, बिना मज़दूरी दिया गया काम, वेमन का काम। **मु. बेगार टालना (करना)**–कोई कार्य मन लगाए बिना करना। **बेगार भुगतना (भुगताना)** जबरदस्ती दिया गया काम करना। लो. **"बैठे से बेगार भली।"**

बेगारी–संज्ञा, पु. (फ़ा.) बेगार करने वाला पुरुष। क्रि. वि. (दे.) विना गाली के।

बेगि*†–क्रि. वि. दे. (सं. *वेग*) तुरन्त, तत्काल, शीघ्र, जल्दी, झटपट।

बेगुनाह–वि. (फ़ा.) निरपराध, निर्दोष, बेक़सूर। वि. **बेगुनाही**।

बेचना–क्रि. स. दे. (सं. *विक्रम*) विक्रय करना, फरोख़्त करना, मूल्य लेकर देना। क्रि. सं.–**बेचना**, प्रे. रूप–

बेचवाना। **मु॰ बेच खाना**–गँवा देना, खो देना। **बेचारा**–वि॰ (फ़ा॰) उपाय-रहित, उद्यमहीन, दुखिया, गरीब, दीन, असहाय, **बपुरा, बापुरो**। स्त्री॰ **बेचारी**।

बेचू–वि॰ (दे॰) बेचने वाला।

बेचैन–वि॰ (फ़ा॰) विकल, व्याकुल, बेकल। संज्ञा, स्त्री॰ **बेचैनी**।

बेजड़–वि॰ (फ़ा॰ *बे+जड़* हि॰) मूल-रहित, बेबुनियाद, बेअसल।

बेजबान–वि॰ (फ़ा॰) मूक, गूँगा, सरल, सीधा, दीन, असहाय, जो कुछ कह न सके।

बेजा–वि॰ (फ़ा॰) अनुचित, बेमौका, अयोग्य, नामुनासिब, बुरा। विलो॰ **बेजा जा**। यौ॰ **जा बेजा**।

बेजान–वि॰ (फ़ा॰) निर्जीव, मृतक, मुरदा, जिसमें दम न हो, मुरझाया या कुम्हलाया हुआ, निर्बल, निस्साह। क्रि॰ वि॰ (दे॰) बिना जान में।

बेजाब्ता–वि॰ (फ़ा॰ *बे+जाब्ता* अ॰) राजनीति के विरुद्ध, अन्याय, कानून के खिलाफ़, नियम के विरुद्ध; अनायास, स्वतः।

बेजू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नेवला, नकुल।

बेजोड़–वि॰ (फ़ा॰ *बे+जोड़* हि॰) खंडरहित, जिसमें कहीं जोड़ न हो, अद्वितीय, अनुपम, ये मिसाल।

बेझर, बेझरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) गेहूँ, चना और जौ मिला अन्न।

बेटवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बेटा*) बेटा, लड़का, पुत्र, **बेटौना** (ग्रा॰)।

बेटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बहु=बालक*) लड़का, पुत्र, तनय, सुत। स्त्री॰ **बेटी**।

बेटी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बेटा*) लड़की, पुत्री।

बेठन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वेष्टन*) बँधना, बाँधने या लपेटने का वस्त्र।

बेठिकाने–वि॰ (फ़ा॰ *बे+ठिकाना हि॰*) बेपते, स्थानच्युत, व्यर्थ, ऊलजलूल, निरर्थक, बेमौके, बेठौर।

बेड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बाड़*) पेड़ की रक्षा के लिए उसके चारों ओर लगाई गई काँटेदार वस्तु, मेड़ आड़, **बाड़** (प्रान्ती॰)।

बेड़ना, बेंड़ना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वेष्टन*) पेड़ या खेत के चारों ओर रक्षार्थ काँटेदार वस्तु लगाना, पशु को घेर कर हाँकना, किसी घर में बन्द करना, **बेढ़ना, बाँधना**।

बेड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वेटफ़ा*) नदी आदि पार करने को बाँसों या लकड़ियों का ढाँचा, लट्ठों से बना चारों ओर का घेरा, कुछ लोगों का समूह। **मु॰ बेड़ा पार करना या लगाना**–किसी को विपत्ति से निकालना या छुड़ाना, सहायता करना। **बेड़ा बाँधना**–भौंड आदि का तमाशे के लिए एक गिरोह बनाना। कई जहाज़ों या नावों आदि का समूह। वि॰ दे॰ (हि॰ *आड़ा या अनु॰*) **बेंड़ा** (दे॰) आड़ा, तिरछा, कठिन, विकट।

बेड़िन, बेड़िनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) नट जाति की नाचने-गाने वाली स्त्री।

बेड़िया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नटों की एक जाति।

बेड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वलय*) लोहे के कड़े या जंज़ीर जो कैदियों के पैरों में पहनाए जाते हैं जिससे वे भाग न सकें, **निगड़**, बाँस की एक प्रकार की पानी उलीचने की टोकरी।

बेडौल–वि॰ (हि॰ *मि फ़ा॰ बे+डौल–रूप*) भद्दा, बेढंग, कुरूप।

बेढंग, बेढंगा–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *बे+ढंग* हि॰+*आ प्रत्य॰*) बेतरतीब, बुरे ढंग का, भद्दा, कुरूप, भोंड़ा, क्रम-रहित। स्त्री॰ **बेढंगी**। संज्ञा, पु॰ **बेढंगापन**।

बेढ़ई, बेंढ़ई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बेढ़ना*) दाल की पीठी भरी रोटी, कचौड़ी।

बेढ़ना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वेष्टन*) किसी काँटेदार पदार्थ या तार आदि से रक्षार्थ पेड़, बाग़ या खेत आदि को रूधना, घेरना, पशुओं का घेर कर हाँकना। स॰ रूप–**बेढ़ाना**, प्रे॰ रूप–**बेढ़वाना**।

बेढ़ब–वि॰ दे॰ (हि॰ फ़ा॰ *मि॰*) भद्दा, बेढ़ंगा, बुरे ढंग वाला। क्रि॰ वि॰ बेतरह, बुरी तरह से।

बेढ़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बेढ़ना=घेरना*) हाथ का एक तरह का कड़ा, घर के चारों ओर का हाता, बाड़ा, घेरा।

बेणीफूल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *बेणी+फूल* हि॰) सीसफूल, पुष्पाकार, शिरोभूषण।

बेतकल्लुफ़–वि॰ (फ़ा॰ *बे+तकल्लुफ़* अ॰) जो दिखावटी या बनावटी बात न करने या कहने वाला। संज्ञा, (स्त्री॰) **बेतकुल्लफी**। क्रि॰ वि॰ बेखटके, निस्संकोच, बेधड़क, कृत्रिमता-रहित।

बेतमीज़–वि॰ (फ़ा॰ *बे+तमीज़* अ॰) बेहूदा, मूर्ख, अज्ञानी, उजड्ड, बेशऊर, बदतमीज़। संज्ञा, स्त्री॰ **बेतमीज़ी**।

बेतरह–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰ *बे+तरह* अ॰) असाधारण या अनुचित रीति से, अयोग्य रूप या प्रकार से, बुरी तरह। वि॰ बहुत ज़्यादा, अत्यंत अधिक

बेतरतीब–वि॰ क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰ *बे+तरतीब*) क्रम-विरुद्ध, जो सिलसिलेवार न हो, अव्यवस्थित। संज्ञा, स्त्री॰ **बेतरवीबी**।

बेतरीक़ा–वि॰, क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰ *बे+तरीक़ा* अ॰) नियम-विरुद्ध, अनुचित रीति।

बेतहाशा–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰ *बे+तहाशी* अ॰) बड़े वेग से, बड़ी तेज़ी से, अति घबरा कर, बिना समझे-बूझे, बिना सोचे-बिचारे।

बेतादाद–वि॰ (फ़ा॰) अगणित, बहुत।

बेताब–वि॰ (फ़ा॰) व्याकुल, विकल, दुर्बल, अशक्त, कमज़ोर, शिथिल, बेदम। संज्ञा, स्त्री॰ **बेताबी**।

बेतार–वि॰ (फ़ा॰ *बे+तार* हि॰) बिना तार का, तार-रहित (अं॰) वायरलैस। यौ॰ **बेतार का तार**–केवल बिजली की शक्ति से, बिना तार के समाचार भेजने का यंत्र और बेतार से भेजा गया समाचार; टेलीग्राम।

बेताल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बेताल*) द्वारपाल, एक भूतयोनि (पुरा॰), शिव के एक गणाधिप, भूतों के अधिकार को प्राप्त, मृतक, छप्पय छंद का छठा भेद (पिं॰)। वि॰ (दे॰) ताल या लय-रहित (संगी॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैतालिक*) भाड, बंदीजन।

बेतुका–वि॰ (फ़ा॰ *बे+तुका* हि॰) बेमेल, बेढंगा, बेढब, सामजस्य-विहीन, असंगत, अनुपयुक्त। स्त्री॰ **बेतुकी**।

बेतुका छंद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *बेतुका+छंद* सं॰) अमिताक्षर या तुकांत-रहित, आतुकांत या बिना तुक का छंद।

बेद–संज्ञा, पु॰ (दे॰) वेद।

बेदख़ल–वि॰ (फ़ा॰) अधिकार-रहित, अधिकारच्युत, जिसका क़ब्ज़ा या दखल न हो, स्वत्वहीन।

बेदख़ली–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) भूमि या संपत्ति से क़ब्ज़ा हटाया जाना, अनधिकार।

बेदम–वि॰ (फ़ा॰) प्राण-रहित, मृतक, अधमरा, जर्जर, शिथिल, अशक्त, योदा।

बेदमजनूँ–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक पेड़ जिसकी छाल और फल औषधि के काम आते हैं।

बेदमुश्क–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कोमल सुगंधित फूलों का एक पेड़े।

बेदर्द–वि॰ (फ़ा॰) निर्दय, निष्ठुर, निरदई, क्रूर या कठोर हृदय, जो किसी का दर्द या व्यथा न समझे, **बेदरदी** (ग्रा॰)। संज्ञा स्त्री॰ **बेदर्दी**।

बेदसिरा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक मुनि।

बेदाग़–वि॰ (फ़ा॰), साफ, स्वच्छ, शुद्ध, निदोष, निरपराध, निष्कलंक, दाग या धब्बा रहित ; वि॰ **बेदागी**।

बेदाना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बिहीदाना*) बढ़िया काबुली अनार, बिहीदाना के बीज, दारु हलदी, चित्रा औप॰)। वि॰ (फ़ा॰ *बे+दाना–चतुर*) मूर्ख, नादान, बेसमझ।

बेध–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वेध*) छेद, छिद्र, नक्षत्र युक्त एक योग (ज्यो॰)।

बेधड़क–क्रि॰ वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *बे+धड़क* हि॰) संकोच-रहित, बेखटके, निडर, निभ्रय निडर या बेख़ौफ़ होकर, आगा-पीछा किए बिना। वि॰ निडर, बेख़ौफ, निभ्रय, जिसे संकोच या खटका न हो, निर्द्धन्ध, निर्भीक।

बेधना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वेधन*) नोकदार वस्तु से छेदना, भेदना। स॰ रूप–**बेधाना, प्रे॰ रूप–बेधवाना**।

बेधर्म, बेधरम–वि॰ दे॰ (सं॰ विधर्म धर्म्मच्युत, अधर्मी, बेईमान, स्वधर्म-कर्म गिरा हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **बेधर्मी**।

बेधिगा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बेधना*) अंकुश।

बेन, बेनु†- सज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वेणु*) वंशी, मुरली, बाँसुरी, बाँस, बीन, बाजा, सँपेरों की महुवर या तूमड़ी।

बेनसीब–वि॰ (फ़ा॰ *बे+नसीब* अ॰) अभागा, भाग्यहीन, बदकिस्मत। संज्ञा स्त्री॰ **बेनसीबी**।

बेना, बेनवा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वेणु*) बाँस या पंखा, बाँस, उशीर, खस।

बेनिमून, बेनमूना*–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *बे+नमूना*) अप्रतिम, अनुपम, अद्वितीय, वे मिसाल।

बेनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वेणी*) स्त्रियों की चोटी, गंगा, सरस्वती और यमुना का संगम, त्रिवेणी, किवाड़ के पल्ले में हाथी लकड़ी जिसके कारण दूसरा पल्ला नहीं खुलता।

बेनु–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वेणु*) वंशी, बाँस, बाँसुरी, मुरली।

बेपथु–वि. (दे. **बेपथु** (सं.) कंपित।

बेपरद–वि. दे. (फ़ा. *बे+परदा*) नग्न अनावृत, नंगा, ओट-रहित, जिसके परदा न हों **मु. बेपरद करना**–नंगा करना, **बेपर्द**। संज्ञा, स्त्री **बेपर्दगी**।

बेपरवा, बेपरवाह–वि. दे. (फ़ा. *वे+परवाह*) बेफिक्र, जिसे परवाह न हो, अति मौजी, निश्चिंत, उदार, लापरवाह। संज्ञा, स्त्री. **बेपरवाही**।

बेपीर–वि. (फ़ा. *वे+पीर* हि=*पीड़ा*) निष्ठुर, पर-पीड़ा न समझने वाला, निर्दयी, निर्दय, वेरहम, कठोर, क्रूर।

बेपेंदी–वि. दे. (हि. *बे+पेंदा*) पेंदा-रहित। **मु. बेपेंदी का लोटा**–जो किसी के तनिक बहकाने से अपना विचार वदल दे, किसी बात पर दृढ़ न रहने वाला।

बेफ़ायदा–वि. क्रि. वि. (फ़ा.) नाहक, बेमतलव, व्यर्थ, निरर्थक।

बेफ़िक्र–वि. (फ़ा.) बेपरवाह, निश्चिंत। संज्ञा, स्त्री. **बेफ़िक्री**।

बेबस–वि. दे. (सं. *विवश*) लाचार, परवश, मज़वूर, पराधीन। संज्ञा, स्त्री. **बेबसी**।

बेबाक़–वि. (फ़ा.) चुकाया या चुकता किया हुआ, निःशेष किया हुआ। संज्ञा, स्त्री. **बेबाकी**।

बेब्याहा–वि. दे. (फ़ा. *वे+ब्याहा* हि.) कुँवारा, कुँआरा, अविवाहित। स्त्री. बे-व्याही।

बेभाव–क्रि. वि. (फ़ा. *वे+भाव* हि.) वेहद, बिना भाव के।

बेमाता–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विमातृ*) विमाता, सौतेली माता, माता-रहित।

बेमुरब्बत–वि. (फ़ा.) जिसमें मुरब्बत न हो, तोताचश्म। संज्ञा, स्त्री. **बेमुरब्बती**।

बैमौक़ा–वि. (फ़ा.) जो ठीक समय पर न दी जाय। संज्ञा, पु. अवसर का न होना।

बेर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बदरी*) एक कटीला मीठे फल वाला पेड़, बेरी का फल। स्त्री. **बेरी**। संज्ञा, स्त्री. **अबर** (दे. बार, मरतबा, दफ़ा, देरी, विलंब, **बेरी**। यौ. **बेर बेर**-फिर फिर। (विलो. **अबेर**)।

बेरजरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बेर+झड़ी*) झड़बेरी।

बेरहम–वि. (फ़ा.) दया या कृपा-रहित, निर्दय, निष्ठुर। संज्ञा, स्त्री. **बेरहमी**।

बेरा†–संज्ञा, पु., स्त्री. दे. (सं. *बेला*) समय, वक़्त, मौक़ा, सबेरा।

बेरियाँ†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बेर*) वक्त, वेरा, समय।

बेरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बदरी*) बेर का पेड़, बेड़ी। क्रि. वि. (दे.) वार, बेर।

बेरुख़–वि. (फ़ा. बेमुरव्बत, वेशील, नाराज़, विमुख। संज्ञा, स्त्री. **बेरुख़ी, बेरुखाई**।

बेलंब, बिलंब*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *विलंब*) विलंब, देरी, **बेलम** (ग्रा.)

बेल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विल्व*) गोल कड़े बड़े फल वाला एक कँटीला पेड़ और उसके फल, श्रीफल। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वल्ली*) फैलने और सहारे से ऊपर उठकर फैलने वाले कोमल पौधे, लता, वल्ली, लतर। **मु. बेल मँढ़े चढ़ना**–किसी काम को अंत तक ठीक-ठीक पूरा करना या उतारना। वंश, संतति, फीते, वस्त्र या दीवाल आदि पर कढ़े या बने हुए फूल-पत्ते आदि, नाव का डाँढ। संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *बेलचा*) एक तरह की कुदाली, सड़क आदि की निर्धारित, सीमा-सूचक लक़ीर। यौ. **डाक-बेल**। *†संज्ञा, पु. (दे.) केले का फूल। यौ. **बेलपत्र**।

बेलचा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) फावड़ा चलाने वाला मज़दूर, मज़दूरों का मुखिया।

बेलन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वेलन*) दंडाकार गोल-भारी पदार्थ जिसे लुढ़काकर कंकड़ और पत्थर कूटते या समतल करते हैं, रोटी बेलते हैं। बेलने का यंत्र (रोटी), कोल्हू की जाठ, धुनियाँ का रुई धुनकने का हत्था, **बेलना** (दे.), **रोलर** (अं.)।

बेलना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बेलन*) रोटी पूड़ी आदि बेलने का काठ का गोल लंबा यंत्र। क्रि. स. (दे.) रोटी, पूड़ी आदि को चकले पर बेलन से बढ़ा कर गोल ओर पतला करना, चौपट या नष्ट करना। **मु. पापड़ बेलना**–कार्य विगाड़ना। विनोदार्थ पानी के छींटे उड़ाना।

बेलपत्र–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *विल्वपत्र*) शिव-मूर्ति पर चढ़ाने की बेल की पत्ती।

बेलबूटा–संज्ञा, पु. (दे.) फूल-पत्तीदार बेल के चित्र, चित्रकारी या सुई का काम।

बेला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मल्लिका*) चमेली आदि की जाति का एक श्वेत सुगंधित फूलों का पौधा। संज्ञा, पु. (सं.) लहर (प्रान्ती.), कटोरा, समुद्रतट, समय, तेल भरने की चमड़े की छोटी कुल्हिया।

बेलाग–वि. दे. (फ़ा. *बे+लाग=हि. लगावट*) सब प्रकार से अलग, खरा, साफ़।

बेलि–संज्ञा, स्त्री. (दे.) लता।

बेली–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बल*) संगी, प्राथी। संज्ञा, स्त्री. (दे.) बेल, लता। क्रि. वि. (हि. *बेलना*) बेली हुई।

बेलू–संज्ञा, पु. (दे.) लुढ़कन, लुढ़काव।

बेलौ–वि. (दे.) **बेलव** (हि.) उदासीन, निराश, बिना लव या प्रेम के।

बेलौस–वि. (फ़ा.) बेमुरब्बत, सच्चा, स्पष्ट-वक्ता, निष्पक्ष, खरा।

बेवक़ूफ़–वि. (फ़ा.) नासमझ, मूर्ख, **निर्बुद्धि**। संज्ञा, स्त्री. **बेवक़ूफ़ी**।

बेवक्त–क्रि. वि. (फ़ा.) कुसमय, असमय, **नावक़्त, बेवखत** (दे.)।

बेवफ़ा–वि. (फ़ा. *बे+वफा* अ.) दुःशील, बेमुरव्वत, जो मैत्री न निबाहे। संज्ञा, स्त्री. **बेवफ़ाई**।

बेवसाय, ब्यौसाय†–संज्ञा, पु. (दे.) **व्यवसाय** (सं.) पेशा, उद्यम। वि. **बेवसायी**।

बेवहार, ब्यौहार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यवहार*) लेन-देन, ऋण, बर्ताव।

बेवा–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) राँड़, विधवा।

बेशक–क्रि. वि. (फ़ा. *बे+शक* अ.) निस्संदेह, ज़रूर, अवश्य।

बेशकीमती–वि. (फ़ा.) अमूल्य। संज्ञा, स्त्री. वि. **बेशक़ीमती**।

बेशरम–वि. दे. (फ़ा. *बेशर्म*) निर्लज्ज, निलज्ज, बेहया, **बेसरम** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **बेशरमी**।

बेशी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) ज़्यादती, अधिकता। यौ. **कमी-बेशी**।

बेशुमार–वि. (फ़ा.) असंख्य, अगणित।

बेश्म–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वेश्म*) घर, मकान, गृह, मंदिर।

बेसंदर, बैसंधर*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वैश्वानर*) अग्नि, आग।

बेसँभर, बेसँभार*†–वि. दे. (फ़ा. *बे+सँभाल* हि.) **अचेत**, बेहोश, जो निज को सँभाल न सके, जो सँभाला न जा सके।

बेस–अव्य. (दे.) अच्छा। संज्ञा, पु. (दे.) वेष, भेष।

बेसन–संज्ञा, पु. (दे.) चने की दाल का आटा।

बेसनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बेसन*) बेसन की बनी या भरी हुई रोटी या पूड़ी, **बेसनौटी** (ग्रा.)।

बेसनौटी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बेसन*) बेसन की बनी रोटी या पूड़ी।

बेसबरा–वि. दे. (फ़ा. *बे+सब्र अ.)* असंतोषी, अधीर।

बेसर–संज्ञा, पु. (दे.) खच्चर, घोड़ा, नाक की नथ या नथुनी।

बेसरा–वि. दे. (फ़ा. *बे+सरा=घर*) गृह-हीन, आश्रय-हीन, बे घर का। संज्ञा, पु. (दे.) एक पक्षी।

बेसाहना†–क्रि. स. (दे.) मोल लेना, खरीदना, जान-बूझ कर अपने पीछे झगड़ा लगाना।

बेसुध–वि. (हि.) बेख़बर, बेहोश, अचेत, **बेसुधि** (दे.)। सज्ञा, स्त्री. **बेसुधी**।

बेसुर-बेसुरा–वि. (हि. *बे+स्वर* सं.) नियत स्वर से हीन या अलग, बेताल, (संगी.), स्वर-रहित, बे मौक़ा। स्त्री. **बेसुरी**।

बेहंगम–वि. दे. (सं. *विहंगम*) पक्षी, भद्दा, भोंड़ा, बेढंगा, विकट, बेढब।

बेहँसना*‡–क्रि. अ. दे. (हि. *हँसना*) (सं. *विहसन*) बड़े ज़ोर से हँसना, ठट्ठा मार कर हँसना, **बिहँसना** (दे.)।

बेहड़–वि., संज्ञा, पु. दे. (सं. *विकट*) ऊँचा-नीचा वनखंड, विकट, **वीहड़** (दे.)।

बेहतर-बेहतरीन–वि. (फ़ा.) किसी से बढ़कर, बहुत अच्छा, बहुत ही अच्छा। अव्य. स्वीकार-सूचक शब्द, अच्छा।

बेहतरी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) अच्छापन, भलाई।

बेहद–वि. (फ़ा.) असीम, अनंत, अपार, अपरिमित, अधिक, बहुत।

बेहना†–संज्ञा, पु. (दे.) जुलाहों की एक जाति, धुमिया, धुमा।

बेहया–वि. (फ़ा.) बेशरम, निर्लज्ज। संज्ञा, स्त्री. **बेहयाई**।

बेहर–वि. (दे.) अलग, भिन्न, पृथक्, रसोइया (अं.)।

बेहराना–क्रि. अ. (दे.) फटना।

बेहला, बेला–संज्ञा, पु. दे. (अं. *वायोलिन*) सारंगी-जैसा एक अंग्रेज़ी बाज़ा।

बेहाल–वि. (फ़ा. *बे+हाल* अ.) बेचैन, व्याकुल, विकल। संज्ञा, स्त्री. **बेहाली**।

बेहिसाब–क्रि. वि. दे. (फ़ा. *वे+हिसाब* अ.) असंख्य, अनंत, अगणित, बहुत ज्यादा, बेकायदा।

बेहुनर, बेहुनरा–वि. (फ़ा.) अज्ञान, मूर्ख, निर्गुणी, **बेहुनर** (ग्रा.)।

बेहूदा–वि. (फ़ा.) ढीठ, शिष्टता या सभ्यताहीन, अशिष्ट, असभ्य। संज्ञा, स्त्री. **बेहूदगी**।

बेहूदापन-बेहूदापना–संज्ञा, पु. (फ़ा. *बेहूदा+पन* हि. *प्रत्य.*) असभ्यता, अशिक्षता, बेहूदगी।

बेहैफ़–वि. (फ़ा.) निश्चिंत, बेखटके, प्रसन्नता से, वेधड़क, बेफिक्र।

बेहोश–वि. (फ़ा.) अचेत, असावधान, मूर्च्छित, बेसुध। संज्ञा, स्त्री. **बेहोशी**।

बेहोशी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) मूर्च्छा, अचेतनता।

बैंगन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बंगण*) भाँटा; भटा।

बैंगनी, बैंजनी–वि. (हि. *बैगन+ई प्रत्य.*) लाल और नीला मिला रंग, बैंगन के रंग का रंग। संज्ञा, स्त्री. एक प्रकार का नमकीन पकवान।

बैंड़ा–वि. दे. (हि. *बेंड़ा*) आड़ा, बेंड़ा।

बैकुंठ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *बैकुंठ*) विष्णु, स्वर्ग, विष्णु-लोक।

बैखानस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वैखानस*) एक प्रकार के वनवासी तपस्वी।

बैजंती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बैजयंती*) लंबे गुच्छेदार, फूलों का एक पौधा, विष्णु की माला, विजय-माला।

बैजनाथ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वैद्यनाथ*) शिवजी, महादेव जी।

बैजयंती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. बैजयंती) विष्णु की माला, विजयमाल।

बैठक–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बैठना*) बैठने-उठने का व्यायाम, बैठने का स्थान, अथाई, चौपाल, आसन, पीड़ा, चौकी, मूर्ति या खंभे के नीचे की चौकी, आधार, साथ बैठना-उठना, सदस्यों का एकत्रित होना, अधिवेशन, जमावड़ा, मेल, संग, बैठने का ढंग या क्रिया, बैठाई।

बैठका–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बैठक*) लोगों के बैठने का कमरा, बैठक।

बैठकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बैठक+ई प्रत्य.*) उठने-बैठने का व्यायाम, बैठक, आसन, काष्ठ या धातु आदि की दीवट, आधार।

बैठन–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बैठना*) आसन, बैठक, बैठने की क्रिया का भाव, देशा या ढंग।

बैठना–क्रि. अ. दे. (सं. *बेराग*) ठहरगा, स्थित होना, आसन लगाना या जमाना, आसीन होना, चिड़ियों का अंडे देना। स. रूप–**बैठाना,** प्रे. रूप–**बैठवाना। मु. बैठे बैठाए (बिठाए)**–एकाएक, अचानक व्यर्थ में, अकस्मात्, व्यर्थ, निरर्थक, अकारण। **बैठे-बैठे**–बेकार, व्यर्थ में, वे मतलब, अकारण, अकस्मात् अचानक, निष्प्रयोजन। **बैठते-उठते**–सदा, हरदम। किसी समय या स्थान पर ठीक जमना, कैंड़े पर आना, अभीष्ट कार्य या बात होना, प्रभाव पड़ना, उपयुक्त या ठीक होना, किसी उठाए हुए कार्य को छोड़ देना, नीचे धँस जाना। **मु. नाक बैठना**–कंठ-स्वर में अनुनासिकता आना। अभ्यस्त होना, पानी आदि में घुली वस्तु का तल पर जम जाना, डूबना, दबना, पैठना, पचक या धँस जाना, बिगड़ना, कारबार टूट जाना, पड़ता पड़ना, मूल्य या खर्च होना, निशाने पर लगना, ज़मीन में पौधे का गाड़कर लगाया जाना, किसी स्त्री का किसी पुरुष की पत्नी बन जाना, घर में पड़ना। **मु. मन, चित्त या दिल में बैठना**–पसंद आना, प्रभाव पड़ना, याद हो जाना। **गला बैठना**–स्वर बिगड़ना। बे रोज़गार या बेकार रहना।

बैठाना–क्रि. स. (हि. *बैठना*) आसनासीन या उपविष्ट करना, स्थित होने को कहना, नियुक्त या स्थापित करना, हाथ को किसी कार्य को बार-बार कर अभ्यस्त करना, माँजना, ठिकाना, ठीक तरह जमा देना, डुबाना, पचकाना या धँसाना, निशान या लक्ष्य पर जमाना, कारबार को बिगाड़ना या चलता न रहने देना, जलादि में धुली वस्तु को तल पर जमाना, पौधे आदि को पृथ्वी पर गाड़ना या लगाना, किसी स्त्री को पक्षी बनाकर घर में

ठीक करना, उपयुक्त या ठीक करना। जैसे—हिसाब बैठाना। **मु॰ ठीक बैठाना**—अभीष्ट कार्य या बात करना, प्रबंध या व्यवस्था (उचित) करना। **अर्थ बैठाना**—असंगत तथा निरर्थक से प्रतीत होने वाले शब्दों को सार्थक-सा बना देना। राँधना या पकने को आग पर रखना।

बैठारना, बैठालना†*—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बैठाना*) बैठाना, बिठालना।

बैढ़ना†—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *बाढ़ा, बेढ़ा*) बेंढ़ना, बंद करना।

बैत—संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) पद्य, छंद, श्लोक। यौ॰ **बैतबाजी**—अंत्याक्षरी पद्य पाठ।

बैतरनी—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *वैतरणी*) यमलोक की नदी।

बैतरा, बैतला—संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार की सोंट।

बैताल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बेताल*) द्वारपाल, शिवजी के गणधिप, एक भूत-योनि।

बैतालिक—सं॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *बैतालिक*) स्तुति-पाठक।

बैद—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैद्य*) वैद्य, हकीम, डाक्टर। स्त्री॰ **बैदिनी**। संज्ञा, स्त्री॰ **बैदी**—वैद्य का कार्य या पेशा।

बेदक—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैद्यक*) आयुर्वेद, चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक।

बैदकी, बैदगी, बैदी†—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *वैद*) वैद्यविद्या, वैद्य या व्यवसाय, वैद्य का कार्य या काम।

बैदाई, बैदई, बैदी—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बैद*) वैद्य का कार्य।

बैदेही—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वैदेही*) सीताजी, जानकीजी, विदेह-पुत्री।

बैन, बैना*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वचन*) बात, वचन, **बयन** (दे॰)। **मु॰ बैन झाना (कढ़ना)**—मुख से बात निकलना।

बेनतेय—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बैनतेय*) बिनता का पुत्र गरुड़।

बैना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वयन*) विवाहादि उत्सवों पर मित्रों आदि के घर भेजी जाने वाली मिठाइं आदि वस्तु, **बायना, बायन** (दे॰)। *क्रि॰ से॰ दे॰ (सं॰ *वपन*) बोना। *संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वचन*) वचन, बात।

बैमात्र—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैमात्र*) सौतेला भाई।

बेयर*†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वधूवर*) स्त्री।

बेया*‡—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वाय*) वैसर, वै, वया, एक पक्षी।

बैयाना—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मोल लेने वाली वस्तु का भाव तय होने पर कुछ धन पेशगी देना, बयाना।

बैयाला—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वायु+आला*) झरोखा, बयाला।

बैरंग—वि॰ दे॰ (अं॰ *बिअरिंग*) जिसका महसूल पेशगी न दिया गया हो, बिना टिकट का पत्र।

बैर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बैर*) वैमनस्य, विरोध. शत्रुता, द्वेष। **मु॰ बैर काढ़ना या निकालना (भँजाना)**— शत्रुता का वदला लेना। **बैर ठानना**—दुश्मनी करना, शत्रुता या विरोध करना। **बैर मानना**—वैमनस्य का भाव रखना। **बैर पड़ना**—शत्रु होकर दुख देना। **बैर बिसाहना या मोल लेना**—किसी से शत्रुता पैदा करना। **बैर लेना**—बदला लेना, कसर निकालना। †संज्ञा, पु॰ (सं॰ *बदरी*) बेरी का फल, बद्दर (ग्रा॰)।

बैरख—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बैरक*) सेना का झंडा ध्वजा, पताका।

बैरखी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हाथ का एक गहना।

बैराग—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैरागय*) देखी-सुनी वस्तुओं में प्रेम न होना, त्याग, वैराग्य विराग। वि॰ **बैरागी**।

बैरागी—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विरागी*) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद, त्यागी. संन्यासी। स्त्री॰ **बैरागिनी, बैरागिन**।

बैराना—†क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *वायु*) वायु प्रकोप से बिगड़ना।

बैरी—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैरिन्*) शत्रु, दुश्मन, विरोधी। स्त्री॰ **वैरिणी बैरिनी** (दे॰)।

बैल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बलद*) वृषभ, एक पशु जाति, बरद, बरदा, **बरधा,** (ग्रा॰) स्त्री॰ **गाय**।

बैसंदर, बैसंधर*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैश्वानर*) अग्नि, आग।

बैस—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वयस्*) उम्र, आयु, अवस्था, जवानी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) क्षत्रियों की एक जाति।

बैसना*†—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *वेशन*) बैठना, बसना।

बैसर—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *वय*) जुलाहों की कपड़ा बुनने में बाना सुधारने की कंची, बय (ग्रा॰)।

बैसवारा-बैसवाड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *बैस+वारा प्रत्य॰*) अवध का पश्चिमीय प्रांत। वि॰ **बैसवारी बैसवाड़ी**।

बैसाख—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैशाख*) चैत्र के बाद का महीना।

बैसाखी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विसाख*) वह दो शाखा की लाठी जिसे लँगड़े लोग बगल में लगाकर टेकते चलते हैं। वि॰ (दे॰) वैसाख का।

बोआई, बुवाई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *बोना*) बोने की मज़दूरी,

बाने का कार्य।

बोआना–क्रि. स. (दे.) खेत में बीज छिड़कवाना, **बुवाना, बोवाना** (ग्रा.)।

बोआरा–संज्ञा, पु. (दे.) खेल बोने का समय, सुकाल।

बोक†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बकरा*) बकरा।

बोज–संज्ञा, पु. (दे.) घोड़ों का एक भेद।

बोजा–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *बोज*) चावल की मदिरा।

बोझ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भार*) गुरुत्व, भार, भारीपन, बोझा, गठरी, कठिन कार्य या बात, किसी कार्य में होने वाला श्रम, व्यय का कष्ट, गट्ठा, एक आदमी या पशु के लादने योग्य भार, वह जिसका संबंध निबाहना कठिन हो।

बोझल, बोझिल–वि. दे. (हि. *बोझ*) भारी, वज़नी, गुरु, **गरू** (दे.)।

बोझा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बोझ*) भार, वज़न, गट्ठा, पोटरी, गठरी।

बोट–संज्ञा, स्त्री. (दे.) छोटी नाव, ढोंगी, संस्थाओं में प्रतिनिधि भेजने की सम्मति। **बोट** (अं.)।

बोटी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बोटा*) माँस का छोटा सा टुकड़ा। **मु. बोटी-बोटी करना (काटना)**–शरीर को काट कर टुकड़े-टुकड़े कर देना।

बोड़ा–संज्ञा, पु. (दे.) अजगर। संज्ञा, पु. (दे.) लोबिया।

बोड़ी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) दमड़ी, कौड़ी, बहुत थोड़ा धन। संज्ञा, स्त्री. (दे.) बौंड़ी, लता।

बोत–संज्ञा, पु. (दे.) घोड़ों की एक जाति।

बोतल–संज्ञा, स्त्री. दे. (अं. *बाटल*) काँच की बड़ी लम्बी गहरी शीशी।

बोताम–संज्ञा, पु. दे. (अं. *बटन*) बटन, गोदाम, गुदाम, **बुताम** (ग्रा.)।

बोतू–संज्ञा, पु. (दे.) बकरा, छाग।

बोदा–वि. दे. (सं. *अबोध*) गावदी, भोला, मूर्ख, सुस्त, मट्ठर, फुसफुसा। संज्ञा, पु. **बोदापन**। स्त्री. **बोदी**।

बोद्ध–वि. (सं.) व्युत्पन्न, बुद्धिमान, समझदार, चतुर, ज्ञानी।

बोध–संज्ञा, पु. (सं.) ज्ञान, समझ, जानकारी, संतोष, धीरज, धैर्य।

बोधक–संज्ञा, पु. (सं.) समझाने या ज्ञान कराने वाल जताने वाला, संकेत या क्रिया-द्वारा एक दूसरे व मनोगत भाव जताने वाला, शृंगार रस का एक हा (काव्य.)।

बोधगम्य–वि. (सं.) समझ में आने योग्य।

बोधन–संज्ञा, पु. (स.) सूचित करना, जगाना। वि. **बोधनीय बोध्य, बोधित**।

बोधना*†–क्रि. स. दे. (सं. *बोधन*) समझाना, बोध या ज्ञान देना। द्वि. क. रूप–**बोधाना** प्रे. रूप–**बोधवाना**।

बोधितरु, बोधिद्रुम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गया का वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को संबोधि (बुद्धत्व) ज्ञान प्राप्त हुआ था।

बोधिसत्व–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी।

बोना–क्रि. स. दे. (सं. *ववन*) छितराना, बिखराना, खेत या भुरभुरी भूमि में बसने को बौजा डालना।

बोबा†–संज्ञा, पु. (दे.) स्तन, थन, साज-सामान, गट्ठर, अंगड़-खंगड़, गठरी। स्त्री. **बोबी**।

बोय‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *बू*) गंध, बास, महक। जैसे–(ग्रा.) **बदवोय, खुसबोय**।

बोर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बोरना*) डुवाने की क्रिया, डुबाय, सिर का एक गहना। (अं.) ऊब/ ऊबना प्र. संज्ञा, उबाने वाला व्यक्ति। (अं) बन्दूक की नली की परिधि।

बोरना–क्रि. स. दे. (हि. *बूड़ना*) जलादि में निमग्न कर देना, डुवाना, वदनाम या कलंकित करना, मिलाना या योग देना, धुले रंग में डुबोकर रँगना।

बोरसी†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **गोरसी** (हि.) अँगीठी। (ग्रा.) बरोसी।

बोरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुर=दोना, पात्र*) टाट का बना अनाज आदि भरने का थैला। संज्ञा, पु. (दे.) डुबाने की क्रिया, डुबाव।

बोरिया–संज्ञा, पु. (फ़ा.) चटाई, बिस्तर। यौ. **बोरिया-बसना, बोरिया-बँधना, बोरिया-बस्तर, बोरिया-बकचा। मु. बोरिया-बँधना उठाना**–कक्ष की तैयारी करना, प्रस्थान करना।

बोरी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बोरा*) छोटा बोरा, टाट की थैली।

बोल–संज्ञा, पु. (हि.*बोलना*) शब्द, वाक्य, वाणी, कथन, वचन, व्यंग्य, ताना, फबती या लगती हुई बात, बाजों का गठा शब्द, प्रतिज्ञा, प्रण। **मु. बोल-बाला रहना या होना**–बात का बढ़कर रहना या माना जाना, साख, धाक या मान-मर्यादा बनी रहना। गीत का खंड, अंतरा (संगी.)। **बड़े बोल बोलना**–अभिमान की बात करना।

बोल-चाल–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) संभाषण, कथोपकथन, बातचीत, चलती भाषा, व्यवहार की बोली, छेड़-छाड़, हेलमेल, पारस्परिक सद्भाव। यौ. **बोली-बानी। मु. बोल-चाल न होना**–परस्पर सन्द्राव न होना, वैमनस्य होना।

बोलता–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बोलना*) ज्ञान कराने और बोलने वाला तत्त्व, आत्मा, जीव, प्राण, जीवन-तत्त्व, जान।

बोलती–संज्ञा, स्त्री. (दे.) बोलने की शक्ति, वाणी, वाक्शक्ति।

बोलनहारा–संज्ञा, पु. (हि. *बोलन+हारा प्रत्य.*) आत्मा, जीव, बोलने वाला।

बोलना–क्रि. अ. दे. (सं. ब्र.) शब्दोच्चारण करना, बातचीत करना, किसी वस्तु का शब्द निकालना या करना। यौ. **बोलना-चालना**–बात-चीत करना। **मु. बोल जाना**–मर जाना (अशिष्ट), चुक या फट जाना, बेकाम हो जाना, उपयोग या व्यवहार के योग्य न रहना, कुछ कहना, वदना, ठहराना, रोक-टोक या छेड़छाड़ करना। *बुलाना, **टेरना** (ब्र.), पुकारना, पास आने को कहना। प्रे. रूप–**बोलवाना, बोलावना**। संज्ञा, स्त्री. **बोलनि** (ब्र.)। **मु. बोलि पठाना**– बुला भेजना, निमंत्रित करना।

बोलसर†–संज्ञा, पु. (दे.) मौलसिरी। संज्ञा, पु. (1) एक प्रकार का घोड़ा।

बोला-चाली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि.*बोल-चाल*) बात-चीत, बोल-चाल, **बोला-बाली** (ग्रा.)।

बोली–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बोलना*) मुख से निकला शब्द, वाणी, वचन, बात, अर्थवान शब्द या वाक्य, भाषा, नीलाम में दाम कहना, हँसी, दिल्लगी, ठिठोली, किसी प्रांत-वासियों के विचार प्रगट करने का व्यावहारिक शब्द समुदाय या भाषा। **मु. बोली छोड़ना, (बोलना या मारना)**–व्यंग या उपहास के शब्द कहना।

बोवना†–क्रि. अ. दे. (हि. *बोना*) बोना, छींटना। प्रे. रूप–**बोवाना**।

बोहनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बोधन=जगाना*) प्रथम या पहली बिक्री।

बोहित*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वोहित*) जहाज़, बढ़ी नाव।

बौंड़, बौंड़ा†–संज्ञा, स्त्री. पु. दे. (सं. *वोराट=टहनी*) पेड़ की टहनी, लता।

बौंड़ना†–क्रि. अ. (हि. *बौंड*) लता की भाँति बढ़ना, टहनी फेंकना, फैलना।

बौंडर‡–संज्ञा, पु. दे. (हि. *बवंडर*) चक्करदार हवा, बवंडर।

बौंड़ियाना–क्रि. अ. (दे.) चक्कर खाना, घूमना।

बौंड़ी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *बोंड़*) कच्चे फल, ढेढ़ी, ढोंढ़, फली, छेमी, छदाम, दमड़ी, **ढोंढ़ी, बोंड़ी** (दे.)। पु. **बोंड़ा**।

बौआना†–क्रि. अ. दे. (हि. *बाउ+आना प्रत्य.*) स्वप्न की दशा का प्रलाप, सन्निपाती या पागल की भाँति अंड-बंड बकना, बर्राना।

बौखल–वि. दे. (हि. *बाउ*) पागल, सिढ़ी।

बौखलाना–क्रि. अ. दे. (हि. *बाउ+स्खलन* सं.) पगलाना, सनक जाना।

बौछाड़, बौछार–संज्ञा, स्त्री. दे. (स. *वायु+चरण*) पानी की नन्हीं-नन्हीं बूँदें जो वायु वेग से कहीं गिरती हैं, **झटास** (प्रान्ती.) झड़ी, बातों का तार, ताना, बोली, ठिठोली, कटाक्ष, अधिक देते जाना, वर्षा की बूँदों सा किसी वस्तु का अधिक संख्या या मात्रा में आ पड़ना।

बौड़हा, बौरहा–वि. दे. (हि. *बावला*) बावला, पागल, सिड़ी, **बौराह** (ग्रा.)।

बौद्ध–वि. (सं.) वह मत जिसे बुद्ध ने चलाया है। संज्ञा, पु. बुद्ध का अनुयायी।

बौद्धधर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गौतम बुद्ध का चलाया धर्म या मत, इस मत की दो बड़ी शाखाएँ हैं (1) **हीनयान,** (2) **महायान**।

बौना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वामन*) अति नाटे या छोटे कद या डील-डौल का मनुष्य। स्त्री. **बौनी**।

बौर†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुकुल*) आम की मंजरी, आम के फूलों का गुच्छा, मौर।

बौरना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *बौर+ना प्रत्य.*) आम के वृक्ष में बौर निकलना, मौरना, **बौराना** (दे.)।

बौरहा†–वि. दे. (*बावला* हि.) बौराह, पागल, सिढ़ी।

बौरा-बउरा–वि. दे. (सं. *बातुल*) पागल, सिड़ी, बावला।

बौराई*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि॰ *बौरा+ई प्रत्य.*) पागलपन। क्रि॰ अ. (दे.) पागल हो जाता है।

बौराना†–क्रि॰ अ. दे. (हि॰ *बौरा+ना प्रत्य.*) पागल या सिड़ी हो जाना, सनक जाना, बावला होना, विवेक से रहित हो जाना। क्रि॰ स॰ (दे.) किसी को ऐसा कर देना कि उसे भले-बुरे का ज्ञान न रहे, आम में बौर आना, बौरना।

बौरायन–संज्ञा, पु॰ (हि.) पागलपन।

बौराह-बौराहा*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *बौरा*) सिड़ी, पागल। संज्ञा, पु॰ **बौराहापन**।

बौरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बौरा*) पगली, बावली।

बौलसिरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वधू*) वधू, बहू, दुलहिन, बहुरिया (ग्रा॰)।

बौहा–वि॰ (दे.) पथरीला, कँकरीला। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वधू*) बछू, **पतोहू**।

बौहाई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे.) रोगिणी स्त्री, उपदेश, शिक्षा, सीख।

ब्यंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं. *व्यंग्य*) ताना, चुटकी, गूढ़ अर्थ। यौ॰ **व्यंग्यार्थ**।

ब्यंजन–संज्ञा, पु॰ (दे.) व्यंजन, अक्षर, वर्ण, भोजन।

ब्यजन-ब्यजना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *यजन*) बिजना, पंखा, बेना, बिनवों।

ब्यतीतना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *व्यतीत+ना प्रत्य.*) गुज़र या बीत जाना, **बितीतना** (दे.)।

ब्यथा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *व्यथा*) पीड़ा, दर्द, **बिथा** (दे.)।

ब्यलीक–वि॰ दे॰ (सं॰ *ब्यलीक*) अप्रिय, विलक्षण। संज्ञा, पु॰ (दे.) डाँट-फटकार, अपराध, दुख, अनुचित, अयोग्य।

ब्यवसाय–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यवसाय*) **ब्यौसाय** (दे.) व्यापार, रोज़गार।

ब्यवस्था–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं॰ *व्यवस्था*) प्रबंध, स्थिति, स्थिरता, इंतज़ाम, **बिवस्था** (दे.)।

ब्यवहर†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यवहार*) **ब्यौहर** (दे.) ऋण उधार देने वाला, धनी।

ब्यवहरिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *व्यवहार*) **ब्यौहरिया,** व्यवहर, महाजन, धनी।

ब्यवहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यवहार*) **ब्यौहार** (दे.) ऋण उधार देने वाला, धनी।

ब्यवहरिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *व्यवहार*) **ब्यौहरिया,** व्यवहर, महाजन, धनी।

ब्यवहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यवहार*) **ब्यौहार** (दे.) व्यवहार, रुपए का लेन-देन, सुख-दुख में सम्मिलित होने का मेल-संबंध।

ब्यवहारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *व्यवहारिन्*) काम करने वाला, लेन-देन करने वाला, व्यापारी, मेली, संबंधी।

ब्याज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ब्याज*) सूद, ब्याज, लाभ, वृद्धि, **बियाज** (ग्रा.)।

ब्याना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *बियाना*) बियाना, जनना, पैदा या उत्पन्न करना।

ब्यापना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *व्यापन*) फैलना, किसी वस्तु या स्थान में पूर्णतया घेरना, ओत-प्रोत होना, ग्रसना, प्रभाव करना।

ब्यारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बिहार*) रात का भोजन, **बियारी**, ब्यालू।

ब्याली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *ब्याल*) साँपिनी। वि॰ (सं॰ *ब्यालिन्*) साँप पकड़ने वाला, सँपेरा।

ब्यालू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बिहार*) रात का भोजन, ब्यारी, बियारी।

ब्याह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विवाह*) स्त्री-पुरुष में पत्नी-पति संबंध स्थापित करने की रीति, विवाह, परिणय, दारपरिग्रह।

ब्याहता–वि॰ दे॰ (सं॰ *विवाहित*) जिसके साथ ब्याह हुआ हो, ब्याहा, ब्याही।

ब्याहना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विवाह*) (वि॰ *ब्याहता*) विवाह होना या करना।

ब्याहा–वि॰ दे॰ (सं॰ *विवाहित*) जिसका ब्याह हो चुका हो। स्त्री॰ **ब्याही**।

ब्याहुला†–वि॰ दे॰ (हि॰ *ब्याह*) विवाह का।

ब्योंगा–संज्ञा, पु॰ (दे.) चमड़ा छीलने का एक हथियार।

ब्योचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विकुंचन*) झोंके से मुड़ने या टेढ़े

होने से नसों का स्थानों से हट जाना, **बिलौंचना, मुरकना**।

ब्योंत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *व्यवस्था*) मामला, माजरा, व्यवस्था, ढंग, युक्ति, तदवीर, साधन, रीति, उपाय, कार्य पूरा उतारने का हिसाब-किताब, तैयारी, आयोजन, संयोग, साधन या सामान की सीमा, नौबत, प्रबंध, उपक्रम, समाई, अवसर, तराश, पोशाक के लिए कपड़े की नाप-जोख से काट-छाँट, **ब्यउँत** (ग्रा.)। **मु॰ ब्यौंत बाँधना**– तैयारी करना। कतर-ब्योंत करना–कमी करना।

ब्योंतना, ब्यौंतना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *ब्योंत*) पोशाक के लिए कपड़े की काट-छाँट या नाप जोख करना, बयउँतना। द्वि॰ रूप–**ब्योंताना,** प्रे॰ रूप–**ब्योंतवाना**।

ब्योपार, ब्यौपार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यापार*) व्यापार, रोज़गार, उद्यम।

ब्योमासुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक दैत्य।

ब्योरना, ब्यौरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विवरण*) गुथे बालों को सुलझाना।

ब्योरा, ब्यौरा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *ब्योरना*) तफ़सील, विवरण, किसी बात या घटना की एक-एक बात का कथन। यौ॰ **ब्योरेवार**–विस्तार के साथ।

ब्योहर, ब्यौहर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यवहार*) धनी, महाजन, ऋणदाता, ऋण देना-लेना।

ब्योहरिया, ब्यौहरिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यवहार*) धनी, महाजन, ऋणदाता, ब्योहार।

ब्योहार, ब्यौहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यवहार*) लेन-देन, व्यापार, बर्ताव, कार्य, न्याय।

ब्रंद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वृंद*) समूह, झुंड।

बज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ब्रज*) गोकुल गाँव, मथुरा और वृंदाबन के चारों ओर का देश, चलना, जाना, गमन।

ब्रजना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *व्रजन*) चलना।

ब्रजेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीकृष्ण।

ब्रह्मंड–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ब्रह्मांड*) संसार।

ब्रह्म–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ब्रह्मन्*) सत्, चित् और आनंद-स्वरूप एक मात्र अखिल कारण रूप, नित्य सत्ता, परमेश्वर, चैतन्य, भगवान, ज्ञान की परमावधि रूप, नारायण, परमात्मा, आत्मा, ब्राह्मण। ब्राह्मण (सामासिक पदों में), ब्रह्मा (समास में), ब्रह्मराक्षस, वेद, एक और चार की संख्या।

ब्रह्मकुंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मसर नामी तीर्थ।

ब्रह्मगाँठ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *ब्रह्मग्रंथि*) जनेऊ या यज्ञोपवीत की गाँठ विशेष।

ब्रह्मग्रंथि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) जनेऊ या उपवीत की गाँठ विशेष।

ब्रह्मघाती–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ ब्रह्म+घात क्तिन्) ब्राह्मण का मारनेवाला, ब्रह्महत्याकारी।

ब्रह्मघोष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वेदध्वनि।

ब्रह्मचर्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चार आश्रमों में से पहला आश्रम जिसमें मनुष्य का सदाचारमय साधारण जीवन रख कर मुख्य कार्य वेद पढ़ना है, एक प्रकार का व्रत (योग.)। यौ॰ **ब्रह्मचर्याश्रम**।

ब्रह्मचारिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सरस्वती, दुर्गा, पार्वती, ब्रह्मचर्य व्रत रखने वाली स्त्री।

ब्रह्मचारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *ब्रह्मचारिन्*) प्रथमाश्रमी, ब्रह्मचर्य व्रत रखने वाला। स्त्री॰ **ब्रह्मचारिणी**।

ब्रह्मज्ञ–वि॰ (सं॰) ब्रह्मज्ञानी, वेदज्ञ, आत्मतत्वज्ञ, वेदविद्, वेदज्ञ।

ब्रह्मज्ञान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अद्वैतवाद, ब्रह्म संबंधी ज्ञान, पारमार्थिक अद्वैत सत्ता के सिद्धांत का बोध।

ब्रह्मज्ञानी–वि॰ यौ॰ (सं॰ *ब्रह्मज्ञानिन्*) अद्वैतवादी, पारमार्थिक अद्वैत सत्ता रूप, ब्रह्म संबंधी ज्ञान रखने वाला।

ब्रह्मराय–वि॰ (सं॰) ब्राह्मणों का सेवक या प्रेमी, ब्राह्मणसत्कारी, ब्रह्मा या ब्रह्म संबंधी।

ब्रह्मतीर्थ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मसर नामी तीर्थ, पुष्करमूल, **पोहकरमूल**।

ब्रह्मत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्म का भाव, ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बटु या ब्रह्मचारी का दंडा, ब्रह्मा का दिया दंड, ब्राह्मण का दंड।

ब्रह्मदिन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्म का दिन जो एक हज़ार या 100 चतुर्युगी का माना जाता है।

ब्रह्मदेव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्म, चंद्रमा, शिव, **बरमदेव** (दे॰)।

ब्रह्मदोष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मण के मार डालने का पाप या दोष। वि. **ब्रह्मदोषी।**

ब्रह्मद्रोह–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विप्रद्रोह।

ब्रह्मद्रोही–वि. यौ. (सं. *ब्रह्मद्रोहिन्*) ब्राह्मणों से शत्रुता या द्रोह करने वाला।

ब्रह्मद्वार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मरंध्र।

ब्रह्मद्वेष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मणों से वैर। वि. **ब्रह्मद्वेषी।**

ब्रह्म-ध्यान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्म का ध्यान या विचार। वि. **ब्रह्मध्यानी।**

ब्रह्मनिष्ठ–वि. यौ. (सं.) ब्राह्मणों की भक्त, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञान-संपन्न। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **ब्रह्मनिष्ठ।**

ब्रह्मपद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मुक्ति, मोक्ष, ब्रह्मणत्व, ब्रह्मत्व।

ब्रह्मपुत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मा का लड़का, वशिष्ठ, नारद, मरीचि, मनु, सनकादिक, मानसरोवर से निकल बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली ब्रह्मपुत्र नदी।

ब्रह्मपुराण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आदि पुराण, अठारह पुराणों में से एक पुराण।

ब्रह्मपुरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ब्रह्मा का नगर।

ब्रह्मपाश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्म-फाँस (दे.) एक अस्त्र, ब्रह्मास्त्र।

ब्रह्मभट्ट–संज्ञा, पु. (सं.) वेदज्ञानी, ब्रह्मविद्, एक तरह का ब्राह्मण।

ब्रह्मभूति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ब्राह्मण का तेज, ब्राह्मण का धर्म, ऐश्वर्य, पदाधिकार।

ब्रह्मभोज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मण-भोजन, **बरमभोजन** (दे.)।

ब्रह्मभोजन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मणों को खिलाना।

ब्रह्ममुहूर्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रातःकाल, प्रभात, प्रात, सवेरे, उषाकाल, ब्रह्मवेला।

ब्रह्मयज्ञ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यथाविधि वेद पढ़ना, वेदाध्ययन, वेदाभ्यास।

ब्रह्मरंध्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मस्तक के मध्य भाग का एक गुप्त छिद्र, जिससे प्राणों (जीव) के निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है (योग.)।

ब्रह्मराक्षस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मण-भूत।

ब्रह्मरात्रि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) ब्रह्म की एक रात्रि जो उनके दिन के समान ही होती है, सौ (एक) कल्प।

ब्रह्मरूपक–संज्ञा, पु. (सं.) चित्र या चंचल छंद, 16 वर्णों का वृत्त (पिं.)।

ब्रह्मरूप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्म या ब्राह्मण के रूप का।

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *ब्रह्मलेख*) जीव के गर्भ में आते ही ब्रह्मा का लिखा विधान (पु.), भाग्य का लिखा, विधि-विधान, **ब्रह्माक्षर।**

ब्रह्म-रोष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विप्र क्रोध।

ब्रह्मर्षि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्मलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मा के रहने का लोक, मुक्ति या मोक्ष का एक भेद।

ब्रह्मवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेदपाठ, वेद का पठन-पाठन, वेदाभ्यास, अद्वैत या वेदांतवाद।

ब्रह्मवादी–वि. (सं. *ब्रह्म+वादिन्*) वेदांती, अद्वैतवादी, केवल ब्रह्म की ही सत्ता मानने वाला। स्त्री. **ब्रह्म वादिनी।**

ब्रह्मविद्–वि. (सं.) ब्रह्म का जानने या समझने वाला, वेदार्थज्ञाता, वेदान्ती।

ब्रह्मविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) ब्रह्म के ज्ञान की विद्या, उपनिषद्, शास्त्र, वेदान्त, अध्यात्मज्ञान।

ब्रह्मवैवर्त–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्म के कारण ज्ञात होने वाला संसार, श्रीकृष्ण, ब्रह्म सकाश से उत्पन्न प्रतीति, कृष्ण भक्ति संबंधी एक पुराण।

ब्रह्मश्रव–संज्ञा, पु. (सं.) वेद।

ब्रह्मसमाज–संज्ञा, पु. (सं.) ब्राह्मसमाज। वि. **ब्रह्मसमाजी;** राजा राममोहन राय द्वारा चलाई गई एक संस्था।

ब्रह्मसूत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यास भगवान् कृत शारीरिक सूत्र या वेदांत।

ब्रह्महत्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) ब्राह्मण का वध, ब्राह्मण का मारना, ब्राह्मण के वध का महा पाप–(मनु.)

ब्रह्मांड–संज्ञा, पु. (सं.) अनंत लोक वाला, समस्त विश्व, सारा संसार, चौदहों भुवनों का समेह, खोपड़ी, कपाल **भरभंड** (ग्रा.)।

ब्रह्मा–संज्ञा, पु. (सं.) विधाता, विधि, पितामह, ब्रह्म या ईश्वर के तीन रूपों में से सृष्टि रचने वाला विरंचि रूप, यज्ञ का एक ऋत्विक, **बरम्हा** (दे.)। भारत के पूर्व में एक प्रान्त (प्राचीन)।

ब्रह्माणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) ब्रह्मा की शक्ति या स्त्री, सरस्वती देवी।

ब्रह्मानंद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्म या परमात्मा के रूप-ज्ञान या अनुभव से उत्पन्न हर्ष या आनंद।

ब्रह्मावर्त्त–संज्ञा, पु॰ (सं.) सरस्वती और शरद्वती नदियों के मध्य का प्रदेश।

ब्रह्मास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) मंत्र विशेष से संचालित एक अस्त्र, ब्रह्मवाण।

ब्रात*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्रात्य*) संस्कार-रहित, जिसका जनेऊ न हुआ हो, पतित, अनार्य्य।

ब्रह्म–वि॰ (सं.) ब्रह्म या परमात्मा संबंधी। संज्ञा, पु॰ (सं.) विवाह का एक भेद (अनु॰)।

ब्राह्मण–संज्ञा, पु॰ (सं.) चार वर्णों में से सर्वश्रेष्ठ एक वर्ण या जाति जिसके प्रमुख कर्म यज्ञ करना-कराना, वेद का पठन-पाठन, ज्ञान और उपदेश देना है, ब्राह्मण जाति का मनुष्य मंत्र-भाग को छोड़कर शेष वेद, विष्णु, शिव। स्त्री॰ **ब्रह्माणी**।

ब्राह्मणत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्राह्मणपन, ब्राह्मण का भाव, धर्म या अधिकार, ब्राह्मणता।

ब्राह्मणभोजन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्राह्मणों को जिमाना या खिलाना, ब्राह्मणों को भोजन कराना, **बरमभोज** (दे॰)।

ब्राह्मण्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्राह्मणत्व।

ब्रह्ममुहूर्त्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य्योदय से दो घड़ी पूर्व का समय, ऊषा, प्रभात।

ब्राह्मी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा, भारत की पुरानी लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ विकसित हुई हैं, बुद्धि और स्मरण शक्ति-वर्धक एक बूटी शिव की अष्ट मातृकाओं में से एक, ब्रह्म-संबंधी।

ब्रीड़ना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *ब्रीडन*) लजाना, लज्जित होना।

ब्रीड़-ब्रीड़ा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *क्रीड़ा*) लज्जा, शरम।

भ

भ–संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला के पवर्ग का चौथा वर्ण। संज्ञा, पु॰ (सं॰) राशि, ग्रह, नक्षत्र, भ्रांति, भ्रम, शुक्राचार्य, पहाड़, भ्रमर, (दे॰) **भगण** पिं॰)।

भंकार*–संज्ञा, पु॰ (*अनु.*) विकट या घोर शब्द।

भंग–संज्ञा, पु॰ (सं.) भेद, लहर, हार, टुकड़ा, खंड, वक्रता, टेढ़ाई, डर, भय, विध्वंस, नाश, अड़चन, बाधा, झुकने या टूटने का भाव। संज्ञा, स्त्री॰ **भंगता**। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भृंगा*) माँग।

भंगड़–भंगड़ी–वि॰ दे॰ (हि॰ *भांग+अड़ प्रत्य॰*) बहुत भाँग खाने वाला। **भँगोड़ी** (ग्रा॰)।

भंगना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *भंग*) दबना, क्रि॰ स॰ (दे॰) झुकाना, तोड़ना।

भंगरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भांग+रा=का*) भाँग के रेशों से बना वस्त्र। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मृगराज*) भंगराज, भंगेरी, **भँगरिया** (ग्रा.)।

भंगराज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भृंगराज*) एक काला पक्षी, भंगरा।

भँगरैया‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भृंगराज*) अंगश, पौधा (औष॰)।

भंगार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भंग*) बरसाती पानी का गड्ड, कुआँ खोदते समय खोदा गया गढ़ा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भृंग*) कूड़ा-करकट, घास-फूस।

भंगिम–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वक्रता, झुकाव।

भंगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भँगिन्*) भंगशील, नष्ट होने वाला, भंग करने या तोड़ने वाला, भंगकारी स्त्री॰ **भंगिनी**। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भक्ति*) एक अस्पृश्य नीच जाति, बुमार, डोम। स्त्री॰ **भंगिन**। वि॰ (हि॰ *भांग*) भाँग पीने वाला, भँगेड़ी।

भंगुर–वि॰ (सं॰) टूटने या भंग होने वाला, नाशवान, नश्वर, टेढ़ा, वक्र। संज्ञा, स्त्री॰ **भंगुरता**। यौ॰-क्षण-**भंगुर**।

भँगड़ी–वि॰ दे॰ (हि॰ *भंगड़*) भाँग पीने-वाला, भंगढ़।

भंजक–वि॰ (सं॰) तोड़ने वाला। स्त्री॰ **भंजिका**।

भंजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तोड़ना, विध्वंस, विनाश। वि॰–तोड़ने वाला, भंजक। वि॰ **भंजनीय**।

भंजना, भँजना–क्रि. अ. दे. (सं. *भंजन*) टूटना, तोड़ना, भुनाना, बड़े सिकके का छोटे सिक्कों में बदलना, **भुनाना, भुँजाना** (ग्रा.)। क्रि. अ. दे. (हि. *भाँजना*) बढ़ा था ऐंठा जाना, काग़ज़ के तख़्तों का मोढ़ा जाना, भाँजा जाना।

भँजाना*–क्रि. स. दे. (सं. *भंजन*) तोड़ना। क्रि. स. स. (क्रि. दे. (हि. *भँजना*) तुड़वाना, बड़े सिक्के का छोटे सिक्कों में बदलवाना, भुनाना। स. क्रि. दे. (हि. *भाँजना*) भँजवाना, बयना, ऐंठाना।

भंटा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृताक*) बैंगन, **भाँटा, भटा** (ग्रा.)।

भंड–वि. (सं.) गंदी या फूहड़ बातें कहने वाला, पाखंडी, धूर्त्त, भाँड। संज्ञा, स्त्री. **भँडता, भंडपन**। संज्ञा, पु. एक जाति के लोग जो सभाओं में गाते, नाचते और नकलें करते हैं।

भँड़ताल†–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. तालियाँ बजाते हुए भाँड़ों का गान, **भँडतिल्ला, भँड़चाँचर** (प्रान्ती.)।

भड़तिल्ला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भँड़ताल*) भँड़ताल।

भँड़ना–क्रि. स. दे. (सं. *भंडन*) तोड़ना, भंग करना, बिगाड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना, हानि पहुँचाना।

भँड़फोड†–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *भाँड़ा फोड़ना*) मिट्टी के बरतनों का फोड़ना या गिराना, तोड़ना, मिट्टी के बरतनों का टूटना-फूटना, छिपी बात का खोलना, रहस्योद्‌घाटन, भंडाफोड़। स्त्री. वि. **भँडफोरी**।

भँड़भाँड, भड़भाड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मांडोर*) एक कटीला वृक्ष जिसकी जड़ ओर पत्तियाँ औषधि के काम आती हैं।

भँडरिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भड्डरि*) एक जाति के लोग, भड्डर, भड्डरी। वि. मक्कार, धूर्त, पाखंडी। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भंडारा+इया प्रत्य.*) दीवाल पर पल्लेदार ताख या आला।

भँड़सार, भँड़साल†–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *भाँड़+शाला*) वह स्थान जहाँ अनाज भरा जाता है। खत्री, इलौं (आ.) बखारी, गोदाम।

भंडा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भंड*) वात्र, बरतन, भाँड़ा, भंडारा, रहस्य या भेद। यौ. **भंडा-फोड़**। **मु. भंडा फूटना (फोड़ना)**–भेद खुलना (*खोलना*)।

भँड़ाना–क्रि. स. दे. (हि. *भौंड़*) उपद्रव मचाना, भौंड़ों सा उछल-कूद मचाना या नाचना-गाना, विनष्ट करना, तोड़ना-फोड़ना, भँड़ैती करना।

भंडार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाँडागार*) समूह, कोप, ख़जाना, कोठार, बखारी, पाकशाला, **भंडारा** (दे.), उदर, पेट, अन्न भरने का स्थान।

भंडारा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाँडागार*) कोप, ख़जाना, झंड, भंडार, समूह, पाकशाला, साधुओं का भोज, पेट, उदर।

भंडारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भंडार+ई प्रत्य.*) ख़जाना, कोप, छोटी कोठरी। संज्ञा, पु. (हि. *भंडार+ई प्रत्य.*) ख़जानची, कोषाध्यक्ष, रसोइया, भंडारे का मालिक, तोशाख़ाने का दरोगा।

भँडिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मिट्टी का छोटा चौड़े मुख का बरतन।

भँडेहर–संज्ञा, पु. (दे.) भँडियों का समूह।

भँड़ैती–संज्ञा, स्त्री. (ग्रा.) भाँड़ों सा आचार-व्यवहार, नक़ल; व्यर्थ की प्रशंसा।

भँड़ौआ, भड़ौवा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भाँड़*) भाँड़ों के गाने का गीत या नक़ल, निम्न श्रेणी की बुरी कविता जो हास्य-प्रधान हो, असभ्य गीत।

भँमाना–क्रि. अ. दे. (हि. *रँभाना*) रँभाना, भाँय-भाँय करना।

भँभीरी–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा, जुलाहा।

भँवन*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भ्रमण*) घूमना, फिरना, भ्रमण करना।

भँवफेर–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) चक्कर, घुमाव, भ्रम, उलझन। **भवफेर**–जग जंजाल।

भँवर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रमर*) भौंरा, जल-गर्त, या आवर्त, पानी का चक्कर। **भौंर** (ग्रा.)।

भँवरकली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि.) पशुओं के छूने का यंत्र, सहज ही में सब ओर घूमने वाली कील में जड़ी हुई कड़ी।

भँवरजाल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रमजाल*) भ्रमजाल, सांसारिक झगड़े-बखेड़े, **भँवजाल** (ग्रा.), भवजाल।

भँवरभीख–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भ्रमरी*) भ्रमरी, **भौंरी** (ग्रा.) ऐंठना, मोड़ना, फेरी, गश्त, फेरा, पानी का चक्कर,

एक केंद्र पर घूमे हुए थालों या रोओं का स्थान, विवाह में अग्नि-प्रदक्षिणा, **भाँवरि** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भँवरना या भँवना*) घूम-फिर या चक्कर लगाकर सौदा बेचना, फेरी।

भइया, भैय्या–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्राता*) भाई, बराबर वालों का आदर-सूचक।

भई–क्रि. अ. (ब्र.) हुई, **भै** (ब्र.)। 'भाई' का संक्षिप्त रूप।

भक–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) एकाएक या रह-रहकर आग के जल उठने का शब्द।

भकाऊँ–संज्ञा, पु. (*अनु.*) हौवा।

भकुआ, भकुवा–वि. दे. (सं. *भेक*) मूढ़, मूर्ख।

भकुआना–क्रि. अ. दे. (हि. *भकुआ*) घबरा जाना, चकपका जाना। क्रि. स. (ब्र.) घबरा देना, चकपका देना, मूर्ख बनाना।

भकोसना–क्रि. स. दे. (सं. *भक्षण*) जल्दी-जल्दी या बुरी तरह से खाना, निगलना।

भक्त, भगत (दे.)–वि. (सं.) भागों में बँटा हुआ, विभक्त, अलग या भिन्न किया या बाँट कर दिया हुआ, प्रदत्त। संज्ञा, पु. अनुयायी, सेवक, दास, भक्ति करने वाला।

भक्ता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) श्रद्धा, भक्ति।

भक्तवत्सल–वि. यौ. (सं.) भक्तों पर दयालु, विष्णु। संज्ञा, स्त्री. **भक्त-वत्सलता, भक्त-वछलता, भक्त-बसलता** (दे.)।

भक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बाँटना, भिन्न भागों में बाँटना, विभाग, भाग, अवयव, अंग, विभाग करने वाली रेखा, सेवा-शुश्रषा, श्रद्धा, पूजा, भगवान के प्रति प्रेम या अनुरक्ति, भक्ति नौ प्रकार की है :–श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन। **भगति** (दे.)। एक छंद (पिं.)।

भक्तिसूत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शाँलिल्य-मुनि कृत वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र ग्रंथ।

भक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) खाना, चबाना, खाने का पदार्थ।

भक्षक–वि. (सं.) खादक खाने का चबाने-वाला (बुरे अर्थ में)।

भक्षण–संज्ञा, पु. (सं.) भोजन करना, दाँत से काटकर चबाना या खाना, भोजन। वि. **भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय**।

भखना*–क्रि. स. दे. (सं. *भक्षण*) खाना। प्रे. रूप–**भखाना, भखवाना**।

भगंदर–संज्ञा, पु. (सं.) गुदा का फोड़ा (रोग)। वि. **भगंदरी**।

भग–संज्ञा, पु. (सं.) योनि, 12 आदित्यों में से एक आदित्य सूर्य, प्रताप, सौभाग्य, ऐश्वर्य, धन, योनि।

भगण–संज्ञा, पु. (सं.) 360 अंशों वाला ग्रहों का पूरा चक्कर (खगो.)। एक गण जिसमें आदि का वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते हैं। जेसे–राघव (ऽ।।)।

भगत–वि. दे. (सं. *भक्त*) निरामिष या शाकाहारी साधु, उपासक, सेवक, ओझा। संज्ञा, पु. (दे.) वैष्णव साधु, भगत का स्वाँग, भूत-प्रेत दूर करने वाला। स्त्री. **भगतिन**।

भगतबछल*–वि. दे. यौ. (सं. *भक्त-वत्सल*) भक्तवत्सल, भक्त पर दयालु, विष्णु। संज्ञा, स्त्री. (दे. **भगतबछलता**।

भगति, भगती*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भक्ति*) भक्ति, भक्ती, श्रद्धा, प्रेम, अनुराग।

भगतिया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भक्ति* हि. *भगति*) राजपूताने की एक गाने-बजाने का पेशा करने वाली जाति। स्त्री. **भगतिन**।

भगती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भक्ति*) भक्ति।

भगदर–संज्ञा, स्त्री. (हि. *भागना*) भागना, भागने की क्रिया का भाव।

भगना†–क्रि. अ. दे. (हि.*भागना*) भागना। संज्ञा, पु. (दे.) भानजा। वि. **भगय्या**। स. रूप–**भगाना,** प्रे. रूप–**भगवाना**।

भगरी, भगली–वि. संज्ञा, पु. (हि. *भगल+ई प्रत्य.*) ढोंगी, छली, बाजीगर।

भगवंत*†–संज्ञा, पु. (सं.) भगवंत, ऐश्वर्य्यवान, परमात्मा, भगवान।

भगवती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) देवी, सरस्वती, गौरी, दुर्गा, पार्वती।

भगवत्–संज्ञा, पु. (सं.) परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, ईश्वर।

भगवद्गीता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) महाभारत के भीष्म-पर्व का एक प्रसिद्ध प्रकरण, जिसमें कृष्णार्जुन के कर्म-योग संबंधी प्रश्नोत्तर हैं।

भगवान्-भगवान–वि. (सं. *भगवत्*) ऐश्वर्य्यवाला, प्रतापी, पूज्य। संज्ञा, पु. परमात्मा, परमेश्वर, विष्णु, पूज्य और आदरणीय पुरुष।

भगाना–क्रि. स. (हि. *भगना*) दौड़ाना, दूर करना, हटाना। क्रि. अ. भागना।

भगिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बहन।

भगीरथ–संज्ञा, पु. (सं.) अयोध्या नरेश दिलीप के पुत्र जो घोर तपस्या कर गंगा जी को पृथ्वी पर लाए थे। (पु.) यौ. **भगीरथ-प्रयत्न**–कठिन प्रयत्न।

भगोड़ा–वि. दे. (हि. *भगाना+ओड़ा प्रत्य.*) भगाने वाला, कायर, भागता हुआ। **भगैया** (दे.); (अं.) फ्यूगटिव।

भगोल–संज्ञा, पु. (सं.) खगोल।

भगौती*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भगवती*) भगवती, देवी।

भगौहाँ–वि. दे. (*भागना+औहाँ प्रत्य.*) भागने को तैयार, कायर। वि. दे. (हि. *भगवा*) गेरुआ, भगवा।

भग्गू†–वि. दे. (हि. *भागना+ऊ प्रत्य.*) जो विपत्ति देख भागता हो, भीरु, कायर।

भग्न–वि. (सं.) टूटा हुआ, पराजित।

भग्नावशेष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) खंडहर, टूटे-फूटे घर या उजड़ी बस्ती का हिस्सा, टूटे-फूटे पदार्थ के बचे टुकड़े।

भचक–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भचकना*) लँगड़ापन।

भचकना–क्रि. अ. दे. (हि. *भौचक*) आश्चर्ययुक्त, भौचक या चकित होना। क्रि. अ. (अनु.) लँगड़ाते हुए चलना, टेढ़ा पैर पड़ना।

भचक–संज्ञा, पु. (सं.) राशियों या ग्रहों की गति का मार्ग या चक्र, नक्षत्र-समूह, ग्रह-कक्ष (खगो.)।

भच्छ*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भक्ष्य*) भक्ष्य।

भच्छना, भछना*†–क्रि. स. दे. (सं. *भक्षण*) भखना, खाना (बुरे अर्थ में)।

भजन–संज्ञा, पु. (सं.) सेवन, किसी देवता या पूज्य का नाम बार-बार लेना, स्मरण, जप, देव स्तुति, या देव गुण-गान। संज्ञा, पु. (हि. *भजना*) भगना।

भजना–क्रि. स. दे. (सं. *भजन*) सेवा करना, देवादि का नाम रटना, जपना, स्मरण करना, आश्रय लेना। क्रि. अ. दे. (सं. *भजन, पा. वजन*) भागना, प्राप्त होना, पहुँचना, भग जाना।

भजनानंद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भजन करने का हर्ष।

भजनानंदी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *भजनानंद+ई प्रत्य.*) भजन गाकर प्रसन्न रहने वाला।

भजनी–संज्ञा, पु. (हि. *भजन+ई प्रत्य.*) भजन गाने वाला।

भजाना–क्रि. अ. दे. (हि. *भजना=दौड़ना*) भागना, दौड़ना, भजन करने में लगाना। स. रूप–**भजावना**, प्रे. रूप–**भजवाना**। क्रि. स. भगाना, दूर करना, दौड़ाना।

भट–संज्ञा, पु. (सं.) योद्धा, सैनिक, सिपाही, वीर। वि. दे. शून्य, संज्ञा, रहित।

भटकटाई, भटकटैया–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *कटाई*) काँटेदार एक छोटा वृक्ष या पौधा, कटेरी।

भटकना–क्रि. अ. दे. (सं. *भ्रम*) मार्ग भूलकर इधर-उधर मारे-मारे फिरना, भ्रम में पड़ना, व्यर्थ इधर-उधर घूमना। स. रूप–**भटकाना**, प्रे. रूप–**भटकवाना**।

भटका–क्रि. वि. (हि. *भटकना*) भूला। यौ. **भूला-भटका**।

भटकाना–क्रि. स. (हि. *भटकना*) भ्रम में डालना, ग़लत रास्ता जताना।

भटकैया‡–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भटकना+ऐया प्रत्य.*) भटकने या भटकाने वाला।

भटनास–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक लता जिसकी फलियों के दानों की दाल बनती है।

भटभेड़ा, भटभेरा*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भट+भिड़ना*) मुठभेड़, दो की भिड़ंत, आकस्मिक भेंट, मुकाबिला, भिड़ंत, ठोकर, टक्कर, धक्का।

भटा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृतांक*) बैंगन, भाँटा।

भटियारा–संज्ञा, पु. (दे.) एक जाति, खाना बेचने वाला मुसलमान रसोइया। स्त्री. **भटियारी, भटियारिन**।

भटू†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वधू*) हे सखी, आली, स्त्रियों का सूचक संबोधन।

भट्ट–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भट*) ब्राह्मणों की एक उपाधि, योद्धा, सूर, भाट।

भट्टाचार्य–संज्ञा, पु. (सं.) बंगालियों का एक आस्पद विद्या-संबंधी उपाधि।

भट्टा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रष्ट*) ईंटों आदि से बनी बड़ी भट्टी, खपरों या ईंटों के पकाने का पजावा, **भाटी** (ब्र.)।

भट्टी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भ्राष्ट, प्रा. भट्ठ*) ईंटों आदि से बना बड़ा चूल्हा, देशी शराब बनाने का स्थान।

भठियारपन–संज्ञा, पु. (हि. *भठियारा+पन प्रत्य.*) भठियारे का कर्म, भठियारों सा लड़ना और गालियाँ बकना।

भठियारा–संज्ञा, पु. (हि. *भट्ठी+इयारा प्रत्य.*) सराय का प्रबंधकर्त्ता या रक्षक, मुसलमानों का खाना बनाने और बेचने वाला। स्त्री. **भठियारी, भठियारिन**।

भड़ंवा–संज्ञा, पु. दे. (सं.) *विडंब*, ढोंग, आडंबर। एक गाली।

भड़ंत–संज्ञा, पु. (दे.) भाँड़ों का सा काम, भँड़ैती।

भड़क–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) दिखाऊ, चमकीला या चटकीलापन, ऊपरी चमक-दमक, सहमने या भड़काने का भाव।

भड़कदार–वि. (हि. *भड़क+दार* फा.) भड़कीला, चमकीला, रोबदार, चटकीला।

भड़कना–क्रि. अ. दे. (*अनु. भड़क+ना प्रत्य.*) शीघ्रता या तेजी से जल उठना, भभकना, झिझकना, चौंकना, भयभीत होकर पीछे हटना, रुष्ट होना (पशुओं का)। स. रूप–**भड़काना,** प्रे. रूप–**भड़कवाना**।

भड़काना–क्रि. स. (हि. *भड़कना*) उभारना, चमकाना, उत्तेजित करना, जलाना, चौंकाना, डराना (पशुओं को), शंकित करना, क्रुद्ध करना।

भड़की–संज्ञा, स्त्री (हि. *भड़कना*) घुड़की, भभकी, डरपाव।

भड़कीला–वि. (हि. *भड़क+ईला प्रत्य*) भड़कदार।

भड़कैल, भड़कैला–वि. (हि. *भड़क+ऐल, ऐला प्रत्य.*) भड़कने और झिझकने वाला, अपरिचित, जंगली।

भड़भड़–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) आघात से हुआ भड़-भड़ शब्द, भीड़, **भभ्भड़** (ग्रा.) व्यर्थ की ज़्यादा बातचीत, **भरभर** (दे.)।

भड़भड़ाना–क्रि. स. (*अनु.*) भड़-भड़ शब्द करना, व्यर्थ में मारे-मारे फिरना, **भटभटाना** (दे.)।

भड़भड़िया–वि. दे. (हि. *भड़भड़+इया प्रत्य.*) व्यर्थ बहुत बातें करने वाला, बक्की, जल्दी मचाने वाला।

भड़भाँड–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाँडरि*) **घमोय** (ग्रा.) सत्यानासी।

भड़भूँजा-भरभूँजा–संज्ञा, पु. (हि. *भाड़+भूँजना*) एक जाति जो भाड़ के द्वारा अन्न भूनती है, **भुँजवा** (ग्रा.)।

भड़ार, भंडार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भंडार*) कोष, कोठार।

भड़िहा–संज्ञा, पु. (दे.) चटोरा, चोर।

भड़िहाई*†–क्रि. वि. दे. (हि. *भड़िया*) छिपछिपा या दब कर, चोरों सा कार्य करना, चोरी करना।

भड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भड़काना*) झूठा बढ़ावा।

भँडुआ-भँडुवा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भाँड़*) वेश्याओं का दलाल, सफ़रदाई, **पछुआ** (प्रान्ती.), **भडुवा** (ग्रा.)।

भंडर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भद्र*) ब्राह्मणों की एक जाति, भंडर।

भणना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *भणन*) कहना, **भनना** (दे.)।

भणित–वि. (सं.) कहा हुआ, रचित, **भनित** (दे.)।

भतार†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भर्तार*) पति, स्वामी।

भतीजा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रातृज*) भाई का पुत्र या लड़का। स्त्री. **भतीजी**।

भत्ता–संज्ञा, पु. दे. (*भरण*) किसी कर्मचारी को बाहर यात्रा के समय दिया गया प्रति दिन का व्यय।

भयेलना–क्रि. सं. (दे) कुचलना।

भदई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *भादों*) भादों में तैयार होने वाली फ़सल, भादों की अमावस या पूर्नो। दि. भादों की।

भदभद्द–संज्ञा, पु. (*अनु.*) किसी वस्तु, जैसे–फल आदि के गिरने का शब्द, पैर का शब्द, हँसी या उपहास।

भदभदाना–क्रि. सं. दे. (हि. *भद*) भद भद शब्द करना। यौ. क्रि. वि. **भद भद**।

भदभदाहट–संज्ञा, स्त्री. (हि. *भदभदाना*) भद भद शब्द।

भदाक–संज्ञा, पु. (*अनु.*) धड़ाक, पड़ाक, या भदाक शब्द के साथ गिरना।

भदावर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भद्रवर*) गवालियर राज्य का एक प्रांत; आगरा जिले का इलाका।

भदेश, भदेस–वि. दे. (हि. *भद्दा*) भद्दा, कुरूप भोंड़ा, बुरा।

भदौरिया–वि. दे. (हि. *भदावर*) भदावर प्रांत का, भदावर संबंधी। संज्ञा, पु. (दे.) क्षत्रियों की एक जाति।

भद्दर–वि. (दे.) **भद्र,** पूर्णतया, पूरे, बहुत।

भद्दा–संज्ञा, पु. (*अनु. भद*) कुरूप, भोंड़ा, बुरा। (स्त्री. **भद्दी**)।

भद्दापन–संज्ञा, पु. (हि. *भद्दा+पन प्रत्य.*) भद्दे होने का भाव।

भद्र–वि. (सं.) श्रेष्ठ, सभ्य, शरीफ़, कल्याणकारी, साधु, शिष्ट, शिक्षित। संज्ञा स्त्री. **भद्रता**। संज्ञा, पु. (सं.) महादेव, उत्तर का दिग्गज, सोना, सुमेरु पर्वत, खंजन। संज्ञा, पु. (सं. *भद्राकरण*) मूँछ, दाड़ी, सिर आदि का मुण्डन।

भद्रक–संज्ञा, पु. (स.) एक पराना, देश, एक वर्णिक छंद (पिं.)। वि. कल्याणकारी।

भद्रकाली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भगवती देवी, कात्यायिनी देवी।

भद्रता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शिष्टता, सभ्यता, भलमनसी, शराफ़त (फ़ा॰)।

भद्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) केकय-राज की कन्या जो श्री कृष्ण की पत्नी थी; आकाश गंगा, दुर्गा, गाय, सुभद्रा; उपजाति वृत्त का 10वाँ रूप (पिं॰), पृथ्वी एक आरंभ योग (फ॰ ज्यो॰) बाधा (व्यं॰)।

भद्राक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बनावटी या कृत्रिम रुद्राक्ष।

भद्रिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक वणिक छंद (पिं॰)।

भद्री–वि॰ (सं॰ *भद्रिन्*) सौभाग्यशाली।

भनई–क्रि॰ स॰ (हि॰ *भनना*) कहता है।

भनक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भणुन*) ध्वनि, धीमी आवाज़, उड़ती ख़बर।

भनकना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *भणुन*) कहना।

भनना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *भणन*) कहना।

भनभनाना–क्रि॰ अ॰ (*अनु॰*) गुंजारना, भुनभुनाना, भन भन शब्द करना (मक्खियों), क्रोध से बड़बड़ाना।

भनभनाहट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भनभनाना+आहट प्रत्य॰*) गुंजार, भनभनाने का शब्द।

भनाना–क्रि॰ स॰ (दे॰) भुनाना, बड़े सिक्के के बदले छोटे सिक्के लेना, **भुनाना, भजाना** (दे॰)।

भन्ना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **भाँज**, बड़े सिक्के के बदले छोटे सिक्के **नामा** (प्रान्ती॰)।

भन्नाना–क्रि॰ अ॰ (*अनु॰*) भनभनाना, कुपित या क्रोधित होना, बड़बड़ाना, पीड़ा, चककर करना (सिर आदि)। संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ (दे॰) **भन्नाहट**।

भनित*–वि॰ दे॰ (सं॰ *भणित*) कहा हुआ।

भबका-भवका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भाप*) अर्क उतारने का यंत्र, **भभका दुर्गन्ध का**।

भभकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) उबलना, भड़कना, गरमी पाकर ऊपर उमड़ना, ज़ोर से जलना। प्रे॰ रूप–**भभकाना**।

भभकी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भभक*) घुड़की, धमकी, **भबकी** (दे॰)। यौ॰ **गीदड़ भभकी**।

भभ्भड़-भब्भड़–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *भीड़*) भीड़-भाड़, अव्यवस्थित जन समुदाय, **भब्भर** (दे॰)।

भभूका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भभक*) ज्वाला, लपट, **यौ॰** लाल भभूका।

भभूत-भभूति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विभूति*) धन, ऐश्वर्य, संपत्ति, लक्ष्मी, संपदा, राख, भस्म, **बभूत** (दे॰)।

भभोरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰) फाड़खाना।

भयंकर–वि॰ (सं॰) जिसे देखने से डर लगे, भीषण, भयानक, डरावना।

भयंकरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भीषणता।

भव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घोर विपत्ति या शंका, भीषण वस्तु के देखने से उत्पन्न एक मनोविकार, डर। **मु॰ भय खाना**–डरना, **भय दिखाना**–डराना। *क्रि॰ अ॰ हुआ, भै (व्र॰) भया।

भयप्रद–वि॰ (सं॰) **भयद**, भयानक, भीषण, **भयकारक, भयकारी**।

भयभीत–वि॰ यौ॰ (सं॰) डरा हुआ, सभीत।

भयवाद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भाई+आद प्रत्य॰*) एक ही गोत्र या वंश के लोग, भाई-बंध, बंधु-बाँधव।

भयहारी–वि॰ (सं॰ *भयहारिन्*) डर छुड़ाने या दूर करने वाला।

भया*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *हुआ*) हुआ, **भयो, भो** (व्र॰)।

भयातुर–वि॰ यौ॰ (सं॰) भयविह्वल, भयभीत, डरा हुआ, डरपोंक।

भयान*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *भयानक*) डरावना, भीषण।

भयानक–वि॰ (सं॰) भीषण, डरावना। संज्ञा, पु॰ भीषण दृश्य का वर्णन वाला एक रस, छठा रस (काव्य)। संज्ञा, स्त्री॰ **भयानकता**।

भयावन-भयावना–वि॰ (सं॰ *भय*) भयानक, डरावना, भयकारी।

भयावह–वि॰ (सं॰) डरावना, भयंकर।

भरंत*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भ्रांति*) संदेह, शक, भरने का भाव, भरती।

भर–वि॰ दे॰ (हि॰ *भरना*) तौल में सब, कुल, पूरा। *† क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *भार*) द्वारा, बल से। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भार*) मोटाई, बोझ, पुष्टि, भार एक तोला। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भरत*) एक नीच अस्पृश्य जाति।

भरक–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) भड़क; प्रिय उष्णता।

भरकना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *भड़कना*) भड़कना, गर्माना। स॰ रूप–**भरकाना**, प्रे॰ रूप–**भरकवाना**।

भरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **भरन** (दे॰) पालन, पोषण। वि॰ **भरणीय**।

भरणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तीन तारों से बना त्रिकोणाकार, 27 नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र, **भरनी** (दे॰)। एक कीड़ा जो साँप को फाड़ डालता है। वि॰ (दे॰) भरण-पोषण करने वाला।

भरत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कैकेयी से उत्पन्न दशरथ के लड़के रामचंद्र के छोटे भाई, इनकी स्त्री मॉडवी थीं; भरत, राजा दुष्यंत के शकुंतला से उत्पन्न पुत्र जिनसे इस देश का नाम भारत हुआ; एक संगीताचार्य, उत्तर भारत का एक प्राचीन देश (वाल्मी॰ रामा॰), नाटक में अभिनय करने वाला नट, नाट्य शास्त्र के रचयिता तथा आचार्य एक मुनि। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ भरद्वाज) लवा या बटेर की एक जाति। संज्ञा, पु॰ (दे॰) कोंसा या कसकुट धातु, ठठेरा।

भरतखंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा भरत कृत पृथ्वी के 9 खंडों में से एक, भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिंदुस्तान।

भरतपुत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भरत जी का लड़का।

भरता–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक सालन जो बैंगन या आलू को आग में भून कर बनाया, जाता है, **चोखा** (प्रान्ती॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भर्त्ता*) पति, स्वामी।

भरताग्रज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रामचंद्र।

भरतार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भर्त्ता*) पति, स्वामी, **भर्तार, भतार** (ग्रा॰)।

भरती–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भरना*) भरने का भाव, भरा जाना, प्रविष्ट होने का भाव। **मु॰ भरती करना**–किसी के बीच में रखना, बैठाना, सेना आदि में चयन होना। **भरती का**–बहुत ही तुच्छ या रद्दी।

भरथरी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भर्तृहरि*) एक राजा।

भरदूल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भरद्वाज*) लवा, बटेर, टिटिहरी।

भरद्वाज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा दिवोदास के पुरोहित एक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक और सप्त ऋषियों तथा वैदिक मंत्रकारों में गिने जाते हैं, इनके वंशज।

भरना–क्रि॰ सं॰ दे॰ (सं॰ *भरण,* स॰ रूप–**भराना**, प्रे॰ रूप–**भरवाना**) पूर्ण करना, उड़ेलना, उलटना, रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए कुछ डालना, तोपादि में गोली-बारूद आदि डालना, रिक्त पद की पूर्ति के लिए नियुक्त करना, चुकाना, देना, क्षति-पूर्ति या ऋण-परिशोध करना। **मु॰ किसी का घर भरना**–चुगली करना, छिप कर बुराई या निंदा करना। **माँग भरना**–विवाह में बर का कन्या की माँग में सिंदूर लगाना। **कोंछ भरना**–नव वधू को आशीष के साथ नारियल आदि देना (रीति)। निवाहना, निर्वाह करना, सहना, झेलना, पोतना, लगाना, काटना, डसना। क्रि॰ अ॰ खाली बरतन का किसी पदार्थ से पूर्ण होना, डाला जाना, मन में क्रोध होना, अप्रसन्न या असंतुष्ट रहना, घाव का पुरना, किसी अंग का अधिक श्रम से पीड़ा करना, शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना, खाली न रहना, ऋण-परिशोध होना, तोपादि में गोली-बारूद होना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) रिश्वत, घूस, भरने का भाव।

भरनि*†–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भरना*) करघा की ढरकी, नार (प्रान्ती॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *भरणी*) अश्विनी आदि 27 नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र।

भरपाई–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (हि॰ *भरना+पाना*) भली-भाँति, अच्छी तरह, पूर्ण रूप से, पूरा-पूरा पा जाना, चुकता होना। क्रि॰ स॰ यौ॰ (दे॰) **भरपाना**–अभीष्ट से विरुद्ध वस्तु मिलना (व्यंग्य) पूरा-पूरा पाना (अं॰) कंपेनसेशन होना, घबराना, भरभर शब्द करना, गिर पड़ना, भड़भड़ाना।

भरम*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भ्रम*) संदेह, धोखा, संशय, रहस्य, भेद। **मु॰ भरम न देना**–भेद न बताना। **भरम गँवाना**–भेद खोलना।

भरमना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *भ्रमण*) घूमना फिरना, मारा-मारा फिरना, भटकना, भ्रम या धोखे में पड़ना, बहकना, चकराना। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भ्रम*) भूल, भ्रम, धोखा, भ्रांति। स॰ रूप–**भरमाना प्रे॰** रूप–**भरमवाना**।

भरमाना–क्रि॰ सं॰ (दे॰) भटकाना, व्यर्थ इधर-उधर घुमाना, भ्रम में डालना, हैरान करना, बहकाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) चकित या हैरान होना।

भरमार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *भरना+मार=अधिकता*) बहुतायत, अधिकता।

भरमीला–वि॰ दे॰ (सं॰ *भ्रम*) संशयी, संदेही, भ्रमवाला।

भरराना, भर्राना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) भहराना (दे॰) अरराना, टूट पड़ना, भररा शब्द से गिरना।

भरसक–क्रि. वि. यौ. (हि. *भर=पूरा+सक=बल*) यथाशक्ति, बलभर, जहाँ तक हो सके।

भरहरा–संज्ञा, पु. (दे.) भरभर शब्द के साथ गिरना। मु. **भरहरा खाकर**।

भरहरना, भरहराना–क्रि. अ. दे. (हि. *भरहराना*) भरभराना, टूट पड़ना।

भराई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भरना*) भरने का कार्य का भाव या मज़दूरी।

भराव–संज्ञा, पु. (हि. *भरना+आव प्रत्य.*) भरने का कर्म या भाव, भरत।

भरित–वि. (सं.) भरा हुआ।

भरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भर*) एक रुपए के बराबर की या दस माशे भर की तौल।

भरु[+]–संज्ञा, पु. (सं. *भार*) भार, बोझ।

भरुआ-भरुवा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भँड़ुआ*) भड़ुआ, भड़ुवा, सफरदाई, पछुआ। वि. दे. (हि. *भरना*) भरा हुआ।

भरुआना–क्रि. अ. दे. (सं. *भार*) भारी होना, **भरुहाना** (दे.)।

भरुहाना†–क्रि. अ. दे. (हि. *भरी+होना*) अहंकार या घमंड करना। क्रि. स. दे. (सं. भ्रम) धोखा देना, बहकाना, बढ़ावा देना, उत्तेजित करना।

भरैया†–वि. दे. (सं. *भरण*) पालक, रक्षक। वि. दे. (हि. *भरना+ऐया–प्रत्य.*) भरने वाला।

भरोस, भरोसा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर+आशा*) आसरा, सहारा, अवलंब, आशा, विश्वास।

भर्ग–संज्ञा, पु. (सं.) शंकर, महादेव या शिवजी।

भर्त्ता–संज्ञा, पु. (सं. *भर्त्त*) स्वामी, पति, विष्णु, अधिपति, **भरता** (दे.)।

भर्त्तार–संज्ञा, पु. (सं. *भर्तृ*) स्वामी, पति।

भर्तृहरि–संज्ञा, पु. (सं.) उज्जयिनी-नृप श्री विक्रमादित्य के भाई एक प्रख्यात कवि और वैय्याकरणी राजा।

भर्त्सना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) डाँट-फटकार, ताड़ना, निंदा, शिकायत।

भर्म–*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रम*) भ्रम, संदेह, भरम।

भर्राना–क्रि. अ. दे. (*अनु. भर से*) भर्र-भर्र शब्द होना, भरभर शब्द से गिरना।

भल–वि. (हि. *भला*) अच्छा, भला।

भलपति–संज्ञा, पु. दे. यौ. (*हि. भाला+पति सं.*) भाला बाँधने वाला, नेजेबरदार। वि. यौ. भला-पति।

भलमनसत, भलमरसाहत, भलमनसी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भला+मनुष्य*) सजानता, **भलमनसी**। वि. **भलामानुस**।

भला–वि. दे. (सं. *भद्र*) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया। यौ. **भला-बुरा**–सीधी उलटी बात, अनुचित बात, डाँट-फटकार, अच्छा या बुरा। संज्ञा, पु. कल्याण, कुशल, भलाई, लाभ, अच्छाई। यौ. **भला बुरा**–लाभ-हानि। अव्य. अस्तु, अच्छा, खैर, वाक्यारंभ या वाक्य के मध्य में नहीं सूचक शब्द। **मु. भले ही**–ऐसा होता रहे या हुआ करे, इससे कोई हानि नहीं अच्छा ही है।

भलाई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *भला+ई प्रत्य.*) नेकी, उपकार, भलापन, कुशलता, अच्छाई।

भले–क्रि. वि. (हि. *भला*) अच्छी तरह, भली-भाँति, पूर्ण रूप से। वि. अच्छे। अव्य. वाह, खूब।

भलेरा*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भला*) अच्छा।

भल्ल–संज्ञा, पु. (सं.) भला।

भल्लूक–संज्ञा, पु. (सं.) रीछ।

भषंग, भवंगा*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भुर्जन*) साँप।

भवंगम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भुजंगम*) साँप।

भवंत–वि. (सं. *भवत्*) भवत् का बहुवचन, आप लोग।

भवँर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रमर*) भौंर।

भवँरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) भ्रमरी, ब्याह में अग्नि प्रदक्षिणा, भौंरी।

भव–संज्ञा, पु. (सं.) जन्म, उत्पत्ति, संसार, मेघ, कुशल, शिव, कामदेव, सत्ता, जन्म-मरण का दुःख, **भौ** (दे.)। वि. शुभ, उत्पन्न। संज्ञा, पु. (सं. *भय*) भय, डर।

भवदीय–सर्व. (सं.) तुम्हारा, आपका।

भवन–संज्ञा, पु. (सं.) महल, घर, मकान, मंदिर, छप्पय का एक भेद (पिं.)। संज्ञा, पु. दे. (स. *भुवन*) संसार, जगत्।

भवना, भँवना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *भ्रमण*) झुकना, मुड़ना, चक्कर लगाना, घूमना, फिरना। स. रूप–**भवाना**।

भवनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भवन*) घरनी, स्त्री।

भवबंधन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार का झंझट, जन्म-मरण का दुख, साँसारिक कष्ट।

भवभंजन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परमेश्वर।

भवभामिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पार्वती।

भवभूति–संज्ञा, पु. (सं.) संस्कृत के एक प्रमुख कवि। संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) संसार की विभूति।

भवभूप, भवभूपति*†–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार के राजा, जगत्पति।

भवभूप, भवभूषण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार का गहना, शिवजी का गहना, साँप, भरम।

भवमोचन–वि. यौ. (सं.) जन्म-मरण आदि संसार-बंधन से छुड़ाने वाले, भगवान।

भव-वारिधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार-सागर, **भवोदधि**।

भवविलास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अज्ञान-जन्य संसारी सुख, मोह-माया, प्रपंच।

भवसंभव–वि. यौ. (सं.) साँसारिक।

भवादृश–वि. (सं.) आपके तुल्य।

भवा-भवानी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पार्वतीजी।

भवार्गाव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार-सागर, **भवसागर**।

भवान्–सर्व. (सं.) आप। वि. **भवदीय**।

भवितव्य–संज्ञा, स्त्री. (सं.) होनहार।

भवितव्यता–संज्ञा, पु. (सं.) होनहार, भावी, होतव्यता, भाग्य, होनी।

भविष्णु–संज्ञा, पु. (सं.) भावी, होनहार, होतव्यता।

भविष्य–वि. (सं. *भविष्यत्*) आगे आने वाला समय, वर्तमान काल से आगे का काल, भावी।

भविष्यत्–संज्ञा, पु. (सं.) भावी, भविष्य।

भविष्यवक्ता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आगे होने वाली बात का कहने वाला, ज्योतिषी, दैवज्ञ, भविष्यवाणी करने वाला।

भविष्यद्वाणी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) प्रथम ही से कही गई, आगे होने वाली बात।

भवीला*†–वि. दे. (हि. *भाव+ईला प्रत्य.*) भाव-पूर्ण या युक्त, तिरछा, बाँका।

भवेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेवजी।

भवैया–संज्ञा, पु. (दे.) कत्थक, नचैया।

भवोदधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार सागर, **भवसागर**।

भव्य–वि. (सं.) देखने में सुंदर या भारी, मंगल और शुभ सूचक, भविष्य में होने वाला, सत्य, मनोरम।

भव्यता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भव्य का भाव।

भस–संज्ञा, पु. (दे.) भस्म, राख, किसी पदार्थ की असह्य गंध।

भसकना–क्रि. अ. (दे.) गिरना, पड़ना, फाँकना, बुरे रूप से अधिक खाना।

भसना†–क्रि. अ. दे. (*वं.*) जल पर तैरना, जल में डूबना।

भसभसा–वि. (दे.) पोला, थलथला।

भसम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भस्म*) भस्म, राख, विभूति।

भसमा–संज्ञा, पु. दे. (फा. *दस्मा का अनु.*) एक तरह का ख़िज़ाब। भसमा-रोग–बहुत खाने का रोग।

भसर–क्रि. वि. (दे.) भस शब्द से गिरना या बैठना।

भखान†–संज्ञा, पु. दे. (*वँ. भसाना*) काली आदि की मूर्त्ति को नदी में प्रवाहित करना, बहा देना।

भसाना†–क्रि. स. दे. (*वं.*) किसी वस्तु को पानी में डालना या तैराना।

भसोंड़ा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) कमल की जड़, कमल की नाल, **मुरार** (प्रान्ती.)।

भसुंड–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भुशुंड*) हाथी।

भसुंडी, भुशुंडी–संज्ञा, पु. दे. (संज्ञा, पु. (दे.) काकभुसुंड गणेश।

भसुर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *ससुर का अनु.*) जेठ, पति का बड़ा भाई।

भस्त्र–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धौंकनी।

भस्म–संज्ञा, पु. (सं. *भस्मन्*) राख, खाक। वि. जो जल कर राख हो गया हो, **भस्मसात, भस्मीभूत**।

भस्मक–संज्ञा, पु. (सं.) एक रोग जिसमें भोजन तत्काल पच जाता है।

भस्मता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भस्म होने का धर्म या भाव।

भस्मसात–वि. (सं.) जलकर भस्म होना।

भस्मासुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक दैत्य।

भस्मीभूत–वि. (सं.) जो जल कर राख हो गया हो।

भहराना–क्रि. अ. (*अनु.*) बड़े शब्द के साथ एकाएक गिर पड़ना, टूट पड़ना।

भाँउर-भाँवरि–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भाँवर*), अग्नि-परिक्रमा, भाँवर, भौंरी। (ब्याह.)।

भाँग–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भृंगा*) एक मादक पत्तियों वाली

बूटी, विजया, भंग। वि. **भँगेड़ी। मु. भाँग खा जाना या पी जाना**–पागलपने या नशे की सी बातें करना। **भाँग छानना**–भंग को पीस कर पीना। **घर में भूँजी भाँग न होना**–बहुत कंगाल होना।

भाँज–संज्ञा, स्त्री. (हिं. *भाँजना*) घुमाने का भाँजने का भाव, मरोड़, नोट आदि के बदले में दिया गया धन, भुनाव।

भाँजना–क्रि. स. दे. (*सं. भंजन*) तह करना, **मरोड़ना**, मोड़ना, खडग लाठी, मुगुदर आदि घुमाना। प्रे. रूप–**भँजाना, भँजवाना**।

भाँजी†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भांजना=मोड़ना*) किसी के हानि पहुँचाने की बात, चुगुली। **मु. भाँजी मारना**–किसी को हानि पहुँचाने की बात कहना, विघ्न डालना।

भाँटा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृतांक*) बैंगन, **भटा** (ब्र.)।

भाँड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भंड*) दिल्लगी-बाज, नक्काल, विदूषक, मसखरा, सभाओं में नाचने-गाने और हास्यपूर्ण नक़लें करने का पेशेवर, नंगा, निर्लज्ज, बरबाद। संज्ञा, पु. (सं. *भांड*) बरतन, भाँडा, उत्पात, भंडा फोड़, रहस्योद्घाटन। संज्ञा, स्त्री. **भँड़ैती**।

भाँड़ना*†–क्रि. अ. दे. (*सं. भंड*) व्यर्थ इधर-उधर घूमना, मारे-मारे फिरना। क्रि. स. किसी को बदनाम करते फिरना, बिगाड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना।

भाँड, भाँड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भांड*) पात्र, बरतन, **भँड़वा** (ग्रा.)। **मु. भाँड़े में जी देना**–किसी पर दिल लगा होना। **भाँडे भरना**– धन इकट्ठा होना, किसी को खूब देना, पछिताना। **भाँड़ा भर देना**–खूब धन देना, बहुत दान देना।

भांडागार–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) ख़ज़ाना, कोप, (कोश) भंडार।

भांडागारिक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भंडारी, कोषाध्यक्ष, खजानची।

भांडार–संज्ञा, पु. (सं.) ख़ज़ाना, कोष, उपयोगी वस्तुओं का संग्रहालय, **भंडार** (दे.) एक सी अनेक बातें या गुण जिसमें हो। संज्ञा, पु. (सं. **भाँडारी-भंडारी**।

भाँत-भाँति-भाँती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भेद*) प्रकार, तरह, किस्म, रीति।

भाँपना†–क्रि. स. (दे.) पहचानना, ताड़ना, देखना, अनुमान करना, समझना।

भाँयँ-भाँयँ–संज्ञा, पु. दे. (*अनु.*) अत्यंत एकांत स्थान या सन्नाटे में होने वाला शब्द, निर्जनता।

भाँरी†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **भावँर** (हि.) **भौंरी, भाँवरी** (दे.)।

भाँवना†–क्रि. स. दे. (*सं. भ्रमण*) खरादना, कुनना, भली-भाँति सुंदरता से बनाना, रचना, दही आदि बिलोड़ना।

भाँवर-भाँवरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भ्रमण*) परिक्रमा करना, अग्नि की वह परिक्रमा जो वर और कन्या विवाह के अंत में करते हैं (रीति) **भौंरी, भाँवरि** (दे.)। संज्ञा, पु. **भँवर, भौंर, भ्रमर, भौंरा, भौंरी**।

भा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आभा, कांति, चमक, दीप्ति, शोभा, किरण, बिजली, छटा, रश्मि। *† अव्य. दे. यदि इच्छा हो, भला, चाहे, या अच्छा। *सा. भू. क्रि. अ. (ब्र.) भया, भयो, हुआ।

भाइ*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाव*) प्रीति, प्रेम, स्वभाव, विचार, तरह, रंग-ढंग, प्रकार, चाल-ढाल। संज्ञा, पु. दे. (दे.) **भइकरा** (ग्रा.) भाई, **भाय**।

भाई–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रातृ.*) बंधु, भ्राता, **भैया** (ग्रा.) सहोदर, एक पीढ़ी के दो व्यक्ति बराबर वालों का संबोधन शब्द।

भाई-चारा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भाई+चारा प्रत्य.*) कुटुंब, वंश, मैत्री, संवंध, घरेलू संबंध या व्यवहार भाइयों के समान आपसी प्रेम।

भाईदूज–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *भाई+दूज*) कार्तिक शुक्ल की यमद्वितीया, भैयादूज, **भइयादूइज** (ग्रा.)।

भाईबंद–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *भाई-बंधु*) कुटुंब या वंश के लोग, बंधु-बाँधव, मित्र लोग। संज्ञा, स्त्री. **भाईबंदी**।

भाई-बिरादर–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) कुटुंब और जाति के लोग। संज्ञा, स्त्री. **भाईबिरादरी**।

भाउ, भाऊ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाव*) स्वभाव, भाव, स्नेह, विचार, प्रेम, भावना, अवस्था या दशा, अभिप्राय, प्रयोजन, महिमा, सत्ता, स्नेह, वृत्ति, स्वरूप, महत्त्व चित्तवृत्ति। संज्ञा, पु. (दे.) भव (सं.) जन्म, उत्पत्ति।

भाएँ*†–क्रि. वि. दे. (सं. *भाव*) समझ में, बुद्धि के अनुसार।

भाकर–संज्ञा, पु. (सं.) भास्कर, सूर्य।

भाकसी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *भखी*) भट्टी।

भाख*†–संज्ञा, पु. (सं. *भाषण*) भाषण, बातचीत।

भाखना*†–क्रि. स. दे. (सं. *भाषण*) कहना, कथन करना।

भाखा‡–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *भाषा*) बोली, बातचीत।

भाग–संज्ञा, पु. (सं.) खंड, अंश, हिस्सा, पार्श्व, ओर। संज्ञा, स्त्री. (सं. *भाग्य*) किस्मत, नसीब, तकदीर, माथा, भाल, सौभाग्य का कल्पित स्थान, सवेरा, प्रभात, किसी राशि को कई अंशों या हिस्सों में बाँटने की क्रिया (गणि.), बाँटना।

भागड़–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भागना*) भगदड़, बहुत से लोगों का घबरा कर एकदम एक साथ भागना। वि. भागने वाला, **भगोड़ा** (दे.)।

भागना–क्रि. अ. दे. (सं. *भाज्*) दौड़कर चलना, चला जाना, पलायन करना, हट जाना; पीछा छुड़ाना, किसी काम या बात से बचना या हटना। **मु. सिर पर पैर रखकर भागना**–बड़े वेग से भागना।

भागधेय–संज्ञा, पु. (सं.) भाग्य, राजा का कर।

भागनेय–संज्ञा, पु. (सं.) भानजा, **भैने, भानेज** (ग्रा.)।

भागफल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लब्धि।

भागवंत†–वि. दे. (सं. *भाग्यवान*) भाग्यवान्, क़िस्मती, तकदीरी, भाग्यशाली।

भागवत–संज्ञा, पु. (सं.) व्यास कृत 18 पुराणों में से एक पुराण जिसमें श्रीकृष्ण-लीला 12 स्कंधों, 312 अध्यायों और 18000 श्लोकों में वर्णित है। इसे वेदांत का तिलक मानते हैं, देवी भागवत पुराण, परमेश्वर का दास, 13 मात्राओं का एक छंद। वि. भागवत संबंधी।

भागिनेय–संज्ञा, पु. (सं.) भानजा, बहिन का लड़का, **भैने** (ग्रा.)। स्त्री. **भागिनेयी**।

भागी–संज्ञा, पु. (सं.) *भागिन्*) अधिकारी, हकदार, हिस्सेदार, भाग्यवान् (यौगिक में) जैसे–**बड़भागी**।

भागीरथ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भगीरथ*) भगीरथ राजा।

भागीरथी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गंगा नदी।

भाग्य–संज्ञा, पु. (सं.) मनुष्य के कार्यों को पूर्व ही से निश्चित करने वाला अवश्य-भावी दैवी विधान, नसीब, तक़दीर, किस्मत, विधि लेख, **भाग** (दे.)। वि. हिस्सा करने योग्य। **मु. भाग्य खुलना**–सुख मिलना। **भाग्य जागना**–धनी या सुखी होना। यौ. **भाग्यग्राही**–हिस्सेदार। **यौ. भाग्यभरोसा**–धीरता, भाग्याधीन।

भागयवंत, भाग्यवान–वि. (सं. *भाग्यवत्*) धनी, **भाग्यशाली**।

भाग्यहीन–वि. यौ. (सं.) कंगाल, अभागा।

भाग्याधीन–वि. यौ. (सं.) दैवी विधान के अधीन।

भाचक्र–संज्ञा, पु. (सं.) क्रांतिवृत्त।

भाजक–वि. (सं.) विभाग करने या बाँटने वाला, किसी राशि में भाग देने का अंक (गणि.), विभाजक।

भाजन–संज्ञा, पु. (सं.) पात्र, योग्य, आधार, बरतन।

भाजना–क्रि. अ. (दे.) भागना, भगना।

भाजी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) तरकारी, साग़, माँढ़, पीच।

भाज्य–(सं.) वह पदार्थ जो बाँटा जावे, जिस अंक में भाजक के भाग दिया जाय (गणि.)। वि. विभाग करने योग्य।

भाट–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भट्ट*) चारण, राजाओं का यशोगान करने वाले, बंदी, सूत, नीच ब्राह्मणों की एक जाति, चाटुकार। स्त्री. **भाटिन**। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **भटैती, भटाँय**।

भाटा–संज्ञा, पु. (दे.) समुद्र के पानी के चढ़ाव का उतार, पानी का उतार होना। विलो. **ज्वार**।

भाठी*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भट्ठी*) भट्ठी।

भाड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रष्ट*) भड़भूजों की अनाज भूनने की भट्ठी। **मु. भाड़ झोंकना (चूल्हा बुझाना)**–तुच्छ या अयोग्य कार्य करना। **भाड़ में झोंकना (डालना)**–नष्ट करना, जाने देना, फेंकना।

भाड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाट*) किराया। **भारा** (दे.)। **मु. भाड़े का टट्टू**–अस्थायी, क्षणिक, निकम्मा।

भाण–संज्ञा, पु. (सं.) हास्य रस-पूर्ण दृश्य-काव्य या एक एकांकी रूपक (नाट्य) बहाना, मिस, ब्याज।

भात–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भक्त*) पानी में उबाला या पकाया चावल, विवाह की एक रीति जिसमें कन्या वाला समधी को भात खिलाता है। संज्ञा, पु. (सं.) प्रकाश, प्रभात, सवेरा। बहन की संतान के विवाह पर भाई द्वारा दिए जाने वाले उपहार।

भाति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कांति, आभा, शोभा।

भाथा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भस्त्रा, पा. भत्था*) तूणीर, तरकश, बड़ी भाथी या धौंकनी।

भाथी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भस्त्री*) भट्ठी की आग सुलगाने की धौंकनी।

भादों–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाद्र, प्रा. भद्दी*) भाद्रपद, सावन के बाद और कार्तिक के प्रथम का एक महीना, **भादौं** (दे.)।

भाद्र-भाद्रपद–संज्ञा, पु. (सं.) भादों।

भाद्रपदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक नक्षत्र-समूह–इसके दो भाग हैं–(1) पूर्व भाद्र-पद, (2) उत्तर भाद्रपद।

भान–संज्ञा, पु. (सं.) चमक, रोशनी, प्रकाश, कांति, दीप्ति, आभास, ज्ञान, प्रतीति।

भानजा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भगिनी+अः*) भाग्नेय, बहिन का पुत्र, **भैने, भानैज** (ग्रा.)। स्त्री. **भानजी**।

भानना*†–क्रि. स. दे. (सं. *भंजन*) काटना, तोड़ना, भंग या नष्ट करना, दूर करना, मिटाना। क्रि. स. (हि. *भाव*) समझना।

भानमती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भानुमती*) जादूगरनी। यौ. **मु. भानमती का पिटारा**–विचित्र और मनोरंजक वस्तुओं की राशि, विचित्र, कुतूहलकारी और मनोरंजक वातों का समूह।

भानवी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भानवीया*) भानुजा, यमुना, जमुना नदी।

भाना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *भान=ज्ञान*) ज्ञात या मालूम होना, जान पड़ना, अच्छा या भला लगना, पसंद आना, शोभा देना। क्रि. स. दे. (सं. *भा–प्रकाश*) चमकाना।

भानु–संज्ञा, पु. (सं.) राजा, सूर्य, विष्णु, किरण, रश्मि।

भानुज–संज्ञा, पु. (सं.) यम, शनिश्चर, कर्ण, मनु। स्त्री. **भनुजा**।

भानुजा–संज्ञा, पु. (सं.) यमुना।

भानुतनय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यम, शनि, मनु, कर्ण।

भानुतनया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यमुना। **भानुतनूजा-भानुतनूजा**–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *भानुतनूजा*) यमुना।

भानुमत्–वि. (सं.) प्रकाशमान्। संज्ञा, पु. सूर्य।

भानुमती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राजा भोज की कन्या जो इंद्रजाल की बड़ी ज्ञाता थी।

भानुसुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यम, मनु, कर्ण, शनिश्चर, **भानुतनय**।

भानुसुता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यमुना।

भाप-भाफ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वाष्प पा. बप्प*) जल के अति सूक्ष्म कण जो उसके खौलने पर ऊपर उठते दीखते हैं, ताप पाने पर घनीभूत या द्रवीभूत वस्तुओं की दशा (यौ. शा.)। वाष्प, ताप के कारण भौतिक पदार्थों की सूक्ष्मावस्था।

भापना-भाँपना–क्रि. स. (दे.) अटकल लगाना, कूतना, भीतरी भेद का अनुमान करना, भाप से बफारा देना।

भाभर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वप्र*) पहाड़ों की तराई का वन।

भाभरा*†–वि. दे. (हि. *भा+भरना*) लाल।

भाभी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भाई*) भौजाई, **भउजी** (ग्रा.), संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भावी*) होतव्यता। **मु. भाभई आना**–बुरी दशा या योग होना।

भाम–संज्ञा, पु. (सं.) एक वर्णिक छंद, (पिं.) *संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भाभा*) स्त्री।

भाभा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्त्री, वामा।

भामिनि, भामिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्त्री, पत्नी।

भामिनी-विलास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पंडितराज जगन्नाथ कृत एक काव्य-ग्रंथ।

भाय‡–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भाई*) भाई। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *भाव*) विचार, भाव, मन की वृत्ति, परिमाण, भाव, दर, ढंग, भाँति, प्रेम, विचार, लेखे।

भायप–संज्ञा, पु. (दे.) **भाइए,** भाईचारा।

भाया–सा. भू. क्रि. स. (हि. *भाना*) अच्छा लगा, पंसद आया। वि. (दे.) प्यारा, प्रिय, भावता।

भारंगी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक जंगली पौधा जो औषधि के काम आता है, असबरग, **बँभनेटी** (प्रान्ती.)।

भार–संज्ञा, पु. (सं.) बीस पंसेरी की माप, बोझा, बहँगी का बोझ, रक्षा, सँभाल, उत्तरदायित्व, किसी कार्य के करने का जिम्मा। **मु. भार उठाना**–उत्तरदायित्व अपने सिर लेना। **भार उतारना (उतरना)**–कार्य पूर्ण करना (होना) कर्तव्य या ऋण उतारना। **किसी के सिर से भार उतारना**–सहाय करना, सहारा, आधार, आश्रय, 2000 पल या एक तोला की तौल। **मु. अपना (अपने सिर का) भार दूसरे के सिर या माथे (डालना)**–अपना कार्य, ऋण या उत्तरदायित्व दूसरे पर छोड़ना। *†संज्ञा, पु. (दे.) भाड़।

भारत–संज्ञा, पु. (सं.) महाभारत का मूल ग्रंथ जिसमें चौबीस हजार श्लोक हैं। भारतवर्ष, हिंदुस्तान, आर्य्यावर्त, भरतवंशी, घोर युद्ध, लंबी कथा। संज्ञा, पु. (सं.) युधिष्ठिर, अर्जुनादि।

भारतखंड-भरतखंड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भारतवर्ष।

भारतवर्ष–संज्ञा, पु. (सं.) उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में कन्याकुमारी तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी से पश्चिम में सिंध नदी तक का देश, आर्य्यावर्त, हिंदुस्तान, भरतखण्ड।

भारतवर्षीय-भारतवासी–संज्ञा, पु. (सं.) भारतवर्ष का निवासी, **भारतीय,** भारतवर्ष में होने वाला, **भारतवर्षी** (दे.)।

भारती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वचन, गिरा, वाणी, सरस्वती, वीभत्स और रौद्र रस के वर्णन की एक वृत्ति (काव्य.), ब्राह्मी, संन्यासियों के 10 भेदों में से एक भेद। वि. भारत की, भारत का, भारतवासी, भारतीय।

भारतीय–वि. (सं.) भारत संबंधी। संज्ञा, पु. **भारत-वासी,** भारत का रहने वाला या निवासी, हिंदुस्तानी, **भारती** (दे.)।

भारथ†*–संज्ञा, पु. दे. (सं. भारत) भारत ग्रंथ, घोर युद्ध, संग्राम, भरतवंशीय।

भारथी–संज्ञा, पु. दे. (सं. भारत) सैनिक, सिपाही।

भारद्वाज–संज्ञा, पु. (सं.) भारद्वाज के वंशज, द्रोणाचार्य, भरदल पक्षी, श्रौत और गृह्य-सूत्र के रचयिता एक ऋषि, भारद्वाज गोत्र के लोग।

भारवाहक–वि. (सं.) बोझ ढोने वाला; कुली।

भारवाही–वि. (दे.) बोझ ढोने वाला।

भारवि-भारवी–(दे.)–संज्ञा, पु. (सं.) किरातार्जुनीय काव्य के रचयिता एक संस्कृत के कवि।

भारा†–वि. दे. (सं. *भार*) बोझा, भार। संज्ञा, पु. भाड़ा, किराया।

भाराक्रांत–वि. यौ. (सं.) बोझ से पीड़ित।

भाराक्रांता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक वर्णिक छंद (पिं.)।

भारावलंबकत्व–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।

भारी–वि. (स. *भार*) गुरु, जिसमें बोझा हो, बोझिल, कठिन, बड़ा, कराल, विशाल। **मु. भारी भरकम**–देखने में बड़ा और भारी। गंभीर, अत्यंत, बहुत सूजा या फूला हुआ, शांत, प्रबल, असह्य।

भारीपन–संज्ञा, पु. (हि.) गुरुत्व, बोझिल।

भार्गव–संज्ञा, पु. (सं.) भृगुवंशीय-व्यक्ति, शुक्राचार्य, परशुराम, मार्कंडेय, एक उपपुराण, जमदग्नि, वैश्य जाति का एक भेद। वि. भृगुसंबंधी, भृगु का।

भार्गवेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *भार्गव+ईश*) परशुराम।

भार्य्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पत्नी, स्त्री।

भाल–संज्ञा, पु. (सं.) मस्तक, माथा, ललाट, कपाल।– रामा.। संज्ञा, पु. दे. (हि. *भाला*) बरछा, भाला, वाण की गाँसी या फल। संज्ञा, पु. दे. (सं. *भल्लुक*) भालू, रीछ।

भालचंद्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी, सहादेवजी, गणेश।

भालना–क्रि. स. (दे.) भली-भाँति देखना, खोजना, ढूँढ़ना। यौ. **देखना-भालना**।

भाललोचन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी।

भाला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भल्ल*) बरछा।

भालाबरदार–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *भाला+बरदार* फ़ा.) बरछैत, बरछा बाँधने या चलाने वाला। संज्ञा, स्त्री. **भालावरदारी**।

भालि*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भाला*) भाले की नोक या गाँसी, काँटा।

भालु–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भल्लुक*) रीछ।

भालुक–संज्ञा, पु. (सं.) रीछ, भालू।

भालुनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जामवंत।

भालू–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भल्लुक*) रीछ।

भावंता*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भाना*) प्रिय, प्रीतम, प्रियतम, प्रेमपात्र, प्यारा। संज्ञा, पु. दे. (सं. *भावी*) होनहार।

भाव–संज्ञा, पु. (सं.) सत्ता, मन की इच्छा या प्रवृत्ति, विचार, उद्देश्य, अभिप्राय, तात्पर्य, मुख की चेष्टा या मुद्रा, जन्म, आत्मा, पदार्थ, प्रेम, चित्त, प्रकृति, कल्पना, ढंग, स्वभाव, प्रकार, अवस्था, दशा, विश्वास, भावना, आदर, विक्री का हिसाब, दर, प्रतिष्ठा, सम्मान, भरोसा, आकृति। अस्तित्व (विलो. **अभाव**)। **मु. भाव उतरना या गिरना**–किसी वस्तु का मूल्य बढ़ जाना। **भाव चढ़ना (बढ़ना)**–मूल्य बढ़ जाना। श्रद्धा, भक्ति, गीत के अनुसार अंगों का चलाना, ईश्वरादि के प्रति भक्ति या श्रद्धा, नायिका के मन में नायक के दर्शनादि से

उत्पन्न विकार, गान के विषयानुसार शरीर या अंगों का विशेष रूप से संचालन। **मु॰ भाव देना (दिखाना)**–मुखाकृति या अंग-संचालन या इंगन से मन की दशा प्रगट करना। नखरा, चोचला, नाज, अदा।

भावई, भावै†–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *भाना*) जी चाहे, अच्छा लगे।

भावक*–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *भाव*) थोड़ा सा, रंचक, किंचित, तनिक। वि॰ (सं॰) भावपूर्ण, भाव से भरा। संज्ञा, पु॰ (सं॰) भावना करने वाला, भक्त, प्रेमी, भाव युक्त, अनुरागी।

भावगति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) इच्छा, विचार, ख्याल, इरादा।

भावगम्य–वि॰ यौ॰ (सं॰) श्रद्धा, भक्ति और प्रेम भाव से ग्रहण करने के योग्य।

भावज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *भ्रातृजाया*) भौजी, भौजाई, भाभी, भाई की स्त्री। **भउजी** (प्रा॰)। वि॰ (सं॰) भाव से उत्पन्न।

भावता–वि॰ (हि॰ *भावना*) प्रिय, जो, भला या अच्छा लगे। संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रेम पात्र, प्रियतम, प्यारा, **भावता**। स्त्री॰ **भावती** (ब्र॰)।

भावताव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) दर, निर्ख, किसी वस्तु का मूल्य।

भावन*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *भावना*) प्रिय, अच्छा या प्यारा लगने वाला, जो भला लगे। यौ॰ **मनभावन**।

भावना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्मृति और अनुभव से उत्पन्न चित्त का एक संस्कार मनसा, विचार, कल्पना, ध्यान, ख्याल, विचार, इच्छा, चाह। पुट देना, किसी चूर्णादि को किसी द्रव रस में तर कर घोटना, जिससे द्रव-रस का गुण उसमें या जावे (वैद्य॰)। *क्रि॰ अ॰ (दे॰) अच्छा लगना, पसंद आना। वि॰ दे॰ (हि॰ *भावना*) प्यारा, प्रिय।

भावनि*†–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भाना*) जो मन में आवे, इच्छानुकूल बात।

भावनी–वि॰ (सं॰) भवितव्यता, होनहारी।

भावनीय–वि॰ (सं॰) भावना करने योग्य।

भावभक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) श्रद्धा, प्रेम और भक्ति-भाव, सम्मान, सत्कार,, आदर।

भाववाचक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का गुण, दशा, स्वभावादि जाना जावे या किसी व्यापार का बोध हो (व्या॰), जैसे–**नीचता**।

भाववाच्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह वाक्य जिसमें भाव प्रधान हो और कर्त्ता तृतीयांत हो, अथवा क्रिया का वह रूप जो सूचित करके कि वाक्य का उद्देश्य कोई भाव मात्र है (व्या॰), जैसे–मुझसे पढ़ा नहीं जाता।

भावसंधि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक अलंकार जहाँ दो विरुद्ध भावों का मेल प्रगट हो।

भावशबलता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अलंकार जिसमें कई एक भाव एक साथ प्रगट किए जाते हैं (काव्य॰)।

भावाभास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भाव का आभास मात्र प्रगट करने वाला एक अलंकार (काव्य॰)।

भावार्थ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) तात्पर्य, अभिप्राय, मतलब, किसी पद्य या वाक्य का मूल भाव-सूचक अर्थ।

भावालंकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक अलंकार (काव्य॰)।

भाविक–वि॰ (सं॰) मर्मज्ञ, भेद जानने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) भूत और भविष्य को भी वर्तमान या सूचित करने वाला एक अलंकार (काव्य॰)।

भावित–वि॰ (सं॰) चिंतित, विचारित, सोचा-विचारा हुआ।

भावी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *भाविन्*) आगे आने वाला समय, भविष्यत् काल, भवितव्यता, होनहार, भाग्य, अवश्यंभावी बात।

भावुक–वि॰ (सं॰) सोचने या भावना करने वाला, जिस पर भावों का प्रभाव शीघ्र पड़े, अच्छी-अच्छी बातें सोचने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **भावुकता**।

भाषण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कथन, व्याख्यान, वक्तृता। वि॰ **भाषणीय**।

भाषना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *भाषण*) कहना, बोलना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *भक्षण*) **भखना**, खाना, भोजन करना।

भाषांतर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰), उल्था, अनुवाद, एक भाषा से दूसरी में करना।

भाषा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कहीं किसी समाज में प्रचलित बातचीत का ढंग, वाणी, बोली, वाक्य, जवान (फ़ा॰), आजकल की हिंदी मन के भावों को प्रगट करने वाला शब्दों और वाक्यों का समूह।

भाषाबद्ध–वि. यौ. (सं.) साधारण देश की बोली या वाणी में बना (लिखा) हुआ।–रामा.।

भाषासम, भाषासमक–संज्ञा, पु. (सं.) एक शब्दालंकार जिसमें कई भाषाओं में समान रूप से बोले जाने वाले शब्दों की योजना हो (काव्य.)।

भाषित–वि. (सं.) कथित, वर्णित, कहा हुआ।

भाषी–संज्ञा, पु. (सं. *भाषिन्*) कहने या बोलने वाला।

भाष्य–संज्ञा, पु. (सं.) किसी गूढ़ या गहन विषय या सूत्रों की वृहत् टीका या व्याख्या।

भाष्यकार–संज्ञा, पु. (सं.) सूत्रों की व्याख्या करने वाला, भाष्य रचने वाला।

भास–संज्ञा, पु. (सं.) प्रकाश मयूख, कांति, दीप्ति, चमक, किरण, इच्छा।

भासना–क्रि. अ. दे. (सं. *भास*) चमकना, प्रकाशित होना, प्रतीत या मालूम या ज्ञात होना, दिखाई देना, फँसना, लिप्त होना।

भासमान–वि. (सं.) दिखाई या जान पड़ता हुआ, भासता हुआ।

भासांत–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य, चंद्रमा, पक्षी विशेष। वि. मनोहर, सुहावना, रमणीय।

भासित–वि. (सं.) प्रकाशित, चमकीला।

भासुर–वि. (सं.) प्रकाशमान, दीप्तिमान।

भास्कर–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य, सोना, सुवर्ण, अग्नि, शिव, वीर, पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे बनाना।

भास्कराचार्य–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रसिद्ध ज्योतिषी या गणितज्ञ।

भास्वर–संज्ञा, पु. (सं.) दिन, सूर्य। वि. प्रकाशमान, चमकदार।

भिंगना–क्रि. स. दे. (हि. *भिगोना*) भिगोना, **भीगना**। स. रूप–**भिंगाना**। प्रे. रूप–**भिंगवाना**।

भिंजाना–क्रि. स. दे. (हि. *भिगोना*) भिगोना, **भिजोना** (ग्रा.)। प्रे. रूप–**भिजवाना**।

भिंडिपाल, भिंदिपाल–संज्ञा, पु. (दे.) एक अस्त्र विशेष, गोफना, छोटा डंडा।

भिंडी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *भिंडा*) एक तरह की फली जिसकी सब्ज़ी बनती है।

भिक्षा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यात्रा, माँगना, दीनता से उदर पूर्ति के लिए माँगने का काम, याचना, भीख, माँगने से मिला अन्न या पदार्थ, **भिच्छा, भीख** (दे.)।

भिक्षापात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भीख माँगने का बरतन।

भिक्षार्थी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भीख चाहने वाला, याचक।

भिक्षु-भिक्षुक–संज्ञा, पु. (सं.) भिखारी, बौद्ध-संन्यासी। स्त्री. **भिक्षुणी**।

भिखमंगा–संज्ञा पु. दे. (हि.) भिक्षुक, भिखारी, याचक।

भिखारिणी-भिखारिनी(दे.)–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भिक्षुणी*) भिखमंगिन।

भिखारी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भिक्षुक*) भिक्षुक, भिखमंगा। स्त्री. **भिखारिन, भिखारिणी, भिखारिनी**।

भिगाना–क्रि. स. दे. (हि. *भिगाना*) भिगोना, **भिजोना, भिगावना** (ग्रा.)। प्रे. रूप–**भिगवाना**।

भिगोना–क्रि. स. दे. (हि. *अभ्यंज*) भिगाना, पानी से तर करना, **भिगोवना, भिजोना** (ग्रा.)

भिचना–क्रि. स. (व्र.) बंद होना, मिचाना, खिंचना।

भिजवाना, भेजवाना–क्रि. स. दे. (हि. *भेजना का प्रे. रूप*) किसी के यहाँ भेजने में लगाना, पठाना, पठवाना।

भिजाना–क्रि. स. दे. (हि. *भिगोना*) भिगोना। क्रि. स. (हि. *भिजवाना*) **भेजाना,** भेजने में लगाना, **पठाना, पठवाना, पठावना**।

भिज्ञ–वि. (सं.) जानकार, ज्ञाता। संज्ञा, स्त्री. **भिज्ञता**।

भिटनी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) स्तन का अग्र भाग. फूल के नीचे का भाग। वि. छोटा, लघु।

भिड़–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *बर्रे*) बर्रे, ततैया, बर्रैया।

भिड़ंत–संज्ञा, पु. (दे.) भिड़ने का भाव, लड़ाई, मल्ल।

भिड़ना–क्रि. अ. दे. (अनु. *भड़*) लड़ना, टकराना, टक्कर खाना, बहस करना, झगड़ना। स. रूप-**भिड़ाना,** प्रे. रूप-**भिड़वाना**।

भितरघात–संज्ञा, स्त्री. अंदर घुसकर घात करना, मिलकर मारना; (अं.) सैवेटाज़।

भितला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भीतर+तल*) दोहरे वस्त्र का भीतरी अस्तर या पल्ला। वि. भीतर या अंदर का। स्त्री. **भितल्ली**।

भित्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **भीत, भीति, भीती** (दे.) दीवार, दीवाल, भाते, डर, भय, वह वस्तु जिस पर चित्र

बनाया जावे।

भिद–संज्ञा, पु. (सं. *भिद्*) अंतर, भेद, भेदन।

भिदना–क्रि. अ. दे. (सं. *भिद्*) घुस जाना, प्रविष्ट या पैवस्त होना, छेदा जाना, घायल होना। स. रूप–**भिदाना,** प्रे. रूप-**भिदवाना।**

भिनकना–क्रि. अ. दे. (*अनु.*) भिनभिन शब्द करना, **भनभनाना।**

भिनसर-भिनुसार†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विनिशा*) सवेरा, प्रातःकाल।

भिन्न–वि. (सं.) अन्य, पृथक्, अलग, जुदा, अपर, दूसरा, इतर। संज्ञा, पु. इकाई से कम संख्या (गणि.)।

भिन्नता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अलगाव, भेद, अंतर, विलगता, पृथक्ता।

भिलनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भील*) भीलिनी, भीलिन, भिल्लिनी।

भिलाँवाँ-भेलावाँ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भल्लातक*) एक जंगली पेड़ जिसका फल औषधि के काम आता है।

भिलौंजा-भिलौंजी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) भिलाए का बीज।

भिल्ल†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भील*) भील।

भिश्त*†–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *विहिश्त*) बैकुंठ, स्वर्ग, विहिश्त, जन्नत।

भिश्ती–संज्ञा, पु. (दे.) सक्का, मशक से पानी ढोने वाला।

भिषक्-भिषज्–संज्ञा, पु. (सं.) वैद्य, डाक्टर, हकीम।

भींगना–क्रि. अ. दे. (सं. *अभ्यंज*) तर या गीला होना, आर्द्र होना। स. रूप–**भिंगाना, प्रे. रूप–भिंगवाना।**

भींचना–क्रि. स. दे. (हि. *खींचना*) खींचना, मींचना, कसना।

भींजना*†–क्रि. अ. दे. (हि. *भीगना*) गीला, तर या आर्द्र होना, भीगना, गदगद् या पुलकित होना, नहाना, समा जाना, मेल पैदा करना, भीजना।

भी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) डर, भय। अव्य. (हि.) अवश्य, तक, लौं, अधिक।

भीख–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भिक्षा*) भिक्षा।

भीखम*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भीष्म*) भीष्म पितामह। वि. (दे.) भीषण, भयानक।

भीगना–क्रि. अ. दे. (सं. *अभ्यंज*) पानी आदि से तर या आर्द्र होना।

भीजना†–क्रि. अ. दे. (हि. *भीगना*) भीगना, तर या आर्द्र होना।

भीटा–संज्ञा, पु. (दे.) ऊँची या टीलेदार भूमि, वह बनाई भूमि जहाँ पान होते हैं, तालाब के चारों ओर की ऊँची भूमि।

भीड़–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *भिड़ना*) मनुष्यों का जमाव या जमघट, जन-समुदाय। यौ. **भीड़-भाड़, भीड़-भड़क्का।** **मु. भीड़ छँटना**–भीड़ के लोगों का इधर-उधर चला जाना, भीड़ न रह जाना। **भीड़ लगना**–जन-समूह इकट्ठा होना। आपत्ति, विपत्ति, संकट, भीर।

भीड़-भड़क्का–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *भीड़-भाड़*) भीड़-भाड़, जमघट, जमाव।

भीड़भाड़–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *भीड़+भाड़ अनु.*) मनुष्यों का जमघट या जमाव, जन-समुदाय।

भीत–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भित्ति*) दीवाल, गच, छत, चटाई। **मु. भीत में दौड़ना**–अपनी शक्ति या सामर्थ्य से बाहर या असंभव कार्य करना। **भीत के बिना चित्र बनाना**–निराधार या बे सिर-पैर की बात करना, विभाग करने वाला परदा। वि. (सं.) डरा हुआ। स्त्री. **भीता।**

भीतर–क्रि. वि दे. (सं. *अभ्यतर*) अंदर। संज्ञा, पु. हृदय, दिल, अंतःकरण, रनिवास, स्त्री-भवन। यौ. **भीतर-बाहर, मु. भीतर-बाहर करना (देखना)**–सब काम करना, चौकसी रखना।

भीतरी–वि. (हि. *भीत+ई प्रत्य.*) गुप्त, अंदर का, भीतर वाला, मन का।

भीति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भय, डर। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भित्ति*) दीवाल। लो.–

भीनी–वि. (दे.) तर, गीला, सनी हुई, मंद, मधुर। जैसे–भीनी-भीनी सुगंधि।

भीम–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, शिव की आठ मूर्तियों में से एक मूर्ति, भयानक रस (काव्य.), भीमसेन (पाँडवों में से एक, जो वायु के द्वारा कुंती से उत्पन्न हुए थे और बड़े वीर तथा बलवान थे)। **मु. भीम के हाथी**–भीमसेन ने एक बार सात हाथी आकाश में फेंके थे जो आज भी वहाँ घूमते हैं। वि. भयानक, डरावना, बहुत बड़ा। संज्ञा, स्त्री. **भीमता।**

भीमकाय–वि॰ यौ॰ (सं॰) बड़े शरीर वाला।
भीमसेन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) युधिष्ठिर के छोटे और अर्जुन के बड़े भाई भीम।
भीमसेनी एकादशी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) ज्येष्ठ और माघ के शुक्ल पक्ष की एकादशी।
भीमसेनी कपूर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *भीमसेनीय कर्पूर*) एक प्रकार का उत्तम कपूर, **बरास** (प्रान्ती॰)।
भीर, भोरि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *भीड़*) भीड़, कष्ट, दुख, विपत्ति, आफत। *वि॰ दे॰ (सं॰ *भीरू*) भयभीत, डरा हुआ, कायर, डरपोक।
भीरु–वि॰ (सं॰) कायर, डरपोंक, **भीरू** (दे॰)।
भीरुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कायरता, बुजदिली, डर, भय।
भील–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भिल्ल*) एक जंगली जाति। स्त्री॰ **भीलनी**।
भीषज, भिसज*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भेषज*) वैद्य।
भीषण–वि॰ (सं॰) भयंकर, भयानक, डरावना, दुष्ट या उग्र, घोर। संज्ञा, पु॰ (सं॰) भयानक रस (काव्य॰)।
भीषणता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भयंकरता।
भीषम*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भीष्म*) भीष्म।
भीष्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भयानक रस (काव्य॰), शिव, राक्षस, गंगा-गर्भ से उत्पन्न राजा शांतनु के पुत्र, गांगेय, देवव्रत। वि॰ भयंकर, भीषण।
भीष्मक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रुक्मिणी के पिता विदर्भ-नरेश।
भीष्म-पंचक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासी तक के पाँच दिन जिनको लोग व्रत रखते हैं।
भीष्मपितामह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा शांतनु के पुत्र और कौरव-पांडव के पितामह या बाबा, देवव्रत, गांगेय।
भुंइ, भुँइया*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भूमि*) भूमि, पृथ्वी, अवनि।
भुँइफोर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *भुँई+फोरना*) **गुरजुआ** (प्रान्ती॰) एक बरसाती खुंभी।
भुँईहरा, भुँइधारा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *भुँइ+धर*) भूमि खोद कर नीचे बनाया गया स्थान या घर, तर-घर, तहख़ाना (फ़ा॰)।
भुँजना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *भुनना*) भुनना, झुलसना।
भुअंग, भुअंगम*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भुजंग, भुजंगम*) साँप, सर्प।
भुअन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भुवन*) भुवन, लोक।
भुआर, भुआल*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूपाल*) भूपाल राजा, **भुआलू** (दे॰)।
भुई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भूमि*) भूमि।
भुईआँवला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूम्यामलक*), एक प्रकार की घास जो औषधि के काम में आती है।
भुईडोल–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *भूकंप*) **भूडोल**, भूकंप।
भुईपाल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *भूमिपाल*) राजा, भूपाल।
भुईहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूमिहार*) एक प्रकार के क्षत्रियोचित निम्न श्रेणी के ब्राह्मण।
भुक*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भुज्*) भोजन, आहार, साथ, अग्नि।
भुक्खड़–वि॰ दे॰ (हि॰ *भूख+अड़ प्रत्य॰*) भूखा, पेटू, कंगाल, दरिद्र, बहुत खाने वाला।
भुक्त–वि॰ (सं॰) भक्षित, खादित, खा चुका, भोगा गया। यौ॰ **भुक्तभोगी**–पुनः भोग कर्ता, अति अनुभवी, भोगे हुए का भोग करने वाला।
भुक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आहार, खाद्य, भोजन, लौकिक सुख, क़ब्ज़ा।
भुखमरा–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *भूख+मरना*) जो भूखों मर रहा हो, पेटू, भुक्खड़ **मरभुखा**।
भुगत*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भुक्ति*) आहार, खाद्य, भोजन, लौकिक सुख।
भुगतना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *भुक्ति*) भोगना, सहना, झेलना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) बीतना, पूरा होना, निबटना, चुकना। स॰ रूप–**भुगताना**, प्रे॰ रूप–**भुगतवाना**।
भुगतान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भुगतना*) फैसला, निबटारा, देन, दाम चुकाना, बेबाकी, देना।
भुगताना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *भुगतना का स॰ रूप*) पूरा करना, बिताना, संपादन करना, चुकाना, चुकता करना, बेबाक करना, लगाना, झेलाना, भोग कराना, दुख देना। प्रे॰ रूप–**भुगतवाना**।
भुग्गा–वि॰ (दे॰) भोला, सीधा, भोंदू।
भुघ, भुघड़–वि॰ दे॰ (हि॰ *भूत+चढ़वा*) बेसमझ, मूर्ख, अपढ़।

भुजंग, भुजंगम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साँप।

भुजंगपाश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नागपाश नामक एक प्राचीन अस्त्र।

भुजंगप्रयात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पिंगल में एक वर्णिक छंद।

भुजंगा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भुजंग*) एक काला पक्षी, **भुजैटा** (ग्रा॰)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) साँप।

भुजंगिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साँपिनी, गोपाल नाम का एक छंद (पिं॰)।

भुजंगी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साँपिनी, नागिनी, एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

भुज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हाथ, बाहु, बाँह। **मु॰ भुज में भरना (भुज भर भेंटना)**–मिलना, आलिंगन करना। हाथी की सूँड़, डाली, शाखा, किनारा, त्रिभुज या अन्य किसी क्षेत्र के किनारे की रेखा या आधार (*ज्यामि॰*), समकोण का पूरक कोण, दो की संख्या का बोधक, संकेत शब्द।

भुजंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साँप सीसा, विदूषक, पति।

भुजदंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बाहुदंड, हाथ।

भुजपाश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गले में हाथ डालना, गलबाहीं, गरबाहीं (ब्र॰)।

भुजप्रतिभुज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सरल क्षेत्र की सम्मुख भुजाएँ (*ज्यामि॰*)।

भुजबंद, भुजबंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बाजूबंद (*भूषण*)।

भुजवीहा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *भुज+विंशति*) बीस हाथों वाला रावण।

भुजमूल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पक्खा, मोढ़ा, काँख। **कँखरी** (ग्रा॰) खवा (*प्रान्ती॰*)।

भुजवा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भड़भूँजा, **भुँजवा**।

भुजा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हाथ, बाहु, बाँह। **मु॰ भुजा (भुज) उठाना या टेकना**–प्रतिज्ञा करना।

भुजाली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *भुजा+आली प्रत्य॰*) एक तरह की टेढ़ी बड़ी छुरी, खुसरी, छोटी बरछी, **कुकरी** (*प्रान्ती॰*)।

भुजिया†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भूजना=भूनना*) उबले हुए धान या चावल, सूखी भूनी हुई तरकारी।

भुर्जी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भुँजवा।

भुजैल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भुजंग*) भुजंगा-पक्षी।

भुजैना, भुजैना‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भूजना*) भूना अन्न, भूजा, भूनने या भुनाने की मजदूरी, **भुँजवा**।

भुट्टा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मृष्ट, प्रा॰ भुट्टी*) बाजरा, मक्का और ज्वार की हरी बाल। **घौद** (*प्रान्ती॰*) गुच्छा। स्त्री॰ अल्पा॰ **भुट्टी**।

भुठौर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भूड़+ठौर*) घोड़े की एक जाति।

भुतना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूत*) छोटा भूत। स्त्री॰ **भुतनी**।

भुतहा–वि॰ दे॰ (हि॰ *भूत+हा-प्रत्य॰*) भूत का, भूत के समान, फूहड़, जिसमें भूत रहें।

भुन–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰*) भुनगे या मक्खी आदि का शब्द, अव्यक्त गुंजार।

भुनगा–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰*) एक छोटा उड़ने वाला कीड़ा, पतिंगा। स्त्री॰ **भुनगी**।

भुनना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *भूनना*) भूना जाना, क्रोध से जलता। स॰ रूप–**भुनाना,** प्रे॰ रूप–**भुनवाना**। क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *भुनाना*) तपाया या भुनाया जाना, भुँजना।

भुनभुनाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) भुन-भुन शब्द करना, बढ़बढ़ाना, मन में कुढ़ कर अस्पष्ट स्वर से कुछ बकना। संज्ञा, स्त्री॰ **भुनभुनाहट**।

भुनवाई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) भुनवाने की मज़दूरी।

भुनाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भुनाना*) भूनने की क्रिया या मजदूरी। **भुँजवाई, भुँजाई**।

भुनाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *भूनना का प्रे॰ रूप*) कोई वस्तु किसी से भुनवाना, भुँजाना। आग पर रखवा, गर्म बालू डलवा या गर्म घी-तेल आदि में छोड़वा कर पकवाना, क्रि॰ स॰ (सं॰ *भंजन*) बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना, तुड़ाना। संज्ञा, स्त्री॰ **भुनवाई**।

भुवि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भू*) भूमि, पृथ्वी, महि, अवनि।

भुमिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूमि*) ज़मींदार।

भुरकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *भुरण*) सूखकर भुरभुरा हो जाना, भूलना। क्रि॰ स॰ (दे॰) भुरभुराना, बुरकना। स॰ रूप–**भुरकाना**–छिड़कना। **प्रे॰** रूप–**भुरकवाना**।

भुरकस, भुरकस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भुरकना*) चूर्ण, चूर चूर। **मु॰ भुरकुस निकलना (होना)**–चूर-चूर होना, इतना मारा जाना कि हड्डी-पसली चूर-चूर हो जावें। विनष्ट होना।

भुरता, भरता–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भुरकना या भुरभुरा*) दब-दबाकर विकृत या चूर-चूर हो जाना, भरता नाम का बैंगन आदि का सालन, **चोखा** (ग्रा.) **(किसी को) भुरता बनाना (करना)**–बहुत मारना।

भुरभुर, भुरभुरा–वि. (*अनु.*) वह वस्तु जिसके कण थोड़ी ही चोट से अलग-अलग हो जाएँ, बलुआ। स्त्री. **भुरभुरी**।

भुरभुराना–क्रि. सं. (दे.) भुरभुरा करना, चूर्ण करना, भुरकना।

भुरवाना–क्रि. सं. (दे.) भुलवाना, (दे.) बहकाना, भ्रम में डलवाना।

भुलक्कड़–वि. दे. (हि. *भूलना*) बहुत भूलने वाला, **भुलैया** (ग्रा.), जिसका स्वभाव भूलने का हो।

भुलाना–क्रि. स. (हि. *भूलना*) भूल जाना, विस्मरण करना या कराना, भ्रम में डालना। क्रि. अ. (दे.) अटकना, विस्मरण होना, भूलना, भ्रम में पड़ना, राह भूलना, भरमना। प्रे. रूप–**भुलवाना**।

भलावा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भूलना*) धोखा, छल, बहकाव।

भुवंग, भुवंगम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भुजंग, भुजंगम*) साँप।

भुवः–संज्ञा, पु. (सं.) अंतरिक्ष, लोक, सूर्य और भूमि के अंतर्गत।

भुव–संज्ञा, पु. (सं.) आग, अग्नि। संज्ञा स्त्री. (सं.) भूमि, पृथ्वी। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भ्रू*) भ्रू, भौं, भौंह।

भुवन–संज्ञा, पु. (सं.) संसार, जगत, जल, लोग, जन, लोक जो चौदह हैं सात तो पृथ्वी से ऊपर और सात पृथ्वी के तले हैं। लोक जो तीन हैं, आकाश, पाताल, पृथ्वी। चौदह भुवन या लोक, पृथ्वी से ऊपर के सात भुवन हैं–भू, भुवः, स्वः, मह, जनः, तपः, सत्य। पृथ्वी से नीचे के सात भुवन हैं :–अतल, वितल, सुतल, तलातल (गभस्तिमत्), महातल, रसातल, पाताल, चौदह की संख्या का सूचक संकेत शब्द, सारी सृष्टि।

भुवनकोश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मांड, संसार, भूमंडल, पृथ्वी।

भुवनपति, भुवनाधिपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ईश्वर, भूपति, राजा।

भुवनेश, भवनेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भुवनपति, ईश्वर, अखिलेश।

भुवपाल*–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूपाल, राजा, **भुवपालक**।

भुवलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अंतरिक्ष लोक।

भुवा–संज्ञा, पु. (हि. *धूआ*) धूआ, रुई।

भुवार, भुवाल*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *भूपाल*) राज्य, **भुआल, भुवालू** (आ.)।

भुवि–संज्ञा, स्त्री. (सं. *भू*) भमि, पृथ्वी, पृथ्वी में।

भुशुंडी–संज्ञा, पु. (सं.) काकभुशुंडी। संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक प्राचीन अस्त्र।

भुस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *तुष*) भूसा। **मु. भुस में डालना (मिलाना, तरे जाना)**–व्यर्थ नष्ट करना; भुस भर देना–मारकर शरीर में भूसा भरना।

भुसी*–संज्ञा, स्त्री. (हि. *भूसा*) भूसी।

भुसेरा, भुसौरा–संज्ञा, पु. (हि. *भूसा*) वह घर जहाँ भूसा भरा जाता है, तुपशाला (सं.), **भूसाघर**।

भूँकना–क्रि. अ. दे. (*अनु*) भूँ-भूँ या भौं-भौं शब्द करना (कुत्तों सा), कुत्तों का बोलना, व्यर्थ बकना।

भूँख–संज्ञा, स्त्री. (दे.) भूख, बुभुक्षा। वि. **भूँखा**।

भूँवाल–संज्ञा, पु. (सं. *भूचाल*) भूकंप, भूडोल।

भूँजना†–क्रि. स. दे. *(हि. भूनना)* तपाना, भूनना, सताना, दुख देना, जलाना। क्रि. स. दे. (सं. भोग) भोगना। स. रूप–**भुँजाना, प्रे. रूप-भुँजवाना**।

भूँजा†–संज्ञा, पु. (दे.) (हि. *भूनना*) भूना हुआ चबेना, भड़भूँजा।

भूँडोल–संज्ञा, पु. दे. (हि.) भूकंप।

भू–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूमि, पृथ्वी। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भ्रू*) भौंह, भ्रू।

भूआ–संज्ञा, पु. (दे.) सेमर आदि की रुई।

भूई, भुई–संज्ञा, स्त्री. दे (हि. *बूआ*) रुई के तुल्य नरम छोटा टुकड़ा।

भूकंप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूचाल, भूडोल।

भूखंड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पृथ्वी का टुकड़ा, पृथ्वी।

भूख–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *बुभुक्षा*) क्षुधा, खाने की इच्छा, बुभुक्षा, कामना, इच्छा, आवश्यकता (व्यापारी)।

भूखन*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भूषण*) गहना, भूषण, जेवर, अलंकार, **भूषन** (दे.)।

भूखा–वि. पु. दे. (हि. *भूख*) बुभुक्षित, क्षुधित, जिसे भूख लगी हो, दरिद्र, इच्छुक। स्त्री. **भूखी**। संज्ञा, स्त्री. (दे.)–क्षुधा, खाने की इच्छा।

भूगर्भ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, पृथ्वी का भीतरी भाग, एक विद्या, पृथ्वी विद्या या विज्ञान।

भूगर्भशास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पृथ्वी-विद्या, पृथ्वी-विज्ञान जिससे पृथ्वी के ऊपरी और भीतरी भाग की बनावट या रूपादि का ज्ञान होता है।

भूगोल–संज्ञा, पु. यो. (सं.) पृथ्वी का गोला, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के धरातल, प्राकृतिक भागों और उसकी दशाओं आदि का ज्ञान होता है, वह पुस्तक जिसमें पृथ्वी के स्वाभाविक भागों आदि का वर्णन हो।

भूचरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) योग में समाधि की एक मुद्रा (योग.)।

भूचाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूकंप, भूडोल।

भूटान–संज्ञा, पु. (दे.) भारत से उत्तर तथा नैपाल से पूर्व में हिमालय का एक प्रदेश।

भूटानी–वि. (हि. *भूटान+ई प्रत्य.*) भूटान का, भूटान संवंधी। संज्ञा, पु. भूटान का निवासी, भूटान का घोड़ा। संज्ञा, स्त्री. भूटान का भाषा।

भूटिया बादाम–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *भूटान+बादाम*-फ़ा.) एक पहाड़ी पेड़ जिसका फल खाया जाता है, **कपासी** (प्रान्ती.)।

भूडोल–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) भूकंप भूचाल।

भूत–संज्ञा, पु. (सं.) पाँच वे मूल तत्त्व का पदार्थ जिनसे सब सृष्टि बनी है, पाँच तत्त्व, पाँच महाभूत, द्रव्य, जीवधारी, चराचर, जड़ या चेतन पदार्थ या प्राणी। **मु. भूत-दया**–जड़-चेतन या चराचर पर होने वाली कृपा। जीव, प्राणी, बीता हुआ समय, सत्य रुद्रानुचर प्रथमगण, या एक प्रकार के पिशाच (पुरा.)। एक देव-योनि। मृतक, पिशच, प्रेत, शव, शैतान, जिन, मृत देह, मृत प्राणी की आत्मा। **मु. भूत चढ़ना या सवार होना**–बहुत ही हठ या आग्रह होना, अधिक क्रोध होना। क्रिया के व्यापार की समाप्ति-सूचक क्रिया का रूप (व्या.), बीता हुआ समय। वि. विगत या बीता हुआ, गत, काल, मिला हुआ, युक्त, समान, जो हो गया हो।

भूतत्व–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूत होना, भूत का धर्म या स्वभाव। यौ. पृथ्वी तत्त्व।

भूतत्वविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भूगर्भ विद्या, भूगर्भशास्त्र, प्रेत-विद्या।

भूतनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी।

भूतपति–संज्ञा, पु. (सं.) शिवजी।

भूतपूर्व–वि. यौ. (सं.) वर्तमान से पूर्व का, बीते हुए समय का।

भूतभर्त्ता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी।

भूतभावन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी, विष्णु।

भूतभाषा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) प्राचीन पैशाची भाषा, प्रेतों की बोली, प्राचीन भाषा।

भूतयज्ञ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पंचयज्ञों में से एक, भूत-बलि, वलिवैश्व।

भूतराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी।

भूतल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल, संसार, दुनिया, पाताल।

भूत-बाधा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भूतों के आक्रमण से उत्पन्न बाधा।

भूतांकुश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कश्यप ऋषि, गावजुबान (औष.)।

भूतात्मा–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *भूतात्मन्*) शरी, जीव या जीवात्मा, परमेश्वर, शिवजी।

भूति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राज्यश्री, ऐश्वर्य, वैभव, धन, संपत्ति, राख, भस्म, वृद्धि, उत्पत्ति, अणिमादि आठ सिद्धियाँ, अधिकता।

भूतिनि-भूतिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भूत*) प्रतिनी, शाकिनी, डाकिनी, पिशाचिनी। भूत-योनि को प्राप्त स्त्री। वि. दुष्ट स्त्री।

भूतृण–संज्ञा, पु. (सं.) रूसा, रूस।

भूतेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी।

भूतेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेवजी।

भूतोन्माद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूत या प्रेत के कारण होने वाला उन्माद (वैद्य.)।

भू-दान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूमि का दान।

भूदेव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मण।

भूधर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पर्वत, पहाड़।

भूधराकार–वि. यौ. (सं.) पर्वताकार।

भून*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भ्रूण*) गर्भ।

भूनना–क्रि. स. दे. (सं. *मर्जन*) कोई वस्तु पकाना, गरम बालू डाल, आग पर रख या गर्म घी आदि में डालकर

कुछ वस्तु पकाना, तलना, अति कष्ट देना, **भूँजना**। द्वि॰ रूप—**भुनाना, प्रे**॰ रूप—भुनवाना।

भूप-भूपति—संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा।

भूपाल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा, एक नगर, एक ताल। लो॰

भूपाली—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक रागिनी (संगी॰)।

भूभल—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *भू+भुर्ज या अनु॰*) गर्म रेत, गर्म धूलि या राख। **ततूरी** (प्रान्ती॰) **भूभुर** (ग्रा॰)।

भूभुरि, भूभुरी*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूभल*) गर्म धूलि या रेत, **भुलभुल** (आ॰)

भूभुज, भूभृत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा।

भूमंडल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वी का गोला।

भूमि—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भू, पृथ्वी, महि, धरा, अवनि, ज़मीन, आधार, क्षेत्र, स्थान, प्रान्त, देश, प्रदेश, जड़ या बुनियाद, योगी को क्रम से प्राप्त होन वाली दशाएँ (योग॰)।

भूमिका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भेस बदलना, रचना-मुख, **दीवाचा** (अ॰) किसी पुस्तक के आरंभ में ग्रंथ संबंधी आवश्यक और ज्ञातव्य बातों की सूचना, प्राक्कथन, वक्तव्य, मुखबंध रचना। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भूमि, क्षिप्त, गूढ़द्ध विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध नामक चित्त की पाँच अवस्थाएँ (वेदा॰)।

भूमिज—वि॰ (सं॰) पृथ्वी से उत्पन्न, मंगल।

भूमिजा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीताजी, भूमिसुता, **भूमितनया**।

भूमिनाग—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) केचुवा नाम का एक बरसाती सर्पाकार पतला छोटा कीड़ा।

भूमिपति—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा।

भूमिपुत्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुजा, मंगल।

भूमिया—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूमि+इया प्रत्य॰*) ज़मींदार, ग्राम देवता।

भूमिरुह—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पेड़, वृक्ष।

भूमिसुत—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भूमितनय, मंगल, भौम, कुंज।

भूमिसुता—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) भूमितनया, सीताजी, अवनिजा।

भूमिहार—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्राह्मणों की एक जाति।

भूमींद्र, भूमीश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा, **भूमीश्वर**।

भूयूय, भूयः—अव्य॰ (सं॰ *भूयस्*) फिर, पुनः।

भूयोभूय—अव्य॰ यौ॰ (सं॰ *भूयोमूयस्*) बार-बार, फिर-फिर, पुनः-पुनः।

भूर, भूरि—वि॰ दे॰ (सं॰ *भूरि*) अधिक, बहुत। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भुरभुरा*) बालू, रेत। *संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **भेंट**, उपहार, दान। **मु॰ भूर बँटना**।

भूरज—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूर्ज*) भोज-पत्र। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *भू+रज*) धूलि, मिट्टी, गर्द।

भूरजपत्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *भूर्जपत्र*) भोजपत्र।

भूरपूर, भूरिपूरि*†—वि॰, क्रि॰ वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *भरपूर*) भरपूर, सब प्रकार से पूर्ण अधिक और पूर्ण।

भूरा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *बभ्रु*) खाकी रंग, मिट्टी का सा रंग, कच्ची चीनी, बूरा। वि॰ मटमैले या ख़ाकी रंग का। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **भूरापन**।

भूरि, भूरी—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु, ब्रह्म, शिव, सोना, सुवर्ण, इंद्र। वि बहुत, अधिक, बड़ा।

भूरितेज—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *भूरितेजस्*) आग, अग्नि, सोना, सूर्य।

भूरिद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुत देने वाला। स्त्री॰ **भूरिदा**।

भूरिश्रवा—वि॰ (सं॰ *भूरिश्रवस्*) कीर्तिमान, बड़ा यशस्वी। संज्ञा, पु॰ सोमदत्त का पुत्र एक राजा (महाभारत)।

भूरुह—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भोजपत्र।

भूल—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भूलना*) भूलने का भाव, चूक, गलती, कसूर, अशुद्धि, अपराध, दोष, त्रुटि। यौ॰ **भूल-चूक**।

भूलना—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विह्वल*) सुधि या याद न रखना, विसार देना, विस्मरण करना, चूकना, ग़लती करना, खो देना। क्रि॰ अ॰ स्मरण न रहना, विस्मरण होना, ग़लती होना, चूकना, लुभाना, खो जाना, इतराना, मुग्ध होनां द्वि॰ रूप—**भुलाना**, प्रे॰ रूप—**भुलवाना**।

भूलनी, भुलनी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मार्ग भुला देने वाली एक घास।

भूलभुलैयाँ—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *भूल+भुलाना+ऐया प्रत्य॰*) घुमाव या चक्करदार इमारत जिसमें जाकर लोग ऐसे भूल जाते हैं कि उनका बाहर निकलना कठिन हो जाता है, **चकाबू**, बड़े घुमाव-फिराव की बात या घटना।

भूलोक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वीलोक, संसार, दुनिया।

भूवा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *धूआ*) सेमर की रुई, कपास की रुई। वि॰ सफ़ेद, उज्ज्वल, उजला।

भूशायी–वि. यौ. (सं. *भूशायिन्*) धराशायी, ज़मीन पर सोने वाला, भूमि पर गिरा हुआ, मृतक, मुरदा।

भूषण–संज्ञा, पु. (सं.) विभूषण, गहना, आभूषण, जेवर, अलंकार, वह वस्तु जिससे किसी की शोभा बढ़ जाए। संज्ञा, पु. (सं.) हिंदी के एक प्रसिद्ध महाकवि जो शिवाजी के यहाँ थे।

भूषन*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भूषण*) भूषण, गहना, अलंकार।

भूषा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *भूषण*) जेवर, गहना, सजाने की क्रिया। यौ. **बेशभूषा**।

भूषित–वि. (सं.) विभूषित, अलंकृत सँवारा या सजाया हुआ, आभूपित, गहना पहिने हुए।

भूसन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भूषण*) भूषण, गहना।

भूसा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *तुष*) गेहूँ, जव आदि के डंठलों के नन्हें-नन्हें टुकड़े। यौ. **घास-भूसा**।

भूसी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *भूसा*) अन्न के दाने का ऊपरी छिलका, महीन या वारीक भूसा। यौ. **चूनीभूसी**।

भूसुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुज, भौम। मंगलग्रह, **भू-तनय**।

भूसुता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भू-तनया, सीता जी, कुजा, अवनिजा।

भूसुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्राह्मण, महिसुर। संज्ञा, पु. **भुसुरत्व**।

भृंग–संज्ञा, पु. (सं.) भौंरा, एक कीड़ा, बिजली।

भृंगराज–संज्ञा, पु. (सं.) **भँगरैया**, भँगरा, वनस्पति, **घमिरा** (ग्रा.), एक काला पक्षी, भीमराज।

भृंगी–संज्ञा, पु. (सं.) शिवजी का एक दास या परिषद्। संज्ञा, स्त्री. (सं.) भौंरी, बिलनी कीड़ा।

भृकुटि, भृकुटी, भृगुटी–(दे.) संज्ञा, स्त्री. (सं. *भृकुटी*) भौंह।

भृगु–संज्ञा, पु. (सं.) एक विख्यात मुनि जिन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी; शुक्राचार्य, परशुराम, शिव, शुक्रवार।

भृगुकच्छ–संज्ञा, पु. (सं.) एक तीर्थ, भड़ौच नगर (वर्तमान गुजरात में)।

भृगुनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **भृगुपति**, परशुरामजी।

भृगुनायक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परशुराम।

भृगुपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परशुराम।

भृगुमुख्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **भृगुवर**, परशुराम, **भृगुश्रेष्ठ**।

भृगुरेखा, भृगुलता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भृगुमुनि के पद प्रहार का विष्णु भगवान की छाती पर चिह्न।

भृगुसंहिता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भृगुमुनि कृत एक प्रसिद्ध ज्योतिष-ग्रंथ।

भृत–संज्ञा, पु. (सं.) दास, सेवक। वि. (सं.) पूरित, भरा हुआ, पालापोषा हुआ, (यौगिक में) जैसे–**भरभृत**।

भृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चाकरी, नौकरी, मज़दूरी, तनख्वाह, बेतन, दाम, भरना, मूल्य, पालना, पोषना।

भृत्य–संज्ञा, पु. (सं.) नौकर। स्त्री. **भृत्या**।

भृश–क्रि. वि. (सं.) अधिक, बहुत।

भेंगा–वि. (दे.) टेढ़ी या तिरछी आँख वाला, ऐंचाताना, **ढेरा** (ग्रा.)।

भेंट–संज्ञा, स्त्री. (हि. *भेंटना*) विलाप, मेल, मिलन, मुलाकात, दर्शन, उपहार, नज़र या नज़राना।

भेंटना‡*–क्रि. स. (हि. *भेंट*) मिलना, आलिंगन करना, मुलाकात करना, गले लगाना। स. रूप–**भेंटाना, भिंटाना**, प्रे. द्वि रूप–**भेंटवाना**।

भेंड़–संज्ञा, स्त्री. (दे.) भेड़ी। *संज्ञा, स्त्री. (दे.) बाधा। मु. **भेंड़ मारना**–किसी कार्य की सिद्धि में बाधा डालना।

भेक–संज्ञा, पु. (सं.) मेंढ़क मेघ, डरपोक आदमी।

भेख–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वेष*) रूप, वेष।

भेखज*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *भेषज*) ग्रह, पवन, जल।

भेजना–क्रि. स. दे. (सं. *ब्रजन्*) किसी व्यक्ति या वस्तु को कहीं से कहीं रवाना करना, पठाना, पठवाना। द्वि. रूप–**भेजाना** प्रे. रूप–**भेजवाना**।

भेजा–संज्ञा, पु. (दे.) मगज, दिमाग, मस्तिष्क, खोपड़ी के भीतर का गूदा। सा. भू. अ. क्रि. (हि. *भेजना*) पठाया।

भेड़, भेड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *भेष*) गाडर, बकरी जाति का एक छोटा चौपाया। **मु. भेड़िया धसान**–फल को बिना सोचे-समझे दूसरे का अनुकरण या अनुसरण करना।

भेड़ा–संज्ञा, पु. (हि. *भेड़*) भेड़ का नर, मेढ़ा, मेष। स्त्री **भेड़ी**। वि. (दे.) **भेंगा**।

भेड़िया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *भेड़*) कुत्ता जैसा स्यार जाति का एक माँसाहारी बनैला जंतु, **भेड़हा, जनाउर, जँड़ाउर** (ग्रा.)।

भेद–संज्ञा, पु. (सं.) छेदने या भेदने की क्रिया, शत्रु पक्ष के लोगों को फोड़कर अपनी ओर मिलाना या उनमें फूट

करा देना, विभेद, रहस्य, मर्म, तात्पर्य, अंतर, प्रकार।

भेदक–वि॰ (सं॰) भेदने या छेदने वाला रेचक, दस्तावर (वैद्य॰)।

भेदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बेधना, छेदना, भेदना, नीति। वि॰ **भेदनीय, भेद्य**।

भेदना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *भेदन*) बेधना, छेदना।

भेदभाव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फ़रक़, अंतर।

भेदिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भेद+इया प्रत्य॰*) गुप्तचर, जासूस, गुप्त बातें या रहस्य जानने वाला।

भेदी–संज्ञा, पु॰ वि॰ (सं॰ *भेदिन्*) भेदिया। लो॰–घर का भेदी लंका ढाए। वि॰ दे॰ भेदन करने वाला। जैसे–**मर्मभेदी**।

भेदीसार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बढ़ैयों का छेद करने का औजार, वरमा।

भेद–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भेद*) भेदी, भेद या मर्म जानने वाला।

भेद्य–वि॰ (सं॰) जो छेदा या भेदा जावे, **भेदनीय**।

भेन, भैन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *वहिन*) बहिन।

भेना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *भेवना*) भिगोना, **भेवना** (ग्रा॰)।

भेरा*†–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बेड़ा, भेड़ा।

भेरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बड़ा नगाड़ा, ढोल, दुन्दुभी, ढका।

भेरीकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भेरी+कार प्रत्य॰*) भेरी बजाने वाला। स्त्री॰ **भेरीकारी, भेरीकारिन**।

भेला*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भेंट*) भेंट। मुठभेड़, भिड़ंत। संज्ञा, पु॰ (दे॰) भिलावाँ (औप॰)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) पिंड या बड़ा गोला।

भेली†–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भेला*) गुड़ आदि की गोल पिंडी, या बट्टी, सिर के पीछे का उभरा भाग।

भेष–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वेष*) वेष, भेस, रूप। यौ॰ **भेष-भूषा। मु॰ भेष रखना (बनाना)**–दूसरे के रूपादि की नक़ल करना।

भेषज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) औषधि।

भेषना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰*भेष*) पहिनना, भेद, स्वाँग या रूप बनाना।

भेस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भेष*) बाहिरी रूप-रंग पहनावा आदि, वेष, रूप, बनावटी रूप वस्त्रादि।

भेसज*–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भेषज*) औषधि।

भेसना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *वेश,* हि॰ *भेस*) वेश धरना, वेश बनाना या रखना, वस्त्रादि पहिनना।

भैंस, भैंसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *महिष*) गाय जैसा एक काला और बड़ा दूध देने वाला चौपाया (मादा), एक प्रकार की मछली। लो॰– भैंस के आगे बीन बाजै, भैंस खड़ी पगुराय। वि॰ बहुत मोटी स्त्री।

भैंसा, भँइसा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *महिष*) भैंस का नर, महिष। वि॰ बहुत मोटा और सुस्त (व्यंग्य)। स्त्री॰ **भैंस, भैंसी**।

भैंसासुर–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *महिषासुर*) एक दैत्य (पुरा॰)।

भैचक, भैचक्क*†–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *भय+चक-चकित*) चकित, अचंभित, चकपकाया हुआ, **भौचक** (ब्र॰)।

भैना, भैनी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *बहिन*) बहिन।

भैने–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बहिन का लड़का, **भाँजा, भानैज**।

भैया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भ्रातृ*) भ्राता, भाई, बराबर वाले या छोटों का संबोधन।

भैयादूज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *भ्रातृ द्वितीया*) कार्तिक शुक्र द्वितीया, भाई-दुइज, जब बहिन भाई के तिलक करती है, यम-द्वितीया।

भैरव–वि॰ (सं॰) भयप्रद, भयानक, भयंकर, डरावना, भयावने या घोर शब्द वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) महादेवजी, शिवजी के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं, भयानक रस (काव्य), 6 रागों में से एक मुख्य राग, भयानक शब्द।

भैरवनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव, शिव के एक प्रमुखगण।

भैरवी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा, चामुंडा। एक राग (संगी॰)।

भैरवीचक्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वाम मार्गियों की मंडली।

भैरों–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **भैरव** (दे॰) शिव या शिव के एक मुख्य गण।

भैषज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) औषधि, दवा।

भोंकना–क्रि॰ स॰ (*अनु॰*) नुकीली चीज़ शरीर में घुसाना या धँसाना, घुसेड़ना। स॰ रूप–**भोंकाना,** प्रे॰ रूप–**भोंकवाना**।

भोंड़ा–वि॰ दे॰ (हि॰ *भद्दा या भों से अनु॰*) कुरूप भद्दा बदसूरत। स्त्री॰ **भोंड़ी**।

भोंड़ापन–संज्ञा, पु॰ (हि॰) भद्दापना, बेहूदगी।

भोंथरा–वि॰ (दे॰) गोठिल, कुंठित, बिना धार का, जो पैना न हो।

भोंदू–(हि॰ *बुद्धू*) मूख, बेवकूफ़।

भोंपू–वि॰ संज्ञा, पु॰ (*अनु॰* मुँह से फूँक कर बजाने का एक बाजा।

भोंसला, भोंसले–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूशिला*) महाराष्ट्रों या मरहठा राजाओं की उपाधि, महाराज शिवाजी और रघुनाथगव इसी कुल के थे।

भोई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कहार, धीमर, पालकी ढोने वाला।

भोक्तव्य–वि॰ (सं॰) भोगने या खाने योग्य।

भोक्ता–वि॰ (सं॰ *भोक्त*) भोजन या भोग करने वाला, भोगने वाला। संज्ञा, पु॰ **भोक्तृत्व**।

भोक्तृ––वि॰ (सं॰) खाने वाला। संज्ञा, पु॰ विष्णु, स्वामी, मालिक।

भोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुख-दुख का अनुभव करना, दुख या कष्ट, सुख, विलास, विषय, संभोग, देह, धन, भक्षण, पालन, भोजन करना, भाग्य, प्रारब्ध, भोगा जाने वाला पाप या पुण्य का फल, अर्थ, फल, देवमूर्ति आदि के सामने रखे हुए खाद्य पदार्थ, नैवेद्य, सर्प का फन, ग्रहों का राशियों में रहने का समय।

भोगना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *भोग*) दुख-सुख या भले-बुरे कर्मो का अनुभव करना, भुगतना, सहना। स॰ रूप–**भोगाना**, प्रे॰ रूप–**भोगवाना**।

भोगबंधक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *भोग्य+बंधक* हि॰) दख़ली रेहन, रेहन की हुई भूमि आदि के भोगने का अधिकार देने वाला रेहन।

भोगली–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) नाक में पहिनने की लौंग, कान का गहना, तरकी, लौंग या कर्णफूल के अटकाने की पतली पोली कील।

भोगवना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *भोग*) भोगना।

भोगविलास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुख-चैन, आमोद-प्रमोद, विषय-भोग।

भोगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भोगिन्*) भोगने वाला। वि॰ विषयासक्त, सुखी, इंद्रियों का सुख चाहने वाला, विलासी, विषयी, भूगतने वाला, आनंद करने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सर्प।

भोग्य–वि॰ (सं॰) भोगने योग्य, कार्य में लाने योग्य।

भोग्यमान–वि॰ (सं॰) जो भोगने को हो, जो अभी तक भोगा न गया हो।

भोज–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भोजन*) जेवनार, दावत, खाने की वस्तु। संज्ञा, पु॰ (सं॰) भोज का या भोजपुर प्रांत; अनेक मनुष्यों का एक साथ खाना-पीना, कान्यकुब्ज के राजा, रामभद्र देव के पुत्र, परमार वंशीय विद्वान संस्कृत कवि तथा मालवा के एक राजा। वि॰ **भोज्य**।

भोजक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भोगी, विलासी, भोग करने वाला।

भोजदेव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रसिद्ध कान्यकुब्ज नरेश।

भोजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खाना, खाने की वस्तु।

भोजनशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) रसोई-घर।

भोजनालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रसोई-घर।

भोजपत्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूर्जपत्र*) एक पेड़ और इसकी छाल जो प्राचीन काल में कागज का काम देती थी।

भोजपुरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *भोजपुर+ई प्रत्य॰*) भोजपुर की भाषा। संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राजा भोज की नगरी। संज्ञा, पु॰ भोजपुर का रहने वाला। वि॰ भोजपुर संबंधी, भोजपुर का।

भोजराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा भोज।

भोजविद्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) इंद्रजाल, भानुमती का खेल, बाजीगरी।

भोजी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भोजन*) खाने वाला।

भोज्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खाने की वस्तु, खाद्य पदार्थ। वि॰ खाने के योग्य।

भोट–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भोटग*) भूटान देश, एक तरह का बड़ा पत्थर।

भोटिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भोट+इया प्रत्य॰*) भूटान का रहने वाला, भूटानी। संज्ञा, स्त्री॰ भूटान की बोली या भाषा, वि॰ भूटान संबंधी, भूटान का, भूटानी।

भोटिया बादाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *भोटिया+बादाम* फ़ा॰) आलू-बुखारा, मूँगफली।

भोडर, भोडल†–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अभ्रक, अवरक, बुक्का, अभ्रक का चूर्ण।

भोपा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*अनु॰ भों*) भोंपू, एक तरह की तुरही, मूर्ख।

भोर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विभावरी*) सबेरा, तड़का, प्रातःकाल। *†संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भ्रम*) भ्रम, धोखा। वि॰ स्तंभित, चकित। *†वि॰ दे॰ (हि॰ *भोला*) सीधा, सरल, भोला।

भोरा*†–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *भोर*) सबेरा, तड़का, प्रातःकाल। *†वि॰ सीधा, भोला। स्त्री॰ भोरी।

भोरु*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भोर*) सबेरा, भोर।

भोला–वि॰ दे॰ (हि॰ *भूलना*) सरल, सीधा-सादा, मूर्ख, बे समझ।

भोलानाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *भोला+नाथ* सं॰) शिवजी, महादेवजी।

भोलापन–संज्ञा, पु॰ (हि॰) सिधाई, सादगी, सरलता, मूर्खता, वे समझी, नादानी।

भोलाभाला–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *भोला+भला अनु॰*) सरल चित्त का, सीधा-सादा।

भौं–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भ्रू*) भौंह, भृकुटी।

भौंकना–क्रि॰ अ॰ (अनु॰ *भौं भौं से*) भौं भौं शब्द करना, कुत्ते का बोलना, भूँकना, व्यर्थ वहुत बकवाद करना।

भौंचाल†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भूचाल*) भूडोल, भूकंप।

भौंड़ा–वि॰ (दे॰) भोड़ा, कुरूप, भद्दा।

भौंतुषा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भ्रमना=घूमना*) एक काले रंग का बरसाती कीड़ा जो पानी के ऊपर ही घूमा करता है। धातु के नीचे गिलटी निकलने का एक रोग, तेली का बैल।

भौंर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भ्रमर*) भौंरा, आवर्त, पानी के धार का चक्कर, मुश्की घोड़ा, नाँद।

भौंरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भ्रमर*) एक काला मोटा पतिंगा, भ्रमर, अलि, भंडेर, सारंग, बड़ी मधु-मक्खी, **डंगर** (प्रान्ती॰) डोरी से नचाने का एक खिलौना, काली का लाल भिड़, झूले में रस्सी बाँधने की लकड़ी। स्त्री॰ **भौंरी**। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भ्रमण*) घर के नीचे का छात, तरघर, तहखाना, खत्ती, स्त्री॰ सं॰ अन्न रखने का कुएँ सा गहरा गढ़ा।

भौंराना-भौंरियाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *भ्रमण*) घुमाना, प्रदक्षिण (परिक्रमा) कराना, ब्याह की भाँवर दिलाना, ब्याहना। क्रि॰ अ॰ दे॰ घूमना, फिरना।

भौंरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भ्रमण*) भौंरे की स्त्री, भाँवर, ब्याह में वर-कन्या की अग्नि-परिक्रमा, पानी का चक्कर, आवर्त पशुओं के शरीर में बालों का घुमाव, जो स्थान-विचार से गुण-दोष सूचक है, बाटी, रोटी, अंगाकड़ी, **अंकरी**।

भौंह–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भ्रू*) भैं, भृकुटी, आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल। **मु॰ भौंह चढ़ाना, तरेरना या तानना**–कुपित या क्रुद्ध होना, रुष्ट होना, त्यौरी चढ़ाना, बिगड़ना।

भौ*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भव*) जगत्, संसार। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भय*) डर, भय।

भौगोलिक–वि॰ (सं॰) भूगोल संबंधी।

भौचक–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *भय+चकित*) अचंभित, चकराया या चकपकाया हुआ, हक्का-बक्का, स्तंभित।

भौज-भौजाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *भ्रातृ, जाया*) भाभी, भावज, **भौजी,** भाई की स्त्री, भ्रातृ-वधू।

भौतिक–वि॰ (सं॰) पंच भूत-संबंधी पाँच महाभूतों से बना हुआ, पार्थिव, भूत योनि का, सांसारिक, शारीरिक, ऐहिक दुख।

भौतिक विद्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) भूतों के बुलाने या हटाने की विद्या, सांसारिक पदार्थों के ज्ञान का शास्त्र, भौतिक पदार्थ-विज्ञान।

भौतिक सृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सांसारिक उपज, जैसे–8 प्रकार की देवयोनि, पाँच प्रकार की तिर्यग योनि और मनुष्य योनि, इन सबका समूह या समष्टि।

भौन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भवन*) घर, मकान।

भौम–वि॰ (सं॰) भूमि का, भूमि-संबंधी, भूमि से उत्पन्न, भू-विकार। संज्ञा, पु॰ कुज, मंगल। भौमपज्यधिः–भा॰ द॰।

भौमवार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मंगलवार।

भौमिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जमींदार। वि॰ भमि-संबंधी, भूमि का।

भौर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *भ्रमर*) भौंरा, घोडों का एक भेद, भँवर, फूस की आग।

भौलिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *बहुला*) एक छायादार नाव।

भ्रंश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नीचे गिरना, ध्वंस, नाश, पतन, भागना। वि॰ नष्ट-भ्रष्ट।

भ्रकुटि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भृकुटी, भौंह।

भ्रम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उलटा-पलटा समझना, मिथ्या ज्ञान, भ्रांति, धोखा, संदेह, संशय। मस्तिष्क-विकार जिससे

चक्कर आते हैं (रोग), मूर्च्छा, भ्रमण।

भ्रमण–संज्ञा, पु. (सं.) घूमना फिरना, फेरी, विचरण, यात्रा, आना-जाना, चक्कर। वि. **भ्रमणीय**।

भ्रमना–क्रि.अ. दे. (सं. *भ्रमण*) घूमना, फिरना। प्रे. रूप–**भ्रमवाना**, स. रूप–**भ्रमाना**। क्रि. अ. (सं. *भ्रम*) धोखा खाना, भूलना, भूल-जाना, भटकना, **भरमना** (दे.) भूल करना।

भ्रममूलक–वि. यौ. (सं.) जो भ्रम से उत्पन्न हुआ हो, **भ्रमात्मक**।

भ्रमर–संज्ञा, पु. (सं.) भौंरा, भँवर। यौ. **भ्रमर गुफा**–हृदय के भीतर का एक स्थान (योग.)। उद्धव का एक नाम। यौ. *भ्रमरगीत*–वहा गीत-काव्य जिसमें गोपियों ने उद्धव को उलहना दिया है। दोहा का एक भेद, छप्पय का 63 वाँ भेद (पिं.) दो पद रोला और एक दोहे से मिला छंद जिसके साथ अंत में 10 मात्राओं की एक टेक सी रहती है।

भ्रमर विलासिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक छंद (पि.)।

भ्रमरावली–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सदा घूमने वाला, आकाश का वायु-मंडल।

भ्रमात्मक–वि. यौ. (सं.) संदेह का मूल कारण, संदिग्ध, संदेह-जनक, जिससे या जिसके संबंध में भ्रम होता हो, **भ्रम-जनका भ्रमी**–वि. (सं. *भ्रमिण*) जिसे भ्रम हुआ हो, भौचक, चकित।

भ्रष्ट–वि. (सं.) पतित, ख़राब, कुमार्गी, बहुत ही बिगड़ा हुआ, दूषित, बुरा।

भ्रष्टा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छिनाल, कुलटा।

भ्रष्टाचार–वि. यौ. (सं.) बुरा व्यवहार।

भ्रांत–संज्ञा, पु. (सं.) तलवार के 32 हाथों में से एक हाथ। वि. (सं.) विकल, भ्रांति या भ्रम वाला, व्याकुल, बेकल, धुमाया हुआ, उत्पन्न, भूला हुआ। अर्थालंकार जिसमें भ्रांति के मिटाने के हेतु।

भ्रांति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धोखा, भ्रम, संदेह, भ्रमण, उन्माद, पागलपन, चक्कर, भँवरी, घुमेर, मोह, भूल-चूक, प्रमाद, एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के साम्य के कारण एक को भ्रम से दूसरी वस्तु के समझने का कथन हो (अ. पी., **भ्रांतिमान्**।

भ्राजमान*–वि. (सं.) शोभायमान सुशोभित।

भ्रात, भ्राता*–संज्ञा, पु. (सं. *भ्रातृ*) भाई।

भ्रातृत्व–संज्ञा, पु. (सं.) भाईपन।

भ्रातृद्वितीया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) यमद्वितीया, कार्तिक शुक्र द्वितीया, भाई दूज, **भैयाद्वौज, भइयादुइज** (दे.)।

भ्रातृपुत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भतीजा, भ्रातृज।

भ्रातृभाव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भाई-चारा, भ्रातृ-स्नेह, भ्रातृत्व, भाईपन।

भ्रामक–वि. (सं.) भ्रम में डालने वाला, चकराने, बहकाने या घुमाने वाला।

भ्रामर–संज्ञा, पु. (सं.) शहद, मधु, दोहा का द्वितीय प्रकार। वि. भ्रमर-संबंधी।

भ्रूम–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भौं, भौंह।

भ्रूण–संज्ञा, पु. (सं.) गर्भ का बच्चा।

भ्रूणहत्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) गर्भ के बच्चे को मार डालना।

भ्रूभंग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भौहें टेढ़ी करना, त्योरी चढ़ाना, क्रोध करना। संज्ञा, स्त्री. **भ्रूभंगिमा**।

म

म–संस्कृत और हिंदी की वर्ण-माला के पवर्ग का पाँचवाँ वर्ण या अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और नासिका है। संज्ञा, पु. (सं. मधुसूदन, चंद्रमा, यम, शिव, ब्रह्म, विष्णु, कृष्ण।

मंग–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *माँग*) स्त्रियों के सिर की माँग, याचना।

मँगता–संज्ञा, पु. (हि. *माँगना+ता प्रत्य.*) याचक, भिखारी, भिखमंगा, भिक्षुक।

मागन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *माँगन*) भिखारी, भिक्षुक, **मंगा**।

मँगनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *माँगना+ई प्रत्य.*) वह वस्तु जो किसी से इस वादे पर माँग ली जाए कि कुछ दिन पीछे उसे लौटा दी जाएगी, इस प्रकार माँगने का भाव, ब्याह पक्का होने की एक रीति।

मंगल–संज्ञा, पु. (सं.) इच्छा या मनोरथ का पूर्ण होना, अभीष्ट, सिद्धि, कुशल, कल्याण, भलाई, सूर्य से 14, 15,00,000 मील दूर और पृथ्वी से पहिले पड़ने वाला सौर-जगत का एक ग्रह, भौम, कुज, मंगलवार, शुभ कार्य, विवाहादि।

मंगल कलश (घट)–संज्ञा, पु. यौ.(सं.) ब्याह आदि के समय देव-पूजा के निमित्त स्थापित किया गया जलपूर्ण घढ़ा।

मंगल-कामना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कल्याण की इच्छा।

मंगलवार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सोम के बाद और बुधवार से पूर्व का दिन? भौमवार।

मंगलसूत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देव-प्रसाद के रूप में बाधा गया तागा, रक्षा-बंधन।

मगल-स्नान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कल्याण की इच्छा से होने वाला स्नान, **मंगल असनान** (दे.)।

मंगला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पार्वती जी।

मंगलाचरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वे श्लोक या वेद-मंत्र जो मंगलकामना से प्रत्येक शुभ कार्य के आरंभ में पढ़ जाते हैं, **मंगल-पाठ**। काव्य के प्रारंभ में देव-स्तुति आदि के छंद, इसके तीन रूप हैं–(1) आशीर्वादात्मक, (2) देव नमस्कार या स्वनात्मक, (3) वस्तु निर्देशात्मक।

मंगलामुखी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वेश्या, पतुरिया, रंडी।

मंगली–वि. (सं. *मंगल+ई प्रत्य.*) वह पुरुष या स्त्री जिसके जनम-पत्र में केंद्र, चौथे, आठवें ओर बारहवें स्थान में मंगल या कोई कड़ा ग्रह पड़ा हो, यह अशुभ योग है (ज्यो.)।

मँगवाना–क्रि. स. (हि. *माँगना*) माँगना का प्रेरणार्थक रूप।

मँगाना–क्रि. स. (हि. *माँगना*) मँगनी करना, माँगने का प्रे. रूप।

मंगेतरा–वि. दे. (हि. *मंगनी+एतर प्रत्य.*) वह व्यक्ति जिसकी मँगनी किसी कन्या के साथ हो चुकी हो।

मंगोल–संज्ञा, पु. (*मंगोलिया देश से*) तातार, चीन, जापानादि एशिया के पूर्वीय देशों की एक जाति, मंगोलिया के निवासी।

मंच-मंचक–संज्ञा, पु. (सं.) खाट, खटिया, मक्षिया, पीड़ा, ऊँचा मंडप, कुरसी। यौ. **रंगमंच**–नाटकादि के खेलने का ऊँचा स्थान।

मंजन–संज्ञा, पु. (सं. *मज्जन*) दाँत उजले करने या माँजने का चूर्ण, स्नान, **मज्जन**।

मँजना–क्रि. अ. दे. (हि. *माँजना*) माँजा, जाना, अभ्यास या मश्क होना, साफ़ होना, निखरना। प्रे. रूप–**मँजाना, मँजवाना**।

मंजरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) फूलों की बाल, बेल, लता, कोंपल, नया कल्ला, आम की बौर।

मंजार, मॅजार–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मार्जार*) बिल्ली।

मंजिष्ठ, मंजिष्ठा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मजीठ, मँजीठ।

मंज़िल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) सराय, पड़ाव, घर का खंड, यात्रा में ठहरने या उतरने का स्थान।

मंजीर–संज्ञा, पु. (सं.) **मँजीरा** (दे.) घुँघरू, पायजेब, नूपुर, एक बाजा।

मंजु–वि. (सं.) सुंदर, मनोहर, साफ़। संज्ञा, स्त्री. **मंजुता**।

मंजुघोष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक बौद्ध आचार्य, मंजुली, सुंदर शब्द।

मंजुल–वि. (सं.) सुंदर, मनहरण मनोहर। संज्ञा, स्त्री. **मंजुलता**।

मंजुश्री–संज्ञा, पु. (सं.) मंजुघोष। संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मनोहर कांति।

मंजूर–वि. (अ.) स्वीकृत, स्वीकार। संज्ञा स्त्री. **मंजूरी**

मंजूरी–संज्ञा, स्त्री. (अ. *मंजूर+ई प्रत्य.*) स्वीकृति, मानने का भाव।

मंजूषा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पिटारी, सदूक, पिंजड़ा, डिब्बा।

मंझा*†–वि. दे. (सं. *मध्य*) बीचों बीच का। संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंच*) खाट, पलंग। संज्ञा, पु. हि. (*माँझा*) पेड़ी, बीच का भाग, पतंग की डोरी का कलप।

मँझार, मँझारा†–क्रि. वि. दे. (सं. *मध्य*) बीच में।

मंझियार†–क्रि. वि. दे. (सं. *मध्य*) बीच का।

मंड–संज्ञा, पु. (सं.) भात का पानी, माँड़।

मंडन–संज्ञा, पु. (सं.) सँवारना, सजाना, शोभा देना, शोभित होना, प्रमाणों के द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि करना।

(वि. **मंडनीय, मंडित**) (विलो.–**खंडन**)। एक प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान, मंडन मिश्र, जिन्हें शास्त्रार्थ में श्रीशंकराचार्य ने परास्त कर बौद्ध धर्म को हटाया था।

मंडना*–क्रि. स. (सं. *मंडन*) सजाना भूषित करना, युक्ति से अपने पक्ष को पुष्ट करना, भरना। क्रि. स. दे. (सं. *मर्दन*) दलित या नष्ट करना।

मंडप–संज्ञा, पु. (सं.) टिकने का स्थान, विश्राम-स्थान, बारहदरी, यज्ञस्थल, मंदिर, शामियाना, चँदोवा, उत्सवादि के लिए बाँस आदि से बनाया गया स्थान।

मँडरना–क्रि. स. दे. (सं. *मंडक*) चारों ओर घूमना मँडराना, चारों ओर से घेरे लेना, मंडल बाँधकर छाजाना, किसी वस्तु के चारों ओर चक्कर लगाकर उड़ना, आस-पास घूमना, परिक्रमा करना।

मँडराना–क्रि. अ. दे. (सं. *मंडल*) किसी पदार्थ के चारों ओर घूमते हुए उड़ना, परिक्रमा करना, किसी वस्तु या व्यक्ति के आस-पास ही घूम-फिर कर रहना।

मंडल–संज्ञा, पु. (सं.) परिधि, वृत्त, गोला, क्षितिज, सूर्य-चंद्रमा के चारों ओर गोल बादल का घेरा, परिवेष। समूह, ऋग्वेद, का खंड, बारह राज्यों का समूह, समाज, ग्रहों के घूमने की कक्षा।

मंडलाकार–वि. यौ. (सं.) गोल।

मँडलाना–क्रि. अ. दे. (हि. *मंडराना*) मँडराना, चारों ओर घूमते हुए उड़ना, **मँडराना**।

मंडली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सभा, समाज, समूह। संज्ञा, पु. (सं. *मंडलिन्*) वट का पेड़, बरगद, बिल्ली, सूर्य।

मंडलीक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *माँडलीक*) बारह राजाओं के मंडल का अधिपति।

मंडलेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मांडलीक, मंडलीक, **मंडलेश**।

मँड़वा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडप*) मंडप।

मँडार†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडल*) डलिया, झाया, टोकरा।

मंडित–वि. (सं.) सजाया हुआ, शोभित, भरा या छाया हुआ, आभूषित, युक्ति से प्रतिपादित।

मंडी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मंडप*) बड़ा बाजार।

मँडुआ–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार का तुच्छ अनाज।

मंडूक–संज्ञा, पु. (सं.) मेढक, एक ऋषि, दोहा छंद का 5 वाँ प्रकार। यौ. **कूपमंडूक**–संकीर्ण बुद्धि वाला।

मंडूर–संज्ञा, पु. (सं.) **सिंघान** (प्रान्ती.)। लोहे का कीट, गलाए हुए लोहे का मैल। यौ. **मंडूर रस (कीटी)**–लौह-कीट से बना एक रस।

मंतव्य–संज्ञा, पु. (सं.) मत, विचार, मानने योग्य।

मंत्र–संज्ञा, पु. (सं.) रहस्यात्मक, गोपनीय या छिपी बात, सलाह, राय, परामर्श, वेद की ऋचा, वेदों के गायत्री आदि देवाधिसाधन-वाक्य जिनसे यज्ञादि का विधान हो, वेद-मंत्रों का संग्रह-भाग–संहिता, वे शब्द या वाक्य जिनके जप से देवता प्रसन्न हो अभीष्ट फल देते हैं। (तंत्र.), **मंतर, मंतुर** (दे.)। यौ. **मंत्र-यंत्र या यंत्रमंत्र**–जादू टोना।

मंत्रकार–संज्ञा, पु. (सं.) मंत्र रचने वाला ऋषि।

मंत्रणा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राय, सलाह, परामर्श, मशविरा, मंतव्य, कई व्यक्तियों के द्वारा निर्णीत मत या विचार।

मंत्रविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) तंत्र-विद्या, मंत्र-शास्त्र, भोज-विद्या, तंत्र।

मंत्रसंहिता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है।

मंत्रित–वि. (सं.) अभिमंत्रित, मंत्र द्वारा संस्कृत।

मंत्रिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मंत्रित, मंत्री का कार्य या पद।

मंत्रित्व–संज्ञा, पु. (सं.) मंत्रिता, मंत्रीपन, मंत्री का पद या कार्य।

मंत्री–संज्ञा, पु. (सं.*मंत्रिन्*) सलाह या परामर्श देने वाला, राज्य-कर्मों में राय देने वाला, सचिव, अमात्य।

मंथ–संज्ञा, पु. (सं.) बिलोना, मथना, हिलाना, ध्वस्त करना, मलना, मारना, बिलोड़ना, मथानी।

मंथन–संज्ञा, पु. (सं.) मथना, बिलोना, अति खोजना, तत्वान्वेषण, पता लगाना, मथानी। (दि. **मंथनीय, मंथित**)।

मंथर–संज्ञा, पु. (सं.) मथानी, मंथ ज्वर। वि. मट्ठर, सुस्त, मंद, जड़, मूर्ख, भारी, नीच। यौ. **मंथर ग्रह**–शनि; मंथर गति, धीमी गति।

मंथरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कैकेयी की दासी जिसके बहकाने से कैकेयी ने राम-बनवास कराया था।

मंथान–संज्ञा, पु. (सं.) एक वर्णिक छंद (पिं.) मथना।

मंद–वि॰ (सं॰) सुस्त, घीमा, शिथिल, आलसी, मूर्ख, दुष्ट, कुबुद्धि।

मंदभाग्य–वि॰ यौ॰ (सं॰) अभाग्य, दुर्भाग्य।

मंदर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र मथा था (पुरा॰), स्वर्ग, मंदार, दर्पण, एक वर्णिक छंद (पिं॰)। वि॰ धीमा, मंद, सुस्त।

मंदरगिरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मंदराचल।

मंदरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मंडल*) एक बाजा।

मंदराचल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मंदर पर्वत।

मंदा–वि॰ दे॰ (सं॰ *मंद*) सुस्त, धीमा, आलसी, कम दाम का, सस्ता, निकृष्ट, बुरा, माँदा, थका, शिथिल। स्त्री॰ **मंदी**।

मंदाकिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्वर्गगंगा, आकाश-गंगा, चित्रकूट के पास की पयस्विनी नदी, 12 वर्णों का एक वृत्त (पिं॰)।

मंदाक्रांता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 17 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰) 10 और 8 वर्णों पर यति के साथ, एक नगण, दो भगण, दो तगण और दो गुरू से 18 वर्णों का छंद।

मंदाग्नि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) भोजन न पचने का रोग, अपच, बदहजमी।

मंदार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वर्ग का एक देव-वृक्ष, मदार, (दे॰), आक, मंदराचल।

मंदारमाला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 22 वर्णों का एक वर्णिक दंद (पिं॰)।

मंदिर-मंदिल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मकान, घर, देवालय।

मंदी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मंद*)। किसी वस्तु का भाव गिर जाना या उतरना, सस्ती (विलो॰ **महँगी**)।

मंदोदरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मय दानव की कन्या और रावण की पटरानी, **मँदोदरि, मदोवे, मँदोबरि** (ग्रा॰)।

मंद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वरों के तीन भेदों में से एक गहरी ध्वनि (संगी॰)। वि॰ सुंदर, मनोरम, प्रसन्न, धीमा, गंभीर (शब्दादि)।

मंसब–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्थान, पद, पदवी, काम, अधिकार, कर्त्तव्य।

मंसबदार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुगलों के राज्य में एक पद। संज्ञा, स्त्री॰ **मंसबदारी**।

मंशा–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ मि॰ सं॰ *मनस्*) अभिरुचि, इच्छा, चाह, आशय, मतलब, अभिप्राय, प्रयोजन, **मंसूबा**।

मंसा-मनसा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मंशा*) अभिरुचि, इच्छा, मतलब, आशय। संज्ञा, मनसा देवी, एक देवी, सर्पों की माता।

मंसूख–वि॰ (अ॰) रद, काटा या खारिज किया हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **मंसूखी**।

मंसूबा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) **मनसूबा** (दे॰) उपाय, ढंग, इरादा, विचार, आयोजन।

मंसूर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक सूफी साधु।

मई–*प्रत्य॰* (दे॰) मयी (सं॰) वाली। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*अं॰ मे*) अप्रैल के बाद और जून के पूर्व का महीना।

मकई-मकाई†–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मक्का नामक अन्न।

मकड़ा-मकरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मर्कटक*) घड़ी मकड़ी, नर मकड़ी (स्त्री॰ *मकड़ी*)।

मकड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मर्कटक*) **मकरी** (दे॰) आठ आँखों और आठ पैरों वाला एक कीड़ा, मकड़ी, छोटा मकड़ा।

मकतब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पाठशाला, बच्चों के पढ़ने का स्थान, मदरसा।

मकदूर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) शक्ति, सामर्थ्य, वश, समाई, काबू, गुंजाइश।

मक़बरा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कब्रस्तान, मज़ार, रौज़ा, वह घर या स्थान जहाँ लाश गड़ी हो।

मकरंद–संज्ञा, पु॰ (स॰) फूलों का रस, पराग, फूल का केसर, आम, माधवी, **मजरी**, एक वर्णिक वृत्त (पिं॰)।

मकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक जलजंतु, मगर, मेषादि 12 राशियों में से दसवीं राशि, एक लग्न (ज्यो॰) एक सेना व्यूह, मछली, माघ का महीना, छप्पय का 31वाँ भेद (पिं॰) **मक्र** (दे॰ *मकर संक्रांति*। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मक्कर, छल, फरेब, धोखा, कपट, नख़रा।

मकरतार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मक्कैश*) बादले का तार।

मकरध्वज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मदन, कामदेव, रससिंदूर, चन्द्रोदय रस, हनुमान जी के स्वेद-बिंदु-पान से एक मछली से उत्पन्न पुत्र।

मकर-संक्रांति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रविष्ट होता है।

मकरा–संज्ञा, पु॰दे॰ (सं॰ *वरक*) मड़ुबा नामी एक तुच्छ

अन्न। संज्ञा, पु. (हि. *मकड़ा*) एक कीड़ा, बडी मकड़ी।

मकराकृत–वि. यौ. (सं.) मकर या मछली के आकार का।

मकरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मगर की मादा, (दे.) मकड़ी।

मकान–संज्ञा, पु. (अ.) घर, गृह, वास-स्थान। संज्ञा, स्त्री. **मकानियत**।

मकुंद, मकुंदा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुकुंद*) **मुकुंदा** (दे.) **मुकद** मुकुंद, कृष्ण।

मकु–*अव्य.* दे. (सं. *म*) बल्कि, चाहे, क्या जाने, शायद, कदाचित्।

मकुना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मनाक=हाथी*) बिना दाँतों का हाथी, बिना मूँछ का मनुष्य।

मकोई-मकोय–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मकोय*) जंगली मकोय, **मकोइया** (*ग्रा.*)।

मकोड़ा–संज्ञा, पु. (हि. *कीड़ा का अनु.*) छोटा कीड़ा। यौ. **कीड़ा-मकोड़ा**।

मकोय–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सं. काक माता*) लाल और काले दो तरह के छोटे मीठे फलों का एक छोटा पौधा, उसका फल, झाड़ीदार जंगली पेड़ और उसका फल, **रसभरी**।

मकोरना*†–क्रि. अ. दे. (हि. *मरोड़ना*) मरोड़ना, खुरीचना।

मक्का–संज्ञा, पु. (सं.) अरब देश का एक प्रसिद्ध नगर (मुसलमानों का तीर्थ)। संज्ञा, पु. (दे.) मकाई अन्न, ज्वार।

मक्कार–वि. (अ.) धूर्त, कपटी, छली, फरेबी, चालाक, बहानेबाज़, ढोंगी। संज्ञा, स्त्री. **मक्कारी**।

मक्खन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंथज*) नेनू, नौनी, **माखन** (दे.) नवनीत, दूध के दही या मठे के मथने से प्राप्त सार भाग जिसे गरम करने से घी बनता है।

मक्खी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मक्षिका*) मक्षिका, माक्षी, एक छोटा कीड़ा जो सर्वत्र उड़ता मिलता है, **माखी, माछी** (*ग्रा.*)। **मु. जीती मक्खी निगलना**–समझ बूझकर ऐसा अनुचित या बुरा कार्य करना जिससे पीछे हानि हो। (दूध की) **मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना**–किसी को किसी काम से एक दम या बिलकुल जुदा कर देना। **दूध की मक्खी होना**–व्यर्थ तथा दूर करने योग्य होना। **मक्खी मारना या उड़ाना**–बेकार बैठा रहना, निकम्मा रहना। मधु-मक्षिका, **मुमाखी** (*प्रान्ती.*) **मधु-माखी** (दे.)।

मक्खीचूस–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) बड़ा भारी कंजूस, अत्यंत कृपण।

मक्षिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मक्खी। लो. (सं.) **मक्षिका स्थाने मक्षिका**–ज्यों का त्यों नकल करना।

मख–संज्ञा, वि. (सं.) यज्ञ।

मखतूल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *महर्षतूल*) काला रेशम।

मखतूली–वि. दे. (हि. *मखतूल+ई प्रत्य.*) काले रेशम का या उससे बना हुआ।

मखन*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंथज*) मक्खन, **माखन**।

मखनिया†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मक्खन+इया प्रत्य.*) मक्खन बनाने या बेचने वाला। वि. मक्खन निकाला हुआ दूध।

मख़मल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) एक बढ़िया नरम रेशमी वस्त्र। वि. **मखमली**।

मखशाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यज्ञशाला, यज्ञभवन।

मखाना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मक्खन*) कमल के भुने बीज, ताल मखाना (औप.)।

मखी*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मक्षिका*) मक्षिका, मक्खी। **माखी** (दे.), वि. (सं.) यज्ञ संबंधी।

मखौल-मखौला–संज्ञा, पु. (दे.) हँसी-ठट्ठा, दिपजगी, मज़ाक। **मु. मखौल उड़ाना**–हँसी या उपहास करना।

मग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मार्ग*) राह, रास्ता, पथ। संज्ञा, पु. (सं.) एक शाकद्वीपी ब्राह्मण, मगह या मगध देश।

मगज़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मग्ज*) दिमाग़, मस्तिष्क, गूदा, भेजा, गिरी, मींगी। **मु. मगज खाना या चाटना**–बक बक कर परेशान या तंग करना। **मगज खाली करना या पच्ची करना या पचाना**–सिर खपाना, बहुत दिमाग़ लगाना।

मगज़पच्ची–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि. *मगज़+पचाना*) किसी काम में दिमाग या मस्तिष्क बहुत खपाना, सिर खपाना, मगज़ मारना।

मगज़ी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) वस्त्र के छोर पर लगी हुई गोट।

मगण–संज्ञा, पु. (सं.) आठ वणिक गणों में से एक शुभ गण, जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं, (जैसे–राधा की ऽऽऽ) इसका देवता भूमि है। **मगन** (दे.) (पिं.)।

मगद-मगदल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुद्ग*) मूँग या उरद के आटे का लडडू।

मगदा–वि. (सं. *मग+दा प्रत्य.*) राह या रास्ता दिखाने वाला, मग-प्रदर्शक, मार्ग-दर्शक, पथ-प्रदर्शक।

मगध–संज्ञा, पु. (सं.) दक्षिणीय बिहार प्रांत का पुराना नाम, कीकट, बंदीजन। संज्ञा, पु. (सं.) **मागध,** वि. संज्ञा, स्त्री. **मागधी**।

मगन–वि. दे. (सं. *मग्न*) डूबा या समाया हुआ, लीन, प्रसन्न, निमग्न।

मगना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *मग्न*) डूबना, लीन या तन्मय होना। वि. (दे.) मग्ना (सं.)।

मगर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मकर*) घड़ियाल नाम का एक जल-जंतु, मछली। संज्ञा, पु. (सं. *मग*) ब्रह्मा (वर्मा) का अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति के लोग रहते हैं। अव्य. परंतु, पर, लेकिन, किंतु। यौ. **मगर-मस्त**।

मगरमच्छ–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *मकर मत्स्य*) घड़ियाल या मगर, बड़ी मछली।

अगरा–वि. (दे.) ढीठ, धृष्ट, निर्लज्ज, अभिमानी, घमंडी।

मगराई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) ढिढाई, धृष्टता, मचलाहट।

भगरापन–संज्ञा, पु. (दे.) धृष्टता, ढिढाई, मचलाई, अहंकार, घमण्ड।

मग़रूर– वि. (अ.) अभिमानी, अहंकारी, घमण्डी, **मग़रूर** (दे.)। **मु. मग़रूर का सर नीवा**–घमण्डी की बेइज्जती।

मग़रूरी–संज्ञा, स्त्री. (अ. *मग़रूर+ई प्रत्य.*) आभमान, अहंकार, घमण्ड, **मग़रूरी** (दे.)।

मगरैल-मगरेला–संज्ञा, पु. (दे.) एक बीज विशेष, छप्पर का ऊपरी सिरा।

मगसिर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मार्गशीर्ष*) अगहन का महीना। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मृगशिरा*) मृगशिरा नक्षत्र।

मगह-मगहय-मगहर*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मगध*) मगध देश।

मगहपति*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मगधपति*) मगध देश का राजा, जरासंध।

मगही–वि. दे. (सं. *मगह+ई प्रत्य.*) मगध देश का, मगध देश संबंधी, मगध देश में उत्पन्न, **मघई** (ग्रा.)।

मगहैया–संज्ञा, पु. (दे.) मगध देश का वासी, मगध देश का।

मगु-मग्ग*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मार्ग*) राह, पंथ, मार्ग, रास्ता, **मग** (दे.)।

मग्ज़–संज्ञा, पु. (अ.) दिमाग़, मस्तिष्क, भेजा, गूदा, मींगी, गिरी।

मग्न–वि. (सं.) निमज्जित, डूबा हुआ, लिप्त, लीन, तन्मय, हर्षित, प्रसन्न, खुश, नशे में मस्त, **निमग्न, मगन** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **मग्नता**।

मघन–संज्ञा, पु. (दे.) सुगंध, महक।

मघवा–संज्ञा, पु. (सं. *मघवन्*) इंद्र, देवराज।

मघवाप्रस्थ–संज्ञा, पु. (सं.) इंद्रप्रस्थ, दिल्ली, देहली।

मघा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 27 नक्षत्रों में से 5 तारों वाला दसवाँ नक्षत्र (ज्यो.)।

मघोनी*–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मघवन्*) इंद्राणी, शची, पुलोमजा। पु. **मघोना**।

मघौना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मेष+वर्ण*) नीले रंग का वस्त्र।

मचक–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मचकना*) दबाव।

मचकना–क्रि. स. दे. (*अनु. गच मच*) किसी वस्तु को दबा कर मच मच शब्द निकालना। क्रि. अ. ऐसा दबाना जिसमें मच मच शब्द हो, झटका देकर हिलाना। स. रूप–**मचकाना**।

मचना–क्रि. अ. (*अनु.*) शोर-गुल वाले कार्य का आरंभ करना, फैल या छा जाना। क्रि. अ. दे. (हि. *मचकना*) मचकना। स. **मचाना,** प्रे. **मचवाना**।

मचमचाना–क्रि. अ. (*अनु.*) मच मच शब्द करना, हिलना-डोलना, काँपना। संज्ञा, स्त्री. **मचमचाहट**।

मचलना–क्रि. अ. (*अनु.*) आग्रह या हठ करना, जिद बाँधना, अड़ जाना। स. **मचलाना,** प्रे. **मचलवाना**। (संज्ञा, स्त्री. **मचली**)।

मचला-मचली–वि. (हि. *मचलना मि. पं. मचला*) मचलने वाला, जिद्दी, हठी, बोलने के समय में जो जान कर चुप रहे।

मचलाहा–वि. दे. (हि. *मचला*) हठीला, घमंडी, ढीठ।

मचलाना–क्रि. अ. (*अनु.*) उबकाई आना, जी का मिचलना, क़ै या वमन मालूम होना। क्रि. स. (दे.) मचलना, मचलने में लगाना। क्रि. अ. मचलना।

मचली, मिचली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मचलना*) क़ै, वमन,

ओकाई, मितली, *प्रान्ती.*)।

मचवा–संज्ञा, पु. (दे.) खाट का पाया।

मचान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंच*) शिकार खेलने या खेत की रखवाली के लिए बैठने को बाँस आदि से बना ऊँचा स्थान, माचा, भैंरा, मंच उच्चासन।

मचिया†–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मंच+इया प्रत्य.*) पलँगड़ी, छोटी चारपाई, छोटी कुरसी।

मचिलई-मचिलाई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मचलना*) मचलाहट, मचलापन ओकाई, मचलने का भाव।

मचोड़ना–क्रि. स. दे. (हि. *निचोड़ना*) निचोड़ना, ऐंठना, गारना।

मच्छ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मत्स, प्रा. गच्छ*) बड़ी मछली, दोहे का 16वाँ भेद (पिं.) यौ. **कच्छ-प्रच्छ**।

मच्छगंधा–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *मत्स्य गंधा*) सत्यवती।

मच्छड़-मच्छर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मश्क*) एक छोटा बरसाती पतिंगा, जिसकी सादा काट कर डंक से, खून चूसती है।

मच्छरता*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मत्सरता*) द्वेष, ईर्षा, डाह, मत्सर।

मच्छी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मत्स्य*) मछली। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मक्षिका*) मक्षिका, मक्खी, **माछी**।

मच्छोदरी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *मत्स्योदरी*) राजा शांतनु की स्त्री सत्यवती, व्यास जी की माता।

मछरंगा–संज्ञा, पु. (दे.) राम चिड़िया, एक जल-पक्षी।

मछली-मछरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मत्स्य*) एक प्रसिद्ध जल-जीव, मीन, मीन जैसी वस्तु।

मछुआ-मछवा-मछुवाहा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मछली+उआ प्रत्य.*) मछली मारने या बेचने वाला, केवट, मल्लाह, **मछवाहा** (दे.)।

मजदूर–संज्ञा, पु. (फा.) मोटिया, कुली, बोझ ढोने या छोटे-मोटे काम करने वाला, कारखाने आदि में मजदूरी करने वाला, **मजूर** (दे.)। स्त्री. **मज़दूरनी, ज़मदूरिन**।

मज़दूरी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) मज़दूरी का काम-काज या पेशा, छोटे-मोटे काम करने या बोझा आदि ढोने का इनाम या पुरस्कार, उजरत, श्रम के बदले में मिला धन, पारिश्रमिक, मज़दूरी, **मजूरी** (दे.)।

मजना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *मज्जन*) डूबना, निमज्जित होना, अनुरक्त होना। रगड़ कर साफ होना या चमकना, अभ्यस्त होना। **मँजना**।

मजनू–संज्ञा, पु. (अ.) पागल, बावला, सिड़ी, प्रेमी, आसक्त, अरब देश के एक सरदार का पुत्र, कैस, जो लैला नाम की कन्या पर आसक्त हो पागल हो गया था; एक पेड़, बेदमजनू।

मज़बूत–वि. (अ.) पुष्ट, सुदृढ़, पक्का, बलवान, सबल। संज्ञा, स्त्री. **मज़बूती**।

मज़बूर–वि. (अ.) लाचार, विवश।

मज़बूरी–संज्ञा, स्त्री. (अ. *मज़बूर+ई प्रत्य.*) लाचारी, बेबसी, असमर्थता।

मजमा–संज्ञा, पु. (अ.) लोगों का जमाव, जमघट, भीड़भाड़, जन-समूह।

मज़मून–संज्ञा, पु. (अ.) प्रबंध, निबंध, लेख, कथनीय या वर्णनीय विषय।

मजलिस–संज्ञा, स्त्री. (अ.) समाज, सभा, नाच-रंग का स्थान, महफ़िल, जलसा। वि. **मजलिसी**।

मज़हब–संज्ञा, पु. (अ.) धार्मिक संप्रदाय, मत, पंथ। वि. **मज़हबी**।

मज़ा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) स्वाद, लज्ज़त, आनंद, सुख, हँसी, **मज़ा** (दे.)। वि. **मज़ेदार**। **मु. मज़ा (चखना) चख़ाना**–किए का दंड (पाना) देना।

मज़ा आ जाना–दिल्लगी का सामान होना, आनंद आना।

मज़ाक–संज्ञा, पु. (अ.) परिहास, हँसी, उपहास, ठट्ठा, दिल्लगी, **मज़ाक** (दे.)।

मज़ार–संज्ञा, पु. (अ.) समाधि, कब्र।

मजाल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शक्ति, बल, सामर्थ्य।

मजीठ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मंजिष्ठा*) एक लता, जिसकी जड़ आदि से लाल रंग निकलता है।

मजीठी–संज्ञा, पु. (हि. *मजीठ+ई प्रत्य.*) लाल, मजीठ के रंग का।

मजीर-मजीरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंजीर*) बजाने के हेतु काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी, **मँजीरा** (दे.)।

मजूर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मजूर*) मोर, संज्ञा, पु. (दे.) मज़दूर

(फ़ा.)। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **मजूरी,** (फ़ा. *मज़दूरी*)।

मज़ेदार–वि. (फ़ा.) स्वादिष्ट, आनंदप्रद।

मज्ज–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मज्जा*) हड्डी के भीतर का एक शारीरिक धातु या गूदा, मज्जा।

मज्जन–संज्ञा, पु. (सं.) नहाना, स्नान।

मज्जना–क्रि. अ. दे. (सं. *मज्जन*) स्नान करना, नहाना, गोता लगाना, डूबना।

मज्झ-मझ–क्रि. वि. दे. (सं. *मध्य*) बीच, माँझ।

मझधार–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *मझ मध्य+धार=धारा*) नदी की बीच धारा, किसी कार्य का मध्य या बीचोबीच।

मझला-मझिला–वि. दे. (सं. *मध्य*) बीच का। स्त्री. **मझिली, मझली।**

मझाना-मझावना*†–क्रि. स. दे. (सं. *मध्य*) प्रविष्ट करना, बीच में धँसना, घुसना। क्रि. अ. पैठना, प्रविष्ट होना।

मझार*†–क्रि. वि. दे. (सं. *मध्य*) बीच में, **मँझारा** (दे.)।

मझियाना–क्रि. अ. दे. (हि. *माझी*) नाव खेना, मल्लाही करना। क्रि. अ. दे. (सं. *मध्य+इयाना प्रत्य.*) बीच में से होकर निकलना, **मँझाना।**

मझोला–वि. दे. (सं. *मध्य*) मझला, बीच या मध्य का, मध्यम डीलडौल का।

मझोली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मझोला*) एक तरह की बैलगाड़ी। वि. स्त्री. मध्यम आकार की।

मट-माट†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मटका*) मटका, घड़ा।

मटक–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मठ–चलना+क प्रत्य.*) चाल, गति, मटकने का भाव। यौ. **चटक-मटक।**

मटकना–क्रि. अ. दे. (सं. *मठ=चलना*) अंग हिलाते या मटकाते चलना, नखरे के साथ अंग चलाना या चलाते चलना, हिलना, फ़िरना, विचलित होना, हटना। (स. रूप–**मटकाना,** प्रे. रूप–**मटकवाना**)।

मटकनि*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मटकना*) नाचना, नृत्य, नखरा, मटक।

मटका–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मिट्टी+का प्रत्य.*) मिट्टी का बड़ा घड़ा, माट, मट।

मटकी-मटुकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मटका*) छोटा मटका। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मटकना*) मटकने या मटकाने का भाव, मटक।

मटकीला–वि. (हि. *मटकना+ईला प्रत्य.*) मटकने या नखरे से अंग चलाने वाला।

मटकौअल-मटकौवल–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मटकना*) मटक, मटकने का भाव।

मटमैला–वि. यौ. दे. (हि. *मिट्टी+मेला*) मिट्टी के रंग का, धूलि या ख़ाकी। स्त्री. **मटमैली।**

मटर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मधुर*) एक मोटा अन्न, इसकी लंबी लंबी छीमियों या फलियों के भीतर गोल दाने होते हैं।

मटरगश्त–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि. *मट्ठर=मंद+फ़ा. गश्त*) सैरसपाटा, टहलना, घूमना। संज्ञा, स्त्री. **मटरगश्ती।**

मटरा–संज्ञा, पु. (हि. *मटर*) बड़ा मटर, एक रेशमी कपड़ा।

मटरी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मटरा*) छोटा मटरा।

मटियारे–वि. यौ. दे. (हि.) नष्टप्राय, सत्यानाश, बरबाद, खराब, भ्रष्ट।

मटियाला-मटियारा–वि. दे. (हि. *मटमैला*) मटमैला। संज्ञा, पु. (दे.) मिट्टी-भरा खेत।

मटीला–वि. दे. (हि. *मिट्टी*) मिट्टी से सना, मटमैला।

मटुका–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मटका*) मटका, माट।

मटुकिया-मटुकी*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मटकी*) मटकी।

मट्टी-मिट्टी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मृत्तिका*) मृत्तिका, मिट्टी, मृत शरीर। **मु. मट्टी करना**–नाश करना, बिगाड़ना, खराब या बरबाद करना। **मट्टी खाना**–धूल फाँकना, माँस खाना, पीड़ा देना। **मट्टी डालना**–तोपना, छिपाना, मूँदना, झगड़ा मिटाना, दोष छिपाना। **मट्टी देना**–मुर्दा गाड़ना या दफ़नाना। **मट्टी पर लड़ना**–भूमि के लिए झगड़ना, व्यर्थ की छोटी सी बात पर लड़ना। **मट्टी में मिलना (मिलाना)**–नष्ट होना (करना), खराब या बरबाद होना (करना)। **मिट्टी खराब करना। मट्टी होना**–बेकार या सत्यानाश होना।

मट्ठर†–वि. (दे.) आलसी, सुस्त।

मट्ठा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंथन*) मक्खन-रहित मथा हुआ दही, **मठा, माठा** (आ.) मठ्ठा, छाछ, तक।

मट्ठी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक पकवान, **मठरी, माठ** (दे.)।

मठ–संज्ञा, पु. (सं.) साधुओं के रहने का स्थान, घर, मकान, मंदिर, **वासस्थान।**

मठधारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मठवारिन्*) मठाधीश, महन्त।

मठरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मट्ठी, एक पकवान।

मठा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मंथित*) मट्ठा, **माठा**।

मठाधीश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मठधारी, मठराज, महन्त।

मठिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मठ+इया प्रत्य॰*) छोटा मठ या कुटी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) फूल धातु की बनी चूड़ियाँ।

मठी-मढ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मठ+ई॰ प्रत्य॰*) छोटा मठ, मठ का स्वामी या महंत, मठधारी, मठाधीश।

मठोर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मंथन*) दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मंडप*) छोटा मंडप, झोपड़ा, कुटिया, पर्णशाला। संज्ञा, पु॰ (प्रान्ती॰) आदमी।

मड़क–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰*) भीतरी रहस्य, गुप्तभेद।

मड़वा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मंडप*) मंडप।

मड़हा-मढ़ा–संज्ञा, पु॰ (*प्रान्ती॰*) भीतरी दालान या कोठा।

मड़ाड़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) छोटा सा कच्चा ताल या गढ़ैया, **पोखरा**।

मड़ियाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *माड़ी*) माड़ी लगाना, चिपकाना।

मड़ुआ-मड़ुवा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बाजरे की किस्म का एक अन्न।

मड़ैया–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मंडप*) झोपड़ी, पर्णशाला, कुटिया, कुटी।

मड़ोड़-मरोड़-मरोड़ा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **मरोड़ा** (दे॰) ऐंठ, पेट का दर्द या शूल।

मड़ोड़ना-मरोड़ना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) ऐंठना, बल देना।

मढ़–वि॰ दे॰ (हि॰ *मट्ठर*) धरना देने या अड़ कर बैठने वाला, दुराग्रही।

मढ़ाई-मढ़वाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मढ़ना*) मढ़ने या मढ़ाने का भाव, कार्य या मज़दूरी।

मढ़ाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मंडन*) चारों ओर से लपेट लेना, आरोपित करना, आवेष्टित करना, ढोल आदि बाजे के मुँह पर चमड़ा चढ़ाना, किसी के गले लगाना, या पड़ना, किसी के मत्थे थोपना। **मु॰ मत्थे मढ़ना**। स॰ रूप-**मढ़ाना, प्रे॰** रूप–**मढ़वाना**। †क्रि॰ अ॰ (दे॰) मचाना, आरंभ होना, **मढ़ावना, मढ़ाना**।

मढ़ी, मढ़िया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मध्य* छोटा मठ, झोपड़ा, कुरी, छोटा घर।

मणि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जवाहिर, अमूल्य रत्न, श्रेष्ठ मनुष्य, **मनि** (दे॰)।

मणिकर्णिका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) काशी में एक तीर्थ का नाम; एक घाट (काशी का)।

मणिकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मणियुक्त आभूषणादि बनाने वाला, जौहरी, जड़िया, व्याध-ग्रंथ चिंतामणि का कर्त्ता।

मणिगुण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक वर्णिक छंद, शशिकला, शरम (पिं॰)।

मणिगुणनिकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रवती छंद, मणिगुण छंद का एक भेद (पिं॰)।

मणिग्रीव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुबेर का पुत्र।

मणिजटित–वि॰ (सं॰) मणियों से जड़ा हुआ, **मणि मंडित**।

मणिधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साँप।

मणिपुर-मणिपुर-मणिपूरक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाभि के समीप का एक चक्र (द्वंद्व तं॰)।

मणिबंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कलाई, गट्ठा, नव वर्णों का एक छंद (पिं॰)।

मणि-मंडप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रत्नमय गृह।

मणिमंदिर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रत्नमय गृह।

मणिमय–वि॰ (सं॰) मणियों से बना, मणिजटित।

मणिमाल-मणिमाला–संज्ञा, स्त्री॰ यो॰ (सं॰) 12 वर्णों का एक वृत्त (पिं॰)। मणियों का हार या माला।

मणिहार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मणिमाला।

मणियाना–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुबेर का दास।

मणी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मणिन्*) साँप, सर्प, संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *गणि*)–मणि, रत्न।

मतंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हाथी, शवरी के गुरु एक ऋषि, बादल। स्त्री॰ **मतंगिनी**।

मतंगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मतंगिन्*) हाथी का सवार।

मत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्मति, राय, निश्चित सिद्धांत। **मु॰ मत उवाना**–सम्मति स्थिर करना। पंथ, धर्म, संप्रदाय, राय, आशय, भाव, विचार। क्रि॰ वि॰ (सं॰ *मा*) नहीं, न।

मतमतांतर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक मत, मत भेद।

मतना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *मति+ना प्रत्य॰*) सम्मति निश्चित

करना। क्रि. अ. दे. (सं. *मत्त*) मस्त होना।

मतविरोधी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *धर्म विरोधिन्*) अधर्मी, विधर्मी, धर्म विरोधी। संज्ञा, पु. यौ. **मत-विरोध, मत-भेद, मत-पार्थक्य**।

मतलब–संज्ञा, पु. (अ.) अभिप्राय, अर्थ, आशय, तात्पर्य, स्वार्थ, मन्तव्य, विचार, उद्देश्य, संबंध, लगाव, वाला।

मतलबी–वि. (अ. *मतलब*) स्वार्थी।

मतली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मतलाना*) मिचली, उबकाई, ओकाना।

मतवार-मतवारा*–वि. दे. (हि. *मतवाला*) मतवाला, नशे में चूर।

मतवाला–वि. पु. दे. (सं. *मत्त+वाला प्रत्य.*) मदमत्त, नशे आदि से उन्मत्त, पागल, धनादि के गर्व से चूर। स्त्री. **मतवाली**। संज्ञा, पु. वह बड़ा पत्थर जो शत्रुओं पर क़िले आदि से लुढ़काया जाता है, एक तरह का खिलौना। वि. मतवाला।

मताधिकार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सम्मति या वोट देने का अधिकार।

मताना–क्रि. अ. दे. (हि. *मत्त*) मस्त होना, बेसुध होना।

मतानुयायी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मतावलंबी।

मतावलंबी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *मतावलंबिन्*) किसी धर्म, मत या संप्रदाय का सहारे वाला, **मतानुयायी**।

मति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) समझ, बुद्धि, सलाह, सम्मति, राय। *†–क्रि. वि. (दे.) मत, **मती** (व्र.), *अव्य.* दे. (सं. *मत्*) सदृश, समान।

मतिमंत-मतिवंत–वि. *(सं. मतिमत्) बुद्धिमान।*

मतिमान-मतिवान–वि. (सं.) समझदार, बुद्धिमान।

मतिमाह*–वि. दे. (सं. *मतिमान्*) मतिमान।

मती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मति*) बुद्धि, समझ। क्रि. वि. (दे.) मति, मत, नहीं।

मतिहीन–वि. (सं.) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन।

मतीस–संज्ञा, पु. (दे.) एक बाजा।

मतेई*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विमातृ*) विमाता, दूसरी माता।

मत्कुण–संज्ञा, पु. (सं.) खटमल।

मत्त–वि. (सं.) मतवाला, मस्त, पागल उन्मत्त, प्रसन्न। संज्ञा, स्त्री. **मत्तता**।*† संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मात्रा*) मात्रा।

मत्तगयंद–संज्ञा, पु. (सं.) सवैया छंद का एक भेद, मालती, (पिं.)।

मत्तता*–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पागलपन, मतवालापन।

मत्तताई*–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **मत्तता** (सं.)

मत्तमयूर–संज्ञा, पु. (सं.) 15 वर्णों का एक वृत्त (पिं.)।

मत्तसमक–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रकार की चौपाई छंद (पिं.)

मत्ता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 12 वर्णों का वृत्त (पिं.) मदिरा। भाववाचक प्रत्य. जैसे–बुद्धिमत्ता। *† संज्ञा, स्त्री. (सं. *मात्रा*) मात्रा, जैसे–अमत्ता छंद।

मत्ताक्रीड़ा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 23 वर्णों का एक छंद या वृत्त (पिं.)।

मत्था†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मस्तक*) मस्तक, **माथा** (दे.); (यौ.) मत्था टेकना-सर झुकाना।

मत्सर–संज्ञा, पु. (सं.) क्रोध, जलन, डाह, ईर्षा।

मत्सरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) डाह, जलन।

मत्सरी–संज्ञा, पु. (सं. *मत्सरिन्*) डाही, मत्सर-पूर्ण।

मत्स्य–संज्ञा, पु. (सं.) मीन, मछली, राजा विराट का देश, छप्पय का 23वाँ भेद, विष्णु के दशावतारों में से प्रथम।

मत्स्यगंधा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सत्यवती, व्यास-माता।

मत्स्यपुराण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) 18 पुराणों में से एक।

मत्स्यवित्ता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कुटनी, औषधि विशेष।

मत्स्यांड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मछली का अंडा।

मत्स्यावतार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु के 10 अवतारों में से प्रथम अवतार।

मत्स्येंद्रनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हठयोगी गोरखनाथ के गुरु **मछंदरनाथ** (दे.)।

मथन–संज्ञा, पु. (सं.) विलोना, विलोड़ना, मंथन, एक अस्त्र। वि. विनाशक, मारने वाला। वि. **मथनीय, मथित**।

मथना–क्रि. स. (सं. *मथन*) विलोना, विलोड़ना, द्रव पदार्थ को काष्ठादि से चलाना या हिलाना, नष्ट या ध्वंस करना, चलाकर मिलाना, घूम-फिर कर पता लगाना, बड़ी छानबीन करना, कोई काम अधिक बार करना। संज्ञा, पु. मथानी, रई।

मथनियाँ*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मथना*) दही मथने का बरतन, मटकी, मथानी।

मथनी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मथना*) दही मथने की मटकी, या काठ की मथानी।

मथवाह*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *माथा+वाह प्रत्य.*) महावत।

मथानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मथना*) रई, दही मथने का काठ का एक दंडा, मंथन-दंड, **मथनी** (दे.)। **मु॰ मथानी पड़ना या बहना**–खलवली मचना।

मथित–वि॰ (सं.) **मंथित,** मथा या विलोड़ा हुआ।

मथुरा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मधुपुर*) 7 प्रसिद्ध प्राचीन पुरियों में से एक पुरी जो ब्रज में यमुना तट पर है।

मथुराधिप-मथुराधिपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) **मथुरा-नरेश,** कंस, कृष्ण।

मथुरिया–वि॰ (हि॰ *मथुरा+इया प्रत्य.*) मथुरा का, मथुरा-निवासी, मथुरा-संबंधी।

मथुरेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) श्रीकृष्ण, कंस।

मथौरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मथना*) बढ़ई का एक भद्दा रंदा।

मदंध*–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मदांध*) मदोन्मत्त, मदमत्त। संज्ञा, स्त्री॰ **मदंधता।**

मद–संज्ञा, पु॰ (सं.) नशा, मतवालापन, मद्य, उन्मत्तता, कस्तूरी, वीर्य, मतवाले, हाथी के गंडस्थल से निकला हुआ गंध-युक्त रस या द्रवपदार्थ, गर्व, घमंड, आनंद, हर्ष, हाथी का दर्प। वि॰ मस्त, मतवाला। यौ॰ वि॰ **मदमाता, मदमस्त, मदमत्।** संज्ञा, स्त्री॰ (अ.) विभाग, खाता, सीमा, सरिश्ता, **मद्द।**

मदक–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ (सं॰*मद*) अफीम के सत से बनी एक मादक या नशे की वस्तु, जिसे चिलम से पीते हैं। वि॰ **मदकी।**

मदकचो–वि॰ (हि॰ *मदक+ची प्रत्य.*) मदक पीने वाला, **मदकबाज़।**

मदकट–संज्ञा, पु॰ (सं.) खाँड़, चीनी, शक्कर।

मदकल-मदगल–वि॰ दे॰ (सं.) मस्त, मतवाला, मत्त। संज्ञा, स्त्री॰ **मदकली।**

मदद–संज्ञा, स्त्री॰ (अ.) सहायता, सहारा, किसी काम पर लगे मजदूर और राज आदि।

मददगार–वि॰ (फ़ा.) सहायक, सहायता करने वाला।

मदन–संज्ञा, पु॰ (सं.) काम-क्रीड़ा, कामदेव, कंदर्प, मैनफल, भ्रमर, सारिका, मैना, प्रेम, रूपमाल छंद (पिं.), छप्पय का एक भेद (पिं.)। यौ॰ (*मद+न*) मद-हीन। **यौ॰ मदन पीड़ा**–काम-व्यथा, **मदनज्वर**–कामज्वर।

मदनकदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) महादेवजी, शिवजी।

मदनगोपाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) श्रीकृष्णजी।

मदनचतुर्दशी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) चैत्र शुक्ल चतुर्दशी।

मदनजल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) मदन नीर, कामावेश से लिंग से निकला स्राव, वीर्य, **मदन-रस।**

मदन-ताप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) काम-ज्वर।

मदन-दाप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) कंदर्प दर्प।

मदनपाठक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) कोयल।

मदनफल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) मैनफल (औप.)।

मदनबंधु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) वकुल, मौलसिरी।

मदनवाण, मदनबान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मदनबाण*) कामदेव के वाण, एक प्रकार के बेले का फूल।

मदनमंदिर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) स्मर-मंदिर, भग, योनि।

मदन मनोरमा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) सवैया का एक भेद (केशव.)। वि॰ यौ॰ (सं.) काम की मनोरमा या प्यारी, रति, दुर्मिल सवैया (पिं.)।

मदन-मनोहर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) श्रीकृष्णचंद्र, मनहर, दंडक छंद का एक भेद (पिं.)। वि॰ यौ॰ (सं.) कामदेव से सुंदर, **मदनमनोरम।**

मदन-मल्लिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) मल्लिका नाम का एक छंद (पिं.)।

मदनमस्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *मदन+मस्त*) चंपा की जाति का एक फूल। वि॰ यौ॰ (हि.) काम-दर्प से प्रमत्त।

मदनमहोत्सव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी तक होने वाला एक प्राचीन उत्सव।

मदनमित्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) चंद्रमा।

मदनमोदक–संज्ञा, पु॰ (सं.) मदनोद्दीपक पौष्टिक औषधियों के लड्डू, सवैया छंद का एक भेद (पिं.), सुंदरी छंद (केशव.)।

मदनमोहन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) श्रीकृष्ण।

मदनललिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) एक वर्णिक वृत्त (पिं.)।

मदनसद्म, मदनसदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) भग, योनि।

मदनहरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) 40 मात्राओं का एक छंद (पिं.)।

मदनोत्सव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मदन-महोत्सव।

मदमत्त, मदमस्त–वि. यौ. (सं.) नशे से मत्त, मतवाला। संज्ञा, स्त्री. **मदमत्तता**।

मदर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडल*) मँड़राना। संज्ञा, स्त्री. (अं.) माता।

मदरसा–संज्ञा, पु. (अ.) पाठशाला, विद्यालय।

मदलेखा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णिक वृत्ति (काव्य)।

मदांध–वि. यौ. (सं.) नशे में चूर, मदोन्मत्त, गर्व से अंधा, महा अभिमानी।

मदाइन–संज्ञा, स्त्री. (दे.) शराब, मद की देवी।

मदानि*–वि. (दे.) कल्याणकारी।

मदार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मदार*) आक।

मदारी–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मदार*) **कलंदर,** बाजीगर, तमाशिया, मदारिया, जो बंदरादि नचाते या विचित्र खेल-तमाशे दिखाते हैं।

मदालसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विश्वावसु गंधर्व की पुत्री जिसे पातालकेतु दानव पाताल ले गया था (पुरा.)।

मदिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *मादा*) स्त्रीलिंग जीवधारी, मादा (विलो. **नर**)।

मदियाना–क्रि. अ. दे. (हि. *मद*) नशे में होना, सुस्त पड़ना।

मदिरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मद्य, शराब, सुरा, दारू, वारुणी, 22 वर्णों का एक वर्णिक छंद, मालिनी (पिं.) उमा, दिवा।

मदीय–वि. (सं.) मेरा। स्त्री. **मदीया**।

मदीला–वि. दे. (हि. *मद+ईला प्रत्य.*) नशीला, मादक, नशेदार, मदोत्पादक।

मदुफल–संज्ञा, पु. (दे.) दोहे का एक भेद।

मदोन्मत्त–वि. यौ. (सं.) मदाध, नशे में चूर, मद या गर्व से प्रमत्त। संज्ञा, स्त्री. **मदोन्मत्तता**।

मदायै*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मंदोदरी*) रावण की रानी, मंदोदरी, **मँदोवरि, मँदोदरि** (दे.)।

मद्धिम*†–वि. दे. (सं. *मध्यम*) मध्यम, औसत दर्जे का, कम न ज़्यादा, मंदा, अपेक्षाकृत कम अच्छा। **मु. चंद्रमा (अन्यग्रह) का मद्धिम होना**–चंद्र (अन्य ग्रह) का प्रभाव अच्छा न होना (ज्यो.)।

मद्धे–अव्य. दे. (सं. *मध्ये*) बीच में, विषय में, संबंध में, बावत।

मद्य–संज्ञा, पु. (सं.) सुरा, मदिरा, दारू, वारुणी, **शराब**। यौ. **मद्य-मांस**।

मद्यप, मद्यपी–वि. (स.) मदिरा पीने वाला, शराबी।

मद्र–संज्ञा, पु. (सं.) रावी और झेलम नदी के बीच का देश, उत्तर-कुरु देश (प्राचीन)।

मधु–संज्ञा, पु. (सं.) शहद, पानी, मदिरा, मकरंद, बसंत ऋतु, चैत महीना, विष्णु से मारा गया एक दैत्य, एक यदुवंशी, श्रीकृष्ण, अमृत, शिवजी, मुलहटी, दो लघु वर्णों का एक छंद (पिं.)।

मधुकर–संज्ञा, पु. (सं.) भ्रमर, भौंरा, एक प्रकार का चावल, मधुमाखी।

मधुकरी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मधुकर*) भौंरी, वह भिक्षा जिसमें थोड़ा सा पका अन्न लिया जावे, **मधूकरी** बाटी।

मधुकैटभ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मधु और कैटभ नामक दो दैत्य भाई, जिन्हें विष्णु ने मारा था। (पुरा.)।

मधुकाष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) फूलों में रस का स्थान, शहद का छत्ता।

मधुचक्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शहद की मक्खी का छत्ता।

मधुच्छद–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मोर की शिखा, मोर, शिखा बूटी।

मधुजा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूमि, पृथ्वी।

मधुप–संज्ञा, पु. (सं.) मधुलिह, भौंरा, भ्रमर, उद्धव। स्त्री. **मधुसी**।

मधुपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण।

मधुपर्क–संज्ञा, पु. (सं.) दही, घी, शहद, चीनी और जल का मिला हुआ पदार्थ जो नैवेद्य में काम आता है।

मधुपर्श–संज्ञा, पु. (सं.) पका और रसभरा फल।

मधुपुर, मधुपुरी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मथुरा नगरी।

मधुप्रष्य–संज्ञा, पु. (सं.) मौहा।

मधुप्रमेह–संज्ञा, पु. (सं.) **मधुमेह,** गाढे और अधिक मूत्र का एक रोग (वैद्य.); डाइबिटीज़।

मधुबन, मधुवन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रज का एक वन, सुग्रीव का बाग।

मधुभार–संज्ञा, पु. (सं.) एक मात्रिक छंद (पिं.)।

मधुमक्खी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *मधुमक्षिका*) **मधुमाखी** (दे.), मधुमक्षिका, माखी, फूलों का रस चूस कर शहद

इकट्ठा करने वाली मक्खी।

मधुमक्षिका–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मधुमक्खी, **मधुमाछी** (ग्रा.)।

मधुमती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णिक वृत्त। (दो नगण और एक गुरु वर्ण से बनी) (पिं.)।

मधुमाखी, मधुमाछी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *मधुमक्षिका*) मधुमक्षिका, मधुमक्खी **मदमाखी** (ग्रा.)।

मधुमालती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मालती लता।

मधुमेह–संज्ञा, पु. (सं.) अति अधिक और गाढ़े मूत्र होने का एक प्रमेह रोग, (अं.) डाइविटीज़।

मधुयष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मुलहटी, मुलैठी, मौरेटी।

मधुर–वि. (सं.) मीठा, सुनने में सुखद, सुंदर, मनोरंजक, हलका। संज्ञा, स्त्री. **मधुरता**।

मधुरई, मधुराई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मधुरता*) मधुरता, मिठाई, **मधुरिमा**।

मधुरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मिठाई, मधुराई, मिठास, मृदुता, सुंदरता।

मधुरा–संज्ञा, स्त्री. पु. (सं.) मदरास प्रांत का एक प्राचीन नगर, मदुरा, मडुरा, मदूरा, मदूरा, मथुरापुरी।

मधुराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भौंरा, भ्रमर।

मधुरान्न–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मिठाई, मिष्ठान्न।

मधुराना*†–क्रि. अ. दे. (हि. *मधुर+आना प्रत्य.*) मीठा या सुंदर होना।

मधुरिमा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मधुरिमन्*) मिठास, सुंदरता।

मधुरिपु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, कृष्ण।

मधुरी*–संज्ञा, स्त्री. (सं. *माधुर्य*) सुंदरता, सौंदर्य।

मधुवन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गोकुल के समीप का यमुना तट पर एक वन, सुग्रीव का वन (किष्किंधा)।

मधुवामन–संज्ञा, पु. (सं.) भौंरा, भ्रमर।

मधुव्रत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भौंरा, भ्रमर।

मधुशर्करा–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शहद की बनी हुई चीनी।

मधुसख, मधुसखा–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **मधुमित्र**, कामदेव।

मधुसूदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मधु-रिपु, श्रीकृष्ण।

मधुसेवी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भ्रमर।

मधुहंता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, कृष्ण।

मधूक–संज्ञा, पु. (सं.) दाख, मौहा।

मधुकरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मधुकरी*) मधुकरी, बाटी।

मध्य–संज्ञा, पु. (सं.) बीच का हिस्सा, बीचोंबीच, कटि, अंतर, भेद, 17 वर्ष से 70 वर्ष तक की अवस्था (सुश्रु.)।

मध्यता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मध्य का भाव।

मध्यतायिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक उपनिषद्

मध्यदिवस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दोपहर।

मध्यदेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मध्य प्रदेश, कटि कमर। हिमालय से दक्षिण, विंध्याचल से उत्तर, कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम का भारत।

मध्यम–वि. (सं.) बीचोबीच का, न बहुत बड़ा न छोटा, औसत दर्जे का, बीच का। संज्ञा, पु. संगीत के 7 स्वरों में से चौथा स्वर, नायिका के क्रोध दिखाने पर अनुराग प्रकट न करने वाला उपपति (काव्य.)।

मध्यमपद लोपी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **लुप्तपद समास,** वह समास जिसमें दो पदों के बीच संबंध-सूचक पद का लोप हो जाता है (व्या.)।

मध्यमपुरुष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह पुरुष जिससे बातचीत की जाए (व्या.)।

मध्यभाग–संज्ञा, पु. (सं.) बीच का हिस्सा।

मध्यमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बीच की अँगुली, वह खंडित-नायिका जो अपने पति के प्रेम या अपराध पर उसका मान या अपमान करे (काव्य.)।

मध्यलोक–संज्ञा, पु. (सं.) मर्त्य लोक, पृथ्वी, मूलोक।

मध्यवर्ती–वि. (सं.) बीच में रहने वाला, बीच का, **बिचवानी** (ग्रा.) मध्यस्थ।

मध्यस्थ–संज्ञा, पु. (सं.) तटस्थ, बीच में रहकर विवाद निपटाने वाला, बीच में रहने वाला। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **मध्यस्थता**।

मध्यस्थ–संज्ञा, पु. (सं.) कमर, बीच का स्थान।

मध्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वह नायिका जिसमें लज्जा और काम सम रूप में हों। तीन वर्णों का एक छंद या वृत्त (पिं.)।

मध्यान्ह, मध्याह्न–संज्ञा, पु. (सं. *मध्याह्न*) ठीक दोपहर, **मध्यदिव**।

मध्ये–क्रि. वि. दे. (सं. *मद्धे*) मद्धे, विषय या संबंध में

मध्वरि–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *मधु+अरि*) विष्णु, कृष्ण।

मध्याचार्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वैष्णवमत के एक विख्यात आचार्य और माध्य संप्रदाय के प्रवर्त्तक (12वीं शताब्दी)।

मनःशिल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मैनसिल।

मन–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मनस्*) विचार या मनन-शक्ति, जीवों की विचार, इच्छा, वेदना, संकल्पादि करने वाली शक्ति, अन्तःकरण के चार भागों में से संकल्प-विकल्प के होने का भाग, अन्तःकरण, चित्त, दिल, इरादा, विचार, इच्छा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मणि*) मणि, रत्न। **मु॰ किसी से मन अटकना या उलझना, लगना**-प्रेमानुराग या प्रीति स्नेह होना। **मन आना (भाना)**–प्रेम होना, पसंद आना, रुचना, इरादा होना। **मन (दिल) टूटना**–हताश होना, साहस न रहना। **मन गिरना**–उत्साह या हौसला न रहना, उन्मनता या उदासीनता आना। **मन चलना**–इच्छा होना। **मन चुराना**–मोहित या मुग्ध करना, वशीभूत करना। **मन बढ़ना**–उत्साह या साहस बढ़ना। **मन करना**–इरादा या इच्छा करना। **(किसी का) मन बूझना**–मन की थाह लेना, हृदय की बात जानना। **मन(दिल) हरा होना**–चित्त प्रसन्न होना। **मन मुरझाना**–चित्त का उदास होना, हतोत्साह या हताश होना। **मन के लड्डू (मन मोदक) खाना**–कल्पित या झूठी आशा पर प्रसन्न होना। **मन-मोदक से भूख मिटाना (बुझाना)**–व्यर्थ की कल्पित बात (आशा) से प्रसन्न होना। **मन चलना (का चलायमान होना) (चलाना)**–इच्छा होना (करना), प्रवृत्ति (होना करना)। **(किसी का) मन टटोलना**–दिल का पता लगाना, मन की थाह लेना। **मन डोलना**–मन का चंचल होना, लालच या लोभ उत्पन्न होना। **मन देना**–जी लगाना, ध्यान देना, दिल देना, प्रेम करना, इरादा या भेद प्रगट करना। **मन (दिल) देखना**–हृदय का भाव देखना। **(किसी पर) मन धरना**–मन लगाना, ध्यान देना। **मन में धँसना**–मन में प्रवेश करना, दिल में चुभना, चित्त में पैठना। **मन तोड़ना या हारना**–हिम्मत या साहस छोड़ना। **मन रखना (किसी का)**–किसी की इच्छा पूरी करना, तदनुकूल करना। **मन फेरना (फिरना)**–मन हटाना (हट जाना)। **मन में बसाना (बसना)**–स्मृति में रखना (रहना)। **मन में पैठना**–दिल की बात खोजना, अति प्रेम करना, दिल में रखना, दिल पर प्रभावित होना, सदा याद रहना। **मन बढ़ाना (बढ़ना)**–साहस दिलाना (होना), उत्साह बढ़ाना बढ़ना। **मन में बसना (रहना)**–अच्छा लगना, पसंद आना, रुचना, याद रहना, सदैव स्मृति में रहना। **मन बहलाना या बहलना**–दुखी या उदास मन को किसी कार्य में लगाकर प्रसन्न करना, मनोरंजन या मनोविनोद करना (होना)। **मन भरना**–विश्वास या निश्चय होना, संतोष होना, इच्छानुकूल प्राप्त करना (देना) **मन में घर करना**–दिल पर अधिकार करना, हृदय में वस जाना। **मन भर जाना**–अधा जाना, तृप्ति हो जाना, निश्चय या संतोष हो जाना, इच्छा पूर्ण हो जाना। **मन में रहना**–गुप्त रहना, बाहर प्रगट न होना, सदा याद रहना, अति प्रिय होना। **मन भाना**–पसंद आना, भला या अच्छा लगना, रुचना। **मन मानना**–संतोष या तसल्ली होना, निश्चय या प्रतीत होना, अच्छा लगना, पसंद आना, प्रेम, स्नेह या अनुराग होना। **मन में रखना**–गुप्त रखना, छिपा रखना, स्मरण या याद रखना। **मन पाना**–मन का भेद जानना, स्वीकारता का भाव देखना। **मन में लाना**–सोचना, विचारना। **मन में न लाना**–बुरा न मानना। **मन मिलना**–स्वभाव या प्रकृति मिलना। **मन मारना**–खिन्न या उदास होना, इच्छा को दबाना। **मन मैला करना**–असंतुष्ट होना, अप्रसन्न होना। **मन मोटाव होना (करना)**–वैमनस्य या विलगाव होना (रखना)। **मन मोड़ना**–विचार या प्रवृति को दूसरी ओर लगाना। **(किसी का) मन रखना**–इच्छा पूर्ण करना। **मन लगना**–जी या तबियत लगना, रुचना, ध्यान लगाना, मनोविनोद होना। **मन लाना***–मन लगाना, प्रेम करना। **मन से उतरना**–मन में आदरभाव का न रहना, विस्मृति होना, मन का भाव बुरा होना। **मन ही मन (मन मन)**–चुपचाप, दिल में ही। इच्छा, विचार। लो॰–**"मन मन भावै, मुँड़िया डुलावै"**। **मु॰ मन माना**–अपने मन के अनुसार, यथेष्ट यथेष्ठ। *संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मणि*) मणि, रत्न।

मनई‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मानव*) मनुष्य।

मनकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) हिलना, डोलना।

मनकरा*–वि॰ दे॰ (हि॰ *मणि+कर*) चमकदार।

मनका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मणिका*) माला की गुरिया या दाना। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मन्यका*) गले के पीछे की हड्डी जो रीढ़ से मिली रहती है। **मु॰ मन का ढलना या ढलकना**–मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकामना, मनोकामना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *मनः+कामना*) इच्छा।

मनकूला–वि॰ स्त्री॰ (अ॰) चर, जंगम, अस्थावर (विलो॰ **स्थावर**) यौ॰ **जायदाद मनकूला**–चल संपत्ति। **ग़ैरमनकूला**–स्थिर संपत्ति, स्थायी (विलो॰)।

मनगढ़ंत–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मन+गढ़ना*) कपोल-कल्पित, वास्तविक सत्ताहीन। संज्ञा, स्त्री॰ निरी या कोरी कल्पना।

मनचला–वि॰ यो॰ दे॰ (हि॰ *मन चलना*) निडर, धीर, साहसी, रसिक। स्त्री॰ मनचली।

मनचाहा–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मन+चाहना*) इच्छित, चाहा हुआ **चितचाहा**। स्त्री॰ **मनचाही**।

मनचिता, मनचीता–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मन+चेतना*) **चितचीता, चितचेता**, मन चाहा, मन सोचा। स्त्री॰ **मनचेती**।

मनचोर–वि॰ (हि॰) दिल चुराने वाला, **चितचोर**।

मनजात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कामदेव, मरसिज, मनोज।

मनत, मनता–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मनौती। **मानता, मान्ता** (ग्रा॰)।

मनन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोचना, चिंतन, भली भाँति पढ़ना, गूढ़ाध्ययन।

मननशील–वि॰ (सं॰) विचारवान। संज्ञा, स्त्री॰ **मननशीलता**।

मनमाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) गुंजारना।

मनवाँछित–वि॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *मनोवाँछित*) मनचाहा, इच्छानुकूल, अभीष्ट, चितचाहा।

मनभाया–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मनमाना*) मनोनुकूल, जो पसंद आवे, अभीष्ट। स्त्री॰ **मनभायी**।

मनभावता–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मनमाना*) जो अच्छा लगे, प्रिय, प्यारा। स्त्री॰ **मनभावती**।

मनभावन–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मनभाना*) मन को अच्छा लगने वाला, प्रिय, प्रेमी। स्त्री॰ **मनभावनी**।

मनमत*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *मदमत्त*) मतवाला, मदोन्मत्त, अहंकारी, घमंडी।

मनमति–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मति*) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करने वाला, स्वतंत्र।

मनमथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मन्मथ*) कामदेव, मदन, मनोज।

मनमानता–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मानना*) मनमाना।

मनमाना–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मानना*) यथेच्छ, दिल-पसंद, जो मन को भावे, स्त्री॰ **मनमानी**। जो मन आवै करना, स्वेच्छाचार।

मनमुखी†–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मुख्य*) स्वेच्छाचारी, स्वेच्छानुगामी।

मनमुटाव, मनमोटाव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मोटाव*) वैमनस्य, मन में भेद पड़ना, विरोध भाव।

मनमोदक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मोदक*) मन का लड्डू, प्रसन्नतार्थ कल्पित और असंभव बात।

मनमोहन–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मोहन*) मन को मोहने वाला, प्रिय, चित्ताकर्षक, प्यारा। स्त्री॰ **मनमोहनी**। संज्ञा, पु॰ श्रीकृष्ण जी, एक मात्रिक छंद (पिं॰)।

मनमौजी–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मन+मौज ई पत्य॰*) इच्छानुसार या मन की मौज से कार्य करने वाला।

मनरंज–वि॰ दे॰ (सं॰ *मनोरंजक*) मन को प्रसन्न करने वाला।

मनरंजक–वि॰ दे॰ (सं॰ *मनोरंजक*) मन को प्रसन्न करने वाला।

मनरंजन*–वि॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *मनोरंजक*) चित्त को प्रसन्न करने वाला, मनोविनोद।

मनरोचन–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मन+रोचन*) मनभावन, सुंदर, रोचक, रुचिर।

मनलड्डू, मनलाडू*–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *मनमोदक*) मनमोदक।

मनशा, मंशा–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰)। इरादा, इच्छा, तात्पर्य. मतलब, विचार, **मनसा, मंसा** (दे॰)।

मनसना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मानस*) इरादा या इच्दा करना, दृढ़ विचार या निश्चय करना, हाथ में पानी ले संकल्प-मंत्र के साथ कुछ दान करना।

मनसब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पद, ओहदा, स्थान, अधिकार, कार्य, काम।

मनसबदार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) ओहदेदार, पदाधिकारी। संज्ञा, स्त्री॰ **मनसबदारी**।

मनसा, मंसा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक देवी का नाम। (सं॰) स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मनशा*) मनोरथ, अभिलाषा, इच्छा, कामना, अभिप्राय, इरादा, संकल्प, विचार, तात्पर्य, बुद्धि, मन।

वि. (सं.) मन से उत्पन्न, मन का। संज्ञा, पु. (सं.) क्रि. वि. (सं.) मन से, मन के द्वारा इरादा, इच्छा।

मनसाकर–वि. (हि. *मनसा+कर*) मनोरथ पूरा करने वाला।

मनसाना–क्रि. अ. दे. (हि. *मनसा*) उमंग या तरंग में आना। क्रि. स. दे. (हि. *मनसना का प्रे. रूप*) **मनसवाना**।

मनसायन†–वि. दे. (हि. *मानुस*) मनोविनोद का मनोरम स्थान या जगह, गुलज़ार।

मनसिज–संज्ञा, पु. (सं.) कामदेव।

मनसुख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मन को प्रसन्न करने वाला मन का सुख।

मनसूख–वि. (अ.) परित्यक्त, अप्रामाणिक, त्यागा हुआ, अतिवर्तित। संज्ञा, स्त्री. **मनसूखी**।

मनसूबा–संज्ञा, पु. (अ.) विचार, ढंग, युक्ति, इरादा। मु. **मनसूबा बाँधना**–युक्ति सोचना, इच्छा करना।

मनस्क–संज्ञा, पु. (सं.) छोटा मन, मन का अल्पार्थक रूप। जैसे–**अन्यमनस्क**।

मनस्ताप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मन का दुख, मन-पीड़ा, पछतावा, आंतरिक दुख, पश्चात्ताप।

मनस्विता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वेच्छानुकूलता, बुद्धिमत्ता, शूरता।

मनस्वी–वि. (सं. *मनस्विन्*) बहादुर, बुद्धिमान। स्त्री. **मनस्विनी**।

मनहंस–संज्ञा, पु. (हि.) मानसहं, 15 वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं.)। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हंस रूपी मन या मन रूपी हंस।

मनहर–वि. दे. (सं. *मनोहर*) मनोहर। संज्ञा, पु. धनाक्षरी छंद (पिं.)।

मनहरण, मनहरन–संज्ञा, पु. (हि.) मन के हरने का भाव, 15 वर्णों का एक वर्णिक छंद, भ्रमरावली। वि. मनोहर, सुंदर।

मनहार, मनहारि–वि. दे. (सं. *मनोहरी*) मनोहारी, सुंदर, **मनहारी**। स्त्री. **मनहारिनी**।

मनहुँ, मनौ*–*अव्य.* दे. (हि. *मानो*) **मानौ**, यथा।

मनहूस–वि. (अ.) अशुभ, बुरा, अशकुन, अप्रियदर्शन। संज्ञा, स्त्री. **मनहूसी, मनहूसियत**।

मना, मने–वि. (अ.) वर्जित, वारण किया, या रोका हुआ, निषेध, अनुचित।

मनाक, मनाग–वि. दे. (सं. *मनाक् मनावा*) थोड़ा, किंचित्, रंच, रंचक।

मनाना–क्रि. स. (हि. *मानना*) अंगीकार करना, स्वीकार कराना, रूठे को प्रसन्न करना, देवता से मनोरथ सिद्धि की प्रार्थना करना, स्तवन करना।

मनावन†–संज्ञा, पु. (हि. *मनाना*) रुष्ट के प्रसन्न करने का भाव या कार्य।

मनाही–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मना*) न करने का हुक्म या आज्ञा, निषेध, रोक, वारण, अवरोध।

मनि–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मणि (सं.) रत्न।

मनिधर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मणिधर*) साँप, सर्प, नाग।

मनिमाला–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) **मणिमाला**।

मनिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *माणिक्य*) मनका, गुरिया, माला का दाना, माला, कंठी।

मनियार*†–वि. दे. (हि. *मणि+आर प्रत्य.*) चमकीला, उज्ज्वल, सुहावना, दर्शनीय, सुंदर।

मनिहार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मणिकार*) चुरिहारा, चूड़ी बेचने वाला। स्त्री. **मनिहारिन**। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मणियों का हार।

मनिहारिन, मनिहारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मनिहारिन*) चुरिहारिन।

मनी*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मान*) घमंड। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मणि*) मणि, रत्न, बल, वीर्य। संज्ञा, पु. (अं.) धन।

मनीषा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बुद्धि, ज्ञान, मति, समझ।

मनीषि, मनीषी–वि. (सं. *मनीषिन्*) ज्ञानी, पंडित, मेधावी, बुद्धिमान, विचार-चतुर।

मनु–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्मा के चौदह लड़के जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने गए हैं। स्वायंभू, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, इंद्रसावर्णि; चौदह की संख्या, मन या अंतःकरण, विष्णु, वैवस्वतमनु। *अव्य. दे. (हि. *मानना*) मानो, मानहु, मनौं।

मनुआँ‡*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मन*) मन, चित्त। संज्ञा, पु. दे.

(हि॰ *मानव*) मनुष्य।

मनुज, मानुज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आदमी, मनुष्य। संज्ञा, स्त्री॰ **मनुजाई**।

मनुष, मनुस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मनुष्य*) आदमी, मनुष्य, **मनुज** (दे॰), **मानुस** (दे॰) पति। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **मनुसाई**।

मनुष्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आदमी, मनुज।

मनुष्यता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आदमीपन, दया, करुणा, शील, शिष्टता, तमीज़, मनुष्यत्व।

मनुष्यत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनुष्यता, आदमीपन, शिष्टता, शील, तमीज़, पुरुषत्व।

मनुष्यलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मानवलोक, मर्त्यलोक, भूलोक।

मनुस, मानुस–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मनुष्य, पति। संज्ञा, स्त्री॰ **मनुसई**।

मनुस्मृति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मनु कृत, मानव धर्म-शास्त्र।

मनुहार, मनुहारि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मन+हरना*) मनौआ, मनावनि, खुशामद, प्रार्थना, विनती, आदर-सत्कार करना, मान छुड़ाने या रुष्ट को मनाकर प्रसन्न करने के लिए विनय।

मनुहारना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मान+हरना*) मनाना, विनती या विनय या प्रार्थना करना, आदर या सत्कार करना।

मनूव–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मन, बिलार, रुई।

मनों, मनौं–*अव्य॰* दे॰ (हि॰ *मानना*) मानो।

मनोकामना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *मन+कामना*) **मन-कामना**, अभिलाषा, इच्छा।

मनोगत–वि॰ (सं॰) दिली, जो मन में हो। संज्ञा, पु॰ कामदेव, मदन।

मनोगति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मन की गति, चित्त-वृत्ति, इच्छा।

मनोज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कामदेव, मदन, मनसिज।

मनोजव–वि॰ यौ॰ (सं॰) अत्यंत वेगवान, मन के वेग के समान वेग वाला। संज्ञा, पु॰ विष्णु, पवन-सुत, हनुमानजी।

मनोज्ञ–वि॰ (सं॰) सुंदर, मनोहर। संज्ञा, स्त्री॰ **मनोज्ञता**।

मनोदेवता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विचार, विवेक।

मनोनिग्रह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मन को वश में रखना या स्थिर करना, **मनोगुप्ति** (योग॰)।

मनोनीत–वि॰ (सं॰) पसंद, मन के मुआफिक, मन के अनुकूल, चुना हुआ; (अं॰) नॉमिनेटेड, **मनोभव, मनोभूत**–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कामदेव, अनंग, मन्मथ, मदन, चंद्रमा।

मनोमय-कोश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाँच कोशों में से तृतीय कोश जिसके अंतर्भूत मन, अहंकार और कर्मेंद्रियाँ मानी गई हैं (वेदा॰)।

मनोयोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मन को सब ओर से रोक कर एकाग्र करना, मन की वृत्तियों को रोककर एक वस्तु में लगाना। वि॰ **मनोयोगी**।

मनोरंजक–वि॰ यौ॰ (सं॰) मन को प्रसन्न करने वाला।

मनोरंजन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दिल-बहलाव, मनोविनोद। वि॰ **मनोरंजक**, वि॰ **मनोरंजनीय**।

मनोरथ–संज्ञा, पु॰ यो॰ (सं॰) इच्छा, अभिलाषा, कामना।

मनोरम–वि॰ (सं॰) सुंदर, मनोज, मनोहर। स्त्री **मनोरमा**। संज्ञा, पु॰ सखी छंद का एक भेद (पिं॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **मनोरमता**।

मनोरमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सात सरस्वतियों में से चौथी सरस्वती, एक छंद (पिं॰)।

मनोरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मनोहर*) दीवाल पर गोबर के चित्र, गोबर की मूर्त्तियों (दिवाली के बाद बनती और पूजी जाती हैं) झिंझिया स्त्री॰। यौ॰ **मनोरा-झूमक**–एक तरह का गीत।

मनोराज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मनोराज्य*) मन की कल्पना, मानसिक कल्पना।

मनोवांछा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना।

मनोवांछित–वि॰ यौ॰ (सं॰) चित्त चाहा, ईप्सित, अभीष्ट, मनमाँगा, इच्छित, अभिलषित।

मनोविकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मन के भाव, विचार या विकार, जैसे–काम, क्रोध, लोभ, दया, मोह, ईर्षा आदि।

मनोविज्ञान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह शास्त्र जिसमें मन की वृत्तियों की विवेचना हो। संज्ञा, पु॰ वि॰ (सं॰) **मनोवैज्ञानिक**।

मनोवृत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मनोविकार।

मनोवेग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मनोविकार।

मनोव्यापार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विचार।

मनोहर–वि. यौ. (सं.) सुंदर, मनहरण, मन को आकृष्ट और वश में करने वाला। संज्ञा, स्त्री. **मनोहरता**।

मनोहरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुंदरता।

मनोहरताई*–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **मनोहरता** (सं.)।

मनोहराई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मनोहरता*) मनोहरता, सुंदरता।

मनोहारी–वि. (सं. *मनोहारिन्*) मन को हरने वाला, मनोहर। स्त्री. **मनोहारिणी**।

मनौतिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मनौती*) मनौती मानने वाला, प्रतिभू, ज़ामिनदार।

मनौती*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मनाना*) मन्नत, मानता, देव-पूजा, जामिनी।

मन्नत–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मानता*) मानता, मनौती, अभीष्ट-पूर्ति पर किसी देवता की पूजा का संकल्प। **मु. मन्नत उतारना वा चढ़ाना**–पूजा मानने की प्रतिज्ञा पूरी करना। **मन्नत मानना**–यह प्रतिज्ञा करना कि इस कार्य के हो जाने पर इस देवता की यह पूजा की जाएगी।

मन्वंतर–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *मनु+अंतर*) 71 चतुर्युगी के बीतने या व्यतीत होने का समय, ब्रह्मा के 1 दिन का 14वाँ भाग।

मम–*सर्व.* (सं.) मेरा, मेरी, मेरे, अहम् का षष्टी के एक वचन का रूप।

ममता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मेरापना, अपनापन, ममत्व, प्रेम, मोह, लोभ, वात्सल्य, छोह, माता का पुत्र पर प्रेम।

ममत्व–संज्ञा, पु. (सं.) ममता, मोह, अपनापन, मेरापन।

ममास, ममान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मातुल+वास*) मवास, शरण, शरण की जगह, मामा का घर।

ममियाउर, ममियौरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मातुल+गृह*) मामा का धर, **ममाना**।

ममीरा–संज्ञा, पु. (अ. *मामीशन*) एक पौधे की जड़ जो नेत्र-रोग की परमौषधि है।

मयंक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मृगांक*) शशि, चंद्रमा।

मयंद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मृगेंद्र*) सिंह, शेर, बाघ, व्याघ्र।

मय–संज्ञा, पु. (सं.) एक देश, एक दानव जो बड़ा कारीगर या शिल्पी था। (पुरा.)। महाद्वीप अमेरिका के मैक्सिको देश के प्राचीन निवासी। *प्रत्य.* (सं.) एक प्रत्यय जो तदु रूप, विकार अधिकता के अर्थ में शब्दों के अंत में लाई जाती है। स्त्री. **मयी**। संज्ञा, स्त्री. *अव्य.* मैं। *प्रत्य.* (फ़ा.) साथ। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) शराब।

मयकश–वि. (फ़ा.) शराबी। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) **मयकशी**।

मयखाना–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) शराब ख़ाना, **सुरालय,** मधुशाला।

मयखोर–वि. (फ़ा.) शराबी। संज्ञा, स्त्री. **मयखोरी**।

मयना–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सारिका, मैना।

मयमंत, मयमत्त–वि. दे. (सं. *मदमत्त*) मस्त, मतवाला।

मयसुता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) **मयात्मजा** मंदोदरी या **मयतनया**। संज्ञा, पु. **मयसुत**।

मयस्सर–वि. (अ.) प्राप्त, उपलब्ध, सुलभ।

मया*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *माया*) माया, प्रपंच, प्रकृति, प्रधान, प्रेम, दया, ममता, मोह, छोह, प्यार। सर्व. (सं. अहम् का तृतीया में रूप) मेरे द्वारा।

मयूख–संज्ञा, पु. (सं.) किरण, दीप्ति, प्रभा, अग्नि, ज्वाला, कांति, प्रकाश। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **मयूखमाली**।

मयूर–संज्ञा, पु. (सं.) मोर। स्त्री. **मयूरी**।

मयूरगति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) 24 वर्णों की एक छंद या वृत्ति (पिं.)। संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मोर की चाल।

मयूरसारिणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 13 वर्णों का एक छंद (पिं.)।

मरंद*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मकरंद*) मकरंद, पराग।

मरक–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मरकना=दबाग*) दबाकर संकेत करना, संकेत, **मड़क** (प्रान्ती.)।

मरकट–संज्ञा, पु. (दे.) **मर्कट** (सं.) वानर, बंदर।

मरकत–संज्ञा, पु. (सं.) पन्ना, रत्न।

मरकना–क्रि. अ. (*अनु.*) किसी दबाव में पड़कर टूटना, मुड़कना, **मुरुकना** (दे.)।

मरकाना–क्रि. स. दे. (हि. *मरकना*) तोड़ना, चूर करना, फोड़ना, मुड़काना।

मर खपना–क्रि. अ. यौ. (दे.) मर मिटना, नाश हो जाना, अति परिश्रम करना।

मरगजा*†–वि. दे. यौ. (हि. *मलना+मींजना*) मसला या गींजा हुआ, मलादला, विमर्दित; एक हरा नग।

मरघट–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं.) मृतकों के जलानो का घाट

या स्थान, श्मशान, **मरघटा** (दे॰), **चिटका** (प्रान्ती॰)।

मरज़, मरज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मर्ज़*) रोग, बीमारी, बुरी आदत या लत, कुटेव, बुरा स्वभाव। वि॰, संज्ञा, पु॰ **मरीज़**।

मरजाद, मरजादा*–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *मर्यादा*) सीमा, हद, प्रतिष्ठा, महत्ता, महत्व, नियम, परिपाटी, प्रणाली, आदर, रीति।

मरजिया–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मरना+जीना*) जो मरने से बचा हो, मरकर जीने वाला, मरणासन्न, जो मरने के निकट हो, मरने पर तैयार, अधमरा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) समुद्र में बैठकर मोती निकालने वाला गोताखोर, डुबकिहा, पनडुब्बा, **जिवकिया** (प्रान्ती॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **मरज़ी**।

मरज़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) **मरजी** (दे॰)। प्रसन्नता, इच्छा, चाह, स्वीकृति, आज्ञा।

मरजीवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मरना जीना*) मरजिया।

मरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **मरन** (दे॰) मृत्यु, मौत।

मरणासन्न–वि॰ यौ॰ (सं॰) मरने के निकट।

मरत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मृत्यु*) मृत्यु।

मरता। लो॰–**"मरता क्या न करता।"**

मरतबा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पदवी, पद, दर्जा, कक्षा, बार, दफा।

मरद*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *मर्द*) मर्द, पुरुष, बहादुर, साहसी।

मरदई‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मरद+ई प्रत्य॰*) साहस, वीरता, बाहदुरी, मनुष्यत्व।

मरदन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मर्दन*) मलना, मालिश करना, कुचलना, रौंदना, नाश करना, मदद का व॰ व॰।

मरदना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मर्दन*) मलना, नष्ट करना, मसलना, मोड़ना, गूँधना, कुचलना।

मरदनिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मर्दना*) देह में तेल मलने वाला दास।

मरदानगी, मर्दानगी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) शूरता, वीरता, बहादुरी, साहस, शौर्य।

मरदाना–वि॰ (फ़ा॰) पुरुषों का सा, पुरुष-संबंधी, वीरोचित। संज्ञा, पु॰ (दे॰) मर्द। वि॰ स्त्री॰ **मरदानी**।

मरदी–वि॰ (अ॰) मर्द-संबंधी, मर्दानगी (यौ॰ में, जैसे-जवाँमर्दी)।

मरदूद–वि॰ (अ॰) नीच, तिरस्कृत; मनहूस।

मरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *मरण*) जीवों के देहों से जीवात्मा का निकल जाना, मृत्यु को प्राप्त होना, चेतन शक्ति का नष्ट होना। यौ॰ **मरना-खपना, मरना-मिटना। मु॰** यौ॰ **मरना-जीना**–शुभाशुभ अवसर, शादी ग़मी, सुख-दुख, अत्यधिक कष्ट उठाना। **मु॰ किसी पर मरना**–आसक्त या लुब्ध होना। **बात पर मरना**–जीवन देकर भी बात रखना। **बात को मरना**–व्यर्थ या निस्सार बातों में शान दिखाने की इच्छा करना। **मर मिटना**–परिश्रम करते करते नष्ट हो जाना। **मरा जाना**–व्याकुल होना, अत्याकुल होना, आतुर और कातर होना। कुम्हलाना, मुरझाना, सूखना, लज्जित होना, संकोच करना, किसी काम का न रह जाना, नष्ट होना। **मु॰ पानी मरना**–कलंक लगना, बेशरम या निर्लज्ज हो जाना, दीवाल की नींव में पानी धँसना, किसी से हारना, दबना, पछताना, वेग का शांत होना।

मरनी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मरना*) मृत्यु, मौत, हैरानी, कष्ट, किसी के मरने पर उसके संबंधियों का सदुःख कृत्य।

मर-भुक्खा–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मरना+भूखा*) दरिद्र, कंगाल, भुक्खड़।

मरभुखा, मरभूखा–वि॰ (दे॰) बिना खाया, खाऊ, पेटू, दरिद्र।

मरम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मर्म*) मर्म, भेद। वि॰ **मरमी**।

मरमर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संगमरमर, एक प्रकार का सफेद पत्थर। संज्ञा, पु॰ (दे॰) पानी के बहने का 'मरमर' शब्द।

मरमराना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) मर मर शब्द करना, दबाव से लकड़ी आदि का मरमर शब्द करना।

मरम्मत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) जीर्णोद्धार, दुरुस्ती, किसी वस्तु के टूटे-फूटे भागों की दुरुस्ती, बिगड़ी वस्तु का सुधार।

मरवाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *मारना प्रे॰ रूप*) किसी को किसी दूसरे के पीटने को प्रेरित करना।

मरसिया–संज्ञा, पु॰ (अ॰) किसी की मृत्यु के संबंध में शोक-काव्य, करुण-क्रंदन।

मरहट*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मरघट*) मरघट, श्मशान, मसान। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मोठ।

मरहटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *महाराष्ट्र*) मरहठा, **मरहट्टा** (दे॰)।

मरहठा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *महाराष्ट्र*) महाराष्ट्र देश का निवासी, महाराष्ट्र। स्त्री॰ **मरहठिन**।

मरहठी–वि. दे. (हि. *मरहठा*) मरहठा-संबंधी, मरहठों का। संज्ञा, स्त्री. (दे.) मरहठों की बोली या भाषा, **मराठी** (प्रान्ती.)।

मरहम–संज्ञा, पु. (अ.) पीड़ित स्थानों या घावों पर लगाने की औषधियों का लेप।

मरहला–संज्ञा, पु. (अ.) पड़ाव, ठिकाना, मंजिल, मरातिब। **मु. मरहला तय करना**–झगड़ा निपटाना, कठिन कार्य को पूर्ण करना।

मरहूम–वि. (अ.) मृत, स्वर्गवासी।

मरातिय–संज्ञा, पु. (अ.) उत्तरोत्तर आने वाली अवस्थाएँ, दरजा, पद, घर के खंड, ध्वजा, पताका, झंडा।

मराना–क्रि. स. (हि. *मारना का प्रे. रूप*) मारने की प्रेरणा करना, मरवाना।

मरायल*†–वि. दे. (हि. *मारना+आयल प्रत्य.*) मार खाने वाला, पीटा हुआ, सत्वहीन, निर्बल, निःसत्व। संज्ञा, पु. (दे.) घाटा, क्षति, हानि।

मराल–संज्ञा, पु. (सं.) हंस, बत्तख़, घोड़ा, हाथी। स्त्री. **मराली**।

मरिंद, मलिंद*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मलिंद*) भौरा, **मरंद** (दे.)। संज्ञा, पु. (सं. *मकरंद*) मकरंद।

मरियम–संज्ञा, स्त्री. (अ.) ईसा की माता, कुमारी।

मरियल–वि. दे. (हि. *मरना*) **मरगुल** (ग्रा.) दुबला, कमज़ोर।

मरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मारी*) एक संक्रामक रोग, महामारी, प्लेग (अं.)

मरीचि–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्मा के मानसिक पुत्र ऋषि जो एक प्रजापति और सप्तर्षियों में हैं (पुरा.), एक मारुत, भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता। संज्ञा, स्त्री. (सं.) किरण, कांति, किर्च, मृगतृष्णा।

मरीचिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मृग-तृष्णा, सराब, किरण, मिर्च।

मरीचिमाली–संज्ञा, पु. (सं. *मरीचि मालिन्*) सूर्य, चंद्रमा।

मरीची–संज्ञा, पु. (सं. *मरीचिन्*) सूर्य, चंद्रमा, किरण, कांति।

मरीज़–वि. (अ.) बीमार, रोगी।

मरीना, मलीना–संज्ञा, पु. दे. (*स्पेनी. मेरिनो*) एक पतला नरम ऊनी वस्त्र।

मरु–संज्ञा, पु. (सं.) रेगिस्तान, रेतीला मैदान, निर्जल स्थान, मारवाड़ के समीप का देश। यौ. **मरुस्थल, मरु-भूमि**।

मरुआ, मरुवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मरुव*) **बबरी** (ग्रा.) वन-तुलसी की जाति का एक पौधा। संज्ञा, पु. (सं. *मेरु*) बँडेर, बल्ली, हिंडोला लटकाने की बल्ली या लकड़ी।

मरुत-मरुद्–संज्ञा, पु. (सं.) वायु, उनचास मरुत हैं। हवा, प्राण, रुद्र और वृश्नि के पुत्र (वेद.), कश्यप और दिति के पुत्र (पुरा.), एक देव-गण।

मरुतुवान*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मरुत्वान्*) इंद्र, मघवा।

मरुत्सखा–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मरुन्मित्र, अग्नि, तेज।

मरुत्वान–संज्ञा, पु. (सं. *मरुत्वत्*) इंद्र, धर्म के पुत्र एक देवगण, हनुमान।

मरुतात्मज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मारुति, हनुमान जी।

मरुथल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मरुस्थल*) रेगिस्तान, **मरुदेश**।

मरुद्वीप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सजल, हरा-भरा और उपजाऊ स्थान जो मरुस्थल में हो, शाद्वलभूमि, **ओआसिस** (अं.)।

मरुधर–संज्ञा, पु. (सं.) मारवाड़ देश, बलुवा प्रदेश।

मरुभूमि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रेतीला और निर्जल देश, रेगिस्तान, बलुवा देश।

मरुरना*–क्रि. अ. दे. (हि. *मरोड़ना*) ऐंठना, मरोड़ा जाना।

मरुस्थल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) निर्जल प्रदेश, रेगिस्तान, रेतीला देश।

मरू*–वि. दे. (हि. *मारना*) कठिन, दुरूह, मुश्किल। **मु. मरू करिकै या मरूकरि**–बहुत कठिनता से, ज्यों-त्यों करके, बड़ी कठिनाई या कष्ट से।

मरूरा-मरौरा*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रोड़*) मरोड़, दर्द। वि. मरोड़ा हुआ।

मरोड़–संज्ञा, पु. (हि. *मरोड़ना*) **मरोर** (दे.) मरोड़ने का भाव या क्रिया। संज्ञा, स्त्री. (दे.) पेट में ऐंठन सी पीड़ा। **मु. मरोड़ खाना**–चक्कर खाना। **मन में मरोड़ करना**–कपट या छल करना। **मरोड़ की बात**–पेंचीदा या घुमाव फिराव की बात। घुमाव, बल, ऐंठन, क्षोभ, व्यथा, दुख। **मु. मरोड़ खाना**–उलझन में पड़ना, पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। घमंड, क्रोध। **मु. मरोड़ गहना**–क्रोध करना।

मरोड़ना–क्रि. स. दे. (हि. *मोड़ना*) ऐंठना, घुमाना, बल डालना, उमेठना, **मरोरना** (दे.)। **मु. अंग मरोड़ना**–अँगड़ाई

लेना। **भौंह या आँख आदि मरोड़ना**–इशारा करना, कनखी मारना, नाक भौंह चढ़ाना, भौंह सिकोड़ना, उमेठ कर तोड़ डालना, ऐंठ कर नष्ट करना या मार डालना, मसलना, पीड़ा या दुख देना, मलना। **मु॰ हाथ मरोड़ना**–पछताना, कलाई या हाथ ऐंठना।

मरोड़कली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) मुरा की लकड़ी, एक फली। **अवतरना** (प्रान्ती॰)।

मरोड़ा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मरोड़ना*) ऐंठन, **मरोरा** (दे॰) उमेठ, मरोड़, बल, पेट की ऐंठन सी पीड़ा।

मरोड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मरोड़ना*) ऐंठना। **मु॰ मरोड़ी करना**–खींचातानी करना।

मर्कट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बानर, बंदर, दोहा का एक भेद, छप्पय का 8वाँ भेद (पिं॰)।

मर्कटी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बानरी, बंदरी, मकड़ी, छंद, 2 प्रत्ययों में से अंतिम इससे मात्रा, कला, गुरु, लघु और वर्ण-संख्या ज्ञात होती है (पिं॰), एक वनौपधि (वैद्य)।

मर्कत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मरकत*) पन्ना।

मर्ज़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रोग, बीमारी, बुरी बात, या लत।

मर्तबान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *अमृतबान*) अमृतबान, खटाई, घी आदि रखने का एक प्रकार का रोग़नी बरतन।

मर्त्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनुष्य, शरीर, भू-लोक। वि॰ मरने वाला।

मर्त्यलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भूलोक, पृथ्वी।

मर्द–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) **मरद** (दे॰) मनुष्य, साहसी पुरुष, पुरुषार्थी, वीरपुरुष, भर्ता, नर, पति, पुरुष।

मर्दन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मलना, कुचलना, नष्ट करना। वि॰ **मर्दनीय**।

मर्दना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मर्दन*) मलना, मालिश करना, नष्ट करना, **मरदना** (दे॰) रौंदना।

मर्दानगी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) वीरता, साहस, बहादुरी।

मर्दित–वि॰ (सं॰) मसला या भला हुआ, कुचला या रौंदा हुआ।

मर्दुम–संज्ञा॰ पु॰ (फ़ा॰) मनुष्य।

मर्दुमशुमारी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰) देश की मनुष्य-गणना, जनसंख्या।

मर्दुमी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) मरदानगी, पौरुष। वि॰ (स्त्री॰ *मुर्दिनी*) नाशक, संहारकर्त्ता।

मर्दन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रौंदना, कुचलना, मलना, शरीर में तेल आदि लगाना या मसलना, ध्वंस, नाश, कुस्ती में एक मल्ल का दूसरे के गले आदि में धस्सा मारना, घोंटना, पीसना, रगड़ना। (वि॰ **मर्दित, मर्दनीय**)।

मर्दनीय–वि॰ (सं॰) मलने या नष्ट करने के योग्य।

मर्दल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मृदंग सा एक बाजा (बंगाल॰)।

मर्दित–वि॰ (सं॰) जो मला या कुचला गया हो।

मर्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मर्म्म*) भेद, तत्त्व, रहस्य, संधि-स्थान, प्राणियों के शरीर के वे स्थान जहाँ चोट लगने से अधिक पीड़ा होती है, **मरम** (दे॰)। वि॰ **मार्मिक**।

मर्मज्ञ–वि॰ (सं॰) भेद जानने वाला, तत्वज्ञ, रहस्य जानने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **मर्मज्ञता**।

मर्मभेदक–वि॰ यौ॰ (सं॰) मर्म-भेदी, हृदय पर चोट करने वाला, आंतरिक कष्ट पहुँचाने वाला।

मर्मभेदी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मर्मभेदिन्*) मर्म-भेदक, दिली दुख देने वाला।

मर्मर–संज्ञा, पु॰ (यू॰) संगमरमर। संज्ञा, पु॰ (सं॰) तुषानल।

मर्मवचन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) ऐसी बात जिसके सुनने से आंतरिक कष्ट हो, दुखदाई बात, रहस्य या भेद की बात, गूढ़ कथन।

मर्मवाक्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रहस्य की बात, भेद की बात, गूढ़ कथन, गंभीरवाणी।

मर्मविद्–वि॰ (सं॰) मर्मज्ञ, भेद जानने वाला।

मर्मांतक–वि॰ यौ॰ (सं॰) मर्म-भेदक, दिल में चुभने वाला, हृदयस्पर्शी, मर्मस्पर्शी।

मर्मी–वि॰ (हि॰ *मर्म*) मर्मज्ञ, तत्वज्ञ, मर्मवाला।

मर्याद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मर्यादा*) मर्यादा, रीति, प्रथा, बराहार (विवाह) सीमा, **मरजाद** (दे॰)।

मर्यादा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हद, सीमा, किनारा, कण, फूल, नियम, प्रतिज्ञा, प्रतिष्ठा, धर्म, सदाचार, सम्मान, **मरजादा** (दे॰)।

मलंग–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक मुसलमान साधु। वि॰ **मलंगा**–नंगा, नग्न।

मलंगी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक जाति जो नमक बनाती है, नुनियाँ, लुनियाँ।

मल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मैल, मैला, कीट, विष्ठा, पुरीष, देह का विकार, दूषण, ऐब, पास। यौ॰ **मल-मूत्र**।

मलकना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) मटकना, नखरे से मटक-मटक कर चलना।

मलका-मलिका–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मलिका*) महारानी, बेगम, पटरानी।

मलकिन-मालकिन–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मालिक*) मालिक की स्त्री।

मलखंभ–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मल्लस्थंभ*) **मलखम** (दे॰ पहलवानों की कसरत का खंभ।

मलखम–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मल्लस्थंभ*) पहलवानों की कसरत का खंभ, **मालखंभा**, उसका व्यायाम।

मलगजा*–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मलना+मीजना*) मलादला, या गींजा हुआ, मरगजा। संज्ञा, पु॰ बेसन में लपेटे बैंगन के घी या तेल में भूने टुकड़े।

मलगिरी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मलयगिरि*) हलका कत्थई रंग।

मलद्वार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरीर की मल निकालने वाली इंद्रिय, गुदा।

मलना–क्रि॰ स॰ (सं॰ *मलन*) जोर से घिसना, हाथ से रगड़ना, ऐंठना, मर्दन करना, मींजना, मालिश करना, मसलना, हाथ या अन्य वस्तु से दबाते हुए घिसना। यौ॰ **दलना-मलना**–पीसना, चूर्ण करना, घिसना, मसलना, नष्ट करना। **मु॰ हाथ मलना**–पछताना, क्रोध दिखाना।

मलबा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मल*) कूड़ा-करकट, खर-पतवार, गिरे हुए घर का सामान, ईंट, चूना आदि।

मलमल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰*मलमल्लक*) एक पतला सफेद सूती कपड़ा।

मलमास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संक्रांति हीन मास, अधिक मास, पुरुषोत्तम या अधिमास, लौंद का महीना।

मलमेंट–संज्ञा, पु॰ (दे॰) उजाड़, सत्यानाश, विध्वंस, विनष्ट।

मलय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मलावार देश, मैसूर से दक्षिण और ट्रावनकोर से पूर्व का पश्चिमी घाट का भाग, वहाँ के निवासी, नंदनवन, सफेद चंदन, चंदन-वन; एक पहाड़, छप्पय का एक भेद (पिं॰)।

मलयगिरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दक्षिण का एक पहाड़ जहाँ चंदन होता है, मलयाचल का चंदन, आसाम देश, **मलयागिरि** (दे॰ यौ॰)।

मलयज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंदन, मलयगिरि में उत्पन्न।

मलयाचल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मलय पर्वत।

मलयानिल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मलय पहाड़ की सुगंधित वायु, सुगंधित वायु, वसंत-पवन।

मलयाली–वि॰ दे॰ (स॰ *मलयालम्*) मलाबार-संबंधी, मलाबार का। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मलावार की बोली या भाषा, **मलायन**।

मलराना–क्रि॰ स॰ (दे॰) **मल्हराना**, प्यार करना।

मलवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मलना का प्रे॰ रूप*) मलने का काम दूसरे से कराना, **मलाना**। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **मलवाई**।

मलहम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मरहम*) **मरहम**, फोड़ों आदि का लेप (औष॰)।

मलाई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) रस, तत्त्व, दूध की साढ़ी, गर्म दूध का ऊपरी सार भाग। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मलना*) मलने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

मलान*–वि दे॰ (सं॰ *ग्लान*) मलीन, उदास, रंजीदा।

भलानि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*ग्लानि*) उदासीनता, उदासी, मलीनता।

मलामत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) फटकार, दुतकार, लानत, निकृष्ट भाग, गंदगी। यौ॰ **लानत मलामत**–फटकार, निंदा।

मलार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मल्लार*) वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग। **मु॰ मलार गाना**–अति प्रसन्न हो कुछ कहना या गाना।

मलाल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रंज, दुख, उदासी, खेद, खिन्नता।

मलाह*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मल्लाह*) मल्लाह, केवट। संज्ञा, स्त्री॰ **मल्लाही-मलाही**–केवट का पेशा।

मलिंद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मिलिंद*) भौंरा।

मलिक–संज्ञा, पु॰ (अ॰) **मालिक**, राजा, अधिपति, अधिराजा। स्त्री॰ **मलिका**।

मलिक्ष, मलिच्छ*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *म्लेच्छ*) म्लेच्छ, मांसाहारी, नीच, दरिद्र। वि॰ **मलिच्छी**–गंदा, घृणित, नीच, दरिद्री।

मलिन–वि॰ (सं॰) **मलीन**, मैला, गँदला, मटमैला, दूषित, उदास, धूमिल, पापी, धीमा, फीका, उदास, म्लान, बदरंग। स्त्री॰ **मलिना, मलिनी**। संज्ञा, स्त्री॰ **मलिनता**,

मलिनाई (दे.)। संज्ञा, पु. मैले कपड़े पहनने वाले एक साधु लोग, **अघोरी**।

मलिनता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **मलीनता,** मैलापन, उदासी। **मलिना**–वि. स्त्री. (सं.) दुखित, दूषित।

मलिनाई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मलिनता*) मलिनता, उदासी, मैलापन, **मलिनई** (दे.)।

मलिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मलिनता*) ऋतुमती या रजस्वला स्त्री।

मलिम्लुच–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मलमास, अग्नि, चोर, वायु।

मलिया†–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मल्लिका*) तंग मुँह वाला मिट्टी का पात्र या घेरा, चक्कर। माला का अल्पा. स्त्री. बच्चों की माला।

मलियामेट–संज्ञा, पु. दे. (हि.) सत्यानाश, **तहस-नहस, मटियामेट**।

मलीदा–संज्ञा, पु. (फ़ा. *मालीदा*) चूरमा, एक बहुत मृदु ऊनी कपड़ा।

मलीन–वि. दे. (सं *मालिन*) मैला, गंदा, उदास, खिन्न, दुखी, अस्वस्थ, अस्वच्छ।

मलीनता–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मलिनता*) मलिनता, मलिनाई, उदासी।

मलूक–संज्ञा, पु. (सं.) एक कीड़ा, एक पक्षी, **अमलूक** (प्रान्ती.)। वि. (दे.) सुंदर, मनोहर। संज्ञा, पु. यौ. एक प्रसिद्ध नीच जाति के साधु-मलूकदास।

मलेच्छ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *म्लेच्छ*) म्लेच्छ, मांसाहारी, **मलिच्छ** (दे.)।

मलैया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) हँाड़ी, हंडी।

मलोला–संज्ञा, पु. म. (अ. मलूल या बलबला) मनसंबंधी दुख, रंज, दुख, मानसिक या हार्दिक खेद या खिन्नता। **मु. मलोला या मलोले आना**–दुख या पछितावा होना। **मलोले खाना**–मन की व्यथा सहना। अरमान, हार्दिक वेदना, व्यथा या व्याकुलता उत्पन्न करने वाली इच्छा।

मलल–संज्ञा, पु. (सं.) दीप-शिखा, एक पुरानी जाति जो द्वंद्व-युद्ध में बड़ी कुशल थी, इसी से पहलवान को मल्ल कहते हैं, पहलवान, कुश्तीगीर, विराट के निकट का एक प्राचीन देश।

मल्लक–संज्ञा, पु. (सं.) दीपक, नारियल का पात्र, पहलवान।

मल्लभूमि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अखाड़ा, कुश्ती लड़ने का स्थान।

मल्लयुद्ध–संज्ञा, पु. (सं.) कुश्ती, बाहुयुद्ध, केवल हाथों से बिना शस्त्रास्त्र के किया जाने वाला द्वंद्व युद्ध।

मल्लविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) कुश्ती की विद्या, **मल्ल-विज्ञान**।

मल्लशाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) अखाड़ा, मल्ल-भूमि।

मल्लार–संज्ञा, पु. (सं.) मलार राग (संगी.), मछली मारने और नाव चलाकर निर्वाह करने वाली एक नीच जाति, मल्लाह।

मल्लारी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक रागिनी।

मल्लाह–संज्ञा, पु. (अ.) केवट, धीवर, नाव चलाने और मछली मारने वाली एक नीच जाति, **माँझी**। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **मल्लाही**।

मल्लिक–संज्ञा, पु. (सं.) हंस, श्वेत हंस।

मल्लिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मोतिया, एक बेला फूल, ८ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.), सुमुखी वृत्ति, सुमुखि छंद (पिं.)।

मल्लिनाथ–संज्ञा, पु. (सं.) जैनमत में उन्नीसवें तीर्थंकर, संस्कृत के एक प्रसिद्ध टीकाकर पंडित।

मल्ली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मल्लिका, सुंदरी छंद या वृत्ति का दूसरा नाम।

मल्लू-मल्हू–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मल्ल*) बंदर।

मल्लूर–संज्ञा, पु. (सं.) बेल का पेड़, विल्व-वृक्ष।

मल्हराना–क्रि. स. दे. (सं. *मल्ह*) दुलार दिखाते हुए लेटना, चुमकारना, प्यार करना।

मवक्किल–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मुवक्किल*) मुकदमें में अपने लिए वकील करने वाला।

मवाज़ा–संज्ञा, पु. (अ.) बदले या परिवर्तन में दिया धन, **मुआवज़ा**।

मवाजिव–संज्ञा, पु. (अ.) नियत समय पर मिलने वाली वस्तु, जैसे–तनख़्वाह।

मवाद–संज्ञा, पु. (अ.) पीव; फालतू वस्तु।

मवास–संज्ञा, पु. (सं.) त्राण या रक्षा का स्थान, शरण, आश्रय, गढ़, दुर्ग, किले के प्राकार पर के वृक्ष। **मु. मवास करना**–रहना, निवास करना।

मवासी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शरण, रक्षा, छोटा क़िला।

मवेशी–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मवाशी*) ढोर, पशु, चौपाए।

मवेशीखाना–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) वह घर जिसमें पशु रखे जाते हैं।

मशक–संज्ञा, पु. (सं.) **मसक** (दे.) मच्छड़, मसा नामक एक चर्म-रोग। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) पानी ढोने का चमड़े का बड़ा थैला।

मशक्कत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) परिश्रम, मेहनत, वह श्रम जो जेल में कैदियों से कराते हैं। यौ. **मेहनत-मशक्कत**।

मशगूल–वि. (अ.) कार्य-लीन, काम में लगा हुआ।

मशरू, मशरुआ–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मशरुश्र*) एक धारीदार कपड़ा।

मशविरा–संज्ञा, पु. (अ.) राय, मंत्रणा, परामर्श, सलाह।

मशहरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मच्छरों से बचने के लिए बनाया हुआ कपड़ा, **मसहरी, मसैरी**।

मशहूर–वि. (अ.) प्रसिद्ध, विख्यात। संज्ञा, स्त्री. **मशहूरता**।

मशाल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) एक बहुत मोटी बत्ती जो डंडे में लगी रहती है। **मु. मशाल लेकर (जला कर) ढूँढ़ना**–बहुत खोज करना, ख़ूब ढूँढ़ना।

मशालची–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मशाल दिखाने वाला। स्त्री. **मशालचिन**।

मश्क़–संज्ञा, पु. (अ.) अभ्यास।

मष–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मख*) यज्ञ।

मषि-मषी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मसि*) स्याही। **मष्ट**–वि. (सं.) संस्कार शून्य, उदासीन, मौन, चुप, भूला हुआ। **मु. मष्ट करना, धारना या मारना**–कुछ न बोलना, चुप रहना।

मस*†–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मसि*) स्याही।

मसि। संज्ञा, स्त्री. (सं. *श्मश्रु*) मूछ निकलने के पूर्व होठों पर की रोमावली, **मसि**। **मु. मस भीजना**–मोछों का निकलना शुरू होना।

मसक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मशक*) मसा, मच्छड़। संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) मसकने की क्रिया, पानी भरने का चमड़े का थैला।

मसकना–क्रि. स. दे. (*अनु.*) कपड़े को दबाना कि वह फट जाय, बलपूर्वक मलना या दबाना। क्रि. अ. खिंचाव या दबाव पड़ने से फट जाना, मन का चिंतित होना।

मसफला–संज्ञा, पु. (अ.) सिकली करने का एक यंत्र, सैकल या सिकली करने की क्रिया।

मसका–संज्ञा, पु. (फ़ा.) ताज़ा घी, मक्खन, नवनीत, नैनू। दही का तोर या पानी, चूने की बरी का चूर्ण जो पानी छिड़कने से बने।

मसकीन*†–वि. दे. (अ. *मिसकीन*) कंगाल, बेचारा, सज्जन, सुशील, भोलाभाला, दरिद्र, दीन।

मसखरा–संज्ञा, पु. (अ.) हँसोड़, ठट्ठेबाज़, हँसी मज़ाक करने वाला, दिल्लगीबाज़।

मसखरापन–संज्ञा, पु. (अ. *मसखरा+पन प्रत्य.*) हँसी-ठठोली, ठट्ठेबाज़ी, दिल्लगी, ठट्ठा।

मसखरी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *मसखरा+ई प्रत्य.*) हँसी, दिल्लगी, मज़ाक।

मसखवा, मसखावा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. हि. *मांस+खाना*) मांसाहारी, मांस खाने वाला।

मसजिद–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *मस्जिद*) एकत्रित होकर मुसलमानों के नमाज़ पढ़ने या ईश्वर की प्रार्थना करने का मंदिर।

मसनद–संज्ञा, स्त्री. (अ.) बड़ा या गाव-तकिवा, अमीरों के बैठने की गद्दी। यौ. **मसनद-तकिया**।

मसनवी–संज्ञा, (अ.) एक छंद, कथा-काव्य।

मसमुंद*†–वि. (दे. *मस+मूँदना=बंद होना* हि.) ठेलमठेल, रेलपेल, धक्कम-धक्का, कशमकश।

मसमसाना–क्रि. अ. (दे.) दाँत पीसना, भीतर ही भीतर जलते रहना।

मसयारा*†–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मशुअल*) मशालची, मशाल।

मसरफ–संज्ञा, पु. (अ.) काम या व्यवहार में आना, उपयोग, प्रयोग।

मसरूफ़–वि. (अ.) व्यस्त, (काम में) डूबा हुआ।

मसल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) लोकोक्ति, कहावत, **कहनावति**।

मसलन्–वि. (अ.) उदाहरणार्थ, जैसे, यथा।

मसलना–क्रि. स. दे. (हि. *मलना*) हाथ से रगड़ना, बलपूर्वक दबाना, मलना, आटा गूँधना।

मसलहत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) भलाई की बात, ऐसी गुप्त युक्ति जो सहज में जानी न जावे। क्रि. वि.

मसलहतनू–जान-बूझ कर, युक्ति से।

मसला–संज्ञा, पु. (अ.) लोकोक्ति, कहावत, विचारणीय, समस्या, मामला।

मसवासी–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *मासवासी*) एक मास से अधिक किसी स्थान पर न रहने वाला साधु। संज्ञा, स्त्री. वेश्या, रंडी, गणिका।

मसविदा–संज्ञा, पु. (अ.) **मसौदा** (दे.), उपाय, युक्ति, तरकीब वह लेख जो पहले साधारण रीति से लिखा जावे फिर विचारानुसार उसमें कमीवेशी की जावे।

मसहरी, मसेहरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मशहरी*) वह जालीदार वस्त्र जो मच्छरों से बचने के लिए पलँग के ऊपर और चारों ओर लगाया जाता है, मसहरी लगाने का पलंग, **मसेरी** (दे.)।

मसहार*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *माँसाहारिन्*) माँसाहारी, **मसहारी** (दे.)।

मसा, मस्सा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *माँसकील*) देह पर माँस का उभरा हुआ काले रंग का छोटा दाना, ववासीर रोग के माँस का दाना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *मशक*) मच्छड़।

मसान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्मशान*) श्मशान, मरघट, **चिटका** (ग्रा.)। यौ. **तेलिया मसान**–प्रेत हुआ तेली, पिशाच। **मु. मसान जगाना**–तंत्र शास्त्र की रीति से मरघट में बैठकर मृतक या प्रेत की सिद्धि करना। भूत-प्रेत, युद्ध-भूमि।

मसाना–संज्ञा, पु. (अ.) मूत्राशय, पेट में पेशाब की थैली।

मसानिया–संज्ञा, पु. (दे.) डुमार, डोम, श्मशानवासी।

मसानी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *श्मशानी*) मरघट की पिशाचिनी, डाकिनी आदि।

मसाला–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मसलह*) वह सामग्री जिससे कोई वस्तु बनाई जावे, औषधियों का रासायनिक पदार्थों का समूह या योग, साधन, आतिशबाजी, तेल आदि, लौंग, ज़ीरा, मिर्च, हल्दी, धनियाँ आदि मसाले; पान का मसाला।

मसालेदार–वि. दे. (अ. *मसलह+दार* फ़ा.) जिस पदार्थ में किसी प्रकार का मसाला या औषधियों का समूह मिलाया गया हो।

मसाहत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) माप, नाप, पैमाइश।

मसि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लिखने की स्याही, रोशनाई, काजल, कारिख।

मसिदानी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मसि+दानी* फ़ा.) दावात, मसि-पात्र।

मसिपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दावात।

मसिविंदु–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) स्याही की बूँद।

मसिबुंदा, मसिबूंद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मसिबिंदु*) मसि-बिंदु, स्याही का वूँद, काजल का बुंदा जो लड़कों के माथे में नजर न लगने के लिए लगाया जाता है, **दिठौना**।

मसिमुख–वि. यौ. (सं.) जिसके मुख में स्याही लगी हो, कुकर्मी, दुराचारी, कलंकी।

मसियर, मसियार*–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *मशअल*) मशाल। वि. (दे.) स्याही लगा।

मसियाना–क्रि. अ. (दे.) पूरा हो जाना या भली भाँति भर जाना, **मस भींजना**।

मसियार*–संज्ञा. पु. दे. (फ़ा *मशालची*) मशालची। वि. (दे.) कलंकी, स्याही लगा।

मसिबिंदु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्याही का बूंद, दृष्टि-दोप से बचाने को बच्चों के मत्थे पर काजल का टीका, दिठोना।

मसी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मसि*) स्याही, रोशनाई।

मसीत, मसीद*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *मसजिद*) मसजिद, मुसलमानों के नमाज़ पढ़ने का स्थान, **मज्जित महजित** (दे.)।

मसीना–संज्ञा, स्त्री. (दे.) अलसी, तिसी।

मसीह, मसीहा–संज्ञा, पु. (अ.) (वि. *मसीही*) ईसाई मत के धर्म-गुरु, हज़रत ईसा।

मसूड़ा, मसूढ़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्मश्रु*) दाँतों को साधने वाला माँस।

मसूर–संज्ञा, पु. (सं.) **मसुरी** (दे.)। एक द्विदल चिपटा अनाज जिसकी दाल बनाई जाती है।

मसूरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मसूर की दाल या बरी।

मसूरिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चेचक का एक भेद, शीतला, माता, छोटी माता या देवी।

मसूरिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) शीतला, चेचक, माता, देवी।

मसूरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) माता, चेचक, शीतला; उत्तरांचल

का एक प्रसिद्ध हिल-स्टेशन।

मसूस, मसूसनि–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मसूसना*) भीतरी दुःख, दिल मसूलने का भाव, अंतर्व्यथा, **मसूसन**।

मसूसना–क्रि. अ. दे. (फ़ा.) अफ़सोस या मनोवेग को रोकना, ज़ब्त करना, कुढ़ना, मन में दुख करना, ऐंठना, **निचोड़ना, भरोड़ना। मु. मन मसोसना**–इच्छा या मनोवृत्ति को बलात् रोकना।

मसृण–वि. (सं.) मृदु, चिकना और मुलायम, नरम, कोमल। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **मसृणता**।

मसेवरा†–संज्ञा, पु. (हि. *माँस*) माँस से बने हुए खाने के पदार्थ।

मसोसना–क्रि. अ. दे. (हि. *मसूसना*) मसूसना।

मसौदा–संज्ञा, पु. (अ. *मसविदा*) प्रथम बार का लिखा साधारण लेख जिसमें फिर से काट-छाँट हो सके, मसविदा, (अं.) ड्राफ़्ट, उपाय। **मु. मसौदा गाँठना या बाँधना (बनाना)**–काम करने का उपाय या युक्ति सोचना। **मसौदा करना**–सलाह करना, युक्ति सोचना; ड्राफ़्ट बनाना।

मसौदेबाज़–संज्ञा, पु. (अ. *मसविदा+बाज़ फ़ा. प्रत्य.*) चालाक, धूर्त, अधिक युक्ति खोजने वाला।

मस्करा*–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मसखरा*) मसखरा। संज्ञा, स्त्री. (दे.) मस्करी।

मस्त–वि. (फ़ा. *मि. सं. मत्त*) प्रमत्त, मतवाला, नशे में चूर, मदोन्मत्त, सदा प्रसन्न चित्त या निश्चिंत रहने वाला, **मद-भरा,** मग्न, प्रसन्न, आनंदित, यौवन मदपूर्ण।

मस्तक–संज्ञा, पु. (सं.) सिर, माथा, मत्था।

मस्तगी–संज्ञा, स्त्री. (*अ. मस्तकी*) एक गोंद जैसी औषधि। यौ. **रूमी मस्तगी**।

मस्ताना–वि. (फ़ा. *मस्तानः*) मस्तों की भाँति, मस्तों का सा। क्रि. अ. दे. (फ़ा. *मस्त*) मस्त या मतवाला होना। क्रि. स. मस्त करना।

मस्तिष्क–संज्ञा, पु. (सं.) मग़ज़, दिमाग़, भेजा, मस्तक का गूदा, बुद्धि के रहने का स्थान।

मस्ती–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) मस्त होने की क्रिया या भाव, मतवालापन, मत्तता, मद-मस्तक होने पर कुछ पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि से स्रवित हुआ स्राव, कुछ विशेष वृक्षों या पत्थरों का स्राव।

मस्तूल–संज्ञा, पु. (पुर्त.) बड़ी नाव के बीच का खड़ा शहतीर जिसमें पाल लगाया जाता है।

मस्याधार–संज्ञा, पु. (सं.) मसिपात्र, दावात।

मस्सा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मसा*) मसा।

महँ*†–*अव्य.* दे. (सं. *मध्य*) में।

महँगई, महँगाई†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *महँगी*) महँगी, महार्घता।

महँगा–वि. दे. (सं. *महार्घ*) मूल्य बढ़ जाना, जिसका साधारण या उचित से अधिक मूल्य हो।

महँगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *महँगा+ई प्रत्य.*) महँगापन, महँगा होने का भाव या उसकी दशा, महार्धता, अकाल, दुर्भिक्ष।

महंत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *महत्–बड़ा*) साधु-समूह या मठ का अधिष्टाता। प्रधान, मुखिया, श्रेष्ठ।

महंती–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *महंत+ई प्रत्य.*) महंत का भाव या पद।

मह–*अव्य.* दे. (सं. *मध्य*) में। वि. (सं. *महत्*) महत्, बहुत, महा, बड़ा, श्रेष्ठ।

महक–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *गमक*) गंध, बास। वि. **महकदार**।

महकना–क्रि. अ. दे. (हि. *महक+ना प्रत्य.*) गंध या बास देना। प्रे. **महकाना**।

महकमा, मुहकमा–संज्ञा, पु. (अ.) भाग, सरिश्ता, सीगा, कार्य-विभाग।

महकान, महकनि*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *महक*) गंध, बास।

महकाना–क्रि. अ. दे. (हि. *महक*) सुँघाना, बासना, बास देना, बसाना।

महकीला–वि. दे. (हि. *महक*) सुगंधित, सुवासित।

महज़–वि. (अ.) केवल, मात्र, सिर्फ, शुद्ध, ख़ालिस।

महत्–वि. (सं.) बड़ा, वृहत्, महान्, सर्वश्रेष्ठ। संज्ञा, पु. (सं.) महत्तत्व, प्रकृति का प्रथम विकार, ब्रह्म, परमेश्वर।

महत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *महत्*) बड़ा, बृहत् महान्, सर्वश्रेष्ठ। संज्ञा, पु. (सं.) महत्तत्व, प्रकृति का प्रथम विकार, ब्रह्म, परमेश्वर।

महत–संज्ञा, पु. दे. (सं. महत्त्व) बड़ाई, गुरुता, श्रेष्ठता, उत्तमता, महत्त्व।

महता, महतों–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *महत्*) गाँव का मुखिया, महतों, मुंशी, मुहर्रिर। *संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *महत्ता*) बढ़ाई, अभिमान।

महताब–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) चाँदनी, चंद्रिका, महताबी या एक प्रकार की आतिशबाज़ी। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) चाँद, चंद्रमा, **माहेताब**।

महताबा–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) एक तरह की आतिशबाज़ी, बाग आदि में चौकोर या गोल ऊँचा चबूतरा। वि॰ सफ़ेद।

महतारी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *महत्तरा या माता*) माता, माँ, अम्मा, **मतारी** (दे॰)।

महतिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चौधरी, मुखिया, महतों।

महती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नारदमुनि की वीणा, महिमा, महत्व, बढ़ाई। वि॰ स्त्री॰ बड़ी भारी।

महतु*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *महत्व*) महत्व।

महतत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रकृति का प्रथमा-कृति या विकृति या विकार जिससे अहंकार उत्पन्न होता है, जीवात्मा, बुद्धितत्व।

महत्तम–वि॰ (सं॰) सबसे बड़ा।

महत्तर–वि॰ (सं॰) पदार्थों में से एक श्रेष्ठ।

महत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) महत् का भाव, श्रेष्ठता, गुरुता, उत्तमता, **महानता**।

महत्त्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महत् का भाव, गुरुता, बढ़ाई, श्रेष्ठता, उत्तमता।

महदात्मा–वि॰ यौ॰ (सं॰) महान् आत्मावाला, महाशय, महात्मा।

महना*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मथना*) मथना, नष्ट करना। यो॰ **महनामथना**–कलह, झगड़ा।

महनाय–वि॰ (सं॰) महान्।

महनु*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मथन*) मथन, विनाशक।

महफ़िल–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मजलिस, जलसा, समाज, सभा, नाच-गान का स्थान। वि॰ **महफ़िली**।

महबूब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रिय, प्रेम-पात्र, प्यारा, प्रियतम। स्त्री॰ **महबूबा**।

महमंत*–वि॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *महा+मत्त*) मद-मस्त, प्रमत्त, मतवाला।

महमद*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मुहम्मद*) मुहम्मद।

महमह–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *महकना*) सौरभ, सुगंधि या सुवास के साथ। संज्ञा, स्त्री॰ **महमही**।

महमहा–वि॰ (हि॰ *महमह*) सुगंधित, सौरभीला। स्त्री॰ **महमहा**।

महमहाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *महमह, महकना*) सुगंधि देना, गमकना।

महमेज़–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) जूते में लगी लोहे की वह कीलदार नाल जिससे सवार घोड़े को एड़ लगाकर बढ़ाते हैं।

महम्मद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰) मुहम्मद।

महर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *महत्*) ज़मींदारों आदि के लिए एक आदर प्रदर्शक शब्द (ब्रज॰), एक पक्षी, सरदार, नायक, कहार। स्त्री॰ **महरि, महरी**। "नंद महर घर बजत बधाई री"–सूर॰। वि॰ (हि॰ *महक*) सुगंधित। **मु॰ महर महर होना**।

महरम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमानों में कन्या का ऐसा निकट का संबंधी जिसके साथ उसका ब्याह न हो सके जैसे, बाप, नाना, चाचा, मामा आदि; भेद जानने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ अँगिया या उसकी कटोरी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) मलहम।

महरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *महत्*) नायक, सरदार, कहार। स्त्री॰ **महरी**।

महराई*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *महर+आई प्रत्य॰*) श्रेष्ठता, बड़ाई, प्रधानता।

महराज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *महाराज*) महाराज।

महराना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *महर+आना प्रत्य॰*) महरों के रहने का स्थान। वि॰ संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *महा+राणा*) महाराज (राज॰)।

महरानी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) महारानी।

महराब–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मेहराब*) मेहराब।

महरि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *महर*) ब्रज में प्रतिष्ठित घर की स्त्रियों के लिए सम्मान-सूचक शब्द, मालकिन, घर-वाली, एक पक्षी, **दहिंगल** (प्रान्ती॰)।

महरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कहारिन।

महरूम–वि॰ (अ॰) वंचित, जिसे न मिले।

महरेटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *महर+एटा प्रत्य॰*) श्रीकृष्णजी।

महरेटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *महरेटा+ई प्रत्य॰*) श्रीराधिकाजी।

महलेकि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) 14 लोकों में से ऊपर का चौथा लोक (पुरा॰)।

महर्षि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रेष्ठ और बड़ा ऋषि, ऋषीश्वर।

महल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रासाद, बहुत बड़ा और सुंदर कमरा, मकान या गृह, राज भवन, अंतःपुर, रनिवास, अवसर, मौक़ा।

महल्ला, मुहल्ला–संज्ञा, पु॰ (अ॰) **मुहाल**, शहर का एक विभाग या खंड जिसमें बहुत से घर हों, टोला, पुरा।

महसिल–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *मुहास्सिल*) महसूल लेने या उगाहने वाला।

महसूल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कर, लगान, भाड़ा, किराया, मालगुज़ारी, कार्य-विशेष के लिए किसी राजा या अधिकारी के द्वारा लिया गया धन।

महाँ*–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *महँ*) में, महँ।

महा–वि॰ (सं॰) बड़ा, अत्यंत, भारी, अति अधिक, श्रेष्ठ, बहुत, बहुत बड़ा भारी, सर्वोत्तम, सबसे अधिक। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *महना*) छाँछ, मट्ठा, मही।

महारंभ, महाअरंभ–वि॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *महा+आरंभ*) बहुत शोर, बड़ा भभर, बड़ी धूमधाम।

महाई†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *महना+आई प्रत्य॰*) मथने का कार्य या मज़दूरी।

महाउत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *महावत*) महावत, हथवाल।

महाउन्नत, महोन्नत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कदम का वृक्ष।

महाउर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *महावर*) **महावर**, शावक।

महाकंद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लहसुन।

महाकल्प–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मा की पूर्णायु का समय, ब्रह्मकल्प।

महाकाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महादेव जी।

महाकाली–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दुर्गा जी की एक मूर्ति।

महाकाव्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह प्रबंध काव्य जिसमें सब रसों, ऋतुओं, प्राकृतिक दृश्यों, सामाजिक कृत्यों आदि का भिन्न-भिन्न सर्गों में वर्णन हो–जैसे रघुवंश।

महाकुम्भी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कर्मफल।

महाकुष्ठ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महाकोढ़, गलित कुष्ठ।

महाखर्ब–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सौ खरब की संख्या या अंक (गणि॰)।

महाखाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महाखात, बड़ी खाड़ी।

महागौरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दुर्गाजी।

महाघोर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बहुत भयानक या डरावना, ककरासिंही औषधि।

महाजंबू–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जामुन का बड़ा पेड़ या फल।

महाजन–संज्ञा, पु॰ यौ (सं॰) श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन या साधु, धनी, रुपए का लेन-देन करने वाला, बनिया, भला मानुष, कोठीवाल।

महाजनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *महाजन+ई प्रत्य॰*) रुपए-पैसे के लेने-देने का काम या व्यवसाय, कोठीवाली, महाजनों के बही-खाता लिखने की एक लिपि, **मुड़िया** (दे॰)।

महाजल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र।

महातत्त्व–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *महत्तत्त्व*) महत्तत्त्व।

महातम*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माहात्म्य*) माहात्म्य, बड़ाई। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) घना अँधेरा।

महातमा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) **महात्मा** (सं॰)।

महातल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) 14 भुवनों में से पृथ्वी से नीचे के सात लोकों में से 5वाँ लोक।

महातीर्थ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (स॰) उत्तम या श्रेष्ठ तीर्थ, पुण्य क्षेत्र, पुणयस्थान, तीर्थराज।

महातेजा–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *महातेजस्*) प्रतापी, तेजस्वी।

महात्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *महात्मन्*) उच्चात्मा या उच्चाशय वाला, महाशय, महानुभाव, बहुत बड़ा साधु या संन्यासी, **महातमा** (दे॰)।

महादंडधारी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) यमराज।

महादान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्गप्रद बड़े-बड़े दान, ग्रहणादि में नीचों को दिया गया दान। वि॰ **महादानी, महादाता**।

महादेव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवाधिदेव, शिवजी, शंकरजी।

महादेवी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दुर्गा जी, प्रधान राज-महिषी, पटरानी।

महाद्वीप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह भूखंड जिसमें बहुत से देश हों। वि॰ **महाद्वीपीय**।

महाधन–वि॰ यौ॰ (सं॰) बड़ा भारी धनी, **महाधनी** (दे॰) बड़े मूल्य का।

महान्–वि॰ (सं॰) उन्नत, विशाल, विशद, बड़ाभारी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **महानता**।

महानंद–वि॰ यौ॰ (सं॰) मगधदेश का नंदवंशीय एक परमप्रतापी राजा जिसके डर से सिकंदर पंजाब ही से लौट गया था, (इति॰)। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बहुत सुख, ब्रह्मानंद, आत्मानंद।

महानाटक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दश अंकों वाला नाटक जिसमें नाटक के संपूर्ण लक्षण हों (नाटय॰)।

महानाभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक मंत्र जिससे शत्रु के सब हथियार व्यर्थ हो जाते हैं (तंत्र॰)।

महानाम–वि॰, संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) यश, अपयश, यशस्वी, निंदित।

महानिद्रा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मरण, मृत्यु।

महानिधान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शोधा पारा जिसे बावन तोले पाय रत्ती कहते हैं, बुभुक्षित धातु-भेदी पारा, मरण, मृत्यु।

महानिर्वाण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परम-मोक्ष, परिनिर्वाण जिसके अधिकारी केवल बुद्ध और अर्हन् माने जाते हैं, (बौद्ध, जैन) महामुक्ति या मोक्ष।

महानिशा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) प्रलय की रात्रि, काल-रात्रि।

महानुभाव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महाशय, महापुरुष, महात्मा, माननीय या आदरणीय पुरुष।

महानुभावता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) श्रेष्ठता।

महापथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजमार्ग, सड़क, पक्की सड़क, मृत्यु।

महापद्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नौ निधियों में से एक निधि, (यौ॰) श्वेत कमल, सौ पद्म की संख्या (गणि॰)।

महापद्मक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक साँप, एक निधि।

महापातक, महापाप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बड़ा भारी पाप, जैसे गुरु पत्नी गमन, ब्रह्महत्या, चोरी, मद्यपान तथा इन पापियों का संग।

महापातकी–वि॰ संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *महापातकिन्*) महा पाप करने वाला, जैसे–ब्रह्महत्यारा।

महापात्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रेष्ठ ब्राह्मण, (*प्राचीन*) मृतक कर्म में दान लेने योग्य ब्राह्मण, **महाब्राह्मण, कट्टहा** (ग्रा॰)।

महापुरुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रेष्ठ पुरुष, महानुभाव, धूर्त, चालाक (व्यंग्य) महात्मा, नारायण।

महाप्रभु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वैष्णव संप्रदाय के श्रेष्ठ पुरुषों की एक पदवी, जैसे–चैतन्य महाप्रभु, बल्लभ महाप्रभु। संज्ञा, स्त्री॰ **महाप्रभुता**–बड़ा ऐश्वर्य।

महाप्रयाण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महा-प्रस्थान।

महाप्रलय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सबसे बड़ा प्रलय जब प्रकृति और पुरुष या अनंत जल के अतिरिक्त सबका विनाश हो जाता है।

महाप्रसाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नारायण या देवताओं का प्रसाद, जगन्नाथ जी पर चढ़ा हुआ भात, माँस (व्यंग)।

महाप्रस्थान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरीर-त्याग की इच्छा से हिमालय की ओर जाना, मरण, मृत्यु, शरीर-त्याग, देहांत।

महाप्राण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अधिक प्रेरित प्राण-वायु के द्वारा उच्चरित होने वाले वर्ण, हिंदी-वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग के दूसरे और चौथे वर्ण, शेष पहले और तीसरे अल्पप्रमाण हैं; वि॰ कोई श्रेष्ठ मनुष्य।

महाबल–वि॰ यौ॰ (सं॰) अत्यंत बली या पराक्रमी।

महाबली–वि॰ यौ॰ (सं॰ *महाबलिन्*) अत्यंत बली।

महाबाहु–वि॰ यौ॰ (सं॰) आजानु, लंबी, भुजाओं वाला, आजानुबाहु, बलवान।

महाबोधि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बुद्ध भगवान।

महाब्राह्मण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महापात्र, **कट्टहा**; कट्टिया।

महाभाग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बड़ा हिस्सा। वि॰ परम भाग्यशाली, महानुभाव।

महाभागवत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परम वैष्णव, भागवत पुराण, छब्बीस मात्राओं का छंद (पिं॰)।

महाभारत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्री व्यासकृत 18 पर्वों का एक प्राचीन परम प्रख्यात ऐतिहासिक महाकाव्य ग्रंथ जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। कौरव-पांडव-युद्ध, कोई बड़ा ग्रंथ, कोई बढ़ा युद्ध।

महाभाष्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्री॰ पाणिनि के सूत्रों पर श्री॰ पातंजलि का भाष्य (व्याक॰)।

महाभूत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के पाँचों तत्त्व या पंच महाभूत।

महामंत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बड़ा और प्रभावशाली मंत्र, बड़ा मंत्र, अच्छी सलाह या मंत्रणा।

महामंत्री–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रधान मंत्री, मुख्यामात्य।

महामति–वि. यौ. (सं.) बड़ा बुद्धिमान्।

महामहिम–वि. यौ. (सं. *महा+महिमा*) महान् महिमा वाला, महापुरुष।

महामहोपाध्याय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गुरुओं का गुरु, भारत में एक उपाधि जो संस्कृत के विद्वानों को सरकार देती है।

महामांस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गो-मांस, नर-मांस।

महामाई–(दे.) स्त्री. यौ. दे. (सं. *महा+माई* हि.) दुर्गा देवी, काली जी, **महामाता**।

महामात्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रधान मंत्री, मुख्यामात्य।

महामाया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) प्रकृति, गंगाजी, दुर्गाजी, आर्या छंद का 13वाँ भेद (पिं.)।

महामारी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बबा (प्रान्ती.)। **मरी** (दे.) हैजा, प्लेग, ताऊन, एक भीषण संक्रामक रोग जिसमें बहुत से लोग एक साथ मरते हैं।

महामालिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लघु-दीर्घ के क्रम से 16 वर्णों का नाराच छंद। (पिं.) या 5 जगण और अंत्य गुरु का एक छंद।

महामृत्युंजय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेवजी, शिव या महाकाल के प्रसन्नतार्थ एक मंत्र।

महामेदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक कंद।

महामोदकारी–संज्ञा, पु. (सं.) क्रीड़ा-चक्र, एक वर्णिक वृत्त (पिं.)।

महाय*–वि. दे. (सं. *महा*) बहुत, महान्।

महायज्ञ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नित्य किए जाने वाले पच महायज्ञ या कर्म, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ (धर्मशा.)।

महायात्रा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मरण, मृत्यु, परलोक यात्रा।

महायान–संज्ञा, पु. (सं.) बौद्धों के तीन संप्रदायों में से एक।

महायुग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चतुर्युगी, चतुर्युग-समूह, सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चारों युगो का योग।

महायौगिक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) 23 मात्राओं के छंद (पिं.)।

महारंभ–वि. यौ. (सं.) बहुत ही बड़ा, महान् आरंभ वाला।

महारथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बहुत बड़ा रथी, योद्धा।

महारथी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महारथ।

महाराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बहुत बड़ा राजा सम्राट, राजधिराज, ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए संबोधन शब्द। स्त्री. **महारानी, महाराज्ञी**।

महाराजाधिराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बहुत बड़ा चक्रवर्ती राजा, सम्राट्।

महाराणा–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *महा+राणा* हि.) उदयपुर, मेवाड़ और चित्तौड़ के राजपूत राजाओं की उपाधि। स्त्री. **महाराणी**।

महारात्रि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **महारात** (दे.), महाप्रलय की रात्रि, जब ब्रह्मा का लय होकर दूसरा महाकल्प होता है। पुरा., ज्यो.)।

महारानी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *महाराज्ञी*) सबसे बड़ी रानी, महाराज्ञी, महाराणी, महाराज की स्त्री।

महाराव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *महाराज*) बड़ा रईस या राजा।

महारावल–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *महा+रावल* हि.) जैसलमेर और डूँगरपुर आदि के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दक्षिणीय भारत का एक प्रदेश, वहाँ के निवासी, बहुत बड़ा राष्ट्र या राज्य, दक्षिणीय ब्राह्मणों की एक उपाधि या जाति।

महाराष्ट्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मराठी या मरहठी भाषा या बोली, महाराष्ट्र की एक प्रकार की प्राकृतिक भाषा (प्राचीन)।

महाराष्ट्रीय–वि. (सं.) महाराष्ट्र-संबंधी।

महारुद्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं. महादेव या शिवजी।

महारोग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बहुत बड़ा रोग, क्षय, यक्ष्मा, दमा आदि (वैद्य.)। वि. **महारोगी**।

महारौरव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक बड़े नरक का नाम।

महार्घ–वि. यौ. (सं. *महा+अर्घ*) बहुमूल्य, **महर्घ** (दे.), बड़े मूल्य का, कीमती, महँगा। संज्ञा, स्त्री. **महार्घता**।

महाल–संज्ञा, पु. (अ. *महल का बहु.*) टोला, पाड़ा, मुहल्ला, पट्टी, हिस्सा, भाग, मुहाल, वह भू-भाग जिसमें कई गाँव या जमींदार हों (बंदो.)।

महालक्ष्मी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लक्ष्मी जी की एक मूर्ति, एक वर्णिक छंद (पिं.)।

महालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पितृपक्ष, महाप्रलय।

महालया–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पितृ-विसर्जनी अमावस्या (आश्विन्

कृष्ण)।

महावट–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *माह=माघ+वट*) माघ-पूष की वर्षा, जाड़े की वर्षा या झड़ी। संज्ञा, पु. (यौ.) **अक्षयवट**।

महावत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *महामात्र*) हथवाल, फीलवान, हाथी हाँकने वाला, हाथीवान।

महावर–संज्ञा, पु. (सं. *महावर्ण*) यावक, सौभाग्यवती स्त्रियों के पैर रँगने का लाल रंग, लाक्षरस। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महा वरदान।

महावरी–संज्ञा, पु. (हि. *महावर*) महावर की गोली या टिकिया, लाल रंग।

महावारुणी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) गंगा-स्नान का एक योग।

महाविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) दश देवियाँ, तारा, काली, भुवनेश्वरी, षोड्शी, भैरवी, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती, मातंगी, कमलात्मिका, दुर्गादेवी (तंत्र.)।

महावीर–संज्ञा, पु. (सं.) हनुमान जी। गौतम बुद्ध, जैनियों के चौबीसवें जिन या तीर्थंकर। वि. बहुत ही बड़ा बहादुर।

महाव्याहृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूः, भुवः, स्वः, ये ऊपर के तीन लोक, परमेश्वर के गौणिक नाम।

महाशंख–संज्ञा, पु. यौ. ( ) सौ शंख की संख्या (गणि.)।

महाशक्ति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी, महादेव जी। स्त्री. दुर्गादेवी।

महाशय–संज्ञा, पु. (सं.) उच्च आशय वाला पुरुष, महात्मा, सज्जन, महानुभाव, महापुरुष।

महाश्वेता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सरस्वती, कादंबरी ग्रंथ में एक नायिका।

महासाहस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) निधड़क, निर्भय, निर्भीक।

महि*–अव्य. दे. (हि. *महँ*) में, महँ

महि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूमि, पृथ्वी, **मही** (दे.)।

महिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कर्ज, ऋण।

महिख*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *महिष*) भैंसा। यौ. **महिषासुर**।

महिजा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सीता।

महिजात–संज्ञा, पु. (सं.) भौम।

महिदेव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **महिसुर, भूसुर** । ब्राह्मण।

महितल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूतल।

महिपाल*–संज्ञा, पु. (सं.) राजा, **महिपति**, महीश।

महिमा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *महिमन्*) प्रभाव, माहात्म्य, गौरव, महत्व, प्रताप, बड़ाई, महत्ता। आठ सिद्धियों में से एक 5वीं सिद्धि जिससे सिद्ध योगी अपनो को बहुत बड़ा बना सकता है।

महिमान–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *मेहमान*) मेहमान, पाहुना। स्त्री. महिमा। यौ. पृथ्वी की माप।

महिम्न–संज्ञा, पु. (सं.) शिवस्तोत्र।

महियाउर†–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *मही+चाउर*) मट्ठे में पके चावल, खट्टी खीर, **महेरी** (ग्रा.)।

महिरावण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रावण-कुमार, राक्षस।

महिला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सज्जन स्त्री, नेक औरत।

महिष–संज्ञा, पु. (सं.) भैंसा। स्त्री. **महिषी**। शास्त्रानुकूल अभिषिक्त राजा, एक दैत्य जिसे दुर्गा जी ने मारा था।

महिष-मर्दिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) दुर्गाजी।

महिषासुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दैत्यात्मज, भैंसे के आकार का एक दैत्य जिसे दुर्गाजी ने मारा था।

महिषी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भैंस, रानी या पटरानी, सैरिंध्री।

महिवेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यमराज, महिषासुर।

महिसुर, महीसुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महिदेव, ब्राह्मण।

मही–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मिट्टी, पृथ्वी, भूमि, ज़मीन, स्थान, देश, नदी, एक की संख्या, एक छंद जिसमें एक लघु और एक गुरु होता है (पिं.)। संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंथित*) मट्ठा, माठा, छाँछ।

महीतले–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार, जगत, भूतल।

महीधर–संज्ञा, पु. (सं.) पर्वत, पहाड़, शेषजी, एक वर्णिक छंद (पिं.), एक वेद-भाष्यकार विद्वान।

महीन–वि. दे. (सं. *महा+झीन-पतला*, हि.) झीना, बारीक, पतला, धीमा, कोमल, मंद (स्वर या शब्द)।

महीना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मास*) पंद्रह-पंद्रह दिनों के दो पक्षों का समय, मास, माह, मासिक वेतन, स्त्रियों का माहवारी रजोदर्शन, मासिक धर्म।

महीप–संज्ञा, पु. (सं.) राजा।

महीपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा।

महीपाल–संज्ञा, पु. (सं.) राजा।

महाभुज–संज्ञा, पु. (सं.) राजा।

महाभृत–संज्ञा, पु. (सं.) पहाड़, राजा।

महीरुह–संज्ञा, पु. (सं.) पेड़, वृक्ष।
महीश–संज्ञा, पु. (सं.) राजा, **महीश्वर**।
महीसुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महिसुर, ब्राह्मण।
महुँ*–अव्य. दे. (हि. *महँ*) में।
महुअर, महुवर–संज्ञा, पु. (सं. *मधुकर*) एक प्रकार का बाजा, तूँबी, तोमड़ी (बीन) **मौहर** (दे.), इंद्रजाल का खेल जो महुवर बजा कर किया जाता है।
महुआ, महुवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मधूक. प्रा. महुआ*) एक बड़ा वृक्ष, इस वृक्ष के फूल जिनसे शराब भी बनती है।
महूख*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मधूक*) महुआ, मुलैठी, जेठीमधु।
महूरत*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुहूर्त*) मुहूर्त्त, सायत।
महेंद्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, इंद्र, सातकुल पर्वतों में से भारत का एक पहाड़। यो. **महेंद्राचल**।
महेर†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मही*) मट्ठे में पके चावल। संज्ञा, पु. (दे.) झगड़ा, बखेड़ा, लड़ाई। स्त्री. **महेरी**।
महेरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *महेरा*) नमक-मिर्च से खाने की उबाली ज्वार, महेर, महेरा, मट्ठे में पके चावल। वि. दे. (हि. *महेर*) अड़चन डालने वाला।
महेला–संज्ञा, पु. (दे.) पानी में पकाया मोथी आदि अन्न, घोड़े का भोजन।
महेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेवजी, ईश्वर, **महेश्वर**।
महेशान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेवजी।
महेशी, महेशानी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पार्वतीजी।
महेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेव, शिवजी, **महेसुर** (दे.)।
महेष्वास–संज्ञा, पु. (सं.) महा धनुषधारी।
महेस, महेसुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *महेश*) महादेवजी।
महैला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बड़ी इलाइची। छोटी इलाइची।
महोक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) बैल, साँड़।
महोखा, महोखर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मधूक*) तेज दौड़ने किंतु न उड़ने वाला एक पक्षी। स्त्री. **महोखरी**।
महोगनी–संज्ञा, पु. (सं.) एक पेड़ जिसकी लकड़ी टिकाऊ, दृढ़ और सुंदर होती है।
महोत्पल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पद्म, कमल।
महोत्सव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बड़ा उत्सव, जलसा।
महोदधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समुद्र।
महोदय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आधिपत्य, स्वर्ग, महाशय, स्वामी, कान्यकुब्ज देश। स्त्री. **महोदया**। वि. संज्ञा, पु. यौ. बड़ा भाग्य या उदय।
महौषधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बतीस, सोंठ। वि. उत्तम या श्रेष्ठ औषधि।
मह्यौ–संज्ञा, पु. (दे.) मुट्ठा, मठा, तक्र, मही, माठा।
माँ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मातृ*) माता, अंबा, अम्मा। यौ. **माँजाया**–सगा भाई।
माँखी*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मक्षिका*) मक्खी, मक्षिका।
माँग–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *माँगना*) माँगने की क्रिया या भाव, चाह, खींच, अधिक खपत या बिक्री से किसी वस्तु की आवश्यकता। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *माँग*) सिर के बालों की मध्यवर्तिनी रेखा जो बालों को दो भागों में बाँटती है, सीमंत। **माँग-पट्टी करना**–बालों में कंघी करना। **माँग भरी रहना**–स्त्री का सधवा या सौभाग्यवती रहना।
माँगटीका–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) माँग का एक गहना।
माँगन, मंगन*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *माँगना*) माँगना क्रिया का भाव, भिखारी, भिक्षुक।
माँगना–क्रि. स. दे. (सं. *मार्गण=याचना*) याचना, इच्छा-पूर्ति के लिए कहना, चाहना करना। स. रूप–**मँगाना**, प्रे. रूप–**मँगवाना**।
माँगलिक–वि. (सं.) कल्याण या मंगलकारी, **मांगलीक**। संज्ञा, पु. नाटक में मंगलपाठ पढ़ने वाला पात्र।
माँगल्य–वि. (सं.) कल्याणकारी, शुभ। संज्ञा, पु. मंगल का भाव।
माँचना, मचना*†–क्रि. अ. दे. (हि. *मचना*) आरंभ या शुरू होना, जारी या प्रसिद्ध होना, **मचना** (हि.)।
माँचा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंच*) पलंग, खाट, मचान, पीढ़ी, **मंझा** (प्रान्ती.)। स्त्री. अल्पा. **माँची, मँचिया**–छोटी खाट।
माँजना–क्रि. स. दे. (सं. *मंजन*) किसी देहादि या पदार्थ को रगड़कर साफ करना, माँझा देना–शीशे का चूर्ण और सरेस आदि से डोर (पतंग) को दृढ़ करना। स. रूप–**मँजाना**, प्रे. रूप–**मँजवाना**। क्रि. अ. अभ्यास करना।
माँजर*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मंजर*) ठठरी, पंजर।
माँजा–संज्ञा, पु. (दे.) पहली वर्षा के पानी का फेन जो मछलियों के लिए हानिकारक होता है।
माँझ–अव्य. दे. (सं. *मध्य*) में, मध्य, भीतर, माँहि, **मज्झ**

(दे.)। *†संज्ञा, पु. (दे.) अंतर, भेद, फरक।

माँझा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मध्य*) नदी के मध्य का टापू या द्वीप, पगड़ी में बाँधने का गहना, वर या कन्या के पीले वस्त्र, पेड़ की पेड़ी या तना। संज्ञा, पु. (दे.) पतंग की डोरी या नख पर लगाने का कलफ़। संज्ञा, पु. (दे.) मंझा।

मांझी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मध्य*) नाव खेने या चलाने वाला, मल्लाह, केवट, बीच में पड़कर झगड़ा निबटाने वाला, मामला तय करने वाला, मध्यस्थ।

माँट–संज्ञा, पु. दे. (सं.*महक*) मटका, बड़ा घड़ा, कुंडा, अटारी, अट्टालिका।

माँठ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *महक*) चीनी में पगा पक्वान्न, मटका, बड़ा घड़ा, **कूँड़ा** (प्रान्ती.)।

माँड़–संज्ञा, पु. दे. (सं.*मंड*) उबाले हुए चावलों का लसदार पानी, पीच।

माँड़ना*†–क्रि. स. दे. (सं. *मंडन*) मलना, गूँधना, सानना, पोतना, सजाना, बाल से अन्न के दाने निकालना, मचाना, प्रारंभ करना, पोतना, बनाना। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **मँड़ाई**।

माँड़नी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मंडन*) गोट, मगजी, किनारी।

माँडलिक–संज्ञा, पु. (सं.) बड़े राजा को कर देने वाला, छोटा राजा, **माँडलीक,** मंडल या प्रान्त का शासक।

मांडप–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडप*) विवाहादि का मंडप, **मँड़वा, माँडव** (दे.)।

माँडवी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मण्डवी*) राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत जी को ब्याही गई थी (वाल्मी.)।

माँडव्य–संज्ञा, पु. (सं. *माण्डव्य*) एक ऋषि जिन्होंने यमराज को शूद्र होने का शाप दिया था (पुरा.)।

माँड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंड*) एक नेत्र रोग जिसमें पुतली के ऊपर महीन झिल्ली सी छा जाती है। संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडप*) मंडप, मँड़वा। संज्ञा, पु. दे. (हि. *माड़न=गूथना*) मैदे की बहुत ही पतली रोटी या पूड़ी, लुचुई, उलटा, पराठा।

माँड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मंड*) भात या पके चावलों का पसावन, पीव, माँड़, कपड़े आदि का कलफ़।

माँडूक्य–संज्ञा, पु. (दे.) एक उपनिषद्।

माँड़ौ*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडप*) मंडप, मँड़वा, माँडव; (ग्रा.) मारवाड़ प्रदेश।

माँत*–वि. दे. (सं. मत्त) मतवाला, मस्त, उन्मत्त। वि. दे. (हि. *मात-नंद*) माता (दे.) उदास, हतप्रभ, श्रीहत।

माँतना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *मत+ना* हि. *प्रत्य.*) पागल या उन्मत्त होना।

मांत्रिक–संज्ञा, पु. (सं.) तंत्र मंत्र करने या जानने वाला।

माँद–वि. दे. (सं. *मंद*) **माँदा,** उदास, श्रीहत, मुकाबिले में बुरा या हलका, पराजित, मात, हारा हुआ। संज्ञा, स्त्री. (दे.) हिंसक जंतुओं के रहने का बिल, चुर, गुफा, खोह।

माँदगी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) बीमारी, रोग, थकावट।

माँदा–वि. (फ़ा. *माँदः*) सुस्त, थका, श्रमित, शिथिल, बचा हुआ, शेष, रोगी, बीमार। यौ. **थकामाँदा**।

माँधाता–संज्ञा, पु. (सं. *मांधातृ*) मान्धाता, एक सूर्य वंशीय राजा।

माँय–अव्य. दे. (सं. *मध्य*) में, मध्य; वीच, **माँहि, माँह**; (ग्रा.) मातृक।

माँख, मास–संज्ञा, पु. (सं.) देह का चर्बी और रेशेदार नर्म लाल पदार्थ, गोश्त, मास।

माँसपेशी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) शरीर के भीतर का माँस-पिंड।

माँसभक्षी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) माँसाहारी।

माँसल–वि. (सं.) माँसपूर्ण, माँस से भरा हुआ, मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट। संज्ञा, स्त्री. **माँसलता**। संज्ञा, पु. गौडी रीति का एक गुण (काव्य.)।

माँसाहारी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *माँसाहारिन्*) माँस-भक्षी, माँस खाने वाला। स्त्री. **माँसाहारिणी**।

माँसु*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *माँस*) माँस, माह, महीना, मास।

माँह, माँझ*†–अव्य. दे. (सं. *मध्य*) में, मध्य, बीच, मँहियाँ, **माँहिं**।

माँहि, माँही*†–अव्य. दे. (सं. *मध्य*) में, मध्य, बीच।

मा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) श्री, लक्ष्मी, प्रकाश, दीप्ति, माता। *अव्य.* (सं.) निषेध, मत, यथा-मा कुरु। *अव्य.* (दे.) में।

माइँ, माईं–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मातृ*) मातृ-पूजनार्थ बनाया

गया छोटा पुआ। **मु॰ माईन में थापना**–पितरों के तुल्य सम्मान करना। संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰*) लड़की, कन्या। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातुलानी*) मामा की स्त्री।

माइ, माई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातृ*) माता, माँ। यौ॰ **माई का लाल**–उदार चित्त पुरुष, शूरवीर, बली, साहसी। बूढ़ी स्त्री का संबोधन।

माइका, मायका–संज्ञा, पु॰ (दे॰) स्त्री या कन्या के पिता का घर, **पीहर** (प्रान्ती॰)।

माउल्लहम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) माँस का पौष्टिक अर्क।

माकूल–वि॰ (अ॰) वाजिब, ठीक, उचित, योग्य, अच्छा, मुनासिब, जो विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ले।

माख*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मक्ष*) पश्चाताप, नाराज़ी, अप्रसन्नता, अपना दोष छिपाना, क्रोध, अभिमान, दुष्टता, बुरा। **मु॰ माख मानना**–बुरा या विलग मानना।

माखन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मंथज*) नवनीत, नैनू, कच्चा घी, **मक्खन**। यौ॰ **माखनचोर**–श्रीकृष्णजी।

माखना*†–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *माख*) बुरा मानना, पछताना, नाराज़ या अप्रसन्न होना, क्रोध करना।

माखी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मक्षिका*) मक्षिका, मक्खी, सोनामक्खी, **माछी** (ग्रा॰)।

मागध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विरुदावली कहने वाली एक प्राचीन जाति, भाट, जरासंध। वि॰–(सं॰) मगध देश का।

मागधी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मगध देश की प्राचीन बोली या प्राकृत भाषा, इसका एक भेद **अर्ध मागधी** थी।

माघ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पूस के बाद और फाल्गुन से पूर्व का एक चांद्र महीना, संस्कृत के एक विख्यात कवि, इनका रचा हुआ संस्कृत-काव्य-ग्रंथ, वृहत् त्रयी महाकाव्यों में से प्रथम है। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माध्य*) कुद का फूल।

माघी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *माघ+ई प्रत्य॰*) माघ की पूर्णमासी या अमावस्या। वि॰ माघ का, जैसे-माघी मिर्च। वि॰ **माघीय**।

माच*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मंच*) मचान, पलँग, कुरसी, बड़ी मचिया।

माचना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मचना*) आरंभ होना, छिड़ना, होना।

माची–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मंच*) छोटा पलँग या खाट, खटिया, छोटा माचा, **मचिया**, कुरसी।

माछ†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मत्स*) मच्छा, मछली।

माछ*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मच्छड़*) मच्छड़, मसा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मत्स्य*) मछली, **मच्छ**।

माछी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मक्षिका*) मक्षिका, मक्खी, **माखी** (दे॰)।

माजरा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मामला, हाल, वृत्तांत, घटना, वारदात।

माजूर–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) **माजूम** (दे॰) मीठा अवलेह (औष॰)।

माजूकल–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰ *माजू+फल हि॰*) माजू झाड़ी का गोंद या एक फल जो औषधि और रँगाई के काम आता है।

माझी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) माँझी, मल्लाह।

माट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मटका*) बड़ा मटका या घड़ा, रंगरेज़ों के रंग रखने का बरतन, **मठोर** (प्रान्ती॰)।

माटा, मटा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) लाल रंग का एक चींटा।

माटी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मिट्टी*) मट्टी, मिट्टी, मृत्तिका, शव, लाश, धूलि, रज, शरीर, पृथ्वी तत्व। **मु॰ मांटी होना**–नष्ट होना, निस्सार और तुच्छ होना।

माँठ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मीठा*) एक तरह की मिठाई, **बड़ी मठरी** (दे॰)।

माड़ना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *मंडन*) मचाना, करना, ठानना। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मंडन*) मंडित या भूषित करना, पहनना, धारण करना, पूजना, आदर करना। **क्रि॰ स॰** दे॰ (सं॰ *मर्दन*) मसलना, मलना, घूमना, फिरना, **माँड़ना**।

माढ़ा, मढ़ा*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मंडप*) अटारी पर का बँगला या **चौबारा**।

माणवक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बटु, विद्यार्थी, सोलह वर्ष का युवा; नीच या निंदित व्यक्ति।

माणिक, मानिक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माणिक्य*) लाल रंग का एक रत्न, चुन्नी, पद्मराग, लाल। वि॰ सब से बढ़कर, सर्वश्रेष्ठ, अति आदरणीय।

माणिक्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक लाल रत्न, लाल, चुन्नी, पद्मराग। वि॰ सर्व-श्रेष्ठ, आदरणीय।

मातंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चांडाल, श्वपच, हाथी, शवरी के गुरु एक ऋषि, अश्वत्थ, पीपल।

मातंगी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दश महा विद्याओं में से 9वीं महा

विद्या या देवी (तंत्र)।

मात–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातृ*) **मातु,** माता। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) हार, पराजय, शतरंज में शाह के मोहरे का चारों ओर से घिर कर चल न सकने की दशा। वि॰ (अ॰) पराजित। *वि॰ दे॰ (सं॰ *मत्त*) माता, मतवाला, उन्मत्त।

मातदिल–वि॰ दे॰ (*अ॰ मौअतदिल*) जो न तो बहुत ठंडा ही हो और न अति गर्म ही हो।

मातना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *मत्त*) मतवाला या मस्त होना, नशे से उन्मत्त होना।

मातवर–वि॰ दे॰ (अ॰ *मोअतबिर*) विश्वासी, विश्वासनीय, एतवारी (उ॰) विश्वस्त।

मातवरी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) विश्वास, विश्वासनीयता, ऐतवारी।

मातम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) किसी के मरने पर रोना-पीटना, रंज, शोक, अफ़सोस, दुख, क्रंदन।

मातमपुर्सी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) मृत के संबंधियों को सांत्वना या धैर्य देना।

मातमी–वि॰ (फ़ा॰) शोक-सूचक।

मातलि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इंद्र का सारथी।

मातलिसूत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इंद्र।

मातहत–वि॰ (अ॰) किसी की अधीनता में काम करने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **मातहती।**

माता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *मातृ*) जननी, जन्मदात्री, पूज्या या बड़ी स्त्री, गौ, पृथ्वी, लक्ष्मी, शीतला, चेचक। वि॰ (सं॰ *मत्त*) प्रमत्त, मतवाला। स्त्री॰ **माती।**

मातामह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाना, माता का बाप या पिता। स्त्री॰ **मातामही।**

मातु*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातृ*) माँ, माता, जननी, स्त्री।

मातुल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मामा, माता का भाई, धतूरा। स्त्री॰ **मातुला, मातुलानी।**

मातुली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मामी, माईं, मामा की स्त्री, माँग, **मातुलानी।**

मातृ–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) माता, माँ, अम्बा।

मातृक–वि॰ (सं॰) माता-संबंधी, माता का।

मातृका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धाय, दाई, धाई, जननी, माता, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, बाराही, इंद्राणी और चामुंडा सात देवियाँ (तांत्रि॰)।

मातृपूजा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मातृ-पूजन*) पितरों को पुत्रों से पूजने की एक रीति (व्याह॰), **मातृका-पूजन।**

मातृभाषा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) माता की गोद से ही सीखी हुई बोली, **मादरी जबान** (फ़ा॰) **मदरटंग** (अं॰)।

मात्र–अव्य॰ (सं॰) केवल, सिर्फ, भर।

मात्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **मिक़दार** (फ़ा॰), परिमाण, एक बार में खाने योग्य औषधि, कल, एक ह्रस्वस्वर के बोलने का समय, कला, मत्ता, स्वरों के वह सूक्ष्म रूप जो व्यंजनों से मिलते समय हो जाता है और उनके आगे-पीछे या ऊपर-नीचे लगते हैं।

मात्रासमक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक मात्रिक छंद या वृत्ति (पिं॰)।

मात्रिक–वि॰ (सं॰) वह छंद जिसमें मात्राओं की संख्या का नियम हो, मात्रा-संबंधी छंद।

मात्सर्य्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰), डाह, ईर्ष्या, जलन।

माथ, माथा*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मस्तक*) मस्तक, भाल, ललाट, किसी वस्तु का ऊपरी या अगला भाग, **मत्था।** **मु॰ माथा ठनकना**–किसी दुर्घटना या इष्टार्थ के विपरीत होन के पहले ही से उसकी आशंका होना। **माथे चढ़ाना (धरना)**–शिरोधार्य या सादर स्वीकार करना। **माथे (सिर) पर चढ़ाना**–मुँह लगाना, ढीठ करना, बहुत मानना। **माथे पर बल पड़ना**–मुखमुद्रा से असंतोष, दुःख, क्रोधादि का प्रगट होना। **किसी के माथे या मत्थे पीटना, पटकना (छोड़ना)**–बलात् किसी के ज़िम्मे कुछ काम छोड़ना या करना। **माथे पड़ना**–बलात् ज़िम्मे हो जाना। **माथे मानना**–सादर स्वीकार करना। **माथे (मत्थे) होना (लेना)**–ज़िम्मे होना (लेना)। **सिर-माथे होना (लेना)**–शिरोधार्य होना (करना)। **(किसी के) माथे (कोई काम) करना**–किसी के भरोसे करना। यौ॰ **माथापच्ची करना**–अति अधिक समझाना या थकना, सिर खपाना। किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला खंड। **मु॰ माथी लेना**–समान बनाना, बराबर करना।

माथुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मथुरावासी, चौबे, ब्राह्मणों तथा कायस्थों की एक जाति। स्त्री॰ **माथुरानी।** वि॰ **मथुरिया।**

माथे–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *माथा*) मस्तक या सिर पर, भरोसे, सहारे या आसरे पर।

मादक–वि॰ (सं॰) नशेदार, नशीला।

मादकता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मादकपन, नशीलापन, मादक का भाव।

मादर–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) माता, माँ, **मदर** (अं॰)। वि॰ **मादरी**–माता संबंधी।

मादरज़ाद–वि॰ (फ़ा॰) पैदायशी, जन्म का, सहोदर भाई, दिगंबर, नितांत नंगा।

मादरिया*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *मादर*) माता, माँ, अम्मा।

मादा–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) स्त्री जाति का जीवधारी। (विलो॰ **नर**)।

मादा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मूलतत्व, पीव, मवाद, योग्यता, लियाक़त।

माद्री–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) राजा पांडु की स्त्री तथा नकुल और सहदेव की माता।

माधव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नारायण, श्रीकृष्ण, विष्णु, बेसाख महीना, बसंत ऋतु, मुक्तहरा छंद (पिं॰), **माधौ** (दे॰)।

माधवाचार्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) संस्कृत के एक विद्वान वैष्णव आचार्य।

माधवी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुगंधित पुष्पों की एक लता। एक प्रकार का सवैया छंद (पिं॰), दुर्गा, एक शराव, तुलासी, माधव की स्त्री।

माधुराई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *माधुरी*) **मधुरई,** मधुरता, सुंदरता, मिठास।

माधुरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मधुरता, मिठास, मधुराई, सुंदरता, शराब, मद्य।

माधुर्य्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माधुरी, मिठास, सुंदरता, शोभा, मधुरता, पांचाली रीति के काव्य का मनोमोहक एक गुण (काव्य॰)।

माधो, माधौ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माधव*) श्रीराम, श्रीकृष्ण, विष्णु।

माध्यंदिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शुक्र यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यम–वि॰ (सं॰) बीच का, मध्य का, बीच वाला। संज्ञा, पु॰ कार्य सिद्धि का साधन या उपाय; बहुवचन मीडिया, प्रैस तंत्र।

माध्यमिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बौद्धों का एक भेद, मध्य देश। वि॰ मध्य का, अं॰ इंटरमीडिएट।

माध्याकर्षण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचने वाला, पृथ्वी के केंद्र का आकर्षण।

माध्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माध्वाचार्य का प्रचलित किया हुआ चार प्रमुख वैष्णव-संप्रदायों में से एक।

माध्वी–संज्ञा, स्त्री (सं॰) मदिरा, शराब।

मान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माप, तौल, भार, माप आदि, मिक़दार, परिमाण, पैमाना, नापने या तौलने का साधन, अभिमान, गर्व, शेखी, रूठना, **सम्मान**, प्रतिष्ठा, सरकार। **मु॰ मान मथना**–घमंड मिटाना। **माना रखना**–प्रतिष्ठा करना। यौ॰ **मान महत**–आदर, सत्कार। अपने प्रिय का दोष देखकर पैदा होने वाला एक मनोविकार (*साहि॰*)। **मु॰ मान मनाना**–रूठे हुए को मनाना। **मान मोरना**–मान छोड़ देना। शक्ति, सामर्थ्य, बल।

मानकंद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माणक*) एक मीठा कंद, सालिन मिस्री।

मानक्रीड़ा–संज्ञा, हि॰ (सं॰) एक छंद-भेद (पिं॰ सूदन॰)।

मानगृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कोप-भवन।

मानचित्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नक़शा।

मानता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मन्नत*) मन्नत।

मानदंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पैमाना, नापने का दंड, राज चिन्ह।

मानना–क्रि॰ अ॰ (सं॰ *मानन*) स्वीकार या अंगीकार करना, कल्पना या फर्ज़ करना, समझना, ठीक रास्ते पर आना, ध्यान में लाना। क्रि॰ स॰ स्वीकृत या मंजूर करना, पारंगत जानना, आदर-सरकार या प्रतिष्ठा करना, पूज्य जानना, धार्मिक भाव से श्रद्धा और विश्वास करना, मनता या मन्नता मानना, देवतार्थ भेंट करने का संकल्प करना।

माननीय–वि॰ (सं॰) सम्मान या सत्कार करने योग्य, पूज्य। स्त्री॰ **माननीया**।

मानमंदिर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कोप-भवन, ग्रहों के देखने या वेध करने आदि की सामग्री या तत्संबंधी यंत्रों का स्थान, वेधशाला।

मानमनौती–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (स्त्री॰) मनौती, मन्नत, रूठने और मनाने की क्रिया।

मानमोचन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रूठे को मनाना, मान छोड़ना।

मानव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आदमी, मनुज, मनुष्य, चौदह मात्राओं के छंद (पिं॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **मानवता**।

मानवशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मनुस्मृति, मनुकृत धर्म शास्त्र।

मानवी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्त्री, नारी। वि॰ दे॰ (सं॰ *मानवीय*) मानव-संबंधी।

मान-सम्मान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आदर-सत्कार, प्रतिष्ठा।

मानस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चित्त, हृदय, मन, कामदेव, मानसरोवर, संकल्पविकल्प, दूत, मनुष्य। वि॰ विचार, मनोभाव, मन से उत्पन्न। क्रि॰ वि॰ मन के द्वारा।

मानसपुत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जो पुत्र इच्छा मात्र से उत्पन्न हो (पुरा॰)।

मानसर-मानसरोवर–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मानस्+सरोवर*) एक बड़ी झील जो हिमालय के उत्तर में है।

मानसशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मनोविज्ञान।

मानस हंस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मानसरोवर के हंस, मानहंस, एक वृत्त (पिं॰)।

मानसिंह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अंबर के राजा और सम्राट अकवर के सेनापति जिन्होंने पठानों से बंगाल जीतकर अकबर के अधीन किया और कावुल में भी विजय प्राप्त की थी (इति॰); ग्वालियर के पूर्वकालीन प्रसिद्ध राजा।

मानसिक–वि॰ (सं॰) मन-संबंधी, मन का, मन की कल्पना से उत्पन्न।

मानसी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वह पूजा जो मन ही मन की जाय, मन सबंधी, एक विद्या देवी। वि॰ मन का, मन से प्रगट।

मानहंस, मनहंस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक छंद (पिं॰)।

मानहानि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अपमान, अनादर, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती, हतक-इज्ज़त।

मानहुँ, मनहुँ*–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *मानी*) मानो, गोया, जैसे, ज्यों। क्रि॰ स॰ (दे॰) मानता हूँ।

माना–संज्ञा, पु॰ दे॰(इब॰) एक तरह का दस्तावर मीठा निर्यास। *†क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मान*) नापना, जाँचना, तौलना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) समाना, अमाना। क्रि॰ स॰ मान लिया।

मानिंद–वि॰ (फ़ा॰) सदृश, तुल्य, समान, बराबर।

मानिक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माणिक्य*) माणिक, लाल रंग का एक रत्न, पद्मराग।

मानिकचंदी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) मानिकचंद, एक छोटी और स्वादिष्ट सुपारी।

मानिकरेत–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) गहने साफ करने का मानिक का रेत या चूरा।

मानित–वि॰ (सं॰) प्रतिष्ठित, सम्मानित।

मानिनी–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) मानवती, गर्ववती, रुष्टा, नायक का दोष देख उस पर रूठी हुई नायिका (*साहि॰*)।

मानी–वि॰ (सं॰ *मानिन्*) अभिमानी, घमंडी, सम्मानित, मानने वाला (यौगिक में) जैसे–भटमानी, पंडितमानी। संज्ञा, पु॰ जो नायक नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अर्थ तात्पर्य, मतलब।

मानुख, मानुष†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मनुष्य*) मनुष्य।

मानुषिक–वि॰ (सं॰ मनुष्य-संबंधी, मनुष्य का, मनुष्य के योग्य।

मानुषो–वि॰ (सं॰) मनुष्य का। **मानुषीय**। (सं॰) मनुष्य सम्बन्धी। स्त्री॰ **मानुषी**। संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनुष्य, मधुर, आदमी, **मानुस, मानुस, मनुस, मछल** (ग्रा॰)।

मानुस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मानुष*) मनुष्य।

माने–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰*मानी*) तात्पर्य, अर्थ, मतलब।

मानो, मानौ–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *मानना*) मनो, जैसे, गोया, मानहुँ, मनु।

मान्य–वि॰ (सं॰) माननीय, मानने-योग्य, पूज्य, पूजनीय। स्त्री॰ **मान्या**।

माप–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰*मापना*) नाप, मान।

मापक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माप, मान, पैमाना, जिससे कुछ नापा या मापा जाय, मापनेवाला।

मापना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मापन*) मापना, किसी वस्तु के घनत्व या परिमाणादि का किसी निश्चित मान से परिमाण करना, पैमाइश करना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *मत्त*) मतवाला होना।

माफ़–वि॰ (अ॰) क्षमा किया गया, क्षमित, **मुआफ़**। संज्ञा,

स्त्री॰ **माफ़ी**।

माफ़िक†–वि॰ दे॰ (अ॰ *मुआफ़िक*) अनुसार, अनुकूल, योग्य।

माफ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) क्षमा, बिना कर की पृथ्वी, बिना लगान की भूमि। यौ॰ **माफ़ीदार**–वह व्यक्ति जिसके लिए सरकार ने भूमि-कर छोड़ दिया हो।

माम*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माम्*) ममता, ममत्व, अहंकार, शक्ति, अधिकार। सर्व॰ (सं॰)–मुझे, मुझको।

मामता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *ममता*) आत्मीयता, अपनापन, प्रेम, स्नेह, मुहब्बत।

मामला-मामिला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मुआमिला*) काम, व्यापार, धंधा, उद्यम, आपस का व्यवहार, व्यवहार, व्यापार या विवाद की वात। झगड़ा, मुकदमा, विवाद।

मामा–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰*) माता का भाई, **मातुल** (स॰)। स्त्री॰ **मामी**। संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) माता, माँ, रोटी बनाने वाली नौकरानी।

मामी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मातुलानी*) माई, मातुलानी। (हि॰ *मामा+ई प्रत्य॰*)।

मामूल–संज्ञा, पु॰ (*अ॰*) रीति, रिवाज़; साधारण।

मामूली–वि॰ (अ॰) नियत, नियमित, साधारण, सामान्य। (विलो॰ **ग़ैरमामूली**)।

माय*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातृ*) माँ, माता, जननी, महतारी, माई, आदरणीय वृद्धा स्त्री का संबोधन। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) लक्ष्मी, संपत्ति, अविद्या, छल, कपट, प्रकृति, माया। अव्य॰ दे॰ (स॰ *मध्य*) में, माँहि।

मायक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मायावी।

मायका, माइका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मातृ*) **मैका** (दे॰) नैहर, मइका (दे॰), पीहर (प्रान्ती॰)। स्त्री के माता-पिता का घर या गाँव।

मायन*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मातृका+आनयन*) ब्याह के एक दिन प्रथम का मातृ का पूजन का दिन या उस दिन का कार्य, पितृ निमंत्रण।

मायनी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰) मायाविनी, ठगिनी, कपटिनी।

मायल–वि॰ (फ़ा॰) प्रवृत्त सजू (फ़ा॰) झुका हुआ, मिला हुआ, मिश्रित (रंग आदि)।

माया–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धन, लक्ष्मी, संपत्ति, अविद्या, भ्रम, धोका, प्रकृति, ईश्वर के आज्ञानुसार कार्य करने वाली उसी की कल्पित शक्ति, जादू, इंद्रजाल, छल, सृष्टि का मुख्य कारण, प्रपंच, एक वर्णिक छंद, इंद्रवज्रा छंद का एक भेद (पिं॰), मय दानव की कन्या जो सूर्पनखा, त्रिशिरा और खरदूषण आदि की माता थी। किसी देवता की शक्ति, लीला या प्रेरणा आदि, दुर्गा, बुद्ध की माता। †संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *माता,* सं॰ *मातृ*) माता, माँ। *†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *ममता*) **मया** (दे॰), ममत्व, दया, कृपा, आत्मीयता का भाव।

मायादेवी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰) माया, बुद्ध की माता।

मायाकृत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संसार, इंद्रजाल। वि॰ माया से निर्मित।

मायापति–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परमात्मा, ब्रह्म।

मायावाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अद्वैतवाद, ब्रह्म के सिवा अन्य सब पदार्थों के अनित्य और नश्वर मानने का सिद्धांत।

मायावादी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मायावादिन्*) वह व्यक्ति जो ब्रह्म के अतिरिक्त सव सृष्टि को माया या प्रपंच-भ्रम या असत्य समझता हो, ब्रह्मवादी, अद्वैतवादी।

मायाविनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छल कपट करने वाली, प्रपंचिनी, ठगिनी।

मायावी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मायाविन्*) फ़रेबी, धोखेबाज, छली, प्रपंची, कपटी, एक दानव जो मय का पुत्र था, परमात्मा, जादूगर। स्त्री॰ **मायाविनी**।

मायास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक अस्त्र जिसका चलाना रामचंद्र जी ने विश्वामित्र से सीखा था।

मायिक–वि॰ (सं॰) मायावी, छली, बनावटी, जाली, माया से बना हुआ।

मायी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मायिन्*) मायावी।

मायूस–वि॰ (अ॰) निराश, हताश। संज्ञा, स्त्री॰ **मायूसी**।

मार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कामदेव, धतूरा, विष। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मरना*) निशाना, चोट, आघात, मार-पीट। अव्य॰ दे॰ (हि॰ *मारना*) बहुत, अत्यंत।

मारकंडेय–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मार्कंडेय*) मृकंड के पुत्र एक अमर ऋषि, इनका एक पुराण।

मारक–वि॰ (सं॰) मार डालने या नाश करने वाला, संहारक, किसी के प्रभाव आदि का मिटाने वाला।

मारका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *मार्क*) निशान, चिह्न, विशेषता सूचक चिह्न। संज्ञा, पु॰ (अ॰) लड़ाई, संग्राम, युद्ध, बड़ी और महत्वपूर्ण बात या घटना।

मार-काट–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *मारना+काटना*) संग्राम, युद्ध, लड़ाई, जंग, मारने-काटने का भाव या कार्य।

मारकीन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *नैनकिन्*) एक तरह का कोरा मोटा कपड़ा, लट्ठा।

मारकूट-मारकुटाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मारना+कूटना*) मारना कूटना, धुनाई पिटाई।

मारकेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मार डालने वाला ग्रह, लग्न से दूसरे और सातवें घर का स्वामी (ज्यो॰)

मार खाना–क्रि॰ अ॰ दे॰(हि॰ *मारना+खाना*) पिटना, मारा-कूटा जाना।

मारग*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मार्ग*) राह, रास्ता, पंथ, धर्म, मत। **मु॰ मारग मारना**–रात में लूट लेना। **मारग लगना**–राह पकड़ना, रास्ता लेना।

मारगन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मार्गण*) तीर, वाण, शर, भिखमंगा, भिखारी, भिचुक।

मारजन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मार्जन*) परिष्कार, सफाई, नहाना।

मारजिन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *मार्जिन*) हाशिया।

मारजार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मार्जार*) बिल्ली, विलारी।

मारण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हत्या करना, मार डालना, किसी के मारने के लिए एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग। वि॰ **मारणीय**।

मारतंड–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मार्तंड*) सूर्य, मृतंडा के पुत्र।

मारना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मारण*) हनन करना, प्राण लेना, वध या हत्या करना, पीटना, चोट या आघात पहुँचाना, सताना, दुख देना, मल्ल-युद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना, बंद कर देना, हथियार चलाना या फेंकना, क्षार करना (पारा आदि)। **मु॰ गोली मारना**–किसी पर बंदूक छोड़ना या चलाना, छोड़ देना या जाने देना। शारीरिक आवेग या मन के विकार को रोकना, विनष्ट कर देना, आखेट करना, छिपा रखना, संचालित करना, चलाना। **मु॰ कुछ पढ़कर मारना**–मंत्र पढ़कर कोई वस्तु किसी पर फेंकना। **मन मारना**–चित्त की वृत्तियों को रोकना, इच्छा-निरोध। टोना, जादू या मंत्र मारना, मंत्र या जादू चलाना, धातु आदि को जलाकर भस्म बनाना, सरलता से बहुत सा धन प्राप्त करना, जीतना, विजय पाना, बुरी तरह से रख लेना, प्रभाव या बल कर देना।

मार पड़ना–क्रि॰ स॰ यौ॰ (सं॰ *मारना+पड़ना*) मार खाना, पिटना।

मार-मारना–क्रि॰ स॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मारना*) आघात या आत्महत्या करना।

मार लाना–क्रि॰ स॰ यौ॰ (हि॰ *मारना+लाना*) लूट लाना।

मार लेना–क्रि॰ स॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मारना+लेना*) मारना, जीतना, लूट या छीन लेना, दबा लेना, **मार बैठना**।

मार हटाना (भगाना)–क्रि॰ स॰ यौ॰ (हि॰ *मारना+हटाना*) मारना, जीतना, मारकर हटा देना, मारना और हटाना।

मार-पीट–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *मारना+पीटना*) मारामारी, लड़ाई, झगड़ा।

मारफ़त–(दे॰) अव्य॰ दे॰ (अ॰) **मार्फ़त**, ज़रिए से, द्वारा।

मारवाड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मेवाड़*) मेवाड़ का राज्य या देश (राजपूताना)।

मारवाड़ी–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मारवाड़*) मारवाड़ का निवासी, एक वैश्य जाति। स्त्री॰ **मारवाड़िन**। संज्ञा, स्त्री॰ मारवाड़ की भाषा या बोली। वि॰ (हि॰ *मारन*) मारवाड़ देश का।

मारा–वि॰ दे॰ (हि॰ *मारना*) मारा हुआ, निहत। **मु॰ मारा या मारा-मारा फिरना**–बुरी दशा में इधर-उधर घूमना।

मारात्मक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जिसका मूल तत्व कामदेव हो, हिंसक।

मारा पड़ना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *मारना+पड़ना*) मारा जाना, बड़ी जानि पड़ना।

मारामार-मारोमार–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *मारना*) बहुत जल्दी, अति शीघ्रता से; क्रि॰ किसी चीज़ का बहुतायत में होना।

मारिच*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मारीच*) मारीच। संज्ञा, पु॰ (दे॰) मार्च (*अं॰*) चलना, फरवरी के बाद मास।

मारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मारना*) महामारी, प्लेग।

मारीच–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक राक्षस जिसने सोने का मृग बन कर श्रीराम को छला था।

मारुत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हवा, वायु, पवन।

मारुति–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हनुमान जी, भीमसेन। (दे॰) **मारुती**।

मारुतसुत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मारुतात्मज, वायुपुत्र, हनुमान जी।

मारुतात्मज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **मारुत-तनय,** वायुपुत्र, हनुमान।

मारू–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मारना*) युद्ध में बजाने और गाने का एक राग, जुझाऊ, बड़ा डंका या धौंसा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मरुभूमि*) मरु देश या रेगिस्तान का निवासी। (हि॰ *मारना*) मारने वाला, कटीला, हृदय-वेधक।

मारे–वि॰ दे॰ (हि॰ *मारना*) हेतु, से, कारण से।

मार्कंडेय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मृकंडा ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से अमर हैं।

मार्का–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मारका*) मारका, चिह्न।

मार्ग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **मारग** (दे॰) पंथ, राह, रास्ता, मार्गशीर्ष या अगहन का महीना, मृगशिरा नक्षत्र।

मार्गण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वाण, शर, अन्वेषण, खोज। वि॰ **मार्गणीय,** वि॰ **मार्गी**।

मार्गन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मार्गण*) वाण, खोज।

मार्गशीर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अगहन मास।

मार्गी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मार्गन्*) यात्री, बटोही, पाँथ, पथिक। वि॰ किसी वक्री ग्रह का फिर अपने मार्ग पर आ जाना।

मार्च–संज्ञा, पु॰ (अं॰) चलना, फरवरी के बाद का महीना।

मार्जन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **मारजन** (दे॰) सफ़ाई, नहाना, धोना, माँजना, अभ्यास करना।

मार्जना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सफ़ाई, क्षमा। वि **मार्जनीय**।

मार्जनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) झाड़ू, बढ़नी।

मार्जार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बिल्ली, बिलाव। स्त्री॰ **मार्जारी**।

मार्जित–वि॰ (सं॰) शुद्ध या साफ़ किया हुआ।

मार्तंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मृतंडा के पुत्र सूर्यदेव।

मार्दव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कोमलता, मधुरता, मृदुता, अहंकार का त्याग, दूसरे को दुखी देख दुखी होना, सरलता।

मार्फ़त–अव्य॰ (अ॰) ज़रिए से या द्वारा।

मार्मिक–वि॰ (सं॰) जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े, मर्म-संबंधी, विशेष प्रभावशाली।

मार्मिकता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मार्मिक होने का भाव, पूर्ण अभिज्ञता।

माल*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मल्ल*) पहलवान, मल्लयुद्ध करने या कुश्ती लड़ने वाला। †संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *माला*) हार, माला, चरखे में टकुए को घुमाने वाली डोरी, पाँति, पंक्ति। संज्ञा, पु॰ (अ॰) धन, संपत्ति, अच्छा स्वादिष्ट भोजन, या पदार्थ। **मु॰ माल चीरना या मारना**–दूसरे की संपत्ति हड़पना, दूसरे का धनादि दबा बैठना। सामग्री, असबाब, सामान। यौ॰ **मालटाल**–धन-संपत्ति। यौ॰ **माल असबाब, मालमता**। पूंजी, मोल लेने या बेचने का पदार्थ। कर या महसूल का धन, फ़सल की पैदावार, क़ीमती वस्तु, गणित में वर्ग का घात या अंक, वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बनी हो।

मालकँगुनी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) एक लता जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है।

मालकोश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संपूर्ण जाति का एक राग, कौशिक राग (संगी॰)।

मालखाना–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) मालघर, भांडागार, माल-असबाब रखने का स्थान।

मालगाड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰) केवल माल ही लादने की रेलगाड़ी।

मालगुज़ार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) माल-गुज़ारी देने वाला, नंबरदार।

मालगुज़ारी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) भूमि-कर जो ज़मींदार सरकार को देता था, लगान।

मालगोदाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) रेल के स्टेशन का वह स्थान जहाँ आने-जाने वाला माल रखा जाता है, **मालगुदाम** (दे॰)।

मालती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बड़े वृक्षों पर फैलने वालो एक सघन लता, 6 वर्णों की एक वर्ण-वृत्ति, 12 वर्णों का वर्णिक छंद (पिं॰), मत्तगयंद सवैया (पिं॰), ज्योत्स्ना, चंद्रिका, रात्रि, रात।

मालदार–वि॰ (फ़ा॰) धनी, धनवान।

मालद्वीप–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मलय द्वीप*) मूँगे के लिए प्रसिद्ध भारत के पश्चिम की ओर का एक द्वीप-समूह।

मालपुआ-मालपूवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *पूप*) पूरी जैसा

एक मीठा पकवान।

मालव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मालवा देश, भैरव राग (संगी॰) माल या निवास। वि॰ मालव देश संबंधी, मालवा का।

मालवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मालवा*) मध्य प्रदेश का एक इलाका।

मालवीय–वि॰ (सं॰) **मालवी** (दे॰) मालवा का, मालव देश का रहने वाला। संज्ञा, पु॰ (दे॰) मालवा की एक ब्राह्मण जाति।

माला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पाँति, पंक्ति, अवली, झुंड, समूह, फूलों आदि का हार, गजरा। **मु॰ माला फेरना**–जपना, भजना, दूब, उपजाति छंद का एक भेद (पिं॰)।

मालादीपक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक अलंकार जिसमें पहले कही वस्तु को पीछे कही वस्तुओं के उत्कर्ष का कारण कहा जाता है (अ॰ पी॰)।

मालाधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 17 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

मालामाल–वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) **मालोमाल** (दे॰) बहुत धनी या संपन्न।

मालारूपक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रूपकालंकार का एक भेद।

मालिक–संज्ञा, पु॰ (अ॰) स्वामी, अधिपति, ईश्वर, पति। स्त्री॰ **मालिका**।

मालिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) माला, हार, मालिन, अवली, पक्ति।

मालिकाना–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) स्वामित्व, स्वामी का स्वत्व या अधिकार, मिलकियत। क्रि॰ वि॰ (दे॰) स्वामी के समान, **मालकाना**।

मालिकी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *मालिक*) मालिक होने का भाव, मालिक का स्वत्व।

मालिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चंपानगरी, मालिन, गौरोजी स्कंद की 7 माताओं में से एक माता, एक वर्णिक छंद (पिं॰)। मदिरा छंद (पिं॰)।

मालिन्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मलिनता, मैलापन। यौ॰ **मनोमालिन्य**।

मालियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मोज़, मूल्य, संपत्ति, क़ीमती चीज, जायदाद।

मालिवान*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माल्यवान्*) रावण का नाना, एक राक्षस।

मालिश–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) मलाई, मर्दन, मलने का भाव या काम। **मालिस** (दे॰)।

माली–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मालिन्*) फूल-माला बेचने वाला बागवान, पेड़-पौधे लगाने या सींचने वाला, ऐसे लोगों की एक छोटी जाति। (स्त्री॰ **मालिन, मालन, मालिनी**)। वि॰ (सं॰ *मालिन्*) माला पहनने या धारण करने वाला, मालाधारी, समूह वाला, जैसे-**मरीचि माली**। (स्त्री॰ **मालिनी**)। संज्ञा, पु॰ (सं॰) लंका का एक निशाचर, माल्यवान् और सुमाली का भाई, राजीवगण छंद (पिं॰)। वि॰ (फ़ा॰) धन संबंधी, आर्थिक।

मालीदा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) चूरमा, मलीदा, एक ऊनी नरम और गरम वस्त्र।

मालूम–वि॰ (अ॰) ज्ञात, जाना हुआ।

मालापमा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें एक उपमेय के भिन्न-भिन्न धर्म वाले अनेक उपमान होते हैं (अ॰ पी॰)।

माल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माला, फूल।

माल्यवंत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माल्यवान्*) माल्यवान्, मुकेश का पुत्र एक राक्षस। वि॰ माला-युक्त।

माल्यवान्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पर्वत (पुरा॰) मुकेशात्मज एक राक्षस, जो रावण का नाना था। वि॰ पुष्प-युक्त।

मांवस*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *अमावस्या*) अमावस।

माषा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मंड*) पीच, माँड़, निष्कर्ष, सत्त, स्रोवा, प्रकृति।

माशा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माप*) आठ रत्ती की तौल का एक बाट या मान, **मासा** (दे॰)।

माशी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *माप*–*उरद*) कालिमा लिए हरा रंग, सब्ज रंग। वि॰ कालिमा लिए हरे रंग का।

माशूक–संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्यारा, प्रियतम।

माशूका–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) प्रिया, प्यारी, प्रियतमा।

माष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उरद, माशा, देह पर काले रंग का मसा। *संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *माख*) क्रोध।

माषपर्णी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वन-उरद।

माषवरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) उरद की बरी।

माषीण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उरदों का खेत।

मास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्ष का बारहवाँ भाग, दो पक्षों या प्रायः 30 दिन का समय, महीना। *संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मांस*) माँस, गोश्त।

मासांत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महीने का अंत, अमावस्या, संक्रांति।

मासा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माष*) माशा।

मासिक–वि॰ (सं॰) माहवारी, मास संबंधी, महीने में एक वार होने वाला, मास का।

मासी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातृध्वसा*) **मौसी,** माँ की बहिन।

मासूरी–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ (दे॰) दाढ़ी, शत्रु, बैरी।

मासूम–वि॰ (अ॰) निरपराध, छोटा बच्चा।

माह*–*अव्य॰* दे॰ (सं॰ मध्य) माँहि में, बीच। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*माघ*) माघ का महीना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माष*) उरद, माष। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मास, महीना, चाँद।

माहताव–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) चंद्रमा।

माहताबी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) महतावी, एक तरह का वस्त्र, एक आतिशबाजी। वि॰ चाँद-जैसा उज्ज्वल।

माहली–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *महल*) महली खोजा, सेवक, दास, अंतःपुर का नौकर।

माहवार–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) प्रतिमास। वि॰ प्रतिमास का, मासिक।

माहवारी–वि॰ (फ़ा॰) प्रतिमास का।

माहात्म्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महत्व, महिमा, गौरव, बढ़ाई, महत्ता।

माहिर–वि॰ (अ॰) जानकार, निपुण।

माहियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) हालत, दशा।

माहिला*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मल्लाह*) माँझी, केवट।

माहिष–वि॰ (सं॰) भैंस-संबंधी।

माहिष्मती–संज्ञा, स्त्री (सं॰) दक्षिण देश का एक प्राचीन नगर।

माहिष्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्ण-संकर, क्षत्रिय से उत्पन्न वेश्या पुत्र।

माहीं*–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *माँहि*) में, मध्य, बीच, माँहिं।

माही–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मछली।

माही मरातिब–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) राजाओं के आगे हाथियों पर चलने वाले मछलियों या ग्रहों के चिह्न वाले 7 झंडे।

माहुर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मधुर*) विष, ज़हर।

माहेंद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक अस्त्र (प्राची॰) ऐन्द्रास्त्र।

माहेश्वर–वि॰ (सं॰) महेश्वर-संबंधी, महेश्वर से आवा हुआ। संज्ञा, पु॰ एक यज्ञ, एक उपपुराण पाणिनि के आदि वाले चौदह सूत्र जिनमें स्वरों और व्यंजनों का प्रत्याहारार्थ संग्रह है, शैव संप्रदाय का एक भेद, एक अस्त्र (प्राची॰) पाशुपत।

माहेश्वरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा देवी, एक मातृका, वैश्यों की एक जाति।

मिंगनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बकरी आदि की लेंड़ी।

मिंड़ाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मीड़ना*) मींजने या मीड़ने का भाव, मीड़ने की क्रिया या मज़दूरी, देशी छपाई की छींट को पक्का और चमकदार करने की क्रिया।

मिआद–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अवधि, नियत समय। वि॰ **मिआदी,** नियम समय का।

मिकदार–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मात्रा, परिमाण।

मिचकना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *मिचना*) बार-बार आँखें खुलना ओर बंद होना। स॰ रूप–**मिचकाना,** प्रे॰ रूप–**मिचकवाना।**

मिचकारना-मिचकाना–क्रि॰ स॰ (दे॰) निचोड़ना, गलाना, खंधाना, आँखें मींचना।

मिचना–अ॰ दे॰ (हि॰ *मींचना का अ॰रूप*) बंद होना।

मिचलाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *मतलाना*) मतली आना, उपांतीच्छा होना, उबकाना, कै होने को होना।

मिजराव–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) **नाखुना, डंका** (*प्रान्ती॰*), सितार वजाने का अँगूठीनुमा औजार जो बहुधा तार का होता है।

मिज़ाज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रकृति, तासीर, किसी वस्तु का सदा रहने वाला मूल गुण, शरीर या मन की दशा, दिल, तबीयत। **मु॰ मिज़ाज ख़राब होना**–मन में दुख, अप्रसन्नतादि होना, बीमारी या अस्वस्थता होना। **मिज़ाज पाना**–किसी के स्वभाव से परिचित होना, अनुकूल या प्रसन्न देखना। **मिज़ाज पूछना**–यह पूछना कि आप स्वस्थ तो हैं, शरीर तो अच्छा है। घमंड, अभिमान, शेखी। **मु॰ मिज़ाज न मिलना**–घमंड के मारे किसी से बात न करना। यौ॰ **मिज़ाजपुर्सी करना**–मारना (व्यंग्य); हाल को बेहतर करना।

मिज़ाजदार–वि. (अ. *मिज़ाज+दार* फ़ा.) घमंडी, अभिमानी, **मिज़ाजी**।

मिज़ाज शरीफ़–वाक्य. (अ.) आप कुशलक्षेम से तो हैं, आप अच्छे तो हैं।

मिज़ाजी–वि. दे. (फ़ा. *मिज़ाज+ई प्रत्य.*) घमंडी।

मिटना–क्रि. अ. (सं. *मृष्ट*) किसी रेखा या चिह्न आदि का न रह जाना, विनष्ट या बरबाद हो जाना, ख़राब हो जाना। स. रूप–**मिटावना, मिटवाना**।

मिटिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) घड़ा, गगरी।

मिट्टी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मृत्तिका*) पृथ्वी के धरातल का चूर्ण जैसा पदार्थ, खाक, धूलि, ज़मीन, भूमि की नर्म चट्टान, राख, विभूति, भस्म, देह, शरीर, **माटी** (दे.)। **मु. मिट्टी करना**–नष्ट या ख़राब करना। **मिट्टी के मोल**–बहुत सस्ता। **मिट्टी डालना**–दोष छिपाना, किसी बात को जाने देना। **मिट्टी देना**–क्रम में तीन-तीन मुट्ठी मिट्टी छोड़ना, कब्र में गाड़ना (मुसल.)। **मिट्टी में मिलना (मिलाना)**–नष्ट या चौपट होना (करना), मरना (मारना)। यौ. **मिट्टी का पुतला**–मनुष्य का शरीर। **मु. मिट्टी खराब होना (करना)**–दुर्दशा होना (करना)। यौ. **मिट्टी-खराबी**–दुर्दशा, विनाश, बरबादी। राख, भस्म, शरीर, देह, वदन। **मु. मिट्टी पलीद करना**–बरबाद करना, दुर्दशा करना, खराबी करना। मुरदा, लाश, शव, मृतक, शारीरिक गठन, चंदन का सार जो इतर में दिया जाता है।

मिट्टी का तेल–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *मिट्टी+तेल*) तेल-जैसा एक तरल खनिज पदार्थ जो पृथ्वी से निकलता और जलाने के काम आता है (पेट्रोलियम-उत्पादन)।

मिट्ठी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मोठा*) चूमा, चुंबन।

मिट्ठू–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मीठा+ऊ प्रत्य.*) मीठा बोलने वाला, तोता, मृदु, मधुरभाषी। वि. मौन या चुप रहने वाला, अनबोला, प्रियभाषी, प्यारी बातें कहने वाला।

मिठ–वि. (हि. *मीठा*) मीठा का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे–मिठबोल।

मिठबोला–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि. *मीठा+बोलना*) मधुर या प्रियभाषी, कपटी जो ऊपर से मीठी-मीठी बातें करने वाला हो।

मिठरी, मठरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मठरी, नमकीन पकवान विशेष।

मिठलोना–संज्ञा, पु. यौ. दे. (हि. *मीठा=कम+नोन*) कम नमक और मीठे स्वाद वाला।

मिठाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मीठा+आई प्रत्य.*) मिष्ठान्न, माधुरी, मिठास, मोटी वस्तु, अच्छा पदार्थ।

मिठास–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मीठा+आई प्रत्य.*) माधुर्य्य, मीठापन, मिठाई।

मिठिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) चुंबन, चूना, मिट्टी।

मितंग*–संज्ञा, पु. दे. (सं. मिहंगम) हाथी।

मित–वि. (सं.) परिमित, सीमाबद्ध, मर्यादित, सीमा, हद, कम, थोड़ा। (अ. यथा मितव्ययी (कम ख़र्च)।

मितप्रद–वि. यौ. (सं.) सीमाबद्ध देने वाला, हिसाब से देने वाला।

मितभाषी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *मित भाषिन्*) थोड़ा या कम या मर्यादित बोलने वाला।

मितव्यय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कम या थोड़ा या मर्यादित ख़र्च करना, किफायतशारी करना।

मितव्ययिता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) किफायतशारी, कमख़र्ची।

मितव्ययी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *मितव्ययिन्*) कम या थोड़ा व्यय करने वाला, नियमित रूप से ख़र्च करने वाला, किफायतशार, कम ख़र्च।

मिताई*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मित्रता*) मित्रता, मित्रत्व, दोस्ती।

मिताक्षरा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) याज्ञवल्क्य-रगृति की विज्ञानेश्वरी टीका; संपत्ति बाँटने का एक कानून।

मितार्थ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) थोड़ी बातों से अपना कार्य सिद्ध करने वाला दूत, सूचनार्थ।

मिति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सीमा, मर्यादा, हद, परिभाग, मान, काल की अवधि।

मिती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मिति*) महीने की तिथि या तारीख़, दिन, दिवस। **मु. मिती पुगना या पूजना**–हुंडी का नियत समय पूरा हो जाना।

मित्र–संज्ञा, पु. (सं.) सखा, साथी, सहायक, संगी, दोस्त, शुभचिंतक, 12 आदित्यों में से एक, मरुदगण में प्रथम वायु, एक राज-वंश जिसका राज्य पांचाल और अंबर

था (प्राचीन), आर्यों के एक पुराने देवता।

मित्रता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मिताई, दोस्ती, मित्रत्व।

मित्रत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मिताई, दोस्ती, मित्रता।

मित्रद्रोही–वि॰ (सं॰) दुष्ट, खल, मित्र का द्रोही।

मित्रलाभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दोस्त का मिलना, मैत्री का लाभ।

मित्रवर्ग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दोस्त लोग, सुहृद्गण।

मित्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) शत्रुघ्न की माता, सुमित्रा, मित्रदेव की स्त्री।

मित्राक्षर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ऐसा पद जो छंद जैसा ज्ञात हो।

मित्रावरुण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मित्र और वरुण देवता (वैदिक)।

मिथः–अव्य॰ (सं॰ *मिथस्*) आपस में, परस्पर, अन्योन्य।

मिथक–संज्ञा, पु॰ पौराणिक कथा, कल्पित कथा; रूढ़िवादी मान्यता।

मिथिला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तिरहुत का पुराना नाम।

मिथिलापति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा जनक।

मिथिलेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मिथिला+ईस*) राजा जनक, मिथिलाधिपति, **मिथिलेश्वर**।

मिथुन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) युग्म, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, दंपति, समागम, संयोग, मेषादि 12 राशियों में से तीसरी राशि (ज्यो॰)।

मिथ्या–वि॰ (सं॰) मृषा, झूठ, असत्य, अमृत।

मिथ्याचार–वि॰ यौ॰ (सं॰ *मिथ्या+आचार*) असत्य या झूठा व्यवहार, दांभिकाचार।

मिथ्याचारी–वि॰ यौ॰ (सं॰) दांभिक, असत्य या झूठा व्यवहार करने वाला।

मिथ्यात्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माया, प्रपंच, मिथ्या होने का भाव, असत्यता।

मिथ्यादृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कर्म-फलापवादकज्ञान, नास्तिकता, असत्यदर्शन।

मिथ्याध्यवसिति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक अर्थालंकार जिसमें मिथ्या या असंभव बात का निश्चय करके दूसरी बात का कथन किया जाता है (अ॰ पी॰)।

मिथ्याभाषी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मिथ्याभाषिन्*) झूठ या असत्य बोलने वाला।

मिथ्याभियोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) असत्य या झूठा दोषारोपण, मिथ्यावाद, झूठी लड़ाई।

मिथ्यायोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ऋतु या प्रकृति आदि के प्रतिकूल कार्य। वि॰ **मिथ्यायोगी**।

मिथ्यावादी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मिथ्यावादिन्*) झूठ बोलने वाला, असत्यवक्ता, झूठा। स्त्री॰ **मिथ्यावादिनी**।

मिथ्याहार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मिथ्या+आहार*) अपथ्याहार, अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना। वि॰ **मिथ्याहारी**।

मिनती†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विनति*) विनती, प्रार्थना, निवेदन।

मिनहा–वि॰ (अ॰) मुजरा किया हुआ, जो काट या घटा लिया गया हो।

मिन्नत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) निवेदन, प्रार्थना, विनती।

मिमियाई, मोमियाई†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *मौमियाई*) बनावटी या नकली शिलाजीत।

मिमियाना–क्रि॰ अ॰ (*अनु॰ मिन मिन*) बकरी या भेड़ी की बोली।

मिमियाहट–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बकरी या भेड़ी का शब्द।

मियाँ–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मालिक, स्वामी, पति, महाशय, मुसलमान, बूढ़ा।

मियाँमिट्ठू–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) प्रियवादी, मीठी बोली बोलने वाला, मधुरभाषी, तोता, मूर्ख। **मु॰ अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना**–अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा करना।

मियान–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) तलवार का म्यान।

मियाना–वि॰ (फ़ा॰) मझोले आकार का। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक तरह की पालकी, **म्याना** (दे॰), पजामा इत्यादि का आसन।

मिरग, मिरिग*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मृग*) **मिरगा** (दे॰) हरिन।

मिरगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मृगी*) मूर्छा संबंधी एक मानसिक रोग, अपस्मार या मृगी रोग, हरिनी।

मिरच, मिरचा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मरिच*) लाल मिर्च।

मिरज़ई, मिरजाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *मिरजा*) कमर तक का तनीदार अंगा।

मिरज़ा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मीर या अमीर का लड़का,

अमीर-ज़ादा, कुँवर, राजकुमार, मुगलों की एक उपाधि।

मिर्च–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मारिच*) कटु फलों या फलियों का एक वर्ग जिसके मुख्य दो प्रकार हैं–(1) **मिरचा** (दे॰) लाल मिर्च (2) गोल या काली मिर्च, इनका उपयोग भोजन के मसाले में होता है।

मिलक†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मिल्क*) जायदाद, ज़मींदारी, मिलकियत, जागीर।

मिलकियत–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) जायदाद, ज़मीन।

मिलकी†–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) ज़मींदार, अमीर, धनवान।

मिलन, मिलनि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मिलाप, भेंट, मिलावट।

मिलनसार–वि॰ (हि॰ *मिलन+सार* फ़ा॰) सुशील, सब से मेल रखने और सद्व्यवहार करने वाला। सं॰ **मिलनसारी**।

मिलना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भेंट, मुलाकात, मिलाप। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मिलन*) दो या अधिक पदार्थों का योग होना, सम्मिलित या मिश्रित होना, संयुक्त होना, समूह के अंतर्गत होना। यौ॰ **मिला-जुला**–मिश्रित। सटना, चिपकना, जुड़ना, एक हो जाना, पूर्णतया या अधिकांश में बराबर होना, एक सा होना, भेंट होना, आलिंगन करना, भेंटना, गले लगाना या करना, मुलाक़ात या भेंट होना, लाभ या नफ़ा होना, मेल-मिलाप होना, प्राप्त होना। यौ॰ **मिलना-जुलना**–बहुत कुछ समानता रखना, परस्पर मेल-मिलाप करना। यौ॰ **मिलना, मिलाना**। स॰ रूप–**मिलाना**, प्रे॰ रूप–**मिलवाना**।

मिलनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मिलना+ई प्रत्य॰*) ब्याह की वह रीति जिसमें कन्या की ओर वाले वर की ओर वालों से गले मिलते और भेंटे देते हैं।

मिलाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मिला+ई प्रत्य॰*) मिलने का भाव, भेंट, मिलावट।

मिलान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *मिलाना*) मिलाने का भाव, मुक़ावला, तुलना, ठीक होने की जाँच। **मु॰ मिलान खाना**–समान होना। **मिलान-मिलना**–तुलना में बरावर उतरना।

मिलाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *मिलना का* स॰ *रूप*) सम्मिलित या मिश्रित करना, जोड़ना, एक करना, चिपकाना, सटाना, भेंट या परिचय करना, तुलना या मुक़ाबला कराना, अपरा साथी या भेदिया करना, संधि कराना, बजाने से बाजों का स्वर ठीक करना, अपने पूर्व पक्ष में लाना, ठीक होने की परीक्षा करना, **मिलावना** (दे॰)। प्रे॰ रूप–**मिलवाना**। संज्ञा, स्त्री॰ **मिलाई, मिलवाई**।

मिलाप–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मिलना+आप प्रत्य॰*) मिलना का भाव या कार्य, मित्रता, भेंट, मुलाक़ात।

मिलापी–वि॰ (हि॰ *मिलाप*) मिलनसारी, मेली, सज्जन, मित्र।

मिलाव–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मिलौनी, मेल, बनाव, मित्रता।

मिलावट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मिलाना+आवट प्रत्य॰*) मिलाने का भाव, बढ़िया में घटिया वस्तु मिश्रित करना, खोट, मेल।

मिलित–वि॰ (सं॰) मिला हुआ, सम्मिलित, मिश्रित, युक्त।

मिले-जुले रहना–(दे॰) मेल-मिलाप या एकी भाव से रहना, प्रेम-पूर्वक रहना, ऐक्यभाव से रहना।

मिलोना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मिलाना*) मिलाना, गौ का दूध दुहना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) मिलना, भेंट, मिलाप।

मिल्कियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) ज़मींदारी, माफ़ी, जागीर, धन, संपत्ति, जायदाद।

मिल्लत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मिलन+त प्रत्य॰*) मेल-जोल, मिलाप, मिलनसारी, घनिष्टता। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मत, धर्म, संप्रदाय, पंथ।

मिश्र–वि॰ (सं॰) मिला या मिलाया हुआ, संयुक्त, मिश्रित, उत्तम, श्रेष्ठ, एक ही जाति की भिन्न-भिन्न नाम वाली संबंधित संख्याएँ (गणि॰)। संज्ञा, पु॰ (सं॰) कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा सारस्वतादि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि, मिस्र देश (अफ्रीका)।

मिथकेशी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अप्सरा।

मिश्रण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मिलावट, मेल, दो या अधिक वस्तुओं को एक करना, जोड़ना, मिलाना, एकीभाव, जोड़ या योग लगाने की क्रिया, जोड (गणि॰)। वि॰ **मिश्रणीय**।

मिश्रित–वि॰ (सं॰) एक ही में मिला हुआ।

मिष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्याज, बहाना, **मिस**, ढीला, छल, ईर्ष्या, कपट, डाह।

मिष्ट–वि॰ (सं॰) मधुर, मीठा।

मिष्टभाषी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मिष्टभाषिन्*) **मिष्टवादी**, मीठा, प्रिय या मधुर बोलने वाला, मधुरभाषी।

मिष्टान्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मिठाई, मीठा, पकवान।

मिस, मिसि, मिसु–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मिष*) ब्याज, बहाना,

हीला-हवाला, पाखंड, छल, नक़ल।

मिसकीन–वि. दे. (अ. *मिस्कीन*) दीन, दुखिया, ग़रीब, निर्धन, बेचारा, बापुरा। संज्ञा, **मिसकीनी**।

मिसकीनता*–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *मिसकीन+ता* सं. *प्रत्य.*) निर्धनता, दीनता।

मिसर–संज्ञा, पु. दे. *(सं. मिश्र)* मिश्र देश, **मिसिर** (दे.)।

मिसरा–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मिसर अ*) उर्दू-फ़ारसी या अरबी के छंद का एक चरण।

मिसरी, मिसिरि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मिश्री*) मिश्र देश का निवासी, मिश्र की भाषा, एक प्रकार की साफ जमाई हुई दानेदार चीनी, **मिश्री, मीसिरी मिसिरी** (दे.)।

मिसल–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *मिसिल*) काग़ज़ों का समूह, मुकदमे के काग़ज़ों का मुट्ठा। संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *मिसल*) समान, तुल्य, रणजीतसिंह के बाद स्वतंत्र हो गए सिक्खों के समूह।

मिसाल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) नज़ीर, उपमा, उदाहरण, कहावत, नमूना।

मिसिर–संज्ञा, पु. (दे.) मिश्र (ब्राह्मण), मिश्र देश।

मिसिल–वि. दे. (अ. *मिस्ल*) समान, तुल्य, नज़ीर। संज्ञा, स्त्री. किसी विषय या मुकदमें के काग़ज़ों का समूह। (अं.) फाइल।

मिस्तर–संज्ञा, पु. (हि. *मिस्तरी*) काठ का एक औज़ार जिससे राज लोग छत पीटा करते हैं, पिटना, लकीर खींचने का तागेदार दफ़्ती का टुकड़ा। संज्ञा, पु. मेहतर। वि. दे. (अं.) मिस्टर, महाशय।

मिस्तरी, मिस्तिरी–संज्ञा, पु. दे. (अं. *मास्टर*) हाथ का चतुर कारीगर, दस्तकार, **मिस्त्री** (दे.)।

मिस्तरीखाना–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *मिस्तरी+खाना* फ़ा.) बढ़ई, लोहारों के काम करने का घर।

मिस्र–संज्ञा, पु. (अ.=*नगर*) अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर-पूर्व में लाल सागर के तट पर एक देश।

मिस्री–संज्ञा, स्त्री. (अ. *मिस्र*) मिस्र देश का निवासी या संबंधी, मिस्र देश का, मिस्र देश की भाषा, मिसिरी, मिश्री, साफ करके जमाई हुई दानेदार चीनी।

मिस्ल–वि. (अ.) तुल्य, बराबर, समान।

मिस्सा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मिसना*) कई दालों के मेल से बना आटा या पिसान। स्त्री. वि. **मिस्सी**–कई अन्नों के मिले आटे की रोटी।

मिस्सी–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *मिसी=ताँबे का*) दाँतों का एक काला मंजन जो बहुधा सौभाग्यवती स्त्रियाँ लगाती हैं।

मिंहदी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मेंहदी, एक वृक्ष विशेष जिसकी पत्ती से स्त्रियाँ हाथ पाँव रँगती हैं।

मिहनत, मेहनत–संज्ञा, स्त्री. (अं.) परिश्रम, मशक्कत। वि. **मिहनती, मेहनती**।

मिहरा–संज्ञा, पु. (दे.) हिजड़ा, जनखा, नपुंसक, **मेहरा**।

मिहरारू–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **मेहरारू** (ग्रा.) स्त्री, नारी।

मिहरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) स्त्री, नारी, कहारिन, महरी।

मिहाना–क्रि. अ. (दे.) सीढ़ना, गीला होना, भीगना।

मिहानी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मथानी।

मिहिका–संज्ञा, पु. (सं.) नीहार, कुहरा।

मिहिर–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य, चंद्रमा, बादल, मदार या आक का पौधा, खत्रियों की एक जाति, मेहरा, मेहरोत्रा।

मिहिरकुल, मेहरूलगुल–संज्ञा, पु. (फ़ा. *महुगुल का* सं. *रूप*) शाकल देश के हूण वंशीय राजा वूरमान (तोरमाण) का पुत्र।

मींगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मुद्ग=दाल*) बीज के भीतर का गूदा, गिरी।

मींच, मीचु–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मृत्यु*) मृत्यु, मौत।

मींचना–क्रि. स. अ. (दे.) मूँदना (आँख), ढकना, मिचना, मरना, बंद होना।

मींजना†–क्रि. स. दे. (हि. *मीड़ना*) मसलना, मलना, मर्दन करना, दबाना।

मींजा–संज्ञा, पु. (प्रान्ती.) वेसन से बना एक सालन।

मींजू–संज्ञा, पु. (दे.) मसूर, कलाई विशेष।

मींड़–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मीडम्*)–संगीत में दो स्वरों के मध्य का संधिभाग, या दो स्वरों का ऐसा मिलान जिसमें दोनों स्पष्ट रहें (संगी.)।

मींड़ना†–क्रि. स. दे. (हि. *मींड़ना*) मलना, मसलना, हाथों से दबाना।

मीआद–संज्ञा, स्त्री. (अ.) अवधि, म्याद, **मिआद** (दे.)।

मीआदी–वि. (अ. *मीआद+ई प्रत्य.*) नियत अवधि वाला,

मियादी, म्यादी (दे.)।

मीचना–क्रि. स. दे. (सं. *मिष=झपकना*) आँखें मूँदना या बंद करना। स. रूप–**मिचाना,** प्रे. रूप–**मिचवाना**।

मीच, मीचु*+–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मृत्यु*) मौत।

मीज़ान–संज्ञा, स्त्री. (अ.) योग, जोड़ (गणि.), तराज़ू। **मु. मीजान देना (लगाना)**–जोड़ना।

मीठा*–वि. दे. (सं. *मिष्ट*) मधुर, मधु या चीनी सा स्वाद वाला। स्वादिष्ट, मज़ेदार, रुचिर, मध्यम, मंद, हलका, धीमा, सुस्त, साधारण, मामूली, नपुंसक, नामर्द, सीधा, रोचक, प्रिय, रुचिकर। स्त्री. **मीठी**। संज्ञा, पु. **मिठाई,** गुड़ आदि। **मु. मीठा होना**–लाभ या आनंद मिलना। **मु. यौ. मुँह का मीठा**–मधुर भाषी किंतु कपटी।

मीठा ज़हर या विष–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) बच्छनाग, वत्सनाग, सींगिया।

मीठातेल–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) तिलों का तेल।

मीठा नींबू–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) चकोतरा या जँभीरी नींबू।

मीठापानी–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) नीबू का सत मिला जल, लेमनेड, सुस्वादु जल (विलो. खारी पानी)।

मीठाभात, मीठाचावल–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) गुड़ या चीनी के शरबत में पकाया हुआ चावल।

मोठिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) चुंवन, मिट्ठी (दे.) चूमा, चूमी, चुंबा, मच्छी।

मीठी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मीठा का स्त्री.*) मिट्ठी (दे.), मिठिया, चूमा, मच्छी। वि. मधुर, मिष्ट।

मीठीछुरी–संज्ञा, स्त्री. (हि.) देखने में तो अच्छा या मिष्टभाषी मित्र किंतु वास्तव में शत्रु, विश्वासघाती, मधुरभाषी, कपटी व्यक्ति।

मीणा–संज्ञा, पु. (सं.) राजस्थान की एक जनजाति।

मीत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मित्र*) मित्र, दोस्त, सखा, साथी, संगी।

मीतन–वि. दे. (सं. *मित्र*) सनामी, एक नाम वाला, सखा, सनेही। संज्ञा, पु. मीत का बहु. व.।

मीता–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मित्र*) मीत, मित्र।

मीन–संज्ञा, पु. (सं.) मछली, मेषादि 12 राशियों में से अंतिम राशि। **मु. मीन मेप करना**–किंतु-परंतु या इधर-उधर करना। **मीन-मेष निकालना**–दोष निकालना।

मीनकेतन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कामदेव।

मीनकेतु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कामदेव।

मीना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मीन*) मछली। संज्ञा, पु. (फ़ा.) नीले रंग का एक बहुमूल्य रत्न, चाँदी-सोने पर का रंग-विरंगा काम, शराब रखने का पात्र, सुराही या कंटर।

मीनाकारी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) चाँदी-सोने पर रंगीन काम।

मीना बाज़ार–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) देहली में अकबर बादशाह का लगवाया हुआ विशेष हाट या मंडी।

मीनार–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *मनार*) गोलाकार अति ऊँची इमारत, स्तंभ, लाट, कंगूरा।

मीमांसक–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता, किसी विषय की विवेचना या मीमांसा करने वाला।

मीमांसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अनुमान और तर्कादि के द्वारा यह स्थिर करना कि यह बात मान्य है या नहीं; छः दर्शनों में से उत्तर मीमांसा और पूर्व मीमांसा नामक दो शास्त्र, जैमिनिकृत पूर्व मीमांसा नामक दर्शन शास्त्र, निर्णय।

मीमांसित–वि. (सं.) निर्णीत, विचारित, सिद्धान्तित।

मीमांस्य–वि. (सं.) विचारने या मीमांसा करने योग्य।

मीर–संज्ञा, पु. फ़ा. (अ. *अमीर*) नेता, प्रधान, सरदार, राजा, धर्म का आचार्य, सैयदों की उपाधि (मुस.), जीतने वाला, सबसे प्रथम प्रतियोगिता करने वाला। उर्दू का प्रसिद्ध शायर।

मीरफर्श–संज्ञा, पु. (फ़ा.) फ़र्श की चाँदनी के कोनों पर रखे जाने वाले पत्थर।

मीर मजलिस–संज्ञा, पु. यौ. (अ.) सभापति, राजा, सरदार।

मीरास–संज्ञा, स्त्री. (अ.) बपौती, **तारका** (प्रान्ती.)।

मीरासी–संज्ञा, पु. (अ. *मीरास*) मुसलमान लोग जो गाने-बजाने या मसखरेपन का काम करते हैं। स्त्री.–**मीरासिन**।

मील–संज्ञा, पु. दे. (*अं. माइल*) आधे कोस की दूरी, आठ फलाँग या 1760 गज की दूरी। या 16 कि. मी.

मीलन–संज्ञा, पु. (सं.) संकुचित या बंद करना, मींचना। वि. **मीलनीय, मीलित**।

मीलित–वि. (सं.) सम्मिलित, सिकोड़ा या बंद किया हुआ। संज्ञा, पु. एक अलंकार जहाँ एक होने से उपमेय और उपमान में अभेद या भेद का न जान पड़ना कहा जाए

(अ. पी.)।

मुँगरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुद्गर*) काठ का हथौड़ा जैसा औज़ार। स्त्री. **मुँगरी**। संज्ञा, पु. दे. (हि. *मोपरा*) नमकीन बुँदिया।

मुँगोरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मूँग+बरा*) मूँग के बरे, बड़े।

मुँगौरी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *मूँग+बरी*) मूँग की बनी हुई बरी।

मुंड–संज्ञा, पु. (सं.) **मूँड़**, सिर, असुरेश शुंभ का सेनापति, एक दैत्य जिसे दुर्गा जी ने मारा था, पेड़ का ठूँठ, राहु ग्रह, कटा सिर, एक उपनिषद्। वि. **मुंडा**–मुँड़ा हुआ।

मुंडन–संज्ञा, पु. (सं.) 16 संस्कारों में से, सिर के बालों को उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया, द्विजातियों के बालक के प्रथम सिर मूँड़ने का एक संस्कार (हिंदू.)।

मुँड़ना–क्रि. अ. दे. (सं. *मुंडन*) मूँड़ा जाना, सिर के बालों का बनाया जाना, लुटना, छला या ठगा जाना, घूमना।

मुंडमाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) खोपड़ियों या कटे हुए सिरों का हार जो शिवजी या कालीदेवी के गले का गहना है।

मुंडमालिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) काली देवी।

मुंडमाली–संज्ञा, पु. यो. (*मुंडमालिन्*) शिव जी।

मुंडा–संज्ञा, पु. (सं. *मुंडी*) जिसके सिर में बाल न हों या मुड़े हुए हों, जो किसी साधु या योगी का शिष्य हो गया हो, बिना सींगों का सींगदार पशु, मात्रा और ऊपर की लकीर से रहित एक महाजनी लिपि, **मुड़िया** (दे.)। एक प्रकार का जूता। संज्ञा, पु. (दे.) एक असभ्य जाति जो छोटा नागपुर के आस-पास पाई जाती है। स्त्री. **मुंडी**।

मुँड़ाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मुंडन+आई प्रत्य.*) मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया या मज़दूरी।

मुँडासा†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मुंड=सिर+आसा प्रत्य.*. सिर का साफ़ा।

मुँड़िया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मूँड़ना+इया प्रत्य.*) साधु या संन्यासी का चेला, साधु संन्यासी। संज्ञा, स्त्री. (दे.) महाजनी लिपि, मूँड़ या सिर। **लो. मन मन भावे, मुँड़िया डुलावै**।

मुंडी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मूंड़ना+ई प्रत्य.*) सिर के बाल मुँड़ी स्त्री, राँड़, विधवा (गाली)। संज्ञा, स्त्री. (सं.) गोरखमुंडी (एक औषधिमूल) **निरगुंडी** (दे.) मूँड़ या सिर।

मुँडेर, मुँडेरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मूँड़*) दीवाल का सबसे ऊपरी भाग जो छत के करीब सर के ऊपर रहता है।

मुँडेरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मूँड़=शिर+परा प्रत्य.*) छत के ऊपर उठा हुआ दीवार का सबसे ऊपरी भाग।

मुँदना–क्रि. अ. दे. (सं. *मुद्रण*) ढक जाना, लुप्त होना, बंद हो जाना, छिपना, बिल या छेद का बंद होना। संज्ञा, पु. (दे.) ढक्कन। प्रे. रूप–**मुँदवाना**।

मुँदरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मुँदरी*) योगियों के कान का कुंडल, कारणाभूषण।

मुँदरी, मुँदरिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मुद्रा*) छल्ला, मुद्रिका, अँगूठी।

मुंशी–संज्ञा, पु. (अ.) लेख या निबंधादि लिखने वाला, लेखक, मुहर्रिर, **मुंसी** (दे.)। स्त्री. **मुशियाइन**।

मुंसरिम–संज्ञा, पु. (अ.) प्रबंधकर्त्ता, दफ्तर का एक प्रधान कर्मचारी जो मिस्लें ठीक ठिकाने पर रखता है।

मुंसिफ़–संज्ञा, पु. (अ.) दीवानी अदालत का न्यायाधीश, इन्साफ़ करने वाला।

मुँसिफी–संज्ञा, स्त्री. (अ. *मुँसिफ+ई प्रत्य.*) न्याय या इन्साफ़ करने का कार्य, मुंसिफ़ का पद या कार्य, मुंसिफ़ की कचहरी।

मुँह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुख*) मुख का बिल, मुख़-बिवर, मुख, किसी प्राणी के बोलने और खाने-पीने का अंग। यौ. **मुँह-दर-मुँह**–एक दूसरे के सामने। **मु. मुँह अँधेरे**–माता, सायंकाल का समय जब अँधेरे के कारण मुख न दिखलाई देता हो। **मुँह (अपना सा) लेकर रह जाना**–कुछ कर न सकना, हताश या लज्जित होना। **मुँह आना**–मुख में छाले पड़ना और फूल जाना। **मुँह उतर जाना**–उदास या दुखी होना, लज्जित होना। **मुँह (चेहरे) का रंग बदल जाना**–लज्जा, भयादि का मन पर पूरा प्रभाव पड़ना, घबरा जाना। **मुँह करना**–सामना करना, मिलाना, समाता या बराबरी करना, साथ देना, फोड़ा चीरना या (फूटना), आक्रमण या धावा करना, टूट पड़ना, देखना, जाना। **मुँह खिल जाना**–प्रसन्नता से चेहरे पर विकास आ जाना। **मुँह ख़राब करना**–जीभ से बुरी बातें निकालना। **मुँह खुलना**–बेधड़क बातें

करना; स्वाद आने लगना। **मुँह (जीभ) चलना (चलाना)**–खाया जाना, व्यर्थ बकना या दुर्बचन कहना। **मुँह चिढ़ाना (बिराना)**–पूरी-पूरी नकल करना। **मुँह छूना**–नाम के लिए कहना, हृदय से न कह कर ऊपर से ही कहना। मुँह चलना खाना, कुत्सित बोलना। **मुँह पर लाना**–कहना, चर्चा या वर्णन करना। **मुँह फाड़ कर कहना**–स्पष्ट या निर्लज्जता से कहना। **मुँह पीला (स्याह) पड़ना**–लज्जा, भयादि से चेहरे का रंग बदल जाना। **मुँह बाँध कर बैठना**–चुपचाप रहना। **मुँह भरना**–रिशवत या घूस देना। **मुँह मीठा करना**–मिठाई खिलाना, कुछ देकर प्रसन्न करना। **मुँह बनाना**–असंतोष रुष्टतादि से मुँह का विकृत करना, चिढ़ाना, चिढ़ाने को मुँह का टेढ़ा-मेढ़ा करना। **मुँह में खून या लहू लगना**–चाट या चस्का पड़ना। **मुँह बंद रखना**–कुछ न बोलना, मौन रहना। **मुँह में ज़बान न होना**–कहने की शक्ति या सामर्थ्य न होना। **(किसी का) मुँह बंद कर देना**–उसे बोलने न देना, निरुत्तर कर देना। **मुँह में पानी भर आना**–लोभाना, ललचाना। **मुँह में लगाम न होना**–मनमानी बातें कहना। **मुँह लटकना**–उदास या लज्जित होना। **मुँह सीना (मुँह में ताला लगाना)**–चुपचाप रहना, कुछ न कहना या बोलना। **बे मुँह का होना**–बहुत सीध ा होना। **मुँह सूखना**–बहुत प्यास लगना, गले या जीभ में काँटे पड़ना या रोग के मारे गला सूखना। **मुँह मे ताला पड़ना, लगाना (डालना)**–बलात् कुछ बोलने न देना। **मुँह से दूध टपकना (चूना)**–वहुत अजान बालक होना। **मुँह लटकाना (फुलाना)**–असंतुष्ट या रुष्ट हो मुँह का विकृत करना, **गाल-मुँह फुलाना, मुँह उठाना**–विरोध करना, सामने लड़ाई को तैयार होना, सामना करना। **मुँह से निकलना**–कुछ कह बैठना। **मुँह से निकालना**–कहना। **मुँह से फूल झड़ना (गिरना)**–अति मधुर और प्रियवचन बोलना। **मुँह का मीठा**–मधुर ओर प्रिय बोलने किंतु अंदर कपट रखने वाला। मत्था, आँख, नाक, कान और गाल वाला, सिर का भाग, चेहरा। **मु॰ अपना मुँह काला करना**–पाप या व्यभिचार करना, बुरा काम करना, अपनी बदनामी करना। **मुँ काला होना**–कलंकित होना। **दूसरे का मुँह काला करना**–त्यागना, बदनाम या कलंकित करना, उपेक्षा से हटाना, बदनाम करना। **मुँह की खाना**–अनादर होना, दुर्दशा कराना, मुँह तोड़ जवाब सुनना, हार जाना। **मुँह न देखना**–अति घृणा से त्याग देना, भेंट न होना। **मुँह के बल गिरना**–धोखा या ठोकर खाना, हानि उठाना। **मुँह छिपाना (चुराना)**–शरम के मारे सामने न आना, किसी काम से दूर भागना, उसे न करना। **किसी का मुँह तकना**–कुछ पाने के लालच से मुँह देखना, विवश या चकित होकर देखना, सिहाना, आशा रख सहायता या सहारे का आसरा रखना। **मुँह ताकना**–ललचाना, चकित होना, आशा या भरोसा रखना, निकम्मा होकर चुप बैठे रहना, आशा रखना। **मुँह देखते या ताकते रह जाना**–आशा लगाए रहना और फिर हताश होना, विवश या चकित होकर रह जाना। **मुँह न दिखाना**–संमुख या सामने न आना। **मुँह दिखाने योग्य न रहना**–अति लज्जित होना। **मुँह देखकर बात कहना (करना)**–खुशामद करना। मुँह देखी करना–लिहाज या मुरव्वत से पक्षपात या अयोगय (अन्याय) करना। **किसी का मुँह देखना (ताकना)**–सामना करना, चकित होकर देखना, सम्मुख जाना, आशा लगाना, लिहाज़ या मुरब्बत करना। **मुँह धो रखना**–निराश या नाउम्मेद हो जाना। **मुँह पर**–सामने, सम्मुख, प्रत्यक्ष। **मुँह में (पर) न लाना**–न कहना, चर्चा न करना। **मुँह पर या मुँह से बरसना**–चेहरे या आकृति से प्रगट होना। **गाल-मुँह फुलाना या फुला कर बैठना**–चेहरे या आकृति से क्रोधित या असंतुष्ट, अप्रसन्न प्रगट होना। **मुँह की ओर ताकना**–आशा लगाना, आसरा देखना या करना। **मुँह फूँकना**–मुँह झुलसाना या जलाना, मुँह में आग लगाना, दाहकर्म करना (गाली)। **मुँह धोकर आना**–निराश होना। **किसी के मुँह लगना**–हुज्जत, प्रश्नोत्तर या वादविवाद करना, उद्दंड बनना, बढ़-बढ़ कर बातें करना। **मुँह लगाना**–सिर चढ़ाना, उद्दंड या धृष्ट बनाना। **मुँह सूखना**–लज्जा या भय से चेहरे की कांति, तेज या प्रताप चला जाना। प्यास से गला सूखना। किसी वस्तु का ऊपरी छेद, छिद्र, विवर, लिहाज, मुरव्वत। **मुँह पर खेलना**–चेहरे पर प्रतिबिंवित या प्रगट होकर उपस्थित

रहना। **मुँह देखे का**–जो दिल से न हो, जो दिखाने भर को हो। **मुँह पर जाना**–लिहाज या ध्यार करना। **मुँह मुलाहजे का**–परिचित, जान-पहचान का। **मुँह रखना**–लिहाज करना, ध्यान रखना। योगयता, साहस, शक्ति, सामर्थ्य। **मु॰ मुँह पड़ना**–साहस होना, ऊपर का किनारा या सतह। **मु॰ मुँह तक आना या भरना**–पूर्ण रूप से भर जाना, लबालब भर जाना। **(किसी काम से) मुँह मोड़ना**–इन्कार करना, नट जाना, किसी काम से दूर हटना। **मुँह चढ़ाना**–क्रोध करना, प्रेम या स्नेह करना, सामने होना। **मुँह चलना**–काट खाना, चुगुली करना, अनुचित या कुत्सित या व्यर्थ वात बकना या कहना, बहुत व्यर्थ बकना। **मुँह छोरी**–लज्जा, भय से छिपकर, मुँह छिपाना। **मुँह चुराना**–मुँह छिपाना, सामने न आना। **मुँह ठठाना**–मुँह पर मारना, लज्जित या निरुत्तर करना, मुँह बंद करना। **मुँह डालना**–खाना, माँगना, किसी विषय में भाग लेना। **मुँह गिरा लेना**–उदास, असंतुष्ट या हताश होना। **मुँह तो देखें**–योग्यता या शक्ति देखें। **मुँह फेरना (फेर लेना)**–उपेक्षा करना, घृणा करना, त्यागना। **मुँह मोड़ना, मुँह फेरना**–अप्रसन्न होना। **मुँह पर गर्म होना**–सामने क्रोध करना। **मुँह पर लाना**–कहना। **मुँह (चेहरे) पर हवाई उड़ना**–मुँह की रंगत उड़ जाना, निष्प्रभ होना। **मुँह फैलाना**–अधिक चाहना, अधिक लोभ दिखाना। **मुँह बनाना**–त्योरी चढ़ाना, अप्रसन्नता, अरुचि या घृणा दिखाने को मुँह को विकृत करना।

मुँहकाला–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) बदनामी, अनादर, अप्रतिष्ठा।

मुँहछुट–वि॰ (हि॰ *मुँह+छूटना*) मुँहफट।

मुँहज़ार–वि॰ (हि॰ *मुँह+जोर* फ़ा॰) बकवादी, वाचाल, धृष्ट, उद्दंड। संज्ञा, स्त्री॰ **मुँहजोरी**।

मुँहतोड़–वि॰ यौ॰ (हि॰) लाजवाब करने को ठीक विपरीत उत्तर।

मुँहदिखाई–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मुँह+दिखाना*) मुँह देखने की रीति, वह धन जो बहू को मुँह देखने पर दिया जाता है (ब्याह)।

मुँहदेखा–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मुँह+देखना*) जो मुँह देखकर बर्ताव करे। स्त्री॰ **मुँहदेखी**। **मुँहनाल**–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) धुँआ खींचने की हुक्के के नैचे या सटक के छोर पर लगी हुई नली।

मुँहफट–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मुँह+फटना*) कड़वी बातें कहने वाला, मुँहछुट।

मुँह बोला–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मुँह+बोलना*) जो सत्यता न हो, केवल मुख से कहा जाए।

मुँहभराई–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मुँह+भरना+आई प्रत्य॰*) रिश्वत, घूस, मुँह भरने की क्रिया।

मुँहमाँगा–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (हि॰ *मुँह+माँगना*) यथेच्छा, याचना-अनुकूल, मनचाहा, कथनानुसार।

मुँहचाही–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *मुँह+चाहना*) डींग मारना, बढ़ बढ़ कर बातें करना।

मुँहामुँह–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (हि॰) पूर्ण, भरपूर, लबालब, मुँहतक।

मुँहासा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मुँह+आसा प्रत्य॰*) यौवनारंभ में मुँह पर निकलने वाली फुंसियाँ या दाने।

मुअतबर–वि॰ (अ॰) विश्वस्त, विश्वास-पात्र, ऐतबारी, भरोसे का।

मुअत्तर–वि॰ (अ॰) सुगंधित, महकदार, सुबासित।

मुअत्तल–वि॰ (अ॰) कुछ दिन के लिए काम से अलग किया गया। संज्ञा, स्त्री॰ **मुअत्तली**।

मुअम्मा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पहेली, भेद।

मुअल्लिम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) शिक्षक।

मुआ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मृत*) मृत, मुर्दा, मरा हुआ। स्त्री॰ **मुई**। (गाली) स्त्री मुई।

मुआफ़–वि॰ (अ॰) क्षमा किया हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **मुआफ़ी**–क्षमा।

मुआफ़िक–वि॰ (अ॰) अनुकूल, उपयुक्त, मुताबिक़, अविरुद्ध। संज्ञा, स्त्री॰ **मुआफ़िक़त**।

मुआयना–संज्ञा, पु॰ (अ॰) **मुआइना** (दे॰) निरीक्षण, देख-भाल, जाँच-पड़ताल, वि॰ **मुआयिन**।

मुआवज़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) **मावज़ा** (दे॰), बदला, पलटा, किसी कार्य या हानि के बदले में दिया गया धन।

मुकट–(दे॰) **मुकुट**–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मुकुट*) मुकुट (दे॰) ताज, टोपी।

मुकटा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) रेशमी धोती।

मुकत–वि॰ दे॰ (सं॰ *मुक्त*) मुक्त, बंधन-विहीन।

मुकता–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुक्ता*) मोती। वि. (हि. *प्रत्य. अ+मुकता–समाप्त होना*) यथेष्ट, अधिक, बहुत। स्त्री. **मुकती**।

मुकतालि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) मुक्तावली, मोतियों की लड़ी।

मुकताहल–संज्ञा, पु. (दे.) मुक्ता, मोती।

मुक़दमा–संज्ञा, पु. (अ.) अभियोग, नालिश, दावा, दो पक्षों में किसी अपराध, धन, स्वत्वाधिकारादि के संबंध का मामला जो विचारार्थ न्यायालय में जाए।

मुक़दमेबाज़–संज्ञा, पु. (अ. *मुकदमा+बाज* फ़ा.) बहुत मुकदमें लड़ने वाला। संज्ञा, स्त्री. **मुक़दमेबाज़ी**।

मुकद्दम–वि. (अ.) आवश्यक, पुराना, मुखिया।

मुकद्दर–संज्ञा, पु. (अ.) भाग्य।

मुकद्दस–वि. (अ.) पवित्र, जैसे–क़ुरान मुक़दस।

मुकना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मकुना*) बेदाँत का हाथी, विना मुच्छ का आदमीं **मकुना** (दे.)। *†क्रि. अ. दे. (सं. *मुक्त*) छूटना, मुक्त होना, समाप्त होना, चुकना।

मुकम्मल–वि. (अ.) पूर्ण, पूरा पूरा, सब का सब।

मुकरना–क्रि. अ. दे. (सं. *मा=नहीं+हि. करना*) कुछ कहकर उससे बदल जाना, नटना।

मुकरनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मुकरी*) कथित बात का निषेध कर फिर उसी में कुछ अन्य अभिप्राय प्रगटने वाली कविता या बात।

मुकरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मुकरना+ई प्रत्य.*) कथित बात से वदल कर अन्य अभिप्राय को सूचित करने वाली कविता, **मुकरनी, कह-मुकरी**।

मुकर्रर–वि. (अ.) दोबारा, फिर से।

मुक़र्रर–वि. (अ.) नियत, नियुक्त, तैनात, निश्चित। संज्ञा, स्त्री. **मुक़र्ररी**।

मुकाता–संज्ञा, पु. (दे.) इजारा, साझा।

मुक़ाबला–संज्ञा, पु. (अ.) मुठभेड़, आमना-सामना, समानता, तुलना, विरोध, लड़ाई-झगड़ा, मिलान, विरोध, मुकाबिला।

मुक़ाबिला–क्रि. वि. (अ.) सामने, सम्मुख। संज्ञा, पु. प्रतिद्वंद्वी, शत्रु, बैरी, दुश्मन, विरोधी।

मुक़ाम–संज्ञा, पु. (अ.) टिकने का स्थान, पड़ाव, स्थान, ठहरने या रहने की जगह, विराम, घर, अवसर। **मु. मुकाम देना**–मृत व्यक्ति के घर में उसके वंश वालों का जाकर दुःख प्रगट करना।

मुकियाना–क्रि. अ. दे. (हि. *मुक्की+इयाना प्रत्य.*) घूँसे या मुक्कियाँ लगाना या मारना।

मुकुट–संज्ञा, पु. (सं.) राजाओं का एक प्रसिद्ध शिरोभूषण, **मकुट, मुकट** (दे.)।

मुकुन्द–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु भगवान, कृष्ण, **मुकुंन्दा** (दे.)।

मुकुत, मुकता–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुक्ता*) मोती, **मुकुताहल**।

मुकुताहल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुक्ता*+हल) मोती।

मुकुर–संज्ञा, पु. (सं.) आईना, शीशा, दर्पण, कली, मौलसिरी।

मुकुल–संज्ञा, पु. (सं.) कली, आत्मा, देह, एक छंद (पिं.)।

मुकुलित–वि. (सं.) कली-युक्त कलिया या हुआ, कुछ कुछ फूली या खिली (कली), कुछ बंद कुछ खुले (नेत्र)।

मुक्का–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुष्टिका*) बँधी-मुट्ठी जो मारी जाय या मारने को उठाई जाए, घूँसा। स्त्री. अल्पा. **मुक्की**।

मुक्की–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मुक्का*) हलका घूँसा या मुक्का, किसी को आराम पहुँचाने के हेतु उसके शरीर को हलके घूँसों से पीटना, मुक्के मारने का युद्ध।

मुक्केबाज़ी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मुक्का+बाज़ी*) घूँसों या मुक्कों का युद्ध का लड़ाई, **घूँसेबाज़ी**। (अं.) बॉक्सिंग।

मुक्त–वि. (सं.) बंधन-रहित, छूटा हुआ, स्वतंत्र, जिसे मुक्ति मिल गई हो, फेंका हुआ।

मुक्तकंठ–वि. यौ. (सं.) चिल्ला कर बोलने वाला, जिसे कहने में सोच-विचार न हो, पूर्ण स्वर से।

मुक्तक–संज्ञा, पु. (सं.) मोती, एक अस्त्र जो फेंक कर मारा जाता था, स्फुट कविता, उद्‍भट। यौ. **मुक्तक काव्य**–वह काव्य जिसमें कोई कथ या प्रबंध न चले (विलो. **प्रबंध काव्य**)।

मुक्तता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मुक्ति, मोक्ष।

मुक्तव्यापार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विरागी-कर्मत्यागी, व्यापार से विरक्त।

मुक्तहस्त–वि. यौ. (सं.) वह दानी जो खुले हाथों दान करे, खुले हाथ। संज्ञा, स्त्री. **मुक्तहस्तता**।

मुक्ता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मोती, **मुकता** (दे.)।

मुक्ताफल–संज्ञा, पू. यौ. (सं.) मोती।

मुक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मुच्+क्तिन्*) मोक्ष, **मुक्ती, मुकति, मुकती** (दे.) रिहाई, स्वातंत्र्य।

मुक्तिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक उपनिषद्।

मुख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वदन, आनन, चेहरा, मुँह, घर का द्वार, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी खुला भाग आदि, आरंभ, किसी वस्तु से पूर्व की वस्तु, नाटक में एक संधि (नाटय॰)। वि॰ मुख्य, प्रधान।

मुखचपला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आर्या छंद का एक भेद (पिं॰)।

मुखड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुख+ड़ा* हि॰ *प्रत्य॰*) आनन, मुख, मुँह; किसी गीत की पहली पंक्ति (टेक)।

मुख़तार–संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रतिनिधि, कानूनी सलाहकार या कार्य करने वाला अधिकारी, मुख़्तार। ख़ुद मुख़्तार- स्वतंत्र।

मुख़तारनामा–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *मुख़तार+नामा* फ़ा॰) प्रतिनिधि पत्र, किसी की ओर से अदालती कार्यवाही करने का अधिकारसूचक पत्र।

मुख़तारी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *मुख़तार+ई॰ प्रत्य॰*) मुख़तार का काम या पेशा, प्रतिनिधित्व।

मुखपत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी संस्थादि का प्रतिनिधि पत्र, उसकी रीति-नीति का प्रचारक पत्र।

मुख़फ़्फ़फ–वि॰ (अ॰) संक्षिप्त।

मुखबंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रस्तावना, भूमिका, दीबाचा।

मुख़बिर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) ख़बर देने वाला, जासूस, गोइंदा।

मुख़बिरी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *मुख़बिर+ई* फा॰ *प्रत्य॰*) ख़बर देना, ख़बर देने का काम, मुख़बिर का कार्य।

मुखप्रक्षालन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मुख को दतून से साफ़ करना, मंजन करना, कुल्ला करना।

मुखर–वि॰ (सं॰) बकवादी, कटुवादी, जो बहुत और अप्रिय बोलता हो। संज्ञा, स्त्री॰ **मुखरता**।

मुखशुद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (दे॰) मुँह साफ़ करना, भोजन आदि के पीछे पान आदि खाकर मुख को शुद्ध करना।

मुखस्थ–वि॰ (सं॰) मुखाग्र, कंठस्थ।

मुखाग्र–वि॰ (सं॰) कंठस्थ, बरज़वान।

मुखागर–वि॰ (दे॰) मुखाग्र (सं॰) ज़बानी।

मुख़ातिब–वि॰ (अ॰) बातें करने वाला, मध्यमपुरुष; मुँह (किसी की ओर) करके बोलना/देखना।

मुखापेक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दूसरे का मुख ताकना, पराश्रित रहना।

मुखापेक्षी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मुखापेक्षिन्*) पराश्रित, पराधीन, दूसरे का मुख ताकने वाला, अन्योपजीवी।

मुखाभा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मुख की श्री या कांति, वदनालोक।

मुख़ालिफ़–वि॰ (अ॰) विरोधी, शत्रु, बैरी, दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी, विरुद्ध। संज्ञा, स्त्री॰ **मुख़लिफ़त**।

मुखावलोकन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुख-दर्शन, मुख देखना।

मुखिया–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *मुख्य+इया* हि॰ *प्रत्य॰*) प्रधान, नेता, सरदार, अगुआ।

मुख़्तलिफ़–वि॰ (अ॰) भिन्न भिन्न, विविध, अलग-अलग, पृथक् पृथक्।

मुख़्तसर–वि॰ (अ॰) संक्षिप्त, अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म।

मुख्य–वि (सं॰) प्रधान, सब से बड़ा, ख़ास, अगुवा। संज्ञा, स्त्री॰ **मुख्यता**। क्रि॰ वि॰ (सं॰) **मुख्यतः, मुख्यतया**।

मुगदर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुग्दर*) व्यायाम करने की लकड़ी की गावदुम, मुँगरी का जोड़ा, एक प्राचीन अस्त्र।

मुग़ल–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मंगोल का निवासी, तातार के तुर्कों की एक श्रेष्ठ जाति, मुसलमानों की चार जातियों में से एक जाति। स्त्री॰ **मुग़लानी**।

मुग़लई, मुग़लाई–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *मुग़ल+ई या आई प्रत्य॰*) मुग़लों के तुल्य, मुग़लों का सा। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मुग़लपन।

मुगवन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वनमुद्ग*) वनमूँग, मोठ।

मुग़ालता–संज्ञा, पु॰ (अ॰) धोखा, छल।

मुग्धम–वि॰ (दे॰) भ्रमित या अस्पष्ट बात।

मुग्ध–वि॰ (सं॰) मूढ़, मूर्ख, अज्ञान, भ्रम में पड़ा, मोहित, सुंदर, आसक्त। संज्ञा, स्त्री॰ **मुग्धा**। संज्ञा, स्त्री॰ **मुग्धता**।

मुग्धा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नवयौवना नायिका, काम-चेष्टा-रहित युवा स्त्री (सा॰)।

मुचक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लाह, लाख, लाक्षा।

मुचकुंद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुचुकुंद*) एक बड़ा पेड़, एक प्रबल राजा जिन्होंने देवासुर-युद्ध में इंद्र की सहायता की थी (पुरा॰)।

मुचलका–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अनुचित कर्म न करने या न्यायालय में नियत समय पर उपस्थित होने का प्रतिज्ञा पत्र; चालान।

मुया–संज्ञा, (दे॰) माँस का टुकड़ा।

मुछंदर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मूछ*) बड़ी बड़ी मूछों वाला, मूर्ख, कुरूप। वि॰ **मुछंदरी**।

मुज़कर–वि॰ (अ॰) पुल्लिंग। (विलो॰ **मुजन्नस**)।

मुजमिल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) जुमला, योग, सब। क्रि॰ वि॰ कुल मिलाकर।

मुजरा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मिनहा, घटाया हुआ, अभिवादन, वेश्या का बैठकर गाना, किसी बड़े या धनी के सम्मुख रक़म से काटी हुई रक़म।

मुजावर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रौज़ा या कब्र का रक्षक और वहाँ का चढ़ा पैसा लेने वाला (मुसल॰)।

मुजाहिम–वि॰ (अ॰) बाधक।

मुज़िर–वि॰ (अ॰) हानिकर।

मुजरिम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अभियुक्त, योगी, अपराधी।

मुझ–सर्व॰ (हि॰ *मैं*) मैं का वह रूप जो कर्त्ता और संबंधकारक के अतिरिक्त शेष कारकों में विभक्ति आने के प्रथम होता है।

मुझे–सर्व॰ (हि॰ *मैं*) मैं का वह रूप जो कर्म और संप्रदान कारक में होता है।

मुटका, मुकटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ मोटा)* एक रेशमी वस्त्र या धोती

मुटाई, मोटाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मोटा+ई प्रत्य॰*)। पुष्टि, स्थूलता, मोटापन, अहंकार, शेखी।

मुटाना, मोटाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *मोटा+आना प्रत्य॰*) मोटा या अहंकारी होना।

मोटापा, मुटापा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मोटे होने का भाव।

मुटिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मोठ–मठरी+ईया प्रत्य॰*) बोझा ढोने वाला, मज़दूर।

मुट्ठा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मूठ*) घास के डंठल आदि का मुट्ठी भर पूला, चंगुण कर वस्तु, पुलिंदा, यंत्र या हथियार का बेंट, दस्ता, **हत्था** (दे॰) स्त्री॰ **मुट्ठी**।

मुट्ठी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुष्टिका, प्रा॰ मुट्ठिया*) बँधी हथेली, मुड़ी अँगुलियों को हथेली में दबाने से हाथ की बँधी मुद्रा, उतनी वस्तु जो हथेली की इस मुद्रा में समा सके, **मूठी** (दे॰)। **मु॰ मुट्ठी में**–अधिकार में, क़ाबू या कब्जे में। **मुट्ठी गरम करना**–धन या रुपया देना, किसी की थकी मिटाने को हाथों से अंगों को पकड़ कर दबाने की क्रिया, यौ॰ **मु॰ मुट्ठी भर**–बहुत थोड़े।

मुठभेड़, मुठभेड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मूठ+भिड़ना*) टक्कर, युद्ध, भिड़ंत, भेंट, सामना।

मुठिका*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुष्टिक*) घूँसा, मुक्का, मुट्ठी।

मुठिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुष्टिका*) यंत्रों या हथियारों का दस्ता, बेंट, हत्था। संज्ञा, स्त्री॰ मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न भिखारियों के देने की क्रिया।

मुठियाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मुट्ठी*) मुट्ठी में लेना।

मुठी*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मुट्ठी*) मुट्ठी।

मुड़कना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *मुरकना*) मुड़ना, मुरकना। क्रि॰ स॰ रूप–**मुड़काना**।

मुड़ना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *मुरण*) सीधी वस्तु का झुक जाना, दाएँ या बाएँ घूम जाना, अस्त्र की नोक या धार का झुकना, लौटना, पलटना, बाल बनना, ठगा जाना। क्रि॰ अ॰ **मुड़ना,** स॰ रूप–**मुड़ाना,** प्रे॰ रूप–**मुड़वाना**।

मुड़वाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *मूड़ना का प्रे॰ रूप*) बाल बनवाना, धोखा दिखाना। क्रि॰ स॰ (हि॰ *मुड़ना का प्रे॰ रूप*) झुकवाना, घुमवाना।

मुड़वारी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मूड़+वारी प्रत्य॰*) **सिरहाना,** मुँड़ेर, अटारी की दीवार का सिरा।

मुड़िया†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मूड़ना+इया प्रत्य॰*) सिर मुड़ा व्यक्ति, साधु। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) महाजनी लिपि।

मुड़ेर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मुड़वारी; मुंडेर

मुतअल्लिक़–वि॰ (अ॰) संबंधी, संबंध रखने वाला, सम्मिलित, संबद्ध। क्रि वि॰ सबंध या विषय में।

मुतक्का–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मूँड़+टेक*) खंभा, लाट, मीनार, छज्जे पर पटाव के किनारे की नीची दीवाल; तकिए का बहुवचन (अ॰)

मुतफन्नी–वि॰ (फ़ा॰) धूर्त, नीच, छली।

मुतफ़र्रिक़–वि॰ (अ॰) भिन्न भिन्न, अलग अलग, स्फुटिक।

मुतबन्ना–संज्ञा, पु॰ (अ॰) दत्तक या गोद लिया लड़का या पुत्र।

मुतलक़–क्रि॰ वि॰ (अ॰) रंचक भी, तनिक भी, रत्ती भर भी, केवल।

मुतवज्जह–वि॰ (अ॰) प्रवृत्त, जिसने ध्यान दिया हो।

मुतवफ़्फ़ा–वि॰ (अ॰) मृत, स्वर्गवासी।

मुतवल्ली–संज्ञा, पु॰ (अ॰) वली, नाबालिंग और उसकी संपत्ति का कानूनी रक्षक।

मुतसद्दी–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुंशी, लेखक, पेशकार, दीवान, मुनीम, प्रबंधकर्त्ता, **मुसद्दी** (दे॰)।

मुतसिरी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मोती+श्री सं॰*) मोतियों की कंठी।

मुताबिक़–क्रि॰ वि॰ (अ॰) अनुसार। अनुकूल, मुआफ़िक़।

मुताना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मूत्र*) मूतने में प्रवृत्त करना, **मुतावना** (दे॰)। प्रे॰ रूप–**मुतवाना**।

मुतालबा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) जितना धन पाना उचित हो, शेष रुपया, **मतालबा** (दे॰)।

मुतास–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मूतना*) मूतने की इच्छा। वि॰ (दे॰) **मुतासा**।

मुताह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मुताअ*) एक प्रकार का स्थायी ब्याह (मुसल॰)।

मतिलाडू*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मोती+लड्डू*) मोतीचूर का लड्डू।

मुतीअ–वि॰ (फ़ा॰) प्रसन्न या अनुरक्त।

मुतेहरा*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मोती+हार*) कलाई का एक गहना।

मुद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आनंद, हर्ष, मोद।

मुदगर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मुगदर*) मुगदर।

मुदर्रिस–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अध्यापक। संज्ञा, स्त्री॰ **मुदर्रिसी**।

मुदा*†–*अव्य॰* दे॰ (*अ॰ मुद्दआ=अभिप्राय*) तात्पर्य यह है कि, लेकिन, परंतु, मगर। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आनंद, हर्ष।

मुदाम–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) लगातार, सदैव, सदा, निरंतर, ठीक ठीक।

मुदामी–वि॰ (फ़ा॰) जो सदा होता रहा करे।

मुदित–वि॰ (सं॰) प्रसन्न, ख़ुश।

मुदिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) परकीया के अंतर्गत एक नायिका। वि॰ स्त्री॰ (सं॰) हर्षित।

मुदिर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मेघ, घन, बादल।

मुदी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जुन्हाई, चाँदनी।

मुद्ग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मूँग, अन्न। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **मुद्गदाली**–मूँग की दाल (प्राचीन)।

मुद्गर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक अस्त्र, मुगदर, **मुदगर** (दे॰)।

मुदगल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक उपनिषद।

मुद्दआ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तात्पर्य, उद्देश्य, मुद्दा।

मुद्दई–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वादी, दावादार, विरोधी, शत्रु, बैरी। स्त्री॰ **मुद्दइया**।

मुद्दत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अवधि, अरसा, मिआद, बहुत दिन। वि॰ **मुद्दती**।

मुद्दाअलेह-मुद्दालेह–संज्ञा, पु॰ (अ॰) जिस पर दावा किया जावे, प्रतिवादी।

मुद्धी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) खिसक जाने वाली रस्सी की गाँठ।

मुद्रक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छापने वाला।

मुद्रण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छपाई, छापना। वि॰ **मुद्रणीय**। यौ॰ **मुद्रणयंत्र**–छापने की कल, **मुद्रणकला**।

मुद्रांकित–वि॰ यौ॰ (सं॰) मोहर किया हुआ, शरीर पर तप्त लोहे से दागकर छपे विष्णु के आयुध-चिह्न (वैष्णव)। मुद्रा पर लिखा।

मुद्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मोहर, छाप, छल्ला, मुद्रिका, रुपया, अशरफ़ी आदि सिक्का, गोरखपंथियों का कर्णभूषण, बैठने, खड़े होने, लेटने आदि का कोई ढंग, हाथ, मुख नेत्रादि की स्थिति विशेष, मुख की आकृति या चेष्टा, हठ योग में विशेष प्रकार के अंग-विन्यास, ये पाँच मुद्राएँ हैं–खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी, एक अलंकार जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त कुछ और भी साभिप्राय संज्ञादि, शब्द हों (अ॰ पी॰), वैष्णवों के शरीरों पर दगे हुए विष्णु के आयुध चिह्न।

मुद्रातप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक शस्त्र जिसके आधार पर पुराने सिक्कों की सहायता से ऐतिहासिक बातें ज्ञात की जाती हैं।

मुद्रायंत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) छापने या मुद्रण करने का यंत्र, छापे की कल, **मुद्रण-यंत्र**।

मुद्राविज्ञान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक शास्त्र जिसके अनुसार पुराने सिक्कों की सहायता से ऐतिहासिक बातें ज्ञात की जाती हैं।

मुद्राशास्त्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुद्रा-विज्ञान।

मुद्रिक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुद्रिका*) अँगूठी, **मुँदरी**।

मुद्रिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अँगूठी, **मुँदरी**। पवित्री, **पैंती** (दे॰)। पितृ-कार्य में कुश की बनी अनामिका में पहिनने की अँगूठी, मुद्रा, सिक्का, रुपया।

मुद्रित–वि॰ (सं॰) छपा हुआ, अंकित या मुद्रण किया हुआ, बंद, मुँदा या ढका हुआ।

मुधा–क्रि॰ वि॰ (सं॰) वृथा, व्यर्थ। वि॰ व्यर्थ का, निरर्थक, निष्प्रयोजन, झूठ, मिथ्या, असत। संज्ञा, पु॰ असत्य, मिथ्या।

मुनक्का–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *मि॰ सं॰ मृद्वीका*) द्राक्षा, दाख, एक तरह की बड़ी किसमिस, सूखा बड़ा अंगूर।

मुनादी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) ढिंढोरा, डुग्गी, वह घोषणा जो ढोल आदि बजाकर सारे नगर में की जाती है।

मुनाफ़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) लाभ, फ़ायदा, नफ़ा।

मुनारा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मीनार*) मीनार।

मुनासिब–वि॰ (अ॰) वाजिब, उचित, योग्य, उपयुक्त, समीचीन।

मुनि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तपस्वी, त्यागी, सात की संख्या, धर्म, ब्रह्म, सत्यासत्य आदि का पूर्ण विचार करने वाला पुरुष।

मुनिराय, मुनिराया–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) मुनिराज (सं॰)।

मुनियाँ–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनिंद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) **मुनींद्र** (सं॰)

मुनीव, मुनीम –(दे॰)–संज्ञा, पु॰ (अ॰) भा॰ श॰ को॰–178 *मुनीव*) सहायक, मददगार, सेठ-साहूकारों के हिसाब-किताब का लेखक या मुहर्रिर।

मुनींद्र–संज्ञा, पु॰ यो॰ (सं॰) **मुनिंद** (दे॰) मुनिवर, श्रेष्ठ मुनि।

मुनीश, मुनीश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रेष्ठमुनि, **मुनिराज, मुनिनाथ,** बुद्धदेव, विष्णु या नारायण, **मुनीस, मुनीसुर** (दे॰)।

मुनीसा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **मुनीश** (सं॰)।

मुन्ना, मुन्न–संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रिय, प्यारा, छोटों के लिए प्रेम-सूचक शब्द। स्त्री॰ **मुन्नी**।

मुफ़लिस–वि॰ (अ॰) कंगाल, निर्धन, दरिद्र, गरीब। संज्ञा, स्त्री॰ **मुफ़लिसी**।

मुफ़स्सल–वि॰ (अ॰) सविवरण, ब्योरेवाद, सविस्तार, विस्तृत। संज्ञा, पु॰ किसी केंद्रस्थ नगर के चारों ओर के ग्रामादि स्थान।

मुफ़ीद–वि॰ (अ॰) लाभप्रद, लाभकारी, फायदेमंद।

मुफ़्त–वि॰ (अ॰) बिना मूल्य या दाम का, संत का, **मुफत** (दे॰)। वि॰ **मुफ़्ती**। यौ॰ **मुफ़्तखोर**–जो दूसरों के धन का बिना कुछ किए भोग करे (खाये)। संज्ञा, स्त्री॰ **मुफ़्तखोरी। मु॰ मुफ़्त में**–बेदाम, बिना मूल्य, नाहक, व्यर्थ, बिना मतलब।

मुफ़्ती–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमान धर्मशास्त्री। वि॰ (अ॰ *मुफ़्त+ई प्रत्य॰*) बिना दाम या मूल्य का, सेंत का।

मुबतिला–वि॰ (अ॰) फँसा हुआ, संलग्न, व्यस्त।

मुबलिग–वि॰ (अ॰) रुपए की संख्या के पूर्व आने वाला एक विशेषण शब्द, केवल।

मुबारक–वि॰ (अ॰) मंगलप्रद, शुभ, बरकत वाला, नेक। **मु॰ मुबारक होना**–अच्छा होना, शुभ हो, फलना।

मुबारकवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (अ॰ *मुबारक+बाद* फ़ा॰) बधाई, धन्यवाद, किसी शुभ कार्य पर यह कहना कि मुबारक हो। संज्ञा, स्त्री॰ **मुबारकबादी**।

मुबारकी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *मुबारक+ई प्रत्य॰*) मुबारकबाद, धन्यवाद, बधाई।

मुबाहिसा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बहस, विवाद।

मुमकिन–वि॰ (अ॰) संभव।

मुमानियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मनाही, निषेध।

मुमानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातुलानी*) मामी, मातुलानी, माई।

मुमुक्षु–वि॰ (सं॰) मोक्ष पाने की इच्छा वाला, मुक्ति की कामना वाला।

मुमूर्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मरने की इच्छा या कामना।

मुमूर्षु–वि॰ (सं॰) मरणासन्न, मृत्यु का इच्छुक।

मुरंडा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **गुड़धानी** (दे॰) भूने गर्म गेहूँ के गुड़ मिले लड्डू। वि॰ (दे॰) शुष्क, सूखा हुआ।

मुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बेठन, वेष्टन, एक दैत्य जो विष्णु भगवान के द्वारा मारा गया था। *अव्य॰* फिर, पुनि, पुनः, दोबारा।

मुरई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मूली, एक जड़।

मुरक–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मुरकना*) मुरकने का भाव या क्रिया।

मुरकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *मुड़ना*) मुड़ना, लचक कर झुकना, घूमना, फिरना, लौटना, (किसी अंग का) मोच खाना, रुकना, हिचकना, विनष्ट या चौपट होना। स॰ रूप-**मुरकाना, प्रे॰** रूप–**मुरकवाना**।

मुरखाई, मुरखई*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मूर्खता*) मूर्खता, बेसमझी।

मुरगा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *मुर्ग*) कई रंग का एक पक्षी जिसके सिर पर कलंगी होती है (नर, कुक्कुट, अरुणशि। स्त्री॰ **मुरगी**।

मुरग़ाबी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) जल-कुक्कुट, जल-पक्षी।

मुरचंन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मुहचंग*) मुँह से बजाने का एक

बाजा, **मुँहचंग** (दे.)।

मुरछना, मुरछाना*–क्रि. अ. दे. (सं. *मूर्च्छन्*) अचेत या बेहोश होना, शिथिल होना।

मुरछा, मूरछा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मूर्च्छा*) मूर्च्छा, बेहोशी।

मुरछावंत*–वि. दे. (सं. *मूर्च्छा+वंत प्रत्य.*) मूर्च्छित, अचेत।

मुरछित, मूरछित*–वि. दे. (सं. *मूर्च्छित*) मूर्च्छित, बेहोश।

मुरज–संज्ञा, पु. (सं.) पखावज, मृदंग (बाजा)।

मुरझना–क्रि. अ. (दे.) मूर्छित होना, कुम्हलाना।

मुरझाना–क्रि. अ. दे. (सं. *मूर्च्छन्*) फूल-पत्ती का कुम्हलाना, उदास या सुस्त होना, सूखना।

मुरदर–संज्ञा, पु. (सं.) श्रीकृष्ण जी।

मुरदा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *मि. सं. मृतक*) मृतक, मरा हुआ, **मुर्दा** (दे.)। वि. मृत, मरा हुआ, बेदम, मुरझाया हुआ।

मुरदार–वि. (फ़ा.) मरा हुआ, बेजान, अशक्त, बेदम, मृत, अपवित्र, हीन (एक गाली)।

मुरदासंख–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा.*मुरदारसंग*) एक औषधि जो सिंदूर और सीसे को फूँक कर बनाई जाती है।

मुरदासन*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मुरदासंख*) मुरदासंख।

मुरधर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मरुधर*) मारधाड।

मुरना*–क्रि. अ. दे. (हि. *मुड़ना*) मुड़ना, घूमना, फिरना, लौटना।

मुरपैना‡–संज्ञा, पु. दे. यौ. हि. (मूड़=*सिर+पारना=रखना*) फेरी लगाकर माल बेचने वालों का बुकचा।

मुरब्बा–संज्ञा, पु. दे. (अ. *मुरब्बः*) फलों या मेवों का अचार जो मिश्री या चीनी आदि की चाशनी में रखा जाता है।

मुरब्बी–संज्ञा, पु. (अ.) मालिक, स्वामी, पालन करने वाला।

मुरमुराना–क्रि. अ. दे. (*अनु. मुरमुर से*) चूर चूर या चुरमुर होना, मुरमुर शब्द कर चबाना।

मुररिपु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **मुरारि**, श्रीकृष्ण।

मुररिया†–संज्ञा. स्त्री. दे. (हि. *मरोड़ना*) ऐंठन, बल, बटी हुई बत्ती।

मुरला, मुरैला–संज्ञा, पु. (दे.) पोपला, मोर पक्षी, मयूर, **पुछार** (ग्रा.)।

मुरलिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बाँसुरी, बंशी, मुरली।

मुरलिया†–संज्ञा, स्त्री. वि. दे. (सं. *मुरली*) वंशी, बाँसुरी।

मुरली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वंशी, बाँसुरी।

मुरलीधर–संज्ञा, पु. (सं.) श्रीकृष्ण जी।

मुरलीमनोहर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण जी, वंशीधर।

मुरवा, मोरवा–संज्ञा, पु. (दे.) पाँव की एड़ी के ऊपर का चारों ओर का भाग। †संज्ञा, पु. दे. (सं. *मयूर*, हि. *मोर*) मोर, मयूर।

मुरवी*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मौर्वी*) प्रत्यंचा, धनुष की ताँत या डोरी, चिल्ला।

मुरशिद–संज्ञा, पु. (अ.) गुरु, पथ-प्रदर्शक, पूज्य, माननीय, उस्ताद, कामिल।

मुरहा–संज्ञा, पु. (सं.) मुर राक्षस के मारने वाले श्रीकृष्ण जी। †वि. दे. (सं. *मूल नक्षत्र+हा प्रत्य.*) मूल नक्षत्र में उत्पन्न लड़का, उपद्रवी, नटखट, बदमाश, अनाथ। स्त्री. **मुरही**।

मुरहार–संज्ञा, पु. (दे.) स्त्रियों के सिर का गहना।

मुरहारि, मुरहारी–संज्ञा, पु. (सं.) श्रीकृष्ण जी, मुरारि।

मुरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मुरामाँसी, एकांगी, एक गंध द्रव्य, राजा चंद्रगुप्त की माता, इसी से मौर्य वंश चला (कथा.)।

मुराई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक जाति विशेष, काछी।

मुराड़ा–संज्ञा, पु. (दे.) जलती लकड़ी।

मुराद–संज्ञा, स्त्री. (अ.) कामना, अभिलाषा, आशा, मनोरथ। **मु. मुराद बर आना/ पाना (पूरी होना)**–मनोरथ पूर्ण होना। **मुराद माँगना (चाहना)**–मनोरथ पूर्ण होने की प्रार्थना करना, आशय, अभिप्राय, मतलब।

मुराधार–वि. (दे.) कुंठित, गोठिल।

मुराना*†–क्रि. स. (*अनु. मुर मुर से*) चबाना, दाँतों से पीस कर बारीक करना, चुभलाना, चबाना। *†क्रि. वि. (दे.) मोड़ना, मुड़ाना।

मुरार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मृणाल*) कमल-नाल, कमल-दंडी। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *मुरारि*) मुरारि, श्रीकृष्ण जी।

मुरारि, मुरारी(दे.)–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *मुरारि*) श्रीकृष्ण जी, डगण का तीसरा भेद (।ऽ।) (पिं.)।

मुरारे–संज्ञा, पु. (सं.) हे मुरारे, हे कृष्ण (संबोधन)।

मुरासा†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मुरना*) कर्ण-फूल, बड़ा साफ़ा, **मुड़ासा**।

मुरीद–संज्ञा, पु. (अ.) चेला, शिष्य, अनुयासयी, शागिर्द,

अनुगामी।

मुरु*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुर*) मुर दैत्य।

मुरुकना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) झुकना, मोच खाना, टेढ़ा होना, टूटना। स॰ रूप–**मुरुकाना, मुरकवाना**।

मुरुछना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *मुरझाना*) मुरझाना, मूर्छित या उदास होना, सूखना, कुम्हलाना, मूर्च्छित होना।

मुरुझना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *मुरझाना*) मुरझाना, कुम्हलाना, सूखना, उदास होना।

मुरेठा, मुरैठा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मूँड़+एठा, पेठा प्रत्य॰*) पगड़ी, साफ़ा, मुड़ासा।

मुरेरना–क्रि॰ अ॰ (हि॰) ऐंठना, घुमाना, मसलना, **मरोरना** (दे॰)।

मुरौअत, मुरौवत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मुरव्वत*) संकोच, शील, लिहाज, रियायत, भलमंसी।

मुर्ग़–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मुर्गा, मुरगा, कुक्कुट।

मुर्गकेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰ *मुर्ग+केश सं॰=चोटी*) मरसे की क़िस्म का एक पौधा, जटाधारी।

मुर्चा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *मोरचा*) मुरचा, मोरचा।

मुर्दनी–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *मुर्दन=मरना*) मुख पर मृत्यु के चिह्न, मृतक के साथ अंत्येष्टि क्रिया के हेतु जाना।

मुर्दावली–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) मुर्दनी। वि॰ मृतक या मुर्दे का।

मुर्रा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मरोड़ या मुड़ना*) मरोड़फली, पेट में ऐंठन और बार बार दस्त होना, मरोड़।

मुर्री–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मरोड़ना*) दो डोरों की ऐंठन, कपड़े की ऐंठन, कपड़े की बटी वत्ती, कमर पर धोती की ऐंठन, गाँठ, गिरह, **टेंट** (ग्रा॰)।

मुर्रीदार–वि॰ (हि॰ *मुर्री+दार फ़ा॰ प्रत्य॰*) ऐंठनदार, जिसमें मुर्री पड़ी हो।

मुर्शिद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) गुरु, मार्ग-दर्शक, बड़ा ज्ञानी, चतुर, श्रेष्ठ, उस्ताद।

मुलक, मुलुक–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मुल्क, देश, प्रदेश।

मुलकित–वि॰ दे॰ (सं॰ *पुलकित*) मुस्कुराता हुआ।

मुलकी–वि॰ दे॰ (अ॰ *मुल्क*) देशी, देश-संबंधी, शासन-संबंधी।

मुलज़िम–वि॰ (अ॰) अभियुक्त, जिस पर कोई अभियोग हो, अपराधी।

मुलतवी–वि॰ दे॰ (अ॰ *मुल्तवी*) स्थगित, वह कार्य जिसका समय टाल दिया गया हो।

मुलतानी–वि॰ (हि॰ *मुलतान=शहर+ई प्रत्य॰*) मुलतान-संबंधी, मुलतान का। संज्ञा, स्त्री॰ एक रागिनी, एक बहुत गरम और चिकनी मिट्टी।

मुलना†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मौलाना*) मोलवी, मौलवी, विद्वान। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मुल्ला*) मुल्ला।

मुलबी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **मोलवी**।

मुलमची–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *मुलम्मा+ची प्रत्य॰*) मुलम्मासाज़, मुलम्मा या गिलट करने वाला।

मुलम्मा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) गिलट, कलई, किसी वस्तु पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की तह, दिखावटी चमक-दमक, झूठी या नकली सोने की चीज़, पीतल। यौ॰ **मुलम्मासाज़**–मुलम्मा चढ़ाने वाला, मुचमची, ऊपरी तड़क-भड़क वाला। वि॰ **मुलम्माबाज़**–छली, धोखा देने वाला, झूठा।

मुलहा†–वि॰ (सं॰ *मूलनक्षत्र+हा प्रत्य॰*) मूलनक्षत्र का जन्मा, उपद्रवी, उत्पाती, **मुरहा** (दे॰)।

मुलाक़ात–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) भेंट, मिलना, मिलन, मेल-मिलाप, **मुलक़ात** (ग्रा॰)।

मुलाक़ाती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मुलाक़ात+ई प्रत्य॰*) मेली, मिलापी, मित्र, जान-पहचान वाला, परिचित।

मुलाज़िम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) सेवक, दास, नौकर। संज्ञा, स्त्री॰ **मुलाज़िमत**–नौकरी।

मुलायम–वि॰ (अ॰) मृदुल, सुकुमार, जो कड़ा या कठोर न हो, नम्र, नरम, नाजुक, धीमा, मंद, कोमल। (विलो॰ **सख़्त**)। यौ॰ **मुलायम चारा**–नरम खाना, जो सहल में दूसरे की बातों में आ जाय, जो सहज में मिले।

मुलायमियत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मुलायमत*) मुलायम होने का भाव, नम्रता, नरमी, नज़ाक़त, कोमलता।

मुलायमी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मुलायमत*) नम्रता, नरमी, मज़ाक़त, मृदुता।

मुलाहज़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) देख-भाल, जाँच-पड़ताल, निरीक्षण, संकोच, रियायत, मुरब्बत, **मुलाहिज़ा** (दे॰)। वि॰ **मुलाहज़ेदार**।

मुलेटी, मुलेहटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मूलयष्टी या मधुयष्टी*) जेठीमद, **मौरेठी** (दे॰), मुलहटी, मुलट्टी, धुँधली लता की जड़।

मुल्क–संज्ञा, पु. (अ.) **मुलुक** (दे.) देश, प्रांत, प्रदेश। वि. **मुल्की**।

मुल्ला–संज्ञा, पु. (अ.) मौलवी, मोलवी। संज्ञा, स्त्री. **मुल्लाई**।

मुवक्किल–संज्ञा, पु. (अ.) अपने लिए वकील करने वाला।

मुशली–संज्ञा, पु. (सं.) मूशलधारी, बलदेवजी, मूसली औषधि।

मुश्क–संज्ञा, पु. (फ़ा. *अ. मिशक*) गंध, कस्तूरी, मृगमद। संज्ञा, स्त्री. (दे.) भुजा, बाहु, बाँह। **मु. मुश्कें कसना या बाँधना**–किसी अपराधी की दोनों भुजाएँ पीठ की ओर करके बाँध देना।

मुश्कदाना–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) एक लता के बीज, जो कस्तूरी के समान सुगंधित होते हैं।

मुश्कनाफ़ा–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) कस्तूरी की नाभी, जिसके भीतर कस्तूरी रहती है।

मुश्कबिलाई–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *मुश्क+बिलाई* हि.=*बिल्ली*) गंध-बिलाव, एक जंगली बिलार जिसके अंडकोशों का पसीना सुगंधित होता है।

मुश्किल–वि. (अ.) कठिन, बड़ा, दुष्कर। संज्ञा, स्त्री. दिक्कत, कठिनता, विपत्ति, मुसीबत, आफ़त।

मुश्की–वि. (फ़ा.) कस्तूरी के रंग या गंध का, काला, श्याम, जिसमें कस्तूरी पड़ी हो। संज्ञा, पु. काले रंग का घोड़ा।

मुश्त–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मुट्ठी। यौ. **एक मुश्त**–एक साथ, एक दम (रुपए के लेन-देन में)।

मुश्ताक–वि. (अ., इच्छुक, चाहने वाला।

मुश्ताबहा–वि. (अ.) संदेह-युक्त, संदिग्ध।

मुष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मुट्ठी, घूँसा, मुक्का, दुर्भिक्ष, अकाल, मल्ल, मुष्टिक, चोरी।

मुष्टिक–संज्ञा, पु. (सं.) कंस का एक मल्ल जिसे बलदेव जी ने मारा था, घूँसा, मुक्का, मुट्ठी, चार अंगुल की नाप।

मुष्टिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) घूँसा, मुक्का, मुट्ठी, मूठी। यौ. **मुष्टिका-प्रहार**।

मुष्टियुद्ध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) घूँसेबाज़ी, मुक्काबाज़ी, घूँसों की लड़ाई।

मुष्टियोग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हठयोग की कुछ क्रियाएँ जो रोग-नाशक बलवर्धक और शरीर-रक्षक मानी जाती हैं, सरल उपाय।

मुसकराना, मुसकुराना–क्रि. अ. दे. (सं. *स्मय+कृ*) मंद या मृदु हास, थोड़ा हँसना, **मुसकाना** (दे.)।

मुसकराहट, कुसकुराहट–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मुसकराना+आहट प्रत्य.*) मंदहास, मुसकराने की क्रिया का भाव, स्मित।

मुसकान, मुसक्यान–संज्ञा, स्त्री. (हि. *मुसकाना*) मुसकराहट।

मुसकाना–क्रि. अ. (हि.) मुसकुराना, मंद मंद हँसना।

मुसटी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मूषिका*) चुहिया, **मुसटिया**।

मुसना–क्रि. अ. दे. (सं. *मूषण*) मूसा या चुराया जाना, ठगा या छला जाना।

मुसन्ना–संज्ञा, पु. (अ.) रसीद देने वाले के पास रहने वाली रसीद की प्रतिलिपि, नक़ल, किसी लेख की दूसरी प्रति।

मुसन्निफ़–संज्ञा, पु. (अ.) ग्रंथ-लेखक।

मुसफ्फी–वि. (फ़ा.) ख़ून साफ़ करने वाला, सूफ़ी मत संबंधी।

मुसम्मात–वि. स्त्री. (अ. *मुसम्मा का* स्त्री. *रूप*) नामवाली, नामधारिणी, नामी। संज्ञा, स्त्री. स्त्री, औरत।

मुसम्मी–वि. पु. (अ.) नामवाला।

मुसलधार–क्रि. वि. दे. (हि. *मूसलधार*) मूसलधार, मूसलाधार।

मुसलमान–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मुहम्मद साहिब के मत के लोग, महम्मदी। स्त्री. **मुसलमानिन-मुसलमानिनी**।

मुसलमानी–वि. (फ़ा.) मुसलमान संबंधी, मुसलमान का।

मुसल्लम–वि. (अ.) समूचा, सब का सब, पूर्ण, अखंड। संज्ञा, पु. मुसलमान, महम्मदी, ठीक।

मुसल्ला–संज्ञा, पु. (अ.) नमाज़ पढ़ने की दरी। संज्ञा, पु. मुसलमान, **मुसट्टा** (ग्रा.)।

मुसब्बिर–संज्ञा, पु. (अ.) चित्रकार।

मुसहर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मूस—चूहा+हर प्रत्य.*) एक जंगली जाति जो जड़ी-बूटी बेचती है।

मुसहल, मुसहिल–वि. (अ.) दस्तावर, रेचक।

मुसाफ़िर–संज्ञा, पु. (अ.) पथिक, यात्री।

मुसाफ़िर-ख़ाना–संज्ञा, पु. यौ. (अ. मुसाफ़िर+ख़ाना फ़ा.) *यात्रियों के ठहरने का स्थान, सराय, होटल (अं.) धर्मशाला।*

मुसाफ़िरत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मुसाफ़िर होने की दशा, प्रवास, परदेश, यात्री।

मुसाफ़िरी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मुसाफ़िर होने की दशा, प्रवास, यात्रा।

मुसाहब, मुसाहिब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) राजा या धनी का सहवासी, पार्श्ववर्ती, निकटस्थ, साथी।

मुसाहबी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *मुसाहब+ई प्रत्य॰*) मुसाहब का पद या कार्य।

मुसीबत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) आपत्ति, संकट, कष्ट, विपत्ति।

मुस्क्यान*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(हि॰ *मुसकराहट*) मुसकुराहट, मंद हँसी।

मुस्टंड, मुस्टंडा–वि॰ दे॰ (सं॰ *पुष्ट*) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा, गुंडा, बदमाश, **मुचंड, मुचंडा** (दे॰)।

मुस्तक़िल–वि॰ (अ॰) दृढ़, स्थिर, अटल, मज़बूत, क़ायम, पक्का।

मुस्तग़ीस–संज्ञा, पु॰ (अ॰) इस्तग़ासा या अभियोग लाने या मुक़दमा चलानेवाला।

मुस्तशना–वि॰ (अ॰) अपवाद-स्वरूप, अलग किया हुआ, **मुस्तखना** (दे॰)।

मुस्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नागरमोथा (औप॰)।

मुस्तैद–वि॰ दे॰ (अ॰ *मुस्तअद*) तत्पर, तैयार, कटिबद्ध, सन्नद्ध, तेज़, चालाक।

मुस्तैदी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *मुस्तअद+ई प्रत्य॰*) तत्परता, सन्नद्धता, फ़ुरती, तेज़ी।

मुस्तौफ़ी–संज्ञा, पु॰ (अ॰) आय-व्यय-निरीक्षक, हिसाब की जाँच करने वाला।

मुहकम–वि॰ (अ॰) दृढ़, मज़बूत, पक्का।

मुहकमा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) सीमा, सरिश्ता, विभाग।

मुहताज–वि॰ (अ॰) कंगाल, दरिद्र, ग़रीब, आकांक्षी, चाहने वाला।

मुहब्बत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) प्रेम, स्नेह, चाह, प्रीति, प्यार, मित्रता, लगन, इश्क, लौ।

मुहम्मद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमानी मत के चलाने वाले अरब के एक धर्माचार्य।

मुहम्मदी–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमान।

मुहर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *मोहर*) अशरफ़ी, **मोहर,** ठप्पा, छाप।

मुहरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मुँह+रा प्रत्य॰*) **मोहरा,** आगा, सामना, आगे या सामने का भाग। **मु॰ मुहरा लेना**–मुक़ाबिला या सामना करना। शतरंज की गोट, घोड़े के मुँह का एक साज, मुख, आकृति, निशाना, बिल का द्वार।

मुहरो, मोहरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मोहरा*) छोटा मोहरा, बंदूक का मुँह।

मुहर्रम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अरबी वर्ष का प्रथम मास, इमाम हुसेन के शहीद होने का महीना।

मुहर्रमी–वि॰ (अ॰ *मुहर्रम+ई प्रत्य॰*) मुहर्रम का, मुहर्रम-संवंधी, शोक-सूचक या व्यंजक, मनहूस।

मुहर्रिर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुंशी, लेखक।

मुहर्रिरी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मुहर्रिर का काम, लिखने का कार्य।

मुहल्ला–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुहाल, टोला।

मुहसिल–वि॰ दे॰ (अ॰ *मुहासिल*) उगाहने वाला, तहसील वसूल करने वाला।

मुहाँसा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मुँह पर के छोटे-छोटे जवानी-सूचक फोड़े, **मुहासा।**

मुहाफ़िज–वि॰ (अ॰) संरक्षक, रखवाला, हिफाज़त करने वाला।

मुहार–संज्ञा, पु॰ (दे॰) द्वार, दरवाज़ा, **मोहार** (दे॰)।

मुहाल–वि॰ (अ॰) असंभव, दुस्साध्य, दुष्कर, कठिन। संज्ञा, पु॰ (अ॰ *महाल*) महाल, मुहल्ला, टोला।

मुहाला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मुँह+आला प्रत्य॰*) पीतल की वह चूड़ी जो शोभार्थ हाथी के दाँतों के आगे पहनाई जाती है।

मुहावरा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बोलचाल, रोज़मर्रा, अभ्यास, ऐसा प्रयोग या वाक्य जो लक्षणा या व्यंजना से सिद्ध हो और एक ही भाषा में प्रयुक्त होकर प्रगट (वाच्यार्थ या अभियार्थ) अर्थ से भिन्न या विलक्षण अर्थ दे, जैसे–नौ दो ग्यारह हो गया=भाग गया।

मुहासिब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) गणितज्ञ, हिसाबी, जाँच करने या हिसाब लेने वाला, कोतवाल।

मुहासिबा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) लेखा, हिसाब, पूछ-ताँछ, जाँच-पड़ताल।

मुहासिरा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) चारों ओर से क़िले या शत्रु को घेरना, घेरा।

मुहासिल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) आमदनी, भाव, मुनाफ़ा, लाभ।

मुहिं, मोंहिं*–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *मुझे*) मुझे, मुझको, मेरे हेतु।

मुहिम–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) बड़ा या कठिन कार्य, युद्ध, संग्राम, लड़ाई, आक्रमण, चढ़ाई।

मुहुः–अव्य॰ (सं॰) बार-बार। यौ॰ **मुहुर्मुहुः**।

मुहूर्त्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रात-दिन का 30वाँ भाग, दो घड़ी का समय, साइत, अच्छे काम करने का पत्रे से विचार कर निकाला हुआ नियत समय (फ॰ ज्यो॰), **महूरत, मुहूरत** (दे॰)।

मूँग–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *मुग्द*) एक अनाज जिसकी दाल बनती है, **मुग्ददाली**।

मूँगफली–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) एक बेल जिसकी खेती होती है इसके फल खाए जाते हैं, चिनिया बादाम।

मूँगा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मूंग*) प्रवाल, विद्रुम, समुद्र के कृमियों की लाल ठठरी जिसे रत्न मानते हैं, एक वृक्ष।

मूँगिया–वि॰ दे॰ (हि॰ *मूँग+इया प्रत्य॰*) हरा रंग, मूंग के रंग का, मूँगे के से रंग का। संज्ञा, पु॰ एक प्रकार का हरा रंग।

मूँछ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्मश्रु*) पुरुषों के ऊपरी ओठों के बाल, **मुच्छ, माछ, मोछा** (दे॰)। **मु॰ मूँछ उखाड़ना**–घमंड मिटाना। **मूँछों पर ताव देना**–घमंड से मूँछ मरोड़ना। **मूँछें नीची होना**–घमंड टूटना, अनादर या अप्रतिष्ठा होना; **मूँछ का बाल होना**–अत्यधिक प्रिय होना।

मूँज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुंज*) बिना टहनियों के पतली-लंबी पत्तियों वाला एक तरह का तृण।

मूँजी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **मौंजी** (सं॰) मूँज का जनेऊ।

मूँड़†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुंड*) सिर, शीश। **मु॰ मूड़ मारना**–बहुत हैरान या परेशान होना, अति प्रयत्न या श्रम करना। **मूँड़ मुड़ाना**–संन्यासी होना।

मूँड़न–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुंडन*) मुंडन, चूड़ा-करण संस्कार।

मूँड़ना–क्रि॰ स॰ (सं॰ *मुंडन*) सिर के सब बाल बनाना, हजामत करना, हर लेना, धोखा देना, बाल उड़ा लेना, ठगना, छलना, चेला बनाना (साधू)।

मूँड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुंड*) सिर, बिना सींग का मादा पशु।

मूँदना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मुद्रण*) ढाँकना, आच्छादित करना, बंद करना, द्वार या मुँह आदि को किसी वस्तु से बंद कर रोकना। स॰ रूप–**मुँदाना,** प्रे॰ रूप–**मुँदवाना**।

मूक–वि॰ (सं॰) **गूँगा,** अवाक्, विवश, मौन, लाचार। संज्ञा, स्त्री॰ **मूकता**।

मूकता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गूँगापन, मौनता।

मूकना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मुक्त*) छोड़ना, तजना, त्यागना, दूर करना, बंधन से मुक्त करना।

मूखना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मूषण*) मूसना, चोरी करना।

मूचना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मोचना*) मोचना, छोड़ना।

मूज़ी–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कष्ट पहुँचाने वाला, खल, दुष्ट, कंजूस।

मूठ, मूठि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुष्टि*) **मूठी** (दे॰) मुट्ठी, मुष्टि, हत्या, किसी हथियार या औज़ार का दस्ता, मुठिया, बेंट, कब्जा, मुट्ठी में सामने वाली वस्तु, एक तरह का जूआ, टोना, जादू। **मु॰ मूँठ चलाना या मारना**–जादू करना। **मूठ लगना**–टोने या जादू का प्रभाव होना।

मूड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुंड*) मूंड़, सिर।

मूड़ना–क्रि॰ स॰ (हि॰) मूंड़ना, संज्ञा, पु॰ (दे॰) मूँड़न।

मूढ़–वि॰ (सं॰) मूर्ख, विमूढ़, स्तब्ध मंद बुद्धि, **ठगमारा**। संज्ञा, स्त्री॰ **मूढ़ता**।

मूढ़गर्भ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गर्भस्त्रावादि, गर्भ का बिगड़ना।

मूढ़ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मूर्खता, बेवकूफी।

मूढ़ात्मा–वि॰ यौ॰ (सं॰) मूर्ख, अज्ञान, जड़ात्मा।

मूत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मूत*) मूत्र, पेशाब, **मुत्ती** (दे॰)। **मु॰ मूत का दिया जलना**–बड़ा ऐश्वर्य या प्रताप होना।

मूतना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰) पेशाब करना। **मु॰ मूतना बंद करना**–बहुत हैरान करना।

मूत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पेशाब, मूत।

मूत्रकृच्छ्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कष्ट से रुक-रुक कर पेशाब होने का एक रोग (दे॰)।

मूत्राघात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मूत्र के रुक जाने वाला रोग, पेशाब का बंद होना।

मूत्राशय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नाभि तले, मूत्र संचित रहने का स्थान, **मसाना, फुकना** (प्रान्ती॰)।

मूर*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मूल*) मूल, जड़, मूलधन, मूलनक्षत्र, जड़ी, **मूरि** (दे.)।

मूरख*‡–वि. दे. (सं. *मूर्ख*) बेसमझ, अज्ञानी, मूर्ख। संज्ञा, स्त्री. **मूरखता**।

मूरखताई*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मूर्खता*) मूर्खता, बे समझी, अज्ञानता।

मूरचा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *मोरचा*) जंग, लोहे का मैल, **मोरचा**। संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *मोर+चाल*) वह खाई जहाँ युद्ध में सेना पड़ी रहती है। संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *मोरचः*) चींटी।

मूरछना*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मूर्च्छना*) एक ग्राम से दूसरे तक जाने में स्वरों का उतार-चढ़ाव (संगी.)। संज्ञा, स्त्री. (सं. *मूर्च्छा*) मूर्च्छित होना।

मूरछा*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मूर्च्छा*) मूर्च्छा, बेहोशी, मुरछा (दे.)।

मूरत, मूरति*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मूर्ति*) प्रतिमा, शरीर, आकृति।

मूरतिवंत*–वि. दे. (सं. *मूर्ति+वत् प्रत्य.*) मूरतवान, देहधारी, मूर्तिमान्।

मूर्ख–वि. (सं.) मूढ़, अज्ञ, बेसमझ।

मूर्खता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बेसमझी, मूढ़ता।

मूर्खत्व–संज्ञा, पू. (सं.) मूर्खता, मूढ़ता।

मूर्खिनी*–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मूर्ख*) मूढ़ास्त्री।

मूर्छन–संज्ञा, पु. (सं.) अचेत या मूर्छित करना। संज्ञा-हीन होना, एक मदनवाण, बेहोश करने का प्रयोग या मंत्र, पाराशोधन में तृतीय संस्कार (वैद्य.)।

मूर्छना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक ग्राम से दूसरे तक जाने में स्वरों का उतार-चढ़ाव (संगी.)। क्रि. अ. (दे.) अचेत होना या करना।

मूर्च्छा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बेहोशी, अचेत होना, संज्ञा-हीनता, निश्चेष्टता, **मुर्छा, मूरछा, मुरछा** (दे.)।

मूर्छित, मूर्च्छित–वि. (सं.) बेहोश, बेसुध, अचेत, निश्चेष्ट, मरा हुआ (पारा आदि धातु), **मूरछित, मुरछित** (दे.)।

मूर्त्त–वि. (सं.) आकार-युक्त, साकार, ठोस। (विलो. **अमूर्त**)।

मूर्त्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गात, शरीर, सूरति, देह, आकृति, चित्र, प्रतिमा, विग्रह, **मूरति** (दे.)।

मूर्त्तिकार–संज्ञा, पु. (सं.) मूर्त्ति या प्रतिमा बनाने वाला, चित्र बनाने वाला।

मूर्त्तिपूजक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) (प्रतिमा या मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना कर उसकी पूजा करने वाला।

मूर्त्तिपूजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) प्रतिमा-पूजा, प्रतिमा में देव भावना कर उसकी पूजा करना।

मूर्त्तिमान्–वि. (सं.) प्रत्यक्ष, शरीरधारी, सदेह जो रूप धरे हो, साकार, साक्षात् स्त्री. **मूर्त्तिमती**।

मूर्द्ध–संज्ञा, पु. (सं. *मूर्द्धन्*) सिर, मूँड़।

मूर्द्धकर्णी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छाया के निमित्त सिर पर रखी वस्तु।

मूर्द्धकपारी*–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सिर पर छाया के निमित्त रखा हुआ वस्त्रादि।

मूर्द्धज–संज्ञा, पु. (सं.) सिर के बाल, केश।

मूर्द्धन्य–वि. (सं.) मूर्द्धा से संबंध रखने वाला, ललाट में स्थित।

मूर्द्धन्यवर्ण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण, जैसे–ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धा–संज्ञा, पु. (सं. *मूर्द्धन्*) सिर, मुख के भीतर तालु के पश्चात् का भाग।

मूर्द्धाभिषेक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सिर पर अभिषेक या जल सिंचन। वि. **मूर्द्धाभिषिक्त**।

मूर्वा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मुरहार, मरोड़फली (औष.)।

मूल–संज्ञा, पु. (सं.) वृक्षों की जड़, कंद, खाने योग्य जड़, (जैसे-शंकरकंद), अदरख आरंभ का भाग, प्रारंभ, उत्पत्ति-हेतु, आदि कारण, यथार्थ धन, पूँजी, बुनियाद, नींव, ग्रंथकार का लेख या वास्तविक वाक्यादि जिस पर टीका टिप्पणी हो, 19वाँ नक्षत्र (ज्यो.)। वि. प्रधान, मुख्य।

मूलक–संज्ञा, पु. (सं.) मूली, मूल, जड़, मूलरूप। वि. पिता, जनक, उत्पन्न करने वाला।

मूलद्रव्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मुख्य या प्रधान पदार्थ या मूल सामग्री जिससे फिर और पदार्थ बने। **मूल पदार्थ, मूलतत्व**।

मूलधन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह धन जो ऋण या उधार दिया जाए या किसी व्यापार में लगाया जाए, पूँजी।

मूलपुरुष—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वंश चलाने वाला आदि पुरुष।

मूलस्थली—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पेड़ का थाला, थालबाल।

मूलस्थल-मूलस्थान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्राचीन पुरुषों या बाप-दादों का स्थान, मुख्य घर, प्राचीन मुलतान नगर।

मूलस्थिति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) आदमी या प्रारंभिक दशा।

मूलाधार—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनुष्य-शरीर के भीतर के छे चक्रों में से एक चक्र, (*हठ योग*)।

मूलिका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मूली, जड़ी।

मूली, मूरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मूलक*) चरपरी, मीठी और तीक्ष्ण जड़ का पौधा, मूरी नामी जड़, जो कच्ची-पक्की खाई जाती है। **मु॰ (किसी को) मूली-गाजर समझना**—बहुत ही तुच्छ समझना। मूलिका, जड़ी-बूटी।

मूल्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) क़ीमत, दाम, **मोल** (दे॰), बदले का धन, महत्व।

मूल्यवंत, मूल्यवान्—वि॰ (सं॰) क़ीमती, वहुमूल्य, अधिक या बड़े दामों का, वेश-क़ीमत।

मूष-मूषक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चूहा, मूस, **मूसा** (दे॰)।

मूषण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) हरण, चोरी करना, मूसना। वि॰ **मूषणीय, मूषित**।

मूषा—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मूषक*) चूहा, मूस।

मूषिक—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मूषक*) चूहा, **मूसा**। स्त्री॰ **मूषिका**।

मूस-मूसा-मूसक—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मूष, मूषक*) चूहा।

मूसदानी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *मूस+दान=फ़ा॰*) चूहे फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मूषण*) बुरा लेना, हर लेना।

मूसर, मूसल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुशल*) धानादि कूटने का काठ का हथियार, बलराम का एक अस्त्र। वि॰ (दे॰ *व्यंग*) मूर्ख।

मूसलधार-मूसलाधार—क्रि॰ वि॰ (हि॰) मूसल जैसी मोटी धार से (वर्षा), **मुसराधार** (दे॰)।

मूसला—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मूसल*) शाखा-रहित सीधी और मोटी जड़, **मुसरा** (दे॰)। (विलो॰ **झखरा**)।

मूसली—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुशली*) एक पौधा जिसकी जड़ औषधि के काम आती है।

मूसा—संज्ञा, पु॰ (*इबरानी*) ख़ुदा का नूर देखने वाले, यहूदियों के धर्म-गुरु या पैग़म्बर, चूहा, मूस।

मूसाकानी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मूषाकर्णी*) एक लता जो औषधि के काम आती है।

मृग—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पशु, जंगली पशु, हिरन, हाथियों की एक जाति, अगहन या मार्गशीर्ष मास, मकर राशि, मृगशिरा नक्षत्र (ज्यो॰), कस्तूरी की नाभि, चार प्रकार के पुरुषों में से एक (काम॰) **मिरिग, मिरगा** (दे॰)। स्त्री॰ **मृगी**।

मृगचर्म—संज्ञा, पु॰ यौ (सं॰) हिरन का चमड़ा, अजिन, मृग-छाला।

मृगछाला—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (स॰ *मृगछाला*) मृगचर्म (इसे पवित्र मानते हैं)।

मृगजल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) मृगतृष्णा की लहरें।

मृगतृषा-मृगतृष्णा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मृगजल, मृगमरीचिका, तेज़ धूप के कारण प्रायः ऊसर मैदानों में जल की लहरों की प्रतीति या भ्रांति; ख़राब (फ़ा॰) (अं॰) मिराज)

मृगदाव—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मृग+दाव—वन*) काशी के समीप सारनाथ का पुराना नाम।

मृगधर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रमा।

मृगन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) खोज, तलाश।

मृगनयनी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मृगनैनी, मृगलोचनी।

मृगनाथ—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सिंह, बाघ।

मृगनाभि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कस्तूरी।

मृगनैनी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मृगनयनी*) मृगनयनी, मृगदृशी।

मृगपति—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिंह, **मृगराज**।

मृगभद्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक जाति का हाथी।

मृगमद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कस्तूरी, **मृगम्मद** (दे॰)।

मृगमरीचिका—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मृगतृष्णा।

मृगमित्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **मृगसखा,** चंद्रमा, **मृगमीत** (दे॰)।

मृगमेद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कस्तूरी।

मृगया—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आखेट, शिकार।

मृगराज—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सिंह।

मृगरोचन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कस्तूरी।

मृगलांछन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा।

मृगलोचना, मृगलोचनी—वि॰ स्त्री॰ (सं॰) **मृगनयनी,** हरिण के से नेत्रों वाली स्त्री।

मृगवारि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मृगतृष्णा का जल, **मृगनीर**।

मृगशिरा, मृगशीर्ष–संज्ञा, पु. (सं.) 27 नक्षत्रों में से 5वाँ नक्षत्र, (ज्यो.)।

मृगांक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा, एक रस (वैद्य.)।

मृगाक्षी–वि. स्त्री. यौ. (सं.) हरिण के से नेत्रों वाली।

मृगाशन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सिंह, बाघ।

मृगिन, मृगिनी*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मृगी*) हरिणी।

मृगी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हरिणी, हिरनी, कश्यप ऋषि की 10 कन्याओं में से एक जिससे मृग उत्पन्न हुए (पुरा.), कस्तूरी, प्रिय नामक वर्ण-वृत्त (पिं.), अपस्मार रोग, **मिरगी** (दे.)।

मृगेंद्र, मृगेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सिंह।

मृग्य–वि. (सं.) अन्वेषणीय, अनुसंधान करने योग्य, दर्शन।

मृजा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मार्जन, शुद्ध करण।

मृडा, मृडानी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दुर्गाजी।

मृणाल, मृणाली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कमल-नाल, कमल का डंठल, भसीढ़ा।

मृणालिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कमलडंडी, कमल नाल।

मृणालिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कमलिनी, वह स्थान जहाँ कमल हों।

मृत–वि. (सं.) मुर्दा, मरा हुआ।

मृतक–संज्ञा, पु. (सं.) शव, मरा हुआ जीव, मुर्दा, निर्जीव।

मृतककर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अंत्येष्टि क्रिया, प्रेत-कर्म।

मृतकधूम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राख, भरुम, शवदाह का धूम।

मृतजीवनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक विद्या जिसके द्वारा मुर्दा जला दिया जाता है।

मृतसंजीवनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक बूटी जिसके खाने से मुर्दा जीवित हो जाता है, एक औषधि जो अनेक रोगों में चलती है, संजीवनी (वै.)।

मृताशौच–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह छूत जो किसी संबंधी के मरने से लगती है।

मृत्तिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मिट्टी, माटी, धूलि।

मृत्युंजय–संज्ञा, पु. (सं.) मृत्यु को जीतने वाला, शिव जी।

मृत्यु–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मरण, मौत, जीवात्मा का देह-त्याग, यम।

मृत्युलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यमलोक, मृत्युलोक, संसार।

मृदंग–संज्ञा, पु. (सं.) ढोलक-जैसा पखावज बाजा।

मृदब–संज्ञा, पु. (सं.) गुणों के साथ दोषों की विरुद्धता या विषमता दिखाना (नाटय.)।

मृदु–वि. (सं.) दयालु, नरम, कोमल, मुलायम, सुकुमार, नाज़ुक, मंद, सुनने में जो कर्कश या अप्रिय न हो। स्त्री. **मृद्वी**।

मृदुता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कोमलता, नम्रता, सुकुमारता, मंदता, मिठाई।

मृदुल–वि. (सं.) सुकुमार, नरम, कोमल, कृपालु। संज्ञा, स्त्री. **मृदुलता**।

मृनाल*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मृणाल*) कमलनाल।

मृन्मय–वि. (सं.) मिट्टी से बना हुआ।

मृषा–अव्य. (सं.) व्यर्थ, झूठ। वि. असत्य, झूठ, व्यर्थ।

मृषात्व–संज्ञा, पु. (सं.) मिव्यास्त।

मृषाभाषी–वि. यौ. (सं. *मिषा+भाषिन्*) झूठा, लवार, असत्यवादी।

मृष्ट–वि. (सं.) शोधित, शुद्ध।

मृष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शोधन।

में–अव्य. दे. (सं. *मध्य*) अवस्थान या आधार-सूचक शब्द, अधिकरण का चिह्न जो भीतर या चारों ओर का अर्थ देता है (व्या.), **मैं** (व्र.)।

मेंगनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मींगी*) भेड़, बकरियों आदि पशुओं की छोटी गोली जैसी विष्टा, लेंड़ी।

मेंड़–संज्ञा, स्त्री. (दे.) बाँध, आड़, घेरा।

मेंड़की–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मेढकी। पु. मेंडक।

मेकल–संज्ञा, पु. (सं.) विंध्याचल का अमरकंटक वाला खंड।

मेल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मेष*) भेंड़ी, प्रथम राशि। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *मेख*) खूँटी, खूँटा, कीला, कील, काँटा।

मेखल–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मेखला*) मेखला।

मेखला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) किंकणी, करधनी, कटि-सूत्र, तगड़ी, किसी वस्तु के मध्य भाग के चारों ओर से घेरने वाली वस्तु, डंडे आदि के सिरे पर लोहे का गोलबंद, पहाड़ का मध्य खण्ड, गले में डालने का वस्त्र (साधु) अलफी, कफनी।

मेखली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मेखला*) एक पहनावा जिससे

पेट और पीठ ढकी रहती है और हाथ खुले रहते हैं, कटिबंध, करधनी।

मेघ–संज्ञा, पु. (सं.) आकाश में वृष्टिकारक घनीभूत वाष्प, बादल, छः रागों में से एक राग (संगी.)।

मेघाडंबर–संज्ञा, पु. (सं.) दल बादल, बादलों की गर्जन, बड़ा शामियाना।

मेघनाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मेघ-गर्जन, वरुण, रावण का ज्येष्ठ पुत्र इंद्रजीत, मोर, मयूर।

मेघपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **मेघनाथ, मेघाधिप, मेघेश**, इंद्र।

मेघपुष्प–संज्ञा, पु. (सं.) इंद्र का घोड़ा, श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

मेघमाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बादलों की घटा, कादंविनी, **मेघमाल,** मेघावलि।

मेघराज–संज्ञा, पु. यो. (सं.) इंद्र।

मेघवरण-मेघवर्ण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मेघ के से श्याम रंग का, घनश्याम, श्रीकृष्ण जी।

मेघवर्त्त–संज्ञा, पु. (सं.) प्रलय के बादलों में से एक, **प्रलयाब्द**।

मेघविस्फूर्जिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वणिक छंद (पिं.)।

मेघागम–संज्ञा, पु. (सं.) वर्षा-ऋतु, वर्षा-काल, बरसात, जलदागम।

मेघाच्छन्न-मेघाच्छादित*†–वि. यौ. (सं.) मेघों से ढका या छाया हुआ।

मेचक–संज्ञा, पु. (सं.) श्याम या काल वर्ण।

मेचकता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कालापन।

मेचकताई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मेचकता*) कालापन, मेचकता, श्यामता।

मेज़–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) पढ़ने-लिखने की लंबी, चौढ़ी और ऊँची चौकी, टेबुल (अं.)।

मेज़पोश–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) मेज़ पर बिछाने का वस्त्र।

मेज़बान–संज्ञा, पु. (फ़ा.) आतिथ्यकार, मेहमानदार। संज्ञा, स्त्री. **मेज़बानी**।

मेजा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडूक*) मंडूक, मेढक।

मेट–संज्ञा, पु. (अ.) मज़दूरों का सरदार या अफ़सर, टँडैल, जमादार, **मेठ** (दे.)।

मेटक*‡–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मेटना*) विनाशक, मिटाने वाला।

मेटनहार-मेटनहारा*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *मेटना+हारा प्रत्य.*) मिटाने या मिटने वाला, दूर करने वाला, **मेटैया** (ग्रा.)।

मेटना†–क्रि. स. दे. (हि. *मिटाना*) मिटाना, बिगाड़ना।

मेटिया†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मटकी*) मटकी, माट।

मेड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मित्ति*) छोटा बाँध, घेरा, दो खेतों की सीमा या हद, मर्यादा।

मेड़रा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मंडल*) गोला, मण्डल। स्त्री. *अल्पा.* **मेड़री**।

मेड़िया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मंडप*) मढ़ी।

मेढक–संज्ञा, पु. (दे.) मेंडक, मंडूक (सं.) दादुर। स्त्री. **मेढकी**।

मेढ़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मेढ़=भैंस के तुल्य*) भेड़-बकरे की जाति का घने बालों वाला एक सींगदार छोटा चौपाया, भेड़ा, मेष।

मेढ़ासिंगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मेढशृंगी*) एक झाड़ीदार लता जिसकी जड़ ओषधि के काम आती है।

मेथी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक औषधि (मसाला); एक पत्तेदार सब्ज़ी।

मेथौरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *मेथी+वरी*) मेथी के साग की बरी, **मिथौरी** (दे.)।

मेद–संज्ञा, पु. (सं. *मेदस्, मेद*) वसा, चरबी, चर्बी, या मोटेपन की अधिकता, कस्तूरी।

मेदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक औषधि। संज्ञा, पु. (अ.) उदर, पाकाशय।

मेदिनी–संज्ञा, स्त्री. (अ.) बसुधा, धरती, पृथ्वी, अवनि, भूमि, वसुमती।

मेध–संज्ञा, पु. (सं.) यज्ञ। यौ. **अश्वमेध**।

मेधा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्मरण रखने की शक्ति, धारणाशक्ति, बुद्धि, ज्ञान, सोलह मातृकाओं में से एक, छप्पय छंद का एका भेद (पिं.)।

मेधातिथि–संज्ञा, पु. (सं.) मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार।

मेधावती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बुद्धिमती, एक लता।

मेधावी–वि. (सं. *मेधाविन्*) तीव्र धारणा शक्ति वाला, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान, विद्वान, पंडित। स्त्री. **मेधाविनी**।

मेनका–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) स्वर्ग की एक अप्सरा, पार्वती की माता। **मेना**।

मेना–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *मैना*) पार्वती की माता। क्रि. से.

दे॰ (हि॰ *मायना*) पकवान में मोयन डालना।

मेम–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अं॰ *मैडम*) यूरोप या अमेरिका आदि की स्त्री, बीबी, ताश का एक पत्ता, रानी।

मेमना–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰ में मैं*) भेड़ का बच्चा, घोड़े की एक जाति।

मेमार–संज्ञा, पु॰ (अ॰) राज, **थवई,** (प्रान्ती॰) इमारत बनाने वाला।

मेय–वि॰ (सं॰) जो नापा जा सके, थोड़ा।

मेरा–सर्व॰ (हि॰ *मैं+रा प्रत्य॰*) मैं का संबंधकारक में रूप, मदीय, मम। स्त्री॰ **मेरी**। संज्ञा, पु॰ दे॰ मेला, जमाव भीड़।

मेरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मेरा*) मदीया।

मेरु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हेमाद्रि, सुमेरु, जो सोने का है (पुरा॰) जयमाला के बीच की गुरिया। एक प्रकार की गणना जिससे ज्ञात हो कि कितने कितने लघु-गुरु के कितने छंद हो सकते हैं (पिं॰)।

मेरुदंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरीर की रीढ़, पृथ्वी के दोनों ध्रुवों की मध्यगत एक सीधी कल्पित रेखा (भू॰)।

मेरे–सर्व॰ (हि॰ *मेरा*) मेरा का बहुवचन, (विभक्ति-युक्त संबंधवान के साथ आता है।)

मेल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मैत्री, मिलाप, समागम, संयोग, एकता, मित्रता, संगति, दोस्ती, उपयुक्तता। यौ॰ **मेल-जोल, मेल-मिलाप। मु॰ मेल खाना, बैठना या मिलना**–साथ निभना, संगति का उपयुक्त होना, दो पदार्थों का जोड़ ठीक बैठना। जोड़, टक्कर, प्रकार, समता, चाल, वक्र, मिलावट, मिश्रण।

मेलना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰) फेंकना, डालना, रखना, मिलाना, पहनाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) एकत्रित या इकट्ठा होना।

मेला–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मेलक*) देव-दर्शन, उत्सवादि के लिए मनुष्यों का जमाव, भीड़, जमघट। सा भू॰ क्रि॰ स॰ (दे॰) मेलना, डाला।

मेलाठेला–वा॰ (हि॰) भीड़भाड़, जमाव, जमघट।

मेलाना†–क्रि॰ सं॰ दे॰ (हि॰ *मिलाना*) मिलाना, एकी भाव करना, फेंकाना।

मेली–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मेल+ई प्रत्य॰*) साथी, संगी, मित्र, दोस्त, मुलाकाती। यौ॰ **हेली-मेली, मेली-मुलाकाती**। वि॰ (दे॰) शीघ्र हिल-मिल जाने वाला। सा॰ भू॰ स्त्री॰ क्रि॰ स॰–डाली।

मेव–संज्ञा, पु॰ (दे॰) राजपूताने की एक लुटेरी जाति, मेवाती, भेषा।

मेवा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) बादाम, छोहारे, किसमिस आदि सूखे फल, उत्तम खाद्य वस्तु, यौ॰ **मेवा-मिष्टान्न**।

मेवाटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *मेवा+वाटी* हि॰) मेवा भरा एक पकवान।

मेवाड़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) राजपूताने का एक प्रदेश जिसकी राजधानी चित्तौड़ थी।

मेवाती–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मेवात+ई प्रत्य॰*) मेवात-निवासी, मेवात में उत्पन्न, मेवात-संबंधी। (अलवर के निकट एक इलाका)।

मेवाफ़रोश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) मेवा बेचने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **मेवाफ़रोशी**।

मेष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भेंड़, प्रथम राशि। ***मु॰ मीन-मेष करना**–आगा-पीछा करना, किंतु परंतु करना। **मीनमेष निकालना**–आलोचना कर दोष निकालना।

मेषवृषण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इंद्र।

मेषसंक्रांति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सूर्य के मेष राशि में आने का योग या वर्षकाल, (ज्यो॰)।

मेहँदी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मेन्धी*) एक झाड़ी जिसकी पत्ती से स्त्रियाँ हाथ-पाँव रँगती हैं। पु॰ **मेहदा**–बड़ी पत्तियों की मेहँदी।

मेह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मूत्र, प्रसव, प्रमेह रोग। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मेघ*) मेघ, बादल, वर्षा, मेह। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) वर्षा, बारिश, झड़ी, वृष्टि, बादल।

मेहतर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) भंगी, हलाल खोर। स्त्री॰ **मेहतरानी**।

मेहनत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) परिश्रम, प्रयास। यौ॰ **मेहनत-मशक्कत, मेहनत मजूरी**।

मेहनताना–संज्ञा, पु॰ (*अ॰*+फ़ा॰) पारिश्रमिक, किसी परिश्रम का फल या मज़दूरी।

मेहनती–वि॰ (अ॰ *मेहनत+ई प्रत्य॰*) परिश्रमी, उद्यमी।

मेहमान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पाहुना, पाहुन, अतिथि।

मेहमानदारी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) आतिथ्य, अतिथि-सत्कार, पहुनाई, पहुनई।

मेहमानी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) पहुनाई, आतिथ्य, अतिथि-सत्कार। **मु॰ मेहमानी करना** (व्यंग्य)–दुर्दशा करना,

खूब गत बनाना, मारना, पीटना, सज़ा देना।

मेहर, मेहरी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) दया, कृपा। संज्ञा, स्त्री॰ (ग्रा॰) मेहरी, स्त्री, पत्नी, जोरू, **मेहरिया, मेहरारि, मेहरारू** (ग्रा॰)–कहारिन।

मेहरबान–वि॰ (फ़ा॰) दयालु, कृपालु।

मेहरबानी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) कृपा, दया।

मेहरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) स्त्री सी चेष्टा वाला, जनखा, नपुंसक, खत्रियों की एक जाति, मेहरोत्रा।

मेहरार, मेहरारू–संज्ञा, स्त्री॰ (ग्रा॰) स्त्री, पत्नी।

मेहराब–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) द्वार का अर्द्ध गोलाकार ऊपरी भाग वि॰ **मेहराबदार**।

मेहरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मेहरा*) स्त्री, जोरू, पत्नी, औरत।

मैं–*सर्व.* दे॰ (सं॰ *अहं*) उत्तम पुरुष सर्वनाम के कर्त्ता कारक में एक वचन का रूप (व्या॰), खुद, स्वयं, आप, (*अव्य.*) (व्र॰)।

मैं–*अव्य.* दे॰ (हि॰ (*मय*) मय।

मैका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मायका*) माँ, घर या गाँव (स्त्रियों का), **मइका, माइक, मायका** (ग्रा॰)।

मैंगल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मदगल*) मस्त हाथी। वि॰ मस्त, मतवाला।

मैत्रावरुणि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।

मैत्री–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मित्रता, दोस्ती।

मैत्रेय–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक ऋषि (भाग॰), सूर्य, आगे होने वाले एक बुद्ध (बौद्ध॰)।

मैत्रेयी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) याज्ञवल्क्य की स्त्री, अहल्या।

मैथिल–वि॰ (सं॰) मिथिला देश का, मिथिला संबंधी। संज्ञा, पु॰ मिथिला-निवासी।

मैथिली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीता, जानकी। ह॰ ना॰। संज्ञा, स्त्री॰ मिथिला प्रांत की भाषा। वि॰ मिथिला-संबंधी।

मैथुन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संभोग, रति-क्रीड़ा, पुरुष का स्त्री के साथ समागम, भोग, स्त्री-प्रसंग, विषय, संभोग।

मैदा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) बहुत महीन आटा।

मैदान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) लम्बा-चौड़ा सपाट या समतल भूमि, क्रीड़ास्थल। **मु॰ मैदान में आना (उतरना)**–सामने आना। **मैदान साफ़ होना (करना)**–कोई बाधा न होना (बाधा हटाना), शत्रुओं को रण में मार डालना या भगाना। **मैदान मारना**–बाजी जीतना, रण या युद्ध क्षेत्र। **मु॰ मैदान करना**–संग्राम करना, लड़ना। **मैदान मारना (पाना)**–युद्ध में विजय प्राप्त करना। **मैदान लेना**–रण क्षेत्र में शत्रु का सामना करना, जीतना।

मैन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मदन*) कामदेव, मदन, मोम, **मयन** (दे॰)।

मैनका–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मेनकी, अप्सरा।

मैनफल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मदनफल*) एक वृक्ष और उसका फल (औषधि)।

मैनसिल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ मनः शिलाः)* पत्थर जैसी एक औषधि।

मैना–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मदना*) श्याम रंग का एक पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की बोली बोलता है, सारिका। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मैना, मेनका*) पार्वती की माता। मेनका अप्सरा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) राजपूताने की मीना नामक एक जाति।

मैनाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पहाड़ जो हिमालय का पुत्र कहाता है। (पुरा॰) हिमालय की एक चोटी।

मैनावली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

मैमंत*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *मदमत्त*) मदमत्त, मतवाला, मदोन्मत्त, अभिमानी।

मैया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातृका*) माँ, माता, महतारी, **मइय्या** (ग्रा॰)।

मैर†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मृदर, प्रा॰ मिअर क्षणिक*) साँप के विष की लहर।

मैरा–संज्ञा, पु॰ (ग्रा॰ *प्रान्ती॰*) खेत में मचान।

मैल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मलिन*) मल-गंदगी, गर्द गुबार। **मु॰ हाथ-पैर का मैल**–तुच्छ वस्तु, विकार, दोष। **मु॰–किसी के प्रति मैल रखना (मन में)** शत्रुता या द्वेष रखना।

मैलखोरा–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मैल+खोर* फ़ा॰) जिस पर मैल शीघ्र न जमे तथा जान न पड़े।

मैला–वि॰ दे॰ (सं॰ *मनि, प्रा॰ मइल*) गंदा, मलिन, अस्वच्छ, गंदा, दूषित, सविकार, दुर्गंध-युक्त। संज्ञा, पु॰ गलीज़, कूड़ा-कर्कट, मल, विष्ठा। **मु॰ मन मैला करना**–उदासीन होना।

मैला-कुचैला–वि॰ यौ॰ (हि॰ *मैला+कुचैला=गंदा वस्त्र* सं॰) मैले कपड़े वाला, बहुत ही मैला या गंदा।

मैलापन–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मैला+पन प्रत्य॰*) मलिनता, गंदापन।

मैहर-मइहर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) घी में मिला मट्ठा।

मों*†–*अव्य॰* दे॰ (हि॰ *मैं*) मैं। *सर्व॰* दे॰ (सं॰ *मम*) मेरा।

मोंगरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मोगरा*) मोगरा, फूल, **मुँगरा** (*प्रान्ती॰*)।

मोंगरी-मुँगरी–संज्ञा, स्त्री॰ (*प्रान्ती॰*) पूजने को लकड़ी का एक बेलन।

मोंछ, मोंछा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ **मूँछ**) **मूँछ, मुच्छ, म्याछा** (ग्रा॰)।

मोंढ़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुद्धा*) बाँस आदि का बना, एक ऊँचा गोल आसन, कंधा।

मो*–सर्व॰ अ॰ ब्र॰ (सं॰ *मम*) मेरा, मैं का वह रूप जो कर्त्ता को छोड़ अन्य कारकों की विभक्तियों के लगने से होता है। *अव्य॰ (ब्र॰) अधिकरण-विभक्ति, में।

मोकना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मुक्त*) छोड़ना, त्यागना, फेंकना, परित्याग करना, तजना।

मोकल*†–वि॰ दे॰ (सं *मुक्त*) बंधन-रहित, छुटा हुआ, स्वच्छंद, मुक्त।

मोकला†–वि॰ दे॰ (हि॰ *मोकल*) अधिक चौड़ा, बहुत स्वच्छंद।

मोक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जीवात्मा का जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होना (शास्त्र), मुक्ति, छुटकारा, मृत्यु, **मोष** (दे॰)।

मोक्षद-मोक्षप्रद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **मोक्षदाता,** मुक्ति देने वाला, **मोक्षदायी**।

मोखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुख*) झरोखा। छोटी खिड़की, ताखा, आला।

मोगरा-मोंगरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुद्गर*) एक प्रकार का बड़ा बेला (पुष्प)।

मोगल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुग़ल*) मुग़ल। स्त्री॰ **मोगलानी**।

मोघ–वि॰ (सं॰) निष्फल, चूकने वाला। (विलो॰ **अमोघ**)।

मोच–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुच*) शरीर की किसी नस का अपने स्थान से टल जाना। **मु॰ मोच खाना (पैर)** आदि की नस का टल जाना।

मोचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुक्त करना, छोड़ना, हटाना, रहित करना, ले लेना, दूर करना।

मोचना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मोचन*) फेंकना, छोड़ना, बहाना, छुड़ाना, गिराना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मोचन*) बाल उखाड़ने की चिमटी।

मोचरस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेमल का गोंद।

मोची–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मोचन*) जूता बनाने वाली एक जाति। वि॰ (सं॰ *मोचिन्*) छुड़ाने या दूर करने वाला। स्त्री॰ **मोचिन**।

मोज़ा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पायताबा, जुराँव, पिंडली के नीचे का भाग, वहीं पहिनने का सूत से बुना कपड़ा।

मोट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मोटरी*) मोटरी, गटरी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) चरस, पुर, खेत आदि सींचने को कुएँ से पानी भरने का चमड़े का थैला। *†वि॰ दि॰ (हि॰ *मोटा*) स्थूल, मोटा, कम मूल्य का, साधारण, **मोटवार** (ग्रा॰)।

मोटनक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) त, ज, जगण और लघु-गुरु का एक वर्णिक वृत्त या 16 मात्राओं का एक छंद (पिं॰)।

मोटरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*तैलंग॰ मूटा=गठरी*) गठरी, **मुटरी** (ग्रा॰)।

मोटा–वि॰ दे॰ (सं॰ *मुष्ट*) चरबी आदि से फूली देहवाला, स्थूलकाय, दलदार, पीन, पीवर, गाढ़ा। (विलो॰ **दुबला, पतला**) साधारण से अधिक घेरे या मान वाला। स्त्री॰ **मोटी**। **मु॰ मोटा आसामी**–अमीर, धनी। **मोटाअन्न**–कुदन्ना, जैसे–चना, जुआर, बाजरा आदि। **मोटा भाग्य**–सौभाग्य, खुशकिस्मती। दरदरा (विलो॰ **महीन**) खराव, घटिया। यो॰ **मोटी बुद्धि**–मंद बुद्धि। **मोटा खाना**–साधारण या रूखा-सूखा भोजन। **मु॰ मोटी बात**–मामूली या साधारण बात। **मोटे तौर पर, मोटे हिसाब (विचार) से**–स्थूल रूप या दृष्टि से, मोटी दृष्टि से, अटकल या अंदाज़ से भारी या कठिन। **मु॰ मोटा दिखाई देना**–कम दिखाई देना। घमंडी, अभिमानी। यौ॰ **छोटा-मोटा**–साधारण।

मोटाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मोटा+ई प्रत्य॰*) स्थूलता, मोटापन, पीवरता, पीनता, शरारत, दुष्टता, पाजीपन, बदमाशी, **मुटाई** (दे॰)। **मु॰ मोटाई चढ़ना**–घमंडी या बदमाश होना।

मोटाना-मुटाना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *मोटा+आना प्रत्य॰*) स्थूलकाय या मोटा हो जाना, अभिमानी या घमंडी होना, धनी होना। क्रि॰ स॰–मोटा या स्थूल करना।

मोटापा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मोटा+आपा प्रत्य॰*) मोटाई, स्थूलता, पीवरता, पाजीपन, शरारत, दुष्टता।

मोट्टायित–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक हाव जिसमें नायिका अपने प्रेम को कटु भाषणादि से छिपाने की चेष्टा करती हुई भी छिपा नहीं सकती (काव्य॰)।

मोठ, मोट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मुकुट*) मूंग जैसा एक मोटा अन्न, मोथी, वनमूंग। यौ॰ **दालमोठ**।

मोठस–वि॰ (दे॰) चुप, मौन, मूक।

मोड़–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मुड़ना*) मार्ग में घूम जाने का स्थान, घुमाव, मुड़ने का भाव।

मोड़ना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *मुड़ना*) घुमाना, फेरना, लौटाना, तह करना, फैली वस्तु को समेट कर परत करना, मुरझाना (चेचक)। **मु॰ शीतला का मुँह मोड़ना**–चेचक के दानों का कुम्हलाना। **मुँह मोड़ना**–विमुख होना, अप्रसन्न होना। अस्त्रादि की धार को कुंठित या गोठिल करना।

मोतबर–वि॰ (अ॰) विश्वासपात्र, विश्वसनीय, **मोतबर** (द॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **मोतबरी**।

मोतियदास–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मौक्तिकदाम*) चार जगण का एक वर्णिक वृत्त (पिं॰)।

मोतिया–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मोती+इया प्रत्य॰*) एक प्रकार का बेला, एक तरह का सलमा, गुलाबी और पीला मिला, या हलका गुलाबी रंग, छोटा गोल दाना।

मोतियाबिंद–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मौक्तिकबिंदु*) एक नेत्र रोग जिसमें मैल का एक छोटा सा बिंदु सा आँख के तिल को ढक लेता है, **माड़ा, फूली** (प्रान्ती॰)।

मोती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मौक्तिक, प्रा॰ मोत्तिअ*) समुद्र की सीप से निकलने वाला एक मूल्यवान रत्न। **मु॰ मोती की सी आब (पानी) उतारना**–अप्रतिष्ठा या तिरस्कार होना। **मोती फूट कर भरना**–प्रकाशित या प्रकाशमान होना। **मोती गरजना**–मोती चटकना या कड़क जाना। **मोती पिरोना**–माला गूँधना, मधुरता के साथ बोलना या लिखना। **मोती रोलना**–विना परिश्रम के सरलता से बहुत सा धन प्राप्त कर लेना। यौ॰ **(मानस के) आँख के मोती**–आँसू। **मोतियों से मुँह भरना**–बहुत सा धन देना। संज्ञा, स्त्री॰ मोती पड़े हुए कान के बाले।

मोतीचूर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *मोती+चूर*) छोटी बुँदिया का लड्डू।

मोतीझरा-मोतीझिरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) छोटी शीतला का रोग, अंदरतर जिसमें छाती पर मोती जैसे जल-भरे छोटे दाने निकलते हैं।

मोतीझला-मोतीझिला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) छोटी शीतल्य का रोग, मंथरज्वर।

मोतीबेल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मोतिया+बेल*) मोतिया बेला (पुष्प)।

मोतीभात–संज्ञा, पु॰ (हि॰) एक तरह का भात।

मोतीसिरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मौक्तिक-श्री*) मोतियों की माला या कंठी।

मोथरा–वि॰ (दे॰) कुंठित, गोठिल, घोड़े का एक रोग, हड्डी का रोग।

मोथा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुस्तक*) नागरमोथा, एक पौधे की जड़।

मोद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हर्ष, प्रसन्नता, आनंद, एक वर्णिक वृत्त (पिं॰) **सुगंधि,** महक। वि॰ **मोदी**।

मोदक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) औषधादि का खड्डू मिठाई, चार नगण वाला एक वार्णिक वृत्त (पि॰)। संज्ञा, पु॰ (सं॰) हर्ष। यौ॰ **मन-मोदक** (मन के लड्डू) झूठे सुख की कल्पना। वि॰ (सं॰) प्रसन्न करने वाला।

मोदकी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक तरह की गदा।

मोदना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *मोदक*) प्रसन्न या खुश होना, सुगंधि फैलाना। क्रि॰ स॰ (दे॰) हर्षित, प्रसन्न करना।

मोदी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मोदक*) परचूनिया, आटा-दाल आदि बेचने वाला बनिया।

मोदीख़ाना–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *मोदी+ख़ाना* फ़ा॰) अन्नादि का घर, भंडार, जहाँ मोदी की दुकान हो।

मोधू†–वि॰ दे॰ (सं॰ *मुख*) मूर्ख, मोंनू, बेसमझ, बुद्धू।

मोन–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पिटारा, डब्बा, झाबा। स्त्री॰ **मोनिया**।

मोना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मोयना*) भिगोना, **मोवना**। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मोण*) झावा, पिटारा, डब्बा; विना दाढ़ीमूँछ का सरदार (सिक्ख)।

मोम–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) शहद की मक्खियों के छत्ते का चिकना और नरम मसाला। वि॰ (दे॰) मृदु, दयालु।

मोमजामा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰ *मोम+जामा*) *मोम-लगा कपड़ा तिरपाल।*

मोमबत्ती–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ *(फ़ा॰ मोम+बत्ती* हि॰) मोम या वैसे ही किसी अन्य वस्तु की बत्ती जो प्रकाश के हेतु जलाई जाती है।

मोमियाई–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) नकली शिलाजीत।

मोमी–वि॰ (फ़ा॰) मोम का बना, मोम वाला।

मोयन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मैन=मोम*) माड़ते समय आटे में

घी मिलाना जिसमें उससे बनी वस्तु मुलायम हो जाए, **मोवना**।

मोरंग–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नैपाल का पूर्वीय भाग।

मोर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मयूर*) मयूर नामक एक सुंदर सतरंगा बड़ा पक्षी। स्त्री॰ **मोरनी**। *सर्थ दे॰ (हि॰ *मेरा*) मेरा।

मोरचंदा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मयूर चंद्रिका*) मोर-चंद्रिका, मोर-पंख की चंद्राकार बूटी।

मोरचंद्रिका--संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मयूर चंद्रिका*) मोर-पंख की चंद्राकार बूटी। **मोर-चंदक** (दे॰)।

मोरचा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) लोहे का जंग, नमी और वायु कृत रासायनिक विकार से उत्पन्न लोहे पर पड़ी पीले या लाल रंग की बुकनी की तह, दर्पण का मैल। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *मोर-चाल*) परिखा, क़िले के चारों ओर की खाई, वह खाई जहाँ युद्ध के समय सेना रहती तथा नगर और गढ़ की रक्षा करती है, **मोर्चा** (दे॰)। **मु॰ मोरचा-बंदी करना**–ऊँची खाई में या गढ़ के चारों ओर सेना को लड़ने के लिए रखना। **मोरचा मारना या जीतना**–शत्रु के मोरचे पर अधिकार जमा लेना। **मोरचा बाँधना (लगाना, बनाना)**–मोरचाबंदी करना। **मोरचा लेना**–लड़ना, युद्ध करना, सामना करना।

मोरछल–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मोर+छड़*) देवताओं या राजाओं के सिर पर डुलाने का मोर पंख का चँवर।

मोरछली–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मौलसिरी*) मौलसिरी का पेड़। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मोरछल+ई प्रत्य॰*) मोरछल चलाने या हिलाने वाला।

मोरछाँह*–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मोरछल।

मोरजुटना–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *मोर+जुटाना*) एक गहना।

मोरन*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मोड़ना*) मोड़ने का भाव। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मोरट*) विलोड़ित दूध, दही और मिठाई-केसरादि मिश्रित पदार्थ, श्रीखंड, शिखरन, **मूरन** (ग्रा॰)।

मोरना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मोड़ना*) मोड़ना, घुमाना। क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मोरन*) दही को मथकर मक्खन निकालना।

मोरनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मोर+नी प्रत्य॰*) मोर की स्त्री या मादा, मोर के आकार का नथ का टिकड़ा।

मोरपंख–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰) मोर का पर का पंखा, मोरपच्छ, मयुरपक्ष (सं॰)।

मोर पंखा*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *मोर+पंख*) मोर का पर, मोर-पंख की कलँगी।

मोरपंखी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) मोर-पंख सी बनी और रँगे सिरे वाली एक प्रकार की नाव, एक वनस्पति। संज्ञा, पु॰ (हि॰) मोर-पंख सा चमकीला नीला रंग। वि॰ (दे॰) मोर-पंख के रंग का।

मोरमुकुट–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ मोर-पंखों से बना मुकुट।

मोरशिखा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *मयूर+शिखा*) मोर की चोटी, एक औषधि, मोर सिखा (दे॰)।

मोरा*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *मेरा*) मेरा।

मोराना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मोड़ना का प्रे॰ रूप* चारों ओर घुमाना या फिराना।

मोरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मोहरी*) पनाला, नावदान, मैले और गंदे पानी की नाली। *†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *मोर*) मोर की मादा। *†–वि॰ स्त्री॰ (हि॰ *मेरी*) मेरी।

मोरे–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *मेरे*) मोर का बहुवचन।

मोल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मूल्य*) दाम, क़ीमत, मूल्य। यौ॰ **गोल-मोल**–पेचीदा, गूढ़ या अस्पष्ट बात। यौ॰ **मोल-भाव (मोल-तोल) करना**–किसी वस्तु का मूल्य बढ़ा घटा कर तै करना और तोलना।

मोल[illegible]†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *मौलाना*) मौलवी।

मोलाना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मोल*) मोल तै करना या पूछना। प्रे॰ स॰ रूप–**मोलवाना**।

मोह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) देह और जगत की वस्तुओं को अपना और सत्य जानने की दुखद बुद्धि या भावना, भ्रांति, भ्रम, अज्ञान, प्रेम, प्यार, आसक्ति, 33 संचारी भावों में से एक (काव्य॰), भय, दुख, विकलता, मूर्च्छा।

मोहक–वि॰ (सं॰) मोहोत्पादक, मोह उत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, मनोहर, **मोहकारी, मोहकारक**।

मोहज–वि॰ (सं॰) मोह से उत्पन्न, **मोहजनित, मोहजन्य**।

मोहठा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 10 वर्णों का एक वृत्त (पिं॰), बाला।

मोहड़ा, मुहड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मुह+ड़ा प्रत्य॰*) किसी वस्तु का खुला भाग या मुँह, अगला या ऊपरी भाग, **मोहरा** (दे॰)।

मोहताज–वि॰ दे॰ (अ॰ *मुहताज*) मुहताज, कंगाल, चाहने

वाला।

मोहन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जिसे देख कर चित्त मुग्ध हो जावे, श्री कृष्ण, एक वर्णिक वृत्त (पिं॰) किसी को मूर्छित या वशीभूत करने का एक तांत्रिक प्रयोग, शत्रु के अचेत करने का एक अस्त्र, मदन के 5 बाणों में से एक। वि॰ (सं॰) (स्त्री॰ *मोहन*) मोह पैदा करने वाला।

मोहनभोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰(हि॰) एक तरह का हलुवा, आम।

मोहन-मंत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰(सं॰) मोहने या वशीभूत करने का मंत्र, **वशीकरण मंत्र।**

मोहनमाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मूँगे और सोने के दानों की माला।

मोहना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *मोहन*) रीझना, मोहित या आसक्त होना, मूर्च्छित होना। क्रि॰ स॰ अपने ऊपर अनुरक्त करना, मुग्ध या मोहित करना, लुभा लेना, धोखा देना या भ्रम में डालना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मोहन*) श्री कृष्ण।

मोहनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विष्णु का वह स्त्री-रूप जिसे उन्होंने अमृत बाँटते समय (सिंधु मंथन के बाद) दैत्यों के मोहित करने को धारण किया था, वशीकरण मंत्र, एक वर्णिक छंद। **मु॰ मोहनी डालना (लाना)**–माया या जादू से वशीभूत करना। **मोहन लगना**–लुभा जाना, मोहित होना, प्रिय लगना, माया। वि॰ स्त्री॰ मोहित करने वाली, अति सुंदरी। यौ॰ **मोहनी मूरते।**

मोहर–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) चिह्न, अक्षर, नामादि को दबा कर छापने का ठप्पा, काग़ज़ आदि पर लगी मुद्रा या छाप, अशरफ़ी।

मोहरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *मुह+रा प्रत्य॰*) किसी पात्र का मुख या खुला हिस्सा, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग, सेना की अग्रिम पंक्ति, सेना के धावे का मुख। (स्त्री॰ **मोहरी**)। **मु॰ मोहरा होना**–सामना करना, भिड़ जाना, युद्ध या प्रतिद्वंद्विता करना। कोई द्वार या छेद जिससे कोई पदार्थ बाहर निकले, चोली आदि की गोट। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *मोहरा*) शतरंज की गोट, चीजें ढालने का साँचा, रेशमी कपड़े के घोटने का घोटा, ज़हर-मोहरा, सिंगिया विष।

मोहरात्रि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अर्ध-प्रलय की रात्रि जब ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतते हैं, **मोह-निशा, मोहरात** (दे॰)

मोहरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *मोहरा*) किसी पात्र आदि का छोटा मुँह, पैजामे में पाँयचों का अंतिम भाग, मोरी, नाली।

मोहर्रिर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) **मुहर्रिर**, मुंशी, लेखक, क्लर्क (अं॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **माहर्रिरी।**

मोहलत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अवकाश, छुट्टी, फ़ुरसत, अवधि।

मोहिं, मोंहीं*–सर्व॰ ब्र॰ अव॰ (सं॰ *मह्य*) मुझे, मुझको।

मोहित–वि॰ (सं॰) अमित, मोहा हुआ, मुग्ध, आसक्त। वि॰। यौ॰ (ब्र *मो+हित*) मेर लिए, मेरा भला।

मोहिनी–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) मोहन वाली, अत्यंत सुंदरी। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विष्णु का एक स्त्री-रूप, माया, टोना, जादू, 15 वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं॰) एक अर्द्धसम छंद (पिं॰)।

मोही–वि॰ दे॰ (सं॰ *मोहिन्*) मोहने वाला, मोहित करने वाला। वि॰ (हि॰ *मोह+ई प्रत्य॰*) मोह, प्रेम या स्नेह करने वाला, लोभी, लालची, मूर्ख।

मोहोपमा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उपमा का एक भेद (केशव॰), भ्रांति अलंकार (अव्य॰)।

मौंगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मौन*) चुप, मौन, मूक।

मौंड़ा-मोड़ा*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माणवक*) छोरा, बालक, लड़का। **मौंड़ी, मोंड़ी।**

मौक़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) वारदात की जगह, घटना स्थल, स्थान, देश, अवसर, समय यौ॰ **मौक़ा बे मौक़ा।**

मौकूफ–वि॰ (अ॰) बंद या अलग किया हुआ, रोका हुआ, नौकरी से छुटाया अलग किया हुआ, रद किया गया, बरख़ास्त, अवलंबित, निर्भर। संज्ञा, स्त्री॰ **मौक़ूफ़।**

मौक्तिक–वि॰ (सं॰ *मुक्ता*) मोती का, मोती-संबंधी।

मौक्तिकदाम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक वर्णिक छंद जिसमें बारह वर्ण हाते हैं (पिं॰)।

मौक्तिकमाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक वर्णिक छंद जिसमें ग्यारह वर्ण होते हैं। यौ॰ (सं॰) मोतियों की माला।

मौख–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक मसाला।

मौखिक–वि॰ (सं॰) मुख-संबंधी, ज़बानी, जिह्वाग्र, मुख का।

मौज–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) तरंग, लहर, जोश, मन की उमंग या उछंग। **किसी की मौज पाना**–मरजी या इच्छा

जानना। विभव, धुन, प्रभूति, आनंद, मज़ा, सुख, विभूति। **मु॰ मौज उड़ाना (करना)**–आनंद उठाना, चैन करना। **मौज में आना**–धुन या जोश (उमंग) में आना, मौज आना। **मौज में होना**–आनंद या उमंग में होना।

मौज़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) ग्राम, गाँव का हिस्सा **मौज़ा** (दे॰)।

मौजी–वि॰ दे॰ (हि॰ *मौज+ई प्रत्य॰*) मनमानी करने वाला, जोश या उमंग में रहने वाला, सदा प्रसन्न या हर्षित रहने वाला, **आनंदी, उमंगी, लहरी, धुनी**। यौ॰ **मन-मौजी**।

मौजूद–वि॰ (अ॰) हाज़िर, उपस्थित, प्रस्तुत, विद्यमान, तैयार। संज्ञा, स्त्री॰ **मौजूदगी**।

मौजूदगी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) उपस्थिति, हाज़िरी, विद्यमानता।

मौजूदा–वि॰ (अ॰) वर्तमान काल का प्रस्तुत, विद्यमान, उपस्थित।

मौड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *माणयक*) लड़का, वालक। (स्त्री॰ **मौड़ी**)।

मौत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मृत्यु, मरण, **मीचु** (ग्रा॰)। **मु॰ मौत का सिर पर खेलना**–मरना पास होना, आपत्ति का समीप होना। मरने का समय, काल, बड़ा कष्ट, विपत्ति। **मु॰ सिर पर मौत का नाचना (खेलना)**–मृत्यु निकट होना।

मौताद–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मात्रा, **मौताज** (दे॰)।

मौन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चुप्पी, मूकता, चुप रहना। वि॰ चुप, शांत, मूक। **मु॰ मौन ग्रहण या धारण करना**–चुपचाप रहना, न बोलना, **मौन रहना** (ब्र॰)। **मौन खोलना**–बोलना प्रारंभ करना। **मौन तजना**–बोलने लगना। **मौन बाँधना (लगाना)**–चुप हो जाना। लो॰ (सं॰) **मौन लेना या साधना**–चुप होना, न बोलना। वि॰ (सं॰ *मौनी*) चुप, जो न बोले। संज्ञा, स्त्री॰ **मौनता**। *‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मौण*) पात्र, बरतन, डब्बा, **मोन** (दे॰)।

मौनव्रत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चुप रहने का व्रत। वि॰ **मौनव्रती**।

मौनी–वि॰ (सं॰ *मौनिन्*) चुप रहने वाला, मुनि। यौ॰ **मौनी अमावस**।

मौर–वि॰ दे॰ (सं॰ *मुकुट*) ताड़-पत्र, या काग़ज़ आदि से बना एक मुकुट या शिरोभूषण (विवाह में) प्रधान, शिरोमणि, मुख्य। स्त्री॰ अल्पा॰ **मौरी**। यौ॰ **शिर-मौर**–प्रधान, शिरोमणि, सर्व श्रेष्ठ। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मुकुल*) मंजरी, बौर। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मौलि–सिर*) सिर, गरदन।

मौरना, मौराना–क्रि॰ स॰ (हि॰) वृक्षों में मंजरी आना, बौर लगना, बौरना।

मौरसिरी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मौलि श्री*) सुगंधित पुष्पों का एक पेड़, बकुल वृक्ष, **मौलसिरी** (दे॰)।

मौरूसी–वि॰ (अ॰) वाप-दादा के समय से चला आया हुआ, पैतृक।

मौर्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) क्षत्रिय-सम्राट चंद्रगुप्त और अशोक का राज-वंश (इति॰)।

मौर्वी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धनुष की ताँति या डोरी।

मौलवी–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अरबी और फ़ारसी का पंडित, **मोलवी** (दे॰), मुसलमानी धर्म का आचार्य, मुल्ला।

मौलसिरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मौलिश्री*) मधुर और भीनी सुगंधि के छोटे पुष्पों का एक बड़ा पेड़, बकुल।

मौलाना–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमानों का धर्म-गुरु।

मौलि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चोटी, सिर, जूड़ा, मत्था, मस्तक, किरीट, सिरा, जटा जूट, सरदार, प्रधान व्यक्ति।

मौलिक–वि॰ (सं॰) नवीन, मूल-संबंधी, जड़ का, जड़ की वस्तु। संज्ञा, पु॰ कुलीनभिन्न, अकुलीन। संज्ञा, स्त्री॰ **मौलिकता**।

मौसा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *मौसी*) माता की वहिन या मौसी का स्वामी या पति। **मौसिया, फूफा**। स्त्री॰ **मौसी**।

मौसिम, मौसम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) उचित समय, ऋतु। वि॰ **मौसिमी**।

मौसिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मौसा।

मौसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *मातृष्वसा*) माता की बहिन, मौसी। वि॰ **मौसेरा** (प्रान्ती॰)।

मौसेरा–वि॰ दे॰ (हि॰ *मौसी+एरा प्रत्य॰*) मौसी के नाते से संबद्ध, मौसी के संबंध का। स्त्री॰ **मौसेरी**।

म्याँवँ, म्याऊँ–संज्ञा, स्त्री॰ (अनु॰) विल्ली की बोली। यौ॰ **म्याऊँ का ठोर**–मुख्य तथा भय का स्थान, कठिन स्थल। **मु॰ म्याँव म्याँव करना**–डरकर धीरे-धीरे बोलना, आधीनता स्वीकार कर नम्रता से बोलना।

म्यान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *मियान*) कटार और तलवार आदि के फल रखने का ख़ाना, अन्नमय कोश, देह। **मु॰ एक म्यान में दो तलवार न रहना**।

म्याना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *म्यान*) म्यान में रखना। *संज्ञा,

पु॰ (दे॰) **मियाना,** पालकी; पजामा इत्यादि का आसन।

म्यों–संज्ञा, स्त्री॰ (अनु॰) बिल्ली की बोली।

म्योंड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *निर्गुंडी*) छोटे पीले फूलों की मंजरी वाला एक सदा बहार झाड़, एक पेड़, निर्गुंडी, सँभालू।

म्रियमाण–वि॰ (सं॰) मृतकल्प, अवसन्नमृत, मृतप्राय।

म्लान–वि॰ (सं॰) मलिन, मैला, कुम्हलाया हुआ, उदास, दुर्बल। संज्ञा, स्त्री॰ **म्लानता**।

म्लानता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मैलापन, उदासी, मलिनता, मलीनता।

म्लानमुख–वि॰ यौ॰ (सं॰) उदास, उदासीन, दुखी, **म्लानबदन**।

म्लिष्ट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अस्पष्ट वाक्य, अव्यक्त वचन।

म्लेच्छ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्णाश्रम से रहित जातियाँ। संज्ञा, स्त्री॰ **म्लेच्छता**। वि॰ नीच पापी।

म्हा*†–सर्व, दे॰ (हि॰ *मुझ*) मुझे।

म्हारा, म्हारो*†–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *हमारा*) हमारा। स्त्री॰ **म्हारी**।

य

य–संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला में अंतस्थ वर्ण का प्रथम वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान तालु है। संज्ञा, पु॰ (सं॰) योग, यश, संयम, सवारी, पिंगल में यगण का संक्षिप्त रूप।

यंत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तंत्रशास्त्रानुसार विशेष प्रकार से बने कोष्टकादि, **जंत्र, जंतर** (दे॰) हथियार, औज़ार, कल, बंदूक़, बाजा, ताला, कुफुल, किसी विशेष कार्य के लिए उपयुक्त उपकरण।

यंत्रण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाँधना, रक्षा करना, नियमानुसार रखना, नियंत्रण।

यंत्रणा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुःख, कष्ट, क्लेश, वेदना, दर्द, पीड़ा।

यंत्रमंत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जादू-टोना, **जंत्र-मंत्र, जंतर-मंतर** (दे॰)।

यंत्रविद्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कलों के बनाने या चलाने की विद्या, **यंत्र-विज्ञान**।

यंत्रशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वेधशाला, वह स्थान जहाँ अनेक तरह की कलें हों, **यंत्रागार**।

यंत्रालय–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) छापाखाना, कलों का स्थान या घर।

यंत्रित–वि॰ (सं॰) ताले में बंद, यंत्र या कल के द्वारा रोका या बंद।

यंत्रिका–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ताला। "लोचन निज पद-यंत्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट"–रामा॰।

यंत्री–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *यंत्रिन्*) यंत्रतंत्र करने वाला, तांत्रिक, तंत्रशास्त्र का ज्ञाता, बाजा बजाने वाला।

यक–वि॰ (सं॰) एक, **इक** (दे॰)।

यकंग–वि॰, क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *एकांग*) एकांत, एकांग।

यक-अंगी–वि॰ दे॰ (सं॰ *एकांगी*) एकांगी, **यकंगी, इकंगी** (दे॰)।

यकटक–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰) लगातार, निर्निमेष दृष्टि से।

यकता–वि॰ (फ़ा॰) अपने गुणादि में अकेला, अद्वितीय, बेमिसाल, अकेला। संज्ञा, स्त्री॰ **यकताई–अकेलापन**।

यक-वयक, यकबारगी–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) एकाएक, सहसा, अकस्मात्, अचानक।

यकसाँ–वि॰ (फ़ा॰) एक प्रकार के, बराबर, समान, तुल्य।

यकायक–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) अचानक, एकबारगी, सहसा, एकाएक।

यक़ीन–संज्ञा, पु॰ (अ॰) एतबार, भरोसा, विश्वास, प्रतीति।

यकृत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पेट में दाहिनी ओर भोजन पचाने वाली एक थैली, जिगर, कालखंड, वर्ग-जिगर, यकृत बढ़ने का रोग।

यक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) देवताओं का एक भेद जो कुबेर के अधीन है, और निधियों की रक्षा करते हैं, **जच्छ** (दे॰)।

यक्षकर्दम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक तरह का अंगराग या लेप।

यक्षनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुबेर, **यक्षनायक**।

यक्षपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबेर।

यक्षपुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अलकापुरी।

यक्षराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबेर।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबेर।

यक्षिणी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *यक्षिणी*) कुबेर की स्त्री, यक्ष की स्त्री या पत्नी, **जच्छिनी** (दे.)।

यक्षी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *यक्षिणी*) यक्षिणी, यक्ष की स्त्री। संज्ञा, पु. (सं. *यक्ष+ई प्रत्य.*) यक्ष की साधना करनेवाला।

यक्षेश, यक्षेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबरे।

यक्षौध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यक्षों का घर या स्थान।

यक्ष्मा–संज्ञा, पु. (सं. *यक्ष्मन्*) एक रोग, क्षयीरोग, तपेदिक। यौ. **राज-यक्ष्मा**।

यख़नी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. जल में पकाए हुए माँस का रस, शोरवा)।

यगण–संज्ञा, पु. (सं.) एक लघु और दो गुरु वर्णों का (।ऽऽ) एक गण (पिं.) संक्षिप्त रूप 'य'।

यजत्र–संज्ञा, पु. (सं.) अग्निहोत्री।

यजन–संज्ञा, पु. (सं.) यज्ञ करना।

यजमान–संज्ञा, पु. (सं.) यज्ञ करने वाला, ब्राह्मणों को दान देने वाला, **जजमान** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **यजमानी, जजमंती**।

यजमानी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *यजमान+ई प्रत्य.*) यजमान के प्रति पुरोहित का धर्म-कर्म, पुरोहिताई, यजमान का धर्म या भाव, **जजमंती** (दे.)।

यजु–संज्ञा, पु. (सं. *यजुर्वेद*) यजुर्वेद।

यजुर्वेद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञों का वर्णन है, **यजुर्वेद** (दे.)।

यजुर्वेदी–संज्ञा, पु. (सं. *यजुर्वेदिन्*) यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेदानुसार कर्म करने वाला। वि. **यजुर्वेदीय**–यजुर्वेद संबंधी।

यज्ञ–संज्ञा, पु. (सं.) मख, याग, आर्यों के हवन-पूजनादि कर वैदिक कृत्य, **जग्य** (दे.)।

यज्ञकर्त्ता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यज्ञ करने वाला।

यज्ञकुंड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हवन का गड्ढा या वेदी।

यज्ञपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु भगवान, यज्ञकर्ता, यजमान।

यज्ञपत्नी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा।

यज्ञपशु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यज्ञ में बलिदान करने का पशु, बलिपशु।

यज्ञपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यश में काम आने वाले बरतन।

यज्ञपुरुष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु भगवान, यजमान।

यज्ञभूमि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यज्ञस्थल, यज्ञक्षेत्र, वश करने का कागज।

यज्ञमंडल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यज्ञ के लिए बनाया हुआ मंडप, यज्ञशाला।

यज्ञशाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यज्ञमंडप, यज्ञस्थल, **यज्ञालय**।

यज्ञसूत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यज्ञोपवीत, जनेऊ (दे.)।

यज्ञस्थल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **यज्ञस्थान**, यज्ञ-मंडप। स्त्री. **यज्ञस्थली**।

यज्ञेश, यज्ञेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु भगवान।

यज्ञोपवीत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यज्ञसूत्र, जनेऊ।

यत्–अव्य. (सं.) यदि, जो, जैसा।

यति–संज्ञा, पु. (सं.) योगी, त्यागी, संन्यासी, ब्रह्मचारी, छप्पय का 66वाँ भेद (पिं.)। संज्ञा, स्त्री. (सं. *यती*) छंदों के चरणों में विराम या विश्राम, विरति।

यतिधर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संन्यास।

यतिभंग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) छंद में यति या विराम के उपयुक्त स्थान पर न पड़ने का दोष (पिं.)।

यती–संज्ञा, स्त्री. पु. (सं. *यति*) संन्यासी, त्यागी, विरागी।

यतीम–संज्ञा, पु. (अ.) अनाथ, माता-पिता रहित।

यत्किंचित्–क्रि. वि. यौ. (सं.) थोड़ा, जो कुछ, रंच, तनिक।

यत्न–संज्ञा, पु. (सं.) उपाय, उद्योग, प्रयत्न, तदबीर, रक्षा, रूपादि 24 गुणों में से एक गुण (न्याय.), **यतन, जतन** (दे.)।

यत्नवान्–वि. (सं. *यत्नवत्*) उपाय या यत्न करने वाला।

यत्र–क्रि. वि. (सं.) जहाँ, जिस स्थान पर। (विलो. **तत्र**)। यौ. **यत्र-तत्र**।

यत्र-तत्र–क्रि. वि. यौ. (सं.) जहाँ-तहाँ।

यथा–अव्य. (सं.) जैसा, जैसे, जिस प्रकार, **जथा** (दे.)। (विलो. **तथा**)।

यथाकाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समयानुसार, उपयुक्त समय, यथा समय।

यथाक्रम–क्रि. वि. यौ. (सं.) क्रमशः, क्रमानुसार।

यथातथ्य–अव्य. यौ. (सं.) ज्यों का त्यों, जैसा हो, वैसा ही,

जैसा चाहिए वैसा।

यथापूर्व–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) जैसा पहले था वैसा ही, ज्यों का त्यों।

यथामति–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) बुद्धि के अनुसार।

यथायोग्य–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) समीचीन, उपयुक्त, **यथोचित्**, उचित, जैसा चाहिए वैसा, **जथायोग्य**।

यथारथ*–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *यथार्थ*) उचित, जैसा चाहिए वैसा, **जथारथ** (दे॰)।

यथारुचि–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) इच्छानुसार।

यथार्थ–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) वस्तुतः, उचित, उपयुक्त, वास्तविक, जैसा चाहिए वैसा, ठीक-ठीक। वि॰ (सं॰) सत्य, वास्तविक, ठीक, उचित।

यथार्थता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सचाई, सत्यता, वास्तविकता, तथ्यता।

यथालाभ–वि॰ यौ॰ (सं॰) जो कुछ मिले उसी पर निर्भर।

यथावत्–अव्य॰ (सं॰) यथोचित, ज्यों का त्यों, जेसा था वेसा ही, भली-भाँति, जेसा चाहिए वैसा।

यथाविधि–वि॰ यौ॰ (सं॰) विधि के अनुसार, विधिपूर्वक।

यथाशक्ति–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) भरसक, जितना हो सके, सामर्थ्य के अनुसार, समयानुसार।

यथाशास्त्र–वि॰ यौ॰ (सं॰) शास्त्रानुसार।

यथासंभव–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) जहाँ तक हो सके, संभवतः।

यथासाध्य–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) जहाँ तक साध्य हो, यथाशक्ति।

यथास्थित–वि॰ यौ॰ (सं॰) निश्चित, सत्य, यथार्थ, स्थिति के अनुसार।

यथेच्छ–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) इच्छानुसार, मनमाना।

यथेच्छाचार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मनमानी, स्वेच्छाचार, जो जी में आवे वही करना। संज्ञा, स्त्री॰ यौ (सं॰) **यथेच्छाचारिता**।

यथेष्ट–वि॰ यौ॰ (सं॰) जितना चाहिए उतना, मन-चाहा, पूर्ण, पूरा, पर्याप्त।

यथोक्त–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) जैसा कहा गया हो।

यथोचित–वि॰ यौ॰ (सं॰) ठीक-ठीक, उचित, उपयुक्त, समीचीन।

यदपि*–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *यद्यपि*) यद्यपि।

यदा–अव्य॰ (सं॰) जिस समय, जब, जहाँ।

यदाकदा–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) कभी-कभी।

यदातदा–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) जब तब।

यदि–अव्य॰ (सं॰) अगर, जो।

यदिचेत्–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) यद्यपि, अगरचे।

यदीय–वि॰ (सं॰) जिसका।

यदु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ययाति राजा के बड़े पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे (पुरा॰) **जदु** (दे॰)।

यदुकुल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) यदुवंश, **जदुकुल** (दे॰)।

यदुनंदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीकृष्ण जी, **जदुनंदन** (दे॰)।

यदुनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीकृष्ण जी।

यदुपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीकृष्ण जी।

यदुराई-यदुराय–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *यदुराज*) श्रीकृष्ण जी।

यदुराज-यदुराय-संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीकृष्ण जी।

यदुवंश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) यदुकुल। यदुकुटुंब, **जदुबंस** (दे॰)। वि॰ **यदुवंशीय**।

यदुवंशमणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **यदुवंश-भूषण**, श्रीकृष्ण जी।

यदुवंशी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *यदुवंशिन्*) यादव, यदुकुल से उत्पन्न, यदुकुल का।

यद्यपि–अव्य॰ यौ॰ (सं॰ *यदि+अपि*) अगरचे, हरचंद, **यदपि**, **जदपि** (दे॰)।

यदृच्छया–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (सं॰) अकस्मात्, मनमाने तौर पर, दैवसंयोग से।

यदृच्छा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आकस्मिक-संयोग, स्वेच्छाचार।

यद्वातद्वा-संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ऐसा वैसा, जो सो, भला-बुरा, अनिश्चित, अनियमित, जैसा-तैसा।

यम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मृत्यु और नर्क के देवता आर्य), काल, मृत्यु, यमराज, **जम** (दे॰)। जुड़वाँ लड़के, धर्मराज, योग के अष्टांगों में से एक अंग, इंद्रियों और मन का निग्रह (योग॰) दो की संख्या, धर्म में मन को स्थिर रखने के कर्मों का साधन।

यमक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक अनुप्रास या शब्दालंकार जिसमें भिन्नार्थ के साथ यथाक्रम वर्णवृत्ति या शब्दावृत्ति हो (अ॰ पी॰), एक वृत्त (पिं॰)।

यमकातर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *यम+कातर* हि॰) यम की तलवार या खाँड़ा, **जमकातर**।

यमघंट–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुछ विशेष दिनों में कुछ विशेष नक्षत्र के पड़ने का एक कुप्रयोग (ज्यो॰), दिवाली का

दूसरा दिन।

यमज–संज्ञा, पु. (सं.) धर्मराज, एक साथ के उत्पन्न दो लड़के, जुड़वाँ, अश्विनीकुमार।

यमदग्नि–संज्ञा, पु. दे. (सं. *जमदग्नि*) **जमदग्नि**–ऋषि, परशुराम के पिता।

यमद्वितीया–संज्ञा, स्त्री. यो. (सं.) कार्तिक शुक्ल द्वितीया, **जमदुतिया, भाईदुइज** (दे.)।

यमधार–संज्ञा, पु. (सं.) दुधारी तलवार।

यमन–संज्ञा, पु. (सं.) यमन, बंधन, रोक।

यमनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यमराज, धर्मराज।

यमनाह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *यमराज*) यमराज, धर्मराज।

यमपुर–संज्ञा, पु. (सं.) यमलोक, यमपुरी।

यमपुरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यमलोक।

यमपुत्र-यमपूत(दे.)–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) धर्मराज, युधिष्ठिर, **यमसुत, यमात्मज**।

यम-यातना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यमलोक या नरक की पीड़ा, मृत्यु के समय का कष्ट, **जम-जातना** (दे.)।

यमराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) धर्मराज, काल, **जमराज**।

यमल–संज्ञा, पु. (सं.) यमज, जोड़ा, युग्म, जुड़वाँ बच्चे।

यमलार्जुन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबेर के पुत्र नलकूवर, और मणिग्रीव जो नारद के शाप से वृक्ष हो गए थे, श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया (भाग.)।

यमलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यम का लोक, यमपुरी।

यमालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यमपुरी।

यमी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यम की बहिन, जो यमुना नदी हुई (पुरा.)।

यमुना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **जमुना, जमैना** (दे.) यम की बहिन, उत्तर भारत की एक बड़ी नदी।

ययाति–संज्ञा, पु. (सं.) राजा नहुष के पुत्र, ये शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से ब्याहे थे (पुरा.)।

यव–संज्ञा, पु. (सं.) जौ नामक एक अनाज, एक जौ या बारह सरसों की तौल, एक इंच का तिहाई भाग, अँगुली की पोर पर जवा जैसी रेखा (शुभ सामु.)।

यवद्वीप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जावा द्वीप, (भूगो.)।

यवन–संज्ञा, पु. (सं.) यूनानी, फिरंगी, कालयवन दैत्य, यूनान देश का निवासी। स्त्री. **यवनी**।

यवनानी–वि. (सं. *यवन+आनीप् प्रत्य.*) यवन देश संबंधी, यवनों की लिपि।

यवनाल–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जुआर नामक अन्न।

यवनिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) परदा, चिक, नाटक के रंग मंच पर एक परदा (नाटय.)।

यवमती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णिक छंद (पिं.)।

यवशा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अजवाइन।

यवस–संज्ञा, पु. (सं.) तृण, घास।

यवागू–संज्ञा, पु. (सं.) यव के दलिए का माँड, या सत, यव के आटे का हलुवा।

यवास–संज्ञा, पु. दे. (सं. *यवासक*) जवास, जवासा, एक कटीला पौधा।

यविष्ट–वि. (सं.) अतिलघु, पूर्ण युवा।

यवीयस–वि. (सं.) छोटा, युवा।

यश–संज्ञा, पु. (सं. *यशस्*) सुख्याति, कीर्त्ति, प्रशंसा, बड़ाई, नेकनामी, **जस** (दे.)। **मु. यश गाना (कीर्तन करना)**–प्रशंसा करना, एहसान मानना। **यश कहना**–बढ़ाई करना। **यश मानना**–कृतज्ञ होना।

यशब-यशम्–संज्ञा, पु. (अ.) एक हरा पत्थर जिसकी नार्दली बनाई जाती है।

यशस्वी-यशी-यशशील–वि. (सं. *यशस्विन् यश+ई प्रत्य.*) कीर्त्तिमान, यश वाला। स्त्री. **यशस्विनी**।

यशुमति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यशोदा, **यशोमति** (दे.), **जसोमति** (दे.)।

यशोदा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) **जसोदा** (दे.), नंद की स्त्री, **जसुदा** (दे.)।

यशोधन–वि. यौ. (सं.) यश रूपी धन वाला।

यशोधरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गौतम बुद्ध की स्त्री, और राहुल की माता।

यशोमति–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *यशोदा*) **जसोमति** (दे.)।

यष्टि-यष्टिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लाठी, छड़ी, मुलेठी, डाली, लकड़ी।

यह–सर्व. दे. (सं. *इदम्*) श्रोता और वक्ता को छोड़ निकट के अन्य सब के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द (व्या. (हि.) या (ब्र.), संकेत वाचक निकटवर्ती, सर्वनाम।

यहाँ–क्रि. वि. दे. (सं. *इह*) इस ठौर या स्थान पर, इस

संसार में, इस जगह में। इहाँ (ब्र., अब)। **मु॰ यहाँ का यहीं**–ठीक इसी स्थान पर।

यहि–सर्व॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *यह*) विभक्ति से पूर्ण यह का रूप (प्रा॰ हि॰) इहि (अ॰ अब॰)

यही–अव्य॰ वि॰ (हि॰ *यह+ही प्रत्य.*) यह ही, निश्चय रूप से यह, **यहि** (दे॰)। **इहै, यहै** (ब्र॰ अब)।

यहीं–अव्य॰ (हि॰) इसी स्थान पर, निश्चय रूप से यहाँ पर, **इहैं** (ब्र॰ अव॰)।

यहूद–संज्ञा, पु॰ (*इब्रानी*) वह स्थान जहाँ महात्मा ईसा जन्मे थे।

यहूदी–संज्ञा, पु॰ (*यहूद+ई प्रत्य.*) यहूद देश-वासी, यहूद देश की भाषा और लिपि।

यहै, यहौ–सर्व॰ (सं॰) यह भी, वही।

या†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *यहाँ*) यहाँ।

या–अव्य॰ (फ़ा॰) या, अथवा ऐ!। वि॰, सर्व॰ (दे॰) विभक्ति लगने से पूर्व वह का संक्षिप्त रूप (ब्र॰)।

याक, यक†–वि॰ दे॰ (हि॰ *एक*) एक। **इफ** (अं॰)।

याक़ूत–संज्ञा, पु॰ (अ॰) एक लाल रत्न, लाल।

याग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यज्ञ।

याचक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भिक्षुक, भिखारी, माँगने वाला। संज्ञा, पु॰ **याचन**। वि॰ **याचनीय**।

याचना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *यचन*) माँगना, पाने के लिए निवेदन करना, **जाचना** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) माँगने की क्रिया। वि॰ **याचित, याच्या**।

याजक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यज्ञ की क्रिया।

याजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यज्ञ की क्रिया। वि॰ **याजनीय**।

याज्ञवल्क्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वैशंपायन के शिष्य एक विख्यात ऋषि, स्मृतिकार, वाजसनेय, योगीश्वर याज्ञवल्क्य और उनके वंशज एक स्मृतिकार, **जाग्यबलिक** (दे॰)।

याज्ञिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यज्ञ करने या कराने वाला।

यातना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कष्ट, पीड़ा, दुःख, **जातना** (दे॰)।

याता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *मातृ*) पति के भाई की पत्नी, जेठानी या देवरानी।

यातायात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आना-जाना, आवागमन, गमनागमन, आमदरफ़्त (फ़ा॰)।

यातुधान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राक्षस, **जातुधान** (दे॰)।

यात्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक जगह से दूसरी जगह जाने का कार्य, प्रस्थान, सफ़र, तीर्थाटन, प्रयाण।

यात्रावाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *यात्रा+वास* हि॰ *प्रत्य.*) यात्रियों को देव-दर्शन कराने वाला पंडा।

यात्रिक–वि॰ (सं॰) यात्रा करने वाला।

यात्री–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *यात्रा*) यात्रा करने वाला, पथिक, बटोही, मुसाफ़िर, तीर्थ जाने वाला।

याथार्थिक–हि॰ (सं॰) वास्तविक, सत्य, ठीक, तथ्य।

याथार्थ्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्यता, यथार्थता।

याद–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) स्मृति, सुरति, स्मरण-शक्ति, सुधि।

यादगार–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) स्मृति-चिन्ह। संज्ञा, स्त्री॰ **यादगारी**–स्मरण।

याददाश्त–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) स्मृति, स्मृति के लिए लिखी बात, स्मरण-शक्ति।

यादव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **यादौ, जादौ**–यदु के कुटुंबी, या वंशज, **जादव** (दे॰)। स्त्री॰ **यादवी**।

यादृक–वि॰ (सं॰) जैसा।

यादृशी–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) जैसी।

यान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रथ, गाड़ी, सवारी, वाहन, विमान, आकाशयान, अभियान, शत्रु पर चढ़ाई करना। अं॰ कैम्पेन।

यानी-याने–अव्य॰ (अ॰) अर्थात, तात्पर्य, मतलब।

यापन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चलाना, बिताना, निबटाना, व्यतीत करना। वि॰ **यापित, याप्य, यापनीय**। यौ॰ **काल-यापन**।

याबू–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) छोटा घोड़ा, टट्टू।

याबूक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महावर, लाल रंग।

याम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समय, काल, एक पहर, जाम (दे॰), तीन घंटे का समय, एक तरह के देवगण। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *यात्रि*) रात, यामिनी।

यामना–संज्ञा, पु॰ दे॰ अंजन, सुरमा।

यामल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यमज, जुड़वाँ, एक तंत्र ग्रंथ।

यामि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धर्म-पत्नी।

यामिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पहरुआ।

यामिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रात।

यामिनि-यामिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रात, रात्रि, **जामिनि, जामिनी** (दे॰)।

याम्य–वि॰ (सं॰) यम का, यम-संबंधी, दक्षिण का।

याम्योत्तर दिगंश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लंबांश, दिगंश, दक्षिणोत्तर दिग्विभाग (भू., ख.)।

याम्योत्तर रेखा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सुमेरु कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर की कल्पित रेखा (भू.)। (अं.) लैटीटयूड

यार–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मित्र, प्रिय, दोस्त, उपपति, जार। यौ. **यार-दोस्त**।

याराना–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मैत्री, मित्रता, दोस्ती। वि. मित्र या मित्रता का सा।

यारी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) मित्रता, दोस्ती, मैत्री, प्रेम, स्नेह।

यावज्जीवन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जीवनभर, जन्मभर।

यावद्-यावत्–*अव्य.* (सं.) जब लग, जब तक, जौलों (ब्र.), जितने।

यावनी–वि. (सं.) यवन-संबंधी।

यासु*–सर्व. (सं.) जासु, जिसके।

यास्क–संज्ञा, पु. (सं.) वैदिक निरुक्तकार एक प्रख्यात ऋषि।

याहि-याही*†–सर्व. (दे.) इसे, इसको, इसी।

युंजान–संज्ञा, पु. (सं.) अभ्यास करने वाला योगी।

युक्त–वि. (सं.) मिला या जुड़ा हुआ, सम्मिलित, नियुक्त, संयुक्त, उचित, उपयुक्त, **जुक्त** (दे.)

युक्ता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णिक छंद जिसमें दो नगण और एक मगण होता है (पिं.)।

युक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कौशल, चाल, तरकीब, उपाय, चातुरी, तदवीर, ढंग, प्रथा, न्याय, रीति, नीति, मिलन, तर्क, उचित, विचार, ऊहा, योग। **जुगुति,** युक्ति (दे.)।

युक्तियुक्त–वि. (सं.) युक्ति-संगत, तर्क-पुष्ट, वाजिब, ठीक, चातुरी पूर्ण।

युगंधर–संज्ञा, पु. (सं.) हरिस, कूबर, एक पहाड़, गाड़ी का बम।

युग–संज्ञा, पु. (सं.) युग्म, जोड़ा, मिथुन, जुआ, **जुआठ** (प्रान्ती.), पाँसे के खेल में दो गोटों का एक ही घर में साथ आ जाना, बारह वर्ष का समय, काल, समय, काल का एक दीर्घ परिमाण (पुरा.) युग चार हैं:– सत्व, त्रेता, द्वापर, कलि, चार की संख्या। **जुग** (दे.)। यौ. **युगयुगांतर**। **मु. युग युग**–बहुत दिनों तक। यौ. **युगधर्म**–समयानुसार व्यवहार।

युगति-युगुति*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *युक्ति*) युक्ति, तरकीब तदबीर, **जुगुति** (दे.)। उपाय, तर्क, ढंग।

युगपत्–*अव्य.* (सं.) साथ-साथ, एक बारगी।

युगम*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *युग्म*) दो जोड़ा, **जुग्म** (दे.)।

युगल–संज्ञा, पु. (सं.) युग्म, जोड़ा, **युगुल, जुगुल** (दे.)।

युगांत–संज्ञा, पु. (सं.) युग का अंत, अखीर, युग का प्रलय।

युगांतर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दूसरा समय या युग और ज़माना, दूसरा युग। **मु. युगांतर उपस्थित करना**–पुरानी रीति मिटाकर नई चलाना।

युग्म–संज्ञा, पु. (सं.) दो जोड़ा, युग, **जुग्म** (दे.) द्वंद्व मिथुनराशि (ज्यो.)।

युजान–संज्ञा, पु. (सं.) सारथी, गाड़ीवान।

युज्यमान–वि. (सं.) मिलने योग्य, युक्त होने के उपयुक्त।

युत–वि. (सं.) युक्त, सहित, मिलित। **जुत** (दे.)।

युति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मिलाप, योग।

युद्ध–संज्ञा, पु. (सं.) संग्राम, रण, लड़ाई, **जुद्ध** (दे.)।

युधाजित–संज्ञा, पु. (सं.) भरत के मामा।

युधान–संज्ञा, पु. (सं.) क्षत्रिय जाति।

युधिष्ठिर–संज्ञा, पु. (सं.) धर्मराज, पाँच पांडवों में सब से बड़े और धर्मात्मा।

युयु–संज्ञा, पु. (सं.) घोड़ा, अश्व।

युयुत्–संज्ञा, पु. (सं.) योद्धा, सिपाही, धृतराष्ट्र का दूसरा नाम (महा.)।

युयुत्सा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) युद्ध करने या लड़ने की इच्छा, विरोध, बैर, शत्रुता।

युयुत्सु–वि. (सं.) युद्ध करने या लड़ने की इच्छा रखने वाला, जो युद्ध चाहता हो।

युयुधान–संज्ञा, पु. (सं.) इंद्र, क्षत्रिय, योद्धा।

युवक–संज्ञा, पु. (सं.) जवान, युवा, सोलह से पैंतीस वर्ष तक की आयु का मनुष्य।

युवति-युवती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मुग्धा, तरुणी, नवोढ़ा, जवान स्त्री, **जुवती** (दे.)।

युवनाश्व–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्यवंशीय राजा प्रसेनजित् का पुत्र (पुरा.)।

युवराज–संज्ञा, पु. (सं.) राजा का सब से जेठा पुत्र जिसे आगे राज्य मिले, **जुवराज** (दे.)। स्त्री. **युवराज्ञी**।

युवराज्ञी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) युवराज की पत्नी।

युवा–वि॰ (सं॰ *युवन्*) जवान, सिवाही, युवक। **जुवा** (दे॰)। स्त्री॰ **युवती**।

युष्मद्–सर्व (सं॰) तू, तुम।

यूँ†–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *यों*) यों।

यूक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जूं, मत्कुण, खटमल।

यूत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *यूति*) मेल, मिलावट।

यूथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) झुंड, समूह, वृंद। सेना, दल, **जूथ** (दे॰)। यौ॰ **यूथेश**–सेनापति।

यूथप-यूथपति–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेनापति।

यूथिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जुही का फूल।

यूनान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ग्रीक आयोनिया*) साहित्य और सभ्यता के लिए प्रसिद्ध महाद्वीप यूरुप का एक प्राचीन प्रदेश।

यूनानी–वि॰ (*यूनान+ई प्रत्य॰*) यूनान का, यूनान संबंधी, यूनान-वासी। संज्ञा, स्त्री॰ यूनान की भाषा, यूनान की चिकित्सा-प्रणाली, हकीमी।

यूप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यज्ञस्तंभ, बलिपशु के बाँधने का खंभा।

यूपा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *द्यूत*) जुआ, द्यूत-कर्म।

यूष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जूस (दे॰), पथ्य।

यूह*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *यूथ*) झुंड, समूह, समुदाय, वृंद।

ये–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *यह का आदर-सूचक या* बहु॰ ब॰) यह सब।

येई*†–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *यह+ई प्रत्य॰*) यही, येही।

येऊ†–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *वे+ऊ प्रत्य॰*) वह भी।

येहू*†–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *यह+हू*) **येऊ** (ब्र॰) ये या यह भी।

यों, यौं–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *एवमेव*) ऐसे, इस भाँति, इस प्रकार से, इस तरह पर।

योंही–अव्य॰ (हि॰ *यों+ही*) ऐसे ही, बिना किसी विशेष प्रयोजन के, इसी प्रकार या तरह से, व्यर्थ ही, बिना काम।

योग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मिलना, मेल, संयोग, उपाय, शुभ समय, ध्यान, प्रेम, संगति, स्नेह, धोखा, छल, प्रयोग, औषधि, धन, लाभ, नियम, साम, दाम, दंड और भेद नामक चारों उपाय, संबंध, संपत्ति और धन कमाना और बढ़ाना, वैराग्य, ध्यान और तप, दो या कई राशियों या संख्याओं या अंकों का जोड़ (गणि॰), एक छंद (पिं॰)। ताड़घात, सुभीता, कुछ विशेष अवसर (फ॰ ज्यो॰), मुक्ति का उपाय, चित्त की वृत्तियों का रोकना। मन को एकाग्र कर ब्रह्म में योग द्वारा लीन होने का विधायक एक दर्शन शास्त्र।

योगक्षेम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नवीन वस्तु की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा, जीवन-निर्वाह, कुशल क्षेम, कुशल-मंगल, राज्य का सुप्रबंध।

योगज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अलौकिक संनिकर्ष। वि॰ योग संबंधी।

योगतत्व–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक उपनिषद्।

योगत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) योग का भाव।

योगदर्शन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) षट् दर्शनों में से एक जिसके कर्त्ता पतंजलि ऋषि हैं।

योगनिद्रा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) युगांत में विष्णु की नींद, जिसे दुर्गा मानते हैं (पुरा॰)।

योगपट्ट–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ध्यान के समय में पहनने का कपड़ा, **योगपट**।

योगफल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दो या अधिक संख्याओं के जोड़ने से प्राप्त संख्या (गणि॰), योग करने का परिणाम।

योगबल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) तपोबल, योगी को योग-साधन से प्राप्त शक्ति विशेष, योगसिद्धि (योग॰)।

योगभ्रष्ट–वि॰ यौ॰ (सं॰) योग से गिरा हुआ।

योगमाया–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवी, भगवती, विष्णु की शक्ति, महामाया, प्रकृति, यशोदा की कन्या जिसे कंस ने मारा था (भाग॰)।

योगरूढ़ि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ऐसी संज्ञा जो देखने में तो यौगिक संज्ञा सी हो किंतु अपना सामान्य शाब्दिक अर्थ छोड़कर विशेष सांकेतिक अर्थ दे (व्या॰)।

योगवशिष्ठ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वशिष्ठ-कृत एक वेदांत ग्रंथ।

योगशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शन, जिसमें योग साधन और चित्तवृत्ति-निरोध का विधान है।

योगसूत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महर्षि पतंजलकृत योग-संबंधी सूत्रों का संग्रह ग्रंथ।

योगांजन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सिद्धांजन।

योगात्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *योगात्मन्*) योगी।

योगाभ्यास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) योग शास्त्रानुसार योग के

अष्टांगों का अनुष्टान या साधन।

योगाभ्यासी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *योगाभ्यासिन्*) योग की क्रियाओं को बारंबार करने वाला, योगी।

योगारूढ़–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) योगी।

योगासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) योग करने के हेतु बैठने की रीतियाँ या ढंग।

योगिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रण-पिशाचिनी, तपस्विनी, योगाभ्यासिनी, योगिनी या आठ विशेष देवियाँ हैं:–शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंदमाता, कालरात्रि, चंडिका, कुष्मांडी, कात्यायनी, महागौरी, योगमाया, देवी। ज्योतिष में एक प्रकार का विचार।

योगिराज, योगींद्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वहुत वड़ा योगी, शिव, **योगीश**।

योगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *योगिन्*) योग के द्वारा सिद्धि-प्राप्त व्यक्ति, आत्मज्ञानी, योग की क्रियाओं का अभ्यासी, शिव, महादेव, **जोगी** (दे॰)। यो॰ **योगी-यती**।

योगीनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महादेव जी।

योगीश, योगीश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बड़ा योगी, सिद्ध, तपस्वी, याज्ञवल्क।

योगीश्वरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवी, दुर्गा।

योगेंद्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रेष्ठ या बड़ा योगी।

योगेश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वड़ा भारी योगी, महात्मा, कृष्ण, शिव।

योगेश्वरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवी, दुर्गा।

योग्य–वि॰ (सं॰) उपयुक्त, लायक, अधिकारी, ठीक, विद्वान, क़ाबिल, उचित, पात्र, श्रेष्ठ, उपायी, उचित, माननीय, युक्ति लगाने वाला, सम्मानित, आदरणीय।

योग्यता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लियाकत, क्षमता, क़ाबलियत, पात्रता, श्रेष्ठता, गुण, औकात, सम्मान, प्रतिष्ठा, सामर्थ्य, बड़ाई, उपयुक्तता।

योजक–वि॰ (सं॰) मिलाने या जोड़ने वाला।

योजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **जोजन** (दे॰), परमात्मा, योग, संयोग, मिलान, दो या चार या आठ कोस की दूरी (मत-भेद)। वि॰ **योजनीय, योज्य, योजित**।

योजनगंधा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सत्यवती, ब्यास-माता, शांतनु की पत्नी।

योजना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नियुक्ति, व्यवहार, प्रयोग, मिलान, जोड़, मेल, रचना, बनावट, आयोजन, आगे के कामों की व्यवस्था। वि॰ **योजनीय, योजित**; (अं॰) प्लान, प्लानिंग।

योद्धा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *योद्धृ*) लड़ाका, लड़ने वाला, सिपाही, वीर, **योधा, जोधा** (दे॰)।

योधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

योधा, जोधा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *योद्धृ*) योद्धा।

योनि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) खानि, आकर, उत्पत्ति-स्थान, उद्गमस्थान। जीवों की जातियाँ, वर्ग या विभाग जो चौरासी लाख कही गई हैं; भग, **जननेन्द्रिय,** स्त्री-चिह्न, देह, शरीर, **जोनि** (दे॰)।

योनिज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भग या योनि से उत्पन्न होने वाले जीव।

योवा, योषित–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नारी, स्त्री।

यौं*†–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *यों*) यों, इस प्रकार।

यौ*†–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *यह*) यह।

यौगंधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शत्रु के अस्त्रों को निष्फल करने वाला एक अस्त्र।

यौगिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मिला हुआ, मिलित, दो या अधिक शब्दों के योग से वना शब्द, प्रकृति और प्रत्यय के योग से वना शब्द, अट्ठाईस मात्राओं के छंदों का नाम। वि॰ योग-संवंधी।

यौतक, यौतुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दायज, दहेज, **जहेज** (ग्रा॰) ब्याह में वर-कन्या को प्राप्त धन।

यौतिक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ज्योतिष*) ज्योतिष।

यौधेय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वीर, शूर, योद्धा, एक प्राचीन योद्धा जाति, एक प्राचीन देश।

यौवन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जीवन का मध्य भाग (काल), लड़कपन और बुढ़ापे के बीच का समय जो सोलह से पैंतीस वर्ष तक माना गया है, **जोवन** (दे॰), जवानी, तरुणता, तरुणाई।

यौवनलक्षण–वि॰ यौ॰ (सं॰) जवानी के चिह्न, लावण्य, सुन्दरता।

यौवनाश्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा मानधाता।

यौवराज्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) युवराज का पद, भाव या कर्म।

यौत्सना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ज्योत्सना, उजियाली रात।

र

र–संस्कृत तथा हिंदी की वर्णमाला में से अंतस्थों का दूसरा और समस्त वर्णों में 27वाँ अक्षर जिसका उच्चारण जिह्वाग्र भाग-द्वारा मूर्धा के स्पर्श करने से होता है। संज्ञा, पु. (सं.) कामोग्नि, आग, पावक, **सितार** का एक बोल।

रंक–वि. (सं.) दरिद्र, कंगाल, सुस्त, कंजूस, कृपण। संज्ञा, स्त्री. **रंकता**।

रंग–संज्ञा, पु. (सं.) नृत्य-गीत या अभिनय का स्थान, नाच-गान, नाच-गान का स्थान, आकर-भिन्न किसी दृश्य वस्तु का नेत्रानुभव जन्य गुण, युद्ध-स्थल, वर्ण (वस्तु, देह या मुख का), किसी वस्तु के रँगने का पदार्थ, रंगत, राँगा धातु। रंगशाला। **मु. (चेहरे का) रंग उड़ना या उतर जाना**–चेहरे की कांति या श्री का मिट जाना, हत-श्री या हत-प्रभ होना। **रंग निखरना (खिलना)**–चेहरे का साफ या चमकदार होना। **रंग बदलना**–अप्रसन्न या क्रोधित होना। **(मुख का) रंग फीका पड़ना**–चेहरे की कांति का मलिन हो जाना। **(गिरगिट सा) रंग बदलना**–किसी बात पर स्थिर या स्थायी न रहना, बात बदलना, दशा परिवर्तन करना। **मु. रंग उड़ जाना**–रंग फीका या उदास पड़ जाना, जवानी, यौवन, युवावस्था। **रंग करना**–खुशी करना, आनंद में समय बिताना। **रंग चढ़ना**–नशे में चूर होना। **रंग चूना या टपकना**–यौवन उभड़ना, जवानी प्रगट होना। सुषमा, शोभा, छवि, सुंदरता, छटा, प्रभाव, असर, आतंक। **मु. रंग खिल उठना**–कांति का बढ़ जाना। **रंग आ जाना (आना)**–गुण-वृद्धि होना, विशेषता आ जाना, मज़ा आ जाना। **रंग चढ़ना (चढ़ाना)**–प्रभाव पड़ना (डालना)। **रंग जमना**–असर या प्रभाव पड़ना, आतंक छा जाना। **रंग फीका होना (पड़ना)**–प्रभाव या कांति का कम होना। गुण महत्व का प्रभाव, धाक। **रंग दिखाना**–प्रभावातंक प्रगट करना। यौ. **रस-रंग**–क्रीड़ा-कौतुक, काम-क्रीड़ा, प्रेम क्रीड़ा। **मु. रंग जमाना (जमना) या बाँधना (बँधना)**–आतंक बैठाना (बैठना), प्रभाव डालना (पड़ना)। **रंग दिखाना**–प्रभाव, आतंक या महत्व दिखाना। **रंग देखना (दिखाना)**– परिणाम या निष्पत्ति देखना (दिखाना)। **रंग लाना**–फल, गुण या प्रभाव दिखाना। खेल, कौतुक, क्रीड़ा, उत्सव, आनंद। यौ. **रंग-रलियाँ (रँगरेलियाँ)**–आमोद-प्रमोद, मौज, **रँगरेली**। **रंग रलना**–मौज करना, आमोद-प्रमोद करना। **मु. रंग में भंग पड़ना**–आनंद में विघ्न पड़ना (होना)। युद्ध, समर, दशा, हाल। जैसे-क्या रंग है। **मु. रंग बिगड़ना (बिगाड़ना)**–हालत खराब होना (करना)। **रंग मचाना**–संग्राम में खूब लड़ना। **रंग (रारि) रचाना (मचाना)**–होली में खूब रंग फेंकना, मन की उमंग, आनंद, मज़ा। **मु. रंग जमना**–अति आनंद होना, आतंक या महत्व या प्रभाव फैलना या होना, खूब मज़ा होना। **रंग मचाना**–(युद्ध में) धूम मचाना। **रंग रखना**–महत्व या प्रभाव रखना। **रंग रचना**–उत्सव करना। **रंग होना**–आतंक या प्रभाव होना। दशा, अद्भुत कांड, दृश्य, प्रसन्नता, व्यापार, कृपा, प्रेम, ढंग, रीति, चाल। यौ. **राग-रंग**–आमोद-प्रमोद, नाच-गान। यौ. रंग-ढंग–हाल, दशा, तौर-तरीका, चाल-ढाल, व्यवहार, लक्षया, बरताव। **मु. रंग में भंग होना (करना, डालना)**–आनंद या अच्छे काम में विघ्न पड़ना (करना या डालना)। **मु.–रंग मारना**–विजय पाना, बाज़ी जीतना। **रंग रातना**–गहरा प्रेम या अति मित्रता। **रंग लगना**–अधिकार फैलाना, प्रभाव जमाना।

रंगक्षेत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रंगभूमि, नाटक की जगह, तमाशे या जलसे का स्थान।

रंगत–संज्ञा, स्त्री. (हि. *रंग+त प्रत्य.*) आनंद, मज़ा, अवस्था, दशा, रंग का भाव।

रंगतरा–संज्ञा, पु. (हि. *रंग*) मीठी और बड़ी नारंगी, संगतरा, **संतरा** (दे.)।

रँगना–क्रि. स. (हि. *रंग+ना प्रत्य.*) रंग में डुबो कर किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना, रंगीन करना, निज प्रेम में किसी को फँसाना, स्वानुकूल करना। क्रि. अ. किसी पर मोहित या आसक्त होना। (स. रूप–**रँगाना**, **प्रे.** रूप–**रँगवाना**)।

रंगनाथ–संज्ञा, पु. (सं.) एक विष्णु-मूर्ति, दक्षिण में वैष्णवों

का मुख्य तीर्थ।

रंगबिरंगा–वि. यौ. (हि. *रंग-बिरंग*) कई रंगों वाला, विचित्र, **चित्रित**।

रंगभवन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रंगमहल, **रंगभौन** (दे.), भोग-विलास करने का स्थान।

रंगभूमि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) तमाशे या जलसे का स्थान, नाटक खेलने की जगह, नाट्यशाला, अखाड़ा, युद्धस्थल, **मल्लशाला,** रणभूमि।

रंगमहल–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *रंग+ महल अ.*) रंगभवन, रंगमन्दिर, भोग-विलास करने का स्थान, **रंगागार, रंगसदन**।

रंगरली–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि. *रंग+रलना*) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल।

रंगरस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल।

रंगरसिया–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *रंग+ रसिया*) रसिक-विलासी, भोग-विलास करने वाला।

रंगराज, रंगराट्–संज्ञा, पु. (सं.) श्रीकृष्ण जी।

रँगराता–वि. यौ. (हि.) प्रेम या अनुराग से पूर्ण।

रंगराग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आमोद-प्रमोद, रसरंग, **रागरंग**।

रँगरूट–संज्ञा, पु. दे. (अ. *रिक्रूट*) पुलिस या सेना का नया सिपाही, किसी काम का आरंभ करने वाला आदमी।

रंगरूप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आकार-प्रकार, चमक-दमक, रंग-ढंग।

रँगरेज–संज्ञा, पु. (फ़ा.) कपड़े रँगने वाला। *स्त्री.* **रंगरेजिन**। संज्ञा, स्त्री. **रँगरेजी**।

रँगरेली†–संज्ञा, स्त्री. (हि.) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल।

रंगशाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) नाटक खेलने का स्थान, नाट्यशाला, **प्रेक्षागृह** (नाट्य.)।

रंगसाज़–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) वस्तुओं पर रंग चढ़ाने वाला, रंग बनाने वाला, **रंगसाज़** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **रंग साज़ी**।

रंगस्थल, रंगस्थली–संज्ञा, पु. (स्त्री.) यौ. (सं.) उत्सव या क्रीड़ा-कौतुक का स्थान, रंगशाला।

रंगी–वि. (हि. *रंग+ई प्रत्य.*) आनंदी, मौजी, प्रसन्नचित्त, विनोदी।

रंगीन–वि. (फ़ा.) रंगदार, रँगा हुआ, विलास-प्रिय, आमोद-प्रिय, मज़ेदार। संज्ञा, स्त्री. **रंगीनी**।

रँगीला–वि. (हि. *रंग+ईला प्रत्य.*) रसिया, रसिक, आनंदी, प्रेमी, सुंदर। स्त्री. **रँगीली**।

रंगोपजीवी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नट।

रंच, रंचक*–वि. दे. (सं. *न्यंच*) अल्प, थोड़ा, किंचित्।

रंज–संज्ञा, पु. (फ़ा.) शोक, दुख, खेद। वि. रंजीदा।

रंजक–वि. (सं.) रँगने वाला, प्रसन्न करने वाला। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रंच=अल्प*) बंदूक या तोप की प्याली में रखी जाने वाली तेज़ और थोड़ी सी बारूद, उत्तेजक या भड़काने वाली बात।

रंजन–संज्ञा, पु. (सं.) रँगने की क्रिया, मन के प्रसन्न करने की क्रिया, लाल चंदन, छप्पय का 50वाँ भेद (पिं.)। वि. **रंजनीय, रंजित**।

रंजना*–क्रि. स. दे. (सं. *रंजन*) प्रसन्न या हर्षित करना, स्मरण करना, भजना, रँगना।

रंजनीय–वि. (सं.) आनंददायक, रँगने योग्य।

रंजित–वि. (सं.) रँगा हुआ, प्रसन्न, अनुरक्त।

रंजिश–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) रंज होने का भाव, शत्रुआ, वैर, मनमुटाव, मनोमालिन्य।

रंजीदा–वि. (फ़ा.) दुखित, शोकाकुल, अप्रसन्न। संज्ञा, स्त्री. **रंजीदगी**।

रंडा–संज्ञा, पु. (सं.) वैधव्य, वेश्या, राँड़, बेवा।

रंडापा–संज्ञा, पु. (हि. *राँड़+आपा प्रत्य.*) वैधव्य, विधवापन, विधवा की दशा।

रंडी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रंडा*) वेश्या, पतुरिया।

रंडीबाज़–संज्ञा, पु. (हि. *रंडी+बाज़* फ़ा.) वेश्यागामी। संज्ञा, स्त्री **रंडीबाज़ी**।

रंडुआ, रँडुवा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *राँड़+उआ प्रत्य.*) जिसकी स्त्री मर गई हो।

रंति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) क्रीड़ा। यौ. **रंतिदेव**–एक राजा।

रंद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रंध्र*) रोशनदान, प्रकाश-छिद्र, झरोखा, किले की दीवालों में बंदूक या तोप चलाने के लिए छेद मार।

रंदना–क्रि. स. दे. (हि. *रंदा+ना प्रत्य.*) रंदे से छील कर लकड़ी को चिकना या बराबर करना।

रंदा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रदन=काटन, चीरना*) लकड़ी को छीलकर साफ़, चिकना और समतल करने का एक औज़ार (बढ़ई)।

रंधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रंधन*) रसोइया, रसोई बनाने वाला।

रंधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रसोई बनाना, पकाना, **राँधना** (दे॰)।

रंभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गंभीर नाद, भारी शब्द, बाँस, एक बाण।

रंभन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आलिंगन, भेंटना। वि॰ **रंभनीय**।

रंभा, रम्भा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) केला, वेश्या, एक देव अप्सरा (पुरा॰), उत्तर दिशा। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रंभ*) दीवाल आदि के खोदने का लोहे का एक मोटा भारी डंडा, गदाला।

रँभाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रंभण*) गाय का शब्द करना या बोलना।

रंभित–वि॰ (सं॰) बजाया या शब्द किया हुआ, आलिंगित।

रँहचटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रहस+चाट*) चस्का, लालच, लोलुप, लालची।

रअय्यत, रइअत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) प्रजा, रिआया, **रैय्यत** (दे॰)।

रइनि*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रजनी*) **रैन, रात्रि**।

रई– संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ वि॰ (सं॰ *रय*) **खलर** (प्रान्ती॰) मथानी। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *रवा*) मोटा या दरदरा आटा, सूजी, चूर्ण। वि॰ स्त्री॰ (सं॰ *रंजन*) अनुरक्त डूबी या पगी हई, सहित, युक्त, मिली हुई, संयुक्त।

रईस–संज्ञा, पु॰ (अ॰) तअल्लुक़ेदार इलाक़े या रियासत वाला, अमीर, धनी, बड़ा आदमी। वि॰ संज्ञा, स्त्री॰ **रईसी**।

रउता–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) रायता, रइता, **रैता** (ग्रा॰)।

रउताई*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रावत+ आई प्रत्य॰*) स्वामित्व, ठकुराई, मिलकियत।

रउरे†–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *राव, रावल*) आप, जनाव, आदर-सूचक मध्यम पुरुष सर्वनाम।

रक़बा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) क्षेत्रफल।

रकबाहा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) घोड़े का एक भेद।

रक़म–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) लिखने की क्रिया का भाव, मोहर, छाप, संपत्ति, धन, गहना, धूर्त, चालाक, प्रकार। यौ॰ **रकम रकम के**–नाना प्रकार के।

रकाब–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) घोड़े के चारजामे या काठी का पावदान। **मु॰ रकाब पर (में) पैर रखना**–चलने को पूर्णतया तैयार होना।

रकाबदार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) ख़ानसामाँ, हलवाई, साईस।

रकाबी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) तश्तरी, छोटी छिछली थाली।

रक़ीब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) एक ही प्रेमिका के दो प्रेमी परस्पर रकीब हैं, सपत्र। संज्ञा, स्त्री॰ **रक़ाबत**।

रक्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रुधिर, लोहू, ख़ून, देह की नसों में बहने वाला लाल तरल पदार्थ, केसर, कुंकुम, कमल, ताँबा, ईंगुर, सिंदूर, लाल या रँगा चंदन, लालरंग, शिंगरफ, कुसुंभ। वि॰ (सं॰) लाल, सुर्ख, रँगा हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **रक्तता, रक्तिमा**।

रक्तकंठ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कोयल, बैंगन, भाँटा।

रक्तकमल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लाल कमल।

रक्तचंदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लाल या देवी चंदन।

रक्तज–वि॰ (सं॰) रक्त विकार से उत्पन्न रोग (वैद्य॰)।

रक्तता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लाली, सुर्खी, रक्तिमा।

रक्तपात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लोहू गिरना, रक्त बहाना, खून-खराबी, ऐसा झगड़ा जिसमें लोग घायल हों।

रक्तपायी–वि॰ (सं॰ *रक्तपयिन्*) लोहू या खून पीने वाला। स्त्री॰ **रक्तपायिनी**।

रक्तपित्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मुँह नाकादि से ख़ून बहने का रोग, नाक से लोहू बहना, नकसीब फूटना।

रक्तबीज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीदाना, अनार, एक दैत्य जो शुंभ-निशुंभ का सेनापति था, इसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरें उतने ही नए रूप, इस दैत्य के बन जाते थे (दु॰ स॰)।

रक्तवृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) व्योम से लोहू का लाल रंग के पानी का गिरना, रक्त-वर्षा।

रक्तस्राव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कहीं किसी अंग से लोहू वहना या निकलना।

रक्तातिसार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ख़ून के दस्त आना, खूनी बवासीर, बवासीर के मसों से रक्त आना।

रक्तार्श–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *रक्ताशस्*) खूनी बवासीर।

रक्तिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गुंजा, रत्ती, धुंबची, **घुमची** (दे॰)।

रक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रक्षक, रखवाला, रक्षा, छप्पय का 60वाँ भेद (पिं॰)। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *राक्षस्*) राक्षस।

रक्षक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रखवाला, रक्षा करने वाला, पहरेदार, **रच्छक** (दे॰)

रक्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रक्षा करना, बचाना, पालन-पोषण, **रच्छन** (दे॰)।

रक्षणीय–वि॰ (सं॰) रक्षा करने योग्य।

रक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रक्षण, बचाव, पालन पोषण, **रच्छा** (दे॰)

भूत-प्रेत या दृष्टिदोष से बचाने को बाँधने का सूत।

रक्षागृह–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूतिकागृह, जलाखोना।

रक्षाबंधन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रावण पूर्णिमा को हिंदुओं का एक त्यौहार, **सलोनी, सलूनों**।

रक्षामंगल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के हेतु की जाने वाली धार्मिक क्रिया।

रक्षित–वि. (सं.) जिसका बचाव या रक्षा की गई हो, पाला-पोषा।

रक्षी–संज्ञा, पु. (सं. *रक्षस्+ई प्रत्य.*) राक्षसोपासक, राक्षस पूजने वाला। संज्ञा, पु. **रक्षक**।

रक्ष्य–वि. (सं.) रक्षा करने या बचाने योग्य।

रख, रखा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) गोचर-भूमि।

रखना–क्रि. अ. दे. (सं.*रक्षण*) एक चीज़ दूसरी पर या में स्थापित करना, ठहरना, धरना, टिकाना, बचाना, रक्षा करना। स. रूप–**रखाना**, प्रे. रूप–**रखवाना**। यौ. **रख-रखाव**–रक्षा, व्यर्थ विनष्ट या बरवाद न होने देना, जोड़ना, सौंपना, गिरवी या रेहन करना, निज अधिकार में लेना (विनोद या व्यवहार के लिए), मुकर्रर करना, धारण करना, व्यवहार करना, ज़िम्मे लगाना, सिर मढ़ना, ऋणी होना, मन में धारण या अनुभव करना, संबंध करना (स्त्री या पुरुष से), उपपत्नी (उपपति) बनाना।

रखनी–संज्ञा, पु. (हि. *रखना+ई प्रत्य.*) **रखेली**, बैठाई या रखी स्त्री, मुरैतिन, उपपत्नी।

रखया–वि. स्त्री. दे. (सं. *रक्षा*) रक्षा करने वाली।

रखला–संज्ञा, पु. (दे.) छोटी तोप, तोप की गाड़ी या चर्ख।

रखवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रखना, रखाना*) **रखाई** (दे.) रखवाली, चौकीदार, रखवाली की मज़दूरी, रखाने या रखवाने का ढंग या काम। वि. संज्ञा, पु. (दे.) **रखवैया**।

रखवार*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रखवाला*) रखवाला, चौकीदार, रक्षक।

रखवाला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रखना+वाला प्रत्य.*) चौकीदार, पहरेदार, रक्षक।

रखवाली–संज्ञा, स्त्री. (हि. *रखना+वाली प्रत्य.*) रक्षा करने की क्रिया का भाव, चौकीदारी, **रखवारी** (दे.)।

रखाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रखाना+आई प्रत्य.*) रखवाली, रक्षा, हिफाज़त, रक्षा का भाव, क्रिया या मज़दूरी।

रखिया*†–संज्ञा, पु. (हि. *रखना+इया प्रत्य.*) रक्षक, रखने वाला, राख, **राखी**, रक्षा-सूत्र।

रखेली–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रखनी*) रखी या बैठारी स्त्री, उपपत्नी।

रग–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) देह की नाड़ी या नस। **मु. रग दबना**–दबाव मानना, किसी के अधिकार या प्रभाव में होना। **रग रग फड़कना**–देह में अति उत्साह या आवेश के चिह्न प्रगट होना। **रग रग में**–सारे शरीर में। पत्तों की नसें।

रगड़–संज्ञा, स्त्री. (हि. *रगड़ना*) रगड़ने की क्रिया या भाव, अर्पण, रगड़ने का निशान, अधिक श्रम झगड़ा, **रगर** (दे.); ज़िद, टेक।

रँगड़ना–क्रि. स. दे. (सं. *घर्षण या अनु.*) घिसना, पीसना, किसी कार्य को शीघ्रता से अति परिश्रम से करना, तंग करना, नष्ट करना। क्रि. अ. अति श्रम करना।

रगड़ा–संज्ञा, पु. (हि. *रगड़ना*) घर्षण, रगड़, अति श्रम, लगातार झगड़ा। यौ. रगड़ा-झगड़ा, अंजन।

रगण–संज्ञा, पु. (सं.) आद्यंत में गुरु और मध्य में लघु वर्ण वाला एक गण (ऽ।ऽ) (पिं.), काव्यादि में यह दूषित माना गया है।

रगरेशा–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा. *रग+रेशा*) पत्तियों की नसें, देह के भीतर का प्रत्येक अंग, किसी बात, विषय या व्यक्ति का संपूर्ण भाग। **मु. रगरेशा जानना**–सब बातें जानना।

रगेदना–क्रि. स. दे. (सं. *खेद*, हि. *खेदना*) भगाना, दौड़ाना, खदेढ़ना, तंग करना।

रघु–संज्ञा, पु. (सं.) अयोध्या के सूर्यवंशीय प्रतापी राजा, दिलीप के पुत्र और रामचंद्र के परदादा।

रघुकुल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा रघु का कुटुंब या वंश। यौ. **रघुकुलचंद्र**।

रघुनंदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीरामचंद्र जी।

रघुनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीरामचंद्र जी।

रघुनायक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीरामचंद्र जी।

रघुपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीरामचंद्र जी।

रघुराई*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *रघुराज*) श्रीरामचंद्र जी।

रघुराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीरामचंद्र जी, **रघुकुलनायक**।

रघुराय, रघुराया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रघुराज*) श्रीराम। "हा जगदेव वीर रघुराया"–रामा.।

रघुवंश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) महाराज रघु का कुटुंब या परिवार, महाकवि कालिदासकृत एक महाकाव्य।

रघुवंशी—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जो राजा रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो, क्षत्रियों की एक जाति। वि॰ **नघुवंशीय**।

रघुवर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीराम, **रघुवर** (दे॰)।

रघुवीर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रीराम।

रचना—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रचने का भाव या क्रिया, निर्माण, बनावट, बनाने का कौशल या ढंग, निर्मित पदार्थ, चमत्कारपूर्ण, गद्य या पद्य, लेख, काव्य। वि॰ **रचनीय**। स॰ रूप—**रचाना**, प्रे॰ रूप—**रचवाना**। क्रि॰ स॰ (सं॰ *रचन*) सिरजना, बनाना, ग्रंथ लिखना, निश्चित या विधान करना, ढालना, उत्पन्न या पैदा करना, कल्पना करना, क्रम से रखना, अनुष्ठान करना, काल्पनिक सृष्टि बनाना, शृंगार करना, सजना, सँवारना। **मु॰** रचि **रचि—बहुत ही कौशल और चतुरता** (होशियारी या कारीगरी) के साथ कोई काम करना। **बातें रचना**—मोहक, किंतु झूठी बातें बनाना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रंजन*) रंजित करना, रँगना, रंग देना, जैसे—पान या मेंहदी रचना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रंजन*) अनुरक्त होना, **रँगा** जाना, रँग चढ़ना, सुंदर बनाना।

रचयिता—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रचयितृ*) बनाने या रचने वाला, ग्रंथकार, लेखक।

रचाना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रंजन*) मेंहदी, महावर आदि से हाथ-पाँव रँगाना, पान से मुख लाल करना, सुंदर बनाना, **रचावना** (दे॰)। प्रे॰ रूप—**रचवाना**।

रचित—वि॰ (सं॰) रचा या बनाया हुआ।

रज—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रजस्*) स्तनपायी जीवों की मादा या स्त्रियों के प्रति मास योनि से 3 या 4 दिन निकलने वाला दूषित रक्त। आर्त्तव, ऋतु, कुसुम, रजोगुण, पानी, पाप, पुष्प-पराग, आठ परमाणुओं का मान। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धूल, गर्द, रात, प्रकाश, ज्योति। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रजत*) चाँदी। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रजक*) रजक, धोबी।

रजक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) धोबी। स्त्री॰ **रजकी**।

रजगुण—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रजोगुण*) रजोगुण।

रजत—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चाँदी, रूपा। लोहू, रक्त, सोना। वि॰ श्वेत, शुक्र, धवल, लाल।

रजताई*—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) *रजत*) श्वेतता।

रजधानी*—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *राजधानी*) राजधानी।

रजना—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *राल*) राल, धूप। * क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रंजन*) रँगा जाना। क्रि॰ स॰ रँगना, रँग में डुबाना।

रजनि, रजनी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रात, रात्रि, निशा, हलदी।

रजनीकार—संज्ञा, पु॰ (सं॰) शशांक, मृगांक, चंद्रमा, निशाकर, **निशानाथ**।

रजनीचर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) निशाचर, राक्षस, **रजनिचर** (दे॰)।

रजनीपति—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा, रजनीश, नक्षत्रेश।

रजनीमुख—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) संध्या।

रजनीश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा।

रजपूत*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राजपुत्र*) राजपूत, शूर-वीर, योद्धा, क्षत्रिय।

रजपूती†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *राजपूत+ई प्रत्य॰*) क्षत्रियत्व, वीरत्व, क्षत्रियता।

रजवहा—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ राज=*बड़ा+बहना हि॰) वह बडा बग्गा या गल जिससे और छोटे बम्बे निकले हों।* *यौ॰ (सं॰ रज=धूल+बहना)* नाला, चौपायों के चलने से बना धूल से भरा मार्ग, **गैड़हरा** (प्रान्ती॰)।

रजवाड़ा—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *राज्य+बाड़ा हि॰*) राज्य, देशी रियासत, राजा।

रजस्वला—वि॰ स्त्री (सं॰) ऋतुमती स्त्री, जिसे मासिक रज-स्राव हुआ हो।

रजा—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) इच्छा, मरजी, छुट्टी, स्वीकृति, आज्ञा, अनुमति।

रज़ार, रज़ाई—संज्ञा, स्त्री॰ *(सं॰ रजक=कपड़ा)* लिहाफ़, गर्द-भरा कपड़ा। संज्ञा, स्त्री॰ *(सं॰ राजा+आई हि॰ प्रत्य॰)* राजा होने का भाव, राजापन, राजाज्ञा, राजेच्छा। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *रज़ा*) रजाई, आज्ञा, छुट्टी, इच्छा मर्ज़ी।

रज़ाई-रज़ाय*—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *रज़ा*) आज्ञा, छुट्टी, मर्ज़ी, रज़ाइय (दे॰)।

रजाना—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *राज्य*) राज्य-सौख्य का उपभोग कराना।

रज़ामंद—वि॰ (फ़ा॰) जो किसी बात पर राज़ी हो सहमत। संज्ञा, स्त्री॰ **रज़ामंदी**।

रजाय, रजायसु*†—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *रज़ा*) स्वीकृति, आज्ञा,

आदेश, इच्छा, मरज़ी।
रज़ील–वि॰ (अ॰) नीच, छोटी जाति का।
रजोकुल*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राज= कुल*) राज-वंश।
रजोगुण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजस, सत्वादि तीन गुणों में से एक गुण, भोग-विलास या दिखावे की रुचि पैदा करने वाला प्रकृति का एक गुण या स्वभाव।
रजोदर्शन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्त्रियों का मासिक या ऋतु-धर्म, रजस्वला होना।
रजोधर्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्त्रियों का ऋतु या मासिक धर्म।
रजोवती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रजस्वला, ऋतुमती।
रज्जु–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रस्सी, **जेवरी** (ग्रा॰)। बागडोर, लगाम की डोरी।
रट–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किसी शब्द को बार-बार कहने की क्रिया।
रटन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घोषणा, बार-बार कहना। **मु॰ रटन लगाना**–किसी बात को बार-बार कहना, रटना।
रटना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *रट*) किसी शब्द को बार-बार कहना, बिना अर्थ-ज्ञान के एक ही शब्द का बारंबार कहना, बिना समझे याद करना। बार-बार शब्द करना या बजना, ज़बानी याद करने को बारंबार कहना।
रठ†–वि॰ (दे॰) शुष्क, रूखा, सूखा।
रण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) युद्ध, संग्राम, जंग, रन (दे॰)।
रणक्षेत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) युद्धस्थल, लड़ाई का मैदान।
रणछोड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रण+छोड़ना* हि॰) श्रीकृष्ण का एक नाम।
रणखेत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रणक्षेत्र*) युद्धस्थल।
रणभूमि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) रण-क्षेत्र, युद्ध-स्थल।
रणरंग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) युद्ध, युद्ध का उत्साह, युद्ध-क्षेत्र, रनरंग (दे॰)। वि॰ रणरंगी।
रणलक्ष्मी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) विजय-लक्ष्मी, विजय, जय श्री।
रणसिंघा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *रण+सिंघा* हि॰) नरसिंघा, तुरही,**रनसिंगा** (दे॰) एक बाजा।
रणस्तंभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विजय के स्मारक रूप में बनाया गया स्तंभ।
रण-स्थल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रण-भूमि युद्ध-क्षेत्र। स्त्री॰ **रण-स्थली**।
रणहंस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक वर्णिक छंद (पिं॰)।
रणांगण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **रणप्रांगण** युद्ध-क्षेत्र रण-भूमि, **रनांगन** (दे॰)।
रणित–वि॰ (सं॰) शब्दित, नादित, बजता हुआ।
रणना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) बजना।
रत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्त्री-प्रसंग, मैथुन, प्रेम, प्रीति। वि॰ आसक्त, अनुरक्त, लिप्त। *संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रक्त*) रक़्त, ख़ून।
रतजगा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *रात+जागना*) विहार, उत्सव या किसी त्योहार में सारी रात जागना।
रतन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रत्न*) रत्न, जवाहिर, मणि।
रतनजोति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रत्नज्योति*) एक प्रकार की मणि, एक छोटा क्षुप जिसकी जड़ से लाल रंग निकलता है।
रतनाकर, रतनागर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रत्नाकर*) समुद्र।
रतनार, रतनारा–वि॰ दे॰ (सं॰ *रक्त*) कुछ-कुछ लाल, सुर्खी लिए हुए।
रतनारी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *रतनार+ई प्रत्य॰*) एक प्रकार का धान। संज्ञा, स्त्री॰ लाली, लालिसा, सुर्खी।
रतनालिया*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *रतनारा*) रतनारा, लाल, सुर्ख़।
रतनियाँ–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार का चावल।
रतालू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रक्तालु*) बाराहीकंद, पिंडालू, एक प्रकार की जड़, **गेंठी**।
रति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दक्ष प्रजापति की परम सुंदरी कन्या और कामदेव की सौंदर्य की साक्षात् मूर्ति जैसी स्त्री, संभोग, कामक्रीड़ा, मैथुन, प्रेम, शोभा, शृंगार रस का स्थायी भाव (काव्य॰), नायक और नायिका की पारस्परिक प्रीति। क्रि॰ वि॰ (दे॰)–रती, रत्ती। *संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रात*) रात्रि, रैन।
रतिक, रतीक*†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *रत्ती*) रंचक, ज़रा सा, किंचित, तनिक, बहुत थोड़ा।
रतिदान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मैथुन, संभोग।
रतिनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।
रतिनायक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।
रतिनाह–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रतिनाथ*) कामदेव।
रतिपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।

रतिपद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक वर्णिक वृत्त (पिं॰)।

रतिप्रीता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) रति में प्रेम करने वाली नायिका (काव्य॰), कामिनी।

रतिबंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) काम-क्रीड़ा के आसन (कोक॰), मैथुन का ढंग।

रतिभवन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्मर-मंदिर, प्रेमी-प्रेमिकाओं का क्रीड़ा-स्थल, मैथुन-घर, योनि, भग, **रति-मंदिर**।

रतिमंदिर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रतिभवन, केलि-मंदिर, काम-मंदिर, भग, योनि।

रतिरमण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव, मैथुन, काम-केलि, **संभोग**।

रतिराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।

रतिवंत–वि॰ (सं॰) रतिवान्, रतिवाला, सुंदर, प्रेमी, प्रीतिवान्। स्त्री॰ **रतिवती**।

रतिशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामशास्त्र, काम-विज्ञान।

रतीश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव।

रतोपल*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रक्तोत्पल*) लाल कमल, लाल पत्थर। संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (**रक्त+उपल**)।

रतौंधी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *रात+अंधा*) एक रोग जिममें रात को बिलकुल दिखाई नहीं देता, **नक्तांध** (सं॰)।

रत्ती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रक्तिका*) धुँधली, गुंजा, स्वर्णादि तौलने में एक माशे की तौल का 8वाँ भाग। **मु॰ रत्तीभर**–तनिक या रंचक, थोड़ा-सा। वि॰ बहुत ही थोड़ा, किंचित्। *संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रति*) **शोभा, छवि**।

रत्न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कांतिमान, बहुमूल्य खनिज चमकीले पत्थर, मणि, जवाहिर, नगीना, माणिक, लाल, सर्वश्रेष्ठ।

रत्नगर्भ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र, सोगर। स्त्री॰ **रत्नगर्भा**।

रत्नगर्भा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) भूमि, पृथ्वी, बसुंधरा।

रत्नजटित–वि॰ यौ॰ (सं॰) जवाहिरात से जड़ा।

रत्ननिधि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र।

रत्नपरीक्षक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जौहरी।

रत्नपारखी–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रत्न+पारखी* हि॰) **रत्नपरीक्षक** (सं॰) जौहरी, रतनपारखी (दे॰)।

रत्नमाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) रत्नों, हीरों या मोतियों की बनी माला, **रत्न-हार**।

रत्नसानु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुमेरु पर्वत, देवलोक।

रत्नसिंहासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र, रत्नों की खानि, **रतनाकर** (दे॰)।

रत्नावली–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) **रतनावली** (दे॰) मणिमाला, रत्न राजि, मणि-समूह या श्रेणी, मणि-पंक्ति, एक अर्थालंकार जिसमें अन्य वस्तु-समूह के नाम प्रस्तुतार्थ के अतिरिक्त प्रगट होते हैं (अ॰ पी॰)।

रथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चार या दो पहियों की एक प्राचीन गाड़ी (हिंदू) **बहल, रब्बा** (प्रान्ती॰) शरीर, चरण।

रथकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रथ बनाने वाला, बढ़ई, एक वर्ण-संकर जाति विशेष।

रथगर्भक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिविका, पालकी।

रथगुप्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) रथ का परदा या ओहार।

रथपाद-रथचरण-रथचक्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पहिया, चाका।

रथयात्रा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) हिंदुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्र द्वितीया को होता है, **रथजात्रा** (दे॰)।

रथवान–(सं॰) पु॰ (सं॰ *रथवाह*) सारथी, रथ हाँकने या चलाने वाला।

रथवाह-रथवाहक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रथ चलाने वाला, सारथी, घोड़ा।

रथांग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पहिया, रथ का एक अंग।

रथांगनाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चक्रवाक।

रथांगपाणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु, श्रीकृष्ण।

रथिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रथी, रथ का सवार।

रथी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रथिन्*) रथ का सवार, एक सहस्र वीरों से अकेले लड़ने वाला। वि॰ रथारूढ़। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मृतक की अरथी, रत्थी।

रथोद्धता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 11 वर्णों का एक वर्णिक छंद।

रथ्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रास्ता, राह, सड़क, गली, मार्ग, नाली।

रद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दाँत। बेकाम, निकम्मा, बेकार।

रदच्छद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ओष्ठ, ओंठ।

रदछद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रदच्छद*) ओष्ठ। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रदक्षत*) कपोलों या ओंठों पर रति में चुम्बनादि से दाँतों का घाव (रति-चिह्न)।

रददान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कहीं पर दाँतों का यों दबाव डालना कि चिह्न बन जाएँ (रति चुंबन में)।

रदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दाँत, दंत, दशन।

रदनो–वि॰ (सं॰ *रदनिन्*) दाँत वाला।

रदपट, रद्पुट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ओंठ, ओष्ठ।

रद्द–वि॰ (अ॰) जो काट-छाँट या तोड़-फोड़ कर बदल दिया गया हो, व्यक्त, अस्वीकृत। यौ॰ **रद्द-बदल (रद्दो-बदल)**–हेर-फेर, फेर-फार, परिवर्तन। जो खराब या निकम्मा हो गया हो, बेकाम, व्यर्थ। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) क़ै, वमन।

रद्दा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) दीवाल पर ईंटों की येड़ी पंक्ति का एक चुनाव, स्तर, थाली में दीवाल के स्तर सा मिठाई का चुनाव, ऊपर-तले रखी चीज़ों की एक तह, महायुद्ध वालों की पीठ आदि पर मार (प्रान्ती॰)।

रद्दी–वि॰ (फ़ा॰ *रद*) व्यर्थ, निकम्मा, निष्प्रयोजन, बेकाम, बेकार।

रन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ रण) संग्राम, युद्ध। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *अरमय*) बन, जंगल। संज्ञा, पु॰ (दे॰) ताल, झील, साँभर का छोटा भाग।

रनकना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रणन शब्द करना*) पायजेब या घुँघुरू आदि का धीमा शब्द करना, बजना, झनकना, रुनकना (दे॰)।

रतना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रण*) बजाना, झनकार होना, शब्द करना।

रनबंका, रनबाँकुरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रण+बाँका* हि॰) योद्धा, शूरवीर।

रनवन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (वि॰ *रणवन*) भयानक बन, सहस, नाश, महाव्रत।

रनवादी*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रणवादी*) योद्धा, शूरवीर। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) रनवाद, रणवाद (सं॰)।

रनवास, रनिवास–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राज्ञीवास*) अंतःपुर। (हि॰ *रानीवास*) रानियों का महल, राजाओं का जनानख़ाना।

रनित*–वि॰ दे॰ (सं॰ *रणित*) बजता या झंकार करता हुआ।

रनिवास–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राज्ञीवास*) रानियों का महल, रानी लोक।

रनी*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रण+ई प्रत्य॰*) शूरवीर, योद्धा, लड़ाका।

रपट†–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *रपटना*) रपटने की क्रिया या भाव, फिसलाहट, दौड़, भूमि का ढाल। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अं॰ *रिपोर्ट*) इतला, सूचना, ख़बर।

रपटना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रफन*) नीचे या आगे को फिसलना, झटपना, शीघ्रता से चलना। सं॰ रूप–**रपटाना,** प्रे॰ रूप–**रपटवाना**।

रपट्टा†–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *रपटना*) फिसलाहट, फिसलाव, फिसलने की क्रिया, चपेट, दौड़-धूप, झपट्टा।

रफल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अं॰ *राइफल*) विलायती बंदूक। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *रैपर*) मोटी गरम और जाड़ों में ओढ़ने की चादर।

रफ़ा–वि॰ (अ॰) निवृत्त, दूर किया हुआ, शांत, दबाया हुआ, निवारित।

रफ़ा-दफ़ा–वि॰ यौ॰ (अ॰) निवृत्त, दूर किया हुआ, शांत, दवाया हुआ, निवारित।

रफ़ू–संज्ञा, पु॰ (अ॰) फटे वस्त्र के छेदों को तागों से भर कर ठीक करना।

रफ़ूगर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) रफ़ू करने वाला। •

रफ़ूचक्कर–वि॰ दे॰ यौ॰ (*अ॰ रफ़ू+चक्कर-हि॰*) चंपत, भग जाना।

रफ़्तगी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) माल का बाहर जाना, जाने का भाव।

रफ़्ता-रफ़्ता, रफ़्ते-रफ़्ते–कि॰ वि॰ (फ़ा॰) धीरे-धीरे, क्रम से, आहिस्ता-आहिस्ता।

रब, रब्ब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मालिक, परमेश्वर।

रबड़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *रबर*) बट या बरगद आदि की जाति के वृक्षों के दूध से बना एक विख्यात लचीला पदार्थ, बट-वर्ग का एक वृक्ष। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) रगड़ने का भाव या क्रिया, थकावट, श्रम, दौड़धूप।

रबड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रबड़ना*) औट कर गाढ़ा किया हुआ दूध, एक मिठाई।

रबदा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *ररबड़ना*) बोदा (ग्रा॰), कीचड़, चलने की थकी या श्रम।

मु॰ रबदा पड़ना–अति वर्षा होना।

रबर–संज्ञा, पु॰ (अं॰) रबड़।

रबाब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) सारंगी जैसा एक बाजा।

रबाबिया–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *रबाब*) रबाब बजाने वाला।

रबी–संज्ञा, स्त्री॰ (*अ॰ रबीब*) रब्बी (आ॰), बसंत ऋतु में काटी जाने वाली फ़सल।

रभस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेग, हर्ष, आनंद, औत्सुक्य, **अत्यातुरता**।

रम–संज्ञा, स्त्री॰ (*अं॰*) मदिरा, शराब विशेष। वि॰ सुन्दर। संज्ञा, पु॰ पति, कामदेव।

रमक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रमना*) झूले की पैंग, लहर, झकोरा, तरंग।

रमकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *रमना*) हिंडोला, झूला, झूलना, झूम-झूम कर या इतराते हुए चलना।

रमज़ान–संज्ञा, पु॰ (अं॰) एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोज़ा (व्रत) रहते हैं।

रमठ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रामठ*) हींग।

रमण–संज्ञा, पु॰ (अं॰) केलि, क्रीड़ा, विलास, गान, मैथुन, घूमना, स्वामी, पति, कामदेव, एक वर्णिक छंद (पिं॰)। वि॰ सुन्दर, प्रिय, मनोहर, रमने वाला।

रमणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्त्री, नारी।

रमणीक–वि॰ दे॰ (सं॰ *रमणीक*) सुन्दर, अच्छा, मनोरम, रुचिर। संज्ञा, स्त्री॰ **रमणीकता**।

रमणीय–वि॰ (सं॰) सुन्दर, मनोहर, अच्छा।

रमणीयता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दरता, मनोहरता, स्थाई या सब अवस्थाओं में रहने वाला माधुर्य या सौंदर्य (सा॰ द॰)।

रमता–वि॰ (हि॰ *रमना*) एक स्थान पर न रहने वाला, घूमता-फिरता, जैसे–रमता-जोगी। यौ॰ **रमतेराम**।

रमन*–संज्ञा, पु॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *रमण*) स्वामी, पति, रमण।

रमना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रमण*) कहीं ठहरना या रहना, विरमना, मज़ा उड़ाना, आनंद या मौज करना, व्याप्त होना, अनुरक्त होना, घूमना-फिरना, चल देना, लग जाना, भीनना। स॰ रूप–**रमाना**, प्रे॰ रूप–**रमवाना**। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *आराम या रमता*) चरागाह, वह रक्षित स्थान या घेरा जहाँ पशु पालने या शिकार आदि के लिए छोड़े जाते हैं, बाग़, कोई मनोहर सुन्दर हरा-भरा स्थान।

रमन्ना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) जाने या प्रवेश करने का आज्ञा-पत्र, गमन।

रमल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पाँसा फेंक कर भला-बुरा फल कहा जाता है।

रमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लक्ष्मी, संपत्ति।

रमाकांत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु भगवान।

रमानरेश*–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु भगवान।

रमानाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु।

रमानिकेत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु भगवान, **रमेश**।

रमानिवास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु भगवान, **रमानायक**।

रमापति–संज्ञा, पु॰ यौ (सं॰) विष्णु भगवान।

रमारमण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु भगवान।

रमित*–वि॰ दे॰ (हि॰ *रमना*) लुभाया हुआ, मोहित, मुग्ध।

रमूज़–संज्ञा, स्त्री॰ (*अ॰ रम्ज़ का वज॰*) इशारा, सैन, कटाक्ष, रहस्य, श्लेष, भेद, पहेली।

रमैती–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) खेती के कामों में किसानों की आपस की सहायता।

रमैनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रामायण*) कबीर के बीजक का एक खंड।

रमैया†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राम*) राम, भगवान, ईश्वर। *(हि॰ राम+ऐया प्रत्य॰)*। वि॰ दे॰ (हि॰ *रमना*) रमने वाला।

रम्माल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रमल फेंकने वाला।

रम्य–वि॰ (सं॰) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मनोरम।

रम्यता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दरता, मनोहरता।

रम्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रात। वि॰ रमणीय।

रम्हाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *रँभाना*) रँभाना, बोलना (गाय आदि)।

रय*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रज*) धूलि, रज, गर्द, मिट्टी। संज्ञा, पु॰ (सं॰) तेजी, वेग, प्रवाह, धारा, एेल के 6 पुत्रों में से चौथा पुत्र।

रयन*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रजनि*) रयनि, रेन (दे॰), रात्रि, रात।

रयना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *रंजन*) रंग से भिगोना या तर करना। क्रि॰ अ॰ संयुक्त या अनुरक्त होना, मिलना।

रयो–क्रि॰ स॰ (हि॰ *रयना*) रंगे, मिले।

रय्यत†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *रअय्यत*) **रैयत** (दे॰) भला, रियाया; जनता।

रय्या–संज्ञा, पु॰ (दे॰) राय, राजा।

रंरकार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ररना*) रकार की ध्वनि, ब्रह्म-द्योतक

शब्द (ओंकार का अनु.)—कबी.।

ररकना†—क्रि. अ. (*अनु.*) पीड़ा देना, सालना, कसकना। संज्ञा, स्त्री **ररक**।

ररना†—क्रि. अ. दे. (सं. *रटन*) रटना, एक ही शब्द या बात को बार-बार कहना।

ररिहा*†—संज्ञा, पु. दे. (हि. *ररना+हा प्रत्य.*) ररने वाला, रटुआ या रुरुआ पक्षी, भारी भिखारी।

रलना*†—क्रि. अ. दे. (सं. *ललन*) सम्मिलित होना, एक में मिलना। स. रूप—**रलाना**, प्रे. रूप—**रलवाना**।

रलाना—क्रि. अ. (दे.) मिलाना।

रली—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ललन=क्रीड़ा, केलि*) विहार, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द।

रल्लक—संज्ञा, पु. (सं.) कम्बल, पश्मीने का कंबल।

रव—संज्ञा, पु. (सं.) शब्द, गुंजार, नाद, शोर-गुल, आवाज़। संज्ञा, पु. दे. *‡(सं. *रवि*) सूर्य।

रवकना—क्रि. अ. (हि. *रमना=चलना*) दौड़ना, उछलना, कूदना, उमँगना।

रवताई*—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रावत+आई प्रत्य.*) स्वामित्व, रावता, प्रभुत्व, राव या राजा का भाव।

रवना*—क्रि. अ. दे. (सं. *रमण*) केलि या क्रीड़ा या रमण करना। क्रि. अ. (हि. *रव*) शब्द करना। ‡ संज्ञा, पु. दे. (सं. *रावण*), **रावना** (दे.), रावण।

रवनि, रवनी*—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रमणी*) स्त्री, पत्नी, सुन्दरी, रमणी।

रवन्ना—संज्ञा, पु. (फ़ा. *रवाना*) माल आदि के ले जाने या ले आने का आज्ञा-पत्र, राहदारी का परवाना, रवाना किए माल का ब्यौरा, बीजक।

रवा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *रज*) रेज़ा, कण, टुकड़ा, सूजी, बारूद का दाना, एक प्रकार का शुद्ध देशी सोना। वि. (फ़ा.) उचित, उपयुक्त चलनसार, प्रचलित। संज्ञा, पु. (दे.) परवाह, इच्छा, चिन्ता।

रवाज, रिवाज—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) चलन, रीति, रस्म, प्रथा, चाल, परिपाटी, प्रणाली।

रवादार—वि. (फ़ा.) संबंधी, लगाव रखने वाला वि. (दे.) आश्रित। वि. (हि. *रवा+फ़ा. दार-प्रत्य.*) कण या दाने वाला।

रवानगी—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) प्रयाण, प्रस्थान, कूच, **चाला** (दे.), रवाना होने का भाव या किया।

रवाना—वि. (फ़ा.) प्रस्थित, कूच होना भेजना, चल देना।

रवानी—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) प्रवाह, गति।

रवायत—संज्ञा, स्त्री. (अ.) कहानी, क़िस्सा, परम्परा।

रवारबी—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *रवा+रवी अनु.*) शीघ्रता, जल्दी।

रवि—संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य, मदार, आव, नायक, अग्नि, सरदार, रबि (दे.)।

रविक—संज्ञा, पु. (दे.) पेड़।

रविकुल—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य-वंश।

रविचंचल—संज्ञा, पु. (सं.) काशी का लोलार्क तीर्थ।

रविज-रविजात—संज्ञा, पु. (सं.) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार।

रविजा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) यमुना।

रवितनय—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यमराज, शनिश्चर, सुग्रीव कर्ण, अश्विनीकुमार।

रवितनया—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यमुना।

रविनंदन—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण अश्विनीकुमार।

रविनंदिनी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यमुना।

रविपुत्र—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य का बेटा, यम आदि रवितनय।

रविप्रिय—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कमल, अकवन।

रविप्रिया—संज्ञा, स्त्री. (सं.) सूर्य की स्त्री या पत्नी।

रविपूत*—संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *रविपुत्र*) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार।

रविमंडल—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य का गोला, सूर्य के चारों ओर का लाल गोला, रवि-बिंब।

रविमणि—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सूर्य-कांतिमणि, आतशी शीशा।

रविवाण—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जिस वाण के चलाने से सूर्य का सा प्रकाश हो।

रविवार—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एतवार, आदित्यवार।

रविश—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) चाल, गति, ढंग, तरीक़ा, क्वारियों के बीच की छोटी राह।

रविसुअन-रविसुवन—संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं.) रवितनय, सूर्य-पुत्र।

रवैया‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *रविश, रवा*) रीति, चलन, व्यवहार, चाल-ढाल, ढंग, प्रथा। यौ॰ **रीति-रवैया**।

रश्क–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) डाह, ईर्ष्या।

रश्मि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किरण, घोड़े की लगाम, बाग। यौ॰ **रश्मिमाली**–सूर्य, चन्द्र।

रस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रसना का ज्ञान, स्वाद, रस छः प्रकार के हैं–मधरु, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कवाय (वैद्य॰) छः की संख्या, देह की 7 धातुओं में से प्रथम धातु, तत्व या सार, काव्य और नाटक से उत्पन्न मन का एक भाव या आनंद (साहित्य॰), काव्य में शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त 9 रस हैं, नौ की संख्या, आनंद। **मु॰ रस भीजना या भीगना**–जवानी का प्रारंभ होना। प्रीति, प्रेम, स्नेह। यौ॰ **रसरंग**–प्रेम, क्रीड़ा, केलि। वेग, जोश। **रसरीति**–स्नेह का व्यवहार। यौ॰ **गोरस**–दूध, दही आदि। केलि, बिहार, काम-क्रीड़ा, उमंग, गुण, द्रवपदार्थ, पानी, शरबत, पारा, धातुओं की भस्म (वैद्य॰), रमण और सगण (केश॰), भाँति, प्रकार, मन की मौज या इच्छा, हृदय की तरंग। क्रि॰ वि॰ (दे॰) धीरे-धीरे, **रसे-रसे** (दे॰)।

रसकपूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रस+कर्पूर*) एक श्वेत औषधि जो उपधातु मानी जाती है (वैद्य॰)।

रसकेलि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) काम-क्रीड़ा, विहार, दिल्लगी, हँसी।

रसगुनी†–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रसगुणी*) काव्य और संगीत का ज्ञाता, रसज्ञ।

रसगुल्ला–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *रस+गोला*) छेने की एक मिठाई।

रसग्रह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रसा, जीभ।

रसज्ञ–वि॰ (सं॰) भावुक, रसिक, रस-ज्ञानी, काव्य और संगीत का मर्मज्ञ, कुशल, दक्ष, निपुण। संज्ञा, स्त्री॰ **रसज्ञता**।

रसज्ञा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रसना, जिह्वा।

रसता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रस का धर्म या भाव, **रसत्व** (सं॰)।

रसद–वि॰ (सं॰) सुख या आनंद देने वाला, स्वादिष्ट, मजेदार। संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) बखरा, बाँट, खाने-पीने की सामग्री। **मु॰ हिस्सा-रसद**–विभाजन में उचित हिस्सा मिलना, बिना पकाया कच्चा अनाज।

रसदार–वि॰ (सं॰ *रस+दार* फ़ा॰) रसपूर्ण, रस-युक्त, स्वादिष्ट, मज़ेदार, रसीला।

रसन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चावना, स्वाद लेना, ध्वनि, जिह्व।

रसना–संज्ञा, स्त्री॰ (स॰) जिह्वा, जीभ, जबान। **मु॰ रसना-खोलना**–बोल चलना। **रसना (जीभ) तालू से लगाना**–बोलना बंद करना। रस्सी, लगाम, जिह्वानुभवित स्वाद। क्रि॰ अ॰ (हि॰) गीला होकर द्रव वस्तु छोड़ना, धीरे-धीरे टपकना या बहना। **मु॰ रस-रस या रसे-रसे**–धीरे-धीरे। रस लेना या रस में निमग्न, तन्मय होना, प्रेम में अनुरक्त होना, स्वाद लेना।

रसनेंद्रिय–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) जीभ, जिह्वा, रसना।

रसपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चन्द्रमा, **रसाधिप, रसाधिपति,** राजा, पारा, शृंगार रस।

रसप्रबंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नाटक, एक ही विषय का सरस, सम्बद्ध काव्य वर्णन।

रसभरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (अं॰ *रैस्प बेरी*) एक स्वादिष्ट फल।

रसभीना–वि॰ यौ॰ (हि॰ *रस+भीनन*) हर्ष-मग्न, आर्द्र, गीला, तर। स्त्री॰ **रसभीनी**।

रसम, रस्म–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) रीति, रिवाज़, चाल, प्रथा।

रसमसा–वि॰ दे॰ (हि॰ *रस+मस अनु॰*) अनुरक्त, आनंद-मग्न, गीला। स्त्री॰ **रसमसी**।

रसराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पारा, पारद, शृंगार रस।

रसरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रस्सी*) रस्सी, डोरी, **जौरी, लस्सी** (दे॰)।

रसल–वि॰ दे॰ (हि॰ *रसीला*) रसीला।

रसवंत–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रसवत्*) रसिक, प्रेमी। वि॰ रसीला, रस-भरा।

रसवंती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रसवती*) रसोई, **रसवती,** रसौत।

रसवत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह अलंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस या भाव का ढांग हो (अ॰ पी॰)। वि॰ रस-युक्त, या रस तुल्य, रसवाला।

रसवत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रसौत (औप॰)। वि॰ स्त्री॰ **रसवती** (सं॰) रस वाली, रसयुक्त। संज्ञा, स्त्री, रसोई, पृथ्वी।

रसवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रेमानंद की बातचीत, मनोरंजक

वार्तालाप, विनोद-वार्ता, हँसी-दिल्लगी, छेड़छाड़, बकवाद।

रसवादी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रस को काव्य में प्रधान मानने वाले; मज़ा लेने वाले।

रसविरोध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक ही पद्य में दो विरोधी रसों की स्थिति (काव्य.)।

रसांजन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रसौत, सहजन।

रसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अवनि, पृथ्वी, भूमि, बसुधा, जिह्वा, जीभ। संज्ञा, पु. हि. रस) तरकारी का मसालेदार रस, शोरबा।

रसाई–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) पहुँच, संबंध।

रसातल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पृथ्वी का तल भाग, पृथ्वी के नीचे 7 लोकों में से 6 वाँ लोक (पुरा.)। **मु. रसातल में पहुँचाना (भेजना)**–बरबाद या तबाह होना, कर देना), मिट्टी में मिलना या मिला देना। **रसातल में जाना**–पतित या विनष्ट होना।

रसादार–वि. (हि. *रसा+दार* फ़ा. *प्रत्य.*) मसालेदार, रस-युक्त तरकारी, शोरबेदार, रस वाला।

रसापाई–संज्ञा, पु. (सं.) जीभ से पीने वाला जीवधारी।

रसायन–संज्ञा, पु. (सं.) धातूपधातुओं की भस्म, वह औषधि जिसके सेवन से मनुष्य बुड्ढा और बीमार नहीं होता (वैद्य.)। वस्तुओं के तत्वों का ज्ञान। वि. **रसायन शास्त्र**।

रसायन विद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वह विद्या जिसमें पदार्थों या धातुओं के मिलाने और अलग करने की विधि उनकी तत्व विवेचना तथा परिवर्तन, रूपान्तरादि कही गई है, पदार्थ-विद्या।

रसायनशास्त्र–संज्ञा, पु. (सं.) रसायन विद्या, या विज्ञान, वह शास्त्र या विद्या जिसमें पदार्थों के मूल तत्वों की विवेचना हो और उनके मिलाने और अलगाने की विधियों तथा तत्वों के परिवर्तन से पदार्थों के परिवर्तनादि का कथन हो, विज्ञान-शास्त्र, पदार्थ-विद्या, वस्तु-विज्ञान, तत्व-विद्या। (अं.) कैमिस्ट्री।

रसायनिक–वि. दे. (सं. *रासायनिक*) रासायनिक, रसायनशास्त्र संबंधी, रसायन शास्त्र का ज्ञाता।

रसाल–संज्ञा, पु. (सं.) आम, गन्ना, ऊख, गेहूँ, कटहल। वि. स्त्री **रसाला**–रसीला, मीठा, मधुर, मनोरमा, सुंदर। संज्ञा, पु. (अ. *हरसाल*) राजस्व कर, महसूल।

रसालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रसमंदिर, रसभवन, रस-स्थान, रसशाला, आम्रवृक्ष, पृथ्वी का आलय, भूगर्भ-सदन।

रसालस–संज्ञा, पु. (सं. *रसाल*) कौतुक।

रसालिका–वि. स्त्री. (सं. *रसालक*) मधुर, छोटा आम।

रसावर, रसावल–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रसौर*) ऊख के रस में पके चावल, **रसियाउर, रसौर** (दे.)।

रसाव–संज्ञा, पु. (हि. *रसना*) रसने की क्रिया का भाव।

रसिक–संज्ञा, पु. (सं.) रसस्वाद का ज्ञाता, रस का स्वाद लेने वाला, सहृदय, काव्य का मर्मज्ञ, भावुक, रसिया, अच्छा मर्मज्ञ या ज्ञाता, एक छंद (पिं.)।

रसिकता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सरसता, रसिक होने का भाव या धर्म, हँसी-ठट्ठा।

रसिक बिहारी–संज्ञा, पु. यो. (सं.) श्री कृष्ण जी।

रसिकई, रसिकाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रसिकता*) रसिक होने का भाव या धर्म, हँसी-ठट्ठा।

रसित–संज्ञा, पु. (सं.) शब्द, ध्वनि।

रसिया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रसिक*) रसिक। लो. फागुन में गाया जाने वाला एक गाना (ब्रज.)।

रसियाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रसौर*) रसोर, ऊख के रस में पके चावल।

रसीद–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) प्राप्ति-पत्र, स्वीकृति-पत्र, मिलने या पाने का प्रमाण-पत्र, प्राप्ति, पहुँच, **रिसीट** (अं.)।

रसीला–वि. (हि. *रस+ईला प्रत्य.*) रसदार, रस से भरा, रसयुक्त, सरस, स्वादिष्ट, आनंद-भोगी, रसिया, मनोरम, सुंदर, बाँका स्त्री. **रसीली**।

रसूम–संज्ञा, पु. (अ.) रस्म का बहुवचन; नियम, कानून, नेग, **लाग** (प्रान्ती.) प्रचलित प्रथानुसार दिया धन।

रसूल–संज्ञा, पु. (अ.) पैग़ाम्बर, ईश्वर-दूत।

रसेस–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *रसेश*) **रसेश,** श्रीकृष्ण जी।

रसोइया–संज्ञा, पु. (हि. *रसोई+इया प्रत्य.*) रसोईदार, रसोई बनाने वाला, **बावर्ची** (फ़ा.)।

रसोंई, रसोई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रस+सोई प्रत्य.*) भोजन पदार्थ जो पकाया गया हो (सं. **रसवती**)। मु. **रसोई जीमना**–भोजन करना। **रसोई तपना**–भोजन पकाना। पाकशाला, भोजनालय, चौका, **रसोइया** (ग्रा.)।

रसोईघर–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) पाकशाला, भोजनालय।

रसोईदार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रसोई+ दार फ़ा. प्रत्य.*) रसोइया, रसोई बनाने वाला।

रसोन–संज्ञा, पु. (सं.) लहसुन।

रसौन–संज्ञा, स्त्री. (सं. *रसौद्र भूत*) रसवत, दारुहलदी की लकड़ी या जड़ को पानी में पकाकर बनाई गई एक औषधि।

रसौर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रस+और प्रत्य.*) ऊख के रस में पके हुए चावल।

रसौली–संज्ञा, स्त्री. (दे.) शरीर में गिलटी निकलने का एक रोग (वै.)।

रस्ता–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *रास्ता*) राह, मार्ग, रास्ता। मु. **रास्ते पर आना (लाना)**–ठीक कार्य करना (कराना)। **रास्ता बताना**–धोखा देना, बहलाना, टालना। रीति, रसम (दे.)।

रस्म–संज्ञा, पु. (अ.) मेल-जोल। यौ. **राहरस्म**–व्यवहार, चाल, रिवाज़, परिपाटी, प्रणाली, रस्म। **रिवाज़, रीति,** रस्म, रसूम (दे.)।

रस्मि*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रश्मि*) रश्मि, रस्सी, किरण।

रस्सा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रसना*) बहुत ही मोटी रस्सी। स्त्री. *अल्पा.* **रस्सी**।

रस्सी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रस्सी*) रज्जु, डोरी, **रसरी, लस्सी** (दे.) **लजुरी** (प्रान्ती.)।

रहँचटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रस+चाट*) प्रेम का चसका, लिप्सा, चाट या चाह, वि.।

रहँटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रहँट*) सूत कातने का चर्खा।

रहचह–संज्ञा, स्त्री. (अनु.) पक्षियों का शब्द, चिड़ियों की चहचहाहट।

रहन–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रहना*) आचार, व्यवहार, रहने की क्रिया का भाव। (दे.) चने के साग में बेसन का मेल प्रा. गिरवी।

रहनसहन–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि. *रहना+सहना*) चाल, व्यवहार, जीवन निर्वाह, का ढंग, चालढाल, तौर-तरीका।

रहना–क्रि. अ. दे. (सं. *राज–विराजना*) ठहरना, रुकना, थमना, स्थित होना, निवास या अवस्थान करना या होना। **मु. रह जाना, रह चलना**–रुक जाना, ठहर जाना, बिना गति या परिवर्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान या निवास करना, टिकना, बसना, उपस्थित या विद्यमान होना, चुपचाप या शान्ति-संतोष से समय बिताना, कोई काम या चलना बन्द करना। **मु. रह जाना**–कुछ कार्यवाही न करना, सफल न होना, लाभ न उठा पाना, संतोष करना। कामकाज या नौकरी करना, स्थित या स्थापित होना, जीना, छूट जाना, जीवित रहना। यौ. **रहासहा**–बचाखुचा, बचा-बचाया, अवशिष्ट, भूतार्थ में था या थे, जैसे–**मु. (अंग आदि का) रह जाना**–थक या शून्य हो जाना, शिथिल हो जाना। **रह जाना**–पीछे छूट जाना, अशिष्ट रहना, खर्च या व्यवहार से बचना।

रहनि*–संज्ञा, स्त्री. (हि. *रहना*) रहन, प्रीति, प्रेम, स्नेह, रहने का ढंग या भाव।

रहम–संज्ञा, पु. (अ.) दया, कृपा, करुणा, अनुग्रह, अनुकंपा। यौ. **रहमदिल**–कृपालु, दयालु। संज्ञा, स्त्री. **रहमदिली**। संज्ञा, पु. (अ. *रहम*) गर्भाशय।

रहमत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) पढ़ने के लिए पुस्तक रखने की एक छोटी चौकी।

रहस–संज्ञा, पु. (सं. *रहस*) गुप्त भेद, सुखमय लीला, छिपी बात, क्रीड़ा, आनंद, गूढ़तत्त्व, मर्म, एकांत स्थान। (ब्र.) एक प्रकार का नाटक या लीला-कौतुक या नाच।

रहसना–क्रि. अ. (हि. *रहस+ना प्रत्य.*) प्रसन्न या आनंदित होना।

रहस-बधावा–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *रहस+बधाई*) विवाह की एक रीति।

रहस्य–संज्ञा, पु. (सं.) गुप्त भेद, मर्म या भेद की गोप्य बात, गूढ़तत्व, मज़ाक़। यौ. **रहस्यवाद**–गूढ़ दार्शनिक भाव-पूर्ण काव्य (आधु.)। वि. **रहस्यवादी**।

रहाइस–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रहना*) निवास, टिकाव, स्थिति, वास।

रहाना*–क्रि. अ. दे. (हि. *रहना*) होना, रहना, रखना।

रहाष–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रहना*) स्थिति, टिकाव, रहन।

रहित–वि. (सं.) बिना, हीन, बगैर।

रहिला, लहिला–संज्ञा, पु. (दे.) चना, अन्न।

रहीम–वि. (अ.) दयावान्, दयालु, कृपालु। संज्ञा, पु. (अ.)

ईश्वर; अब्दुल रहीम खानखाना का उपनाम।

राँग-राँगा–संज्ञा, पु. (सं. *रंग*) एक सफ़ेद कोमल धातु, भंग, रंग।

राँच*†–अव्य. दे. (सं. *रंच*) तनिक, किंचित, रंचक।

राँचना†–क्रि. अ. दे. (सं. *रंजन*) प्रेम करना, चाहना, अनुरक्त होना, रंग पकड़ना। क्रि. स. (दे.) रँगना, रंग चढ़ाना, रचना, बनाना।

राँजना–क्रि. अ. दे. (सं. *रंजन*) सुरमा, अंजन या काजल लगाना। क्रि. स.–रँगना, रंजित करना, राँगे से फूटे बरतन की मरम्मत करना।

राँड़–वि. स्त्री. दे. (सं. *रंडा*) बेवा, विधवा, रंडी, वेश्या। संज्ञा, स्त्री. **रँड़ापा** (दे.)।

राँध–संज्ञा, पु. दे. (सं. *परांत*) पड़ोस, परोस, समीप, पास। वि. परिपक बध्दि वाला, ज्ञानी।

राँधना–क्रि. अ. दे. (सं. *रंधन*) चावल या दाल आदि पानी में पकाना, पाक करना।

राँभना–क्रि. अ. दे. (सं. *रंमण*) गाय का बोलना या चिल्लाना, बँबाना।

राई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *राजिका*) छोटा सरसों जैसा एक तिलहन, अति अल्प मात्रा या परिमाण। **मु. राई-नौन उतारना**–दृष्टि दोष मिटाने के लिए राई और नमक को उतार कर आग में डालना। **राई से पर्वत करना, राई का पहाड़ बनाना**–थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना। **राई-काई करना**–टुकड़े-टुकड़े कर डालना, नष्ट करना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजा*) राजा, श्रेष्ट।

राउ-राऊ*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजा*) राजा।

राउर*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजपुर*) अंतःपुर, रनवास, रनिवास। सर्व. वि. (व्र.) आप का, श्रीमान् का।

राउल*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजकुल*) राजा, राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति।

राका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पूर्णिमा, पूर्णमासी की रात्रि।

राकापति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा।

राकेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा, **राकेस** (दे.)।

राक्षस–संज्ञा, पु. (सं.) असुर, दैत्य, निशाचर, दुष्ट जीव। स्त्री. **राक्षसी**। एक प्रकार का व्याह जिसमें युद्ध से कन्या छीन ली जाती है।

राख–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रक्षा*) भस्म, ख़ाक़, **विभूति**।

राखना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *रक्षण*) रखना, आरोप करना, बचाना, रक्षा या रखवारी करना, छल करना, छिपाना, रोक रखना, जाने न देना, ठहरा लेना, बताना।

राखी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रक्षा*) रक्षा बंधन का डोरा, रक्षा, **रखिया** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *राख*) भस्म, ख़ाक़। क्रि. स. (दे.) रक्षा करना, बचाना, छिपाना, रखना।

राग–संज्ञा, पु. (सं.) प्रीति, प्रेम, स्नेह, मत्सर, द्वेष, ईर्ष्या, पीड़ा, कष्ट, किसी प्रिय या इष्ट वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा, सांसारिक सुखों की लालसा या चाह, एक वर्णिक छंद (पिं.), रंग विशेष, लाल रंग, लाली, महावर, **अलता** (*प्रान्ती.*) अंगराग, देह में लगाने का सुगंधित लेप। धुनि विशेष में बैठाए स्वर, गाने की ध्वनि, जिसके 6 भेद हैं:–भैरव, मलार, मेप, श्री, सारंग, हिंड़ोल, वसंत, दीपक (मत भेद है)। **मु. छापना (अपना) राग अलापना**–अपनी ही बात कहना। **राग लगाना**–किसी बात का सिलसिला जारी करना।

रागना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *राग*) अनुरक्त होना, अनुराग करना; रँगजाना, मग्न, लीन या रंजित होना, डूबना। क्रि. अ. दे. (सं. *राग*) अलापना, गाना।

रागनी-रागिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) संगीत के 6 रागों में से प्रत्येक राग का 5 वाँ भेद; छत्तीस रागिनी हैं फिर प्रत्येक रागिनी के दो-दो भेद हैं, अतः बहत्तर राग-पत्नियाँ या भार्य्याएँ मानी गई हैं (संगी.)।

रागी–संज्ञा, पु. (सं. *रागिन*) प्रेमी, स्नेही, अनुरागी, 6 मात्राओं के छंद (पिं.)। स्त्री. **रागनी**। वि. रंगा हुआ, रँगीला, लाल, विषयी, विषय में फँसा (विलो. **विरागी**)। वि. रँगने वाला, राग गाने वाला, राग जानने वाला, गवैया। *‡संज्ञा, स्त्री. (सं. *राज्ञी*) रानी।

राघव–संज्ञा, पु. (सं.) रघुवंशीय, श्रीराम चन्द्र जी।

राचना–क्रि. स. दे. (हि. *रचना*) रचना, बनाना, सजाना। क्रि. अ. (दे.) बनना, रचा जाना। क्रि. अ. दे. (सं. *रंजन*) रँगा जाना, प्रेम में मगन या अनुरक्त होना, डूबना, प्रेम करना, रंजित या निमगन होना, प्रसन्न होना, शोभित होना, रुचिर रोचक या भला लगना, चिंता या सोच में पढ़ना।

राछ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रक्ष*) कोरी या जुलाहों के कपड़ा नीचे-ऊपर उठाने और गिराने का एक यंत्र, कारीगरों का एक औज़ार, जलूस, बारात।

राज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राज्य*) राज्य, शासन, हुकूमत, राजा। (अल्प॰) जैसे कविराज, धर्मराज। **मु॰ राज पर बैठना**–राज-सिंहासन पर बैठना। **राज-राजना (करना, भोगना)**–राज्य करना, अति सुख से रहना। यौ॰ **राज-काज**–राज प्रबंध, राज्य-शासन। **राज-पाट**–राज-सिहासन, शासन। एक राजा से शासित देश, राज्य, जनपद राजय-अधिकार, अधिकर काल। **मु॰ (किसी का) राज्य होना**–पूर्ण स्वतन्त्र अधिकार होना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राजन्*) राजा, राजगीर।

राज–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) रहस्य, भेद।

राजकन्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राजा की बेटी, राजसुता, राज-तनया, राज-किशोरी, राज पुत्री, राज-कुमारी।

राज-कर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह महसूल या कर जो राजा प्रजा से लेता है, लगान, खिराज।

राजकीय–वि॰ (सं॰) राजा या राजय संबंधी, राजा का।

राजकीय महासभा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राजा की सभा, राज-दरबार, शाह दरबार।

राजकुँअर-राजकुँवर–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राजकुमार*) राजा का बेटा, राज-पुत्र। स्त्री॰ **राजकुँवरि**।

राजकुटुम्ब–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का पुत्र। स्त्री॰ **राजकुमारी**।

राजकुमार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का पुत्र। स्त्री॰ **राजकुमारी**।

राजकुल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राज-वंश राज-परिवार।

राजकृत्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का कार्य या कर्त्तव्य।

राजकोश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का ख़ज़ाना, राज्य और ख़ज़ाना।

राजगद्दी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राजा+गद्दी*) राज-सिंहासन, नृपासन।

राजगिरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मगध देश का एक पहाड़ (भू॰), **राजगृह**, पटना।

राजगीर–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *राज+गृह*) ईंट, पत्थर से घर बनाने वाला, राज, थवई (प्रान्ती॰)।

राजगृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का महल, राज-प्रासाद, पढ़ने के समीप एक स्थान, गिरिब्रज (प्राचीन मगध की राजधानी)।

राजतरंगिणी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कल्हण कवि-रचित काश्मीर का संस्कृत इतिहास।

राजतिलक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजगद्दी के मिलने का उत्सव, राज्याभिषेक।

राजत्–वि॰ (सं॰) चाँदी-संबंधी या रजत्-निमित।

राजत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा का पद, राजा का शासन, राजा का भाव या कार्य। यौ॰ **राजत्वकाल**।

राजदंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह दंड जो किसी को किसी राजा की आज्ञा से दिया जावे।

राजदंत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) और दाँतों से बड़ा तथा चौड़ा बीच का दाँत।

राजदूत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का धावन, राजा का चिट्ठीरसाँ, किसी राजा के द्वारा दूसरे राजा के यहाँ भेजा गया विशेष संवादवाहक अधिकारी।

राजद्रोह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा या राज्य के प्रति द्रोह, बग़ावत। वि॰ **राजद्रोही**।

राजद्वार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राज की ड्योढ़ी, न्यायालय।

राजधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आमात्य, मंत्री।

राजधर्म्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का धर्म का कर्तव्य, वह धर्म जिसे राजा मानता हो।

राजधानी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किसी देश का शासन केन्द्र, राजा के रहने का नगर, देश-शासक के निवास का नगर।

राजना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *राजन*) शोभित या विराजमान होना, रहना, उपस्थित होना।

राजनीति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कानून, राजा का शासन-नियम, धर्मशास्त्र।

राजनीतिक–वि॰ यौ॰ (सं॰) राजनीति संबंधी, **राजनैतिक** (दे॰)।

राजन्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा, क्षत्रिय।

राजपंखी–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राजपक्षिन्*) **राजपक्षी**, हंस, बहुत बड़ा पक्षी, **राजपच्छी** (दे॰)

राजपंथ-राजपथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *राजपंथ*) **राजमार्ग**, सड़क, चौड़ी गली, राजा की बनवाई बड़ी सड़क।

राजपत्नी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राजा की रानी, राजा की स्त्री।

राजपुत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राज-कुमार, राजा का लड़का, एक वर्ण संकर जाति, **राजपूत** (दे॰)। स्त्री॰ **राजपुत्री**।

राजपुरुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राज्य का कर्मचारी।

राजपूत–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राजपुत्र*) **रजपूत** (दे॰), राजा का बेटा, राजपुत्र, राजपूताने में क्षत्रियों के खास खास वंश। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **राजपूती, रजपूती**।

राजपूताना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रदेश जहाँ राजपूत रहते हैं (भारत); राजस्थान।

राजप्रसाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजमहल, राज-वेश्म, राजमहल, राजसदन।

राजबाड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *राजवाटिका*) राजवाटिका, राजप्रासाद।

राजभक्त–वि॰ यौ॰ (सं॰) राज्य या राजा में भक्ति करने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **राजभक्ति**।

राजभक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राज्य या राजा के प्रति श्रद्धा या प्रेम।

राजभवन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **राजभौन** (दे॰), राजा का महल, राज-मंदिर, राज-प्रासाद, **राजसदन**।

राजभोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दोपहर का नैवेद्य, एक महीन धान; एक प्रसिद्ध छैने की मिठाई।

राजमंडल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी राज्य के आस-पास के राज्य, राजाओं की सभा, समिति या समूह।

राजमंदिर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजभवन, राज-सद्म, राज-महल।

राजमहल–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राजन्+महल*) राजभवन, राजमंदिर, संथाल परगने का एक पहाड़।

राजमान–वि॰(सं॰) विराजमान, बैठा हुआ।

राजमार्ग– संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(सं॰)* चौड़ी और बड़ी सड़क, शाही सड़क, **राजपथ**।

राजयक्ष्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *राजयक्ष्मन्*) यक्षमा या क्षय रोग, तपेदिक, **राजरोग**।

राजयोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह योग-क्रिया जो पतंजलि के योग दर्शन में बताई गई है। (योग), जनम-कुंडली में राजा करने वाले ग्रहों का योग (ज्यो॰)।

राजराज–संज्ञा, पु॰ यौ (सं॰) कुबेर, चंद्रमा, सम्राट।

राजराजेश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **राजराजेश**, महाराजा, महाराजाधिराज, राजाओं का राजा। स्त्री॰ **राजराजेश्वरी**।

राजराणी-राजारानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राजराज्ञी*) महाराणी, राजा की रानी, रामग्रहिषी।

राजरोग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) यक्षमा या क्षय रोग, गहन और असाध्य रोग (वै॰)।

राजर्षि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजवंशीय या क्षत्रिय जाति का ऋषि, तपोबल से ऋषि हुआ राजा।

राजलक्ष्मी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) **राजश्री**, राजवैभव, राजा की शोभा या कांति।

राजलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राज-महल।

राजवंत–वि॰ (हि॰ *राज+वंत*) नृप कर्म-युक्त, राज्य-युक्त।

राजवंश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा का कुटुम्ब या कुल, राज-कुल।

राजवर्त्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *राजवर्त्मन्*) राज-पथ, राज मार्ग।

राजवार–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *राज द्वार*) राजद्वार।

राजविद्रोह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजद्रोह, बगावत, गदर। वि॰ **राजविद्रोही**।

राजशासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा की हुकूमत, राज-दंड।

राजश्री–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राजलक्ष्मी, **राजसिरी** (दे॰)।

राजसंसद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजसभा, राजदरबार।

राजस–वि॰ (सं॰) रजोगुण, रजोगुणी, रजोगुणोत्पन्न। संज्ञा, पु॰ कोप, आवेश। स्त्री॰ **राजसी**।

राजसत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राजशक्ति, राज्य की सत्ता।

राजसभा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) राजा का दरबार, राजाओं की सभा।

राजसमाज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजाओं का समाज या दरबार, राजमंडली, राजसभा।

राजसारस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मोर, मयूर।

राजसिंहासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी, राजासन।

राजसिक–वि॰ (सं॰) रजोगुणी, रजोगुणोत्पन्न।

राजसी–वि॰ (हि॰) राज के योग्य, राजाओं का सा, बहुमूल्य।

राजसूय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चक्रबर्ती सम्राट् के करने योग्य यज्ञ, जिसमें अन्य राजा सेवक बनते हैं।

राजस्थान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भारत का एक प्रांत, राजा का स्थान। वि. संज्ञा, राजस्थान की भाषा। स्त्री. **राजस्थानी**।

राजस्व–संज्ञा, पु. (सं.) राज-कर।

राजहंस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक बड़ा हंस, सोना पक्षी। स्त्री. **राजहंसी**।

राजा–संज्ञा, पु. (सं. *राजन्*) नृप, भूपाल, प्रभु, स्वामी, अधिपति, किसी देश या समाज का मुख्य शासक और रक्षक, मालिक, अंग्रेज़ी सरकार से बड़े रईसों को मिलने वाली एक उपाधि, प्रिय, पति, सुन्दर (व्यंग्य-आयु.)। स्त्री. सं. **राज्ञी,** हि. रानी।

राजाज्ञा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) राजा का आदेश या हुक्म।

राजाधिराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सम्राट, शाहंशाह, राजाराजेश्वर, राजाओं का राजा।

राजानक–संज्ञा, पु. (सं.) संस्कृत-काव्य शास्त्र के एक प्रमुख लेखक, राजानक कय्यक (सं.) आधीन राजा।

राजाभियोग–संज्ञा, पु. यो. (सं.) प्रजा की इच्छा के विरुद्ध राजा का कार्य करना।

राजावर्त्त–संज्ञा, पु. (सं.) लाजवर्त नामक एक उपरत्न, **लाजवर्द** (दे.)।

राजि-राजी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अवलि, पाँति, पंक्ति, श्रेणी, कतार, रेखा, राई।

राजिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राई, पंक्ति, रेखा, लकीर, श्रेणी।

राजित–वि. (सं.) शोभित, विराजित।

राजिव*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजीव*) कमल, राजाव।

राजी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पंक्ति, श्रेणी।

राज़ी–वि. (अं.) सुखी, खुश, प्रसन्न, सम्मत, नीरोग, अनुकूल, कही बात के मानने में तैयार, **राजी** (दे.)। यौ. **राज़ी-खुशी**–क्षेम कुशल।

राज़ीनामा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) स्वीकृति या सम्मति पत्र, अनुकूलता का लेख, वादी-प्रतिवादी की परस्पर एकता या मेल का लख।

राजीव–संज्ञा, पु. (सं.) कमल।

राजीव गण–संज्ञा, पु. (सं.) 18 मात्राओं का एक छंद (पिं.)।

राजुक–संज्ञा, पु. (सं.) मौर्य वंशीय राजाओं के समय का सूबेदार या राज-कर्मचारी।

राजेन्द्र-राजेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजाओं का प्रधान, राजाओं का मुखिया, राजाधिराजा, राजेश। स्त्री. **राजेश्वरी**।

राजोपजीवी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राज-कर्मचारी।

राज्ञी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रानी, राज-महिषी, सूर्य की स्त्री, संज्ञा।

राज्य–संज्ञा, पु. (सं.) राजा का कार्य, शासन, एक राजा से शासित देश।

राज्यतंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राज्य की शासन-रीति। (विलो. **प्रजातंत्र**)।

राज्य व्यवस्था–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) राज्य नियम, कानून, राज-नीति, **राज्य-विधान**।

राज्यभिषेक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजसूय यज्ञ में या राजसिंहासन पर बैठते समय राजा का अभिषेक या तिलक, राजा-गद्दी पर बैठने की रीति, राज्य-प्राप्ति, राज्यारोहण।

राट्–संज्ञा, पु. (सं.) राजा, सरदार, श्रेष्ठ पुरुष।

राटुल–संज्ञा, पु. (*देश.*) सबसे बड़ा तराजू जो लट्ठों में टाँगा जाता है, **तख** (प्रान्ती.)।

राठौर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राष्ट्रकूट*) दक्षिणी भारत का एक राज-वंश, क्षत्रियों की एक जाति।

राड़–वि. दे. (हि. *राढ़*) नीच, निकम्मा, भगोड़ा, डरपोक, कायर।

राढ़–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *राटि*) **रार,** लड़ाई, झगड़ा, कादर, कायर, निकम्मा।

राढ़ि–संज्ञा, पु. (सं.) उत्तरीय बंगाल देश का भाग।

राढ़ी–संज्ञा, पु. (*देश.*) राढ़ देशीय ब्राह्मण।

राणा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राट्*) राजा, **राना** (देश.)।

राणी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *राज्ञी*) रानी।

रात–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रात्रि*) दोषा, त्रियामा, निशा, यामिनी, रात्रि, रजनी, राति, संध्या से प्रभात तक का समय।

राता*–वि. दे. (सं. *रक्त*) लाल, सुर्ख, रंगीन, रँगा हुआ, अनुरक्त, आसक्त।

रातिचर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रात्रिचर*) निशाचर, राक्षस।

रातिय–संज्ञा, पु. (अ.) पशुओं का भोजन।

रातुल–वि. दे. (सं. *रक्तालु*) लाल, सुर्ख।

रात्रि–संज्ञा, पु. (सं.) रात, निशा, यामिनी, रजनी।

रात्रिचारी–संज्ञा, पु. (सं.) निशाचर, निश्चर, राक्षस। वि. रात में चलने या खाने वाला। स्त्री. **रात्रिचारिणी**।

राद्ध–वि. (सं.) सिद्ध किया या पकाया हुआ।

राध–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सिद्धि, साधन, संज्ञा, स्त्री॰ (देश॰) मवाद, कान की पीव। संज्ञा, पु॰ (सं॰) धन।

राधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साधना, मिलना सन्तोष, प्राप्ति, साधन, तुष्टि।

राधना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *आराधना*) पूजा या आराधना करना, सिद्ध या करना, काम निकालना।

राधा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) राधिका, वृषभानु, पुत्री और कृष्ण-प्रिया; धनियाँ, बैसाख की पूर्णमासी, बिजली, प्रेम, प्रीति, वर्णिक वृत्त (पिं॰)।

राधारमण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **राधापति, राधाप्रिया,** श्री कृष्ण जी।

राधावल्लभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **राधाकान्त,** श्री कृष्ण जी, **राधावर**।

राधावल्लभी, राधावल्लभीय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक वैष्णव संप्रदाय।

राधिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **कृष्ण-कान्ता, कृष्ण-प्रिया,** राधा जी, वृषभानु-पुत्री। 22 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं॰)।

रान–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) जाँघ, जंघा।

राना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राट*) राणा। क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *राचना*) अनुरक्त होना।

रानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *राजा*) राजा की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन।

राब–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *द्रावक*) औटा कर गाढ़ा किया गन्ने का रस, गीला गुड़।

राबड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रबड़ी*) औटा कर गाढ़ा किया दूध।

राम–संज्ञा, पु॰ ईश्वर, विष्णु के दशावतारों में से एक, अवध नरेश रघुवंशीय राजा दशरथ के बड़े कुमार श्रीरामचंद्र, परशुराम, बलराम। **मु॰ रामशरण होना**–विरक्त या साधु होना, मर जाना। **राम-राम करना**–भगवान का नाम जपना, अभिवादन या प्रणाम करना। **राम-राम करके**–बड़ी कठिनता से। **राम-राम सत्त हो जाना**–मर जाना। **यौ॰ राम-राम**–प्रणाम, तृष्णा जुगुप्सा सूचक। आत्मा, ईश्वर, भगवान, एक मात्रिक छंद (पिं॰) 3 की संख्या।

राम कहानी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰) दुख भरी या बड़ी कथा।

रामकली–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक रागिनी (संगी॰)।

रामगिरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वामटेक, नागपुर के पास की एक पहाड़ी।

रामगीती–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक मात्रिक छंद जिसमें छत्तीस मात्राएँ होती हैं (पिं॰)।

रामचंद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा दशरथ के 4 पुत्रों में से सर्व-श्रेष्ठ और ज्येष्ठ पुत्र जो विष्णु के प्रमुख अवतारों में माने जाते हैं।

रामटेक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राम*+हि॰ *टेक–पहाड़ी*) नागपुर के जिले की एक पहाड़ी, रामगिरि।

रामतरोई–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भिंडी।

रामता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रामपन, राम का गुण, अभिरामता, सुन्दरता।

रामतारक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राम जी का मंत्र (ॐ रां रामाय नमः)।

रामदल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रामचंद्र जी की वानरी सेना, अति बड़ी और प्रबल सेना जिससे लड़ना दुस्तर हो।

रामदाना–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *राम+दाना* फ़ा॰) चौराई या मरसे सा एक पौधा जिसके दाने बहुत छोटे होते हैं।

रामदास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हनुमान जी, महाराज शिवाजी के गुरु।

रामदूत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हनुमान जी।

रामधनुष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इन्द्र-धनुष।

रामधाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बैकुंठ, साकेत लोक।

रामनवमी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) चैत्र, शुक्र नवमी, **रामनौमी** (दे॰)।

रामनामी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *रामनाम+ई प्रत्य.*) राम नाम छपा वस्त्र, एक प्रकार के साधु, गले का एक गहना, एक प्रकार की माला।

रामफल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरीफा, **सीताफल**।

रामबाँस–संज्ञा, पु॰ (हि॰) एक मोटी जाति का बाँस, केतकी या केवड़ का सा एक पौधा जिसके पत्तों के रेशों से रस्से बनते हैं, **हाथी चिग्घार** (प्रान्ती॰)।

रामरज–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) साधुओं के तिलक लगाने की

पीली मिट्टी।

रामरस–संज्ञा, पु. (हि.) नमक, नोन।

रामराज्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राम का राज्य, प्रजा के लिए अति सुखद राज्य का शासन, **रामराज** (दे.)।

रामलीला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) राजचंद्र जी का चरित्र या उसका नाटक या अभिनय।

रामबाण–वि. (सं.) सधा सिद्ध, तुरन्त प्रभाव दिखलाने वाली अमोघ औषधि, लाभदायक, उपयोगी औषधि, अचूक दवा। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रामशर, रामसायक।

रामशर–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रकार का सरकंडा या नरसल, राम का बाण।

रामसनेही–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राम-स्नेहिन्*) वैष्णवों का एक संप्रदाय। वि. यौ. राम का प्रेमी, राम का भक्त।

रामसेतु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रामेश्वर के पास समुद्र पर रामचंद्र का बनवाया हुआ पुल, या वहाँ के पत्थर-समूह।

रामा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुन्दर स्त्री, सीता, राधा, लक्ष्मी, रुक्मिणी नदी, इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा से मिलकर वना एक उपजाति वृत्त, आर्य्याछंद का 17 वाँ भेद, आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं.)

रामानंद–संज्ञा, पु. (सं.) रामावत (रामानंदी) नामक एक प्रसिद्ध वैष्णव मत के आचार्य (14 वीं शताब्दी वि.) कबीर इन्हीं के चेले थे।

रामानंदी–वि. (सं. *रामानंद+ई प्रत्य.*) रामानंद के संप्रदाय वाला साधु।

रामानुज–संज्ञा, पु. (सं.) श्री वैष्णव संप्रदाय के एक विख्यात-मत-प्रवर्तक आचार्य जिन्होंने वेदान्त दर्शन पर भाष्य किया है, इनका वेदान्त-वाद विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

रामायण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आदि कवि महर्षि वाल्मीकि कृत आदिकाव्य (संस्कृत रामायण) जिसमें राम-चरित्र का वर्णन किया गया है। तुलसीकृत रामचरित मानस (भाषा-रामायण)।

रामायणी–वि. दे. (सं. *रामायणीय*) रामायण संबंधी, रामायण का। संज्ञा, पु. (सं. *रामायण+ई प्रत्य.*) रामायण की कथा कहने वाला।

रामायुध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) धनुष।

रामावत–संज्ञा, पु. (सं.) आचार्य रामानन्द का चलाया एक वैष्णव मन या संप्रदाय।

रामिल–संज्ञा, पु. (सं.) पति, कामदेव।

रामेश्वर–संज्ञा, पु. (सं.) दक्षिण भारत में समुद्र तट के मंदिर का शिवलिंग तथा वह स्थान, **रामेसुर** (दे.)।

राय–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजा*) राजा, सामंत, सरदार, बंदीजनों या भाटों की पदवी। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) परामर्श, सम्मति, अनुमति, सलाह, मत। यौ. **रायसाहब, रायबहादुर**– उपाधियाँ (अंग्रेज़-सरकार)।

रायज–वि. (अ.) प्रचलित, चलनसार, जिसका रिवाज हो।

रायता–संज्ञा, पु. दे. (रां. *राजिकाक्त*) नमकीन दही में पढ़ा हुआ शकादि, **रइता, रैता, रौता** (दे.)।

राजभोग–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *राजभोग*) राजभोग, दोपहर का भोजन या नैवेद्य।

रायमानिया–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार का चावल, **रैमुनियाँ** (दे.)।

रार, रारि–संज्ञा, दे. (सं. *राटि*) तकरार, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा। वि. **रारी**।

राल–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक विशेष बड़ा पेड़, इस पेड़ का गोंद या निर्यास, धूप। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लाला*) पतला लसीला थूक, **लार** (दे.)। **मु. राल गिरना, चूना या टपकना**–किसी पदार्थ के लेने की अति लालसा होना।

राव, राउ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजा*) राजा, राय, भाट। यौ. **रावसाहब, रावबहादुर**–उपाधियाँ (अंग्रेज़ सरकार)।

रावटी, राउटी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *रावट*) कपड़े का छोटा घर-जैसा डेरा, छौलदारी, बारादरी, एक प्रकार का पत्थर।

रावण–संज्ञा, पु. (सं. *रावयतीति रावणः*) लंका का दस सिर और 20 भुजा वाला एक परम प्रसिद्ध राक्षस नायक या राजा, दशानन, दशकंधर, **रावन, रावना** (दे.)।

रावणि–संज्ञा, पु. (सं.) रावण का पुत्र, मेघनाद, **रावणी** (दे.)।

रावत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजपुत्र*) छोटा राजा, शूरवीर, बहादुर, सरदार, सामंत, **राउत** (दे.), एक क्षत्रिय जाति।

रावर-रावरा-रावरो–सर्व. (दे.) राउर (अव.), आपका। स्त्री. **रावरी**। संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजपुर*) रनिवास, राजमहल,

अंतरपुर।

रावल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजपुर*) राजमहल, रनिवास, अंतःपुर। संज्ञा, पु. दे. (सं. *राजुल*) सरदार, प्रधान, मुखिया, राजा, राजा की उपाधि (राजपूताना)। स्त्री. **रावलि, रावली**।

राशि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) समूह, ढेर, पुंज, किसी का उत्तराधिकार, क्रांतिवृत्त के बारह तारा-समूह जो मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ ओर मीन कहे जाते हैं, **राशी** (दे.)।

राशिचक्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मेषादि बारह राशियों का मंडल या चक्र, भचक।

राशिनाम–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *राशिनामन्*) किसी मनुष्य का वह नाम जो उसकी राशि के अनुसार रखा जावे।

राशीश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) किसी राशि का स्वामीग्रह, **राशिपति, राशीश्वर**।

राष्ट्र–संज्ञा, पु. (सं.) राज्य, देश, प्रजा, किसी राज्य या देश के निवासी लोगों का समुदाय।

राष्ट्रकूट–संज्ञा, पु. (सं.) राठौर।

राष्ट्रतंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राज्य-शासन रीति या प्रणाली।

राष्ट्रपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जनता का चुना हुआ प्रधान राज्य-शासक (आधु. प्रजातंत्र)।

राष्ट्रीय–वि. (सं.) राष्ट्र-संबंधी, राष्ट्र का, अपने राष्ट्र या देश का।

रास–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें मंडल बाँध कर नाचा जाता था, एक प्रकार का नाटक जिसमें श्रीकृष्ण जी की रास-लीला होती है, **रहस** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. (अ.) बाग-डोरी, लगाम। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *राशि*) ढेर, समूह, **रासि** (दे.), एक छंद (पिं.), पशुओं का झुंड, जोड़, दत्तक पुत्र, ब्याज। वि. (फ़ा. *रास्त*) अनुकूल।

रासक–संज्ञा, पु. (सं.) हास्य रस का एकांकी नाटक (नाट्य.)।

रासधारी–संज्ञा, पु. (सं. *रासधारिन्*) वह अभिनय-कर्त्ता जो श्रीकृष्ण जी के चरित्र या रास-लीला दिखलाता हो।

रासना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रास्ना*) रास्ना नाम की औषधि।

रासभ–संज्ञा, पु. (सं.) खबर, गर्दभ, गधा, अश्वतर। (स्त्री. **रासभी**)।

रासमंडल–संज्ञा, पु. यौ. (स.) रास लीला करने वालों की मंडली, रासधारियों का अभिनय।

रासलीला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) कृष्ण-लीला का नाटक या अभिनय।

रासायनिक–वि. (सं.) रसायन शाख-संबंधी, रसायन-शास्त्र का ज्ञानी, **रसायनिक** (दे.)।

रासि, रासी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *राशि*) राशि।

रासु*†–वि. दे. (फ़ा. *रास्त*) ठीक, सीधा, सरल।

रासो, रासौ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रहस्य*) किसी राजा का जीवन-चरित्र जिसमें उसकी विजय और वीरतादि का वर्णन पद्य में हो।

रास्त–वि. (फ़ा.) सीधा, सरल, ठीक, उचित। संज्ञा, स्त्री. **रास्तगोई**–सिधाई।

रास्ता–संज्ञा, पु. (फ़ा.) राह, पंथ, मार्ग, **मु. रास्ता देखना**–मार्ग (पथ) देखना, प्रतीक्षा करना, बाट जोहना, आसरा देखना। **रास्ते पर आना (लाना)**–उचित रीति से कार्य करने लगना (सुधारना)। **रास्ता पकड़ना (लेना, नापना)**–चल देना, चले जाना। **रास्ता बताना**–टालना, चलता करना, सिखाना, तरकीब बताना। **रास्ते पर लगाना**–सुधार देना, उचित कार्य करने की ओर प्रवृत्त करना। चाल, प्रथा, रीति, उपाय।

रास्ती–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सच्चाई सिधाई।

रासना–संज्ञा, स्त्री (सं.) रासना नाम औषधि। रसाना नामक औषधि।

राह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *राहु*) राहुग्रह। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) रास्ता, मार्ग, पंथ, बाट। **मु. (अपनी) राह खाना, (अपनी) राह जाना**–अपने मतलब से मतलब रखना। **राह देखना या ताकना**–बाट जोहना, औसेर करना, परखना, प्रतीक्षा करना, मार्ग (पथ) देखना। **राह पड़ना**–डाका पड़ना। **राह लगाना**–रास्ते लगाना, लूट पढ़ना। प्रणाली, चाल, प्रथा, नियम। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रोहिप*) रोहू मछली।

राह-ख़र्च–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) मार्ग-व्यय, **सफर खर्च**।

राहगीर–संज्ञा, पु. (फ़ा.) यात्री, बटोही, पथिक, राही (दे.)।

राह चलता–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *राह+हि.चलता*) बटोही, पथिक, राही, अनजान।

राहज़न–संज्ञा, पु. (फ़ा.) बटमार, डाकू। संज्ञा, स्त्री. **राहज़नी**।

राहत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) सुख, आराम।

राहदारी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) सड़क का कर या महसूल, रास्ता चलने का कर, चुंगी, महसूल। यौ॰ **परवाना-राहदारी** किसी रास्ते से जाने या माल ले जाने का आज्ञा-पत्र।

राहरीति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *राह+रीति हि॰*) व्यवहार, संबंध, **रीति-रस्म**।

राहिन–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बंधक या रेहन रखने वाला।

राही–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) यात्री, बटोही, पथिक। यौ॰ (फ़ा॰) **हमराही**–साथ चलने वाला।

राहु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 9 ग्रहों में से एक ग्रह (ज्यो॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *राघव*) रोहू मछली।

राहुग्रस्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य या चंद्र-ग्रहण।

राहुग्रास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य या चंद्र-ग्रहण।

राहुल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महात्मा बुद्ध का पुत्र; छोटा राहु।

रिंद–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) धार्मिक बंधनों का न मानने वाला व्यक्ति, मनमौज़ी, स्वच्छंद। शराब पीने वाला।

रिंदा–वि॰ (फ़ा॰ रिंद) निरंकुश, मन-मोजी, उर्द्धव, स्वच्छंद।

रिआयत–**रियायत**–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) नरमी, नम्रता, दया-पूर्ण व्यवहार, ध्यान, विचार, न्यूनता, कमी। वि॰ **रिआयती**।

रिआया, **रियाया**–संज्ञा, स्त्री॰ (अं॰) प्रजा, **रैय्यत** (दे॰)।

रिकवँछ–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बना सालन।

रिकाब–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *रकाव*) घोड़े की जीन का पावदान, पैकड़ा, **रकाब**।

रिक्त–वि॰ (सं॰) ख़ाली, शून्य, रीता, कंगाल, निर्धन।

रिक्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चौथ, नवमी, चतुर्दशी तिथियाँ।

रिकथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विरासत में मिली जायदाद।

रिक्शा–संज्ञा, पु॰ (प्रान्ती॰) एक साईकिलनुमा सवारी गाड़ी)

रिक्ष-रिच्छ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ऋक्ष*) रीछ, भालू, नक्षत्र, तारागण।

रिक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) जूं का अंडा, लीख।

रिखभ*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ऋषभ*) सात स्वरों में से एक स्वर (संगी॰)।

रिग*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ऋग्*) एक वेद।

रिचा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ऋग्वेद का मंत्र विशेष।

रिजक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रिजक*) जीवन-वृत्ति, जीविका, रोज़ी।

रिजाली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *रज़ोल=नीच*) रजीलपन, निर्लज्जता।

रिजु–वि॰ (दे॰) ऋजु (सं॰) सीधा।

रिझफवार, रिझवार†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *रीझना+वार*) रूप या किसी बात पर प्रसन्न या मोहित होने वाला, अनुरागी, गुणग्राहक।

रिझाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *रंजन*) किसी को अपने ऊपर खुश कर लेना, अनुरक्त या प्रेमी बनाना।

रिझाव–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *रीझना+आव प्रत्य॰*) रीझने का भाव। क्रि॰ स॰ (हि॰ *रिझाना*) प्रसन्न करो।

रिझावना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *रिझना*) रिझाना, प्रसन्न करना। संज्ञा, स्त्री॰ **रिझावनि**।

रित-रितु–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *ऋतु*) मौसम, ऋतु।

रिद्धि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ऋद्धि*) ऋद्धि, एक ओषधि, ऐश्वर्य, बढ़ती, संपत्ति।

रिपुंजय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शत्रु-विजयी, **अरिंदम**।

रिपु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वैरी, शत्रु।

रिपुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शत्रुता, बैर।

रिपुसूदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शत्रुघ्न, रिपुहा। वि॰ शत्रु का नाशक।

रिपुहा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शत्रुघ्न, रिपुसूदन। वि॰ वैर का नाशक।

रिमझिम–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰*) छोटी छोटी बूंदें लगातार गिरना, रिमिक-झिमिक।

रियासत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) राज्य, हुकूमत, ऐश्वर्य, अमीरी, वैभव। वि॰ **रियासती**।

रिलना*†–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *रेलना*) घुसना, मिल जाना, पैठना।

रिवाज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रीति, रस्म, प्रथा, प्रणाली।

रिश्ता–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) नाता, संबंध लगाव।

रिश्तेदार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) नातेदार, संबंधी। संज्ञा, स्त्री॰ **रिश्तेदारी**।

रिश्वत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) घूस, अंकोर, उत्कोच (सं॰)। वि॰ **रिश्वती**।

रिष्ट*–वि॰ दे॰ (सं॰ *हृष्ट*) मोटा-ताजा, खुश, संज्ञा, पु॰ (अं॰) कलाई।

रिष्यमूक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ऋष्यमूक*) दक्षिण देश का एक

पहाड़, **रीषमूक, रीखमूक** (दे.)। –रामा.।

रिस-रिसि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रूप*) क्रोध, गुस्सा।

रिसना†–क्रि. स. दे. (हि. *रसना*) छन-छन कर बाहर निकलना, धीरे-धीरे बहना।

रिसवाना†–क्रि. स. (हि. *रिसाना*) क्रोधित करना, क्रोध दिलाना।

रिसहा†–वि. दे. (हि. *रिस*) क्रोधी।

रिसहाय†–वि. (हि. *रिस*) क्रुद्ध, कुपित, नाराज़। स्त्री. **रिसहाई**।

रिसाना†–क्रि. अ. (हि. *रिस*) क्रोधित या कुपित होना। क्रि. स. किसी पर कुपित होना या बिगड़ना।

रिसाल†–संज्ञा, पु. दे. (अ. *इरसाल*) राज्य-कर।

रिसालदार†–वि. (फ़ा.) घुड़सवार सेना का एक अफ़सर या सरदार।

रिसाला–संज्ञा, पु. (फ़ा.) घुड़सवार सेना, अश्वारोही सेना, मासिक पत्र।

रिसिआना-रिसियाना†–क्रि. अ. दे. (हि. *रिस+आना प्रत्य.*) कुपित या क्रोधित होना। क्रि. स. किसी पर क्रुद्ध होना, बिगड़ना, **रिसाना**।

रिसिक*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रिपीक*) तलवार, खड्ग।

रिसौंहाँ–वि. दे. (हि. *रिस+औहाँ प्रत्य.*) क्रोधित सा, क्रोध से भरा, रोष-सूचक।

रिहल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) पुस्तक रख कर पढ़ने की एक काठ की चौकी।

रिहा–वि. (फ़ा.) छुटकारा, मुक्त, छूटा हुआ। संज्ञा, स्त्री. **रिहाई**।

रींधना–क्रि. स. दे. (हि. *राँधना*) राँधना।

री–अव्य. स्त्री. दे. (सं. *रे*) सखियों का संबोधन, अरी, एरी, ओरी।

रीछ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *अक्ष*) रिच्छ, भालू।

रीछराज*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ऋक्षराज*) जामवंत।

रीक्ष–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रंजन*) प्रसन्नता, मुग्धता।

रीक्षना–क्रि. स. दे. (सं. *रंजन*) प्रसन्न या मुग्ध होना, अनुरक्त होना।

रीठ*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रिष्ट*) युद्ध (हि.) तलवार, खड्ग। वि. अशुभ, ख़राब।

रीठा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रिष्ठ*) एक बड़ा जंगली वृक्ष, इसके बेर-जैसे फल।

रीढ़–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रीड़क*) पीठ के मध्य की लम्बी खड़ी हड्डी, मेरु-दंड, जिससे पसलियाँ जुड़ी रहती हैं।

रीत–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रीति*) रीति, रस्म, रिवाज़।

रीतना*†–क्रि. स. दे. (सं. *रिक्त*) खाली, शून्य तथा रिक्त होना।

रीता–वि. दे. (सं. *रिक्त*) शून्य, रिक्त।

रीति–संज्ञा, स्त्री. (सं.), ढंग, तरह, प्रकार, परिपाटी, रिवाज़, रस्म, प्रथा, ढब, तरह, नियम, प्रणाली, काव्य में ऐसी पद-योजना जिससे माधुर्य्यादि गुण आते हैं, इसे काव्यात्मा मानते हैं।

रीषमूक*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ऋष्यमूक*) दक्षिण भारत का एक पहाड़।

रीस-रीसि–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रिस*) रिस, क्रोध, कोप। संज्ञा, स्त्री. (सं. *ईर्ष्या*) स्पर्द्धा, डाह, समानता।

रुंज–संज्ञा, पु. (दे.) एक बाजा।

रुंड–संज्ञा, पु. (सं.) कबंध, बिना सिर या हाथ-पैर का धड़।

रुंडिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) युद्ध-भूमि, रणांगण।

रुँदवाना–क्रि. स. (हि. *रुँदना, रौंदना का प्रे. रूप*) पैरों से रौंदवाना, कुचलाना।

रुँधना–क्रि. अ. दे. (सं. *रुद्ध*) घिर जाना, रुकना, कहीं मार्ग न मिलना, उलझना, फँस जाना, घेरा जाना, कार्य में लगना। स. रूप–**रुँधाना, प्रे. रूप-रुँधवाना**।

रु–अव्य. दे. (हि. *अरु का सूक्ष्म रूप*) और।

रुआ*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रोम*) **राम,** लोम, रोंओं, भुवा; पतली रोटी।

रुआना-रुवाना*†–क्रि. अ. दे. (हि. *रुलाना*) रुलाना, रोवाना।

रुआब–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रोब*) रोय, दाब, आतंक। रु

ना–क्रि. अ. (हि. *रोक*) अवरुद्ध होना, ठहर जाना, अटकना, स्वेच्छा या मार्गादि न मिलने से रुकना, बीच ही में चलते हुए किसी काम या क्रम का बन्द हो जाना। स. रूप–**रुकाना, प्रे.** रूप–**रुकवाना**।

रुकमिनि–संज्ञा, स्त्री. (सं. *रुकिमणी*) रुक्मिणी, **रुकमिनी,**

श्री कृष्ण की पटरा के।

रुकाव–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *रुकाना*) रुकाने का भाव या रुकावट।

रुक्का–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *रुकअः*) छोटा पत्र या चिट्ठी, परचा, पुरजा, क़र्ज़ लेने का एक लेख। यौ॰ **रुक्का-पुरजा**।

रुक्ख*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रुक्ष*) पेड़, वृक्ष, **रूख** (दे॰)। वि॰ रूखा।

रुक्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोना, स्वर्ण, धतूरा, धस्तूर, रुक्मिणी का भाई

रुक्मवती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक वृत्त, रूपवती, चंपक माला (पिं॰)।

रुक्मसेन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मांगद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक राजा।

रुक्मिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विदर्भ-राज भीष्मक की कन्या जो श्री कृष्ण जी की प्रधान पटरानी थी।

रुक्मी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रुक्मिन्*) राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र, रुक्मिणी का भाई।

रुक्ष–वि॰ (सं॰ *रुक्ष*) चिकनाहट-रहित, खुरदरा, नीरस, रूखा, पका, शुष्क, सूखा।

रुक्षता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰(सं॰ *रुक्षता*) रुखाई, रुक्षत्व।

रुख–संज्ञा, पु॰ (अं॰) आकृति, कपोल, मुँह, चेष्टा, गाल, कृपा की दृष्टि, मुखाकृति से प्रगट मन की इच्छा, आगे या सामने का भाग, शतरंज में हाथी नामक मोहरा। क्रि॰ वि॰ ओर, तरफ़, सामने।

रुखसत–संज्ञा, स्त्री॰ (अं॰) विदा, परवानगी, छुट्टी, आज्ञा, प्रस्थान, अवकाश, प्रयाण, काम से छुट्टी। वि॰ जो कहीं से चल दिया हो।

रुखसती–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *रुखसत*) विदाई, विशेष करके वधू का विदा।

रुखाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *रूखा+आई प्रत्य॰*) शुष्कता, खुश्की, रूखा होने का भाव, रुखावट, रूखापन, शीलत्याग, बेमुरौवती।

रुखाना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *रूखा*) रूखा या नीरस होना, सूखना।

रुखानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रोक+खनित्र*) बढ़ैयों का एक हथियार।

रुखिता*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रुषिता*) मान वाली या मानिनी नायिका (सा॰)।

रुखौंहाँ–वि॰ दे॰ (हि॰ *रुखा+औंहाँ प्रत्य॰*) नीरस, रुखाई युक्त, रुखाई लिए हुए, रुखासा। स्त्री॰ **रुखौंहीं**।

रुग्न–वि॰ (सं॰) बीमार, रोगी, रुग्ण, मरीज़। संज्ञा, स्त्री॰ **रुग्नता, रुग्णता**।

रुचक–वि॰ (सं॰) सुस्वाद। संज्ञा, पु॰ कबूतर, माला, एक प्रकार का नींबू, चौखूटा खंभा, रोचना। एक योग (ज्यो॰)।

रुचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रुचि+ना प्रत्य॰*) अच्छा लगना, रुचि के अनुकूल होना, भला लगना। **मु॰ रुचरुच**–अति रुचि से।

रुचा–संज्ञा, स्त्री॰ दे (सं॰ *रुचि*) इच्छा, चाह, चमक, सारिका, मैना।

रुचि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चाह, प्रेम, अनुराग, किरण, प्रवृत्ति, शोभा, स्वाद, भूख, एक अप्सरा। वि॰ (दे॰) उचित, योग्य, फबता हुआ।

रुचिकर–वि॰ (सं॰) रुचि उत्पन्न करने वाला, **रुचिप्रद**।

रुचिकारक–वि॰ (सं॰) रुचिकर, रोचक। स्त्री॰ **रुचिकारी**।

रुचित–वि॰ (सं॰) अभिलाषित।

रुचिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सौंदर्य, प्रेम।

रुचिर–वि॰ (सं॰) रोचक, सुंदर, मीठा, मनोरम।

रुचिरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रुचिराई, सुन्दरता।

रुचिरवृत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अस्त्र संहार का एक भेद।

रुचिरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) केसर, एक वृत्त या छंद (पिं॰)।

रुचिराई*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रुचिर+आई प्रत्य॰*) मनोहरता, रुचिरता, सुन्दरता।

रुचिवर्द्धक–वि॰ यौ॰ (सं॰) रुचि या अभिलाषा बढ़ाने वाला, भूख बढ़ाने वाला।

रुच्य–वि॰ (सं॰) सुंदर, मनोहर, रुचिकर।

रुच्छ*–वि॰ दे॰ (हि॰ *रुखा*) रुखा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *रुख*) रुख, पेड़, वृक्ष।

रुज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोग, बीमारी, कष्ट, घाव, भाँग, वेदना।

रुजाली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रोगों का समूह, कष्ट-समूह।

रुजी–वि॰ (सं॰ *रुज*) रोगी, बीमार, अस्वस्थ।

रुजू–वि दे॰ (अ॰ *रुजूअ–प्रवृत्त*) प्रवृत्ति या चित्त का किसी ओर को झुकाव।

रुझना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रुद्ध*) घावादि का भरना या पूर्ण होना। क्रि॰ अ॰ उलझना।
रुझान–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) प्रवृत्ति, झुकाव (चित्त का), ढाल।
रुठ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रुष्ट*) क्रोध, रोष, कोप।
रुठना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) रूटना।
रुठाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रुष्ट*) अप्रसन्न या रुष्ट करना।
रुणित–वि॰ (सं॰) कणित, बजता या झनकारता हुआ।
रुत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *ऋतु*) मौसिम, फसल, ऋतु। संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिड़ियों का शब्द या कलरव, ध्वनि।
रुतबा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पद, ओहदा, प्रतिष्ठा, सम्मान।
रुदन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोदन*) क्रंदन, रोदन, रोना।
रुद्राच्छ, रुद्राछ*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रुद्राक्ष*) रुद्राक्ष, एक बड़ा पेड़ जिसके फलों की गुठली की माला शैव लोग पहनते हैं।
रुदित–संज्ञा, पु॰ वि॰ (सं॰) रोदित, रोता हुआ।
रुद्ध–वि॰ (सं॰) वेष्टित, घिरा या मुँदा हुआ, आवृत्त, वंद, रोका हुआ, जिसकी गति रुकी हो। यौ॰ **रुद्ध कंठ**–जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सके।
रुद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव जी का एक रूप, 11 रुद्रगण, देवता, रौद्र रस, 11 की संख्या। वि॰ भयंकर, भयानक।
रुद्रक†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रुद्राक्ष*) रुद्राक्ष।
रुद्रगण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव जी के सेवक या परिषद्, भूतगण (पुरा॰), 11 रुद्रों का समूह।
रुद्रजटा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक क्षुप।
रुद्रतेज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *रुद्रतेजस्*) षडानन, कार्त्तिकेय।
रुद्रपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **रुद्राधिपति**, शिवजी।
रुद्रपत्नी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दुर्गा जी।
रुद्रयामल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भैरव-भैरवी का संवाद-ग्रंथ (तांत्रिक)।
रुद्रलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव का निवास-लोक।
रुद्रवंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *रुद्रवती*) एका प्रसिद्ध दिव्य बनौषधि, **रुदंती, रुदवंती** (दे॰)।
रुद्रविंशति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) रुद्रवीसी, प्रभवादि साठ संवत्सरों में से अंतिम बीस संवत्सर।
रुद्राकीड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्मशान।
रुद्राक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक बड़ा पेड़, उसके फलों की गुठलियाँ जिनकी माला शैव लोग पहनते हैं।
रुद्राणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पार्वती, दुर्गा, भवानी, रुद्रजटा नामक औषधि-लता।
रुद्रावास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव-निवास, काशीपुरी।
रुद्रिय–वि॰ (सं॰) आनंददायी, रुद्र-संबंधी।
रुद्री–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *रुद्र+ई प्रत्य॰*) वेद के रुद्रानुवादक या अघमर्पण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ (वेद॰)।
रुधिर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रक्त, लोहू, खून।
रुधिराशी–वि॰ यौ॰ (सं॰) रक्त पीने वाला।
रुनझुन–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰*) पायजेब या घुँघुरू का शब्द, झनकार, कलरव।
रुनित*–वि॰ दे॰ (सं॰ *रुणित*) बजता हुआ।
रुनी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) घोड़े की एक जाति।
रुनुक-झुनुक–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰*) रुनझुन।
रुपना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *रोपना का अ॰ रूप*) रोपा जाना, पृथ्वी में गाड़ा या लगाया जाना, अड़ना, डटना, जमना, रुकना।
रुपया, रुपया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *मध्य*) **रुपय्या** (दे॰), चाँदी का एक बड़ा सिक्का जो सोलह आने (100 पैसे) का होता है (भारत), धन संपत्ति।
रुपहला–वि॰ दे॰ (हि॰ *रूपा*) चाँदी का सा, चाँदी के रंग का, श्वेत। स्त्री॰ **रुपहली**।
रुबाई–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) एक छंद (पिं॰)।
रुमाल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रूमाल।
रुमाली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ **रुमाल**) एक तरह का छोटा लँगोटा या धोती, बाँकी अँगौछी।
रुमावली*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *रोमावली*) रोमावली।
रुरु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कस्तूरी-मृग, एक दैत्य जो दुर्गा जी से मारा गया, एक भैरव।
रुरुआ, रुरुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *ररना*) बड़ा उल्लू, घुगघू।
रुरुक्षु–वि॰ (सं॰) रुक्ष, रूखा, रुक्ष।
रुलना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लुलन=इधर-उधर डोलना*) इधर-उक्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰धर मारा मारा फिरना, लोहे से पीसना, चूर्ण करना, अरोरना। **रुलाना,** प्रे॰ रूप–**रुलवाना**।
रुलाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *रोना+आई प्रत्य॰*) रोने की क्रिया

का भाव, रोने की इच्छा या प्रवृत्ति, **रोवास, रोवाई** (दे.)।

रुलाना–क्रि. स. (हि. *रोना का प्रे. रूप*) रोवाना। (हि. *रुलना का प्रे. रूप*) मारा फिरना, नष्ट करना।

रुवा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लोम*) सेमल के फल का भूआ।

रुवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रोना*) रोने की क्रिया या भाव, रोने की इच्छा या प्रवृत्ति, **रोवाई** (दे.); (फ़ा.) चार पंक्ति एक छंद।

रुष-रुषा–संज्ञा, पु. (सं.) क्रोध, कोप, **रोप**। वि. रुष्ट।

रुष्ट–वि. (सं.) कुपित, क्रुद्ध, अप्रसन्न। संज्ञा, स्त्री. **रुष्टता**।

रुष्टता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) क्रुद्धता, अप्रसन्नता।

रुसना*–क्रि. अ. दे. (हि. *रुसना*) रूसना, रूठना।

रुसवा–वि. (फ़ा.) जिसकी वदनामी हुई हो, निंदित। संज्ञा, स्त्री. **रुसवाई**।

रुसित*–वि. दे. (सं. *रुचित*) अप्रसन्न, रुष्ट, झूठा।

रुस्तम–संज्ञा पु. (फ़ा.) फ़ारस का एक वड़ा पहलवान, वड़ा वीर या बलवान।

मु. छिपा रुस्तम–जो देखने में तो सीधा-सादा हो पर वास्तव में वड़ा वली और वीर हो।

रुहेलखंड–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *रुहेला+खंड*) अवध के उत्तर-पश्चिम में एक इलाका, रीवाँ के आस-पास।

रुहेला–संज्ञा पु. (दे.) प्रायः रुहेलखंड में वसी हुई पठानों की एक जाति।

रूँगटा, रोंगटा–संज्ञा पु. (दे.) रोम, लोम, रोवों, शरीर के बाल।

रूँघट–संज्ञा स्त्री. (दे.) मैल, मल, मलिनता।

रूँध–वि. दे. (सं. *रुद्ध*) घिरा या रुका हुआ, अवरूद्ध।

रूँधना–क्रि. स. दे. (सं. *रुंधन*) काँटों आदि से घेरना, बाढ़ लगाना, छेंकना, रोकना, चारों तरफ से घेरना।

रू–संज्ञा पु. (फ़ा.) चेहरा, मुख, मुँह, सामना, आगा, कारण, द्वारा। यौ. रू-बरू-समक्ष, सामने। **सुर्खरू (होना)**–सुखी, सम्मानित होना।

रूई–संज्ञा स्त्री. दे. (सं. *रोम, लोम*) रुई (दे.), क़पास के कोपगत बीजों के ऊपर का रोवाँ या रुआ।

रुईदार–वि. दे. (हि. *रुई+दार* फ़ा.) जिसके भीतर रुई भरी हो।

रुख–संज्ञा पु. दे. (सं. *रुक्ष*) वृक्ष, पेड़। वि. रूखा, रुक्ष, नीरस; (फ़ा.) चेहरा, मात्रा।

रूखड़ा†–संज्ञा, पु. (हि. *रुख*) छोटा पेड़, पौधा, बिरवा, वृक्ष, **रुखवा** (दे.)।

रूखना*–क्रि. अ. दे. (सं. रुक्ष) कहना, सूखना।

रूखा–वि. दे. (सं. *रूक्ष*) सूखा, शुष्क, जो चिकना या स्निगध न हो, नीरस, सीठा, स्वादहीन, बेमुरौवत, घी-तेल आदि से रहित। **मु. रूखा-सूखा**–घी-तेल आदि के बिना बना साधारण भोजन। पुरुष, विरक्त, खुरदुरा, कठोर, उदासीन। **मु. रूखा पड़ना या होना**–क्रुद्ध होना, वेमुरौवती करना। संज्ञा, पु. (दे.) रूख, पेड़।

रूखापन–संज्ञा पु. (हि.) रुखाई, रूखे होने का भाव।

रूखी–संज्ञा स्त्री. (हि. *रूखा*) चिखुरी, गिलहरी।

रूचना*–क्रि. स. दे. (हि. *रुचना*) भला लगना, रुचना, भाना, पसंद आना।

रूज–संज्ञा पु. (दे.) एक कीड़ा; (अं.) चेहरे पर लगाने की एक लाली विशेष।

रूठ-रूठन–संज्ञा स्त्री. (हि. *रूठना*) रुष्टता, अप्रसन्नता, रूठने की क्रिया या भाव।

रूठना–क्रि. अ. दे. (सं. *रुष्ट*) या अप्रसन्न होना। स. रूप–**रुठाना**। वि. रूठने वाला, झगड़ालू।

रूठनी–वि. दे. (हि. *रूठना*) झगड़ालू।

रूड़-रूड़ा–वि. दे. (हि. *रूरा*) उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, भला।

रूढ़–वि. (सं.) आरूढ़, सवार, चढ़ा हुआ, उत्पन्न, प्रसिद्ध, उजड्ड, गँवार, कठोर, अकेला, रूढ़ि, अविभाज्य। संज्ञा, पु. शब्द और प्रत्यय या दो शब्दों से बना अर्थानुसार एक शब्द-भेद (विलो. **यौगिक**)। स्त्री. रूढ़ि।

रुढ़यौवना–संज्ञा स्त्री. यौ. (सं. *आरूढ़ यौवना*) पूर्णयुवा, तरुणी, नवयौवना।

रूढ़ा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रचलित लक्षणा जिसका व्यवहार प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न अभिप्राय-व्यंजनार्थ न हो (सा.)।

रूढ़ि–संज्ञा स्त्री. (सं.) उभार, उठान, चढ़ाव, उत्पत्ति, ख्याति, चाल, प्रथा, निश्चय, विचार, प्रसिद्धि, यौगिक न होते हुए भी रूढ़ शब्द जिस शक्ति से अपरा अर्थ दे, एक संज्ञा-भेद (व्या.)।

रूदाद–संज्ञा स्त्री. दे. (फ़ा. *रूअदाद*) वृत्तांत, दशा, अवस्था,

विवरण, समाचार, अदालत की कार्यवाही।

रूप–संज्ञा पु. (सं.) सूरत, शकल, आकृति, स्वभाव, सौंदर्य, प्रकृति। **मु. रूप हरना**–लज्जित करना। यौ. **रूप-रेखा, रूप-रंग (रंग-रूप)**–आकार-प्रकार, शकल, चिह्न, पता, शरीर। **मु. रूप लेना (रखना बनाना)**–रूप धारण करना। वेष, भेस। **मु. रूप भरना (धरना)**–भेस बनाना। लक्षण, समान, सदृश, अवस्था, दशा, रूपक, रूपा, चाँदी। वि. रूपवान्, सुन्दर।

रूपक–संज्ञा पु. (सं.) प्रतिकृति, मूर्ति, नाटक, दृश्यकाव्य। वह काव्य जिसका अभिनय हो सके, इस काव्य के दश मुख्य भेद हैं :–नाटक, प्रकरण, व्यायोग, भाण, समयकार, डिम, अंक, ईहामृग, प्रहसन, बीथी 10। एक अर्थालंकार जिसमें उपमान और उपमेय में अभेद कर दिया जाता है अथवा उपमान के सामर्थ्य का आरोप उपमेय पर कर उपमान के रूप में अभेद सा कर उसका वर्णन हो (अ. पी.)।

रूपकरण–संज्ञा पु. यौ. (सं.) एक तरह का घोड़ा।

रूपकातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री. यौ. (सं.) अतिशयोक्ति अलंकार का वह भेद जिसमें केवल उपमान का वर्णन करके उपमेयों का अर्थ प्रगट करते हैं (काव्य.)।

रूपक्रांता–संज्ञा स्त्री. (सं.) 17 वर्णों का वर्णिक वृत्त (पिं.)।

रूपगर्विता–संज्ञा स्त्री. (सं.) अपनी सुन्दरता पर घमंड करने वाली नायिका।

रूपघनाक्षरी–संज्ञा स्त्री. (सं.) अंत लघु और 32 वर्णों का एक वर्णिक दंडक छंद (पिं.)।

रूपजीवी–संज्ञा पु. (सं. *रूप जीवित*) बहुरूपिया, रूप बनाकर पेट पालने वाला।

रूपजीविनी–संज्ञा स्त्री. (सं.) वेश्या, रंडी, पतुरिया।

रूपनिधान–संज्ञा पु. यौ. (सं.) अति सुन्दर, रूपनिधि।

रूपमंजरी–संज्ञा स्त्री. (सं.) एक फूल, एक प्रकार का धान।

रूपमय–वि. (हि.) अति सुन्दर। स्त्री. **रूपमयी**।

रूपमाला–संज्ञा स्त्री. (सं.) 24 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं.)।

रूपमाली–संज्ञा स्त्री. (सं.) एक छंद जिसमें नौ दीर्घ वर्ण हों (पिं.)।

रूपवंत–वि. (सं. *रूपवत्*) सुन्दर। स्त्री. **रूपवती**।

रूपवती–संज्ञा स्त्री. (सं.) गौरी छंद, चंपकमाला वृत्ति (पिं.)। वि. स्त्री.– सुन्दरी, खूबसूरत।

रूपवान्-रूपवान–वि. (सं. *रूपवन्*) सुन्दर, स्वरूपवान्, प्रियदर्शन। स्त्री. **रूपवती**।

रूपरस–संज्ञा पु. (सं.) चाँदी या रूपा का भस्म (वैद्य.)।

रूपराशि–संज्ञा पु. यौ. (सं.) अति सुन्दर, मनोहर।

रूपहला–संज्ञा पु. (दे.) रूपे का बना, रूपे का रंग सा सफ़ेद, **रूपहरा** (दे.)।

रूपा–संज्ञा पु. दे. (सं. *रूप्य*) चाँदी, घटिया चाँदी, सफ़ेद घोड़ा।

रूपित–संज्ञा पु. (सं.) ज्ञान, वैराग्य आदि पात्र वाला नाटक या उपन्यास।

रूपी–वि. (सं. *रूपिन*) रूपवाला, रूपधारी, सदृश, समान। स्त्री. **रूपिणी**।

रूपोश–वि. (फ़ा.) गुप्त, छिपा, भगा हुआ, फरार। संज्ञा, स्त्री. **रूपोशी**।

रूप्यक–संज्ञा पु. (सं.) रुपया।

रूपकार–संज्ञा पु. (फ़ा.) सम्मुख लाने का भाव, पेशी, अदालत की आज्ञा, आज्ञापत्र, हुक्मनामा।

रू-बरू–क्रि. वि. (फ़ा.) समक्ष, सम्मुख, सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

रूम–संज्ञा पु. (फ़ा.) तरकी या तुरकी देश का नाम; (अं.) रोम

रूमटी–संज्ञा स्त्री. (दे.) घुमाव, मिप, बहाना, ब्याज।

रूमना–क्रि. स. दे. (हि. *झूमना का अनु.*) झूलना, झूमना।

रूमाल–संज्ञा पु. (फ़ा.) मुँह पोछने का चौकोर वस्त्र-खंड, चौकोर शाल या दुपट्टा।

रूमाली–संज्ञा स्त्री. (फ़ा. *रूमाल*) रूमाली, छोटा लंगोट।

रूमी–वि. (फ़ा.) रूम का, रूम-संबंधी, रूम का निवासी। यौ. **रूमी-मस्तगी**–एक औषधि।

रूरना–क्रि. अ. दे. (सं. *शेरवण*) चिल्लाना।

रूरा–वि. दे. (सं. *रूढ़=प्रशस्त*) उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, बहुत बड़ा, अच्छा। स्त्री. **रूरी**।

रूष–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रूक्ष*) रूख, पेड़, वृक्ष। वि. (दे.) रुक्ष, रूखा।

रूसना–क्रि. अ. दे. (हि. *रूठना*) रूठना।

रूसा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रूपक*) अढसा, अरूसा, **बासा**। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोहिण*) एक सुगंधित घास जिसका तेल निकालते हैं।

रूसी–वि॰ (हि॰ *रूस*) रूस देश का निवासी, रूस देश का, रूस-संबंधी। संज्ञा, स्त्री॰ रूस देश की भाषा या लिपि। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) भूसी-जैसा सिर का मैल, फ्यास।

रूह–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) आत्मा, जीव, जीवात्मा, सत्त, सार, इत्र का एक भेद; सांद्र इत्र। **मु॰ रूह फना होना**–अति भयभीत होना, होश उड़ना। **रूह फूंकना (डालना)**–जान डालना, नवशक्ति का संचार करना, नवस्फूर्ति लाना।

रेंकना–क्रि॰ अ॰ (*अनु॰*) गदहे का बोलना, बुरे ढंग से गाना।

रेंगटा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) गदहे का बच्चा।

रेंगना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रिंगण*) चींटी आदि कीड़ों का चलना, धीरे-धीरे चलना।

रेंट–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नाक का मैल।

रेंट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *परंड*) एक पौधा जिसके बीजों का तेल बनता है। स्त्री॰

रेंडी–रेंड के बीज।

रेंडी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रेंड़*) रेंड़ के बीज।

रेंदी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छोटा खरबूजा।

रे–*अव्य॰* (सं॰) नीच-संबोधन-शब्द किं ना॰। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *ऋषभ*) ऋषभ-स्वर।

रेख–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रेखा*) लक़ीर। **मु॰ रेख काढ़ना (खींचना-खाँचना)**–लकीर बनाना, कहने पर जोर देना, प्रतिज्ञा करना। चिह्न, निशान। यौ॰ **रूप-रेख** सूरत सकल। सूरत, स्वरूप, नई निकली हुई मूँछें, गणना, गिनती। **मु॰ रेख भीजना या भीनना (निकलना)**–निकलती हुई मूछों का दिखाई पड़ना।

रेखता–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) उर्दू का पुराना नाम।

रेखना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *रेखन, लेखन*) रेखा या लक़ीर खींचना, खरोंचना, खुरींच डालना।

रेखा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) डाँड़ी, लक़ीर, सतर, दो बिन्दुओं के बीच की दूरी-सूचक चिह्न। **मु॰ रेखा खींच कर कहना**–प्रणपूर्वक कहना, बल-पूर्वक या ज़ोरों के साथ कहना। यौ॰ **कर्म-रेखा (करम रेख)** भाग्य का लेख। आकृति, गणना, गिनती, आकार, हथेली-तलुवे आदि पर पड़ी लक़ीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार होता है।

रेखांकित–वि॰ यौ॰ (सं॰) चिह्नित, रेखा-द्वारा निर्धारित।

रेखागणित–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गणित विद्या का वह विभाग जिसमें रेखाओं के द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं, **जिओमेट्री** (अं॰)।

रेखित–वि॰ (सं॰) जिस पर रेखा पढ़ी हो, फटा हुआ, लकीरदार।

रेगिस्तान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मरुस्थल, मरुभूमि, रेतीला या बालू का मैदान।

रेघारी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हलकी रेखा, चिह्न या निशान।

रेचक–वि॰ (सं॰) दस्तावर, जुलाबी दवा। संज्ञा, पु॰ प्राणायाम की तीसरी क्रिया जिसमें खींची हुई साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालते हैं (ओव॰)।

रेचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कोष्ट शुद्धि, जुल्लाव, जुलाव, दस्त लाना।

रेचना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *रेचन*) वायु या मल को बाहर करना, युक्ति या वायु द्वारा मल निकाला जाना।

रेजा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) सूक्ष्मखंड, बहुत छोटा टुकड़ा, अदद, थान, नग।

रेणु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अत्यंत लघु परमाणु, धूलि, बालू, कण कणिका, **रेनु** (दे॰), एक औषधि।

रेणुका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बालू, रेत, पृथ्वी, धूलि, रज, परशुराम जी की माता।

रेत–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *रेतस्*) शुक्र, वीर्य, पारा, पानी, जल। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रेतजा*) बालू, बालू का, मरुभूमि, बलुआ मैदान।

रेतना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *रेत*) रेती से किसी पदार्थ को रगड़ कर उसके कण अलग करना, रगड़ कर काटना।

रेतहा–संज्ञा, पु॰ (*ग्रा॰*) रेत वाला तट, रेता। वि॰ **रेतीला**। स्त्री **रेतही**।

रेता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *रेत*) मिट्टी, बालुका, बालू, बलुआ मैदान। स्त्री॰ **रेती**।

रेती–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *रेतना*) लोहे आदि का रेतने का एक लोहे का खुरदुरा यंत्र या लोहा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रेत+ई प्रत्य॰*) नदी या सागर के तट की बलुई भूमि,

बलुआ तट।

रेतीला–वि॰ (हि॰ *रेत+ईला प्रत्य॰*) बलुआ, बालू वाला। स्त्री॰ **रेतीली**।

रेनु*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रेणु*) बालुका, बालू, रेत। स्त्री॰ (दे॰) **रेनुका**–(सं॰ **रेणुका**)।

रेफ़–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हलन्त, रकार का वह रूप जो अपने अग्रिम व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है, यथा '८'

रेल–संज्ञा, स्त्री॰ (अं॰) लोहे की पटरियाँ जिन पर गाड़ी चलती है, रेलगाड़ी, वाष्पवेग से चलने वाली गाड़ी। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *रेलना*) अधिकता, धाराधक्का, भरमार।

रेलठेल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *रेलना-ठेलना*) बड़ी भीड़ अधिकता, भरमार।

रेलना–क्रि॰ स॰ (दे॰) आगे या पीछे की ओर ढकेलना, धक्का देना, **घुसेड़ना** अधिक खाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) ठसाठस भरा होना।

रेलपेल–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *रेलना+पेलना*) भारी भीड़, अधिकता, बाहुल्य, ज़्यादती, भरमार, धक्कमधक्का।

रेला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पानी का बहाव, प्रवाह, दौड़, धावा, चढ़ाई, धक्कमधक्का, अधिकता, बाहुल्य, रेल।

रेलारेल–क्रि॰ वि॰ (दे॰) अधिकता, धक्कमधक्का, कशमकश। संज्ञा, स्त्री॰ भीड़, बाहुल्य।

रेलापेल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) धक्कमधक्का।

रेबंद–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक पहाड़ी, बड़ा पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी औषधि के काम आती है और रेबंद चीनी कहलाती है।

रेबड़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भेड़, बकरियों की नार, झुंड, गल्ला, **लेंहड़ा** (प्रान्ती॰)।

रेवड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) चीनी और तिलों से बनी एक मिठाई।

रेवत, रेवतक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बलदेव जी के ससुर।

रेवतक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कबूतर।

रेवती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 32 तारों से बना 27 वाँ नक्षत्र, दुर्गा, गाय, राजा रेवतक की कन्या और बलराम जी की पत्नी।

रेवतीरमण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बलदेव जी।

रेवा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नर्वदा या नर्मदा नदी, दुर्गा, मदन-प्रिया, रति, रीवों राज्य, बघेलखंड। यौ॰ **रेवा-खंड**।

रेशम–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कोश में रहने वाले विशेष प्रकार के कीड़ों से बनाया गया दृढ़, चमकीला और कोमल तंतु जिससे महीन कपड़ा बनाया जाता है, कौशेय, **रेसम** (दे॰)।

रेशमी–वि॰ (फ़ा॰) रेशम से बना।

रेशा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पेड़ों की छाल आदि से निकला तंतु या बारीक सूत **रेसा** (दे॰), आम की गुठली के तंतु। वि॰ **रेशेदार**।

रेसू–संज्ञा, पु॰ (द॰) ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध।

रेह–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) ऊसर-मैदान की क्षार या खार मिली मिट्टी, **रेहू** (दे॰)

रेहकल–संज्ञा, पु॰ (प्रान्ती॰) छोटी गाड़ी **रँहकल**। स्त्री॰ **रेहकली, रँहकली**।

रेहडू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार की छोटी और हलकी बैलगाड़ी (प्रान्ती॰), लेढुआ।

रेहन–संज्ञा, पु॰ (अ॰) गिरवी, बंधक, किसी धनी के पास इस शर्त पर माल या जायदाद रखना कि क़र्ज़ का रुपया दे देने पर वह वापस हो जाएगी।

रेहनदार–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *रेहन+दार* फ़ा॰ *प्रत्य॰*) जिसके यहाँ गिरवी या बंधक रखा गया हो, महाजन, धनी।

रेहननामा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) गिरवीनामा, बंधक-पत्र जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।

रेहल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *रिहल*) पढ़ते वक्त किताब रखने की चौकी।

रेहला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चना, **रहिला, लहिला** (ग्रा॰)।

रेहूपेहू–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अधिकता, बहुताअत, भरमार।

रे–संज्ञा, पु॰ (सं॰) धन, संपत्ति, सोना, शब्द।

रेअत*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *रैयत*) **रैयत**, प्रजा, **रिआया**।

रैदास–संज्ञा, पु॰ (दे॰) कबीर का समकालीन स्वामी रामानंद का एक चमार भक्त शिष्य, चमारों की पदवी या जाति।

रैन-रैनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रजनिचर*) राक्षस, निशाचर, **रैनचर**।

रैय्यत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) रिआया, प्रजा।

रैयत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बादल।

रैवतक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पहाड़ जो गुजरात में है (भू॰), गिरनार। महादेव जी, चौदह मनुओं में से एक मनु।

रैहर–संज्ञा, पु॰ (दे॰ *रहहर*) झगड़ा, टंटा, बखेड़ा। वि॰ **रैहरी** (दे॰)।

रोंआँ-रोंषा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोम*) शरीर पर के वाल, लोम, रोम।

रोंगटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोमक*) शरीर पर के बाल। **मु॰ रोंगटे खड़े होना**–डरने से शरीर में क्षोभ उत्पन्न होना, रोमांच होना, रोंयें खड़े होना।

रोंट–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छल, कपट, बहाना।

रोंटना–क्रि॰ स॰ (दे॰) छल या कपट करना, वहाना करना।

रोंटिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) छली, विश्वास-घातक, कपटी, धूर्त।

रोंव-रोंउ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोम*) लाम, रोम, रोंवों।

रोआ, रोवा†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *रोया*) रोया।

रोआई-रोवाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रोना*) रोने का भाव या क्रिया, विसरना, रोना, रुलाई।

रोआना-रोवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *रोना का स॰ रूप*) किसी दूसरे को रुलाना, परेशान करना।

रोआब†–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *रोअ्‌य*) **रूआब** (ग्रा॰) रोब, आतंक।

रोआस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रोना*) रुलाई, रोने की इच्छा, (प्रा॰) गेज़।

रोक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रोधक*) गति या काम का अवरोध, निषेध, मनाही, बाधा, अटकाव, रोकने वाली वस्तु, छेंक। यौ॰ **रोक-थाम**। संज्ञा, पु॰ (हि॰ *रोकड़*) रोकड़, नकद।

रोकटोक–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ *रोकना+टोकना*) बाधा, निषेध, छेड़छाड़, मनाही, प्रतिबंध। क्रि॰ अ॰–**रोकना-टोकना**।

रोकड़–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *रोंक=नकद*) जमा, नक़द, पूंजी, रुपया-पैसा, नगद धन।,

रोकड़िया–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *रोकड़=इया प्रत्य॰*) कोषाध्यक्ष, ख़ज़ानची, रुपया लेने वाला।

रोकना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *रोक*) मना करना, चलने या बढ़ने न देना, निषेध या मनाही करना, किसी चली आती बात को बंद करना, **लोकना** (दे॰) छेंकना, ओड़ना (**ओरना** दे॰) बाधा या अड़चन डालना, वश में रखना, दबाना। स॰ रूप–**रोकाना,** प्रे॰ रूप–**रोकावना, रोकवाना**।

रोकू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) रोकने या मना करने वाला, बाधा या अड़चन डालने वाला।

रोख*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोष*) रोष, क्रोध, रिस, कोप।

रोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बीमारी, व्याधि, मर्ज़। वि॰ **रोगी, रुग्न**।

रोगग्रस्त–वि॰ यौ॰ (सं॰) रोग से पीड़ित, रोगी, बीमार, व्याधि-पीड़ित।

रोग़न–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *रौग़न*) चिकनाई, तेल, **पालिश** (अं॰) वस्तु पर पोतने से चमक लाने वाला पतला लेप, **वारनिश**, मिट्टी के बरतनों पर चढ़ाने का मसाला।

रोग़नी–वि॰ (फ़ा॰) रोग़न किया हुआ, रोग़नयुक्त, एक प्रकार की रोटी।

रोगहा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोग का नाश करने वाला, वैद्य, औषधि।

रोगिया-रोगिहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोगी*) रोगी, बीमार, **रोगिहल** (दे॰)।

रोगी–वि॰ (सं॰ *रोगिन्*) बीमार, अस्वस्थ, व्याधि-पीड़ित। स्त्री॰ **रोगिणी**।

रोचक–वि॰ (दे॰) रुचिकारक, प्रिय, मनोरंजक, दिलचस्प। संज्ञा, स्त्री॰ **रोचकता**।

रोचन–वि॰ (सं॰) रोचक, रुचिकारक, मनोरंजन, दिलचस्प, प्रिय, अच्छा लगने या शोभा देने वाला, लाल। वि॰ **रोचनीय**। संज्ञा, पु॰ प्याज, काला सेमर, रोरी, स्वारोचिष मनु; मन्वंतर के इन्द्र (पुरा॰), मदन के पाँच बाणों में से एक बाण, रोचना।

रोचना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लाल कमल, गोरोचन, बसुदेव-प्रिया, रोली, टीका, तिलक। संज्ञा, पु॰ (दे॰) तिलक करने का हलदी और चूने आदि से बना चंदन।

रोचि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *रोचिस्*) दीप्ति, कांति, प्रभा, शोभा, किरण, मयूख, आभा या किरण वाला, रश्मि।

रोचित–वि॰ (सं॰ *रोचना*) सुशोभित, सुन्दर, प्रिय।

रोचिष्णु–वि॰ (सं॰) प्रकाशमान, दीप्तिशील, रुचने योग्य।

रोज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोदन*) रोदन, रुदना, रोना, एक थनैला पशु, बन-रोज।

रोज़–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) दिन, दिवस। अव्य॰ नित्य, प्रतिदिन, **रोज** (दे॰)।

***रोज़गार**–संज्ञा, पु. (फ़ा.) जीविका, व्यवसाय, व्यापार, उद्यम, धंधा, पेशा, कारबार, सौदागरी, तिजारत, जीविका या धनार्थ कार्य।*

रोज़गारी–संज्ञा, पु. (फ़ा.) सौदागर, व्यापारी, रोज़गार करने वाला, उद्यमी, पेशेवर, व्यवसायी।

रोज़नामचा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) वह पुस्तक जिसमें प्रतिदिन का कार्य लिखा जाता है, दैनिक कार्य-लेख, दैनिक व्यय-लेख।

रोज़मर्रा–अव्य. (फ़ा.) नित्य, प्रतिदिन, हर रोज। संज्ञा, पु. प्रतिदिन की व्यवहार की बोली या भापा, खड़ी या चलती बोली, बोल चाल।

रोज़ा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) उपवास, व्रत, मुसलमानों में रमज़ान के महीने में उपवास।

रोज़ी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) प्रतिदिन का भोजन, जीविका, जीवन-निर्वाह का सहारा।

रोझ–संज्ञा, पु. (दे.) नील गाय, **रोज, बनरोज** (दे.)।

रोट–संज्ञा, पु. (हि. *रोटी*) बहुत बड़ी और मीठी-मोटी रोटी या पूड़ी, मीठी, मीठी और बड़ी पूड़ी।

रोट†–वि. दे. (हि. *रोटी*) मोटी बड़ी रोटी।

रोटी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) फुलका, गुँधे आटे की आग में सेंकी टिकिया चपाती, टिकिया, रसोई, भोजन, जीविका। यौ. **रोजीपानी, रोटीदाल, दाल-रोटी**–जीवन निर्वाह। **मु. रोटी-कपड़ा**–भोजन-वस्त्र की सामग्री। **(किसी बात की) रोटी खाना**–(उसी से) जीविका कमाना। **(किसी के यहाँ) रोटियाँ तोड़ना**–किसी के यहाँ पड़ा रह कर पेट पालना। **रोटी-दाल या रोटी चलना**–गुज़र या निर्वाह होना। **रोटी कमाना**–रोजी या जीविका पैदा करना। **रोटियों का प्रश्न होना**–जीविका की चिन्ता या विचार होना।

रोटीफल–संज्ञा, पु. (हि.) एक पेड़ का स्वादिष्ट फल।

रोड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लोष्ट*) पत्थर या ईंट का बड़ा ढेला, बड़ा कंकड़। **मु. रोड़ा अटकाना या डालना (अड़ाना)**–विघ्न-बाधा डालना। **लो.** "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनवा जोड़ा।"

रोड़ी संज्ञा, स्त्री. (सं. *रोड़ी*) छोटा रोड़ा।

रोदन–संज्ञा, पु. (सं.) रुदन, रोना, क्रंदन।

***रोदसी**–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वर्ग, आकश, भूमि, पृथ्वी।*

रोदा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रोध*) धनुष की प्रत्यंचा, कमान की ताँत या चोरी, **चिल्ला** (प्रान्ती.)।

रोधन–संज्ञा, पु. (सं.) अवरोध, रोक, रुकावट, घेरवार, दमन। वि. **रोधनीय**।

रोधना–क्रि. स. दे. (सं. *रोदन*) रोदन या रुदन करना, चिल्ला चिल्ला कर आँसु बहाना। स. रूप–**रुलाना, रोवा,** प्रे. रूप–**रुलवाना। मु. रोना-धोना**–दुःख-शोक प्रगट करना या क्रंदन करना। **रोना-पीटना**–बहुत विलाप या क्रंदन करना। **रो-रो कर**–ज्यों-त्यों करके, कठिनता से, धीरे-धीरे। **रोना-गाना**–गिड़गिड़ाना, विनती करना। बुरा मानना, माख या दुख करना, चिढ़ना। संज्ञा, पु. खेद, दुख, रंज। वि. स्त्री. **रोनी**। वि. पु. **रोउना** (ग्रा.) चिड़चिड़ा, मुर्हरमी, रोने वाले का सा, थोड़ी-सी बात पर भी रोने वाला, **रोवासा** (दे.)।

रोपक–संज्ञा, पु. (सं.) लगाने, जमाने या खड़ा करने वाला।

रोपण–संज्ञा, पु. (सं.) स्थापित करना, जमाना, लगाना, बैठाना (बीज या पौधा) ऊपर रखना, मोहित करना, **मोहना**। वि. **रोपणीय, रोपित, रोप्य**।

रोपना–क्रि. स. दे. (सं. *रोपण*) लगाना, बैठाना, जमाना, दूसरे स्थान पर एक स्थान से उखड़े पौधे का जमाना, स्थापित करना, ठहराना, अड़ाना, बोना, लोकना, रोकना, ओढ़ लेना, लेने के लिए हथेली आदि सामने करना। संज्ञा, पु. (दे.) ब्याह में नाई द्वारा लाया गया हल्दी मिला चावलों का गीला आटा।

रोपनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रोपनी*) **रोपाई** धान, आदि के पौधों के गाड़ने का कार्य।

रोपित–वि. (सं.) लगाया था जमाया हुआ, स्थापित या रखा हुआ, भ्रांत, मुग्ध, मोहित, आरोपित।

रोप्य–वि. (सं.) रोपणीय, रोपने-योग्य।

रोप्ता–संज्ञा, पु. (सं.) गाड़ने या लगाने-वाला, रोपण-कर्त्ता, रोपने या जमाने वाला।

रोब–संज्ञा, पु. (अ. *रुअब*) आतंक, प्रभाव, महत्व, धाक, दबदवा, प्रताप, **रुआब** (दे.)। वि. **रोबीला, रोबदार**। **यौ. रोवदाव, रोब-ताब। मु. रोब जमाना, बैठाना (ग़ालिब करना)**–प्रभाव या आतंक उत्पन्न करना, जमाना। **रोब**

दिखाना–भय, आतंक या प्रभाव प्रगट करना। **रोब में आना**–आतंक में आना, भय मानना, रोब के वश हो ऐसा काम करना जो साधारणतया न किया जाए। **(चेहरे से) रोब टपकना**–प्रभाव या महत्व प्रगट होना। **(चेहरे पर) रोब आना**–कांति या प्रतिभा आना। **(किसी को) रोब में लाना**–प्रभाव या आतकं के द्वारा आधीन करना। **रोब छा जाना**–आतंक जम जाना। **रोब जाना**–आतंक नष्ट होना।

रोबदार–वि. (अ. *रोब*+*दार* फ़ा. *प्रत्य.*) तेजस्वी, प्रभावशाली, रोबदाब वाला, रोबीला। **रोबीला**–वि. (हि.) रोबदार।

रोम–संज्ञा, पु. (सं. *रोमन*) रोवाँ, लोम, देह के बाल, रोयाँ। **मु. रोम-रोम में**–सारे शरीर में, देह भर में। **रोम-रोम से**–तम-मन से, पूर्ण हृदय से। छेद, छिद्र, सूराख, पानी, जल, ऊन, रूम, एक नगर (इटली) एक प्राचीन राज्य।

रोमक–संज्ञा, पु. (सं.) रोम नगर-निवासी, रोमन, रोम नगर या देश का, रोमन।

रोमकूप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रोवों के छेद, **रोमरंध्र, लेमछिद्र**।

रोमद्वार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रोवों के छिद्र या दे, **रोम-छिद्र**।

रोमन–वि. (अ.) रोम का, रोम की भाषा या लिपि, हिन्दी शब्दों को ज्यों का त्यों अंग्रेज़ी लिपि में लिखने की रीति।

रोमपाट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ऊनी कपड़ा।

रोमपाद–संज्ञा, पु. (सं.) अंग देश के प्राचीन राजा।

रोमराजी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रोमावलि, लोम-पंक्ति, रोवों की पाँति, **रोमाली**।

रोमलता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रोमावलि, रोम-पंक्ति, **लोमलता, रोमवल्लरी**।

रोमहर्षण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **लोमहर्षण**, प्रेम, आनंद, भय, विस्मयादि से शरीर के रोवों का खड़ा होना, रोमाञ्च। वि.। भयंकर, भीषण।

रोमांच–संज्ञा, पु. (सं.) प्रेम, आनंद, भय-विस्मयादि से रोंगटे खड़े हो जाना, पुलकावली छाजाना। वि. **रोमांचित**।

रोमांचित–वि. (सं.) पुलकावली-युक्त, रोंगटों से उभर से युक्त।

रोमावलि-रोमावली–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रोम-पंक्ति, लोम-पंक्ति, रोम-राजी, **रोमाली**, नाभि से ऊपर जाने वाली रोवों की पंक्ति।

रोयाँ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रोमन*) प्राणियों के देहों के बाल, रोम, लोम, **रोवाँ** (दे.)। **मु. रोयाँ खड़ा होना**–प्रेम, आनंद या भवादि से पुलकावली आना। **रोयाँ टेढ़ा होना या करना (बाल बाँका होना)**–हानि होना या करना। **रोयाँ पसीजना**–दया आना, तरस लगना।

रोर–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रवण*) **रौरा** (ग्रा.) कोलाहल, शोरगुल, हुल्लड़, हल्ला, बहुत लोगों के रोने-चिल्लाने का शब्द, उपद्रव, बखेड़ा, हलचल, (अं.) गरजना। वि. उद्धत, उपद्रवी, पुष्ट, प्रचंड, उद्दंड, दुर्दमनीय।

रोरा-रोड़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रोड़ा*) ईंट या पत्थर का टुकड़ा, बड़ा कंकर।

रोरी†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रोली*) रोली संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *रोर*) धूमधाम, चहल-पहल। वि. स्त्री. दे. (हि. *रूरा*) रुचिर, सुन्दर, मनोहर, **रूरी**।

रोल*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रवण*) रोर, हल्ला, शोरगुल, कोलाहल, ध्वनि। संज्ञा, पु. पानी का तोड़, बहाव, रेला, सड़ी सुपारी।

रोलना–क्रि. सं. (दे.) बराबर या चिकना करना, चिकनाना, लुढ़काना।

रोला-रौला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रावण*) रोर, शोर, **रौरा** (ग्रा.), कोलाहल, हल्ला, घमासान लड़ाई। संज्ञा, पु. (सं.) 24 मात्राओं का एक मात्रिक छंद, **काव्य छंद** (पिं.)।

रोली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रोचनी*) हल्दी और चूने से बना लाल चूर्ण, जिससे तिलक लगाते हैं, श्री, **रोरी** (दे.)।

रोवना–संज्ञा, पु. (दे.) रोदन, रोना। क्रि. स. (दे.) रोना। स. रूप–**रोवाना**–रुलाना।

रोवनहार-रोवनिहार*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *रोना*+*हार प्रत्य.*) रोने वाला, **रोवनहारा, रोवनिहारा**।

रोवनी-धोवनी, रोनी-धोनी†–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि. *रोवना*+*धोवना, रोना*+*धोना*) शोक वृत्ति, मनहूसी। वि. स्त्री. शोक-वृत्ति वाली मनहूसिनी, रोने-धोने की वृत्ति वाली।

रोवास–संज्ञा, स्त्री. (दे.) रोने की इच्छा।

रोवासा–वि. दे. (हि. *रोना*) वह पुरुष जो रोना चाहता हो। स्त्री. **रोवासी**।

रोशन–वि॰ (फ़ा॰) प्रकाशित, प्रदीप्त, प्रकाशमान, जलता हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात, विदित, प्रकट।

रोशनचौकी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) शहनाई वाला, **नफ़ीरी** (फ़ा॰)।

रोशनदान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) खिड़की, झरोखा, नवाड़, मोखा, प्रकाशार्थ छिद्र।

रोशनाई–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) मसि, लिखने की स्याही, प्रकाश, रोशनी, तेल, घी, चिकनाई;

रोशनी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) प्रकाश, उजाला, दीपक, ज्ञान-प्रकाश, दीप-राशि का प्रकाश।

रोष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुढ़न, कोष, क्रोध, चिढ़, विरोध, बैर, आवेश, जोश, युद्धोमंग।

रोषी–वि॰ (सं॰ *रोषिन्*) क्रोधी।

रोस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रोष*) कोप, क्रोध, रिस, रोष।

रोह–संज्ञा, पु॰ (दे॰) वनरोज, रोझ, नील गाय। संज्ञा, पु॰ (सं॰) बढ़ना, उगना, ऊपर चढ़ना।

रोहज*–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नेत्र, आँख।

रोहण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आरोहण, चढ़ना, चढ़ाई, ऊपर बढ़ना, पौधा का उगना और बढ़ना, सवार होना। वि॰ **रोहणीय, रोहित**

रोहना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रोहण*) चढ़ना, सवार होना, ऊपर को जाना। क्रि॰ स॰–चढ़ाना, धारण या सवार कराना, ऊपर करना।

रोहिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बिजली, गाय, वसुदेव की पत्नी और बलराम जी की माता, चौथा नक्षत्र, 3 वर्ष की कन्या (स्मृति॰), **रोहिनी** (दे॰)। सूर॰।

रोहित–वि॰ (सं॰) रक्त वर्ण का, रोहित। संज्ञा, पु॰ रोहू मछली, लाल रंग, एक प्रकार का हरिण, कुंकुम, इंद्र-धनुष, केसर, रक्त, लोहू। वि॰ (सं॰ *रोहण*) चढ़ा हुआ।

रोहिताश्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अग्नि, राजा हरिश्चंद्र का पुत्र।

रोही–वि॰ (सं॰ *रोहिन्*) चढ़ने वाला। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक हथियार। स्त्री॰ **रोहिणी**।

रोहू–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रोहिष*) एक प्रकार की बड़ी मछली।

रौंद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *रौंदना*) रौंदने की क्रिया या भाव। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अं॰ *राउंड*) चक्कर, गश्त, घूमना।

रौंदना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *मर्दन*) पाँवों से कुचलना या मर्दित करना। स॰ रूप–**रौंदाना,** प्रे॰ रूप–**रौंदावना, रौंदवाना**।

रौ–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) चाल, वेग, झोंक, गति, पानी का बहाव या तोड़, चाल, प्रवाह, किसी बात की धुन, झोंक, ढंग। *‡संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रव*) शब्द।

रौग़न–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *रोगन*) तेल, चिकनाई, पालिश, वारनिश।

रौज़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) समाधि, क्रम, समाधि का स्थान।

रौद्र–वि॰ (सं॰) रुद्र-संबंधी, भयंकर, डरावना, क्रोध-भरा, प्रचंड। संज्ञा, पु॰ काव्य के नौ रसों में से एक रस जिसमें क्रोध-सूचक शब्दों से भावनाओं और चेष्टाओं के वर्णन हों, 11 मात्राओं के मात्रिक छंद (पिं॰) एक अस्त्र (प्राचीन)।

रौद्रार्क–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 23 मात्राओं के मात्रिक छंद (पिं॰)।

रौध–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चाँदी, धातु विशेष।

रौन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *रमण*) स्वामी, पति। संज्ञा, पु॰ वि॰ (दे॰) रमणीय।

रौनक़–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) प्रफुल्लता, आकृति, और वर्ण, दीप्ति, कांति, विकास, सुषमा, शोभा, छटा, रूप, मनोहरता।

रौप्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चाँदी, रूपा। वि॰ रूपे या चाँदी से बना हुआ।

रौख–वि॰ (सं॰) भयंकर, भयानक, पुरा। संज्ञा, पु॰ एक भयंकर नरक।

रौरा-रौला†–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *रौला*) गुलशोर, हला, धूम, भम्भर। सर्व॰ (ब्र॰ *रावर*) आपका। स्त्री॰ **रौरी**।

रौरे†–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *राव रावल*) आपके (संबोधन) आप। "रौरेहि नाई"–रामा॰।

रौशन–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ रोशन), चमकदार प्रकाशित, विदित, विख्यात।

रौस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰) गति, रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा, बाग़ में क्यारियों के बीच का मकाम।

ल

ल–संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला के अन्तस्थों में से तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दंत है। संज्ञा, पु॰ (सं॰) भूमि, इंद्र।

लंक–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कटि, कमर, मध्य देश। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लंका*) लंका नामक द्वीप।

लंकनाथ, लंकनायक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *लंक+नायक*) रावण, विभीषण।

लंकपति, लंकपती(दे॰)–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लंक*+पति सं॰) रावण, विभीषण।

लंकलाट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *लाँगल्काथ*) एक बढ़िया सफ़ेद मोटा सूती वस्त्र।

लंका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सीलोन** (अं॰) भारत के दक्षिण में एक द्वीप जहा। रावण का राज्य था।

लंकापति, लंकाधिपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **लंकानायक**, रावण, विभीषण।

लंकिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लंका की एक राक्षसी।

लंकेश-लंकेश्वर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रावण, विभीषण।

लंग–संज्ञा, स्त्री दे॰ (हि॰ *लंगड़ा*) (दे॰) धोती का वह खंड जो खाँसा जाता है, काँछ। संज्ञा, लँगड़ापन।

लंगड़–वि॰ दे॰ (हि॰ *लँगड़ा*) जिसका-एक पाँव टूटा हो, पु॰ (दे॰) **लंगर**।

लँगड़ा–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *लंग*) जिसका एक पाँव निकम्मा या टूटा हो। स्त्री॰ लंगड़ी।

लँगड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लंगड़ा*) (पिं॰)। वि॰ स्त्री॰ टूटे पैर वाली। यौ॰ **लँगड़ी भिन्न**–एक भिन्न (गणित)।

लंगर–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ (दे॰) ढीठ व्यक्ति या स्त्री। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) लोहे का एक बढ़ा काँटा जो नावों और जहाज़ों के ठहराने में काम देता है, **ठेंगुर** (प्रान्ती॰), दुष्ट गायादि पशुओं के गलों में बाँधने का लकड़ी का कुंदा, लोहे की मोटी भारी जंजीर, लटकने वाली भारी वस्तु चाँदी का तोड़ा या पायल, कपड़े की कच्ची सिलाई के बड़े या दूर-दूर टाँके, नित्य दरिद्रों को बाँटने का भोजन, दोनों को भोजन तथा उसके बाँटने का स्थान, पहलवानों का लँगोट। वि॰ भारी, वजनी, नटखट, ढीठ। यौ॰ **लोहा-लंगर**–बचाबचाया, रद्दी सामान। **मु॰ लंगर करना**–बदमाशी या शरारत करना। संज्ञा, स्त्री॰ **लंगरख़ाना**–रद्दी सामान का स्थान, कबाड़ख़ाना।

लँगरई, लँगराई*†–संज्ञा, स्त्री॰ हि॰ *लंगर+आई प्रत्य॰*) ढिठाई, धृष्टता, दुष्टता।

लँगूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लांगुल*) बंदर, दुम, पूँछ (वानर की), बड़ी पूँछ वाला काले मुंह का एक बड़ा बंदर।

लँगूरफल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *नारियल*) नारियल।

लंगूल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लांगूल*) पूँछ।

लँगोट, लँगोटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लिंग+ओट* हि॰) उपस्थ तथा गुदा ढँकने का कमर पर बाँधने का छोटा वस्त्र, कौपीन, रुमाली। स्त्री॰ **लँगोटी**। यौ॰ **लँगोटबंद**–**ब्रह्मचारी**, स्त्री त्यागी।

लँगोटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लँगोट*) कौपीन, कछनी, काँछा, **भगई** (*प्रान्ती॰*)। **मु॰ लँगोछिया यार**–लड़कपन का मित्र। **लँगोटी पर फाग खेलना**–अपव्यय या फ़जूलखर्ची करना, सामर्थ्य से अधिक व्यय करना।

लंघन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उपवास, निराहार, **फ़ाक़ा** (फ़ा॰) लाँघने की क्रिया, फाँदना, डाँकना, अतिक्रमण। वि॰ **लंघनीय**।

लंघना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लाँघना*) लाँघना, फाँदना।

लंठ–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लट्ठ*), उजड्ड, मूर्ख, जाहिल, जड़, लट्ठ (दे॰)। यौ॰ **लंठराज, लंठाधिराज**–जड़, मूर्ख।

लंडूरा–वि॰ (दे॰ *या* सं॰ *लाँगूल*) पूँछ कटा पक्षी; अविवाहित प्रौढ़।

लंतरानी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शेखी, व्यर्थ की बड़ी-बड़ी बातें।

लंपट–वि॰ (सं॰) कामी, विषयी, व्यभिचारी, कामुक। संज्ञा, स्त्री॰ **लंपटता**।

लंपटता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कामुकता, दुराचार, व्यभिचार, कुकर्म।

लंब–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी रेखा पर खड़ी होकर दोनों ओर समकोण बनाने वाली रेखा; एक राक्षस जिसे कृष्ण जी ने मारा था (भा॰), पति, अंग। वि॰ (सं॰) लंबा। संज्ञा, पु॰ (सं॰) विलंब, बेर।

लंबकर्ण–वि. यौ. (सं.) गदहा, गधा, जिसके कान लंवे हों, खरगोश।

लंबग्रीव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कमेला ऊँट।

लंब-तड़ंग–वि. दे. यौ. (सं. *लंब+ताड़+अंग*) जो ताड़ के समान बहुत लंबा हो, (दे.) **लंबातड़ंगा**। स्त्री. **लंबी-तड़ंगी**।

लंबा–वि. दे. (सं. *लंब*) जो एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो, विशाल बड़ा, दीर्घ, अधिक ऊँचाई या विस्तार का (समय)। स्त्री. **लंबी**। (विलो. **चौड़ा**) **मु. लंबा करना**–चलता या रवाना करना, पृथ्वी पर पटक या लेटा देना।

लंबा होना–लेट जाना, चला या भाग जाना। **लंबी तानना**–वेग से चलना, भाग जाना, खूब सो जाना।

लंबाई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *लंबा*) लंबापन।

लंबान–संज्ञा, स्त्री. (हि. *लंबा*) लंबाई।

लंबित–वि. (सं.) लंबा; रुका हुआ (अं.) पेंडिंग।

लंबी–वि. स्त्री. (हि. *लंबा*) लंबा का स्त्रीलिंग रूप। **मु. लंबी तानना**–आनंद से लेट कर सोना, देश से चला जाना, भाग जाना।

लंबोतरा–वि. दे. (हि. *लंबा*) लंबा आकार वाला, जो लंबा हो।

लंबोदर–संज्ञा, पु. (सं.) गणेश जी।

लंबोष्ठ–संज्ञा, पु. (सं.) ऊँट।

लंभन–संज्ञा, पु. (सं.) कलंक, प्राप्ति।

लकड़बग्घा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *लकड़ी+ घाघ*) भेड़िए से कुछ बड़ा एक मांसाहारी बनैला जंतु।

लकड़हारा, लकड़िहारा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लकड़ी+हारा प्रत्य.*) वन से लकड़ी लाकर बेचने वाला।

लकड़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लकड़ी*) लकड़ी का मोटा कुंदा, **लक्कड़** (दे.)।

लकड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लगुड़*) काष्ठ, काठ, ईंधन, गतका, लाठी, छड़ी, **लकरी** (दे.)। **मु. (सूखकर) लकड़ी होना**–बहुत दुर्बल होना, सूख कर कड़ा हो जाना।

लक़वक़–वि. (अ.) चटियल मैदान, वह मैदान जिसमें वृक्षादि न हों, साफ़, चमकदार।

लक़ब–संज्ञा, पु. (अ.) उपाधि, ख़िताब, तक़िया कलाम।

लक़वा–संज्ञा, पु. (अ.) एक बात व्याधि जिसमें प्रायः मुँह टेढ़ा हो जाता है, फालिज़।

लकसी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) फल तोड़ने की लग्गी।

लकीर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रेखा, हि. लीक*) रेखा, ख़त, दूर तक एक ही सीध में जाने वाली आकृति, धारी, सतर, पंक्ति। **मु. लकीर का फ़क़ीर**–पुराने ढंग पर चलने वाला। **लकीर पीटना**–वे समझे पुरानी रीति पर चलना।

लकुच–संज्ञा, पु. (सं.) बड़हर। संज्ञा, पु. दे. (हि. *लकुट*) छड़ी।

लकुट, लकुटी, लकुटिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लगुढ़*) छड़ी, लाठी, लकड़ी।

लकुटी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *लगुड़*) छोटी लाठी, दंडा, छड़ी।

लक्कड़, लक्कर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लकड़ी*) काठ का बड़ा कुंदा।

लक्का–संज्ञा, पु. (अ.) पंखे जैसी पूँछ वाला एक तरह का कबूतर।

लक्की–वि. दे. (हि. *लाख*) लाल या लोहे के रंग का, लाखी। संज्ञा, पु. घोड़े की एक जाति। संज्ञा, पु. दे. (हि. *लाख*, सं. *लक्ष=संख्या*) लखपती।

लक्ष–वि. (सं.) शत सहस्र, एक लाख सौ हजार। संज्ञा, पु. (सं.) एक लाख की संख्या-सूचक अंक, अस्त्र के संहार का एक प्रकार, निशाना, लक्ष्य।

लक्षक–संज्ञा, पु. (सं.) दर्शक, देखने या दिखाने वाला, बताने वाला।

लक्षण–संज्ञा, पु. (सं.) नाम, चिह्न, निशान, आसार, किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे उसकी पहिचान हो, परिभाषा, शरीर के रोगादि सूचक चिह्न, शुभाशुभ प्रदर्शक शारीरिक या आंगिक चिह्न (सामु.) शरीर का विशेष काला दाग, **लक्खन, लच्छन** (दे.), चाल-ढाल, तौर-तरीक़ा।

लक्षणा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अभिप्राय या तात्पर्य-सूचक शब्द शक्ति (काव्य, **लक्षणा** (दे.)।

लक्षणा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लक्षण*) **लच्छना** (दे.), लक्षणा। *क्रि. स. दे. (हि. *लखना*) लखना, देखना।

लक्षि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लक्ष्मी*) **लक्षित** (दे.) लक्ष्मी। *संज्ञा, पु. (दे.) लक्ष्य।

लक्षित–वि. (सं.) निर्दिष्ट, देखा या दिखाया या बतलाया

हुआ, अनुमान से जाना या समझा गया। संज्ञा, पु. लक्षणा-शक्ति के द्वारा रात शब्द का अर्थ। यौ. **लक्षितार्थ**।

लक्षित, लक्षणा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक प्रकार की लक्षणा (काव्य.)।

लक्षिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रकटित परकीया नायिका अर्थात् जिसका अन्य पुरुष के प्रति प्रेम दूसरों पर प्रगट हो (सा.)।

लक्षी–संज्ञा. स्त्री. (सं.) आठ रमण वाले चरण का एक वर्णिक छंद (पिं.), खंजन, गंगाधर।

लक्ष्म–संज्ञा, पु. (सं.) चिह्न, निशान, अंक।

लक्ष्मण–संज्ञा, पु (सं.) सुमित्रा से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम जी के छोटे भाई, जो शेषावतार माने जाते हैं। लक्षण, चिह्न, निशान, लपन, लखन, **लक्खन** (दे.)।

लक्ष्मणा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) श्रीकृष्ण जी की पटरानी, श्रीकृष्ण के पुत्र साम्य की स्त्री हो दुर्योधन की पुत्री थी; सारस पक्षी की मादा, सारसी, एक औषधि विशेष (वैद्य.)।

लक्ष्मी–संज्ञा, स्त्री. सागर तनया, विष्णु-प्रिया तथा धन की अधिष्ठात्री देवी (पुरा.), रमा, कमला, रामा, संपत्ति, संपत्ति, शांति, सौंदर्य, दुर्गा, श्री, कांति, एक वर्णिक छंद जिसमें दो रगण, एक गुरु और एक लघु वर्ण होता है। आर्या छंद का प्रथम रूप (पिं., गृह- स्वामिनी, दवि, **लक्ष्मि, लछिमी, लच्छिमी** (दे.)।

लक्ष्मीकांत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु भगवान, रमाकांत, रमापति।

लक्ष्मीघर–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु भगवान, लग्विणी वृत (पिं.)।

लक्ष्मीनाथ, लक्ष्मी-नायक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु भगवान, रमेश।

लक्ष्मीपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु भगवान, **लछिमीपति** (दे.)।

लक्ष्मीपुत्र–वि. यौ. (सं.) धनी, धनवान्।

लक्ष्मीवान–संज्ञा, पु. (सं.) धनी, धनवान्।

लक्ष्मीवाहन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) उल्लू, वि. (सं.) मूर्ख धनी (व्यंग्य)।

लक्ष्य–संज्ञा, पु. (सं.) उद्देश्य, निशाना, अभीष्ट वस्तु, जिस पर कोई आक्षेप किया जाए, शब्द का वह अर्थ जो लक्षणा-द्वारा ज्ञात हो (काव्य.), अस्त्रों का संहार प्रकार।

लक्ष्यभेद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) उड़ते या चलते हुए लक्ष्य के भेदने का निशाना। वि. **लक्ष्यभेदी**।

लक्ष्यवेधी–संज्ञा, पु. (सं.) निशाना लगाने या लक्ष्य भेदने वाला।

लक्ष्यार्थ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शब्द की लक्षणा-शक्ति से प्रगट होने वाला अर्थ (काव्य.), उद्देश्यार्थ।

लख–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लक्ष*) प्रत्यक्ष, माया का प्रण, लाख, लक्ष, लाख संख्या।

लखघर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *लाक्षागृह*) लाख का घर।

लखन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लक्ष्मण*) लक्ष्मण जी, **लक्खन लषन** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. (हि. *लखना*) देखने या लखने की क्रिया या भाव। वि. **लखनीय**।

लखना*–क्रि. स. दे. (सं. *लक्ष*) देखना, ताड़ना, लक्षण देखकर अनुमान करना, विचारना। स. रूप–**लखना,** प्रे. रूप **लखवाना**।

लखपति-लखपती–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *लक्षपति*) वह धनी जिसके यहाँ एक लाख रुपए सदा तैयार रहें।

लखलखा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मूर्च्छा मिटाने वाली एक सुगंधित औषधि।

लखलखाना–क्रि. अ. (दे.) हाँफना।

लखलुट, लखलूट–वि. दे. यौ. (हि. *लाख+लुटाना*) फ़िज़ूल-खर्च, अपव्ययी, खर्चीला, उड़ाऊ।

लखाउ, लखाऊ*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लखना*) लक्षण, चिह्न, पहचान, लखने या जानने-योग्य, **चिन्हारी**–चिन्ह-रूप में दिया पदार्थ।

लखाना*–क्रि. अ. दे (हि. *लखना*) दिखाई पड़ना। क्रि. स. दिखलाना, समझाना।

लखाव *–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लखाउ*) लक्षण, चिन्ह, पहचान।

लखिमी *†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लक्ष्मी*) रमा, कमला, संपत्ति, **लछिमी, लच्छिमी** (दे.)।

लखिया*†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लखना+इया प्रत्य.*) लखने या देखने वाला, लक्षक; लखपति।

लखी–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लाखी*) लाख के रंग का घोड़ा, लाखी, **लक्खी** (दे.)।

लखेरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लाख+एरा प्रत्य.*) लाख की चूड़ी बनाने या बेचने वाला। स्त्री. **लखेरिन**।

लखौट†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लाख+ओट प्रत्य.*) लाख या लाह की चूड़ी।

लखौटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लाख+ औटा प्रत्य.*) केसर, चंदनादि से बना शरीर में लगाने का अंगराग या सुगंधित लेप, सेंदुर दानी, लाख की बड़ी चूड़ी।

लखौरा–वि. दे. (हि. *लाख+औरा प्रत्य.*) लाख या लाह से बना हुबा।

लखौरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लाख +औरी प्रत्य.*) लाख या लाह से बनी हुई वस्तु; संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लाखा+औरी प्रत्य.*) एक प्रकार की भ्रमरी या भृंगी का घर, भृंगी कीड़ा, एक छोटी पतली ईट, **नौतेरही** या **ककैया** ईंट (प्रान्ती.)। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लक्ष*) किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियों का फल चढ़ाना।

लग, लगि–क्रि. वि. दे. (हि. व. लौ) बचत, तक, ताहें, निकट, समीप, पास, **लौं** (व्र.), **लगे** (ग्रा.)। संज्ञा, स्त्री. प्रेम, लगन, लाग, लौ। *अव्य.* हेतु, लिए, वास्ते, संग, साथ।

लगड़–संज्ञा, पु. (दे.) पक्षी विशेष, बाज।

लगड़बग्घा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लकड़ बाघ*) लकड़बग्घा।

लगढग–क्रि. वि. दे. (हि. *लगभग*) लगभग, निकट, करीब।

लगन–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लगना*) प्रवृत्ति, धुन, रुचि, किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया, लौ, स्नेह, प्रेम, संबंध, चाह, लगाव। **मु. लगन लगना (लगाना)**–प्रेम होना (करना)। **लगन चढ़ना**–विवाह की लग्न पत्रिका का वर के यहाँ पढ़ा जाना और बर का तिलक होना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *लग्न*) ब्याह की साइत या मुहूर्त्त, विवाहादि के होने के दिन, **सहारग, सहालग** (प्रान्ती.), लग्न, मुहूर्त। संज्ञा, पु. (फ़ा.) एक प्रकार की बड़ी थाली।

लगनपत्री–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *लग्न-पत्रिका*) ब्याह की निश्चित तिथि सूचक वर के यहाँ भेजी हुई कन्या के पिता की चिट्ठी।

लगनवट–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लगन*) प्रेम, स्नेह, प्यार, चाह।

लगना–क्रि. अ. दे. (सं. *लग्न*) सटना, दो वस्तुओं के तलों का परस्पर मिलना, जुड़ना, मिलना, दो वस्तुओं का चिपकाया टाँका (सिया) या जड़ा जाना, सम्मिलित या शामिल होना, क्रम से रखा या सजाया जाना, छोर या किनारे पर पहुँच कर ठहरना, टिकना या रुकना, व्यय या खर्च होना, जान पड़ना, ज्ञात होना, स्थापित होना, आघात या चोट पड़ना, रिश्ते या संबंध में कुछ होना, किसी वस्तु का चुन-चुनाहट या जलन उत्पन्न करना, खाद्य वस्तु का बरतन के तल में जम जाना, प्रारंभ होना, चलना या जारी होना, प्रभाव या असर पड़ना, सड़ना, गलना, प्राप्त होना, रहना। जैसे–भूत, भेड़िया लगना, हानि करना। स. रूप–**लगाना,** प्रे. रूप–**लगावना, लगवाना**। **मु. लगती बात कहना**–मर्मभेदी कड़ी बात कहना, चुटकी लेना। आरोप होना, हिसाब या गणित होना, साथ साथ या पीछे-पीछे चलना, गायादि पशुओं के दूध होना या दुहा जाना, धँसना, चुभना, गढ़ना, छेड़छाड़ या छेड़खानी करना, बंद होना, मुंदना, बदना या दाँव पर रखा जाना, होना, घात या ताक में रहना, पीढ़ा या कष्ट देना। **नोट**–यह क्रिया अनेक शब्दों के साथ आकर भिन्न-भिन्न अनेक अर्थ देती है। संज्ञा, पु. (दे.) जंगली जंतु। वि. (दे.) लगने वाला। (लो.) पानी लगना–खाली पेट पानी पीने पर दर्द महसूस करना।

लगनि*–संज्ञा, स्त्री. व्र. (हि. *लगन*) स्नेह, प्रेम, लगाव, संबंध।

लगनी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *लगन–याली*) थाली, परात, रकाबी। वि. (दे.) लगने वाली या फबती।

लगभग–क्रि. वि. (हि. *लग–पास+भग अनु.*) करीब-करीब, प्रायः।

लगमात–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *लगना+मात्रा* सं.) व्यंजनों में मिले स्वरों के सूक्ष्म रूप, मात्रा।

लगव*†–वि. दे. (अ. *लगी*) अनृत, मिथ्या, झूठ, असत्य, बेकार, व्यर्थ, निस्सार।

लगवार†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लगना*) बार, प्रेमी, पति।

लगातार–क्रि. वि. (हि. *लगना+तार–सिलसिला*) निरंतर, एक के पीछे एक, मिलित, बराबर, एकचाल, एक सा, क्रमशः। **लगान**–संज्ञा, पु. (हि. *लगना या लगाना*) भूमिकर, राजस्व, सरकारी महसूल, पोत, जमाबंदी, लगने या लगाने का भाव।

लगाना–क्रि. स. (हि. *लगना का स. रूप*) मिलाना, सटाना,

जोड़ना, मलना, रगड़ना, चिपकाना, गिराना, जमाना, पेड़-पौधे आरोपित करना, फेंकना, क्रम से रखना या सजाना, चुनना, उचित स्थान पर पहुँचना, व्यय या खर्च कराना, अनुभव या ज्ञात कराना, नई प्रवृत्ति आदि पैदा करना, चोट पहुँचाना या आघात करना, उपयोग या काम में लाना, आरोपित करना या अभियोग लगाना, प्रज्वलित करना, जलाना, जड़ना, गणित या हिसाब करना, कान भरना, ठीक जगह पर बैठाना, नियुक्त करना। यौ. **लगाना-बुझाना**—लड़ाई-झगड़ा कराना, वैमनस्य करा देना। (किसी को कुछ) **लगा कर कुछ कहना** (गाली देना)—बीच में संबंध स्थापित कर कुछ आरोप करना। पशु दुहना, गाड़ना, ठोंकना धँसाना, छुलाना, स्पर्श कराना, दाँव या बाज़ी पर रखना, अभिमान करना, पहिनना, ओढ़ना, करना, सम्मिलित करना। **नोट**—लगने के समान इसका प्रयोग भी विविध क्रियाओं के साथ भिन्न-भिन्न अर्थों में होता है।

लगाम—संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) घोड़े का दहाना, रास, बाग, दोनों ओर रस्सी या चमड़े का तस्मादार घोड़े के मुँह में रखने का लोहे का कँटीला ढाँचा, तथा इसकी रस्सी या तरमा जो सवार पकड़े रहता है।

लगार*†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लगना+आर प्रत्य.*) नियमित रूप से कुछ देना या करना, बंधेज, बंधी, प्रीति लगाव, संबंध, सिलसिला, लगन, क्रम तार, भेदिया मेली, संवंधी।

लगालगी—संज्ञा, स्त्री. (हि. *लगना*) प्रीति, लगन, लाग, प्रेम, मेलजोल, संबंध।

लगाव—संज्ञा, पु. (हि. *लगना+आव प्रत्य.*) संबंध, ताल्लुक, वास्ता।

लगावट—संज्ञा, स्त्री. (हि. *लगना+आवट प्रत्य.*) संबंध, ताल्लुक, वास्ता, प्रीति।

लगावन*†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लगना*) लगाव, संबंध; दूध जमाने को थोड़ा-सा दही।

लगावना—क्रि. स. दे. (हि. *लगाना*) लगाना, मिलाना, जोड़ना।

लगि*†—*अव्य.* दे. (हि. *लौ*) तक, पर्य्यंत, पास। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लग्गी*) लगगी, **लग्घी** (ग्रा.)।

लगुँहा—वि. (दे.) सुंदर, मनोहर, मनभावन,

लगु*†—*अव्य.* दे. (हि. *लौं, लग*) लौं, तक, पर्यंत, लगि।

लगुआ, लगुवा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *लगाना*) मित्र, प्रेमी, उपपत्ति।

लगुड़—संज्ञा, पु. (दे.) (सं.) लाठी, छड़ी, डंडा, लकुट, लकुटी।

लगूर, लगूज*—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लाँगूल*) पूँछ, दुम, लंगूर।

लगे†—अव्य. दे. (हि. *लग*) पास, निकट, समीप।

लगौह*—वि. दे. (हि. *लगना+औंहाँ प्रत्य.*) प्रेमेच्छु, रिझवार, लगन लगाने की इच्छा वाला।

लग्गा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *लगुड़*) लंबा बाँस, वृक्षों से फल आदि तोड़ने की लंबी लग्गी, लगसी, **लग्घा** (ग्रा.)। संज्ञा, पु. दे. (हि. *लगाना*) कार्यारंभ करना। यौ. **मु. लग्गा लगाना**।

लग्गी—संज्ञा, स्त्री. (हि. *लग्गा*) पतला लंबा बांस जिससे फलादि तोड़ते हैं, **लगसी, लग्घी** (प्रान्ती.)।

लग्घड़—संज्ञा, पु. (दे.) बाज, शचान, चीता, लकड़बग्घा।

लग्घा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *लग्गा*) लंबा बाँस। स्त्री. **लग्घी**।

लग्न—संज्ञा, पु. (सं.) एक राशि के उदय रहने का समय, मुहूर्त्त, शुभकार्य की साइत (ज्यो.), व्याह का समय या दिन, व्याह, **सहारग, सहालग, लगन** (दे.)। वि. (दे.) मिला या लगा हुआ, आसक्त, लज्जित। संज्ञा, पु., स्त्री., (दे.) लगन, प्रेम, स्नेह।

लग्नदिन—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विवाह का निश्चित दिन।

लग्नपत्र—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह चिट्ठी जिसमें विवाह की रीतियों के लिए निश्चित समय क्रम से लिखे रहते हैं, **लग्नपत्रिका**।

लग्नपत्रिका—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लग्न-पत्र।

लघिमा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक सिद्धि जिससे मनुष्य बहुत ही हलका या छोटा हो जाता है, लघुतम, ह्रस्व या लघु होने का भाव।

लघिष्ट—वि. (सं.) अति लघु या छोटा या नीच, अधम, निकृष्ट।

लघु—वि. (सं.) अल्प, छोटा, कनिष्ठ, शीघ्र, सुंदर, अच्छा, निःसार, कम, थोड़ा, हलका, ह्रस्व। संज्ञा, पु. व्याकरण में एक मात्रिक स्वर, एक मात्रा का ह्रस्व वर्ण जिसका चिह्न (।) है।

लघुकाय—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बकरा, भेड़ा। वि. (सं.) छोटे

शरीर वाला।

लघुचेता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *लघुचेतस्*) तुच्छ या बुरे विचार वाला, नीच, दुष्ट।

लघुता, लघुताई–(दे॰)–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *लघुता*) छोटाई, हलकाई, तुच्छता, नीचता।

लघुपाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सहज में शीघ्र पचने वाला भोज्य या खाद्य पदार्थ।

लघुमति–वि॰ यौ॰ (सं॰) कम समझ, मूर्ख, मंदमति।

लघुमान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नायिका का थोड़ा रूठना या कुपित होना या अन्य स्त्री से नायक की बातचीत देख रूठना (काव्य), अल्प परिमाण।

लघुशंका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पेशाब करना, मूत्र-त्याग।

लघुहस्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) छोटा हाथ। वि॰ शीघ्रता से बाण चलाने वाला, हलके हाथ वाला, फुर्तीला।

लघ्वी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अति छोटी, अति हलकी।

लचक–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लचकना*) झुकाव, लचन, वस्तु के झुकने का गुण, लचने का भाव।

लचकना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *लच अनु॰*) लचना, झुकना, कटि आदि का कोमलतादि से झुकना। स॰ रूप–**लचकाना,** प्रे॰ रूप–**लचकवाना**।

लचकनि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लचकना*) लचक, लचीलापन।

लचन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लचक*) लचक, नवनि, **लचनि** (दे॰)।

लचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लचकना*) लचकना, झुकना, नवना, नम्र होना।

लचार*†–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *लाचार*) लाचार, मज़बूर, विवश, बेवस।

लचारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *लाचारी*) लाचारी, मज़बूरी, बेवशी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) उपहार, नज़र, भेंट, एक प्रकार का गीत (संगी॰)।

लच्छ*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्य*) मिस, ब्याज, बहाना, निशाना, लक्ष्य, ताक। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लक्ष*) लाख, सौ हज़ार। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्मी*) **लच्छि,** लक्ष्मी।

लच्छन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लक्षण*) लक्षण, चिन्ह, लक्ष्मण जी। वि॰ **लच्छनी**।

लच्छना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लखना*) लखना, देखना, चितवना। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लक्षणा*) लक्षणा-शक्ति।

लच्छमी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्मी*) लक्ष्मी, संपत्ति, **लच्छिमी, लछिमी** (दे॰)।

लच्छा–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰*) गुच्छे या झप्पे के आकार में लगे हुए तार, किसी वस्तु के सूत जैसे पतले लंबे टुकड़े, पैर का एक गहना।

लच्छि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्मी*) लक्ष्मी, रमा।

लच्छित*–वि॰ दे॰ (सं॰ *लक्षित*) लक्षित, आलोचित, देखा हुआ, अंकित, चिन्हित, लक्षण वाला।

लच्छी–वि॰ (दे॰) एक तरह का घोड़ा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्मी*) लक्ष्मी, रमा। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लच्छा*) छोटा लच्छा, अंटी।

लच्छेदार–वि॰ (हि॰ *लच्छा+दार फ़ा॰ प्रत्य॰*) लच्छे वाले (खाद्य पदार्थ), मधुर और मनरोचक बातें।

लछन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्मण*) लक्ष्मण जी। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लक्षण*) लक्षण, चिन्ह।

लछमन, लछिमन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्मण*) लक्ष्मण जी।

लछमन झूला–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) रस्सों या तारों से बना पुल (हरिद्वार से आगे ऋषिकेश में)।

लछमना–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष्मण*) लक्ष्मण, श्रीकृष्ण जी की एक पटरानी, साम्ब की पुत्री, सारस की मादा, सारसी, एक औषधि विशेष।

लछमी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लक्षमी*) लक्षमी, रमा, **लछिमी, लच्छिमी** (दे॰)।

लजना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लजाना*) शर्माना, लजाना।

लजलजा–वि॰ (दे॰) लसदार, चिपचिपा।

लजलजानी–क्रि॰ अ॰ (दे॰) चिपचिपाना, लसलसाना।

लजवाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लजाना*) दूसरे को लज्जित करना, **लजावना**।

लजाधुर†–वि॰ (सं॰ *लज्जाधर*) लज्जालू, लज्जावान्, शर्मीला। संज्ञा, पु॰ लजालू पौधा।

लजाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लज्जा*) शर्माना, लज्जित होना। क्रि॰ स॰ लज्जित करना, **लजावना**। प्रे॰ रूप–**लजवाना**।

लजारू, लजालू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लजालु*) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छून से तत्काल सिकुड़ जाती हैं, लज्जावंती, **छुईमुई** (ग्रा॰)।

लजावना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लजाना*) लजाना, लजना।

लजिवाना*–क्रि॰ अ॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लजाना*) लजाना, शर्माना।

लजीला–वि॰ दे॰ (सं॰ *लज्जाशील*) लज्जालू, लज्जावान। स्त्री॰ **लजीली**।

लजूरी‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रज्जु*) रस्सी, डोरी, **लेजुरी** (ग्रा॰)।

लजोर*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *लज्जाशील*) लज्जालू।

लज्जत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) स्वाद, मज़ा।

लज्जा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हया, **लाज** (दे॰), शर्म, पत, इज़्ज़त, मान-मर्य्यादा। वि॰ **लज्जित**।

लज्जावंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **लजालू, छुईमुई, लजवंती** (दे॰)।

लज्जावती–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) शर्मीली, लजीली।

लज्जावान्–वि॰ (सं॰ *लज्जावत*) लज्जाशील, शर्मीला, लजीला। स्त्री॰ **लज्जावती**।

लज्जा-रहित–वि॰ (सं॰) निर्लज्ज, बेशर्म।

लज्जाशील–वि॰ (सं॰) लजीला।

लज्जित–वि॰ (सं॰) शर्माया हुआ।

लट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लट्वा*) अलक, वेश पाश, केश-लता, उलझे बालों का गुच्छा। **मु॰ लट छिटकाना**–सिर के बालों को खोलकर इधर-उधर बिखराना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लपट*) लपट, लौ, ज्वाला।

लटक–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लटकना*) लटकने का भाव, झुकाव, लचक, शरीर के अंगों की मनोहर चेष्टा, अंगभगी।

लटकन–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लटकना*) लटकने वाला पदार्थ, लटक, नाक का एक गहना, सरपेंच या कलँगी में लगे रत्नों का गुच्छा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक पेड़ जिसके बीजों से गेरुआ लाल रंग निकलता है।

लटकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लटन=झूलना*) झूलना, टँगना, लचकना, किसी खड़ी वस्तु का झुकना, बल खाना, किसी कार्य का अपूर्ण पड़ा रहना, विलंब या देर होना, ऊँचे आधार से नीचे की ओर अधर में टिका रहना। स॰ रूप–**लटकाना, लटकावना**, प्रे॰ रूप–**लटकवाना**। **मु॰ लटकती चाल**–बल खाती हुई मनोहर चाल। **लटके रहना**–लटकन में रहना, फँसे रहना (अपूर्ण कार्यादि में)।

लटका–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लटक*) चाल, ढय, गत, बनावटी चेष्टा, हावभाव, बातचीत में बनावटी ढंग, धोखा, संक्षिप्त उपचार, तंत्र-मंत्रादि की युक्ति, टोना, टोटका, चुटकुला।

लटकाव–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लटका*) टँगाव, झुकाव, भुलाव। **मु॰ लटका देना**–झाँसा या धोखा देना, भुलावे में डालना।

लटकाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लटकना*) टाँगना, झुकाना, अधर में रखना, विलंब करना, भुलावे में रखना, **लटकावना**।

लटकीला–वि॰ दे॰ (हि॰ *लटक+ईला प्रत्य॰*) लटकता या झूमता हुआ। स्त्री॰ **लटकीली**।

लटकौवाँ–वि॰ दे॰ (हि॰ *लटकाना+औवाँ प्रत्य॰*) खटकने वाला।

लटजीरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (दे॰ *लट+ जीरा* हि॰) अपामार्ग, चिचड़ा, एक प्रकार का जड़हन धान।

लटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ बहुत थक जाना, लड़खड़ाना, अशक्त होना, दुर्बल और निर्बल होना, हतोत्साह और निकम्मा होना, व्याकुल या विकल होना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लल*) चाहना, ललचाना, लुभाना, सप्रेम लीन या तत्पर होना।

लटपट–वि॰ दे॰ (हि॰ *लटपटाना*) मिला, सटा, लड़खड़ाना।

लटपटा–वि॰ दे॰ (हि॰ *लटपटाना*) लड़खड़ाता, गिरता-पड़ता, ढीला-ढाला, अस्पष्ट और अव्यवस्थित, ठीक और स्पष्ट क्रम से जो न निकले (शब्दादि), अस्तव्यस्त, टूटा-फूटा, अंडबंड, थक कर शिथिल, अशक्त। वि॰ जो अधिक मोटा (गाढ़) और पतला न हो, गिजा हुआ, लुटपुटा, गला-दला हुआ (वस्त्रादि)।

लटपटान–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लटपटाना*)–लचक, लटक, लड़खड़ाहट।

लटपटाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लड+पत्*) गिरना, पड़ना, ढिगना, लड़खड़ाना, चूकना, भली-भाँति न चलना। क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लल*) मोहित होना, लोभाना, अनुरक्त या लीन होना, विचलित होना, घबड़ा जाना।

लटा†–वि॰ दे॰ (सं॰ *लट्ट*) दुर्बल, अशक्त, लंपट, लोलुप, नीच, लुच्चा, हीन, तुच्छ, बुरा। स्त्री॰ **लटी**।

लटाई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) चर्खी, पेरनी, जिसमें डोरी लपेट कर पतंग उड़ाते हैं।

लटापटी–वि॰ संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लटपटाना*) लड़खड़ाती, ढीली-ढाली, अस्त-व्यस्तीय, अंड-बंडी, लड़ाई-झगड़ा।

लटापोट*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *लोट+पोट*) मोहित, मुग्ध, आसक्त, विवश।

लटी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लटा*) निर्बल, दुवली, बुरी वेश्या, साधुनी, भक्तिन, राप, झूटी-बुरी बात। वि॰ (दे॰) फटी, चिथड़ा हुई।

लटुआ, लटुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लट्टू*) लट्टू, एक गोल खिलोना, बरछी या भाला का फल।

लटुक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लकुट*) छड़ी। स्त्री॰ **लटुकी**–लकुटी।

लटुरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लटूरी*) लटूरी।

लटू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लट्टू*) लट्टू, भौंरा। **मु॰ लटू (लट्टू) होना**–मुग्ध और प्रसन्न होना, रीझना।

लटूरिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चोटी, जटा, लट।

लटूरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लट*) अलक, केश, केश-कलाप, लटकता हुआ वालों का गुच्छा।

लटोरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लस=चिप-चिपाहट*) एक पेड़ जिसके फलों में वहुत-सा लसदार गूदा होता है, लसोड़ा, **लसोढ़ा** (ग्रा॰)।

लट्टपट्ट‡–वि॰ दे॰ (हि॰ *लथपथ*) लथपथ होना, भीग जाना।

लट्टू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लुठन=लुढ़कना*) एक गोल खिलौना जिसे डोरे से लपेट फेंक कर नचाते हैं। **मु॰ किसी पर लट्टू होना**–आसक्त या मोहित होना, उत्कंठित या लालायित होना।

लट्ठ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *यष्टि*) बड़ी लाठी। **लो॰**–"पड़ा लट्ठ तें काम, विसरि गई पट्टे-बाज़ी"।

लट्ठबाज़–वि॰ दे॰ (हि॰ *लट्ठ+बाज* फ़ा॰) लाठी से लड़ने वाला **लठैत** (ग्रा॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **लट्ठबाज़ी**।

लट्ठमार–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लट्ठ+मारना*) लट्ठ मारने वाला, अप्रिय या कठोर, कर्कश या कटु बोलने वाला।

लट्ठा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लट्ठ*) लकड़ी की शहतीर, बल्ली, कड़ी, धन्नी, लकड़ी का मोटा और लंबा टुकड़ा, एक मोटा और गाढ़ा कपड़ा।

लट्ठी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) लाठी।

लठ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *यष्टि*) बड़ी लाठी, लट्ठ।

लठैत–वि॰ दे॰ (हि॰ *लठ+ऐत प्रत्य॰*) लाठीबाज़। वि॰ (दे॰) लठ से लड़ने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **लठैती**।

लठ्ठर–वि॰ (दे॰) शिथिल, सुस्त, ढीला, धीमा, आलस, मट्ठर।

लड़ंत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लड़ना*) लड़ाई, भिड़ंत, सामना, मुठभेड़, कुश्ती।

लड़–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *यष्टि*) लक्षी, माला, श्रेणी, रस्सी का एक तार, पान, पंक्ति, पाँति। वि॰ स॰ क्रि॰ झगड़, भिड़, गुथ।

लड़कपन–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लड़का+नल प्रत्य॰*) बालक होने की अवस्था, लड़काई, बाल्यावस्था, चंचलता, चपलता।

लड़कबुद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ दे॰ (हि॰ *लड़का+बुद्धि*) बालकों की सी समझ, नासमझी, बालमति।

लड़का–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लट, या* हि॰ *लाड़=दुलार*) अल्पवयस्क, वालक, बेटा, पुत्र, थोड़ी उम्र का मनुष्य, **लरका, लरिका** (दे॰)। स्त्री॰ **लड़की। मु॰ लड़कों का खेल**–बिना महत्व की बात, सहज कार्य, लड़कों का तमाशा।

लड़काई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लड़का+आई प्रत्य॰*) लड़कपन, बालपन, बालत्व, शिशुता, शैशव, **लरिकाई** (दे॰)।

लड़का-बाला–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *लड़का+बाल* सं॰) परिवार, कुटुंब, वंश, संतान, औलाद।

लड़की–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लड़का*) वेटी, पुत्री, कन्या।

लड़कौरी–वि॰ स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लड़का+औरी प्रत्य॰*) वह स्त्री जिसकी गोदी में लड़का हो, लड़के वाली, **लरकौरी** (दे॰)।

लड़खड़ाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लड़=डोलना+खड़ा*) इधर-उधर को झुकना या झोंका खाना, डगमगाना, डगमगा कर गिरना, चूकना, विचलित होना, स्थिर न रहना, **लरखराना** (दे॰)।

लड़ना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *रणुन*) झगड़ना, युद्ध करना, भिड़ना, परस्पर आघात करना, मल्लयुद्ध करना, बहस, तकरार, या हुज्जत करना, झगड़ा करना, टकराना या टक्कर खाना, मुकदमा चलाना, पूरा पूरा ठीक बैठना, सटीक होना, लक्ष्य पर पहुँचना, संज्ञा, स्त्री॰ लड़ाई। वि॰ **लड़ाका, लड़ैया**।

लड़बड़ाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लड़बड़*) हकलाना, तुतलाना, लड़खड़ाना।

लड़ाई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लड़ान+आई प्रत्य॰*) युद्ध, संग्राम, मल्लयुद्ध, झगड़ा, भिड़ंत, तकरार, विवाद, बहस, टक्कर, विरुद्ध, युक्ति या चाल लगाना, मुकदमा-चलाना, वैर,

विरोध, किसी मामले में सफलतार्थ विरुद्ध यत्न।

लड़ाका–वि॰ दे॰ (हि॰ *लड़का+आका प्रत्य॰*) योद्धा, शूरवीर, झगड़ालू, तकरारी, विवादी, बहसी, **लड़ाँका** (ग्रा॰)। स्त्री॰ **लड़ाँकी**।

लड़ाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *लड़ना का* स॰ *रूप*) दूसरे को लड़ने या झगड़ने में लगा देना, भिड़ाना, परस्पर उलझाना, तकरार या हुज्जत करा देना, सफलतार्थ प्रयोग करना, टक्कर खिलाना, लक्ष्य पर पहँचाना। क्रि॰ स॰ (हि॰ *लड़=प्यार*) दुलार या लाड़-प्यार करना।

लड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लड़*) पंक्ति, माला रस्सी का एक तार, श्रेणी, **लरी** (दे॰)। क्रि॰ स॰ भू॰ (स्त्री॰) लड़ना।

लडुआ-लडुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लड्डुक*) मोदक, लड्डू, एक मिठाई, **लाडू** (प्रान्ती॰); लड्डू।

लड़ैत†–वि॰ दे॰ (हि॰ *लाड़–दुलार+ऐता प्रत्य॰*) दुलारा, लाड़-प्यार से इतराया हुआ, लाड़ला, लाड़िला, ढीठ, शोख, प्रिय, प्यारा, धृष्ट। वि॰ दे॰ (हि॰ *लड़ना*) योद्धा, लड़ने वाला, लड़ाका।

लड्डू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लड्डुक*) मोदक, लडुआ, लडुवा, मिठाई, **लाडू। मु॰ ठग के लड्डू खाना**–पागल या वेहोश होना, नासमझी करना। **मन के लड्डू (मन-मोदक) खाना या फोड़ना**–व्यर्थ किसी बड़े लाभ की कल्पना करना।

लडयाना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लाड़–दुलार*) दुलार करना, दुलराना, लाड़-प्यार करना, **लड़ाना**।

लढ़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लुढ़कना*) वैलगाड़ी, छकढ़ा, बड़ी गाड़ी। स्त्री॰ **लढ़ी**।

लढ़िया†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लुढ़कना*) बैलगाड़ी, छोटी गाड़ी, छोटा छकड़ा।

लढ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लढ़ा*) छोटी बैलगाड़ी, छोटा छकड़ा।

लत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रति*) दुव्यसन, कुटेंव, बुरा स्वभाव, बुरी आदत।

लतख़ोर-लतख़ोरा–वि॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *लात+ख़ोर–खाने वाला* फ़ा॰) लातों की मार सदा खाने वाला, निर्लज्ज, कमीना, नीच, पांयदाज, गुलाम-गर्दा। स्त्री॰ **लतख़ोरिन**। संज्ञा, स्त्री॰ **लतखोरी**।

लतर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लता*) बेल, लता।

लतरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पुराने जूते। स्त्री॰ **लतरी**।

लतरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक पौधा जिसकी फलियों के दानों से दाल वनती है। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लतरा*) पुरानी जूती।

लता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वह पौधा जो पृथ्वी पर डोरी सा फैले या किसी वड़े पेड़ से लिपट कर ऊपर फैले, लतिका, बेल, बल्लरी, बृतती, बल्ली, बौंड़, कोमल शाखा, सुंदरी स्त्री।

लता-कुंज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **लता-निकुंज,** लताओं से मंडप के समान छाया हुआ स्थान, **लतागृह, लता-भवन**।

लतागृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लताओं का घर, लता-कुंज, लताओं से छाया स्थान। डाँटना।

लताड़–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) डाँट फटकार।

लताड़ना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लात*) पैरों से कुचलना, रौंदना, हैरान करना।

लतापता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लतापत्र*) पेड़-पत्ते, जड़ी-बूटी।

लता-भवन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लताओं द्वारा छाया हुआ मंडपाकार स्थान, लजाकुंज।

लता-मौन (दे॰) **लतालय, लतायण**, लतासण।

लता-मंडप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लताओं से छाया हुआ स्थान विशेष, लता गृह, **लतावास** (यौ॰)।

लतिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटी, लता, बेलि, बल्लरी।

लतिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लत+इया प्रत्य॰*) बुरे स्वभाव का, कुचाली दुराचारी।

लतियाना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लात+आना प्रत्य॰*) पैरों से कुचलना या रौंदना, खूब लातें मारना।

लती–वि॰ दे॰ (हि॰ *लत+ई प्रत्य॰*) स्वभाव या टेंव वाला, आदी, दुराचारी, कुचाली, कुकर्मी, बुरी लत वाला।

लतीफ़–वि॰ (अ॰) बढ़िया, साफ़, निर्मल, स्वच्छ, मज़ेदार, छोटा (विलो॰ **कसीफ़**)।

लत्ता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लक्तक*) फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा, कपड़े का टुकड़ा। स्त्री॰ *लत्ती*। **मु॰ लत्ता लगाना (लपेटना)**, फटे वस्त्र पहिनना, कंगाल होना। यौ॰ **कपड़ा-लत्ता**–पहनने के कपड़े।

लत्ती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लात्त*) लात, पद-प्रहार (पशु)

लात मारना। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लात्ता*) कपड़े की लंबी और फटी-पुरानी धज्जी। **मु॰** यौ॰ **दुलत्ती चलाना**–घोड़े आदि का पीछे के दोनों पैरों से मारना।

लथड़ना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) लदफद होना, कीचड़ से भीगना, मैला या धूल-धूसरित होना।

लथपथ–वि॰ दे॰ (*अनु॰*) तराबोर, भीगा हुआ, पानी, कीचड़ आदि से भीगा या सना हुआ।

लदना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *ऋद्ध*) बोझ ऊपर लेना, भार युक्त होना, भार लेना या उठाना, पूर्ण या आच्छादित होना, गाड़ी में माल आदि भरा जाना, क़ैद होना, जेल जाना, हैरान होना। स॰ रूप–**लदाना,** प्रे॰ रूप–**लदवाना**।

लदाऊ, लदाव*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लदाव*) लादने की क्रिया या भाव, बोझ, भार, ईटों की ऐसी जुड़ाई जो बिना सहारे अधर में लटकी रहे, छत आदि का पटाव।

लदाफदा–वि॰ यौ॰ (हि॰ *लादना+फाँदना*) बोझे या भार से लदा हुआ, भीगा हुआ। यौ॰ क्रि॰ **लदाना-फँदाना**।

लदाव–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लादना*) लादने की क्रिया या भाव, बोझ, भार, छत का पटाव, ईटों की ऐसी जुड़ाई जो कड़ी आदि के बिना सहारे ठहरी हो।

लदुआ-लदुवा-लद्दू–वि॰ दे॰ (हि॰ *लादना*) बोझ ढोने वाला जिस पर बोझा लादा जाय।

लद्दड़–वि॰ दे॰ (हि॰ *लादना*) आलसी, सुस्त, फ़सड्डी। यौ॰ **लद्धड़-खद्धड़**।

लप–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*अनु॰*) लचीली वस्तु के हिलाने का कार्य। खड़ादि के चमक की चाल। संज्ञा, पु॰ (दे॰) ऊँगली।

लपक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*अनु॰ लप*) लपट, ज्वाला, चमक, लौ, लपलपाहट, वेग।

लपकना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *लपक*) झपटना, दौड़ना, तेज़ी से चलना, बिजली आदि का चमकना। स॰ रूप–**लपकाना,** प्रे॰ रूप–**लपकवाना**। **मु॰ लपक कर**–चमक कर, तुरंत, वेग से जाकर, झट से, आक्रमण करने या कुछ लेने के लिए झपटना, ऊपर उठ कर पहुँचना।

लपका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लपकना*) आक्रमण, फुर्ती, शीघ्रता, बुरी चाल, चमक।

लपकी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक मछली।

लपची–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक मछली।

लपझप–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लपकना+झपकना*) फुर्तीला, चालाक, चंचल। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **लप्पझप्प**–दिखावटी, धोखेवाला काम या बात, गप्पशप्प, सतर्क, सावधान।

लपट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लौ+पट*) ज्वाला, अग्निशिखा, आग की लौ, गर्म और तपी हुई वायु, लू, लूक, आँच, गंध से भरा वायु का झोंका, महक, गंध, पकड़न, पकड़। यौ॰ **लपटझपट**।

लपटना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लिपटना*) लिपटना, चिमटना, कुश्ती लड़ना। स॰ रूप–**लपटाना,** प्रे॰ रूप–**लपटवाना**। क्रि॰ अ॰ सटना, फँसना, उलझना, संलग्न होना।

लपटा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) (हि॰ *लपटना*) नमकीन हलुआ, लगाव, संबंध।

लपटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लपटा*) नमकीन हलुआ, लपसी, चिपकी।

लपना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰ लप*) झुकना, लचना, चमकना, लपकना, हैरान होना, ललचना। स॰ रूप–**लपाना,** प्रे॰ रूप–**लपवाना**।

लपलपाना–क्रि॰ अ॰ (*अनु॰ लप*) हिलना-डोलना, लपाना, खदादि का चमकना, झलकना, लपकना, जीभ का बार-बार बाहर निकालना। क्रि॰ स॰ (दे॰) जीभ, खड़ंगादि का निकाल या हिलाकर चमकाना।

लपसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लप्सिका*) थोड़े से घी का हलुवा, गींजी, गाड़ी, गीली वस्तु, पानी में औटाया हुआ आटा जो कैदियों को दिया जाता है, **लपटा** (दे॰)।

लपाटिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) झूठा, मिथ्यावादी, लबार।

लपाटी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) झूठ, मिथ्या, झूठ-मूठ। वि॰ (दे॰) झूठा, लबार।

लपाना–क्रि॰ स॰ (*अनु॰ लप*) लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना, आगे बढ़ाना, फटकारना, चमकाना, हिलाना।

लपानक–वि॰ (दे॰) दुबला, पतला, क्षीण, सूक्ष्म, झीना।

लपालप–क्रि॰ वि॰ (दे॰) हिलते और चमकते हुए।

लपेट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लपेटना*) बंधन का घुमाव, ऐंठन, फेरा, मरोड़, घेरा, फंदा, उलझना, जाल या चक्कर, ढक्कन, परिधि, फंदा, झपट, बल, लपेटने की क्रिया

था भाव।

लपेट-झपेट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लपेटना+झपटना*) टालमटूल, बहाना, कुश्ती, धावा, धर पकड़।

लपेटन–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लपेट*) चपेट, घुमाव, फेरा, मरोड़, मेरा, फंदा, उलझना, जाल था चक्कर, ढक्कन। संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लपेटना*) उलझने या लपेटने की चीज़, वेष्टन, बेठन, बाँधने का वस्त्र।

लपेटना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *लिपटना*) समेटना, बाँधना, फेरे या घुमाव देकर फँसाना, पकड़ लेना, चक्कर या झंझट में फँसाना, फैली वस्तु को समेट कर गट्ठर-सा बनाना, घुमाव देकर समेटना, पकड़ लेना, वस्त्रादि में बाँधना, गति-विधि बंद करना, उलझन में डालना। प्रे॰ रूप–**लपेटवाना**।

लपेटवाँ–वि॰ दे॰ (हि॰ *लपेटना*) लपेटा हुआ, सोने-चाँदी के तारों से लपेटा हुआ, गुप्त अर्थ वाला, व्यंग्य, गूढ़। क्रि॰ वि॰ (दे॰) सब को समेट कर, सब के साथ।

लफंगा–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *लफंग*) लंपट, दुराचारी, दुश्चरित्र, शोहदा, कुकर्मी, आवारा। स्त्री॰ **लफंगिन**। यौ॰ **लुच्चा-लफंगा**–संज्ञा, स्त्री॰ **लफंगई, लफंगी**।

लफाना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लपाना*) नरम पतली छड़ी का हिलाना, फटकारना, आगे बढ़ाना, लपकाना, ऊपर उठाकर पहुँचाना।

लफ्ज़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) शब्द। वि॰ लफ़्ज़ी।

लफ्फाज़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शब्दाडंबर, शब्द-बाहुल्य।

लब–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) होठ, ओष्ठ, ओंठ।

लबड़धोंधों–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लबाड़+धम*) झूँठमूठ का शोर, अँधेर, धाँधली, अन्याय, गड़बड़ी, कुव्यवस्था, बेईमानी की चाल, अत्याचार, **लबर धौं धौं** (दे॰)।

लबड़-सबड़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बकझक, झूँठ-साँच, इधर-उधर की बातें। **गपशप**।

लबड़ा-लबरा†–वि॰ दे॰ (हि॰ *लबार*) झूठा, असत्यवादी, अनर्थकवादी।

लबलबा–वि॰ (दे॰) **लिबलिबा,** लसदार, चिपचिपा। संज्ञा, स्त्री॰ **लबलबाहट**।

लबादा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) रूई-भरा ढीला अंगा, रूईदार चोगा, अबा, दगला।

लबार, लबारा–वि॰ दे॰ (सं॰ *लपन=बकना*) झूठा, असत्य या मिथ्याभाषी, गप्पी, प्रपंची।

लबारी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लबार*) झूठ या असत्य बोलने का काम। वि॰ झूठा, चुगुलखोर, मिथ्यवादी।

लबालब–क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) ऊपर या मुँह तक भरा हुआ, छलकता हुआ।

लब्ध–वि॰ (सं॰) प्राप्त, मिला हुआ, भाग देने का फल, भजन फल (गणि॰)। यौ॰ **लब्धकीर्ति**–यशस्वी।

लब्ध काम–वि॰ यौ॰ (सं॰) **प्राप्त काम,** जिसकी कामना पूरी हो गई हो।

लब्धप्रतिष्ठ–वि॰ यौ॰ (सं॰) सम्मानित, प्रतिष्ठित, प्रख्यात।

लब्ध-वर्ण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विद्वान् पंडित, विचरण।

लब्धि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्राप्ति, लाभ, हाथ लगना, हाथ में आना, भाग करने से प्राप्त फल, **भजन-फल** (गणि॰)।

लभन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाना। वि॰ **लभनीय**।

लभेड़ा-लभेरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) लसोढ़ा।

लभ्य–वि॰ (सं॰) पाने-योग्य, उपयुक्त, उचित, **प्राप्य**, जो मिल सके।

लमक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लमकना*) लंपट, कुचाली, कुकर्मी, लफना; जुंग।

लमकना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लपकना*) लपकना, उत्कंठित होना, लफना, ऊपर उठ कर पहुँचना, **बौंकना**। (ग्रा॰) स॰ रूप॰–**लमकाना,** प्रे॰ रूप॰–**लमकवाना**। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लंबकर्ण*) लंबे कानों वाला गधा, खरगोश, लंबकर्ण।

लमकाना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लपकाना*) लपकाना, बढ़ाना, लफाना। संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *लंबकर्ण*) गधा, खरहा, लंबे कानों वाला।

लमतड़ंग-लमतड़ंगा–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लंबा+ताड़+अंग*) बहुत लंबा या ऊँचा, **लंबातड़ंगा**। स्त्री॰ **लमतड़ंगी**।

लय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक वस्तु का दूसरी में मिलकर उसी के रूपादि का हो जाना, लीन होना, मिलना, प्रवेश, विलीनता, मग्नता, ध्यानमग्नता, एकाग्रता, प्रेम, अनुराग, स्नेह, कार्य का फिर कारण के रूप में हो जाना, संसार का नाश संश्लेष, विनाश, लोप, प्रलय, नृत्य, गीत और बाजों की परस्पर समता, ठेका (संगी॰)। संज्ञा, स्त्री॰

गाने का ढंग, धुन, गाने में सम (संगी.)।

लयन—संज्ञा, पु. (सं.) विश्राम, शरण, ग्रहण, प्रलय, तन्मयता।

लर*†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लड़*) लड़, लड़ी।

लरकई-लरकाई*—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लड़का+ई प्रत्य.*) लड़कपन, **लरिकाई, लरिकई** (दे.)। **मु. लरकई करना**—ना समझी करना।

लरकिनी, लरिकिनी*†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लड़की*) लड़की, बेटी, **लड़किनी** (दे.)।

लरजना—क्रि. स. दे. (फ़ा. *लरजा=कंप*) काँपना, हिलना, दहल जाना, डरना। सं. रूप—**लरजाना,** प्रे. रूप—**लरजवाना**।

लरझर*‡—वि. दे. (हि. *लड़+झड़ना*) बहुत अधिक, ज़्यादा, प्रचुर।

लरिक सलोरी—संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (हि. *लरिका+लोल—चंचल*) लड़कों का खेल, खेलवाड़; लड़क-सटोरी।

लरी—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लड़ी*) लड़ी।

ललक—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ललन*) वड़ी उत्कट अभिलाषा, गहरी चाह, प्रवलेच्छा।

ललकना—क्रि. अ. (हि. *ललक*)**ललचना,** अभिलाषा या लालसा करना, अति इच्छा करना, चाह या उमंग से भरना।

ललकार—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लेले अनु.+कार*) ललकारने की क्रिया या भाव, प्रचारण; खुली चुनौती देना।

ललकारना—क्रि. स. (हि. *ललकार*) प्रचारना, लड़ने को जोर से बुलाना या आह्वान करना, लड़ने या प्रतिद्वंद्विता के हेतु उसकाना या बढ़ावा देना, उत्तेजित करना।

ललचना—क्रि. स. दे. (हि. *लालच*) लालच करना, लुभा जाना, मोहित होना, मुग्ध और लुब्ध होना, अति अभिलाषित होना, पाने की इच्छा से अधीर होना।

ललचाना—क्रि. अ. (हि. *लालच*) लालच करना, लुभाना, कुछ दिखा कर मन में लोभ या लालच पैदा करना, मोहित करना। क्रि. अ. मोहित होना, क्षुब्ध या मुग्ध होना, अभिलाषा से अधीर होना। **मु. मन (जी) ललचाना**—लुभाना, मुग्ध या मोहित होना, लालच कर अधीर होना। स. रूप—**ललचाना, प्रे. रूप—ललचवाना**।

ललन—संज्ञा, पु. (सं.) प्यारा बालक, प्रियनायक या स्वामी, खेल-क्रीड़ा।

ललना—संज्ञा, स्त्री. (सं.) कामिनी, भामिनी, स्त्री, जीभ, एक वर्णिक छंद (पिं.)।

लला—संज्ञा, पु. दे. (हि. *लाल*) लाला, दुलारा या प्यारा लड़का, **लल** (दे.)। प्रियनायक या पति। स्त्री. **लली**।

ललाई—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लाली*) लाली, सुर्ख़ी, अरुणिमा, लालिमा।

ललाट—संज्ञा, पु. (सं.) मस्तक, भाल, माथा, भाग्य, **लिलार** (ग्रा.)।

ललाट-पटल—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मस्तक-तल, माथे की सतह, **ललाट-पट, ललाटतल**।

ललाटरेखा—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भाल या भाग्य का लेख, मस्तक की लकीर।

ललाटिका—संज्ञा, स्त्री. (सं.) तिलक, एक शिरोभूषण।

ललाना*†—क्रि. अ. दे. (हि. *लालच*) ललचना, लालच या लोभ करना, लोभाना, लालायित होना।

ललाम—वि. (सं.) रमणीय, सुंदर, मनोहर, लाल, श्रेष्ठ। संज्ञा, स्त्री. **ललामना** । संज्ञा, पु. गहना, भूषण, रत्न, चिह्न, घोड़ा।

ललित—वि. (सं.) चितचाहा, मनोरम, सुंदर, प्यारा, मनहरण, हिलता-डोलता हुआ। संज्ञा, पु. एक अंगचेष्टा जिसमें सुकुमारता से अंग हिलाए जाते हैं (शृंगार रस में एक काचिक हाव)। एक विषम वर्णिक छंद (पिं.)। एक अर्थालंकार जिसमें वर्ण वस्तु की जगह पर उसके प्रतिबिंब का कथन किया जाता है (अ. पी.)।

ललित-कला—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में सौंदर्य की अपेक्षा हो, जैसे--संगीत चित्रादि कलाएँ।

ललितपद—संज्ञा, पु. (सं.) 28 मात्राओं का एक मात्रिक छंद, **सार, नरेंद्र, दौवे**। (पिं.)। यौ. संज्ञा, (सं.) सुंदर पद।

ललिता—संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णिक छंद जिसके प्रति चरण में त, भ, ज, रगण होते हैं (पिं.)। राधिका जी की मुख्य सहेलियों में से एक।

ललितोपमा—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) उपमा नामक अर्थालंकार का एक भेद जिसमें उपमेय और उपमान की समता-

वाचक सम आदि शब्द रखे जाकर निरादर, समता ईर्ष्यादि भावसूचक पद रखे जाते हैं, (अ. पी.)।

लली–संज्ञा, स्त्री. (हि. *लला*) लड़की, पुत्री, नायिका, प्रेमिका, प्रेयसी, कन्या के लिए प्यार का संबोधन।

ललौहाँ–वि. दे. (हि. *लाल*) ललाई लिए हुए। **ललछौंहा**–कुछ-कुछ लाल, सुर्खी युक्त। स्त्री. **ललौहीं**।

लल्ला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लला*) लला, लड़का, प्रियतम, नायक, लाला।

लल्ली–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *ललना*) लड़की, जीभ, **लली, लाली**।

लल्लो-चप्पो–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *लल+अनु. चप*) ठकुरसुहाती या चिकनी-चुपड़ी बात।

लवंग–संज्ञा, पु. (सं.) लौंग, **लउंग, लवाँग** (दे.)।

लव–संज्ञा, पु. (सं.) अत्यंत थोड़ी मात्रा, छत्तीस पल या दो काष्ठा का समय, लबा पक्षी, लवंग, रामचंद्र जी के दो यमज सुतों (लव-कुश) में से बड़े पुत्र। वि. लेश, अल्प, थोड़ा, रंच, तनिक। यौ. **लवनिमेष**।

लवक–संज्ञा, पु. (सं.) करने वाला, करवैया।

लवण–संज्ञा, पु. (सं.) नमक, **नोन, लोन, लवन, लौन** (दे)।

लवण-समुद्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) खारी पानी का समुद्र, **लवणसिंधु, लवणोदधि, लवणाब्धि, लवण-सागर**।

लवणाम्बु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) खारा पानी, खारी पानी का समुद्र, **लवणाम्बुध**।

लवणासुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मधु दैत्य का पुत्र जो शत्रुघ्न से मारा गया था।

लवन–संज्ञा, पु. दे. (सं.) छेदना, काटना, खेत की कटाई, लुनाई। संज्ञा, पु. दे. (सं. *लवण*) नमक, नोन।

लवना–क्रि. स. दे. (सं. *लवन*) खेत काटना, लुनना काटना, छेदना।

लवनाई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लावण्य*) लावण्य, सुंदरता, **लुभाई** (दे.)।

लवनि-लवनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लवन*) अनाज की कटाई, लुनाई, **लौनी** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *नवनीत*) मक्खन, नैनू।

लव-निमेष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अल्प, समय।

लवमात्र–वि. यौ. (सं.) थोड़ी देर, क्षण भर, अल्पकाल।

लवली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हरफा रेवरी नामक पेड़ और उसका फल, एक विषम वर्णिक छंद (पिं.), (अं.) सुंदर, आकर्षक।

लवलीन–वि. दे. यौ. (हि. *लव+लीन*) मिलित, तनमय, तल्लीन, मग्न।

लव-केश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अत्यंत, अल्प, थोड़ा, रंच, संसर्ग।

लवा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लाजा*) धानों के लावा, खील। संज्ञा, पु. दे. (*लावा*) एक पक्षी जो तीतर-सा परंतु उससे छोटा होता है।

लवाई–संज्ञा, स्त्री. वि. (दे.) हाल की ब्यायी गाय, छोटे बच्चे वाली गाय। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लवना+आई प्रत्य.*) खेत के अनाज की कटाई, लुनाई।

लवाक–संज्ञा, पु. (सं.) हँसिया, हँसवा, दराँती, खेत काटने का हथियार।

लवाजमा–संज्ञा, पु. दे. (अ. *लवाजिम*) किसी के साथ रहने वाला, दल-बल और साज-सामान, आवश्यक सामग्री।

लवार-लवारा–वि. दे. (सं. *लपन=बकना*) झूठा, असत्यभाषी। संज्ञा, पु. दे. (हि. *लवाई*) गाय का छोटा बच्चा। संज्ञा, पु. (दे.) चुगली, शिकायत। वि. **लवारी**।

लशकर-लश्कर–संज्ञा, पु. (फ़ा.) सेना, दल, फौज, **लसकर**, छावनी, सेना का पड़ाव, जहाज़ के कुली आदि, खल्लासी। यौ. **लाव-लश्कर**।

लशकरी–वि. दे. (फ़ा. *लशकर*) सिपाही, सेना-संबंधी, जहाज़ी, खल्लासी। संज्ञा, स्त्री. लशकर वालों की या जहाज़ियों की भाषा।

लशटम्पशटम्–क्रि. वि. दे. (हि.) किसी भाँति, किसी प्रकार, उलटा-सीधा, उलटा-पुलटा, **लसटमपसटम** (दे.)।

लशुन–संज्ञा, पु. (सं.) लहसुन, लहसन, एक कंद।

लषन-लक्षण*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लक्ष्मण*) लक्ष्मण जी, **लखन** (ग्रा.)।

लस–संज्ञा, पु. (सं.) चिपकने या चिपकाने का गुण या वस्तु, चिपचिपाहट, लासा, आकर्षण, चित्त लगने की बात।

लसकना–क्रि. अ. (दे. *वा सं. लस*) चिपचिपा या लसदार

होना, लसना, गीला होना।

लसदार–वि॰ (सं॰ *लस+दार* फ़ा॰ *प्रत्य॰*) लसीला, जिसमें लस हो।

लसना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लसन*) सटाना, चिपकाना। *क्रि॰ अ॰ (दे॰) शोभित या उत्कंठित होना, विराजमान होना, छजना, छाजना, फबना। प्रे॰ रूप–**लसवाना,** स॰ रूप–**लसाना, लसावना।**

लसनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लसना*) उपस्थिति, विद्यमानता, स्थिति, शोभा, छटा, सत्ता, फबनि।

लसलसा–वि॰ दे॰ (सं॰ *लस*) लसदार, लसीला।

लसा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लस*) चिपटा हुआ, शोभित, जल्दी। **लो॰**–"गरे मसा, सोने लसा"।

लसित–वि॰ (सं॰ *लस*) **शोभित,** विराजमान, लक्षित, प्रत्यक्ष, युक्त।

लसीला–दे॰ वि॰ (सं॰ *लस+ईला प्रत्य॰*) लसदार, सुंदर, सरस, **शोभावान्।** स्त्री॰ **लसीली।**

लसुनिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लशुन*) एक बहूमूल्य धूमिल रंग का रत्न या पत्थर। **लहसुनिया, लाजावर्त, वैदूर्य मणि।**

लसोड़ा-लसोढ़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लस-चिपचिपाहट*) एक प्रकार का वृक्ष और उसके फल, **लसौटा**–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बहेलियों के लसा रखने का चोंगा।

लस्टम-पस्टम†–क्रि॰ वि॰ (दे॰) ज्यों-त्यों करके, किसी न किसी प्रकार, किसी भाँति या प्रकार, उलटा-सीधा, उलटा-पुलटा।

लस्त–वि॰ दे॰ (हि॰ *लटना*) अशक्त, शिथिल, श्रमित, थका हुआ, श्रांत, क्रांत।

लस्सी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लस*) लसी, चिपचिपाहट, मही, मट्ठा, वक्र, छाँछ, आधा दूध और आधा पानी चीनी मिला।

लहँगा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लंक=कटि+अंगा* हि॰) स्त्रियों का एक पहनावा, कमर के नीचे घाँघरा, कटि से नीचे के अंगों को ढाकने वाला घेरदार पहिनावा।

लहफ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लहफना*) आग की लपट, ज्वाला, लौ, छवि, शोभा, कांति, चमकीली, द्युति, दीप्ति।

लहकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (*अनु॰*) लहराना, झोंके खाना, आग का लपट छोड़ना, जलना, दहकना, प्रकाशित होना, हवा का चलना, लपकना, झलकना, उत्कंठित होना, चमकना। प्रे॰ रूप–**लहकाना, लहकवाना, लहकावना, लहकारना।**

लहकौर, लहकौरि, लहकौवर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लहना+कौर–आस*) वर-कन्या का एक दूसरे के मुख में कौर डालने या खिलाने की रीति, विवाह में एक रीति जिसमें वर को दही-चीनी खिलाते हैं।

लहजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *लहज:*) गाने या बोलने का तरीका या ढंग, लय, स्वर।

लहजा–संज्ञा, पु॰ (अ॰ क्षण, पल।

लहडू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) छोटी और हलकी बैल-गाड़ी, लढ़ी (आ॰)।

लहनदार–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लहना+दार* फ़ा॰ *प्रत्य॰*) ऋण देने वाला, उधार देने वाला, व्यवहार, **महाजन।** वि॰ (दे॰) खमीर उठा हुआ।

लहना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लभन*) प्राप्त करना, पाना, धन, भाग्य-फल भोगना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लभन*) उधार दिया हुआ धन, किसी से मिलने वाला।

लहनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लहना*) प्राप्ति, फल, भोग, भाग्य फल।

लहबर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लहर*) चोगा, लबादा, एक लंबा-ढीला पहनावा, पताका, झंडा, निशान, तोता।

लहर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लहरी*) हिलोर-मौज, तरंग, बीचि, ऊपर उठती हुई जल राशि, उमंग, आवेश, जोश, झोंका, कुछ अंतर से रह-रह कर मूर्च्छा, पीड़ा आदि का वेग, विष का देह और मन पर प्रभाव। **मु॰ साँप काटने की लहर**–साँप काटे हुए मनुष्य की विषकृत मूर्च्छा के बीच बीच में कुछ चैतन्य सा होन की दशा। आनंद की उमंग, मज़ा, मन की मौज। यौ॰ **लहर-बहर**–आनंद और सुखचैन। टेढ़ी चाल, साँप की वक्रगति सी कुटिल रेखा, हवा का झोंका, महक, लपट।

लहरदार–वि॰ (हि॰ *लहर+दार* फ़ा॰ *प्रत्य॰*) सीधा न जाकर जो बल खाता हुआ जावे, तरंगयुक्त लहर सी रेखाओं के युक्त।

लहरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लहराना*) लहराना, हिलना, डोलना,

लहर देना।

लहर-बहर–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सौभाग्य, संपत्ति, धन, सुख-चैन।

लहर-पटोर–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लहर+पट*) धारीदार एक रेशमी वस्त्र।

लहरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लहर*) तरंग, लहर, मौज, आनंद, मज़ा, वृष्टि का एक झोंका, बाजे या गाने की एक तान, जो वाद्य संगीत में कायम की जाती है।

लहराना–क्रि॰ अ॰ (*लहर+आना प्रत्य.*) वायु-वेग से हिलना, लहरें या झोंके आना, डोलना, वायु-वेग से पानी में तरंगें उठना या जल का हिलोरें मार बहना, इधर-उधर झोंके खाते या मुड़ते चलना, मन में उमंग होना, उत्कंठित होना, आग की लपक का लपकना, दीप शिखा का हिलना, आग का भड़कना, दहकना, शोभित या विराजमान होना, छवि देना, लसना, छजना, किसी का फिर-फिर उसी स्थान में आना। क्रि॰ स॰ वायु के झोंके में इधर-उधर हिलाना, टेढ़ी चाल से ले जाना।

लहरिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लहर*) लहर जैसा चिन्ह, टेढ़ी या वक्र लकीरों की श्रेणी या पंक्ति, रंग-विरंगी, टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों वाला एक वस्त्र, या उसकी साड़ी या धोती। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लहर*) लहर।

लहरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तरंग, मौज, लहर। †वि॰ (*लहर+ई प्रत्य.*) मनमौजी, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, उमंगी, तरंगी।

लहलहा–वि॰ दे॰ (हि॰ *लहलहाना*) हरा-भरा, लहलहाता हुआ, आनंद-पूर्ण, प्रफुल्लित, हृष्ट-पुष्ट। स्त्री॰ **लहलही**।

लहलहाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लहरना=हिलना*) हरे-भरे पौधों का हवा के झोंकों से हिलना, हरा-भरा होना, सरसब्ज़ होना, पेड़-पौधों का हरी पत्तियों से भरना, प्रफुल्लित या प्रसन्न होना, पनपना, सूखे पेड़-पौधों में फिर पत्तियाँ निकलना।

लहलुट–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लहना+लूटना*) लेलूट, लेकर न देने वाला।

लहलोट–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लहना+लूटना*) लेलूट, लेकर न देने वाला।

लहसन–संज्ञा, पु॰ (दे॰) शरीर पर के काले दाग।

लहसुन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लशुन*) एक कंद, गोल गाँठ का कई फाँकों वाला एक छोटा पौधा (मसाला), **लासुन** (ग्र॰)।

लहसुनिया–संज्ञा, पु॰ (ह॰ *लहसुन*) एक बहुमूल्य धूमिले रंग का रत्न, रुद्रादक, वैदूर्य, **केतु-रत्न** (ज्यो॰)।

लहा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लाह*) लाह। **क्रि॰ स॰ सा॰ भू॰** (हि॰ *लहना*) पाया।

लहालोट–वि॰ दे॰ यौ॰ (दे *लाभ, लाह+लोटना*) लट्टू, प्रसन्न, हँसी के मारे लोटता हुआ, मुग्ध, प्रेम-मग्न, हर्ष से परिपूर्ण मोहित।

लहुरा†–वि॰ दे॰ (सं॰ *लघु*) छोटा। स्त्री॰ **लहुरी**।

लहुरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छोटे भाई की स्त्री। वि॰ (दे॰) आयु में छोटी, कम उम्र की।

लहू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लोहित*) लोहू, रक्त। **मु॰ लहूलहान या लहूलुहान होना**–रक्त से सराबोर होना या भर जाना, बहुत रक्त बहना।

लाँग–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लाँगूल–पूँछ*) काँछ, धोती का छोर जो पीठ पीछे खोंसा जाता है।

लाँगल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जोतने का हल।

लाँगली–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लाँगलिन्*) बलराम साँप, नारियल। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक नदी (पुरा॰)। कलिहारी, मजीठ (औप॰)।

लाँगुली, लाँगूली–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लाँगूलिन्*) वानर, बंदर।

लाँघ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लाँघना*) फलाँग, कूद, कुदान, उछाल, कुलाँच।

लाँघुना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लँघन*) **नाघना** (ग्रा॰) फाँदना, ढाँकना, कूद जाना। स॰ रूप–**लँघाना,** प्रे॰ रूप–**लँघवाना**।

लांछन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिन्ह, दाग, कलंक, दोप, ऐब। वि॰ **लांछनीय**।

लांछना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निंदा, तिरस्कार, अपमान, बुराई, कलंक।

लाँछनित*–वि॰ (सं॰) लाँछन-युक्त, लाँछित, कलंक-युक्त, कलंकी, दोषी, तिरस्कृत, अपमानित।

लांछित–वि॰ (सं॰) तिरस्कृत, निंदित, लाछन युक्त।

लाइक–वि॰ दे॰ (अ॰ *लायक*) लायक़, योग्य।

लाई†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लाजा*) धान का लावा या खील, उबाले चावलों का लावा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लगना*) चुग़ाली, निंदा। क्रि॰ स॰ स्त्री॰ सा॰ भू॰ (दे॰) ले

आई।

लाकड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लकड़ी*) लकड़ी, काष्ठ, काठ, **लाकरी** (ग्रा॰)।

लाक्षणिक–वि॰ (सं॰) लक्षण संबंधी, लक्षण-सूचक। संज्ञा, पु॰ (सं॰) 32 मात्राओं का मात्रिक छंद (पिं॰), लक्षणज्ञाता, लक्षणा शक्ति-संबंधी (शब्दार्थ)।

लाक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लाह, लाख।

लाक्षागृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पांडवों के जलाने को दुर्योधन का बनवाया हुआ लाह या घर, **लाक्षालय, लाक्षावास**।

लाक्षारस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महावर।

लाक्षिक–वि॰ (सं॰) लाह या लाख संबंधी।

लाख–वि॰ दे॰ (सं॰ *लक्ष*) सौ हज़ार, अति अधिक। संज्ञा, पु॰ सौ हज़ार की संख्या, 100000। क्रि॰ वि॰ अधिक, बहुत। **मु॰ लाख से लीख होना**–सब कुछ होने पर भी पीछे कुछ न रहना। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लाक्षा*) लाह, लाही, एक तरह के छोटे लाल कीड़े जो लाह बनाते हैं, इन कीड़ों के अनेक वृक्षों पर बना एक लाल पदार्थ।

लाखना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लाख+ना प्रत्य॰*) लाह लगा कर छेद बंद करना। *†क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लक्षण*) जानना।

लाखागृह–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *लाक्षागृह*) लाक्षागृह, लाह का घर।

लाखी–वि॰ दे॰ (हि॰ *लाख+ई प्रत्य॰*) लाख के रंग का, मटमैला लाल। संज्ञा, पु॰ लाख के रंग का घोड़ा।

लाग–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लगना*) लगाव, लगन, संबंध, संपर्क, प्रीति, प्रेम, युक्ति, मन की तत्परता, उपाय, कौशल-पूर्ण स्वाँग, चढ़ा ऊपरी, प्रतियोगिता, बैर, शत्रुता, टोना, मंत्र, शुभ अवसरों पर जादू, ब्राह्मणादिकों को बाँटने का नियत धन, लगान, भूमि-कर, एक प्रकार का नाच। क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *लौं*) तक, पर्यंत, **लगि** (ब्र॰)।

लागडाँट–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *लग–बैर+डाँट*) बैर, शत्रुता, प्रतियोगिता। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰*लग्नदंड*) नाच की एक क्रिया।

लागत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लगना*) पूँजी, किसी वस्तु के बनाने या तैयारी में व्यय हुआ धन, **लागत** (दे॰)।

लागना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लगना*) लगना।

लागी–संज्ञा, स्त्री॰ अव्य॰ (दे॰) लिए, द्वारा, स्नेह, प्रेम। संज्ञा, पु॰ द्वेषी, शत्रु, विरोधी।

लागू†–वि॰ दे॰ (हि॰ *लगना*) प्रयुक्त या चरितार्थ होने वाला, लगने-योग्य, लगाने या घटित होने वाला; जारी।

लागे–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *लगना*) लिए, हेतु, वास्ते, लागि। सा॰ मु॰ क्रि॰ अ॰ (हि॰ *लगना*) लगे।

लाघव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लघुता, छोटाई, हलकाई, अल्पता, कमी, फुर्ती, शीघ्रता, हाथ की सफ़ाई, तंदुरुस्ती, आरोग्य। यौ॰ **हस्त-लाघव**। अव्य॰ (सं॰) शीघ्रता से, सहज में।

लाघवी*–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *लाघव+ई प्रत्य॰*) शीघ्रता, फुर्ती, तेज़ी।

लाचार–वि॰ (फ़ा॰) विवश, मज़बूर। क्रि॰ वि॰ (दे॰) विवश या मज़बूर होकर।

लाचारी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰ विवशता, मज़बूरी, **बेबसी** (दे॰)।

लाछन*–संज्ञा, पु॰ दे (सं॰ *लाँछन*) लांछन, कलंक, दोष, अपराध, चिन्ह।

लाज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लज्जा*) लज्जा, शर्म, इज़्ज़त, पर्दा, पति, मान-मर्यादा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लाजा*) धान का लावा, खील।

लाजक–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लाजा*) धान का लावा।

लाजना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लाज+ना प्रत्य॰*) लज्जित होना, शर्माना, **लजना, लजाना** (दे॰)। अ॰ रूप–**लजवाना**।

लाजवंत–वि॰ दे॰ (हि॰ *लाज+वंत प्रत्य॰*) लज्जावाला, लज्जा-युक्त, शर्मदार, शर्मिंदा। स्त्री॰ **लाजवंती**।

लाजवंती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लजालु*) लज्जालु, छुईमुई, **लजाधुर** (ग्रा॰)। (सं॰ **लज्जावती**)।

लाजवर्द–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक रत्न, एक बहुमूल्य पत्थर, **राजवर्तक** (सं॰)।

लाजवर्दी–वि॰ (फ़ा॰) लाजवर्द के रंग का, हलके नीले रंग का।

लाजवाब–वि॰ (फ़ा॰) निरुत्तर, अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, चुप, मौन, मूक।

लाजा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धन का लावा, चावल, लाई, खील। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लज्जा*) लज्जा।

लाजावर्त्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक मणि या रत्न विशेष, **रावटी, लाजवर्द** (दे॰)।

लाज़िम–वि॰ (अ॰) उचित, योग्य, कर्त्तव्य, मुनासिब, वाजिब,

समीचीन, उपयुक्त, ज़रूरी।

लाज़िमी–वि॰ (अ॰ *लाजिम*) आवश्यक, ज़रूरी, उचित।

लाट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लट्ठ*) ऊँचा और मोटा खंभा, मीनार। संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्तमान अहमदाबाद के समीप का एक प्राचीन देश, वहाँ के निवासी; लाटानुप्रास (काव्य॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *लार्ड*) मालिक, स्वामी। स्त्री॰ **लाटी**।

लाटानुप्रास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक शब्दालंकार जिसमें अनवयान्तर से तात्पर्यांतर पूर्ण वाक्य या शब्द की अवृत्ति हो (अ॰ पी॰।

लाट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लाट*), लाट, लार्ड। चौ॰ लाट-साहब।

लाठी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *यष्टि*) मोटा और बड़ा डंडा लकड़ी। **मु॰ लाठी चलना (चलाना)**–लाठियों से मार-पीट होना (करना)। **लाठी सा मारना**–कटु तथा कठोर बात कहना।

लाड़–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लालना*) बच्चों का लालन, प्यार, दुलार।

लाड़न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुलार, प्यार, लाड़, बाल-स्नेह।

लाड़ना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) दुलराना, लाड़-प्यार करना।

लाड-लड़ैता–वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लाड़ला*) लाड़ला, बहुत दुलारा या प्यारा। स्त्री॰ **लाड़लड़ैती**।

लाड़ला, लाड़िला–वि॰ दे॰ (हि॰ *लाड़*) अति दुलारा या प्यारा। स्त्री॰ **लाड़ली**।

लाड़लड़ैती-लाड़ली–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) बहुत दुलारी या प्यारी बेटी या स्त्री।

लात–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पाद, पाँव, पैर, पद, पादाघात, पाद प्रहार। **मु॰ लातखाना**–पादाघात सहना, पेर की ठोकर या अपमान सहना। **लात मारना**–तुच्छ समझ कर छोड़ देना या त्यागना।

लाद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लादना*) लादने का कार्य, बोझ, भार, पेट की आँतें, पेट।

लादना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लब्ध*) गाड़ी आदि पर ढोने या ले जाने के लिए चीजें या वस्तुएँ भरना या रखना, भरना, चढ़ाना, किसी बात का भार रखना।

लादिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लादना*) लादने वाला।

लादी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लादना*) छह गठरी जो गधे आदि पर लादी जाती है।

लादू–वि॰ दे॰ (हि॰ *लादना*) लादने योग्य। वि॰ **लद्दू**–जिस पर सदा बोझ लादा जाय।

लानत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *लअनत*) भर्त्सना, धिक्कार, फटकार। यौ॰ **लानत-मलामत**।

लाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लेना+आना*) कोई वस्तु उठाकर ले आना, साथ लेकर आना, सामने रखना, उपस्थित करना। क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लाय–आग*) आग लगाना, जला देना, नष्ट कर देना (ग्रा॰)। *†क्रि॰ स॰ (हि॰ *लगाना*) लगाना।

लाने*†–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *लाना*) वास्ते, लिए, हेतु, कारण।

लापक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बीदड़, सियार।

लापता–वि॰ (फ़ा॰) जिसका पता न लगता हो, गुप्त, छिपा।

लापरवा-लापरवाह–वि॰ (अ॰ *ला+परवाह* फ़ा॰) बे फ़िक्र, बेखटका, असावधान, निश्चिंत, बेपरवाह।

लापरवाही–संज्ञा, स्त्री॰ (*अ॰ ला+परवाह* फ़ा॰+*ई प्रत्य॰*) बे फ़िक्री, असावधानी।

लापसी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लपसी*) **लपसी,** थोड़े घी का पतला हलुवा।

लाफना–क्रि॰ स॰ (दे॰) **लफना** (ग्रा॰) कूदना, फाँदना, बढ़ना, हाँफना, लेने को ऊपर उठना या उचकना, **बौंकना** (प्रांती॰)। स॰ रूप–**लफाना**।

लाबर*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *लचार*) लचार, **लबरा** (ग्रा॰) असत्यवादी, झूठा, मिथ्यावादी, धूर्त।

लाभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्राप्ति, लब्धि, मिलना, नफ़ा, मुनाफ़ा, उपकार, भलाई, फ़ायदा, **लाहु** (व॰, व॰)।

लाभकारक, लाभकारी–वि॰ (सं॰ *लाभकरिन्*) **लाभदायक,** गुणकारी, गुणदायक, फ़ायदेमंद। स्त्री॰ **लाभकारी**।

लाभदायक–वि॰ (सं॰) लाभकारक, **लाभकर, लाभकारी, लाभदायी**।

लाभप्रद–वि॰ (सं॰) लाभकारी।

लाभ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *लाम*) फ़ौज, सेना, जन-समूह।

लामा–संज्ञा, पु॰ (हि॰) तिब्बत और मंगोलिया के बौद्धों का धर्म्माचार्य्य। वि॰ (दे॰) लंबा, **लाँबा** (दे॰)।

लाय*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *अलात*) लाइ (व्र॰) लपट, ज्वाला, अग्नि, आग। पू॰ का॰ क्रि॰ अव्र॰ (हि॰ *लाना*) लाकर, ल्याइ (व्र॰)।

लायक़–वि॰ (अ॰) समीचीन, योग्य, ठीक, उचित, मुनासिब,

वाजिब, उपयुक्त, लायक (दे.)। सुयोग्य, समर्थ, गुणवान्, **सामर्थ्यवान्।** **संज्ञा**, पु. दे. *(सं. लाजा) धान का लावा।*

लायक़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *लायक*) योग्यता, लियाकत, सामर्थ्य।

लायची–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *एला*) इलायची, **लाची** (ग्रा.)।

लार–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लाला*) तार के समान पतला और लसदार थूक जो कभी-कभी मुख से निकलता है, **राल** (दे.)। **मु. मुँह से लार टपकना**–किसी पदार्थ को देखकर उसके पाने की अति अभिलाषा होना, **मुँह में पानी भर आना। (किसी के मुँह से) लार चूना**–बालपन होना। कतार, पाँति, पंक्ति, लुआव, लासा। क्रि. वि. दे. (*मार+लैर–पीछे*) पीछे, साथ। **मु. लार लगाना**–बझाना, फँसाना। संज्ञा, पु. (दे.) मणि विशेष, लाड़, दुलार, प्रिय, प्यारा, लाल। वि. लाल रंग का।

लाल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लालक*) छोटा और प्यारा, दुलारा बालक, बेटा, लड़का, प्रियतम, प्रिय, श्रीकृष्ण, **लला, लल्ला, लाला** (व्र.)। संज्ञा, पु. दे. (सं. *लालन*) लाड़, प्यार, दुलार। संज्ञा, पु. दे. (हि. *लार*) लार। *†संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लालसा*) इच्छा, अभिलाषा, लालसा, चाह। संज्ञा, पु. (दे.) मानिक, एक छोटा पक्षी, जिसकी मादा को मुनियाँ कहते हैं। वि. रक्तवर्ण, अरुण, अति क्रुद्ध। **मु. लाल (लाल-पीला) पड़ना या होना**–क्रुद्ध होना, गरम पड़ना। **लाल-पीले होना**–क्रोध करना। खेल में जो सबसे पहिले जीते। **मु. लाल होना**–बहुत धन पाकर प्रसन्न होना, खेल में सर्व प्रथम जीतना, चौपड़ या पचीसी के खेल में गोटियों का घूमकर बीच में पहुँचना।

लाल-चंदन–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) रकत या देवी चंदन, गोपी चंदन।

लालच–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लालसा*) किसी वस्तु की प्राप्ति की बुरी तरह की इच्छा, लोभ, लोलुपता। वि. **लालची**।

लालचहा†–वि. दे. (हि. *लालची*) लालची, लोभी, लोलुप, **ललचहा** (आ.)।

लालची–वि. (हि. *लालच+ई प्रत्य.*) लोभी, लालचहा, लोलुप।

लालटेन–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *लैंटर्न*) तेल-बत्ती-युक्त चारों और शीशे आदि पारदर्शक वस्तु से ढँकी चीज़, कंदील, **लालटेम** (आ.)।

लालड़ी–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लाल–रत्न+ड़ी प्रत्य.*) एक लाल नगीना।

लालन–संज्ञा, पु. (सं.) बालकों के प्रति आदर-युक्त प्रेम, लाड़, प्यार, दुलार। यौ. **लालन-पालन**। संज्ञा, पु. दे. (हि. *लाल*) प्यारा बच्चा, प्रिय पुत्र, कुमार, बालक। क्रि. अ. (दे.) लाड़-प्यार या दुलार करना।

लालना*–क्रि. स. दे. (सं. *लालन*) दुलार, प्यार या लाड़ करना। यौ. **लालना-पालना**।

लाल-बुझक्कड़–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. लाल+*बूझना*) बातों का मनमाना मतलब बैठालने या लगाने वाला।

लालभक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) एक नर्क (पु.)।

लालमन–संज्ञा, पु. (हि.) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का शुक या तोता। यौ. (दे.) बाल मणि, माणिक।

लालमिर्च–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) सुर्ख मिर्च, **लालमिर्चा** (दे.)।

लालमी–संज्ञा, पु. (दे.) खरबूज़ा।

लालरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लालड़ी*) लाल नग, लाड़ली।

लालसमुद्र-लालसागर-लालसिंधु–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) भारत-महासागर का वह भाग जो अरब और अफ्रीका के मध्य में है (भूगो.)।

लालसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) इच्छा, अभिलाषा, लिप्सा, उत्सुकता, उत्कंठा, चाह।

लालसी*–वि. (सं. *लालसा*) उत्सुक, इच्छा या अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी।

लाला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लालक*) एक संबोधन, महाशय, श्रीमान्, साहू, वैश्य और कायस्थ जाति का सूचक शब्द, प्यारे बच्चों का संबोधन, **लला, लाल, लल्ला, लल्लू** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. (दे.) लार, थूक। संज्ञा, पु. (फ़ा.) पोस्ते का लाल फूल, **गुललाला**। वि. दे. (हि. *लाल*) लाल रंग का।

लालाटिका–वि. (सं.) भाग्याधान, भाग्य-भरोसी, मस्तक देख कर शुभाशुभ कहने वाला।

लालाभक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) एक नरक (पुरा.)।

लालायित–वि. (सं.) ललचाया हुआ, लोभ-ग्रसित, अति उत्सुक, उत्कंठित।

लालास्राव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लार गिरना, मकड़ी का जाला,

लालस्राव।

लालित–वि॰ (सं॰) प्यारा, दुलारा, पाला-पोषा हुआ। यौ॰ **लालित-पालित**।

लालित्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुंदरता, सरसता, सौंदर्य, काव्य का एक गुण (काव्य॰)।

लालिमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अरुणिमा लाली, सुर्खी, ललाई।

लाली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लाल+ई प्रत्य॰*) **लली,** लड़की, ललाई, सुर्खी, **लालिमा,** इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, आबरू, पल, मान-मर्यादा।

लालुका–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक प्रकार का हार, माला या गजरा।

लाले–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लाला*) लालसा, इच्छा, अभिलाषा। **मु॰ (किसी वस्तु के) लाले पड़ना**–किसी वस्तु के हेतु बहुत तरसना। कठिनता, मुश्किल।

लावण–वि॰ (सं॰) नमकीन। संज्ञा, पु॰ (दे॰) सुँघनी, **लावन**।

लावण्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लवण का भाव नमकीन, नमकपन, अति सुंदरता, मनोहरता, **लुनाई**।

लावणिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नमक बेचने वाला, नमक का पात्र। वि॰ नमक संबंधी।

लावदार–वि॰ (हि॰ *लाव–आग+दार* फ़ा॰ *प्रत्य॰*) रंजक देने या छोड़ी जाने वाली तोप। संज्ञा, पु॰ तोप छोड़ने वाला, तोपची।

लावनता*–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सुंदरता, मनोहरता, **लावण्य, लावण्यता** (सं॰), **लुनाई**।

लावना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लाना*) लाना। क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लगाना*) लगाना, छुलाना, स्पर्श कराना, आग लगाना, जलाना।

लावनि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लावण्य*) सौंदर्य, लुनाई, लाने का भाव।

लावनी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक प्रकार का छंद, ख़्याल, चंग बजा कर गाया जाने वाला गाना। वि॰ **लावनीबाज**।

लावलाव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) लोभ, चाह, तृष्णा।

लाववाली–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) आवारा, बेफिक्र।

लावल्द–वि॰ (फ़ा॰) निःसंतान, पुत्रहीन।

लावल्दी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) निःसंतान होने की दशा।

लावा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लवा पक्षी। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लाजा*) रामदाना या धान आदि के भूनने से फूट कर फूली हुई खील, फुल्ला, लाई, **फुटका** (आ॰)।

लावारिस–संज्ञा, पु॰ (अ॰) उत्तराधिकारी रहित, बेवारिस। (वि॰ **लवारिसी**)।

लाश–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) प्राणी की मृतक देह, शव, मुर्दा, लोथ, **लास, लहास** (दे॰)।

लासा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लस*) चेप, लुआब, चिपचिपा लवाब, लसीली वस्तु, बहेलियों के चिड़िया फँसाने का लसदार पदार्थ। **मु॰ लासा लगाना**–कपट जाल फैलाना, किसी के फँसाने का छद्मविधान बनाना।

लासानी–वि॰ (अ॰) अद्वितीय, अनुपम, अपूर्व, बेजोड़।

लास्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शृंगारादि मृदु रसों का उद्दीपक, कोमलांग, नृत्य, सुकुमार नाच।

लाह*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लाक्षा*) लाख, चपरा, चपड़ा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लाभ*) **लाहु,** लाभ, फ़ायदा, नफ़ा। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) आभा, कांति, दीप्ति।

लाही‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लाक्षा*) लाख, काले रंग का सरसों, महीन वस्त्र या कपड़ा, फ़सल को हानिकारी एक लाह के रंग का कीड़ा। वि॰ मटमैलापन लिए लाल रंग।

लाहु–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लाभ*) लाभ।

लाहौल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) एक अरबी-वाक्य का प्रथम पद जो भूत-प्रेतादि के भगाने या घृणा प्रगट करने में बोला जाता है।

लिंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लक्षण, चिन्ह, निशान, जिससे किसी पदार्थ का अनुमान हो, मूल प्रकृति (सांख्य॰), पुरुष की गुप्त इंद्रिय, शिश्न, शिव-मूर्ति। संज्ञाओं में पुरुष-स्त्री का भेद-सूचक विधान (व्या॰)।

लिंग-देह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जीव का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्म-फल भोगने के लिए जीव के साथ रहता है, **लिंग-शरीर** (अध्या॰)।

लिंगपुराण–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अठारह पुराणों में से शिव-माहात्म्य विवणक एक पुराण।

लिंगशरीर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल के भीतर मृत्यु के बाद भी कर्म-फल भोगने को रहता है।

लिंगायत–संज्ञा, पु. (सं.) दक्षिण देश का एक शैव संप्रदाय।

लिंगी–संज्ञा, पु. (सं. *लिंगिन्*) लक्षणयुक्त चिन्ह वाला, चिन्हधारी, आडंबरी, धर्म-ध्वजी।

लिंगेंद्रिय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पुरुषों की गुप्तेंद्रिय या मूत्रेंद्रिय, शिश्न।

लिए–हिंदी के संप्रदान कारक का चिन्ह जो अपने शब्द के लिए क्रिया का होना प्रगट करता है, हेतु, वास्ते, **लिये, काज** (व्र.)।

लिक्खाड़–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लिखना*) बहुत लिखने वाला, लिखैया, बड़ा भारी लेखक (व्यंग्य)।

लिखत–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लिखन*) लेख, लिखी बात, दस्तावेज़, तमस्सुक।

लिखधार–संज्ञा, दे. (हि. *लिखना+धार प्रत्य.*) लिखने वाला, लेखक, मुंशी, **मुहर्रिर,** कर्क (अं.)।

लिखना–क्रि. स. (सं. *लिखन*) स्याही या पेंसिल से अक्षरों की आकृति या चिन्ह वनाना, लिखाई करना, चित्रित या अंकित करना, अक्षर बना कर किसी विषय की पूर्ति करना, लिपिबद्ध करना, पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना, चित्र बनाना।

लिखा–संज्ञा, पु. (हि. *लिखना*) प्रारब्ध, होनहार, भाग्य, भवितष्ठयता।

लिखाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लिखना+ई प्रत्य.*) लिपि, लेख, लिखने का कार्य, लिखने की शैली, या रीति, लिखावट, लिखने की मज़बूरी।

लिखाना–क्रि. स. दे. (सं. *लिखन*) लिखने का कार्य किसी दूसरे से कराना, **लिखावना** (दे.)। प्रे. रूप–**लिखवाना**।

लिखापढ़ी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि. *लिखना+पढ़ना*) पत्र व्यवहार, चिट्ठियों का आना-जाना, किसी विषय को लिख कर पक्का या स्थिर करना।

लिखावट–संज्ञा, स्त्री. (हि. *लिखना+आवट प्रत्य.*) लेख, लिपि, लिखने की शैली या ढंग, लिखाई।

लिखित–वि. (सं.) लिखा हुआ, अंकित, चित्रित, चिन्हित।

लिखितक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लिखित*) एक भाँति के प्राचीन चौखूँटे अक्षर।

लिख्या–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लिक्षा*) लीख।

लिच्छवि–संज्ञा, पु. (सं.) एक राजवंश जिसका राज्य कोशल, मगध और नैपाल में था (इति.)।

लिटाना–क्रि. स. (हि. *लेटना*) किसी दूसरे को लेटने के कार्य में लगाना।

लिट्ट–संज्ञा, पु. (दे.) मोटी रोटी, बाटी अंगाकड़ी। (स्त्री. अल्पा. **लिट्टी**)।

लिठौर–संज्ञा, पु. (दे.) एक पकवान।

लिथड़ना–क्रि. अ. (दे.) धूल-धूसरित होना, लथड़जाना, अपमानित होना, लिथरना।

लिथाड़ना–क्रि. स. (हि. *लिथड़ना*) पछाड़ना, धूल-धूसरित या अपमानित करना, लथाड़ना, डॉटना, फटकारना।

लिपटना–क्रि. अ. दे. (सं. *लिप्त*) चिपटना, सटना, चिमटना, गले लगाना, संलग्न होना, आलिंगन करना, किसी कार्य में तन, मन या जी-जान से लग जाना। स. रूप–**लिपटाना**, प्रे. रूप–**लिपटवाना**।

लिपना–क्रि. स. दे. (सं. *लिप्*) लीपा या पोता जाना, रंग या गीला वस्तु का फैल कर भद्दा हो जाना, नष्ट होना। स. रूप–**लिपाना, लिपावना**, प्रे. रूप–**लिपवाना**।

लिपवाई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) लिपवाने या लीपनेज़ की मज़दूरी या क्रिया।

लिपाई–संज्ञा, स्त्री. (हि. *लीपना*) लीपने का कार्य, भाव या मजदूरी।

लिपाना–क्रि. स. (हि.) मिट्टी, गोबर या चूने का लेप चढ़वाना, रंगादि कराना।

लिपि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लिखावट, लिखित या अंकित वर्ण-चिह्न, अक्षर लिखने की रीति, जैसे–ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि, लिखे हुए वर्ण या बात, लेख।

लिपिकर–संज्ञा, पु. (सं.) लेखक, लिखने वाला; लिपिक (अं.) क्लर्क।

लिपिबद्ध–वि. यौ. (सं.) लिखित, लिखा हुआ, अंकित।

लिप्त–वि. (सं.) लिपा या पुता हुआ, अनुरक्त, लीन, अत्यंत तत्पर, पतली तह चढ़ा, निमग्न। संज्ञा, स्त्री. **लिप्तता**।

लिप्सा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लोभ, लालच।

लिफ़ाफ़ा–संज्ञा, पु. (अ.) पत्रादि भर कर भेजने की काग़ज़ की चौकोर थैली, दिखावटी महीन वस्त्र, मुलम्मा, वाह्य आडंबर, कलई, शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु। वि. **लिफाफिया**।

लिबलिबा–वि. (दे.) लसलसा, चिपचिपा, लबलबा। संज्ञा, स्त्री. **लिबलिबाहट**।

लिबास–संज्ञा, पु. (सं.) पोशाक, पहनने का वस्त्र, परिधान, पहनावा, आच्छादन।

लियाकत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) गुण, सामर्थ्य, योग्यता, विद्वता, काविलीयत, शिष्टता, शील, गुण, सभ्यता।

लिये–अव्य. (दे.) वास्ते, निमित्त, हेतु। (*संप्रदान का चिन्ह*) लिए। क्रि. स. (हि. *लेना*) लिए हुए।

लिलाट–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ललट*) ललाट, मस्तक, भाग्य, **लिलार** (दे.)

लिलार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *ललाट*) ललाट मस्तक, माथा भाग्य। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **लिलारी**–ललाट, माथे पर बालों की रेखा।

लिवाना–क्रि. स. दे. (हि. *लेना या लाना*) दूसरे के द्वारा किसी के लाने या लेने का कार्य कराना, साथ लेना, **लिपावना** (दे.)।

लिवाल–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लेना+वाल प्रत्य.*) मोल लेने वाला, लेने वाला, **लेवार**।

लिसोड़ा-लिसोढ़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लस*) एक पेड़ और उसके बेर से फल, लभेड़ा, **लभेरा, लसोढ़ा** (ग्रा.)।

लिहाज़–संज्ञा, पु. (अ.) बर्ताव या व्यवहार में किसी बात का ध्यान, दया-दृष्टि, शील संकोच, पक्षपात. मुलाहज़ा, मर्यादा या सम्मानादि का ध्यान, लज्जा, मुरव्बत।

लिहाड़ी†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) निंदा, उपहास। **मु. लिहाड़ी लेना**–हँसी या निंदा करना, खिल्ली उड़ाना।

लिहाफ़–संज्ञा, पु. (अ.) बड़ी रजाई, जाड़े की रात में ओढ़ने का रुई भरा कपड़ा।

लीक–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लिख*) रेखा, लकीर, गहरी पड़ी लकीर। **मु. लीक खींच करके**–रेखा खींचकर, ज़ोर या बल देकर, निश्चय-पूर्वक। **लीक करके, लीक खींचना**–किसी बात का दृढ़ और अटल होना, साख या मर्यादा बाँधना, प्रतिष्ठा स्थिर होना। **लीक खींच कर**–ज़ोर देकर, निश्चय पूर्वक। **मु. लीक पीटना**–प्राचीन रीति या प्रथा के अनुसार चलना. लकीर का फक़ीर होना। मर्य्यादा चलना, लकीर का फक़ीर होना। मर्य्यादा, यश, लोक-नियम, प्रथा, चाल, रीति, लांछन, धब्बा, गणना, गिनती, सीमा, प्रतिबंध, प्रणाली, बैल गाड़ी के माग-चिह्न।

लीख–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लिक्षा*) जूँ का अंडा, लिक्षा नाम का परिमाण।

लीचड़–वि. (दे.) निकममा, सुस्त, काहिल, जिसका लेन-देन या व्यवहार ठीक न हो, धन पिशाच, कंजूस, कृपण, जल्द न छोड़ने वाला।

लीची–संज्ञा, स्त्री. दे. (*चीनी–चीचू*) एक सदा-बहार पेड़ और उसके गोल मीठे फल।

लीद–संज्ञा, स्त्री. (दे.) घोड़े, गधे आदि का मल।

लीन–वि. (सं.) तनमय, तत्पर, पूणतया लगा हुआ, आसक्त, मिलित, मग्न। संज्ञा, स्त्री. **लीनता**।

लीपना–क्रि. स. दे. (सं. *लपन*) भूमितल या दीवाल आदि पर गोबर की पतली तह चढ़ाना या पोतना। यौ. **लीपापोती**। **मु. लीप-पोत कर बराबर करना**– विनष्ट या चौपट कर देना, चौका लगाना। **लीपापोती करना**–जलादि से गीला कर भद्दा करना, नष्ट करना।

लीर–संज्ञा, स्त्री. (दे.) चिट, चिथड़ा, कतरन।

लीलना–क्रि. स. दे. (सं. *गिलन या लीन*) निगलना, गले से नीचे पेट में उतारना। प्रे. रूप–**लिलवाना**, स. रूप–**लिलाना**।

लीला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मनोरंजक कार्य, क्रीड़ा, बिहार, प्रेम-विनोद, खेल, केलि, प्रेम-कौतुक, चरित्र, मनोरंजनार्थ ईश्वर के अवतारों का अभिनय, प्रेम विनोदार्थ प्रिय के वेश-वाणी, गति आदि का नायिका द्वारा अभिनय-संबंधी एक हाव (साहि.), बारह मात्राओं का एक मात्रिक छंद, चौबीस मात्राओं का एक सगणांत मात्रिक छंद, एक वर्णिक छंद जिसमें प्रत्येक चरण में भगण, नगण और एक गुरु होता है (पिं.)। संज्ञा, पु. (सं. *नील*) श्याम रंग का घोड़ा। वि. (दे.) नीला।

लीलापुरुषोत्तम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण जी, **लीलापुरुष**।

लीलावती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रख्यात ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य की कन्या (स्त्री.) जिन्होंने उसके नाम (*लीलावती*) से गणित की एक पुस्तक रची थी, 32 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं.)। वि. स्त्री. लीलायुक्त।

लुंगाड़ा–संज्ञा, पु. (दे.) लुच्चा, शोहदा, गुंडा। स्त्री. **लुंगाड़ी**।

लुंगी, लूँगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लँगोट, लाँग*) धोती के

बदले कमर में लपेटने का कपड़े का छोटा टुकड़ा, तहमद।

लुंचन–संज्ञा, पु. (सं.) नोचना, उखेड़ना, उत्पादन, चुटकी से उखाड़ना।

लुंज, लुंजा–वि. दे. (सं. *लुंचन*) लँगड़ा, लूला, बिना पत्ते का पेड़ ठूँठ।

लुंठना–क्रि. स. दे. (सं.) लूटना, लुढ़कना, चुराना, **लुठना** (दे.)। वि. **लुंठित, लुंठनीय**। संज्ञा, पु. **लुंठन**।

लुंबिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कपिलवस्तु के समीप का वह वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुआठा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लोक=काष्ठ*) सुलगती या जलती हुई लकड़ी, **लुआती** (प्रान्ती.)। स्त्री. अल्पा. **लुआठी**।

लुआब–संज्ञा, पु. (अ.) चिपचिपा या लसदार गूदा, लासा, **लबाव** (दे.); मुँह में पान की पीक।

लुकंजन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लोकांजन*) एक व्यंजन जिसका लगाने वाला अदृश्य हो जाता है, लोपांजन, सिद्धांजन।

लुक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लोक=चमकना*) चमकदार रोगन, वार्निश, पालिश, आग की ज्वाला या लपट, लौ, छिपना।

लुकठी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लुक*) जलती लकड़ी, **लुआठी**।

लुकना–अ. क्रि. दे. (सं. *लुक=लीप*) छिपना, ओट या आढ़ में होना, लोप होना। स. रूप—**लुकावना, लुकाना**, प्रे. रूप—**लुकवाना**।

लुकमा–संज्ञा, पु. (अ.) ग्रास, कौर।

लुकाट–संज्ञा, पु. (दे.) एक पेड़ और उसका फल।

लुकाना–क्रि. स. दे. (हि. *लुकना*) छिपाना, आड़ या ओट में करना। अ. क्रि. (दे.) छिपना, लुकना। प्रे. रूप—**लुकवाना**।

लुगड़ा, लुगरा–संज्ञा, पु. (दे.) वस्त्र, कपड़ा, ओढ़नी। यौ. **लहँगा-लुगरा**।

लुगदी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) गीली वस्तु का निस्सार लोंदा, निस्सार वस्तु का पिंड या गोला, निस्तत्व गूदा।

लुगरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लोग*) **लोगाई** स्त्री, औरत, नारी।

लुचई, लुचुई†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *रुचि*) मैदे की छोटी और बारीक पूरी।

लुचपन–संज्ञा, पु. (हि. *लुचकना*) **लुच्चापन**, दुष्टता, कुचाल, दुश्चरित्रता, बदमाशी।

लुचरा–संज्ञा, पु. (दे.) मकड़ा (कीट विशेष)।

लुच्चा–वि. दे. (हि. *लुचकना*) दुराचारी, दुश्चरित्र, बदमाश, कुमार्गी, कुचाली, शोहदा। स्त्री. **लुच्ची**। यौ. **नंगा-लुच्चा**। संज्ञा, स्त्री. **लुच्चई**।

लुजलुजा–वि. (दे.) लचीला, कमज़ोर।

लुटंत‡*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लूट*) लूट।

लुटना–क्रि. अ. दे. (सं. *लुट=लुटना*) लुट या लूटा जाना, नष्ट या बरबाद होना। *क्रि. अ. (दे.) लुटना, लोटना। स. रूप—**लुटाना, लुटावना**, प्रे. रूप—**लुटवाना**।

लुटवैया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लूटना+वैया प्रत्य.*) लूटने वाला, ठग, बटमार, धूर्त्त, उचक्का।

लुटाना–क्रि. स. दे. (हि. *लुटना*) लूटने देना, व्यर्थ व्यय करना, फेंकना, बहुत दान देना या बाँटना, पूरा मूल्य लिए बिना देना, **लुटावना** (दे.)।

लुटिया, लोटिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लोटा*) छोटा लोटा। **मु. लुटिया डुबोना (डूबना)**–नष्ट-भ्रष्ट कर देना (होना), बिगाड़ देना (बिगड़ जाना)।

लुटेरा, लुटंक–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लूटना+एरा या एक प्रत्य.*) डाकू, इग, लूटने वाला, बटमार, धूर्त्त, वस्तु।

लुट्टस–संज्ञा, पु. (दे.) बिगाड़, नाश, ध्वंस, लूट-खसोट।

लुठन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लुंठन*) घोड़ा आदि पशुओं का श्रम मिटाने को भूमि पर लोटना या लोट-पोट करना, लुढ़कना, लोटना।

लुड़का–संज्ञा, पु. (दे.) **लुरका**, कान का एक गहना। स्त्री. **लुरकी**।

लुढ़कना–क्रि. अ. दे. (सं. *लुंठन*) गेंद सा चक्कर खाते जाना, ढुलकना, **ढुरकना**। स. रूप—**लुढ़काना, लुढ़कावना** प्रे. रूप—**लुढ़कवाना**।

लुढ़िया, लोढ़िया–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लोढ़ा*) छोटा लोढ़ा।

लुढ़ियाना–क्रि. स. (दे.) कपड़े सीना, टाँके दिए कपड़े को पकका सीना।

लुतरा–वि. (दे.) चुगुल, चुगुलखोर, नटखट, बदमाश, नटखट। स्त्री. **लुतरी**।

लुत्थ*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लोथ*) लोथ, कबंध।

लुत्फ़–संज्ञा, पु. (अ.) दया, कृपा, मेहरबानी, मनोरंजन,

उत्तमता, आनंद, मजा, रुचिरता, रोचकता, **लुतुफ, लुफुत** (दे.)।

लुनना–क्रि. स. दे. (सं. *लवन*) खेतों का अन्न या फ़सल काटना, नष्ट करना।

लुनाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लावण्य*) सुंदरता, मनोहरता, लावण्यता। संज्ञा, स्त्री. (हि. *लुनना*) लुनने का भाव, मज़दूरी या क्रिया, कटाई।

लुनियाँ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लवण*, हि. *लोन*) नमक बनाने वाली एक जाति, एक प्रकार की घा, **लोनिया** (दे.)।

लुनेरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लुनना*) खेत का पका अन्न काटने वाला, लुनने वाला।

लुपना*–क्रि. अ. दे. (सं. *लुप्त*) छिपना, लुप्त होना, **लुकना** (दे.)।

लुपलुप–क्रि. स. (*अनु.*) पशु आदि के खाने का शब्द विशेष। **मु. लुपलुप (लुपुर लुपुर) करना**–अति आतुरता करना।

लुप्त–वि. (सं.) छिपा हुआ, गुप्त, अदृश्य, अंतर्हित। संज्ञा, पु. **लोप**।

लुप्तोपमा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) उपमालंकार का वह भेद जिससे उसके 4 अंगों में से कोई अंग छिपा हो, न कहा गया हो (अ. पी.)।

लुबदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लुगदी*) लुगदी।

लुबुधना†–क्रि. अ. दे. (हि. *लुबुध+ना प्रत्य.*) लुभाना, ललचाना, लुब्ध या मोहित होना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *लुब्धक*) बहेलिया, अहेरी।

लुबुधा*–वि. दे. (सं. *लुब्ध*) लोभी, लालची, मोहित, इच्छुक, प्रेमी, चाहने वाला।

लुब्ध–वि. (सं.) लुभाया या ललचाया हुआ, मोहित, लोभ ग्रसित, मुग्ध, तन मन की सुधि भूला हुआ।

लुब्धक–संज्ञा, पु. (सं.) व्याधा, बहेलिया, शिकारी, एक अति तेजवान तारा जो उत्तरी गोलार्द्ध में है (आधुनिक)।

लुब्धना*–क्रि. अ. दे. (सं. *लुब्ध*) लुभाना, ललचाना, मोहित होना।

लुब्धापति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पति और कुल-जनों की लज्जा करने वाली प्रौढ़ानायिका (काव्य.)।

लुब्ध लुबाय–संज्ञा, पु. (अ.) तत्व, सारांश, मूल, निष्कर्श।

लुभाना–क्रि. अ. दे. (हि. *लोभ*) मोहित वा लुब्ध होना, लोभ या लालच करना, आसक्त होना, रीझना, तन मन की सुधि भूलना। क्रि. स. (दे.) मोहित या लुब्ध करना, सुधि-बुधि भुलाना, ललचाना, प्राप्ति की गहरी चाह उपजाना या मोह में डालना, रिझाना।

लुरकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लुरकना=लटकना*) कान का एक गहना, वाली। **मुरकी** (प्रान्ती.)।

लुरना, लुलना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *लुलन*) झूलना, झुक या ढल पढ़ना, लहराना, हिलना, चाल्यमान, कहीं से सहसा आ जाना, प्रवृत्त या आकर्षित होना।

लुरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लुरुना=बछड़ा*) हाल की व्यायी गाय।

लुहंडा, लोहंडा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *लोह+हंडा*) लोहे का घड़ा, लोहे की गगरी, लौह-पात्र।

लुहना*–क्रि. अ. दे. (हि. *लुभाना*) लुभाना, ललचाना।

लुहान–वि. दे. (हि. *लोहू का लहू*) लहूभरा, रक्तपूर्ण, रक्तमय। यौ. **लहू-लुहान (होना)**–लाठी आदि की चोट से कपड़ों का रक्त से रँग जाना।

लुहार, लोहार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लौहकार*) लोहे की चीज़ बनाने वाला, लोहे के काम करने वाली एक जाति। स्त्री. **लुहारिन**।

लुहारी, लोहारी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लुहार*) लोहे की वस्तु बनाने का कार्य, लुहार की स्त्री, **लोहारिन**।

लू–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लुक=जलना या* हि. *लौ–लपट*) ग्रीष्म ऋतु की उष्ण या गर्म वायु का झोंका। **मु. लू लगना (मारना)**–देह में तपी या उष्ण वायु के लगने से दाह, ताप आदि होना।

लुआठ, लूआठा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लोक=काष्ठ*) सुलगती हुई लकड़ी, चुआती। स्त्री. अल्पा. **लूआठी**।

लूक–संज्ञा, स्त्री. (सं. *लुक*) आग की लपट, जलती हुई लकड़ी, **लूका**। (स्त्री. **लूकी**) **लुत्ती** (प्रान्ती.)। लू या गर्म वायु, ग्रीष्म काल की तप्त वायु का झोंका, **लपट** (दे.)। संज्ञा, पु. (दे.) उल्का, टूटा हुआ तारा।

लूख–संज्ञा, स्त्री. (दे.) लूक, आग, ज्वाला।

लूखा*–वि. दे. (सं. *रूक्ष*) रूखा, सूखा।

लूगा†–संज्ञा, पु. (दे.) **लुगरा**, धोती, कपड़ा।

लूट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लूटना*) किसी के धन को बल-पूर्वक मार कूट कर छीना जाना, डकैती, लूट का माल-असवाब। यौ॰ **लूट-खसोट**। यौ॰ **लूटमार-लूटपाट**–लोगों को अनुचित रूप से मार-पीट, छीन-झपट कर उनका धन आदि छीनना। यौ॰ **लूट खूंद**–लूट मार, **लूट-खसोट**।

लूटना–क्रि॰ स॰ (सं॰ *लुट=लूटना*) किसी का माल-असवाब या धन मार-पीट कर या डाँट-फटकार बता कर छीन-झपट लेना, अनुचित रीति से किसी का धनादि लेना, उचित से बहुत अधिक मूल्य लेना, ठगना, मुग्ध या मोहित करना। स॰ रूप–**लुटाना, लुटावना** (दे॰)। प्रे॰ रूप–**लुटवाना**) अपहरण, **लूटि**। पू॰ का क्रि॰ (हि॰ *लूटना*) लूटकर।

लून, लोन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लवण*) नमक, नोन, काटा गया।

लूनना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लुनना*) खेतों की पकी फ़सल काटना, लुनना।

लूनिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) शोरा-नमक बनाने वाली एक जाति, एक घास बेलदार या फावड़ागीर, **लुनिया, लोनिया** (दे॰)।

लूनी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नैन, मक्खन, नवनीत, **लौनी एक नदी (राजस्थान)**, चने के पौधों पर की बारीक रेणु जो खट्टी और नमकीन होती है, लोनी। वि॰ (दे॰) नमकीन, **लौनी**।

लूमना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लंबन*) लटकना, झूमना, झूलना।

लूला–वि॰ दे॰ (सं॰ *लून=फटा हुआ*) कटे हाथ का, लुँजा, डुंडा, असमर्थ, बेकार। (स्त्री॰ **लूली**)।

लूलू–वि॰ दे॰ (हि॰ *लूला*) नासमझ, मूर्ख, निकम्मा। संज्ञा, पु॰ (दे॰) भयानक जंतु (कल्पित)।

लूह†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लू*) लू, गर्म हवा, **लूफ, लुहार** (आ॰)।

लूहर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) लुकेठा, ठूक या गिरा हुआ तारा, उष्ण वायु, लू।

लेंड़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बँधा गाड़ा सूखा सा मल।

लेंड़ी–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लेंड़*) बँधे मल की बत्ती, बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़-लेहंडा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) झुंड, समूह, दल, गल्ला, (चौपायों का) एक भाषा (पश्चिमी प्रांत) **लेंहड़ा**।

ले–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *लेकर*) आरंभ होकर, लेकर, **लौं** (ब्र॰)। ‡(सं॰ *लग्न*, हि॰ *लग, लगि*) पर्य्यंत, तक।

लेई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लेही, लेहा*) काग़ज़ आदि चिपकाने की आटे की पतली लपसी, अवलेह, आटा आदि किसी चूर्ण को पानी में पका कर गाढ़ा किया लसीला पदार्थ। क्रि॰ स॰ सा॰ भ॰ (हि॰ *लेना*) लेगा, लेगी। यौ॰ **लेई पूँजी**–सारा धन या सामान, सारी पूँजी या जमा, सर्वस्व। सुर्खी मिला बरी का चूना (जो ईंटों की जुड़ाई में लगता है।

लेख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लिखे अक्षर, लिपि, लिखाई, लिखावट, हिसाब-किताब, देवता, देव। *वि॰ (दे॰) लिखने-योग्य, लेख। संज्ञा, स्त्री॰ सं॰ (हि॰ *लीक*) लकीर, पक्की बात।

लेखक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लिपिकार, ग्रंथकार, लिखने वाला, रचयिता, मुहर्रिर, मुंशी। (स्त्री॰ **लेखिका**)।

लेखकी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लेखक+ई प्रत्य॰*) लिखाई, लेखक का कार्य, पेशा या मजदूरी।

लेखन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लिखने की विद्या या कला, अक्षर या चित्र बनाना, लिखने का काम, हिसाब करना, लेखा लगाना। वि॰ **लेखनीय, लेख्य**।

लेखना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लेखन*) समझना, विचारना, लिखना, अक्षर या चित्र बनाना, गणित करना, **गिनना**, देखना, अनुमान करना। यौ॰ **लेखना-जोखना**–ठीक-ठीक अनुमान या अंदाजा करना, हिसाब या लेखा लगाना, जाँच या परीक्षा करना, जोड़ना, सोचना, विचारना। स॰ रूप–**लेखना**, प्रे॰ रूप–**लेखवाना**, सं॰ रूप–**लेखाना, लेखावना**।

लेखनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कलम।

लेखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लिखना*) गणित, हिसाब-किताब, गणना, ठीक-ठीक अंदाज या अनुमान, कूत, आय-व्यय विवरण। **मु॰ लेखा पढ़ना**–व्यापार या व्यौहार-गणित पढ़ना। **मु॰ किसी के लेखे**–किसी की समझ या विचार में।

लेखिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लिखने वाली, पुस्तक रचने वाली।

लेख्य–वि॰ (सं॰) लिखने योग्य, जो लिखा जाने को हो। संज्ञा, पु॰ (दे॰) दस्तावेज़, लेख, तमस्सुक।

लेख्यगृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दफ़्तर, कचहरी, आफ़िस (अं॰)।

लेज़म–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) एक नरम और लचीली कमान जिससे धनुर्विद्या का अभ्यास किया जाता है, लोहे की जंजीर लगी कमान जिससे कसरत की जाती है, **लेजम** (दे॰)।

लेज–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) रस्सी, डोरी।

लेजुर-लेजुरी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *रज्जु*) डोरी, रस्सी, **लजुरी** (ग्रा॰)।

लेट–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चूने की गच, लेटने का भाव। क्रि॰ वि॰ (अं॰) देर, विलंब।

लेटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लुंठन*, हि॰ *लोटना*) पौढ़ना, बग़ल की ओर झुककर पृथ्वी पर गिर जाना, बिछौने आदि से पीठ लगाकर पूरा शरीर उस पर ठहराना। क्रि॰ स॰–**लेटाना, लिटाना, लिटावना** (आ॰), प्रे॰ रूप–**लेटवाना, लिटवाना**।

लेदी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक पक्षी।

लेन–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लेना*) लेने की क्रिया या भाव, पावना, **लहना** (दे॰)। यौ॰ **लेन-देन**–लेना-देना।

लेनदार–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लेन+दार फ़ा॰ प्रत्य॰*) महाजन, व्यवहार, लहनेदार।

लेन-देन–संज्ञा॰ पु॰ यौ॰ (हि॰ *लेन+देना*) आदान-प्रदान, उधार लेने-देने का व्यवहार, लेन-देन का व्यवहार। **मु॰ लेन-देन**–संबंध, सरोकार। **न लेने में न देने में**–कोई संबंध न रखना (रहना)।

लेनहार–वि॰ दे॰ (हि॰ *लेना+हार प्रत्य॰*) लेने वाला, **लेनहारा** (दे॰)।

लेना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *लहना*) प्राप्त या ग्रहण करना, और के हाथ से अपने हाथ में करना, पकड़ना, थामना, खरीदना, मोल लेना, अपने अधिकार या क़ब्ज़े में करना, अगवानी करना, जीतना, धरना, जिम्मे लेना, भार उठाना, अभ्यर्थना करना, पीना, सेवन करना, अंगीकार या धारण करना, उपहास से लज्जित करना। **मु॰ आड़े हाथों लेना**–गूढ़ व्यंग्य के द्वारा लज्जित करना। **लेने के देने पड़ना**–लाभ के बदले हानि उठाना, लेने के बदले देना पड़ना। **ले डालना**–नष्ट या ख़राब करना, बिगाड़ना, चौपट करना, बूरा देना, समाप्त या पूर्ण करना। **ले-दे डालना**–नष्ट करना, व्यंग्य से अपमानित या लज्जित करना। **ले-दे करना**–तकरार करना, झगड़ना। **लेना एक न देना दो**–कुछ मतलब या सरोकार नहीं। (**न कुछ) लेना-न-देना**–निष्प्रयोजन। **न (ऊधौ के) लेने में न (माधव के) देने में**–किसी प्रकार का संबंध न होना, निष्प्रयोजन, अकारण। **ले मरना (ले गिरना)**–अपने साथ दूसरे को भी नष्ट या बरबाद करना, कुछ न कुछ कार्य सिद्ध ही कर लेना। **कान में लेना**–सुनना। **ले बीतना**–नष्ट या खराब कर देना, समाप्त कर लेना।

लेप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लेई की सी पोतने, छोपने या चुपड़ने की वस्तु, किसी वस्तु पर चढ़ी हुई किसी गाढ़ी और गीली वस्तु की तह।

लेपन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लेपना, लेपने की वस्तु, मरहम, उबटन आदि। वि॰ **लेपनीय, लेपित, लिप्त**।

लेपना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लेपन*) **छोपना** (ग्रा॰), गीली और गाढ़ी वस्तु की तह चढ़ाना, लीपना।

लेपित–वि॰ (सं॰) लिप्त, लेप किया या लीपा हुआ।

ले रखना–क्रि॰ स॰ यौ॰ (हि॰ *लेना+रखना*) संचय या संग्रह करना, एकत्रित करना, रक्षित रखना।

ले रहना–क्रि॰ स॰ यौ॰ (हि॰ *लेना+रहना*) संगी या साथी बनाना, साथ लेकर रहना, अपने अधिकार में करना, लेकर ही शांत होना।

लेला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भेड़ का बच्चा, मेमना।

लेलिह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साँप, सर्प, नाग।

लेपा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लेप्य*) लेप, बटलोई आदि बरतनों के पेंदे पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पूर्व मिट्टी आदि का लेप, **लेवा** (ग्रा॰)।

लेवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लेप्य*) लेप, कहगिल, गिलावा। वि॰ दे॰ (हि॰ *लेना*) *देने वाला। यौ॰* **लेवा-देई (लिवा-देवा)**–लेन देन।

लेवार–संज्ञा, पु॰ (दे॰) गीली मिट्टी, गिलावा, दीवाल पर छाप लगाने की मिट्टी, लेप, लेवा।

लेवाल, लेवार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लेना+नाल प्रत्य॰*) लेने या ख़रीदने वाला।

लेवास–संज्ञा, पु॰ (दे॰) गच, लेट। स्त्री॰ (दे॰) लेने की

इच्छा।

लेवैया–संज्ञा, पु. (हि. *लेना+वैया प्रत्य.*) लेने वाला, लेवा, ग्राहक।

लेश–संज्ञा, पु. (सं.) चिह्न, अणु, सूक्ष्मता, संसर्ग, संबंध, लगाव, **लेस** (दे.)। एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के एक ही अंश में रोचकता हो। वि. थोड़ा, रंच, अल्प। यौ. **लेश-मात्र**।

लेश्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जीव, जीव की वह दशा जिसमें वह कर्म से बँधता है।

लेपना, लेखना*–क्रि. स. दे. (हि. *लखना*) समझना, लखना, देखना, विचारना, लिखना।

लेसना–क्रि. स. दे. (सं. *लेश्य*) बारना, खलाना, डंक मारना। क्रि. स. दे. (हि. *लस*) किसी वस्तु पर लेस लगाना या पोतना, दीवार पर मिट्टी का गिलावा या पोतना, लीपना, सटाना, चिपकाना, चुगली खाना।

लेह–संज्ञा, स्त्री. (दे.) जल्दी, शीघ्रता, उतावली। क्रि. स. (सं.) लेना।

लेहना–संज्ञा, पु. (हि. *लहना*) लहना। क्रि. स. दे. (सं. *लेहन*) चाटना।

लेहाज़–संज्ञा, पु. (दे.) **लिहाज** (फ़ा.)।

लेहाज़ा लिहाज़ा–क्रि. वि. (अ.) इस लिए, इस वास्ते।

लेही–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लई*) लेई, लपसी।

लेहा–वि. (सं.) चाटने योग्य वस्तु, चटनी, **लेहनीय**।

लैंगिक–संज्ञा, पु. (सं.) वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन से प्राप्त हो, अनुमान। वि. (सं.) लिंग संबंधी, लिंग का, लक्षण या चिन्ह संबंधी।

लै*–अव्य. दे. (हि. *लगना*) **लौं**, पर्य्यंत, तक। *पू. का. क्रि.* (हि. *लेना*) लेकर; लय।

लैस–वि. (अ. *लेस*) वर्दी और हथियारों से सजा हुआ, कटिवद्ध, तैयार, सन्नद्ध। संज्ञा, पु. (अं.) कपड़े पर चढ़ाने का फीता। संज्ञा, पु. (दे.) एक तरह का बाण।

लों–अव्य. दे. (हि. *लौं*) लौं, तक, पर्य्यंत।

लोंदा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *लुंठन*) किसी गीली वस्तु का गोल डला, या बँधा भाग।

लोई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *गोली*) एक रोटी या पूरी के बनाने योग्य गुँधे आटे की गोल टिकिया। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *लोनीय*) एक प्रकार का ऊनी कंबल या चादर, **लोइया** (दे.)।

लोकंजन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *लोपांजन*) लोपांजन, वह अंजन जिसके लगाने से लोग औरों को दिखाई नहीं देते।

लोकंदी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *लोकना*) जो दासी कन्या के साथ ससुराल भेजी जावे।

लोक–संज्ञा, पु. (सं.) जगत्, संसार, प्रदेश, स्थान, निवास-स्थान, दिशा, जन, लोग, जीवधारी, प्राणी, समाज, कीर्ति, यश। इह लोक और परलोक दो लोक हैं (उपनि.)। भूमि, आकाश, पाताल या पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक, तीन लोक हैं। (निरुक्त)। भूलोक, भुवलोक, स्वर्गलोक, मह, जनः, तप और सत्य लोक, ये सात ऊपर के लोक (पुरा.) और फिर अतल, वितल, सुतल, महातल (तल, रसातल (नितल), तलातल (गभस्तिमान्) पाताल ये सात नीचे के लोक (पुरा.), यों कुल चौदह लोक हैं।

लोक कंटक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समाज को क्षति या हानि पहुँचाने वाला।

लोकधुनि*–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *लोकध्वनि*) अफवाह, उड़ती हुई बात।

लोकना–क्रि. स. दे. (हि. *लोपन*) ऊपर से गिरते हुए किसी पदार्थ को अपने हाथों से पकड़ या थाम लेना, बीच में से ही उड़ा लेना। स. रूप–**लोकाना**, प्रे. रूप–**लोकवाना**; (अं.) कैच करना।

लोकनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, **लोक-नायक**।

लोकप, लोकपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, कुबेर आदि, राजा, **लोकाधिपति**।

लोकपाल, लोकपालक–संज्ञा, पु. (सं.) इन्द्रादि, देवता, दिकपाल, दिशाओं के स्वामी, राजा।

लोकप्रवाद–संज्ञा, पु. (सं.) कहावत, मसल, लोक-प्रचलित उक्ति।

लोकमाता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लक्ष्मी, देवी, रमा, कमला।

लोकयात्रा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लोक-व्यवहार या रीति, संसार यात्रा, जीवन।

लोकरीति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) संसार या समाज में प्रचलित

रीति, **लोक-नीति**।

लोकलाज—संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *लोक-लज्जा*) संसार की शर्म, समाज की लज्जा।

लोकलीक*—संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) संसार की मर्यादा, समाज या लोक की रीति।

लोकव्यवहार—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लोकाचार, **लोक-रीति**।

लोकश्रुति—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) अफवाह।

लोकहित—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विश्वमांगल्य।

लोकहितू—वि. दे. यौ. (सं.) लोक-हित या संसार की भलाई करने वाला।

लोकहितैषी—वि. यौ. (सं.) विश्व हित का चाहने वाला।

लोकांतर—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परलोक, मरने पर जीव के जाने का लोक।

लोकांतरित—वि. (सं.) मृत, मरा हुआ, परलोक-वासी।

लोकाचार—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **लोक-व्यवहार,** संसार या समाज का व्यवहार, दुनिया का बर्ताव।

लोकाधिप, लोकाधिपति—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा, लोकप।

लोकापवाद—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार-संबंधी निंदा, निंदा, अपकीर्ति, अयश, बदनामी।

लोकाट—संज्ञा, पु. (*चीनी—लुः क्यू*) एक पेड़ जिसके फल बड़े बेर के से खट्टे, मीठी और गूदेदार होते हैं, **लुकाट**।

लोकाना—क्रि. स. दे. (हि. *लोकना का प्रे. रूप*) उछालना, ऊपर को आकाश में फेंकना।

लोकायत—संज्ञा, पु. (सं.) केवल इस लोक का मानने वाला और परलोक को न मानने वाला, चार्वाक-दर्शन, दुर्मिल छंद (पिं.)।

लोकेश-लोकेश्वर—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लोक-पाल।

लोकैषण—संज्ञा, स्त्री. (सं.) लौकिक बातों की चाह, यशाकांक्षा, कीर्ति, लालसा। वि. (सं.) **लोकैषी**—यशाकांक्षी।

लोकोक्ति—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) कहावत, **लोकोकति, लोकउकति** (दे.), मसल, जनश्रुति, एक अलंकार जहाँ लोकोक्ति का प्रयोग रोचकता के साथ भाव-पोषणार्थ हो (अ. पी.)।

लोकोत्तर—वि. यौ. (सं.) जो लोक या संसार में न हो, अलौकिक, अत्यंत अद्‌भुत या विलक्षण, अनोखा, अपूर्व।

लोखर—संज्ञा, पु. दे. (हि. *लोह+खंड*) लोहार, बढ़इयों आदि के लोहे के हथियार या औज़ार, लोहे के बरतन, भाँड़े।

लोखरी—संज्ञा, स्त्री. (दे.) लोमड़ी, **हुँडार** (प्रान्ती.), लोवा। पु. (दे.) **लेखरा**।

लोग—संज्ञा, पु. *बहु.* दे. (सं. *लोग*) मनुष्य, आदमी, जनता, जन। स्त्री. **लुगाई**।

लोगाइत—संज्ञा, पु. (दे.) ज्ञान, घमंड। **मु. लोगाइत बूकना**—शान जताना।

लोगाई, लुगाई†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लोग*) नारी, स्त्री, औरत।

लोच—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *लचक*) लचक, कोमलता, लचलचाहट। संज्ञा, पु. दे. (सं. *रुचि*) रुचि, अभिलाषा।

लोचन—संज्ञा, पु. (सं.) नेत्र, नयन, आँख।

लोचना†—क्रि. स. दे. (हि. *लोचन+ना प्रत्य.*) देखना, रुचि या अभिलाषा करना, प्रकाशित करना, प्रकाश करना। क्रि. अ. (दे.) शोभित होना। क्रि. अ. अभिलाषा या कामना करना, तरसना, लोभ या लालच करना, **ललचना**।

लोट—संज्ञा, स्त्री. (हि. *लोटना*) लोटने का भाव, लुढ़कना। संज्ञा, पु. (हि. *लोटना*) उतार, त्रिवली, घाट। यौ. **लोट-पोट (होना)**—अति हँसी या हर्ष से लोट जाना।

लोटन—संज्ञा, पु. (हि. *लोटना*) एक तरह का कबूतर, रास्ते के छोटे-छोटे कंकड़।

लोटना—क्रि. अ. दे. (सं. *लुंठन*) लुढ़कना, करवट बदलना, तड़पना। **मु. लोट जाना**—बेसुध या बेहोश हो जाना, मर जाना। विश्राम करना, लेटना, मुग्ध या चकित होना।

लोटपोट—वि. यौ. (दे.) तलफन, पटकना, अति हर्ष या हास से लोट जाना।

लोटा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *लोटना*) धातु का एक गोला बरतन जिससे लोग पानी पीते हैं। स्त्री. अल्पा. **लोटिया, लुटिया**।

लोटिया, लोटी—संज्ञा, स्त्री. (हि. *लोटा*) छोटा लोटा। **मु. लोटिया डूबना (डुबोना)**—नष्ट करना।

लोड़ना—क्रि. स. दे. (पंजाबी *लोड़=जरूरत*) आवश्यकता या ज़रूरत होना, दरकार या चाह होना।

लोढ़ना—क्रि. स. दे. (सं. *लुंचन*) चुनना, ओटना, तोड़ना।

लोढ़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लोष्ठ*) बट्टा, **सिलबट्टा, बटनहाँ** (आ॰), पत्थर का टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाती है। स्त्री॰ अल्पा॰ **लोढ़िया। मु॰ लोढ़ा डालना**–बराबर करना। **लोढ़ा-ढाल**–चौपट, सत्यानाश, विनाश।

लोढ़िया, लुढ़िया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लोढ़ा*) छोटा लोढ़ा।

लोथ, लोथि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लोष्ठ*) मुरदा, मृत शरीर, लाश, शव। **मु॰ लोथों की भीत उठाना**–अनेक मनुष्यों को मारना। **लोथ गिरना**–मारा जाना। **लोथ डालना (गिराना)** हत्या करना, मार डालना।

लोथड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लोथ*) माँस का पिंड। स्त्री॰ *अल्पा॰* **लोथड़ी**।

लोदी–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पठानों की एक जाति।

लोध–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लीघ्र*) एक पेड़, इसकी छाल और लकड़ी औषधि के काम आती है, एक नीच जाति।

लोध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पेड़, लोध।

लोन, लौन*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लवण*) नमक, लवण। **मु॰ (किसी का) लोन खाना**–अन्न खाना, पाला जाना। **लोन चुकाना (उतारना)**–नमकहलाली करना। **किसी का लोन निकलना**–नमकहरामी का फल मिलना। **लोन न मानना**–उपकार न मानना। **जले पर लोन लगाना या देना**–दुख पर दुख देना। **(किसी बात का) लोन सा लगना**–अप्रिय या अरुचिकर होना। **(राई) लोन उतारना**–दृष्टि-दोष दूर करने को राई-नमक उतारना। सौंदर्य, लावण्य। वि॰ (दे॰) नमक, **लौन**।

लोना–वि॰ दे॰ (हि॰ *लोन*) नमकीन, सुंदर, सलोना। संज्ञा, स्त्री॰(दे॰), **लोनाई, लुनाई**। संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लोन*) नमकीन मिट्टी, **अमलोनी** (प्रान्ती॰), जिससे शोरा और नमक बनता है, दीवाल का एक विकार जिससे उसकी मिट्टी झड़ने लगती और वह निर्बल हो जाती है, लोने से दीवार से गिरी मिट्टी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक कल्पित चमारिन जो टोना-जादू में बड़ी प्रवीण मानी जाती है। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लवण*) अन्न की फ़सल काटना, लुनना।

लोनाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लावण्य*) सुंदरता, मनोहरता, **लुनाई** (दे॰)।

लोनार†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लोन*) नमक बनने या होने का स्थान।

लोनिका–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लोनी*) लोनी, एक प्रकार का साग।

लोनिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लोन*) नमक बनाने वाली एक जाति, **नोनिया** (ग्रा॰)।

लोनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लोन*) कुलफे जैसा एक साग, **लोनिया** (दे॰), चने के पौधे की खट्टी नमकीन धूलि।

लोप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अलक्ष्य, क्षय, नाश, अदर्शन, विच्छेद, अभाव, छिपना, दिखाई न देना, अंतर्धान होना। संज्ञा, पु॰ **लोपन**। वि॰ **लोपनीय, लुप्त, लोपक, लोप्य, लोप्ता**।

लोपन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लुप्त या तिरोहित करना, नष्ट करना, अदृश्य करना, गोपन। वि॰ **लोपनीय**।

लोपना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *लोपन*) छिपाना, लुकाना, लुप्त या गुप्त करना, मिटाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) मिटना, छिपना।

लोपमुद्रा, लोपामुद्रा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अगस्त्य ऋषि की स्त्री, अगस्त्य-मंडल के पास उदय होने वाला एक तारा।

लोपांजन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक कल्पित सिद्धांजन, जिसको लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।

लोपा, लोवा–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लोमड़ी*) लोमड़ी।

लोबान–संज्ञा, पु॰ (अ॰) एक पेड़ का सुगंधित गोंद जो जलाने और औषधि के काम आता है।

लोबिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लोम्य*) एक लता या बौंड़ा जिसमें बड़ी फलियाँ होती हैं, एक अन्न।

लोभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लालच, तृष्णा, लेने की इच्छा। वि॰ **लोभी, क्षुब्ध**।

लोभना, लोभाना*†–क्रि॰ स॰ (सं॰ *लोभ+ना* हि॰ *प्रत्य॰*) मोहित या मुग्ध करना, **लुभाना**। क्रि॰ अ॰ (दे॰) मोहित या मुग्ध होना।

लोभार*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *लोभ*) लोभ करने या लुभाने वाला, लालची, लोभी।

लोभित–वि॰ (हि॰ *लोभ*) मोहित, क्षुब्ध।

लोभी–वि॰ (सं॰ *लोभिन्*) लालची, क्षुब्ध, तृष्णाग्रस्त।

लोम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोम, रोवाँ, बाल, देह पर छोटे पतले रोयों। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *लोमश*) लोमड़ी।

लोमकर्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खरगोश, खरहा।

लोमकूप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रोवों के छेद।

लोमड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लोमश*) स्यार जैसा एक जंगली पशु, **लोखरी** (दे॰)।

लोमपाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा दशरथ के मित्र, अंग देशाधिपति, रोमपाद।

लोमश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ऋषि जो अमर माने जाते हैं (पुरा॰)। वि॰ अधिक और बड़े-बड़े रोवाँ वाला, लोमड़ी।

लोमहर्षण–वि॰ यौ॰ (सं॰) देखने से रोमांच करने वाला, भयंकर या भीषण, अति भयावना या रोमांचकारी।

लोर†- वि॰ दे॰ (सं॰ *लील*) चंचल, लोल, चपल, इच्छुक, उत्सुक।

लोरना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लोल*) चपल या चंचल होना, हिलना, डोलना, ललकना, झुकना, लपकना, लोटना, लिपटना। क्रि॰ स॰ (दे॰) **लोराना**।

लोरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लोल*) वच्चों के सुलाने का गीत और थपकी।

लोल–वि॰ (सं॰) चंचल, अस्थिर, क्षणिक, चपल, हिलता-डोलता या काँपता हुआ, चाल्यमान, परिवर्तनशील, कंपायमान, क्षण-भंगुर, उत्सुक।

लोलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कान का एक गहना, कान की बालियों का लटकन, कान की लव। स्त्री॰ **लोलकी**।

लालना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लोल+ना* हि॰ *प्रत्य॰*) हिलना, चलायमान होना, डोलना। स॰ रूप (दे॰) **लोलाना**।

लोला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जीभ, जवान, जिह्वा, लक्ष्मी, कमला, रमा, एक वर्णिक छंद जिसके प्रति चरण में म, स, य, भ, (गण) और अंत में दो गुरु वर्ण होते हैं (पिं॰)।

लोलनी–वि॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लील*) चंचल स्वभाव वाली। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) लक्ष्मी, बिजली।

लोलुप–वि॰ (सं॰) लोभी, लालची, चटोरा, परम उत्सुक।

लोवा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लोमश*) लोमड़ी, **लाखरी** (ग्रा॰)।

लोष्ट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पत्थर, ढ़ेला, मिट्टी।

लोहडा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *लौहमाँड़*) लोहे का घड़ा गगरा। स्त्री॰ अल्पा॰ (दे॰) **लोहंडी**।

लोह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लोहा। **मु॰ लोह चबाना (खाना)**–युद्ध में खड़गघात सहना।

लोहकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लोहे का काम बनाने वाली एक विशेष जाति, **लोहार, लुहार** (दे॰)।

लोहकिट्ट–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लोहे का मैल जो लोहे को आग की आँच देने से निकलता है।

लोहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लोह*) अस्त्रादि बनाने की एक प्रसिद्ध काली धातु। **मु॰ लोहा करना**–युद्ध में खड़ंग या अस्त्र चलाना। **(किसी का) लोहा मान जाना (मानना)**–वहादुर या शूरवीर जानना, दार या पराजय मानना, किसी का प्रभुतव मानना। **लोहा बजना (बजाना)**–तलवार चलना (चलाना), युद्ध होना (करना)। **मु॰ लोहे के चने**–अति कठिन कार्य। हथियार, अस्त्र-शस्त्र। **लोहा गहना (उठाना)**–हथियार उठाना, लड़ना। **लोहा लेना**–लड़ना, युद्ध करना। लोहे की वस्तु लाल रंग का बेल आदि।

लोहान, लुहान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लोहा*) रुधिर-पूर्ण, रक्तमय, लोहू से लदफद या भरा हुआ। यौ॰ **लोहू-लोहान**।

लोहाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लोहा+आना प्रत्य॰*) किसी वस्तु में लोहे का स॰ रंग या स्वाद आ जाना।

लोहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लोहकार*) लोहे की वस्तुएँ बनाने वाली एक जाति। संज्ञा, स्त्री॰ **लोहारिन, लोहारिनी**।

लोहारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *लोहार+ई प्रत्य॰*) लोहार का कार्य या पेशा।

लोहित–वि॰ (सं॰) रक्तवर्ण, लाल। संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लोहितक*) मंगल ग्रह।

लोहित्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मपुत्र नदी, लाल सागर।

लोहिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लोहा+इया प्रत्य॰*) लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला, बनियों और मारवाड़ियों की एक जाति, लाल रंग का बैल।

लोहू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लोहित*) रक्त, खून, लहू (ग्रा॰)।

लौं*†–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *लग*) तुल्य, समान, सदृश, पर्य्यंत, तक।

लौंकना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *लोकना*) दिखाई देना या पड़ना, दृग्गोचर होना। लपकना, चमकना (बिजली), दृष्टि में आना।

लौंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लबंग*) **लउँग** (दे॰) एक झाड़ की

कली जो तोड़ कर सुखा दी जाती है और मसाले और औषधि के काम आती है, लौंग जैसा नाक या कान का एक गहना (स्त्रियों का)।

लौडा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) लड़का, बालक, छोकरा, छोहरा, छोरा। स्त्री॰ **लौंडी, लौंडिया**।

लौंड़ा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) लिंग, शिश्न, **लाँड, लंड** (दे॰)।

लौंड़ी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लौंड़ा*) दासी, लड़की।

लौंद—संज्ञा, पु॰ (दे॰) अधिकमास, मलमास।

लौंदा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *लोंदा*) गीली वस्तु का गोल पिंडा, लोंदा, **ल्वोंदा** (ग्रा॰)।

लौ—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *दावा*) आग की जवाला या लपट, दीपक की शिखा, या टेम। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लाग*) चाह, लाग, लगन, चित्त वृत्ति, कामना, आशा। यौ॰ **लौ लीन**—किसी के ध्यान में मग्न, **लवलीन**।

लौकना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लौ*) दूर से दिखलाई पढ़ना या देना, कौंधना चमकना, लपकना। स॰ रूप—**लौकाना**।

लौका—संज्ञा, पु॰ (दे॰) बिजली, इंद्र-धनुष, बड़ी, लौकी, तूँबा।

लौकिक—वि॰ (सं॰) लोक-संबंधी, व्यावहारिक, सांसारिक। संज्ञा, पु॰ (सं॰) 7 मात्राओं के छंद (पिं॰)।

लौकी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लौका*) कद्दू, छोटा लौका, एक प्रसिद्ध साग।

लौजोरा*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लौ+जोड़ना*) धातु गलाने वाला शिल्पकार।

लौट—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लौटना*) लौटने की क्रिया, ढंग या भाव।

लौटना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *उलटना*) पलटना, वापिस आना, फिर आना, पीछे मुड़ना। क्रि॰ स॰ (दे॰) उलटना, पलटना। स॰ रूप—**लौटाना,** प्रे॰ रूप—**लौटवाना**।

लौटफेर—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *लौटना+फेरना*) उलट-पलट, हेर-फेर, विशाल परिवर्तन, उलट फेर।

लौटाना—क्रि॰ स॰ (हि॰ *लौटना*) फेरना, वापस करना, पलटाना, ऊपर-तले करना।

लौन*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *लवण*) लोन, नमक।

लौना†—संज्ञा, पु॰ (हि॰ *लौनी*) फ़सल की कटाई, **कटनई, लुनाई**। वि॰ दे॰ (सं॰ *लावण्य,* हि॰ *लोन*) सुंदर, मनोहर, लावण्ययुक्त। (स्त्री॰ **लौनी**)।

लौनी‡—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *लौना*) फ़सल की कटाई। **कटनई, लुनाई**। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *नवनीत*) मक्खन, नैनू, नवनीत।

लौह—संज्ञा, पु॰ (सं॰) लोहा।

लौहित्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मपुत्र नदी, लाल सागर।

ल्याना*—क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *लाना*) लावना, लाना, **ल्यावना** (ब्र॰)।

ल्यारी†—संज्ञा, पु॰ (दे॰) भेड़िया।

ल्यावना*—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *लाना*) लाना, बेआना, **लापना**।

ल्यारि*†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *लूह*) लूड, लू, लपट, **लुआरि, लुवार**।

व

व—संस्कृत और हिंदी-भाषा को वर्णमाला के अंतस्थों में का चौथा अर्ध-व्यंजन वर्ण, जो उ का विकार है, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। संज्ञा, पु॰ (सं॰), कल्याण, बंदन, वरुण, वाण, वायु, ब्रह्म, वाहु, सागर। अव्य॰ (फ़ा॰) और जैसे—राजा व राव।

वंक—वि॰ (सं॰) वक्र, कुटिल, टेढ़ा, बंक, (दे॰), संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **वंकता**।

वंकटेश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु भगवान की एक मूर्ति (दक्षिणी भारत)।

वंकनार, वंकनाल—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *बंक+नाड़ी*) सुनारों की टेढ़ी फुकनी।

वंकनारी, वंकनाली—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वंक+नाड़ी*) सुषुम्ना नाम की एक नाड़ी (हठ योग)।

वंकिम—वि॰ (सं॰) वक्र, टेढ़ा, झुका हुआ, कुटिल।

वंक्षु–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आक्सस नदी जो हिंदूकुश पहाड़ से निकल कर अरब सागर में गिरती है (भूगो.)।

वंग–संज्ञा, पु. (सं.) बंगाल प्रदेश, राँगा धातु, राँगे की भस्म।

वंगज–संज्ञा, पु. (सं.) पीतल, सिंदूर। वि. (सं.) बंगाल **प्रदेश में उत्पन्न**।

वंगेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वंग भस्म, (एक रस), वंग देश का राजा, **वंगाधिपति, वंग-नाथ, वंग-नायक**।

वंचक–वि. (सं.) छली, धोखेबाज़, धूर्त्त, ठग, खल। संज्ञा, स्त्री. **वंचकना**।

वंचना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धोखा, छल, **बंचना** (दे.)। (वि. *वंचनीय*)। स. दे. (सं. *वंचन*) धोखा देना, ठगना, छल करना। क्रि. स. दे. (सं. *वाचन*) बाँचना, पड़ना।

वंचित–वि. (सं.) जो छला या ठग गया हो, धोखा दिया गया, बिलग, विहीन रहित।

वंठ–संज्ञा, पु. (दे.) मझोला, बौना, विवाहित व्यक्ति। वि. विकलांग।

वंडर–संज्ञा, पु. (दे.) खोजा, कंजूस।

वंडा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) कुलटा स्त्री।

वंदन–संज्ञा, पु. (सं.) स्तुति, प्रणाम, पूजा वि. **वंदनीय, वंदित**।

वंदनमाला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वंदनवार।

वंदना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्तुति, प्रणाम। वंदन। क्रि. स. (दे.) वंदन करना, **बंदना** (दे.)।

वंदनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वंदनीय*) प्रणाम करने योग्य, पूजनीय, पूज्य।

वंदनीय–वि. (सं.) पूजनीय, स्तुत्य, वंदना या आदर करने योग्य, **वंदनीय**।

वंदित–वि. (सं.) कृत-स्तवन, कृत प्रणाम, पूज्य, आदरणीय।

वंदी–संज्ञा, पु. (सं.) एक जाति जो राजाओं का यशोगान करती थी (प्राचीन) भाट, बंदी, **कैदी**।

वंदीगृह–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कैदखाना, जेलखाना, **कारागृह**।

वंदीजन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भाट, वंदी।

वंद्य–वि. (सं.) स्तुत्य, पूजनीय, पूज्य, वंदनीय।

वंश–संज्ञा, पु. (सं.) बाँस, रीढ़ की हड्डी, बाँसा या नाक के ऊपर की हड्डी, बाँसरी, कुल, कुटुंब, बाहु आदि की लंबी हड्डी, **वंश** (दे.)।

वंशकपूर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वंश कपूर*) वंशलोचन (औप.)।

वंशज–संज्ञा, पु. (सं.) बाँस का चावल, वंशलोचन, संतति, संतान।

वंशतिलक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुल का शिरोमणि, एक छंद (पिं.)।

वंशधर–संज्ञा, पु. (सं.) कुल में उत्पन्न, संतति, कुल की प्रतिष्ठा रखने वाला, संतान, वंशज।

वंशलोचन–संज्ञा, पु. (अ.) वंसलोचन।

वंशस्थ–संज्ञा, पु. (सं.) ज, त, ज, र (गण) से युक्त 12 वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं.)।

वंशावतंश–वि. यौ. (सं.) वंश-विभूषण, वंश-श्रेष्ठ, कुलोत्तम।

वंशावली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) किसी वंश के पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम-बद्ध सूची।

वंशी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बाँसुरी, मुरली, मुँह से फूंक कर बजाने का बाँस का बाजा, **बंसी** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. (दे.) बंसी, मछली मारने का काँटा।

वंशीधर–संज्ञा, पु. (सं.) श्री कृष्ण।

वंशीय–वि. (सं.) कुटुंब में उत्पन्न, कुटुंबी, वंश-संबंधी।

वंशीवट–संज्ञा, पु. (सं.) वृंदावन का एक बरगद का पेड़ जिसके तले श्री कृष्ण जी बहुधा बाँसुरी बजाते थे।

वंश्य–वि. (सं.) श्रेष्ठ-कुलोत्पन्न, कुलीन, कुलवान, सुवंश में उत्पन्न।

वक–संज्ञा, पु. (सं.) बक (दे.) बगला पक्षी, अगस्त का वृक्ष और फूल, एक दैत्य जिसे भगवान् कृष्ण ने मारा था (भा.), एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था (महाभा.)।

वक-ध्यान–संज्ञा, पु. यौ (सं.) बगले सा ध्यान, झूठा ध्यान, छल-पूर्ण ध्यान।

वकयंत्र–संज्ञा, पु. (सं.) अक उतारने का एक यंत्र विशेष।

वकवृत्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बगले की सी कार्रवाई, धोखा देकर कार्य सिद्धि की घात से रहने की वृत्ति। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) धूर्त, छली।

वकालत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात या विवाद करना, वकील का काम, दैत्य, मुकदमें में किसी पक्ष के समर्थनार्थ बहस करना, दूत-कर्म।

वकालतनामा–संज्ञा, पु. यौ. (अ. *वकालत+नामा*) वह

अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी ओर से मुक़दमें की पैरवी या बहस के लिए रख सकता है।

वकासुर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक दैत्य जिसे श्री कृष्ण जी ने मारा था (भाग॰)।

वकी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पूतना नाम की राक्षसी।

वकील–संज्ञा, पु॰ (अ॰ दूसरे के पक्ष का समर्थक (मंडन करने वाला), राज-दूत, दूत, प्रतिनिधि, एलची, वक़ालत परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्ति जो अदालतों में अपने मुवकिलों के मुक़दमों में बहस करे।

वकुल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मौलसिरी का पेड़।

वकूप्प–संज्ञा, पु॰ (अ॰) घटित होना।

वकूप्पा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) घटना, वारदात।

वकूफ–संज्ञा, पु॰ (अ॰) समझ, ज्ञान।

वक़्त–संज्ञा, पु॰ (अ॰) काल, समय, मौक़ा, अवसर, अवकाश, **बखत** (दे॰)।

वक्तव्य–वि॰ (सं॰) वाच्य, कहने-योग्य, कथनीय। संज्ञा, पु॰ (सं॰) वचन, कथन, किसी विषय में कहने की बात।

वक्ता–वि॰ (सं॰ *वक्तृ*) बोलने या कहने वाला, वाग्मी, भाषण में पटु, या कुशल। संज्ञा, पु॰ (सं॰) कथा कहने वाला ब्यास।

वक्तृता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) व्याख्यान, भाषण, कथन, वाकपटुता या कुशलता।

वक्तृत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वक्तृता, वाग्मिता, न्यायवान, कथन, भाषण।

वक्त्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुख, थूथन, चोंच, दंत, कायरिम एक छंद (वि॰)।

वक्फ़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) धर्म्मार्थ दान किया गया धन या संपत्ति, किसी को कोई वस्तु देना।

वक्र–वि॰ (सं॰) बाँका, वक्र (दे॰) टेढ़ा, कुटिल, तिरछा, झुका हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **वक्रता**।

वक्रगामी–वि॰ (सं॰ *वक्रगामिन्*) टेढ़ी चाल चलने वाला, दुष्ट, शठ, कुटिल।

वक्रग्रीव-वक्रग्रीवा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ऊँट, टेढ़ी गरदन वाला।

वक्रतुंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गणेश जी।

वक्रदृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कुटिल या टेढ़ी निगाह, कटाक्ष, रोष दृष्टि।

वक्री–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जन्म से टेढ़े अंगों वाला। वि॰ (सं॰) किसी ग्रह का अपने मार्ग से हट कर वक्रगति से जाना (ज्यो॰)।

वक्तोक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक अर्थालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का भिन्न अर्थ होता है (का॰) (अ॰ पी॰), टेढ़ी बात, बढ़िया उक्ति, काकूक्ति, **बक्रोकृति** (दे॰)।

व्रक्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वक्षस्*) उर-स्थल, छाती।

वक्षःस्थल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हृदय, छाती, उर।

वक्षु–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वंक्षु*) वंक्षु या वांक्यास नदी जो अरब सागर में गिरती है (भूगो॰)।

वंक्षोज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उरोज, पयोधर, स्तन, चूँची, छाती।

वक्ष्यमाण–वि॰ (सं॰) वक्तव्य, जो कहा जा रहा हो।

वगलामुखी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक देवी का रूप।

वग़ैरह–अव्य॰ (अ॰) इत्यादि, आदि, प्रभृति।

वचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मानव-मुख से निकला सार्थक शब्द या शब्द-समूह, बात, वाक्य, वाणी। उक्ति, कथन, एकतब या बहुत्व का सूचक शब्द के रूप का विधान (व्या॰) हिंदी में वचन के दो भेद हैं (1) **एकवचन**, (2) बहुवचन, (**द्विवचन** सं॰)।

वचनकारी–वि॰ (सं॰) आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी।

वचन-लक्षिता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह परकीया नायिका जिसकी बातों से उसका प्रेमी (उपपति) के प्रति प्रेम प्रगट हो (काव्य॰)।

वचन-विदग्धा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह परकीया जो बातों की चतुराई से नायक की प्रीति प्राप्त कर कार्य सिद्ध कर ले।

वचा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वच (औषधि)।

वच्छ*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वक्षस्*) उर, हृदय, छाती। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वत्स*) गाय का बछवा, प्यारा पुत्र।

वच्छनाग–संज्ञा, पु॰ (दे॰) वत्सनाभ (विष)।

वज़न–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बोझा, भार मान, तौल, गौरव, मर्यादा।

वजनी–वि॰ (अ॰ *वजन*+ई फ़ा॰ *प्रत्य॰*) भारी, बोझिल। वि॰ **वज़नदार**।

वजह–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) सबब, वायसरफ़ा, कारण, हेतु।

वजा–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *वजअ*) रचना, सजधज, बनावट, दशा, प्रणाली, मुजरा रीति; मिनहा। यौ॰ **वज़ा-क़ता**।

वजादार–वि॰ (अ॰ *वजा+दार* फ़ा॰ *प्रत्य॰*) तरहदार, सुडौल, सुंदर, अच्छी बनावट वाला, सुरक्षित।

वज़ारत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मंत्री का पद या कार्य।

वज़ीफ़ा–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) **छात्र-वृत्ति** (सं॰) मासिक या वार्षिक आर्थिक सहायता या वृत्ति जो विद्यार्थियों, विद्वानों आदि को दी जाती है, जप या पाठ (मुसल॰)।

वज़ीर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अमात्य, मंत्री, दीवान, शतरंज का एक मुहरा, फरज़ी।

वज़ीरी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) वजीर या मंत्री का काम या पद, घोड़ों की एक जाति।

वजू–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *वुज़्ज़ू*) नमाज़ पड़ने से पहले शौचार्थ हाथ-मुँह धोना (मुसल॰)।

वजूद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अस्तित्व, शरीर।

वज्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इंद्र का एक भाला जैसा शस्त्र (पुरा॰), कुलिश, पर्व, पवि, बिजली, हीरा, बरछा, भाला, फौलाद। वि॰ (सं॰) बहुत कड़ा या दृढ़, घोर, भीषण, दारुण, कठिन, कठोर।

वज्रक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हीरा।

वज्रक्षार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक औषधि, **वज्रखार** (दे॰)।

वज्रतुंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मच्छड़, गरुण, गणेश, थूहर।

वज्रदंत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सूकर, सूअर, चूहा।

वज्रदंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक पोधा विशेष।

वज्रधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इंद्र, देवराज।

वज्रनाभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक दैत्य जो सुमेरू के पास वज्रपुर में रहता था (पुरा॰)।

वज्रपात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बिजली गिरना, कठिन आपत्ति आना।

वज्रपाणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इंद्र।

वज्रलेप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक प्रकार के मसाले का लेप जिसके लगाने से मूर्ति, दीवाल आदि दृढ़ हो जाती हैं।

वज्रसार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हीरा।

वज्रहस्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र।

वज्रांग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दुर्योधन, महावीर, सुदृढ़ शरीर वाले।

वज्रांगी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हनुमान जी, **बजरंगी** (दे॰)।

वज्राघात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वज्र पात, वज्र से मारना, कठिन चोट।

वज्रापात–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वज्र से मारना, **वज्राघात**।

वज्रावर्त्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक मेघ।

वज्रासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हठ योग का एक आसन।

वज्रायुध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इंद्र।

वज्री–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वज्रिन्*) इंद्र।

वज्रीली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हठ योग की एक मुद्रा।

वट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बरगद का पेड़, वट (दे॰)।

वटक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गोला, बट्टा, बड़ी गोली या वटिका, बड़ा, पकौड़ा।

वटर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुर्ग, मुर्गा, चोर, पहाड़, आसन, चटाई।

वटसावित्री–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वट-पूजन के साथ एक व्रत जो स्त्रियाँ किया करती है, **बरगदाही** (दे॰)।

वटिका-वटी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गोली, टिकिया, **बटी, बटिया** (दे॰)।

वटु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) माणवक, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी, ब्राह्मण-कुमार, बालक।

वटुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मचारी, बालक, एक भैरव।

वड़, वर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बरगद का पेड़।

वड़वानल, वाड़वानल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र की अग्नि, **बड़वाग्नि, बड़वागी**, वाड़व, **बड़वानल** (दे॰)।

वड़िश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मछली पकड़ने का लोहे का काँटा।

वणिक्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वैश्य, बनियाँ, वानी, व्यापारी, वनिक (दे॰)।

वतन–संज्ञा, पु॰ (अ॰) घर, देश, जन्म, भूमि।

वत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समान, तुल्य।

वत्स–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गाय का बछवा, वच्छ (दे॰) बेटा, पुत्र। यौ॰ **वत्सासुर**–एक दैत्य।

वत्सनाभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक पौधे की विषैली जड़, **बच्छनाग, बछनाग** (ग्रा॰), मीठा विष।

वत्सर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साल, वर्ष।

वत्सरीय–वि॰ (सं॰) वार्षिक, वर्ष-संबंधी।

वत्सल–वि॰ (सं॰) प्रेमी, दयालु, बच्चे के प्रेम से पूर्ण, बच्चे

या छोटे के प्रति दयालु या स्नेहवान, माता-पिता का संतति के प्रति प्रेम-सूचक काव्य में 10वाँ रस (मत भेद)। स्त्री॰ **वत्सला**। संज्ञा, स्त्री॰ **वत्सलता**।

वत्सासुर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक दैत्य।

वदंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कथा। यौ॰ **किम्वदंती**।

वदतो-व्याघात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कही हुई बात के विरुद्ध बात कहने का एक तर्क-दोष (न्याय॰)।

वदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुँ, मुख, अग्रिम भाग, कथन, वचन। ह॰ ना॰।

वदरीनाथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक तीर्थ, एक धाम, **बदरिकाश्रम, बद्रीनाथ** (दे॰)।

वदान्य–वि॰ (सं॰) उदार, बड़ा दानी, अतिदाता, मधुरभाषी। स्त्री॰ **वदान्या**।

वदी, वदि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *अवदिन*) कृष्ण-पक्ष, बदी (दे॰)।

वदुसाना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विदूषण*) दोष देना, कलंक लगाना, भला-बुरा कहना, **वदुसावना**।

वध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मार डालना, हत्या या घात करना, प्राण-हिंसा। वि॰ **वध्य**।

वधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हिंसक, व्याध, घातक, **बधिक** (दे॰), मृत्यु, मौत।

वधजीवी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्याधा, क़साई।

वधत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हथियार।

वधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **बधन** (दे॰), हत्या, हिंसा, घात। वि॰ **वधनीय, वध्य**।

वधना-बधना–क्रि॰ स॰ (दे॰) हिंसा या बात करना, मार डालना, हत्या करना।

वधभूमि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) फाँसी-घर, कसाई-खाना।

वधू–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुलहिन, पत्नी, नई ब्याही स्त्री, भार्या, नव विवाहिता स्त्री, पतोहु, पुत्र-वधू।

वधूटी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नवीन विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पतोहू, पत्नी, भार्या, **बधूटी** (दे॰)।

वधूत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *अवधूत*) योगी, संन्यासी, यती, साधु। स्त्री॰ **वधूतिन**।

वध्य–वि॰ (सं॰) वध या हत्या करने या मार डालने योग्य।

वन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जंगल, बाग, वन (दे॰), वाटिका, जल, पानी, भवन। शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की उपाधि।

वनचर, वनेचर–वि॰ (सं॰) वन में रहने वाला, वनवासी, वन में चलने वाला, **बनैला** (दे॰)।

वनज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, वन (जंगल, पानी) में उत्पन्न।

वनदेव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वन या जंगल का देवता। स्त्री॰ **वनदेवी**।

वनपांशुली–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) व्याधा, बहेलिया।

वनप्रिय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कोयल, कोकिला, एक हिरन।

वनमाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वन-फूलों की माला, श्रीराम या कृष्ण जी की माला।

वनमाली–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्री कृष्ण जी।

वनराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सिंह।

वनरुह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, जलज।

वनलक्ष्मी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) **वनश्री,** वन की शोभा या छटा।

वनवास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जंगल में रहना, गाँव-घर छोड़ वन में रहने की व्यवस्था या विधान।

वनवासी–वि॰ यौ॰ (सं॰ *वनवासिन्*) ग्राम-धाम छोड़ वन में रहने वाला। स्त्री॰ **वनवासिनी**।

वनस्थल–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वन-भूमि। स्त्री॰ **वनस्थली**।

वनस्पति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वृक्षमात्र, पेड़-पौधे, जड़ी-बूटी।

वनस्पतिशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **वनस्पति-विज्ञान,** पेड़ों, पौधों, लताओं आदि के अंग, रूप, रंग, गुण-भेदादि की विवेचना की विद्या, (अं॰) बॉटनी।

वनहास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) काँस।

वनिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्त्री, औरत, नारी, प्रिया, **वनिता** (दे॰)। द वर्णों की एक वृत्ति, **तिलका** (पिं॰) **डिल्ला** (आ॰)।

वनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटा वन, वाटिका।

वनेला-वनैल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *वन+एला, ऐल प्रत्य॰*) वनवासी, वनेचर, वन्य, **बनैला** (दे॰)।

वनोत्सर्ग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सर्व साधारण के लिए कुओं, मंदिर आदि के द्वारा जल-दान; संकल्प करना।

वनौषध, वनौषधि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) जंगली दवाइयाँ, जंगली जड़ी-बूटियाँ।

वन्य–वि॰ (सं॰) वनजात, वन में उत्पन्न होने वाला, वनोद्भव, जंगली, **बनैला**।

वपन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बीज बोना, मुंडन। वि॰ (सं॰) **वपनीय**।

वपनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नापित-शाला, नाइयों का अड्डा।

वपा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मेद, चरबी।

वपु–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वपुस्*) देह, शरीर, गात्र।

बपुरा, बापुरा–वि॰ (दे॰) बेचारा, तुच्छ, नीच थोड़ा।

वपुष्टमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) काशीराज की कन्या और राजा जनमेजय की पत्नी।

वप्ता–वि॰ (सं॰) बीज बोने वाला, नाई।

वप्र–वि॰ पु॰ (सं॰) नगर कोट, प्राचीर, दीवाल, चहार-दीवारी।

वफ़ा–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) प्रतिज्ञा पूरी करना, बात निबाहना, पूर्णता, निर्वाह, सुशीलता, निष्ठा, मुरौवत। वि॰ **वफ़ादार**।

वफ़ात–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मौत, मृत्यु, मरण।

वफ़ादार–वि॰ (अ॰ *वफ़ा+दार* फ़ा॰) बात या कर्तव्य का पालने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **वफ़ादारी**।

वबा–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) संक्रामक या फैलने वाला मारक रोग, महामारी। जैसे–प्लेग, हैजा।

वबाल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) भार, बोझा, झंझट, झमेला, आपत्ति, कठिनाई, जंजाल।

वभ्रु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुवंशी विशेष।

वभ्रुवाहन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अर्जुन का पुत्र।

वमन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कै या उलटी करना, कै किया हुआ पदार्थ।

वमनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बनौका, छोंक।

वमि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वमन रोग।

वयं, वयम्*–सर्व॰ (सं॰) हम।

वयःक्रम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अवस्था, उम्र।

वयःसंधि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) लड़कपन या वाल्यावस्था और जवानी या युवावस्था के बीच की अवस्था।

वय–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *वयस्*) उम्र, अवस्था, **वैस, बयस** (दे॰)।

वयस्क–वि॰ (सं॰) अवस्था वाला। (यौ॰ *में*) पूरी अवस्था को प्राप्त, सयाना, बालिग। स्त्री॰ **वयस्का**। यौ॰ **समवयस्क**।

वयस्थ–वि॰ (सं॰) सयाना, बालिग़।

वयस्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समान अवस्था वाला, सखा, मित्र, संगी, साथ, **समवयस्क**।

वयस्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सखी, सहेली।

वयोवृद्ध–वि॰ यौ॰ (सं॰) बड़ी अवस्था का, वृद्ध, बड़ा-बूढ़ा, आयु में बड़ा। संज्ञा, स्त्री॰ **वयोवृद्धता**।

वरं–अव्य॰ (सं॰) उत्तम, अच्छा, श्रेष्ठ।

वरंच–अव्य॰ (सं॰) बल्कि, परंतु, लेकिन, ऐसा नहीं ऐसा।

वर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह मनोरथ जो किसी देवता या बड़े से माँगा जाय, किसी बड़े या देवतादि से प्राप्त सिद्धि या अभीष्ट फल, पति, स्वामी, दूल्हा, बर (दे॰)। वि॰ श्रेष्ठ उत्तम। जैसे–मुनिवर।

वरक़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पत्र, पुस्तकादि का पन्ना, पन्ना, पतला पत्तर (सोना-चाँदी)।

वरज़िस–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) व्यायाम, कसरत, वर्जिश।

वरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्कार, अर्चना, किसी योग्य पुरुष को किसी कार्य के करने के हेतु चुनना या नियुक्त करना, स्वीकार या पूजा करना, पूजा, यज्ञादि शुभ कार्यों में होतादि के लिए विद्वानों को नियुक्त कर समाहृत करना, तथा कुछ देना, वरण किए होतादि व्यक्तियों को दिया धन-दानादि, कन्या का वर को स्वीकार करना।

वरणा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक नदी, **बरना** (दे॰)।

वरणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *वरण*) वरण किया हुआ, निमंत्रित, नियुक्त, नियोजित।

वरद–वि॰ (सं॰) वरदान देने वाला देवतादि (स्त्री॰ **वरदा**)।

वरदराज-वरदराट्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सिद्धांत-कौमुदी के रचयिता एक प्रसिद्ध वैयाकरणी विद्वान वरदराज।

वरदाता–वि॰ यौ॰ (सं॰ *वरदातृ*) वरदान देने वाला।

वरदान–वि॰ यौ॰ (सं॰) किसी देवता या गुरुजनों का अपनी प्रसन्नता से किसी को कोई इष्ट फल या सिद्धि देना, किसी बड़े की प्रसन्नता से प्राप्त कोई सुफल का लाभ।

वरदानी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वरदान देने वाला।

वरदी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) किसी सरकारी विभाग के अधिकारियों, कार्य-कर्ताओं या नौकरों का पहनावा विशेष; (अं॰) ड्रैस, यूनिफार्म।

वरन्–अव्य. दे. (सं. *वरम्*) किंतु, ऐसा नहीं, बल्कि।

वरना*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वरण*) ऊँट। अव्य. (अ.)। **वगरना**, नहीं तो, यदि ऐसा न होगा तो।

वरम–संज्ञा, पु. (फ़ा.) सूजन, वर्म।

वरयात्रा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बरात, बारात, वर का बाजे-गाजे से कन्या के यहाँ जाना।

वररहना–वा. (दे.) विजयी या जयवंत होना।

वररुचि–संज्ञा, पु. (सं.) एक विख्यात विद्वान वैयाकरणी और कवि (विक्रम-सभा के 9 रत्नों में से एक।)

वरल–संज्ञा, पु. (दे.) विरनी, बर्रै, हड्डा।

वरवर्णिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रूपवती और गुणवती उत्तमा स्त्री।

वरह–संज्ञा, पु. (दे.) पत्ता, पत्ती, पत्र।

वरही-बरही*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वर्हिन्*) मोर, मयूर, **बर्ही**।

वरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वकुची, एक औषधि विशेष।

वराक–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बेचारा, दुखिया।

वराट, वराटक–संज्ञा, पु. (सं.) बड़ी कौड़ी, दीर्घ कपर्द्दिका। स्त्री. **वराटिका**।

वराटिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कौड़ी, कपर्द्दिका।

वरानना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सुंदर स्त्री।

वराह–संज्ञा, पु. (सं.) **बाराह** (दे.)। शूकर, विष्णु का शूकर अवतार, विष्णु, 18 द्वीपों में से एक द्वीप, एक विद्वान।

वराहकांता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक कंद वाराही (औप.) **लजालू** (दे.), लज्जावंती लज्जालु, **बाराहीकंद**।

वराह-मिहिर–संज्ञा, पु. (सं.) वृहद् बाराही संहितादि के कर्ता एक ज्योतिषाचार्य जो विक्रमादित्य की सभा के 9 रत्नों में थे।

वरिष्ठ–वि. (सं.) पूजनीय, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य।

वरु, बरु–अव्य. (दे.), जो यदि, भले ही, पक्षांतर में, **बरुक** (दे.)।

वरुण–संज्ञा, पु. (सं.) देव-रक्षक, दस्युनाशक, जल के अधिपति एक वैदिक देवता, जिनका अस्त्र पाश है, जलेश, पानी के स्वामी, **बरुन** (दे.)। वरुना का पेड़, सूर्य, पानी, नेपचून ग्रह (अं.)।

वरुण-पाश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) फाँसी, फंदा, वरुण का अस्त्र, वरुणास्त्र।

वरुणानी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वरुण की स्त्री।

वरुणालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वरुण का घर, समुद्र, सिंधु, सागर, **बरुनालय** (दे.)।

वरुत्थ–संज्ञा, पु. (सं.) समूह, यूथ, दल।

वरुत्थी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सेना, चमू, फौज।

वरूथ–संज्ञा, पु. (सं.) समूह, यूथ, दल, सेना।

वरूथिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सेना, चमू, फौज।

वरे–अव्य. (दे.) समीप, निकट, हेतु, वास्ते, लिए।

वरेची–संज्ञा, स्त्री. (दे.) अंकोलवृक्ष।

वरेची–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक गहने का नाम, वर्पी, **बरेखी** (दे.)।

वरोरू–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) श्रेष्ठ जंघा वाली स्त्री।

वरोह–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **बरोह** (दे.) बरगद की जटा, सोर।

वरोहक–संज्ञा, पु. (दे.) असगंध औषधि।

वर्ग–एक जाति की अनेक वस्तुओं का समूह, कोटि, श्रेणी, जाति, समूह, एक सामान्य धर्म वाली वस्तुओं का समूह, एक ही स्थान से उच्चरित या समान स्थानीय स्पर्श व्यंजन-समूह, अध्याय, प्रकरण, परिच्छेद, किसी अंक या राशि का उसी से घात या गुणनफल (गणि.), ऐसा चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ समान और कोण समकोण हो (रेखा.)।

वर्गक्षेत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ तुल्य और कोण समकोण हों (रेखा.)।

वर्गफल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह गुणनफल जो किसी संख्या या राशि को उसी संख्या या राशि से गुणा करने से मिले।

वर्गमूल–संज्ञा, पु. (सं.) किसी वर्ग के संख्या की ऐसी संख्या जिसे यदि उससे गुणा करें तो फल वही वर्गांक हो। जैसे–36 का वर्ग मूल 6 है। *अल्पा. रूप*–**मूल**।

वर्गलाना, बरगलाना–(दे.)–क्रि. स. प्रे. (फ़ा. *बरगलानीदन*) **बरगलाना** (दे.), किसी को बहकाना, फुसलाना, उभारना, उकसाना, उत्तेजित करना।

वर्गीय–वि. (सं.) वर्ग या समूह का।

वर्जन–संज्ञा, पु. (सं.) त्याग, छोड़ना, मनाही, रोक। वि. **वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित**।

वर्जित–वि. (सं.) त्यागा या छोड़ा हुआ, रोका हुआ, व्यक्त,

निषिद्ध, अग्राह्य।

वर्ज्य–वि॰ (सं॰) त्याज्य, छोड़ने के योग्य, जो मना किया गया हो।

वर्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लाल-पीले आदि रंग, जन-समूह के 4 विभाग या जाति :–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र (प्राचीन आर्य), भेद, प्रकार, भाँ, रूप, अक्षर, अकारादि के चिह्न या संकेत, **बर्न** वरन (दे॰)।

वर्णक–वि॰ (सं॰) प्रशंसक, स्तुति कर्त्ता।

वर्णन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विस्तार से कहना, कथन, ज्ञापन, चित्रण, बयान, गुण कीर्तन रेंगना, प्रशंसा, **बरनन, बर्नन** (दे॰)। वि॰ **वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित**।

वर्णनष्ट–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात हो कि लघु-गुरु के विचार से प्रस्तारानुसार अमुक संख्या के वर्णों के छंदों के अमुक संख्यक भेद का रूप कैसा होगा।

वर्णना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वर्णन, स्तवन, स्तुति। क्रि॰ स॰ (दे॰) बखान करना, **बर्नना** (दे॰), स्तवन करना, बखानना, कहना।

वर्णप्रस्तार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात होता है कि इतने वर्णों के छंदों के इतने भेद हो सकते हैं और उनके रूप इस तरह होंगे।

वर्णमाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) किसी भाषा के अक्षरों की क्रमबद्ध लिखित सूची।

वर्णविचार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वर्ण-शिक्षा (प्राचीन वेदांग) या व्याकरण का वह भाग जिसमें अक्षरों के रूप, उच्चारण और संधि आदि का वर्णन हो (आयु॰)।

वर्णवृत्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह छंद जिसके चरणों में लघु-गुरु क्रम तथा वर्ण-संख्या रामान हो।

वर्णसंकर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दो भिन्न-भिन्न जातियों से उत्पन्न व्यक्ति या जाति, दोगला, व्यभिचार-जनित पुरुष, **बरन-संकर** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **वर्णसंकरता**।

वर्णसूची–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पिंगल की एक रीति या क्रिया जिससे ज्ञात होता है कि वर्णिक छंद-संख्या की शुद्धता और उनके भेदों में आदि-अंत के लघु-गुरु जाने जाते हैं।

वर्णात्मक–वि॰ (सं॰) अक्षर-संबंधी, अक्षरात्मक, जाति या रंग-संबंधी।

वर्णाश्रम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्राह्मण आदि चार वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रम, **वनरास्रम** (दे॰)।

वर्णिकवृत्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह छंद जिनमें अक्षरों की संख्या का नियम हो, वर्णवृत्त।

वर्णिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रंग भरने की लेखनी; कूची।

वर्णित–वि॰ (सं॰) प्रशंसित, कथित, जिस का वर्णन हो चुका हो, कहा हुआ।

वर्णय–वि॰ (सं॰) वर्णन के योग्य, वर्णन का विषय, उपमेय, प्रस्तुत। संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुमकुम, वन तुलसी।

वर्तन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्यवहार, बरताव, रोजी, वृत्ति, व्यवसाय, घुमाना, फेरना, हेरफेर, परिवर्तन, रखना, स्थापन, सिल वट्टे से पीसना, पात्र, बरतन (दे॰)। वि॰ **वर्तनीय, वर्तित**।

वर्तमान–वि॰ (सं॰) उपस्थित, विद्यमान, मौजूद, चलता हुआ, हाल का, आधुनिक प्रस्तुत/संज्ञा, पु॰ (सं॰) क्रिया के तीन कालों में से एक काल जिससे प्रकट हो कि क्रिया का आरंभ हो गया हो वह चली जाती है और समाप्त नहीं हुई, समाचार, वृत्तांत, चलता व्यवहार।

वर्त्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बटी, बत्ती, गोली, अंजन लगाने की सलाई, **वर्ती** (दे॰)।

वर्त्तिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बत्ती, सलाई, शलाका।

वर्त्तित–वि॰ (सं॰) जारी किया या चलाया हुआ, संपादित।

वर्त्ती–वि॰ (सं॰ *वर्त्तिन्*) बरतने वाला, वर्त्तनशील, स्थित रहने वाला (दे॰), वर्ती, बत्ती, व्रत रखने वाला, उपास, व्रतोपवास। स्त्री॰ **वर्त्तिनी**।

वर्त्तुल–वि॰ (सं॰) गोला, वृत्ताकार।

वर्त्तुलाकार–वि॰ यौ॰ (सं॰) गोलाकार, वृत्ताकार।

वर्त्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राह, रास्ता, मार्ग, पंथ, बाट, पथ, बारी, किनारा, तट, **औंठ** (प्रान्ती॰), आँख की पलक, आश्रय, आधार।

वर्दी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *वरदी*) सिपाहियों और उनके अफसरों का पहनावा।

वर्द्धक–वि॰ (सं॰) वृद्धि-कारक, बढ़ाने या अधिक करने वाला, पूरक।

वर्द्धन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बढ़ाना, अधिक करना, उन्नति, बढ़ती, वृद्धि, तराशना, काटना। वि॰ **वर्द्धित, वर्धनीय**।

वर्द्धमान–वि॰ (सं॰) जो बढ़ रहा हो, बढ़ने वाला, वर्द्धनशील। संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक वर्णिक छंद जिसके चरणों में भिन्न अक्षर-संख्या क्रम से 14, 13, 18, 15 होती हैं। जैनियों के 24वें महावीर तीर्थंकर या जिन।

वर्द्धित–वि॰ (सं॰) भिन्न, भिन्न, बढ़ा हुआ, पूर्ण, कटा हुआ।

वर्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वर्मन्*) कवच, बख्तर, घर, रक्षा-स्थान।

वर्म्मा, वर्मा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वर्मान्*) क्षत्रियों, कायस्थों आदि की एक उपाधि।

वर्य्य–वि॰ (सं॰) वर, श्रेष्ठ। जैसे–**विद्वद्वर्य**।

वर्वर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक देश, वर्वर देश के घुँघराले बालों वाले असभ्य निवासी। अधम, नीच, पामर।

वर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्षा, पानी, बरसना, जल-वर्षण, वृष्टि, 12 मासों वाला एक काल-मान, साल, संवत्सर, वर्ष के चार भेद हैं, सौर, चाँद्र, सावन, और नाक्षत्र, सात द्वीपों का एक विभाग (पुरा॰) किसी द्वीप का प्रधान भाग, बादल।

वर्षगाँठ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वर्ष*+ (दे॰)। (*गाँठ*) जन्म-दिन, साल गिरह, **बरस-गाँठ**।

वर्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बरसना, वृष्टि। वि॰ **वर्षित**।

वर्षफल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) फलित ज्योतिष में एक कुण्डली जिससे मनुष्य के साल भर का भला-बुरा ग्रह-फल ज्ञात हो।

वर्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आसाढ़ से क्वार तक की एक ऋतु जब पानी बरसता है, **चौमासा** (दे॰), वृष्टि, बरसने का भाव या क्रिया, **बरषा, बरसा** (दे॰)। **मु॰ (किसी वस्तु की) वर्षा होना (करना)**–अधिकता के साथ ऊपर से गिरना (गिराना), बहुतायत से मिलना (देना)।

वर्षाकाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पावस का समय, बरसात, प्रावृट्।

वर्षाशन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक वर्ष का भोजन या जीविका।

वर्ही–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वर्हिन्*) मोर, मयूर।

वल–संज्ञा, पु॰ (सं॰ एक दैत्य जिसे वृहस्पति ने मारा था, मेघ, सेना, चमू।

वलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नक्षत्रादि का सायमांश से हट कर चलना, विचलन (ज्यो॰)।

वलभी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) काठियावाड़ की एक पुरानी नगरी, सदर फाटक, तोरण छत, अटारी।

वलय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कंकण, चूड़ी, वेष्ठन, मंडल, परिधि।

वलवला–संज्ञा, पु॰ (अ॰) उमंग, जोश, आवेश।

वलाहक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बादल, मेघ, पहाड़ पर्वत, एक दैत्य।

वलि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रेखा, पेट की रेखा या पेट की सिकुड़न, बल, देवता की भेंट, वामन रूप विष्णु द्वारा छला गया एक दैत्य, पंक्ति, श्रेणी, सिकुड़ना, शिकन, झुर्री।

वलित–वि॰ (सं॰) बल खाया हुआ, मोड़ा या झुकाया हुआ, लिपटा या घेरा हुआ, झुरींदार, सहित, युक्त, लिपटा, ढका, लगा-झुका हुआ।

वली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सिकुड़न, शिकन, झुर्री, श्रेणी, पंक्ति, लकीन, रेखा। संज्ञा, पु॰ (अ॰) सिद्ध, साधु, फ़कीर, स्वामी, मालिक, हाकिम, शासक, पहुँचा फ़कीर, संरक्षक।

वल्कल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) त्वक्, पेड़ की छाल, **बकला**, तपस्वियों के छाल के कपड़े, **बलकल** (दे॰9।

वल्गु–वि॰ (सं॰) सुदंर, मनोहर।

वल्द–संज्ञा, पु॰ (अ॰) औरस पुत्र, बेटा।

वल्दियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) पिता के नाम का परिचय।

वल्मीक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दीमक का घर, मिट्टी का ढेर, बाँबी, **बिमौठ** (प्रान्ती॰)। वाल्मीकि मुनि।

वल्लभ–वि॰ (सं॰) प्यारा, प्रियतम। संज्ञा, पु॰ प्रियमित्र, अध्यक्ष, स्वामी, नायक, पति, मालिक, वैष्णवमत की कृष्णोपासना के प्रवर्तक, एक प्रसिद्ध आचार्य, पुष्टि-मार्ग के प्रवर्त्तक।

वल्लभा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रियतमा, प्यारी स्त्री, प्रिया।

वल्लभाचार्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वैष्णव मत या कृष्ण-भक्ति और पुष्टि-मार्ग के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लभी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *बलभी*) काठियावाड़ का एक पुराना नगर, एक वैष्णव संप्रदाय, **वल्लभीय**।

वल्लरि-वल्लरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वल्ली, लता, मंजरी, व्रतती।

वल्ली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लता, बेल।

वल्वल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इल्वल नामक एक दैत्य जो बलदेव जी द्वारा मारा गया था (पुरा॰)।

वश–संज्ञा, पु. (सं.) इच्छा, चाह, अधिकार, क़ाबू, इख़्तियार, शक्ति, **बस** (दे.)। **मु. वश का**–जिस पर अधिकार हो, काबू का, वही न दे तो किसके वश का है, म. इ.। शक्ति की पहुँच, सामर्थ्य। **मु. वश चलना**–सामर्थ्य या शक्ति काम करना, काबू चलना। प्रभुत्व, क़ब्ज़ा, दख़ल।

वशवर्ती–वि. (सं. *वशवर्त्तिन्*) आधीन, ताबे। स्त्री. **वशवर्तिनी**।

वशिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ताबेदारी, अधीनता, मोहने की क्रिया, **वशता**।

वशित्व–संज्ञा, पु. (सं.) वशता, अणिमादि आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि (योग.)।

वशिष्ट–संज्ञा, पु. (सं.) रघुवंश और रामचंद्र जी के पुरोहित या गुरु।

वशी–वि. (सं. *वशिन्*) अपने को वश में रखने वाला, इन्द्रयजित, आधीन। स्त्री. **वशिनी**।

वशीकरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मंत्रादि से किसी को आधीन या वश में करना, वश में करने की क्रिया, **वसीकरन** (दे.)। वश में करने (मोहने) का एक प्रयोग (तंत्र)। वि. **वशीकृत, वशीकरणीय**।

वशीभूत–वि. (सं.) आधीन, ताबे, पर-इच्छानुचारी, मुग्ध, मोहित।

वश्य–वि. (सं.) वश में आने वाला।

वश्यता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आधीनता, दासता, परवशता, **परबसाता** (दे.)।

वषट्–अव्य (सं.) इसे पढ़ कर देवताओं को हवि दी जाती है।

वसंत–संज्ञा, पु. (सं.) साल की छः ऋतुओं में से चैत्र वैसाख के मासों की मुख्य और प्रथम ऋतु, बहार का मौसिम, छः रागों में से दूसरा राग (संगी.), शीतला रोग, चेचक। वि. **वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती**।

वसंततिलक, वसंततिलका–संज्ञा, स्त्री. पु. (सं.) त, भ, ज, ज, (गण) और दो गुरु वर्णान्त 14 वर्णो का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

बसंततिलका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बसंत तिलक छंद।

वसंतदूत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आम की बौर या वृक्ष, चैत्र मास, कोयल।

वसंतदूती–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पिक, कोकिला, माधवीलता।

वसंतपंचमी–संज्ञा, पु. यौ. माघ शुक्र पंचमी (त्योहार)।

वसंती–संज्ञा, पु. (सं.) वसंत-संबंधी, वसंत का, गहरा पीला रंग, पीला वस्त्र।

मु. वसंती रंग चढ़ना–प्रफुल्लता या रसिकता आना।

वसंतोत्सव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक प्राचीन उत्सव जो वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता या, **मदनोत्सव**, होली का उत्सव, होलिकोत्सव।

वसमत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) फैलाव, विस्तार, समाई, चौड़ाई, शक्ति अँटने का स्थान, सामर्थ्य, बल।

वसति, वसती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आबादी, गाँव, घर, रात, बस्ती (दे.); बसैय्यत।

वसन–संज्ञा, पु. (सं.) कपड़ा, वस्त्र, आवरण, लिवास।

वसमा–संज्ञा, पु. (अ.) उबटन, खिजाब, एक तरह का छपा कपड़ा।

वसवास–संज्ञा, पु. (अ.) मोह या प्रलोभन, संदेह, संशय, भ्रम। वि. **वसवासी**।

वसह*–संज्ञा, पु. (सं. *वृषभ*) बैल।

वसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चरबी. मेद, **बसा** (दे.)।

वसिष्ठ–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्राचीन वैदिक ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र थे, वेद, रामायण, महाभारत और पुराणों में इनका उल्लेख है, सप्तर्षि-मंडल का एक तारा, सप्तर्षियों में से एक ऋषि, रघुवंश तथा रामचंद्र जी के गुरु।

वसिष्ठपुराण–संज्ञा, पु. यौ. (सं) एक उपपुराण, लिंगपुराण (एकमत)।

वसीक़ा–संज्ञा, पु. (अ.) वह धन जो सरकार के खजाने में इसलिए जमा किया जावे कि उसका ब्याज उसके संबंधियों को मिलता रहे, ऐसे धन का ब्याज, वृत्ति।

वसीयत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) कोई मनुष्य अपने मरने के समय अपनी धन-संपत्ति के प्रबंध और विभाग आदि के विषय में जो व्यवस्था लिख जाता है।

वसीयतनामा–संज्ञा, पु. यौ. (अ. *वसीयत+नामा* फ़ा.) वह व्यवस्था-लेख या प्रबंध-पत्र जो कोई पुरुष अपने मरते समय अपनी सारी संपत्ति के विभाग या प्रबंधादि के विषय में लिख जाता है।

वसीला–संज्ञा, पु. (अ.) आश्रय, सहारा, सहायता, द्वारा, जरिया, संबंध।

वसुंधरा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) अवनि, भूमि, पृथ्वी, वसुधा, वसुमती।

वसु–संज्ञा, पु. (सं.) आठ देवताओं का एक गण या समूह, आठ की संख्या, धन, रत्न, किरण, अग्नि, सोना, जल, कुबेर, सूर्य, शिव, विष्णु, साधु-व्यक्ति, **सज्जन, तालाब,** सर, छप्पय का 69 वाँ भेद (पिं.)।

वसुदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूमि, पृथ्वी, माली नामक राक्षस की पत्नी, जिसके निल, अनल, हर और संपाति 4 पुत्र थे।

वसुदेव–संज्ञा, पु. (सं.) यदुवंशियों के शूर कुल के राजा और श्रीकृष्ण जी के पिता और कंस के बहनोई।

वसुधा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूमि, पृथ्वी।

वसुधारा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जैनों की एक देवी, अलकापुरी, कुबेर-नगरी।

वसुमती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूमि, पृथ्वी, एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं (पिं.)।

वसुहंस–संज्ञा, पु. (सं.) वसुदेव के पुत्र एक यादव।

वसूल–वि. (अ.) प्राप्त, मिला हुआ, लब्ध, जो चुका या ले लिया गया हो।

वसूली–संज्ञा, स्त्री. (अ. *वसूल*) दूसरों से वसूल या प्राप्त करने का कार्य, प्राप्ति, लब्धि। संज्ञा, स्त्री. **वसूलयावी**।

वस्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मूत्राशय, पेड़ू, पिचकारी।

वस्तिकर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पिचकारी देना या लगाना (लिंग या गुदा में)।

वस्तु–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पदार्थ, सत्ता या अस्तित्ववान, गोचर-पदार्थ, चीज़, नाटक का अख्यान या कथन, कथा-वस्तु, सत्य। वि. **वास्तव, वास्तविक**।

वस्तुतः–अव्य. (सं.) सत्यता, सचमुच, यथार्थतः।

वस्तु निर्देश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मंगलाचरण का एक भेद, जिसमें कथा का कुछ सूक्ष्म आभास रहता है।

वस्तुवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दृश्य संसार जैसा दिखाई देता है वैसे ही रूप में उसकी सत्ता ठीक है यह दार्शनिक विचार (न्या. वैशे.)।

वस्त्र–संज्ञा, पु. (सं.) कपड़ा, **वस्तर** (दे.)।

वस्त्रभवन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कपड़े का घर, वस्त्रगृह, डेरा, खेमा, तंबू, रावटी।

वस्त्रालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वस्त्र का घर, कपड़े का भंडार या कारख़ाना।

वस्फ़–संज्ञा, पु. (अ.) गुण, हुनर, स्तुति, प्रशंसा, विशेषता, अधिकता, सिफत।

वस्ल–संज्ञा, पु. (अ.) दो वस्तुओं का मेल, मिलाप, मिलन, संयोग, प्रसंग।

वह–सर्व. दे. (सं. सः) एक वचन, अन्य पुरुष का सूचक एक संकेत शब्द (व्या.), दूरवर्त्ती या परोक्ष सूचक एक वचन निर्देश-कारक या संकेत-शब्द (व्या.), कर्तृकारक में प्रथम पुरुष सर्वनाम। वि. **वाहक** (समास में)।

वहन–संज्ञा, पु. (सं.) घसीट या अपने ऊपर लाद कर किसी वस्तु को कहीं से कहीं ले जाना। वि. **वहनीय, वहमान, वहित**। रघु.। उठाना, ऊपर लेना, बेड़ा।

वहम–संज्ञा, पु. (अ.) झूठी धारणा, भ्रम, व्यर्थ की शंका, मिथ्याधारणा, झूठा संदेह।

वहमी–वि. (अ. *वहम*) वहम करने वाला, जो व्यर्थ संदेह में पढ़ा हो।

वहशत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) असभ्यता, जंगलीपन, उजड्डता, अधीरता, चंचलता।

वहशी–वि. (अ.) जंगली, वनैला, असभ्य, जो पालतू न हो।

वहाँ–अव्य. (हि. *वह*), **तहाँ** (ब्र. अव.) उस ठौर, उस जगह, **उहाँ** (दे.)।

वहावी–संज्ञा, पु. (अ.) मुसलमानों का एक संप्रदाय जिसे अब्दुल वहाब नज़्दी ने चलाया था, वहाव मतानुयायी।

वहिः–अव्य (सं.) बाहर, जो भीतर न हो। भा. द.। यौ. **वहिरागत**–बाहर आया हुआ।

वहित्र–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वोहित्य*) जहाज पोत।

वहिरंग–संज्ञा, पु. (सं.) किसी पदार्थ का बाहिरी भाग, बाहिरी वस्तु, बाहिरी मनुष्य। (विलो. **अंतरंग**)। वि. बाहिरी, ऊपरी, ऊपर का।

वहिर्गत–वि. यौ. (सं.) जो बाहर गया हो, निकला हुआ, बाहर का, **वहिरागत**। संज्ञा, पु. (सं.) **वहिर्गमन**।

वहिर्द्वार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बाहरी फाटक, सदर, फाटक, तोरण, सिंहद्वार।

वहिर्भव–वि. (सं.) वहिर्गत।

वहिर्मुख–वि. (सं.) विमुख, पराङ्मुख।

वहिष्कृत–वि॰ (सं॰) बाहर निकाला हुआ, व्यक्त, त्यागा हुआ।

वहिष्करण, वहिष्कार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परित्याग, वाहर करना। वि॰ **वहिष्करणीय**।

वहीं–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *वहाँ+हीं*) उसी स्थान पर, उसी जगह, **तहीं, उहैं** (ग्रा॰)।

वही–सर्व॰ दे॰ (हि॰ *वह+ही*) अन्य पुरुष या दूरवर्ती, निश्चय-वाचक संकेत-शब्द, जिसके संबंध में कुछ कहा गया हो उस निर्दिष्ट पूर्वकथित व्यक्ति या वस्तु, की मुख्यता-सूचक शब्द, निर्दिष्ट या उक्त व्यक्ति या वस्तु।

वह्नि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आग, अग्नि, श्रीकृष्ण जी के एक पुत्र, तीन की संख्या।

वाँछनीय–वि॰ (सं॰) चाहने योग्य, जिसकी चाह हो, इष्ट, अभिलाषित।

वाँछा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अभिलाषा, चाह, इच्छा, कामना। वि॰ **वाँछित, वाँछनीय**।

वांछित–वि॰ (सं॰) आकांक्षित, चाहा हुआ, इच्छित, इष्ट, अभीष्ट।

वा–अव्य॰ (सं॰) संदेह या विकल्प-वाचक शब्द, अथवा, व, या, **बा** (दे॰)। *†सर्व॰ दे॰ (हि॰ *वह*) कारक-विभक्ति लगने से पूर्व प्रथम या अन्य पुरुष का एक वचन (ब्र॰)। जैसे–वानें, वाकों, वासों। पूर्ववर्ती निश्चय-सूचक विशेषण। जैसे–वा दिन की।

वाक्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वाणी, सरस्वती, जीभ, गिरा, शारदा, रसना, **वाक्य** (दे॰)।

वाकई–वि॰ (अ॰) वस्तुतः, सच, वास्तव। अव्य॰ (अ॰) दर असल, सचमुच, वास्तव या यथार्थ में।

वाकफ़ियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) ज्ञान, जानकारी, जान-पहिचान, परिचय।

वाक़या–संज्ञा, पु॰ (अ॰) घटना, समाचार, वृतांत, विवरण।

वाका–वि॰ (अ॰) घटने या होने वाला, खड़ा, स्थित। जैसे–वाकै होना।

वाक़िफ़–वि॰ (अ॰) ज्ञाता, जानकार, अनुभवी। संज्ञा, स्त्री॰ **वाकूफियत**।

वाक्छल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) तीन प्रकार के छलों में से एक।

वाक्पटु–वि॰ यौ॰ (सं॰) बातें करने में चतुर। संज्ञा, स्त्री॰ **वाक्-पटुता**।

वाक्पति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वृहस्पति, गुरु, जीव, विष्णु।

वाक़्फ़ियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) जानकारी।

वाक्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह पद या शब्द-समूह जिससे किसी श्रोता को वक्ता का अभिप्राय सूचित हो और कोई आकांक्षा शेष न रहे, जुमला, बाक (दे॰)।

वाक्यार्थ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वाक्य का अर्थ, शब्दबोध।

वाक्-सिद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह सिद्धि जिससे वक्ता जो कहे वही ठीक या सच उतरे। वि॰ **वाक्-सिद्ध**।

वाकची–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) औषधि विशेष।

वागीश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वृहस्पति, वाग्मी, कवि, पंडित, ब्रह्मा। वि॰ वागमी, वक्ता, अच्छा बोलने वाला।

वागीश्वरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सरस्वती, **वागेसुरी** (दे॰)।

वागुर-वागुरा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जाल, फंदा।

वागुरि, वागुरी–संज्ञा, स्त्री॰ (स॰ *वागुर*) छोटा जाल या फंदा।

वाग्जाल–संज्ञा, पु॰ यौ (सं॰) बातों का जाल या लपेट, कथनाडवर या बातों की भरमार।

वाग्दंड–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वाणी संवंधी सजा, भला-बुरा, कहने का दंड, डॉट-फटकार, डॉट-डपट विवाद, वाकझक।

वाग्दत्त–वि॰ यौ॰ (सं॰) जिसे दूसरों को देने की कह चुके हों, वाणी से दिया, लक्ष्मी या सरस्वती का दिया हुआ।

वाग्दत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह कन्या जिसका ब्याह किसी के साथ ठहर चुका हो।

वाग्दान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वाणी-द्वारा देना, पिता का कन्या का ब्याह किसी के साथ पक्का कर देना, वादा करना, वचन देना।

वाग्देव-वाग्देवता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वाणी का देव या देवता, सरस्वती। स्त्री॰ **वाग्देवी**।

वाग्देवी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सरस्वती, वाणी।

वाग्भट्ट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वैद्यक-शास्त्र के एक विख्यात आचार्य जिन्होंने, वाग्भट या अष्टांग हृदय संहिता रचा, भाव-प्रकाश, वैद्यक-निघंटु और शास्त्र दर्पण आदि ग्रंथों के कर्त्ता।

वाग्मी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वाक्ग्मिन् प्रत्य.*) वाचाल, अच्छा, वक्ता, पंडित, वृहस्पति।

वाग्विलास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आपस में सानंद वार्त्तालाप करना।

वाङ्मय–वि॰ (सं॰) वचन संबंधी, वचन द्वारा किया गया। संज्ञा, पु॰ (सं॰) गद्य-पद्यात्मक ग्रंथ जो पढ़ने-पढ़ाने का विषय हो, साहित्य।

वाङ्-मुख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक गद्य काव्य, उपन्यास।

वाच्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वाणी, वाचा, गिरा।

वाच–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वाच्*) वाणी, गिरा, वाचा।

वाचक–वि॰ (सं॰) सूचक, बताने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाम, संज्ञा, संकेत, चिह्न। वि॰ (सं॰) बाँचने वाला।

वाचक्नवी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गार्गी, वाच कूटी।

वाचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाँचना, पढ़ना, पठन, प्रतिपादन, कहना, कथन।

वाचनालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समाचार-पत्रों या पुस्तकों के पढ़ने का स्थान।

वाचनिक–वि॰ (सं॰) वचन-संबंधी, कथित।

वाचसांपति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वृहस्पति, महाविद्वान।

वाचस्पति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वृहस्पति, अतिविद्वान।

वाचा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वाणी, वाक्य, शब्द, वचन।

वाचाबंध*–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वाचाबद्ध*) प्रतिज्ञा या प्रण से वद्ध, संकल्प से बँधा हुआ।

वाचाल–वि॰ (सं॰) वकवादी, तेज़ बोलने वाला, वाकपटु। संज्ञा, स्त्री॰ **वाचालता**।

वाचालता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अति बोलना, बोलना, वाक् कौशल।

वाचिक–वि॰ (सं॰) वाणी से किया हुआ, वक्ता-संबंधी। संज्ञा, पु॰ केवल वाक्य विन्यास से ही होने वाला (सं॰) अभिनय, नाटक में वह स्थान जहाँ केवल परस्पर वार्त्तालाप ही होता है।

वाची–वि॰ (सं॰ *वाचिन्*) सूचक, प्रगट करने वाला।

वाच्य–वि॰ (सं॰) कहने-योग्य, जिसका बोध शब्द-संकेत से हो, अभिधेय। संज्ञा, पु॰ वाच्यार्थ, अभिधेयार्थ (काव्य॰), क्रिया का वह रूप जिससे कर्त्ता, कम या भाव की प्रधानता प्रगट हो (व्या॰)।

वाच्य-परिवर्तन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वाक्य की क्रिया का रूपांतर जिससे वाक्य बदल जाए। (व्या॰)।

वाच्यार्थ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मूल शब्दार्थ, वह अर्थ या भाव जो वाक्य-गत शब्दों के नियत अर्थों के द्वारा ज्ञात हो जाय।

वाच्यावाच्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बुरी-भली या अच्छी-बुरी अथवा कहने या न कहने योग्य बात।

वाज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) शिक्षा, उपदेश, धार्मिक उपदेश, कथा।

वाजपेई*(दे॰)ए **वाजपेयी**–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वाजपेयी*) कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यंत कुलीन या कुलवान, वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो।

वाजपेय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 7 श्रौत यज्ञों में से 5 वाँ यज्ञ।

वाजपेयी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वाजपेय यज्ञ करने वाला, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यंत कुलीन या कुलवान।

वाजसनेय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) यजुर्वेद की एक शाखा, याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजिब-वाबजी–वि॰ (अ॰) उचित, उपयुक्त, योग्य, ठीक।

वाजी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वाजिन्*) **वाजि,** घोड़ा, फटे हुए दूध का पानी।

वाजीकरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह आयुर्वेदिक प्रयोग या औषधि जिसके सेवन से मनुष्य घोड़े के समान बलिष्ठ और वीर्य्यवान हो जाता है, बल-वीर्य-वर्द्धक।

वाट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **वाट** (दे॰), रास्ता, राह, मार्ग, पथ। **मु॰ वाट परना**–हानि होना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) ओट, आड़, बाट।

वाटिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) उद्यान, फुलवाड़ी, बग़ीचा, आराम, **वाटिका** (दे॰)।

वाड़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) स्थान, वाढ़, सान।

वाड़व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र की आग, **बड़वागी** (दे॰)।

वाड़वाग्नि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) समुद्र की आग, बड़वानल।

वाड़वानल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र की आग, **बड़वानल** (दे॰)।

वाड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) वाटिका, फुलवाड़ी।

वाण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) धनुष की डोर से खींचकर फेंका जाने वाला एक धारदार फलयुक्त छोटा अस्त्र, तीर, शर, शासक वान (दे॰), एक दैत्य।

वाणावली–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) तीरों की पाँति, वाण-समूह, शर-श्रेणी।

वाणासुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा बलि का पुत्र, एक महाबलवान दैत्य (पुरा.)।

वाणिज्य–संज्ञा, पु. (सं.) वनिज, व्यापार।

वाणिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णिक छंद (पिं.)।

वाणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सरस्वती, गिरा, वचन, मुख से कहे सार्थक शब्द, **बानी** (दे.)। **मु. वाणी फुरना**–वचनों का सत्य होना, मुख से शब्द उच्चरित होना। जीभ, रसना, वाक् शक्ति।

वात–संज्ञा, पु. (सं.) वायु, पवन, हवा, प्राणियों के वक्ताशय में रहने वाली वायु, जिसके बिगड़ने से कतिपय रोग उत्पन्न होते हैं, **बात** (दे.)।

वातज–वि. (सं.) वायु से उत्पन्न।

वातजात–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वायु से उत्पन्न, हनुमान जी।

वातप्रकोप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वायु का बिगड़ना, **वातविकार**। जिससे अनेक रोग होते हैं।

वातशूल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पेट की पीड़ा जो वायु विकार से होती है।

वातापि–संज्ञा, पु. (सं.) एक दैत्य जो आतापि का भाई था और जो अगस्त्य के द्वारा खाया गया था।

वातायन–संज्ञा, पु. (सं.) झरोखा, खिड़की, एक जनपद (रामा.)।

वातुल, वातूल–संज्ञा, पु. (सं.) उन्मत्त, पागल, बावला। स्त्री. **वातुला**।

वात्सल्य–संज्ञा, पु. (सं.) स्नेह, प्रेम, माता-पिता का अपनी संतान पर प्रेम, तत्प्रेम-सूचक काव्य का एक रस (एकमत)।

वात्स्यायन–संज्ञा, पु. (सं.) श्याम दर्शन के भाष्यकार एक ऋषि, कामसूत्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाद–संज्ञा, पु. (सं.) किसी बात के निर्णयार्थ बात-चीत, शास्त्रार्थ, विवाद, तर्क दलील, किसी विषय के तत्वज्ञों-द्वारा निर्णीत सिद्धांत, उसूल, बहस, झगड़ा। यौ. **वाद-विवाद**। वि. **वादी**।

वादक–संज्ञा, पु. (सं.) बाजा बजाने वाला, तर्क या शास्त्रार्थ करने वाला, वक्ता।

वादन–संज्ञा, पु. (सं.) बाजा बजाना। वि. **वादनीय, वादित**।

वाद-प्रतिवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बहस, तर्क, शास्त्रार्थ, शास्त्रीय बात-चीत।

वादी-प्रतिवादी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *वादिन्*) पक्षी, विपक्षी, प्रतिपक्षी, विवाद में दोनों पक्ष वाले; मुद्दई-मुद्दालेह।

वादरायण–संज्ञा, पु. (सं.) वेदव्यास।

वाद-विवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शास्त्रार्थ, बहस।

वादा–संज्ञा, पु. दे. (अ. *वाइदा*) प्रतिज्ञा, इकरार। **मु. वादा खिलाफ़ी करना**–कहने के प्रतिकूल कार्य करना। **वादा रखाना (रखना)**–प्रतिज्ञा कराना, (पूर्ण करना), वचन लेना (पूरा करना)।

वादित्र–संज्ञा, पु. (सं.) बाजा।

वादी–संज्ञा, पु. (सं. *वादिन्*) बोलन वाला, वक्ता, मुक़दमा चलाने वाला, मुद्दई, फ़र्यादी, प्रस्ताव या पक्ष या आरोपक।

वाद्य–संज्ञा, पु. (सं.) बाजा।

वानप्रस्थ–संज्ञा, पु. (सं.) चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम, जिसमें मनुष्य गृहस्थी छोड़ कर वन में रहता है (प्राचीन आर्य)।

वानर–संज्ञा, पु. (सं.) **वानर, बाँदर** (दे.), बंदर, दोहे का एक भेद (पिं.)। स्त्री. **वानरी**।

वानरमुख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बंदर का मुख, बंदर का सा मुख वाला, नारियल।

वानवासिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चौड़ाई या 16 मात्राओं के छंदों का एक भेद (पिं.)।

वापस–वि. (फ़ा.) लौटाया या फेरा हुआ, फिरता।

वापसी–वि. (फ़ा. *वापस*) फेरा या लौटा हुआ, वापस होने के संबंध का। संज्ञा, स्त्री. लौटने की क्रिया का भाव, प्रत्यावर्तन।

वापिका, वापी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छोटा जलाशय, बावली, **बापी** (दे.)।

वाम–वि. (सं.) **बाम** (दे.), बायाँ। (विलो. **दक्षिण**)। विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल, कुटिल, खल, दुष्ट। संज्ञा पु. 11 रुद्रों में से एक रुद्र, वामदेव, कामदेव, धन, वरुण, 24 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.), मकरंद, मंजरी, माधवी, स्त्री। संज्ञा, स्त्री. **वामता**–कुटिलता।

वामकी–संज्ञा, पु. (सं.) जादूगरों की एक देवी।

वामदेव–संज्ञा, पु. (सं.) महादेव, शिव, एक वैदिक ऋषि।

वामन–वि. (सं.) बौना, नाटा, छोटे शरीर का, ह्रस्व, खर्च

बावन (दे.)। संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, शिव जी, एक दिग्गज, राजा बलि के छलने को विष्णु का पंचमावतार, 18 पुराणों में से एक पुराण।

वाममार्ग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक तांत्रिक मत, जिसमें मद्य मांसादि का प्रचार है।

वाममार्गी–वि., संज्ञा, पु. (सं.) वाम मार्गानुयायी।

वामा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्त्री, औरत, दुर्गा जी, **बामा** (दे.), 10 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

वामावर्त्त–वि. यौ. (सं.) बाई ओर का घुमाव या भौंरी, बायीं ओर से प्रारंभ होने वाली प्रदक्षिणा। (विलो. **दक्षिणावर्त्त**)।

वाय–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वायु*) बाई, बादी, **बाय** (दे.)।

वायव्य–वि. (सं.) वायु-संबंधी। संज्ञा, पु. उत्तर-पश्चिम का कोण, पश्चिमोत्तर दिशा, एक अस्त्र।

वायस–संज्ञा, पु. (सं.) काक, काग, कौआ, **वायस** (दे.)।

वायु–संज्ञा, पु. (सं.) पवन, हवा, बात।

वायुकोण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण।

वायुमंडल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पृथ्वी के चारों ओर 45 मील ऊपर तक हवा का गोला, आकाश, अंतरिक्ष।

वायुलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक लोक (पुरा.), आकाश।

वारंवार–अव्य. यौ. (सं.) वार-बार, पुनः-पुनः, फिर-फिर, लगातार।

वार–संज्ञा, पु. (सं.) रोक, द्वार, दरवाज़ा, आवरण, अवसर, मरतबा, दाँव, बारी, दफा, बेरी, बेर, क्षण, दिन, दिवस। संज्ञा, पु. (सं.) आघात, चोट, आक्रमण, धावा, हमला।

वारणा–संज्ञा, पु. (सं.) निषेध, किसी काम के न करने का आदेश, रोक, मनाही, कवच, वाधा, हाथी। छप्पय का एक भेद, **बारन** (दे.)। वि. **वारित, वारक, वारणीय**।

वारणावत–संज्ञा, पु. (सं.) प्राचीन काल का एक प्रदेश या जनपद जो गंगा जी के किनारे पर था।

वारतिय*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वारस्त्री*) वेश्या, रंडी।

वारद*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वारिद*) बादल।

वारदात–संज्ञा, स्त्री. (अ.) दुर्घटना, मारपीट, दंगा, फसाद, भीषण कांड, झगड़ा।

वारन*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *वारन*) उत्सर्ग या निछावर, उतारा, वलि, उत्सर्ग। संज्ञा, पु. (सं. *वंदन*) वंदनवार। संज्ञा, पु. दे. (सं. *वारण*) हाथी, रुकावट।

वारना–क्रि. स. दे. (हि. *उतारनी*) उत्सर्ग या निछावर करना, उतारना। संज्ञा, पु. उत्सर्ग, निछावर। स्त्री. **वारी**। **मु. वारने, वार, (वारी) जाना**–निछावर होना।

वारनारी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वेश्या, रंडी, पतुरिया।

वारपार, बारापार–वि. संज्ञा, पु. दे. (सं. *अवर+पार*) पूर्ण विस्तार, नदी, आदि के एक किनारे से दूसरे किनारे पर, अंत, संपूर्ण, सारा, इस छोर से उस छोर तक, आदि से अंत तक। अव्य. एक तट (पार्श्व) से दूसरे तक।

वारफेर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *वारना+फेरना*) निछावर, उतारा, बलि, उत्सर्ग।

वारमुखी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वार-वधू, रंडी, वेश्या।

वारांगना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वेश्या, रंडी, श्रेष्ठ और सुंदर गुणवती स्त्री, स्वर्ग की स्त्री, अप्सरा।

वारांनिधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समुद्र, महासागर।

वारा–संज्ञा, पु. (सं. *वारण*) किफ़ायत, बचत, ख़र्च की कमी, लाभ। वि. किफ़ायत, सस्ता। **मु. वारे से (पर)** किफ़ायत से।

वाराणसी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) काशीपुरी।

वारान्यारा–संज्ञा, दे. यौ. (हि. *वार+न्यारा*) फ़ैसला, निपटारा, झंझट या झगड़ा की शांति, किसी पक्ष में निश्चय।

वाराह–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वराह*) शूकर, **वाराह, वराह** (दे.)।

वाराही–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक योगिनी, आठ मात्रिकाओं में से एक।

वाराही कंद–संज्ञा, पु. (सं.) एक कंद, **गेंठी** (प्रान्ती.)।

वारि–संज्ञा, पु. (सं.) तोप, पानी, नीर, जल।

वारिजात–संज्ञा, पु. (सं.) कमल, पंकज।

वारिचर–संज्ञा, पु. (सं.) जलजंतु, जलचर।

वारिज–संज्ञा, पु. (सं.) कमल, मोती, शंख, कौड़ी, घोंघा, असली सोना।

वारित–वि. (सं.) निवारित, रोका या मना किया गया।

वारिद–संज्ञा, पु. (सं.) बादल, मेघ।

वारिधर–संज्ञा, पु. (सं.) मेघ, बादल।

वारिधि–संज्ञा, पु. (सं.) समुद्र, सागर, **वारिध** (दे.)।

वारिनाथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र, सागर।

वारिनिधि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र।

वारियाँ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *वारी*) निछावर, वलि।

वारिवर्त्त*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *वारि+आवर्त्त*) एक मेघ।

वारिस–संज्ञा, पु॰ (अ॰) उत्तराधिकारी, किसी के मरने पर जो उसकी संपत्ति का स्वामी हो।

वारींद्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र।

वारी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) घर, मकान, गृह।

वारीश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र।

वारीफेरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *करना+फेरा*) वारफेर, निछावर, वलि।

वारुणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मद्य, मदिरा, शराब, वरुण की स्त्री, उपनिषद् विद्या, पश्चिम दिशा, गंगा-स्नान का एक पर्व।

वारेंद्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजशाही प्रांत के समीप का एक प्राचीन जनपद।

वार्त्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बात-चीत, गप्प, जनश्रुति, अफ़वाह, हाल, वृत्तांत, समाचार, संवाद, विषय, **बतकही** (ग्रा॰) मामला, वैश्यों की जीविका या वृत्ति जिसमें गोरक्षा, कृषि, ब्याज (बुसीद) और वाणिज्य हैं।

वार्त्तालाप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बातचीत।

वार्त्तिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी सूत्रकार के मत का प्रतिपादक ग्रंथ, किसी सूत्र-ग्रंथ का, अनुक्त, उक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्टकारक वाक्य या ग्रंथ।

वार्द्धक्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बुढ़ापा, बुढ़ाई, आधिक्य, बढ़ती।

वार्षिक–वि॰ (सं॰) वर्ष-संबंधी, सालाना।

वार्षिकोत्सव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सालाना जलसा।

वार्ष्णेय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्रीकृष्ण जी। वैश्यों का एक संप्रदाय।

वालखिल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अंगुष्ठ मात्र शरीर वाले ऋषियों का समूह।

वाला–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उपजाति छंद का एक भेद (पिं॰)। प्रत्य॰ (दे॰ हि॰) हिंदी भाषा में क्रिया के अंत में लग कर कवर्तृ वाचक संज्ञा का अर्थ और पदार्थ या वस्तु-वाचक के अंत में संयुक्त होकर संबंध वाचक संज्ञा का अर्थ देता है, जैसे–करना से करने वाला और दूध से दूध वाला।

वालिद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बाप, पिता, जनक।

वालिदा–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) माँ, माता।

बालुका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रेत, बालू, कपूर, शाखा।

वाल्मीकि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक भृगु-वंशीय मुनि जिन्होंने आदि काव्य रामायण का निर्माण किया।

वाल्मीकीय–वि॰ (सं॰) वाल्मीकि का निर्माण किया या बनाया हुआ, वाल्मीकि संबंधी।

वावदूक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वक्ता, विख्यात वक्ता, अति बोलने वाला, वाग्मी।

वावैला–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रोना-पीटना, विलाप, शोरगुल।

वशिष्ठ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक उपपुराण, वि॰ (सं॰) वशिष्ठ का, वशिष्ठ-संबंधी।

वाष्प–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आँसू, भाफ, भाप। यौ॰ **वाष्पयान (वाष्प यंत्र)**–रेल आदि भाप से चलने वाली गाड़ियाँ या कलें।

वाष्पाकुलित–वि॰ यौ॰ (सं॰) वाष्प या आँसू से भरे।

वासंतिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विदूषक, भौंढ़, नचैया, नाचने वाला, नर्त्तक। वि॰ वसंत संबंधी।

वासंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जुही (पुष्प) माधवीलता, मदनोत्सव, दुर्गा, 14 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

वास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्थान, निवास, घर, गृह, मकान, रहना, सुगंधि, खुशबू।

वासक–संज्ञा, पु॰ (सं॰)अडूसा, रूसा, **वासा**।

वासकसज्जा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वह नायिका जो सब प्रकार साज सजा कर नायक से मिलने की सब तैयारी से तैयार बैठी हो।

वासन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुगंधित करना, वस्त्र, वसन, वास, **बासन, बरतन** (दे॰)। वि॰ **वासित, वासनीय**।

वासना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रत्याशा, भावना, स्मृति, संस्कार, ज्ञान हेतु, कामना, इच्छा, अभिलाषा। यौ॰ **विषय-वासना**।

वासर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दिवस, दिन, **बासर** (दे॰)। यौ॰ **निशि-वासर**।

वासव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शचीश, इंद्र, पाकशासन, विढ़ौजा।

वासा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) वास, अडूसा, रूसा।

वासित–वि॰ (सं॰) सुगंधित किया, वस्त्र से आच्छादित वासी।

वासिता–संज्ञा, वि. (सं.) स्त्री, प्रमदा, आर्य्या छंद का एक भेद (पिं.)।

वासिल–वि. (अ.) प्राप्त, पहुँचाया हुआ, जो वसूल हुआ हो। यौ. **वासिल बाकी**–वसूल और बाकी (प्राप्त और शेष रहा)।

वासी–संज्ञा, पु. (सं. *वासिन्*) रहने वाला, निवासी।

वासुकि, वासुकी–संज्ञा, पु. (सं.) 8 नागों में से दूसरा नाग, शेषनाग।

वासुदेव–संज्ञा, पु. (सं.) वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण, पीपल का पेड़।

वास्तव–वि. (सं.) यथार्थ, सत्य, सचमुच, प्रकृति, वस्तुतः।

वास्तविक–वि. (सं.) यथार्थ, ठीक-ठीक। संज्ञा, स्त्री. **वास्तविकता**–यथार्थता।

वास्ता–संज्ञा, पु. (अ.) लगाव, संबंध, ताल्लुक।

वास्तु–संज्ञा, पु. (सं.) ढीठ, जहाँ और कैसे घर बनाया जावे, इमारत, मकान, पर। यौ. **वास्तु-कला, वास्तु-विज्ञान**-शुद्ध निर्माण की विद्या; वास्तु-शास्त्र।

वास्तु-पूजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) नव गृह में प्रवेश करने से पूर्व वास्तु पुरुष की पूजा (भारत.)।

वास्तुविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) इंजिनियरी, इमारत-संबंधी ज्ञान जिस विद्या से होता है, इमारती-इल्म, गृह-निर्माण-शास्त्र।

वास्तुशास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वास्तु-विद्या, **वास्तु-विज्ञान**।

वास्ते–अव्य. (अ.) हेतु, निमित्त, लिए, काज (व्र.)।

वाह–अव्य. (फ़ा.) धन्य, प्रशंसा या आश्चर्य द्योतक शब्द, घृणा-सूचक शब्द। संज्ञा, पु. (सं.) बोझा ले जाने वाला, (यौगिक में)।

वाहक–संज्ञा, पु. (सं.) बोझा ले जाने या ढोने वाला, गाड़ी आदि का खींचने वाला, पालकी, वीनस आदि का उठाने वाला, सारथी।

वाहन–संज्ञा, पु. (सं.) सवारी, **बाहन** (दे.)।

वाहवाही–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) प्रशंसा, साधुवाद, स्तुति, तारीफ़।

वाहिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सैनय, सेना, सेना का एक भेद जिसमें 81 रथ और 81 हाथी, 243 घोड़े और 405 पैदल रहते हैं।

वाहियात–वि. (अ. *वाही+यात* फ़ा.) फ़जूल, नाहक, व्यर्थ, बुरा, ख़राब।

वाही–वि. (अ.) आवारा, मूर्ख, सुस्त, निकम्मा, ढीला, बुरा, दुष्ट।

वाही-तवाही–वि. यौ. (अ.) आवारा, बेहूदा, बुरा, ख़राब, अंडबंड, बेसिर पैर का। संज्ञा, स्त्री. अंडबंड बातें, गाली-गलौज़।

वाह्य–क्रि. वि. (सं.) वाहर, अलग, जुदा, भिन्न, पृथक्।

वाह्यांतर, वाह्याभ्यंतर–वि. यौ. (सं.) भीतर और बाहर का, **भीतर-बाहिरी**।

वाह्येंद्रिय–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) बाहिरी विषयों को ग्रहण करने वाली पाँचों बाहर की ज्ञानेद्रियाँ, नाक, कान, आँख, जीभ, त्वचा।

वाल्हीक–संज्ञा, पु. (सं.) कंधार (गांधार-प्राचीन) के समीप का एक प्राचीन प्रदेश, वहाँ का घोड़ा।

विंजन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यंजन*) व्यंजन, भोजन, वे अक्षर जो स्वरों के योग से बोले जाते हैं, **बिंजन** (दे.)।

विंद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वृंद, बिंदु*) समूह, झुंड, पानी की बूंद, शून्य, नुकता, सिफ़र, **बिंद** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **विन्दुता**।

विंदक*–संज्ञा, पु. (सं.) ज्ञाता, प्राप्त करने या जानने वाला।

विंदा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) वृंदा, एक स्त्री जो कृष्ण की दासी थी।

विंदावन–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) वृंदावन (सं.)।

विंदी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) विन्दु, शून्य, बुँदकी, टिकुली।

विंदु–संज्ञा, पु. (सं. *बिंदु*) वारि-कण, अनुस्वार, पानी की बूँद, शून्य, बिंदी, सिफ़र, **ज़ीरो** (अं.)। **बुंदकी,** अनुस्वार। वह जिसका स्थान हो पर परिमाण कुछ न हो (रेखा.), परमाणु, अणु, कण, विंदु (दे.)।

विंदुमाधव–संज्ञा, पु. (सं.) एक विख्यात विष्णु-मूर्त्ति (काशी)।

विंदुर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विंदु*) बूँद, **बुँदकी**।

विंदुसार–संज्ञा, पु. (सं.) महाराज चंद्रगुप्त के पुत्र तथा सम्राट अशोक के पिता (इति.)।

विंध*–संज्ञा, पु. दे. (सं.*विंध्य*) विंध्य, पहाड़, **विंध** (दे.)।

विंध्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विंध्याचल।

विंध्यकूट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विंध्याचल।

विंध्यवासिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) देवी की एक मूर्ति जो

विंध्याचल (मिर्जापुर जिले) में है।

विंध्याचल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भारत के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई एक पर्वत-श्रेणी, **विंध्यगिरि, विंध्याद्रि**।

विंशेत्तरी—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनुष्य के शुभाशुभ के विचार की एक रीति या ग्रह-दशा (ज्यो॰)।

वि॰—उप॰ (सं॰) यह शब्दों के पहले आकर, विशेष (जैसे—विवाद), वैरूप्य (जैसे—विकप) विना आदि का अर्थ देता है।

विकंकत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एकवन-वृक्ष जो कटाई, किंकणी या बंज कहाता है।

विकसित—वि॰ (सं॰) खूब काँपता हुआ। संज्ञा, पु॰ **विकंपन**।

विकच—वि॰ (सं॰) खिला या फूला हुआ।

विकट—वि॰ (सं॰) भीषण, भयानक, भयंकर, विशाल, टेढ़ा, कठिन, दुर्गम, वक्र, दुरसाध्य।

विकर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोग, बीमारी, व्याधि, तलवार के 32 हाथों में से एक हाथ।

विकरार, विकरारा*—वि॰ दे॰ (सं॰ *विकराल*) विकराल, भयंकर, भीषण, डरावना। वि॰ दे॰ (अ॰ फ़ा॰ *नेकरार*) व्याकुल, बेचैन, विकल।

विकराल—वि॰ (सं॰) घोर, भयंकर, भीषण, **विकराला** (दे॰)।

विकर्षण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आकर्षण, आकर्षित करने की विद्या या एक शास्त्र, संकर्षण। **विकर्षणीय, विकर्षित**।

विकल—वि॰ (सं॰) बेचैन, व्याकुल, बेहोश, विह्वल, अपूर्ण, कलाहीन, खंडित, विफल (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **विकलता**।

विकलांग—वि॰ यौ॰ (सं॰) अंग-हीन, न्यूनांग, जिसका कोई अंग टूट या बिगड़ गया हो।

विकला—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) समय का एक अति अल्प भाग, एक कला का साठवाँ भाग, क्षण, नष्ट, **विकला** (दे॰)। वि॰ स्त्री॰ **विकल**।

विकलाना*—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विकल*) बेचैन या व्याकुल होना, घबराना, **बिकलाना** (दे॰)।

विकल्प—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भ्रम, धोखा, भ्रांति, एक बात ठहराकर फिर उसके विपरीत सोच-विचार, जो केवल शब्द मात्रा का बोधक हो कोई वस्तु न हो, अवांतर कल्प, चित्त की पंचविधि वृत्तियों में से एक, समाधि का एक प्रकार, किसी विषय में कई विधियों का मिलाना, एक अर्थालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों के लिए यह कहा जाय कि या तो यह या वह होगा। व्याकरण में एक ही विषय के दो या कई पक्षों या नियमों में से एक को इच्छानुसार ग्रहण करना (अं॰) आल्टरनेटिव।

विकसन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) फूलना, खिलना, फूटना, प्रस्फुटन, विकचन। वि॰ **विकसित**।

विकसना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰) फूलना, खिलना, प्रफुल्लित होना, कूदना, डिगराना, (दे॰)। स॰ रूप—**विकसाना, विकसावना, विकासना,** प्रे॰ रूप—**विकसवाना**।

विकसित—वि॰ (सं॰) प्रफुल्लित, प्रस्फुटित, खिला या फूला हुआ, विकसित।

विकस्वर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष बात की पुष्टि सामान्य बात से की जावे (अ॰ पी॰)। वि॰ ऊँचा, तेज़, बड़े ज़ोर का।

विकार—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वास्तविक रूप रंग का बदल या बिगड़ जाना, दोष, अवगुण, बुराई, वासना, प्रवृत्ति, मनोवेग या परिणाम, उलट-फेर, रूपांतर, परिवर्तन, विकृति।

विकारी—वि॰ (सं॰ *विकारिन्*) रूपांतर या विकार वाला, अवगुणी, दोषी, जिसमें परिवर्तन या विकार हुआ हो, क्रोधादि मनोविकारों वाला, वह शब्द जिसमें लिंग, वचन, कारकादि से रूप-विकार हो (व्या॰)।

विकास—संज्ञा, पु॰ (सं॰) खिलना, प्रस्फुटन, फूलना, प्रसार, फैलाव, विस्तार, भिन्न रूपांतर के साथ किसी वस्तु का उत्पन्न होकर क्रमशः उन्नत होना या बढ़ना, एक नवीन सिद्धांत जो सृष्टि और उसके सब पदार्थों को एक ही मूल तत्व से निकाल कर उत्तरोत्तर उन्नत होता हुआ मानता है (पाश्चात्य)। संज्ञा, पु॰ **विकासन**। वि॰ **विकासनीय, विकसित**।

विकासना*—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विकास*) प्रगट करना, बढ़ाना, निकालना, प्रस्फुटित करना, फुलाना, विकास करना या खिलाना, खिलने में लगाना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) खिलना, प्रगट होना, प्रफुल्लित होना।

विकिर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिड़िया, पक्षी।

विकीर्ण—वि॰ (सं॰) फैलाया या छितराया हुआ, बिखेरा हुआ, विख्यात, प्रसिद्ध।

विकुंठ*—संज्ञा, पु. (सं.) बैकुंठ, स्वर्ग लोक, स्त्री. **विकंठा**।

विकृत—वि. (सं.) कुरूप, भद्दा, बिगड़ा हुआ, किसी प्रकार के विकास से युक्त, अस्वाभाविक। यौ. **विकृतानन**—कुरूप।

विकृति—संज्ञा, स्त्री. (सं.) विकृत रूप, विकार, खराबी, बिगाड़, रोग, व्याधि, बीमारी, परिणाम, विकार-युक्त (विकार आने पर) मूल प्रकृति का रूप (सांख्य), परिवर्तन, मन का क्षोभ, मूल धातु से बिगड़ कर वना शब्द-रूप (व्या.), 23 वर्णों के छंद (पिं.)।

विकृष्ट—वि. (सं.) आकृष्ट, खींचा हुआ।

विक्रम—संज्ञा, पु. (सं.) पौरुष, पराक्रम, शूरता, गति, बल, शक्ति, सामर्थ्य, विष्णु। वि. श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

विकरमाजीत—संज्ञा, पु. दे. (सं. *विक्रमादित्य*) विक्रमादित्य राजा, **विकरमाजीत** (दे.)।

विक्रमादित्य—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वर्तमान विक्रमीय संवत् के प्रवर्तक, उज्जैन के एक प्रतापी राजा, इनके संबंध में बहुत सी कहानियाँ हैं।

विक्रमाब्द—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विक्रमादित्य का चलाया हुआ उनके नाम का सम्वत्, **विक्रमसम्वत्, विक्रमीय संवत्**।

विक्रमी—संज्ञा, पु. (सं. *विक्रमिन्*) पराक्रमी विक्रमवाला, विष्णु। वि. विक्रम का, विक्रम-संबंधी, **विक्रमीय** (सं.)।

विक्रय—संज्ञा, पु. (सं.) बिक्री, बेचना। यौ. **क्रय-विक्रय**।

विक्रयी—संज्ञा, पु. (सं.) बेचने वाला, विक्रेता।

विक्रांत—संज्ञा, पु. (सं.) वैक्रांतमणि, पराक्रमी, शूरवीर, सिंह सदृश व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग प्रकृति-भाव में (अविकृत) रहता है।

विकियोपमा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) उपमालंकार का एक भेद जिसमें किसी विशेष उपाय या क्रिया का सहारा कहा जाय (काव्य.)।

विक्रेता—संज्ञा, पु. (सं.) बेचने वाला।

विक्षत—वि. (सं.) घायल।

विक्षिप्त—वि. (सं.) छितराया या बिखेरा हुआ, पागल, व्याकुल, विकल, जिसका चित्त ठिकाने न हो। संज्ञा, पु. चित्त के कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहने की एक विशेष अवस्था (योग.)।

विक्षिप्तता—संज्ञा, स्त्री. (सं.) विफलता, पागलपन, विह्वलता।

विक्षुब्ध—वि. (सं.) क्षोभयुक्त, विकलता।

विक्षेप—संज्ञा, पु. (सं.) इधर-उधर या ऊपर को फेंकना, हिलाना, डालना। झटका देना, तीर चलाना, धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाना, (विलो. **संयम**), फेंक कर चलाया जाने वाला एक अस्त्र, विघ्न, बाधा, असंवम, व्याकुलता, मन को भटकाना।

विक्षोभ—संज्ञा, पु. (सं.) मन का चाँचल्य, क्षोभ, उद्विग्नता। वि. **विक्षोभत**।

विखान*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *विषाण*) सींग, **बिखान** (दे.)।

विखायैधि—संज्ञा, स्त्री. (दे.) कड़वी गंध।

विख्यात—वि. (सं.) प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर।

विख्याति—संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रसिद्धि, ख्याति, मशहूरता।

विगंध—वि. (सं.) दुर्गंधयुक्त, गंध-रहित।

विगत—वि. (सं.) गत या बीता हुआ, पिछला, बीते हुए या अंतिम से पूर्व का, विहीन, रहित।

विगर्हणा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) निंदा, डॉट या फटकार, घुड़की। वि. **विगर्हणीय, विगर्हित**।

विगर्हित—वि. (सं.) निंदित, बुरा, डॉटा फटकारा गया।

विचलित—वि. (सं.) गला या गिरा हुआ, ढीला, शिथिल, बिगड़ा हुआ।

बिगाथा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) आर्या छंद का एक भेद, **विग्गाहा, उद्गीत** (पिं.)।

विगुण—वि. (सं.) निर्गुण, गुण-हीन।

विगोना—क्रि. स. (व्र.) छिपाना, लुकाना, दुराना।

विगोया—वि. (दे.) छिपा, गुप्त लुका।

विग्गाहा—संज्ञा, स्त्री. दे. (वि. *विगाथा*) आर्या छंद का एक भेद, **विगाथा**।

विग्रह—संज्ञा, पु. (सं.) झगड़ा, कलह, लड़ाई, समर, युद्ध, अलग या दूर करना, विभाग, (व्या.) यौगिक या सामासिक पदों के एक या सब पदों को पृथक् करने की क्रिया (व्या.), बैरियों या विपक्षियों में फूट पैदा करना, आकृति, मूर्त्ति, शरीर।

विग्रही—संज्ञा, पु. (सं. *विगृहिन्*) युद्ध या लड़ाई-झगड़ा करने वाला, झगड़ालू, लड़ाका, देही, शरीरी।

विघटन—संज्ञा, पु. (सं.) तोड़ना, फोड़ना, विनष्ट या बरबाद

करना, **बिघटन**। स. रूप–**विघटाना**, अ. रूप–**विघटना**। वि. **विघटनीय**।

विघटिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) समय का एक अल्प मान, एक घड़ी का 23वाँ भाग।

विघटित–वि. (सं.) जो तोड़ा-फोड़ा गया हो, विगड़ा या नष्ट किया हुआ।

विघन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विघ्न*) विघ्न, बाधा, अड़चन, **विघन**।

विघातक–संज्ञा, पु. (सं.) बाधक, मारक, नाशक, घातक।

विघाती–वि. (सं. *विघातिन्*) घातक, मारक, विघ्नकारी।

विघ्न–संज्ञा, पु. (सं.) बाधा, अड़चन। यौ. **विघ्न-विदारण**।

विघ्नजित–संज्ञा, पु. (सं.) गणेश जी।

विघ्नपति–संज्ञा, पु. (सं.) गणेश जी।

विघ्नविनाशक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गणेश जी, **विघ्न-विदारक**।

विघ्नविनायक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गणेश जी।

विघ्नेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गणेश जी।

विघ्नहारी–संज्ञा, पु. (सं.) विघ्न नाशक, गणेश जी, **विघ्नहर**।

विचक्षण–वि. (सं.) प्रकाशित, चतुर, निपुण, पंडित, पारदर्शी, विद्वान, बुद्धिमान, **विचच्छन**। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) **विचक्षणता**।

विचरण–संज्ञा, पु. (सं.) घूमना-फिरना, चलना, पर्यटन करना, **विचरन** (दे.)। वि. **विचरणशील**।

विचरन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विचरण*) घूमना-फिरना, चलना, पर्यटन करना।

विचरना–क्रि. अ. दे. (सं. *विचरण*) घूमना-फिरना, चलना, पर्यटन करना, **बिखरना** (दे.)।

विचरनि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विचरण*) घूमना फिरना, चलना, पर्यटन।

विचल–वि. (सं.) अस्थिर, चंचल, स्थान से हटा हुआ।

विचलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) घबराहट, चंचलता, अस्थिरता, भगदर।

विचलना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *विचलन*) निज स्थान से हट जाना, चल जाना, घबराना, अधीर होना, प्रण, प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ता से स्थिर न रहना, **बिचलना** (दे.)। स. रूप–**विचलाना, विचलावना**, प्रे. रूप–**विचलवाना**।

विचलित–वि. (सं.) विकलित, चंचल, अस्थिर, प्रण या संकल्प से हटा हुआ, घबराया हुआ, व्याकुलित, बेचैन।

विचार–संज्ञा, पु. (सं.) भाव, मन का सोचा, समझा या निश्चित किया हुआ, भावना, चित्त में उठी बात, ख़्याल, मुकदमें की सुनवाई और फैसला, निर्णय, मत, **बिचार** (दे.)।

विचारक–संज्ञा, पु. (सं.) विचारने या सोचने वाला, विचार करने वाला, निर्णय करने वाला, न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता। स्त्री. **विचरिका**।

विचारणा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विचार करने की क्रिया या भाव।

विचारणीय–वि. (सं.) चित्य, विचार करने योग्य, चिंतनीय, सोचनीय, संदिग्ध, प्रमाणित करने योग्य।

विचार-मूढ़–वि. यौ. (सं.) मूर्ख, जो विचार न कर सके।

विचारना–क्रि. अ. दे. (सं. *विचार+ना प्रत्य.*) सोचना, समझना, चिंतवन या विचार करना, पता लगाना, पूछना, खोजना, ढूँढ़ना, **बिचारना**। स. रूप–**विचराना, विचरावना**, प्रे. रूप–**विचरवाना**।

विचारपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता, विचारक।

विचारवान्–संज्ञा, पु. (सं. *विचारवान्*) विचार-शील, ज्ञानी, बुद्धिमान, पंडित।

विचारशक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सोचने या अच्छा-बुरा जानने की शक्ति, विवेक, समझने की शक्ति, बुद्धि, ज्ञान, समझ।

विचारशील–संज्ञा, पु. (सं.) विचारवान् ज्ञानी, समझदार, बुद्धिमान।

विचारशीलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बुद्धिमत्ता।

विचारालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) न्यायालय, कचहरी।

विचारित–वि. (सं.) निर्धारित, निर्णीत, व्यवस्थापित।

विचारी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विचारिन्*) विचार करने वाला, ज्ञानी, समझदार। वि. स्त्री. दे. (हि. *विचारा*) दुखिया, पराधीन, विवश, **बिचारी, बेचारी** (दे.)।

विचार्य्य–वि. (सं.) विचारणीय, विचार करने योग्य। पू. क्रि. (सं.) विचार कर।

विचित्र–वि. (सं.) अनेक रंगों वाला, अनोखा, अद्भुत,

विलक्षण, चकित करने वाला या विस्मयकारी। स्त्री॰ **विचित्रा**। संज्ञा, स्त्री॰ **विचित्रता**। संज्ञा, पु॰ एक अर्थालंकार जिसमें किसी अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिए किसी उलटे प्रयत्न के करने का कथन हो (काव्य॰), **विचित्र** (दे॰)।

विचित्रता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रंग-बिरंगा होने का भाव, विलक्षण होने का भाव, वैचित्र्य, विलक्षणता, वैलक्षण्य।

विचित्रवीर्य्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रवंशीय राजा शांतनु के पुत्र।

विचेतन–वि॰ (सं॰) चेतन, रहित, विवेकहीन।

विच्छित्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अलगाव, विच्छेद, त्रुटि, कमी, शरीर को रंगों से रँगना, कविता में पति, नायिका का स्वल्प शृंगार से नायक के मोहने की चेष्टा सूचक एक हाव (सा॰), वैचित्र पूर्ण वक्रोक्ति (काव्य॰)।

विच्छिन्न–वि॰ (सं॰) विभक्त, विलग, भिन्न, जुदा, छेद या काट कर पृथक् किया। संज्ञा, पु॰ (सं॰) चारों क्लेशों की वह दशा जब बीच में उनका विच्छेद हो जाए (योग॰)।

विच्छेद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) टुकड़े-टुकड़े करना, क्रम का टूट जाना, नाश, वियोग, विद्रोह, विरह, छेद या कार कर पृथक् करने की क्रिया, कविता की पति। वि॰ **विच्छेदक, विच्छेदिन**।

विच्छेदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) काट कर अलग करना, नष्ट करना, खंडन करना। वि॰ **विछेदनीय, विच्छेदित**।

विछलाना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *फिसलना*) फिसलना, रपटना, **बिछलना, बिछुलना** (ग्रा॰)।

बिछोह*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ विच्छेद) वियोग, विच्छेद, जुदाई, विरह, बिछोह।

विजन–वि॰ (सं॰) निर्जन, निराला, एकांत। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यंजन*) पंखा, विजना।

विजना*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विजन*) एकांत, निराला, अकेला। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यंजन*) **विजना, वीजना** (दे॰) पंखा, **विनवाँ, बेनवाँ** (ग्रा॰)।

विजय–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विवाद या युद्ध में जीत, जय, विजय, **बिजै** (दे॰)ए विष्णु के एक पार्षद, एक छंद या मत्तगयंद सवैया (केश॰)। भ॰ वि॰ विजयी। यौ॰ **जय-विजय**।

विजय-पताका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) जीत होने पर उड़ाई जाने वाली पताका, जय-ध्वजा, जय-केतु, जीत का झंडा।

विजय-यात्रा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देश जीतने के विचार से की गई यात्रा, **विजै-जात्रा** (दे॰)।

विजयलक्ष्मी-विजयश्री–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) **जयलक्ष्मी,** विजय की प्रधान देवी जिसकी दया ही पर विजय का होना निर्भर है, **जयश्री**।

विजया–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा, सिद्धि, भाँग, भंग। श्री कृष्ण जी की माला, 10 मात्राओं का एक छंद, 8 वर्णो का एक वर्णिक वृत्त (पिं॰) विजयदशमी।

विजया-दशमी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) आश्विन या क्वार शुक्ल (सुदी) दशमी (हिंदुओं के त्यौहार या उत्सव का दिन); दशहरा।

विजयी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विजयिन्*) विजेता, जीतने वाला, जय प्राप्त। स्त्री॰ **विजयिनी**।

विजयोत्सव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विजया-दशमी का उत्सव, विजय होने का उत्सव, **जयोत्सव**।

विजात–वि॰ (सं॰) कुजात, वर्णसंकर। संज्ञा, पु॰ (सं॰) छंद का एक भेद (दि॰)।

विजाति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दूसरी जाति। वि॰ दूसरी जाति का।

विजातीय–वि॰ (सं॰) दूसरी जाति का।

विज्ञानु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तलवार चलाने 32 हाथों में से एक हाथ, अखवा हाथ।

विजारत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) बजीर या मंत्री का पद या धर्म अथवा भाव मंत्रित्व।

विजिगीषु–वि॰ (सं॰) जयाकांक्षी जयाभिलाषी, विजय चाहने वाला **विजयेच्छुक**। संज्ञा, स्त्री॰ **विजिगीषा**।

विजित–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जो जीत लिया गया हो, जीता हुआ देश,, हारा हुआ, पराजित।

विजेता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विजेतृ*) जीतने वाला, विजयी, जिसने विजय पाई हो।

विजै*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विजय*) विजय, **विजै** (दे॰)।

विजैसार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विजयसार*) साल जैसा एक बड़ा

वृक्ष।

विजोग*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वियोग*) वियोग।

विजोगी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वियोगी*) वियोगी।

विजोहा, विजाहा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विगोह*) दो रगण वाला एक वर्णिक छंद, विमोहा। **जोहा** (दे.)।

विज्जु–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विद्युत्*) बिजली।

विज्जुलता–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *विद्युत+लता*) बिजली **विद्युल्लता**।

विज्जोहा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विमोहा*) **जोहा,** विमोहा, विजोहा छंद (पिं.)।

विज्ञ–वि. (सं.) पंडित,, विद्वान, बुद्धिमान, ज्ञानी, जानकार। संज्ञा, स्त्री. विज्ञता।

विज्ञप्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विज्ञापन, इश्तहार, सर्वसाधारण को सूचित करने या जताने की क्रिया।

विज्ञान–संज्ञा, पु. (सं.) किसी विषय की ज्ञात बातों का शास्त्र रूप में स्वतंत्र संग्रह, साँसारिक पदार्थों का ज्ञान, तत्व-विद्या, पदार्थ ज्ञान, वस्तु-विज्ञान या शास्त्र, पदार्थ, आत्मा, ब्रह्म, निश्चयात्मक बुद्धि, अविद्या या माया नाम की वृत्ति; (अं.) साइंस।

विज्ञानमयकोष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बुद्धि और ज्ञानेंद्रियों का समूह (वेदा.)।

विज्ञानवाद–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्म और जीव की एकता का प्रतिपादक सिद्धांत, आधुनिक विज्ञान की बातों का मानने वाला सिद्धांत। वि., संज्ञा, पु. **विज्ञानवादी**।

विज्ञानी–संज्ञा, पु. (सं. *विज्ञानिन्*) बढ़ा बुद्धिमान, किसी विषय का विशेष ज्ञाता, बड़ा विद्वान, वैज्ञानिक, विज्ञान-शास्त्र का ज्ञाता।

विज्ञापन–संज्ञा, पु. (सं.) सूचना देना, इश्तहार, जानकारी कराना, सूचना पत्र, लोगों को किसी बात के बताने का लेख। वि. **विज्ञापक, विज्ञापनीय**। यौ. **आत्म-विज्ञापन**–आत्म-श्लाषा।

विट–संज्ञा, पु. (सं.) लंपट, कामी, वेश्या-गामी, कामुक, चालाक, धूर्त, धनी, वैश्य, विषयादि में सारी संपत्ति खोने वाला, धूर्त, स्वार्थी नायक (साहि.) मल, विष्ठा, बाट।

विटप–संज्ञा, पु. (सं.) पेड़, वृक्ष, नवीन, कोमल, शाखा या पत्ते, कोंपल, **विटप** (दे.)।

विटपी–संज्ञा, पु. (सं.) पेड़, वृक्ष।

विटलवण–संज्ञा, पु. (सं.) सोचर या सोंचर नमक।

विट्ठल–संज्ञा, पु. (दे.) विष्णु की एक मूर्त्ति (दक्षिण भारत)। यौ. **विट्ठलनाथ।**

विट्ठल विपुल–वल्लभाचार्य के शिष्य।

विडंबना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चिढ़ाने को किसी की नक़ल करना या उतारना, हँसी उड़ाना, चिढ़ाना, उपहास, मज़ाक करना, दुर्दशा, **विडंवन** (दे.)। वि. **विडंबनीय, विडंवित**।

विडर–क्रि. वि. (दे.) पृथक्, विलग, दूर-दूर पर।

विडरना*†–क्रि. अ. (दे.) भागना, दूर होना, दौड़ना, बिखरना, छितरना, तितर-बितर, विदीर्ण होना, फैल जाना, **विडरना**। स. रूप–**विडराना,** प्रे. रूप–**विडरवाना**।

विडारना–क्रि. स. दे. (हि. *विडरना*)। **विडारना** (दे.), छितराना, बखेरना, भगाना, तितर-बितर करना, दोड़ना, विदीर्ण या नष्ट करना।

विडाल–संज्ञा, पु. (सं.) बिल्ला बिल्ली।

विडालाक्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक राजा (महा.)। वि. (सं.) कंजा, बिल्ली की सी आँख वाला।

विडौजा–संज्ञा, पु. (सं. *विडौजस्*) इंद्र।

वितंडा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पर पक्ष को दबाते हुए अपने पक्ष की स्थापना करना, (न्याय.। व्यर्थ के लिए झगड़ा या कहा सुनी। यौ. **विबंडावाद**।

वितंत*–संज्ञा, पु. दे. (सं.*वितंत्र*) बिना तार का बाजा।

वित*–वि. दे. (सं. *विद्*) ज्ञाता, चतुर, जानकार, निपुण। संज्ञा, पु. (दे.) सामर्थ्य, धन, शक्ति, वित्त, **वित**।

वितद्रु–संज्ञा, पु. (सं.) झेलम नदी।

वितपन्न*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्युत्पन्न*) प्रवीण, कार्य कुशल, दक्ष, निपुण, पटु। वि. विकल, घबराया हुआ।

वितरक–संज्ञा, पु. (सं. *वितरण*) बाँटने वाला।

वितरण–संज्ञा, पु. (सं.) अर्पण या दान, करना, बाँटना, देना, **बितरन** (दे.)। वि. **वितरणीय, वितरित**।

वितरन*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वितरण*) बाँटने वाला, बाँटना, **बितरन** (दे.)।

वितरना*–क्रि. स. दे. (सं. *वितरण*) बाँटना, **बरताना** (दे.)।

स. रूप–**बितराना, बितरवाना**।

वितरित–वि. (सं.) बाँटा हुआ।

वितरेक*–क्रि. वि. दे. (सं. *व्यतिरिक्त*) अतिरिक्त, सिवा, छोड़कर, विरुद्ध, अलावा। संज्ञा, पु. (दे.) **व्यतिरेक** (सं.)।

वितर्क–संज्ञा, पु. (सं.) तर्क पर होने वाला दूसरा तर्क, संदेह, संशय, एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का कथन होता है। यौ. **तर्क-वितर्क**।

वितल–संज्ञा, पु. (सं.) सात पातालों में से तीसरा पाताल (पुरा.)।

वितस्ता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) झेलम नदी।

वितस्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वित्ता, बीता।

वितान–संज्ञा, पु. (सं.) मंडप, चँदोवा, ख़ेमा, शामियाना, संघ, समूह, रिक्त या शून्य स्थान, कुंज, विस्तार, यज्ञ, सम (गण) और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

वितानना*†–क्रि. स. दे. (सं. *वितान*) चँदोवा या शामियाना तानना, चढ़ाना।

वितिक्रम*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्यतिक्रम*) क्रमशः न होने वाला, उलट-फेर, विघ्न, बाधा। (विलो. **यथाक्रम**)।

वितीत*†–वि. दे. (सं. *व्यतीत*) बीता या हुआ, गत, **वितीत** (दे.)।

वितुंड–संज्ञा, पु. (सं. *वि.+तुंड*) हाथी।

वितु*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वित्त*) सामर्थ्य, धन, संपत्ति, **बित, वित्त** (दे.)।

वित्त–संज्ञा, पु. (सं.) संपत्ति, धन, लक्ष्मी; (अं.) फाइनेंस।

वित्तपति-वित्तनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुबेर, **वित्ताधिपति, वित्तेश**।

वित्तहीन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कंगाल, निर्धन, दरिद्र।

विथक–संज्ञा, पु. (हि. *थकना*) पवन।

विथकना*†–क्रि. अ. दे. (हि. *थकना*) थक जाना, शिथिल या सुस्त हो जाना, मोह या आश्चर्य से चुप होना। स. रूप–**विथकाना**।

विथकित*–वि. दे. (हि. *थकना*) क्रान्त, थका हुआ, शिथिल, चकित या मोहित होकर मौन हुआ।

विथरना–क्रि. अ. (दे.) बिखरना।

विथा*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *व्यथा*) व्यथा, पीड़ा, रोग, व्याधि, विथा।

विदग्ध–संज्ञा, पु. (सं.) चतुर, विद्वान, कुशल, दक्ष, चालाक, रसिक, भावुक।

विदग्धता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चातुरी, विद्वता, निपुणता, चालाकी, रसिकता।

विदग्धा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ऐसी परकीया नायिका जो चातुरी या चालाकी से पर पुरुष को मोहित या अनुरक्त करे।

विदरना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विदारण*) विदीर्ण होना, फटना। स. रूप–**विदारना**। क्रि. स. (दे.) फाड़ना, विदीर्ण करना।

विदर्भ–संज्ञा, पु. (सं.) बरार देश का पुराना नाम।

विदलन–संज्ञा, पु. (सं.) मलने, दलने या दबाने आदि का कार्य, नष्ट करना, फाड़ना। वि. **विदलित, विदलनीय**।

विदलना*–क्रि. स. दे. (सं. *विदलन*) दरना, दलित या नष्ट करना, दबाना, मलना। स. रूप–**विदलाना**, प्रे. रूप–**विदलवाना**।

विदा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विदाय*) (अ. विदा अ) कहीं से चलने की अनुमति या आज्ञा, प्रस्थान, रुख़सत, प्रयाण। **मु. विदा माँगना**–प्रयाण की आज्ञा माँगना, **विदा देना**–प्रस्थान की आज्ञा देना, **विदा होना (करना)**।

विदाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *विदा+ई प्रत्य.*) प्रस्थान की आज्ञा, विदा की आज्ञा या अनुमति, विदा के समय दिया गया धन, प्रस्थान, प्रयाण, **बिदाई**।

विदारक–वि. (सं.) दरने या चीड़ने वाला, फाड़ डालने वाला, विदीर्ण या विनाश करने वाला, दुखद।

विदारण–संज्ञा, पु. (सं.) फाड़ना, चीरना, मार डालना, नष्ट करना, **विदारन** (दे.)। वि. **विदारित, विदारणीय**।

विदारना*–क्रि. स. दे. (हि. *विदरना*) फाड़ना, चीरना, **विदारना** (दे.)।

विदारनहार–वि. (हि. *विदारना*) चीड़ने या फाड़ने वाला।

विदारी–वि. (सं. *विदारिन्*) फाड़ने या चीरने वाला।

विदारीकंद–संज्ञा, पु. (सं.) एक कंद, **भुइँ-कुम्हड़ा** (ग्रा.)।

विदाही–संज्ञा, पु. (सं. *विदाहिन*) पेट में जलन उत्पन्न करने वाले पदार्थ।

विदिक-विदिश–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दो दिशाओं के बीच का

कोण।

विदित–वि॰ (सं॰) समझा या जाना हुआ, ज्ञात, मालूम, **विदित** (दे॰)।

विदिश, विदिश--संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दो दिशाओं के बीच का कोना, **दिकोण**। वर्तमान, भेलसा शहर (प्राचीन)।

विदीर्ण–वि॰ (सं॰) बीच से चीड़ा या फाड़ा हुआ, निहत, मार डाला हुआ, **बिदीरन** (दे॰)।

विदीरन–वि॰ (दे॰) विदीर्ण (सं॰)।

विदुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ज्ञाता, ज्ञानी, जानकार, पंडित, विद्वान, धृतराष्ट्र के राजनीति और धर्म-नीति में अतिकुशल मंत्री।

विदुष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पंडित, विद्वान।

विदुषी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पंडिता, पढ़ी-लिखी स्त्री।

विदूर–वि॰ (सं॰) जो अत्यंत दूर हो, बहुत दूर वाला। संज्ञा, पु॰ (दे॰) वैदूर्य्य मणि।

विदूषक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मसख़रा, दिल्लगीबाज़, नक़्क़ाल, भाँड़, मंत्री, कामुक, विजयी ' नायक का वह अंतरंग मित्र जो अपने परिहासादि से उसे (या नायिका को) प्रसन्न करता तथा काम-केलि में सहायक होता है। (नाटय॰)।

विदूषवना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विदूषण*) कलंक या दोष (ऐब) लगाना, सताना, दुख देना। क्रि॰ अ॰ दुखी होना।

विदेश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परदेश, दूसरा देश, **बिदेस** (दे॰)।

विदेशी, विदेशीय–वि॰ (सं॰) अन्य देश संबंधी, अन्य देश-वासी, परदेशी, **परदेसी, बिदेसी** (दे॰)।

विदेह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शरीर-रहित, बिना देह का, राजा जनक, जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हो, मिथिला का प्राचीन नाम, संज्ञा शून्य, विदेह (दे॰)। वि॰ (सं॰) वे क्षुध, बेहोश, अचेत।

विदेह-कुमारी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) **विदेह-सुता, विदेह-तनया,** जानकी जी, सीता जी, विदेह-कन्या, **विदेहतनुजा, विदेहात्मजा, विदेह-पुत्री**।

विदेहपुर-विदेहनगर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जनकपुर। स्त्री॰ **विदेह-पुरी, विदेह-नगरी**।

विदेही–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विदेहिन्*) ब्रह्म।

विद्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पंडित, विद्वान, जानकार, बुधग्रह (ज्यो॰)।

विद्ध–वि॰ (सं॰) बीच से बेधा या छेद किया हुआ, फेंका हुआ, चुटहिल, छेदा या सटा हुआ, टेढ़ा। वि॰ (दे॰) **वृद्ध** (सं॰)।

विद्यमान–वि॰ (सं॰) उपस्थित, मौजूद, हाजिर, प्रस्तुत।

विद्यमानता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मौजूदगी, हाजिरी, उपस्थिति।

विद्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शिक्षादि से प्राप्त ज्ञान, इल्म, वे शास्त्रादि जिनसे ज्ञान प्राप्त हो, जानकारी विद्या के चार और चौदह भेद कहे गए हैं, 4 वेद और उपवेद (आयु, धुनः, गांधर्व, अर्थशास्त्र), षडंग (वेदांग) शास्त्र (मीमांसा, न्यायादि 6 शास्त्र), धर्मशास्त्र (स्मृति, भूगर्भादि अन्यशास्त्र (विज्ञान), काव्य कोषादि (साहित्य), पुराण (उपपुराण), आर्या छंद का पंचम भेद, दुर्गा, **विद्या** (दे॰)।

विद्यागुरु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिक्षक, पढ़ाने वाला, विद्या में बड़ा।

विद्यादान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विद्या पढ़ाना या देना।

विद्याधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किन्नर, गंधर्व तथा अन्य खेचरादि की एक देव योनि विशेष। पंडित, विद्वान, एक अस्त्र। यौ॰ **विद्याधरास्त्र**।

विद्याधरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विद्याधर (देवता) की स्त्री।

विद्याधारी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *विद्याधारिन्*) 4 मगण का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

विद्यारंभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विद्या पढ़ना शुरू करने का एक संस्कार विशेष।

विद्यार्थी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *विद्यार्थिन्*) छात्र, शिष्य, विद्या पढ़ने वाला।

विद्यालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाठशाला।

विद्यावान्–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विद्यावत्*) विद्वान, पंडित, ज्ञानी, **विद्यावन्त**।

विद्युत्–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बिजली।

विद्युत्मापक, विद्युन्मापक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *विद्युत्+मापक*) बिजली नापने का यंत्र, जिससे बिजली की शक्ति और गति जानी जाती है।

विद्युतमाला, विद्युन्माला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) बिजली का समूह या क्रम, दो मगण और दो गुरु वर्णों (8 गुण वर्णों) का एक वर्णिक दंद।

विद्युतमाली, विद्युन्माली–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विद्युत्+मालिन्*) एक राक्षस (पुरा॰) भ और म (गण) और 2 गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

विद्युल्लेखा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दो भगण (6 गुरु वर्णों) का एक वर्णिक छंद (पिं॰) **शेषराज,** बिजली की धारा या रेखा, बिजली।

विद्रधि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पेट के भीतर का एक मारक फोड़ा, ट्यूमर।

विद्रावण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भागना, फाड़ना, उड़ाना, पिघलना, नष्ट कर्त्ता। वि॰ **विद्रावणीय, विद्रावित**।

विद्रुम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मूँगा, प्रवाल।

विद्रोह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) द्वेष, राजद्रोह, बलवा, क्रांति, विप्लव, बगावत, हुल्लड़, राज्य को नष्ट करने या क्षति पहुँचाने वाला उपद्रव।

विद्रोही–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विद्रोहिन्*) द्वेषी, बलवाई, बागी, हुल्लड़ करने वाला, राजद्रोही।

विद्वत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पांडित्य, पंडिताई, **विद्वता** (दे॰)।

विद्वान्–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विद्वस्*) पंडित, ज्ञानी, जिसने बहुत विद्या पढ़ी हो।

विद्वेष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) द्रोह, बैर, शत्रुता।

विद्वेषण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) द्रोह, बैर, शत्रुता, दो व्यक्तियों में शत्रुता कराने का एक प्रयोग (तंत्र) बैरी, दुष्टता, शत्रु।

विध*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विधि*) विधाता, विधि, ब्रह्मा, **विधि** (दे॰)।

विधना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विधि*) प्राप्त करना, ऊपर लेना, साथ लगाना, **बिधना** (दे॰) भिदना, बेधा जाना। संज्ञा, स्त्री॰ भवितव्बता, होनहार, होनी। संज्ञा, पु॰ विधि, ब्रह्मा, **बिधिना** (दे॰)।

विधर्म्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दूसरे का या पराया धर्म।

विधर्मी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विधर्म्मिन्*) धर्मच्युत, पर या अन्य धर्मानुयायी, धर्म-भ्रष्ट, धर्म के विपरीताचार करने वाला।

विधवा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पति-विहीन स्त्री, बेवा, राँड़ स्त्री।

विधवापन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विधवा+पन* हि॰ *प्रत्य॰*) रँड़ापा, वैधव्य।

विधवाश्रम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विधवाओं के पालन-पोषणादि के प्रबंध का स्थान।

विधाँसना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *विधंसना*) नष्ट या बरबाद करना।

विधाता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विधातृ*) प्रबंध या विधान करने वाला, उत्पन्न करने या सृष्टि रचने वाला, विरंचि, ब्रह्मा, परमेश्वर, विधाता। स्त्री॰ **विधात्री**।

विधान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी कार्य की विधि या व्यवस्था, अनुष्ठान, प्रबंध, आयोजन, अंतजाम, परिपाटी, प्रणाली, पद्धति रीति, निर्माण, रचना, युक्ति, उपाय, आज्ञादान, नाटक में किसी वाक्य से सुख-दुख के एक साथ प्रगट किए जाने का स्थान (नाटय॰)।

विधायक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विधान या प्रबंध करने वाला, वनाने वाला। स्त्री॰ **विधायिका**।

विधि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ढंग, किसी कार्य की रीति, प्रणाली, तरीका, व्यवस्था, युक्ति, योजना, **बिधि** (दे॰)। **मु॰ विधि बैठना (बैठाना)**–ठीक मेल (मिलाना) अनुकूलता होना (करना), अभीष्ट व्यवस्था होना (करना)। **विधि मिलना (मिलाना)**–आय-व्यय का हिसाब ठीक होना। विवाह के लिए वरवधु की जन्म पत्रिका का सही मिलान हो जाना। शास्त्रादेश, शास्त्रीय आज्ञा या व्यवस्था, शास्त्रोक्त विधान, क्रिया का वह रूप जिससे आदेश या आज्ञा का अर्थ प्रगट हो (व्या॰)। एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का विधान फिर से किया जाए (अ॰ पी॰)। आचार-व्यवहार, चाल-ढाल। यौ॰ **गति विधि**–चेष्टा और कार्यवाही। प्रकार, भाँति, तरह, किस्म। संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मा, विधाता।

विधिना, विथिना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) विधि, ब्रह्मा।

विधिपुर, विधिलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्मलोक।

विधिरानी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *विधि+रानी* हि॰) ब्रह्मा की स्त्री, सरस्वती।

विधि-पूर्वक–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (सं॰) यथाविधि, यथा रीति, संविधान।

विधिवत्–क्रि॰ वि॰ (सं॰) पद्धति या रीति के अनुसार, उचित रूप से, यथाविधि, जैसा चाहिए वैसा।

विधुंतुद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राहु।

विधु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रमा, शशि, मयंक, विष्णु, ब्रह्मा।

विधुदार, विधुदारा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *विधुदारा*) रोहिणी, चंद्र-पत्नी।

विधुबंधु—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुमुद का पुष्प।

विधुवदनी—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमुखी या सुरूपा स्त्री।

विधुबैनी*†—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *विधुवदनी*) सुंदर स्त्री, मयंक-मुखी।

विधुर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) घबराया हुआ, दुखी, विकल, व्याकुल, अशक्त, असमर्थ; पत्नी-विहीन पति।

विधुरानना—वि॰ यौ॰ (सं॰) ग्लानमुखी।

विधुवदनी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुंदरी स्त्री, चंद्रमुखी, चंद्रमा सा मुखवाली।

विधुत—वि॰ (सं॰) कंपित, हिलाया गया।

विधेया—वि॰ (सं॰) कर्त्तव्य, जिसका करना उचित हो, करणीय, उचितानुष्ठान वाला, जिसका विधान होने वाला हो, जो विधि या नियम से जाना जाए, अधीन, वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जावे (व्या॰), वशीभृत, होनहार।

विधेयाविमर्ष—संज्ञा, पु यौ॰ (सं॰) एक काव्य दोष, जहाँ प्रधानतया कहने योग्य या कथनीय बात वाक्य-रचना में छिपी या दबी रहे।

विध्याभास—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक अर्थालंकार जिसमें किसी महान् अनिष्ट के होने की संभावना सूचित करते हुए अनिच्छा के साथ विवश हो किसी बात की अनुमति दी जावे (काव्य॰)।

विध्वंस—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विनाश, बरबादी, खराबी। वि॰ **विध्वंसक**।

विध्वंसी—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विध्वंसिन्*) नाश करने वाला, बिगाड़ने वाला। स्त्री॰ **विध्वंसिनी**।

विध्वस्त—वि॰ (सं॰) नष्ट किया हुआ।

विनत—वि॰ (सं॰) विनीत, नम्र, शिष्ट, झुका हुआ।

विनता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कश्यप-मयी (दक्ष प्रजापति की कन्या) और गरुड़ की माता (अप॰ संज्ञा, **वैनतेय**)।

विनति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, विनय, झुकाव, विनती, प्रार्थना।

विनती—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *विनति*) नम्रता, शिष्टता, विनय, सुशीलता, प्रार्थना, झुकाव, **बिनती, बिन्ती** (दे॰)।

विनम्र—वि॰ (सं॰) सुशील, विनीत, नम्र, झुका हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **विनम्रता**।

विनय—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नम्रता, प्रार्थना, विनती, नीति, बिनय, **बिनै** (दे॰)। वि॰ **विनयी**।

विनयपिटक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बौद्धों का एक आदि शास्त्र।

विनयशील—वि॰ (सं॰) सुशील, शिष्ट, विनम्र, **बिनैसील** (दे॰)।

विनयी—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विनयिन्*) विनय-युक्त, सुशील, विनम्र।

विनयोक्ति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) विनय-वाक्य, विनीतवाणी।

विनशन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विनाश, नाश, बरबादी, नष्ट होना। वि॰ **विनष्ट, विनश्वर**।

विनश्वर—वि॰ (सं॰) अनित्य, नाशवान, सदा या चिरकाल न रहने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **विनश्वरता**।

विनष्ट—वि॰ (सं॰) नष्ट, ध्वस्त, नष्ट-भ्रष्ट, तबाह, बरबाद, खराब, मृत, पतित, बिगड़ा, हुआ।

विनसना*—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विनशन*) नष्ट होना, मिट जाना, ख़राब या बरबाद होना, **बिनसना** (दे॰)। स॰ रूप—**बिनसाना, बिनसावना,** प्रे॰ रूप—**बिनसवाना**।

बिनसाना—क्रि॰ स॰ (दे॰) नष्ट करना, बिगाड़ना, **बिनसावना** (दे॰)।

विना—अव्य॰ (सं॰) बिना (दे॰) अभाव में, अतिरिक्त, बगैर, सिवा, रहने या होने की दशा में।

विनाशक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ध्वंस, लोप, ख़राबी, बरबादी, नाश, **बिनास** (दे॰)।

विनाशन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाश या नष्ट करना, बरबाद या ख़राब करना, संहार या वध करना, लोप या लय करना, **विनासन** (दे॰)। वि॰ **विनाशी, विनाश्य, विनाशनीय**।

विनास*‡—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *विनाश*) नाश। संज्ञा, पु॰ (दे॰) नासिका, नकसीर, **बिनास** (दे॰)।

विनासन*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विनाशक*) ध्वंस, नाश, **बिनासन** (दे॰)।

विनिपात—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पतन, विपद्, अधःपात्।

विनिमय—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बदला करना, एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी देना, (अं॰) बार्टर, परिवर्तन, धोख़ा, भ्रम।

विनियोग—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अभीष्ट फल के हेतु किसी वस्तु

का प्रयोग, काम में लाना, उपयोग, वर्त्तना, मंत्र-प्रयोग (वेदिक कृत्य) भेजना, प्रेषण।

विनिर्गत–वि. (सं.) बाहर निकला हुआ, बीता हुआ।

विनीत–वि. (सं.) विनयी, सुशील, नम्र, शिष्ट, धार्मिक, नीत्यानुसार आचार व्यवहार करने वाला।

विनीतात्मा–वि. यौ. (सं.) सुशील, नम्र, शिष्ट।

विनु*†–अव्य. दे. (सं. *बिना*) बिना, वगैर, अतिरिक्त, सिवा, छोड़कर, बिनु, (दे.)।

विनोद–संज्ञा, पु. (सं.) तमाशा, मनोरंजक, कुतूहल, कौतुक, क्रीड़ा, खेलकूद, हर्षानंद, हँसी-दिल्लगी, प्रसन्नता, परिहास, आमोद-प्रमोद।

विनोदी–वि. (सं. *विनोदिन्*) आनंदी जीव, हँसी-ठट्ठा करने वाला, आमोद-प्रमोद करने वाला, कौतुकी। स्त्री. **विनोदिनी**।

विन्यस्त–वि. (सं.) स्थापित, क्रम से रखा हुआ।

विन्यास–संज्ञा, पु. (सं.) स्थापन, रचना, सजाना, धरना, यथास्थान जड़ना, रखना। वि. **विन्यस्त**। यौ. **वाक्य-विन्यास**।

विपंची–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वीणा, खेलकूद, क्रीड़ा-कौतुक।

विपक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) प्रतिद्वंद्वी, विरोधी, पक्ष, खंडन, प्रतिवादी, शत्रु, विरोधी, अपवाद, बाधक नियम (व्या.)।

विपक्षी–संज्ञा, पु. (सं. *विपक्षिन्*) विरुद्ध पक्षवाला, प्रतिद्वंद्वी, शत्रु, प्रतिवादी, बैरी, बिना पंख का पक्षी।

विपत्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विपद, आपत्ति, दुख या शोक की प्राप्ति, संकट-काल, बुरे दिन, विपत्ति, बिपत्ति (दे.)। **यौ. विपत्तिकाल। मु. विपत्ति पड़ना (आना)**–आपत्ति आना, कष्ट, दुख या संकट आ जाना। **विपत्ति ढहना (ढाहना)**–अकस्मात् कोई आपत्ति आ पड़ना (उपस्थित करना)। कठिनाई, झगड़ा, झंझट, बखेड़ा।

विपथ–संज्ञा, पु. (सं.) कुमार्ग, बुरी राह।

विपद्–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आपत्ति, विपत्ति।

विपदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आपत्ति, विपत्ति, संकट, आपदा।

विपन्न–वि. (सं.) आर्त्त, विपत्तिग्रस्त, दुखी, संकटापन्न।

विपरीत–वि. (सं.) विरुद्ध, विलोम, उलटा, प्रतिकूल, रुष्ट, ख़िलाफ़, हित के अनुपयुक्त तथा अहित में तत्पर, **बिपरीत** (दे.)। संज्ञा, पु. (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें कार्य-साधक की ही कार्य सिद्धि में बाधक होना कहा जाता है (केश.)।

विपरीतोपमा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) उमालंकार का एक भेद जिसमें कोई भाग्यशाली अति दीन दशा में दिखाया जाए (केश)।

पिपर्य्यय–संज्ञा, पु. (सं.) और का और, उलटा, व्यतिक्रम, विरुद्ध, उलट-पलट, विलोम, इधर का उधर, प्रतिकूल, अव्यवस्था अन्यथा समझना, भूल, गड़बड़ी।

विपर्य्यस्त–वि. (सं.) गड़बड़, अस्तव्यस्त, अव्यवस्थित।

विपर्य्यास–संज्ञा, पु. (सं.) प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा-पुलटा, व्यतिक्रम।

विपल–संज्ञा, पु. (सं.) एक पल का साठवाँ भाग या अंश।

विवश्चित–संज्ञा, पु. (सं.) विद्वान, पंडित, दोपज्ञ, बुद्धिमान।

विपाक–संज्ञा, पु. (सं.) पकना, पूर्ण दशा को प्राप्त होना। परिणाम, कर्म-फल, दुर्दशा, दुर्गति।

विपादिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विमाई नामक रोग, पहेली, प्रहेलिका।

विपासा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) व्यास नदी (पंजा.)।

विपिन–संज्ञा, पु. (सं.) वन, अरण्य, जंगल, उपवन, वाटिका, **बिपिन** (दे.)।

विपिनविहारी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मृग, वन में आनंद या विहार करने वाला, श्रीकृष्ण।

विपुल–वि. (सं.) वृहत्, परिमाण, विस्तार और संख्या में अति अधिक या बड़ा और कई या अनेक, अगाध, बड़ा।

विपुलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आधिक्य, बाहुल्य, अधिकता।

विपुला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बसुधा, भेदनी, भूमि, भर (गण) और दो लघु वर्णों का एक छंद, आर्या छंद के 3 भेदों में से एक (पिं.)।

विपुलई, विपुलाई*–संज्ञा, स्त्री. (सं. *विपुल+आई* हि. *प्रत्य.*) विपुलता।

विपोहना*–क्रि. स. दे. (सं. *विप्रीति*) पोतना, लीपना, नाश करना, पोहना।

विप्र–संज्ञा, पु. (सं.) ब्राह्मण, वेदपाठी, पुरोहित।

विप्र-चरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विप्रपाद, विष्णु के हृदय पर

भृगुमुनि के चरण चिह्न (पुरा.), **भृगुलता,** ब्राह्मण का पैर।

विप्रचित्ति—संज्ञा, पु. (सं.) राहु-जननी सिंहिका का पति, एक दानव (पुरा.)।

विप्रपद, विप्र-पाद—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विप्र-चरण, भृगुलता।

विप्रराम—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परशुराम।

विप्रलंभ—संज्ञा, पु. (सं.) अभीष्ट की अप्राप्ति, वियोग, प्रिय का न मिलना, विछोह, जुदाई, विरह, पार्थक्य, विच्छेद, छल, धूर्तता, धोखा, विच्छेद, शृंगार रस का एक भेद, वियोग (सा.)।

विप्रलब्ध—वि. (सं.) अभीष्ट वस्तु जिसे न मिली हो, वंचित, रहित, वियोगी, विरही, वियोग को प्राप्त।

विप्रलब्धा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) वियोगिनी, संकेन-स्थल पर प्रिय को न पाकर दुखी हुई नायिका।

विप्लव—संज्ञा, पु. (सं.) उत्पात, अशांति, क्रांति, विद्रोह, बलवा, उपद्रव, उथल-पुथल, जल की बाढ़, आपत्ति।

विफल—वि. (सं.) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निस्सार, जिसमें फल न लगा हो, परिणाम-रहित, प्रयत्नवान, असफल, निष्फल। संज्ञा, स्त्री. **विफलता**।

विबुध—संज्ञा, पु. (सं.) देवता, चंद्रमा, बुद्धिमान, पंडित।

विबुधनदी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सुर-नदी, गंगा जी, देवापगा।

विबुधविलासिनी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देव-वधूटी, देवांगना, अप्सरा।

विबुधबेलि—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देवलतिका, कल्प-लता, **विवुधवल्ली, विवुधवल्लरी, देववल्ली**।

विबोध—संज्ञा, पु. (सं.) जागना, जागरण, पूर्ण और अच्छा ज्ञान या बोध, सावधान या सचेत होना, सतर्क या सजग होना।

विभंग—संज्ञा, पु. (सं.) उपल, ओला।

विभक्त—वि. (सं.) विभाजित, बँटा हुआ, पृथक् या विलग किया हुआ।

विभक्ति—संज्ञा, स्त्री. (सं.) बाँट, विभाग, पार्थक्य, बिलगाव, कारकों के चिह्न या वाक्य के किसी शब्द का क्रिया-पद से संबंध-सूचक प्रत्यय या शब्द (जो शब्द के आगे लगाया जाता है-व्या.)।

विभव—संज्ञा, पु. (सं.) प्रताप, धन, संपत्ति, अधिकता, ऐश्वर्य, उन्नति, बहुतायत, मुक्ति, मोक्ष।

विभवशाली—वि. (सं.) **विभववान्,** प्रतापी, धनी, संपत्तिशाली, ऐश्वर्य या वैभव वाला।

विभांडक—संज्ञा, पु. (सं.) ऋषि शृंग के पिता, एक महर्षि।

विभाँति—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वि+भाँति* हि.) भेद, प्रकार, किस्म। वि. अनेक भाँति का। अव्य. अनेक भाँति से।

विभा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) कांति, शोभा, किरण, प्रकाश।

विभाकर—संज्ञा, पु. (सं.) प्रभाकर, सूर्य, चंद्र, अग्नि, आग, राजा।

विभाग—संज्ञा, पु (सं.) बँटवारा, बाँट, हिस्सा, अंश, भाग, बखरा, सर्ग, प्रकरण, अध्याय, महकमा, कार्य क्षेत्र।

विभाजक—संज्ञा, पु. (सं.) अंश या विभाग-कर्त्ता, हिस्सा करने वाला, पृथक् या अलग करने वाला, बाँटने वाला।

विभाजन—संज्ञा, पु. (सं.) बाँटने की क्रिया, भोजन, पात्र। वि. **विभाजनीय, विभक्त, विभाजित**।

विभाजित—वि. (सं.) बँटा हुआ, विभक्त।

विभाज्य—वि. (सं.) बाँटने-योग्य, विभाग करने योग्य, जिसे बाँटना हो, जिसका हिस्सा या विभाग करना हो, **विभाजनीय**।

विभाव- संज्ञा, पु. (सं.) प्रभात, प्रातःकाल।

विभाति—संज्ञा, स्त्री. (सं. *विभा*) शोभा, कांति, छवि, छटा, दीप्ति।

विभाना*—क्रि. अ. दे. (सं. *विभा+ना प्रत्य.*) प्रकाशित होना, झलकना, चमकना, शोभा देना।

विभारना*—क्रि. अ. दे. (सं. *विभार+ना*) सोहना, चमकना, झलकना, शोभा देगा।

विभाव—संज्ञा, पु. (सं.) रसों के रत्यादि स्थाई भावों के आश्रयी तथा उत्पन्न या उद्दीप्त करने वाले पदार्थादि (काव्य.)।

विभावना—संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक अर्थालंकार जहाँ कारण के बिना या विपरीत कारण से कार्य का होना कहा जाए।

विभावरी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) निशा, रात, रात्रि, तारकित रजनी, कुटनी, कुट्टनी, दूती।

विभावसु—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वसुओं के पुत्र सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, मदार का पेड़।

विभास—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चमक, प्रकाश।

विभासना*—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विभास+ना हि॰ प्रत्य॰*) चमकना, शोभित या प्रकाशित होना, झलकना।

विभिन्न—वि॰ (सं॰) पृथक्, विलग, जुदा, अनेक प्रकार का। "पृथक् विभिन्नश्रुति मंडले स्वरे :"—माघ।

विभीतक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहेरा फल।

विभीति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भय, डर, संशय, संदेह, शंका, **विभीतिका**।

विभीषण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) रावण का छोटा भाई जो रावण के बाद लंका का राजा हुआ, **बभीखन** (दे॰)।

विभीषिका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भीति, भय, डराना, भयंकर दृश्य या कांड।

विभु—वि॰ (सं॰) सर्वत्र गमनशील, सर्वत्र, सर्वकाल वर्तमान या व्यापक, विस्तृत, महान्, मन, दृढ़, अचल, नित्य, शाश्वत, सर्वशक्तिमान, समर्थ। संज्ञा, पु॰ प्रभु, जीवात्मा, ब्रह्म, ईश्वर, विष्णु, शिव, ब्रह्मा।

विभुता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सर्व व्यापकता, प्रभुत्व, ऐश्वर्य, प्रताप।

विभूति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वृद्धि-समृद्धि, ऐश्वर्य, विभव, धन, संपत्ति, बढ़ती, योग की दिव्य शक्ति जिसमें अणिमा, महिमा, लघुमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं, राख, भस्म, शिवांग रज, लक्ष्मी, सृष्टि, विश्वामित्र द्वारा राम को दिया गया एक दिव्यास्त्र।

विभूषण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भूषण, अलंकार, गहना, शोभा। वि॰ **विभूषणीय, विभूषित**।

विभूषन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विभूषण*) गहना, शोभा।

विभूषना*—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विभूषण*) सँवारना, गहने आदि से सजना या सुशोभित करना, अलंकृत करना।

विभूषित—वि॰ (सं॰) अलंकृत, सुसज्जित, गहनों आदि से सुशोभित, शोभित, अच्छी वस्तु (गुणादि) से युक्त, सहित।

विभेटन*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *भेंट*) समालिंगन, गले मिलना।

विभेद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अंतर, पार्थक्य, विलगाव, फ़रक़, विभिन्नता, अनेक भेद या प्रकार, घुसना धँसना।

विभेदना*—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *विभेद*) भेद या अंतर डालना, भेदना, छेदना, छेदकर घुसना, भेदन करना।

विभौ*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विभव*) ऐश्वर्य, प्रताप, संपत्ति, धन।

विभ्रम—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पर्यटन, भ्रमण, फेरा, चक्कर, भ्रान्ति, संदेह, भ्रम, संशय, आकुलता, स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम-वश उलटे वस्त्राभरण पहन कभी तो क्रोध ओर कभी हर्षादि प्रगट करती हैं (साहि॰)।

विभ्राट—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बखेड़ा, झगड़ा, विपत्ति, आपत्ति, उपद्रव, संकट।

विमंडन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) संवारना, सजाना, शृंगार करना। वि॰ **विमंडित, विमंडनीय**।

विमंडित—वि॰ (सं॰) सुसज्जित, अलंकृत, सुशोभित, सजा सजाया, सजा हुआ, युक्त, सहित (भली वस्तु से)।

विमत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) उलटा या विरुद्ध मत, प्रतिकूल सम्मति, विपरीत सिद्धांत।

विमति—संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा जनक का बंदीजन। "सुमति विमति हैं नाम, राजन को वर्णन करें"—राम॰।

विमत्सर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अति अभिमान।

विमन—वि॰ (सं॰ *विमनस्* उन्मन, उदास, अनमना, दुखी। संज्ञा, स्त्री॰ **विमनता**।)

विमनस्क—वि॰ (सं॰) अन्यमनस्क, उन्मन, उदास, अनमना, विमन।

विमर्द—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मर्दन, रगड़।

विमर्दन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भली-भाँति मलना-ढलना, मार डालना, नष्ट करना। वि॰ **विमर्दनीय, विमर्दित**।

विमर्श—संज्ञा, पु॰ (सं॰) परामर्श, किसी विषय पर विचार, विवेचन, समीक्षा, आलोचना, परीक्षा।

विमर्शन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) परामर्श, विचार, विवेचन, समीक्षा, आलोचना, परीक्षा। वि॰ **विमर्शनीय**।

विमर्ष—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विमर्श, परामर्श, विवेचन, समीक्षा,

आलोचना, परीक्षा, नाटक का एक अंग जिसमें व्यवसाय, प्रसंग, अपवाद, खेद, विरोध, शक्ति और आदानादि का वर्णन हो (नाट्य.)।

विमल–वि. (सं.) निर्मल, साफ, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष, सुंदर, मनोहर। स्त्री. **विमला**। संज्ञा, स्त्री. **विमलता**।

विमलध्वनि–संज्ञा, पु. (सं.) छः पदों का एक छंद (पिं.)।

विमला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सरस्वती।

विमलापति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मा जी, विमलेश।

विमाता–संज्ञा, स्त्री. (सं. *विमातृ*) सौतेली माँ।

विमान–संज्ञा, पु. (सं.) नभ-मार्ग-गामी रथ, वायु-यान, हवाई-जहाज, उड़नखटोला, मृतक की सजी हुई अर्थी, गाड़ी, सवारी, रथ, घोड़ा आदि, रामलीला के स्वरूपों का सिंहासन, परिमाण, अनादर, विमान, **बेमान** (दे.)।

विमुचना–क्रि. स. (दे.) फेंकना, छोड़ना, विमोचन।

विमुक्त–वि. (सं.) भली-भाँति मुक्त, पृथक्, छूटा हुआ, मोक्ष प्राप्त, स्वच्छंद, स्वतंत्र, बरी, छोड़ा या फेंका हुआ (दंड या हानि से) बचा हुआ।

विमुक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं. *मुच्+क्तिन्*) मोक्ष, छुटकारा, रिहाई, मुक्ति।

विमुख–वि. (सं.) मुखहीन, किसी बात से जिसने मुँह मोड़ लिया हो, निवृत्त, विरत, बेपरवाह, विरोधी, उदासीन, विरुद्ध, असफल, अपूर्ण काम, अप्रसन्न, निराश। संज्ञा, स्त्री. **विमुखता**।

विमुग्ध–वि. (सं.) अज्ञान, मूर्ख, विशेष मोहित, उन्मत्त, भ्रांत, विकल। संज्ञा, स्त्री. **विमुग्धता**।

विमुद–वि. (सं.) उदास, खिन्न।

विमूढ़–वि. (सं.) विशेष रूप से मोहित, अत्यंत मुग्ध, भ्रमित, भ्रांत, अचेत, बेसमझ, मूर्ख। स्त्री. **विमूढ़ा**। संज्ञा, स्त्री. **विमूढ़ता**।

विमोचन–संज्ञा, पु. (सं.) मुक्त करना, छोड़ना या छुड़ाना, बंधनादि खोलना, फेंकना, रिहाई, बंधन से छुड़ाना। वि. **विमोच्य, विमोचनीय, विमोचित**।

विमोचना*–क्रि. स. दे. (सं. *विमोचन*) मुक्त करना, छोड़ना, गाँठ या बंधनादि खोलना, निकालना, रिहा या बाहर करना।

विमोह–संज्ञा, पु. (सं.) अज्ञान, भ्रम, मोह, बेहोशी, मोहित होना, आसक्ति। वि. **विमोहक, विमोहित**।

विमोहन–संज्ञा, पु. (सं.) चित्त लुभाना, मोहित करना, सुधि-बुधि भुलाना, कामदेव के पाँच बाणों में से एक मोह। वि. **विमोहित, विमोही, विमोहनीय**।

विमोहनशील–वि. (सं.) मोहित करने या मोहने वाला, भ्रम में डालने वाला।

विमोहना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विमोहन*) लुभा जाना, मोहित होना, बेहोश होना, धोखा खाना। क्रि. स. (दे.) लुभाना, मोहित या बेसुध करना, भ्रम या धोखे में डालना।

विमोहा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *विमोहा*) विजोहा छंद पिं.)।

विमोहित–वि. (सं.) लुब्ध, मुग्ध, लुभाया हुआ, अचेत, मूर्च्छित, भ्रमित।

विमोही–वि. (सं. *विमोहिन्*) चित्त लुभाने वाला, सुधि-बुधि भुलाने या मोहित करने वाला, अचेत या मूर्च्छित करने वाला, निष्ठुर, निर्दय, भ्रम में डालने वाला। स्त्री. **विमोहिनी**।

विमौट–संज्ञा, पु. दे. (सं. *वल्मीक*) दीमकों का बनाया घर, बाँबी।

वियुक्त–वि. (सं.) विलग, वियोगी, विरही, विछोही, हीन, रहित, जुदा, पृथक्।

वियोग*–संज्ञा, पु. (सं.) जुदाई, विरह, बिछोह, विच्छेद, पृथक्ता। वि. **वियोगी**।

वियोगांत–वि. यौ. (सं.) दुखांत कथा का नाटक या उपन्यास। विलो. **संयोगांत, सुखांत**।

वियोगिन-वियोगिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वियोगिनी*) पति या प्रिय से विलग स्त्री, विरहिणी, विछोहिनी।

वियोगी–वि. (सं. *वियोगिन्*) विरही, विछोही, जो पत्नी या प्रिया से अलग, वियुक्त या दूर हो। स्त्री. **वियोगिनी, वियोगिनि**।

वियोजक–संज्ञा, पु. (सं.) दो मिली हुई चीज़ों को भिन्न या अलग करने वाला, वह छोटी संख्या (राशि) जो उसी जाति की बड़ी संख्या में से घटाई जावे (गणि.)।

वियोजन–संज्ञा, पु. (सं.) घटाना, पृथकरण। वि. **वियोजनीय,**

वियोजित, वियोज्य।

विरंग–वि. (सं.) फीके या बुरे रंग का, बदरंग, अनेक रंगों का। स्त्री. **विरंगी**।

विरंचि–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्मा, विधाता।

विरंचिपत्नी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सरस्वती, **विधि-प्रिया**।

विरंचिसुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नारद, **विरंचितनय**।

विरक्त–वि. (सं.) उदासीन, विमुख, विरागी, अप्रसन्न, त्यागी।

विरक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) उदासीनता, अप्रसन्नता, प्रेम का अभाव, विराग। विलो. **अनुरक्ति**।

विरचन–संज्ञा, पु. (सं.) बनाना, निर्माण। वि **विरचनीय, विरचित**।

विरचना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विरचन*) सँवारना, बनाना, रचना, निर्माण करना, सजाना। क्रि. अ. दे. (सं. *वि+रंजन*) विरक्त होना।

विरचित–वि. (सं.) लिखित, निर्मित, बनाया या रचा हुआ।

विरत–वि. (सं.) विरक्त, विमुख, निवृत्त, वैरागी, जो तत्पर, अनुरक्त या लीन न हो, विरागी, अत्यंत या विशेष रत, अति लीन।

विरति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **विरक्ति**, वैराग्य, त्याग, चाह का अभाव, उदासीन।

विरथ–वि. (सं.) रथ-रहित, बिना रथ का, पैदल। वि. (दे.) व्यर्थ।

विरथा-बिरथा–वि. (दे.) वृथा, व्यर्थ।

विरद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विरुद्ध*) यश, प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्त्ति, प्रशस्ति, यश-कीर्त्तन।

विरदावली–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *विरुदावली*) यशोगान, कीर्त्ति-कथा, प्रशस्तिगाथा, **सुयश-गाथा**।

विरमना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *विरमण*) ठहर या रम जाना, विराम करना, रुक जाना, चित्त लगाना, वेगादि का कम होना या थमना, मुगध हो ठहर जाना। स. रूप–**विरमाना**, प्रे. रूप–**विरमावना**।

विरल–वि. (सं.) विडर, दूर-दूर। (विलो. **सघन**) दुर्लभ, निर्जन, थोड़ा, पतला, अलप, न्यून जो पास-पास या घना न हो, विरला, शून्य। संज्ञा, स्त्री. **विरलता**।

विरला–वि. दे. (सं. विरल) बिखर, दूर-दूर, दुर्लभ, जो पास-पास या घना न हो, कोई-कोई, निर्जन, अल्प, थोड़ा, कम, शून्य, पतला।

विरस–वि. (सं.) नीरस, फीका, रसहीन, अप्रिय, अरुचिकर, रस-रहित या रस-निर्वाह-हीन काव्य। संज्ञा, स्त्री. **विरसता**।

विरह–संज्ञा, पु. (सं.) किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का विलग होना, वियोग, विद्रोह, विच्छेद, जुदाई, वियोग-व्यथा।

विरहिणी–वि. स्त्री. (सं.) वियोगिनी, **विरहिनी**।

विरहित–वि. (सं.) रहित, विना, विहीन, शून्य, वियोगी, विरह प्राप्त।

विरही–वि. (सं. *विरहिन्*) वियोगी, विछोही, प्रिया-हीन। स्त्री. **विरहिणी**।

विरहोत्कंठित–संज्ञा, पु. यो. (सं.) वह नायक जो नायिका के संयोग की पूरी आशा होने पर भी उससे न मिल सके।

विराग–संज्ञा, पु. (सं.) वैराग्य, त्याग, अनुरागाभाव, विषय-भोगों से निवृत्ति, विरक्ति। वि. **विरागी**।

विरागी–वि. (सं. *विरागिन्*) योगी, **बैरागी** (दे.) त्यागी, विरक्त।

विराज–संज्ञा. पु. (सं.) परमेश्वर का स्थूल रूप, आदि पुरुष, क्षत्रिय।

विराजना–क्रि. अ. दे. (सं. *विराजन*) फबना, शोभित होना, सोहना, छवि देना, उपस्थित होना, बैठना।

विराजमान–वि. (सं.) चमकता हुआ, सुशोभित, उपस्थित, बैठा हुआ, आसीन।

विराट्–संज्ञा, पु. (सं.) परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप या स्थूल शरीर, दीप्ति, कांति, आभा, क्षत्रिय। वि. बहुत बड़ा या भारी।

विराट–संज्ञा, पु. (सं.) मत्स्यदेश, मत्स्यदेश के राजा जिनके यहाँ अज्ञातवास में पांडव रहे थे (महा.)। वि. (दे.) बड़ा, भारी।

विराध–संज्ञा, पु. (सं.) कष्ट, पीड़ा, सताने वाला, लक्ष्मण से मारा गया दंडक वन का एक राक्षस, **विराध** (दे.)।

विराम–संज्ञा, पु. (सं.) ठहरना, रुकना, थमना, विश्राम करना, सुस्ताना, वाक्य का वह स्थान जहाँ बोलते या पढ़ते समय ठहरना आवश्यक है (दो भेद हैं :–*पूर्ण,*

अर्ध) इसका सूचक चिन्ह।) छंद में यति, देरी, विलंब।

विराव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शब्द, कलरव, बोली, शोर, हल्ला।

विरास–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *विलास*) विलास।

विरासी*–वि॰ दे॰ (सं॰ *विलासी*) विलासी।

विरुज–वि॰ (सं॰) रोग रहित, नीरोग।

विरुझना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *उलझना*) उलझना, अटकना। स॰ रूप–**विरुझाना, विरुझावना**, प्रे॰ रूप– **विरुझवाना**।

विरुद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राज स्तवन, यशकीर्त्तन, सुंदर भाषा में स्तुति, प्रशस्ति, राजाओं की प्रशंसासूचक पदवी (प्राचीन) यश, कीर्ति, ख्याति।

विरुदावली–संज्ञा, स्त्री (सं॰) यश-वर्णन, स्तवन, प्रशंसा, गुण-पराक्रमादि का विस्तृत कथन, कीर्ति-कीर्तन, **विरदावली** (दे॰)।

विरुद्ध–वि॰ (सं॰) प्रतिकूल, उलटा, विपरीत, अप्रसन्न, अनुचित। संज्ञा, स्त्री॰ **विरुद्धता**। क्रि॰ वि॰ प्रतिकूल दशा में।

विरुद्धकर्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *विरुद्धवर्मन्*) बुरे चाल-चलन वाला, श्लेषालंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई विरुद्ध फल सूचित होते हैं।

विरुद्धता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रतिकूलता, विपरीतता, विलोमता।

विरुद्धधर्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *विरुद्ध धर्मन्*) प्रतिकूल धर्म या स्वभाव वाला, विपरीताचारी।

विरुद्धरूपक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रूपकातिशयोक्ति नामक रूपालंकार का एक भेद (केशव॰)।

विरुद्धार्थ दीपक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दीपकालंकार का एक भेद जिसमें दो विरुद्ध क्रियाएँ एक ही बात से एक ही साथ होती हुई कही जाती हैं।

विरूप–वि॰ (सं॰) (स्त्री॰ *विरूपा*) कुरूप, बदशक्ल, भद्दा, शोभाहीन, परिवर्तित, बदला हुआ, उलटा, विरुद्ध, कई रूप-रंग का। संज्ञा, स्त्री॰ **विरूपता**।

विरूपाक्ष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महादेवजी, एक शिव-गण, एक दिग्गज, रावण का एक सेनापति।

विरेक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अतीसार रोग।

विरेचक–वि॰ (सं॰) दस्तावर, दस्त लाने या कराने वाला, मलभेदी।

विरेचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दस्तावर औषधि, जुलाबी दवा।

विरोचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रकाशमान, रवि-रश्मि, सूर्य, अग्नि, चंद्रमा, विष्णु, राजा वलि का पिता और प्रह्लाद के पुत्र।

विरोध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जो मेल में न हो प्रतिकूलता, अनैक्य, विपरीत या विरुद्ध भाव, शत्रुता, अनबन, व्याघात, एक साथ दो बातों का न होना, उलटी या विलोम, स्थिति, विनाश, नाटक का एक अंग जहाँ किसी प्रसंग-वर्णन में विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। एक अर्थालंकार जिसमें द्रव्य, जाति, गुण और क्रिया में से किसी एक का दूसरे द्रव्यादि में से किसी एक से विरोध प्रगट हो। वि॰ **विरोधक, विरोधी**।

विरोधना*–क्रि॰ स॰ (सं॰ *विरोधन*) विरोध करना, बैर या झगड़ा करना, प्रतिद्वंद्वी होना, विपरीत करना।

विरोधाभास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) द्रव्य जाति, गुण, क्रिया का विरोध सा सूचक, एक अर्थालंकार (अ॰ पी॰)।

विरोधी–वि॰ (सं॰ *विरोधिन्*) प्रतिकूलता या विरोध करने वाला, विपक्षी, रिपु, शत्रु, प्रतिकूल, बाधक। स्त्री॰ **विरोधिनी**।

विरोधोक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उलटी-पुलटी बातें कहना, अनर्थ वचन, विलोम-वाक्य, विरोध सूचक उक्ति (अलं॰)।

विरोधोपमा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उपमालंकार का एक भेद जहाँ किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी वस्तुओं से दी जावे।

विलंब–वि॰ (सं॰) देर, बेर, अतिकाल, अनुमान या आवश्यकता से अधिक, समय, **बिलम, बिलँब** (दे॰)।

विलंबना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *विलंबन*) देर करना, बेर लगाना, लटकना, चित्त लगने से रम या बस जाना, सहारा लेना।

विलंबित–वि॰ (सं॰) लटकता या झूलता हुआ, वह कार्य जिसमें देर हुई हो।

विल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विल, छेद, माँद।

विलक्षण–वि॰ (सं॰) विचित्र, अनोखा, अनूठा, असाधारण, अपूर्व, अद्भुत, **विलच्छन** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **विलक्षणता**।

विलखना–क्रि. अ. दे. (सं *विलाप*) रोना, विलाप करना, दुखी होना, **विलपना**। * क्रि. अ. (सं. *लक्ष*) ताड़ना, पता लगाना, समझना।

विलग–वि. (हि. *उप.+लगना*) अलग, पृथक्, भिन्न, माख या बुरा जानना, **विलग** (दे.)।

विलगना–क्रि. अ. दे. (हि. *विलग+ना प्रत्य.*) विभक्त या अलग होना, पृथक् या भिन्न होना, जुदा होना।

विलगना, विलगावना–क्रि. अ. दे. (हिं. *विलग*) अलग या पृथक् करना, भिन्न या जुदा करना।

विलपना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विलाप*) रोना, **विलपना** (दे.)। स. रूप–**विलपाना,** प्रे. रूप–**विलपवाना**।

विलम*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विलंद*) **विलँव** (दे.), देर, बेर, अबेर।

विलमना*–क्रि. अ. दे. (हि. *विलग+ना प्रत्य.*) देरी करना, ठहर जाना। स. रूप–**विलमाना, विरमाना**।

विलय–संज्ञा, पु. (सं.) प्रलय, नाश; लीन होना।

विलसन–संज्ञा, पु. (सं.) प्रमोद, खेल, क्रीड़ा, चमकना।

विलसना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विलस*) आनंद मनाना या भोगना, विलास करना, शोभा पाना। स. रूप–**विलसाना,** प्रे. रूप–**विलसवाना**।

विलाप–संज्ञा, पु. (सं.) क्रंदन, रोना, प्रलाप, रो-गे कर दुख कहना, रुदन, रोदन।

विलापना*–क्रि. अ. दे. (सं. *विलख*) रोना-चिल्लाना, शोक या क्रंदन करना, **बिलापना** (दे.)।

विलायत–संज्ञा, पु. (अ.) कोई अन्य देश जहाँ एक जाति के लोग रहते हों, दूसरों का दूर का देश।

विलायती–वि. (अ.) विलायत का विदेशी, दूसरे देश का बना हुआ।

विलास–संज्ञा, पु. (सं.) विषय भोग, आमोद-प्रमोद, आनंद, हर्ष, मनोविनोद, मनोरंजन, पुरुषों को लुभाने वाली स्त्रियों की प्रेम-सूचक क्रियाएँ, प्रसन्नकारी क्रिया, नाज़-नखरा, हाव-भाव, किसी वस्तु का हिलना, किसी अंग की मनहरण चेष्टा, अति-सुख-भोग, करादि अंगों का रुचिर संचालन। यौ. **भोग-विलास**।

विलासिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक अंक का रूपक (नाट्य.)।

विलासिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कामिनी, सुंदर स्त्री, वेश्या। ज, र, ज (गण) और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

विलासी–संज्ञा, पु. (सं. *विलासिन्*) भोग-विलास में अनुरक्त या लीन, भोगी-या कामी व्यक्ति, कामुक, कौतुकी, हँसोड़ा, क्रीड़ा करने वाला, आराम चाहने वाला, आराम-तलब। स्त्री. **विलासिनी**।

विलीन–वि. (सं.) छिपा हुआ, लुप्त, लय, जो दूसरे में लीन या मिल गया हो, नाश, अदृश्य, निमग्न, लोप। संज्ञा, स्त्री. **विलीनता**।

विलुप्त–वि. (सं.) अदृश्य, गुप्त।

विलेप–संज्ञा, पु. (सं.) लेप, उबटन।

विलोकना–क्रि. स. दे. (सं. *विलोकन*) देखना। संज्ञा, पु. **विलोकन**। वि. **विलोकनीय**।

विलोकित–वि. (सं.) देखा हुआ।

विलोचन–संज्ञा, पु. (सं.) नेत्र, आँख, नयन, आँख फोड़ने का काम।

विलोड़ना–क्रि स. दे. (सं. *विलोडन*) मँथना, महना, हिलोरना। संज्ञा, पु. (सं.) **विलोड़न**। वि. **विलोड़नीय, विलोड़ित**।

विलोप–संज्ञा, पु. (सं.) अदर्शन, नाश, ध्वंस, छिपा, लुप्त। वि. **विलुप्त, विलोपक**।

विलोपना–क्रि. स. दे. (सं. *विलोप*) छिपा लेना, नष्ट या लोप करना, उड़ाकर भागना, विघ्न डालना। संज्ञा, पु. **विलोवन**।

विलोपी–वि. (सं. *विलोपिन्*) नष्ट या नाश करने वाला, लोप करने या छिपाने वाला, **लोपक**।

विलोम–वि. (सं.) विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध। संज्ञा, पु. ऊँचे से नीचे आना। संज्ञा, स्त्री. **विलोमता**।

विलोल–वि. (सं.) चंचल, चपल, सुंदर।

विल्व–संज्ञा, पु. (सं.) बेल का फल या पेड़।

विल्वपत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बेल-पत्र, बेल का पत्ता।

विल्वमंगल–संज्ञा, पु. (सं.) अंधे होने से पहले महाकवि सूरदास का नाम।

विवक्षा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *वक्तुमिच्छा*) कहने की इच्छा,, अर्थ, मतलव, तात्पर्य, अनिश्चित, संदेह, संशय।

विवक्षित–वि. (सं.) जिसकी कहने की इच्छा या आवश्यकता

हो, अपेक्षित।

विवर–संज्ञा, पु. (सं.) छेद, बिल, छिद्र, सूराख, दरार, गर्त, कंदरा, गुफा, गड्ढा।

विवरण–संज्ञा, पु. (सं.) व्याख्या, भाष्य, विवेचन, वृतांत, बयान, ब्यौरा, टीका।

विवर्ण–संज्ञा, पु. (सं.) क्रोध, भय, मोहादि से मुख का रंग बदल जाना (एक भाव साहि.)। वि. कमीना, नीच, कुजाति, अधम, बदरंग, कांति-हीन, मुख-श्री रहित, बुरे रंग का। संज्ञा, स्त्री. **विवर्णता**।

विवर्त्त–संज्ञा, पु. (सं.) समूह, समुदाय, समुच्चय, आकाश, नभ, भ्रम, भ्रांति, संदेह।

विवर्तन–संज्ञा, पु. (सं.) फिरना, टहलना, घूमना। वि. **विवर्तित**, **विवर्तनीय**।

विवर्तवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परिणामवाद सृष्टि को माया तथा ब्रह्म को सृष्टि का उद्गम स्थान मानने का सिद्धांत (वेदा.)। वि. **विवर्तवादी**।

विवर्द्धन–संज्ञा, पु. (सं.) उन्नति, तरक्की, उन्नति करना। वि. **विवर्धनीय, विवर्धित**।

विवर्द्धित–वि. (सं.) वृद्धि या उन्नति को प्राप्त, बढ़ाया हुआ।

विवश–वि. (सं.) बेवश, बेबस (दे.), लाचार, जिसका वश न चले, मजबूर, पराधीन। संज्ञा, स्त्री. **विवशता, विवस, बेवसी** (दे.)।

विवश–वि. (सं.) नंगा, नग्न, वस्त्र-हीन, दिगंबर।

विवस्वत्–संज्ञा, पु. (सं.) विवस्वान, सूर्य, अरुण (सूर्य-सारथी)।

विवसा–संज्ञा, पु. (सं.) इच्छित, वांछित, चाहा हुआ।

विवाद–संज्ञा, पु. (सं.) शास्त्रार्थ, वाक्‌युद्ध, बहस, कलह, झगड़ा, मुक़दमेबाज़ी।

विवादास्पद–वि. यौ. (सं.) विवाद-योग्य, विवादयुक्त, बहस के लायक, जिस पर बहस हो सके।

विवादी–संज्ञा, पु. (सं. *विवादिन्*) विवाद या बहस करने वाला, झगड़ा-फ़साद करने वाला। (मुक़दमे में) पक्षी या प्रतिपक्षी।

विवाह–संज्ञा, पु. (सं.) स्त्री-पुरुष को दांपत्य सूत्र में बाँधने की एक सामाजिक रीति, ब्याह, शादी, आज-कल ब्रह्म विवाह प्रचलित है, यों विवाह के 8 भेद हैं—ब्रह्म, दैव, आर्य, प्राजापत्य, असुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच (मनु.), पाणिग्रहण, परिणय, **विवाह** (दे.)।

विवाहना–क्रि. स. दे. (सं. *विवाह*) ब्याहना, शादी करना, पाणिग्रहण या परिणय करना, (दे.) ब्याहना।

विवाहित–वि. अ. (सं.) ब्याहा हुआ, जिसका ब्याह हो चुका हो। स्त्री. **विवाहिता**।

विवाही–वि. स्त्री. (सं. *विवाहिता*) जिसका ब्याह हो चुका हो, ब्याही, परिणीता।

विविक्त–संज्ञा, पु. (सं.) पवित्र, एकांत, निर्जन।

विविचार–वि. (सं.) विचारहीन, विवेक या आचार से रहित।

विविध–वि. (सं.) अनेक प्रकार या बहुत भाँति का।

विविर–संज्ञा, पु. (सं.) गुफा, खोह, दरार, बिल, छिद्र, छेद।

विवुध–संज्ञा पु. (सं.) देवता।

विवृत–वि. (सं.) विस्तारित, विस्तृत, फैला या खुला हुआ। संज्ञा, पु. ऊष्म स्वरों के उच्चारण का एक प्रयत्न (व्या.)।

विवृतोक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें श्लेष से गुप्त किए अर्थ को कवि स्वयं अपने शब्दों से प्रगट कर देता है (अ. पी.)।

विवेक–संज्ञा, पु. (सं.) भले-बुरे की पहिचान या ज्ञान, सदसत् ज्ञान की मानसिक शक्ति, ज्ञान, विचार, समझ बुद्धि।

विवेकी–संज्ञा, पु. (सं. *विवेकिन्*) विवेकवान् समझदार, प्रवीण, चतुर, सदसत् या भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला, बुद्धिमान, न्यायी, **न्यायशील**।

विवेचन–संज्ञा, पु. (सं.) आलोचन, मीमांसा, निर्णय, तर्क-वितर्क, सत्यासत्य, औचित्यानौचित्य की गवेषणा, परीक्षा या जाँच। स्त्री. **विवेचना**। वि. **विवेचनीय, विवेचित**।

विवेचक–संज्ञा, पु. (सं.) मीमांसक, विचारक, बुद्धिमान्।

विवेचना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विचार, ज्ञान।

विवेचनीय–वि. (सं.) विचार या विवेचन करने योग्य, विचारणीय, आलोचनीय।

विवेचित–वि. (सं.) आलोचित, विचारा हुआ, निर्धारित, वर्णित, निश्चित।

विशद–वि. (सं.) निर्मल, विमल, स्वच्छ, साफ, व्यक्त, स्पष्ट, सफ़ेद, सुंदर। संज्ञा, स्त्री. **विशदता**।

विशाख–संज्ञा, पु. (सं.) कार्त्तिकेय, शिव, कार्तिकेय के वज्र चलाने से प्रगट एक देवता।

विशाखदत्त–संज्ञा, पु. (सं.) संस्कृत भाषा के एक कवि जिन्होंने मुद्राराक्षस नामक संस्कृत-नाटक बनाया है।

विशाखा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 27 नक्षत्रों में से 16 वाँ नक्षत्र, राधा, कौशांवी के समीप का एक पुराना प्रदेश।

विशार–संज्ञा, पु. (सं.) गली।

विशारद–संज्ञा, पु. (सं.) निपुण, दक्ष, कुशल, ज्ञाता, पंडित, **विसारद** (दे.)।

विशाल–वि. (सं.) सुविस्तृत, वहुत बड़ा या लंवा-चौड़ा, वृहत्, सुंदर, प्रसिद्ध संज्ञा, स्त्री. **विशालता**।

विशालाक्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेव जी, शिव, गरुड़, विष्णु।

विशालाक्षी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सुंदर और बड़ी-बड़ी आँखों वाली स्त्री, पार्वती जी, देवी की एक मूर्त्ति।

विशिख–संज्ञा, पु. (सं.) तीर, बाण, **विसिख**-(दे.)।

विशिष्ट–वि. (सं.) युक्त, मिश्रित, मिला हुआ, जिसमें कुछ विशेषता हो, विलक्षण, श्रेष्ठ, उत्तम। संज्ञा, स्त्री. **विशिष्टता**।

विशिष्टद्वैत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक दार्शनिक मत या सिद्धांत जिसमें माया, जीव, ब्रह्म तीन अनादि तथा जीव और जगत् ब्रह्म से भिन्न होते हुए भी भिन्न नहीं माना जाता है।

विशुद्ध–वि. (सं.) बिलकुल निर्दोष या साफ़, सत्य, सच्चा। संज्ञा, स्त्री. **विशुद्धता**।

विशुद्धि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शुद्धता, सफ़ाई।

विशूचिका–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *विसूचिका*) दस्त आने का रोग, हैज़ा, बदहज़मी, अनपच।

विशृंखल–वि. (सं.) जिसमें शृंखला या क्रम न पाया जावे, स्वच्छंद, स्वतंत्र बिखरा हुआ। संज्ञा, स्त्री. **विशृंखला**।

विशेष–संज्ञा, पु. (सं.) साधारण से परे या अतिरिक्त (अधिक), अंतर, भेद, पदार्थ, वस्तु, अधिकता, अधिक, विचित्रता, अनोखापन, सार, तत्व, एक अर्थालंकार जिसमें (1) आधार के बिना आधेय (2) थोड़े श्रम या यत्न से अधिक लाभ या प्राप्ति (3) तथा एक ही वस्तु का कई स्थानों में होना कहा जाए। 7 पदार्थों में से एक।

विशेषज्ञ–संज्ञा, पु. (सं.) किसी विषय का विशेष या मार्मिक ज्ञाता। संज्ञा, स्त्री. **विशेषज्ञता**।

विशेषण–संज्ञा, पु. (सं.) जो किसी वस्तु की कुछ विशेषता प्रगट करे, किसी संज्ञा की बुराई-भलाई या विशेषता सूचक विकारी शब्द जो उसकी व्याप्ति को मर्यादित करता है। यह तीन भाँति का है, **गुण-वाचक, संख्या-वाचक, सार्वनामिक** (व्या.)।

विशेषतः–अव्य. (सं.) विशेष रूप से, अधिकता से, **विशेषतया**।

विशेषता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विशेष का धर्म या भाव, ख़ासियत (फ़ा.), अधिकता, असाधारणता, प्रधानता, मुख्यता।

विशेषोक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक अर्थालंकार जहाँ पूर्ण कारण के होते हुए भी कार्य के न होने का कथन हो (अ. पी.)।

विशेष्य–संज्ञा, पु. (सं.) वह संज्ञा जिसके साथ उसका विशेषण भी हो (व्या.)।

विशोक–वि. (सं.) शोकरहित, विगतशोक। वि. (दे.) **विशोकी**।

विश्–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रजा, रिआया।

विशपति, विशांपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा।

विश्रंभ–संज्ञा, पु. (सं.) विश्वास, भरोसा, प्रतीति, प्रेमिका प्रेमी में रति के समय की प्रेम कलह, प्रेम।

विश्रब्ध–वि. (सं.) विश्वास-योग्य, विश्वासनीय, शांत, निडर, निर्भय।

विश्रवा–संज्ञा, पु. (सं.) कुबेर के पिता, एक प्राचीन ऋषि।

विश्रांत–वि. (सं.) श्रमित, कांत, थकित, थका हुआ, जो आराम कर चुका हो।

विश्रांतघाट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मथुरा में यमुना जी का एक घाट।

विश्रांति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आराम, विश्राम।

विश्राम–संज्ञा, पु. (सं.) थकान मिटाना, श्रम दूर करना, आराम करना, सुख-चैन, ठहरने का स्थान, आराम, टिकाश्रय, **विश्राम, बिसराम** (दे.)। यौ. विश्राम स्थान।

विश्रुत–वि. (सं.) विख्यात, प्रसिद्ध।

विश्लिष्ट–वि. (सं.) विश्लेषण-युक्त, शिथिल, वियोगी, अलग रहने वाला, विकसित प्रस्फुटित, खिला, प्रकाशित, प्रकट, मुक्त, ढीला, विभक्त।

विश्लेष–संज्ञा, पु. (सं.) वियोग, विरह, अलगाव, भेद।

विश्लेषण–संज्ञा, पु. (सं.) किसी पदार्थ के सयोजकों को अलगाना या पृथक् करना, पृथक्करण। वि. **विश्लेषणीय, विश्लिष्ट**।

विश्वंभर–संज्ञा, पु. (सं.) परमेश्वर, विष्णु भगवान, एक उपनिषद्, **विसंभर** (दे.)।

विश्वंभरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वसुंधरा, पृथ्वी, वसुधा, भूमि।

विश्व–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु समस्त-ब्रह्मांड, चौदहों लोकों या भुवनों का समूह, जगत्, संसार, देवताओं का एक गण जिसमें वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरुरवा, माद्रया ये दस देवता हैं, शरीर, **विस्व** (दे.)। वि. सब, वहुत, समस्त।

विश्वकर्मा–संज्ञा, पु. (सं. *विश्वकर्मन्*) परमेश्वर, ब्रह्मा, सूर्य, समस्त शिल्प शास्त्र वे आविष्कर्ता एक विख्यात देवता, कारु, देववर्द्धन, तक्षक, शिव जी, लोहार, बढ़ई, राज, मेमार।

विश्वकोश–संज्ञा, पु. (सं.) वह कोशग्रंथ जिसमें सव प्रकार के शब्दों या विषयों का सविस्तार वर्णन हो। यौ. संसार का कोष।

विश्वनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेव, शिवजी, विष्णु भगवान।

विश्वपाल, विश्वपालक–संज्ञा, पु. (सं.) परमात्मा, परमेश्वर, **विश्वपोषक, विश्वपति**।

विश्वरूप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिव, विष्णु। विश्व ही है रूप जिसका वह परमात्मा, गीतोपदेश के समय अर्जुन को दिखाया गया श्रीकृष्ण का विराट्-रूप।

विश्वलोचन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य और चंद्रमा, **विश्वविलोचन, जगक्षेत्र**।

विश्वविद्यालय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह विद्यालय जहाँ सब प्रकार की विद्याओं की उच्च्य शिक्षा दी जावे, **यूनीवर्सिटी** (अं.)।

विश्वव्यापी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *विश्व व्याधिन्*) परमात्मा, भगवान। वि. विभु, जो सारे संसार में फैला या व्याप्त हो।

विश्वश्रवा–संज्ञा, पु. (सं. *विश्वश्रवस्*) कुबेर और रावण के पिता एक मुनि।

विश्वसनीय–वि. (सं.) विश्वास या प्रतीति करने योग्य, जिसका एतवार हो सके।

विश्वसित–वि. (सं.) विश्वस्त, जिसका विश्वास किया गया हो।

विश्वस्त–वि. (सं.) विश्वसनीय, प्रतीति या एतबार के योग्य, **विश्वासी** (दे.)।

विश्वात्मा–संज्ञा, पु. यौ. (स. *विश्वात्मन्*) परमात्मा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, ब्रह्म।

विश्वाधार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परमेश्वर।

विश्वामित्र–संज्ञा, पु. (सं.) गांधेय या गाधितनय, रामचंद्र जी के धनुर्विथ गुरु कौशिकमुनि। ये बड़े क्रोधी और शाप देने वाले कहे गए हैं।

विश्वास–संज्ञा, पु. (सं.) भरोसा, प्रतीति, यकीन, एतबार, **बिस्वास** (दे.)।

विश्वासघात–संज्ञा, पु. यौ. (स.) छल करना, धोखा देना, विश्वास करने वाले के साथ विश्वास के विपरीत कार्य करना। वि. **विश्वासघातक, विश्वासघाती**।

विश्वासपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विश्वस्त, विश्वसनीय।

विश्वासी–संज्ञा, पु. (सं. *विश्वासिन्*) विश्वास करने वाला, विश्वासनीय।

विश्वेदेव–संज्ञा, पु. (सं.) देवताओं का एक गण जिसमें इंद्र, अग्नि आदि नौ देवता हैं (वेद.) परमेश्वर, अग्नि।

विश्वेश, विश्वेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परमेश्वर, शिव, **विश्वनाथ**।

विष–संज्ञा, पु. (सं.) गरल, ज़हर, जो किसी की सुख या शांति में बाधा करे। **मु. विष की गांठ**–बड़ा उपद्रवी या अपकारी, दुष्ट। **विष का घूँट**–बड़ी बुरी या कड़ी बात। वच्छनाग, संखिया, विष दो प्रकार के हैं : **स्थावर,** जैसे–संखिया, आदि, **जंगम,** जैसे सर्पादि का विष।

विषकन्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वह स्त्री जिसके शरीर मे इसलिए विष प्रविष्ट किया जाता है कि उससे प्रसंग

करने वाला मर जाए, **विषकन्यका** (चाणक्य)।

विषरण–वि. (सं.) दुखी, उदास, विषादपूर्ण। यौ. **विषणवदन**–उदास मुख।

विषदंड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कमल-नाल।

विषधर–संज्ञा, पु. (सं.) शिव जी, साँप।

विषमंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सर्पादि के विष को दूर करने का मंत्र, विष तथा ऐसे मंत्रों का ज्ञाता, वैद्य, सँपेरा।

विषम–वि. (सं.) जो तुल्य, सम, समान या बराबर न हो, अतुल्य, असम, वह संख्या जो दो से पूरी बँट न सके और एक शेष बचे, **ताक़** (फ़ा.), अति कठिन, तीव्र या तेज़, संकट, विकट, भयंकर, भीषण, विषमज्वर, आपत्ति-काल। संज्ञा, पु. वह छंद जिसके चरणों में समान मात्राओं या वर्ण न हों वरन् न्यनाधिक हों। (विलो.—**सम**) एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी पदार्थों का संबंध या यथायोग्यता का अभाव कहा गया हो।

विषमज्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नित्य अनियत समय पर आने वाला एक बुखार, जाड़ा देकर और उतर चढ़ कर आने वाला ज्वर जैसे :—जूड़ी, एकतरा, तिजारी, चौबिया आदि।

विषमता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) असमता, विरोध, वैर, शत्रुता, वैमनस्य।

विषमवाण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कामदेव, **विषमायुध**।

विषमवृत्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह छंद जिसके चरण समान (सम) न हों (पिं.)। (विलो. **सम**)

विषमशर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कामदेव।

विषमायुध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कामदेव।

विषय–संज्ञा, पु. (सं.) जिस पर कुछ विचार किया जावे, प्रबंध, निबंध, मैथुन, स्त्री प्रसंग, कर्मेंद्रियों के कार्य, धन, संपत्ति, बड़ा राज्य या प्रदेश, भोग विलास, वासना।

विषयक–वि. (सं.) विषय का, संबंधी।

विषय-वासना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भोग-विलास, काम की इच्छा या कामना।

विषयी–संज्ञा, पु. (सं. *विषयिन्*) जो सदा भोग विलास में लगा रहे, कामी, विलासी, धनी, अमीर, कामदेव।

विषविद्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मंत्रादि से विष उतारने की विद्या या ज्ञान।

विषवैद्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) तंत्र-मंत्रादि से विष उतारने वाला, विषवेद (दे.)।

विषहरमंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह मंत्र जिसके द्वारा विष उतारा जावे।

विषांगना–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) विष-कन्या।

विषाक्त–वि. (सं.) विष-युक्त, विष-मिश्रित, विषपूर्ण, ज़हरीला, विषैला।

विषाण–संज्ञा, पु. (सं.) पशु का सींग, शूकर का दाँत।

विषाद–संज्ञा, पु. (सं.) निश्चेष्ट या जड़ होने का भाव, दुख, रंज, खेद, शोक। वि. **विषादी**।

विषुव–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य के ठीक भूमध्य रेखा के सामने पहुँचने का समय जब सारे संसार में दिन रात बराबर होते हैं। 21 मार्च और 23 सितंबर को ऐसा होना है (भू.)।

विषुवत्‌रेखा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर पृथ्वी के मध्य में चारों ओर पूर्व पश्चिम खिंची हुई मानी जाती है, **विषवतवृत**, भूमध्य रेखा (ज्यो., भू.)।

विषूचिका–(सं.) स्त्री. दे. (सं. *विसूचिका*) विसूचिका (रोग)।

विष्कंभ–संज्ञा, पु. (सं.) एक योग (ज्यो.), विस्तार, विघ्न, बाधा, नाटक के अंक का एक भेद जिसमें गत और आगत घटना (कथा) की सूचना मध्यम पात्रों के द्वारा दी जाती है। (नाटय.)।

विष्कंभक–संज्ञा, पु. (सं. *विष्कंभ*) विष्कंभ, विस्तार, विघ्न, बाधा, नाटक के अंक का एक भेद।

विष्कीर–संज्ञा, पु. (सं.) चिड़िया, पक्षी, खग, विहग।

विष्टंभ–संज्ञा, पु. (सं.) विघ्न, बाधा, रुकावट, अनाह, आध्मान पेट फूलने का एक रोग (वैद्य.)।

विष्टंभन–संज्ञा, पु. (सं.) रोकने या सिकोड़ने की क्रिया। वि. **विष्टंभित**।

विष्टप–संज्ञा, पु. (सं.) लोक।

विष्टर–संज्ञा, पु. (सं.) बिछौना, बिस्तर।

विष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भद्रा, अशुभ समय, बेगार।

विष्ठा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मल, मैला, पाख़ाना।

विष्णु–संज्ञा, पु. (सं.) परमात्मा के तीन रूपों में से दूसरा,

त्रिदेव में से एक जो विश्व का भरण-पोषण करते हैं, ब्रह्मा का एक विशेष रूप, 12 आदित्यों में से एक।

विष्णुकांता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नीली अपराजिता, नीली कोयल लता।

विष्णुगुप्त–संज्ञा, पु. (सं.) एक वैयाकरणी ऋषि, कौटिल्य, प्रख्यात राजनीतिज्ञ चाणक्य का वास्तविक नाम।

विष्णुपद–संज्ञा, पु. (सं.) आकाश।

विष्णुपदी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) गंगाजी।

विष्णुलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वैकुंठ, स्वर्ग।

विसदृश–वि. (सं.) प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध, उलटा, अद्भुत, विलक्षण, अनोखा।

विसर्ग–संज्ञा, पु. (सं.) त्याग, दान, देना, ऊपर-नीचे दो विन्दु जो अक्षर के आगे लगते हैं और प्रायः आधे ह के समान बोले जाते हैं। मृत्यु, मोक्ष, मुक्ति, प्रलय, वियोग, विरह।

विसर्जन–संज्ञा, पु. (सं.) छोड़ना, परित्याग, चला जाना, विदा होना, षोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार, आवाहन किए देवता को फिर निज स्थान पर जाने की प्रार्थना करना, समाप्ति।--स्फु.। वि. **विसर्जनीय, विसर्जित**।

विसर्जनीय–संज्ञा, पु. (सं.) त्यागने-योग्य, देने योग्य, विसर्ग।

विसर्जित–वि. (सं.) कृतसमाप्ति, परित्यक्त।

विसर्प–संज्ञा, पु. (सं.) फुंसियों का रोग जिसमें ज्वर भी होता है।

विसर्पी–वि. (सं. *विसर्पिन्*) फैलने वाला।

विसारना–क्रि. स. दे. (सं. *विस्मरण*) भूल जाना, **बिसराना**।

विसासिन–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सौत, सपत्नी, दुष्टा। पु. **विसासी**–विश्वासघाती, दुष्ट।

विसाल–संज्ञा, पु. (अ.) मिलाप, संयोग, मृत्यु, मौत। संज्ञा, पु. दे. (सं. *विशाल*) बड़ा, विस्तृत।

विसूचिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दस्तों का एक रोग, हैज़ा।

विसूची–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक रोग, हैज़ा।

विसूरण–संज्ञा, पु. (सं.) चिंता, शोक। वि. **विसूरणीय, विसूरित**।

विसूरना–क्रि. स. दे. (सं. *विसूरण*) शोक करना, रोना, दुविधा में पड़ना, सखेद स्मरण करना, बिसूरना।

विस्तर–वि. दे. (सं. *विष्टर*) बिछौना, विस्तार-युक्त, विस्तृत।

विस्तार–संज्ञा, पु. (सं.) फैलाव, विशालता, प्रसाद, प्रस्तार।

विस्तारित–वि. (सं.) फैला या बढ़ाया हुआ, विस्तृत।

विस्तीर्ण–वि. (सं.) विशाल, विस्तृत, बहुत बड़ा, लंबा चौड़ा, अति अधिक।

विस्तृत–वि. (सं.) विस्तार-युक्त, बहुत लंबा-चौड़ा, विशाल, यथेष्ट विवरण वाला, बहुत फैला हुआ। (सं. **विस्तार, विस्तृति**।)

विस्फारित–वि. (सं.) फैलाया हुआ, तीव्र, फाड़ा या खोला हुआ (नेत्र)।

विस्फोट–संज्ञा, पु. (सं.) गरमी आदि से किसी पदार्थ का उबल पड़ना या फूट जाना, विषैला और कठिन फोड़ा, ज्वालामुखी का फूटना।

विस्फोटक–संज्ञा, पु. (सं.) विषाक्त फोड़ा, गरमी या आघात से भभक कर फूट उठने वाला, शीतला रोग, चेचक; (अं.) एक्सप्रेसिव।

विस्मय–संज्ञा, पु. (सं.) आश्चर्य, अचरज, **विसमय** (दे.), अद्भुत रस का स्थायी भाव (काव्य.)।

विस्मरण–संज्ञा, पु. (सं.) भूल जाना। वि. **विस्मरणीय, विस्मरित**। (विलो. स्मरण)।

विस्मित–वि. (सं.) चकित, अचंभित, विस्मय-युक्त।

विस्मृत–वि. (सं.) जो याद न हो, भूला हुआ, **विस्मरित**।

विस्मृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विस्मरण।

विश्राम–संज्ञा, पु. दे. (सं. *विश्राम*) आराम, **बिसराम** (दे.)।

विहंग, विहंगम–संज्ञा, पु. (सं.) खग, द्विज, पक्षी, चिड़िया, मेघ, बादल, बाण, वायु, वायुयान, विमान, सूर्य, चंद्रमा, तारागण, देवता।

विहग–संज्ञा, पु. (सं.) पक्षी, विमान, वाण, देवता, सूर्य, चंद्रमा, मेघ, तारागण, वायु, वायुयान।

विहरना–क्रि. अ. (सं.) खेल करना, क्रीड़ा करना, भोग करना, आनंद करना।

विहसित–संज्ञा, पु. (सं.) जाति, उप जाति, मृदुहास, मध्यम हास्य। वि. **उपहसित**।

विहायस–संज्ञा, पु. (सं.) आकाश, पक्षी।

विहार–संज्ञा, पु. (सं.) घूमना, टहलना, भ्रमण करना, फिरना, केलि-क्रीड़ा, संभोग, रति क्रीड़ा, बौद्ध साधुओं (श्रमणों) के रहने का घर, संघाराम।

विहारी–संज्ञा, पु. (सं. *विहारिन्*) विहार करने वाला, श्रीकृष्ण जी, **विहारी** (दे.)। स्त्री. **विहारिनी**।

विहित–वि. (सं.) जिसका विधान किया गया हो।

विहीन–वि. (सं.) विना, रहित, बगैर, हीन। संज्ञा, स्त्री. **विहीनता**।

विह्वल–वि. (सं.) व्याकुल, विकल, घबराया हुआ, बेकल। संज्ञा, स्त्री. **विह्वलता**।

वीक्षण–संज्ञा, पु. (सं.) देखना। वि. **वीक्षणीय, वीक्षित, वीक्षक**।

वीक्षित–वि. (सं.) दृष्ट, विलोकित, देखा हुआ।

वीचि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) तरंग, लहरी, लहर, बीची।

वीचिमाली–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ऊर्मि-माली, समुद्र, सागर।

वीची–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लहरी, तरंग, लहर, **बीची** (दे.)।

वीज–संज्ञा, पु. (सं.) मुख्य या मूल कारण, वीर्य, शुक्र, तेज़, अन्नादि का बीज, **बीज** (दे.), बीआ (आ.), अंकुर, सार, तत्व, एक प्रकार के मंत्र, एक वर्ण गणित, बीज-गणित।

बीजगणित–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गणना का एक प्रकार, गणित का वह भेद जिसमें ज्ञात राशियों की सहायता से अज्ञात राशियों के स्थान पर कुछ सांकेतिक वर्णों को गणनार्थ रख कर अज्ञात राशियों का मान ज्ञात किया जाता है।

बीजपुर–संज्ञा, पु. (सं.) विजौरा नीबू।

बीजांकुर (न्याय)–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कार्य-कारण का ऐसा संयोग (संबंध) कि उनकी पूर्वापर सत्ता निश्चित न हो सके, अन्योन्याश्रय संबंध।

वीणा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सितार और एक प्राचीन बाजा, **बीन, बीना** (दे.)।

वीणापाणि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) गिरा, सरस्वती। संज्ञा, पु. नारद जी।

वीणावती, बीणावति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सरस्वती।

वीत–वि. (सं.) व्यतीत, गत, समाप्त, जो छूट या छोड़ दिया गया हो, मुक्त, निवृत्त हुआ, बीता हुआ।

वीतराग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जिसने रागानुराग या आसक्ति आदि को त्याग दिया हो, त्यागी, वैरागी, बुद्ध जी का एक नाम।

वीतद्रव्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अग्नि, हैहयराज का प्रधान।

वीतहोत्र–संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि, सूर्य, राजा, प्रियवत के एक पुत्र का नाम।

वीथि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *वीथी*) गली, मार्ग, प्रतोली, रास्ता, **वीथी** (दे.)।

वीथिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गली, मार्ग।

वीथी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रास्ता, राह, मार्ग, गली, कूचा, सड़क, नभ में रवि-मार्ग, व्योम में नक्षत्रों के स्थानों के कुछ विशेष भाग, रूपक या दृश्य काव्य का एक भेद जो एक नायक युक्त और एक ही अंक का होता है।

वीप्सा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अधिकता, व्यापकता। एक शब्दालंकार जिसमें अर्थ या भाव पर बल देने के लिए शब्दावृत्ति होती है (अ. पी)।

वीय–वि. (दे.) **विय** (दे.), दो, गुगुल।

वीर–संज्ञा, पु. (सं.) शूर, साहसी, बलवान, पराक्रमी, सैनिक, योद्धा, जो औरों से किसी कार्य में बढ़कर हो, लड़का, भाई, पति, सखी-सहेली (स्त्री.), काव्य में एक रस जिसमें उत्साह और वीरता की पुष्टि होती हे (सा.), तंत्र में साधना के तीन भावों में से एक (तंत्र)।

वीरकेशरी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *वीर केशरिन्*) वीरों में सिंह सा श्रेष्ठ, **वीरकेहरी** (दे.)।

वीरगति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रण-भूमि में मरने से वीरों को प्राप्त श्रेष्ठ गति।

वीरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बहादुरी, शूरता। **वीरप्रसू, वीरप्रसवा**–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) शूर-वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली माता, वीर माता।

वीरवधू–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वीर पुरुष की वीर स्त्री।

वीरव्रती–वि. संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वीरता का व्रत वाला।

वीरवृत्ति–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *वीरवृतिन्*) शूरों की सी वृत्ति या स्वभाव (प्रवृत्ति)। वि. **वीरवृत्ती**।

वीरभद्र–संज्ञा, पु. (सं.) शिव जी के एक गण जो उनके अवतार और पुत्र माने गए हैं (पुरा.), अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा, **खस** (उशीर)।

वीरभाव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शूरता, वीरता का भाव।

वीरभूमि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वीरों की जन्म-भूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-स्थल, वह पृथ्वी जहाँ वीर ही उत्पन्न होते हों, बंगाल का एक नगर।

वीरमाता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *वीरमातृ*) **वीरप्रसू, वीर-जननी,** वीरों की माँ।

वीररस–संज्ञा, पु. (सं.) उत्साह, स्थाई भाव का एक विशेष रस (काव्य.)।

वीरललित–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वीरों का सा किंतु मृदु स्वभाव वाला।

वीरशय्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) संग्राम-भूमि, रणस्थली।

वीरशैव–संज्ञा, पु. (सं.) शैवों का भेद।

वीरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मदिरा, शराब, पति और पुत्र वाली स्त्री।

वीराचारी–संज्ञा, पु. यौ (सं. *वीराचारिन्*) वाममार्गियों का एक भेद जो देवताओं की पूजा वीर-भाव से करते हैं।

वीरान–संज्ञा, (फ़ा.) श्री-हत, उजड़ा हुआ, उजाड़, वह स्थान जहाँ आबादी न रह गई हो, निर्जन।

वीरासन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बैठने का एक ढंग या आसन अर्थात् मुद्रा।

वीर्य्य–संज्ञा, पु. (सं.) प्राणियों के शरीर में बल और कांति उत्पन्न करने वाली सात धातुओं में से एक प्रमुख धातु, रेत, शुक्र, **बीज** (दे.) पराक्रम, शक्ति, बल, **बीआ** (दे.)।

बुराना–क्रि. अ. (दे.) पुराना, समाप्त होना।

वृंत–संज्ञा, पु. (सं.) **बोंढ़ी, ढेंढ़ी,** नरुआ, स्तनाप्रभाग।

वृंताक–संज्ञा, पु. (सं.) बैगन, भोंटा।

वृंद–संज्ञा, पु. (सं.) समुदाय, झुंड, समूह, एक प्रसिद्ध हिंदी-कवि।

वृंदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) तुलसी, राधिका का उपनाम।

वृंदारक–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रकार के देवता।

वृंदावन–संज्ञा, पु. (सं.) श्रीकृष्णजी का क्रीढ़ा स्थल जो हिंदुओं का तीर्थ-स्थान है (मथुरा-प्रात), **विंदावन** (दे.)।

वृक–संज्ञा, पु. (सं.) भेड़िया, सियार, गीदढ़, शृगाल, क्षत्रिय, कौआ।

वृकोदर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भीमसेन।

वृक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) विटप, पेड़, द्रुम, पादप, रूख, किसी वस्तु (व्यक्ति के वंश) के उद्गम तथा शाखादि-सूचक वृक्ष जैसा चित्र या आकृति। जैसे—**वंश-वृक्ष**।

वृक्षायुर्वेद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पेड़ों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।

वृज–संज्ञा, पु. दे. (सं. *व्रज*) व्रज।

वृजिन–संज्ञा, पु. (सं.) पाप, कष्ट, दुख, तकलीफ़, खाल, चमड़ा।

वृत्त–संज्ञा, पु. (सं.) चरित, चरित्र, समाचार, आचार, वृत्तांत, चाल-चलन, हाल, वृत्ति, समाचार, जीविका-साधन, रोजगार, वर्णिक छंद, मंडल, गोलाकार क्षेत्र जो एक सीमा से जिसे परिधि कहते घिरा हो तथा जिसके केंद्र से परिधि की दूरी सर्वत्र समान हो (रेखा), दंडिका, गंडका, 20 वर्णों का एक सम छंद, नियत वर्ण-संख्या तथा लघु-गुरु के कम के निश्चित नियम से नियंत्रित पदों वाला छंद (पिं.)।

वृत्तखंड–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वृत्त या गोल क्षेत्र का कोई भाग, **वृत्तांश**।

वृतांत–संज्ञा, पु. (सं.) वर्णन, समाचार, हाल, घटनादि का विवरण।

वृत्तार्द्ध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वृत्त या गोलाकार क्षेत्र का ठीक आधा भाग।

वृत्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जीविका-निर्वाह का साधन या कार्य, रोजी, जीविका, उद्यम, वज़ीफ़ा, दीन या छात्रादि को सहायतार्थ दिया गया धन, सूत्रों का अर्थ स्पष्ट करने या खोलने वाली व्याख्या या विवेचना (विवरण), नाटकों में विषय-विचार से चार प्रकार की वर्णन की रीति या शैली (नाटय.), चित्त की दशा जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, विक्षिप्त, निरुद्ध, मूढ़, एकाग्र (योग.), कार्य, व्यापार, एक संहारक शस्त्र या अस्त्र, प्रकृति,

स्वभाव।

वृत्यनुप्रास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक शब्दालंकार जिसमें आदि या अंत के एक या कई वर्ण वृत्ति के अनुकूल एक या भिन्न रूप से बार-बार आते हैं, यह अनुप्रास का एक भेद है।

वृत्र–संज्ञा, पु. (सं.) अँधेरा, बादल, मेघ, बैरी, शत्रु, वृत्त, इंद्र से मारा गया त्वष्ठा का पुत्र, एक असुर, इसीलिए राजा दधीचि (ऋषि) की हड्डियों का वज्र बना था (पुरा.)।

वृत्रसूदन–संज्ञा, पु. (सं.) इंद्र जिसने वृत्तासुर को मारा था।

वृत्रहा, वृत्तहा–संज्ञा, पु. (सं.) इंद्र।

वृत्तारि, वृत्रारि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इंद्र, **वृत्ताहंता**।

वृत्रासुर, वृत्तासुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) त्वष्टा का पुत्र एक विख्यात दैत्य जिसे इंद्र ने मारा था (पुरा.)।

वृथा–वि. (सं.) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फ़जूल, बेमतलब, नाहक। संज्ञा, पु. **वृतात्व**।

वृद्ध–संज्ञा, पु. (सं.) प्रायः 60 वर्ष से ऊपर की अंतिम अवस्था का बूढ़ा, बुड्ढा, जरा, बुढ़ाई, **बुढ़ापा**। विद्वान, अनुभवी।

वृद्धता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बुढ़ापा, बुढ़ाई, **वृद्धत्व,** बूढ़े का भाव या धर्म, पांडित्यानुभव।

वृद्धत्व–संज्ञा, पु. (सं.) जरावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ाई, वृद्धता।

वृद्धश्रवा–संज्ञा, पु. (सं. *वृद्धश्रवस्*) इंद्र।

वृद्धा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रायः 60 वर्ष से ऊपर की अवस्था, बुड्ढी स्त्री, बुढ़िया।

वृद्धि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) उन्नति, बढ़ती, अधिकता, अधिक होने या बढ़ने का भाव या क्रिया, सूद, ब्याज, सूदक, संतान जन्म पर घर का अशौच, अभ्युदय, समृद्धि, अष्ट वर्ग की एक लता, एक अलभ्य औषधि।

वृश्चिक–संज्ञा, पु. (सं.) बिच्छू नामक एक विषैला कीड़ा जो डंक मारता है, **बीछू, बीछी** (ग्रा.)। बिच्छू या वृश्चिकाली लता, मेपादि 12 राशियों में से (बिच्छू के से आकार वाले तारों की स्थिति वाली) 8वीं राशि (ज्यो.)।

वृश्चिकाली–संज्ञा, पु. (सं.) बिच्छू नामक लता जिसके काँटे या रोएँ देह में लगकर जलन उत्पन्न करते हैं।

वृष–संज्ञा, पु. (सं.) बैल, साँड़, चार प्रकार के पुरुषों में से एक (काम.), श्रीकृष्ण, 12 राशियों में से दूसरी राशि (ज्यो.)। यौ. **वृषस्कंध**।

वृषकेतन, वृषकेतु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेव, शिव, शंकरजी।

वृषण–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, इंद्र, कर्ण, बैल, साँड़, घोड़ा, पोता, अंडकोष।

वृषध्वज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महादेव, शिव, एक पहाड़ (पुरा.), गणेशजी।

वृषभ–संज्ञा, पु. (सं.) साँड़, बैल, श्रेष्ठ, पुरुष। यौ. **वृषभकंध, वृषभस्कंध।**

वृषभधुज*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *वृषभध्वज*) महादेव जी।

वृषभध्वज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी।

वृषभानु–संज्ञा, पु. (सं.) नारायणांशजात, राधाजी के पिता।

वृषभानुसुता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) राधिका, **वृषभानुतनया, वृषभानुजा**।

वृषल–संज्ञा, पु. (सं.) शूद्र, नीच, पतित, पापी, दुष्कर्मी, घोड़ा।

वृषला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रजस्वला, कुलटा, दुराचारिणी, नीय जाति की स्त्री, रजस्वला हुई कुँआरी कन्या (स्मृति.), **बिपली,** (दे.)।

वृषवामी–संज्ञा, पु. (सं.) शिव, शंकर।

वृषाकपि–संज्ञा, पु. (सं.) शिव, विष्णु।

वृषाकपायी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पार्वती, लक्ष्मी।

वृषादित्य, वृषादित (दे.)–संज्ञा, पु. (सं. *विषादित्य*) वृष राशि के सूर्य।

वृषासुर–संज्ञा, पु. यौ.(सं. एक, दैत्य, भस्मासुर।

वृषोत्सर्ग–संज्ञा, पु. (सं.) मृत पितादि के नाम पर चक्रादि दाग कर साँड़ छोड़ने की एक धार्मिक रीति या विधि (पुरा.)।

वृष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वर्षा, **बरसा** (दे.) बारिश, मेह, ऊपर से किसी वस्तु का कुछ देर तक बराबर गिरना, किसी क्रिया का कुछ काल तक लगातार होना।

वृष्टिमान, वृष्टिमापक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वर्षा के पानी नापने का यंत्र।

वृष्णि–संज्ञा, पु. (सं.) बादल, मेघ, यदुवंश, श्रीकृष्णजी,

अग्नि, वायु, इंद्र।

वृष्य–संज्ञा, पु. (सं.) वीर्य, बल और हर्ष, उत्पादक वस्तु या पदार्थ।

वृहती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बैंगन, वदले भटकटैया, वनभाँटा, कंटकारी, बड़ी, कटाई, भ, भ, स (गण) का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

वृहत्-वि. (सं.) महान्, बड़ा, भारी विशाल।

वृहद्रथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.), इंद्र, सामवेद, यज्ञ पात्र।

वृहन्नला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राजा विराट् के यहाँ स्त्री रूप में रहने वाले अर्जुन का नाम।

वृहस्पति–संज्ञा, पु. देव-गुरु वृहस्पति, जीव, ग्रह (ज्यो.)।

वेग–संज्ञा, पु. (सं.) तेज़ी, त्वरित रूप से देह से मल-मूत्रादि निकलना।

वेगवान्–वि. (सं.) शीघ्रता से चलने या बहने वाला, **वेगवन्त**।

वेगि–क्रि. वि. (ब्र.) शीघ्रता से जल्दी।

वेणि, वेणी–संज्ञा, स्त्री. गूँधी हुई चोटी, श्रेणी।

वेणु–संज्ञा, पु. (सं.) मुरली, वंशी।

वेणुका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बाँसुरी।

वेत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *नेत्र*) बेंत।

वेतन–संज्ञा, पु. (सं.) किसी काम के बदले दिया गया धन, तनख़्वाह, महीना, दरमहा, मासिक उजरत, पारिश्रमिक, **वेतन** (दे.)।

वेतनभोगी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *वेतनभोगिन्*) तनख़्वाह लेकर कार्य करने वाला, नौकर।

वेतस–संज्ञा, पु. (सं.) वडवानल, बेंत।

वेताल–संज्ञा, पु. (सं.) संतरी, द्वारपाल, शिवजी का एक गणाधिप, एक भूतयोनि (पुरा.), भूत ग्रहीत मुर्दा, **बैताल** (दे.) छप्पय का 6वाँ भेद (पिं.)।

वेत्ता–वि. (सं.) ज्ञाता, जानने वाला।

वेत्र–संज्ञा, पु. (सं.) बेंत, **बेंत** (दे.)।

वेत्रधर–संज्ञा, पु. (सं.) द्वारपाल।

वेत्रवती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बेतवा नदी।

वेत्रासुर–संज्ञा, पु. (सं.) प्राग्ज्योतिष नगर का राजा, एक दैत्य (पुरा.)।

वेत्री–संज्ञा, पु. (सं. *वेत्रित्*) द्वारपाल।

वेद–संज्ञा, पु. (सं.) आध्यात्मिक या धार्मिक विषय का ठीक ज्ञान, श्रुति, प्राचीन, भारत के आर्यों के सर्वमान्य प्रमुख धार्मिक ग्रंथ, वेद चार हैं :– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद (प्रथम के मूल तीन वेद) अथर्वणवेद (पश्चात्काल में) यज्ञांग, वित्त, वृत्त।

वेदज्ञ–संज्ञा, पु. (सं.) वेदों का ज्ञाता, ब्रह्मज्ञानी, वेदवित, वेद-वक्ता।

वेदन–संज्ञा, पु. (सं.) पीड़ा।

वेदना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) व्यथा, पीड़ा, दर्द।

वेदनिंदक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेदों की बुराई करने वाला, नास्तिक।

वेदमंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेदों के छंद।

वेदमाता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *वेदमातृ*) गायत्री, सावित्री, सरस्वती, दुर्गा।

वेदवाक्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ऐसी प्रामाणिक बात जिसका खंडन किसी प्रकार न हो सकता हो, स्वभाव-सिद्ध, ईश्वर-वाक्य, **वेद-वाणी**।

वेदव्यास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कृष्ण द्वैपायन, व्यासजी।

वेदांग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेदों के छः अंग :– छः शास्त्र, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, यौ. वेद वेदांग।

वेदांत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आवश्यक उपनिषदादि वेद के अंतिम भाग जिनमें जगत, आत्मा और ब्रह्म का निरूपण है :–ब्रह्मविद्या, वेदों का अंतिम भाग, ज्ञानकांड, अध्यात्म विद्या, छह दर्शनों (शास्त्रों) में से एक प्रमुख दर्शन-शास्त्र जिसमें चैतन्य ब्रह्म की एक मात्र पारमार्थिक सत्ता मानी गई है। (अद्वैतवाद) उत्तर मीमांसा। यौ. वेदांतवाद।

वेदांतसूत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महर्षि-वादरायण या व्यास-प्रणीत उतर मीमांसा के मूल सूत्र।

वेदांती–संज्ञा, पु. (सं. *वेदांतिन्*) वेदांत-ज्ञानी, वेदांत का ज्ञाता, वेदांतवादी, ब्रह्मवादी, **अद्वैतवादी, वेदांतवादी**।

वेदिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यज्ञादि क हेतु बनाई हुई ऊँची भूमि।

वेदी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शुभ या धर्म कार्य के हेतु बनी हुई ऊँची भूमि।

वेध–संज्ञा, पु. (सं.) वेधना, छेदना, मंत्रादि से ग्रह-तारा

नक्षत्रादि का देखना, एक ग्रह का दूसरे ग्रह के प्रभाव को रोकना (ज्यो.)।

वेधना–क्रि. अ. दे. (सं. *वेध*) छेदना, छेद करना, विद्ध करना, **बेधना** (दे.)।

वेधशाला–संज्ञा, पु. (सं.) वह भवन जहाँ ग्रह-नक्षत्रादि के देखने को यंत्रादि रखे हों। (अं.) आबज़रवेटरी

वेधमुख्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कस्तूरी, कपूर।

वेधा–संज्ञा, पु. (सं. *वेधस्*) विष्णु, ब्रह्मा, विधि, सूर्य, शिव।

वेधी–संज्ञा, पु. (सं. *वेधिन्*) वेध या छेद करने वाला। जैसे–शब्दवेधी, गगनवेधी। स्त्री. वेधिनी। वि. **वेधनीय, वेधित**।

वेपथु, वेपथुः–संज्ञा, पु. (सं.) कंप, कँप-कँपी।

वेपन–संज्ञा, पु. (सं.) कंप, काँपना। वि. **वेपित, वेपनीय**।

वेला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रात-दिन का 24वाँ भाग, समय, काल, वक्त, **बेरा, बेला** (दे.), समुद्र का किनारा, सीमा, समुद्र की लहर।

वेश–संज्ञा, पु. (सं.) वेष, वस्त्रादि से अपने को सजना या सजाना, पहनने का ढंग, **भेस** (दे.) **मु. किसी का वेश धारणा करना (बनाना)**–किसी के रूप-रंग और पहनावे आदि की नक़ल करना। पहिनने के वस्त्र या कपड़े, पोशाक, खेमा, डेरा, घर, कनात, तंबू। यौ. **वेश-भूषा**–पहनने के कपड़े आदि।

वेशधारी–संज्ञा, पु. (सं. *वेशधारिन्*) वेशधारणा करने वाला।

वेशवधू, वेशवनिता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रंडी, वेश्या, गणिका।

वेंशर, बेसर–संज्ञा, पु. (दे.) नथ, नथुनी।

वेश्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रंडी, पतुरिया, गणिका, गाने-नाचने और कसब कमाने वाली स्त्री, **तवायफ़**।

वेष, वेषम–संज्ञा, पु. (सं.) घर, मकान, गृह, वेश, भेख।

वेष–संज्ञा, पु. (सं.) वेश, **भेस** (दे.), रंग-मंच पर, नेपथ्य (नाट्य.)।

वेष्टन–संज्ञा, पु. (सं.) **बेठन** (दे.), लपेटने या घेरने की क्रिया, पगड़ी, उष्णीप, किसी वस्तु के ऊपर लपेटने का कपड़ा। वि. **वेष्टनीय, वेष्टित**।

वेष्टित–वि. (सं.) चारों ओर से लपेटा या घिरा हुआ।

वै–अव्य. (सं.) निश्चय-सूचक शब्द। सर्व. (ब्र.) वे, वह का बहुवचन।

वैकल्पिक–वि. (सं.) जो इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके, जो एक ही पक्ष में हो, एकांगी।

वैकल्प–संज्ञा, पु. (सं.) विकलता।

वैकाल–संज्ञा, पु. (दे.) दो पहर के बाद का समय, अपरान्ह, चौथा पहर।

बैकुंठ–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, विष्णु-लोक (पुरा.) स्वर्ग। वि. **बैकुंठीय**।

बैकुंठवास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मृत्यु, मरण। वि. **बैकुंठवासी**–मृत।

वैकृत–संज्ञा, पु. (सं.) विकार, विगाड़, खराबी, वीभत्सरस, वीभत्सरस का आलंबन विभाव :–जैसे रक्तादि। वि. विकार से उत्पन्न, जो शीघ्र बन न सके, दुःसाध्य, कष्ट-साध्य।

वैक्रमीय–वि. (सं.) विक्रम-संबंधी, विक्रम का संत, विक्रमीय।

वैक्रांत–संज्ञा, पु. (सं.) चुन्नी, मणि।

वैखरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वाग्देवी, वाक्, **शक्ति**, गंभीर, ऊँचा और स्पष्ट स्वर।

वैखानस–संज्ञा, पु. (सं.) वाणप्रस्थ आश्रम वाला वनवासी तपस्वी, एक वनवासी तपस्वी या ब्रह्मचारी।

वैचित्र्य–संज्ञा. पु. (सं.) विचित्रता, विलक्षणता।

वैजयंत–संज्ञा, पु. (सं.) इंद्र, इंद्रपुरी।

वैजयंती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पताका, झंडी, पाँच प्रकार के मोतियों की माला।

वैज्ञानिक–संज्ञा, पु. (सं.) विज्ञान शास्त्र का पूर्णज्ञाता, निपुण, प्रवीण, दक्ष, चतुर। वि. विज्ञान का, विज्ञान-संबंधी।

वैतनिक–संज्ञा, पु. (सं.) वेतन या तनख़्वाह पर काम करने वाला, नौकर, सेवक।

वैतरणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यम-द्वार या यमपुर की नदी (पुरा.), **वैतरनी** (दे.)।

वैताल–संज्ञा, पु. (सं.) पिशाच, भूतयोनि विशेष, भाट, बंदीजन।

वैतालिक–संज्ञा, पु. (सं.) राजाओं को जगाने वाला स्तुति-पाठक।

वैतालीय–संज्ञा, पु. (सं.) एक वर्णिक छंद (पिं.)। वि.

वैताल का, वैताल-संबंधी।

वैद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वैद्य*) चिकित्सक, वैद्य, हकीम, डाक्टर, वैद।

वैदक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *वैद्यक*) आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्र, **बैदक** (दे॰)।

वैदकी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) वैद्य का काम या पेशा, **बैदिकी, बैदी, बैदाई** (दे॰)।

वैदग्ध्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चातुर्य, नैपुण्य।

वैदर्भ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विदर्भ देश का राजा, दमयंती के पिता भीमसेन, रुक्मिणी के पिता भीष्मक। वि॰ विदर्भ प्रांत का।

वैदर्भी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रुक्मिणी, दमयंती, भैमी, मधुर वर्णों द्वारा मधुर रचना की एक काव्य-शैली व रीति।

वैदिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेदविहित कृत्य करने वाला, वेदों का पूर्ण ज्ञाता। वि॰ वेद का, वेद संबंधी, **वैदिक** (दे॰)।

वैदूर्य्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक मणि विशेष, **लहसुनियां** (दे॰)।

वैदेशिक–वि॰ (सं॰) विदेश-संबंधी, विदेश का, विदेशीय, **विदेसी** (दे॰)।

वैदेही–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीता, जानकी, विदेह राजा की कन्या, **वैदेही** (दे॰)।

वैद्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पंडित, विद्वान, भिषक, चिकित्सक, आयुर्वेद या चिकित्सा-शास्त्र के अनुसार रोगियों की दवा करने वाला।

वैद्यक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आयुर्वेद, चिकित्सा-शास्त्र, रोगों के निदान एवं चिकित्सादि की विवेचना का शास्त्र, **वैद्य-विद्या**।

वैद्युत्–वि॰ (सं॰) बिजली का, बिजली-संबंधी।

वैध†–वि॰ (सं॰) रीति-नीति के अनुकूल, विधि के अनुसार, उपयुक्त, ठीक।

वैधर्म्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नास्तिकता, विधर्मी होने का भाव, भिन्नता, पृथक्ता। विलो॰ **साधर्म्य**।

वैधव्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रँड़ापा, विधवा होने का भाव।

वैधेय–वि॰ (सं॰) ब्रह्मा या विधि का, विधि-संबंधी, **वैध्य**, विधि का।

वैनतेय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विनता की संतान अरुण, गरुड़।

वैभव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विभव, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, महत्व।

वैभवशाली–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रतापी, धनी, बड़े ऐश्वर्य वाला, **वैभवी, वैभववान**।

वैमनस्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शत्रुता, बैर।

वैमात्रेय–वि॰ (सं॰) विमाता या सौतेली माता से उत्पन्न, सौतेला। स्त्री॰ **वैमात्रेयी**।

वैयाकरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्याकरण शास्त्र का पूर्ण ज्ञाता, या पंडित, विद्वान्।

वैर–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *भा॰ वैरता*) शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैमनस्य, द्वेष।

वैर-शुद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) किसी से वैर का बदला लेना। यौ॰ संज्ञा, पु॰ (सं॰) **वैरशोधन**।

वैरागी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विरक्त, त्यागी, संन्यासी, विरागी।

वैराग्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विरक्ति, विराग, त्याग, **बैराग** (दे॰), देखे-सुने पदार्थों की चाह का त्याग, संसार को त्याग एकांत में ईशाराधन की चित्त-वृत्ति।

वैराज्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ही देश में दो राजाओं का राज्य या शासन, दो राजाओं से शासित राज्य।

वैरी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *वैरिन्*) शत्रु, रिपु, अरि, विरोधी, द्वेषी। स्त्री॰ **वैरिणी**।

वैवर्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विवर्णता, मलिनता।

वैवस्वत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य का एक पुत्र, एक मनु, एक रुद्र, वर्तमान मन्वंतर।

वैवाहिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समधी, कन्या या वर का श्वशुर। वि॰ विवाह-संबंधी, विवाह का। स्त्री॰ **वैवाहिकी**।

वैशंपायन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्यास जी के शिष्य एक प्रसिद्ध ऋषि।

वैशाख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चैत्र और जेठ के मध्य का महीना, **वैसाख** (दे॰)।

वैशाखी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वैशाख की पूर्णमासी, दो शास्त्र की छड़ी, **वैसाखी** (दे॰)।

वैशाली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विशाल नगरी, (प्राचीन बौद्ध काल) विशाल पुरी या नगरी (मुज़फ़्फ़रपुर प्रांत का बसाढ़ ग्राम)।

वैशिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेश्यागामी नायक (साहि॰)।

वैशिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छः दर्शन शास्त्रों में से महर्षि

कणाद कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें पदार्थों तथा द्रव्यों का निरूपण है, विज्ञान-शास्त्र, पदार्थविद्या, **आलूक्य** दर्शन, वैशेषिक दर्शन का मानने वाला।

वैश्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चार वर्णों में से तीसरा वर्ण जिनका धर्म अध्ययन, यजन और पशुपालन था तथा जिनकी वृत्ति, कृषि और वाणिज्य या (भार॰ आर्य॰) बनिया, व्यापारी, **वैस्य** (दे॰)।

वैश्यता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वैश्यत्व, वैश्य का धर्म या भाव।

वैश्यत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वैश्यता।

वैश्यजनीन–वि॰ (सं॰) सारे संसार के लोगों से संबंध रखने वाला, सब लोगों का, सार्वभौम।

वैश्वदेव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विश्देव-संबंधी यज्ञ या होम, विश्वदेवपूर्ण हवन।

वैश्वानर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अग्नि, चेतन, परमात्मा।

वैषम्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विषमता।

वैषयिक–वि॰ (सं॰) विषय-संबंधी, विषय का। संज्ञा, पु॰ विजयी, लंपट।

वैष्णव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आचार-विचार से रहने वाले विष्णुपासकों का एक संप्रदाय, विष्णु का उपासक। स्त्री॰ **वैष्णवी**। वि॰ विष्णु का, विष्णु-संबंधी।

वैष्णवी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विष्णु शक्ति, लक्ष्मी, तुलसी, दुर्गा, गंगा।

वैसा–सर्व (दे॰) उसके समान या तुल्य तत्सदृश, उसके ऐसा या जैसा। यौ॰ **ऐसा-वैसा**–साधारण। स्त्री॰ (दे॰) **वैसी**–उधर की ओर।

वैसे–वि॰ (दे॰) बिना मूल्य, सेंत-मेंत, उसी प्रकार, उसी तरह। यौ॰ **ऐसे-वैसे**–साधारण, भले-बुरे।

वोक–अव्य॰ (दे॰), ओर, तरफ़, दिशा।

वोट–संज्ञा, पु॰ (अं॰) मत, राय, **वोट** (ग्रा॰)।

वोटर–संज्ञा, पु॰ (अं॰) मत देने वाला।

वोद-वोदा–वि॰ (दे॰) गीला, भीगा, **ओद, ओदा** (ग्रा॰)।

वोहित–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *वोहित्थ*) जहाज़, बड़ी नाव।

वोहित्थ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जहाज़, बड़ी नाव।

वौल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) गोंद, गुग्गुल, धूप विशेष।

व्यंग्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्यंजना वृत्ति से प्रगट शब्द का गूढ़ार्थ, बोली, ताना, चुटकी, **व्यंग** (दे॰)।

व्यंजक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रकाशक, विशेष भाव बोधक शब्द।

व्यंजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) होने, व्यक्त या प्रकट करने का भाव या क्रिया, पका भोजन जिसके छप्पन भेद हैं, साग़-तरकारी आदि, अच्छा भोजन, वह अक्षर जो स्वर की सहायता बिना बोला न जावे, वर्णमाला के क से ह तक के सब वर्ण, अंग, अवयव।

व्यंजना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रगट करने की क्रिया, शब्द की वह शक्ति जिससे उसके सामान्यार्थ को छोड़ विशेषार्थ व्यक्त हो।

व्यक्त–वि॰ (सं॰) स्पष्ट, प्रकट, साफ़। संज्ञा, स्त्री॰ **व्यक्तता, व्यक्तत्व**।

व्यक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) व्यक्त होने का भाव या क्रिया, प्रकट होना, किसी शरीरधारी का शरीर, पु॰ मनुष्य, आदमी, व्यष्टि, जन, स्वतंत्र एवं पृथक् सत्ता वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **व्यक्तित्व, वैयक्तिक**।

व्यग्र–वि॰ (सं॰) व्याकुल, उद्विग्न, विकल, भयभीत, कार्य में लीन या फँसा हुआ, घबराया हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **व्यग्रता**।

व्यतिक्रम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) क्रम का बिगाड़ या उलट-पलट, विघ्न, बाधा। संज्ञा, स्त्री॰ **व्यतिक्रमता**।

व्यतिरेक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भेद, अभाव, अतिक्रम, अंतर, एक अर्थालंकार जहाँ उपमान से उपमेय में कुछ और अधिकता या विशेषता कही जाय (अ॰ पी॰)।

व्यतिरेकी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *व्यतिरेकिन्*) जो किसी को अतिक्रमण करके जावे।

व्यतीत–वि॰ (सं॰) बीता या गुजरा हुआ, गत, जो चला गया हो, **बितीत** (दे॰)।

व्यतीतना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *व्यतीत*) बीतना, गुज़रना, गत होना, चला जाना, **बितीतना** (दे॰)।

व्यतीपात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुत बड़ा उपद्रव या उत्पात, एक योग जिसमें शुभ कार्य या यात्रा का निषेध है (ज्यो॰)।

व्यथा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रोग, क्लेश, पीड़ा, दुख, वेदना, कष्ट, **बिथा** (दे॰)।

व्यथित–वि॰ (सं॰) क्लेशित, पीड़ित, दुखित, रोगी।

व्यपदेश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्याज, बहाना, अगुण्य में मुख्य का भाव।

व्यभिचार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दूषित या बुरा आचार-व्यवहार, बदचलनी, छिनाला, पुरुष का पर-स्त्री तथा स्त्री का पर-पुरुष से अनुचित संबंध।

व्यभिचारिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **परकीया,** कुलटा, छिनाल स्त्री।

व्यभिचारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *व्यभिचारिन्*) बदचलन, आचार-भ्रष्ट, परस्त्रीगामी, **छिनरा** (दे॰)। स्त्री॰ **व्यभिचारिणी**। काव्य में एक संचारी भाव।

व्यय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ख़र्च, सरफ़ा, बरवादी, ख़पत, विनाश, जन्म-कुंडली में लग्न से १२वाँ घर। यौ॰ **व्यय-स्थान, व्ययेश**–व्यय-स्थान का राशि-पति ग्रह (ज्यो॰)।

व्यर्थ–वि॰ (सं॰) निष्प्रयोजन, निरर्थक, सार या अर्थ-हीन, बेफ़ायदा, नाकहक, लूथा। क्रि॰ वि॰ फ़जूल, योहीं।

व्यलीक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुख, अनुचित, अयोग्य, विट, अपराध, डाँट-फटकार, डाँट-डपट, अलीक, **विलीका** (दे॰)।

व्यवकलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाक़ी निकालना, बड़ी संख्या में से छोटी सजातीय संख्या या घटाना (गणि॰)।

व्यवच्छेद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अलगाव, पार्थक्य, पृथक्ता, विलगता, हिस्सा, विभाग, विराम, ठहराव।

व्यवधान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) परदा, बीच में आकर ओट या आड़ करने वाली वस्तु, बीच में पड़ने वाला, भेद, खंड, विच्छेद।

व्यवसाय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोज़गार, उद्यम, जीविका, व्यापार, काम-धंधा, **व्यासाय** (दे॰)।

व्यवसायी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *व्यवसायिन्*) रोज़गारी, उद्यमी, व्यापारी, कामकाजी।

व्यवस्था–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शास्त्रों के द्वारा किसी कार्य का निर्धारित या निश्चित विधान, निश्चित रीति-नीति। **मु॰ व्यवस्था देना**–विद्वानों का किसी बात पर शास्त्रीय सिद्धांत बतलाना, विधान या रीति-नीति बतलाना। प्रबंध, इंतजाम, स्थिति, स्थिरता, वस्तुओं को सजा कर **यथा-स्थान रखना**।

व्यवस्थाता, व्यवस्थापक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला, नियमपूर्वक कार्य चलाने वाला, प्रबंध-कर्त्ता, विधायक।

व्यवस्थापिका सभा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सरकार के गवर्नर या वाइसराय की प्रबंधकारिणी या नियम बनाने वाली सभा (वर्तमान)।

व्यवस्थापत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था लिखी हों।

व्यवस्थित–वि॰ (सं॰) जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नीति हो, कायदे का।

व्यवहरिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *व्यावहारिक*) व्यवहार करने वाला, महाजन, ऋणदाता, **व्यवहर, ब्यौहर, ब्यौहरिया** (दे॰)।

व्यवहार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) काम, कार्य, क्रिया, बरताव, परस्पर बरतना, व्यापार, लेन-देन का काम, रोज़गार, महाजनी, विवाद, मुक़दमा, झगड़ा। यौ॰ **व्यवहार-कुशल**।

व्यवहार-शास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धर्म-शास्त्र, क़ानून, राजनीति, विवाद-निर्णय और अपराधादि के दंड-विधान का शास्त्र।

व्यवहित–वि॰ (सं॰) छिपा हुआ, जिसके आगे कोई आड़ या पर्दा हो, व्यवधान-प्राप्त, अंतराल-युक्त।

व्यवहृत–वि॰ (सं॰) जो कार्य में लाया गया हो, प्रयुक्त, कृतानुष्ठान जिसका आचरण किया गया हो। संज्ञा, स्त्री॰ **व्यवहृति**।

व्यष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) समाज का एक पृथक् विशेष व्यक्ति। (विलो॰ **समष्टि**।) अलग, भिन्न।

व्यसन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आपत्ति, बुरी या अमंगल बात, दुख, विपत्ति, विषयानुरक्ति, कामादिक विकारों से होने वाला दोष, प्रवृत्ति, शौक, विषयासक्ति, बुरी लत या कुटेव।

व्यसनी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *व्यसनिन्*) शौकीन, किसी वस्तु में आसक्त, विषयानुरागी।

व्यस्त–वि॰ (सं॰) व्याप्त, व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, घबराया हुआ, कार्य में फँसा या लगा हुआ।

व्याकरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह विद्या जिससे किसी भाषा का ठीक-ठीक बोलना, लिखना और समझना जाना जाता है। तथा, शब्दों, वाक्यों आदि के शुद्ध प्रयोगादि के नियमों की विवेचना का शास्त्र।

व्याकुल–संज्ञा, पु. (सं.) विकल, घबराया हुआ, उत्कंठित। संज्ञा, स्त्री. **व्याकुलता**।

व्याक्रोश–संज्ञा, पु. (सं.) अनादर या तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना, चिल्लाना, शोर करना।

व्याख्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) टीका, विवेचना, व्याख्यान, स्पष्टार्थ, जटिल या क्लिष्ट वाक्यादि का अर्थ-स्पष्ट करने वाली वाक्यावली।

व्याख्याता–संज्ञा, पु. (सं. *व्याख्यातृ*) व्याख्या करने वाला, व्याख्यान देने या भाषण करने वाला, टीकाकार।

व्याख्यान–संज्ञा, पु. (सं.) किसी विषय की व्याख्या, टीका या विवेचनादि करने या बतलाने का कार्य, भाषण, वक्तृता।

व्याघात–संज्ञा, पु. (सं.) बाधा, विघ्न, चोट, आघात, मार, प्रहार, एक अशुभ योग (ज्यो.), एक अलंकार जहाँ एक ही साधन या उपाय से दो विरोधी कार्यों के होने का कथन हो (अ. पी.)।

व्याघ्र–संज्ञा, पु. (सं.) बाघ, सिंह, शेर।

व्याघ्रचर्म्म–संज्ञा, पु. यो. (सं.) बाघ या शेर की खाल, **व्याघ्राम्बर, बाघम्बर, बघम्बर** (दे.)।

व्याघ्रनख–संज्ञा, पु. यो. (सं.) नख (गंध-द्रव्य) बाघ का नाखून, **बघनख** (दे.) **बघनहा** जिसे दृष्टि-दोष से बचाने को बालकों के गले में पहनाते हैं।

व्याज–संज्ञा, पु. (सं.) **मिस** (ब्र.) बहाना, छल, कपट, विघ्न, देर, विलंब, देर, सूद, ब्याज, **बियाज** (दे.) लाभ

व्याजक–वि. (सं.) छली, ऋणी, व्याजू।

व्याजनिंदा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) ऐसी निंदा जिसमें यों देखने से निंदा न हो, एक शब्दालंकार (अर्थालंकार) जिसमें निंदा तो हो किंतु देखने में वह स्पष्ट न हो।

व्याजस्तुति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) ऐसी स्तुति जिसमें देखने से स्तुति न हो वरन् ब्याज या बहाने से स्तुति हो, एक शब्दालंकार (अर्थालंकार) जिसमें बहाने से ऐसी स्तुति की जाए कि देखने में वह स्पष्ट न जान पड़े।

व्याजू–संज्ञा, पु. वि. दे. (सं. *ब्याज*) वह धन जो ब्याज या सूद पर उधार दिया जावे, **बियाजू** (दे.)।

व्याजोक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) छल या कपट से भरी बात, एक अर्थालंकार जहाँ किसी प्रगट बात के छिपाने की कोई बहाना बनाया जाय (अ. पी.)।

व्याड़ि–संज्ञा, पु. (सं.) एक व्याकरण ग्रंथकार प्राचीन ऋषि।

व्यादान–संज्ञा, पु. (सं.) फैलावा, विस्तार।

व्याध–संज्ञा, पु. (सं.) निषाद, अहेरी, वनैले पशुओं का शिकारी, किरात, बहेलिया, **व्याधा** (दे.) एक जंगली जाति।

व्याधि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) व्यथा, रोग बीमारी, झझट, बखेड़ा, विपत्ति, काम या वियोगादि से देह में कोई राग होना (साहि.)। **वियाधि** (दे.) अँगुली की नोक का फोड़ा।

व्यान–संज्ञा, पु. (सं.) देहान्तर की पाँच वाजुओं में से सर्वत्र संचार करने वाली एक वायु।

व्यापक–वि. (सं.) आच्छादक, सब स्थानों में फैला हुआ, घेरने या ढकने वाला, प्रत्येक पदार्थ के भीतर-बाहर, वर्तमान। संज्ञा, स्त्री. **व्यापकता**, पु. **व्यापकत्व**।

व्यापना–क्रि. अ. दे. (सं. *व्यापन*) व्याप्त होना, किसी वस्तु के भीतर-बाहर फैलाना या वर्तमान रहना, आच्छादित करना, असर करना, प्रभाव डालना, पैठना।

व्यापार–संज्ञा, पु. (सं.) कार्य, कर्म, काम-धंधा, सौदागरी, रोजगार, व्यवसाय, उद्यम, क्रय-विक्रय का कार्य, **व्यौपार** (दे.)।

व्यापारी–संज्ञा, पु. (सं. *व्यापारिन्*) व्यवसायी, सौदागर, रोज़गारी, **व्यौपारी** (दे.)। वि. (हि.) व्यापार-संबंधी।

व्यापी–संज्ञा, पु. (सं. *व्यापिन्*) सर्वगत, विभु, व्यापक।

व्याप्त–वि. (सं.) विस्तृत, फैला हुआ।

व्याप्ति–संज्ञा, पु. (सं.) व्याप्त होने का भाव, एक वस्तु का दूसरी में पूर्ण रूप से फैला या मिश्रित होना, 8 प्रकार की सिद्धियों या ऐश्वर्यो में से एक।

व्यामोह–संज्ञा, पु. (सं.) अज्ञान, मोह, दुख, व्याकुलता।

व्यायाम–संज्ञा, पु. (सं.) परिश्रम, कसरत बल वर्धनार्थ किया गया शारीरिक श्रम।

व्याल–संज्ञा, पु. (सं.) साँप, बाघ, राजा, विष्णु, दंडक छंद का एक भेद (पिं.)।

व्यालि–संज्ञा, पु. (सं. *व्याड़ि*) व्याकरण ग्रंथकार एक ऋषि।

व्यालिक–संज्ञा, पु. (सं.) सँपेरा, **व्याली**।

व्यालू†–संज्ञा, स्त्री. पु. दे. (सं. *वेला*) रात्रि का भोजन, **बियारी**।

व्यावहारिक–वि. (सं.) बरताव या व्यवहार का, व्यवहार-संबंधी, व्यवहार शास्त्र संबंधी।

व्यावृत्त–वि. (सं.) खंडित, निवृत्त, मनोनीत, निषिद्ध।

व्यासंग–संज्ञा, पु. (सं.) अत्यधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्यास–संज्ञा, पु. (सं.) पराशर के पुत्र कृष्ण-द्वैपायन, इन्होंने महाभारत, भागवत, 18 पुराण और वेदान्तादि की रचना की जिससे वेद-व्यास कहाये इन्होंने वेदों का संग्रह संपादन और विभाग किया। रामायणादि के कथावाचक, वह सीधी रेखा जो वृत्त गोले के केंद्र से जाकर परिधि पर समाप्त हो, फैलाव, विस्तार।

व्यासार्द्ध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) व्यास का आधा, अर्ध व्यास।

व्याहत–वि. (सं.) व्यर्थ, निषिद्ध।

व्याहृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) उक्ति, कथन, भूः, भुवः, स्वः, इन तीनों का समुदाय या मंत्र।

व्युत्क्रम–संज्ञा, पु. (सं.) व्यतिक्रम, क्रम-रहित, उलटा-पुलटा।

व्युत्पत्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) किसी पदार्थ का मूल, उत्पत्ति-स्थान, उद्गम, शब्द का वह मूल रूप जिससे वह बना हो, किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न–वि. (सं.) जो किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या अभ्यासी हो।

व्यूह–संज्ञा, पु. (सं.) जमाव, समूह, निर्माण, बनावट, रचना, शरीर, सेना, युद्ध में रचा गया सैन्यविन्यास या विशिष्ट स्थापन। जैसे–चक्र-व्यूह।

व्योम–संज्ञा, पु. (सं. *व्योमन्*) गगन, आकाश, नभ, आसमान, बादल, पानी।

व्योमचर, व्योमचारी–संज्ञा, पु. (सं. *व्योमचारिन्*) देवता, चंद्रमा, सूर्य, पक्षी, तारागण, मेघ, वायु, बिजली, विमान, वायुयान।

व्योमयान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आकाश में उड़ने वाला यान, विमान, वायुयान, हवाई जहाज़; (अं.) स्पेसशिप।

व्रज–संज्ञा, पु. (सं.) गमन, जाना या चलना, समूह, वृंद, श्रीकृष्ण का लीला-क्षेत्र, मथुरा के आस-पास का देश, **बिरिज** (ग्रा.)।

व्रजन–संज्ञा, पु. (सं.) चलना, जाना।

व्रजचंद्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण, ब्रजचंद।

व्रजनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्णजी, **ब्रज नायक**।

व्रजपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **व्रजाधिपति, व्रजाधिप,** श्रीकृष्णजी।

व्रजभाषा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) ब्रजमंडल (मथुरा-आगरादि) की बोली या भाषा, उत्तर भारत के प्रायः सभी बड़े-बड़े कवियों ने (4 या 5 सौ वर्ष से) इसी में रचनाएँ की हैं जिनमें सूर, बिहारी, केशवादि प्रसिद्ध हैं।

व्रजभूप, व्रजभूपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण।

व्रजमंडल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) व्रज और उसके आस-पास का प्रांत या प्रदेश।

व्रजराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **व्रज बिहारी,** श्रीकृष्णजी।

व्रजेंद्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण जी।

व्रजेश, व्रजेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्रीकृष्ण। स्त्री –**व्रजेश्वरी**– राधिका।

व्रज्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पर्यटन, भ्रमण, घूमना-फिरना, गमन, जाना, चढ़ाई, आक्रमण, धावा।

व्रण–संज्ञा, पु. (सं.) शरीर का घाव या फोड़ा।

व्रत–संज्ञा, पु. (सं.) नियम, दृढ संकल्प, किसी पुण्य तिथि को पुण्यार्थ नियम से उपवास करना, खाना, भक्षण, उपवास, अनुदान।

व्रतिक–संज्ञा, पु. (सं.) व्रत का उपवास करने वाला, व्रती।

व्रती–संज्ञा, पु. (सं. *व्रतिन्*) व्रत या उपवास करने वाला, **वर्ती** (दे.), ब्रह्मचारी, यजमान, कोई व्रत या संकल्प धारणा करने वाला।

व्रत्य–संज्ञा, पु. (सं.) व्रत या उपवास करने वाला।

व्रात–संज्ञा, पु. (सं.) समूह, भीड़, लोग।

व्रात्य–संज्ञा, पु. (सं.) जिसका उपबीत (जनेऊ) संस्कार न हुआ हो, दसों संस्कारों से हीन, वर्ण-संकर, अनार्य या पतित।

व्रीड़ा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) त्रपा, लज्जा, शरम।

व्रीहि–संज्ञा, पु. (सं.) धान, चावल।

बहुब्रीहि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) षट् समासों में से एक (व्या.)।

श

श–संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला के ऊष्मों में से प्रथम वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान प्रधानतया तालु है। संज्ञा, पु. (सं.) मंगल, कल्याण, शस्त्र, शिव।

शं–संज्ञा, पु. (सं.) शांति, सुख, कल्याण, वैराग्य, मंगल। वि. शुभ।

शंक–संज्ञा, पु. (सं.) आशंका, डर, भय, **संक** (दे.)।

शंकना*–क्रि. अ. दे. (सं. *शंका*) **संकना** (दे.) डरना, शंका या संदेह करना।

शंकर–वि. (सं.) कल्याण या मंगल करने वाला, शुभकर्ता, लाभदाता। संज्ञा, पु.–महादेव जी, शिव, शंभु, शंकराचार्य, मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं.)।

शंकर शैल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शंकर चल, कैलाश पर्वत।

शंकर स्वामी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *शंकर स्वामिन्*) अद्वैत मत प्रवर्तक स्वामी शंकराचार्य।

शंकरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **शंकरी**, पार्वती जी।

शंकराचार्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अद्वैत मत के प्रवर्तक, एक प्रसिद्ध शैव आचार्य वेदांत और गीता पर इनके भाव परम प्रसिद्ध हैं, शंकर स्वामी, जो कि प्रांत में सन् 788 में जन्मे और 32 वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवासी हुए।

शंकरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पार्वती जी।

शंका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भय, भीति, डर की आशंका, खटका, चिंता, संदेह, संशय, अनुचित व्यवहारादि से होने वाली इष्ट-हानि या अनिष्ट का भय, साहित्य में एक संचारी भाव, **संका** (दे.)।

शंकित–वि. (दे.) भयभीत, डरा हुआ, संदेह-युक्त, चिंतित, अनिश्चित। स्त्री. **शंकिता**।

शंकु–संज्ञा, पु. (सं.) कील, मेख, गाँसी, खूँटा, खूँटी, बरछा, भाला, कामदेव, शिव, वह खूँटी जिससे सूर्य या दीपक की छाया नाप कर समय जाना जाता था (प्राचीन.)।

शंख–संज्ञा, पु. (सं.) कंबु, बड़ा, सामुद्रीय घोंघा यह (विशेषतया) देवतादि के सामने बजाया जाता है, पवित्र माना जाता है, सबसे बड़ी संख्या; हाथी का गंडस्थल, शंखासुर दैत्य, 6 निधियों में से एक निधि, 14 रत्नों में से एक, छप्पय का एक भेद, दंडक, छंदांतर्गत प्रावृत्त का एक भेद (पिं.)।

शंखचूड़–संज्ञा, पु. (सं.) कुवेर का मित्र या दूत, एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

शंखद्राव–संज्ञा, पु. (सं.) शंख को भी गला देने वाला एक अर्क(वैद्य.)।

शंखधर–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, श्रीकृष्ण।

शंखध्वनि–संज्ञा, पु. यौ. (स.) विजय-ध्वनि, शंख का शब्द।

शंखनारी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) छः वर्णों का सोमराजी छंद (पिं.)।

शंखपाणि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु।

शंखपुष्पी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शंखाहुली, **सखौली** (दे.)।

शंखभृत–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु।

शंखासुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मा जी के पास से वेदों को चुराकर समुद्र में जा छिपने वाला एक दैत्य जिसे विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर मारा था (पुव.)।

शंखाहुली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शंखपुष्पी, सखौली, कौड़ियाला, श्वेत अपराजिता, **संखाहुली** (दे.)।

शंखिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शंखाहुली, सखौली (दे.), शंखपुष्पी, **कौड़ियाला** (प्रान्ती.), श्वेत अपराजिता, मुख की नाड़ी, सीप, एक देवी, पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद, एक वन-औषधि।

शंखिनी-डंकिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक प्रकार का उन्माद रोग।

शंठ–संज्ञा, पु. (सं.) मूर्ख, बेवकूफ़, साँड़, नपुंसक, हिजड़ा, **संठ** (दे.)।

शंड–संज्ञा, पु. (सं.) साँड़, षंड, नपुंसक, हिजड़ा, वह पुरुष जिसके संतान उत्पन्न न हो।

शंडामर्क–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शंड और मर्क नामक दो दैत्य, **संडामर्का** (दे.)।

शंतनु–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शांतनु*) एक चंद्रवंशीय राजा, भीष्म पितामह के पिता।

शंतनुसुत–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शांतनुसुत*) भीष्म पितामह।

शंपु–वि. (सं.) प्रयत्न, हर्षित, आनंदित।

शंब–वि. (सं.) सुकृती, **पुण्यात्मा**, धर्मी।

शंबर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक दैत्य जिसे इंद्र ने मारा था, एक प्राचीन शस्त्र, युद्ध, संग्राम। वि॰ **शांबरीय**।

शंबरारि, शंबररिपु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कामदेव, प्रमुख, शबर-शत्रु।

शंबल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाथेय, मार्ग-भोजन, विद्वेष, तट, **संवल** (दे॰)।

शंबु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घोंघा, छोटा शंख, **संधु** (दे॰)।

शंबुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घोंघा, छोटा शंख, **संबुक** (दे॰)।

शंबूक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राम-राज्य में एक शूद्र तपस्वी, जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण-सुत अकाल में मरा और इसी से राम ने इसे मार कर उसे जीवित किया (रामा॰), घोंघा, छोटा शंख।

शंभु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महादेव, शिव, **संभु** (दे॰) 11 रुद्रों में से एक 13 वर्णों का एक वृत्त (पिं॰), एक दैत्य, शंभु। संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वायंभुव।

शंभुगिरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कैलास।

शंभुधनु–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शंभुधनुष्*) शिव-धनुष।

शंभुबीज-शंभुतेज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पारद, पारा, **शिव-शुक्र, शंभु-वीर्य**।

शंभुभूषण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा, साँप।

शंभुलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कैलास।

शंसा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चाहना, चाह, अभिलाषा, उत्सुकता, उतकट अभिलाष।

शंसित–वि॰ (सं॰) उक्त, कथित, प्रोक्त, निश्चित, स्तुत्य।

शंस्य–वि॰ (सं॰) प्रशंसनीय, स्तुत्य, प्रशंसा के योग्य, श्लाध्य।

शऊर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कार्य करने की योग्यता या क्षमता, लियाक़त, तमीक़, वृद्धि, अक्ल, **सहूर** (दे॰)।

शऊरदार–संज्ञा, पु॰ वि॰ (अ॰ *शुऊर+दार* फा॰) योग्य, लायक, बुद्धिमान, कठ बंद। वि॰ **वेशऊर**।

शक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह राजा जिसके नाम से कोई सम्वत् चले, सूर्य-वंशीय राजा नरिष्यंत से उत्पन्न एक क्षत्रिय जाति विशेष जो पीछे म्लेच्छों में मानी गई (पुरा॰)। राजा शालिवाहन से चलाया संवत् (ईसा के 78 वर्ष पश्चात् से प्रारंभ)। संज्ञा, पु॰ (अ॰) संदेह, शंका, भ्रम, **सक** (दे॰)।

शकट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बैलगाड़ी, छकड़ा, **लढ़ी** (ग्रा॰), बोझा, भार, एक दैत्य जिसे कृष्ण जी ने मारा था, देह, शरीर।

शकटासुर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक दैत्य जो कृष्ण के द्वारा मारा गया था (भा॰)।

शकठ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मचान।

शकर–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शर्करा*) शक्कर, चीनी, **खाँड़**।

शकरकंद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *शकर+कंद सं॰*) एक विख्यात मीठी कंद।

शकरपारा–संज्ञा, पु॰ (फा॰) नींबू से कुछ बड़ा और स्वादिष्ट एक फल, एक प्रकार का चौकोर पकाव या मिष्टान्न, इसी के आकार की सिलाई।

शक़ल, शक़्ल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *शुक़्र*) आकृति, मुख की बनावट, रूप, चेहरा, सूरत, चेष्टा, बनावट या गठन, गढ़न, स्वरूप, उपाय, तरकीब, ढाँचा, ढब। संज्ञा, पु॰ (सं॰) टुकड़ा, खंड।

शताब्द–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा शालिवाहन का शक सम्वत्, यह ईसवी सन् से 78 या 79 वर्ष पीछे चला; सौ वर्ष।

शकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शक-वंशीय व्यक्ति शवर्ण।

शकारि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा विक्रमादित्य जिन्होंने शकों को पराजित किया था।

शकुंत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्षी, पखेरू, विश्वामित्र का पुत्र।

शकुंतला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मेनका अप्सरा की कन्या और राजा दुष्यंत की रानी और सुविख्यात राजा भरत की माता, एक नाटक।

शकुन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी कार्यादि के समय ऐसे लक्षण जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं, शुभसूचक चिन्ह, **सगुन** (दे॰)। विलो॰ **अपशकुन, असगुन**। **मु॰ शकुन विचारना या देखना**–किसी कार्य के होने या न होने के विषय में लक्षणों या तत्सूचक चिन्हों के द्वारा निर्णय करना, शुभ घड़ी मुहूर्त या उस घड़ी का कार्य, पक्षी।

शकुनशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शुभा-शुभ शकुनों तथा उनके फलों की विवेचना का शास्त्र, **शकुन-विज्ञान**।

शकुनि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्षी, पखेरु, चिड़िया, हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य, कौरवों के विनाश का हेतु और उनका मामा तथा दुर्योधन का मंत्री, **शकुनी, सकुनि**।

शकुल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मछली विशेष।

शकृत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मल, पुरीष, विष्टा।

शक्कर–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शंकरा, फ़ा. शक्कर*) चीनी, खाँड़, कच्ची चीनी, **सक्कर** (दे.)।

शक्करी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चौदह वर्णों के छंद या वृत्त (पिं.)।

शक्की–वि. (अ. *शक+ई प्रत्य.*) शक या संदेह करने वाला, प्रत्येक बात या विषय में शक करने वाला, संशयात्मा।

शक्त–संज्ञा, पु. (सं.) शक्ति, युक्त, समर्थ, योग्य।

शक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बल, ताक़त, सामर्थ्य, **सक्ति, सक्ती, सकति** (दे.), पौरुष, पराक्रम, ज़ोर, क़ूवत, वश, प्रभावोत्पादक बल, अधिकार, शत्रुओं पर विजयी होने के सेना, धन आदि राज्य के साधन तथा सैन्य-कोषादि इन यथेष्ट साधनों से युक्त बड़ा और पराक्रमी राज्य या राजा, प्रकृति, किसी पदार्थ तथा तद्बोधक शब्द का संबंध (न्याय.), माया, किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा, भगवती, लक्ष्मी, गौरी, सरस्वती, एक शस्त्र साँग, तलवार, बर्छी, **शक्ती** (दे.)।

शक्तिधर, शक्तिभृत–संज्ञा, पु. (सं.) षडानन, कार्तिकेय।

शक्तिपूजक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वाम-मार्गी, शाक्त, तांत्रिक, **शक्तयुपासक**।

शक्तिपूजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) शक्ति या देवी की शक्ति-विधि से पूजा, वाममार्गियों द्वारा तंत्रमंत्रादि विधान से) देवी का पूजन, **शक्तयार्चन**।

शक्तिमत्ता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शक्तिमान् होने का भाव, बलिष्ठता, सामर्थ्य।

शक्तिमान्–वि. (सं. *शक्तिमत्*) बली, बलवान्, बलिष्ठ। स्त्री. **शक्तिमती**।

शक्तिशाली–वि. (सं. *शक्ति शालिन*) बलवान।

शक्तिहीन–वि. यौ. (सं.) निर्बल, जलहीन, असमर्थ, नपुंसक, नामर्द, **शक्ति-रहित, शक्ति-विहीन**। संज्ञा, स्त्री. **शक्तिहीनता**।

शक्ती–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शक्ति*) 18 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (वि.), बर्छी, देवी, बल, सामर्थ्य।

शक्तु–संज्ञा, पु. (सं.) सत्तू, **सतुआ** (ग्रा.)।

शक्य–वि. (सं.) क्रियात्मक, संभव, किया जाने योग्य, होने योग्य, शक्ति-युक्त। संज्ञा, पु. (सं.) शब्द शक्ति से प्रकट होने वाला अर्थ (व्याक.) संज्ञा, स्त्री. **शक्यता**–क्रियात्मिकता, योग्यता, क्षमता।

शक–संज्ञा, पु. (सं.) छः मात्राओं वाले रगण का चौथा भेद (पिं.), इंद्र।

शक-प्रस्थ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इंद्रप्रस्थ, दिल्ली।

शकसुत, शकसुवन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शक्रशनु, इंद्र का पुत्र, जयंत, बालि, अर्जुन, **शकात्मज, शक्रतनय**।

शक़्ल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शकल, सूरत, चेहरा, बनावट, स्वरूप, आकृति।

शख़्स–संज्ञा, पु. (अ.) मनुष्य, जन, व्यक्ति।

शख़्सियत–संज्ञा, पु. (अ.) व्यक्तित्व।

शग़ल–संज्ञा, पु. (अ.) कामधंधा, कार्य, व्यापार, मनोविनोद।

शगुन, शगून–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शकुन*) शकुन, शुभाशुभ-सूचक चिन्ह या लक्षण, विवाह की बातचीत पक्की होने पर की एक रीति या रस्म, तिलक, टीका, **सगुन** (दे.)।

शगुनिया–संज्ञा, पु. (हि. *शगुन+इया प्रत्य.*) शकुन बताने वाला छोटा ज्योतिषी।

शगूफा–संज्ञा, पु. (फा.) कली, बिना खिला फूल, पुष्प, फूल, नवीन और अनोखी बात या घटना। **मु. शगूफ़ा छोड़ना**–नई विलक्षण बात कहना।

शचि, शची–संज्ञा, स्त्री. (सं.) इंद्र की स्त्री, पुलोमजा, इंद्राणी।

शचीपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इंद्र, **शचीनाथ**।

शचीश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इंद्र।

शजरा–संज्ञा, पु. (अ.) वंश-वृक्ष, वंशावली, खेतों का नक़्शा (पटवारी)।

शटी–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार का कबूतर।

शठ–वि. (सं.) मूर्ख, अपढ़, धूर्त्त, बेसमझ, दुष्ट, बदमाश, पाजी, लुच्चा, चालाक, **सठ** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **शठता**, पु. **शाठ्य**। संज्ञा, पु. वह नायक जो अपने अपराध के छल से छिपने में प्रवीण हो (साहि.)।

शठता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शाठ्य, **शठत्व**, धूर्त्तता, बदमाशी, दुष्टता।

शण–संज्ञा, पु. (सं.) सन, पाट।

शणसूत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सुतली, वैश्यों का जनेऊ।

शत–वि. (सं.) सौ, दस का दस गुना, सैकड़ा, सौ की संख्या (100)।

शतक–संज्ञा, पु. (सं.) सैकड़ा, एक सी सौ वस्तुओं का समूह, शताब्दी। स्त्री. **शतिका**; (अं.) सैंचुरी।

शतकोटि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इंद्र का वज्र, सौ करोड़ की संख्या।

शतक्रतु–संज्ञा, पु. (सं.) इंद्र।

शतघ्नी–संज्ञा, पु. (सं.) पुराने समय की तोप या बंदूक–जैसा एक शस्त्र।

शतदल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पद्म, कमल।

शतद्रु–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सतलज नदी।

शतपत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कमल।

शतपथ (ब्राह्मण)–संज्ञा, पु. (सं.) महर्षि याज्ञवल्क्य कृत यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ।

शतपद–संज्ञा, पु. (सं.) कनखजूरा, **गोजर** (ग्रा.) च्यूटी। स्त्री. **शतपदी**।

शतपुष्प–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सौंफ।

शतभिषा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सौ तारों के समूह से बना गोलाकार 24 वाँ नक्षत्र, **सतभिखा** (दे.) (ज्यो.)।

शतमख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इंद्र, शतक्रतु।

शतमूली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लता विशेष।

शतरंज–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. मि. सं. *चतुरंग*) एक विख्यात खेल जिसकी बिसात में चौंसठ घर होते हैं।

शतरंजी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) कई रंगों का छपा फर्श, दरी या बिछौना, सतरंगी (**सप्तरंगी**–सं.), शतरंज की बिसात, शतरंज का अच्छा खिलाड़ी।

शतरूपा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वायंभुव मनु की पत्नी। ब्रह्म की मानसी कन्या, तथा पत्नी और स्वायंभुव की माता।

शता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विष्णु, ब्रह्मा, कृष्ण, गौतम मुनि, राजा जनक के पुरोहित, **सतानंद**।

शतानीक–संज्ञा, पु. (सं.) वृद्ध या बूढ़ा, चंद्रवंशीय द्वितीय राजा जिनके पिता जन्मेजय और पुत्र सहस्रानीक थे (पुरा.), सौ सैनिकों का नायक।

शताब्द, शताब्दी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सौ वर्षों का समय, किसी संवत् के एक से सौ वर्षों तक का समय।

शतायु–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *शतायुस्*) वह पुरुष जिसकी अवस्था सौ वर्षों की हो।

शतायुध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सौ अस्त्रों वाला, जिसके सौ हथियार हों।

शतावधान–संज्ञा, पु. (सं.) वह मनुष्य जो एक ही समय में एक ही साथ सौ या बहुत-सी बातें सुनकर क्रमानुसार स्मरण रख सके और कई कार्य एक साथ कर सके, श्रुतिधर।

शतावर, शतावरी- संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शतवरी*) सतावर नामक औषधि, सफ़ेद मूसली।

शती–संज्ञा, स्त्री. (सं. *शतिन्*) सैकड़ा, सौ का समूह, (यौगिक में) जैसे–सप्तशती।

शत्रु–संज्ञा, पु. (सं.) बैरी, रिपु, अरि–**शत्रु, सत्र** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **शत्रुता**।

शत्रुघ्न–संज्ञा, पु. (सं.) अयोध्या-नरेश श्री-दशरथ की रानी सुमित्रा से उत्पन्न लक्ष्मण जी के छोटे भाई, रिपुसूदन, सुमित्रानंद, **शत्रुघन, सत्रुघन, सत्रुहन, शत्रुहन** (दे.)।

शत्रुता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वैर-भाव, दुश्मनी, रिपुता, वैमनस्य।

शत्रुताई*–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **शत्रुता** (सं.)।

शत्रुदमन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शत्रुघन, रिपूसदन।

शत्रुमर्द्दन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शत्रुघन, रिपुसूदन।

शत्रुसाल–वि. (सं. *शत्रु+सालना* हि.) वैरी के हृदय को छेदने या शूल देने वाला। सं. पु. एक राजा।

शत्रुहंता–वि. (सं.) वैरियों को मारने वाला। संज्ञा, पु. शत्रुघन। यौ. **शत्रूहंतायोग** (ज्यो.)।

शत्रुहा–वि. (सं.) **रिपुहा, अरिहा**, वैरियों का मारने वाला। संज्ञा, पु. शत्रुघ्न।

शदीद–वि. (अ.) अत्यधिक, भारी, ओजपूर्ण बहुत बड़ा, बहुत ज़्यादा, सख़्त। जैसे–दर्द शदीद, **जरर-शदीद**।

शनि–संज्ञा, पु. (सं.) शनिश्चर ग्रह, अभाग्य, दुर्भाग्य, दुष्ट, अनिष्टकारी (व्यंग्य), **शनी, सनि, सनी** (दे.)।

शनिप्रिय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नीलम, नील-मणि, पत्थर, **रावटी**।

शनिवार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शुक्रवार के पीछे और रविवार से पूर्व का एक दिन, **शनिश्चर**।

शनिश्चर–संज्ञा, पु. (सं.) सौर संसार का 7वाँ ग्रह जो सूर्य से 883000000 मील की दूरी पर है और 29 वर्ष तथा 167 दिनों में सूर्य की परिक्रमा करता है, **शनिवार**,

शनीचर, सनीचर (दे.)। वि. **शनिश्चरी**। यौ. **शनिश्चरी-दृष्टि**–कुदृष्टि।

शनैः–अव्य. (सं.) धीरे-धीरे। यो. **शनैः-शनैः**।

शनैश्चर–संज्ञा, पु. (सं.) शनिश्यर ग्रह।

शपथ–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सौंगद, सौगंध, क़सम, कौल, करार, वचन, प्रतिज्ञा। **मु. शपथ खाना (करना)**–क़सम खाना।

शप्या–संज्ञा, पु. (सं.) चंद्रमा, बोझा।

शफ़तालू–संज्ञा, पु. (फ़ा.) एक प्रकार का आलू, रतालू, सतालू, शेवड़ा आड़ू।

शफरी–संज्ञा, पु. (सं.) छोटी मछली, **सफरी** (दे.)।

शफ़ा–संज्ञा, स्त्री. (अ.) आरोग्यता, तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।

शफ़ाख़ाना–संज्ञा, पु. (अ. *शफ़ा+ख़ाना* फा.) चिकित्सालय, अस्पताल (दे.) (अं.) **हास्पिटल**, दवाख़ाना।

शब–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) रात्रि, रात।

शबद, सबद–संज्ञा, पु. (दे.) **शब्द, सब्द** (दे.)।

शबनम–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) तुषार, ओस, एक तरह का महीन कपड़ा। संज्ञा, स्त्री. वि. **शबनमी**–मसहरी, शामियाना।

शबर–वि. (अ.) कई रंगों का। संज्ञा, पु. एक वृक्ष, एक नीच जाति।

शबाब–संज्ञा, पु. (अ.) जवानी, युवावस्था, अति सुंदरता। यौ. **शबाब का आलम**।

शबी, सबी–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *शबीह*) तसवीर, चित्र।

शबील–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) पौसला, प्याऊ।

शबीह–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) तसवीर, चित्र।

शब्द–संज्ञा, पु. (सं.) किसी पदार्थ या भावादि-बोधक सार्थक ध्वनि, आवाज़, बफ़ूज़, किसी महात्मा या साधु के बनाए पद (जैसे कबीर के शब्द) **सबद, शबद** (दे.)।

शब्दचित्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अनुप्रास नामक एक शब्दालंकार (अ. पी.)।

शब्दप्रमाण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) किसी आर्य का कथन जो प्रमाण माना जाता है (व्या.), केवल कथन प्रमाण; **शाब्द**।

शब्दब्रह्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेद, शब्द ही ब्रह्म है–यह सिद्धांत।

शब्दभेदी–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शब्दवेधी*) केवल शब्द के आधार पर दिशा जानकर किसी को वाण से बिना देखे वेध देना, दशरथ, अर्जुन।

शब्दवेधी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *शब्द वेधिन्*) बिना देखे हुए केवल शब्द के ही आधार पर किसी को वाण से वेध देना, दशरथ, अर्जुन, पृथ्वीराज।

शब्दशक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) शब्द की वह शक्ति जिससे उसका कोई विशेष भाव ज्ञात होता है, इसके तीन भेद हैं–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना (काव्य शा.)।

शब्दशास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (स.) शब्दादि की विवेचना का विज्ञान, व्याकरण।

शब्दसाधन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) व्याकरण का वह खंड जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, व्यवस्था या रूपांतर आदि का विवेचन होता है।

शब्दाडंबर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भाव-हीन, या अल्प भाव वाले, बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग, **शब्दजाल**। •

शब्दानुशासन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) व्याकरण।

शब्दालंकार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक अलंकार जिसमें वर्णो या शब्दों के विन्यास के द्वारा ही चारु चमत्कार या लालित्य प्रगट किया जावे, जैसे–अनुप्रासादि।

शम–संज्ञा, पु. (सं.) मोक्ष, मुक्ति, शांति, उपचार, अंतःकरण या मन और इंद्रियों का निग्रह, क्षमा, काव्य में शांतरस का स्थाई भाव। संज्ञा, स्त्री. **शमता**।

शमन–संज्ञा, पु. (सं.) दमन, शांति, हिंसा, यम, यज्ञ में पशु-बलिदान, **समन** (दे.)। वि. **शमित, शमनीय, शम्य**।

शमलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शांतिलोक, स्वर्ग, बेकुंठ।

शमशेर–संज्ञा, स्त्री. (फा.) खड़ग, तलवार।

शमा–संज्ञा, स्त्री. (अ. *शमअ*) मोमबत्ती। शांति, क्षमा।

शमादान–संज्ञा, पु. (फा.) वह थाली जिसमें रखकर मोमबत्ती जलाई जाती है।

शमित–वि. (सं.) ठहरा हुआ, शांत, जिसका शमन किया गया हो।

शमी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विजयादशमी पर पूजा जाने वाला एक वृक्ष विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष, **छोंकर, श्वेत कीकर, छिकुर** (दे.)।

शमीक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक क्षमाशील ऋषि जिनके गले में राजा परीक्षित ने मरा साँप डाला था।

शयन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोना, नींद लेना, पलंग, शय्या, बिछौना, **सयन** (दे॰)।

शयन-आरती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सोने के समय से पहले की आरती।

शयनगृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **शयनागार** (सं॰), सोने का घर, **शय्यालय**।

शयनबोधिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अगहन बदी एकादशी।

शयनागार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शयनगृह, सोने का घर, शयन मंदिर, **शयनालय**।

शय्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पलंग, खटिया, खाट, बिछौना, **सज्जा** (दे॰) बिस्तर, **बिछावन**।

शय्यादान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मृतक के निमित्त महापात्र को सब बिछावन और वस्त्राभरण सहित पलंग दान में देना, **सज्जादान** (दे॰)।

शर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाराच, तीर, वाण, शायक, **सरई,** सरपत, सरकंडा, रामशर, दूध-दही की मलाई, पाँच की संख्या का सूचक शब्द, चिता, भाला का फल एक असुर।

शरअ–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) क़ुरान की आज्ञा, मज़हब, दीन तरीका, मुसलमानों का धर्म शास्त्र, दस्तूर हि॰ **शरई**।

शरजन्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *शरजन्मन्*) षडाननन, कार्तिकेय।

शरट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गिरगिट, गिरदान, कुकलास।

शरण–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आड़, आश्रय, रक्षा, पनाह, बचाव का स्थान, मकान, आधीन। **सरन** (दे॰)।

शरणागत, शरणापन्न–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरण में आया हुआ, शरण को प्राप्त, शिष्य दास।

शरणी–वि॰ पु॰ स्त्री॰ (सं॰ *सरण*) शरण देने वाला।

शरण्य–वि॰ (सं॰) शरणागत की रक्षा करने वाला।

शरत, शर्त–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *शर्त*) बाजी, दाँव, बदान, बदाबदी।

शरतिया, शर्तिया–क्रि॰ वि॰ दे॰ (अ॰ *शर्तिया*) बाज़ी बदकर, शर्त लगाकर, निश्चय या दृढ़तापूर्वक कार्य करना। वि॰ बिलकुल ठीक, निश्चित।

शरत्, शरद–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सरद** (दे॰) एक ऋतु जो क्वार और कार्तिक में मानी जाती है, वर्ष, संवत्सर।

शरत्काल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरद् ऋतु।

शरद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शरद्*) आश्विन-कार्तिक की ऋतु, **सरद, शरत्** (दे॰)।

शरदऋतु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *शरद+ऋतु*) कार और कार्तिक की ऋतु।

शरदपूर्णिमा–संज्ञा, स्त्री यौ॰ (सं॰) कार मास की पूर्णमासी, **शरदपूनो, सरदपूनो** (दे॰); कोणागरी।

शरदचंद्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शरत्चंद्र*) **शरच्चंद्र**, शरद ऋतु का चंद्रमा।

शरदूत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ऋषि।

शरपट्टा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शर+ पट्टा* हि॰) एक शस्त्र विशेष।

शरपुंख–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰) सरफोंका (औप॰) वाण के पीछे लगा हुआ पंख। **सत्यफ-पुंख**।

शरबत–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मीठा पानी, मीठा रस, चीनी में मिला या पका किसी औषधि या फलादि का अर्क, शक्कर या खाँड़ घुला पानी।

शरबती–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *शरबत+ई प्रत्य॰*) हलका पीला रंग, एक नगीना, एक नींबू विशेष, एक बढ़िया वस्त्र।

शरभंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ऋषि जिनके यहाँ रामचंद्रजी वनवास की दशा में दर्शनार्थ गए थे (रामा॰)।

शरभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हाथी का बच्चा, पतिंगा, शलभ, टिड्डी, रामदल का एक वानर विशेष, एक कल्पित अष्टपाद मृग, एक पक्षी, विष्णु। **मणिगुण**, शशिकला छंद (पिं॰), दोहा का एक भेद, शेर।

शरम, शर्म–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ाण॰ *शर्म*) लज्जा, बीड़ा, हया, **सरम** (दे॰)। वि॰ **शरमीला, शरमदार। मु॰ शरम से गड़ना या पानी-पानी होना**–बहुत ही लज्जित होना। **शरम के मारे मरना**–लिहाज़, मान-मर्यादा, प्रतिष्टा, संकोच। **शरम धोकर पी जाना**–निर्लज्ज हो जाना।

शरमाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (फ़ा॰ *शर्म+आना प्रत्य॰*) लज्जित या प्रीड़ित होना, शर्मिंदा होना। क्रि॰ स॰ लज्जित या पीड़ित करना, शर्मिंदा करना, **सरमाना** (दे॰)।

शरमिंदगी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) लाज, लजजा, पीड़ा, नदामत, **शर्मिंदगी**।

शरमिंदा–वि॰ (फ़ा॰) लज्जित, शर्मिंदा।

शरमीला–वि. (फा. *शर्म+ईला प्रत्य.*) लज्जालु, जिसे शीघ्र लज्जा लगे, **लजीला** (दे.)। स्त्री. **शरमीली**।

शरह–संज्ञा, स्त्री. (अ.) भाष्य, व्याख्या, टीका, भाव, दर।

शराकत–संज्ञा, स्त्री. हिस्सेदारी, साझा, शरीक होने का भाव।

शरापना–क्रि. अ. दे. (सं. *श्राप*) देना, **सरापना** (दे.)।

शराफ़त–संज्ञा, स्त्री. (अ.) सज्जनता भले मानुसी, भलमंसी, बुज़ुर्गी, सौजन्य, सभ्यता, शिष्टता।

शराव–संज्ञा, स्त्री. (अ.) मधु, मदिरा, सुरा, मद्य, **सराब** (दे.)।

शरावख़ाना–संज्ञा, पु. यौ. (अ. शराब+ख़ाना फ़ा.) वह स्थान जहाँ शराव बनती या बिकती हो।

शराबख़ोरी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) मद्य-पान, मदिरा पीना। वि. **शराबख़ोर**।

शरावी–संज्ञा, पु. (अ. *शराब+ई प्रत्य.*) मदिरा या शराब पीने वाला।

शराबोर–वि. (फा.) भीगा हुआ, तर-बतर, लथपथ, आर्द्र, **सराबोर, तराबोर** (दे.)।

शरारत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शैतानी, वदमाशी, पाजीपन, दुष्टता। वि. **शरारती**। क्रि. वि. **शरारतन**।

शरासन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) धनुष, धनु, धंधा, कमान।

शरिष्ठ, शरेष्ट*–वि. दे. (सं. *श्रेष्ठ*) श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़कर।

शरीअत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) मुसलमानों का धर्म शास्त्र।

शरीक–वि. (अ. सम्मिलित, मिश्रित, शामिल, साझी, मिला हुआ। संज्ञा, पु. साथी, हिस्सेदार, साझी, सहायक। वि. **शरीकी**।

शरीफ़–संज्ञा, पु. (अ.) कुलीन या सभ्य व्यक्ति, भला मानुष, शिष्ट। वि. **शरीफ़ाना**।

शरीफ़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्रीफल या सीताफल*) एक गोल, मीठा हरा फल, इस फल का वृक्ष, श्रीफल, सीताफल (वृक्ष)।

शरीफ़ाना–वि. (फ़ा.) शरीफ़ जैसा।

शरीर–संज्ञा, पु. (सं.) तन, देह, अंग, काया, बदन, गात्र, गात, **सरीर** (दे.) जिस्म। वि. (अ.) धूर्त, बदमाश, नटखट, पाजी। संज्ञा, स्त्री **शरारत**।

शरीरत्याग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मरना, मृत्यु, मौत, देह छोड़ना, तन-त्याग।

शरीरपात–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मरना, मृत्यु, मौत, पंचत्व-प्राप्ति।

शरीर-रक्षक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देह की रक्षा करने वाला। (राजा आदि के साथ), **अंगरक्षक**।

शरीरशास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शरीर और अंगादि के कार्यादि को विवेचना की विद्या, **शरीर-विज्ञान,** शारीरिक शास्त्र।

शरीरांत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मरना, मृत्यु, मौत, देहान्त, देहावसान।

शरीरार्पण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) किसी काम में अपनी देह को भली-भाँति लगा देना, शरीर तक दे डालना, **देहार्पण**।

शरीरी–संज्ञा, पु. (सं. *शरीरिन्*) देही, देहधारी, जीवधारी, प्राणी, शरी वाला, आत्मा जीव।

शर्करा–संज्ञा, पु. (सं.) चीनी, शकर, शक्कर, खाँड़, बालू के कण।

शर्करी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 14 वर्गों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

शर्त्त–संज्ञा, स्त्री. (अ.) हारजीत के अनुसार कुछ लेन देन वाली वाज़ी, वाज़ी लगाना या वदना, वदान, होड़, नियम, दाँव, वाजी किसी कार्य की सिद्धि के लिए अपेक्षित या आवश्यक बात या कार्य।

शर्तिया–क्रि. वि. (अ.) शर्त या बाज़ी बढ़कर, बहुत ही दृढ़त या निश्चय के साथ। वि. निश्चित, बिलकुल ठीक।

शर्बती–संज्ञा, पु. (अ.) शक्कर-घुला मीठा पानी, शरबत। वि. **शर्बती**।

शर्म–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) शरम, लज्जा, पीड़ा। वि. **शर्मिंदा, शर्मीला**।

शर्म–संज्ञा, पु. (सं.) आराम, सुख, आनंद, हर्ष, घर, मकान, गृह।

शर्मद–वि. (सं.) सुखदायक, आनंददायी, हर्ष या आराम देने वाला। स्त्री. **शर्मदा**।

शर्मा–संज्ञा, पु. (सं. *शर्म्मन्*) ब्राह्मणों की उपाधि या पदवी।

शर्माऊ–वि. (दे.) शर्माऊ, लज्जाशील, लज्जालु, **लजीला**।

शर्मिंदा–वि. (फा.) शर्माऊ, शर्मीला, लज्जित, लज्जालु। संज्ञा, स्त्री. **शर्मिंदगी**।

शर्मिष्ठा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) देवयानी की सहेली जो दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या थी।

शर्मीला–वि॰ (दे॰) शरमीला, शर्माऊ, लजजाशील, लज्जालु।
शर्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव, विष्णु।
शर्वरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रजनी, शीत-रात्रि, रात, निशा, संध्या।
शल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कंस का एक मल्ल या पहलवान, भाला, ब्रह्मा।
शलगम, शलजम–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) गाजर जैसा एक कंद जिसकी तरकारी बनती है।
शलभ, शरंभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) टीडी, टिड्डी, हाथी का बच्चा, पतंग, फतिंगा, **सलभ, सल्लभ** (दे॰), छप्पय का 31वाँ भेद।
शलाका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लोहे या पीतल आदि की लंबी सलाई, सीख, सलाख, वाण, शर, जूआ खेलने का पाँसा, **सलाका** (दे॰)।
शलातुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पाणिनि मुनि का निवास-स्थान, एक जनपद (प्राचीन)।
शलीता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) थैला, बोरा, एक मोटा कपड़ा, **सलीता**।
शलूका–संज्ञा, पु॰ (फा॰) आधी और पूरी बाँह की एक प्रकार की कुरती, **सलूका** (दे॰)।
शल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मद्र देशाधिपति, जो कर्ण के सारथी बने थे, और द्रौपदी के स्वयंवर में भीम से मल्ल युद्ध में पराजित हुए थे, अस्त्र-चिकित्सा, अस्थि, हड्डी, साँग नाम का एक अस्त्र, वाण, तीर, छप्पय का 56वाँ भेद (पिं॰), दुर्वाक्य, शलाका।
शल्यकी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शल्लकी*) साही या स्याही नामक वन जंतु।
शल्यक्रिया–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) शस्त्र-क्रिया, चीर-फाड़ की चिकित्सा, (अ॰) सर्जरी।
शल्यशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शस्त्रास्त्र-विज्ञान।
शल्व–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाल्व*) सौभराज के एक राजा जिन्हें कृष्ण ने मारा था, एक पुराना देश, शाल्व।
शव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मृत देह, लाश।
शवदाह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मनुष्य के मृत शरीर के जलाने की क्रिया, मुर्दा जलाना, मृतक-संस्कार करना।
शवभस्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मुर्दे की ख़ाक, चिता की राख।
शवयान, शवरथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰), अर्थी, टिकटी–मुर्दे को ले जाने की।
शवर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक जंगली जाति।
शवरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) श्रमणानाखी एक तपस्विनी जो शवर जाति की थी, **ऊपरी** (दे॰)। शवर जाति की स्त्री।
शश, शशक–संज्ञा, पु (सं॰) खरगोश, खरहा। चंद्र-लांछन या कलंक, मनुष्य के चार भेदों में से एक (काम॰)।
शशकलंक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रमा।
शशधर, शशभृत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रमा।
शशमाही–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) छमाही।
शशलाँछन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा।
शशशृंग, शशकशृंग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) खरहे का सींग, वैसा ही असंभव कार्य जैसे खरहे के सींग होना, असंभव बात।
शशांक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा, मृगांक।
शशा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शश*) खरहा, खरगोश। यौ॰ **शशसृंग**।
शशि, शशी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शशिन्*) इंदु, चंद्रमा, चाँद, रगण का द्वितीय भेद (।ऽऽ), छप्पय का 54 वाँ भेद (पिं॰)।
शशिकला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा की कला, एक छंद या वृत्त (पिं॰)।
शशिकुल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रवंश।
शशिज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रात्मज, बुध नामक ग्रह।
शशिधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव, चंद्रमौलि।
शशिपुत्र, शशिसुत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बुध नामक ग्रह, **शशितनय**।
शशिभाल, शशिमूर्न्नि, शशिमौलि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिवजी, महादेवजी।
शशिभूषण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिवजी।
शशिभृत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव।
शशिमंडल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्र-मंडल, चंद्रमा का गोला या घेरा।
शशिमुख–वि॰ यौ॰ (सं॰) जिसका मुख चंद्रमा-सा सुंदर हो। स्त्री॰ **शशिमुखी**।
शशिवदन–वि॰ यौ॰ (सं॰) जिसका मुख चंद्रमा-सा सुंदर हो।

स्त्री॰ **शशिवदनी**।

शशिवदना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) एक छंद या वृत्त, चौवंसा, चंडरसा, पादाकुलक (पिं॰)। वि॰ स्त्री॰ **शशिवदनी**–चद्रमुखी।

शशिशेखर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) शिव।

शशिहीरो–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *शशि+हीरा* हि॰) चंद्रकांतिमणि, **शशिमणि**।

शसा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शश*) खरहा।

शसि, शसी*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शशिशशिन्*) चंद्रमा, **ससि, ससी** (दे॰)।

शस्त–संज्ञा, पु॰ (फा॰) लक्ष्य, निशाना।

शस्त्र–संज्ञा, पु॰ (सं.) किसी के मारने या काटने का उपकरण या साधन, हाथ में लेकर फेंकर मारने के हथियार, जैसे–माला या कण; कार्य-सिद्धि का उत्तम उपाय। यौ॰ **अस्त्र-शस्त्र**।

शस्त्रक्रिया–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) नश्तर लगाने या चीड़फाड़ करने की क्रिया, जर्राही का काम।

शस्त्रधर, शस्त्रभृत्–संज्ञा, पु॰ (सं.) सिपाही, सैनिक, योद्धा, हथियार बाँधने वाला, **हथियारबंद**।

शस्त्रधारी–वि॰ (सं॰ *शस्त्रधारिन्*) हथियार बाँधने वाला, शस्त्र धारण करने वाला। स्त्री॰ **शस्त्रधारिणी**।

शस्त्रविद्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) हथियार चलाने की विद्या, **शस्त्र-विज्ञान,** धनुर्वेद, (यजु॰ उपवेद), शस्त्रास्त्र-संचालन विधि का विज्ञान।

शस्त्रशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं.) **शस्त्रागार**, हथियारों के रखने का स्थान, सिलहखाना, **शस्त्रालय**।

शस्त्र-शास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) **शस्त्र-विज्ञान, शस्त्र-विद्या।**

शस्त्रागार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) शस्त्र-शाला, सिलहखाना, **शस्त्रालय**।

शस्त्री–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शलिन्*) हथियार बाँधने या चलाने वाला, छुरी।

शस्य–संज्ञा, पु॰ (सं.) अन्न, अनाज, धान्य, नई कोमल घास, फ़सल, खेती।

शहंशाह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाहंशाह*) सम्राट्, महाराज।

शह–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *शाह का संक्षिप्त*) बादशाह, दूल्हा, वर। वि॰ श्रेष्ठतर, बढ़ा-चढ़ा। संज्ञा, स्त्री॰ शतरंज के खेल मे किसी मुहरे को ऐसे स्थान पर रखना जिससे बादशाह के घात में आने का भय हो, किस्त, छिपे तौर पर किसी के बहकाने या उभाड़ने का कार्य, किसी को किसी दबाव से दबाना। **मु॰ शह लगाना** (देना)।

शहजादा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाहजादा*) बादशाह का पुत्र, राज कुमार, **सहजादा** (दे॰)। स्त्री॰ **शहजादी, शाहजादी**।

शहज़ोर–वि॰ (फा॰) बलवान, वली। संज्ञा, स्त्री॰ **शहज़ोरी**–ज़्यादती, बल-प्रयोग।

शहतीर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) बड़ा और लंबा लकड़ी का लट्ठा,**सहतीर** (दे॰)।

शहतूत–संज्ञा, पु॰ (फा॰) **तूत** नामक एक पेड़ और उसके फल।

शहद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) चीनी के शीरे का सा एक तरल मीठा रस या पदार्थ जिसे मधु-मक्खियाँ फूलों से निकालती हैं, पुष्प रस, मधु, माक्षिक, **सहत, सहद** (ग्रा॰)। **मु॰ शहद लगा कर चाटना**–किसी से काम वस्तु को व्यर्थ रखना (व्यंग्य)।

शहनाई–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) नफ़ीरी बाजा, रौशनचौकी, **सहनाई** (दे॰)।

शहबाला–संज्ञा, पु॰ (फा॰) दूल्हे का छोटा भाई जो विवाह में साथ रहता है।

शहमात–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰) शतरंज के खेल में शाह के ज़ोर पर शह देकर मात किया जाना।

शहर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) नगर, पुर, कसबे से बड़ी बस्ती जहाँ पक्की इमारतें और बड़ा बाजार हो **सहर** (दे॰)।

शहर पनाह–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰) शहर या नगर की चहार दीवारी, प्राचीर, नगर-कोट, **पुर-परिखा**।

शहरयार–संज्ञा, पु॰ (फा॰) बादशाह।

शहराती, शहरी–वि॰ (फा॰) शहर का, शहर का बाशिन्दा, नागरिक, नगर-निवासी।

शहादत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) साक्षी, गवाही, प्रमाण, सुबूत, शहीद होना।

शहाना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाहाना*) संपूर्ण जाति का एक राग। वि॰ राजसी, शाही, श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

शहाब–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक गहरा लाल रंग।

शहिजादा*–संज्ञा, पु॰ (फा॰ *शाहजादा का अल्प॰*) शाहजादा,

राजकुमार। स्त्री॰ **शहिजादी**।

शहीद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) धर्म्मादि या किसी विशेष कारण हेतु बलिदान होने वाला व्यक्ति।

शांकर–वि॰ (सं॰) शंकर-संबंधी, शंकराचार्य या शंकर का। संज्ञा, पु॰ एक छंद (पिं॰)।

शांडिल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक मुनि जिन्होंने एक भक्ति-सूत्र और स्मृति का निर्माण किया था, एक गोत्रकार ऋषि (काव्य॰)।

शांत–वि॰ (सं॰) स्थिर, सौम्य, धीर, गंभीर, मौन, चुपचाप, विनष्ट, जितेंद्रिय, क्रोधादि-विहीन, शिथिल, मृत, स्वस्थ चित्त, रागादि-रहित वेग, किया या क्षोभ-रहित, उत्साहादि से शून्य, विघ्नवाधा-विहीन, बंद या रुका हुआ। संज्ञा, पु॰ नौ रसों में से एक रस जिसका स्थाई भाव, निर्वेद और संसार की असारता और दुःखपूर्णता, तथा ब्रह्मस्वरूप आलंबन विभाव हैं।

शांतता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धीरता, गंभीरता, मौनता, सन्नाटा, स्वस्थता, मरण, स्थिरता, शांति (काव्य॰)।

शांतनु–संज्ञा, पु॰ (स॰) द्वापर के चंद्रवंशीय 21 वें राजा, भीष्मपितामह के पिता (महा॰)।

शांता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यशृंग को ब्याही थी, रेणुका।

शांति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नीरवता, मौनता, स्तब्धता, स्थिरता, सौम्यता, उपशम, विराग, सन्नाटा, रोगादि-नाश तथा चित्त का ठिकाने होना, स्वस्थता, मरण, धीरता, गंभीरता, विरागता, अमंगल या विघ्न-वाधादि के मिटाने का उपचार, दुर्गा, वासनादिविहीनता।

शांतिकर्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाप-ग्रहादि-जन्य अमंगल के निवारण का उपचार।

शांतिकारी-शांतिकारक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शांति करने वाला। स्त्री॰ **शांतिकारिणी**।

शांतिदायक-शांतिदायी-शांतिप्रद–वि॰ (सं॰) शांति देने वाला। स्त्री॰ **शांतिदायिनी**।

शांति-पाठ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) वेद के शांतिकारक मंत्र।

शांबरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) इंद्रजाल, जादूगरनीं। संज्ञा, पु॰ लोध पेड़।

शांबुक-शांबूक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शंबूक, संबूक*) घोंघा, छोटा शंख, एक शूद्र तपस्वी (राम-राज्य-वाल्मी॰)।

शांभर–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ (दे॰) नमक की साँभर झील (राज॰)।

शाइस्तगी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) सभ्यता, शिष्टता, भलमनसी, आदमीयत।

शाइस्ता–वि॰ दे॰ (फा॰ *शाइस्तः*) सभ्य, शिष्ट, भलामानुष, विनम्र, विनीत।

शाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भाजी, साग, तरकारी। वि॰ शक जाति संबंधी, शकों का।

शाकटायन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक बहुत पुराने व्याकरणकार इनका उल्लेख पाणिनि ने किया है, एक प्राचीन वैयाकरण।

शाकद्वीप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सात द्वीपों में से एक (पुरा॰), ईरान और तुर्किस्तान के बीच में आर्यों और शकों का देश।

शाकद्वीपीय–वि॰ (सं॰) शाकद्वीप का। संज्ञा, पु॰ ब्राह्मणों का एक भेद, मग ब्राह्मण।

शाकल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) टुकड़ा, खंड, ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता, मद्र देश का एक शहर, हवन-सामग्री, शाकल्य।

शाकल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) होम या हवन की वस्तु या सामग्री, एक प्राचीन वैयाकरण।

शाका–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शालिवाहन का संवत्, **साका** (दे॰)।

शाकाहार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) निरामिष भोजन, अन्न, तरकारी और फलों का भोजन। वि॰ **शाकाहारी**।

शाकाहारी–वि॰ यौ॰ (सं॰) **फलाहारी,** निरामिष भोजी। विलो॰ **मांसाहारी**।

शाकिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चुड़ैल, डाइन।

शाकुन–वि॰ (सं॰) शकुन-संबंधी, पक्षियों के संबंध का।

शाकुनि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्याधा, बहेलिया।

शाक्त–वि॰ (सं॰) शक्ति संबंधी। संज्ञा, पु॰ शक्ति का उपासक, तांत्रिक।

शाक्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नैपाल की तराई की एक प्राचीन क्षत्रिय-जाति, बुद्ध देव की जाति।

शाक्यमुनि-शाक्यसिंह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गौतम बुद्ध।

शाख़–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) **शाखा** (सं॰) डाली, टहनी। **मु॰ शाख़ निकालना**–दोष निकालना। भेद, प्रकार, जाति

वर्ग, विभाग, टुकड़ा, फाँक, खंड।

शाखा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) डाली, टहनी, प्रकार, विभाग, हिस्सा, वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रम-भेद, अंग, हाथ-पैर, किसी वस्तु के निकले भेद-प्रभेद, **साखा** (दे॰)।

शाखामृग—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बंदर, वानर।

शाखी—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शाखिन्*) पेड़, वृक्ष, तरु।

शाखोच्चार—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्याह के समय उभय पक्ष की वंशावली का कथन।

शागिर्द—संज्ञा, पु॰ (फा॰) शिष्य, चेला, सेवक। संज्ञा, स्त्री॰ **शागिर्दगी, शागिर्दी**।

शाठ्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) क्रूरता, दुष्टता, धूर्त्तता। **लो॰** "शठे शाठ्यं समाचरेत्",।

शाण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कसौटी, चार माशे की तौल, हथियार पैने करने की सान।

शात—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कल्याण, मंगल।

शातकुंभ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोना, सुख।

शातवाहन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शालिवाहन*) शालिवाहन नाम के एक राजा।

शातिर—संज्ञा, पु॰ (अ॰) शतरंज-बाज़, शतरंज का खिलाड़ी। वि॰ प्रवीण, पटु चालाक।

शाद—वि॰ (फा॰), खुश, हर्षित, प्रसन्न। विलो॰ **नाशाद**।

शादियाना—संज्ञा, पु॰ (फा॰) हर्ष-वाद्य, आनंद, मंगल-सूचक बाजा, बधाई, बधावा।

शादी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) खुशी, प्रसन्नता, आनंद, आनंदोत्सव, ब्याह, **विवाह**।

शाद्वल—वि॰ (सं॰) हरा-भरा मैदान, हरी घास, दूब। संज्ञा, पु॰ रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती, बैल।

शान—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) ठाठ-बाट, सजावट, तड़क-भड़क, ठसक, गुमान, प्रतिष्ठा, शक्ति, विशालता, मान-मर्यादा, विभूति, भव्यता, करामात। वि॰ **शानदार**। **मु॰ किसी की शान में**—किसी की इज़्ज़त या प्रतिज्ञा के संबंध में। गर्व की चेष्टा। **मु॰ शान करना (दिखाना)**—गर्व प्रगट करना।

शान-शौकत—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (अ॰) दबदबा मर्तबा, तड़क-भड़कंप सजावट, तैयारी, ठाट-बाट, सजधज।

शाप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कोसना, स्राप, भर्त्सना, बददुआ, अहित-कामना-सूचक शब्द, फटकारना, धिक्कार, **साप** (दे॰)।

शापग्रस्त—वि॰ यौ॰ (सं॰) शापित, जिसे शाप लगा हो।

शापना—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *शाप*) **सापना** (दे॰) शाप देना।

शापित—वि॰ (सं॰) शाप ग्रस्त, जिसे शाप दिया गया हो।

शाबर-भाष्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मीमांसा-सूत्रों पर एक प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या।

शावरी—संज्ञा, पु॰ (सं॰) शावरों की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद।

शाबाश—अव्य॰ (फ़ा॰) खुश रहो, वाह-वाह, साधु-साधु, धन्य हो। संज्ञा, स्त्री॰ **शाबाशी**।

शाब्द—वि॰ (सं॰) शब्द का, शब्द संबंधी, शब्द पर निर्भर, एक प्रमाण। स्त्री॰ **शाब्दी, शाब्दिक**—वि॰ (सं॰) शब्द-संबंधी, वैधकरण।

शाब्दी—वि॰ स्त्री॰ (सं॰) शब्द-संवंधिनी जो शब्द ही पर निर्भर हो।

शाब्दी व्यंजना—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह व्यंजना जो केवल किसी विशेष शब्द के ही प्रयोग पर निर्भर हो और उसके पर्यायवाची शब्द के प्रयोग से न रह जाये। विलो॰ **आर्थी व्यंजना**।

शाम—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) संध्या, साँझ। *वि॰, संज्ञा, पु॰ श्याम। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शामी। संज्ञा, पु॰ एक प्राचीन देश जो अरब के उत्तर ओर था। सिरिया का प्राचीनतम।

शाम-करण, शाम-कर्ण—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *श्यामकर्ण*) वह श्वेत घोड़ा जिसके केवल कान काले हों, **स्यामकरन** (दे॰)।

शामत—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) दुर्गति, आपत्ति, विपत्ति, दुर्भाग्य, दुर्दशा। **मु॰ (किसी को) शामत आना**—दुरवस्था आना। **शामत का घेरा या मारा**—जिसकी अभाग्यता या दुर्दशा का समय आ गया हो, दुर्भाग्य का मारा। **शामत सवार होना या सिर पर खेलना**—दुर्दशा का समय आना, **शामत चढ़ना**।

शामा—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्यामा*) राधिका, राधा जी, एक छोटा पक्षी, सोलह वर्ष की स्त्री, काली गाय, एक तरह की तुलसी, कोयल, यमुना, रात, स्त्री, औरत।

शामियाना—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *शाम*) एक प्रकार का बड़ चँदोवा,

वितान, तंबू, वस्त्र-मंडप, **सम्याना** (दे.)।

शामिल–वि. (फा.) युक्त, मिश्रित, मिलित, सम्मिलित, जो साथ में हो। व. **शामिलात**। संज्ञा, स्त्री. **शामिलाती**–साझे का।

शामी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) धातु का वह छल्ला जिसे छड़ी आदि के सिरे पर उसकी रक्षार्थ लगाते हैं। वि. (**शाम देश**)–शाम देश का।

शामूक–संज्ञा, पु. (सं.) घोघा, सीप।

शायक–संज्ञा, पु. (सं.) तीर, वाण, शर, तलवार, खंग, **सायक** (दे.)।

शायक़–वि. (अ.) इच्छुक, शौकीन।

शायद–अव्य (फा.) संभवतः, कदाचित्, चाहे।

शायर–संज्ञा, पु. (अ.) कवि। स्त्री. **शायरी** (कविता)।

शायरी–संज्ञा, स्त्री. (अ.) कविता, काव्य, पद्यमयी रचना।

शायी–वि. (सं. *शायिन्*) सोने वाला।

शारंग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सारंग*) सारंग, रात, वस्त्र, दीपक, साँप, मोर, मेघादि, इसके 56 अर्थ हैं। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शाड़ंग*) विष्णु का धनुष, धनुष।

शारंग-पाणि–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शांग पाणि*) विष्णु, रामचंद्र।

शारद–वि. (सं.) शरद काल का, सरस्वती।

शारदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सरस्वती, दुर्गा, पुराने समय की एक लिपि, **सारदा** (दे.)।

शारदीय–वि. (सं.) शरद ऋतु का, शरद ऋतु संबंधी।

शारदीय महापूजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) कार में होने वाली नवरात्रि की दुर्गापूजा।

शारदोत्सव–संज्ञा, पु. (सं.) कुआँर की पूर्णमासी का उत्सव, शरद पूनों का उत्सव।

शारिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मैना पक्षी, **सारिका** (दे.)।

शारिवा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अनंतमूल, सालसा, धमासा, जवासा।

शारी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मैना, पाँसे के खेल की गोट।

शारीर–वि. (सं.) शरीर-संबंधी।

शारीरिक–संज्ञा, पु. (सं.) शरीर की सब दशाओं का विवेचन।

शारीरकभाष्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शंकर वेदांतभाष्य या ब्रह्मसूत्र की व्याख्या।

शारीरकसूत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्री व्यास कृत वेदांत सूत्र।

शरीरविज्ञान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह शास्त्र जिसमें जीवों के उत्पन्न होने, उनके शरीरों के बढ़ने आदि की विवेचना हो। **शरीर शास्त्र** (यौ.)।

शारीरिक–वि. (सं.) शरीर-संबंधी।

शाड़ंग–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु का धनुष, सींग का धनुष।

शार्गधर, शांगभृत्–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु भगवान।

शार्गपाणि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु।

शार्दूल–संज्ञा, पु. (सं.) बाघ, चीता, शेर, राक्षस, शरभजंतु, एक पक्षी, सिंह, दोहे का एक भेद (पिं.) एक **सारदूल** (दे.)। वि. सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

शार्दूल ललित–संज्ञा, पु. (सं.) 18 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

शार्दूलथिक्रीड़ित–संज्ञा, पु. (सं.) 19 वर्णों का वर्णिक छंद।

शाल–संज्ञा, पु. (सं.) **साखू**, एक विशाल पेड़, एक मछली। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) दुशाला, ऊनी चादर।

शालकि, शालकी–संज्ञा, पु. (सं.) पाणिनिमुनि।

शालग्राम–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु की एक पत्थर की मूर्ति, **सालिगराम** (दे.)।

शालपर्णी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सरिवन (औप.)।

शाला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आलय, गृह, मकान, घर, स्थान। जैसे–चित्रशाला। इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बना एक छंद. **उपजाति** (पिं.)।

शालातुरीय–संज्ञा, यौ. पु. (सं.) पाणिनि मुनि।

शालि–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रकार का धान, जड़हन, बासमती चावल, पौंड़ा, गन्ना।

शालिधार–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शालिधान्*) बासमती चावल।

शालिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 11 वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं.)।

शालिवाहन–संज्ञा, पु. (सं.) एक शक राजा जिसने शकाब्द नामक शाका या संवत् चलाया था।

शालिहोत्र–संज्ञा, पु. (सं.) अश्व वैद्य, अश्व चिकित्सा या अश्व विज्ञान का ग्रंथ, घोड़ा, अश्व।

शालिहोत्री–संज्ञा, पु. (सं. *शालहोत्रि+ई प्रत्य.*) अश्व-वैद्य,

अश्व-विज्ञानी, घोड़े आदि पशुओं का चिकित्सक।

शालीन–वि० (सं०) विनम्र, विनति, लज्जावान, सदृश, तुल्य, सुंदर, आचार-विचार वाला, चतुर, दक्ष, पटु, शिष्ट, सभ्य, धनी, अमीर। संज्ञा, स्त्री० **शालीनता**।

शाल्मलि–संज्ञा, पु० (सं०) **सालमली** (दे०), सेमल या सेमर का पेड़, एक द्वीप, एक नरक (पुरा०)।

शाल्व–संज्ञा, पु० (सं०) सौभराज्य के एक राजा जो कृष्ण द्वारा मारे गए थे। एक देश (प्राचीन)।

शावक–संज्ञा, पु० (सं०) बच्चा, पशु का बच्चा, **सावक** (दे०)।

शावर–संज्ञा, पु० (सं०) **सावर,** मंत्र-तंत्र विशेष।

शाश्वत–वि० (सं०) सदा रहने वाला नित्य, स्थाई, नाश-रहित। संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म। वि० **शाश्वती**–स्थायी, नित्य।

शाश्वती–संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदा रहने वाली।

शासक–संज्ञा, पु० (सं०) हाकिम, शासन करने वाला। स्त्री० **शासिका**।

शासन–संज्ञा, पु० (सं०) लिखित प्रतिज्ञा, आदेश, आज्ञा, हुक्म, ठीका, पट्टा, मुआफ़ी, राजा से दान दी गई भूमि, आज्ञापत्र, शास्त्र, अधिकार-पत्र, इन्द्रिय-निग्रह, सजा, दंड, हुकूमत, वश या अधिकार में रखना।

शासनीय–वि० (सं०) शासन करने योग्य, सज़ा के लायक।

शासित–वि० (सं०) जिस पर शासन किया जावे, जिसे दंड दिया गया हो। स्त्री० **शासिता**।

शास्ता–संज्ञा, पु० (सं० *शास्तृ*) राजा, शासक, पिता, गुरु, अध्यापक, उपाध्याय।

शास्ति–संज्ञा, स्त्री० (सं०) शासन, सज़ा, दंड।

शास्त्र–संज्ञा, पु० (सं०) वे धार्मिक या शिक्षा-ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के हेतु रचे गए हों, चार वेद उनके छः अंग, छः उपांग, धर्मशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, पुराण, चार उपवेद, विज्ञान, ये सब पृथक्-पृथक् शास्त्र कहे जाते हैं। किसी विशेष विषय का यथाक्रम संग्रहीत पूर्ण ज्ञान, विज्ञान।

शास्त्रकार–संज्ञा, पु० (सं०) शास्त्र बनाने वाला, **शास्त्रकर्ता, शास्त्र रचयिता**।

शास्त्रज्ञ–संज्ञा, पु० (सं०) शास्त्र-ज्ञाता, **शास्त्रवेत्ता, शास्त्रविद्**।

शास्त्री–संज्ञा, पु० (सं० *शास्त्रिन्*) शास्त्रज्ञ-शास्त्र-ज्ञात, धर्म या दर्शन शास्त्र का ज्ञाता, ज्ञानी, पंडित, शास्त्रविद्, शास्त्रवेत्ता।

शास्त्रीय–वि० (सं०) शास्त्र-संबंधी।

शास्त्रोक्त–वि० यौ० (सं०) शास्त्रों में कहा हुआ, प्रामाणिक।

शाहंशाह–संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) सम्राट, बादशाहों का बादशाह, राजाधिराज।

शाहंशाही–संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शाहंशाह का कार्य या भाव, व्यवहार का खरापन (बोल चाल)।

शाह–संज्ञा, पु० (फ़ा०) बादशाह, महाराज, मुसलमान फ़क़ीरों की उपाधि, एक कुल या जाति (मुसलमान)। वि० बड़ा, भारी, महान्, **साह** (दे०), धनी, समधी (वैश्य)।

शाहजादा–संज्ञा, पु० (फ़ा०) बादशाह का पुत्र, महाराज-कुमार। स्त्री० **शाहज़ादी**।

शाहना–वि० (फ़ा०) शाही। संज्ञा, पु० दूल्हे के कपड़े।

शाहराह–संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) राज-मार्ग।

शाहाना–वि० (फ़ा०) राजसी। संज्ञा, पु० व्याह में वर के जामा, जोड़ा आदि वस्त्र, एक राग, **शहाना** (दे०)।

शाही–वि० (फ़ा०) बादशाहों का, राजसी।

शिगरफ़–संज्ञा, पु० (फ़ा०) ईंगुर।

शिंबी–संज्ञा, स्त्री० (सं०) बौंड़ी, छेमी, फली, सेम, केवाँच, **फौंछ** (दे०)।

शिंबीधान्य–संज्ञा, पु० (सं०) दाल, द्विदल अन्न।

शिंशपा–संज्ञा, स्त्री० (सं०) शीशम का पेड़, अशोक पेड़, **सिंसपा** (दे०)।

शिंशुपा–संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० *शिंशपा*) शीशम का पेड़, अशोक वृक्ष, **सिंसुपा** (दे०)।

शिंशुमार–संज्ञा, पु० (सं०) सूंस नामक एक जल-जंतु।

शिकंजा–संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक यंत्र जिसमें किताबें दबा कर उनके पन्ने काट कर बराबर किये जाते हैं, पदार्थों के कसने और दबाने का यंत्र, अपराधियों के पैर कसने का एक प्राचीन यंत्र, **काठ**। **मु० शिकंजे में खिंचवाना**–कठोर कष्ट या घोर यंत्रणा दिलाना। **शिकंजे में आना**–काबू में आना, जाल या फंदे में फँसना।

शिकन–संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिकुड़न, बल, सिलवट, सिकुड़ने से पड़ी धारी।

शिकम–संज्ञा, पु० (फ़ा०) पेट, उदर, एक छोटे राज्य का नगर (बंगाल)।

शिकमी काश्तकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) जो काश्तकार किसी दूसरे काश्तकार की भूमि में खेती करें।

शिकरा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक तरह का बाज़ पक्षी।

शिकवा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) शिकायत।

शिकस्त–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) पराजय, हार। **मु॰ शिकस्त खाना**–हार जाना।

शिकायत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) उपालंभ, उलाहना, चुगुली, निंदा, **गिला** (फा॰), बीमारी, रोग। यौ॰ **शिकवा-शिकायत**।

शिकार–संज्ञा, पु॰ (फा॰) मृगया, आखेट, अहेर, भक्ष्य पशु, मारा हुआ जीव, मांस, **आहार**। असामी, वह व्यक्ति जिसके फँसने से लाभ हो, **सिकार** (दे॰) लो॰ (फ़ा॰)। **मु॰ शिकार खेलना**–अहेर या आखेट करना। **किसी का शिकार होना**–किसी के द्वारा मारा जाना, वश में आना, फँसना, चंगुल में आना या फँसना। **किसी को शिकार बनाना**–लाभ उठाने को किसी को फँसाना।

शिकारगाह–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) शिकार या आखेट खेलने का स्थान।

शिकारी–वि॰ (फ़ा॰) अहेरी, आखेट करने वाला, मृगया में काम आने वाला।

शिक्षक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उपदेश देने या समझाने वाला, सिखाने या पढ़ाने वाला, गुरु, अध्यापक, उस्ताद, **सिच्छक** (दे॰)।

शिक्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पढ़ाई, उपदेश, शिक्षा, तालीम, सिखावन, अध्यापन। वि॰ **शिक्षणीय, शिक्षित**।

शिक्षा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किसी विद्यादि के सीखने-सिखाने की क्रिया, पढ़ाई, उपदेश, सिखावन, सीख, मंत्र, मंत्रणा, तालीम, गुरु के समीप विद्याभ्यास, सलाह, छः वेदांगों में से वेदों के स्वर, मात्रा, वर्णादि का निरूपक एक विधान, दबाव, शासन, सबक, सजा, दंड। यौ॰ **शिक्षा-केंद्र**–वह स्थान जहाँ शिक्षा-विभाग तथा प्रधान विद्यालय हो। यौ॰ **शिक्षा-विभाग**।

शिक्षाक्षेप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक अलंकार जिसमें उपदेश द्वारा प्रयाण या जाना रोका जाता है (केश॰)।

शिक्षागुरु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विद्या पढ़ाने वाला, अध्यापक, गुरु।

शिक्षार्थी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *शिक्षार्थिन्*) विद्याभ्यासी, विद्यार्थी।

शिक्षालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विद्यालय, स्कूल (अं॰), पाठशाला।

शिक्षाविभाग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जनता की शिक्षा या तालीम का प्रबंध करने वाला एक सरकारी महकमा।

शिक्षित–वि॰ पु॰ (सं॰) पढ़ा या सीखा हुआ, उपदेश-प्राप्त, पंडित, विद्वान, पढ़ा-लिखा। स्त्री॰ **शिक्षिता**।

शिखंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मयूर-पुच्छ, मोर की पूँछ या चोटी, काकपक्ष, काकुल, शिखा, चोटी। स्त्री॰ **शिखंडिका**।

शिखंडिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मोरनी, मयूरी, द्रुपद नरेश की एक कन्या जो कुरुक्षेत्र के युद्ध में पुरुष-रूप से लड़ी थी।

शिखंडी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शिखंडिन्*) चोटी, शिखा, मयूर, मोर, मुर्गा, विष्णु, वाण, शिव, कृष्ण, शिखंडिनी, राजा द्रुपद का पुत्र जो पूर्व जन्म में स्त्री था, भीष्म की मृत्यु का कारण वही था (महा॰)।

शिख*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिखा*) शिखा, चोटी, शिक्षा, सीख, **सिख** (दे॰)।

शिखर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चोटी, सिरा, शिखा, पहाड़ का शृंग, मंडप, कंगूरा, कलश, घर के ऊपर का नुकीला सिरा, गुंबद, जैनियों का एक तीर्थ, एक अस्त्र, एक रत्न।

शिखरन, शिफरन–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *सिखरिणी*) दही, दूध और शक्कर से बना खाने का एक पदार्थ, **श्रीखंड** (गुज॰); सिकिन्न (ब्रज॰ भा॰)

शिखरा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पहाड़, पेड़, अपमार्ग।

शिखरिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नारी-रत्न, श्रेष्ठ स्त्री, रसाल, रोमावली, शिखरन, दही, दूध और चीनी मिला पदार्थ, 17 वर्णों का य, म, न, स, भ (गण) और ल॰, गु॰ वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं॰), **सिखरिनी** (दे॰)।

शिखरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *शिखरा*) विश्वामित्र द्वारा राम जी को दी गई गदा। वि॰ (सं॰) शिखर वाला।

शिखा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शिखर, डाली, शाखा, चोटी, **चुटैया** (आ॰)। यौ॰ **शिखासूत्र**–द्विजों के चिह्न–चोटी और उपवीत। पक्षियों के सिर की कलंगी या चोटी, प्रकाश की किरण, ज्वाला, अग्नि की लपट, दीपक की लौ। एक विषम वृत्त (पिं॰), किसी वस्तु की नोक, या नुकीला

सिरा।

शिखावल–संज्ञा, पु. (सं.) मयूर, मोर, चोटी वाला, कटहल का पेड़।

शिखि–संज्ञा, पु. (सं.) मयूर, मोर, अग्नि, मदन, कामदेव, तीन की संख्या, **शिखी** (दे.)।

शिखिध्वज–संज्ञा, पु. यो. (सं.) धुआँ, धूम, धूम्र, षडानन, कार्त्तिकेय, **मयूरध्वज**।

शिखिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मोरनी, मयूरी, मुर्गी।

शिखी–वि. (सं. *शिखिनी*) चोटी, या शिखा वाला। स्त्री. **शिखिनी**। संज्ञा, पु. मुर्गा, मयूर, मोर, साँड़, बैल, घोड़ा, अग्नि, नाराच, वाण, शर, केतु, पुच्छलतारा, तीन की संख्या।

शिगाफ़–संज्ञा, पु. (फ़ा.) दर्ज, दरार, छेद, छिद्र, नश्तर, चीरा, सूराख़।

शिगूफ़ा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *शगूफ़ा*) कली, बिना फूला या खिला फूल, नई और अनोखी बात या घटना।

शित–वि. दे. (सं. *सित*) सफ़ेद, श्वेत, साफ़, **सित**।

शितलाना–क्रि. अ. दे. (सं. *शीतल*) टंढा होना। क्रि. स. ठंढा करना।

शितलाई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) **सितलाई** (दे.), शीतलता।

शिताव–क्रि. वि. (फ़ा.) शीघ्र, जल्द, जल्दी, तत्काल, तुरंत। संज्ञा, स्त्री. **शितावी**।

शिति–वि. (सं.) उज्ज्वल, शुक्र, सफ़ेद, श्वेत, साफ़, कृष्ण, काला।

शितिकंठ–संज्ञा, पु. (सं.) चातक, जलकाक, मुर्गावी, पपीहा, मोर, महादेव।

शिथिल–वि. (सं.) ढीला, जो पूरा कसा या जकड़ा न हो, धीमा, मंद, थका-माँदा, श्रांत, जिसकी पाबंदी न हो, आलस्य-युक्त, सुस्त, **सिथिल** (दे.)। संज्ञा, पु. **शैथिल्य, शिथिलता**।

शिथिलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ढीलापन, ढिलाई, तत्परता-हीनता, थकान, थकावट, नियम-पालन में दृढ़ता न होना, आलस्य, वाक्य में शब्दों का सुगंठित अर्थ-संबंध न होना।

शिथिलाई*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शिथिलता*) शिथिलता, ढिलाई, आलस्य **सिथलाई, सिथिलाई** (दे.)।

शिथिलाना*–क्रि. अ. दे. (सं. *शिथिल*) शिथिल, ढीला या सुस्त होना, थकना। क्रि. स. (दे.) शिथिल करना, **सिथिलाना** (दे.)।

शिद्दत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) उग्रता, तीव्रता, तेज़ी, ज़ोर, अधिकता, ज़्यादती, प्रचुरता।

शिनाख़्त–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) पहचान, तमीज़, परख, यह निश्चय कि अमुक व्यक्ति या वस्तु यही है, **सिनाख़्त** (दे.)।

शिफ़र‡*–संज्ञा, पु. (फ़ा. *सिपर*) ढाल, शून्य, बिंदु, **सिफ़र** (दे.)।

शिया–संज्ञा, पु. दे. (अ. *शीया*) एक मुसलमानी संप्रदाय, जो हजरत अली को पैग़बर का उत्तराधिकारी मानता है। विलो. **सुन्नी**।

शिर–संज्ञा, पु. (सं. *शिरस*) सिर, सर, खोपड़ा, कपाल, शीश, माथा, मस्तक, शिखर, सिरा, चोटी।

शिरक़त–संज्ञा, स्त्री. (अ.) साझा, हिस्सा, किसी कार्य में सम्मिलित होना, किसी वस्तु के अधिकार में भाग लेना।

शिरस्त्राण–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शिरत्राण*) शिर-रक्षा के लिए लोहे की टोपी, खोद, कूँड़ी, **शिरत्रान, सिरत्रान**।

शिरनेत–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रदेश, (श्री नगर या गढ़वाल के आस-पास) उत्तरांचल में क्षत्रियों की एक शाखा, **सिरन्यात** (आ.)।

शिरफूल–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *शिरभ्+पुष्प*) शीश-फूल नामक एक गहना।

शिरमौर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शिरस्+मौलि*) सिर की मौर, शिरोमणि, सिरताज, प्रधान, शिरोभूषण, मुकुट, **सिरमौर** (दे.)।

शिरखाण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) युद्ध में शीश-रक्षार्थ लोहे की टोपी, खोद, कूँड़ी।

शिरहन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शिरस्+आचान*) तकिया, जसीसा, **सिरहाना, सिरहना** (दे.)।

शिरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रक्तवाही नाड़ी, रक्त-नलिका, पानी का श्रोत या धार।

शिराकत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शिरकत, साझा, मेल।

शिरीष–संज्ञा, पु. (सं.) सिरस पेड़।

शिरोधरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गर्दन, ग्रीवा, गला, चोंच।

शिरोधार्य्य–वि॰ यौ॰ (सं॰ *शिरसि+धार्य*) शिर पर धरने योग्य, सादर स्वीकार करने योग्य।

शिरोभूषण*–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिरोमणि, सिर का गहना, मुकुट, श्रेष्ठ पुरुष, शीशफूल।

शिरोमणि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिर की मणि, सिर का गहना, मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति, चूड़ामणि, **सिरोमनि** (दे॰)।

शिरोरुह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सिर के बाल, केश।

शिल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उंछ, शीला। संज्ञा, स्त्री॰ शिला, सिलौटी, **सिल** (दे॰)।

शिला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पाषाण, प्रस्तर-खंड, पत्थर की चट्टान, या सिलौटी, पत्थर का बड़ा लंबा-चौड़ा टुकड़ा, शिलाजीत, उँछ वृत्ति, शीला, **सिला** (दे॰)।

शिलाजतु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिलाजीत।

शिलाजीत–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिलाजतु*) काले रंग का शिलाओं का रस (एक पौष्टिक औषधि) **भोमियाई** (प्रान्ती॰)।

शिलादित्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक प्राचीन राजा, हर्षवर्धन।

शिलान्यास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी मकान या मंदिर आदि की नींव रखी जाने का समारोह या उत्सव, तैयारी आयोजन।

शिलापट-शिलापट्ट–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शिलापट्ट*) पत्थर की चट्टान, **सिलवट** (दे॰) स्त्री॰ **शिलापटी-सिलापटी** (दे॰)।

शिलारस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लोबान जैसा एक सुगंधित गोंद।

शिलालेख–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पत्थर पर खुदा या लिखा कोई प्राचीन लेख।

शिलावृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) ओलों की वर्षा, ओले गिरना।

शिलाहरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शालिग्राम।

शिलीमुख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भ्रमर, भौंरा, वाण, तीर।

शिलोशय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पहाड़, पर्वत, पत्थरों की राशि।

शिल्प–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हाथ से कोई वस्तु बना कर प्रस्तुत करना, कारीगरी, दस्तकारी, कला संबंधी व्यवसाय या धंधा।

शिल्पकला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कारीगरी, दस्तकारी, हाथ से चीज़ें बनाने की कला।

शिल्पकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिल्पी, कारीगर, दस्तकार, राज, बढ़ई, मेमार।

शिल्पजीवी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कारीगर, दस्तकार, शिल्पी, राज, **मेमार** (प्रान्ती॰)।

शिल्प-विद्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) शिल्पकला, इंजिनियरी।

शिल्पशास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिल्प-कार्य का शास्त्र, कारीगरी की विद्या का ग्रंथ, ग्रह-निर्माण शास्त्र।

शिल्पी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शिल्पिन्*) कारीगर, दस्तकार, शिल्पकार, राज, **मेमार, थवई** (प्रान्ती॰)।

शिव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) क्षम, कुशल, कल्याण, मंगल, पारा, जल, मोक्ष, देव, वेद, रुद्र, त्रिदेव में से सृष्टि के संहारकर्ता एक देवता (पुरा॰), महादेव, वसु, काल, लिंग, 11 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं॰), परमेश्वर, शंकर जी, **सिव, सिउ** (दे॰)।

शिवता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शिव का धर्म या भाव, मुक्ति, मोक्ष।

शिवनंदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गणेश जी, स्वामि कार्तिक।

शिवनिर्माल्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव को अर्पित पदार्थ (इसके लेने का निषेध है), परमत्याज्य वस्तु।

शिवपुराण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) 18 पुराणों में से एक शिवोक्त पुराण जिसमें शिव जी का माहात्म्य है।

शिवपुरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) काशी, मध्य प्रदेश का एक शहर।

शिवरात्रि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) फाल्गुन, कृष्ण चतुर्दशी, शिव-चतुर्दशी, **सिवरात** (दे॰)।

शिवरानी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *शिव+रानी* हि॰) पार्वती जी। (सं॰) **शिवराज्ञी**।

शिवलिंगन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महादेव जी का लिंग जिसकी पूजा होती है।

शिवलिंगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिव लिंगिनी*) एक लता (औष॰)।

शिवलोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कैलसा।

शिव-वाहन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नादिया, बैल।

शिववृषभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महादेव जी की सवारी का

बैल, नाँदिया, नंदी।

शिवा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा, पार्वती, गिरजा, मोक्ष, मुक्ति, सियारिन, शृंगाली।

शिवालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कोई देव-मंदिर, देवालय, शिव जी का मंदिर।

शिवाला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिवालय*) महादेव जी का मंदिर, शिव-मंदिर, देवालय या देव-मंदिर।

शिवि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक प्रसिद्ध दानी राजा जो राजा ययाति के दौहित्र और राजा उशीनर के पुत्र थे।

शिविका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) डोली, पालकी, **सिविका** (दे॰)।

शिविर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तंबू, डेरा, खेमा, पड़ाव निवेश, सेना की छावनी, कोट, क़िला।

शिशिर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जाड़ा, माघ-फागुन में होने वाली एक जाड़े की ऋतु, शीतकाल, हिम, **सिसिर** (दे॰)।

शिशिरंगु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रमा।

शिशिरमयूख–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **शीतरश्मि, शिशिर-रश्मि,** चंद्रमा।

शिशिरांत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बसंत ऋतु, शिशिर ऋतु का अंतिम समय।

शिशिरांशु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा, **हिमांशु, शीतांशु**।

शिशु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **सिसु** (दे॰), छोटा लड़का, छोटा बच्चा। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **शैशव**।

शिशुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बचपन, **शिशुत्व**।

शिशुताई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिशुता*) शिशुता, शिशुत्व, बचपन, **सिसुताई** (दे॰)।

शिशुनाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **शैशुनाग,** मगध के प्राचीन राजा।

शिशुपन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिशुता*) शिुशत्व, शिशुता, लड़कपन, बचपन।

शिशुपाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रसिद्ध चेदि देशाधिपति जो श्री कृष्ण से मारा गया था।

शिशुमार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूस नाम का एक जल-जंतु, कृष्ण, नक्षत्र-मंडल।

शिशुमार-चक्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समस्त ग्रहों के सहित सूर्य, **सौर-संसार,** (ज्यो॰)।

शिश्न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुरुष का लिंग।

शिष*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिष्य*) शिष्य, चेला, **सिप, सिष्य, सिक्ख** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिक्षा*) शिक्षा, उपदेश, सीख, **सिख** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिखा*) शिखा, चोटी।

शिषरी–वि॰ दे॰ (सं॰ *शिखर*) शिखर-वाला, **शिखरी**।

शिष्ट–वि॰ पु॰ (सं॰) धर्मात्मा, सदाचारी, धर्मशील, गंभीर, धीर, शांत, सुशील, सभ्य, सज्जन, आर्य, भलामानुस, श्रेष्ठ पुरुष, अच्छे स्वभाव या आचरण वाला, बुद्धिमान।

शिष्टई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिष्टता*) शिष्टता, श्रेष्ठता; (प्रा॰) सिट्टई।

शिष्टता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सौजन्य, सज्जनता, सभ्यता, श्रेष्ठता, सुशीलता, भलमंसी, उत्तमता, शिष्ट का भाव या धर्म।

शिष्टाचार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सभ्य पुरुषों का आचरण, आर्य-जनों के योग्य आचरण, साधु व्यवहार, आदर-सम्मान, विनय, सभ्य व्यवहार, दिखावटी आव भगति, नम्रता।

शिष्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उपदेश या शिक्षा पाने योग्य, चेला, **शागिर्द** (फा॰), अंतेवासी, विद्यार्थी, चेला, मुरीद। स्त्री॰ **शिष्या**। संज्ञा, स्त्री॰ **शिष्यता, शिष्यत्व**।

शिष्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 7 गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद, शीर्षक एक (पिं॰)।

शिस्त–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) लक्ष्य, निशाना, मछली पकड़ने का काँटा।

शीकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जल-कण, ओस-बिंदु, फुहार, कण, **सोकर** (दे॰)।

शीघ्र–क्रि॰ वि॰ (सं॰) सतवर, तुरंत, तत्क्षण, जल्दी, जल्द, तत्काल, चटपट, झटपट, बिना विलंब या देर, **बेगि** (व्रज॰)।

शीघ्रगामी–वि॰ (सं॰ *शीघ्रगामिन्*) तेज़ या जल्द चलने वाला, वेगवान।

शीघ्रता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जल्दी, फुरती।

शीत–वि॰ (सं॰) सर्द, ठढ़ा, शीतल। संज्ञा, पु॰ सर्दी, जाड़ा, ठंड, तुषार, ओस, जाड़े की ऋतु, प्रतिश्याय, सरदी, जुकाम, संनिपात।

शीतकटिबंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वी के गोले में भू मध्य रेखा से 23 1/2 अंश उत्तर के बाद और इतना ही

दक्षिण के बाद के कल्पित विभाग जहाँ सर्दी अधिक पड़ती है (भू.)।

शीतकर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा।

शीतकाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सरदी या जाड़े की ऋतु, अगहन और पूष के महीने।

शीतकिरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा।

शीतज्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जाड़ा देकर आने वाला ज्वर, **जूड़ी** (दे.)।

शीतदोधित–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा।

शीतमयूख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा, कपूर, **शीतांशु**, **शीतकर**।

शीतरश्मि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा।

शीतल–वि. (सं.) सर्द, ठंडा, प्रसन्न, **सीतल** (दे.)।

शीतलचीनी–संज्ञा, स्त्री. *(सं. शीतल+ चीन-देश)* कबाब चीनी, शीतल धीमी (दे.)। ठंडापन, सरदी, **सीतलता** (दे.)।

शीतलताई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शीतलता*) शीतलता, ठंडापन, ठंडक, **शितलाई** (दे.)।

शीतला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चेचक, माता, विस्फोटक रोग, विस्फोटक की अधिष्ठात्री एक देवी।

शीतलाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शीतलता*) शीतलता, **शितलाई**, **सितलाई** (दे.)।

शीतलाष्टमी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) चैत्र-कृष्ण अष्टमी।

शीतांग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक रोग, पक्षाघात, लकवा, अर्दांग।

शीतांशु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हिमांशु, चंद्रमा, चांद, हिमकर, **शीतकर**।

शीतार्त्त–वि. यौ. (सं.) शीत-पीड़ित, ठंढ से कंपित, जाड़े से दुखी।

शीतोष्ण–वि. यौ. (सं.) ठंढा-गर्म, सर्द-गर्म, सुख-दुख।

शीरा–संज्ञा, पु. (फा.) चीनी या गुड़ को पानी में मिलाकर आग पर औटा कर गाढ़ा किया पदार्थ, चाशनी।

शीरीं–वि. (फ़ा.) मीठा, मधुर, प्रिय। यौ. **जबांशीरीं**।

शीरीनी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) मिठाई, मिष्टान, मिठास।

शीर्ण–संज्ञा, पु. (सं.) जीर्ण, पुराना, टूटा-फूटा, फटा-पुराना, मुरझाया हुआ, दुर्बल, कृश, पतला। यौ. **जीर्ण-शीर्ण**।

शीर्य–वि. (सं.) नश्वर, भंगुर, नाशवान।

शीर्ष–संज्ञा, पु. (सं.) सिर, मूँड़, मुंड, माथा, अग्रभात, चोटी, सिरा, सामना।

शीर्षक–संज्ञा, पु. (सं.) चोटी, मस्तक, सिर, सिरा, किसी विषय का वह परिचायक संक्षिप्त शब्द या वाक्य जो बहुधा लोखादि के ऊपर रखा जाता है।

शीर्ष-विंदु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सिर के ऊपर की ओर सब से ऊँचा स्थान, शिखर-बिंदु। विलो. **पदतल-विंदु**।

शील–संज्ञा, पु. (सं.) व्यवहार, स्वभाव, आचरण, चाल-ढाल, चरित्र, प्रवृत्ति, सद्‌वृत्ति, सदाचार, स्वभाव, संकोच, **मुरौवत** (फ़ा.), **सील** (दे.)। यौ. **शील-संकोच**।

शीलवान्–वि. यौ. (सं. *शीलवत्*) अच्छे स्वभाव या आचरण का, सुशील, **शीलवत**। स्त्री. **शीलवती**।

शीश*†–संज्ञा, पु. (सं.) शिर, शीर्ष, माथा, मूँड़, मुंड, **शीशा**, **सीस**, **सीसा** (दे.)।

शीशम–संज्ञा, पु. (फ़ा.) एक पेड़, सिंसपा।

शीशमहल–संज्ञा, पु. यौ. (फा. *शीशा+अ. महल=घर*) वह महल जिसकी दीवालों में शीशे लगे हों, **सीस-महल** (दे.)।

शीशा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) खारी मिट्टी, रेह, या बालू के गलाने से बनी एक पारदर्शी मिश्र धातु, काँच, आईना, दर्पण, आपसी, झाड़ फानूस आदि, कांच से बना सामान, **सीसा** (दे.)।

शीशी–संज्ञा, स्त्री. (फा. *शीशा*) काँच का छोटा पात्र, **सीसी** (दे.)। **मु. शीशी सुँघाना**–औषधि-भरी शीशी सुँघा कर बेहोश करना।

शीस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शीश*) शिर, सिर, **सीस**, **सीसा** (दे.), मुंड, मूँड़।

शुंग–संज्ञा, पु. (सं.) मगध का एक क्षत्रिय-राज-वंश (मौर्य्यों के पीछे)।

शुंठि, शुंठी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सोंठ।

शुंड–संज्ञा, पु. (सं.) हाथी की सूँड़, हाथी का मद, **सुंड** (दे.)।

शुंडा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *शुंड*) हाथी की सूंड़, शराब।

शुंडादंड–संज्ञा, पु. (सं.) हाथी की सूँड़।

शुंडी–संज्ञा, पु. (सं. *शुडिन्*) हाथी, गज, शराब बनाने वाला, शराबखाना वेश्या।

शुंभ–संज्ञा, पु. (सं.) एक दैत्य जो दुर्गा जी के हाथ से मारा

गया।

शुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तोता, **सुगना, सुग्गा** (दे॰), शुकदेव जी, कपड़ा, वस्त्र, **सुक** (दे॰)।

शुकदेव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्यास जी के पुत्र जो बड़े ज्ञानी थे, **सुकदेव** (दे॰)

शुकराना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *शुक्र*) कृतज्ञता, धन्यवाद, शुक्रिया, धन्यवाद के रूप में दिया गया धन।

शुकाचार्य्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शुकदेव जी।

शुक्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सड़ा कर खट्टी की गई काँजी, खटाई, सिरका। वि॰ अम्ल, खट्टा, अप्रिय, कठोर, नापसंद, उजाड़, सुनसान।

शुक्ति, शुक्ती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीपी, सीप, एक नेत्र-रोग, बवासीर रोग, उँगलियों के प्रथम पर्व के चिन्ह (सामु॰)।

शुक्तिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीपी, सीप, एक नेत्र रोग।

शुक्तिज, शुक्तिबीज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मोती, **शुक्तिजात**।

शुक्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शुक्राचार्य, दैत्य-गुरु (पुरा॰) एक चमकीला ग्रह, सामर्थ्य, अग्नि, शक्ति, वीर्य्य, बल, गुरुवार के बाद और शनि के पूर्व का एक दिन, **सूक, सुक्कर** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ (अ॰) धन्यवाद।

शुक्रगुज़ार–वि॰ यौ॰ (अ॰ *शुक्र+गुजार* फा॰) कृतज्ञ, आभारी, एहसानमंद।

शुक्रांग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गोरा, गौर शरीर।

शुक्राचार्य्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दैत्यों के गुरु एक ऋषि (पुरा॰)।

शुक्रिया–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कृतज्ञता या धन्यवाद प्रकाश करना।

शुक्ल–वि॰ (सं॰) उज्ज्वल, श्वेत, धवल, उजला, सफ़ेद, शुभ्र, निर्दोष। संज्ञा, पु॰ ब्राह्मणों की एक पदवी, चाँद्र मास का द्वितीय पक्ष। संज्ञा, स्त्री **शुक्लता**।

शुक्लपक्ष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चाँद्र मास का द्वितीय अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष, उजेला पाख, **सुदी** (दे॰)।

शुक्लांबर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्वेत वस्त्र।

शुक्ला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सरस्वती।

शुक्लाभिसारिका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) श्वेत वस्त्रादि पहिन चाँदनी रात में प्रिय-समीप जाने वाली नायिका (काव्य॰)। विलो॰ **कृष्णाभिसारिका**।

शुचि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता। वि॰ पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, **सुचि** (दे॰)। साफ़, निर्दोष, स्वच्छ हृदय वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **शुचिता**।

शुचिकर्म्मा–वि॰ यौ॰ (सं॰ *शुचिकर्मन्*) कर्मनिष्ठ, सदाचारी, पवित्र कार्य करने वाला।

शुची–वि॰ दे॰ (सं॰) साफ़, पवित्र।

शुतुरमुर्ग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) ऊँट की सी गर्दन वाला बहुत बड़ा पक्षी।

शुदनी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) होनहार, होतव्यता, भवितव्यता, होनी, नियति, भावी।

शुद्ध–वि॰ (सं॰) स्वच्छ, पवित्र, साफ़, उज्ज्वल, सफ़ेद, सही, ठीक, अशुद्धिहीन, निर्दोष, खालिस, बिना मिलावट का। संज्ञा, स्त्री॰ **शुद्धता**।

शुद्ध पक्ष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शुक्ल पक्ष।

शुद्धापहुति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को असत्य दिखाकर या उसका निषेध कर उपमान की सत्यता ठहराई जाये।

शुद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्वच्छता, सफाई, अशुद्ध को शुद्ध करने के समय का कृत्य, संस्कार या कार्य, मृतक अशौच को दूर करने को 10वें दिन का कार्य।

शुद्धिपत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह पत्र जो पुस्तकादि की अशुद्धियों का सूचक हो, शुद्धिसूचक लेख, **शुद्धाशुद्ध-पत्र**।

शुद्धोदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शाक्य-वंशीय सुप्रसिद्ध गौतम बुद्ध के पिता।

शुनःशेष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महर्षि ऋचीक के पुत्र एक ऋषि वैदिक काल)।

शुनासीर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इंद्र।

शुनि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुत्ता, स्वान। स्त्री॰ **शुनी**।

शुबहा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) संदेह, शंका, शक, धोखा, भ्रम, वहम, **सुभा** (दे॰)।

शुभंकर, शुभकारक, शुभकारी। वि॰ (सं॰) मंगल या कल्याण करने वाला।

शुभ–वि॰ (सं॰) मंगलप्रद, कल्याणकारी, उत्तम, अच्छा, पवित्र, भला, इष्ट। संज्ञा, पु॰ मंगल, भलाई, कल्याण, **सुभ** (दे॰)। वि॰ **शुभकारक, शुभकारी**।

शुभचिंतक–वि. यौ. (सं.) भलाई या मंगल चाहने वाला, **शुभेच्छु**। कल्याणकांक्षी, हितैषी, खैरख़ाह। संज्ञा, पु. **शुभचिंतन**।

शुभदर्शन–वि. यौ. (सं.) सुंदर, मनोहर, मंगलमूर्ति।

शुभेच्छु–वि. यौ. (सं.) भला चाहने वाला, हितैषी, **शुभाकांक्षी**। संज्ञा, स्त्री. **शुभेच्छा**।

शुभ्र–वि. (सं.) श्वेत, उज्ज्वल, धवल, सफ़ेद, **सुभ्र** (दे.)।

शुभ्रता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) श्वेतता, उज्ज्वलता, सफ़ेदी।

शुरुवा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *शोरुवा*) रसा, **सुरुवा** (दे.), विशेषतः मांस का पका रसा।

शुरू–संज्ञा, पु. (अ. *शुरुअ*) प्रारंभ, आरंभ, आरंभस्थल, उत्थान, उद्‌गम, आग़ाज़। संज्ञा, स्त्री. **शुरुआत**।

शुल्क–संज्ञा, पु. (सं.) घाट आदि का महसूल, दायज, दहेज, शर्त्त, बाजी, भाड़ा, किराया, मूल्य, दाम, फ़ीस, किसी कार्य के बदले में दिया गया धन।

शुश्रूपक–संज्ञा, पु. (सं.) सेवा करने वाला, सेवक, दास, भृत्य, नौकर, **किंकर**।

शुश्रुवा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) परिचर्य्या, सेवा, ख़ुशामद, टहल। वि. **शुश्रूष्य**। यौ. **सेवा-शुश्रूषा**।

शुषेण–संज्ञा, पु. (सं.) वानरी सेना का एक वैद्य, **सुखेन** (दे.)।

शुष्क–वि. (सं.) **खुश्क** (फा.), सूखा नीरस, विरस, जिसमें मन न लगे, व्यर्थ, निरर्थक, निर्मोही, प्रेमादि-विहीन। संज्ञा, स्त्री. **शुष्कता**। यौ. **शुष्क-हृदयी**।

शूक–संज्ञा, पु. (सं.) वप, जौ, सींकुर जौ जब की बाल के आगे निकले रहते हैं। एक रोग, एक कीड़ा, दाढ़ी।

शूकर–संज्ञा, पु. (सं.) सुवर, सुअर, वाराह, विष्णु का तीसरा या वाराह अवतार (पुरा.)। **सूकर** (दे.)। स्त्री. **शुकरी**।

शूकरक्षेत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बदायूँ (उ. प्र.) के समीप एक तीर्थ जो अब सोरों कहाता है, **सूकरखेत** (दे.)।

सूची–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सूची*) सुई, **सूजी** (दे.)। (अं) लिस्ट।

शूद्र–संज्ञा, पु. (सं.) चार वर्णों में से आर्यों का चौथा या अंतिम वर्ण जो अन्य तीन वर्णों की सेवा करे, नीच जाति, निकृष्ट, या बुरा व्यक्ति, **सूद** (दे.)। स्त्री. **शूद्रा**, **शुद्री**।

शूद्रक–संज्ञा, पु. (सं.) विदिशा नगरी का एक प्राचीन राजा और संस्कृत के मृच्छ-कटिक नाटक के निर्माता एक महाकवि, शूद्र जाति का एक राजा, शंबूक।

शूद्रता–संज्ञा, पु. (सं.) शूद्रात्व, नीचता, शूद्र का भाव।

शूद्रद्युति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) काला या नीला रंग।

शूद्रा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शूद्र जाति या शूद्र व्यक्ति की स्त्री।

शूद्राणी, शूद्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शूद्र की स्त्री।

शूना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में छोटे जीवों (चीटी आदि) की हत्या हुआ करती है। जैसे– चक्की, चूल्हा, पानी के बरतन आदि।

शून्य–संज्ञा, पु. (सं.) आकाश, ख़ाली जगह, एकांतस्थान, बिंदी, बिंदु. सिफ़र। अभाव, स्वर्ग, परमेश्वर, विष्णु, **निर्जन** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **शून्यता**। वि. जिसके भीतर कुछ न हो, ख़ाली, रहित, रिक्त, विहीन, निराकार।

शून्यता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रिक्तता, ख़ाली या छूँछापन, निर्जनता।

शून्यवाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संसार को शून्य मानने का एक दार्शनिक विचार या सिद्धांत, बौद्धमत का एक सिद्धांत।

शून्यवादी–संज्ञा, पु. (सं. *शून्यवादिन्*) नास्तिक, ईश्वर और जीव में विश्वास न रखन वाला, बौद्धमत के लोग।

शूप–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूर्प*) अन्नादि पछोरने का सूपा, **सूप** (दे.)।

शूर–संज्ञा, पु. (सं.) वीर, सूरमा, बहादुर, योद्धा, सैनिक, सूर्य, सिंह, कृष्ण के पितामह, विष्णु, **सूर** (दे.)।

शूरणा, शूरन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सूरण*) ज़मीकंद, **सूरन** (दे.)।

शूरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बहादुरी, वीरता, **सूरता** (दे.)।

शूरताई*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शूरता*) बहादुरी, वीरता।

शूरवीर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बहादुर, सूरमा। संज्ञा, स्त्री. **शूर-वीरता**।

शूरसेन–संज्ञा, पु. (सं.) प्राचीन मथुरा-नरेश जो श्रीकृष्ण जी के पितामह थे, मथुरा प्रदेश (प्राचीन नाम)।

शूरा*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूर*) वीर, सामंत, बहादुर, **सूरा** (दे.)। संज्ञा, पु. दे. (सं. *सूर्य*) सूर्य।

शूर्प–संज्ञा, पु. (सं.) अन्नादि पछोरने का सूप, **सूपा** (दे.)।

शूर्पणखा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सूर्पनखा** (दे॰), रावण की बहिन, लक्ष्मण द्वारा पंचवटी में इसके नाक-कान काटे गए थे।

शूर्पनखा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **शूर्पणखा** (सं॰)।

शूर्पारक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बंबई प्रांत के सोपरा स्थान का पुराना नाम।

शूल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) त्रिशूल, बरछी, जैसा एक अस्त्र (प्राचीन), भाला, शूली, प्राण-दंड देने की सूली, वायु-विकार जन्य पेट का तेज़ दर्द, दुःख कोंच, पीड़ा, टीस, एक अशुभयोग (ज्यो॰), बड़ा और लंबा नुकीला काँटा, मृत्यु, पताका, झंडा, सींक, छड़, सलाख। वि॰ नोकदार वस्तु, नुकीला।

शूलधर, शूलधारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शुलधारिन्*) महादेव जी।

शूलना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शूल+ना प्रत्य॰*) शूल के तुल्य गड़ना, पीड़ा या दुख देना।

शूलपाणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महादेव जी, **सूलपाणी** (दे॰)।

शूलभृत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव जी।

शूलहस्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शंकर जी।

शूलि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महादेव जी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सूली।

शूलिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फाँसी या सूली देने वाला।

शूली–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शूलिन्*) महादेव जी, शिव जी, शूल रोगी, एक नरक। संज्ञा, स्त्री॰ सूली पर चढ़ने वाला, सूली देने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शूल*) पीड़ा, दर्द, सूल, दुख।

शृंखल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मेखला, जंज़ीर, सिकड़, साँकल, हथकड़ी, बेड़ी।

शृंखलता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) क्रमबद्ध या सिलसिलेवार होने का भाव।

शृंखला–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जंजीर, साँकल, कटि-वस्त्र, मेखला, तगड़ी, करधनी, श्रेणी, पंक्ति, क्रम, एक अर्थालंकार जिसमें कहे हुए पदार्थों का यथाक्रम वर्णन किया जाय, **यथाक्रम, यथासंख्य** (अ॰ पी॰)।

शृंखलाबद्ध–वि॰ यौ॰ (सं॰) क्रमबद्ध, यथाक्रम, सिलसिलेवार, शृंखला से बँधा हुआ।

शृंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पर्वत शिखर, चोटी का सर्वोच्च भाग गाय आदि के सिर के सींग, कंगूरा, शृंगी या सिंगी नाम का एक बाजा, पंकज, कमल, ऋष्य शृंग।

शृंगपुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शृंगवेरपुर।

शृंगवेरपुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्रीराम के प्रिय निषाद-राज गृह का प्राचीन नगर, **सिंगरौर** (वर्तमान)।

शृंगार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रस-राज, काव्य के नौ रसों में से सर्वप्रधान एक रस, जिसका स्थायी भाव रति, आलंबन-विभाव नायक-नायिका, उद्दीपन वाटिका, सुंदर वायु आदि। नायक-नायिका के मिलन और विलगाव के आधार पर इसके दो भेद हैं:– संयोग और वियोग या विप्रलंभ; इष्टदेव को पति और निज को पत्नी मान कर की गई माधुर्य भाव की मति, स्त्रियों का वस्त्राभरण से स्वदेह सजाना, सजावट, बनाव-चुनाव; शृंगार सोलह हैं; किसी वस्तु को शोभा देने वाला साधन। **सिंगार, सिंगाँर** (दे॰)।

शृंगारना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *शृंगार+ना प्रत्य॰*) सजाना, सँवारना, शृंगार करना, **सिंगारना** (दे॰)।

शृंगारिक–वि॰ (सं॰) शृंगार सम्बन्धी।

शृंगार-हाट–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *शृंगार+हाट* हि॰) वह बाजार जहाँ रंडियाँ रहती हों, **सिंगारहाट** (दे॰)।

शृंगारिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्रग्विणी छंद (पिं॰)।

शृंगारित–वि॰ (सं॰) सजाया हुआ, शृंगार किया हुआ, अलंकृत, सुसज्जित।

शृंगारिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शृंगार+इया प्रत्य॰*) वह पुरुष जो देव-मूर्त्तियों का शृंगार करता हो, बहुरूपिया, **सिंगारिया** (दे॰)।

शृंगि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिंगी मछली। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शृङ्गिन्*) सींग वाला।

शृंगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शृङ्गिन्*) सींग वाला पशु, वृक्ष, हाथी, पहाड़, शमीक ऋषि के पुत्र एक ऋषि जिनके श्राप से अभिमन्यु पुत्र राजा परीक्षित को तक्षक ने काटा था, कनफटों के बजाने का सींग का एक बाजा, महादेव जी, शिव जी, ऋषभक नामक एक अष्टवर्गीय औषधि (वैद्य॰)।

शृंगीगिरि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह प्राचीन पहाड़ जहाँ शृंगी ऋषि तपस्या करते थे।

शृंग-शृंगाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शृंगाल*) सियार, गीदड़, स्यार।

शृष्टि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कंस का एक भाई (पुरा॰)।

शेख़—संज्ञा, पु॰ (अ॰) पैग़बर, मुहम्मद के वंशज मुसलमानों की उपाधि, मुसलमानों के चार वर्गों में से प्रथम श्रेष्ठवर्ग, बुजुर्ग, बड़ा, मुसलमान-धर्माचार्य। स्त्री॰ **शेख़ानी**।

शेख—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शेष*) बाकी, समाप्त, **सेप** (दे॰), एक नाग-राज, शेष जी।

शेख़-चिल्ली—संज्ञा, पु॰ (अ॰+हि॰) एक कल्पित मूर्ख, बड़े मंसूबे बाँधने वाला, एक मूर्ख मसख़रा।

शेखर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिर, माथा, किरीट, मुकुट, शीर्ष, चोटी, सिरा, शिखर (पर्वत-शृंग) सर्व श्रेष्ठ या उत्तम वस्तु या व्यक्ति, टगण का पाँचवाँ भेद (।।ऽ।-पिं॰)।

शेखावत—संज्ञा, पु॰ (अ॰ *शेख*) कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

शेखी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) अहंकार, घमंड, गर्व, शान, अकड़, ऐंठन, खींच। **मु॰ शेखी बघारना (हाँकना या मारना)**—बढ़-चढ़ कर बातें करना, डींग मारना।

शेखी झाड़ना (निकालना)—गर्व दूर करना। **शेखी भूलना (भुलाना)**—शान या गर्व दूर करना (होना)। **शेखी दिखाना**—शान दिखाना। यौ॰ **शेख़ी-शना**।

शेखीबाज़—वि॰ (फा॰) अभिमानी, घमंडी, अहंकारी, झूठी डींग मारने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **शेखीबाज़ी**।

शेर—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) व्याघ्र, बाघ, नाहर, सिंह, बिल्ली की जाति का एक भयावना हिंसक पशु। स्त्री॰ **शेरनी**। **मु॰ शेर होना**—निर्भीक और धृष्ट होना, अत्यंत वीर और साहसी व्यक्ति। संज्ञा, पु॰ (अ॰) उर्दू, फ़ारसी और अरबी के छंद के दो चरण। संज्ञा, स्त्री॰ **शेरख़ानी**—शेर कहना।

शेरदहाँ—वि॰ (फा॰) जिसका मुँह शेर का सा है, जिसके छोरों पर शेर का मुँह बना हो। संज्ञा, पु॰ शेर के मुँह की सी घुंडी वाला, पीछे संकरा और आगे चौड़ा सर।

शेरदिल—वि॰ यौ॰ (फा॰) साहसी या वीर हृदयी। संज्ञा, स्त्री॰ **शेरदिली**।

शेर पंजा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फा॰ *शेर+पंजा* हि॰) शेर के पंजे की आकृति का एक अस्त्र, बघनख, बघनहा नामक एक अस्त्र।

शेर बबर—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) केहरी, केसरी, सिंह, बड़ा व्याघ्र।

शेल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेल, बर्छा, भाला।

शेलु—संज्ञा, पु॰ (दे॰) मेथी का साग़।

शेरवानी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अंग्रेज़ी ढंग के काट का एक प्रकार का अंगा, अचकन, चपकन।

शेवाल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शैवाल*) सेवार, जल की घास, शैवाल।

शेष—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाक़ी, बची वस्तु, अध्याहार, किसी वाक्य का अर्थ करने को ऊपर से लाया गया शब्द समाप्ति, अंत, सहस्र फनों का सर्पराज, शेषनाग, जिसके फनों पर पृथ्वी ठहरी है (पुरा॰), बलराम लक्ष्मण, एक दिग्गज, परमेश्वर, टगण का पाँचवाँ भेद, छप्पय का 25वाँ भेद (पिं॰), घटाने से बची संख्या (गणि॰)। वि॰ बचा हुआ, बाक़ी, ख़तम, समाप्त, अंत को प्राप्त।

शेषधर-शेषभृत्—संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिवजी।

शेषनाग—संज्ञा, पु॰ यो॰ (सं॰) अपने सहस्र फनों पर पृथ्वी को धारण करने वाला सर्पराज।

शेपर*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिखा*) शेखर, सिर, शीर्ष, मस्तक, चोटी।

शेषराज—संज्ञा, पु॰ (सं॰) दो मगण का एक वर्णिक छंद या वृत्त, **विद्युलेखा** (पिं॰)।

शेषवत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अनुमान के तीन भेदों में से दूसरा, जहाँ कार्य के देखने से कारण का ज्ञान या निश्चय हो (व्या॰)।

शेषशायी—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शेषशामिन्*) विष्णु।

शेषांश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अवशिष्ट या अंतिम भाग, बचा हुआ अंश।

शेषाचल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक पर्वत (दक्षिण)।

शेषावस्था—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वृद्धापन, बुढ़ापा, अंत की दशा।

शेषोक्त—वि॰ (सं॰) अंतिम कथन, अंत में कहा गया।

शैतान—संज्ञा, पु॰ (अ॰) अजाजील फरिश्ता का वंशज एक तमोगुणी देव जो लोगों को बहका कर कुकर्म कराता है (मुसल॰)। भूत, प्रेत, दुष्ट देव-योनि, दुष्ट व्यक्ति, बदमाश, नटखट। **मु॰ शैतान की आँत**—बहुत ही लंबी चीज़।

शैतानी—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *शैतान*) दुष्टता, पाजीपन, शरारत,

बदमाशी। वि॰ शैतान का, शैतानसंबंधी, नटखट, दुष्टतापूर्ण। **मु॰ शैतानी-चर्खा**–शरारत से भरा उलझन का काम।

शैल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शीतता, शीतलता, ठंडक, सर्दी।

शैथिल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिथिलता, ढीलापन ,सुस्ती।

शैल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पहाड़, पर्वत, शिलाजीत, चट्टान, **सैल** (दे॰)।

शैलकुमारी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) **शैलकिशोरी,** पार्वती जी।

शैलगंगा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) गोवर्द्धन पहाड़ से निकली एक नदी।

शैलजा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **शैलतनया,** पार्वती जी, दुर्गा जी।

शैलवटी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पर्वत की तराई।

शैलधर-शैलभृत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्रीकृष्ण जी, **गिरिधर, गिरिधारी**।

शैलनंदिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पार्वती जी, **शैलजा, शैलात्मजा**।

शैलपति, शैलराज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हिमालय, **शैलाधिपति, शैलनायक, शैलनाथ, शैलेन्द्र, शैलेश**।

शैलपुत्री–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पार्वती जी, **शैल-तनुजा**।

शैलसुता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पार्वती जी, **शैल-कन्या**।

शैलाट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिंह, किरात, भील।

शैलात्मजा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) उमा, पार्वती।

शैली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ढंग, ढय, चाल, प्रणाली, प्रथा, तरीक़ा, तर्ज़, रीति, रस्म-रिवाज़, वाक्य-रचना का ढंग।

शैलूष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाटक खेलने वाला, नट, बहुरूपिया, धूर्त्त, छली।

शैलेंद्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिमालय।

शैलेय–वि॰ (सं॰) पथरीला, पत्थर का, पहाड़ी। संज्ञा, पु॰ सेंधानमक, शिलाजीत, छरीला, सिंह।

शैलोदक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शैल-जल, प्रत्येक वस्तु को पत्थर कर देने वाला एक पर्वतीय जल।

शैव–वि॰ (सं॰) शिव का, शिव-संबंधी। संज्ञा, पु॰ शिवोपासक, शैवमतानुयायी, पाशुपत अस्त्र, धतूरा, शिव-भक्त।

शैवलिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नदी, सरिता।

शैवाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिवार, सेवार, जल-मल।

शैवी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पार्वती, दुर्गा। वि॰ (सं॰) शिव या शैव संबंधी।

शैव्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सत्यवती अयोध्या-नरेश हरिश्चंद्र की रानी और रोहिताश की माता।

शैशव–वि॰ (सं॰) शिशुता, शिशु या बालक-संबंधी, बाल्यावस्था-संबंधी, बच्चों का। संज्ञा, पु॰ (सं॰ बालकपन, लड़कपन, शिशु सा व्यवहार।

शैशुनाग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्राचीन मगध-देशाधिपति शिशुनाग का वंशज।

शोक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुःख, संताप, रंज, **सोक** (दे॰) किसी प्रिय वस्तु के अभाव या पीड़ा से उत्पन्न क्षोभ।

शोकहर–वि॰ (सं॰) दुख-विनाशक।

शोकहार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तीन मात्राओं का एक मात्रिक छंद, **शुभंगी** (पिं॰)।

शोकाकुल–वि॰ यौ॰ (सं॰) संताप या दुःख से व्याकुल, शोक-पीड़ित, **शोकातुर, शोकार्त्त**।

शोकातुर-शोकार्त्त–वि॰ (सं॰) संताप से व्याकुल, शोक-पीड़ित, शोकाकुल।

शोकापह–वि॰ यौ॰ (सं॰) दुःखनाशक, शोक-विनाशक।

शोख़–वि॰ (फ़ा॰) धृष्ट, ढीठ, नटखट, शरीर, चंचल, गहरा, चमकदार रंग। संज्ञा, स्त्री॰ **शोखा**।

शोच–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शोचन*) परिताप, संताप, शोक, दुःख, चिंता, फ़िक्र, **सोच** (दे॰)।

शोचनीय–वि॰ (सं॰) चिंतनीय, जिसे देख दुःख हो, अति हीन-दीन, बुरा।

शोण–संज्ञा, पु॰ (सं॰ लालिमा, अरुणता, लाली, लाल रंग, अग्नि, रक्त, सोननदी।

शोणित–वि॰ (सं॰) लाल, रक्त वर्ण का। संज्ञा, पु॰ रुधिर, रक्त, लोहू, **सोनिव** (दे॰)।

शोथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **शोथ** (दे॰) सृजन, वरम, किसी प्राणी के किसी अंग का फूल या सूत्र उठना।

शोध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खोज, शुद्धि संस्कार, दुरुस्ती, ठीक करना, अदा या चुकता होना, परीक्षा, जाँच, अन्वेषण, खोज।

शोधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शोधने वाला, सुधारक, खोजने वाला, अन्वेषक, गवेषक।

शोधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साफ़ या शुद्ध करना, सुधारना, शुद्ध, दुरुस्त या ठीक करना, संस्कार करना, जाँच,

छान-बीन, विरेचन, दस्तों से उदर शुद्ध करना, खोजना या ढूँढ़ना, अन्वेषण, ऋण चुकाना, प्रायश्चित्त, औषधार्थ धातुओं का संस्कार करना। वि.–**शोधित, शोधनीय, शोध्य**। **मु. वैर-शोधन**–शत्रुता का बदला लेना।

शोधना–क्रि. स. दे. (सं. *शोधन*) साफ़ या शुद्ध करना, सुधारना, ठीक करना, औषधार्थ धातुओं का संस्कार करना, खोजना, ढूँढ़ना, **सोधना** (दे.)।

शोधनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बहारी, बढ़नी।

शोधवाना–क्रि. स. दे. (हि. *शोधना प्रे. रूप*) शुद्ध करना, ढुँढ़वाना, खोजवाना। स. रूप–**शोधाना, शोधावना**।

शोधैया–संज्ञा, पु. (हि. *शोधना*+ऐया प्रत्य.) शोधने वाला।

शोबदा–संज्ञा, पु. (अ.) इन्द्रजाल, जादू दिखाने वाला बदमाश व्यक्ति।

शोभ–संज्ञा, स्त्री. (सं. *शोभा*) शोभा, सुन्दरता।

शोभन–वि. (सं.) छविमान शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर, सुहावना, उत्तम, श्रेष्ठ, शुभ। वि. **शोभनीय, शोभित**। संज्ञा, पु. इष्टियोग, शिव, अग्नि, 24 मात्राओं का एक मात्रिक छंद, सिंहिका (पिं.), सौंदर्य, भूषण, कल्याण, मंगल, दीप्ति, सुषमा।

शोभना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुन्दर स्त्री, हरिद्रा, हलदी। *क्रि. स. दे. (सं. *शोभत*) मनोरम लगना, शोभित होना, **सोभना, सोहना** (दे.)।

शोभांजन–संज्ञा, पु. (सं.) सहिंजन वृक्ष।

शोभा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कांति, आभा, वर्ण, सुन्दरता, छवि, छटा, दीप्ति, रंग, सजावट, 20 वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं.)। **सोभा** (दे.)।

शोभायमान–वि. (सं.) छवियुक्त, सुन्दर, सोहता हुआ सुशोभित।

शोभित–वि. (सं.) सजता हुआ, सुन्दर, सजीला, अच्छा या मंजुल लगता हुआ।

शोर–संज्ञा, पु. (फा.) कोलाहल, धूम, गुलगपाड़ा, ख्याति। यौ. **शोरगुल**।

शोरवा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) उबली वस्तु का रस, **जूस** (अं.) **यूष** (सं.), उबाली वस्तु का पानी, **जूस** (दे.)।

शोरा–संज्ञा, पु. (फ़ा. *शोर*) मिट्टी का क्षार, **सोरा** (दे.)।

शोला–संज्ञा, पु. (अ.) आग की लपट या ज्वाला। संज्ञा, पु. (सं.) वृक्ष विशेष जिसकी छाल से कपड़ा बनाया जाता है।

शोशा–संज्ञा, पु. (फा.) निकली नोक, विचित्र बात। **मु. शोशा छोड़ना**–अनूठी बात कहना।

शोष–संज्ञा, पु. (सं.) सूखना, खुश्क या रूखा होना, देह का घुलना या क्षीण होना, यक्ष्मा रोग का एक भेद (वैद्य.), क्षयी, बच्चों का सूखा रोग, **सुखंडी** (प्रान्ती.)।

शोषक–संज्ञा, पु. (सं.) सोखने या सुखाने वाला, क्षीण करने वाला, रस जलादि का खींचने वाला। स्त्री. **शोषिका**।

शोषण–संज्ञा, पु. (सं.) सोखना, सुखाना, खुश्क या सूखा करना, क्षीण करना, सुखाना, नाश करना, कामदेव का एक बाण। वि. **शोषी, शोषित, शोषणीय**।

शोहदा–संज्ञा, पु. (अ.) गुंडा, बदमाश, लुच्चा, लंपट, व्यभिचारी।

शोहरत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) ख्याति, प्रसिद्धि, नामवरी, धूम, जनरव, किंवदंती।

शोहरा–संज्ञा, पु. (अ. *शोहरत*) शोहरत, ख्याति, प्रसिद्धि, नामवरी, धूम।

शौंडिक–संज्ञा, पु. (सं.) कलवार जाति।

शौक़–संज्ञा, पु. (अ.) किसी वस्तु के उपयोग की तीव्र अभिलाषा, प्राप्ति की लालसा, चाय, चाह। **मु. शौक करना**–प्रयोग का भोग करना। **शौक से**–प्रसन्नतापूर्वक, आकांक्षा, हौसला, वसन, चसका, प्रवृत्ति, झुकाव।

शौक़त–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शान, सजधज, ठाठ-बाट, ठाठ। यौ. **शान-शौकत**।

शौकिया–क्रि. वि. (अ.) शौक से, शौक के साथ, शौक के लिए।

शौकीन–संज्ञा, पु. (अ. *शौक+ईन प्रत्य.*) शौक करने वाला, बना-ठना या सजा रहने वाला।

शौकीनी–संज्ञा, स्त्री. (अ. *शौकीन+ई प्रत्य.*) शौक़ीन होने का कार्य या भाव।

शौक्तिक-शौक्तिकेय–संज्ञा, पु. (सं.) मोती।

शौच–संज्ञा, पु. (सं.) पावनता, पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छत से रहना, शुद्ध जीवन बिताना, प्रातःकाल उठकर प्रथम करने के कार्य **शौच** (दे.), मल त्याग करना, नहाना

आदि। वि. **अशौच**।

शौत–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सपत्नी*) सपत्नी,, सवत, **सवति** (दे.)।

शौध*–वि. दे. (सं. *शुद्ध*) पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, **सौध** (दे.)।

शौनक–संज्ञा, पु. (सं.) एक पुराने ऋषि।

शौरसेन–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रज-मंडल का पुराना नाम।

शौरसेनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शौरसेन प्रान्त की प्राचीन प्राकृत भाषा या बोली जिससे ब्रजभाषा निकली है, नागर या एक प्राचीन अपभ्रंश भाषा।

शौरि–संज्ञा, पु. (सं.) श्री कृष्ण जी।

शौर्य्य–संज्ञा, पु. (सं.) शूरता, बहादुरी, वीरता, आरभटी नामक वृत्ति (नाट.)।

शौहर–संज्ञा, पु. (फा.) भर्ता, स्त्री का स्वामी, पति, मालिक, खाविंद।

श्मशान–संज्ञा, पु. (सं.) मरघट, **समसान, मसान** (दे.)।

श्मशानपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिव जी, **मसानपति** (दे.), चांडाल, डोम।

श्मश्रु–संज्ञा, पु. (सं.) मूँछ, मुँह या ओंठों पर के बाल, **दाढ़ी, मूँछ**।

श्याम–संज्ञा, पु. (सं.) श्रीकृष्ण, कन्नौज से पश्चिम का देश (प्राची.), मेघ, भारत से पूर्व स्याम देश। वि. साँवला, काला। संज्ञा, स्त्री. **श्यामता, श्यामलता**।

श्यामकर्ण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ऐसा घोड़ा जिसके एक या दोनों कान काले हों और सारा शरीर श्वेत हो, **स्यामकरन** (दे.)।

श्यामजीरा–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) काली बाल वाला एक धान, काला या स्याह जीरा।

श्यामटीका–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *श्याम+टीका* हि.) काजल का टीका जो दृष्टि-दोष के बचाने को लड़कों के माथे पर लगाया जाता है, **दिठौना** (ब्र.)।

श्यामता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कृष्णता, कालिमा, साँवलापन, कालापन, उदासी, मलिनता, **स्यामता, स्यामनाई** (दे.)।

श्यामल–वि. (सं.) साँवला, काला। संज्ञा, स्त्री. **श्यामलता**।

श्यामसुंदर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्त्री कृष्ण जी, **श्यामसुंदर** (दे.), एक वृक्ष।

श्यामा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राधिका, राधा जी, एक गोपी, मधुर और मृदु स्वर वाला एक काला पक्षी, सोलह वर्ष की स्त्री, सुरसा क्षुप, तुलसी, काली गाय, कोयल, यमुना, रात, स्त्री। वि. काली, श्याम रंग वाली, साँवली।

श्यामाक–संज्ञा, पु. (सं.) सावाँ नामक एक प्रकार का अन्न।

श्याल–संज्ञा, पु. (सं.) स्त्री का भाई, साला, बहनोई, बहिन का पति। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंगाल*) स्यार, सियार।

श्यालक–संज्ञा, पु. (सं.) साला, बहनोई।

श्याला–संज्ञा, पु. (सं.) साला, बहनोई।

श्येन–संज्ञा, पु. (सं.) बाज़ या शिकरा पक्षी, दोहे का चौथा भेद (पिं.)।

श्येनिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मादा बाज, श्येनी, 11 वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं.)।

श्येनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मादा, बाज, श्येनिका, पक्षियों की माता तथा कश्यप की एक कन्या (मार्क. पु.)।

श्योनाक–संज्ञा, पु. (सं.) लोध्र, सोना-पाढ़ी वृक्ष, लोध।

श्रद्धा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बड़ों के प्रति पूज्य भाव, आदर, प्रेम सम्मान, भक्ति, आस्था, आर्य पुरुषों तथा वेदादि के वाक्यों में विश्वास, कर्दममुनि की कन्या जो अग्निमुनि को ब्याही थी।

श्रद्धान्–संज्ञा, पु. (सं.) श्रद्धा।

श्रद्धालु–वि. (सं.) श्रद्धावान्, श्रद्धायुक्त।

श्रद्धावान्–संज्ञा, पु. (सं. *श्रद्धावान*) श्रद्धायुक्त, धर्मनिष्ठ, श्रद्धालु।

श्रद्धास्पद–वि. यौ. (सं.) श्रद्धेय, पूज्य, पूजनीय, आदरणीय।

श्रद्धेय–वि. (सं.) पूज्य, श्रद्धास्पद।

श्रम–संज्ञा, पु. (सं.) मेहनत, परिश्रम, मशक्कत (फ़ा.) क्रांति, थकावट, दुख, क्लेश, कष्ट, पसीना, परेशानी, दौड़धूप, प्रयास, स्वेद, व्यायाम, एक संचारी भाव (सा.) किसी कार्य के करने से संतुष्टि तथा शैथिल्य, **स्रम** (दे.)।

श्रमकण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **श्रम-सीकर,** पसीने की बूँद।

श्रमजल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्वेद, पसीना, **श्रम-सलिल, श्रम-बिंदु**।

श्रमजित–वि॰ (सं॰) अति परिश्रम से भी न थकने वाला।

श्रमजीवी–वि॰ (सं॰ *श्रमजीविन्*) श्रम से पेट पालने वाला, परिश्रम करके जीवन-निर्वाह करने वाला; मज़दूर।

श्रमण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्रौद्धमत का संन्यासी, मुनि, यति, मज़दूर।

श्रमबिंदु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **श्रम-सीकर,** पसीने की बूँद।

श्रमवारि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वेद, पसीना, **श्रम-सलिल**।

श्रमविभाग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी कार्य के भिन्न-भिन्न विभागों के लिए अलग-अलग व्यक्तियों की नियुक्ति।

श्रम-सलिल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰), पसीना।

श्रमसीकर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पसीने की बूँद।

श्रमार्जित–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परिश्रम से प्राप्त, **श्रमोपार्जित**।

श्रमित–वि॰ (सं॰) श्रांत, थका हुआ, श्रम से शिथिल, कृत श्रम।

श्रमी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *श्रमिन्*) मेहनती, परिश्रमी, मज़दूर, श्रमजीवी।

श्रवण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शब्द का बोध करने वाली इंद्रिय, कर्ण, कान, **स्रवन, स्रौन** (दे॰), शास्त्रादि या देव-चरित्रादि सुनना तथा तदनुकूल करना, एक प्रकार की भक्ति, वैश्य तपस्वी अंधकमुनि का पुत्र, **सरवन** (दे॰), वाणकार 22 वाँ नक्षत्र (ज्यो॰)। यौ॰ **श्रवणकुमार**।

श्रवन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्रवण*) कान, कर्ण, **स्रवन, स्रौन** (दे॰), 22वाँ नक्षत्र, एक अंध वैश्य तपस्वी का पुत्र **सरवन** (दे॰), एक प्रकार की भक्ति।

श्रवना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *स्राव*) बहना, रसना, चूना, टपकना, **स्रवना** (दे॰)। क्रि॰ स॰ गिराना, बहाना।

श्रवित*–वि॰ दे॰ (सं॰ *स्राव*) बहता या बहा हुआ, **स्रवित**।

श्रव्य–वि॰ (सं॰) सुनने-योग्य, जो सुना जा सके। यौ॰ **श्रव्य काव्य**–वह काव्य जो केवल सुना जा सके, नाटक के रूप में देखा या दिखाया न जा सके।

श्रांत–वि॰ (सं॰) क्लान्त, शिथिल, शांत, जितेंद्रिय, परिश्रम से थका हुआ, दुखी।

श्रांति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) परिरम, क्लांति, थकावट, विश्राम, **शिथिलता**।

श्राद्ध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जो कार्य श्रद्धाभक्ति से प्रेमपूर्वक किया जावे, पितरों के हेतु पितृ-यज्ञ, पिंड-दान, तर्पण, भोजादि शास्त्रानुकूल कृत्य, **सराध** (दे॰), पितृ-पक्ष।

श्राद्धपक्ष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पितृ पक्ष।

श्राप–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाप*) **स्राप, सराप** (दे॰), कोसना, बददुआ देना, धिक्कार, फटकार।

श्रावक-श्रावग–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *श्रावक*) बौद्ध मत का साधु या संन्यासी, नास्तिक, जैनी। वि॰ श्रवण करने या सुनने वाला।

श्रावगी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्रावक*) जैनी, **सरावगी** (दे॰)।

श्रावण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सावन (दे॰) का महीना, आषाढ़ के बाद और भादों से पूर्व का महीना।

श्रावणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सावन महीने की पूर्णमासी, रक्षा-बंधन त्योहार, **सॉवनी** (दे॰)।

श्रावन*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *स्रवना*) गिराना, टपकाना।

श्रावस्ती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) उत्तर कौशल में गंगा-तट की एक प्राचीन नगरी जो अब सहेत-महेत कहलाती है।

श्राव्य–वि॰ (सं॰) श्रोतव्य, सुनने के योग्य।

श्रिय–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्रिया*) मंगल, कल्याण। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *श्री*) शोभा, आभा, प्रभा।

श्री–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विष्णु-पत्नी, लक्ष्मी, रमा, कमला, सरस्वती, गिरा, सफ़ेद चंदन, कमल, पद्म, धर्म, अर्थ, काम, त्रिवर्ग, संपत्ति, ऐश्वर्य, विभूति, धन, कीर्ति, शोभा, कांति, प्रभा, आभा, स्त्रियों के सिर की बेंदी, नाम के आदि में प्रयुक्त होने वाला एक आदरसूचक शब्द, एक पद-चिह्न, **सिरी** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ वैष्णवों का एक संप्रदाय, एक एकाक्षर **छंद** या वृत्त (पिं॰) रोरी, एक संपूर्ण जाति का राग (संगी॰)।

श्रीकंठ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शंभु, शिवजी।

श्रीकांत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु।

श्रीकृष्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कृष्णचंद्र।

श्रीक्षेत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जगन्नाथपुरी।

श्रीखंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सफेद चंदन, हरि चंदन, शिखरण, **सिकरन**।

श्रीखंड-शैल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **श्रीखंडाचल,** मलय, पर्वत, **श्रीखंदाद्रि**।

श्रीगदित–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 18 प्रकार के उपरूपकों में से एक भेद (नाटय॰) श्रीरासिका।

श्रीगिरि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मलयाचल।

श्रीचक्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवी की पूजा का चक्र (वाम. **तंत्र**)।

श्रीदाम–संज्ञा, पु. (सं. *श्रीदामन्*) सुदामा, कृष्ण के एक बाल-सखा।

श्रीधर–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, रमेश, संस्कृत के एक प्रसिद्ध आचार्य।

श्रीनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु।

श्रीधाम, श्रीनिकेत–संज्ञा, पु. यो. (सं.) **श्री-निकेतन**, लक्ष्मी-धाम, बैकुंठ, लाल कमल, पद्म, सोना, स्वर्ग, विष्णु।

श्रीनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लक्ष्मीपति, विष्णु।

श्रीनिवास, श्रीनिलय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, बैकुंठ, कमल, **श्री-सदन, श्री-सद्म**।

श्रीपंचमी–संज्ञा, स्त्री. यो. (सं.) बसंत-पंचमी।

श्रीपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु।

श्रीपाद–संज्ञा, पु. (सं.) श्रेष्ट, पूज्य।

श्रीफल–संज्ञा, पु. (सं.) नारियल, बेल, आंवला, खिरनी, धन, संपत्ति।

श्रीमंत–वि. (सं.) धनवान, श्रीमान्, रुपये वाला, धनी। संज्ञा, पु. (सं. *श्रीमंत*) एक शिरोभूषण, स्त्रियों के सिर की माँग।

श्रीमत्–वि. (सं.) धनी, धनवान, अमीर, शोभा या श्री वाला, कांतिवान, सुंदर।

श्रीमती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लक्ष्मी, श्री या शोभायुक्त स्त्री, श्रीमान् का स्त्रीलिंग, राधिक, लक्ष्मी।

श्रीमान्–संज्ञा, पु. (सं. *श्रीमन्*) नामादि के आदि में लगाने का एक आदर-सूचक शब्द, श्रीयुत्, धनिक, अमीर, पूज्य या बड़ों के लिए आदर-सूचक संबोधन।

श्रीमाल–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *श्री+माला*) गले का एक भूषण या हार, कंठश्री।

श्रीमुख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शोभायुक्त पूज्य जनों के मुख के लिए आदरर्थ शब्द, (जैसे आपके श्रीमुख से उपदेश सुनना है) सुदंर मुँह, सूर्य, वेद।

श्रीयुक्त–वि. (सं.) शोभावान, कांतिमान, धनवान, बड़ों के लिए आदर सूचक विशेषण, श्रीमान्।

श्रीयुत–वि. (सं.) शोभावन, सुंदर, धनवान, बड़ों के लिए आदरार्थ विशेषण।

श्रीरंग, श्रीरमण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु।

श्रीवंत–वि. (सं.) धनी, शोभावान, सुंदर, श्रीमान्।

श्रीवत्स–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु, विष्णु की छानी पर एक चिह्न जिसे भृगु-चरण-चिह्न मानते हैं। यौ. **श्रीवत्स-लांछन**–विष्णु।

श्रीवास, श्रीवासक–संज्ञा, पु. (सं.) गंधाविरोजा, चंदन, देवदारु वृक्ष, कमल, पंकज, शिव, विष्णु।

श्रीवास्तव–संज्ञा, पु. (हि.) कायस्थों की एक ऊँची जाति।

श्रीहत–वि. (सं.) शोभारहित, निष्प्रभ, निस्तेज, प्रभा या कांति से विहीन।

श्रीहर्ष–संज्ञा, पु. (सं.) संस्कृत के प्रसिद्ध नैषधकाव्य के बनाने वाले एक विद्वान महाकवि, जिन्होंने नागानंद, प्रियदर्शिका और रत्नावली रचे थे; सम्राट हर्षवर्द्धन।

श्रुत–वि. (सं.) सुना गया, जिसे परंपरा या सदा से सुनते चले आते हों, विख्यात, प्रसिद्ध।

श्रुतिकीर्त्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो रामचंद्र के कनिष्ठ भाई शत्रुघ्न की पत्नी थी।

श्रुतपूर्व–वि. यौ. (सं.) पहले का सुना या जाना हुआ।

श्रुति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुनना, कर्णेन्द्रिय, कान सुनी बात, ध्वनि शब्द, किंवदंती, ख़बर, जिसे सदा से मनुते चले आते हैं, वेद या वह ईश्वरीय पुनीत ज्ञान जिसे सृष्टि की आदि में ब्रह्मा या कुछ अन्य महर्षियों ने सुना और जिसे ऋषि परंपरा से सुनते आए, निगम, अनुप्रास अलंकार का एक भेद, विद्या, ज्ञान, नाम, त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा (रेखा)।

श्रुतिकटु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का प्रयोग (दोष) जो सुनने में बुरा लगे। (विलो.–**श्रुतिमधुर, श्रुति-सुखद**।

श्रुतिपथ–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) वेद-मार्ग, वेदानुकूल, सन्मार्ग, कान की राह से, श्रवणेंद्रिय, कान, कर्ण-मार्ग, **श्रवण-पथ**।

श्रुतिपुट–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कर्ण-रंध्र, कान के परदे।

श्रुतिमार्ग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेद-विहित विधि या रीति, वेद-पथ, श्रुति-पथ, कान की राह से, **श्रुमिमारग** (दे.)।

श्रुतिसेतु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेदमार्ग, वेद-पथ, (भव-सागर

के तरने को) वेद-रूपी सेतु या पुल।

श्रुत्यानुप्रास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) अनुप्रास नामक शब्दालंकार का एक भेद, जिसमें काव्य में एक ही स्थान से बोले जाने वाले व्यंजन दो या अधिक बार आते हैं।

श्रुपा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं. *स्रुवा*) हवन करने में घी डालने का चम्मच, चमचा, करछी, **श्रुवा** (दे.)।

श्रेणि, श्रेणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) अवली, पाँति, पंक्ति, शृंखला, परंपरा, क्रम, समूह, सेना, दल, एक ही व्यापार करने वालों की मंडली, कपनी (अं.) जंजीर, सीढ़ी, सिकड़ी, जीना, कक्षा, दर्जा।

श्रेणाबद्ध–वि॰ यौ॰ (सं.) पंक्ति के रूप में स्थित, शृंखला बाँधे हुए, क्रम बाँधकर।

श्रेय–वि॰ (सं. *श्रेयस्*) उत्तम, श्रेष्ट, अधिक या बहुत अच्छा, शुभ, कल्याणकारी, मंगलदायी। स्त्री॰ **श्रेयसी**। संज्ञा, पु॰ मंगल, कल्याण, धर्म, पुण्य, सदाचार, मोक्ष, मुक्ति।

श्रेयस्कर–वि॰ (सं.) कल्याणकारी, शुभदायक, मंगलप्रद। स्त्री॰ **श्रेयस्करी**।

श्रेष्ठ–वि॰ (सं.) बहुत ही अच्छा, उत्कृष्ठ, सर्वोत्तम, प्रधान, मुख्य, पूज्य, वृद्ध, बड़ा, सेठ, साहूकार।

श्रेष्ठता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) उत्तमता, उत्कृष्टता, गुरुता, बड़ाई, बड़प्पन।

श्रेष्ठी–संज्ञा, पु॰ (सं.) महाजन, सेठ, साहूकार, व्यापारियों या वैश्यों का मुखिया।

श्रोण, श्रोणित–संज्ञा, पु॰ वि॰ दे॰ (सं. *शोण, शोणित*) लाल रंग, अरुणता, रक्त।

श्रोणि, श्रोणा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) नितंब, कटि-प्रदेश।

श्रोत–संज्ञा, पु॰ (सं. *श्रोतस्*) कर्ण, कान, श्रवणेंद्रिय। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं. *स्रोत*) सोता, चश्मा।

श्रोतव्य–वि॰ (सं.) श्रवणीन, सुनने-योग्य, सदुपदेश।

श्रोता–संज्ञा, पु॰ (सं. *श्रोतृ*) सुनने वाला।

श्रोत्र–संज्ञा, पु॰ (सं.) कान, वेद-ज्ञान।

श्रोत्रिय, श्रोत्री–संज्ञा, पु॰ (सं.) पूर्ण रूप से वेद-वेदांग का ज्ञानी, वेद का ज्ञाता, ब्राह्मणों का एक भेद।

श्रोन, श्रोनित*–संज्ञा, पु॰ (सं.) पूर्ण रूप से वेद-वेदांग का ज्ञानी, वेद का ज्ञाता, ब्राह्मणों का एक भेद।

श्रोन, श्रोनित*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं. *शोण, शोणित*) लाल रंग, लाली, रक्त, रुधिर, **श्रोनित** (दे.)।

श्रौत–वि॰ (सं.) वेदानुकूल, श्रवण-संबंधी, श्रुति या वेद-संबंधी, यज्ञ-संबंधी।

श्रौतसूत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं.) कल्पग्रंथ का वह विभाग जिसमें यज्ञों का विधान कहा गया है, जैसे–गोभिल श्रौतसूत्र।

श्रौन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं. *श्रवण*) श्रोन, कान, **श्रवन, स्रवन** (दे.)।

श्लथ–वि॰ (सं.) शिथिल, ढीला, अशक्त, मंद, दुर्बल, धीमा।

श्लाघनीय–वि॰ (सं.) प्रशंसनीय, बड़ाई के लायक, श्रेष्ठ, उत्तम।

श्लाघा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति, तारीफ़, चाटुकारी, चापलूसी, चाह, इच्छा, **खुशामद**।

श्लाघ्य–वि॰ (सं.) प्रशंसनीय, बड़ाई या स्तुति के योग्य।

श्लिष्ट–वि॰ (सं.) मिला हुआ, मिश्रित, जुड़ा हुआ, (साहित्य में) दो या अधिक अर्थों वाला श्लेषयुक्त पद, श्लेषालंकार युक्त। संज्ञा, स्त्री॰ **श्लिष्टता**।

श्लीपद–संज्ञा, पु॰ (सं.) फीलपाँव, पाँव के मोटे हो जाने का रोग (वैद्य.)।

श्लील–वि॰ (सं.) उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया, शुभ, सुंदर, जो भद्दा न हो, शिष्ट। संज्ञा, स्त्री॰ **श्लीलता**।

श्लेष–संज्ञा, पु॰ (सं.) मिलन, आलिंगन, जुड़ना, मिलना, जोड़, संयोग, एक गुण (दास), एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ घटित हो सकें (अ. पी.)।

श्लेषक–वि॰ (सं.) जोड़ने वाला, मिलने वाला। संज्ञा, पु॰ मिलना, आलिंगन, श्लेषालंकार।

श्लेषण–संज्ञा, पु॰ (सं.) मिलाना, संयुक्त करना, जोड़ना, आलिंगन, भेंटना। वि॰ **श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट।**

श्लेपोपमा–संज्ञा, स्त्री यौ॰ (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्द हों कि उनके अर्थ उपमान और उपमेय दोनों में घटित हों (काव्य., केश.)।

श्लेष्मा–संज्ञा, पु॰ (सं. *श्लेष्मन्*), देह की तीन धातुओं में से एक, बलगम, लसोढ़े का फल, **लभेरा, लिसोड़ा**

(दे.)।

श्लोक–संज्ञा, पु. (सं.) आह्वान, शब्द, पुकार, स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, यज्ञ, कीर्त्ति, अनुष्टुप छंद संस्कृत का कोई पद्य।

श्वन्–संज्ञा, पु. (सं.) कुत्ता, श्वान। स्त्री. **श्वनी**।

श्वपच, श्वपाक–संज्ञा, पु. (सं.) कुत्ते का मांस खाने वाला, डोम, चांडाल।

श्वफल्क–संज्ञा, पु. (सं.) वृष्णियादक के पुत्र तथा अक्रूर के पिता, **सुफलक** (दे.)।

श्वशुर–संज्ञा, पु. (सं.) ससुर। यौ. **श्वशुरालय, ससुराल, ससुरार** (दे.)।

श्वश्रु–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पति या पत्नी की माता, सास, **सासु** (व्र. अ.)।

श्वसन–संज्ञा, पु. (सं.) साँस लेना, वायु, दमा रोग।

श्वान–संज्ञा, पु. (सं.) कुत्ता, कुक्कुर, कुकुर दोहे का 21वां तथा छप्पय का 15वाँ भेद (पिं.)। स्त्री. **श्वानी**।

श्वापद–संज्ञा, पु. (सं.) व्याघ्रादि हिंसक जंतु।

श्वास–संज्ञा, पु. (सं.) उसाँस, साँस, दम, नाक से वायु खींचने और बाहर निकालने का कार्य, हाँफना, दमा रोग, साँस फूलने का रोग, **स्वाँस, स्वासा** (दे.)।

श्वासा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *श्वास*) साँस, प्राण, दम, प्राण वायु, **स्वाँसा, स्वास** (दे.)। लो.–"जब तक श्वासा तब तक आसा।"

श्वासोच्छ्वास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वेग के साथ साँस खींचना और छोड़ना। यौ. स्वाँस, उसाँस।

श्वित्र–संज्ञा, पु. (सं.) श्वेत कुष्ठ।

श्वेत–वि. (सं.) धवल, उजला, स्वच्छ, सफ़ेद, निर्दोष, निष्कलंक, गोरा, **सेत** (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **श्वेतता**। संज्ञा, पु. सफ़ेद रंग, रजत, चाँदी, एक द्वीप, (पुरा.) श्वेत बाराह, एक शिवावतार।

श्वेत-कृष्ण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) धवल, श्याम, सफ़ेद-काला एक पक्ष और दूसरा पक्ष, श्वेत-श्याम, एक बात तथा उसके विरुद्ध दूसरी बात।

श्वेत केतु–संज्ञा, पु. (सं.) उद्दालक मुनि के पुत्र, केतु ग्रह।

श्वेत गज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ऐरावत हाथी, सुरेन्द्र, गजेन्द्र।

श्वेतता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धवलता, सफ़ेदी।

श्वेतद्वीप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु के रहने का एक उज्ज्वल द्वीप (पुरा.)।

श्वेत प्रदर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्त्रियों का एक प्रदर रोग जिसमें मूत्र के साथ सफ़ेद धातु गिरती है।

श्वेत वाराह–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बाराह भगवान की एक मूर्ति, ब्रह्म के मास का प्रथम दिन या एक कल्प, एक शिवावतार।

श्वेतांबर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जैनियों का एक श्वेत वस्त्रधारी प्रधान संप्रदाय, (द्वितीय–**दिगंबर**)। वि. श्वेत वस्त्र।

श्वेतांशु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चन्द्रमा।

श्वेता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा, कोड़ी, शंख या श्वेत नामक हस्ती की माता, शंखिनी, चीनी, शकर, सफ़ेद दूध।

श्वेताश्वतर–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा, उसका एक उपनिषद्।

श्वेतिक–संज्ञा, पु. (सं.) एक ऋषि जो उद्दालक मुनि के पुत्र थे।

श्वेतिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सौंफ (औषधि)।

ष

ष–संस्कृत और हिंदी भाषा के वर्णमाला के ऊष्माक्षरों में से दूसरा वर्ण, या पूर्ण वर्णमाला का 31 वाँ व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। अतः यह मूर्धन्य वर्ण है, यह दो प्रकार से बोला जाता है 1–श के समान, 2–स के समान।

षंड–संज्ञा, पु. (सं.) क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा, नामर्द, शिव का एक नाम।

षंडत्व–संज्ञा, पु. (सं.) क्लीवत्व, नपुंसकता, नामर्दी, हिजड़ापन,

क्लीवता। स्त्री. **षंडता**।

षंडामर्क–संज्ञा, पु. (सं.) शुक्राचार्य के पुत्र और प्रह्लाद के गुरु का नाम।

षट्–वि. (सं.) छः, गिनती में छः संज्ञा, पु. छः की संख्या 6।

षट्क–संज्ञा, पु. (सं.) छः की संख्या, छः पदार्थों का समूह।

षट्कर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *षट्कर्मन्*) ब्राह्मणों के 6 कर्म–यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना, दान लेना। **षटकरम** (दे.), कार्य-जालिका, बहुत सा कर्म कांड का बखेड़ा, व्यर्थ के कार्य। वि. **षट्कर्मी**–विप्र।

षट्कोण–वि. यौ. (सं.) छः कोण, छः कोने वाला, छः पहला, छः कोनों का एक क्षेत्र, षट्भुज क्षेत्र।

षट्चक्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शरीर के भीतर कुंडलिनी से ऊपर के छः चक्र, आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, प्रजा (हटयो.) षड्यंत्र।

षट्चरण-संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भ्रमर, भौंरा, **षट्पट**। वि. छः पैरों वाला।

षट्तिला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) माघ कृष्ण एकादशी।

षट्पद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भ्रमर, भौंरा, **द्विरेफ**, मधु। वि. छः पैरों वाला।

षट्वदी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भौंरी, भ्रमरी, छप्पय छंद (पिं.)।

षट्प्रयोग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) तांत्रिकों के छः प्रयोग, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन, शांति।

षट्मुख, षणमुख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी, शिव-सुत जो देव-सेनापति हैं।

षट्रस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सृष्टि के छः रस–खट्टा, खारा, कुड़वा, कसैला, मीठा, तीखा, इन सब रसों का मिश्रण, एक आचार।

षट्राग–संज्ञा, पु. (सं.) संगीत विद्या के छः राग–भैरव, मल्हार, श्री, हिंडोल, दीपक, मालकोस (संगी.); बखेड़ा, झगड़ा, व्यर्थ का झमेला, झंझट, **खटराग** (दे.)।

षट्रिपु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आत्मा के सहज छः वैरी–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर।

षट्वाँग–संज्ञा, पु. (सं.) एक राजर्षि जिन्होंने दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त की।

षट्शास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रसिद्ध, छः दर्शन-शास्त्रः–न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत या उत्तरीय मीमांसा, **षड्दर्शन**।

षडंग–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *षट्+अंग*) वेद के छः अंग–शिखा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, शरीर के छः अंग–शिर, धड़, दो हाथ और दो पैर। वि. छः अंग या अवयव वाला।

षडंघ्रि–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *षट्+अंघ्रि*) भ्रमर, भौंरा। वि. जिसके छः पैर हों।

षडानन–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *षट्+आनन*) षणमुख, कार्त्तिकेय। वि. छः मुखों वाला।

षडूर्मि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) छः प्रकार की तरंगें (प्राण और मन की)–भूख, प्यास, शोक, मोह; (शरीर की) जरा, मृत्यु।

षड्ऋतु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वर्ष की छः ऋतुयें। "ग्रीष्म, वरषा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसन्त।"

षड्गुण–संज्ञा, पु. (सं.) छः गुणों का समूह, छः गुण, राजनीति के छः गुण–संधि, विग्रह, मान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय।

षड्ज–संज्ञा, पु. (सं.) सात स्वरों में से प्रथम स्वर (संगीत)।

षडदर्शन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा या वेदांत नामक भारतीय छः शास्त्र, षट्शास्त्र।

षड्दर्शनी–संज्ञा, पु. (सं. *षट्दर्शन+ई प्रत्य.*) दार्शनिक, दर्शनों का पूर्ण ज्ञाता, ज्ञानी।

षड्यंत्र–संज्ञा, पु. (सं.) षद्म-योजना, भीतरी चाल, गुप्त रूप से किसी के विरुद्ध की हुई कार्रवाई, जाल, कपटभरी सामग्री।

षड्रस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) छः प्रकार के स्वाद या रस–मधुर, तिक्त, लवण, कटु, कषाय, अम्ल।

षड्रिपु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नामक जीव के छः शत्रु या मनोविकार।

षड्वदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी, षणमुख।

षड्वर्ग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) क्रोधादि छः शत्रु।

षड्विधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) छः भाँति का, छः प्रकार, छः रीति।

षष्ठ–वि. (सं.) छठा, छठवाँ

षष्टी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शुक्र या कृष्ण पक्ष की छठवीं तिथि, **छठि** (दे.), षोडश मातृकाओं में से एक, दुर्गा, कात्यायनी, सवधकारक (व्या.), बालक के उत्पन्न होने से छठवां दिन तथा उस दिन का उत्सव, **छट्टी**, **छठी** (दे.)।

षाडव–संज्ञा, पु. (सं.) वह राग जिसमें केवल छः स्वर ही लगें।

षाणमातुर–संज्ञा, पु. (सं.) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी।

षाणमासिक–वि. (सं.) छमाही, छः महीने का, छठे महीने में पड़ने वाला।

षोडश–सोलह, सोलह की संख्या 16।

षोडशकला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) चन्द्रमा के सोलह भाग जो शुक्ल पक्ष में और कृष्ण पक्ष में एक-एक करके क्रमशः बढ़ते और घटते हैं।

षोडशपूजन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सोलह अंगों के सहित पूरी पूरी पूजा, आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नेवद्य, तांबूल, (द्रव्य, दक्षिण) परिक्रमा, (प्रदक्षिणा), वंदना, **षोडशोपचार**।

षोडशभुजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) दुर्गा देवी।

षोडशमातृका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक प्रकार की 16 देवियाँ, 'गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया।' देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृतिस्तथा। तुष्टि, मातरश्चैव, आत्मदेवीति विश्रुता,

षौडशशृंगार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पूरा-पूरा शृंगार, शृंगार के सोलह प्रकार–उबटन, स्नान, वस्त्र धारण, चोटी, अंजन, बेंदी, सिंदूर, अंगरागादि।

षोडशी–वि. स्त्री. (सं.) सोलहवीं, सोलह वर्ष की स्त्री। संज्ञा, स्त्री. दश महा-विद्याओं में से एक, एक मृतक संबंधी क्रम जो प्रायः 10 वें या 12 वें दिन होता है।

षोडशोपचार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पूजन के पूरे सोलह अंग आवाहन, आसन, अर्घ्य-पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।

षोडश संस्कार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गर्भाधान से मनुष्य के मृतक-कर्म पर्यन्त पूरे सोलह संस्कार–गर्भाधान, पुंसवन, सीमांत, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, कर्ण वेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, समापवर्तन, विवाह, द्विरागमन, मृतक, और्द्ध दैहिक।

ष्ठीवन–संज्ञा, पु. (सं.) थूकना, थूक।

स

स–संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के ऊष्म वर्णों में तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दंत है। अतः यह दंत्य या दन्ती कहाता है। संज्ञा, पु. (सं.) पक्षी, सर्प, जीवात्मा, शिव, ईश्वर, वायु, ज्ञान, चंद्रमा, षड्ज स्वर-सूचक वर्ण (संगी.), सगण का संक्षिप्त रूप (छं.)। उप. (सं. *सह*) विशिष्टार्थ-सूचक संज्ञाओं के पूर्व लगने वाला एक उपसर्ग, जैसे–सदेह, सपूत, सगोत्र।

सं–अव्य. (सं. *सन्*) यह शब्दों के आदि में लगकर संगति, शोभा, समानता, निरंतरता, उत्कृष्टतादि का अर्थ प्रकट करना है। जैसे–संतुष्ट, संताप, संयोग, सम्मान।

सउतना†–क्रि. स. दे. (सं. *संचय*) **सैंतना** (ग्रा.) सहेजना, संचय करना, जोड़ना, इकट्ठा करना, पोतना, लीपना, रक्षित रखना।

सँउपन*‡–क्रि. स. दे. (हि. *सौंपना*) सिपुर्द करना, सहेजना, **सौंपना**।

संक*†–संज्ञा, स्त्री. (सं. *शंका*) शंका, संदेह, भ्रम, डर, भय।

संकट–वि. (सं. *सम्+कृत*) तंग, सँकरा, संकीर्ण। संज्ञा, पु. विपत्ति, आपत्ति, दुःख, कष्ट। दो पर्वतों के मध्य का संकीर्ण पथ, दर्रा, घाटी।

संकटा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक देवी, एक योगिनी दशा (ज्यो॰)।

संकत*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संकेत*) इशारा, इंगित, सहेट या मिलने का निश्चित स्थान, चिह्न, पता, निशान, पते की बातें।

संकना, संकाना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शंका*) डरना, संदेह या शंका करना।

संकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मिला-जुला, मिश्रण, दो या अधिक पदार्थों का मेल, भिन्न-भिन्न जाति के माता-पिता से उत्पन्न व्यक्ति, दोगला, जारज, यज्ञ। एक प्रकार का अलंकार-सम्मिश्रण (काव्य)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शंकर*) शिवजी।

संकर-घरनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शंकर+गृहिणी, घर+नी प्रत्य॰* हि॰) शिव-पत्नी, पार्वती जी।

संकरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) संकर का भाव या धर्म मिलावट, घोल-मेल, सम्मिश्रण।

सँकरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *संकीर्ण*) तंग, पतला। स्त्री॰ **सँकरी**। संज्ञा, पु॰ दुःख, कष्ट, संकट, विपत्ति, आफत, **साँकर** (दे॰)। यौ॰ **गाढ़-साँकर**। *† संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शृंखला*) साँकरी, साँकल, जंजीर।

संकर्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हल से जोतने या किसी पदार्थ के खींचने की क्रिया, कृष्ण जी के बड़े भाई बलराम, वेष्णवों का एक संप्रदाय।

संकल†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शृंखल*) संकड़ी, सकरी, जंजीर, पशु बाँधने का सिंकड़, **साँकर, साँकल** (ग्रा॰)।

संकलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) योग करना, जोड़ना, संग्रह करना, जमा करना, संग्रह, ढेर, गणित में योग करने की क्रिया, जोड़, अच्छे ग्रन्थों से विषयों के चुनने का कार्य। वि॰ **संकलनीय, संकलित**।

संकलप–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संकल्प*) संकल्प, विचार, निश्चय।

संकल्पय–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकल्प*) किसी कार्य का पक्का निश्चय करना, दृढ़ विचार करना, किसी धार्मिक कार्य के लिए कुछ दान देना, संकल्प करना। क्रि॰ अ॰ विचार या निश्चय करना, इच्छा या इरादा करना।

संकलित–वि॰ (सं॰) संगृहीत, चुना हुआ, छाँट-छाँट कर लाया हुआ, एकत्रित किया हुआ।

संकल्प–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कुछ कार्य करने का विचार, इच्छा, इरादा, निश्चय, अपना दृढ़ निश्चय या विचार, किसी देव-पूजादि कार्य से पूर्व कोई नियत मंत्र पढ़कर अपना दृढ़ विचार प्रगट करना, ऐसे समय का मंत्र, दृढ़ निश्चय, पुष्ट विचार। **संकल्प** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ **संकल्पन**। वि॰ **संकल्पित, संकल्पनीय**। वि॰ **संकल्प-विकल्प**।

सँकाना, सकाना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शंक*) डरना, भय खाना।

सँकार‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संकेत*) इशारा, इंगित, संकेत, **संकार**।

सँकारना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *संकार*) संकेत या इशारा करना, दाम चुकता करना, **सकारना** (दे॰), जैसे–हुन्डी सँकारना।

संकाश–अव्य॰ (सं॰) सदृश, समान, तुलय, समीप, पास, निकट। संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रकाश प्रभा, दीप्ति, कांति।

संकीर्ण–वि॰ (सं॰) सँकरा, संकुचित, तंग, मिश्रित, मिला-जुला, छोटा, क्षुद्र, तुच्छ। संज्ञा, पु॰ (सं॰) जो राग दो रागों के मेल से बने, संकट, आपत्ति। संज्ञा, पु॰ (सं॰) वृत्तगंधि और अवृत्तगंधि के मेल से बना एक गद्य-भेद (सं॰)।

संकीर्णता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तंगी, छुद्रता, छोटापन, **सांकोच्य**।

संकीर्तन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी की कीर्त्ति का वर्णन, देव-स्तवन, देव-वन्दना। वि॰ सं॰ **कीर्तनीय संकीर्तित**।

संकु–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बरछी।

सँकुचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सकुचना*) सिकुड़ना, **सकुचना**, सिमिटना, लज्जित होना, शरमाना, फूलों का संपुटित या बंद होना।

संकुचित–वि॰ (सं॰) संकोच को प्राप्त, संकोच-युक्त, लज्जित, सिकुड़ा हुआ, सँकरा, तंग, क्षुद्र, कंजूस। विलो॰ **उदार**।

संकुल–वि॰ (सं॰) घना, भरा हुआ, परिपूर्ण संकीर्ण। वि॰ **संकुलित**। संज्ञा, पु॰ भीड़, समूह, झुंड, युद्ध, जनता, एक दूसरे के विरोधी वाक्य (व्या॰)।

संकुलित–वि॰ (सं॰) परिपूर्ण घना, भरा हुआ, संकीर्ण।

संकेत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अपना भाव प्रकट करने की शारीरिक चेष्टा, इंगित, इशारा, प्रेमिका के मिलाप का निश्चित स्थान, सहेट, चिह्न, पते की बातें, निशान। वि॰ **सांकेतिक**।

सँकेत–वि॰ (दे॰) संकीर्ण, सँकरा, संकुचित, तंग।

संकेतना–क्रि॰ स॰ (दे॰) (सं॰ *संकीर्ण*) कष्ट, संकट या विपत्ति में डालना।

संकोच–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिकुड़ने का कार्य, तनाव, खिंचाव, त्रपा, लज्जा, व्रीडा, आगा-पीछा, डर, भय, हिचकिचाहट, न्यूनता, कमी, एक अलंकार जहाँ विकासालंकार के विरुद्ध अति संकोच कहा जाता है, **सकोच, संकोच** (दे॰)।

संकोचन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संकोच, सिकुड़ना। वि॰ **संकोचनीय**।

संकोचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) संकुचित करना, संकोच करना।

संकोचित–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खड्ग चलाने की एक रीति।

संकोची–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *संकोचिन्*) संकोच करने वाला, लज्जित होने वाला, शर्माने वाला, सिकुड़ने वाला।

सँकोपना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकोप*) अधिक क्रोध करना, **सकोपना** (दे॰)।

संक्रंदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इन्द्र, शक। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *क्रंदन*) रोना, रोदन।

संक्रमण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चलना, गमन, सूर्य का एक राशि से दूसरी में जाना (ज्यो॰)।

संक्रांति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सूर्य का एक राशि से दूसरे में जाना या जाने का समय, **सँकराँत** (दे॰)।

संक्रामक–वि॰ (सं॰) छूत या संसर्ग से फैलने वाला (रोगादि)।

संक्रोन*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संक्रांति*) संक्रांति, संक्रमण, गमन, चलना।

संक्षिप्त–वि॰ (सं॰) थोड़े में, अल्प में, खुलासा, जो संक्षेप में हो, सूक्ष्म।

संक्षिप्तलिपि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) त्वरा लेखन की एक रीति जिसमें थोड़े समय और स्थान में बड़ा प्रबंध लिखा जा सके, **शार्टहैंड** (अं॰)।

संक्षिप्त–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नाटक में क्रोधादि उग्रभावों की निवृत्ति वाली एक आरभटी वृत्ति (नाटक)।

संक्षेप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूक्ष्म, कोई बात थोड़े में कहना, कम करना, घटाना, **मुख़्तसिर** (फ़ा॰), **संछेप** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **संक्षेपता**।

संक्षेपतः–अव्य॰ (सं॰) **सूक्ष्मतया,** संक्षेप में, थोड़े में।

संख–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शंख*) शंख।

संखनारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शंखनारी*) **सोमराजी,** दो यगण का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

संखिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शृंगिका*) एक विख्यात विष या ज़हर, जो वास्तव में सफ़ेद उपधातु या पत्थर है, इसकी भस्म जो औषधि के काम में आती है।

संख्यक–वि॰ (सं॰) संख्या वाला।

संख्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक, दो, तीन आदि गिनती, शुमार, तादाद, अदद (फ़ा॰) वह अंक जो किसी पदार्थ का परिमाण गिनती में प्रकट करे (गणि॰)।

संग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) साथ, मेल, सहवास, सोहबत, मिलन, संपर्क। वि॰ संज्ञा, पु॰ (हि॰) **संगी। मु॰ (किसी के) संग लगना**–साथ हो लेना, पीछे लगना, या चलना, विषय-प्रेम या अनुराग, आसक्ति, वासना। क्रि॰ वि॰ साथ, सहित। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पत्थर, जैसे–संगमरमर। वि॰ पत्थर के समान कठोर, बहुत कड़ा। यौ॰ **संगदिल**–कठोर हृदयी। संज्ञा, स्त्री॰ **संगदिली**।

संगजराहत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰ *संग+जराहत* अ॰) एक चिकना, सफ़ेद पत्थर जो घाव को शीघ्र भर देता है।

संगठन–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *सं+गठना* हि॰) इधर-उधर बिखरी या फैली हुई शक्तियों, वस्तुओं या लोगों को मिलाकर ऐसा एक कर देना कि उसमें नई और अधिक शक्ति आ जाय, **संघटन**। वह संस्था जो इस व्यवस्था से बनी हो। वि॰ **संगठनात्मक**।

संगठित–वि॰ दे॰ (हि॰ *संगठन*) जो अच्छी व्यवस्था-द्वारा भली-भाँति मिलाकर एक किया गया हो, सुव्यवस्थित, संघटित।

संगत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संगति*) साथ रहना, संगति, सोहबत, साथ, संबंध, साथी, संपर्क, संसर्ग। उदासी और निर्मली साधुओं के रहने का मठ, संग रहने वाला।

संगतरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) संतरा, बड़ी, नारंगी।

संगतराश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) **पथरकट** (दे॰), पत्थरकट, पत्थर काटने या गढ़ने वाला मजदूर। संज्ञा, स्त्री॰ **संगतराशी**।

संगति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मिलाप, सम्मेलन, साथ, संग,

मेल-जोल, मैथुन, प्रसंग, संबंध, संगत, ज्ञान। पूर्वापर या आद्यंत की बातों या वाक्यों का मिलान। **मु॰ संगति बैठना (मिलना)**–मेल मिलना।

संगतिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नाच गान में साथ बाजा बजाने वाला।

संगदिल–वि॰ यौ॰ (फा॰) कठोर-हृदय, निर्दय, निष्ठुर, क्रूर, दया-हीन। संज्ञा, स्त्री॰ **संगदिली**।

संगम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्मेलन, मिलाप, मेल, संयोग, दो नदियों के मिलने का स्थान, संग, साथ, सहवास, सहयोग, प्रसंग। **मु॰ संगम करना**–सहवास या प्रसंग करना।

संगमर्मर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰ *संग+मर्मर* अ॰) एक बहुत नरम सफ़ेद चिकना प्रसिद्ध कीमती पत्थर, स्फटिक, **संगमरमर** (दे॰)।

संगमूसा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) एक काला नरम और चिकना प्रसिद्ध कीमती पत्थर।

संगयशब–संज्ञा, पु॰ (फा॰) एक हरा कीमती पत्थर। **हौलदिली**।

संगर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) युद्ध, नियम, प्रण, विप, विपत्ति, स्वीकार।

संगरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बाँस का डंडा जिससे पत्थर हटाया जाता है, कुयें के तख़्ते का छेद जिसमें लोहे का पंप लगाया जाता है।

संगराम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संग्राम*) संग्राम, युद्ध, रण, समर, **सँगराम** (दे॰)।

सँगाती, सँघाती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *संग या संघ+आती प्रत्य॰*) संघी, संगी, साथ, मित्र, सखा।

संगिनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *संगी का* स्त्री॰) साथिनी, सहेली, सखी।

संगी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *संग+ई प्रत्य॰*) बंधु, साथी, संग रहने वाला, सखा, मित्र, दोस्त। यौ॰ **संगी-साथी**। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक प्रकार का दक्ष। वि॰ (फा॰ *संग+ई प्रत्य॰*) पत्थर का, संगीन।

संगीत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक विद्या या कला जिसमें गाना, बजाना, नाचना आदि कार्य मुख्य गिने जाते हैं। वि॰ **संगीतज्ञ**।

संगीत-शास्त्र, संगीत-विद्या–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गंधर्व-विद्या, वह शास्त्र जिसमें संगीत-विद्या का विवरण हो।

संगीन–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *संग*) लोहे का एक तिधारा नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है। वि॰ (फ़ा॰ *संग*) पत्थर का बना हुआ, मोटा, दृढ़, टिकाऊ, विकट, कठिन।

संगृहीत–वि॰ (सं॰) संकलित, एकत्रित, संग्रह किया हुआ।

संगोतरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) संतरा।

संगोपन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छिपाने का कार्य। वि॰ **संगोपनीय, संगोपित, संगोप्य**।

संग्रह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संकलन, संचय, एकत्र या जमा करना, वह पुस्तक जिसमें एक ही विषय या अनेक विषयों की पुस्तकों की बातें चुन कर एकत्र की गई हों। रक्षा, पाणि-ग्रहण, ब्याह, ग्रहण करने का कार्य।

संग्रहणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक उदर रोग जिसमें पाचन-शक्ति के न होने से बार-बार दस्त होता है और सारा भोजन निकल जाता है।

संग्रहना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *ग्रहण*) संचय या संग्रह करना, जमा या इकट्ठा करना, जोड़ना, चुनना, एकत्र करना। वि॰ **संग्रहनीय**।

संग्रही-संग्रहीता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संग्रह करने वाला, संकलन करने वाला।

संग्रहीत–वि॰ (सं॰) एकत्र या इकट्ठा किया हुआ, संकलित, संचित।

संग्राम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रण, लड़ाई, युद्ध, समर, **सँगराम** (दे॰)।

संग्राह्य–वि॰ (सं॰) संग्रह करने योग्य।

संघ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुच्चय, समुदाय, समूह, वृन्द, झुंड, दल, समिति, समाज, सभा, प्राचीन काल में भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य, बौद्ध श्रमणों का एक धार्मिक समाज, साधुओं के रहने का मठ, **संगत** (दे॰) साथ, संग।

संघट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) युद्ध, संग्राम, राशि, समूह, टेर, झगड़ा, संयोग, **संघट्ट** (दे॰)।

संघटन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संयोग, सम्मेलन, मेल-मिलाप, नायक-नायिका का संयोग, बनावट, रचना, संगठन, संबंध, संपर्क। वि॰ **संघटनीय, संघटित**।

संघट्ट-संघट्टन—संज्ञा, पु. (सं.) रचना, बनावट, संयोग, सम्मिलन, मेल-मिलाप, संघटन, मिलन। वि. **संघट्टनीय**।

संघती-सँघाती—संज्ञा, पु. (दे.) संगी, साथी, मित्र, सखा, सहचर।

सँघरना—क्रि. स. दे. (सं. *संहार*) नाश या संहार करना, मिटा देना, मार डालना।

संघर्ष-संघर्षण—संज्ञा, पु. (सं.) रगड़ खाना, रगड़, प्रतियोगिता, स्पर्द्धा, घिसना, रगड़ना, घिस्सा। वि. **संघर्षित, संघर्षणीय, संघर्षक**।

संघात—संज्ञा, पु. (सं.) समष्टि, वृन्द, समूह, चोट, आघात, बध, हत्या, नाटक में एक प्रकार की गति, शरीर, घर।

सँघाती—संज्ञा, पु. दे. (सं. *संघ*) साथी, मित्र, सखा, सहचर।

संघार*†—संज्ञा, पु. दे. (सं. *संहार*) संहार, नाश, प्रलय।

सँघारना*—क्रि. स. दे. (सं. *संहार*) संहार करना, नाश या प्रलय करना, मार डालना।

संघाराम—संज्ञा, पु. (सं.) बौद्धमत के भिक्षुओं या साधुओं के रहने का मठ, विहार।

संचकर*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *संचयकर*) संचय करने वाला, कंजूस।

संचना*†—क्रि. स. दे. (सं. *संचयन*) एकत्र करना, संचय या संग्रह करना, रक्षा करना।

संचय—संज्ञा, पु. (सं.) समुदाय, समूह, झुंड, ढेर, संग्रह या एकत्र करना, जमा करना या जोड़ना।

संचयन—संज्ञा, पु. (सं.) भली-भाँति चुनना, संचय करना। वि. **संचयनीय**।

संचरण—संज्ञा, पु. (सं.) चलना, गमन करना, टहलना, घूमना, भ्रमण करना, फिरना, संचार करना। वि. **संचरित, संचरणीय**।

सँचरना*†—क्रि. स. दे. (सं. *संचरण*) चलना, फिरना, घूमना, भ्रमण करना, फैलाना, प्रसारित या प्रचलित होना, प्रयोग होना।

संचार—संज्ञा, पु. (सं.) चलना, गमन करना, प्रवेश, फैलाना, प्रचार करना, प्रयोग, जाना। संज्ञा, पु. **संचारण, संचारक**। वि. **संचारनीय, संचारित**।

संचारना*†—क्रि. स. दे. (सं. *संचारण*) किसी वस्तु का संचार या प्रचार करना, फैलाना, जन्म देना, **सँचारना** (दे.)।

संचारिका—संज्ञा, स्त्री. (सं.) कुटनी, दूती।

संचारी—संज्ञा, पु. (सं. *संचारिन्*) वायु, पवन, हवा, साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव के पोषक हों, व्यभिचारी भाव। वि. संचरण करने वाला, प्रवेश करने वाला, गतिशील।

संचालक—संज्ञा, पु. (सं.) चलाने, फिराने या गति देने वाला, परिचालक, किसी व्यापार को करने वाला, कार्यकर्ता, प्रबंधक।

संचालन—संज्ञा, पु. (सं.) परिचालन, चलाना, चलाने की क्रिया, कार्य जारी रखना, गति देना। वि. **संचालनीय, संचालित**।

संचित—वि. (सं.) संचय किया या जोड़ा हुआ, जमा किया हुआ, एकत्रित। संज्ञा, पु. (सं.) तीन प्रकार के कर्मों में से एक (मीमांसा)।

संजय—संज्ञा, पु. (सं.) राजा धृतराष्ट्र के मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय उसका समाचार सुनाते थे।

संजात—वि. (सं.) प्राप्त, उत्पन्न।

संजाफ—संज्ञा, स्त्री. (फा.) किनारा, झालर, रजाई आदि की चौड़ी और आड़ी गोट, मगजी, गोट। संज्ञा, पु. एक प्रकार का घोड़ा जिसकी आधी देह लाल रंग की और आधी हरे या सफ़ेद रंग की हो।

संजाफी—संज्ञा, पु. (फ़ा.) आधा लाल और आधा हरा घोड़ा। वि. संजाफ या गोट वाला।

संजाव—संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *संजाफ़*) संजाफ़ या चौड़ी गोट, गोट, किनारी।

संजीदा—वि. (फ़ा.) शान्त, गम्भीर, समझदार, बुद्धिमान। संज्ञा, स्त्री. **संजीदगी**।

संजीवन—संज्ञा, पु. (सं.) जीवन देने वाला, भले प्रकार जीवन बिताना।

संजीवनी—वि. स्त्री. (सं.) शक्ति-स्फूर्ति-कारिणी, जीवन देने वाली। संज्ञा, स्त्री. मृत संजीवनी, एक रसायनिक औषधि विशेष, जो मरे को भी जिला देती है (कल्पित), एक विशिष्ट औषधि (वैद्य.)।

संजीवनी-विद्या—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) एक कल्पित विद्या जिसमें मृतक के जिलाने की रीति कही गई है।

संजुक्त*–वि॰ दे॰ (सं॰ *संयुक्त*) सम्मिलित, जुड़ा या मिला हुआ, नियुक्त, साथ उचित।

संजुक्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कन्नौज-नरेश जयचंद की कन्या तथा पृथ्वीराज की प्रिया (इति॰), **संयुक्त**। वि॰ स्त्री॰ संयुक्त।

संजुग*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संयुत, संयुग*) युद्ध, रण, समर।

संजुत*–वि॰ दे॰ (सं॰ *संयुत*) सम्मिलित, साथ, रहित।

संजुता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संयुत*) स, ज, ज, (गणों) तथा एक गुरु वर्ण वाला एक छंद (पिं॰)।

सँजोई*–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *संयोग*) साथ में। पू॰ क्रि॰ गँजोय, सजाकर।

सँजोइल*–वि॰ दे॰ (सं॰ *सज्जित,* हि॰ *सँजोना*) भली भाँति सजाया हुआ। सुसज्जित, संचित, एकत्रित, जमा या इकट्ठा किया हुआ।

संजोऊ*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सँजोना*) सामग्री, सामान, उपक्रम, तैयारी।

संजोग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संयोग*) मेल, मिश्रण, मिलावट, समागम, सहवास, स्त्री-पुरुष का प्रसग, मिलाप, विवाह-संबंध, उपयुक्त अवसर। योग, जोड़, मीजान, इत्तफ़ाक़ (फ़ा॰), मौक़ा।

सँजोगी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संयोगी*) मेलमिलाप से रहने वाला, स्व प्रिया के साथ रहने वाला। स्त्री॰ **संजोगिनी**। विलो॰ **विजागी**।

सँजाना-सँजोवना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सज्जा*) सजाना, तैयार करना, एकत्रित करना, रक्षित रखना।

सँजोबल*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *सँजोना*) सावधान, सुसजिजत, सैन्य समेत।

संजक–वि॰ (सं॰) नाम या संज्ञा वाला, नामी, जिसकी संज्ञा हो (यौगिक में)।

संज्ञा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चेतना, बुद्धि, होश, ज्ञान, आख्या, नाम, वह सार्थक विकारी शब्द जिससे किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु के नाम का बोध हो (व्या॰), विश्वकर्मा की कन्या और सूर्य की पत्नी।

संज्ञा-हीन, संज्ञा-रहित–वि॰ (सं॰) बेसुध, वे होश, मूर्च्छित, **संज्ञा-विहीन**। यौ॰ **संज्ञाशून्य**।

सँझला‡–वि॰ दे॰ (सं॰ *संध्या*) संध्या या साँझ का। अ॰ (ग्रा॰) **सँझलौखा**।

संझवाती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *संध्या+वाती* हि॰) शाम के समय जलाया जाने वाला दीपक, संध्या-दीप, संध्या समय गाने का गीत, **संझाबाती** (दे॰)।

संझा†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संध्या*) शाम, संध्या, साँझ। यौ॰ **संझा-बेरा** (दे॰)–संध्या बेला।

संझाबाती–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*संध्या*+हि॰ *बाती*) संध्या समय जलाने का दीपक, सँझवाती, संध्या का गीत।

संझोखा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संध्या*) संध्या का समय, **सँझौखा, सँझलौखा**।

संझौखे*–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *संध्या*) संध्या काल में, **सँझलौखे** (ग्रा॰)।

संढ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शंड*) साँड़।

संडमुसंड–वि॰ यौ॰ (हि॰) मोटा-ताज़ा, हट्टा-कट्टा, हृष्ट-पुष्ट, बहुत मोटा, **धमधूसर** (ग्रा॰), **संडामुसंडा**।

सँड़सा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संदेश*) उष्ण या गर्म पदार्थों के पकड़ने के हेतु लोहे का एक (लोहारों या सोनारों का) हथियार, **जँबूरा, गहुआ**। (प्रान्ती॰)। स्त्री॰ अल्पा॰ **सँड़सी**।

संडा–वि॰ दे॰ (सं॰ *शंड*) मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **पंडामर्क, संडामर्का**।

संडास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुत गहरा एक प्रकार का पाखाना, शौच-कूप, **मलगर्त**।

संत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सत*) साधु, सज्जन, त्यागी, संन्यासी, महात्मा, धार्मिक व्यक्ति, परमेश्वर-भक्त। 21 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **संतता, संतताई** (दे॰)।

संतत–अव्य॰ (सं॰) सदैव, हमेशा, सादा, निरंतर, लगातार, बराबर।

संतति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) संतान, प्रजा, औलाद, वंश, बाल-बच्चे, फैलाव, रिआया।

संतपन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बहुत तपना, अति संताप या दुख देना।

संतपना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) संत का भाव, संतता। क्रि॰ अ॰ (दे॰) अति तपना, संताप देना।

संतप्त–वि॰ (सं॰) अति तपा हुआ, बहुत गर्म, जला हुआ, पीड़ित, दग्ध, दुखी, संतापित।

संतरक–वि. (सं.) भली-भाँति तैरने वाला।

संतरण–संज्ञा, पु. (सं.) भली-भाँति करना या पार होना. तारने वाला। वि. **संतरणीय, संतारित**।

संतरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *पुर्त्त. संगतरा*) एक बड़ी और मीठी नारंगी, एक बड़ा मीठा नींबू।

संतरी–संज्ञा, पु. दे. (अं. *सेंटीनल, संटरी*) पहरेदार, पहरा देने वाला, द्वारपाल।

संतान–संज्ञा, पु. (सं.) संतति, औलाद, बाल-बच्चे, कल्पवृक्ष।

संताप–संज्ञा, पु. (सं.) दाह, जलन, वेदना, आँच, कष्ट, दुःख, मानसिक कष्ट करें।

संतापक–वि. (सं.) जलाने या संताप देने वाला, दाहक।

संतापन–संज्ञा, पु. (सं.) जलाना, संताप देना, अति कष्ट या दुख देना, काम के पाँच वाणों में से एक। वि. **संतापनीय, संतापित, संतप्त, संताप्य**।

संतापना*†–क्रि. स. दे. (सं. *संताप*) जलाना, संताप या दुःख देना, कष्ट या पीड़ा पहुँचाना।

संतापित–वि. (सं.) दगध, तप्त, जलाया हुआ, तपाया हुआ, दुखी, संतप्त, दग्ध।

संतापी–संज्ञा, पु. (सं. *संतापिन*) ताप या संताप देने वाला, दुखदायी।

संतारक–वि. (सं.) तारने वाला है।

संती‡–अव्य. दे. (सं. *संति*) बदले में, स्थान में, द्वारा से। संज्ञा, पु. (ग्रा.) पोते का पुत्र।

संतुष्ट–वि. (सं.) जो मान गया हो, तृप्त, प्रसन्न, तोप-युक्त, जिसको संतोप हो गया हो। संज्ञा, स्त्री. **संतुष्टता, संतुष्टि**।

संतोख–संज्ञा, पु. दे. (सं. *संतोष*) संतुष्टि, तोप, सब्र, शान्ति, तृप्ति, इतमीनान, प्रसन्नता, आनंद, सुख।

संताप–संज्ञा, पु. (सं.) तोप, संतुष्टि, तृप्ति, सव दशा और काल में प्रसन्नता शान्ति आनंद, सुख, इतमीनान।

संतोषना*†–क्रि. स. दे. (सं. *संतोष*) संतोष दिलाना या देना, संतुष्ट या प्रसन्न करना। क्रि. अ. (दे.) प्रसन्न होना, संतुष्ट होना, **सँतोखना** (दे.)।

संतापित–वि. (सं.) संतोष-युक्त, प्रसन्न या संतुष्ट किया हुआ, तुष्ट किया हुआ।

संतोषी–संज्ञा, पु. (सं. *संतोषिन्*) सदा सन्तोष या सम करने या रखने वाला। लो.–"संतोषी परम सुखी"–स्फु.।

संथा–संज्ञा, पु. (सं. *संहिता*) सबक, पाठ, एक बार का पढ़ा हुआ।

संदर्भ–संज्ञा, पु. (सं.) बनावट, रचना, प्रबंध, लेख, निबंध, कोई छोटा ग्रंथ, अध्याय।

संदल–संज्ञा, पु. (फ़ा.) चंदन, श्रीखंड।

संदली–वि. (फ़ा.) चंदन का, चंदन संबंधी, चंदन के रंग का, हलका पीला, चंदन से बसा। संज्ञा, पु. एक हलका पीला रंग, हाथी, घोड़े की एक जाति।

संदिग्ध–वि. (सं.) संशय, संदेह पूर्ण, संशयात्मक, भ्रमयुक्त, जिसमें या जिस पर संदेह हो। संज्ञा, स्त्री. **संदिग्धता**।

संदिग्धत्व–संज्ञा, पु. (सं.) संदिग्ध का धर्म या भाव, **संदिग्धता,** भ्रमात्किमता, एक अलंकारिक दोष (काव्य), किसी बात का ठीक-ठीक अर्थ प्रकट न होना।

संदीपन–संज्ञा, पु. (सं.) उद्दीपन, उद्दीप्त या उत्तेजित करने का कार्य, कामदेव के पाँच वाणों में से एक, श्रीकृष्णजी के गुरु। वि. **संदीपक, संदीपनीय, संदीपित, संदीप्य**। वि. उत्तेजन या उद्दीपन करने वाला।

संदीप्त–वि. (सं.) अति दीप्तमान, प्रकाशमान, उदीप्त, उत्तेजित।

संदूक–संज्ञा, पु. (अं.) लोहे का लकड़ी आदि से बना बंद पिटारा, पेटी, **बक्स** (अ.)। अल्पा. **संदूकचा**। स्त्री. **संदूकची**।

संदूकड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *संदूक*) छोटा बक्स या संदूक, छोटी पेटी।

संदूर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंदूर*) सिंदूर, सेंदुर।

संदेश–संज्ञा, पु. (सं.) हाल, समाचार, ख़बर, एक बँगला, मिठाई, **संदेस, संदेसा संदेसवाहक**–संदेश ले जाने वाला, **सँदेसिया** (दे.)।

सँदेसा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *संदेश*) मुखागर, जवानी कहाई हुई ख़बर या बात, हाल, समाचार। लो. **मु. सँदेसन खेती (करना),** दूसरों के दम पर काम करना।

संदेसी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *संदेशिन्*) संदेश ले जाने वाला, दूत, वसीठ।

संदेह–संज्ञा, पु. (सं.) **संदेह** (दे.), संशय, भ्रम, शंका, शक,

शुबहा, किसी विषय या बात पर निश्चय न होने वाला विश्वास, एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तु को देखकर उसमें अन्य वस्तु का संदेह बना रहे (अ. पी.)। वि. (हि.) संदेहा।

संदोह–संज्ञा, पु. (सं.) वृंद, समूह, राशि, झुंड।

संध*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संधि*) मेल, संयोग, मिलाप, संधि, सुलह, मित्रता, प्रतिज्ञा।

संधना–क्रि. अ. दे. (सं. *संधि*) मिलना, संयुक्त होना।

संधान–संज्ञा, पु. (सं.) लक्ष्य या निशाना लगाना, योजन, वाणादि फेंकना, मिलाना, खोज, अन्वेषण, कोंजी, संधि, काठियावाड़ का नाम।

संधानना†–क्रि. स. दे. (सं. *संधान*) निशाना लगाना, वाण फेंकना।

संधाना–संज्ञा, पु. (सं. *संधानिका*) अचार, एक खटाई, **संधान** (प्रान्ती.)।

संधि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) संयोग, मेल, जोड़, मिलने का स्थान, नरेशों की वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार लड़ाई बंद हो जाती और मित्रता तथा व्यापार-संबंध स्थापित होता है, मित्रता, सुबह, मैत्री, गाँठ, देह का कोई जोड़, समीपगत दो वर्णों के मेल से होने वाला विकार (व्याक.), चोरी आदि के लिए दीवार में किया हुआ भारी छेद, **सेंध** (दे.), एक अवस्था का अंत और दूसरी के आदि के जैसे—वयः संधि, अवकाश, मध्य का समय, मध्यवर्ती, रिक्त स्थान, मुख्य प्रयोजन के साधक कथाशों का किसी मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ हाने वाला संबंध (नाटक.)।

संध्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दिन और रात के मिलने का समय, संधि समय, प्रभाव, शाम, सायंकाल, संज्ञा दिन-क्षपा का संयोग-काल। एक प्रकार की ध्यानोपासना जो तीनों संध्याओं यानी प्रातः, मध्याह्न और संध्या समय की जाती है (आर्य समाज)।

संन्यास–संज्ञा, पु. (सं.) चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम जिसमें काम्य और नित्यादि कर्म निष्काम रूप से किये जाते हैं (भार. आर्य.)।

संन्यासी–संज्ञा, पु. (सं. *संन्यासिन्*) संन्यासाश्रम में रहने और तदनुकूल नियमों का पालन करने वाला।

संपत्ति–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संपत्ति*) धन लक्ष्मी, दौलत, जायदाद, वैभव, ऐश्वर्य।

संपत्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धन, लक्ष्मी, दौलत, जायदाद, वैभव, ऐश्वर्य, सुख-समय। वि. **संपत्तिशाला, संपत्तिवान**। विलो. **विपत्ति, आपत्ति**।

संपद–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धन, पूर्णता, लक्ष्मी, वैभव, ऐश्वर्य, सौभाग्य, गौरव, सिद्धि। विलो. **विपद् आपद्**।

संपदा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *संपद्*) धन, लक्ष्मी, दौलत, वैभव, ऐश्वर्य। विलो. **आपदा, विपदा**।

संपन्न–वि. (सं.) पूर्ण, भरा हुआ, सिद्ध, पूर्ण किया हुआ, धनी, सहित, युक्त। संज्ञा, स्त्री. **संपन्नता**।

संपगण–संज्ञा, पु. (सं.) मृत्यु, मौत, युद्ध, लड़ाई, संकट-समय, विपत्ति।

संपर्क–संज्ञा, पु. (सं.) मिलावट, मेल, संग, मिश्रण, वास्ता, संसर्ग, संबंध, लगाव, सटना, स्पर्श।

संपा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विजली, विद्युत।

संपात–संज्ञा, पु. (सं.) संगम, संसर्ग, मेल, संपर्क, समागम, एक साथ गिरना या पड़ना, जहाँ दो रेखायें एक दूसरी को काटें या मिलें (रेखा.)।

संपाति–संज्ञा, पु. (सं.) गरुड़ का ज्येष्ठपुत्र तथा जटायु का बड़ा भाई एक गीध, **संपाती** (दे.), माली नामक राक्षस का एक पुत्र।

संपादक–संज्ञा, पु. (सं.) किसी कार्य को तैयार या पूरा करने वाला, संपन्न करने वाला, प्रस्तुत करने वाला, किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रम से लगा या ठीक करके निकालने वाला। संज्ञा, स्त्री. (हि.) **संपादकी**–संपादक का कार्य।

संपादकत्व–संज्ञा, पु. (सं.) संपादन करने की अवस्था. भाव या कार्य, **संपादकता**।

संपादकीय–वि. (सं.) संपादक का, संपादक-संबंधी।

संपादन–संज्ञा, पु. (सं.) कार्य पूर्ण करना, प्रदान करना, शुद्ध या सही करना, ठीक या दुरुस्त करना, किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रमपूर्वक पाठादि लगाकर प्रकाशित करना या निकालना। वि. **संपादनीय, संपाद्य, संपादित**।

संपादना–क्रि. स. दे. (सं. *संपादन*) पूरा, ठीक या दुरुस्त

करना।

संपादित–वि (सं.) पूर्ण ठीक या दुरुस्त किया हुआ, ठीक क्रम पाठादि लगाकर (पुस्तक, समाचार पत्रादि) का ठीक किया और प्रकाशित किया हुआ।

संपुट–संज्ञा, पु. (सं.) बरतन के आकार की कोई वस्तु, दोना, ठीकरा, डिब्बा, खप्पर, कपाल, अँजली, संकुचन, फूलों का कोश, पुष्प दल का रिक्त स्थान, मिट्टी से सने कपड़े से लपेटा हुआ एक बंद गोल पात्र जिसके भीतर रखकर कोई वस्तु आग में फूँकी जाती है (वैद्य. रसा.)।

संपुटी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्याला, छोटी कटोरी, **संपती, संपटी** (ग्रा.)।

संपूर्ण–वि. (सं.) सब का सब, पूर्ण, सारा, तमाम, कुल, समस्त, सब, बिलकुल, समाप्त, पूरा, सर्वस्व, **समपूरन** (दे.)। संज्ञा, पु. वह राग जिसमें सातों स्वर आते हों, आकाशभूत।

संपूर्णतः–क्रि. वि. (सं.) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से।

संपूर्णतया–क्रि वि. (सं.) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से।

संपूर्णता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पूर्णता, संपूर्ण होने का भाव या कार्य, पूरा-पूरा, पूरापन, समाप्ति।

संपृक्त–वि. (सं.) मिला हुआ, मिश्रित।

सँपेरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *साँप+एरा प्रत्य.*) साँप नचाने या रखने वाला, मदारी, **सँपेला**। संज्ञा, स्त्री. **सँपेरिन**।

संपै–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संपत्ति*) संपत्ति।

सँपोला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *साँप*) छोटा साँप, साँप का बच्चा, **सँपेलवा** (ग्रा.)।

संप्रज्ञात–संज्ञा, पु. (सं.) वह समाधि जिसमें आत्मा को अपने रूप का बोध हो या वह वहाँ तक न पहुँचा हो (योग.)।

संप्रति–अव्य. (सं.) इदानीम्, **साम्प्रतम्,** इस समय में, अभी, इस काल, आजकल, अधुना।

संप्रदान–संज्ञा, पु. (सं.) दान देने की क्रिया का भाव, मंत्रोपदेश, दीक्षा, एक कारक (चतुर्थी) जो दान-पात्र के अर्थ में आता है और जिसमें संज्ञा शब्द देना क्रिया का लक्ष्य होता है (व्या.)।

संप्रदाय–संज्ञा, पु. (सं.) कोई विशेष धर्म संबंधी मत, किसी मत के अनुयायियों की मंडली जो एक ही धर्म के मानने वाले हों, परिपाटी, चाल, रीति, पंथ, **प्रणाली**। वि. **सांप्रदायिक**।

संप्रदायिक–वि. (सं.) किसी सप्रदाय संबंधी, संप्रदाय का, धार्मिक। संज्ञा, स्त्री. **संप्रदायिकता**।

संप्राप्त–वि. (सं.) (संज्ञा, *संप्राप्ति*) पाया हुआ, उपस्थित, जो हुआ हो, घटित, मिलना, पाना, लब्ध।

संप्रप्य–वि. (सं.) प्राप्त करने के योग्य।

संबंध–संज्ञा, पु. (सं.) संसर्ग, लगाव, ताल्लुक़, संगम, संपर्क, नाता, वास्ता, रिश्ता (फ़ा.), संयोग, मेल, सगाई, ब्याह, षष्ठी कारक जो एक शब्द का दूसरे से लगाव या संबंध प्रगट करता है। इसमें एक पद संबंधी और दूसरा संबंधवान कहाता है। जैसे– राम का मुख (व्याक.)।

संबंधातिशयोक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जहाँ संबंध न (असंबंध) होने पर भी संबंध प्रगट किया जाता है (अ. पी.)।

संबंधी–वि. (सं. *संबंधित्*) लगाव या संबंध रखने वाला, विषयक। संज्ञा, पु. नातेदार, रिश्तेदार, समधी। (सह.) **संबंधवान**। स्त्री. **संबंधिनी;** समधिन।

संवत्–संज्ञा, पु. दे. (सं. *संवत्*) संवत्, साल, वर्ष, सन्।

संबद्ध–वि. (सं.) संयुक्त, बँधा या जुड़ा हुआ, बंद, संबंधयुक्त। संज्ञा, स्त्री. **सम्बद्धता**।

संबल–संज्ञा, पु. (सं.) मार्ग का भोजन, रास्ते का खाना, सफ़र खर्च, पाथेय।

संबक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शंबुक*) घोंघा, सीपी।

संबुद्ध–संज्ञा, पु. (सं.) ज्ञानी, ज्ञानवान्, ज्ञान, जाना हुआ, जिन, बुद्ध। संज्ञा, स्त्री. **संबुद्धि, संबुद्धता**।

संबुल–संज्ञा, स्त्री. (फा.) एक प्रकार की घास।

संबोधन–संज्ञा, पु. (सं.) जगाना, सोते से उठाना, निद्रा मुक्त करना, पुकारना, सचेत या चैतन्य करना, एक कारक (आठवाँ) जिससे शब्द का किसी के बुलाने या पुकारने का प्रयोग जाना जाता है। इसके चिह्न हे, रे, अरे, आदि हैं। जैसे–हे श्याम। विदित करना, जताना, आकाश-भाषित वाक्य (नाटक), समझाना, बुझाना, चेताना। *स. क्रि. दे. (सं.) समझाना, बुझाना, सचेत या सजग करना, चेताना। वि. **सम्बोधनीय, संबोधित,**

संबोध्य।

संबोधनीय–वि॰ (सं॰) जताने या समझाने योग्य, चेताने योग्य।

संबंधित–वि॰ (सं॰) पुकारा हुआ, जगाया या चेताया हुआ।

संबोध्य–वि॰ (सं॰) जगाने या चेताने के योग्य, समझाने-योग्य।

सँभरना, सँभलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संभार*) सावधान या होशियार होना, हानि या चोट से बचना, कार्य का भार उठाया जाना, स्वस्थ या चंगा होना, आराम होना, भार या बोझ आदि का थामा आ सकना, बिगड़ने से बचना, सुधरना, बनना, किसी सहारे पर रुक सकना। प्रे॰ रूप–**सँभलाना।**

संभव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साध्य, जन्म, उत्पत्ति, संयोग, मेल होना, मुमकिन, हो सकना, होने के योग्य होना। विलो॰ **असम्भव।**

संभवत–अव्य॰ (सं॰ हो सकता है, ग़ालिबन (फ़ा॰) मुमकिन है, संभव।

संभवना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *संभव*) उत्पन्न करना, पैदा करना। क्रि॰ अ॰ दे॰ उत्पन्न या पैदा होना, हो सकना, संभव होना।

सँभार, सँभाल (दे॰)–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *संभार*) एकत्रित या संचय करना, इकट्ठा करना, साज-समान, तैयारी, संपत्ति, धन, पालन-पोषण, संचय।

सँभार, सँभाल*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सँभालना*) चौकसी, ख़बरदारी, देख-रेख, रक्षा, निगरानी, पालन-पोषण, ठीक या उचित रीति-नीति या रूप से रखना। यौ॰ **सार-सँभार**–पालन-पोषण तथा निरीक्षण का भार। रोक, निरोध, वश में रखने का भाव, तन-मन की सुधि।

सँभारना, सँभालना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *संभार*) याद करना, भार या बोझा ऊपर ले सकना, रोके रहना, नीचे न गिरने देना, थामना, वश में रखना, दक्षः करना, संकट या बुराइयों आदि से बचना-बचाना, दुर्दशा से बचाना, पालन-पोषण करना, उद्धार करना, निगरानी या देख-रेख करना, चौकसी करना, निर्वाह या गुज़र करना, निबाहना, चलाना, किसी बात या वस्तु के ठीक होने का विश्वास या भरोसा करना, सहेजना, किसी मनोवेग का रोकना, बिगड़ने न देना, सुधारना। स॰ रूप–**सँभराना, सँभलाना,** प्रे॰ रूप–**सँभलवाना।**

सँभालू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) मेढ़की. **मेवड़ी** (प्रान्ती॰) सफ़ेद सिंधुवार वृक्ष।

संभावना–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुमकिन या संभव होना, हो सकना, अनुमान, कन्पना, सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, एक अर्थालंकार जिसमें एक बात का होना दूसरी के होने पर निर्भर हो (अ॰ पी॰)।

संभावित–वि॰ (सं॰) मन में माना या अनुमाना हुआ, संभव, मुमकिन, आदरणीय, प्रतिष्ठित, कल्पित, संचित या जुटाया हुआ, **सम्भावित** (दे॰७)।

संभाव्य–वि॰ (सं॰) संभव, मुमकिन : संज्ञा, स्त्री॰ **संभाव्यता।**

संभाषण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वार्तालाप। बातचीत, कथोपकथन। वि॰ **संभाषणीय, संभाषित, संभाष्य।**

संभाषणीय–वि॰ (सं॰) कथनीय, वार्तालाप करने योग्य।

संभाषी–वि॰ (*संभाषिन्*) वार्त्तालाप करने या बोलने वाला, कहने वाला। स्त्री॰ **संभाषिणी।**

संभाषित–वि॰ (सं॰) कथित।

संभाष्य–वि॰ (सं॰) जिससे वार्तालाप करना योग्य या उचित हो, कथनीय, बातचीत करने योग्य।

संभूत–वि॰ (सं॰) एक साथ उत्पन्न या उद्भूत, जन्मा हुआ, पैदा, प्रगट, सहित, युक्त, साथ। संज्ञा, स्त्री॰ **संभूति।**

संभूप–अव्य॰ (सं॰) साझे में, शामिल, या साथ में।

संभेद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भली-भाँति भिदना, भेद नीति, वियोग। संज्ञा पु॰ (सं॰) **संभेदन।** वि॰ **संभेदनीय।**

संभोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुख-पूर्वक व्यवहार, स्त्री-प्रसंग, रति-केलि, मैथुन-कार्य, मिलाप की हालत, संयोग-शृंगार (शृंगार रस-भेद)। विलो॰ **वियोग-विप्रलंभ।**

संभ्रम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्कंठा, व्याकुलता, घबराहट व्यग्रता, विकलता, सहम, सिट-पिटाना, खलबली, गौरव, सम्मान, आदर। क्रि॰ वि॰ उतावली।

संभ्रांत–वि॰ (सं॰) व्यग्र, उद्विग्न, विकल; घबराया हुआ, व्याकुल; सम्मानित, समादृत, प्रतिष्ठित।

संभ्रांति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भ्रांति, भ्रम, व्यग्रता, व्याकुलता।

संभ्राजना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *संभ्राज*) भली-भाँति या पूर्ण रूप से शोभित होना।

संमत–वि॰ (सं॰) सहमत, अनुमत, जिसकी राय या मत मिलता

हो।

संमति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) राय, अनुमति, सलाह।

संमान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आदर, गौरव, इज़्ज़त, सत्कार, **सम्मान**। वि॰ **सम्माननीय, सम्मानित**।

सम्मानना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *संम्मान*) आदर या सत्कार करना।

सम्मेलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जमाव, जमघट, सभा, समाज, मिलाप, मेल, सम्मिलन।

सम्राज–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *साम्राज्य*) साम्राज।

संयत–वि॰ (सं॰) दमन किया या दबाव में रखा हुआ, बँधा हुआ, बद्ध, क़ैदी, वशीभूत, क़ैद, बंद किया हुआ, व्यवस्थित, क्रम-बद्ध, उचित सीमा के अंदर रोका हुआ मन-सहित इन्द्रियजि, निग्रही।

संयम–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रोक, परहेज (फा॰)ए निग्रह, दाब, इन्द्रिय-निग्रह, चित्तवृत्ति का निरोध, बंधन, बंद करना, बुरी बातों या वस्तुओं से बचना, ध्यान, धारणा और समाधि का साधन (योग॰)। वि॰ **संयमी, संयमित, संयत**।

संयमनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) यम-लोक, बम-पुरी, यम-नगरी।

संयमी–वि॰ (सं॰ *संयमिन्*) मनेन्द्रियों को वश में रखने वाला, इन्द्रियजित, आत्म-निग्रही, इन्द्रियनिग्रही, योगी, रोक या दबाव रखने वाला, परहेज़गार।

संयात–वि॰ (सं॰) साथ-साथ गया हुआ।

संयुक्त–वि॰ (सं॰) सम्मिलित, जुड़ा या लगा हुआ, मिला हुआ, युक्त, मिश्रित, सहित, साथ, सम्बद्ध। संज्ञा, स्त्री॰ **संयुक्तता**।

संयुक्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) राजा पृथ्वीराज की रानी और जयचंद की पुत्री, एक छंद (पिं॰)।

संयुग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मेल, मिलाप, संयोग, युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

संयुत–वि॰ (सं॰) जुड़ा या मिला हुआ, सहित, संयुक्त, साथ। संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक समण, दो जगण और एक गुरु का एक छंद (पिं॰)।

संयोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मेल, मिलाप, मिलान, मिश्रण, मिलावट, लगाव, समागम, संबंध स्त्री-प्रसंग, सहवास, विवाह संबंध, योग, जोड़, मीजान, मौक़ा, अवसर, इत्तफ़ाक़, **संजोग, सँजोग** (दे॰) दो या कई बातों का एकत्र होना। **मु॰ संयोग से**–वैववशात, इत्तफ़ाक़ से, बिना पूर्व निश्चय के, बिना विचारे।

संयोगी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *संयोगिन्*) संयोग या मेल करने वाला, जो व्यक्ति अपनी प्रिया के साथ हो, **संजोगी, सँजोगी** (दे॰)। स्त्री॰ **संयोगिनी**।

संयोजक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जोड़ने या मिलाने वाला, दो या अधिक शब्दों या वाक्यों को मिलाने वाला शब्द या अव्यय (ब्लाक॰)।

संयोजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जोड़ने और मिलाने की क्रिया। वि॰ **संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित**।

संयोजित–वि॰ (सं॰) मिला या मिलाया हुआ या गया, संयुक्त।

सँयोना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सँजोना*) सँजोना, सजाना, रक्षित कर रखना।

संरंभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) क्रोध, कोप, मानसिक आवेग, आक्रोश।

संरक्षक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रक्षक, रक्षा करने वाला, देख-रेख और पालन-पोषण करने वाला, आश्रय या अभय देने वाला। स्त्री॰ **संरक्षिका**।

संरक्षण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रक्षा करना, बचाना, हानि या बुराई आदि से बचाना, निगरानी, देख-रेख, अधिकार, स्वत्व वि॰ **संरक्षणीय, संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य**।

संरक्षित–वि॰ (सं॰) हिफ़ाजत से रखा हुआ, भली-भाँति बचाया हुआ।

संरक्ष्य–वि॰ (सं॰) रक्षा करने योग्य।

सँरसी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मछली फँसाने या गरम चीज़ों के पकड़ कर उठाने की कटिया, **मडँसी, सन्सी** (ग्रा॰)।

संराधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेवा करना चिन्तन करना, समाराधन।

संराव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्षियों का शब्द।

संलक्ष्य–वि॰ (सं॰) जो लखा या दे जावे, लक्ष्य, उद्देश्य।

संलक्ष्य-क्रम व्यंग्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ऐसी व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम सूचित हो (काव्य)।

संलग्न–वि॰ (सं॰) संबद्ध, लगा हुआ, सटा या मिला हुआ, लड़ाई में गुथा हुआ, मिलित। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **संलग्नता**।

संलाप–संज्ञा॰ पु॰ (सं॰) **संलग्नता**।

संलाप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बातचीत, कथोपकथन, वार्तालाप,

धीरता-युक्त होने वाला संवाद (नाटक.)। संज्ञा, पु. (सं.) **संलापन** वि. **संलापक, संलापित, संलापनीय**।

संवत्–संज्ञा, पु. (सं.) साल, वर्ष, राजा शालिवाहन के समय से मानी गई वर्ष गणना, शाका, सन्, सम्राट विक्रमादित्य के समय से चली हुई वर्ष-गणना, संख्या-सूचित वर्ष विशेष।

संवत्सर–संज्ञा, पु. (सं.) वर्ष, साल, फ़सल।

संवत्सरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) संवत् का व्यवहार।

संवर–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्मृति*) स्मरण, याद, ख़बर, हाल, समर।

संवरण–संज्ञा, पु. (सं.) आच्छादित करना, संगोपन, छिपाना, छोपना, बंद करना, दूर रखना या करना, हटाना, किसी मनोवृत्ति को दबाना या रोकना, निग्रह, चुनना, पसंद करना, विवाह के लिए कन्या का पति या वर चुनना। वि. **संवरणीय, संवृत**।

सँवरना–क्रि. अ. दे. (सं. *संवर्णन*) सजना, दुरुस्त होना, सुधरना, बनना, अलंकृत होना। *क्रि. स. दे. (हि. *सुमिरना*) सुमिरना, सारण या याद करना।

सँवरिया–वि. दे. (हि. *साँवला*) साँवला, श्याम, **सँवलिया, सांवलिया** (दे.)।

संवर्त्त–संज्ञा, पु. (सं.) एक ऋषि विशेष।

संबर्द्धक–संज्ञा, पु. (सं.) वृद्धि करने या बढ़ाने वाला।

संवर्द्धन–संज्ञा, पु. (सं.) बढ़ना, बढ़ाना, पालन-पोषण, प्रवर्धन, विवर्धन। वि. **संवर्द्धनीय, संवर्द्धित, संवृद्ध**।

संवाद–संज्ञा, पु. (सं.) कथोपकथन, बात-चीत, वार्त्तालाप, समाचार, हाल, चर्चा, मामला, प्रसंग, मुकदमा। (*कर्त्ता. संवादक*)।

संवाददाता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समाचार या हाल देने या भेजने वाला।

संवादी–वि. (सं. *संवादिन्*) संवाद या वार्त्तालाप करने वाला, अनुकूल या सहमत होने वाला। स्त्री. **संवादिनी**। संज्ञा, पु. वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलने और सहायक होने वाला स्वर (संगी.)।

संवार–संज्ञा, पु. (सं.) संगोपन, छिपाना, ढाँकना, वर्णोच्चारण का एक बाह्य-प्रयत्न जिसमें कंठ-संकुचन हो (व्याक.)।

सँवार–संज्ञा, स्त्री. (सं. *स्मृति*) समाचार, हाल, ख़बर। संज्ञा, स्त्री. (दे.)–बनावट, सजावट, रचना, सँवारने की क्रिया का भाव।

सँवारना–क्रि. स. दे. (सं. *संवर्णन*) अलंकृत या व्यवस्थित करना, सजाना, ठीक या दुरुस्त करना, क्रम से रखना, कार्य ठीक करना।

संवाहन–संज्ञा, पु. (सं.) उठा कर ले जाना, ले चलना, ढोना, परिचालन, चलाना, पहुँचाना। वि. **संवाहनीय, संवाहित, संवाहक, संवाही, संवाहा**।

संविग्न–वि. (सं.) व्यग्र, आतुर, उद्विग्न, घबराया हुआ, व्याकुल। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **संविग्नता**।

संविद्–संज्ञा, स्त्री. (सं.) समझ, ज्ञानशक्ति, बुद्धि, बोध, संवेदन, चेतना, महक्षत्य, अनुभूति, पूर्व, निश्चित मिलन-स्थान, संकेत-मंदिर, नाम, युद्ध, लड़ाई, संपत्ति, हाल, वृतांत, समाचार, संवाद, जायदाद।

संवद्–वि. (सं.) अनुभव, ज्ञान, बोध, समझ, बुद्धि, चेतन, विचार, चेतना-युक्त।

संविधान–संज्ञा, पु. (सं.) प्रबंध, रीति, रचना, सुव्यवस्था।

संवेद–संज्ञा, पु. (सं.) अनुभव, ज्ञान, बोध, समझ, वेदना।

संवेदन–संज्ञा, पु. (सं.) अनुभव करना, जताना, सुख-दुःख आदि की प्रतीति करना, प्रगट करना। वि. **संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य**।

संवेदना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुख-दुःखादि की प्रतीति या अनुभूति, **समवेदना** (दे.)।

संवेद्य–वि. (सं.) प्रतीति या अनुभव करने योग्य, जताने या वताने के योग्य, प्रकटनीय।

संशय–संज्ञा, पु. (सं.) आशंका, संदेह, शंका, डर, भय, शक, संदेहालंकार, (काव्य)। अनिश्चयात्मक ज्ञान, **संसय, संसै** (दे.)।

संशयात्मक–वि. यौ. (सं.) जिससे संदहे या शक हो, संदिग्ध, संदेह-युक्त।

संशयात्मा–संज्ञा, पु. यो. (सं. *संशयात्मन्*) अविश्वासी, संदेही। जो किसी वात पर विश्वास न करे।

संशयी–वि. (सं. *संशयिन्*) संशय या संदेह करने वाला, शक्की।

संशयोपमा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) उपमालंकार का एक भेद जहाँ उपमेय की कई उपमानों के साथ समानता संदेह

के रूप में कही जावे (काव्य)।

संशोधक–संज्ञा, पु. (सं.) संशोधन करने सा सुधारने वाला ठीक करने वाला, बुरी दशा से अच्छी में लाने वाला।

संशाधन–संज्ञा, पु. (सं.) साफ या शुद्ध करना, सुधारना, दुरुस्त या ठीक करना, (*ऋणादि*) चुकता या अदा करना। वि. (सं.) **संशाधनीय संशाधित, संशुद्ध, संशोध्य**।

संशाधित–वि. (सं.) स्वच्छ या शुद्ध किया हुआ, सुधारा हुआ, निर्दोष। संज्ञा, पु. (सं.) **संशाधक**।

संश्रय–संज्ञा, पु. (सं.) संवंध. संयोग, मेल, लगाव, शरण, आश्रय, **सहारा,** अवलंब, घर, गृह, मकान।

संश्रषण–संज्ञा, पु. (सं.) सहारा या आश्रय लेना, अवलंब या शरण लेना। वि. **संश्रयणीय, संश्रयी, सांश्रत**।

संश्लिष्ट–वि. (सं.) आलिंगित, परिरंभित, सम्मिलित, मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त, कारकादि विभक्तियों की संज्ञा-शब्दों से मिली हुई अवस्था।

संश्लेष–संज्ञा, पु. (सं.) आलिंगन, परिरंभण, मिलाप, मिलन, मिश्रण।

संश्लेषण–संज्ञा, पु. (सं.) एक में मिलाना, सटाना, टाँगना, अटकाना। वि. **संश्लेषणीय संश्लेषित, संश्लेषक, संश्लिष्ट**।

संसक्त–वि. (सं.) संयुक्त, संबद्ध, आसक्त, लिप्त, सहित।

संसय–संज्ञा, पु. दे. (सं. *संशय*) संशय, संदेह।

संसरग–वि. दे. (सं. *संशय*) उपजाऊ, उर्बर, संसर्ग, संबंध।

संसरण–संज्ञा, पु. (सं.) चलना, गमन करना, जगत, संसार, मार्ग, पथ, सड़क, राह। वि. **संसरणीय, संसरित, संसृत**।

संसर्ग–संज्ञा, पु. (सं.) संपर्क, लगाव, संबंध, संग, साथ, मेल-मिलाप, स्त्री-पुरुष का सहवास का प्रसंग।

संसर्गदोष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संपर्क या संबंध से उत्पन्न बुराई या दोष, संग-साथ से पैदा हुआ दुर्गुण।

संसर्गी–वि. (सं. *संसर्गिन्*) साथी, संपर्क या लगाव रखने वाला। स्त्री. **संसर्गिणी**।

संसार–संज्ञा, पु. (सं.) बराबर एक दशा से दूसरी में परिवर्तित होते रहना, रूपान्तरित होने वाला, जगत्, सृष्टि, दुनिया, जहान, मृत्युलोक, इहलोक, गृहस्थी, जन्म, मरण की परंपरा, आवागमन।

संसार-चक्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जन्म-मरण या आवागमन का चक्कर, भव-जाल, समय का हेर-फेर, परिवर्तन का चक्कर।

संसार-धर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लौकिक व्यवहार, परिवर्तन, रूपानतर, लोक-रीति।

संसार-तिलक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक प्रकार का बढ़िया चावल।

संसार-विटप–संज्ञा, पु. (सं.) संसार-रूपी पेड़, पेड़ रूपी संसार।

संसार-मूर्त्ति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, परमेश्वर, भगवान, **संसार-स्वामी**।

संसार-सागर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सागर-रूपी संसार, संसार का समुद्र, भव-सागर, **संसार-सिंधु,** भवोदधि।

संसारी–वि. (सं. *संसारिन्*) लौकिक, संसार-संबंधी, क्षणिक, परिवर्तनशील (व्यंग्य.), संसार के माया-जाल में फँसा, धर्मशील, जन्म-मरण, आवागमन से बद्ध, लोक-व्यवहार में निपुण।

संसिक्त–वि. (सं.) भली-भाँति सींचा हुआ, आर्द्र, गीला।

संसिद्ध–वि. (सं.) सग प्रकार सिद्ध, प्रमाणित, भली-भाँति किया हुआ, मुक्त-पुरुष, निपुण, चतुर, कुशल।

संसृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जन्म मरण की परंपरा, आवागमन, संसार, सृष्टि।

संसृष्ट–वि. (सं.) मिलित, मिश्रित, सम्बद्ध, मिला हुआ, परस्पर लगा हुआ, अंतर्गत।

संसृष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक ही साथ उत्पत्ति या उद्भूति, आविर्भाव, मिश्रण, मिलावट, लगाव, संबंध, मेल-जोल, घनिष्टता, संग्रह या संचय, एकता करना, दो या अधिक अलंकारों का ऐसा मिश्रण कि सब तिल-तुदलवत् अलग-अलग जाने जावें (अ. पी.)।

संस्करण–संज्ञा, पु. (सं.) शुद्ध या सही करना, सुधारना, ठीक या दुरुस्त करना, द्विजातियों के स्मृति विहित संस्कार करना, पुस्तकादि की एक बार की छपाई, आवृत्ति (आधुनिक)। वि. **संस्करणीय**।

संस्कर्त्ता–संज्ञा, पु. (सं.) संस्कार करने वाला। वि. **संस्कृत**।

संस्कार–संज्ञा, पु. (सं.) सुधार, शुद्ध या साफ़ करना, सोधना, दुरुस्त या ठीक करना, सुधारना, सजाना, परिष्कार, मन पर शिक्षादि का पड़ा हुआ प्रभाव, आत्मा के साथ

रहने वाला पूर्व-जन्म के कर्मों का प्रभाव, कर्मानुसार शुद्ध करना, द्विजातियों के लिए जन्म से मरण तक के आवश्यक सोलह कृत्य, मृतक-क्रिया, मन में होने वाला वह प्रभाव जो इन्द्रियों के विषय-ग्रहण से हो।

संस्कार-हीन–वि. यौ. (सं.) जिसका संस्कार न हुआ हो, वाल्य, संस्कार-रहित।

संस्कृत–वि. (सं.) संशोधित, शुद्ध या संस्कार किया हुआ, परिष्कृत, परिमार्जित, शुद्ध या साफ़ किया हुआ, सुधारा या दुरुस्त किया हुआ, सँवारा या सजाया हुआ, जिसका उपनयनादि संस्कार हुआ हो। संज्ञा, स्त्री. भारतीय आर्यों की प्राचीन शुद्ध साहित्यिक भाषा, देव-वाणी, **संसकीरत** (दे.)।

संस्कृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शुद्धि, सफ़ाई, सुधार, संस्कार, सजावट, सभ्यता, परिष्कार, परिष्कृत सभ्यता, 24 वर्णों के वर्णिक छंद (पिं.); (अं.) कल्चर।

संस्था–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्थिति, व्यवस्था, ठहरने या स्थिर होने की क्रिया या भाव, विधि, विधान, मर्यादा, वृंद, समूह, झुंड, समाज, सभा, मंडली, मंडल, संगठित समुदाय। (अं.) (इन्स्टीट्यूट)।

संस्थान–संज्ञा, पु. (सं.) स्थिति, सत्ता, निवास स्थान, स्थापन, बैठाना, जीवन, अस्तित्व, गृह, डेरा, गाँव, घर; जनपद, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, सर्व साधारण के एकत्र होने का स्थान, योग, समष्टि, जोड़, नाश, मृत्यु, मौत; अं. (इन्स्टीट्यूशन)।

संस्थापक–संज्ञा, पु. (सं.) संस्थापन करने वाला, नियत करने वाला। स्त्री. **संस्थापिका**।

संस्थापन–संज्ञा, पु. (सं.) खड़ा करना, बैठाना, (भवनादि) उठाना, कोई नवीन बात चलाना, उठाना, स्थापित करना। वि. **संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य**।

संस्पर्श–संज्ञा, पु. (सं.) स्पर्श, छूत। संज्ञा, पु. (सं.) **संस्पर्शन**, वि.–**संस्पर्शनीय**।

संस्मरण–संज्ञा, पु. (सं.) भली भाँति याद, पूर्ण रूप से स्मरण, भली-भाँति नाम जपना, ध्यान या याद करना। वि. **संस्मरणीय, संस्मृत, संस्मारक**।

संहत–वि. (सं.) भली-भाँति मिलित, सर्वथा मिरित, खूब मिला, जुड़ा और सटा हुआ, सहित, संयुक्त, सख़्त, कड़ा, घना, गढ़ा हुआ, दृढ़, इकट्ठा, एकत्र।

संहति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मेल, मिलाप, जुटाव, राशि, वृंद, मात्रा, झुंड, समूह, घनत्व, संधि, जोड़, संयोग, ठोसपन।

संहनन–संज्ञा, पु. (सं.) संहार, वध, मेल, मालिश।

संहरण–संज्ञा, पु. (सं.) संहार, नाश प्रलय, एकत्र करना। वि. **संहरणीय**।

संहरना–क्रि. अ. दे. (सं *संहार*) नाश या नष्ट होना, मिट जाना, संहार होना। क्रि. स.–विनाश या संहार करना।

संहार–संज्ञा, पु. (सं.) अंत, समाप्ति, नाश, विनाश, प्रलय, एक नरक, एक भैरव, ध्वंस, परिहार, निवारण, समेट कर बाँधना, एकत्रि करना, समेटना, बटोरना, गूँधना, गूथना, ग्रंथन (केशादि), विमुक्त वाण को वापस लेना।

संहारक–संज्ञा, पु. (सं.) नाश करने वाला, मिटाने वाला, विनाशक, ध्वंसक। स्त्री. **संहरिका**।

संहारकाल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रलय या नाश का समय, **संहार-बेला**।

संहारना*–क्रि. स. दे. (सं. *संहरण*) नाश या नष्ट करना, ध्वंस करना, मिटाना, मार डालना।

संहिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) संयोग, खेल, मिलावट, एकत्र, इकट्ठा किया हुआ, संयुक्त, सविधि, व्याकरण में संधि या दो वर्णों का मिलकर एक होना, पद पाठादि के नियमानुकूल क्रम वाला ग्रंथ। जैसे–चरक संहिता, धर्म-संहिता।

सइया–संज्ञा, पु. (दे.) साँई, स्वामी, पति, प्रेमी, ईश्वर, सैंयाँ।

सइतना-सैंतना–क्रि. स. दे. (सं. *संक्रिय*) संचय करना, बचाकर रक्षित रखना।

स*–अव्य. दे. (सं. *सह*) साथ, से। अव्य. दे. (ग्रा. *सुन्ती*) करण और संप्रदान कारक का चिन्ह या विभक्ति (व्या.)।

सइयो*†–संज्ञा, स्त्री. (सं. *साथी*) सखी, सहेली, संगिनी, साथिनी।

सइगर–वि. ग्रा. (सं. *सकल*) बहुत, अधिक, सकल, **सैगर** (दे.)।

सइराना-सैराना–क्रि. अ. (दे.) बढ़ना, समाप्त न होना, फैलना, ख़तम होना।

सई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक नदी, तमसा, सखी, वृद्धि, बढ़ती। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) कोशिश यत्न।

सईस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हिं॰ *साईस*) घोड़े की सेवा या चौकसी करने वाला नौकर।

सहीस-साईस(दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **सईसी**–सहीस का काम।

सउँ*–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *सों*) सौंह, कसम, शपथ, सों, सौं, करण और अपदान कारक की विभक्ति (ब्र॰)।

सऊं–अव्य॰ (दे॰) सीधे, सामने, मोंहे। (ग्रा॰) सौंह।

सऊर-सहूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ शऊर) तमीज़, ढंग, व्यवहाराचार।

सक†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शक्ति*) शक्ति, बल, **सकति** (दे॰), (यौ॰ में, जेसे–भरसक)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शक*) शक जाति। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *शक*) संदेह, शंका। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साफा*) साका, धाक, आतंक। क्रि॰ अ॰ (हि॰ *सकना*) सकना।

सकट–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शकट*) छकड़ा, गाड़ी।

सकत-सकति†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शक्ति*) शक्ति, बल, ज़ोर, पौरुष, पराक्रम, सामर्थ्य, संपत्ति, वैभव। क्रि॰ वि॰ जहाँ तक हो सके, भरसक। क्रि॰ अ॰ (दे॰) सकता है।

सकता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शक्ति*) शक्ति, बल, सामर्थ्य, पौरुष, पराक्रम। संज्ञा, पु॰ (अ॰ **संकेतः** स्तब्धता बेहोशी की बीमारी, यति, विराम। **मु॰ सकता पड़ना**–यति भंग दोष होना। **सकते में आना**–आश्चर्यादि से स्तब्धता होना।

सकत-सकती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शक्ति*) शक्ति, बल, पौरुष, बर्छी, सामर्थ्य।

सकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शक् या शक्य*) करने में समर्थ होना, करने योग्य होना।

सकपकाना-सकबकाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰ *सकपक*) अचंभित होना, हिचकना, लज्जित होना, अनोखी दशा होना, लज्जा, प्रेम, शंकादि से उत्पन्न एक चेष्टा विशेष, हिलना-डोलना। संज्ञा, स्त्री॰ **सकपकी**।

सकरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *स्वीकरण*) सकारा जाना, स्वीकृत होना, अंगीकृत होना, भुगतान होना। स॰ रूप–**सकराना, सकारना**, प्रे॰ रूप–**सकरवाना**।

सकरपाला-सकरपारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शकरपारा*) एक प्रकार की मिठाई, एक प्रकार की आयताकार सिलाई; इसी आकार के मीठे-नमकीन टुकड़े।

सकरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *संकीर्ण*) संकीर्ण, संकुचित, रोटी-दाल आदि कच्चा भोजन। स्त्री॰ **सकरी**।

सकरुण–वि॰ (सं॰) दयावान, कृपापूर्ण।

सकर्मक-क्रिया–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह क्रिया जिसका फल या कार्य उसके कर्म पर पहुँच कर समाप्त हो (व्याक॰)। जैसे–पीना, लिखना।

सकल–वि॰ (सं॰) संपूर्ण, समस्त, सब, कुल। संज्ञा, पु॰ (सं॰) निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण प्रकृति। वि॰ (सं॰) कला या मात्रा-युक्त।

सकलात–संज्ञा, पु॰ (दे॰) ओढ़ने की रजाई, दुलाई, उपहार, भेंट, सौगात।

सकाना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शंका*) डरना, संदेह या शंका करना, भय से संकोच करना, हिचकना, दुखी होना। क्रि॰ स॰ (दे॰) सकना का प्रे॰ रूप (कवि॰)।

सकाम–संज्ञा, पु॰ (स॰) कामना या इच्छा-सहित, पूर्ण मनोरथ, काम-वासना-युक्त, कामी, फल-प्राप्ति की इच्छा से कर्म करने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **सकामता**।

सकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स वर्ण। वि॰ (दे॰) सकार। संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रातःकाल, कल।

सकार–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सवेरा, प्रभात। क्रि॰ वि॰ (दे॰) **सकारे**। वि॰ (दे॰) **साकार** (सं॰)।

सकारना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *स्वीकरण*) मंजूर या स्वीकार करना, हुँडी की मंजूरी, हुँडी की मिली पूरी होने से एक दिन पूर्व उस पर हस्ताक्षर कर रुपया देना। स॰ रूप–**सकराना, प्रे॰** रूप–**सकरवाना**।

सकारे-सकारै†–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *सकाल*) प्रभात में, प्रातःकाल, सवेरे। यौ॰ **साँझ-सकारे**। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **सकार**।

सकाश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समीप, पास, निकट, नियरे, नेरे।

सकिलना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *फिसलना का अनु॰*) सरकना, हटना, सिमटना, खिसकना, सिकुड़ना, संकुचित होना। स॰ रूप–**सकिलाना, प्रे॰** रूप–**सकिलवाना**।

सकुच†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) लज्जा, संकोच, लाज, शर्म। वि॰ (सं॰) कुच-युक्त।

सकुचना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) संकोच करना, लज्जित होना, शरमाना। संकुचित होना या सिकुड़ना, संकोच करना, संपुटित या बंद होना (फूल का)।

सकुचई-सकुचाई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) संकोच करना, लज्जित होना, शरमाना। क्रि॰ स॰ (दे॰) सिकोड़ना, (किसी को) संकुचित या लज्जित करना, **सकुचावना**।

सकुची–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शकुल मत्स्य*) कछुआ जैसी एक मछली। क्रि॰ अ॰ सा॰ भू॰ (दे॰) लज्जित हुई, शरमाई।

सकुचौंह–वि॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) लजीला, संकोच, शर्मिंदा। स्त्री॰ **सकुचौंही**।

सकुन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सकुन*) पक्षी, चिड़िया। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शकुन*) शकुन, **सगुन** (दे॰), शुभ चिह्न।

सकुनी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शकुंत*) पक्षी, चिड़िया। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **शकुनि** (सं॰) कौरवों के मामा।

सकुपना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकोपन*) संकोपना, रोष या क्रोध करना।

सकूनत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) निवास स्थान, गृह, स्थान, रहाइस।

सकृत्–अव्य॰ (सं॰) एक बार, एक दफ़ा या मरतबा, सदैव, साथ, सह। यौ॰ सकृदपि।

सकेतना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकीर्ण*) सिकुड़ना, सिमिटना, संकुचित या संपुटित होना। क्रि॰ स॰ (दे॰) संकेत करना, संकुचित करना।

सकेलना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकल*) समेटना, बटोरना, एकत्रित या इकट्ठा करना राशि करना, जमा करना। स॰ रूप–**सकेलाना**, प्रे॰ रूप–**सकेलवाना**।

सकेला–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *सैकल*) एक तरह की तलवार, खड़ंग। संज्ञा, पु॰ (हि॰ *सकेलना*) सकेलने या समेटने वाला।

सकोच–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) संकोच, लज्जा, शर्म, **सँकोचू** (दे॰)।

सकोचना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) सिकोड़ना, संकुचित करना।

सकोड़ना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संकोच*) संकोच करना, बटोरना, सकेलना, **सिकोड़ना**, संकुचित या संपुटित करना।

सकोतरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार का नींबू, **चकोतरा**।

सकोरना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सिकोरना*) सिकोड़ना, समेटना, संकुचित करना।

सकोरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *कसोरा*) परई, मिट्टी का प्याला, **कसोरा** (प्रान्ती॰)।

सकोरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *कसोरा*) मिट्टी की प्याली, **कसोरी** (प्रान्ती॰)।

सक्का–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मशकी, भिशती, भिश्ती।

सक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शक्ति*) शक्ति, सामर्थ्य, बल, पौरुष, पराक्रम, **सकति** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) शक्ति या बरछी नामक एक अस्त्र।

सक्तु-सक्तुक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शक्तु*) शक्त, सत्तू, **सतुआ** (ग्रा॰), भुने अन्न का आटा, भुने चने और जौ का आटा।

सक्र*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शक*) इन्द्र।

सक्रारि*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शकारि*) इन्द्र-शत्रु, मेघनाद।

सक्षम–वि॰ (सं॰) क्षमताशाली, क्षमतावान, सहनशील, समर्थ, क्षमता युक्त। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सक्षमता**।

सख–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सखि*) मित्र, साथी, सखा, संगी। स्त्री॰ **सखी**।

सखरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *निखरा*) **सकरा** (दे॰) कच्चा भोजन, दाल-भात-रोटी।

सखरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *निखरी*) **सकरी** (दे॰), कच्ची रसोई, दाल-भात-रोटी आदि।

सखा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सखि*) साथ, मित्र, संगी, दोस्त, सहचर, सहयोगी।

सखा-भाव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भक्ति या उपासना का वह भाव जिसमें भक्त आने को अपने इष्ट देव का सखा या मित्र मान कर उपासना करता है, जैसे–सूर की भक्ति। **सख्यभाव** (दे॰)। (विलो॰ **सखी-भाव**)।

सखावत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) उदारता, दानशीलता।

सखि, सखी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सहयोगिनी, सहचरी, संगिनी, सहेली, नायिका की वह संगिनी जिससे कोई बात उसकी छिपी न हो (सा॰), 14 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं॰)। वि॰ दे॰ (अं॰ सखी) दानशील, उदार, दानी, दाता।

सखीभाव–संज्ञा, पु. (सं.) एक कृष्ण-भक्ति-मार्ग या उपासना-विधि जिसमें भक्त अपने को इष्टदेव या उसकी प्रिया की सखी या सहेली मानकर उपासना करते हैं। (हित हरि वंशजी की उपासना विधि) टट्टी-संप्रदाय। विलो. **सखा-भाव, सख्य-भाव**।

सखुआ-लखुवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शाल*) शालवृक्ष, साखू का पेड़।

सखुन–संज्ञा, पु. (फा. *सुखन*) काव्य, कविता, वार्त्तालाप, बातचीत, बात, वचन, उक्ति, कथन।

सखुन-तकिया–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) वाक्याश्रय, तकिया-कलाम, वह शब्द या वाक्यांश जो लोग वार्त्तालाप के बीच में यों ही ले आते हैं।

सख़्त–वि. (फ़ा.) कड़ा, कठोर, दृढ़। संज्ञा, स्त्री. संकट, विपत्ति।

सख़्ती–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) ज़्यादती, कढ़ाई, कठोरता, क्रूरता, दृढ़ता, विपत्ति।

सख्य–संज्ञा, पु. (सं.) मित्रता, दोस्ती, मैत्री, सखापन, विष्णु-भक्ति का वह भाव जिसमें अपने को विष्णु या उनके अवतार का सखा मानकर भक्त उपासना करता है, **सखा-भाव**। यौ. **सख्य-भाव**।

सख्यता–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) मित्रता, मैत्री, सखापन, दोस्ती, **मिताई** (दे.)।

सगड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शकट*) छकड़ा, गाड़ी, बैल-गाड़ी।

सगण–संज्ञा, पु. (सं.) दो लघु और एक दीर्घ वर्ण से बना एक गण जिसका रूप (।।ऽ) होता है (पिं.)। वि. (सं.) गया था समूह के साथ।

सगनौती–संज्ञा, स्त्री. (दे.) शकुन विचारने की क्रिया, **सगुनौती** (दे.)।

सगवग–वि. (अनु.) आर्द्र, तर, सरावोर, द्रवित, लथपथ, परिपूर्ण, भीगा हुआ, गीला।

सगबगाना–क्रि. अ. दे. (*अनु. सगवग*) भीगना, सराबोर या लथपथ होना, सकपकाना, **सकबकाना,** भयभीत या शंकित होना।

सगर–संज्ञा, पु. (सं.) अयोध्या के एक सूर्य-वंशीय धर्मात्मा प्रजा-पालक राजा, इनके 60 हज़ार पुत्र थे, राजा भगीरथ इनके ही वंशज थे। वि. (दे.) सगल, सब, अधिक, **सैगर** (ग्रा.)।

सगरा, सगला†–वि. दे. (सं. *सकल*) सब का सब, सारा, तमाम, कुल, सकल, बहुत, **सैगर** (ग्रा.)। स्त्री. **सगरी**।

सगर्भा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गर्भवती स्त्री, सगी बहिन, गर्भयुक्त।

सगल*†–वि. दे. (सं. *सकल*) **सगर,** सब, संपूर्ण, पूरा-पूरा, सारा, कुल, समस्त। वि. (सं.) गलायुक्त।

सगा–वि. दे. (सं. *सबक्*) सहोदर, एक ही माता-पिता से उत्पन्न, जो संबंध में निज का हो। स्त्री. **सगी**।

सगाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सगा+ई प्रत्य.*) व्याह का ठीक या निश्चय होना, संबंध, **मँगनी** (प्रान्ती.), नाता, रिश्ता, छोटी जातियों में स्त्री-पुरुष का व्याह जैसा संबंध, सगापन।

सगापन–संज्ञा, पु. (हि.) संबंध का अपनपन या आत्मीयता, सगा होने का भाव।

सगुण–संज्ञा, पु (सं.) गुण-सहित, साकार, ब्रह्म, सत्य, रज और तम तीनों गुणों से युक्त ब्रह्म का रूप, वह संप्रदाय जिसमें परमेश्वर को सगुण मान कर उसके अवतारों की पूजा होती है, **सगुन** (दे.)। यौ. **सगुणवाद** ईश्वर के सगुण-साकार मानने का सिद्धान्त। यौ. **सगुणोपासना**–सगुण ब्रह्म की भक्ति।

सगुन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शकुन*) किसी कार्य के होने की सूचना सूचक चिन्ह, शकुन। (विलो. असगुन)। संज्ञा, पु. दे. (सं. *सगुण*) ईश्वर का सगुण रूप, गुण-सहित।

सगुनाना–क्रि. अ. दे (सं. *शकु+आना प्रत्य.*) शकुन बताना, शकुन देखना या निकालना।

सगुनिया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शकुन+इया प्रत्य.*) शकुन विचारने और बताने वाला।

सगुनौती–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सगुन+औती प्रत्य.*) शकुन विचारने की क्रिया, **सगनउती** (ग्रा.)। **मु. सगुनौती उठाना**–शकुन देखना या निकालना।

सगोत, सगोती–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सगोत्र*) समगोत्री, एक गोत्र के लोग, सगोत्र, भाई-बंधु, भैयाचार, **भाई-बिरादर**।

सगोत्र–संज्ञा, पु. (सं.) एक गोत्र के लोग, सजातीय, **समगोत्रीय,** एक ही कुल या वंश के लोग। स्त्री. **सगोत्रा**।

सगोत्रा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सजातीया, अपने गोत्र की, अपने

कुल, वंश या कुटुंब की स्त्री।

सघन–वि॰ (सं॰) घना, गुंजान, अविरल, ठस, ठोस, निबिड़। संज्ञा, स्त्री॰ **सघनता**। वि॰ (सं॰) घन या बादल के साथ।

सच–वि॰ दे॰ (सं॰ *सत्य*) सत्य, सही, ठीक, दुरुस्त, वास्तविक, यथार्थ, तथ्य, **सच** (दे॰)।

सचमुच–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *सच+मुच अनु॰*) वस्तुतः, वास्तव में, यथार्थतः, ठीक-ठीक, अवश्य, निश्चय, **सच्च-मुच्च** (ग्रा॰)।

सचरना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संचरण*) संचलित या संचरित होना, फैलना, अति प्रचलित होना, संचार या प्रवेश करना।–**सचारना**।

सचराचर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) संसार के चलने वाले और न चलने वाले, स्थावर-जंगम।

सचाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सत्य, प्रा॰ सच्च+आई प्रत्य॰*) सच्चापन, सत्यता, यथार्थता, वास्तविकता।

सचान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संचान=श्येन*) श्येन पक्षी, बाज पक्षी।

सचारना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संचारण*) फैलाना, प्रचार करना, चलाना, प्रचलित करना। प्रे॰ रूप–**सचरवाना**।

संचित–वि॰ (सं॰) चिन्ता-युक्त, जिसे चिन्ता हो, चिंतित।

सचिकण–वि॰ (सं॰) बहुत चिकना, **सचिकन** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **सचिक्कणता**।

सचिव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मित्र, सहायक, मंत्री, **वजीर** (फ़ा॰). **सैकेट्री** (अं॰)।

सचु*†–संज्ञा, पु॰ (दे॰) प्रसन्नता, सुख, आनंद, खुशी।

सचेत–वि॰ दे॰ (सं॰ *सचेतन*) चैतन्य, जो होश में हो, जिसमें चेतना हो, चेतन, चेतना-युक्त, होशियार, सजग, सावधान, सतर्क, चतुर।

सचेतन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जिसमें चेतना हो, जो जड़ न हो, चेतन, चैतन्य। वि॰ सतर्क, सावधान, सजग, चेतना-युक्त, समझदार, चतुर, होशियार।

सचेष्ट–वि॰ (सं॰) जिसमें चेष्टा हो, जो चेष्टा करे।

सचौरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सत्यता, सचाई, सजावट।

सच्चरित, सच्चरित्र–वि॰ (सं॰) अच्छे चरित या चरित्र वाला, सुकर्मी। संज्ञा, स्त्री॰ **सच्चरित्रता**।

सच्चा–वि॰ दे॰ (सं॰ *सत्य*) सत्यभाषी, यथार्थवादी, सच बोलने वाला, ठीक, पूरा, यथार्थ, वास्तविक, विशुद्ध, असली। स्त्री॰ **सच्ची**।

सच्चाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सच्चा+आई प्रत्य॰*) सत्यता, सच्चापन, यथार्थता, **सचाई**, वास्तविकता।

सच्चापन–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *सच्चा+पन प्रत्य॰*) सच्चाई, सत्यता, सचाई।

सच्चिकन*–वि॰ दे॰ (सं॰ *सच्चिकण*) अत्यंत चिकना, **सचिक्कण**।

सच्चिदानंद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सत्, चित् और आनन्द से युक्त ब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर।

सच्छत*–वि॰ दे॰ (सं॰ *सक्षत*) घायल, ज़ख़्मी, घाव-युक्त।

सज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सजावट*) सजने की क्रिया या भाव, सजावट, शोभा, सौंदर्य, नक़ल, डौल। यौ॰ **सज-धज**। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक पेड़।

सजग–वि॰ दे॰ (सं॰ *जागरण*) सचेत, सावधान, होशियार, सतर्क। संज्ञा, स्त्री॰ **सजगता**।

सजधज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सज+धज अनु॰*) सजावट, बनाव सिंगार।

सजन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सत+जन–सज्जन*) सज्जन, **सुजन** (दे॰) भलामानुस, शरीफ़ (फ़ा॰), पति, स्वामी, भर्ता, प्रियतम, मित्र, प्रेमी, बार, **साजन** (ग्रा॰)। स्त्री॰

सजनी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वजन*) आत्मीय व्यक्ति। –स्फु॰। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सजनता**।

सजना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सज्जा*) सुसज्जित होना, या शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, भला जान पढ़ना या अच्छा लगना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) सुसज्जित होना सँवारना। स॰ रूप–**सजाना, सजावना**, प्रे॰ रूप–**सजवाना**।

सजनि, सजनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सजन*) सखी, सहेली, सहचरी, प्रिय स्त्री।

सजल–वि॰ (सं॰) जल युक्त या जल से परिपूर्ण, अश्रुपूर्ण, आँसुओं से भरी आखें।

सजवल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सजना*) तैयारी।

सजला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) चार भाइयों में से तीसरा भाई, मँझले से छोटा। वि॰ स्त्री॰ (सं॰) जल-पूर्ण, जल से

भरी, जल-युक्त।

सजवाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सजन+बाई प्रत्य.*) सजने या सजवाने का कार्य, भाव या मज़दूरी, सजावट।

सजवाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *सजना का प्रे॰ रूप*) किसी के द्वारा किसी को सुसज्जित या अलंकृत कराना, **सजाना**।

सज़ा–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) अपराध-दंड, दंड, जेल में रहने का दंड, जुर्माना का दंड, प्राण दंड, देश निकाले का दंड, **सज़ा** (दे॰)।

सजाति-सजातीय–वि॰ (सं॰) एक ही जाति, गोत्र या वंश का, सगोत्र, सगोत, एक ही श्रेणी या भाँति के।

सजान*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सजान*) सुजान, चतुर, ज्ञानी, जानकार, चतुर, समझदार, होशियार, **सयान** (दे॰)।

सजाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सज्जा*) चीज़ों को क्रम पूर्वक यथास्थान रखना, क्रम या तरतीब लगाना, सँवारना, सुधारना, शृंगार करना, अलंकृत करना, सुसज्जित करना, **सजावना** (दे॰)।

सजायाफ्ता-सजायाब–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) किसी प्रकार का दंड या सजा भोग चुका हुआ व्यक्ति, दंड-प्राप्त।

सजाव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सजाना*) एक तरह का बढ़िया दही, सजावट, बनाव, शृंगार, सज-धज।

सजावट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सजाना+आवट प्रत्य.*) सज्जित होने का भाव या धर्म, सजाव, शृंगार, बनावट।

सजावन*†–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ दे॰ (हि॰ *सजाना*) सजाने या तैयार करने की क्रिया, सजावट, **सजावनि**।

सजावल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सजाबुल*) सरकारी महसूल या कर उगाहने वाला कर्मचारी, तहसीलदार, जमादार, सिपाही, नहर की सिंचाई का कर वसूल करने वाला, एक कर्मचारी। संज्ञा, स्त्री॰ **सजावली**।

सजीउ*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *सजीव*) जीवन-युक्त, जीता हुआ।

सजीला–वि॰ दे॰ (हि॰ *सजाना+ईला प्रत्य.*) छैला, सुंदर, रँगीला, मनोहर, रसीला, सजधज से रहने वाला, पानी या कांति से युक्त। स्त्री॰ **सजीली**।

सजीव–वि॰ (सं॰) जिसमें जीव या जान हो, फुरतीला, तेज़, स्फूर्तिवान्, ओजवान, जीवन-युक्त, जीवित। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सजीवता**।

सजीवन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संजीवनी*) एक विख्यात औषधि जिससे मृत व्यक्ति भी जी उठता है, संजीवन। वि॰ (सं॰) जीवन-युक्त।

सजीवनमूल, सजीवनमूरि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संजीवनी+मूल*) एक औषधि जिससे मरा आदमी भी जी उठता है, अमृत-मूल, **अमियमूरि** (दे॰)।

सजीवनीमंत्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *संजीवन+मंत्र*) मृतक को भी जिलाने वाला मंत्र, **सजीवन मंत्र**।

सजुता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संयुता*) संयुता नामक छंद (पिं॰)।

सजूरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक मिठाई।

सजोना, सँजोना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सजाना*) सजाना, अलंकृत करना, सँजोना, रक्षित तथा एकत्रित रखना। स॰ रूप॰–**संजोवना**।

सजोयल–वि॰ दे॰ (हि॰ *संजोयल*) सुसज्जित, तैयार। एकत्रित तथा रक्षित किया हुआ।

सज्ज*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साज*) साज़, साज-सामान, असबाब, चीज़, वस्तु।

सज्जन–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सत्+जन*) **सुजन** (दे॰), भलामानुस, अच्छा आदमी, आर्य, श्रेष्ठ पुरुष, शरीफ़, प्रियतम, प्रिय। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सजाने की क्रिया या भाव।

सज्जनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भलमंसी, भलमंसाहत, सौजन्य, **सुजनता** (दे॰)।

सज्जा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सजाने का भाव या क्रिया, सजावट, वेष-भूषा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शय्या*) शय्या, पलँग, खटिया, चारपाई, **सज्जादान, शय्यादान** (मृतक-संस्कार में) (दे॰)। (अं॰) डेकॉर।

सज्जित–वि॰ (सं॰) अलंकृत, सजा हुआ, आवश्यक पदार्थों से युक्त, सँवारा हुआ।

सज्जी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सर्जिका*) एक प्रकार का क्षार (औष॰)।

सज्जीखार–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *सर्जिका+क्षार*) सज्जी नमक।

सज्जुता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संयुता*) संयुता छंद (पिं॰)।

सज्ञान–वि॰ (सं॰) ज्ञानी, ज्ञान-युक्त, **सयान, सग्यान** (दे॰)। बुद्धिमान, चतुर, सावधान, सजग, सचेत, **सुजान** (दे॰)।

सज्या–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शय्या*) शय्या, पलँग, खाट,

सज्जा (दे.)।

सटक–संज्ञा, स्त्री. दे. (अनु. *सट से*) सटकने की क्रिया, चुपके से खिसक जाना, धीरे से चंपत होना, तंबाकू पीने का लचकीला लंबा नैचा, पतली लचकीली छड़ी, **सटिया, सॉंटी** (दे.)।

सटकना–क्रि. अ. (*अनु. सट से*) धीरे से भाग या खिसक जाना, चंपत हो जाना।

सटकाना–क्रि. स. दे. (*अनु. सट से*) छड़ी या कोड़े आदि से पीटना, चुपके से भगा देना, निगलना, खिसकाना।

सटकार–संज्ञा, स्त्री. (*अनु. सट*) सटकाने की क्रिया या भाव, पशुओं के हाँकने की क्रिया, **सटकार** (दे.)।

सटकारना–स. क्रि. (*अनु. सट से*) छड़ी या कोड़े आदि से सट-सट मारना।

सटकारा–वि. (*अनु.*) लंबा और चिकना साफ़, बाँसादि।

सटकारी–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) पतली और लंबी छड़ी, छोटी कंकड़ी, **सिटकारी** (दे.)।

सटना–अ. क्रि. (सं. *संस्था*) दो चीज़ों का पार्श्व लगाकर मिलना, चिपकना, मारपीट होना, समाना, घुसना। स. रूप–**सटाना,** प्रे. रूप–**सटवाना**।

सटपट–संज्ञा, स्त्री. (*अनु.*) सिट-पिटाने की क्रिया, चकपकाहट, शील, संकोच, असमंजस, दुविधा, अंड-बंड, **सट्ट-पट्ट** (ग्रा.)।

सटपटाना–क्रि. स. दे. (*अनु.*) सकुचना, सिकुड़जाना, डर जाना, दब जाना, भौचक्का होना, संशय में पड़ जाना, **सिटपिटाना** (दे.)।

सटरपटर–वि. (*अनु.*) मामूली, छोटा-मोटा, तुच्छ, व्यर्थ की चीज़ें, व्यर्थ का काम, बखेड़ा, अंड-बंड, सटर-बटर, सट्ट-पट्ट।

सटसट–क्रि. वि. (*अनु.*) शीघ्र, जल्दी, सटासट, सट सट शब्द के साथ, चटपट।

सटा–वि. (दे.) (हि. *सटना*) मिलित, मिला हुआ। संज्ञा, स्त्री. (सं.) खड़ा, घोड़े की अयाक्ष।

सटाना–स. क्रि. दे. (सं. *स+स्था या स+निष्ट*) मिलाना, दो वस्तुओं के पार्श्वों को परस्पर मिलाना, लाठी आदि से लड़ाई करना, (गुंडा.) चिपकाना, मिलाकर रखना। प्रे. रूप–**सटवाना**।

सटासट–संज्ञा, स्त्री. (दे.) तर-ऊपर, एक पर एक, लगातार, भिड़ाभिड़, ठसाठस, सटसट शब्द के साथ, रेल-पेल।

सटिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) बाँस की पतली छड़ी, लंबी पतली छड़ी, एक गहना, एक प्रकार की चूड़ी।

सटीक–वि. (सं.) वह पुस्तक जिसमें मूल के साथ उसकी टीका भी हो, व्याख्या या अर्थ-सहित। क्रि. वि. (हि.) पूर्णतया। **मु. सटीक करना (होना)** यथाचित रूप से पूर्ण करना या होना।

सट्टा–संज्ञा, पु. (दे.) इकरारनामा, एक प्रकार का व्यापारिक जुआ, अनुमान। यौ. **सट्टा-फाटका** (व्यापार)।

सट्टाबट्टा–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *सटना+बट्टा अनु.*) हेल-मेल, मेल-मिलाप, चालाकी धूर्तता-पूर्ण युक्ति, चालबाज़ी, सट्टे में हानि।

सट्टी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *हाट या हट्टी*) एक ही मेल की वस्तुओं का बाज़ार, हाट।

सठ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शठ*) धूर्त, मूर्ख, दुष्ट, अपढ़, कुपढ़, निर्बुद्धि, कमसमझ, खल, पाजी, लुच्चा, बदमाश।

सठता–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शठता*) दुष्टता, मूर्खता, कमसमझी।

सठियाना–क्रि. अ. दे. (हि. *साठ+इयाना प्रत्य.*) साठ वर्ष का होना, बुड्ढा या बूढ़ा होना, वृद्धावस्था से मंद-बुद्धि होना।

सटेरा, संदेश–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सन निकाला हुआ मंडल।

सठारा-सठौड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शुंठी*) शुंठीपाक, सोंठ के लड्डू, **सौंठौरा** (ग्रा.)।

सड़क–संज्ञा, पु. स्त्री. दे. (अ. *शरक*) चौड़ा रास्ता, चौड़ी राह, राज मार्ग या पथ।

सड़ना–क्रि. अ. दे. (*सरण*) किसी वस्तु का कोई विकार पाकर विदीर्ण होकर दुर्गंधि देना, खमीर उठना, दुर्दशा में पड़ा रहना। स. रूप–**सड़ाना,** प्रे. रूप–**सड़वाना**।

सड़ाना–क्रि. स. (हि. *सड़ना*) किसी वस्तु को पानी आदि में इस प्रकार से रखना कि वह सड़ जावे, किसी को सड़ने में लगाना। प्रे. रूप–**सड़वाना**।

सड़ाइंध-सड़ायँध–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सड़ाना+गंध*) सड़ी हुई वस्तु की महक, दुर्गंधि।

सड़ाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सड़ना*) सड़ने का भाव या कार्य।

सड़ासड़–अव्य. दे. (*अनु. सड़ से*) सड़-सड़ शब्द के साथ, जिसमें सड़-सड़ शब्द हो।

सड़ियल–वि. दे. (हि. *सड़ना+इयल प्रत्य.*) सड़ा-गला हुआ, खराब, रद्दी, तुच्छ, बुरा, नीच, बेकाम, निस्सार, व्यर्थ।

सत्–संज्ञा, पु. (सं.) परमेश्वर, ब्रह्म। वि. सत्य, नित्य, स्थायी, शुद्ध, श्रेष्ठ, पवित्र, विद्वान्, ज्ञानी, पंडित, साधु, सज्जन धीर।

सत–वि. दे. (सं. *सत्*) सत्य, सार, मूल, तत्व। संज्ञा, पु. दे. (सं. *सत्*) सभ्यतापूर्ण धर्म। **मु. सत पर चढ़ना**–पति की मृतक देह के साथ जलना या सती होना। **सत पर रहना**–पतिव्रता रहना। वि. दे. (सं. *शत*) शत, सौ। संज्ञा, पु. दे. (सं. *सत्व*)–सार, मूलतत्व, सारांश, सारभाग, जीवन-शक्ति, बल, पौरुष। वि. धात (संख्या) का संक्षेप रूप (यौगि. में)।

सतकार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सत्कार*) सम्मान, आदर, इज़्ज़त, ख़ातिरदारी।

सतकारना*–क्रि. स. दे. (सं. *सत्कार+ना हि. प्रत्य.*) सम्मान या आदर करना, सत्कार करना।

सतगुरु–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सद्गुरु*) सच्चा या अच्छा गुरु, परमात्मा।

सतजुग–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सत्ययुग*) चार युगों में से पहला युग, सत्युग, कृतयुग।

सतत–अव्य. (सं.) संतत, सदा, निरंतर, हमेशा, सदैव।

सतदल–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शतदल*) सौ पंखड़ियों का कमल।

सतनजा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *सात+अनाज*) भिन्न प्रकार के सात अन्नों का समूह या मेल।

सतपुतिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सप्त पुत्रिका*) एक प्रकार की तरोई।

सतफेरा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) ब्याह के समय का सप्तपदी-कर्म, भाँवर, ब्याह, सात परिक्रमा या प्रदक्षिणा।

सतमासा, सतवांसा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *सात+माह*) वह बच्चा जो सातवें महीने उत्पन्न हो, प्रथम गर्भिणी के सातवें मास का एक संस्कार, **सत्पमासिक** (सं.)।

सतयुग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सत्ययुग*) सत्युग।

सतरंगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सप्त+रंग+ई प्रत्य.*) सातरंगों वाली रंगीन जाज़िम, चाँदनी।

सतरंज–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *शतरंज*) शतरंज नामी खेल।

सतरंजी–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *शतरंजी*) दरी, रंगीन बिछौना, जाज़िम।

सतर–संज्ञा, स्त्री. (अ.) पंक्ति, अवली, क़तार, पाँति, रेखा, लकीर। वि. वक्र, टेढ़ा, क्रुद्ध, रुष्ट, कुपित। संज्ञा, स्त्री. (अ.) मनुष्य की मूत्रेंद्रिय, ओट, परदा, आड़। यौ. क्रि. वि. (दे.) **सतर-बतर**–तितर-बितर।

सतराना–क्रि. अ. दे. (सं. *संतर्जन*) क्रोध या कोप करना, रुष्ट होना, अप्रसन्न या नाराज़ होना, चिढ़ना। –रस.। संज्ञा, पु. (ग्रा.) **सतराइबो, सतरैबो**।

सतरौंहा†–वि. दे. (हि. *सतराना*) रोष-पूर्ण, रुष्ट, क्रोधित, अप्रसन्न, कुपित, क्रोध या कोप-सूचक।

सतर्क–वि. (सं.) सजग, सावधान, सचेत, युक्ति या तर्क से पुष्ट, तर्क-युक्त। (संज्ञा, स्त्री. **सतर्कता**)।

सतलज–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शतद्रु*) पंजाब की पाँच नदियों में से एक बड़ी नदी।

सतलड़ी-सतलरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सात लड़ियों की माला। पु. **सतलड़ा**।

सतवंती–वि. स्त्री. दे. (हि. *सत्य+वंती प्रत्य.*) पतिव्रता, सती, सतवाली।

सतसंग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सत्संग*) सत्संग, अच्छा साथ, सुसंगति। वि. दे. **सतसंगी**–सुसंगति वाला, यारवाश।

सतसंगति–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सत्संगति।

सतसई–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *सप्तशती*) सात सौ पद्यों वाला ग्रंथ, सप्त शती, **सत सय्या** (दे.)।

सतह–संज्ञा, स्त्री. (अ.) किसी पदार्थ का ऊपरी तल या भाग, धरातल, वह विस्तार जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई ही हो।

सताग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शतांग*) रथ, गाड़ी, यान।

सतानन्द–संज्ञा, पु. (दे.) गौतम ऋषि के पुत्र और राजा जनक के पुरोहित।

सताना–क्रि. अ. दे. (सं. *संतापन*) दुःख या कष्ट देना, सन्ताप देना, हैरान, परेशान या दिक करना, **सतावना** (दे.)।

सतालू–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सप्तलुक*) शप्तालू, आडू नामक

एक फल।

सतावना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *संतापन*) सताना, दिक करना, हैरान या परेशान करना, संताप या दुःख देना।

सतावर, सतावरि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शतावरी*) एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषधि के काम आते हैं, शतावरी, शतमूली।

सतिवन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सप्तपर्ण*) छतिवन, एक औषधि।

सतिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *स्वास्तिक*) मंगल-सूचक एक चिह्न, 卐 स्वस्तिक।

सती–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) पतिव्रता, साध्वी। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव जी को विवाही थी। मृत पति के साथ जीते जी चिता में जल जाने वाली स्त्री, एक नगण और गुरु एक वर्ण का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

सतीत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पतिव्रत्य, सतीपन, सती होने का भाव।

सतीत्वहरण, सतीत्वापहरण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूसरे की पत्नी की इज़्ज़त जबरदस्ती बिगाड़ना, सतीत्व नष्ट करना, या बिगाड़ना, पर स्त्री प्रसंग, बलात्कार।

सतीपन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सतीत्व*) सतीत्व, पतिव्रत्य।

सतीर्थ–वि॰ (सं॰) सहपाठी, साथ का पढ़ने वाला।

सतीवाड़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सती का स्थान, सतियों का श्मशान।

सतुआ-सतुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सत्तू*) चने और जौ या और किसी भूने हुए अनाज का आटा, **संतुवा, सत्तू** (ग्रा॰)।

सतुआ-सक्रांति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ *सतुआ+संक्रांति सं॰*) मेष की संक्रांति जब सतुआ दान किया जाता है, **सेतुवा-सकराँत** (ग्रा॰)।

सतून–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) खम्भा, स्तंभ।

सतूना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सतून*) बाज पक्षी की एक प्रकार की झपट।

सतोखना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *संतोषण*) समझाना, संतोष देना, संतुष्ट करना, दिलासा या ढाढ़स देना, **सँतोखना** (दे॰)।

सताखी–वि॰ दे॰ (सं॰ *संतोषी*) संतुष्ट, संतोषी, **सँतोखी** (दे॰)।

सतोगुण–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *सत्वगुण*) तीन गुणों में से प्रथम, सत्वगुण, सुकर्म में लगाने वाला गुण।

सतोगुणी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सतोगुण+ई प्रत्य॰*) सात्विक, सतोगुण वाला, सद्‌गुणी, सुकर्मी, सदाचारी, सच्चरित्र।

सत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्य, सार, ब्रह्म। वि॰ सत्य, ठीक, भला, प्रशस्त।

सत्कर्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सत्कर्मन्*) सुकर्म, धर्म या पुण्य का कार्य, अच्छा कार्य। वि॰ **सत्कर्मी**।

सत्कार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्मान, आदर, आतिथ्य, ख़ातिरदारी, इज़्ज़त, श्रेष्ठ कार्य।

सत्कार्य–वि॰ (सं॰) सत्कार करने योग्य। संज्ञा, पु॰ (सं॰) अच्छा काम, उत्तम कर्म।

सत्क्रिया–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सत्कार, आदर, सत्कर्म, सत्य या अच्छी क्रिया।

सत्कीर्ति–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुयश, नेकनामी, सुकीर्ति।

सत्कुल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्तम या श्रेष्ठ वंश, अच्छा या बड़ा कुटुम्ब या परिवार। वि॰ **सत्कुलीन**। संज्ञा, स्त्री॰ **सत्कुलीनता**।

सत्त्व–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सत्व*) सारांश, सत, सारभाग, मुख्य तत्व, काम की वस्तु। ‡*संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सत्य*) सत्य, सच, सतीत्व, पातिव्रत्य।

सत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्थिति, अस्तित्व, होने का भाव, हस्ती (फ़ा॰) शक्ति, अधिकार, हुकूमत, प्रभुत्व। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सात*) ताश आदि का, सात बूटियों वाला पत्ता।

सत्ताधारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सत्ताधारिन्*) अधिकारी, हाकिम, अफ़सर।

सत्ता-शास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह शास्त्र जिसमें मूल पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो, **सत्ता-विज्ञान**।

सत्तू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संयुक्त*) सित्तू, **सँतुआ**, भुने हुए चने और जौ का आटा, **सतुआ** (दे॰)।

सत्पथ, सत्पंथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) **सन्मार्ग**, उत्तम मार्ग, सत्पंथ, अच्छी चाल, सदाचार, एक ग्रंथ विशेष। वि॰ **सत्पथी**।

सत्पात्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुपात्र, दानादि के योग्य, अच्छा व्यक्ति, सदाचारी, विद्वान्, सुकर्मी। संज्ञा, स्त्री॰ **सत्पात्रता**।

सत्पुरुष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भलामानुष, भला आदमी, परमेश्वर (कबी॰)।

सत्य–वि॰ (सं॰) सच, ठीक, सही, यथार्थ, वास्तविक, तथ्य, असल, साँच। संज्ञा, पु॰ ठीक या यथार्थ बात, उचित पक्ष, धर्म की बात। न्याय-नीति के अनुकूल बात, विकार-रहित वस्तु, (वेदा॰), ऊपर के सात लोकों में से सर्वोपरि प्रथम लोक, विष्णु, कृत युग, चार युगों में से प्रथम युग।

सत्य काम–वि॰ यौ॰ (सं॰) सत्यानुरागी, सत्य का प्रेमी, सत्वेछु।

सत्यतः–अव्य॰ (सं॰) वस्तुतः, सचमुच, वास्तव में, यथार्थतः।

सत्यता–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सच्चाई सचाई, यथार्थता, वास्तविकता।

सत्यधाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु-लोक, स्वर्ग, बैकुंठ, परमधाम।

सत्यनाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राम नाम।

सत्यनारायण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु।

सत्यभामा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सज्यजीत की कन्या तथा श्री कृष्ण जी की आठ पटरानियों में से एक।

सत्यभाषण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सत्य बोलना। वि॰ **सत्यभाषी**।

सत्ययुग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चार युगों में से प्रथम युग, कृत युग।

सत्यवती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मत्स्यगंधा नाम की धीवर कन्या तथा व्यास या कृष्ण द्वैपायन जी की माता। गाधि कन्या और ऋचीक पत्नी। वि॰ (सं॰) सत्य वाली।

सत्यबादी–वि॰ (सं॰ *सत्यवादिन्*) सच बोलने या कहने वाला, अपनी बात को पूरा करने वाला, **सत्य-भाषी**। स्त्री॰ **सत्यवादिनी**।

सत्यवान–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सत्यवत्*) शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र और पतिव्रता सावित्री का पति जिसे उसने अपने सतीत्व के प्रभाव से यम से बचाया था (पुरा॰)।

सत्यव्रत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सच बोलने का नियम या प्रण। वि॰ (सं॰) सत्य-भाषण का व्रत रखने वाला। वि॰ **सत्यव्रती**।

सत्यसंध–वि॰ (सं॰) सत्य-प्रतिज्ञा, वचनों को पूरा करने वाला। स्त्री॰ **सत्यसंधा**। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सच्ची प्रतिज्ञा वाला, रामचंद्र, जन्मेजय। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सत्य-संधता**।

सत्यग्रह-सत्याग्रह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी सच्चे या न्याय-संगत पक्ष की स्थापना के हेतु सदा शांति-पूर्वक लगातार अपना हठ निवाहना, सत्य के पक्ष पर आग्रह करना। वि॰ **सत्याग्रही**।

सत्यानास–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सत्ता+नाश*) विनाश, मटियामेट, सर्वनाश, नष्ट-भ्रष्ट, ध्वंस, बरबादी। **मु॰ सत्यानास करना** (दे॰)–मटियामेट करना, बरबाद करना। **सत्यानास जाना या होना**–वा॰ (दे॰) नष्ट होना, मटियामेट होना, खराब होना, बरबाद होना।

सत्यानासी–वि॰ दे॰ (हि॰ *सत्यानाश+ई प्रत्य॰*) मटियामेट या सत्यानास करने वाला, चौपट करने वाला, विनाशक, खराबी या बरबादी करने वाला। वि॰ यौ॰ (सं॰ *सत्य+अनाश+ई प्रत्य॰*) सत्य और अनाश वाला ब्रह्म। संज्ञा, स्त्री॰ एक कटीला पौधा, **भड़भाँड़, घमोय** (प्रान्ती॰)।

सत्यासुत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *सत्य+अनृत*) वाणिज्य, व्यापार, सौदागरी। वि॰ यौ॰ (सं॰) सत्य और झूठ।

सत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक सोमयाग, यज्ञ, गृह, धन, सदावर्त्त, क्षेत्र, दीन-असहायों को जहाँ भोजनादि बँटे।

सत्रु–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शत्रु*) रिपु, अरि, शत्रु, वैरी, दुश्मन। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सत्रुता**।

सत्रुघन-सत्रुहन*‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शत्रुघ्न*) राम जी के छोटे भाई, **शत्रुघ्न**।

सत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्ता, हस्ती (फ़ा॰), अस्तित्व, मूल, तत्व, सारांश, सार, चित की प्रवृत्ति, आत्म-तत्व, मनोवृत्ति, चितत्व, चैतन्य, जीव, तत्व, प्राण, तीन गुणों में से प्रथम गुण, सतोगुण। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शक्ति, बल, पौरुष, पवित्रता, शुद्धता। विलो॰ **निस्सतत्व**।

सत्वगुण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रकृति के तीन गुणों में से प्रथम गुण, जो जीव को सुकर्मों की ओर प्रवृत्त करने वाला, प्रकाशक और इष्ट है, **सतोगुण**। वि॰ (सं॰) **सत्यगुणी**।

सत्वर–अव्य॰ (सं॰) शीघ्र, जल्द, तुरंत, त्वरित। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सत्वरता**।

सत्संग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अच्छा संग या साथ, सज्जनों या

साधु पुरुषों की संगति, भले मनुष्यों का साथ, सत्पुरुषों के साथ बैठना उठना और रहना।

सत्संगति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अच्छा साथ, सज्जनों या साधु का साथ, भले आदमियों में उठना-बैठना।

सत्संगी—वि॰ (सं॰ *सत्संगिन*) मेल-मिलाप रखने वाला, अच्छे संग में रहने वाला, मिलन-सार।

सथरी-साथरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सस्थली*) पुआल आदि तृण की शय्या।

सथशेष—संज्ञा, पु॰ (सं॰) रग-भूमि में मरे वीरों की लोथें। (लाशें)।

सथिया-सतिया—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वस्तिक*) मङ्गल-सूचक या ऋद्धि-सिद्धि-दायक चिह्न, 卐 स्वस्तिक चिह्न (卐), फोड़ों या आँख के रोगों की चिकित्सा करने वाला, जर्राह।

सद—वि॰ दे॰ (सं॰ *मद् या सत्*) नवीन, ताजा। क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ सद्य) तुरंत, शीघ्र, सत्वर, सद्यः त्वरित। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सत्व*) स्वभाव, आदत, प्रकृति; (फ़ा॰) सौ की।

सदका—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सदकः*) दान, खैरात, निछावर, उतार (दे॰)।

सदन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सदा, गृह, मकान, घर, मन्दिर, स्थिरता, विराम, एक राम-भक्त क़साई, **सदना** (दे॰)।

सदबरग-सदबर्ग—संज्ञा, पु॰ (फा॰) गेंदा का फूल।

सदम—संज्ञा, पु॰ (दे॰) सदा (सं॰) घर।

सदमा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *सदमः*) चोट, धक्का, आघात, दुःख, रंज।

सदय—वि॰ (सं॰) दयावान्, दयालु, दया-युक्त। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सदयता**।

सदर—वि॰ (अ॰) मुख्य, प्रधान। संज्ञा, पु॰ केन्द्र स्थान, शासक-स्थान। यौ॰ **सदर-मुकाम, सदर-दरवाज़ा**।

सदर आला—संज्ञा, पु॰ (अ॰) छोटा जज।

सदरी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक प्रकार की बंडी या कुरती, बिना बाँहों की कुरती।

सदर्थ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्यार्थ, सदुदेश्य। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सदर्थता**।

सदर्थना*—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सदर्थ, समर्थन*) पुष्ट या समर्थन करना, पक्का या दृढ़ करना।

सदसत्-सदसद्—वि॰ यौ॰ (सं॰ *सत्+असत्*) सत्यासत्य, सच-झूठ।

सदसद्विवेक—संज्ञा, पु॰ यो॰ (सं॰) भले-बुरे या सत्यासत्य का ज्ञान, अच्छे-बुरे की पहिचान। वि॰ **सदसद्विवेकी**।

सदसद्विवेचन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सत्या-सत्य की विवेचना। वि॰ सदसद्विवेचक।

सदसि-सदस—संज्ञा, पु॰ (सं॰) गृह, सभा।

सदस्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *मद्रसिभवः*) सभासद, मेम्बर (अ॰), सभा या समाज का मनुष्य, यज्ञ करने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सदस्यता**।

सदहा—वि॰ (फा॰) सैकड़ों।

सदा—अव्य॰ (सं॰) सदैव, सर्वदा, निरंतर, सतत, हमेशा, नित्य, अनुदिन, लगातार, संतत। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) गूँज, प्रतिध्वनि, शब्द, आवाज़, पुकार।

सदाई—अव्य॰ दे॰ (सं॰ *सदा*) हमेशा, नित्य।

सदाचरण, सदाचार—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अच्छा व्यवहार, शुद्ध या शुभ आचरण, भलमनसाहत।

सदाचारी—संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सदाचारिन्*) धर्मात्मा, अच्छे व्यवहसार या आचरण वाला। स्त्री॰ **सदाचारिणी**।

सदादेश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्रेष्ठ आज्ञा।

सदाफल—वि॰ यौ॰ (सं॰) सदैव फलने वाला पेड़। संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऊपर, गूलर, श्रीफल, बेल, एक प्रकार का नींबू, नारियल।

सदाबरत—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सदाव्रत*) प्रतिदिन दीन-दुखियों को भोजन बाँटना, भूखों-कंगालों को बाँटा जाने वाला भोजन खैरात, दान, **सदाबर्त** (दे॰)।

सदाबत्त—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सदाव्रत*) दीनों को नित्य भोजन देना, सदाबरत, दुखियों को दिया गया भोजन।

सदाबहार—वि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *सदा*+फ़ा॰ *बहार*) वह पौधा जो सदैव फूलता रहे, जो सदा हरा-भरा रहे (पेड़)

सदाशय—वि॰ यौ॰ (सं॰) उदार और श्रेष्ठ भाव वाला व्यक्ति, सज्जन, भलामानुस, महाशय। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सदाशयता**।

सदाशिव—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नित्य कल्याणकारी, महादेव जी, **सदासिव** (दे॰)।

सदासुहागिन-सदासुहागिनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) वेश्या, पतुरिया, रंडी, (व्यंग्य॰) फूलों का एक पौधा।

सदिया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फा॰ *सादः*) भूरे रंग का लाल पक्षी, लाल की मादा।

सदी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शताब्दी, सैकड़ा, सौ का समूह, सौ वर्षों का समूह, **सही** (दे॰)।

सदुपदेश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) उत्तम शिक्षा, अच्छी सिखावन, या सलाह, सुन्दर उपदेश। वि॰ **सदुपदेशक, सदुपदेष्टा**।

सदूर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शार्दूल*) व्याघ्र, सिंह, चीता, शरभजंतु, एक राक्षस, दोहे का एक भेद (पिं॰) एक पक्षी, **सारदूल** (दे॰)।

सदृश–वि॰ (सं॰) समान, तुल्य, सम, बराबर, अनुरूप। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **सादृश्य**। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सदृशता**।

सदेश–अव्य॰ (सं॰) समीप, पास, निकट।

सदेह–क्रि॰ वि॰ (सं॰) बिना शरीर छोड़े, इसी शरीर से, शरीरी, मूर्त्तिमान, सशरीर।

सदैव–अव्य॰ यौ॰ (सं॰ *सदा+एव*) सर्वदा, सदा।

सदोष–वि॰ (सं॰) दोष या अपराध-युकत, दोषी, अपराधी। (विलो॰ **निर्दोष, अदोष**)। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सदोषता**।

सद्गंधि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुगंधि, अच्छी महक, सुवास।

सद्गति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मरने पर उत्तम लोक का निवास, मरणोपरान्त उत्तम दशा की प्राप्ति, सुगति, परमगति।

सद्गुण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अच्छा और उत्तम गुण या लक्षण, अच्छी सिकत या तारीफ़। वि॰ **सद्गुणी**।

सद्गुरु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्तम या अच्छा गुरु, श्रेष्ठ शिक्षक, परमात्मा।

सद्ग्रंथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्रेष्ठ ग्रंथ, अच्छी पुस्तक, सन्मार्ग-प्रदर्शक ग्रंथ।

सद्दल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समूह, वृन्द।

सद्भाव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सच्चा और उत्तम भाव, सदाशय, प्रेम, प्रीति और हित का भाव, मैत्री, मेलजोल, अच्छी नियत, सद्विचार।

सद्भावना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दर और श्रेष्ठ भावना।

सद्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सद्मन्*) सदन, गृह, घर, मकान, संग्राम, युद्ध, भूमि और आकाश।

सद्य–अव्य॰ दे॰ (सं॰) अभी, सत्वर, तुरंत, शीघ्र, इसी वक्त या समय, आज ही।

सद्यः–अव्य॰ (सं॰) अभी, तुरंत, शीघ्र।

सद्यः प्रसूता–वि॰ स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह स्त्री जिसने तत्काल प्रसव किया हो।

सद्य स्नात––वि॰ यौ॰ (सं॰) तत्काल या अभी नहाया हुआ।

सधना–क्रि॰ अ॰ (हि॰ *साधना*) पूरा या सिद्ध होना, काम होना, या चलना, मतलब निकलना, अभ्यस्त होना, हाथ बैठना (सधना), प्रयोजन की सिद्धि के अनुकूल होना, गौं पर चढ़ना, भार सँभलना, निशाना ठीक बैठना। स॰ रूप–**सधाना, सधावना,** प्रे॰ रूप–**सधवाना**।

सधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऊपर का ओंठ।

सधवा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वह स्त्री जिसका स्वामी जीता हो, **सुहागिन** (दे॰) सौभाग्यवती।

सधवाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *सधना का प्रे॰ रूप*) पूरा करवाना, सधाना।

सधाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सधना का प्रे॰ रूप*) साधने का कार्य दूसरे से कराना, किसी को कोई वस्तु या भार पकड़ाना। स॰ रूप–**सधावना,** प्रे॰ रूप–**सधवाना**।

सनंदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्म जी के चार मानस पुत्रों में से एक पुत्र।

सन्–संज्ञा, पु॰ (अ॰) वर्ष, साल, संवत्सर, संवत्, कोई वर्ष विशेष।

सन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शण*) एक पौधा जिसकी छाल के रेशों से रस्सी आदि चीज़ें बनती हैं। *†*प्रत्य॰* (अव॰) (सं॰ *संग*) से साथ (करण-विभक्ति)। संज्ञा, स्त्री॰ (अनु॰) अति वेग से निकलने का शब्द, वायु-प्रवाह का शब्द। वि॰ (*अनु॰ सुन*) सन्न, सन्नाटे में आया हुआ, स्तब्ध (सं॰ *शून्य*), चुप, मौन।

सनई–संज्ञा, दे॰ (हि॰ *सन*) छोटी जाति का सन।

सनक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शंका*) किसी बात की धुन, **जुनून, ख़फ़्त** (फा॰), मन की झोंक, सवेगमन की प्रवृत्ति, मौज। वि॰ **सनकी**। **मु॰ सनक आना या सवार होना (चढ़ना)**–धुन होना, जुनून सवार होना। संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मा जी के चार मानस-पुत्रों में से एक पुत्र।

सनकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सनक*) पागल हो उठना, किसी धुन में हो जाना, पगलाना, नितांत मौन या निरुत्तर

रहना, शांत रहना।

सनकाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सनक*) सनक चढ़ाना, इशारा करना, सैन करना। **सनकियाना** (प्रान्ती॰)

सनकारना*†–क्रि॰ स॰ दे॰(हि॰ *सैन करना*) **सनकाना,** संकेत या इशारा करना, सैन करना।

सनकियाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सनक*) पागल होना, सिड़ी होना। क्रि॰ स॰ (दे॰) पागल बनाना, सनक चढ़ाना। क्रि॰ स॰ (दे॰) संकेत या इशारा करना, (आँख से) सैन करना।

सनत्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मा जी।

सनत्कुमार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वैधात्र, ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्रों में से एक पुत्र।

सनद–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) प्रमाण, दलील, सुबूत, प्रमाण-पत्र, सर्टिफिकेट (अं॰)। **मु॰ सनद रहना (होना)**–प्रमाण रहना (होना)।

सनदयाफ्ता–वि॰ (अ॰ *सनद+याफ़्तः* फ़ा॰) जिसे किसी बात की सनद मिली हो।

सनदी–संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ (अ॰ *सनद*) जिसके पास सनद हो, ठीक-ठीक हाल। वि॰ (दे॰) प्रमाण-पुष्ट।

सनना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संधम्*) एक में मिलना, लिप्त या लीन होना, गीला होकर किसी वस्तु में मिलना। स॰ रूप–**सानना,** प्रे॰ रूप–**सनाना, सनवाना**।

सनम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रिय, प्यारा, मित्र, दोस्त।

सनमान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सम्मान*) सत्कार, आदर सम्मान, ख़ातिर।

सनमानना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सम्मान*) सत्कार या आदर करना, ख़ातिर करना।

सनमुख*–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *सम्मुख*) सम्मुख, सामने।

सनसनाना–क्रि॰ अ॰ (अनु॰) हवा के चलने या पानी के खौलने का शब्द होना, सनसन शब्द होना या करना, वेग से उड़ना।

सनसनाहट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सनसनाना*) हवा के तेज़ी से चलने या पानी के खौलने का शब्द।

सनसनी–संज्ञा, स्त्री॰ (*अनु॰ सन सन*) झुन-झुनी, घबराहट, उद्वेग, सन्नाटा, खलभली, संवेदन-सूत्रों में एक विशेष स्पंदन, भयादि से उत्पन्न स्तब्धता।

सनहकी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *सनहक*) रकाबी, सनहक, मिट्टी का एक बरतन (मुसलमान॰)।

सनाका–क्रि॰ वि॰ (दे॰) आश्चर्यादि से स्तब्ध, मौन। **मु॰ सनाका खाना**–सन्न या स्तब्ध होना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) सवेग वायु-प्रवाह का शब्द। **मु॰ सनाका मरना (भरना)**–सवेग वायु चलना।

सनाढ्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्राह्मणों की दश मुख्य जातियों में से गौड़ों के अंतर्गत एक जाति।

सनातन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्राचीन काल, या पुराना समय, प्राचीन परंपरा, बहुत समय से चला आया कार्य-क्रम, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म, परमात्मा ब्रह्मा का एक मानसपुत्र। वि॰ बहुत पुराना, अत्यंत प्राचीन, जो बहुत समय से चला आता हो, शाश्वत, परंपरागत, नित्य, सदा। वि॰ (सं॰) **सनातनी**। यौ॰ (हि॰ *सना+तन*) किसी वस्तु से लिप्त देह।

सनातनधर्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अति प्राचीन या परंपरागत धर्म, पौराणिक धर्म, वेद, पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-महात्म्यादि को मानने वाला वर्तमान हिन्दू-धर्म का एक रूप विशेष। वि॰ संज्ञा, पु॰ (सं॰) **सनातनी, सनातनधर्मी**।

सनातन पुरुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु जी, परमेश्वर, ब्रह्म, पुराण पुरुष।

सनातनी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सनातन+ई प्रत्य॰*) जो अत्यन्त प्राचीन काल से चला आता हो, ईश्वर, सनातन-धर्मावलम्वी, **सनातनधर्मी**।

सनाथ–वि॰ (सं॰) वह पुरुष जिसके कोई रक्षक या स्वामी हो, **सनाथा** (दे॰)। स्त्री **सनाथा**।

सनाय–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *सनाऽ*) एक पोधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं, **सोनामुखी** (प्रान्ती॰)।

सनाह–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सन्नाह*) बकतर, कवच, जिरह-बख़्तर, लोहे का अँगरखा। वि॰ (दे॰ *स+नाह=नाथ*) सनाथ।

सनि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शनि॰*) शनिश्चर, शनैश्चर, एक ग्रह और दिन।

सनिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक सन या टसर का वस्त्र।

सनीचर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं *शनैश्चर*) एक ग्रह, रविवार से पूर्व का एक दिन।

सनीचरा–वि॰ दे॰ (हि॰ *सनीचर*) अभागा, अभागी, कमबख़्त, **सनिचरहा** (ग्रा॰)।

सनीचरी–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *सनीचर*) शनि-ग्रह, शनि की दुखद दशा।

सनीड़–वि॰ (सं॰) निकटवर्ती, समीपी या पास का। क्रि॰ वि॰ (सं॰) पास या समीप में। वि॰ (सं॰) नीड़ या घोसले वाला।

सनेह*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्नेह*) प्रेम, नेह, प्यार, तेल।

सनेहिया*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सनेह*) प्रेमी, स्नेह करने वाला, नेही।

सनेही–वि॰ दे॰ (सं॰ *स्नेही=स्नेहिन्*) नेही, स्नेह या प्रेम करने वाला, प्रेमी।

सनै सनै–क्रि॰ वे॰ दे॰ (सं॰ *शनैः शनैः*) धीरे-धीरे, क्रमशः, रसे रसे।

सनोबर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) चीड़ का पेड़।

सज–वि॰ दे॰ (सं॰ *शून्य*) जब, भयादि से स्तब्ध, संज्ञा-शून्य, भौचक, चुप।

सन्नद्ध–वि॰ (सं॰) तैयार, उद्यत, कटिबद्ध, बँधा, लगा और जुड़ा हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सन्नद्धता**।

सन्नाटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शून्य*) नीरवता, निस्तब्धता, निःशब्दता, निर्जनता, एकांतता, शून्यता, निरालापन, स्तब्धता। **मु॰ सन्नाटे में आना**–स्तब्ध रह जाना और कुछ कहते-सुनते न बनना, चुप रह जाना। एक दम खामोशी, चुप्पा, उदारसीनता, चहल-पहल का अभाव, गुलज़ार न रहना। **मु॰ सन्नाटा खींचना या मारना**–एक-बारगी मौन हो जाना। उदासी, उन्मनता। **सन्नाटा छा जाना**–गुलज़ार न रहना, उदासी फैल जाना, रौनक मिट जाना, चहल-पहल न रह जाना। **सन्नाटे में**–अकेले, जन शून्यता में, वेग से। वि॰ स्तब्ध, नीरव, निर्जन, शून्य। संज्ञा, पु॰ (*अनु॰ सन-सन*) सवेग वायु प्रवाह का शब्द हवा को चीर कर तेज़ी से निकल जान का शब्द। **मु॰ सन्नाटे से जाना**–वेग से चलना।

सन्नाह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कवच, जिरहबख़्तर, लोहे का अँगरखा, **सनाह** (दे॰)।

सन्निकट–अव्य॰ (सं॰) समीप, पास, निकट, अति समीप। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सन्निकटता**।

सन्निकर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाता, लगाव, रिश्ता, संबंध, समीपता, निकटता। वि॰ **सन्निकृष्ट**।

सन्निधान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सामीप्य, समीपता, निकटता, स्थापित करना।

सन्निधि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) संहिता, निकटता, समीपता, पड़ोस। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **सान्निध्य**।

सन्निपात–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ही साथ गिरना या पड़ना, संयोग, समाहार, मिलाप, मेल, एकत्र या इकट्ठा होना, एक में जुड़ना, या जुटना, कुछ, बात, पित्त तीनों का एक ही साथ बिगड़ जाना, **त्रिदोष** (वैद्य॰), **सरसाम** (फा॰) यौ॰ **सन्निपात-ज्वर**।

सन्निवेष्ट–वि॰ (सं॰) एक ही साथ जमा या बैठा हुआ, धरा या रखा हुआ, प्रतिष्ठित, स्थापित, समीपवर्ती, पास या निकट का पैठा हुआ।

सन्निवेश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्थिति होना, रखने, बैठने-बैठाने आदि की क्रिया, जमना, जड़ना, लगाना, समाना, रखना, धरना, निवास, स्थान, घर, इकट्ठा होना, जुटना, समाज, समूह, बनावट, गढ़न या गठन। वि॰ **संन्निवेशित, संन्निवेशनीय**। संज्ञा, **सन्निवेशन**।

सन्निहित–वि॰ (सं॰) साथ या पास रखा हुआ, समीपस्थ, निकटस्थ, ठहराया या टिकाया हुआ, अंतर्गत।

सन्मार्ग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्पथ, श्रेष्ठ मार्ग। विलो॰ **कुमार्ग**। वि॰ **सन्मार्गी**।

सन्मान–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्मान, आदर-सत्कार। क्रि॰ स॰ (दे॰) **सन्मानना**। वि॰ **सन्माननीय, सन्मानित**।

सन्मुख–अव्य॰ (सं॰) सम्मुख, सामने।

सन्यास–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *संन्यास*) भव जाल के छोड़ने या संसार से अलग होने की अवस्था, त्याग, वैराग्य, यति-धर्म, चौथा आश्रम। यौ॰ **सन्यास-धर्म**।

सन्यासी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *संन्यासिन्*) त्यागी, विरागी, जिसने सन्यास ले लिया हो, चौथे आश्रम वाला। स्त्री॰ **सन्यासिनी, संन्यासिन**।

सपक्ष–वि॰ (सं॰) तरफदार, जो अपने पक्ष में हो, पोषक, समर्थक, **स्वच्छ** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ तरफ़दार, सहायक, साथी, मित्र, साध्यवाला दृष्टांत या विषय (न्याय), पंख वाला, **सपच्छ** (दे॰)।

सपत्नी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक ही पति की दूसरी स्त्री, **सौत, सौतिन, सवति**। यौ॰ **सपत्नीभाव**–सौतिया डाह।

सपत्नीक–वि॰ (सं॰) स्त्री-सहित।

सपथ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शपथ*) सौगंध, क़सम।

सपदि–अव्य॰ (सं॰) तत्काल, तुरंत, फौरन, शीघ्र, सत्वर, त्वरित, तत्-क्षण।

सपन, सपना–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वप्न*) स्वप्न, ख़्वाब, अर्धसुप्तावस्था की बातें, निद्रा दशा के दृश्य।

सपरदाई–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संप्रदायी*) रंडी के साथ तबला-सारंगी बजाने वाला, समाजी, **सपदा, सफदा, भँडुआ** (ग्रा॰)।

सपरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संपादन*) काम पूरा या समाप्त होना, निबटना, हो सकना, पार लगना, जा सकना, स्नान करना, नहाना।

सपराना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सपरान*) काम पूरा करना, समाप्त करना, स्नान कराना। प्रे॰ रूप॰–**सपरवाना**।

सपरिकर–वि॰ (सं॰) सेवकों या अनुचर-वर्ग के साथ, ठाट-बाट के साथ, कमर में फेंट बाँधे हुए, कटिबद्ध, सबद्ध, बद्धपरिकर।

सपाठ–वि॰ दे॰ (सं॰ *सपट्ट*) समतल, बराबर, हमवार, चिकना, साफ, समथल, समथर। (दे॰) जिस पर कोई उभाड़ न हो।

सपाटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सर्पण*) दौड़ने या चलने का वेग, तेज़ी, झोंका, झपट, दौड़, तीव्रगति। **मु॰ सपाटा भरना (लगाना)**–तेज़ी से भागना। **यौ॰ सैर-सपाटा-घूमना-फिरना, भ्रमण करना**।

सपाद–वि॰ (सं॰) चरण-सहित, एक और उसका चौथाई मिला, सवा, **सवाया**।

सपिंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ही वंश का व्यक्ति जो एक पितरों को पिंड-दान करने में सम्मिलित हो।

सपिंडी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मृतक को अन्य पितरों से मिलाने का कर्म विशेष।

सपुत्र–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सुपुत्र*) अच्छा लड़का, **सुपुत्र, सपूत** (दे॰)। वि॰ (सं॰) पुत्र के साथ।

सपूत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सत्पुत्र, सुपुत्र*) अच्छा लड़का, सुपुत्र, **सुपूत**, सत्पुत्र। विलो॰ **कुपूत-कपूत**। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सपूती**।

सपूती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सपूत+ई प्रत्य॰*) लायकी, योग्यता, सुपूत होने का भाव। वि॰ (दे॰) योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता।

सपेरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साँप*) **सँपेरा**, साँप वाला, मदारी।

सँपेला-सँपोला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साँप+एला, ओला प्रत्य॰*) साँप का बच्चा, छोटा, साँप, **सँपेलवा** (ग्रा॰)।

सप्त–वि॰ (सं॰) गिनती में सात।

सप्तऋषि-सप्तर्षि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *सप्तर्षि*) सात ऋषियों का समूह।

सप्तक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सात पदार्थों का समूह, सात स्वरों का समूह (संगी॰)।

सप्तजिह्व–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) **सप्तर्चिपा**, सात जीभों वाला, अग्नि, आग।

सप्तताल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ताड़ के सात वृक्ष जिन्हें एक ही वाण से राम ने गिरा कर बालि-वध की क्षमता प्रगट की थी।

सप्तति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सत्तर, 70 की संख्या।

सप्तदश–वि॰ यौ॰ (सं॰) सत्तरह, **सत्र** (दे॰)।

सप्तद्वीप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वी में स्थल के सात मुख्य बड़े विभाग, जंबू, पक्ष कृश, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप। यौ॰ **समद्वीप-नवखंड**।

सप्तपदा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भाँवर, भौंरी, ब्याह, विवाह में वर-वधू की अग्नि के चारों ओर परिक्रमा की रीति, **भाँवरि, भँवरी** (दे॰)। **भाँवरी, भउरी** (ग्रा॰)।

सप्तपर्ण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) छतिवन वृक्ष।

सप्तपर्णी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लज्जावंती लता, लजालू।

सप्तपाताल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वी के नीचे के सात लोक, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।

सप्तपुर–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सात पवित्र नगर या तीर्थ–अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, (माया) काशी, कांची, अवंतिका (उज्जवनी) द्वारका।

सप्तन–वि॰ (सं॰) सातवाँ। स्त्री **सप्तमी**।

सप्तमी–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) सातवीं, **सप्तमी, सप्तिमी** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किसी पक्ष की सातवीं तिथि, अधिकरण

कारक ब्लाक.)।

सप्तर्षि–संज्ञा, पु. (सं.) सात ऋषियों का समूह या मंडल–गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ कश्यप, अत्रि इति, (शतपथः)। मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, वसिष्ठ इति (महाभा.)। उत्तर दिशा में उदय होने वाले सात तारे जो ध्रुव तारे के चारों ओर घूमते दीखते हैं (भूगो.)।

सप्तशती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सात सौ का समूह, सात सौ छंदों का समूह, **सतसई, सतसइया** (दे.)।

सप्तसागर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सात समुद्र–क्षीर, दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा, लवण। **सप्तादधि, सप्तावुधि**।

सप्ताश्व–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सात घोड़ों के रथ में वैठने वाले सूर्य।

सप्तस्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सात प्रकार की ध्वनियाँ, सात स्वर, षड्ज, मध्यम, गान्धार, ऋषभ, निषाद, धैवत, पंचम (संगी.–स, रे, ग, म, प, ध, नी)।

सप्तालू–संज्ञा, पु. (दे.) शफ़्तालू, सतालू।

सप्ताह–संज्ञा, पु. (सं.) सात दिनों का समूह, **हफ़्ता** (फ़ा.), सात दिनों में पढ़ी-सुनी जाने वाली भागवत की कथा। वि. (सं.) **साप्ताहिक**।

सप्रीति–अव्य. (सं.) प्रेम सहित, प्रेम से, प्रीति से।

सप्रेम–अव्य. (सं.) प्रीति-पूर्वक, प्रेम-सहित, प्रीति से, स्नेह से।

सफ़–संज्ञा, स्त्री. (अ.) अवली, पाँति, पंक्ति, कतार, लंबी चटाई, सीतल पाटी, कक्षा।

सफ़तालू–संज्ञा, पु. (दे.) आड़ू फल।

सफ़र–संज्ञा, पु. (अ.) प्रयाण, यात्रा, प्रस्थान, भ्रमण, राह चलने का समय या दशा। संज्ञा, पु. **मुसाफिर**।

सफ़र मैना–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *सैपर माइना*) वे सिपाही जो खाई आदि खोदने को सेना के आगे चलते हैं।

सफ़री–वि. (सं. *सफर*) सफर या रास्ते का, यात्रा या राह में काम देने वाला सामान। संज्ञा, पु. पाथेय (सं.) मार्ग व्यय, सफ़र-ख़र्च, अमरूद फल, यात्रा के आवश्यक पदार्थ।

सफरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शफरी*) सौरी मछली। संज्ञा, स्त्री. (दे.) अमरूद, **बिही** (प्रान्ती.)।

सफल–वि. (सं.) फल-युक्त, परिणाम-सहित, फलवान, फलदायक, कृतार्थ, कृत-कार्य, कामयाब।

सफलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **कृतार्थता, सिद्धि,** पूर्णता, कृतकार्यता, सफल होने का भाव।

सफलीकृत–वि. (सं.) सफल या कृतार्थ किया हुआ।

सफलीभूत–वि. (सं.) जो सिद्ध या पूर्ण हुआ हो जो सफल या सार्थक हुआ हो।

सफ़हा–संज्ञा, पु. (अ.) पन्ना, पृष्ठ, वर्क के एक ओर, **सफ़ा** (दे.)।

सफ़ा–वि. (अ.) स्वच्छ, साफ़, निर्मल, पवित्र, उज्वल, चिकना, बराबर, चिन्ह-रहित।

सफ़ाई–संज्ञा, स्त्री. (अ. *सफ़ा+ई प्रत्य.*) निर्मलता, स्वच्छता, उज्वलता, कूड़ा आदि हटाने या लीपने-पोतने आदि का कार्य, स्पष्टता, मन की स्वच्छता, कपट का अभाव, निर्दोषता, निबटारा, निर्णय। यौ. **सफ़ाई के गवाह**। मु. **सफ़ाई देना**–निर्दोषता दिखाना।

सफ़ाचट–वि. (दे.) एकवारगी साफ़, सर्वथा स्वच्छ, बिलकुल चिकना, एकदम साफ़।

सफ़ीना–संज्ञा, पु. दे. (अ. *सफीनः*) **समन** (अं.), इत्तिलानामा कचहरी का परवाना, आज्ञा-पत्र; नाव, किश्ती, नौका।

सफ़ीर–संज्ञा, पु. (अ.) राज दूत, एलची।

सफ़फ़–संज्ञा, पु. (अ.) चूर्ण, बुकनी।

सफ़ेद–वि. दे. (फा. *सुफैद*) उज्ज्वल, श्वेत, शुक्र; धवल, धौला, बर्फ़ या दूध के रंग का, सादा, कोरा, सुफ़ेद, **सपेत, सपेद** (दे.)। **मु. स्याह-सफ़ेद (करना)**–भला या बुरा कुछ भी करना।

सफ़ेद-पोश–संज्ञा, पु. यौ. (क्रि.) उज्ज्वल वस्त्रधारी, साफ़ या स्वच्छ वस्त्र पहनने वाला, शुक्रांबरधारी, शिष्ट, सभ्य, भलामानस।

सफ़ेदा–संज्ञा, पु. दे. (फा. *सुफैदा*) जस्ते की भस्म, आम या खरबूज़े का एक भेद, **सुफ़ेदा**।

सफ़ेदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *सुफैदी*) उज्वलता, शुक्रता, धवलता, श्वेतता, सफ़ेद होने का भाव, **सुपेदी, सपेदी, सेपती** (दे.)। **मु. सफ़ेदी आना**–बुढ़ापा आना। दीवार आदि पर सफ़ेद रंग का चूने की पुताई, चूनाकारी।

सब–वि. दे. (सं. *सर्व*) समस्त सम्पूर्ण, तमाम, कुल, सारे,

सारा, पूरा, सर्वस्व।

सबक़–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पाठ, शिक्षा। **सबक़ सीखना (लेना)**–उपदेश लेना, अच्छी बात का अनुकरण करना, शिक्षा ग्रहण करना, किसी बुरे कार्य या भूल का बुरा फल देख आगे उसके करने से सतर्क रहने की याद रखना। **सबक़ सिखाना (देना)**–दुष्टता का उचित बदला देकर शिक्षा देना। **मु॰ सबक़ पढ़ाना** (व्यंग्य)–उलटी सीधी बात सिखाना, दंड देकर दुष्टता का बदला देना। **सबक़ पढ़ना**–सीखना।

सबज–वि॰ दे॰ (फ़ा *सब्ज़*) कच्चा, हरा और ताज़ा फल-फूल आदि, हरा, हरित, उत्तम शुभ। संज्ञा, स्त्री॰ **सबज़ी**। वि॰ **सबज़ा**।

सबद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ शब्द) आवाज़, बोली, शब्द, किसी महात्मा के वचन।

सबब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कारण, हेतु, प्रयोजन, **बायस** (फ़ा॰) वजह, साधन, द्वारा।

सबर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *सब्र*) संतोष, धैर्य।

सबरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *सर्व*) सारा, कुल, सब का सब, संपूर्ण।

सबरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मोटे लोहे की छड़ से बना खोदने का एक औजार। पु॰ **सब्बर**। वि॰ स्त्री॰ (दे॰) समस्त, सब।

सबल–वि॰ (सं॰) पराक्रम या पौरुष सहित, बल-युक्त, सेना-युक्त। संज्ञा, स्त्री॰ **सबलता**। विलो॰ **निबल, अबल**।

सबलता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पौरुष, बल, पराक्रम, ताक़त, ज़ोर, सामर्थ्य।

सबलई, सबलाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सबलता*) बल, सबलता, पौरुष, ज़ोर, सामर्थ्य। यौ॰ दे॰ (हि॰ सब+लई, लाई–लेना, लाना) सब लेना।

सबाद, सबाद–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वाद*) स्वाद मज़ा, ज़ायका। वि॰ (दे॰) **सवादी**।

सबील–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मार्ग, रास्ता, राह, तरीक़ा, पथ, पथ, सड़क, ढंग, उपाय, रीति, तरकीब, युक्ति, **पौसला, प्याऊ** (दे॰)।

सबुनाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *साबुन*) साबुन लगाना (वस्त्रादि में), **सबुनियाना** (दे॰)।

सबुर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सब (फ़ा॰), संतोष।

सबूत–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) प्रमाण। वि॰ (दे॰) पूरा, बिना फटा, समूचा, **साबुत** (दे॰)।

सबूरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सब्र** (फ़ा॰), तोप।

सबेर, सबेरा, सबेरे–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *सवेला*) प्रातःकाल, तड़के, तड़का, शीघ्र, प्रथम। विनय॰। यौ॰ **बेर-सबेर**–देर और जल्दी।

सबै–क्रि॰ वि॰ (ब्र॰) समस्त, सब।

सबोतर–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *सर्वत्र*) सब जगह, सब स्थान या ठौर में, सर्वत्र।

सब्ज़–वि॰ (फ़ा॰) ताजा ओर कच्चा फल-फूल। **मु॰ सब्ज़ बाग़ (गुलाब) दिखाना**–अपना कार्य साधने के हेतु किसी को बड़ी-बड़ी आशायें दिलाना, **हरा गुलाब दिखाना**। हरा, हरित, उत्तम शुभ।

सब्ज़ा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *सब्ज़ः*) हरियाली, भंग या भाँग, विजया, पन्ना नामक रत्न, घोड़े का एक रंग, **सबज़ा** (दे॰)।

सब्ज़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) हरियाली, हरी तरकारी, भंग, भाँग, विजया, वनस्पति आदि। यौ॰ **सब्जी-मंडी**–तरकारी या फलों का बाज़ार।

सब्र–संज्ञा, पु॰ (अ॰) धैर्य, संतोष, **सबर, सबुर, सबूरी** (दे॰)। **किसी का सब्र पड़ना**–किसी के धैर्य-पूर्वक सहन किये कष्ट का प्रतिफल होना। लो॰–**सब्र का फल मीठा**–सुफलप्रद संतोष है।

सब्बर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) लोहे के मोटे छड़ से बना भूमि खोदने का एक औजार।

सभय–वि॰ (सं॰) सभीत, भय-युक्त।

सभा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) समाज, गोष्ठी, समिति, परिषद्, मजलिस, वह संस्था जो किसी बात के विचार करने के हेतु संगठित हो।

सभाग, सभागा–वि॰ दे॰ (सं॰ *सौभाग्य*) सुन्दर, भाग्यवान, खुशकिस्मत, तकदीरवर, सौभाग्यशाली विलो॰ **अभागा**।

सभागृह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **समाज भवन**, मजलिस की जगह, बहुत लोगों के साथ बैठने का स्थान, **सभा-घर, सभा-सदा, सभा-सदन**।

सभापति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सभा का प्रधान नेता, सभा का मुखिया, **प्रेसीडेंट, चेअरमैन** (अं॰)। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **सभापतित्व**।

सभासद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सदस्य, सामाजिक, किसी सभा में सम्मिलित हो भाग लेने वाला, **मेम्बर** (अं॰)।

सभिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जुआ खेलने वाला, जुआ का प्रधान।

सभीत–वि (सं॰) समय, भयभीत, डरा हुआ।

सभ्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सदस्य, सभासद, सामाजिक, मेम्बर, उत्तर विचाराचार या व्यवहार वाला, भलामानुष, शिष्ट, शाइश्ता।

सभ्यता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सभ्य होने का भाव, सदस्यता, सामाजिकता, सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था, भलमनसाहत, शिष्टता, शराफ़त, शाइश्तगी।

समंजस–वि॰ (सं॰) उचित, ठीक "सबै समंजस अहै सयानो" रामा॰। संज्ञा पु॰ (दे॰) **असमंजस**।

समंत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सीमा, सिरा, हद, किनारा, शूर-सामंत।

समंद–संज्ञा, पु॰ (फा॰) घोड़ा, अश्व।

समंदर, समुंदर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *समुद्र*) समुद्र, सागर (फा॰)। एक कीड़ा।

सम–वि॰ (सं॰) तुल्य, बराबर, समान, सदृश, सब, सार, कुल, तमाम, जिसका तल बराबर या चौरस हो, चौरस, वह संख्या जो दो पर पूरी-पूरी बँट जावे। संज्ञा, पु॰– संगीत में वह स्थान जहाँ गाने-बजाने वालों का सिर या हाथ आप ही आप हिल जाता है, एक अर्थालंकार जिसमें योग्य पदार्थों का मेल या संबंध कहा जाय (काव्य॰)। संज्ञा, पु॰ (अ॰) विष, गरल, ज़हर। संज्ञा, स्त्री॰ **समता** पु॰ **साम्य**।

समकक्ष–वि॰ यौ॰ (सं॰) तुल्य , एक कोरे का, समान, बराबर। संज्ञा, स्त्री॰ **समकक्षता**।

समकटिबन्ध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शीत-कटिबंध और उष्ण कटिबंध के बीच का भूखंड।

समकालीन–वि॰ यौ॰ (सं॰) (दो या कई) जो एक ही समय में हों, एक ही समय वाले, **समसामयिक**।

समकोण–वि॰ यौ॰ (सं॰) वह कोण जो नब्बे अंश का हो, समान कोने। यौ॰ **समकोण त्रिभुज, समकोण-चतुर्भुज**

समक्ष–अव्य॰ (सं॰) सामने, सम्मुख, सन्मुख। संज्ञा, स्त्री॰ **समक्षता**।

समगम–वि॰ (सं॰) सम्टन, बराबर, तुल्य।

समग्र–वि॰ (सं॰) पूर्ण, समस्त, सब, कुल, सम्पूर्ण, सारा, पूरा।

समचतुर्भुज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजायें तुल्य हों (रेखा॰)।

समचर–वि॰ (सं॰) एक सा या समान आचार-व्यवहार करने वाला, एक सा आचार-विचार करने वाला, **समचारी** (दे॰)।

समझ–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) ज्ञान, बुद्धि, **सामुझि** (दे॰)।

समझदार–वि॰ दे॰ (हि॰ *समझ+दार* फ़ा॰) बुद्धिमान, अक्लमन्द, ज्ञानी। संज्ञा, स्त्री॰ **समझदारी**।

समझना–वि॰ अ॰ (हि॰ *समझ*) ध्यान या विचार में बूझना, सोचना यौ॰ **समझना-सूझना**। स॰ रूप–**समझाना,** प्रे॰ रूप–**समझवाना**।

समझाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *समझना*) शिक्षा देना, सिखाना समझने में लगाना।

समझावा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *समझ*) सीख, सिखावन, शिक्षा उपदेश।

समझौता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *समझ*) परस्पर का निपटारा सुलह।

समतल–वि॰ (सं॰) जिसकी सतह बराबर या हमवार हो साफ, चिकना।

समता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, समानता

समताई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *समता*) तुल्यता, समानता बराबरी।

समतूल–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *समतुल्य*) समान, सदृश, बराबर तुल्य।

समत्थ–वि॰ दे॰ (सं॰ *समर्थ*) शक्तिशाली, पराक्रमी, बली समर्थ।

समत्रिभुज, समत्रिबाहु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसकी तीनों भुजायें समान हों, **समत्रिपादु**।

समथल–वि॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ *समस्थल*) समतल भूमि।

समदन–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नज़र, भेंट।

समदना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) प्रेम से मिलना, नज़र, भेंट या दहेज देना।

समदर्शी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *समदर्शिन्*) सब को समान या एक सा देखने वाला, **समदरसी** (दे॰)।

समदृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सब को समान दृष्टि से

देखना।

समद्विवाहु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसकी दो भुजायें तुल्य हों।

समधिन–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संबंधी*) बेटा या बेटी की सास, समधी की स्त्री।

समधियान, समधियाना–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) समधी का घर या गाँव।

समधी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *संबंधी*) पुत्र या पुत्री का ससुर। वि. (सं.) समान बुद्धि वाला।

समधौरा–संज्ञा, पु. (दे.) दो समधियों की परस्पर भेंट करने या मिलने की एक रीति (ब्याह., **समधियारौ** (ग्रा.)।

समन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शमन*) शमन, यम, हिंसा, शांति, दमन।

समन्तात्–अव्य. (सं.) चारों ओर, सब तरफ़ से।

समत्र–संज्ञा, पु. (दे.) सेंहुड़ का पेड़।

समन्वय–संज्ञा, पु. (सं.) मिलाप, मिलन, संयोग, मेल, कार्य कारण का प्रवाह, अनुगतता, **विरोधाभाव**।

समन्वित–वि. (सं.) संयुक्त मिला हुआ।

समपाद–संज्ञा, पु. (सं.) वह छंद जिसके चारों चरण एक से हों (पिं.)।

समबल–वि. (सं.) समान बल, पौरुष या पराक्रम वाला।

समभाव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समता, या बराबरी का भाव, समानता।

समय–संज्ञा, पु. (सं.) अवसर, काल, बेला, वक्त, मौक़ा, अवकाश, फ़ुरसत, अंतिम काल, **समै** (दे.)।

समया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समय*) अवसर, काल, बेला, वक्त, मौक़ा, अवकाश, फ़ुरसत, अंतिम काल। संज्ञा, पु. (सं.) शपथ, आचार, काल, सिद्धांत, संविद. ज्ञान।

समर–संज्ञा, पु. (सं.) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

समरथ, समरत्थ–वि. दे. (सं. *समर्थ*) बलवान, पराक्रमी, क्षमताशील, योग्य, उपयुक्त, जिसमें किसी कार्य के करने की क्षमता हो।

समर-भूमि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) संग्राम-भूमि, युद्ध क्षेत्र, रण-स्थली। संज्ञा, पु. (दे.) **स्मर** (सं.) कामदेव।

समरस्थल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समरभूमि। स्त्री. **समरस्थली**।

समरांगण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समरभूमि, संग्राम-सील, युद्ध-क्षेत्र, लड़ाई का मैदान, **समराँगन** (दे.)।

समरागिन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **समरागी**, युद्ध की आग।

समर्थ–वि. (सं.) शक्तिशाली, बली, बलवान, क्षमताशील, योग्य, उपयुक्त, वह पुरुष जिसमें किसी कार्य के करने की क्षमता हो। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **समर्थता**।

समर्थक–वि. (सं.) समर्थन करने वाला, जो समर्थन करे, **अनुमोदक**।

समर्थता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शक्ति, बल, सामर्थ्य, ज़ोर, योग्यता, क्षमता।

समर्थन–संज्ञा, पु. (सं.) किसी के मत का पोषण करना, किसी बात के ठीक होने का प्रमाण देना, विवचेन, उचितानुचित का निश्चय, विचार, अनुमोदन, प्रमाण-पुष्ट या दृढ़ीकरण। वि. **समर्थनीय, समर्थित, समर्थक, समर्थ्य**।

समर्थना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अन्यर्थना, प्रार्थना, निवेदन, सिफारिश। क्रि. स. दे. (सं. *समर्थ*) प्रमाण-पुष्ट या दृढ़ करना, समर्थन करना।

समर्पक–वि. (सं.) समर्पण करने या देने वाला।

समर्पण–संज्ञा, पु. (सं.) सादर भेंट करना, सत्कार या प्रतिष्ठा पूर्वक देना, उपहार दान देना, समर्पन (दे.)। वि. **समर्पित, समर्पणीय**।

समर्पना–क्रि. स. दे. (सं. *समर्पण*) भेंट देना, सौंपना, सिपर्द करना, देना।

समपनीय–वि. (सं.) समर्पण करने योग्य।

समर्पित–वि. (सं.) समर्पण किया या दिया हुआ, जो समर्पण किया या दिया हुआ हो, प्रदत्त, जो सौंपा गया हो।

समल–वि. (सं.) दोष या मल से युक्त मलीन, मैला, गंदा, पाप-सहित, विकार युक्त। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **समलता**।

समव, समउ–संज्ञा, पु. (सं.) समय, **समौ**।

समवकार–संज्ञा, पु. (सं.) एक वीर रस प्रधान नाटक जिसमें किसी देवता या दैत्य की जीवन-घटना का चित्रण हो (नाव्य.)।

समवर्ती–वि. (सं. *समवर्तिन्*) जो समीप स्थित हो, जो समान रूप से स्थित हो।

समवाय–संज्ञा, पु. (सं.) समुदाय, समूह, वृंद, झुंड, भीड़, मिश्रित, नित्य संबंध गुणी के साथ गुण का या अवयवी के बाद अवयव का संबंध (न्याय.)।

समवायी–वि. (सं. *समवायिन्*) जिसमें नित्य या समवाय संबंध हो।

समवृत्त–संज्ञा, पु. (सं.) वह छंद जिसके चारों पाद या चरण समान हों (पि.)।

समवेत–वि. (सं.) जमा या इकट्ठा। किया हुआ, एकत्र, इकट्ठा, संचित।

समवेदना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) किसी की विपत्ति या दुःख दशा में समानरूप से साथ देना या तदनुभव करना, **संवेदना**।

समशीतोष्ण-कटबंध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वे भूमि-भाग जो शीत कटिबंध और उष्ण-कटबंधों या कर्क और मकर रेखाओं के बीच में उत्तरी और दक्षिणी वृत्त तक हैं।

समष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) समाहार, सब का समूह, समस्त, सब का सब। विलो. **व्यष्टि**।

समसर–संज्ञा, स्त्री. (दे.) समानता, सदृशता, बराबरी।

सम सूत्रपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) डोरी से नापना, पानी की थाह या गहराई लेना या नापना।

समसर–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *शमशेर*) तलवार, खड्ग।

समस्त–वि. (सं.) सम्पूर्ण, समग्र, सारा, सब, कुल, पूर्ण, पूरा, एक में मिलाया हुआ, संयुक्त, समास-युक्त, सामासिक।

समस्थली–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) गंगा-यमुना नदियों के बीच का देश, अंतर्वेद। संज्ञा, स्त्री. (सं.) समतल भूमि, **समस्थल**।

समस्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पक्ष का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्ण पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलाने का भाव या क्रिया।

समस्यापूर्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) किसी समस्या के सहारे किसी पद्य को पूर्ण करना।

समाँ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समय*) वक्त, समय। **मु. समाँ बाँधना (बँधना)**–ऐसी रोचकता से गाना होना कि लोग सन्न हो जावें। शोभा, छटा, सुन्दर दृश्य।

समा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समय*) समय, वक्त, अवसर, मौक़ा, **समौ** (ग्रा.)। संज्ञा, स्त्री. (दे.) साल, दृश्य, छटा। संज्ञा, पु. (दे.) एक कदन्न, **साँवाँ**।

समाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *समाना*) औकात, गुंजाइश, फैलाव, विस्तार, सामर्थ्य, शक्ति।

समाउ, समाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *समाना*) पैठार, गुंजाइश, औक़ात, विस्तार, सामर्थ्य, प्रवेश।

समाकुल–वि. (सं.) व्याप्त घिरा, दुखी, व्याकुल, विकल, आकुल, भरा हुआ।

समागत–वि. (सं.) आया हुआ, प्राप्त।

समागम–संज्ञा, पु. (सं.) आना, आगमन, मिलना, भेंट-मुलाकात, मैथुन, रति।

समाचार–संज्ञा, पु. (सं.) संवाद, हाल, ख़बर। यौ. संज्ञा, पु. (सं.) समान व्यवहार।

समाचारपत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अख़बार (फ़ा.) गज़ट (अं.) वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार हों।

समाज–संज्ञा, पु. (सं.) समूह, सभा, समिति, दल, वृंद, समुदाय, संस्था, एक स्थान-निवासी तथा समान विचारधारा वाले लोगों का समूह, किसी विशेष उद्देश्य या कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित की हुई सभा, आर्य समाज।

समाजी–संज्ञा, पु. (सं. *समाजिन्*) रंडी का पछुआ, सदस्य, समाज में रहने वाला। वि. समाज का, समाज-संबंधी, आर्य समाजी।

समादर–संज्ञा, पु. (सं.) सम्मान, आदर, सत्कार, ख़ातिर। वि. **समादृत, समादरणीय**।

समादरणीय–वि. (सं.) सत्कार के योग्य, मान्य, सम्मानीय।

समादृत–वि. (सं.) समादर किया हुआ, सम्मानित।

समाधान–संज्ञा, पु. (सं.) समाधि, किसी के मन के संदेह के मिटाने वाली बात या काम, विरोध मिटाना, निराकरण, निष्पत्ति, समझाना, धैर्य प्रदान, तसल्ली, नायक या नायिका का अभिमत-सूचक कथा-बीज का पुनः प्रदर्शन विशेष (नाटक.), मन को सब ओर से हटा ब्रह्म में लगाना। वि. **समाधानीय**।

समाधानना–क्रि. स. दे. (सं. *समापन*) निराकरण करना, सांत्वना देना।

समाधि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ध्यान, योग की क्रिया विशेष, समर्थन, प्रतिज्ञा, नींद, योग, योग का अंतिम फल जिसमें योगी के सब दुःख दूर हो जाते तथा उसे अनेक दिव्य शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं (योग.)।

काव्य में दो घटनाओं का दैव-योग से एक ही समय में होना। सूचित करने वाला एक गुण, एक अर्थालंकार जहाँ किसी आकस्मिक हेतु से कठिन कार्य का सहज ही में सिद्ध होना कहा जाता है (अ. पी.), सभाधान, मृतक के गाड़ने का स्थान, मृतक को पृथ्वी में गाड़ना, ध्यान, योग, **समाधी** (दे.)। **मु० समाधि देना (लेना)**– योगियों या संन्यासियों के मृत शरीर को भूमि में गाडना (संन्यासी का मर जाना)। **समाधि लगाना**– योगियों का ब्रह्म-ध्यान में लीन होकर निश्चल हो जाना।

समाधिक्षेत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह स्थान जहाँ मृत योगी गाड़े जाते हैं, कब्रिस्तान।

समाधिन–वि. (सं.) समाधि-प्राप्त योगी, वह योगी जिसने समाधि ली या लगाई हो, समाधिस्थ।

समाधिस्थ–वि. (सं.) जिस योगी ने समाधि लगाई या ली हो, समाधि प्राप्त।

समान–वि. (सं.) सदृश, तुल्य, बराबर, सम, गुण, रूप, रंग, मूल्य, मान एवं महत्वादि में एक से । वि. (सं.) मान युक्त, सम्मान के साथ।

समानता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, समता।

समानांतर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जिनके बीच में सदा बराबर दूरी रहे, तुल्य दूरी, मुतबाज़ी, दो रेखायें जो एक-सी दूरी पर हों।

समानान्तर चतुर्भुज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चार समानान्तर रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र, जिस चतुर्भुज क्षेत्र की आमने-सामने की भुजायें सभानान्तर हों (रेखा.)।

समानान्तर रेखा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वह रेखा जो किसी रेखा से सदा समान अन्तर पर रहे (रेखा.)।

समाना–क्रि. अ. दे. (*समावेश*) अटना, भीतर आना, प्रविष्ट होना, भरना। क्रि स. (दे.) भरना, अंदर करना। प्रे. रूप–**समवाना**।

समानाधिकरण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समास में ये शब्द जो एक ही कारक की विभक्ति से युक्त हों, वह शब्द या वाक्यांश जो किसी वाक्य में किसी शब्द का समानार्थक हो और उसे स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त हुआ हो (व्याक.)।

समानार्थ, समानार्थक–संज्ञा, पु. (सं.) वे शब्द जिनके अर्थ एक से हों, पर्यायवाची शब्द।

समानिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रमण, जगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णिक छंद, **समानी** (पिं.)।

समापक–संज्ञा, पु. (सं.) पूर्ण या समाप्त करने वाला, पूर्णक। वि. (सं.) मापक (नापने वाले) के साथ।

समापन–संज्ञा, पु. (सं.) समाप्त या पूरा करना, इति करना, वध, अंत करना, मार डालना। वि. **समाप्य, समापनीय, समापित**।

समापवर्त–संज्ञा, पु. (सं.) सम प्रकार बाँटने वाला। यौ. **लघुतम और महत्तम समापवर्त** (गणि.)।

समापवर्तन–संज्ञा, पु. (सं.) सम्यक विभाजन या अपवर्तन। वि. **समापवर्तनीय**।

समापिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वह क्रिया जिससे किसी कार्य की पूर्णता या समाप्ति समझी जावे (व्याक.)।

समाप्त–वि. (सं.) पूर्ण, जो पूरा हो गया हो।

समाप्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पूर्ति, पूरा या तमाम होने का भाव, ख़त्म होना, इति अंत, इति श्री।

समायोग–संज्ञा, पु. (सं.) संयोग, मेल, लोगों का एकत्रित होना।

समारंभ–संज्ञा, पु. (सं.) भली भाँति आरंभ या शुरू होना, समारोह।

समारोह–संज्ञा, पु. (सं.) वृहदयोजना, धूम-धाम,तड़क-भड़क, बड़ी सजधज का कोई कार्य या उत्सव।

समाली–संज्ञा, स्त्री. (दे.) फूलों का गुच्छा, पुष्प-स्तवक।

समालू, सम्हालू–संज्ञा, पु. (दे.) सँभालू नाम का पौधा, एक प्रकार का धन।

समालोचक–संज्ञा, पु. (सं.) समालोचना करने वाला।

समालोचन–संज्ञा, पु. (सं.) आलोचना, समालोचन, विचार, विवेचन, देखभाल। वि. **समालोचनीय, समालोचित**।

समालोचना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आलोचना, भली-भाँति देख-भाल करना, जाँचना, गुण-दोष देखना, गुण-दोष विवेचना से पूर्ण लेख या कथन।

समालोच्य–वि. (सं.) समालोचना करने योग्य, **समालोचनीय**।

समाव–संज्ञा, पु. दे. (हि. *समाना*) समावेश और स्थान।

समावर्तन–संज्ञा, पु. (सं.) लौट आना, लौटना, वापस आना,

वैदिक काल का एक संस्कार जो ब्रह्मचारी के निश्चित समय तक गुरुकुल में विद्याध्ययन कर स्नातक हो आने पर ब्याह के प्रथम होता था। वि. **समावर्तित, समावर्तक, समावर्तनीय**।

समाविष्ट–वि. (सं.) व्याप्त, समाया हुआ, व्यापक, जिसका समावेश हुआ हो, प्रविष्ट।

समावेश–संज्ञा, पु. (सं.) प्रवेश, एक वस्तु का दूसरी के भीतर होना, मेल, मनोनिवेश, एक स्थान पर साथ रहना, अंतर्गत होना।

समास–संज्ञा, पु. (सं.) संग्रह, संक्षेप, संयोग, समर्थन, मेल, सम्मेलन, मिश्रण, दो या अधिक पदों के अपनी अपनी विभक्तियों को छोड़ कर नियमानुसार मिल जाने और उनसे एक पद बन जाने की क्रिया को समास कहते हैं (व्याक.)। समास के प्रायः मुख्य चार भेद हैं–अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि। तत्पुरुष का भेद कर्मधारय, जिसका भेद द्विगु है। फिर इनके भी कई भेद हैं। वि. **समस्त, सामासिक**।

समासोक्ति–संज्ञा, स्त्री. यो. (सं.) एक अर्थालंकार, जहाँ प्रस्तुत से अप्रस्तुत वस्तु का ज्ञान समान विशेषण और समान कार्य के द्वारा हो (अ. पी.)।

समाहरण–संज्ञा, पु. (सं.) समुदाय, समूह, संग्रह, राशि, ढेर, बहुत से पदार्थों का एक ठौर इकट्ठा करना, समाहार। वि. **समाहरणीय, समाहार्य, समाहृत**।

समाहर्त्ता–संज्ञा, पु. (सं. *समाहर्तृ*) मिलाने या इकट्ठा करने वाला, संग्रहकर्ता, संचय करने वाला। राज-कर का एकत्रित करने वाला कर्मचारी (कलैक्टर) (अं.)।

समाहार–संज्ञा, पु. (सं.) समूह, संग्रह, पुंज, ढेर, राशि, मिलना, संचय, जमघट, बहुत से पदार्थों का एक ही स्थान पर एकत्र या इकट्ठा करना।

समाहार-द्वन्द्व–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जहाँ द्वंद्व समास में बहुत से पदार्थों का समूह हो, जैसे–संज्ञा परिभाषम्, या ऐसे पदों का द्वंद्व समास जिससे पदों के अर्थ के अतिरिक्त कुछ और अर्थ भी प्रगट हो, जैसे–सेठ-साहूकार (व्याक.)।

समाहित–वि. (सं.) समाधिस्थ, स्थिरीकृत, सावधान, एक अलंकार (काव्य.)।

समाहृत–वि. (सं.) बुलाया हुआ।

समाह्वान–संज्ञा, पु. (सं.) बुलाना, पुकारना।

समिच्छा–संज्ञा, स्त्री. (दे.) समीक्षा (सं.)।

समिति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) समाज, सभा, प्राचीन काल में राजनीति के विषयों पर विचार करने वाली सभा (वैदिक), किसी खास काम के लिए बनाई हुई सभा।

समिध–संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि।

समिधा-समिधि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

समीकरण–संज्ञा, पु. (सं.) समान या बराबर करना, ज्ञात से अज्ञात राशि का मूल्य ज्ञात करने की एक क्रिया (गणि.)। वि. **समीकरणीय, समीकृत**।

समीकार–संज्ञा, पु. (सं.) समान कर्ता, तुल्य या बराबर करने वाला।

समीक्षक–वि. (सं.) समीक्षा करने वाला।

समीक्षा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भली-भाँति देखना-भालना, विवेचना, आलोचना, समालोचना, प्रयत्न, मीमांसा, शास्त्र, बुद्धि, **समिच्छा** (दे.)। वि. **समीक्षित, समीक्ष्य, समीच्छा**।

समीचीन–वि. (सं.) यथार्थ, ठीक, उपयुक्त, उचित, वाजिब, मुनासिब। संज्ञा, स्त्री. **समीचीनता**।

समीप–वि. (सं.) पास, निकट, नज़दीक। वि. (सं.) **समीपी**। संज्ञा, स्त्री. **समीपता**।

समीपवर्त्ती–वि. (सं. *समापवर्तिन्*) पास का, निकट या समीप का।

समीपी–संज्ञा, पु. (सं. *समीपिन्*) निकट संबंधी, पास या समीप का।

समीर–संज्ञा, पु. (सं.) अनिल, वायु, हवा, प्राण-वायु।

समीरण–संज्ञा, पु. (सं.) अनिल, पवन, वायु, हवा, **समीरन** (दे.)।

समाहा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चेष्टा, प्रयत्न, अभिलाषा, इच्छा, वांछा, समीक्षा, पूर्ण-इच्छा।

समुंद्र-समुंदर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समुद्र*) समुद्र, **समंदर** (उ.) सिंधु, सागर। वि. **समुंदरी**।

समुँदर फूल–संज्ञा, पु. (दे.) समुद्र-फूल, एक प्रकार का विधारा (औष.)।

समुंदरफेन–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) समुद्रफेन (सं.)।

समुचित–वि. (सं.) उचित, ठीक, समीचीन, उपयुक्त, वाजिब, जैसा चाहिए वैसा, दुरुस्त, यथोचित, यथायोग्य।

समुच्य–संज्ञा, पु. (सं.) समुदाय, समूह, संग्रह, वृंद, राशि, पुंज, ढेरी, ढेर, समाहार, मिलान, मिश्रण, एक अर्थालंकार जिसमें आश्चर्य, विषादादि अनेक भावों के एक साथ उदित होने अथवा एक ही कार्य के लिए अनेक कारणों के होने का कथन हो (अ. पी.)। वि. **समुच्चित**।

समुज्ज्वल–वि. (सं.) शुभ, बहुत ही साफ़, अति उज्ज्वल, अतिस्वच्छ, शुक्र, धवल। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **समुज्ज्वलता**।

समुझ, समुझि*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *समझना*) समझ, बुद्धि, अल्क, **सामुझि** (टे.)।

समझना–क्रि. स. दे. (हि. *समझना*) समझना, सोचना, विचारना, ज्ञात करना। स. रूप –**समुझाना, समुझावना,** प्रे. रूप –**समुझवाना**।

समुझनि–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *समझना*) समझने की क्रिया या भाव विचार, समझ।

समुत्थान–संज्ञा, पु. (सं.) उत्थान, उठने की क्रिया, उन्नति, उदय, आरंभ, उत्पत्ति, रोग का निदान।

समुत्थापन–संज्ञा, पु. (सं.) सग प्रकार उठाना, उन्नत करना। वि. **समुत्थापनीय, समुत्थापक, समुत्थापित**।

समुत्थित–वि. (सं.) उठा हुआ, उन्नत।

समुद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समुद्र*) समुद्र, सागर, सिंध। वि. (सं.) आनंद या हर्ष युक्त, मोद-सहित, समोद।

समुद-फल–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) एक औषधि विशेष, समुद्र-फल।

समुद्र-फेन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) एक औषधि विशेष, समुद्र का फेना, समुद्र-फेन।

समुद्र-लहर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *समुद्र लहरी*) एक प्रसिद्ध वस्त्र।

समुद्र-साख–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समुद्रशीप*) एक औषधि विशेष, **समुद्रशांप**।

समुदाई–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समुदाय*) समूह, ढेर, झुंड, समुदाय, समुचय।

समुदाय–संज्ञा, पु. (सं.) समूह, झुंड, ढेर। वि. **सामुदायिक**।

समुदाव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समुदाय*) समुदाय, समूह, झुंड, **समुदाउ** (ग्रा.)।

समुद्र–संज्ञा, पु. (सं.) अंबुधि, सागर, सिंधु, उदधि, पयोधि, नदीश, वह जल राशि जो चारों ओर से भूमि के तीन-चौथाई भाग को घेरे है, किसी वस्तु-गुण या विषयादि का बड़ा आगार।

समुद्र-फेन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) समुद्रफेन, समुद्र का फेन (औषधि विशेष) सिंधु-झाग।

समुद्रयात्रा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) समुद्र द्वारा दूसरे देशों में जाना, **समुद्री यात्रा**।

समुद्रयान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पोत, जहाज़।

समुद्रलवण–संज्ञा, पु. यौ. (सं) समुद्र के पानी से बना हुआ नमक, **समुद्रलीन** (दे.)।

समुद्रशोष–संज्ञा, पु. (सं.) **समुद्र-सोख** (दे.) एक औषधि विशेष।

समुन्नत–वि. (सं.) सब प्रकार से ऊँचा उठा हुआ, बहुत ऊँचा, प्राप्ताभ्युदय।

समुन्नति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यथेष्ट उन्नति, यथोचित उत्थान, तरक्की, पूर्ण वृद्धि, उच्चता, बढ़ाई, महत्व। वि. **समुन्नत**।

समुन्नयन–संज्ञा, पु. (सं.) सब प्रकार ऊपर उठाना।

समुल्लास–संज्ञा, पु. (सं.) आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता, ग्रंथ का परिच्छेद, पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। वि. **समुल्लासित**।

समुहा–वि. दे. (सं. *सम्मुख*) सम्मुख या सामने का, **सौंह** (ग्रा.)। क्रि. वि. (दे.) आगे, सामने, **सौहे** (ग्रा.)।

समुहाना–क्रि. अ. दे. (सं. *सम्मुख*) सामने या सम्मुख आना, लड़ने आना, **सौंहाना** (ग्रा.)।

समुहैं, सामुहैं–अव्य. दे. (सं. *सम्मुख*) सामने की ओर, **सौंहैं** (ग्रा.)।

समूच, समूचा–वि. दे. (सं. *सर्व*) पूरा, समस्त, सारा, संपूर्ण, कुल, आद्यन्त-सहित। स्त्री. **समूची**।

समूर–संज्ञा, पु. (सं. *शंबर*) सायर नाम का हिरन। वि. दे. (सं. *समूल*) जड़ या मूल सहित, कारण सहित, पूरा।

समूल–वि. (सं.) जड़-सहित, सबका सब, सकारण, हेतु-युक्त। क्रि. वि. जड़ से, मूल से।

समूह–संज्ञा, पु. (सं.) पुंज, समुदाय, वृंद, राशि, ढेर, भीड़, झुंड। वि. **सामूहिक**।

समृद्ध–वि. (सं.) संपन्न, धनी, समर्थ। संज्ञा, स्त्री. (सं.)

समृद्धता।

समृद्धि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अति संपन्नता, **धनाढ्यता**, अमीरी, **समृद्धी** (दे.)। वि. **समृद्धिशाली, समृद्धिवान्**।

समेट–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *समिटना*) संकोचना, समिटना।

समटना–क्रि. स. दे. (हि. *समिटना*) फैली हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना, अपने ऊपर लेना, बटोरना, एकत्र करना, **सिमेटना**।

समेत–वि. (सं.) संयुक्त, मिला हुआ। अव्य. (हि.) सहित, साथ, युक्त।

समै, समैया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समय*) समय, वक्त, **समइया, समौ** (दे.)।

समों–संज्ञा, पु. दे. (सं. *समय*) समय, वक्त, काल।

समोखना–क्रि. स. (दे.) सहेज कर कहना।

समोना–क्रि. स. (दे.) मिलाना, गर्म और ठंडा पानी मिलाना।

समौ–क्रि. स. दे. (सं. *समय*) समय, वक्त, **समव** (ग्रा.)। यौ. **समौसुकाल**।

समौरिया–वि. दे. (सं. *सम्मौलि*) जिनका ब्याह एक साथ हुआ हो। वि. दे. (सं. *सम+उमरिया* हि.) बराबर उम्र वाले, समवयस्क।

सम्मत–वि. (सं.) राय मिलाने वाला, अनुमत, सहमत।

सम्मति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मत, राय, सलाह, अनुज्ञा, आदेश, अनुमति, अभिप्राय।

सम्मन–संज्ञा, पु. (अं.) समन, अदालत की हाज़िरी का आज्ञा-पत्र या हुक्मनामा।

सम्मान–संज्ञा, पु. (सं.) सम्मान, आदर, सत्कार, मान, गौरव, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, खातिर। वि. (सं.) **सम्माननीय**।

सम्मानना–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सम्मान*) आदर, सत्कार, मान, गौरव, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, ख़ातिर। * क्रि. स. (दे.) आदर-सत्कार करना।

सम्मानित–वि. (सं.) समादृत, प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार। विलो. **अपमानित**।

सम्मिलन–संज्ञा, पु. (सं.) सब प्रकार मिलना, संयोग, सम्मेलन, मिलाप, मेल।

सम्मिलित–वि. (सं.) मिश्रित, मिला हुआ, युक्त।

सम्मिश्रण–संज्ञा, पु. (सं.) मिलने या मिलाने का कार्य या क्रिया, मिलावट, मेल। वि. **सम्मिश्रित, सम्मिश्रणाक्य**।

सम्मुख–अव्य. (सं.) सम्मुख, सामने, समक्ष, सामुहें, आगे। स्त्री. **सम्मुखी**। यौ. **सम्मुखीभूत, सम्मुखीकृत**।

सम्मूढ़–वि. (सं.) अज्ञान, मूर्ख, विमूढ़। संज्ञा, स्त्री. **सम्मूढ़ता**।

सम्मेलन–संज्ञा, पु. (सं.) किसी हेतु मनुष्यों की एकत्रित हुई सभा, सभा, समाज, **जमाकड़ा**, जमघट, मिलाप, मंगम, मेल, सम्मिलन।

सम्मोह–संज्ञा, पु. (सं.) मूर्च्छा, मोह।

सम्मोहन–संज्ञा, पु. (सं.) मुग्ध या मोहित करना, मोहने वाला, मोह पैदा करने वाला, एक काम-वाण, प्राचीन काल का एक वाण या अस्त्र जिससे शत्रु-सेना मोहित हो जाती थी। वि. **सम्मोहनीय, सम्मोहक, सम्मोहित**।

सम्यक्–वि. (सं.) पूरा, सब। क्रि. वि. (सं.) भली-भाँति, सब प्रकार से, अच्छी तरह। यौ. **सम्यक् प्रकोरण**।

सम्राज्ञी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) महाराज्ञी, सम्राट की पत्नी, साम्राज्य की अधीश्वरी, महारानी।

सम्राट–संज्ञा, पु. (सं. *समाज्*) राज-राजेश्वर, महाराजाधिराज, शहंशाह, बहुत वड़ा राजा।

सय, सै–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शत*) सौ, शत। संज्ञा, पु. दे. (फा. *शय*) छाया, चीज़, शय (शतरंज)।

सयन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शयन*) शयन, सोना, सो जाना, नींद लेना, **सैन** (दे.), आँख का इशारा।

सयराना-सैराना–क्रि. स. (दे.), बढ़ना, फैलना, समाप्त न होना, **सइराना** (ग्रा.)।

सयान–वि. दे. (सं. *सज्ञान*) अनुभवी, चतुर, होशियार, वयोवृद्ध। संज्ञा, स्त्री. **सयानता**।

सयानप–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सज्ञान*) चतुराई, बुद्धिमत्ता, प्रवीणता, होशियारी, **सयानता**।

सयानपन, सयानपना–संज्ञा, पु. स्त्री. दे. (*सं. सज्ञान*) चतुराई, होशियारी, प्रवीणता, दक्षता, चालाकी।

सयाना–वि. संज्ञा, पु. दे. (सं. *सज्ञान*) दक्ष, कुशल, चतुर, होशियार, पटु, प्रवीण, वयोवृद्ध, चालाक, धूर्त्त, जादू मंत्र या टोना जानने या दूर करने वाला। स्त्री. सयानी।

सर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सरस्*) तड़ाग, तालाब, ताल। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शर*) तीर, बाण, शर। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शर*) चिता। संज्ञा, पु. (फ़ा.) सिर, मूँड़, चोटी, सिरा। वि. (फ़ा.) पराजित, जीता हुआ, विजित, दमन किया

हुआ, अभिभूत। बार या गुना-सूचक एक प्रत्यय, जैसे— दोसर, एकसर, चौसर।

सर-अंजाम–संज्ञा, पु. (फ़ा.) सामग्री, सामान, पूरा करना।

सरकंडा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शरकांड*) सरपत की जाति का एक पौधा।

सरक–संज्ञा, स्त्री. (हि. *सरकना*) सरकने की क्रिया का भाव, शराब की खुमारी।

सरकना–क्रि. अ. (सं. *सरक, सरण*) खिसकना, टलना, काम चलना, निर्वाह होना, फिसलना, नियम काल या स्थान से आगे जाना, हटना, पृथ्वी से लगे हुए धीरे से किसी ओर बढ़ना। स. प्रे. रूप—**सरकाना, सरकावना, सरकवाना**।

सरजना–क्रि. स. दे. (सं. *सृजन*) **सिरजना,** सृष्टि करना, रचना, बनाना।

सरकश–वि. (फा.) उद्दंड, उद्धत, घमंडी, सिर उठाने वाला, विरोधी, अशंक। संज्ञा, स्त्री. **सरकशी**। संज्ञा, पु. (अं. *सरकस*) तमाशा।

सरकशी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) उद्दंडता, उद्धता, घमंड, विरोध में सिर उठाना।

सरकाना–क्रि. स. (हि. *सरकना*) खिसकाना, डालना, काम चलाना, निर्वाह करना, **सरकावना** (दे.)। प्रे. रूप—**सरकवाना**।

सरकार–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) स्वामी, प्रभु, मालिक, रियासत, राज्यसंस्था, शासन-सत्ता। वि. **सरकारी**।

सरकारी–वि. (फ़ा.) सरकार या स्वामी-संबंधी, मालिक का, राज्य का, राजकीय। यौ. **सरकारी काग़ज़**–राज्य के दफ़्तर का काग़ज़, प्रोमिसरी नोट (अं.)।

सरख़त–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) दिये हुये या चुकाये हुए धन की रसीद या ब्यौरा, आज्ञापत्र, परवाना मकान आदि के किराये पर देने की शर्तों का काग़ज़, **सरखत** (दे.)।

सरग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वर्ग, सर्ग*) स्वर्ग, बैकुण्ठ, देव-लोक, आकाश, सर्ग (सं.) अध्याय, अंक। लो.—सरग से गिरा तो खूजर में अटका"।

सरग़ना–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मुखिया, सरदार, (अगुआ), **सरगना** (दे.)।

सरगम–संज्ञा, पु. (हि. *स, रे, ग, आदि*) गाने में सात स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम, (संगी.) **स्वर-ग्राम** (सं.), स, रे, ग, म, प, ध, नी, सा।

सरगर्म–वि. (फ़ा.) उमंग से भरा, जोशीला, उत्साही, आवेशपूर्ण। संज्ञा, स्त्री. **सरगर्मी**।

सरघर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शरगृह*) तरकश, भाथा, तृण, **तूणीर**।

सरजना, सिरजना–क्रि. स. दे. (सं. *सृजन*) रचना, बनाना, सृष्टि रचना।

सरघा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मधुमक्खी, शहद की मक्खी।

सरजा–संज्ञा, पु. (दे.) सिंह, शेर, सरदार, शिवाजी की उपाधि।

सरजीव–वि. दे. (सं. *संजीव*) सजीव, जीता-जागता, जिंदा।

सरजीवन–वि. दे. (सं. *संजीवन*) जिलाने-वाला हराभरा, उपजाऊ, **सजीवन** (दे.)।

सरज़ोर–वि. (फ़ा.) बलवान, ज़बरदस्त। संज्ञा, स्त्री. **सरज़ोरी**।

सरणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रास्ता, राह, मार्ग, पंथ, रीति, ढर्रा, ढंग, लकीर।

सरद–वि. दे. (फ़ा. *सर्द*) सर्द, शीतल। वि. (दे.) ठंडा। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शरत्*) एक ऋतु जो क्वार-कार्तिक में होती है। वि. **सारदी**।

सरदई–वि. दे. (फ़ा. *सरदः*) सरदे के रंग का, हरा पीला मिला रंग, हरित-पीत। वि. (दे.) शरद (सरद) संबंधिनी।

सरदर–क्रि. वि. (फ़ा. *सर+दर—भाव*) सब एक साथ मिला कर, एक सिरे से, औसत से।

सरदरद–संज्ञा, पु. दे. यौ. (फ़ा. *सिर+दर्द*) सिर की पीड़ा।

सरदा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *सरदः*) एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा, तरबूजा।

सरदार–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मुखिया, अफ़सर, अमीर, शासक, नायक, रईस, अगुवा।

सरदारी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सरदार का पद या भाव।

सरदी–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *सर्दी*) ठंडक, शीतता; सर्दी, जुकाम, **सर्दी**।

सरधन–वि. दे. (सं. *सधन*) सधन, धनी, धनवान्।

सरनद्वीप–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *सिंहलद्वीप*) भारत के दक्षिण में एक द्वीप।

सरना–क्रि. अ. दे. (सं. *सरण*) खिसकना, सरकना, डोलना,

हिलना, काम निकलना या चलना, किया जाना, सधना, निबटना, पूरा पड़ना। वि.। सड़ना, बिगड़ना। संज्ञा, स्त्री. (दे.) शरण।

सरनाम–वि. (फ़ा.) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।

सरनामा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) **सिरनामा** (दे.) शीर्षक, पत्र के ऊपरी भाग का लेख, पत्रारंभ का संवोधनादि, पत्र का पता।

सरनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सरण*) रास्ता, राह, मार्ग। वि. (दे.) शरणागत।

सरपंच–संज्ञा, पु. (फ़ा. *सर+पंच* हि.) पंचों का मुखिया या सरदार, पंचायत का सभापति।

सरपंजर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शर+पंजर*) वाणों का तीरों का पिंजड़ा।

सरपट–क्रि. वि. दे. (सं. *सर्पण*) घोड़े का अगले दोनों पैर साथ फेंकते हुए तेज दौड़ना, वेग से चलना, दुलकी चाल, तेज़ दौड़।

सरपत–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सर पथ*) तृण विशेष, बड़े-बड़े पत्तों की कुश-काँस के जाति की एक घास, **पताई** (ग्रा.)।

सरपरस्त–संज्ञा, पु. (फ़ा.) संरक्षक, अभिभावक। संज्ञा, स्त्री. **सरपरस्ती**।

सरपि–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सर्पिस्*) घी।

सरपेंच, सरपेच–संज्ञा, पु. (फ़ा.) पगड़ी, सिर पर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

सरपोश–संज्ञा, पु. (फ़ा.) थाल या किसी पात्र के ढकने का कोई वरतन या कपड़ा।

सरफराना–क्रि. अ. (दे.) घबराना, व्याकुल होना, तड़पड़ाना, **तरफ़राना** (दे.)।

सरफ़रोशी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सिर वेंचना, क़त्ल होना; किसी कारण से स्वयं को वलिदान कर देना।

सरबंध-सरबंधी–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शरबन्ध*) तीरंदाज, धनुर्धर।

सरब–वि. दे. (सं. *सर्व*) समस्त, सव्र, सब, कुल, सारा, सम्पूर्ण, सर्वस्व।

सरबर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सरोबर*) अच्छा तड़ाग, तालाव, ताल, श्रेष्ठ वाण।

सरबराह–संज्ञा, पु. (फा.) प्रबंधकर्त्ता, कारिन्दा, मज़दूरों से काम लेने वाला सरदार, **सरबराहकार** (दे.)।

सरबराहकार–संज्ञा, पु. (फा.) किसी काम का प्रबन्धकर्त्ता, कारिंदा, मुनीमं संज्ञा, स्त्री. **सरबराहकारी**।

सरबरि-सरबरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सदृश*) समता, तुल्यता, बराबरी, ढिठाई, गुस्ताख़ी, उत्तर प्रति उत्तर देना।

सरबस*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सर्वस्व*) सम्पूर्ण, रूप कुछ, सारी सम्पत्ति, सारा धन। यौ. दे. (हि. *सर+बस*) वाण-वश, वाणाधीन।

सरभ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शलभ*) पतिंगा।

सरम–संज्ञा, स्त्री. दे. (फा. *शर्म*) शर्म, लज्जा।

सरमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) देवताओं की एक कुतिया (वैदिक), लंका की एक राक्षसी, कुतिया।

सरय–संज्ञा, पु. (सं.) वानर विशेष।

सरयू–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सरजू** (दे.) अवध की एक नदी, घाघरा।

सरराना†–क्रि. अ. दे. (*अनु. सरसर*) सरसर शब्द करते हुए हवा को फाड़ कर वेग से चलने का शब्द, सवेग, वायु-प्रवाह का रव करना, वेग से चलना या भागना, **सर्राना** (दे.); प्रचण्डता से क्रोध प्रकट करना।

सरल–वि. (सं.) सीधा, ऋजु, सीधा-सादा, निष्कपट, आसान, सहज। संज्ञा, स्त्री. **सरलता**। संज्ञा, पु. चीड़ का वृक्ष, गंधाधिरोजा, सरस का गोंद। वि. स्त्री. **सरला**।

सरलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ऋजुता, सीधापन, सिधाई, निष्कपटता, आसानी, सुगमता, भोलापन, सादगी।

सरल-निर्य्यास–संज्ञा, पु. (सं.) तारपीन का तेल, गंधाबिरोजा।

सरलीकृत, सरलीभूत–क्रि. वि. यौ. (सं.) सरल किया या हुआ।

सरव–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सराब*) मद्य-पात्र, **सरवा** (दे.), कटोरा, प्याला, दिया, **परई** (ग्रा.)।

सरवन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्रमण*) अंधक मुनि के परम पितृ-भक्त पुत्र। *†संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्रवण*) कान, सुनना, एक नक्षत्र। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शालपर्णी*) शालपर्ण (औषधि) **सरिवन**, (दे.)। यौ. दे. शरवन, सर (तड़ाग) और वन (वाटिका)।

सरवर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सरोवर*) तड़ांग, तालाब, ताल।

सरवरि*‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*सदृश*) समता, तुल्यता, तुलना, बराबरी, सदृशता।

सरवा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) शराबक, प्याला, कटोरा, **परई**, छोटा टोंटीदार पात्र।

सरवाक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शरावक्क*) प्याला, कटोरा, कसोरा, संपुट, **संस्था**, दिया, परई (ग्रा॰)।

सरवान–संज्ञा, पु॰ (दे॰) खेमा, घेरा, तम्बू।

सरस–वि॰ (सं॰) रसीला, रसयुक्त, गीला, भीगा, सजल, ताज़ा, हरा, सुन्दर, मनोरम, मीठा, मधुर, भावोद्दीपक, भावपूर्ण उत्तम, भावुक, रसिक, सहृदय, रस भावोत्तेजक। संज्ञा, स्त्री॰ **सरसता**। संज्ञा, पु॰ (सं॰) छप्पय छंद का 35वाँ भेद (पिं॰)।

सरसई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सरस्वती, सरयू*) सरस्वती देवी, शारदा देवी, सरस्वती नदी, सरयू नदी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सरस*) सरसता, रसिकता, रसीलापन, रसपूर्णता, हरापन या ताज़गी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सरसों*) फल के छोटे अंकुर या दाने जो प्रथम देख पड़ते हैं। वि॰ (व्र॰) सरसही।

सरसना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *सरस+ना प्रत्य॰*) हरा होना या पनपना, बढ़ना, सुशोभित होना, रसयुक्त होना, सोहना, भावोमंग से भरना। स॰ रूप–**सरसाना**।

सरसब्ज़–वि॰ (फा॰) हराभरा, तरताज़ा, लहलहाता हुआ, जहाँ हरियाली हो। संज्ञा, स्त्री॰ **सरसब्ज़ी**।

सरसर–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰*) भूमि पर सर्पादि के रेंगने का शब्द, सवेग, वायु-प्रवाह से उत्पन्न ध्वनि, लुवों की लपट।

सरसराना–क्रि॰ अ॰ (*अनु॰ सरसर*) सरसर ध्वनि करते हुए वायु का वेग से चलना, सनसनाना, साँप आदि का रेंगना।

सरसराहट–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *सरसर+आहट प्रत्य॰*) साँप आदि के रेंगने का शब्द, खुजली, **सुरसुराहट** (दे॰) वायु-वेग की ध्वनि।

सरसरी–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *सरसरी*) जल्दी में, उतावली में, मोटे तौर पर, साधारण या स्थूल रूप से। **मु॰ सरसरी में ख़ारिज होना (मुकद्दमा)**–केवल कुछ बातें देख कर ख़ारिज करना। **यौ॰ सरसरी निगाह**–स्थूल या विहंगम दृष्टि।

सरसाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सरस+आई प्रत्य॰*) सरसता, रसीलापन, शोभा, अधिकता।

सरसाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *सरसना का* स॰ *रूप*) रस भरना, हरा-भरा करना, अधिक करना, रस-युक्त करना, भावोदीप्ति करना। *क्रि॰ अ॰ (व्र॰) सजना, शोभा देना। *क्रि॰ अ॰ सरसना, अधिक होना, रसयुक्त होना, **सरसावना** (दे॰)।

सरसाम–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) सन्निपात रोग।

सरसार–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *शरसार*) निमग्न, विलीन, डूबा हुआ, नशे में चूर, मदमस्त।

सरसिज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, तालाब में उत्पन्न होने वाला।

सरसिह–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सरसी*) छोटा तालाब।

सरसिरुह-सरसीरुह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल।

सरसी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) छोटा, तालाब, पुष्करणी, बावली, न, ज, भ (गण), 4 जगण और रगण युक्त एक 24 वर्णों का वर्ण-वृत्त (पिं॰)।

सरसेटना–क्रि॰ स॰ (*अनु॰*) फटकारना, पीछा कर दौड़ना, हैरान करना, खरी-खोटी सुनाना, डाँटना।

सरसों, सरसौं–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सर्षव*) एक पौधा और उसके गई जैसे छोटे गोल तेल-भरे बीज।

सरसौह†–वि॰ दे॰ (सं॰ *सरस*) सरस बनाया हुआ।

सरस्वती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पंजाब की एक पुरानी नदी, गंगा यमुना से प्रयाग में मिलने वाली एक कल्पित नदी, वाणी, शारदा, वाणी या विद्या की देवी, गिरा, वाग्देवी, भारती, विद्या, कविता, ब्रह्मीबूटी।

सरस्वती-पूजा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सरस्वती-उत्सव, जो कहीं आश्विन मास में और कहीं बसंत पंचमी को होता है।

सरह-सरभ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शलभ*) पतंग, पतिंगा, टिड्डी।

सरहटी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सर्पाक्षी*) नकुलकंद, सर्पाक्षी नाम का पौधा।

सरहद-सरहद–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰ *सर+हद=सीमा*) सीमा, मर्य्यादा, किसी स्थान की चौदही निश्चित करने की रेखा, **सींव**।

सरहद-सरहदी–वि॰ (फ़ा॰ *सरहद+ई प्रत्य॰*) सीमा या

मर्यादा-सम्बन्धी, सरहद का।

सरहरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शर*) सरपत या मूँज की जाति का एक पौधा।

सरा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शर*) चिता। संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *सराय*) यात्री-भवन, मुसाफ़िरख़ाना। वि. (दे.) सड़ा (हि.)।

सराग-सरागा†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शलाका*) छड़, सीख, सीकचा, लोहे की शलाख।

सराध*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्राद्ध*) श्राद्ध, पितरों का पूजन। लो.– यौ. **सराध-पाख**।

सराना*†–क्रि. स. (हि. *सारना*) संपादित या पूर्ण कराना, काम पूरा कराना, **सरावना** (दे.), सढ़ाना।

सरापा–क्रि. वि. (फ़ा.) सिर से पैर तक, पूर्णतया। संज्ञा, पु. (दे.) सराप, श्राप, शाप।

सराफ़–संज्ञा, पु. (अ. *शर्राफ़*) चाँदी और सोने का व्यापारी, रुपये-पैसे का बदला करने वाला, दुकानदार।

सराफ़ा–संज्ञा, पु. दे. (अ. *सर्राफ़ा*) सराफ़ों का बाज़ार, सराफ़ी का कान, चाँदी-सोने का रुपये-पैसे के लेन-देन का काम, बंक, कोठी (दे.)।

सराफ़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *सर्राफ़+ई प्रत्य.*) सोने-चाँदी का व्यापार, सराफ़ा का काम या पेशा, रुपये पैसे के बदले का काम, महाजनी लिपि, मुड़ा, मुड़िया।

सराब–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *शराब*) शराव, मदिरा, मद्य, वारुणी, सुरा, मधु। संज्ञा, पु. (अ.) उजाड़ या निर्जन मैदान, रेतीला मैदान; मृग-तृष्णा।

सराबोर-शराबोर–वि. दे. (सं. *सराव+बोर* हि.) तरबतर, बिलकुल भीगा, आर्द्र, गीला।

सराय-सराँय–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) यात्रियों या पथिकों के कटकने का स्थान, ठहरने का मकान या घर, यात्री-भवन, मुसाफ़िरख़ाना, पथिकालय।

सरावग-सरावगी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्रावक*) जैनी, जैन-धर्मावलंबी, जैन।

सरावन-सरावना–संज्ञा, पु. (दे., मिट्टी बराबर करने का हेंगा, मोटी लकड़ी। संज्ञा, पु. (दे.) **सड़ावन, सड़ाव** (हि.)।

सरावना–क्रि. स. (दे.) सड़ाना, सड़ने देना।

सरास–संज्ञा, पु. (दे.) भूसी।

सरासन*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शरासन*) धनुष, शरासन।

सरासर–अव्य. (फ़ा.) एक सिरे से दूसरे सिरे तक, पूर्ण रूप से, पूर्णतया, सारा, प्रत्यक्ष, साक्षात्।

सरासरी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) शीघ्रता, जल्दी, आसानी, फुरती, स्थूलानुमान, मोटा अंदाज़, क्रि. वि. जल्दी या शीघ्रता से, सड़बड़ी में, स्थूल रूप से।

सराह-सराहन*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *साधा*) तारीफ़, प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति, **सराहनि** (ब्र.)।

सराहना–क्रि. स. दे. (सं. *साधन*) प्रशंसा या तारीफ करना, बड़ाई या स्तुति करना। संज्ञा, स्त्री. प्रशंसा, बड़ाई, स्तवन।

सराहनीय–वि. (हि. *सराहना*) श्लाध्य, श्लाधनीय, प्रशंसा के योग्य, स्तुत्य या बढ़ाई के लायक, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया।

सरित्-सरिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नदी, दरिया।

सरित्पति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सिंधु, समुद्र, सागर, नदीश।

सरिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) लोहे आदि धातु की छोटी-मोटी छड़ी।

सरियाना†–क्रि. स. (दे.) क्रम या तरतीब से इकट्ठा करना, सिलसिले से लगाना, लगाना, मारना (बाज़ारु)।

सरिवन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शालपर्णी*) शालपण नामक औषधि विण्णों।

सरिवर-सरिपरि*†–संज्ञा, स्त्री. (दे.) समता, तुल्यता, बराबरी।

सरिश्ता–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *सरिश्ता*) कार्यालय का विभाग, कचहरी, अदालत, महकमा, दफ़्तर।

सरिश्तेदार–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *सरिश्तेदार*) किसी महकमें या विभाग का प्रधान कर्मचारी, मुकदमों की देशी भाषा की मिसलें रखने वाला अदालत का कर्मचारी।

सरिस*–वि. दे. (सं. *सदृश*) सदृश, तुल्य, समान, बराबर।

सरिहन–क्रि. वि. (दे.) समक्ष, प्रत्यक्ष, सामने।

सरीखा–वि. दे. (सं. *सदृश*) जैसा, तुल्य, बराबर, समान, सदृश।

सरीफ़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्रीफल*) एक छोटा पेड़ और उसके गोल मीठे फल, शरीफ़ा।

सरीर*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शरीर*) शरीर, देह, अंग। वि.,

संज्ञा, पु॰ (दे॰) **शरीरी**। वि॰ (दे॰) शरीर (फ़ा॰) बदमाश, दुष्ट।

सरीसृप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रेंगने वाला जन्तु, साँप, सर्प आदि।

सरुज–वि॰ (सं॰) रुग्ण, रोगयुक्त, रोगी।

सरुप–वि॰ (सं॰) कुपित, क्रोधयुक्त।

सरुहाना–क्रि॰ वि॰ (दे॰) अच्छा होना।

सरुहाना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) रोग मुक्त करना, अच्छा करना।

सरूप–वि॰ (सं॰) साकार, आकार वाला, रूप युक्त, समान, सदृश, तुल्य, सम, सुन्दर, रूपवान। संज्ञा, पु॰ (दे॰) स्वरूप।

सरूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फा॰ *सुरुर*) प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, हलका नशा।

सरेख, सरेखा*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *श्रेष्ठ*) चतुर, सज्ञान, होशियार, चालाक, सयाना, बड़ा और समझदार, संज्ञा, स्त्री॰ **सरेखी**।

सरेखना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) सहेजना, सौंपना, सिपुर्द करना।

सरे बाज़ार–क्रि॰ वि॰ (फा॰) हाट में, बाज़ार में, सब लोगों या जनता के सन्मुख, सब के सामने, खुलेआम।

सरेस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सरेश*) सरेश, एक लसदार वस्तु, जो भैंस आदि के चमड़े या मछली के पोटे को पका कर बनाई जाती है, **सहरेस** (प्रान्ती॰)।

सरो–संज्ञा, पु॰ (दे॰) झाऊ जैसा एक सदा हरा रहने वाला सीधा वृक्ष।

सरोकार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) वास्ता, लगाव, ताल्लुक़, सम्बन्ध, प्रयोजन, परस्पर, व्यवहार। (अं॰) कन्सर्न।

सरोज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल।

सरोजना–क्रि॰ स॰ (दे॰) प्राप्त करना, पाना।

सरोजिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कमलों का समूह कमलों का तालाब, कमल का फूल, कमलिनी।

सरोता-सरौता–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सुपारी काटने का हथियार, **सरउता** (ग्रा॰)।

सरोद–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) सितार जैसा एक बाजा।

सरोरूह–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल।

सरोवर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तड़ाग, ताल झील, तालाव, पुखर।

सरोष–वि॰ (सं॰) सक्रोध, कोप-युक्त, कुपित।

सरो-सामान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) माल-असबाव, सामग्री, उपकरण, सामान, मालटाल।

सरौता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सार–लोहा+पत्र*) सुपारी काटने का एक लोहे का औजार। स्त्री॰ *अल्पा॰* **सरौती**।

सर्करा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शर्करा*) शक्कर, खाँड़, **बूरा** (प्रान्ती॰) चीनी।

सर्कार–संज्ञा, स्त्री दे॰ (फ़ा॰ *सरकार*) सरकार। वि॰ (दे॰) **सर्कारी**।

सर्ग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रकृति, सृष्टि, संसार, उद्गम, उत्पत्ति स्थान, जीव, संतान, प्राणी, स्वभाव, गति, फेंकना, प्रवाह, गमन, बहाव, चलना, अध्याय, (विशेषतया काव्य का) प्रकरण।

सर्ज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बड़ी जाति का शाल पेड़, धूना, राल,, सलाई का पेड़, एक ऊनी कपड़ा, **सरज** (दे॰), (अं॰) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

सर्जन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छोड़ना, त्यागना, निकालना, फेंकना, सिरजना, रचना, बनाना, सृष्टि, पैदा करना। वि॰ **सर्जनीय, सर्जित**; (अं॰) शल्य-चिकित्सक।

सर्जू–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सरयू*) सरजू, अवध प्रान्त की एक दिख्यात नदी।

सर्द–वि॰ (फा॰) शीतल, ठंडा, ढीला, सुस्त, काहिल, धीमा, मंद, नामर्द, नपुंसक।

सर्दी–संज्ञा, स्त्री॰ (फा॰) ठंडक, शीतलता, ठंड, शीत, जाड़ा, जुकाम।

सर्प–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साँप, नाग, तेज़ी से चलना, एक म्लेच्छ जाति, **सरप** (दे॰)। स्त्री॰ **सर्पिणी**।

सर्पकाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गरुड़, मोर, नेवला।

सर्पयज्ञ-सर्पयाग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक यज्ञ जो राजा जन्मेजय ने साँपों के नाश के हेतु किया था, **नागयज्ञ**।

सर्पराज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) साँपों का राजा, शेषनाग, वासुकि, **सर्पेश, सर्पाधीश**।

सर्पविद्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह विद्या जिसके द्वारा साँप पकड़ कर वश में किये जाते हैं।

सर्पशत्रु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गरुड़, मोर, नेवला।

सर्पारि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गरुड़, मोर, नेवला।

सर्पिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साँपिनी, नागिनी, मादा साँप, भुजंगीलता।

सर्पी–संज्ञा, पु. (सं. *सर्पिस*) घी, पेट के बल चलने वाला, साँप

सर्फ–संज्ञा, पु. (अं.) व्यय या ख़र्च किया हुआ।

सर्फ़ा–संज्ञा, पु. दे. (अ. *सर्फ़*) व्यय, ख़र्च, **सरफा** (दे.)।

सर्बत-शरबत–संज्ञा, पु. (दे.) **सर्बत,** चीनी मिला पानी।

सर्बस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सर्वस्व*) समस्त, सम्पूर्ण, सब कुछ, सर्वस्व, सारी वस्तुएँ, **सरबस** (दे.)।

सर्राफ–संज्ञा, पु. (अ.) सराफ, सोने-चाँदी का व्यापारी। संज्ञा, स्त्री. **सर्राफी**–सर्राफ का काम या पेशा।

सर्राफा–संज्ञा, पु. (अ.) सराफों का बाज़ार, सराफा (दे.)।

सर्व–वि. (सं.) सम्पूर्ण, सब, सारा, समस्त, कुल, सर्वस्व, तमाम। संज्ञा, पु. (सं.) पांश, शिव, विष्णु।

सर्व काम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सब इच्छायें रखने या पूरी करने वाला।

सर्व काल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नित्य, सदा, सर्वदा, सब समयों में, हमेशा, हरदम, **सर्व समय**।

सर्वग, सर्वगामी–वि. (सं.) सब जगह जाने वाला, सर्वव्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला।

सर्वगत–वि. (सं.) सर्वग, सर्वव्यापक, सर्व-व्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला।

सर्वग्रास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा या सूर्य का पूर्ण ग्रहण, पूरा ग्रहण, खग्रास।

सर्वजनीन–वि. (सं.) सार्वजनिक, सब लोगों के संबंध रखने वाला, सब लोगों का।

सर्वज्ञ–वि. (सं.) सब कुछ जानने वाला। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सर्वज्ञता**। स्त्री **सर्वज्ञा**। संज्ञा, पु. ईश्वर, देवता, अर्हन् या बुद्ध, शिव, विष्णु, सर्ववेत्ता, **सर्वज्ञानी, सर्वज्ञाता**।

सर्वतंत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सर्वशाखा-विरुद्ध, सर्वशास्त्र-सिद्धान्त। वि. जिसे सब शास्त्र मानते हों। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सर्वतंत्रता**।

सर्वतः–*अव्य.* (*सं.*) सब प्रकार से, सब ओर या तरफ़ से, चारों ओर।

सर्वतोभद्र–वि. (सं.) सब ओरों से, कल्याण या मंगल; जिसके सिर, दाढ़ी और मूछ सब के बाल मुड़े हों। संज्ञा, पु. (सं.) वह चार कोने का मंदिर जिसके चारों ओर द्वार हों, पूजा के कपड़े पर बना एक कोठेदार मांगलिक चिन्ह या यंत्र जिसकी पूजा होती है, एक चित्र काव्य, एक प्रकार की पहेली, जिसमें शब्द के कबंडाक्षरों के भी अर्थ हों, विष्णु का रथ।

सर्वतोभाव–*अव्य.* यौ. (सं.) भली भाँति, अच्छी तरह, सब प्रकार से, **सर्वतोभावेन**।

सर्वत्र–*अव्य.* (सं.) सब ठौर या जगह, सब कहीं, सर्वतः।

सर्वथा–*अव्य.* (सं.) सब तरह, सब प्रकार से, बस, बिलकुल।

सर्वदमन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा दुष्यंत का पुत्र, भरत। वि. यौ. (सं.) सब का दमन करने वाला।

सर्वदर्शक, सर्वदर्शी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सर्वदर्शिन्*) सब कुछ देखने वाला, परमेश्वर। स्त्री. **सर्वदर्शिणी, सर्वद्रष्टा**।

सर्वदा–अव्य. (सं.) सदैव, सदा, नित्य, हमेशा, संतत, नितांत, निरंतर, सतत।

सर्वनाम–संज्ञा, पु. (सं. *सर्वनामन्*) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द (व्याक.)।

सर्वनाश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सर्वध्वंस, पूरी-पूरी बरबादी, सत्यानाश, पूर्ण विनाश।

सर्वप्रिय–वि. यौ. (सं.) सब का प्रिय, सब को प्यारा। संज्ञा, स्त्री. **सर्वप्रियता**।

सर्वभक्षक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सब कुछ खाने वाला, धर्मच्युत, अधर्मी।

सर्वभक्षी–संज्ञा, पु. (सं. *सर्वनक्षिन्*) सब कुछ खाने वाला। स्त्री. **सर्वभक्षिणी**। संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि, आग।

सर्वभूत–संज्ञा, पु. (सं.) चराचर, संसार।

सर्वभोगी–वि. (सं. *सर्वभोगिन्*) सब का आनंद लेने वाला, सब खाने वाला, अधर्मी। स्त्री. **सर्वभोगिनी**।

सर्वमंगला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पार्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती।

सर्वमांगल्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सब का कल्याण या मंगल। वि. (सं.) **सर्व-मांगलिक**।

सर्वमय–वि. (सं.) सर्व-स्वरूप, सर्वत्र व्याप्त।

सर्वरी*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शर्वरी*) रात, रात्रि, निशा।

सर्वव्यापक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सब में उपस्थित या फैला हुआ, सर्वव्यापी, सब पदार्थों में रमणशील।

सर्वव्यापी–वि. (सं. *सर्वव्यापिन्*) सब पदार्थों में व्याप्त, सब में फैला या उपस्थित, सब में रमणशील। स्त्री. **सर्वव्यापिनी**।

सर्वशक्तिमान्–वि॰ यौ॰ (सं॰ *सर्वशक्तिमत्*) सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला। स्त्री॰ **सर्वशक्तिमती**। संज्ञा, पु॰ (सं॰) परमेश्वर। संज्ञा, स्त्री॰ **सर्वशक्तिमत्ता**।

सर्वश्रेष्ठ–वि॰ यौ॰ (सं॰) सबसे बढ़कर, सर्वोत्तम, सर्वोच्च।

सर्वसंहार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सबका नाश, सबका नाशक, काल। यौ॰ **सर्वसंहारक, सर्वसंह्वारकर्ता**। साधारण या

सर्वस-सर्षसु–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सर्वस्व*) सर्वस्व, सव कुछ, **सर्बस, सरबस** (दे॰)।

सर्वसाधारण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आम लोग, जनता, सव लोग। वि॰ **आम** (फ़ा॰) जो सब में मिले।

सर्व-सामान्य–वि॰ यौ॰ (सं॰) जो सव में समता से पाया जावे, मामूली, साधारण।

सर्वस्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम्पूर्ण, समस्त, सब कुछ, सारी संपत्ति, सारा धन, सब माल-असबाब, सब सामग्री।

सर्वहर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सब नाश करने वाला, शिव, महादेव, काल, यमराज।

सर्वाग्र–वि॰ यौ॰ (सं॰) सब से आगे, सर्वश्रेष्ट, सर्वोत्तम। यौ॰ **सर्वाग्रगण्य**।

सर्वांग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सारा या संपूर्ण शरीर, सब देह, सब अवयव या भाग, समस्त, सर्वांश। क्रि॰ वि॰ (सं॰) पूर्ण रूप से, सर्वथा। वि॰ (सं॰) **सर्वांगीण**।

सर्वांश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समस्त भाग या अंश, सर्वांग, सम्पूर्ण। क्रि॰ वि॰ (सं॰) पूर्ण रूप से, पूर्णतया, सर्वथा।

सर्वात्मा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *सर्वात्मन्*) सम्पूर्ण संसार की आत्मा या विश्वात्मा, लोकात्मा, ब्रह्म, **अखिलात्मा**, परमेश्वर, विष्णु, शिव, ब्रह्म।

सर्वाधिकार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पूर्ण अधिकार, पूरा इख़्तियार, सब कुछ करने का अधिकार।

सर्वाधिकारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पूर्ण अधिकार वाला, जिसके हाथ में पूरा अधिकार हो।

सर्वाधीश-सर्वाधीश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सब का राजा या मालिक, ईश्वर।

सर्वाशी–वि॰ (सं॰ *सर्वाशिन्*) सब कुछ खाने वाला, सर्वभक्षी। स्त्री॰ **सर्वाशिनी**।

सर्वास्तिवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक दार्शनिक सिद्धांत कि सर्व पदार्थ सत् या सत्य सत्तावान् हैं असतय या असत् नहीं, सत्सत्तावाद। वि॰ **सर्वास्तिवादी**।

सर्वेश-सर्वेश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सब का स्थायी या मालिक, परमेश्वर, अखिलेश्वर राजाधिराज, चक्रवर्ती सम्राट।

सर्वोच्च–वि॰ यौ॰ (सं॰) सब से ऊँचा।

सर्वोत्तम–वि॰ यौ॰ (सं॰) सर्व श्रेष्ठ, सबसे उत्तम, **सर्वोत्कृष्ट**।

सर्वोपरि–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, सब से बड़ा, सवसे उत्तम या श्रेष्ठ। **सर्वाग्रगणय, सर्वोच्य**।

सर्वोषधि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) औषधियों का एक वर्ग जिसमें दस जड़ी बूटियाँ हैं। (आयु॰)। यौ॰ **सर्वोशधीश** (सं॰)–चन्द्रमा, मृगांक रस।

सर्षप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सरसों, सरसों के बराबर का मान या परिमाण।

सलई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शल्लकी*) चीड़ या शल्ल का वृक्ष, चीड़ का गोंद, **कुंदर** (प्रान्ती॰) **सरई**।

सलकी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कमल की जड़।

सलगम, सलजम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शलजम*) शलजम।

सलज्ज–वि॰ (सं॰) लज्जालू, लज्जावान्, शर्मीला, हयावाला, लज्जाशील। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सलज्जता**। स्त्री॰ **सलज्जा**।

सलतनत, सल्तनत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *सल्तनत*) बादशाहत (फ़ा॰) साम्राज्य, राज्य, प्रबंध, इंतिज़ाम, आराम, सुभीता।

सलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शल्य*) छिदना, भिदना, छेद में डाला या पहनाया जाना, साला जाना (खाट आदि)। स॰ रूप–**सालना**, प्रे॰ रूप–**सलवाना**।

सलब–वि॰ दे॰ (अ॰ *शल्व*) नष्ट भ्रष्ट, ख़राब, बरबाद।

सलमा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *सलम*) सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है, **बादला** (प्रान्ती॰)। यौ॰ **सालमा-सितारा**।

सलवट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हिं॰ *सिलवट*) सिलवट, शिकन, सिकुड़न।

सलहज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्यालजाया*, हि॰ *सरहज*) सरहज, साले की स्त्री।

सलाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शलाका*) लोहे आदि धातु की पतली छड़, शलाका, **सराई** (दे॰)। **मु॰ सलाई फेरना**–अंधा करने के लिये गरम सलाई आँख में लगाना। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सालना*) सालने की क्रिया या भाव अथवा मज़दूरी।

सलाक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शलाका*) पतली लोहे आदि की छड़, तीर, **सलाका** (स्त्री.)।

सलाख़–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा. *मि. सं. शलाका*) लोहे आदि धातु की पतली छड़, **सलाई** (दे.), शलाका।

सलाद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सैलाट*) मूली, प्याज आदि के पत्तों का अंग्रेज़ी अचार, कच्चे खाने के एक कंद के पत्ते, कच्ची सब्ज़ियों का व्यंजन।

सलाम–संज्ञा, पु. (अ.) प्रणाम, बंदगी, नमस्कार, आदाब। यौ. **सलाम अले कुम्।** **मु. दूर से सलाम करना**–किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। **सलाम बोलना**–उपस्थित या हाज़िर होना, हाजिरी देना। **सलाम देना**–सलाम करना, आने या बुलाने की सूचना देना।

सलाम लेना–सलाम का जवाब देना।

सलामत–वि. (अ.) रक्षित, बचा हुआ, जीवित, स्वस्थ, जिंदा व तन्दुरुस्त, बरक़रार, क़ायम। क्रि. वि. कुशलक्षेम से, कुशलक्षेम-पूर्वक, ख़ैरियत से। यौ. **सही-सलामत**।

सलामती–संज्ञा, स्त्री. (अ. *सलामत+ई प्रत्य.*) स्वस्थता, तन्दुरुस्ती, कुशलक्षेम। यौ. **सही सलामत से**।

सलामी–संज्ञा, स्त्री. (अ. *सलाम+ई प्रत्य.*) सलाम या प्रणाम करना, बंदगी करना, सैनिकों के प्रणाम करने की रीति, तोपों या बंदूकों की बाढ़ जो बड़े अफ़सर या माननीय पुरुष के आने पर दागी जाती है। **मु. सलामी उतारना (दागना)**–किसी के स्वागतार्थ तोपों या बंदूकों की बाढ़ दागना।

सलार–संज्ञा, पु. (दे.) भाँति की चिड़िया।

सलाह–संज्ञा, स्त्री. (अ.) **सल्लाह** (ग्रा.) परामर्श, सम्मति, राय, मशबिरा, सुलह, मेल, सुमति।

सलाहकार–संज्ञा, पु. (अ. *सलाह+कार* फ़ा.) सम्मति या परामर्श देने वाला, राय देने वाला, अनुमतिदाता।

सलाही–संज्ञा, पु. (फा.) सलाहकार, साथ, मेली, मित्र, **सल्लाही** (ग्रा.)।

सलि–संज्ञा, स्त्री. (दे.) चिता।

सलिल–संज्ञा, पु. (सं.) वारि, पानी, जल, नीर।

सलिल-पति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वरुण, समुद्र।

सलिलाधिपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **सलिलेश**, सागर, वरुण।

सलिलेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सागर, वरुण, नीरनिधि।

सलीक़ा–संज्ञा, पु. (अ.) योग्यता, लियाकत, तमीज़, अच्छा ढंग या तरीक़ा, चाल-चलन, आचार व्यवहार, चाल-ढाल।

सलीकामंद–वि. (अ. *सलीक्का+*फ़ा. *मंद फा*) अक्लमंद, बुद्धिमान, तमीज़दार, हुनरमंद, शिष्ट, सभ्य, शऊरदार।

सलीस–वि. (अ.) सरल, सुगम, सहज, मुहाबरेदार, प्रचलित भाषा।

सलूक–संज्ञा, पु. (अ.) आचार, व्यवहार, आचरण, बरताव, मेल, मिलाप, भलाई, उपकार, नेकी।

सलूका–संज्ञा, पु. (सं.) बानर नचाने वाला मदारी। संज्ञा, पु. (दे.) बंडी, कुरती।

सलूना, सलोना–वि. दे. (सं. *सलवण*) सलोना, नमकीन, स्वादिष्ट, मज़ेदार, लावण्यमय, सुन्दर, मनोहर। विलो. **अलोना**।

सलूनो–संज्ञा, स्त्री. (दे.) रक्षाबंधन का त्योहार।

सलैला–वि. (दे.) वह भूमि जिस पर पाँव फिसले।

सल्लोतर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शालिहोत्र*) अश्व चिकित्सा-विज्ञान, वह पुस्तक जिसमें घोड़े आदि पशुओं के भेद और उनकी दवा आदि का वर्णन है।

सलोतरी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शालिहोत्री*) अश्वचिकित्सक, घोड़ों का वैद्य, पशु-वैद्य।

सलोन-सलौना, सलोना–वि. (सं. *सलवण*) सुंदर, मनोहर, स्वादिष्ट, नमकीन, लावण्यमय। स्त्री. **सलोरी-सलौनी**।

सलोनापन–संज्ञा, पु. (हि.) सलोना होने का भाव या क्रिया।

सलोनी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्रावणी*) ब्राह्मणों का सावन की पूर्णमासी का त्योहार, श्रावणी, राखीपूनो, रक्षाबंधन, **सलूनो** (दे.); वि. लावण्यमयी।

सल्लभ–संज्ञा, स्त्री. (दे.) गज़ी, गाढ़ा, खद्दर, एक मोटा कपड़ा।

सल्लु–संज्ञा, पु. (दे.) जूता सीने का चमड़ा।

सल्लो–संज्ञा, स्त्री. (दे.) भोली-भाली स्त्री, भोली या मूर्ख औरत।

सवत, सवति–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सपत्नी*) एक ही व्यक्ति की दो स्त्रियाँ परस्पर सवति या सपत्नी कही जाती हैं, सपत्नी, **सौति**।

सवत्सा–वि. स्त्री. (सं.) बच्चा के सहित, **बच्चायुक्त**। पु. **सवत्स**।

सवन–संज्ञा, पु. (सं.) बच्चा जनना, प्रसव, यज्ञ, यज्ञ-स्नान, अग्नि, चन्द्रमा।

सवर–संज्ञा, पु. (सं.) कोल, भील।

सवरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भीलिनी, कोलिनी।

सवर्ण–वि. (सं.) समान वर्ण (रंग) या जाति का, समान वर्ण (अक्षर) युक्त, सदृश, तुल्य। संज्ञा, पु. (सं.) स नाम का अक्षर। वि. एक ही जाति के संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सवणता**।

सवाँग-संज्ञा, पु. दे. (सं. *सु+अंग*) स्वाँग, दूसरे का सा भेष, नकल, पर-रूप धारण। संज्ञा, पु. (*दला.*) दो की संख्या।

सवा–संज्ञा, स्त्री. (सं. *सपाद*) एक पूरी और उसी की चौथाई मिलकर, चतुर्थीशयुक्त पूर्ण।

सवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सवा+ई प्रत्य.*) मूलधन और उसकी चौथाई ब्याज (ऋण-भेद), जयपुर के महाराजाओं की उपाधि। वि. (दे.) एक और चौथाई, सवा, **सवैया** (दे.)।

सवाद–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वाद*) स्वाद, मज़ा, जायका। वि. (दे.) **सवादी**।

सवाय–संज्ञा, पु. (अ.) सुकर्म का फल, पुण्य, नेकी, भलाई।

सवाया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सपाद*) सवाई, सवा, **सवाया** (ग्रा.), एक और चौथाई का पहाड़ा।

सवार–संज्ञा, पु. (फा.) वह व्यक्ति जो घोड़े पर चढ़ा हो, अश्वारोही, अश्वारोही सैनिक, जो किसी पर बैठा या चढ़ा हो। वि. किसी पर चढ़ा या बैठा हुआ, प्रभावित हुआ, आवेश-युक्त (होना)। **मु. भूत सवार होना**–उन्माद या प्रेतावेश होना, क्रोधादि से प्रभावित होना, व्यर्थ थकना।

सवारी–संज्ञा, स्त्री. (फा.) चढ़ने की क्रिया, चढ़ने या सवार होने की वस्तु, वह व्यक्ति जो सवार हो, जलूस। **मु. (राजा आदि को) सवारी निकलना**–राजा का जलूस निकलना। **(किसी पर) सवारी गाँठना**–**(किसी पर)** आशंक या प्रभाव डालना, आधीरन करना।

सवारे, सवारैं–क्रि. वि. दे. (हि. *सवार*) शीघ्र, सवेरे, दिन रहते।

सवाल–संज्ञा, पु. (अ.) पूछना, जो पूछा जाये, प्रश्न, विचारणीय बात, समस्या, माँग, निवेदन, प्रार्थना, दरख़ास्त, गणित का प्रश्न जिसका उत्तर माँगा जाता है। (विलो. **जवाब**)।

सवाल-जवाब–संज्ञा, पु. यौ. (अ.) प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद, बहस, हुज्जत, तकरार, झगड़ा।

सविकल्प–वि. (सं.) संदेहयुक्त, संशयात्मक, विकल्प-सहित, संदिग्ध, जो दोनों पक्षों का निर्णय न कर सकने पर किसी विषय को मान ले। संज्ञा, पु. (सं.) किसी आलंबन की सहायता से युक्त साध्य समाधि।

सविता–संज्ञा, पु. (अ. *सवितृ*) रवि, सूर्य, भानु, भास्कर, मार्तण्ड, बारह की संख्या, मदार, आक, अर्क।

सविता-तनय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यम, शनि, कर्ण, बाज़ि। स्त्री. **सविता-तनया**–यमुना।

सवितात्मज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) यम, करण, बालि, शनि। स्त्री. **सवितात्मजा**–यमुना।

सवितापुत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सवितृ+पुत्र*) सूर्य के पुत्र, यम, शनिश्चर, करण, बालि, **हिरण्यपाणि**।

सवितासुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सवितृ+सुत*) सूर्य के पुत्र, यम, शनिश्चर, करण, बालि।

सविधि, सविधान–वि. (सं.) विधि-पूर्वक, विधान के साथ।

सविनय अवज्ञा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) राजा की किसी आज्ञा या राज्य के किसी क़ानून को न मानना और नग्न रहना।

सवेग–वि. (सं.) वेग के साथ, तेज़ी से।

सवेरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सवेला*) प्रभात, प्रातःकाल, तड़के, सुबह, निश्चित समय के पहले का समय, **सबेर, सकार** (ग्रा.)। क्रि. वि. (दे.) **सबेरे**। यो. **साँझ-सवेरे**।

सवैया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सवा+ऐया प्रत्य.*) तौलने का सवा सेर का बाट या मान, 7 भगण और एक गुरु वर्ण का एक छंद के दिया, मालिनी (पिं.)। एक, दो, तीन, आदि संख्याओं का सवाया का पहाड़ा।

सव्य–वि. (सं.) दक्षिण, दाँया, दाहिना, वाम, वायाँ, विरुद्ध, प्रतिकूल। (विलो. **अपसव्य**)। संज्ञा, पु. (सं.) यज्ञोपवीत, विष्णु।

सव्यसाची–संज्ञा, पु. (सं.) अर्जुन।

सशंक–वि. (सं.) शंकित, सभीत, भयभीत, भयानक, भयंकर। संज्ञा, पु. स्त्री. (सं.) **सशंकता**। विलो. **अशंक**।

सशंकना*–क्रि. अ. दे. (सं. *सशंक+ना प्रत्य.*) शंका करना, डरना, भयभीत होना।

सशंकित–वि. (सं.) आशंकित, सभीत।

सस*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शशि*) **ससि** (दे.) चंद्रमा। संज्ञा,

पु. दे. (सं. *शस्य*) खेतों में खड़े हरे अनाज के पौधे, खेतों में खड़ा अन्न, खेतीवारी।

ससक, ससा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शशक*) **खरहा** (ग्रा.) खरगोश।

ससस्रंग (दे.) **ससकशृंग**–असम्भव बात।

ससकना–क्रि. अ. (दे.) जी घबराना, सिसकना, रोना, झिझकना।

ससधर-ससहर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शशिथर-शशिहर*) चंद्रमा, ससिधर।

ससांक–संज्ञा, पु. (दे.) **शशांक**, चंद्रमा।

ससि*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शशि*) चंद्रमा।

ससिधर-ससिहर*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शशिधर*) चंद्रमा।

ससुर–संज्ञा, पु. दे. (*श्वशुर*) पति या पत्नी का पिता, श्वशुर।

ससुरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्वशुर*) श्वशुर, ससुर, एक प्रकार की गाली, ससुराल। स्त्री. (दे.) **ससुरी**–सास, पति या पत्नी की माता (गाली)।

ससुरा-ससुरारि, ससुराल–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *श्वशुरालय*) ससुर का घर या गाँव, **ससुरारी** (ग्रा.), पति या पत्नी के पिता का घर या गाँव।

सस्ता–वि. दे. (सं. *स्वस्थ*) कम या थोड़े मूल्य का, जिसका भाव बहुत गिर गया हो। विलो. **मँहगा**। स्त्री. **सस्ती**। **मु. सस्ते छूटना (निबटना)**–थोड़ श्रम, व्यय या कष्ट में कोई कार्य हो जाना। घटिया, मामूली, साधारण। **सस्ता पड़ना**–किसी कार्य या वस्तु का कम श्रम या मूल्य में प्राप्त होना।

सस्ती–संज्ञा, स्त्री. (हि. *सस्ता*) सस्ता होने का भाव, सस्तापन, वह समय जब सब वस्तुयें कम मूल्य पर मिलें।

सस्त्रीक–वि. (सं.) जिसके साथ स्त्री भी हो, पत्नी-सहित, स्त्री-युक्त (अ.)।

सस्य–संज्ञा, पु. (सं.) धान्य, अनाज।

सह–अव्य. (सं.) साथ, सहित, समेत, युक्त। वि. (सं.) उपस्थित मौजूद, योग्य, समर्थ, सहनशील।

सहकार–संज्ञा, पु. (सं.) आम का पेड़, सहयोग, सहायक, सुगंधित पदार्थ।

सहकारता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) योग्यता, सहायता, मदद; कई लोगों का एक साथ मिलकर काम करना।

सहकारिता–संज्ञा, स्त्री. (स.) सहायक होने वाला, सहकारी, सहायता या मदद, सहायक, सहायतार्थ कार्य।

सहकारी–संज्ञा, पु. (सं. *सहकारिन्*) साथ-साथ काम करने वाला, सहयोगी, साथी, सहायक, मददगार। स्त्री. **सहकारिणी**।

सहगमन–संज्ञा, पु. (सं.) पति के शव के साथ पत्नी का जल जाना, सती होना, **सहगवन, सहगौन** (दे.)।

सहगामिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वह स्त्री जो अपने स्वामी के शव के साथ जल जावे या सती हो। स्त्री पत्नी, सहचारी, साथिन, साथिनी, **सहगौनी** (दे.)।

सहगामी–संज्ञा, पु. (सं. *सहगामिन्*) साथ चलने वाला, साथी, सहचर। स्त्री. **सहगामिनी**।

सहचर–संज्ञा, पु. (सं.) संगी, साथी, साथ चलने वाला, दास, सेवक, नोकर, अनुचर, मित्र, स्नेही, दोस्त। स्त्री. **सहचरी**। संज्ञा, पु. (सं.) **साहचर्य**।

सहचरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) साथ जलने वाली, पत्नी, स्त्री, सखी, सहेली, संगिनी, साथिनी।

सहचार–संज्ञा, पु. (स.) साथी, संगी, मित्र, साथ, सोहवत, संग।

सहचारिणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) साथ, साथ रहने वाली, सखी, सहेली, संगिनी, साथिनी, स्त्री, पत्नी।

सहचारिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सहचर्य सहचारी होने का भाव, सहचारीपन।

सहचारी–संज्ञा, पु. (सं. *सहचारिन्*) साथी, संगी, मित्र, स्नेही, सेवक, अनुचर, स्वामी, पति। स्त्री. **सहचारिणी**।

सहज–संज्ञा, पु. (सं.) सहोदर भाई, सगा भाई, साथ उत्पन्न होने वाले दो भाई, स्वभाव, प्रकृति। स्त्री. **सहजा**। वि. स्वाभाविक, प्राकृतिक, साधारण, सरल, सीधा, सुगम, साथ पैदा होने वाला।

सहजन-सहिजनि–संज्ञा, पु. दे. (सं. *रसांजन*) एक वृक्ष विशेष, **सहिजना, मुनगा** (प्रान्ती.)।

सहजपंथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गौढ़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग, सखी या **सहजिया-संप्रदाय**।

सहजात–वि. (सं.) यमज, सहोदार, एक साथ उत्पन्न होने वाले।

सहजानि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्त्री, पत्नी।

सहजिया–संज्ञा, पु. (सं. *सहज पंथ*) सहज पंथ का अनुयायी व्यक्ति।

सहजै–अव्य. दे. (सं. *सहज*) अनायास, सहज ही।

सहतरा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *शाहताह*) पित्तपापड़ा, **पर्पटक,** पर्पट (सं.)।

सहत्व–संज्ञा, पु. (सं.) सह का भाव, एकता, मेल-जोल, मेल-मिलाप।

सहदाशी*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सज्ञान*) चिन्ह, निशानी, पहचान, उपमा, **सहिदानी** (दे.)।

सहदेई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सहदेवी*) क्षुप जाति की एक पर्वतीय वनौषधि।

सहदेव–संज्ञा, पु. (सं.) पांडु नृप के पुत्र, पाडवों में सब से छोटे भाई, माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों के औरस पुत्र, जरासंध का पुत्र, जो अभिमन्यु के हाथ से मारा गया (महा.)।

सहधर्म चारिणी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) पत्नी, स्त्री, भार्या।

सहन–संज्ञा, पु. (सं.) क्षमा करना, सहलेना, वरदाश्त करना, तितिक्षा, क्षांति, क्षमा, शांति। यौ. **सहन शक्ति**। संज्ञा, पु. (अ.) घर के बीच या सामने का खुला भाग, आँगन, मैदान, चौक, एक रेशमी वस्त्र।

सहनभंडार–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) कोष, धनराशि, ख़ज़ाना, संपत्ति।

सहनशील–वि. (सं.) संज्ञा, स्त्री. सहिष्णु, सहने या बरदाश्त करने वाला, संतोषी, **साविर** (फ़ा.) **सहनशीलता**।

सहना–क्रि. स. दे. (सं. *सहन*) फल भोगना, झेलना, बरदाश्त करना, अपने ऊपर लेना, बोझा उठाना, भार सहन करना। स. रूप–**सहाना, सहावना,** प्रे. रूप.–**सहवाना**।

सहनाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *शहनाई*) रोशन चौकी, नफ़ीरी बाजा।

सहनीय–वि. (सं.) सहन करने योग्य।

सहपाठी–संज्ञा, पु. (सं. *सहपाठिन्*) साथ पढ़ने वाला, सहाध्यायी। स्त्री. **सहपाठनी**।

सहभोज, सहभोजन–संज्ञा, पु. (सं.) साथ-साथ खाना, एक साथ बैठकर खाना। संज्ञा, स्त्री. **सहभोजता**।

सहभोजी–संज्ञा, पु. (सं. *सहभोजिन्*) वे लोग जो एक साथ बैठ कर खाते हों।

सहम–संज्ञा, पु. (फ़ा.) शका, भय, डर, संकोच, मुलाहिज़ा, लिहाज़।

सहमत–वि. (सं.) एक मत या विचार का, जिसका मत या विचार दूसरे से मिलता हो।

सहमना–क्रि. अ. दे. (फ़ा. *सहम+ना प्रत्य.*) डर जाना, डरना, भयभीत होना। मूर्छित होना, घबरा जाना, सूख जाना।

सहमरण–संज्ञा, पु. (सं.) मृत पति के शव के साथ पत्नी का चिता में जलना, सती होना।

सहमाना–क्रि. स. (हि. *सहमना का* स. रूप) डराना, भयभीत करना, धमकाना।

सहमृता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सती, सहमरण करने वाली स्त्री।

सहयोग–संज्ञा, पु. (सं.) परस्पर मिलकर साथ कार्य करने का भाव, संग, साथ, सहायता, सरकार के साथ मिलकर कार्य करना, सरकारी सभाओं में सम्मिलित होना और सरकार के पदाधिकार ग्रहण करना (भा. राज.)।

सहयोगी–संज्ञा, पु (सं.) सहायक, सहकारी, सहयोग करने वाला, मिलकर साथ कार्य करने वाला, समकालीन, जो किसी के साथ एक ही समय में रहे, आज-कल सरकार के साथ मिलकर कार्य करने उसकी सभाओं में जाने वाला, तथा सरकारी पदो-पाधियों का ग्रहण करने वाला (भा. राज.)।

सहर–संज्ञा, पु. (अ.) प्रभात, सवेरा, प्रातःकाल, तड़का। संज्ञा, पु. दे. (अ. *सेहर*) टोना. जादू। संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *शहर*) शहर, नगर। वि. (दे.) **सहराती**। क्रि. वि. दे. (हि. *सहारना*) धीरे-धीरे, मंदगति से, रुक-रुक कर, शनैः-शनैः।

सहरगही–संज्ञा, स्त्री. (अ. *सहर+गह* फ़ा.) वह भोजन जो व्रत रखने के पूर्व बडे तड़के किया जाता है सहरी।

सहराता–वि. दे. (फ़ा. *शहराती*) शहर का, नागरिक, शहर-संबंधी।

सहरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शफरी*) सफरी, मछली। संज्ञा, स्त्री. (दे.) सहरगही, प्रातःभोजन। संज्ञा, स्त्री. (हि. *सहारा*) नौका, नाव, डोंगी।

सहल–वि. (अ. मि. सं. *सरल*) सरल, सहज, आसान।

सहलाना–क्रि. स. (अनु.) किसी के ऊपर धीरे-धीरे हाथ फेरना, **सहराना** (दे.) सुहारना, गुदगुदाना, मलना। क्रि.

अ. (दे.)। गुदगुदी होना, खुजलाना, सोहराना (दे.)।

सहवास–संज्ञा, पु. (सं.) साथ रहना, संग, साथ, रति, संभोग, मैथुन, प्रसंग।

सहवासिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं. *सहवास*) साथ रहने वाली, साथिनी, संगिनी।

सहवासी–संज्ञा, पु. (सं. *सहवासिन्*) साथ रहने वाला, पड़ोसी।

सहवैया–वि. दे. (हि. *सहना*) सहन करने वाला, सहने वाला, सहनशील, सहिष्णु।

सहस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सहस*) दश सौ की संख्या। (दे.) जो गिनती में दस सौ हो।

सहसकिरन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सहस्रकिरण*) सूर्य, भानु, भास्कर, रवि, सहस्रांशु, सहस्ररश्मि।

सहसदल-सहसपत्र–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सहस्रदल, सहस्रपत्र*) कमल।

सहसनैन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सहस्रनयन*) इन्द्र, देवराज, **सहस-लोचन**।

सहस-बदन, सहसमुख–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सहस्रवदन-सहस्रमुख*) शेषनाग।

सहसा–अव्य. (सं.) शीघ्र, झटपट, अचानक, अकस्मात्, एकाएक।

सहसाक्षि-सहसाखी*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सहस्राक्ष*) इन्द्र, देवराज।

सहसानन*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सहस्रानन*) शेषनाग।

सहसांसु–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) **सहस्रांशु** (सं.) सूर्य।

सहस्र–संज्ञा, पु. (सं.) दस सौ की संख्या। वि. (सं.) जो गिनती में दस सौ हो।

सहस्रकर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य।

सहस्रकिरण–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य, **सहस्रांशु**।

सहस्रचक्षु–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सहस्रचक्षुस्*) इन्द्र, देवराज, सहस्राक्ष।

सहस्र-दल, सहस्र-पत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कमल।

सहस्र-दल, सहस्र-पत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक छेददार पात्र जिससे देवताओं को स्नान कराया जाता है।

सहस्रनयन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इन्द्र, देवराज, **सहस्रलोचन**।

सहस्रनाम–संज्ञा, पु. (सं.) किसी देवता के हज़ार नाम वाला स्तोत्र, जैसे–विष्णु-सहस्रनाम।

सहस्रनेत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इन्द्र, देवराज, **सहस्रनयन, सहस्र-लोचन**।

सहस्रपाद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य, विष्णु।

सहस्रबाहु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा कृतवीर्य के पुत्र कार्तिवीर्य्यार्जुन, हैहयराज।

सहस्रमुख–संज्ञा, पु. यौ. सहस्रानन, शेष-नाग।

सहस्रभुजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देवी जी का एक रूप, **सहसभुजी** (दे.)।

सहस्ररश्मि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य, भानु।

सहस्रवदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शेषनाग।

सहस्रशीर्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्म, विष्णु, परमात्मा।

सहस्राक्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) इन्द्र, विष्णु, परमात्मा।

सहस्रानन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शेषनाग।

सहाइ-सहाई*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सहाय्य*) सहायक, मददगार। संज्ञा, स्त्री. (दे.) सहायता, मदद, **सहाय** (दे.)।

सहानुभूति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) किसी को दुखी जानकर आप भी दुखी होना, हमदर्दी, पर विषदादि का अनुभव।

सहाय–संज्ञा, पु. (सं.) सहायता, मदद, सहारा, आश्रय, भरोसा, सहायक, मददगार।

सहायक–वि. (सं.) सहायता या मदद करने वाला, मददगार, छोटी नदी जो किसी बड़ी नदी में गिरे, अधीन रहकर काम में सहायता करने वाला। स्त्री. **सहायिका**।

सहायता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) साहाय्य, मदद करना, किसी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये दिया गया धन, मदद, किसी के किसी कार्य में शारीरिक, आर्थिक आदि योग देना।

सहायी, सहाई–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सहाय+ई प्रत्य.*) मददगार, सहायक, मदद, सहायता।

सहार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सहना*) सहनशीलता, बर्दाश्त, सहना।

सहारना†–क्रि. से. दे. (*सहन या* हि. *सहारा*) सहन या बर्दाशत करना, अपने सिर पर भार लेना, सहना।

सहारा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सहाय*) सहायता, मदद, आसरा, आश्रय, भरोसा, इतमीनान।

सहालग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *साहित्य*) ब्याह शादी की मुहूर्त्तों के दिन, ब्याह शादी की लग्नों के महीने, **सहारग** (दे.)।

सहावल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) लोहे इत्यादि का लटकन जिससे दीवाल की बराबरी जाँची जाती है। **साहुल,** नहर विभाग का एक कर्मचारी।

सहिजन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शोभांजन*) लंबी फलियों का एक बड़ा वृक्ष, शोभांजन, मुनगा, एक वृक्ष विशेष, **सहजना** (दे॰)।

सहिजानी*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं *सजान*) पहिचान, चिन्ह, निशानी, समता, उपमा, **सहिदानी**।

सहित–अव्य॰ (सं॰) साथ, युक्त, समत, संग। वि॰ (सं॰ *सह+हित-हितेनसहित*) हित के साथ।

सहिथी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) वरछी।

सहिदान*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सजान*) चिन्ह पहिचान, निशानी। स्त्री॰ **सहिदानी**।

सहिदानी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सहिदान का स्त्री॰*) निशानी, समता, उपमा, पहिचान, चिह्न।

सहिष्णु–वि॰ (सं॰) सहने वाला, वर्दाश्त करने वाला, सहनशील।

सहिष्णुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सहन-शीलता।

सही–वि॰ दे॰ (अ॰ *सहीह*) ठीक, शुद्ध, यथार्थ, प्रामाणिक, सत्य। रामा॰। क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सहना*) सहे। मु॰ **सही भरना**–मान लेना। दस्तख़त हस्ताक्षर।

सही-सलामत–वि॰ (अ॰) सकुशल, क्षेम कुशल, भला-चंगा, आरोगय, तंदुरुस्त, दोष या न्यूनता से रहित। संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰) **सही-सलामती से**।

सहूलियत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) सरलता, सुगमता, आसानी, अदव कायदा, शऊर, योग्यता।

सहृदय–वि॰ (सं॰) सरस-हृदयी, भावुक रसिक, वह पुरुष जो दूसरे का भी सुख-दुख अपना सा समझता हो, दयालु, दयावान, सज्जन, भलामानुस, सदय। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सहृदयता**।

सहेजना–क्रि॰ स॰ दे॰ (अ॰ *सही*) भली-भाँति जाँचना, गिनना, या सँभालना, खूब समझा-बुझाकर सौंपना या कह-सुनकर सिपुर्द करना।

सहेजवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सहेजना का प्रे॰ रूप*) सहेजने का कार्य दूसरे से कराना।

सहेतु, सहेतुक–वि॰ (सं॰) जिसका कुछ प्रयोजन या मतलब हो, उद्देश्य या कुछ कारण से युक्त।

सहेली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सह+एली* हि॰ *प्रत्य॰*) सखी, संगिनी, साथिनी, दासी। यौ॰ **सखी-सहेली**।

सहैया*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सहाय*) सहायक, मददगार। वि॰ दे॰ (सं॰ *सहन*) सहिष्णु, सहन या बर्दाश्त करने वाला।

सहोक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक काव्यालंकार, जहाँ संग, साथ, सहादि शब्दों के प्रयोग के साथ, अनेक कार्य एक ही साथ होते कहे जायें (अ॰ पी॰)।

सहोदर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ही माता से उत्पन्न संतान। वि॰ सगा, अपना, खास। स्त्री॰ **सहोदरा**।

सहौटा–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) चौखट, द्वार।

सह्य–संज्ञा, पु (सं॰) सहस्रादि पर्वत विशेष। वि॰ (सं॰) सहने योग्य, बर्दाश्त करने लायक। (विलो॰ **असह्य**)।

सहस्रादि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक पर्वत विशेष (मुंबई प्रान्त)।

साँई–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वामी*), **सँइयां साँइयाँ** (ग्रा॰) परमेश्वर, मालिक, पति, भर्ता, मुसलमान फ़क़ीरों की उपाधि।

साँकड़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शृंखला*) पैरों का एक आभूषण विशेष, बड़ी मोटी और भारी जंज़ीर।

साँकर*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शृंखला*) जंज़ीर, सँकरी, शृंखला। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संकीर्ण*) संकट, आपत्ति, कष्ट। वि॰ (दे॰) संकीर्ण, तंग, संकरा, कष्टमय, दुःखमय। स्त्री॰ (दे॰) **साँकरी**।

साँखू, साखू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाल*) एक पेड़, शाल वृक्ष।

सांख्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महर्षि कपिल-कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें सत्व, रज, सतमयी प्रकृति को ही मूल (सृष्टिसार) माना है।

सांग–वि॰ (सं॰) अंगों के सहित, पूर्ण।

साँग–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शक्ति*) शक्ति, फेंककर मारने की बरछी, बरछा, भाला। वि॰ दे॰ (सं॰ *सांग*) सम्पूर्ण, पूरा, अंगों के सहित।

साँगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शक्ति*) शक्ति, फेंककर मारने की बरछी, भाला, बरछा।

सांगूस–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार की मछली।

सांगोपांग–अव्य॰ यौ॰ (सं॰ *सांग+उपांग*) अंगों और उपांगों

के सहित, समस्त, सम्पूर्ण, सब।

साँघर–संज्ञा, पु. (दे.) स्त्री के प्रथम पति का लड़का।

साँच, साँचा*†–वि. पु. दे. (सं. *सत्य*) वास्तविक, सत्य, ठीक, यथार्थ, **साँचो** (ब्र.) सही। स्त्री. **साँची**। "साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप"–(लो.)।

साँचा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्थाता*) फ़रमा, वह उपकरण जिसमें कोई गीली वस्तु डालकर कोई विशेष आकार-प्रकार की वस्तु बनाई जाये। **मु. साँचे में ढालना**–विशेष सुन्दर बनाना। **साँचे में ढला होना**–बहुत ही सुन्दर होना, बड़ी आकृति की वस्तु के बनाने से पूर्व नमूने के लिये बनाई गई छोटी आकृति की वस्तु, बेल-बूटे बनाने का ठप्पा, छापा। वि. दे. (सं. *सत्यका*) सत्यवादी, सत्यवक्ता, सच बोलने वाला, सत्य, यथार्थ।

साँची–संज्ञा, पु. (*साँची नगर*) एक तरह का ठंडा पान। संज्ञा, पु. (दे.) पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पक्तियाँ टेड़े दल में होती थीं। वि. स्त्री. दे. (हि. *साँचा का स्त्री.*) सत्य, सच।

साँझ†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संध्या*) **संझा** (दे.), संध्या, शाम। यौ. **साँझ-सकारे (सबेरे)**।

साँझा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *साझा*) साझा। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संध्या*) संध्या।

साँझी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) प्रायः सावन के महीने में देव मंदिरों में भूमि पर की गई फूल-पत्तों की सजावट, एक उत्सव।

साँट–संज्ञा, स्त्री. दे. (अनु. सट से) पतली कमची या छड़ी, कोड़ा, शरीर पर कोड़े आदि के आघात का दाग।

साँटन, साटन–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

साँटना, साटना–क्रि. स. (दे.) मिलाना, लिपटाना, चिपकाना, गाँठना, सटाना। स. रूप, **सटाना**, प्रे. रूप–**सटवाना**।

साँटा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *साँट*) कोड़ा, छड़ी, गन्ना, ईख। स्त्री. **सटिया** (ग्रा.)।

साँटिया–संज्ञा, पु. दे. (हि. साँठी) मुनादी करने वाला, दुग्गी या डौंड़ी पीटने वाला।

साँटी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *साँटा*) लचीली पतली छोटी छड़ी, छोटा कोड़ा, संज्ञा, स्त्री. (हि. *साँटना*) मेल-मिलाप, प्रतिकार, बदला, प्रतिहिंसा।

साँठ–संज्ञा, पु. (दे.) साँकड़ा, सरकंडा, गन्ना, ईख। यौ. **साँठ-गाँठ**–मेल-मिलाप, अनुचित गुप्त संबंध।

साँठना–क्रि. स. दे. (हि. *साँठ*) साँटना, पकड़े रहना, गुप्त और अनुचित सम्बन्ध करना।

साँठि, साँठी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *गाँठ*) धन, लक्ष्मी, पूँजी-पसार।

साँड़–संज्ञा, पु. दे. (सं. *षंड*) मृतक की स्मृति के रूप में दाग कर छोड़ा हुआ बैल, अच्छे बच्चे होने के लिये केवल जोड़ा पाने को पाला हुआ बैल या घोड़ा।

साँड़नी, साँड़िनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सौंड़िया*) शीघ्रगामिनी, ऊँटिनी।

साँड़ा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *साँड़*) ऊपर साँड़ा, एक जंगली जंतु जिसकी चर्बी दवा के काम आती है।

साँड़िया–संज्ञा, पु. दे. (हि. *साँड़*) शीघ्रगामी, ऊँट।

साँढ़–संज्ञा, पु. (दे.) **साँड**, अँडुआ बैल। **अंडू** (ग्रा.)।

सांत–वि. (सं.) अंत-सहित, जिसका अंत हो। वि. दे. (सं. *शांत*) शांत, सीधा, क्रोध-रहित, शांत (दे.)।

सांति–अव्य. दे. (सं. *शांति*) शांति। अव्य. (दे.) बदला, खातिर, हेतु, लिये, **संती** (ग्रा.)।

सांत्वना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) धैर्य, आश्वासन, धीरज, ढारस, ढाढ़स, किसी दुखी व्यक्ति को उसका दुख कम करने को शांति या धीरज देना।

सांदीपनि–संज्ञा, पु. (सं.) एक मुनि जिनके यहाँ श्रीकृष्ण और बलदेवजी ने धनुर्वेदादि सीखा था, और विद्या पढ़ी थी।

सांध–संज्ञा, पु. (सं. *स+अंध*) अंध के सहित। (सं. *संधान*) लक्ष्य, निशाना।

साँधना–क्रि. स. दे. (सं. *संधान*) निशाना लगाना या साधना, लक्ष्य करना, संधान करना। क्रि. स. दे. (सं. *संधि*) मिलाना, मिश्रण। क्रि. स. दे. (सं. *साधन*) साधना, पूर्ण करना।

सांध्य–वि. (सं.) संध्या का, संध्या-सम्बन्धी।

साँप–संज्ञा, पु. (सं. *सर्प, प्रा. सत्प*) एक रेंगने वाला विषैला लंबा कीड़ा, सर्प, नाग, भुजंग। स्त्री. **साँपिन, साँपिनी**। **मु. कलेजे पर साँप लोटना**–(ईर्ष्यादि से) बहुत ही दुखी

होना। **साँप सूँघ जाना**–निर्जीव होना, मर जाना। **साँप छुछुँदर की दशा**–बड़े दुविधा या असमंजस की अवस्था। **मु॰ आस्तीन का साँप होना**–अपना आश्रित व्यक्ति होकर अपना ही घातक होना, विश्वासघाती होना, गुप्त शत्रु होना। **आस्तीन में साँप पालना**–अपने ही पास अपने घातक शत्रु को आश्रय देना।

सांपत्तिक–वि॰ (सं॰) संपत्ति या धन से सम्बन्ध रखने वाला, आर्थिक, माली (फा॰)।

सांपत्य–वि॰ (सं॰) संपत्ति-सम्बन्धी।

सांपद्य–वि॰ (सं॰) धन-सम्बन्धी।

साँपधरन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *सर्प धारण*) महादेव, शिव।

साँपिन, साँपिनी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *सर्पिणी*) साँप की स्त्री, मादा सांप, सर्पिणी।

सांप्रत, साम्प्रतम्–अव्य॰ (सं॰) इसी समय, सद्यः, तत्काल, अभी, अधुना, इदानीम्। वि॰ **साम्प्रतिक**–आधुनिक।

सांप्रदायिक–वि॰ (सं॰) किसी संप्रदाय का, किसी संप्रदाय-संबंधी, संप्रदाय-विषयक।

सांब–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जाँबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्णजी के पुत्र, ये अति सुन्दर थे किन्तु दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गये थ।

साँभर–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *संभल, साँभल*) नमक बनता है। साँभर झील के पानी से नमक बनता है। साँभर झील के पानी से बना नमक। एक प्रकार की मृग-जाति। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *संभल*) पाथेय, मार्ग-भोजन, **संबल**, रास्ते का खाना। एक दक्षिण-भारतीय व्यंजन।

साँमुहे, सामुहैं†–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *सम्मुख*) समक्ष, सम्मुख, सामने। संज्ञा, पु॰ दे॰(*श्यामक*) साँवों नामक, अनाज।

साँवर, साँवरो‡–वि॰ दे॰ (सं॰ *श्यामला*) साँवला। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **साँवरिताई**।

साँवरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *श्यामला*) साँवला, श्यामल। स्त्री॰ **साँवरी**।

साँवल, सांवला–वि॰ दे॰ (सं॰ *श्यामला*) श्यामला, श्यामवर्ण का। स्त्री॰ **साँवली**। संज्ञा, पु॰ (दे॰) श्री कृष्ण जी, प्रेमी या पति आदि का सूचक शब्द (गीतों में)। संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ **साँवलता, साँवलापन**।

सांवलताई†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्यामलता*) श्यामलता, श्याम होने का भाव, **साँवस्ताई**।

साँवलापन–संज्ञा, पु॰ दे॰(हि॰ *साँवला+पन प्रत्य॰*) श्यामलता, श्यामता, साँवलताई।

साँवलिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) श्यामल, श्री कृष्ण।

साँवाँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्यामक*) एक अन्न विशेष जो कंगुनी या चेना की जाति का है।

साँस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्वाँस*) श्वास, दम, जीवधारी के फेफड़े तक नाक या मुँह से वायु के भीतर ले जाने और फिर बाहर निकालने की क्रिया। **मु॰ साँस (दम) उखड़ना**–दम या साँस टूटना, कष्ट से शीघ्र गति से साँस चलना (मृत्यु-के समय)। **साँस ऊपर-नीचे होना**–साँस रुकना, भली-भाँति ठीक-ठीक साँस का भीतर-बाहर या ऊपर-नीचे न चलना। **साँस चढ़ना**–अधिक परिश्रम के कारण वेग और शीघ्रता से साँस का चलना। **साँस चढ़ाना**–प्राणायाम करना, साँस खींच कर भीतर रोक रखना। **साँस टूटना**–साँस या दम उखड़ना। **साँस तक न लेना**–नितांत मौन या चुपचाप रहना, कुछ न बोलना। **साँसों का तार**–स्वास-क्रम। **साँस (दम) फूलना**–वेग से बार-बार साँस चलना, साँस चढ़ना। **साँस बढ़ना**–साँस फूलना, शीघ्रता और वेग से साँस आना। **साँस रहते**–जीते जागते। **उलटी साँस लेना**–गहरी साँस लेना, मरते समय रोगी का कष्ट से रुक-रुक कर अंतिम साँस लेना। **साँस पूरी करना**–रोगी आदि का देर तक मरणासन्न रहना। **गहरी, ठंडी या लम्बी साँस लेना**–अत्यंत शोकादि की दशा में साँस को देर तक भीतर खींचना और देर तक भीतर रोक कर बाहर छोड़ना। फुरसत, अवकाश। **साँस न होना (मिलना)**–अवकाश या फुरसत न होना (मिलना) **मु॰ साँस (दम) लेना**–विश्राम करना, दम लेना, सुस्ताना, ठहराना, दम गुंजाइश, दरार या संधि जिससे वायु आ-जा सके, किसी रिक्त वस्तु के भीतर भरी वायु। **मु॰ साँस भरना**–किसी वस्तु के भीतर वायु समाना या भरना। दम फूलने का रोग, दमा या श्वास रोग।

साँसत-सांसति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साँस+त, ति प्रत्य.*) साँस रुकने या दम घुटने का सा कष्ट, अति पीड़ा या कष्ट, झंझट, जंजाल, बखेड़ा, झगड़ा, दिक्कत, कठिनाई, डाँट-फटकार।

साँसना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *शासन*) शासन करना, दंड देना, डाँटना, डपटना, ताड़ना, कष्ट या दुख देना, फटकारना।

सांसारिक–वि॰ (सं॰) भौतिक, लौकिक, ऐहिक, संसार का, संसार-संबंधी। संज्ञा, स्त्री॰ **सांसारिकता**।

सांहारिक–वि॰ (सं॰ *संहार+इक प्रत्य॰*) संहार-संबंधी।

सा–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *सदृश*) सदृश, समान, तुल्य, सम, बराबर, मान सूचक एक शब्द। जैसे-जरा सा।

साइक*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शायक*) शायक, वाण तीर, **सायक** (दे॰)।

साइत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *साअत*) एक घंटे या ढाई घड़ी का समय, मुहूर्त्त, शुभलग्न, पल, लहमा (फा॰)। अव्य॰ दे॰ (फ़ा॰) शायद, कदाचित्, सायत।

साइयाँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वामी*) सांई (दे॰), स्वामी, मालिक, पति, नाथ, **सँइयाँ** (ग्रा॰), परमेश्वर।

साइर†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सागर*) सागर। समुद्र, ऊपरी भाग, शायर, कवि, **सायर** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ (अं॰) माफ़ी ज़मीन, स्फुट, फुटकर।

साईं–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वामी*) स्वामी, मालिक, पति, परमेश्वर।

साई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साइत*) पेशे वालों को किसी अवस्था पर नियुक्ति पक्की करने के लिए जो वस्तु या अल्प धन प्रथम दिया जाता है, बयाना, पेशगी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सड़ना*) घाव में मक्खी की बीट पड़ने से जो सफ़ेदी छा जाती है और फिर कीड़े पड़ जाते हैं।

साईस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *रईस का अनु॰*) वह नौकर जो घोड़े के मलने-दलने, शरीर के खुजलाने, दाना-घास आदि देने और खबरदारी के हेतु रखा जाता है, **सहीस, सईस** (दे॰)।

साईसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साईस+ई प्रत्य॰*) सईस का काम, पद तथा भाव या पेशा, **सईसी, सहीसी** (ग्रा॰)।

साउ, साहू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाह*) महाजन, शाह, सेठ साहूकार।

साउज–संज्ञा, पु॰ (दे॰) वनजीव, आखेट के लिए वन-जंतु। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **सायुज्य मुक्ति** (सं॰)।

साकंभरी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाकंभरी*) साँभर झील और उसके चारों ओर का प्रांत। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शाकंभरी*) एक देवी।

साक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाक*) शाक, भाजी, तरकारी, सब्ज़ी, **साग** (दे॰)। यौ॰ **साक-भाजी**।

साकचेरि†–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मेंहदी।

साकट, साकत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाक्त*) शाक्त मतावलंबी, जिसने गुरु दीक्षा न ली हो, निगुरा, दुष्ट, बदमाश, पाजी।

साकम्–अव्य॰ (सं॰) सह, साथ, सहित।

साकर, साकल–वि॰ दे॰ (सं॰ *शृंखला*) साँकर, जंज़ीर।

साका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाका*) प्रसिद्धि, ख़्याति, शाका, संवत्, इच्छा, अभिलाषा, शौक। यश-स्मारक, कीर्त्ति, यश, रोबदाव, धाक, अवसर, मौक़ा, समय। **मु॰ साका चलाना**–संवत् चलाना, धाक जगाना। **साँका बाँधना**–संवत् या साका चलाना, रोब जमाना। ऐसा कार्य जिससे करने वाले का यश फैले।

साकार–वि॰ (सं॰) साक्षात्, आकार या स्वरूपवान्, मूर्तिमान्, स्थूल रूप, दृश्य रूप। संज्ञा, पु॰ (सं॰) परमेश्वर का आकार-सहित स्वरूप। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **साकारता**।

साकारोपासना–संज्ञा, स्त्री (सं॰) परमेश्वर की मूर्त्ति स्थापित कर उसकी अर्चनोपासना करना।

साकिन–वि॰ (अ॰) निवासी, रहने वाला, बाशिंदा।

साकी–संज्ञा, पु॰ (अ॰) शराब पिलाने वाला, माशूक।

साकूत–वि॰ (सं॰) आकूत युक्त, सानुमान।

साकेत, साकेतन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अयोध्या पुरी।

साक्षर–वि॰ (सं॰) शिक्षित, पढ़ा-लिखा, पंडित, विद्वान्। संज्ञा, स्त्री॰ **साक्षरता**।

साक्षात्–अव्य॰ (सं॰) प्रत्यक्ष, सन्मुख, सामने, आँखों के आगे। वि॰ मूर्तिमान्, साकार। संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुलाकात, भेंट, देखा-देखी।

साक्षात्कार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दर्शन, मुलाकात, भेंट, इन्द्रियों से होने वाला पदार्थ ज्ञान।

साक्षी–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *साक्षिन्*) दर्शक, देखने वाला, जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो, चश्मदीद गवाह, गवाही देने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गवाही, शहादत, कोई बात कह कर उसे प्रमाणित करना। स्त्री॰ **साक्षिणी**।

साक्ष्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गवाही, शहादत (फा॰)।

साख–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *साक्षी*) साड़ी, गवाह, गवाही, शहादत, प्रमाण। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाका*) धाक, रोबदाब, मर्यादा, देने-लेने में प्रामाणिकता या विश्वास। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) शाखा, (सं॰) शाख (फ़ा॰) **मु॰ साख होना**–(लेन-देन में) एतवार या विश्वास होना। **साख उठना (न रहना)**–विश्वास या एतवार न रहना (लेनदेन में)।

साखर*†–वि॰ दे॰ (*साक्षर*) साक्षर, पढ़ा-लिखा, विद्वान, पंडित।

साखी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *साक्षिन्*) साक्षी, गवाह। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) साक्षी, गवाही। **मु॰ साखी पुकारना (देना)**–गवाही देना। **साखी होना**–गवाह होना। ज्ञान सम्बन्धी पद या कविता। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाखिन्*) पेड़, वृक्ष, **साखौ** (दे॰)।

साखू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाखा*) शाल वृक्ष।

साखोचार-साखोचारन*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शाखोच्चारण*) गोत्राचार, विवाह के समय वन-कन्या के वंशों के पूर्व पुरुषों के नाम तथा गोत्रादि का परिचय देना, लेना।

साख्या–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाक*) शाक, भाजी, तरकारी, खाने योग्य पौधों और पत्तियों की भाजी। यौ॰ **सागपात** रूखा-सूखा भोजन।

सागर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिंधु, समुद्र, वड़ी झील या तालाव, पानी भने का बहुत बड़ा पात्र, संन्यासियों का एक भेद। वि॰ **सागरीय, सागरी** (दे॰)।

सागू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *सैगो*) ताड़ की जाति का एक वृक्ष, सागूदाना।

सागूदाना–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) सागू के पेड़ का गूदा जो दानों के रूप में वना कर सुखा लिया जाता है, **साबूदाना** (दे॰)।

सागौन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाल*) साख की जाति का एक पेड़, शालवृक्ष।

साग्निक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निरंतर अग्निहोत्रादि करने वाला, अग्निहोत्री, याज्ञिक।

साग्न–वि॰ (सं॰) समग्र, समस्त, सम्पूर्ण, सब, कुल, सारा, सब का सब, अग्रांशयुक्त।

साज़–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ *मि॰ सं॰ सज्जा*) ठाट-बाट, सजावट का सामान या काम, सामग्री, उपकरण, जैसे–घोड़े का साज बाजा, वा, युद्ध के अस्त्रादि, मेलजोल। वि॰ मरम्मत या तैयार करने वाला, बनाने वाला (यौ॰ के अंत में) जैसे–घड़ीसाज़। यौ॰ **ज़माना-साज़–**समयानुकूल कार्य करने वाला।

साजन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सज्जन*) पति, स्वामी, वल्लभी, प्रेमी, परमेश्वर, सज्जन, भलामानुष, **सृजन** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ (हि॰ *साजना*) सजावट का सामान।

साजना*†–क्रि॰ स॰ (हि॰ *सजाना*) सजना, सजान, अलंकृत या आभूषित करना, सुसज्जित करना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साजना*), साजना, सुजन, स्वामी, पति, सज्जन, भला आदमी, प्रेमी।

साजबाज–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ *साज+बाज अनु॰*) सामान, माल-असवाव, सामग्री, तैयारी, मेल-जोल, उपकरण, ठाठ-बाट। यौ॰ **साज-सामान**।

साजसामान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) उपकरण, सामग्री, माल-असबाव, ठाठ-बाट।

साजा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *सजाना*) अच्छा, साफ़।

साजिंदा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *साज़िंदः*) बाजा वजाने वाला, **सपरदाई,** समाजी।

साज़िश–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) मेलजोल, किसी के विरुद्ध कोई काम करने वालों का सहायक होना या साथ देना, षड्‌यंत्र, उत्तेजना, सहयोग।

साजी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सज्जी, सज्जीखार।

साजुज्य*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) *सायुज्य*) किसी में पूर्ण रूप से मिल जाना, मुक्ति के चार भेदों में से एक जब जीव परमात्मा में लीन होकर एक ही हो जाता है।

साझ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सहाध्य*) हिस्सदारी, शराक्त, भाग, हिस्सा, बाँट।

साझी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साझा*) साझेदार, हिस्सेदार, शरीक़।

साझेदार–संज्ञा, पु॰ (हि॰ *साझा+दार* फ़ा॰) साझी, हिस्सेदार, शरीक़।

साटक–संज्ञा, पु॰ (दे॰) छिलका, भूसी, तुच्छ और बेकार वस्तु। एक छंद (पिं॰)।

साटन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ *सैटिन*) एक बढ़िया रेशमी वस्त्र।

साटना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सटाना*) संयुक्त करना, मिलाना, दो परतों को एक में मिला देना, बहका कर अपने पक्ष

में करना, लाठी-डंडे आदि से लड़ाई करना। अ॰ रूप—**साँटना** (दे॰), प्रे॰ रूप—**सटाना, सटवाना**।

साठ—वि॰ दे॰ (सं॰ *षष्टि*) पचास और दस। संज्ञा, पु॰ (हि॰) 50 और 10 की संख्या, 60।

साठा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) ऊख, गन्ना, ईख, साठीधान, **साठी**। वि॰ दे॰ (हि॰ *साठ*) साठ वर्ष की अवस्था वाला। लो॰—**"साठा सो पाठा"**।

साठगाँठा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) युक्ति, तदवीर, उपाय, पेंच, मेल-जोल।

साठी—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *षष्टिक*) एक प्रकार का धान जो साठ दिन में होता है।

साठे—संज्ञा, पु॰ (दे॰) महाराष्ट्रीयन ब्राह्मणों की एक जाति।

साड़ी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शाटिक* या संभवतः तमिल 'सेराई') स्त्रियों के पहनने की रंगीन बेल-बूटेदार चौड़े किनारे की धोती **सारी** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साढ़ी*) साढ़ी, दूध की मलाई।

साढ़साती—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साढ़े-साती*) साढ़े-साती, शनिश्चर ग्रह की दशा जो सात वर्ष और छह मास तक रहती है (प्रायः अशुभ)।

साढ़ी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *असाढ़*) असाढ़ महीने में बोये जाने वाली फ़सल, असाढ़ी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सार*) दूध के ऊपर जमने वाली मालाई, मलाई। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साड़ी*) साड़ी, रंगीन छपी धोती।

साढ़ू—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्यालिवोढा*) साली का स्वामी, पत्नी का बहनोई, **साढ** (प्रान्ती॰)।

साढ़ेसाती—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साढ़ेसात+ई प्रत्य॰*) साढ़साती, शनि की 7 1/2 वर्ष, मास या दिन की अशुभ दशा।

सात—वि॰ दे॰ (सं॰ *सप्त*) छः से एक अधिक और आठ से एक कम। संज्ञा, पु॰ पाँच और दो के योग की संख्या 7। **मु॰ सात-पाँच**—चालाकी, धूर्तता, मक्कारी। लो॰—**सात पाँच का लाठा एक जने का बोझ। सात पाँच करना**—कसमस करना, इधर-उधर करना, संशय या संदेह युक्त होना। **सात समुद्र पार**—बहुत ही दूर। **सात राजाओं की साक्षी देना**—किसी बात की सत्यता सिद्ध करने को ज़ोर देना। **सात सीकें बनाना**—लड़के की छठी के दिन 7 सीकों के रखने की एक रीति।

सातफेरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) विवाह में सात भाँवर करना, **सातभौंरी, सतफेरी** (ग्रा॰)।

सातला—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सप्तला*) शूहर का एक भेद, स्वर्ण-पुष्पी, सप्तला।

सातू—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सत्तू* सं॰ *सत्तुक*) सत्तू, जौ और चने का भुना आटा, **सतुआ** (ग्रा॰)।

सातिक-सातिग—वि॰ दे॰ (सं॰ *सात्विक*) सात्विक, सत्वगुण-प्रधान, सत्वगुण-संबंधी।

सात्म्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सरूपता, सारुत्व।

सात्यकि—संज्ञा, पु॰ (सं॰) युयुधान, अर्जुन का शिष्य एक यदुवंशी राजा, **सत्य की** (दे॰)।

सात्वत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्रीकृष्ण, बलराम, विष्णु, यदुवंशी।

सात्वती—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शिशुपाल की माता, श्रीकृष्ण जी की बुआ, सुभद्रा।

सात्वती-वृत्ति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सक वृत्ति जिसका प्रयोग वीर, रौद्र, अद्‌भुत और शांत रसों की कविता में होता हे (काव्य॰)।

सात्विक—वि॰ (सं॰) सत्वगुण संबंधी, सत्वगुण वाला, सतोगुणी, सत्वगुण से उत्पन्न। संज्ञा, पु॰ सात्वती वृत्ति (काव्य॰) सत्वगुश से होने वाले संपूर्ण स्वाभाविक अंग-विकार, जैसे—स्वेद, स्तंभ, रोमांच, स्वरभंग, कंप, अश्रु, वैवर्ण्य और प्रलय आदि भाव (साहि॰)।

साथ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सहित*) सं॰, सहित, युक्त, **साथ, साथू** (ग्रा॰), संगत, सहचार, मेल-मिलाप, घनिष्टता, निरंतर समीप रहने वाला, साथी, संगो। यौ॰ **संग-साथ**। अव्य॰ सहचार या संबंध-सूचक अव्यय, से, सहित। **मु॰—साथ ही (साथ ही साथ, साथ-साथ)**—इससे अधिक, अतिरिक्त, सिवा, और। **साथ ही साथ (एक साथ)**—एक सिलसिले में, सिवा, अतिरिक्त, अलावा, द्वारा, से, प्रति, विरुद्ध।

साथरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *साथरा*) बिस्तर, तृणादि का बिछौना, कुश की चटाई।

साथी—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साथ*) मित्र, संगी, साथ रहने वाला, दोस्त। स्त्री॰ **साथिन, साथिनी**।

सादगी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) सरलता, सादापन, निष्कपटता, सीधापन।

सादर–वि॰ (सं॰) आदर या सत्कार-सहित।

सादा–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *सादः*) सरल और सीधी-सूक्ष्म बनावट का, सूक्ष्म या संक्षिप्त रूप का, जिस वस्तु पर कोई विशेष कारीगरी या अतिरिक्त काम न हो, जो सजाया या सँवारा न गया हो, ख़ालिस, बिना मिलावट का, निष्कपट, सरल हृदय, छल-छिद्र रहित, सीधा, मूर्ख, साफ़, जिस पर कुछ अंकित न हो। यौ॰ **सीधा-सादा**। स्त्री॰ **सादी**।

सादापन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *साद+पन* हि॰ *प्रत्य॰*) सादगी, सरलता, सादा होने का भाव।

सादी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *सादः*) लाल की जाति का एक छोटा पक्षी, सदिया, बिना दाल या पीठी आदि भरी खालिस पूरी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) शिकारी, घोड़ा। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **शादी** (फ़ा॰), ब्याह। वि॰ स्त्री॰ (हि॰ *सादा*) सीधी।

सादृश्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समता, तुलना, तुल्यता, बराबरी, समानता, एकरूपता, **सादृशता**।

साध–संज्ञा, पु॰ दे॰ (स॰ *साधु*) साधु, सज्जन, महात्मा, योगी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *उत्साह*) लालसा, कामना, इच्छा, गर्भाधान से सातवें महीने में होने वाला उत्सव या संस्कार। वि॰ दे॰ (सं॰ *साधु*) अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।

साधक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कार्य सिद्ध करने वाला, योगी, साधने वाला, साधना करने वाला, तपस्वी, करण, हेतु, द्वारा, जरिया, वसीला, पदार्थ-साधन में सहायक।

साधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कार्य-सिद्धि की क्रिया, रीति, विधान, सिद्धि, युक्ति, सामग्री, उपकरण, सामान, उपाय, हिकमत, यत्न, युक्ति, साधना, उपासना, धातुओं की शोधन क्रिया, हेतु, कारण।

साधनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साधना, साधना का भाव या धर्म। पु॰ **साधनत्व**। वि॰ (हि॰) **साधनवाला, साधनवारा** (दे॰) साधने-युक्त।

साधनहार*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *साधन+हार* हि॰ *प्रत्य॰*) साधने वाला जो साधा जा सके, **साधनहारा**।

साधना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किसी कार्य के सिद्ध करने की युक्ति या क्रिया, सिद्धि, देवतादि के सिद्ध करने के हेतु उपासना, सिद्धि, उपाय। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *साधन*) कोई कार्य सम्पन्न या पूरा करना, पूर्ण करना, संधान करना, निशाना लगाना, जाँचना, नापना, अभ्यास करना, स्वभाव डालना, पक्का करना, शुद्ध करना, निश्चित करना, ठहराना, इकट्ठा करना, किसी व्यक्ति को अपने पक्ष में रखना, वश में करना, पकड़ना, थामना, सिद्ध करना (शब्द-साधना), वश में रखना, यथेष्ट रूप से चलना (बैल आदि पशुओं को) स॰ रूप–**सधाना**, प्रे॰ रूप–**सधवाना**।

साधनिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साधना, उपाय, सिद्ध या पूर्ण करने की रीति।

साधनीय–वि॰ (सं॰) सिद्ध या साधन करने योग्य, उत्तम कर्म, जिसका साधन करना उपयोगी हो, आराधनीय, सधनीय।

साधर्म्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सह+धर्म*) एक धर्म्मता, तुल्य या सम-धर्म्मता, समान धर्म्म होने का भाव। (विलो॰ **वैधर्म्य**)।

साधस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भय, डर।

साधारण–वि॰ (सं॰) सामान्य, मामूली, सहज, सरल, सार्वजनिक, **आम** (फ़ा॰), समान, सदृश, **साधारन, सधारन** (दे॰)। यौ॰ **सर्व-साधारण**। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **साधारणता**।

साधारणतः–अव्य॰ (सं॰) सामान्यतः मामूली तौर पर, प्रायः, बहुधा।

साधारणतया–क्रि॰ वि॰ (सं॰) साधारण या सामान्यरूप से।

साधित–वि॰ (सं॰) जो साधा या सिद्ध किया गया हो।

साधी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) ठहराई हुई, बनी हुई।

साधु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आर्य, सज्जन, महात्मा, भला मानुष, धर्मात्मा, परोपकारी, कुलीन, संत, **साधू, साधौ** (दे॰)। यौ॰ **साधु-संत**। यौ॰ संज्ञा, पु॰ (सं॰) **साधुवाद**। **मु॰ साधु साधु कहना**–किसी के अच्छा काम करने पर उसे शाबाशी देना या उसकी प्रशंसा करना। वि॰ (सं॰) अच्छा, भला, उत्तम, रेष्ठ, उपयुक्त, उचित, श्लाधनीय, प्रशंसनीय, सच्चा।

साधुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सज्जनता, साधु होने का भाव या धर्म, भलमंसी, सुजनता, सिधाई, सीधापन, भलमनसाहत, सरलता।

साधुवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) उत्तम काम करने पर साधु-साधु कह कर किसी की प्रशंसा करना या उसे शाबाशी देना।

साधु-साधु–अव्य॰ यौ॰ (सं॰) वाह-वाह, धन्य-धन्य, शाबाश, बहुत या खूब अच्छा।

साधू–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *साधु*) संत, साधु, महात्मा, सज्जन, भलामानुस। वि॰ (दे॰) सीधा, आर्य, श्रेष्ठ।

साधो, साधौ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *साधु*) संत, साधु, **साधव** (दे॰), **साधवः** (सं॰)।

साध्य–वि॰ (सं॰) सिद्ध करने योग्य, जो सिद्ध हो सके, सरल, सहज, जिसे सिद्ध या प्रमाणित करना हो (न्या॰), रेखा गणित में सिद्ध करने योग्य सिद्धान्त। संज्ञा, पु॰ देवता, वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जावे (न्या॰), सामर्थ्य, शक्ति। वि॰ (सं॰) सम्भव, साधन करने योग्य या जिसे पूर्ण या सम्पन्न कर सकें। वि॰ **दुस्साध्य** । विलो॰ **असाध्य**।

साध्यता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साध्य का धर्म या भाव, साध्यत्व।

साध्यवसानिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लक्षणा का एक भेद (सा॰ द॰)।

साध्यसम–संज्ञा, पु॰ यौ॰(सं॰) वह हेतु या कारण जो साध्य की भाँति साधनीय हो (न्या॰)।

साध्वी–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) पतिव्रता, पवित्र या शुद्ध चरित्र वाली स्त्री। यौ॰ **सती-साध्वी**।

सानंद–वि॰ (सं॰) हर्ष या आनंद के साथ, आनंदपूर्वक, सहर्ष।

सान, शान–संज्ञा, पु॰ दे॰(सं॰ *शरण*) बाढ़ रखना, वह पत्थर जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं। **मु॰ सान देना या धरना (रखना)**–धार पैनी या तेज़ करना। **सान (शान) रखना (चढ़ाना)** उत्तेजित या उत्साहित करना।

सानना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ क्रि॰ अ॰ *सनना*) मिश्रित करना, मिलाना, गूँथना, चूर्णादि को द्रवपदार्थ में मिला कर गीला करना, उत्तरदायी या ज़िम्मेदार बनाना, सम्मिलित करना (बुराई में)। प्रे॰ रूप–**सनाना, सनावना, सनवाना**।

सानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सानना*) खारी या खली पानी आदि में सान कर पशुओं को देने का भोजन। वि॰ (अ॰) द्वितीय, दूसरा, समा या तुल्यता का, बराबरी या मुक़ाबले का। क्रि॰ वि॰ (हि॰) सनी हुई। यौ॰ **लासानी**–अप्रतिम, अद्वितीय, अद्वैत। **मु॰ सानी न होना (रखना)**–समान न होना।

सानु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पर्वत-शृंग पहाड़ की चोटी, अन्त, शिखर, सिरा, चौरस भूमि, जंगल, वन।

सानुकूल–वि॰ (सं॰) प्रसन्न, कृपालु, दयालु। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सानुकूलता,** पु॰ (सं॰) **सानुकूल्य**।

सानुकरण–वि॰ (सं॰) अनुकरण-पूर्वक।

सान्निध्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समीपता, निकटता, सामीप्य, सन्निकटता, मुक्ति या मोक्ष का एक रूप या भेद।

साप, सापा*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाप*) शाप, श्राप, बददुआ।

सापयश–वि॰ (सं॰) अयश के साथ।

सापत्ति–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) आपत्ति-युक्त।

सापत्य–वि॰ (सं॰) सपत्य या लड़के के साथ। विलो॰ **अनपत्य**।

सापत्न्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सौतपन, सौत का लड़का, सपत्नी या सौत का धर्म या कार्य।

सापराध–वि॰ (सं॰) अपराधविशिष्ट अपराधयुक्त, दोषी, सदोषी, कलंकी, कसूरी, गुनहगार, गुनाही।

सापवाद–वि॰ (सं॰) अपवाद या बदनामी के साथ।

सापेक्ष्य–वि॰ (सं॰) जिसकी अपेक्षा या परवाह की जाये।

साफ़–वि॰ (अ॰) स्वच्छ, विमल, निर्मल, उज्ज्वल, जिसमें झंझट या बखेड़ापन न हो, स्पष्ट, शुद्ध, बे-ऐब, निष्कलंक, निर्दोष, विकार-रहित, शुभ्र, चमकीला, निष्कपट, छलादि से रहित, हमवार, समतल, कोश, खालिस, सादा, अनावश्यक या रद्दी अंश निकाला हुआ, जिसमें कुछ सार या तत्व न रह गया हो। **मु॰ साफ़ करना**–मार डालना, नष्ट या बरबाद करना। चुकती या लेन-देन का चुकता करना। क्रि॰ वि॰ (दे॰) बिलकुल, नितांत, ऐसे कि किसी को कुछ पता न चले, बिना किसी दोषापवाद, कलंक या अपराध के, बिना कुछ हानि या कष्ट उठाये।

साफल्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सफलता।

साफ़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *साफ़*) पगड़ी, **मुड़ासा** (प्रान्ती॰) **मुरेठा,** सिर में लपेटने का कपड़ा, पहिनने के कपड़े साबुन से धोना।

साफ़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *साफ*) अँगौछी, रूमाल, छनना, **छन्ना** (दे॰), वह वस्त्र जिससे भंग छानी जाती या जिसे चिलम के नीचे लगा कर गाँजा पीते हैं, छोटा साफ़ा।

साबर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शवर*) शिवकृत एक प्रसिद्ध सिद्ध मंत्र, मिट्टी खोदने का एक हथियार, **सब्बर, सबरी** । स्त्री॰ अल्पा॰ साँभर नामक जंगली मृग या पशु, उसका

चर्म (ग्रा.)। वि. (दे.) **साबरी**–साबर मंत्र शास्त्र का, साबर चर्म, साबर या साँभर मृग का।

साबस–संज्ञा, पु. दे. (फा. *शाबाश*) शाबाश, वाह-वाह, बहुत, खूब, साधु।

साबिक़–वि. (सं.) प्रथम या पूर्व का पहले का, आगे का, भूत-पूर्व। यौ. **साबिक़-दस्तूर**–पूर्व रीत्यानुसार, पहले के समान, जैसा पहले था वैसा ही, यथापूर्व।

साबिका–संज्ञा, पु. (अ.) भेंट, मुलाकात, सरोकार, संबंध, **साबका** (दे.)।

साबित–वि. (अ.) सिद्ध, प्रमाणित, जिसका प्रमाण या सबूत दिया गया हो, ठीक, प्रमाण-पुष्ट, सही, दुरुस्त, **साबुत** (ग्रा.)। वि. दे. (अ. *सबूत*) दुरुस्त, पूरा, ठीक, साबूत।

साबुत, साबूत–वि. दे. (अ. *सबूत*) संपूर्ण, ठीक, दुरुस्त, अखंडित, अभंग। संज्ञा, पु. (दे.) सबूत, प्रमाण।

साबुन–संज्ञा, पु. (अ.) रासायनिक क्रिया के द्वारा बना हुआ शरीर और वस्त्रादि साफ़ करने का एक पदार्थ।

साबूदाना–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सागूदाना*) सागू नामक पेड़ के गूदे से बने नन्हें-नन्हें दाने, सागूदाना।

सामंजस्य–संज्ञा, पु. (सं.) औचित्य, अनुकूलता, उपयुक्तता, समीचीनता, संगति, मेल, मिलान।

सामंत–संज्ञा, पु. (सं.) वीर, योद्धा, राजा का सरदार अं. लेफ्टिनेन्ट। यौ. **शूर-सामंत**।

साम–संज्ञा, पु. (सं. *सामन्*) प्राचीन काल में यज्ञादि में गाने के सामवेद के मंत्र, सामवेद, मीठा या मधुर, मृदु-मधुर वाणी, मधुर भाषण, शत्रु की मीठी बातों से निज पक्ष में मिलाना (नीति.), सामान, असबाब। संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्याम*), श्याम, स्याम, शाम। संज्ञा, स्त्री. (दे.) शाम, शामी। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **शाम** (फा.) संध्या।

सामग–संज्ञा, पु. (सं.) सामवेद का पूर्ण ज्ञाता, सामवेदज्ञ।

सामग्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) किसी कार्य की उपयोगी वस्तुयें, आवश्यक पदार्थ, ज़रूरी चीज़ें, उपकरण, सामान, असबाव, साधन।

सामध–संज्ञा, पु. (दे.) समधियों के परस्पर मिलने की रीति, **समधौटा, सामधौरा** (ग्रा.)।

सामना–संज्ञा, पु. (हि. *सामने*) मुक़ाबिला, विरोध, मुलाकात, भेंट, मुठभेड़, किसी के सामने होने का भाव या क्रिया। **मु. सामना करना**–मुक़ाबिला या विरोध करना, सामने धृष्टता कर जवाब देना। **मु. सामने होना**–किसी के रक्षार्थ आगे आना, उसके विरोधी का मुक़ाबिला करना। **सामने आना**–प्रत्यक्ष होना, समक्ष आना, विरुद्ध। किसी वस्तु का अगला भाग। विलो. **पीछा**। यौ. **आमना-सामना**।

सामने–क्रि. वि. दे. (सं. *सम्मुख*) सम्मुख, आगे, समक्ष, सम्मुख, सीधे, उपस्थिति या विद्यमानता में, विरुद्ध, मुकाबले में। यौ. **आमने-सामने**–एक दूसरे के सम्मुख। विलो. **पीछे**।

सामयिक–वि. (सं.) समयानुकूल, समयानुसार, वर्तमान समय संबंधी। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सामयिकता**। यौ. **सामयिक पत्र**–वर्तमान समाचार पत्र।

सामर–संज्ञा, पु. (दे.) साँवर, श्यामल, समर का भाव। (सं. *सह+अमर*) देव-सहित।

सामरथ-सामर्थ† –संज्ञा, पु. दे. (सं. *सामर्थ्य*) शक्ति, बल, पराक्रम, **समरथ, समर्थ** (दे.)। पौरुष, योग्यता, लियाकत, ताकत, भाव-प्रकाशक शब्द-शक्ति।

सामरिक–वि. (सं.) युद्ध-संबंधी, समर का, लड़ाई वाला। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सामरिकता**; (अं. **स्ट्रैटेजी**।

सामर्थ–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सामर्थ्य (सं.)। वि. (दे.) **समर्थ**।

सामर्थी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सामर्थ्य*) शक्तिमान्, पौरुषी, पराक्रमी, बली, बलवान्, सामर्थ्यवान्। स्त्री. **सामर्थिनी**।

सामर्थ्य–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शक्ति, बल, पौरुष, पराक्रम, ताक़त, क्षमता, योग्यता, समर्थ होने का भाव, भाव-प्रकाशक शब्द-शक्ति।

सामवायिक–वि. (सं.) समवाय संबंधी, समूह या झुंड-संबंधी, सामूहिक, सामुदायिक।

सामवेद–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सामन्*) भारत के आर्यों के चार वेदों में से तीसरा वेद जिसमें यज्ञों में गाने के स्तोत्रादि का संग्रह है।

सामवेदीय–वि. (सं.) सामवेद-संबंधी। संज्ञा, पु. (सं.) सामवेद का ज्ञाता हो तदनुयायी, ब्राह्मणों की एक जाति।

सामसाली–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सामशाली*) राजनीतिज्ञ, राजनीति-कुशल, नीति-निपुण।

सामहि–अव्य. दे. (सं. *सन्मुख*) सामने, सममुख, आगे।

संज्ञा, पु॰ (ब्र॰ कर्म का॰) साम (वेद या साम) को, श्याम को।

सामाँ-सामा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सावाँ नामक अन्न। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) *सामान*) असवाब।

सामाजिक–वि॰ (सं॰) समाज का, समाज-संबंधी, समाज या समा से संबंध रखने वाला, सदस्य।

सामाजिकता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सामाजिक होने का भाव, लौकिकता, सांसारिकता।

सामान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) उपकरण, सामग्री, असवाब, मालटाल, प्रबंध, बंदोबस्त, इंतिजाम, किसी कार्य के साधन की आवश्यक चीज़ें। यौ॰ **साज-सामान**।

सामान्य–वि॰ (सं॰) साधारण, मामूली, आम। विलो॰ **विशेष**। संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी जाति की सब चीज़ों में समानता से पाया जाने वाला गुण या लक्षण, तुल्यता, समानता, बराबरी, एक गुण (न्या॰), एक काव्यालंकार, जिसमें एक ही आकार-प्रकार की ऐसी वस्तुओं का वर्णन हो जिनमें देखने में कोई अन्तर या भेद न ज्ञात हो।

सामन्यतः सामान्यतया–अव्य॰ (सं॰) साधारणतः, साधारणतया, साधारण रीति से, सामान्य रूप से।

सामान्यभूत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भूत काल की क्रिया का वह रूप जिससे भूत काल का निश्चित समय और उसकी कुछ विशेषता तो न समझी जावे; किन्तु क्रिया की पूर्णता ज्ञात हो (व्याक॰), जैसे—आया (गुण)।

सामान्य लक्षणा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह गुण जो किसी जाति की सब वस्तुओं में समान रूप से पाया जावे।

सामान्य लक्षणा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह शक्ति जो एक वस्तु को देखकर उसी प्रकार या जाति की और सब वस्तुओं का बोध करावे।

सामान्य वर्तमान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वर्तमान काल की क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल के निश्चित समय का बोध न हो किन्तु कर्ता का उस समय कोई कार्य करते रहने का ज्ञान हो। जैसे—आता है (व्याक॰)।

सामान्यविधि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) साधारण विधान या रीति, साधारण आज्ञा या व्यवस्था, आम हुक्म (फ़ा॰) जैसे—सत्य बोलो, साधारण आदेश-सूचक क्रिया का रूप (व्याक॰)।

सामान्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गणिका, रंडी, वेश्या, पतुरिया, धन लेकर प्रेम करने वाली नायिका (साहि॰)।

सामासिक–वि॰ (सं॰) समस्त, समास का समास संबंधी, समासाश्रित।

सामिग्री–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सामग्री*) सामग्री, उपकरण, सामान।

सामिप–वि॰ (सं॰) मांस सहित। (विलो॰ **निरामिष**)। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सामिपता**।

सामी*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वामी*) स्वामी, पति, नाथ। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) लाठी आदि के सिरे पर लगाने का धातु का छल्ला। वि॰ (दे॰) श्याम-देश निवासी।

सामीप्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समीपता, निकटता, मुक्ति के चार भेदों में से एक जिसमें मुक्त जीव परमेश्वर के निकट पहुँच जाता है।

सामुझि*‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *समझ*) समझ, बूझ, बुद्धि, ज्ञान, अकल।

सामुदायिक–वि॰ (सं॰) समूह, समुदाय का, सामूहिक, समुदाय, संबंधी; (यौ॰) सामुदायिक केन्द्र/कम्युनिटी सेन्टर।

सामुद्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सामुद्रिक, शास्त्र समुद्र से निकला नमक, समुद्र-फेन। वि॰ (सं॰) समुद्रोत्पन्न, समुद्र-संबंधी, समुद्र का।

सामुद्रिक–वि॰ (सं॰) सागरीय, सागर-संबंधी। संज्ञा, पु॰ (सं॰) फलित ज्योतिष शास्त्र का एक अंग या भेद जिसके द्वारा मनुष्यों के शुभाशुभ फल, गुण-दोष या भली-बुरी घटनायें या बातें हस्त-रेखा या शरीर के तिलादि और चिन्हों को देख कर कहे जाते हैं, सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता। यौ॰ **सामुद्रिक शास्त्र या विज्ञान, सामुद्रिक विद्या**।

साम्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सम या समान होने का भाव, समानता, तुल्यता, समता, बराबरी, सादृश्य। विलो॰ **वैषम्य**।

साम्यता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰) साम्य, समता, तुल्यता, समानता।

साम्यवाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समाजवाद का वह सिद्धान्त जिसमें सबको समान या तुल्य समझने और समाज में समता स्थापित करने तथा समाज से विषमता के हटाने के भाव का प्राधान्य है। (अं॰) कम्युनिज़्म (पाश्चात्य)। वि॰ **साम्यवादी**।

साम्यावस्था–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह अवस्था या दशा जब सत्व, रज और तम तीनों गुण समान रहते हैं, प्रकृति दशा।

साम्राज्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह विशाल राज्य जिसमें बहुत से तदाधीन देश हों और जिसमें एक ही सम्राट या महाराजाधिराज का शासन हो, सार्वभौम राज्य, पूर्णाधिकार, आधिपत्य।

साम्राज्यवाद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) साम्राज्य की लगातार उन्नति या वृद्धि करने का सिद्धान्त। वि॰ (सं॰) **साम्राज्यवादी**। (अं॰) इम्पीरियलिज़्म।

सायं- वि॰ (सं॰) संध्या संबंधी। संज्ञा, पु॰ (सं॰) संध्या, शाम साँझ। यौ॰ (सं॰) **सायंप्रातः**।

सायंकाल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) (वि॰ *सायंकालीन*) शाम का वक्त, संध्या का समय, दिवसावसान, संध्या, दिनात्यय।

सायंसंध्या–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह संध्योपासन-कर्म जो संध्या समय किया जाता है।

सायक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खड़ंग, तीर, शर, बाण। स, भ, त (गण और एक लघु तथा एक दीर्घ वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (पिं॰)।, पाँच की संख्या। वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *शायक*) शौकीन।

सायण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेदों का भाष्य करने वाले एक प्रसिद्ध आचार्य, **सायणाचार्य**। अयण युक्त, घर-सहित।

सायत, साइत, साइति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *साअ्वत*) शुभ घड़ी मुहूर्त्त, शुभामुहूर्त्त अच्छा समय, लग्न, ढाई घड़ी या एक घंटे का समय।

सायन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सायण*) सायणाचार्य्य, सायण। वि॰ (सं॰) अयनयुक्त, जिसमें अयन हो (ग्रहादि)। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य की एक गति।

सायबान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *साय:+बान* हि॰ *प्रत्य॰*) घर के आगे का वह छप्पर आदि जो छाया के हेतु बनता है।

सायर†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सागर*) समुद्र, सागर, शीर्ष, ऊपरी, भाग। संज्ञा, पु॰ (अ॰) बिना कर के माफ़ी ज़मीन, फुटकल, स्फुटिक। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *शायर*) कवि।

सायल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) माँग करने वाला, प्रश्नकर्त्ता, भिक्षुक, फ़क़ीर, प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी, आकांक्षी, उम्मीदवार।

साया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *साय:*) छाया, छाँह, **छाँही** (ग्रा॰)। वि॰ **सायादार**। **मु॰ साये में रहना**–शरण में रहना। प्रतिबिंब, परछाही, प्रेत, भूत, जिन, शैतान आदि, प्रभाव, असर। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *शेमीज*) घाँघरे का सा स्त्रियों का एक वस्त्र, एक जनाना पहनावा।

सायाह्न–संज्ञा, पु॰ (सं॰) संध्या, साँझ, शाम, सायंकाल।

सायुज्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अभेद के साथ मिल कर एक हो जाना, मुक्ति के चार भेदों में से वह भेद जब जीव या आत्मा ब्रह्म या परमात्मा से मिल कर एक ही हो जाता है। संज्ञा, स्त्री॰ **सायुज्यता**।

सारंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अनेकार्थक शब्द है। बाज, श्येन, कोयल, कोकिल, हंस, मोर, मयूर, चातक, पपीहा, भ्रमर, भौंरा, खंजन, खंजरीट, एक मधुमक्खी, सोनचिड़ी, पक्षी, चिड़िया, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, परमेश्वर, श्रीकृष्ण, विष्णु, शिवजी, कामदेव, हाथी, घोड़ा, मृग, हिरन, मेंढक, साँप, सर्प, सिंह, छत्र, छाता, शंख, कमल, चंदन, पुष्प, फूल, सोना, स्वर्ण, गहना, जेवर, ज़मीन, भूमि, पृथ्वी, केश, बाल, अलक, कपूर, कर्पूर, विष्णु का धनुष, समुद्र, सागर, वायु, तालाब, सर, पानी, वस्त्र, दीपक, वाण, शर, छवि, कांति, सुन्दरता, शोभा, छटा, स्त्री, रात, रात्रि, दिन, तलवार, खड्ग, बादल, मेघ, हाथ, कर, आकाश, नभ, सारंगी बाजा, बिजली, सब रागों का एक राग, चार तगण का एक वर्णिक छंद, **मैनावली** (पिं॰)। छप्पय 26वाँ भेद, काजल, मोर की लक्षणा (सं॰) रंगी, रंगा हुआ, जो सुहावना, मनोरम, सरस।

सारंगपाणि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु, सारंगधर।

सारंगिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिड़ीमार, किरात, बहेलिया, न या (सगण) वाला एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

सारंगिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सारंगी+इया प्रत्य॰*) सारगी बजाने वाला, साजिंदा।

सारंगी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰*सारंग*) अति श्रुतिमधुर और प्रिय स्वर वाला तार का एक बाजा, **सरंगी** (दे॰)।

सार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्त, तत्व, मूल, मुख्याभिप्राय, निष्कर्ष, किसी वस्तु का असली भाग, निर्यास, अर्क, रस, गूदा, मग्ज, दूध की मलाई या साढ़ी, छीर (काष्ठादि का) फल,

नतीजा, परिणाम, धन-संपत्ति, मक्खन, नवनीत, अमृत, शक्ति, बल, पौरुष, सामर्थ्य, मज्जा, जुआ खेलने का पाँसा, तलवार, खड्ग, पानी, जल, 28 मात्राओं वाला एक मात्रिक छंद (पिं.), एक वर्णिक छंद (पिं.), एक अर्थालंकार जिसमें वस्तुओं का उत्तरोत्तर उत्कर्ष या अपकर्ष कहा गया हो (अ. पी.ए उदार, लोहा। वि. श्रेष्ठ, उत्तम, सुदृढ़, मजबूत। *संज्ञा, पु. दे. (सं. *सारिका*) मैना, सारिका। संज्ञा, पु. दे. (हि. *साइना*) पालन-पोषण, देख-रेख, पर्यंक, पलँग। †संज्ञा. पु. दे. (सं. *श्याल*) साला।

श्याला–(सं.), पत्नी का भाई। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सारता**।

सारगर्भित–वि. यौ. (सं.) जिसमें तत्व भरा पड़ा हो, तत्व-पूर्ण, सारांशयुक्त।

सारता†–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सारत्व, सार का भाव या धर्म। विलो. **असारता, निस्सारता**।

सारथ–वि. दे. (सं. *सार्थ*) चरितार्थ पूर्ण, अर्थयुक्त। संज्ञा, स्त्री. **सारथता** (दे.)।

सारथि, सारथी–संज्ञा, पु. (सं.) रथ का हाँकने या चलाने वाला, सूत, अधिरथ, रथवान, एक वाहक, सागर, समुद्र। संज्ञा, पु. **सारथ्य**।

सारद–संज्ञा, स्त्री. (सं. *शारदा*) वाणी, सरस्वती। वि. (दे.) शारदा (सं.), शरद संबंधी। वि. (सं.) सार या अभीष्ट देने वाला। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शरद्*) शरद ऋतु।

सारदा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शारदा*) वाणी, गिरा, शारदा, सरस्वती जी। वि. स्त्री. (सं.) अभीष्ट देने वाली।

सारदि, सारदी–वि. दे. (सं. *शारदीय*) शारदीय, शरदऋतु-संबंधी, शरद ऋतु की।

सारदूल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शार्दूल*) सिंह, शार्तूल।

सारना–क्रि. स. (हि. *सरना का स. रूप*) पूरा या समाप्त करना, बनाना, साधना, सुस्त या ठीक करना, सुशोभित या सुन्दर बनाना, सँभालना, सुधारना, रक्षा करना, आँखों में अंजन और मस्तक में तिलकादि लगाना, शस्त्रास्त्र चलाना।

सारभाटा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *ज्वार का अनु.+भाटा*) ज्वारभाटा का विलोम, तट से आगे निकल जाकर कुछ देर में फिर लौटने वाली समुद्र के जल की बाढ़।

सारल्य–संज्ञा, पु. (सं.) सरलता, सीधापन, सिधाई।

सारवती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) तीन भगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

सारस–संज्ञा, पु. (सं.) एक सुन्दर बड़ा पक्षी, हंस, कमल, चंद्रमा, छप्पय का 37 वाँ भेद (पिं.)। स्त्री. **सारसी**।

सारसी–आर्य्या छंद का 23 वाँ भेद (पिं.), मादा सारस।

सारसुता–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *सुरसुता*) यमुना नदी।

सारसुती*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सरस्वती*) एक नदी, सरस्वती, वाणी, **सुरसुति, सरसुती** (दे.)।

सारस्य–संज्ञा, पु. (सं.) सरसता, रसीलापन। वि. विशेष रसदार।

सारस्वत–संज्ञा, पु. (सं.) दिल्ली के पश्चिमोत्तर की ओर सरस्वती नदी के समीप का देश (पूर्वीय पंजाब), वहाँ के ब्राह्मण, व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रंथ। वि. (सं.) सरस्वती-संबंधी, सारस्वत देश का।

सारांश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मूलतत्व, सार, संक्षेप, खुलासा, तात्पर्य, मतलब, परिणाम, नतीजा, फल, निष्कर्ष, निचोड़।

सारा–संज्ञा, पु. (सं.) एक अर्थालंकार जहाँ एक वस्तु दूसरी से उत्त कही जाय। †संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्यला*) साला। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **सारी**। वि. (दे.) संपूर्ण, समस्त, पूरा, सब का सब। स्त्री. **सारी**। संज्ञा, पु. (दे.) सार-तत्व।

सारावती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छंद, **सारावली** (पिं.)।

सारि–संज्ञा, पु. (सं.) चौपड़ का पाँसा खेलने वाला, जुआरी, जूआ खेलने का पाँसा।

सारिक–संज्ञा, पु. (सं.) मैना पक्षी।

सारिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मैना पक्षी।

सारिख, सारिखा*†–वि. दे. (हि. *सरीखा*) समान, सदृश, तुल्य, बराबर, **सरीखा**। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **सारिख**।

सारिणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सहदेई, नागबला, गंधप्रसारिणी, कपाय, रक्त, पुनर्नवा (औष.)। सूची यथा समय-सारिणी।

सारिवा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **सरिया** (दे.) अनंत मूल।

सारी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सारिका, मैना पक्षी, गोटी, जुए या चौपड़ का पाँसा, थूहर वृक्ष। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शाटिका*) रंगीन धोती, साड़ी। संज्ञा, पु. (सं. *सारिन्*) अनुकरण या नकल करने वाला। वि. स्त्री. (दे.) सम्पूर्ण, पूरी, सब, समूची, समस्त।

सारूप्य–संज्ञा, पु. (सं.) चार प्रकार की मुक्ति में से एक

जिसमें उपासक अपने इष्ट-देव के रूप को पा जाता है, रूप-साम्य का भाव, एकरूपता, सरूपता। संज्ञा, स्त्री॰ **सारूप्यता।**

सारूप्यता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सारूप्य का अर्थ या भाव।

सारोपा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक लक्षणा जिससे एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने का कोई विशेष अर्थ प्राप्त होता है (काव्य॰)।

सारौं–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सारिका*) सारिका, मैना पक्षी।

सार्थ–वि॰ (सं॰) सोद्देश्य, अर्थ-सहित, चरितार्थ, सफल, **सारथ** (दे॰)।

सार्थक–वि॰ (सं॰) अर्थवान् अर्थ-सहित सफल, पूर्ण-मनोरथ, पूर्णकाम, गुणकारी, उपयोगी, उपकारी, हितकर, प्रयोजनीय, सोद्देश्य, चरितार्थ, **सारथक** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **सार्थकता।**

सार्दूल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शार्दूल*) सिंह।

सार्द्ध–वि॰ (सं॰) पूरा और आधा मिला, अर्द्धयुक्त, आधे के साथ पूरा, डेढ़।

सार्व–वि॰ (सं॰) सब से संबंध रखने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सर्व का भाव।

सार्वकालिक–वि॰ यौ॰ (सं॰) सब समयों का, जो सब समयों में होता हो।

सार्वजनिक, सार्वजनीन–वि॰ यौ॰ (सं॰) सब लोगों या सर्वसाधारण से संबंध रखने वाला।

सार्वदेशिक–वि॰ यौ॰ (सं॰) सारे देश का, संपूर्ण देश-संबंधी।

सार्वभौम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चक्रवर्ती राजा, हाथी। वि॰ सब पृथ्वी-संबंधी। संज्ञा, स्त्री॰ **सार्वभौमता।**

सार्वराष्ट्रीय–वि॰ यौ॰ (सं॰) जिसका संबंध कई राष्ट्रों से हो, सर्वराष्ट्र-संबंधी।

सालंक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह शुद्ध राग जिससे दूसरा राग का मेल तो न हो किंतु किसी राग का आभास या ज्ञात हो (संगी॰)।

साल–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *सालना*) सलना या सालना क्रिया का भाव, छिद्र, छेद, बिल, सुराख़, पलँग के पायों के चौकोर छेद, जख़म, घाव, पीड़ा, दुःख वेदना। संज्ञा, पु॰ (सं॰) शाल वृक्ष, जड़, राल। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) बरस, वर्ष। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शालि शाल*) शालि, धान, शाल का पेढ़। संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाल*) शाल, दुशाला। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शाला*) शाला, स्थान, घर।

सालक–वि॰ दे॰ (हि॰ *सालना*) सालने या पीड़ा देने वाला, दुःखद।

सालगिरह–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (फ़ा॰) बरस-गाँठ, वर्ष ग्रंथि, जन्मतिथि, **जन्म-दिवस।**

सालग्राम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शालग्राम*) शालग्राम, विष्णु की अनगढ़ मूर्त्ति जो गंडकी नदी से मिलती है, **शालिगराम, सालिगराम** (दे॰)।

सालग्रामी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शालग्राम*) गंडकी नदी जहाँ विष्णु की अनगढ़ मूर्ति मिलती है।

सालन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सलवण*) रोटी के साथ खाने के दाल, तरकारी, कढ़ी आदि पदार्थ।

सालना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शूल*) खटकना, कसकना, पीड़ा या दुख देना, चुभना, गढ़ना। क्रि॰ स॰ पीड़ा या दुख पहुँचाना, चुभाना, गढ़ाना।

सालनिर्यास–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राल, धूप, धूना।

सालभ-मिश्री–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *सालब*+*मिश्री* सं॰) सुधामूली, वीरकंदा, एक पौष्टिक कंद वाला एक चुप, **सालिक-मिसिरी** (दे॰)।

सालरस–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राल, धूप।

सालस–संज्ञा, पु॰ (अ॰) दो पक्षों के बीच में निर्णायक, मध्यस्थ, विचवानी, पंच।

सालसा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रक्त-शोधक अर्क, **सारसा** (दे॰)। वि॰ स्त्री॰ (सं॰) आलस्य-युक्त। वि॰ यौ॰ (हि॰) शाल के समान।

सालसी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) सालस होने का भाव या क्रिया, पंचायत। वि॰ स्त्री॰ (हि॰) शाल जैसी।

सालस्य–वि॰ (सं॰) आलस्य-युक्त।

साला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्यालक*) स्त्री या पत्नी का भ्राता, एक गाली। स्त्री॰ **साली।** संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सारिका*) सारिका, मैना। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शाला*) स्थान, घर।

सालाना-सालियाना–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *सालानः*) वार्षिक, वर्ष या साल-संबंधी।

सालि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शालि*) शालि धान।

सालिग्राम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शालिग्राम*) शालिग्राम, विष्णु मूर्त्ति. **सालिगराम** (दे.)।

सालिबमिश्री–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *सालब+मिश्रा* सं॰) पौष्टिक कंद वाला एक क्षुप, सालममिश्री, सुधामूली, वीरकंद।

सालिम–वि॰ (अ॰) पूरा, संपूर्ण, सारा, सब समस्त।

साली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्याली*) पत्नी की बहन।

सालू–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सालना*) दुख, कष्ट, ईर्ष्या, **डाह** (दे॰)।

सालू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक मांगलिक लाल वस्त्र, सारी, पश्मीना, दुशाला।

सालूर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक मांगलिक लाल वस्त्र, सारी, पश्मीना, दुशाला, घोघा, घोंघी।

सालोक्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चार प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें मुक्त जीव परमात्मा के साथ उसके लोक में निवास करता है, सलोकता।

सावँ–वि॰ दे॰ (सं॰ *श्याम*) श्याम, काला।

सावँकरन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्यामकर्ण*) श्यामकर्ण, घोड़ा।

सावंत, सावँत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सामंत*) सामंत वीर, योद्धा, ज़मीदार।

साँवर–वि॰ दे॰ (सं॰) श्यामल, साँवला, श्यामला। स्त्री॰ **सावरी**।

साव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाह*) सेठ साहु, साहूकार, महाजन, धनिक, साह। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **स्राव** (सं॰)।

सावक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शावक*) शिशु, बच्चा, छोटा बच्चा। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सावकता**।

साकरन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्यामकर्ण*) एक प्रकार का घोड़ा, श्यामकर्ण।

सावकाश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फुरसत, अवकाश-युक्त, सामर्थ्य, समाई (दे॰) छुट्टी, अवसर, मौका, विस्तृत, **सावकास** (दे॰)।

सावकासी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सावकाश (सं॰) सामर्थ्य।

सावचेत*‡–वि॰ (सं॰) सावधान, सख्त, सतर्क, सजग।

सावज–संज्ञा, पु॰ (दे॰) बनैले पशु या जंतु, हरिण आदि ऐसे वनजीव जिनका लोग शिकार करते हैं।

सावत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सौत*) सौतों के आपस का द्वेष, ईर्ष्या, सौतिया डाह।

सावधान–वि॰ (सं॰) सतर्क, सचेत, सजग, होशियार, ख़बरदार।

सावधानता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सचेतता, सतर्कता, सजगपन, होशियारी, ख़बरदारी।

सावधानी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सावधानता*) सावधानता, सतर्कता, सचेतता, होशियारी, ख़बरदारी, सजगता।

सावन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्रावण*) बारह महीने में से एक महीना जो अषाढ़ के बाद और भादौं से पूर्व होता है, एक प्रकार का सावन महीने का गीत (पूरब)। **संज्ञा**, पु॰ (सं॰) एक सूर्योदय से दूसरे तक चौबीस घंटे का समय, दंड (ज्यो॰)।

सावनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्रावणी*) वह उपकरण या सामान जो वर के ग्रहाँ से कन्या के यहाँ ब्याह के प्रथम वर्ष सावन में भेजा जाता है, सावन की पूर्णमासी, या पूनो। वि॰ सावन का (की), सावन-संबंधी।

सावयव–वि॰ (सं॰) अवयव सहित, खंड-सहित, साँग।

सावर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शावर*) लोहे का एक लंबा औजार, शिवकृत एक प्रसिद्ध तंत्र-मंत्र-शास्त्र, **साबर** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शवर*) एक तरह का मृग, साँभर।

सावर्ण-सावर्णि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चौदह मनुओं में से आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र हैं, उनकी आयु का समय, एक मन्वन्तर।

सावाँ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्यामक*) काकुन-जैसा एक अन्न। यौ॰ **सावाँ-काकुन**।

सावित्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य, वसु, शिव, ब्रह्म, ब्राह्मण, यज्ञोपवीत, एक अस्त्र। वि॰–सूर्य या क्षद्रिता का, सविता संबंधी, सूर्य-वंशी।

सावित्री–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वेद-माता, गायत्री, ब्रह्मा जी की पत्नी, सरस्वती, उपनयन के समय का एक संस्कार, दक्ष प्रजापति की कन्या, मद्र नरेश अश्वपति की कन्या और सत्यवान की सती स्त्री, सरस्वती नदी, सधवा स्त्री।

साष्टांग–वि॰ यौ॰ (सं॰) आठों अंगों के सहित। यौ॰ **साष्टांग प्रणाम**–दण्डवत प्रणाम, पृथ्वी पर लेट कर मस्तक, हाथ, पैर, आँख, जंघा, हृदय, मन और वचन से नमस्कार करना। **मु॰ साष्टाँग प्रणाम (दंडवत) करना**–दूर रहना, बहुत ही वचना (व्यंग), दूर ही से दंडवत करना।

सास सासु–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्वश्रू*) पति या पत्नी की माता।

सासत–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) साँसति, **संसृति** (सं॰) कष्ट।

सासति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शासन*) संसृति दुख, शासन, दंड।

सामनलेट–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक जालीदार सफ़ेद महीन वस्त्र।

सासन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शासन*) शासन, दण्ड, सजा, हुकूमत। वि॰ (सं॰) शासन के साथ।

सासना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *शासन*) शासन करना, दंड देना, कष्ट पहुँचाना।

सासरा†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्वशुरालय*) ससुराल, **सासुर, ससुरा**।

सासा*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *संशय*) संशय, संदेह। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्वास*) श्वाय, साँस।

सासुर†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्वशुर, श्वशुरालय*) ससुर, ससुराल, ससुरार (दे॰)।

साह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाह*) राजा, बादशाह, सेठ, साहूकार, धनी, महाजन, **साहु** (दे॰) व्यापारी, सज्जन, साधु, भला मानुस, **साह जी**। यौ॰ **समधी** (वैश्य), शिवाजी के पिता।

साहचर्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) साथ, संग, संगति, सहचरता, सहचर का भाव।

साहनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सेनानी*) सेना, फ़ौज, संर्घा, संगी साथी, पारिषद्; घोड़ों के रख वाले।

साहब, साहेब–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *साहिब*) मित्र, साथी, संगी, दोस्त, स्वामी, मालिक, परमेश्वर (कबीर), सम्मान-सूचक शब्द, महाशय, अंग्रेज़ या गोरी जाति का व्यक्ति। स्त्री॰ **साहिवा**। यौ॰ साहिबे-आलम, युवराज।

साहबजादा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (अ॰ *साहिब+जादा* फ़ा॰) अमीर का पुत्र, भलेमानुस का लड़का, बेटा, पुत्र। स्त्री॰ **साहबज़ादी**।

साहब-सलामत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰) मुलाक़ात, बातचीत, सलाम, बंदगी, पारस्परिक अभिवादन। यौ॰ **सलाम-दुआ**।

साहबी, साहिबी–वि॰ दे॰ (अ॰ *साहब*) साहब का। संज्ञा, स्त्री॰ साहब होने का भाव प्रभुता, स्वामित्व, मालिकपन, बड़प्पन, बढ़ाई।

साहस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हिम्मत, **हियाव** (दे॰) आपत्यादि का दृढ़ता से सामना कराने वाली एक मानसिक शक्ति, बलात्कार, उद्योग-उत्साह, वीरता, कार्य-तत्परता, हौसला। ज़बरदस्ती धनादि का अपहरण करना, लूटना, कुकर्म, सजा, दंड, जुर्माना।

साहसिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हिम्मतवर, साहसी, पराक्रमी, निश्शंक, निर्भीक, चोर, डाकू, निर्भय, निडर।

साहसी–वि॰ (सं॰ *साहसिन्*) बहादुर, दिलेर, हिम्मती, हौसलेवाला।

साहस्र-साहस्रिक–वि॰ (सं॰) सहस्र या हज़ार संबंधी, हज़ार का।

साहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *साहित्य*) व्याहादि शुभ कार्यों के लिए शुभमुहूर्त्त या लग्न।

साहाय्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सहायता।

साहित्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उपकरण सामान, असबाब, सामग्री, वाक्यों में एक ही क्रिया से अन्वय कराने वाला पदों का पारस्परिक संवंध विशेष, विद्याविशेष, कवियों का सुलेख, सार्वजनिक, हित-संबंधी स्थायी विचारों या भावों के गद्य-पद्य मय ग्रंथों का सुरक्षित समूह, काव्य, वाङ्मय, मिलन, प्रेम करना, एकत्रित होना, संचय।

साहित्यिक–वि॰ (सं॰) साहित्य-संबंधी, साहित्य का। संज्ञा, पु॰ साहित्य-सेवी, जो साहित्य-सेवा करता हो।

साहिब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) साहब, साथी, मित्र, मालिक, स्वामी, परमेश्वर।

साहिबी–वि॰ (अ॰ *साहिब*) साहिब संबंधी, साहिब का। संज्ञा, स्त्री॰ साहिब का भाव, प्रभुता, स्वामित्व, बड़प्पन, बड़ाई।

साहियाँ*‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वामी*) स्वामी, मालिक, पति, नाथ, परमेश्वर, पंजाब की एक लोक-धुन, **साई, साइयाँ**।

साही–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शल्पका*) एक विख्यात जंगली जंतु, जिसके शरीर पर बड़े बड़े पैने काँटे होते हैं। वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाही*) शाही, बादशाह का, शाह-संबंधी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **स्याही** सेईफ (फ़ा॰)।

साहु–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाह,* सं॰ साधु) साहूकार, सेठ, महाजन, शाह, राजा, सज्जन। विलो॰ **चोर**। शिवाजी के पिता साहिजी।

साहुल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शाकूल*) राजों का दीवाल की समता की जाँच करने का एक यंत्र, **सहावल** (दे॰)।

साहू–संज्ञा, पु. दे. (फा. *शाह*) सेठ, साहूकार, साहु, सज्जन, महाजन, धनी, शिवाजी के पौत्र।

साहूकार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *साधुकार*) बड़ा सेठ, बड़ा महाजन, कोठीवाल। संज्ञा, पु. (दे.) **साहूकारी**।

साहूकारा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *साहूकार*) लेन-देन का कार्य, महाजनी, महाजनों का बाज़ार। वि. सेठों का, सेठ संबंधी।

साहूकारी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *साहूकार*) सेठ होने का भाव, सेठपन, सेठों का कार्य, साहूकारपन।

साहेब–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *साहिब*) साहिब, स्वामी, मालिक, प्रभु, नाथ, पति, परमेश्वर, संगी, दोस्त, मित्र।

सिंकना,सेंकना–क्रि. अ. दे. (हि. *सेंकना*) आग की आँच पर पकना या गरम होना, सेंका जाना।

सिंगरौल–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंगवेरपुर*) शृंगवेरपुर ग्राम विशेष, शृंगवेरपुर का निवासी।

सिंगा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सींग*) फूँककर बजाने का सींग का बाजा, रणसिंगा, तुरही। संज्ञा, पु. (दे.) **सींगा**, मुट्ठी बंद कर अँगूठा दिखाने की एक मुद्रा (अस्वीकार सूचक)।

सिंगार–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंगार*) सजावट, शोभा, बनाव, शृंगारस, स्त्रियों के सोलह शृंगार।

सिंगारदान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंगार+दान* फा.) शीशा, कंघा आदि शृंगार की सामग्री रखने का संदूकचा।

सिंगारना–क्रि. अ. दे. (सं. *शृंगार*) सजाना, अलंकृत या सुसज्जित करना, सँवारना।

सिंगारहाट–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. (हि.) वेश्याओं का निवास-स्थान, चकला।

सिंगारहार–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *हार शृंगार*) हरसिंगार नामक फूल, पारिजात, **परजाता** (दे.)।

सिंगारिया–वि. दे. (सं. *शृंगार*) पुजारी, देव-मूर्तियों का शृंगार करने वाला।

सिगारा–वि. पु. (हि. *सिंगार+ई प्रत्य.*) सजाने का शृंगार करने वाला।

सिंगिया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृमिक*) एक विख्यात स्थावर विष विशेष।

सिंगी–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सींग*) हिरन आदि के सींग का फूँक-फूँक कर बजाने का एक बाजा। संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक मछली, सींग की नली जिससे चूस कर देहाती जर्राह देह से रक्त निकालते हैं।

सिंगौटी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सींग*) बैलों के सीगों का एक गहना, छोटे सींग। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सिंगार+औटी*) स्त्रियों की सिंदूर आदि रखने की छोटी पिटारी।

सिंघ†–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सिंह*) सिंह, क्षत्रियों की एक उपाधि।

सिंघाड़ा, सिंघारा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंगाटक*) जल में फैलने वाली एक लता का विख्यात काँटेदार तिकोना फल, सिंघाड़े के आकार की सिलाई या बूटा, समोसा नाम का एक तिकोना नमकीन पकवान, **जल-फल**।

सिंघासन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सिंहासन*) सिंहासन, राज-गद्दी।

सिंघी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) शुंठी, सोंठ, एक छोटी मछली, एक जाति।

सिंघेला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंह*) सिंह का बच्चा, **सिंघेरा**।

सिंचन–संज्ञा, पु. (सं.) पानी छिड़कन, सींचना। वि. **सिंचित**।

सिंचना–क्रि. अ. दे. (सं. *सिंचन*) सींचा जाना। स. रूप–**सींचना, सिंचाना, सिंचवाना**, प्रे. रूप–**सिंचवाना**।

सिंचाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सिंचन*) सीचने या पानी छिड़काने का काम, सींचने का कर या मज़दूरी।

सिंचाना–क्रि. स. (हि. *सीचना का प्रे. रूप*) दूसरे से सिचाना, **सिंचावना, सिंचवाना** (ग्रा.)।

सिंचित–वि. (सं.) सींचा हुआ।

सिजा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ध्वनि, शब्द, आवाज़, **शिंजा**।

सिंजित–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शिंजित, ध्वनित, शब्द, झंकार।

सिंदन*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्पन्दन*) स्पन्दन, रथ।

सिंदूर–संज्ञा, पु. (सं.) ईंगुर से बना सधवा स्त्रियों के माँग और माथे पर लगाने का एक विख्यात लाल चूर्ण।

सिंदूर-दान–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सिंदूर+दान प्रत्य.*) वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना। संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सिंदूर+दान का प्रत्य.*) सिंदूर रखने का पात्र। स्त्री. अल्पा. **सिंदूरदानी**।

सिंदूर-पुष्पी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वीर पुष्पों, एक पौधा और उसके लाल फूल।

सिंदूर-बंदन–संज्ञा, पु. (सं.) वर का कन्या की माँग में

सिंदूर देना, **सिंदूरदान**।

सिंदूरिया–वि. दे. (सं.*सिंदूर+इया* हि. *प्रत्य.*) सिंदूर के रंग का, बहुत लाल, एक ला आय।

सिंदूरी–वि. दे. (सं. *सिंदूर+ई प्रत्य.*) सिंदूर के रंग का, अति लाल।

सिंदोरा, सिंदौरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंदूर*) सिंदूर रखने का पात्र, **सिधौरा** (ग्रा.)।

सिंध–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंधु*) भारत का एक पश्चिमी प्रदेश (बंबई प्रान्त)। संज्ञा, स्त्री. (दे.) पंजाब की सबसे बड़ी नदी, भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव-संज्ञा, पु. दे. (सं. *सैंधव*) सैंधव या सेंधा नमक, सिंध देश का घोड़ा, सिंध देश का निवासी।

सिंधी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि *सिंध+ई प्रत्य.*) सिंध देश की भाषा। संज्ञा, पु. (हि.) सिंध देश का निवासी, सिंध का घोड़ा। वि. (हि.) सिंध देश का, सिंध-संबंधी।

सिंधु–संज्ञा, पु. (सं.) पंजाब के पश्चिम भाग की एक बड़ी नदी। समुद्र, सिंध देश, चार और सात की संख्या, एक राग संगी.)।

सिंधुज–संज्ञा, पु. (सं.) सेंधा नमक, सिंध देश का घोड़ा, चंद्रमा, विषादि, 14 रत्न, मोती।

सिंधुजा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लक्ष्मी।

सिंधुजात–संज्ञा, पु. (सं.) चंद्रमा।

सिंधुतनय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा।

सिंधुतनया–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लक्ष्मी।

सिंधुपुत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **सिंधुपूत** (दे.) चंद्रमा, विष, मोती।

सिंधुमाता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं. *सिंधुमातृ*) समुद्र की माता सरस्वती।

सिंधुर–संज्ञा, पु. (सं.) हाथी, हस्ती, आठ की संख्या। स्त्री **सिंधुरा**।

सिंधुरगति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) गजगति, हाथी की सी मंद मतवाली चाल।

सिंधुरगामिनी–वि. स्त्री. यौ. (सं.) गजगामिनी, हाथी की सी चाल चलने वाली। पु. **सिंधुरगामी**।

सिंधुर-मणि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गजमुक्ता, गजमोती।

सिंधुरमुक्ता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गणेश जी **सिंधुरानन**।

सिंधुर-वदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गणेश।

सिंधुविष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) महाविष, हलाहल, समुद्र का विष।

सिंधुसुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **सागर, सुत** चन्द्रमा, जलंधर राक्षस, शंख, **सिंधु-सपूत**।

सिंधुसुता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लक्ष्मी, सीप।

सिंधुसुतासुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मोती।

सिंधूरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंधुर*) एक राग (संगी.) (सिंदूरा)।

सिधोरा, सिधौरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंदूर*) सिंदूर रखने का एक काष्ठ-पात्र।

सिंसप-सिंसपा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शिंशपा*) शीशम या सीसों का पेड़।

सिंह–संज्ञा, पु. (सं.) बिल्ली की जाति का एक पराक्रमी, बलवान् और भव्य जंगली जंतु जिसके नर वर्ग की गरदन पर बड़े बाल होते हैं, **सिंध** (दे.) शेरबबर, केसरी, मृगराज, शार्दूल, मृगेन्द्र, बारह राशियों में से 5वीं राशि (ज्यो.), वीरता-सूचक एक शब्द, जैसे–पुरुष सिंह क्षत्रियों की एक उपाधि, छप्पय का 16 वाँ भेद (पिं.)। रामा. टी. । स्त्री. **सिंहना**।

सिंहद्वार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सदर-फाटक, बड़ा, दरवाजा, **सिंहपौर** (दे.)।

सिंहनाद–संज्ञा, पु. यो. (सं.) सिंह की गरज, लड़ाई, में वीरों की ललकार, ज़ोर देकर या ललकार कर कहना, कलहंस-नंदिनी नामक एक वर्णिक छंद (पिं.), कवियों की आत्मश्लाघा।

सिंहनी, सिंहना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शेरनी, बाघिनी, बाघ की मादा, **सिंघिना** (दे.)। एक मात्रिक छंद जिसके चारों चरणों में क्रम से 12, 18, 20 और 22 मात्राएं होती हैं (पिं.)। विलो. **गाहनो**।

सिंह-पौर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सिंह प्रतौली*) **सिंध-पौरि** (दे.), सदर फाटक, सिंहद्वार।

सिंहल–संज्ञा, पु. (सं.) भारत के दक्षिण में एक द्वीप जिसे अब लोग श्री लंका कहते हैं। **सिंघल** (दे.)। यौ. **सिंहलद्वीप**। वि. (हि.) **सिंहली**।

सिंहलद्वीप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लंका द्वीप।

सिंहलद्वीपी–वि. यौ. (सं. *सिंहलद्वीप+ई प्रत्य.*) सिंहल द्वीप का, **सिंघली** (दे.) सिंलद्वीप का निवासी या सम्बन्धी। संज्ञा, स्त्री. **सिहाली** (दे.)। सिंहलद्वीप की भाषा, **सिहली**।

सिंहवाहिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) दुर्गा देवी, **सिंघवाहिनी** (दे.)।

सिंहस्थ–वि. (सं.) सिंह राशि में स्थित (वृहस्पति) **सिंहस्थित** उज्जैन में होने वाला कुंभ। स्त्री **सिंहस्था**–देवी।

सिंहावलोकन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सिंह की सी चितवनि, **सिंह-दृष्टि**, आगे बढ़ते हुए सिंह सा पीछे देखना, आगे बढ़ने से पूर्व पहिले की बातों का संक्षिप्त कथन, पद्यरचना की एक शैली जिसमें पिछले चरणांत के कुछ वण या पद आगे के चरणादि में आते हैं, **सिंह-बिलोकोन** (दे.)।

सिंहासन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा या किसी देवता के बैठने का आसन, राजगद्दी, तख़्त (फ़ा.)।

सिंहका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राहु की माता एक राक्षसी, जिसे हनुमानजी ने लंका जाते समय मारा था (रामा.), शोभन छंद (पिं.)।

सिंहिकासुत-सिंहिकासुनु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राहु नामक ग्रह, सिंहका-पुत्र सिंहिंका-तनय।

सिंहिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बाविनी, शेरनी, शेर की मादा।

सिंहा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शविनी, शेरनी, आर्या छंद का 3 गुरु और 43 श्रतु वर्णो वाला 25वाँ भेद (पिं.) एक औषधि विशेष (वैद्य.)।

सिंहोदरी–वि. स्त्री. यौ. (सं.) सिंह की सी सूक्ष्म कटि वाली।

सिअन, सिअनि–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सिलाई, सीवन।

सिअरा*–वि. दे. (सं. *शीतल*) ठंडा, शीतल। संज्ञा, पु. (दे.) छाया, छाहीं, छाँह।

सिआना–क्रि. स. दे. (हि. *सिलाना*) सिलाना, **सिवाना** (वस्त्रादि)।

सिआर–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृगाल*) स्यार (दे.)ए गीदड़, शृगाल, एक जंगली जंतु। स्त्री. **सआरनी, सिआरिन**।

सिकंजबीन–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सिरका या नीबू के रस में पका शरबत।

सिकंजा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *शिकंजा*) फंदा, जाल।

सिकंदर–संज्ञा, पु. (फ़ा.) यूनान का एक प्रतापी सम्राट। **मु. तकदार मुकद्दर को सिकदर**–अति भाग्यशाली।

सिकंदरा–संज्ञा, पु. (फ़ा. *सिकंदर*) आगरे के निकट अक़बर का मकबरा।

सिकड़ा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंखला*) जंजीर, साँकर, **साँकल** (प्रान्ती.)। स्त्री. **सिकड़ी**।

सिकचा–संज्ञा, पु. (दे.) सीकचा, **सीखचा** (फ़ा.)।

सिकड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शृंखला*) किवाड़ की कुंडी, जंज़ीर, साँकल, करधनी, तागड़ी, जंज़ीर जैसा सोने का गले का एक गहना।

सिकत–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सिकता*) बालू, रेत।

सिकता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बालू, रेत, रेग, बलुई भूमि, शर्करा, चीनी।

सिकत्तर–संज्ञा, पु. दे. (अं. *सेक्रेटरी*) किसी सभा या संस्था का मंत्री, वज़ीर, **सेक्रेटरी** (अं.)। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **सिकत्तरी**।

सिकन–संज्ञा, स्त्री. (दे.) शिकन (फ़ा.) सिकुड़न।

सिकर–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शृंखला*) जंज़ीर, सँकरी।

सिकरवार–संज्ञा, पु. (दे.) क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकरो–संज्ञा, पु. (दे.) शिकरा नामक एक शिकारी पक्षी

सिकला–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. *सौकल*) धारदार हथियारों की धार पैनी करने या सान धरने का काम।

सिकलीगर–संज्ञा, पु. दे. (अ. *सैकल+गर* फ़ा. *प्रत्य.*) धारदार हथियारों की धार पैनी करने वाला, सान धरने वाला वि.।

सिकहर-सिकहरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शिक्य+धर*) सींका छींका। **मु. सिकहर पर चढ़ना**–इतराना।

सिकुड़न–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सकुचन*) संकोच, आकुंचन शिकन, बल।

सिकुड़ना-सिकुरना–क्रि. स. दे. (सं. *संकुचन*) संकुचित या आंकुचित होना, श्रटुरना, संकीर्ण होना, शिकन या बल पड़ना।

सिकोड़ना-सिकोरना–क्रि. स. (हि. *सिकुड़ना*) संकुचित करना समेटना, बटोरना।

सिकोरा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *कसोरा*) **सकोरा**, कसोरा, प्याला मिट्टी का कटोरा।

सिकोला-सिकौला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) काँस, मूँज या बेंत आदि की डलिया।

सिकोही–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *शिकोह*) वीर, बहादुर, गर्वीला, आनवान वाला, अभिमानी, गुमानी।

सिक्कड़-सिक्कर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सीकर*) पानी की बूँद या छींट, जल-कण, पसीना। *†संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शृंखला*) जंज़ीर।

सिक्का–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *सिक्का:*) छापा, मुहर, छाप, ठप्पा, मुद्रित चिह्न, रुपया, अशर्फ़ी, पैसा, मुद्रा, इन पर राजकीय छाप, निश्चित मूल्य का टकसाल में ढला धातु का टुकड़ा। **मु॰ सिक्का बैठना या जमना**–अधिकार या प्रमुख होना, रोव या आतंक जमना, धाक बैठना। पदक, तमगा, मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा।

सिक्ख–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिष्य*) शिष्य, चेला, गुरु नानक का अनुयायी, नानक पंथी, **सिख** (दे॰)।

सिक्त–वि॰ (सं॰) सींचा या भीगा हुआ, तर, गीला। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ **सिकता**।

सिखंड–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिखंड*) शिखंड, चोटी, शिखा। वि॰ द्रुपद का एक पुत्र। (सं॰) **शिखंडी**–सिखंड वाला (महा॰)।

सिख–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिक्षा*) शिक्षा, सिखावन, उपदेश, सिखावन, **सीख** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिष्य*) शिष्य, शागिर्द, चेला, गुरु नानक के अनुयायी, सिक्ख। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिखा*) शिखा, चोटी।

सिखना†*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सीखना*) सीखना, **सिखवाना**। द्वि॰ रूप–**सिखाना, सिखावना**, प्रे॰ रूप–**सिखवाना**।

सिखर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिखर*) शृंग, शिखर, पहाड़ की चोटी।

सिखरन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्रीखंड*) दही, दूध और चीनी मिला पदार्थ, **सिकरन** (दे॰) **मूरन** (ग्रा॰)।

सिखलाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सिखाना*) सिखाना।

सिखा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिखा*) शिखा, चोटी।

सिखाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिक्षा*) शिक्षा, उपदेश, पढ़ाई।

सिखाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *शिक्षण*) शिक्षा या उपदेश देना, पढ़ाना। यौ॰ **सिखाना-पढ़ाना**–चालाकी सिखाना।

सिखापन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिक्षा+पन* हि॰) शिक्षा, उपदेश, सिखाने का कान।

सिखावन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*शिक्षण*) सीख, शिक्षा, उपदेश, सिखापन। स्त्री॰ **सिखावनि**।

सिखावना*†–क्रि॰ स॰ (हि॰ *सिखाना*) सिखाना।

सिखिर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिखर*) पर्वत-शृंग, शिखर, चोटी।

सिखी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिखी*) मोर, मयूर, **बर्ही**।

सिगरा-सिगरो-सिगरौ*†–वि॰ दे॰ (सं॰ *समग्र*) समस्त, सम्पूर्ण, सब का सब, सारा। स्त्री॰ **सिगरी**।

सिचान*–संज्ञा, पु॰ दे (सं॰ *सचान*) बाज़ पक्षी।

सिचाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*हि॰ सिचना का स॰ रूप*) पानी दिलाना, **सिंचाना**।

सिच्छा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिक्षा*) शिक्षा, उपदेश, सीख।

सिजदा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रणाम, दण्डवत; सर झुकाना।

सिझना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*सं॰ सिद्ध*) आँच पर पकना, सिझाया जाना।

सिझाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*सं॰ सिद्ध*) आँच पर पका कर गलाना, तपस्या करना, रस या तेल आदि में तर करना, **सिझावना** (दे॰)। प्रे॰ रूप–**सिझवाना**।

सिटकिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (अनु॰) चटकनी, चटखनी, किवाड़ बंद करने का यंत्र।

सिटपिटाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (*अनु॰*) दब जाना, मेंद पड़ जाना।

सिट्टी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सटना*) बहुत ही बढ़-चढ़ कर बोलने वाला, वाक्पटुता। **मु॰ सिट्टी (सिट्टी-पट्टी) भूलना**–सिटपिटा जाना।

सिठनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *अशिष्ट*) ब्याह के समय गाने की गाली, **साठना** (प्रान्ती॰)।

सिठाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सीठी*) नीरसता, फीकापन, मंदता। विलो॰ **मिठाई**।

सिड़–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पागलपन, सनक, धुन, उन्माद।

सिड़ी–वि॰ दे॰ (सं॰ *शृणाक*) उन्मत्त, पागल, बावला, सनकी, धुनी।

सित–वि॰ (सं॰) उज्ज्वल, श्वेत, धवल, सफ़ेद, चमकीला, स्वच्छ, साफ़। संज्ञा, पु॰ (सं॰) उजाला पाख, शुक्ल-पक्ष, चाँदी, चीनी, सक्कर।

सितकंठ–वि॰ यौ॰ (सं॰) **सितग्रीव**, श्वेत गले वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *शितकंठ*) महादेव जी।

सितकर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सितांशु, चन्द्रमा, सितरश्मि।

सितता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सफ़ेदी, उज्ज्वलता, श्वेतता,

धवलता।

सितपक्ष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हंस पक्षी, धवल या श्वेत पक्ष, शुक्ल-पक्ष।

सितभानु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंद्रमा, **सितरश्मि**।

सितम–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) अन्याय, ज़ुल्म, अत्याचार, अनर्थ, गजब।

सितमगर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) अन्यायी, जालिम, अत्याचारी।

सितमदीदह–वि॰ (फ़ा॰) जिसने अन्याय या जुलम देखा हो, मज़लूम।

सितरी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पसीना, स्वेद।

सितला–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शीतला*) शीतला, चेचक, **सीतला**।

सितवराह–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्वेत शूकर, सफ़ेद सुअर।

सितसागर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्वेत सागर, वीर सार, सफ़ेद समुद्र।

सितांशु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सितरश्मि, चन्द्रमा (दे॰), शीतांशु।

सिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मिश्री, शक्कर, चीनी शुक्र पक्ष मोतिया, मल्लिका, शराब मद्य।

सिताखंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मिश्री, शहद से बनाई हुई शक्कर।

सिताब-सिताबी–क्रि॰ वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *शित्ताब*) झटपट, शीघ्र, जल्दी, फौरन, सत्वर, तुरंत, तत्काल।

सिताभा–सिताभ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *सित+आभा*) धवलकांति, चंद्रमा।

सितार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰*सप्तवार या* फ़ा॰ *सहतार*) जिन तारों का एक बाजा। स्त्री॰ *अल्पा*॰ **सितारी**।

सितारा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सितारः*) नक्षत्र, तारा, भाग्य, किस्मत, प्रारब्ध। **मु॰ सितारा गर्दिश पर होना**–भाग्य चक्र का चक्कर लगाना, दुर्भाग्य होना। **सितारा चमकना या बुलंद होना**–भाग्योदय होना, अच्छी भाग्य होना। सोने या चाँदी की गोल बिंदी जिसे शोभार्थ वस्तुओं पर लगाते हैं, **चमकी** (प्रान्ती॰)। संज्ञा, पु॰ सितार।

सितारेहिंद–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फा॰) एक उपाधि जो अंग्रेज़ी सरकार की ओर से दी जाती थी।

सितासित–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्वेत-श्याम, सफ़ेद काला, उजला-नीला, बलदेव जी।

सिति–वि॰ दे॰ (सं॰ *शिति*) श्वेत, शुक्र, सफ़ेद, काला, कृष्ण।

सितिकंठ–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शितिकंठ*) महादेव जी, नीलकंठ।

सितुई–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मीपी। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *सत्तू*) **सितुआसी** (दे॰) सितुआ संक्रांति।

सिथिल*–वि॰ दे॰ (सं॰ *शिथिल*) क्रान्त, शिथिल, ढीला, थका, माँदा, हारा, सुस्त। संज्ञा, स्त्री (दे॰) **सिथिलता, सिथिलाई**।

सिदरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *सहदरी*) तीन द्वार का दालान, तीन द्वार का बरामदा।

सिदिक–वि॰ दे॰ (अ॰ *सिद्क*) सत्य, सच्चा।

सिदौसी–क्रि॰ वि॰ (दे॰) शीघ्र, जल्दी, तुरंत, तत्काल।

सिद्ध–वि॰ (सं॰) जिसका साधनपूर्ण हो चुका हो, संपन्न प्राप्त, संपादित, उपलब्ध, प्राप्त, सकल-प्रयत्न, कृतकार्य्य, कृतार्थ, हासिल–योगादि से सिद्ध प्राप्त योगी, तपस्वी, मोक्षाधिकारी, मुक्त, योग-विभूति-प्रदर्शक प्रमाण या तर्क से निश्चित या निर्धारित, प्रमाणित, जिस कथन के अनुसार कुछ हुआ हो, निरूपित, प्रतिपादित, साबित, अनुकूल किया हुआ, कार्य साधन के उपयुक्त या अनुकूल किया या बनाया हुआ, आँच से पकाया या उबाला हुआ, महात्मा, पहुँचा हुआ। लो॰–"घर का जोगी जोगड़ा और गाँव का सिद्ध।" संज्ञा, पु॰ (सं॰) योग या तप से सिद्धि-प्राप्त व्यक्ति, ज्ञानी, भक्त, महात्मा, एक प्रकार के देवता, एक योग (ज्यो॰)।

सिद्धकाम–वि॰ यौ॰ (सं॰) सफल-मनोरथ, पूर्ण मनोरथ, कृतार्थ, सफल, कृतकार्य।

सिद्धगुटिका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मंत्र-द्वारा सिद्धि की हुई वह कल्पित रासायनिक गोली जिसे मुख में रखने से योगी को अदृश्य होने या सब स्थानों में शीघ्र पहुँचने की शक्ति प्राप्त होती है, खेचरी गुटिका।

सिद्धता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सिद्ध होने की दशा या अवस्था, सिद्धि, पूर्णता, प्रामाणिकता, सित्य, सफलता, **सिद्धताई** (दे॰)।

सिद्धत्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिद्धता।

सिद्धपीठ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ऐसा स्थान जहाँ तपस्या, योग और तांत्रिक प्रयोग शीघ्र सिद्ध होते हों, सिद्धाश्रम, सिद्ध-भूमि।

सिद्धरस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पारा।

सिद्धरसायन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दीर्घजीवी और शक्तिशाली करने वाली एक रसादिक की औषधि।

सिद्धहस्त–वि॰ यौ॰ (सं॰) दक्ष, निपुण, कुशल, जिसका हाथ किसी कार्य में मंज गया हो, पटु।

सिद्धांजन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह अंजन जिसके प्रभाव से पृथ्वी में गड़ी वस्तुएँ दिखलाई देती हैं।

सिद्धांत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निर्धारित विचार, निश्चित मत, सोच-विचार के पीछे स्थिर किया हुआ मत, उसूल, प्रधान मंतव्य, मुख्य अभिप्राय या उद्देश्य, मत, ऐसी बात जो विद्धानों या उनके किसी वर्ग या संप्रदाय के द्वारा सत्य मानी जाती हो; निर्णीत विषय या अर्थ, तत्व की बात, पूर्ण पक्ष से खंडन के पीछे स्थिर गत, ज्योतिष आदि शास्त्रों पर लिखी हुई कोई पुस्तक विशेष।

सिद्धांती–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मीमांसक, विचारक, सिद्धांत-ग्रंथों का ज्ञाता।

सिद्धांतीय–वि॰ (सं॰) सिद्धान्त-संबंधी, सिद्धान्त वाला, सैद्धांतिक।

सिद्धा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सिद्धपुरुष की स्त्री, देवांगना, 13 गुरु और 31 लघु वर्णों वाला आर्य्या छंद का पंद्रहवाँ भेद (पिं॰)।

सिद्धाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सिद्ध+आई स्त्री॰ प्रत्य॰*) सिद्धता, सिद्धत्व, सिद्धपन, सिद्ध होने की दशा, **सिद्धई** (दे॰)।

सिद्धार्थ–वि॰(सं॰) कृतार्थ, पूर्ण-काम, पूर्ण मनोरथ, पूर्ण कामना वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) जैनों के 24वें तीर्थंकर महावीर के पिता; गौतमबुद्ध।

सिद्धाश्रम–संज्ञा, पु॰ यौ॰(सं॰) सिद्ध-पुरुषों या देवताओं के रहने का स्थान, हिमालय पहाड़ पर सिद्ध लोगों का एक स्थान, सिद्धि-प्राप्ति का स्थान।

सिद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कामना, इच्छा या मनोरथ का पूर्ण होना, सफलता मिलना, प्रयोजन निकलना, **कामयाबी**। प्रमाणित या सिद्ध होना, निश्चय या निर्धारित किया जाना, फैसला, निर्णय, स्थिर या साबित होना, सीझना, पकना, तपस्या या योग की पूर्ति का दिव्य फल, विभूति, ऐश्वर्य, योग की 8 सिद्धियाँ:– अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व; मोक्ष, मुक्ति, दक्षता, निपुणता, पटुता, कौशल, दक्ष प्रजापति की एक कन्या और धर्म की पत्नी, गणेश जी की दो स्त्रियों में से एक, विजया, भाँग, छप्पय का 30 गुरु और 92 लघु वर्णों वाला 41 वाँ भेद।

सिद्धीश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गणेश जी।

सिद्धेश, सिद्धेश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) महादेव जी, महायोगी, बड़ा सिद्ध, बड़ा महात्मा। स्त्री॰ **सिद्धेश्वरी**।

सिधाना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सिधारना*) प्रस्थान या गमन करना, जाना, मरना। क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सीधा*) सीधा करना, सुधारना।

सिधारना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सिधाना*) प्रस्थान या गमन करना, जाना, भरना, स्वर्ग-वासी होना।

सिन–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अवस्था, उम्र आयु।

सिनक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सिदधाएक*) नाक का मैल।

सिनकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सिनक*) बड़े जोर से वायु को नथुनों से निकाल कर नाक का मैल बाहर फेंकना, **छिनकना** (दे॰)।

सिनि, सिनी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिनि*) सात्यकि का पिता एक यदुवंशी, क्षत्रियों की एक पुरानी शाखा।

सिनीवाली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक देवी (वैदिक), शुक्र पक्ष की प्रतिपक्ष।

सिन्नी†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *शीरीनी*) मिठाई, वह मिठाई जो देवता या पीर पर चढ़ कर प्रसाद की रीति से बांटी जाये। **मु॰ सिन्नी मनना (चढ़ाना)** मनौती मानना, अति प्रसन्न होना।

सिपर–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) ढाल।

सिपहगरी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) सिपाही का काम, लड़ने का काम था पेशा।"

सिपहसाजार–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) सेनापति।

सिपारा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) क़ुरान का एक अध्याय।

सिपारा–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) सेना, फ़ौज।

सिपाहगिरी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) सिपहगरी, सिपाही का काम, युद्ध–व्यवसाय।

सिपाहियाना–वि॰ (फ़ा॰) सिपाहियों या सैनिकों का सा, **सिपाहाना**।

सिपाही–संस, पु॰ (फ़ा॰) शूर, योद्धा, सैनिक, तिलंगा, (ग्रा॰)

चपरासी, कांस्टेबिल, सिपाई (दे.)।

सिपुर्द–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. सुपुर्द) हवाले या सुपुद्र करना, सौंपना, सिपुरुद (दे.)। मु. सिपुर्द होना–हवाले होना, सौंपा जाना।

सिप्पर–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़.सिपर) सिपर, ढाल।

सिप्रा–संज्ञा, पु. (सं.) निदाप पसीना, स्वेद, जल, पानी।

सिप्रा–संज्ञा, स्त्री (सं.) महिपी, भैंस, मालवा की नदी जिसके तट पर उज्जेन है, छिप्रा (दे.), सं. (शिप्रा)

सिफ़त–संज्ञा, स्त्री. (अ.) विशेषता, लक्षण, गुण,हुनर, स्वभाव।

सिफ़र–संज्ञा पु. दे. (अ. *साइफ़र*) शुन्य, ज़ीरो, सीफ़र (अं.) सुन्ना, सुन्न (दे.)।

सिफ़ला–वि. (अ.) बेसमझ, बेवकूफ, ओछा, नीच, कमीना, छिछोरा। संज्ञा, स्त्री. **सिफलापन**।

सिफ़ात–संज्ञा, स्त्री. अ. सिफ़त का बहु-अधन, गुण, लक्षण, हुनर।

सिफ़ारिश–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) किसी का अपराध के छमा कराने या किसी की भलाई कराने के हेतु किसी से उसके विषय में कुछ प्रशंसा या भलाई की बातें कहना-सुनना, अनुरोध।

सिफ़ारशी–वि. (फ़ा.) जिसकी सिफ़ारिश हो; की गई हो, जिसमें सिफ़ारिश हो।

सिफ़ारशी टट्टू–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा. *सिफ़ारशी* +टट्टू हि.) सिफ़ारिश से किसी ऊँचे पद को प्राप्त अयोग्य व्यक्ति।

सिविका–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शिविका*) पालकी।"

सिमंत–संज्ञा, पु. दे. (सं. सीमंत) स्त्रियों की माँग, हड्डियों का संधि-स्थान, सीमांतोनयन।

सिमटना–कि. अ. दे. (सं. समित+ना हि.) संकुचित या इकट्ठा होना, सिकुड़ना, निबटना, पूरा लज्जित होना, बटुरना, सहमना, शिकन या सिलवट पड़ना, क्रम से व्यवस्थित होना, **समिटना**। कि. सं. **सिमटाना,** प्रे. रूप–**सिमटवाना**।

सिमर–संज्ञा, पु. दे. (सं. शाल्मली) सिमर बृक्ष विशेष। "

सिमरन–संज्ञा, पु. दे. (सं. स्मरण) स्मरण, याद, सुमिरन।

सिमरना†–संज्ञा, पु. दे. (सं. स्मरण) स्मरण, याद, ध्यान, सुमिरना।

सिमाना†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सीमांत*) सिवाना, सीमा का चिह्न, हदबंदी। *‡क्रि स. दे. (हि. *सिलाना*) सिलाना।

सिमिटना, सिमटना*‡–क्रि. अ. दे. (हि. *सिमटना*) सिमटना, इकट्ठा होना, **समिटना** (दे.)।

सिमृति*‡–संज्ञा स्त्री. दे. (सं. स्मृति) स्मृति, सुधि, याद सुमिरण, **स्मरण**।

सिमेटना*‡–कि. स. दे. (हि. समेटना) समेटना, इकट्ठा करना, लपेटना, बटोरना, तह करना।

सिमूत–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) दिशा।

सिय–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. सीता) सीताजी, जानकीजी।

सियना*–कि. अ. दे. (सं. सृजन) उत्पन्न करना, रचना, बनाना। क्रि. सं. दे. (हि. सीना) सीना, **सिउना, सिवना, सिअना** (दे.)।

सियरा*–वि. दे. (सं. शीतल)शीतल, ठंढा, कच्चा। स्त्री. सियरी।"

सियराई*–संज्ञा स्त्री. दे. (हि. *सियरा*) शीतलता।"

सियराना*–क्रि. अ. दे. (हि. *सियरा* ना प्रत्य.) शीतल या ठंडा होना, जुड़ाना, जीतना समाप्त होना।"

सिया–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. सीता) सीताजी, जानकीजी।।" सा. भू. क्रि. स. (हि. सियना) सिला हुआ।

सिनाना–वि. दे. (सं. *सज्ञान*) **सयाना** (दे.) चतुर, प्रबीणा, निपुण, दक्ष अभिज्ञ। क्रि. ल. दे. (हि. *सिलाना*) सिलाना,

सियाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सीना*) सिलाई, सीना, सीने का काम या मज़दूरी।

सियापा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. सियाहपोश) कई एक स्त्रियों का किसी की मृत्यु पर मिल कर शोक सूचनार्थ रोना।

सियार-सियाल–संज्ञा, पु. दे. (सं. श्रृगाल) बंदुक, श्रृगाल, गीदड़, स्यार। स्त्री. **सियारी, सियारिन**।

सियाला–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शीत काल*) शीतकाल, जाड़े की ऋतु।

सियासत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शासन, व्यवस्था, हुकूमत, राजनीति (अं.) पॉलिटिक्स।

सियाह–वि. दे. (फ़ा. *स्याह*) काला, स्याह, गहरे नीले रंग का।

सियाहा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (फ़ा. *स्याह+गोश)* बन–विलार, काले कानो काली जंगली बिल्ली।

सियाहा–संज्ञा, पु. (फ़ा.)स्याहा (दे.)। आय-व्यय की बही, रोज़नामचा, सरकारी खज़ाने की ज़मीदारों से प्राप्त मालगुज़ारी की बही या रजिस्टर।

सियाही–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *स्याही)* स्याही, रोशनायी, मसि, कालिमा।

सिर–संज्ञा, पु. दे. (सं. शिरस्) खोपड़ी, मूँह, कपाल, सर, देह का सबसे ऊपरी और अगला गोल तल या कुछ लंबा सा वह भाग जिसमें नाक, कान, आँख आदि हैं। मु. **सिर आँखों पर होना**–हर्ष-पूर्वक स्वीकार होना, माननीय होना। **सिर आँखों पर बैठाना** (लेना)–अत्यंत आदर-सत्कार या प्रेम करना। **सिर पर आना (भूतादि का)**–आवेश होना, देवी, देव (या भूतादि) का प्रभाव होना, खेलना। **सिर उठना**–विरोध का साहस होना, उपद्रव करने का दम होना। **सिर उठाना**–विरोध में खड़ा होना या सासना करना, प्रतिष्ठा से खड़ा होना। उपद्रव या ऊधम मचाना, सामने मुँह करना, लज्जित न होना। (अपना या और का) **सिर ऊँचा करना** (होना)–प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना, सम्मान देना (होना), प्रतिष्ठा का मान मर्यादा बढ़ाना (बढ़ना) साहस या सामना करना (होना)। सिर करना–स्त्रियां के बाल सँवारना, वेणी बनाना, चोटी गूँघना। **सिर के बल जाना**–किसी के समीप अति आदर से जाना। **सिर (खोपड़ी) खाली करना**–व्यर्थ बहुत बकवाद करना, माथा पच्ची करना, सोच-विचार में हैरान होना, सिर खपाना। **सिर (खोपड़ी) खाना**–बकवाद करके जी उबाना। **सिर(खोपड़ी) खपाना**–सोचने-विचारने में हैरान-परेशान होना, बहुत बकना, कार्य में व्यस्त होना। **सिर खप-सिर-खपा**–वि (देव) मनचला पुरुष, अपनी टेक पर अटल। **सिर घूमना**–सिर में दर्द होना, घबराहट या मोह होना, बेहोशी होना। **सिर चकराना**–दिमाग का चक्कर करना, सिर घूमना। **सिर पर चढ़ना**–मुँह लगना। **किसी के सिर (पर) चढ़ना**–बहुत मुँह लगना, (भूतादि का) आवेश आना। **सिर चढ़ाना**–पुज्य भाव दिखाना, बहुत खातिर करना, श्रद्धा-प्रेम से माथे से लगाना। **सिर पर लेना**–बहुत बड़ा देना, मुँह लगाना, सिर दर्द पैदा करना। **सिर (शीश) झुकाना, सिर नवाना**–सादर प्रणम-नमस्कार करना, लज्जा से गरदन नीची करना। **सिर देना**–प्राण निछावर करना, जान देना, मन लगाना, दिमाग लगाना, प्रणाम करना। **सिर धरना**–सादर अंगीकार या स्वीकार करना। **(सिर-माथे लेना) सिर घूमना**–शोक था पश्चाताप से सिर पीटना, पछिताना। **सिर नीचा करना**(होना–शर्माना, लज्जा से सिर झुकाना (झुकाना), गर्व चूर करना (होना)। **सिर पटकना**–सिर घुमना, सिर फोड़ना, बहुत परिश्रम का शोक करना, पछताना, हाथ मलना। **सिर पर पाँव रखना**–बहुत जल्द भागना, हवा होना। **सिर पर पड़ना**–ज़िम्मे पड़ना, अपने ऊपर गुज़रना या घटित होना। **सिर पर खून चढ़ना या सवार होना**–जान या प्राण लेने पर उतारू होना, हत्या के कारण उन्मत होना, आपे मे न रहना। **(किसी के) सिर चढ़ना**–भूतादि का आवेश आना, मुँह लगाना। **सिर पर चढ़ कर बोलना**–पूरा प्रभाव प्रगट करना। **सिर पर नाचना (खेलना)** (मृत्यु आदि–अति संनिकट होना। **सिर पर होना** (आना)–थोड़े ही दिन रहा जाना, बहुत निकट होना। **सिर पड़ना**–पीछे पड़ना, ज़िम्मे पड़ना, उत्तरदायित्व या भार ऊपर दिया जाना, ऊपर आ पड़ना या घटित होना, हिस्से में आना, पीछे या गले पड़ना। **सिर पर** (आ) **पड़ना**–ऊपर आ पड़ना, या घटित होना, गुजरना, जिम्में या पढ़ना ऊपर भार आना। **(किसी का) सिर पिटना**–(किसी के) मती पड़ना या जाना। **सिर फिरना**–सिर घूमना या चकराना, पागल होना, उन्माद होना। **सिर मारना**–समझाते-समझाते या सोचने विचारने में हैरान या परेशान होना, सिर कपाना। **सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना**–प्रारंभ में ही कार्य बिगड़ना, कार्यरंभ में ही बिघ्न पड़ना। **सिर** (पर) **सेहरा होना**–किसी कार्य का श्रेष्ट प्राप्त दोना, बाहवाही मिलना। **सिर से पैर तक (सरापा)**–आदि से अंत तक, अथ से इति तक सर्बांग में, आद्योपान्त, पूर्णाकथा। **सिर पर आना**–ऊपर आ जाना, अति निकट आना (विपत्ति आदि)। **सिर से पैर तक आग लग जाना**–अत्यंत क्रोध आना। **सिर से क़फ़न बाँधना**–मरने को तैयार होना।

सिर से खेल जाना–प्राण दे देना। **सिर पर सींग होना**–कोई विशेषता होना। **सिर पर सवार रहना (होना)**–सदा उद्यत या पास रहना, देख-रेख करते रहना। **सिर होना**–गले पड़ना, पीछे पड़ना, पीछा न छोड़ना, किसी बात का हठ करके वार-बार तंग करना, झगड़ा करना, उलझ पड़ना। **किसी बात के सिर होना**–समझ या ताड़ लेना। **सिर के बाल सफ़ेद होना**–बृद्धावस्था आना, खूव अनुभव होना।

सिरकटा–वि. यौ. (हि.) जिसका सिर कट गया हो, दूसरों का अहित करने वाला। स्त्री. **सिरकटी।**

सिरका–संज्ञा, पु. (फ़ा.) धूप में रख कर खट्टा किया गया ईख आदि का रस।

सिर काटना–क्रि. स. यौ. (हि.) मूँड़ काटना, हानि पहुँचाना।

सिर काढ़ना–क्रि. स. यो. (हि.) प्रसिद्ध होना, प्रस्तुत या उद्यत होना।

सिरकी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सरकंडा*) धूप और वर्षा से रक्षा के लिये छतों, गाड़ियों आदि पर लगाने की सरकंडे की टट्टि, सरई, सरकंडा।

सिरखपी– संज्ञा, स्त्री. यो. (दे.) परिश्रम, हैरानी, परेशानी, जोखिम।

सिरगा–संज्ञा, पु. (दे.) घोड़े की एक जाति।

सिरचंद–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) हाथी के सिर का अर्द्ध चन्द्राकर एक गहना।

सिरजक*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सिरजना*) सृष्टि-कर्ता, बनाने या उत्पन्न करने वाला, रचने वाला।

सिरजनहारा, सिरजनहार*–संज्ञा, पु. *(हि. सिरजना+हार प्रत्य.)* सृष्टि-कर्ता, बनाने या उत्पन्न करने वाला, रचने वाला। **परमेश्वर** ।

सिरजना*–क्रि. स. दे. (सं. सृजन) बनाना, उत्पन्न करना, रचना, सृष्टि करना। क्रि. स. दे. (सं. *संचय*) इकट्ठा या संचय करना, जोड़ना।

सिरजित–वि. दे. (*सं. सर्जित*) रचित, बनाया हुआ, निर्मित।

सिरताज–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(फ़ा. सरताज)* मुकुट, शिरोमणि, सरदार।

सिरतापा–क्रि. वि. दे. *(फ़ा. सर+ता-तक+पा-पैर)* सिर से लेकर पाँव तक, सर्वांग, आद्योपान्त, आदि से अंत तक, सरापा।

सिरवागा–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. शिरखाए)* टोपी, पगड़ी, साफ़ा।

सिरदार*‡–संज्ञा, स्त्री. *(फ़ा. सरदार)* अफ़सर, अमीर। संज्ञा, स्त्री (दे.) **सिरदारी**।

सिरनामा–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(फ़ा. सरनामः)* लिफ़ाफ़े पर लिखा जाने वाला पता, किसी लेखादि का विषय-सूचक वाक्य, सुर्खी, शीर्षक।

सिरनेत्र–संज्ञा, पु. यौ. *(हि. सिर+नेत्र सं.)* टोपी, पगड़ी, साफ़ा, चीरा (प्रान्ती.) क्षत्रियों की एक जाति।

सिर-पाँव–सिर-पाव–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. सिरोपाव) सिर से पाँव तक के पहनने के वस्त्र आदि जो किसी राज-दरवार से सम्मनार्थ किसी को दिये जाते है, खिलअत, सरोपा।

सिरपंच-सिरपेच–संज्ञा, पु. यौ. दे.(फ़ा. सिर+पेचं या पेच हि.) पगड़ी, पगड़ी पर बाँधने का एक गहना।

सिरपोश–संज्ञा, पु. दे. *(फ़ा. सरपोश)* टोपी, टोपा, कुलाह सिर का ढकने वाला।

सिरफूल–संज्ञा पु. दे. यौ. (सं. सिरपुज्य) एक शिरोभूषण, सिर का गहना, **शीशफूल सीरस-फूल**।

सिरफेंट-सिरफेंटा–संज्ञा, पु. (हि.) साफ़ा, सिरबंद।

सिरफोड़ौवल–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) झगड़ा, लड़ाई, मार-पीट।

सिरमबंदी–संज्ञा, पु. दे. *(फ़ा. सरबंदी)* साफ़ा, सिरफेंटा, सिरफेंट।

सिरमबंदी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(फ़ा. सरबंदी)* मस्तक पर पहनने का एक गहना।

सिरमनि*–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. शिरोमणि)* शिरोभूषण सिरमौरि, शिरोरिण। वि. यौ. (हि.) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।

सिरमौर-सिरमौरि–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) सिरमुकुट, शिरोमणि सिरताज।

सिररुह–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. शिरोरुह)* सिर के बाल।

सिरस-सिरिस–संज्ञा, पु. दे.(सं. शिरीष) शीशम जैसा अति मृदु पुष्प वाला एक पेड़।

सिरसींगा–वि. दे. यौ. (सं. शिरश्रृ) झगड़ालू, बखेड़िया लड़ाका, फ़सादी।

सिरहना, सिरहाना–*संज्ञा पु. दे. (सं. शिरसाधान)* पलंग,

खाट या चारपाई में सिर की ओर का खेड, लेटते समय सिर के नीचे रखने का तकिया या वस्त्र, **उसीस** (अं.)।''

सिरा–संज्ञा पु. दे. *(हि. सिर)* आरंभ का भाग, ऊपरी या आगे का भाग, छोर, अंतिम भाग, अनी, नोक, किनारा, लम्बाई का अंत। **मु.सिरे का**–सर्व प्रथम, अब्वल दर्जे का। (परले या पल्ले) **सिर का**–सबसे अधिक, अब्वल दर्जे का। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. शिरा) रक्तवाही नाड़ी, सिचाई की नाली नस, रंग।''

सिराजी–संज्ञा, पु. दे. *(फ़ा. शीराज=नगर)* शीराज का घोड़ा, कबूतर या शराब, शीराज का निवासी।

सिरात–क्रि. अ. दे. *(हि. सीराना)* शीतल, ठंडा, शीत, जुड़ बीतना।

सिराना *‡–कि. अ. दे.(हि. सीरा+ना) शीतल, शीत या ठंडा होना, जुड़ाना। **सेराना** (आ.), सुस्त या मंद पड़ना, निराश या हतोत्साह होना, समाप्त या ख़तम होना, नाश होना या मिटना, बीत या गुज़र जाना, काम से छुट्टी मिलना, दूर होना। क्रि. स. (दे.) शीतल या ठंडा करना, विताना या समाप्त करना, सियराना (व.)।

सिरावना*‡–क्रि. स. दे. *(हि. सिराना)* सिराना, शीतल या ठंढा करना, सेराना, सेरवाना (आ.), बिताना, गुज़ारना, समाप्त करना, बहा या फेंक देना, डुबो देना।

सिरिश्ता–संज्ञा, पु. दे. *(फ़ा. सरिश्ता)* महकमा, विभाग।

सिरिश्तेदार–संज्ञा, पु. (फ़ा.) मुक़दमे के कागज आदि का रखने वाला कचहरी का कर्मचारी, **सरिश्तेदार** (दे.)। संज्ञा स्त्री. **सरिश्तेदारी**।

सिरी*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. श्री) लक्ष्मी, शोभा, आभा, कांति, श्री, रोचना, रोली, मस्तक या गले का एक गहना, **कंठ-सिरा**। वि. (दे.) **सिड़ी** (हि.) पागल।

सिरीपाव-सिरापाव–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. सिर पाँव)* सिर से लेकर पाँव तक के पहनने का सामान, पगड़ी से लेकर जूता तक पहनावा जो किसी राजा के यहाँ से किसी को दिया जावे, ख़िलअत, **सिरोपाँव, सरोपा**।

सिरोमनि–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. शिरोमणि) शिरोमणि, चुड़ामणि, शिरोभूषण, सिरताज, सिरमौर, सर्वश्रेष्ठ।

सिरोरुह–संज्ञा, पु. दे. (सं. शिरोरुह) शिरोरुह, बाल।

सिरोही–संज्ञा स्त्री. (दे.) एक काली चिड़िया या पक्षी विशेष। संज्ञा, पु. राजस्थान का एक नगर जहाँ की तलवार अच्छी होती है, तलवार, **लाठी** (आ.)।

सिल–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. शिला) शिला, पत्थर की चट्टान, मसाला आदि पीसने की पत्थर की पटिया, **सिलौटी** (दे.)। संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिल)* सीला, शिलोंछ। संज्ञा, पु. (अ.) उप रोग, राजयक्ष्मा।

सिलक–संज्ञा, स्त्री. (दे.) पंक्ति पाँति, पंगति, क़तार, लड़ी। संज्ञा, पु. धागा संज्ञा, पु. (अ. सिल्क) रेशम, रेशमी वस्त्र, **सिलिक** (दे.)।

सिलकी–संज्ञा, पु. (दे.) बेल।

सिलखड़ी-सिलखरी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. सिल+खड़िया) एक नरम चिकना पत्थर, खड़िया मिट्टी, बुद्धी, **सेलखरी** (आ.)।

सिलगना–क्रि. अ. दे. *(हि. सुलगना)* आगा का सुलगना, प्रज्वलित होना।

सिलप–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिल्प)* शिल्प, कारीगरी।

सिलपट– वि. दे. (सं. शिलापट) चौरस, समतल, साफ़, वरावर, हमवार, सत्यानाश, चौपट।

सिलवट–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिलापट्ट)* सिकुड़न, शिकन, शिलापट, सिल, सिलौटी।

सिलबट्टा–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) सिल और लोढ़ा।

सिलबाई–संज्ञा स्त्री. दे. *(हि. सिलवाना)* सिलाने की मज़दूरी, **सिलाई**।

सिलवाना– क्रि. स. दे. *(हि. सिलाना)* सीने का कार्य दूसरे से कराना, सिलाना, सिवाना (आ.)।

सिलसिला–संज्ञा, पु. (अ.) क्रम, श्रेणी, पंक्ति, परंपरा, बँधा हुआ। तार, लड़ी, जंजीर, शृंखला तरकीब, व्यवस्था। वि. दे. *(सं. सिक्त)* चिकना, गीला, भीगा और चिकना जिस पर पैर फिसल जावे। क्रि. अ. (दे.) **सिलसिलाना**।

सिलसिलेवार–वि. दे. (अ.+फ़ा.) तरतीबवार, क्रमानुसार, यथाक्रम।

सिलह–संज्ञा, पु. दे. *(अ. सिलाह)* हथियार, शस्त्र।

सिलहख़ाना–संज्ञा, पु. यौ. *(अ. सिलाह+ख़ाना फ़ा.)* शस्त्रागार, हथियार रखने का स्थान।

सिलहारा–साा, पु. दे. (सं. शिलकार) सोला या खेत मे गिरा हुआ अन्न बीनने वाला।

सिलहिला–वि. दे. *(हि. सीड़+हीला–कीचड़) कीचड़ के कारण ऐसा चिकना कि पैर फिसले। स्त्री.* **सिलहिली।**

सिला–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिला)* पत्थर की शिला या चट्टान। संज्ञा, पु. दे. (सं. शिल) कटे खेत में से बिना हुआ अन्न, कटे खेत में गिरे दाने वीनना, शीलवृत्ति। संज्ञा, पु. दे. *(अ. सिलहः)* खड़खा एमश।

सिलाई–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सीदा+आई+प्रत्य.)* सोने का काम या ढंग, सीने की मजदूरी, सीवन, टाँका, सिलाई (आ.)।

सिलाजीत–संज्ञा, पु. दे. (सं. शिला जतु) शिलाजतु, एक पौष्टिक औषधि।

सिलाना–क्रि स. (हि. सीना का द्वि. प्रे. रूप) सीने का कार्य दूसरे से कराना।

सिलावना*–क्रि. स. दे. (हि. सिराना) सिलाना। क्रि. अ. *(हि. सील)* गीला होना, नम होना, सीलन आना।

सिलारस–संज्ञा, पु. दे. (सं. शिलारस) सिल्हक वृक्ष, उसका गोंद, सिलाजीत।

सिलावट–संज्ञा, पु. दे. (सं. शिलापट्ट) संग–तराश, पत्थर गढ़ने वाला।

सिलाह–संज्ञा, पु. (अ.) कवच, अस्त्र, शस्त्र, हथियार, जिरह–बकतर।

सिलाहबंद–वि. (अ.+फ़ा.) हथियार-बंद, सशस्त्र, शस्त्रास्त्र-सुसज्जित।

सिलाहर–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सिलहार)* सिलहार, सिला बीनने वाला।

सिलाही–संज्ञा पु. दे. *(अ. सिलाह)* सिपाही, सैनिक, हथियार वाला।

सिली–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिला)* शिला, पथरी, सान।

सिलीमुख–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिलीमुख)* शिलीमुख, वाण, तीर, शर, भ्रमर, भौंरा।

सिलोच्च-सिलोच्चय–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिलोच, सिलोचय)* एक पहाड़।

सिलौट-सिलौटा–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिला+बट्टा हि.)* सिल, मसाला पीसने की सिल तथा बट्टा। स्त्री. **सिलौटी।**

सिल्ला–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिल)* खेत का अनाज का काट लेने पर जो दाने खेत में पड़े रहते हैं, **सीला** (आ.)

सिल्ली–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिला)* सान, हथियारों की धार पैनी करने का पत्थर, अस्तुरा आदि पैदा करने की पतली पटिया।

सिल्हक–संज्ञा, पु. (सं.) सिलारस।

सिव*‡–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिव)* शिव, शंकर, शिवाजी। स्त्रै. **सिवा।**

सिवई–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. समिता)* सेमँई (दे.) गेहूँ के गुँधे आटे या मैदा के सूत जैसे तार जिनके सूखे लच्छे दूध में पका कर चीनी के साथ खाये जाते हैं, सिवैंया, सेवँई (आ.)।

सिवता–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिवता)* शिवता, शिवत्व।

सिवा–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिवा)* शिव, पार्वती, दुर्गा जी। अव्य. (अ.) अलावा, अतिरिक्त, **सिवाय** (दे.)। वि. अधिक, ज़्यादा, स्फुट, फालतु।

सिवाइ–अव्य. दे. *(अ. सिवा)* अतिरिक्त, अलावा, अधिक, **सेवाय** (दे.)।

सिवाई–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक तरह की मिट्टी, सिलाई (दे. सिवाना)।

सिवन-सिवाना–संज्ञा पु. दे. *(सं. सीमांत)* सीमांत, सीमा, हद।

सिवाय–क्रि. वि. दे. *(अ. सिवा)* बाद देकर, अतिरिक्त, अलाव, छोड़ कर। वि. अधिक, ज्यादा, स्फुट, ऊपरी।

सिवार-सिवाल–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शैबाल)* हरे रंग का लच्छे के रूप में बड़े बालों की सी जल की काई या घास, **सेवार** (आ.)।

सिवाला–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. शिवालय)* शिवालय, शिव-मंदिर।

सिविका–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिविर)* शिविर, सेना का पड़ाव, तंबू-डेरा।

सिप, सिप्य–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिष्य)* शिष्य, चेला, नानकपंथी, सिक्ख (दे.)।

सिप्ट–संज्ञा, स्त्री. दे. *(फ़ा. शिस्त)* वंसी डोरी। *‡ वि. दे. (सं. शिष्ट) शिष्ट, श्रेष्ठ, ज्ञानी, योग्य। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **सिप्टता।**

सिसकना–क्रि. अ. (अनु.) रोने में रुक-रुक कर साँस लेना,

भीतर ही भीतर रोना, फूट-फूट कर रोना, घबराना, तरसना, मृत्यु के निकट उलटी साँस लेना, दिल धड़कना।

सिसकाना–क्रि अ. *(अनु. सी सी+करना)* मुँह से सीटी सा शब्द निकालना, अति पीड़ा या हर्ष के कारण मुँह से स-शब्द निकलना, साँस खींचना, सीत्कार करना, सुसकारना।

सिसकारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सिस-कारना)* सिसकाने का शब्द, सीटी का सा शब्द, पीड़ा और हर्ष से हुँह से सी-सी का शब्द, सीत्कार।

सिसकी–संज्ञा, स्त्री॰ (अनु.) व्यक्त रूप से न रोने का शब्द, सीत्कार, सिकारी।

सिसिर–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शिशिर)* एक ऋतु (फागुन) जाड़ा।

सिसोदिया-सिसौदिया–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सीसौं-सिरभी+ दिया या सिसोद। एक स्थान)* गहलौत राजपूतों की एक शाखा। सीसोदा का राजपूत, राणा प्रताप का परिवार।

सिहरन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शीत)* कंपन, घबराहट।

सिहरना†–क्रि. अ. दे. (स. *सीत+ना)* जाड़े के मारे काँपना, घबराना, डरना, काँपना।

सिहरा–संज्ञा, पु. (अ.) फूलों से बना मुख का आवरण जो दूल्हा की पगड़ी से नीचे को लटका दिया जाता है, **सेहरा** (दे.)

सिहराना†–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ सिहरना)* जाड़े के मारे काँपना, डराना।

सिहरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सिहरना)* कँपकँपी, सहमना, भय से थर्राना या दहलना, जाड़े का ज्वर, जूड़ी, लोम-हर्षण या रोमों का खड़ा होना।

सिहाना†–क्रि. अ. दे॰ (सं॰ ईर्ष्या) ईर्ष्या करना स्पर्श या डाह करना, लुभाना, ललचाना, मोहित या मुग्ध होना।" क्रि॰ स॰ ईर्ष्या या अभिलाषा की दृष्टि से देखना, ललचाना।

सिहारना–क्रि. स. (दे.) ढूँढना, पता लगाना, खोजना, तलाश करना, खोज लाना, सँभालना, परखना, जाँचना, रक्षित रखना। संज्ञा, पु. (दे.) **सिहार** ।

सिहिटि–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सृष्टि।

सिहुँढ-सिहुँढा– संज्ञा पु. दे. *(हि. सेंहुँड़)* थुहर की जाति का एक काँटेदार पेड़।

सिहोड़-सिहोर-सिहोरा–संज्ञा, पु. (दे.) एक झाड़ीदार पेड़ जिसके दूध के मेल से गाय भैंस का दूध तत्काल जम जाता है।

सींक–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. इर्षीका)* मूँज की जाति की एक घास की तीली, किसी घास का डंठल, शंकु, तिनका, नाक का एक आभूषण, कौल, लौंग।

सींका–संज्ञा, पु. दे *(हि. सींक)* पेड़-पौधों की पतली डाली, जैसे–नीम का सींका, पतली उपशाखा या टहनी। संज्ञा, पु. दे. *(हि. किहर)* **सिकहर, छींका** (दे.)।

सींकिया–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सींक)* एक धारीदार रंगीन कपड़ा। वि. सींक सा पतला।

सींग–संज्ञा, पु. दे. (सं. शृंग) शृंग, विषाण, कुछ खुर वाले पशुओं के सिरों के दोनों ओर उठी हुई नोकदार हड्डियाँ। **मु॰ (किसी के सिर पर) सींग होना**–कोई विशेषता होना, (व्यंग्य)। **सींग काटकर बछड़ों में मिलना**–बूढ़े होकर भी बच्चों में मिलना। **कहीं सींग समाना**–कहीं जगह या ठिकाना मिलना। फूँक कर बजाने का सींग से बना एक बाजा, सिंगी।

सींगरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) मोंगरे या लोबिया आदि की फली, बबूर आदि के पेड़ों की फली, **सिंगरी** आ.),

सींगी–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. सींग) **सिंगी,** हिरन के सींग का बाजा, वह सींग जिससे देहाती जर्राह शरीर से बुरा लोहू निकाल लेते हैं, एक मछली। **मु॰ सिंगी लगाना**–सिंगी से रक्त चूसना।

सींचना– क्रि॰ स॰ दे॰ *(सं. सिंचन)* पानी देना, भिगोना, आबपाशी करना, छिड़कना, तर करना। संज्ञा, स्त्री. (हि.) **सिंचाई।**

सींवँ-सीवाँ-सींव*–संज्ञा, पु. दे. (*सं. सीमा)* सीमा, मर्यादा, हद, **सींउ** (आ.)। **सींव चरना काँड़ना**–अधिकार दिखाना, ज़बरदस्ती करना।

सी–वि स्त्री॰ दे॰ *(सं. सम)* तुल्य, समान, बराबर, सादृश जैसे-छोटी सी।

मु॰ अपनी सी–यथाशक्ति, अपने भरसक, जहाँ तक हो सके वहाँ तक। संज्ञा, स्त्री॰ (अनु.) सीत्कार, सिसकारी।

सीउ-सीव–संज्ञा, पु. दे. (सं. शिव) शिव, शंकर, ब्रह्म। संज्ञा, पु. दे. (सं. शीत) शीत, जाड़ा, ठंढ।

सीकचा-सीखचा–संज्ञा, पु. दे. *(फ़ा. सीखनः)* शलका छड़।

सीकर–संज्ञा पु. (सं.) पानी की बूँद, छींटा, जल-कण, पसीना या स्वेद-कण। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. शृंखला) जंज़ीर।

सीकल–संज्ञा, पु. दे. *(अ. सैकल)* हथियारों के मोरचा छुड़ाने का कार्य। संज्ञा, पु. (दे.) पका और पेड़ से गिरा आम का फल, टपका (प्रान्ती.)। **मु. सीकल हो जाना**–अत्यंत दुर्बल या कमज़ोर हो जाना।

सोकस–संज्ञा, पु. (दे.) अनुपजाऊ या ऊपर भूमि।

साकुर–संज्ञा, प. दे. *(सं. शुक)* गेहूँ, जौ, धान आदि की बाली के ऊपरी कढ़े सूत शुक।

सीख–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिक्षा)* सिखा-वन शिक्षा, उपदेश, तालीम, जो बात सिखाई जाये, परामर्ष, मंत्रणा, सलाह, **सिख** (दे.)।

सीख़–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) लोहे की पतली और लंबी छड़, तीली, शलाका।

सीखचा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) लोहे की पतली लम्बी छड़, सीकचा, शलाका।

सीखन*‡–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शिक्षण)* शिक्षा, उपदेश, सीख, **सिखावन।**

सीखना–क्रि. स. दे. *(सं. शिक्षण)* शिक्षा लेना, उपदेश सुनाना, किसी कार्य के करने की रीति आदि जानना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना। क्रि. स.–**सिखाना, सिखावना,** प्रे. रूप **सिखवाना।**

सीग़ा–संज्ञा, पु. (अ.) महकमा, विभाग।

सीज-सीझ–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सिद्धि)* सीझने की क्रिया या भाव, गरमी से पिघलाहट या गलाव।

सीजना-सीझना–क्रि. अ. दे. *(सं. सिद्ध)* गरमी से गलना, चुरना, पकना, गरमी से नर्म होना, रस या पानी से भीग कर तर या नर्म होना, सूखे चमड़े का मसाले आदि से नरम होना, कलेश या कष्ट सहना, तपस्या करना, मिलने के योग्य होना।

सीटना–क्रि. स. (अनु.) शेख़ या डींग मारना, बढ़ बढ़कर बातें करना।

सीटपटांग–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि.) ऊटपटाँग, गर्व पूर्ण बात।

सीटी-सीटी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(स. शीतृ)* संकुचित ओठों से नीचे की ओर आघात के साथ वायु फेंकने से बाजे का सा शब्द करना, फूँकने से ऐसा ही शब्द करने वाला, बाजे आदि से निकला ऐसा ही शब्द।

सीठना–संज्ञा, पु. दे. *(सं. अशिष्ठ)* ब्याह आदि में गाने की अश्लील गाड़ी के गीत, सीटनी।

सीठनी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सीठना)* ब्याह आदि में गाने के गाली, सीठना।

सीठा–वि. दे. (सं. शिष्ट) नीरस, फीका।

सीठी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. शिष्ट) फल-पत्ते आदि का रस निकल जाने पर सार-हीन बची वस्तु, निकम्मी चीज़, लगड़ फीकी या बिरस वस्तु, खूद (प्रान्ती.)।

सीड़–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शीत)* आर्द्रता, नमी, तरी, सीलन।

सीढ़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. श्रेणी) ऊँचे स्थान पर चढ़ने को पैर रखने को एक के ऊपर एक बना स्थान-नसेनी, पैड़ी, (प्रान्ती), ज़ीना, आगे बढ़ने की परंपरा **सिड़ढी, सिढ़या।**

सीत*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं.) शीत, जाड़ा, ठंढक, शीतलता।

सीतलपाटी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. *(सं. शीतल+ हि. पाटी)* एक भाँति की उत्तम चठाई।

सीतला–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शीतला)* एक रोग, चेचक, एक देवी।

सीवांसु–संज्ञा, पु. यौ. (दे.) शीतांशु चन्द्रमा।

सीता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूमि जोतने में हल की फाल से बनी लकीर, कुड, कूडा (दे.) मिथिला-नरेश जनक की कन्या जानकी और श्रीराम की पत्नी, वैदेही, सीप, **छोटा** (आ.), र, त, भ, अ, और र (तथा) वाला एक अधिक छंद या सुत (पिं.) राजा की निज की भूमि, खेती, मदिरा।

सीताध्यक्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सोर या निज की भूमि में खेती आदि का प्रबन्ध करने वाला, राजा का राज-कर्मचारी।

सीतानाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्री रामचंद्रजी, **सीता-नायक।**

सीतापति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) श्री रामचंद्रजी।

सीताफल–संज्ञा, पु. (सं.) शरीफा, कुम्हड़ा।

सीत्कार–संज्ञा, पु. (सं.) पीडा या आनंद से मुँह से निकलने वाला सी-सी शब्द, सिसकारी।

सीथ–संज्ञा, पु. दे. *(सं. सिकथ)* भात या पके चावल पके

अनाज का दाना।

सीद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्याज खाना, सूद-खोरी, कुसीद।

सीदना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(सं॰ सीदति)* दुख पाना, कष्ट उठाना।

सीध–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सीधा)* सम्मुख की लंबाई, सरलता, सरल, लक्षय निशाना। वि॰ (दे॰) सीधा, सादा, सरल।

सीधा–वि॰ दे॰ *(सं॰ शुद्ध)* ऋजु सरल अवक्र, जो मुड़ा या झुका न हो, जो वक्र या टेढ़ा न हो, ठीक, लक्ष्य की ओर, सरल स्वभाव वाला, भोला-भाला, सुशील, शांत। **स्त्री सीधी।** संज्ञा, स्त्री॰ **सिधाई। मु॰ सीधी तरह**–अच्छे या शिष्ट व्यवहार से, आसानी से। गौ॰ **सीधासादा**–भोलाभाला। **मु॰ किसी का सीधा करना**–सज़ा या उचित दंड देकर ठीक करना। (काम) **सीधा करना**–ठीक साधानों से कार्य का ठीक करना। सहज, आसान, सुकर, दाहिना, सीधा हाथ करना। **सीधे रास्ते चलना (जाना)**–ठीक व्यवहाराचार करना। क्रि॰ वि॰ सम्मुख, ठीक सामने की ओर। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ प्रसिद्ध) बिना पका अन्न।

सीधापन–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ सीधा पन प्रत्य॰)* सिधाई, सीधा होने का भाव, सरलता, ऋजुता।

सीधे–क्रि॰ वि॰ दे॰ *(हि॰ सीधा)* बिना कहीं रुके या मुड़े, बराबर, सामने, लगातार सम्मुख की दिशा में, सम्मुख, नरमी से, शिष्ट व्यवहार से।

सीना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ सीवन) कपड़े या चमड़े आदि के दो टुकड़ों का सुई-धागा के द्वारा आपस में मिलाना टाँकना, टाँका मारना। यौ॰ **सीनाजोरी**–ढ़िठाई ज़्यादती, विरोध, हुज्जत। **मु॰ सीनाज़ोरी करना**–ज़बरदस्ती या मुकाविला करना। लो॰–"चोरी और सीनाज़ोरी"। संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ सीनः) छाती, ब्रक्षस्थल।

सीनाबंद–संज्ञा, पु॰ (फा॰) आँगी, चोली, अँगिया।

सीप–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक्ति)* सीपी, सितुही, घोंघे या शंख की जाति का एक कड़े अवरण में रहने वाला जल का कीड़ा इसका सफ़ेद चमकीला और कड़ा आवरण या सूती, जिसके बट बनते हैं, तालाब आदि की सीपी का संपुट।

सीपज–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ शुक्तिज)* मोती।

सीपति–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ श्रीपति)* श्रीपति विष्णु।

सीपर–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(फ़ा॰ सिपर)* ढाल।

सीपसुत–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक्तिसुत)* मोती, **सीपात्मज, सीपतनय।**

सीपिज–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक्तिज)* मोती।

सीपी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ शुक्ति)* सीप।

सीवी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अनु॰ सीसी) सीत्कार, सिसकारी सी-सी शब्द।

सीमंत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्त्रियों की माँग, हड्डियो का जोड़ या संधि-स्थान, सीमंतीबदन संस्कार, (प्रा॰) 'चौक' का उत्सव प्रथम संतान के पैदा होने से पूर्व होने वाला एक संस्कार।

सीमंतिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नारी, स्त्री प्रथम कन्या।

सीमंती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नारी, स्त्री।

सीमंतोन्नयन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) द्विजों के 10 संस्कारों में से तीसरा संस्कार जो प्रथम गर्भाधान से चौथे, छठवें या आठवें मास में होता है।

सीम–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सीमा) सीमा, हद। **सींव, सींउ** (दे॰)। **मु॰ सीम चरना (काँडना)**–दबाना, ज़बरदस्ती करना, अधिकार या प्रभुत्व जताना।

सीमांत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सीमा का अंत-स्थान, सरहद। यौ॰ **सोमांत-प्रदेश**–सीमा पर प्रदेश या प्रान्त, भारत की पश्चिमोत्तर सीमा का एक प्रान्त, पश्चिमेत्तर प्रान्त।

सीमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सीम, सीवाँ, हद, मर्यादा, किसी वस्तु या प्रदेश के विस्तार का अंतिम स्थान, सरहद, कोटि, अंतिम स्थान अंत, माँग। **मु॰ सीमा से बाहर जाना (लाँघना, उल्लंघन करना)**–उचित से अधिक बढ़ जाना। **सीमा में (के अन्दर) रहना**–अपनी मर्यादा के अन्दर रहना।

सामाब–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) पारा।

सीमाबद्ध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हद या सीमा से घिरा, मर्यादा के भीतर, हद के अंदर। संज्ञा, स्त्री॰ **सीमा-बद्धता।**

सीमोल्लंघन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हद से बाहर चला या फाँद जाना, विजय-यात्रा, सीमातिक्रमणोत्सव, मर्यादा के प्रतिकूल या बाहर काम करना, सीमा का उल्लंघन करना या लाँज करना।

सीय-सीया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सीता) जानकी जी, सीता जी।

सीयन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ सीवन) **सीयन, सिअन, सीवन,**

सिलाई।

सीयरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शीत*) सियरा।

सीर–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य, हल, हल में जोतने के बैल। संज्ञा, स्त्री. *(सं. सीर=हल)* वह भूमि जिसे उसका मालिक या ज़मींदार आप जोतता हो, खुदकाश्त, वह भूमि जिसकी उपज बहुत से साझियों में बँटती हो। संज्ञा, पु. दे. *(सं. शिरा)* रक्त की नाड़ी।* वि. दे. *(सं. शीतल)* शीतल, ठंडा।

सीरक*–संज्ञा, पु. *(हि. सीरा)* ठंडा करने वाला

सीरख*–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शीर्ष)* **सीरप,** शीर्ष, शिर, चोटी ऊपरी भाग।

सीरध्वज–संज्ञा, पु.(सं.) राजा जनक।

सीरनी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(फ़ा. शिरोनी)* **मिठाई, सिन्नी, सिरनी (आ.)।**

सीरा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. शीर) पका कर गाढ़ा किया चीनी का रस, चाशनी, हलवा, मोहन-भोग।*‡ वि. दे. (सं. शीतल) स्त्री. शीतल, ठंढ़ा। स्त्री. सीरी।

सील–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शीतल)* **सीढ़,** सीड़, नमी, तरी, गीलापन, भूमि की आर्द्रता।*‡ संज्ञा, पु. दे. (सं. शील) शील, अच्छा स्वभाव, सौजन्य।

सीलन–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शीतल)* सील, नमी, तरी।

सीला–संज्ञा, स्त्री. पु. दे. *(सं. शील)* खेत की फसल के कट जाने पर भूमि पर गिरे दाने जिन्हें कंगारू बीन लेते हैं। इन दानों से निर्वाह करने की मुनियों की एक वृत्ति। वि. दे. *(सं. शीतल)* गीला, सीड़। स्त्री. **सीली।**

सीवन– संज्ञा, पु. स्त्री. (सं.) सियनि, सिलाई, सीने का कार्य, सीने से पड़ी लकीर, संधि, दरार, दराज।

सीवना–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सिवाना)* सिवाना। क्रि. स. (दे.) सीना, सिलाना।

सीस–संज्ञा, पु. दे. *(सं. शीर्ष)* सिर, मुँड, शीश।

सीसक–संज्ञा, पु. (सं.)एक धातु, सीसा।

सीसताज–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. सीस+ताज फ़ा.)* कुलहा, शिकारी पशुओं की टोपी, जो शिकार के समय खोली जाती है।

सीसत्रान–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. शिरत्राण)* लोहे का टोप या टोपी, शीशत्राण।

सीसफूल–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. शीर्षपुष्प) सिर पर का एक गहना या भूषण, **शीश-फूल।**

सीस-महल–संज्ञा, पु. यौ. *(फ़ा. शीश+महल अ.)* वह महल जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों, **शीशमहल।**

सीसी–संज्ञा, पु. दे. (सं. सीसक) एक धातु। *‡ संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. शीश) शीशा, आईना, आरसी, काँच।

सीसा–संज्ञा, स्त्री. (अनु.) सीदा, शीत या हर्ष में मुख से निकला हुआ सी-सी का शब्द , सीत्कार, सिसकारी।। *‡ संज्ञा, स्त्री. दे. *(फ़ा. शीशी)* शीशी, एक भारी धातु दे. सीसी।

सीसौं-सीसौं–संज्ञा, पु. दे. *(फ़ा. शीशम)* शीशम का पेड़।

सीह–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. साधु) गंध, महक, सुगंधि। * संज्ञा, पु. दे. (सं. सिंह) सिंह।

सीहगोस–संज्ञा, पु. यौ. *(फ़ा. सियाह गोश)* काले कानों वाला एक जंतु।

सुँघनी–संज्ञा, स्त्री. *(हि. सुँघनी,)* नस्य, हुलास, मग्ज़रोशन, तंबाकू का चूर्ण जो सूँघा जाता है।

सुँघाना–क्रि. स. दे. *(हि. सुँघाना)* सुँघावना (दे.), सूँघने की क्रिया कराना, आघ्राण कराना। प्रे. रूप–सुँघवाना।

सुंडभुसुंड–संज्ञा, पु. दे. (सं. शुंढ-मुशुंडि) सुड रूपी अस्त्र वाला हाथी।

सुंडा–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सूँड़)* सुंड़, शुंड (सं.)।

सुंडाल–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सूँड़*) शुंडाल, हाथी।

सुंडी–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सं. शुंडिन्)* हाथी।

सुंद–संज्ञा, पु. (सं.) निसुंद का सुत तथा उपसुंद का भाई एक दैत्य।

सुंदर–वि. (सं.) रूपमान, मनोहर, बढ़िया, अच्छा, मनोरम, खुबसूरत। स्त्री. **सुंदरी।**

सुंदरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सौंदर्य, खूबसूरती, मनोहरता।

सुंदरताई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. सुंदरता) सुंदरता, खूबसूरती।

सुंदरी–संज्ञा स्त्री. (सं.) सुंदर या खूबसूरत स्त्री, त्रिपुर सुंदरी देवी, एक योगिनी, 8 सगण और एक गुरु वर्ण वाला एक सवैया छंद का एक भेद, न, भ, भ, र (गण) वाला एक वर्णिक वृत्त, द्रुतविलंबित। वर्णों का एक वर्णिक छंद, (वृत्त)।

सुँघावट–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सोंधापन।

सुंबा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) स्पंज, इस्पुंज, तोप या बंदूक की गर्म नलिका को ठंडा करने को गीला कपड़ा, पुनारा (आ॰)।

सु–उप॰ (सं॰) शब्दों के पूर्व लगकर, सुंदर अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम आदि का अर्थ देता है, **जैसे**– सुकुल, सुशील। वि॰ बढ़िया सुंदर, अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम, भला, शुभ। अव्य॰ दे॰ *(सं॰ सह)* करण, अपादान और सम्बन्ध कारक का चिह्न। सर्व॰ व॰ *(सं॰ सा)* सो, वह।

सुअट–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक)* शुक, सुग्गा, तोता, सुवा सुगना।

सुअन–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुन)* सुत, पुत्र, बेटा, लड़का सुवन।

सुआ–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक)* सुआ, तोता, सुग्गा।

सुआउ–वि॰ दे॰ *(सं॰ सु+ आयु)* दीर्घजीवी, चिरंजीवी, दीघायु।

सुआन*–संज्ञा, *पु॰* दे॰ *(सं॰ श्वान)* श्वान, कुत्ता, कूकर।

सुआना–क्रि॰ *सं॰ दे॰ (हि॰ सूना)* उत्पन्न या पैदा करना । क्रि॰ सं॰ (दे॰) सुलाना, सोआना (दे॰) सुवाना।

सुआमी*–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ स्वामी)* स्वामी, मालिक, पति, नाम।

सुआरा–संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ सुपकार) भोजन बनाने वाला, रसोइया। (प्रा॰)–होना, बनी हुई चीज का यथेष्ट रूप से इस्तेमाल ही करना।

शुआरव–वि॰ (सं॰) मीठे स्वर से गाने, बोलने या बजाने वाला यौ॰ दे॰ (सुश्रा+रव) तोते का शब्द।

सुआसिनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सुवासिनी) **परोसिन,** ग्राम-कन्या, सौभाग्यवती या सधवा स्त्री जो उसी गाँव में उत्पन्न हुई, सुवासिनि।

सुआहित–संज्ञा पु॰ दे॰(सं॰ सु॰ आहत) तलवार के 32 हाथों में से एक हाथ, सुआहत।

सुई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सुची)* सूत्री, वस्त, सोने की एक बारीक नुकीली छोटी छेददार चीज। **मु॰ सुई की नोक सा**–अति सूक्षम।

सुकंठ–वि॰ (सं॰) वह जिसका गला सुन्दर हो, सुरीला। स्त्री॰ सुकंठी। संज्ञा पु॰ सुग्रीव।

सुक–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक)* शुक, सुगना, तोता, सुग्गा, सुआ, सुवा, शुकदेव।

सुकचाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(हि॰ सकुचाना)* सकुचाना, लज्जित होना, सिकुड़ना।

सुकटना–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक)* शुक, तोता, सुग्गा, सुआ। वि॰ *(दश॰)* दुबला, पतला। स्त्री॰ **सुकटी।**

सुकटा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (म॰ शुक) तोती या सुक को मादा। संज्ञा स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सुकटा)* सूखी मछली। वि॰ (सं॰) सुन्दर कटि वाली, दुबली।

सुकनासा–वि॰ यौ॰ दे॰ *(सं॰ शुक नासिका)* तोते या शुक की चोंच सी सुन्दर नाक वाला।

सुकर–वि॰ (सं॰) सहल, सहज, आसान, सरल, सुसाध्य। विला॰ दुष्कर।

सुकरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सहज में होने का भाव, सुसाध्यता, मनोहरता, सौकर्य, सुन्दरता।

सुकरति–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुकृति)* अच्छा काम, सुकर्म, भलाई।

सुकराना–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(फ़ा॰शुक्रना)* वह धन जो धन्यवाद के रूप में दिया जाय, धन्यवाद, शुकराना (दे॰)।

सुकर्म–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुण्य, धर्म, सत्कर्म, सौभाग्य, अच्छा काम। सुकरम (दे॰)।

सुकर्मी–वि॰ *(सं॰ सुकर्मिन्)* अच्छे काम करने वाला, सदाचारी, धर्मात्मा, धार्मिक।

सुकल–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुकुल)* अच्छे वंश का, खानदानी, शुक, सुन्दर कला। स्त्री॰

सुकला–शुक्ल पक्ष की, सुक्लपक्ष। संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ शुक्त)–उज्ज्वल, निर्दोष, स्वच्छ, शुद्ध, निष्कलंक, निर्मल, साफ़, श्वेत।

सुकवा, सुकुवा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) शुक्र तारा।

सुकवाना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) अचंभे में आना।

सुकवि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सुकवि) श्रेष्ठ या उत्तम कवि, सत्कवि।

सुकाना–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ सुलाना)* सुखाना, सूख जाना।

सुकारज, सुकाज–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुकार्य)* सत्कर्म। अच्छा काम।

सुकाज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्म और अच्छा समय जब खूब अन्न उपजा हो और भाव सस्ता हो। विलो॰ अकाल, दुकाल।

सुकिज, सुकित*–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सुकृति)* शुभकर्म, अच्छा

काम, सुकाज, सुकार्य।

सुकिया, सुकीया*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. स्वकीया) स्वकोया, अपनी स्त्री.।

सुकिरति–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सुकृति सुकीर्ति, सुकीरति (दे.)।

सुकी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शुक)* तोते की मादा, ताती सुग्गी, शुकी।

सुकीउ, सुकीव*–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. स्वकीया)* स्वकीया नायिका, अपनी स्त्री।

सुकीरति–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सुकीर्ति (सं.) सुयश।

सुकुति*–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शुक्ति)* शुक्ति, सीपी, सुकती, सुकति (दे.)

सुकुमार–वि. कोमलाँग, मृदूल, नाजुक, नग्न स्त्री. **सुकुमारी**। सज्ञा, पु. (सं.) **सौकुमार्य**। स्त्री. **सुकुमारता**। संज्ञा, पु. कोमलांग बालक, काव्य में कोमल वर्णो या शब्दों का प्रयोग, सुन्दर-कुमार।

सुकुमारता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सौकुमार्य, मृदुलता, सुकुमार का धर्म या भाव, आर्दव कोमलता, नज़ाक़त।

सुकुमारी–वि. (सं.) कोमलांगी, नाजुक बदन। संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुन्दर कुमारी।

सुकुरना–क्रि. अ. दे. *(हि. सिकुड़ना)* सिकुड़ना, सिमिटना। स. रूप–सुकुराना, प्रे. रूप–सुकुरवाना।

सुकुल–संज्ञा, पु.(सं) उत्तम या श्रेष्ठ वंश, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न व्यक्ति, कुलीन, ब्राह्मणों का एक वंश। स्त्री. सुकुलाइन। संज्ञा, पु. दे. *(सं. शुल्क)* उज्ज्वल, स्वच्छ निर्मल, निर्दोष, निष्कलंक शुद्ध साफ़।

सुकुवाँर-सुकुवार–वि. दे. (सं. सुकुमार) सुकुमार, कोमल।

सुकृत्–वि. (सं.) शुभ या उत्तम कर्म करने वाला, धार्मिक, शुभ कर्म।

सुकृत–संज्ञा, पु. (सं.) शुभ कर्म, पुणव, दान, धर्म-कर्म। वि. धर्मशील, भाग्यवान्।

सुकृतात्मा–वि. यौ. (सुकृतात्मन्) धर्मात्मा, सुकर्म्मी धर्मशील, पुणयात्मा।

सुकृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पुण्य कर्म, सत्कर्म, शुभकर्म, अच्छा काम। संज्ञा पु. सुकृतित्व।

सुकृती–वि. (सं. युकृत्तिन्) भाग्यवान्, पुण्यशील, धर्मात्मा, सुकर्मी, बुद्धिमान, निपुण, सुकुशल, दत्त।

सुकृती–संज्ञा, पु. (सं.) पुण्य, धर्मकार्य, सत्कर्म, सत्कार्य।

सुकेशि–संज्ञा, पु. (सं.) विद्यत्केश का पुत्र और भाल्यवान भाली और सुमाली नाम के राक्षसों का पिता एक राक्षस।

सुकेशी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुन्दर और उत्तम बालों वाली स्त्री। संज्ञा, पु. (सं. सुकृशिन्) अति सुन्दर केशों या बालों वाला व्यक्ति। स्त्री. **सुकेशिनी**।

सुक्ख–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सुख)* सुख।

सुक्ति-सुक्ती–संज्ञा स्त्री. दे. *(सं. शुक्ति)* सीप, सीपी।

सुक्रित–संज्ञा, पु. दे *(सं. सुकृत)* सुकृत, सुकर्म, पुण्य, धर्म।

सुक्षम*‡–वि. दे. *(सं. सूक्ष्म)* अति लघु या छोटा, अति वारीक या महीन, **सुछम, सूच्छम** (दे.)। संज्ञा, पु. परमाणु परब्रह्म, लिंग-शरीर, एक अलंकार जहाँ चित-वृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लज्जित कराने का वर्णन होता है (का.)।

सुखंड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सूखना)* बच्चों का एक सूखा रोग जिसमें उनका शरीर सूख जाता है। वि. बहुत ही दुबला-पतला।

सुखंद–वि. दे. *(सं. सुखद)* सुखदायी, सुखद।

सुख–संज्ञा, पु. (सं.) शांति, आराम, सुक्ख (दे.) मन की अभीष्ट, प्रिय तथा एक अनुकूल दशा या वेदना, जिसकी सब अभिलाषा करते हैं। विलो. दुख। **मु. सुख मानना**–अच्छा समझना, समझना, बुरा न मानना, अप्रसन्न न होना, प्रसन्न होना, अनुकूल परिस्थिति से स्वस्थ और प्रसन्न करना। **सुख की नींद सोना (लेना)**–बेखटके या फिक्र रहना, निश्चिंत रहना। आरोग्य, तंदुरुस्ती, जल, स्वर्ग, 8 सगण और 2 लघु वर्णों वाला एक वर्णिक छंद (पिं.)। क्रि. वि. स्वभावतः, सुखपूर्वक, सुखेन।

सुख-आसन–संज्ञा, पु. यो. (सं.) पालकी, **सुखासन**।

सुख-कंद–वि. यौ. *(सं. सुख+कंद)* सुख की जड़, सुख रूप, सुखदायक, सुवाद।

सुख-कंदल–वि. यौ. *(सं. सुख+कंदन)* सुख-कंद, सुखद।

सुखकर–सुखकर–वि. (सं.) सुखद, सुख देने वाला, जो सहज में किया जावे, सुकर।

सुखकरण†–वि. यौ. *(सं. सुख+करण)* सुखद।

सुखकारक–वि. (सं.) सुखद, सुखदायी।

सुखकारी–वि. (सं.) सुखद, सुखकारक। स्त्री. **सुखकारिणी**।

सुखजनक–वि॰ पु॰ यौ॰ (सं॰) सुख देने वाला।

सुखजननी–वि॰ स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सुख देने वाली।

सुखज्ञ–वि॰ (सं॰) सुख को जानने वाला, सुख-ज्ञाता। देने वाला।

सुखथर, सूख-थल*‡–संक्षा, पु॰दे॰ यौ॰ *(सुख+ स्थल)* सुखदायी स्थान, सुखद ठौर, सुख का स्थल, सुखस्थली, सुखालय।

सुखद–वि॰ (सं॰) सुख या आनंद देने वाला, सुखदायक। स्त्री॰ सुखदा।

सुखद-गीत–वि॰ यौ॰ (सं॰) तारीफ़ के लायक, प्रशंसनीय। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुख देने वाला गान या गायन, सावन, प्रशस्ति पाठ।

सुखदा–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) सुख देने वाली। संज्ञा, स्त्री एक छंद (दि॰)।

सुखदाई–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुखदायी)* सुख देने वाला, सुखद।

सुखदाता–वि॰ यौ॰ *(सं॰ सुखदातृ)* सुखद, सुखदायी।

सूखदान–वि॰ यौ॰ *(सं॰ सुखदातृ)* सुखदाता। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुख का दान।

सुखदानि-सुखदानी–वि॰ स्त्री (हि॰ सुखदान) आनंद या सुख देने वाली। संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) ४ रगण और एक गुरु वर्ण वाला, एक वर्णिक छंद या वृत्त, (पि॰) सुंदरी छंद, चंद्रकला, मल्ली छंद।

सुखदायक–वि॰ यौ॰ सुख-प्रद सुख देने वाला। स्त्री॰ **सुखदायिका**।

सुखदायी–वि॰ *(सं॰ सुखदायिन्)* सुखद, सुख देने वाला। स्त्री॰ **सुखदायिनी**।

सुखदायो–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुखदायी)* सुखदायी, सुखद।

सुखदास–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार का बढ़िया चावल या अगहनी धान। यौ॰ सुख का (के लिये) दास।

सुखदेनी–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुखदायिनी)* सुखदायी।

सुखधाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(सं॰ सुख+ धाम)* सुख-भवन, सुखसदन, सुखसद्म, सुख का घर, सुखालय, बैकुंठ, स्वर्ग, सुखद।

सुखना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(हि॰ सूखना)* सूखना, खुश्क या शुष्क होना।

सुख-निंदिया–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ सुखनिद्रा) सुख की नींद, सुख-नींद।

सुखपाल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक प्रकार की पालकी।

सुखपूर्वक–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (सं॰) सुख या प्रसन्नता या हर्ष से, आनंद के साथ।

सुखप्रद–वि॰ (सं॰) सुखद, सुख देने वाला। स्त्री॰ सुखप्रदा।

सुखमन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सुषुम्ना)* सुषुम्ना नाड़ी, सुखुमना (दे॰)।

सुखमा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सुखमा)*। छवि, शोभा, सुंदरता, आभा छंद या वृत्त (वि॰)।

सुख-रारा, सुख-रासि, सुख-रासी–वि॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ सुखराशि) सुखरूप, सुखमय, सुख की राशि।

सुखवंत–वि॰ *(सं॰ सुखवत्)* सुखी, खुश, प्रसन्न सुखद, सुखवान।

सुखवन–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ सूखना)* वह कमी जो किसी पदार्थ के सूखने से हो, वह पदार्थ जो सूखने को धूप में रखा जाता है। संज्ञा, पु॰ *(हि॰ सूखना)* स्याही सुखाने वाली बालू या कागज़, ब्लाटिंग पेपर।

सुखवाद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुख को ही जीवन का प्रधान लक्ष्य मानने का सिद्धांत। वि॰ **सुखवादी**।

सुखवार–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुख)* सुखी, खुश, प्रसन्न, सुख के दिन। स्त्री॰ **सुखवारी**।

सुखसाध्य–वि॰ यौ॰ (सं॰) सरल, सहज, आसान, सुकर।

सुखसार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मोक्ष, मुक्ति सुख का तत्व या मूल, परम सुख।

सुख-सोकर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुखाश्रु, आनंदाश्रु, सुख-सलिला।

सुखांत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह वस्तु या कार्य जिसका अंत सुखमय हो। यह नाटक जिसके अंत में सुखमयी घटना हो, **संयोगान्त नाटक**। विलो॰ दुखान्त।

सुखाना–क्रि॰ स॰ *(हि॰ सुखना)* झुरवाना, किसी गीली वस्तु को धूप में यों रखना कि उसका गीलापन मिट जावे, गीलापन या नमी मिटाने की कोई क्रिया करना, **सुखवाना, सुखावना**। क्रि॰ अ॰ सूखना।

सुखारा सुखारी*†–वि॰ दे॰ *(हि॰ सुख+आरा प्रत्य॰)* सुखद, सुखी, प्रसन्न, आराम से। वि॰ दे॰ *(हि॰ खारा)* खूब खारा।

सुखाला–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुखालय)* सुखद, सुखदायक, सहज।

स्त्री॰ सुखाली।

सुखावह–वि॰ (सं॰) सुखद, सुखदायी।

सुखासन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिविका, सुखद आसन, डोली, पालकी।

सुखित–वि॰ (सं॰) सुखी, प्रसन्न, हर्षित, खुश, उल्लसित, प्रसुखित। वि॰ दे॰ *(हि॰ सूखना)* सूखा हुआ।

सुखिर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) साँप का बिल।

सुखी–वि॰ (सं॰ सुखिन्) जिसे सब प्रकार का सुख हो, आनंदित, हर्षित, खुश, प्रसन्न।

सुखेन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सुषेणा) एक वानर जो सुग्रीव का राज्यवैद्य था। पु॰ (सं॰ सुख का करण=रूप) सुख से।

सुखेलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) न, ज, भ, ल, र, (गण) युक्त। एक वर्णिक वृत्त या छंद, प्रभद्रक, **प्रभाद्रिका** (दे॰)।

सुख्याति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रसिद्धि, यश, कीर्त्ति, शोहरत, बड़ाई। मन्ना॰ वि॰ **सुख्यात**–विख्यात।

सुगंध-सुगंधि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰)सुरभि, अच्छी, सुन्दर और प्रिय महक, खुशबु, सुवास, सौरभ, वह वस्तु जिससे अच्छी महक निकलती हो, जैसे चंदन, केसर, कस्तूरी, श्रीखंड, धाम, परमात्मा। वि॰

सुगंधित–सौरभीला, खुशबूदार।

सुगंधवाला–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सुकंध हि॰ वाला) एक सुगंधित वनौषधि।

सुगंधित–वि॰ (सं॰ सुगंधि) सुगंधयुक्त, खुशबूदार, अच्छी महक वाला।

सुगत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बुद्ध जी, बौद्ध।

सुगति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मरणोपरान्त, उत्तमगति, सद्गति, मुक्ति, मोक्ष। सात मात्राओं और दीर्घ वर्णान्त एक मात्रिक छंद (पिं॰)।

सुगना–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुक)* शुक, तोता, सुग्गा (आ॰)सुवा, सुआ।

सुगम–वि॰ (सं॰) जिसमें या जहाँ जाने में कठिनता या कष्ट न हो, सहज, सरल।

सुगमता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सरलता, आसानी, सहजपन।

सुगम्य–वि॰ जिसमें या जहाँ सहज ही में प्रवेश हो सके, जा सके।

सुगल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सु+गल या गन्न-हि॰) सुग्रीव।

सुगाध–वि॰ (सं॰) आसानी से पार करने या सुखपूर्वक नहाने के योग्य।

सुगोनिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पचीस मात्रायें आदि में लघु और अंत में गुरु तथा लघु वर्ण होते हैं (पिं॰)।

सुग्रीव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वानरेश बालि का भाई और श्रीराम का मित्र। शंख, इंद्र। वि॰ जिसकी गर्दन अच्छी हो, सुकंठ।

सुघट–वि॰ (सं॰) सुन्दर, मनोहर, सुडौल, जो आसानी से बन सके।

सुघटित–वि॰ (सं॰ सुघट) भली-भाँति बना या गढ़ा हुआ, सर्वथा, चरितार्थ।

सुघड़-सुघर–वि॰ दे॰ (सं॰ सुघट) सुन्दर सुडौल, मनोरम, चुतुर, कुशल, प्रवीण, निपुण। संज्ञा, पु॰–(हि॰) सुन्दर घर।

सुघड़ई-सुघरई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सुघट- हि॰ सुघड़, सुघर) सुन्दरता, सुडौलपन, चतुरता, **सुघराई**।

सुघड़ता-सुघरता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सुघड़, सुघर)* सुन्दरता, सुडौलपन, दक्षता।

सुघड़पन-सुघरपन–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ सुघढ़, सुघर)* सुन्दरता, निपुणता, चतुरता।

सुघड़ाई-सुघराई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ सुघड़, सुघर) सौंदर्य, सुन्दरता, चतुरता।

सुघड़ाया-सुघराया–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ सुघढ़, सुघर)* सुन्दरता, खूबसूरती, **सुघराई**।

सुघरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सुघटी)* भली सायत, अच्छी घड़ी या समय, शुभमुहर्त, ब्याह, विदा। वि॰ स्त्री॰ (हि॰ सुघर) सुडौल, सुन्दर, खूबसूरत।

सुच-सुचि*–वि॰ दे॰ *(सं॰ शुचि)* पवित्र।

सुचरित-सुचरित्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सचरिक, उत्तम या श्रेष्ठ आचरण वाला, सुचाली, नेक चलन, सुन्दर चरित या चरित्र सुन्दर जीवन-वृत्त या कथा। स्त्री॰ सुचरित।

सुचार*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सुचाल)* अच्छी चाल, सदाचरण। वि॰ दे॰ *(सं॰ सुचारु)* सुंदर, मनोरम।

सुचारु–संज्ञाए, (सं॰) रम्य, अति सुंदर, अति मनोरम। संज्ञा, स्त्री॰ सुचारुता।

सुचाल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सु हि॰ चाल) श्रेष्ठ या शुद्ध आचरण, अच्छी चाल, सदाचार। बिला॰ कुचाला।

सुचाली–वि॰ (हि॰) सदाचारी, अच्छे चालचलन वाला। विला॰ कुचाली।

सुचि–वि॰ दे॰ *(सं॰ शुचि)* शुचि, पवित्र।

सुचित–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुचित)* शान्त, निश्चिंत, एकाग्र, सावधान, स्थिर, जो *(किसी काम से)* निवृत्त हो।

सुचित–वि॰ (सं॰) शान्त, स्थिर मन या चित्त वाला, कार्य से निवृत्त, निश्चिंत, बेफ़िक्र, वेखटके। संज्ञा, पु (सं॰) सुन्दर चित्त या मन।

सुचिमंत–वि॰ *(सं॰ शुचिमत्)* सदाचारी, शुद्धाचारी, अच्छे आचारण वाला।

सुचेत-सुचेता–वि॰ दे॰ (सं॰ सुचेतस्) सावधान, सजग, सतर्क, चौकला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुन्दर चेत या ज्ञान।

सुजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आर्य, सज्जन, सभ्य, भलामानुष, सत्पुरुष, शिष्ट या भला आदमी, शरीफ़। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ स्वजन) वंश या परिवार के लोग, कुटुंबी, नातेदार।

सुजनता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सज्जनता, सौजन्य, भलमनसाहत भलमंसी, भद्रता, सज्जन का भाव, शिष्टता।

सुजनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(फ़ा॰ सोज्जनी)* सुई के काम का एक प्रकार का बिछौना। संज्ञा, स्त्री॰ (सं सृजन) सर्जना।

सुजन्मा–वि॰ (सं॰) उत्तम या श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, कुलीन।

सुजस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰सुयश) सुयश, सुकीर्ति सुख्याति, नामवरी।

सुजागर–वि॰ (हि॰) प्रकाशमान, सुशोभित, मनोहर, देखने में अति सुन्दर या सुरूपवान, विख्यात।

सुजात–वि॰ (सं॰) विवाहित स्त्री और पुरुष से उत्पन्न, श्रेष्ट या अच्छे वंश या कुल में उत्पन्न, अच्छा, सुन्दर। स्त्री॰ सुजाना।

सुजातया–वि॰ दे॰ (हि॰ सुजाति इया प्रत्य॰) उत्तम जाति या कुल का, श्रेष्ठ वंश का। वि॰ *(वि॰ स्वजाति)* स्वजाति का अपनी जाति वाला, सजातीय।

सुजान–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुज्ञान)* चतुर, प्रवीण, निपुण, सयाना, कुशल, समझदार, बुद्धिमान, ज्ञानी, विश सुजाना (दे॰) : सज्जन, पंडित। संज्ञा, पु॰ पति या प्रेमी, परमेश्वर।

सुजानता–संज्ञा, स्त्री॰ हि॰ *(सं॰ सुज्ञानता)* चतुरता, सयानप, प्रवीणता, सज्ञानता, निपुणता, कुशलता, समझदारी, बुद्धिमानी, विज्ञता।

सुजाना–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ सूजना)* फुलाना, बढ़ाना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) सुजान।

सुजानी–वि॰ *(हि सुजान)* ज्ञानी, चतुर पंडित, समझदार, बुद्धिमान।

सुजोग*†–संज्ञा, पु॰ दे *(सं॰ सुयोग)* सुयोग, अच्छा अवसर या मौका, अच्छा संयोग वि॰ दे॰ *(सं॰ सुयोग्य)* सुयोग्य दक्ष, योग्य, सुजोग्य।

सुट्टकना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) निगलना, लीलना, सुटकना, सिकुड़ना संकुचित होना। क्रि॰ स॰ (दे॰) चाबुक लगाना।

सुठ–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुष्ठु)* सुन्दर, अच्छा, बढ़िया बहुत अत्यंत।

सुठहर-सुठाहर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुठहर हि॰)* उत्तम या बढ़िया स्थान, अच्छा और अच्छी जगह।

सुठार–वि॰ दे *(सं॰ सुष्ठु)* सुन्दर, सुढार सुडौल।

सुठि*†–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुष्ठु)* बढ़िया, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, सुन्दर, अत्यंत, अधिक, बहुत। अव्य॰ दे॰ (सं॰ सुष्ठ) बिलकुल, पूरा-पूरा।

सुठोना*†–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुष्ठु)* सुठि, बढ़िया, उत्तम, अच्छा, सुन्दर, अत्यंत, अधिक बहुत।

सुठौर–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सु+ठोर हि॰)* सुन्दर स्थान।

सुड़सुड़ाना–क्रि॰ स॰ (अनु॰) सुढ़-सुढ़ शब्द उत्पन्न करना, **सुटसुटाना**।

सुड़कना, सुरकना–क्रि॰ स॰ (दे॰ या अनु॰ सुड़-सुड़) थोड़ा-थोड़ा करके वायुवेग से पीना।

सुड़की–संज्ञा स्त्री॰(दे॰) पतंग या गुड्डी की डोरी छोड़ना।

सुड़प–संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) कौर, कौल, आस, कबल।

सुड़पना–क्रि॰ स॰ (दे॰) निगलना, चाटना, चूसना, सरपोटना सुटकना, सुड़कना।

सुडौल–वि॰ दे॰ *(सं॰ सु+डौल हि॰)* अच्छे आकार का, सुन्दर डौल का, सुन्दर।

सुढंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सु+हि॰ ढंग)* उत्तम ढंग, अच्छी रीति, सुघड़, सुन्दर, अच्छा।

सुन्दर–वि॰ दे॰ (सं॰ सु ढलना हि॰) अनुकंपित, दयालु, प्रसन्न, कृपालु। वि॰ दे॰ *(हि सुघढ़)* सुन्दर, सुडौल।

सुढोर, सुढारु–वि॰ दे॰ *(सं॰ सु+ढलना हि॰)* सुन्दर, खूबसूरत,

सुडौल। स्त्री॰ सुढारी।

सुत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लड़का, बेटा, पुत्र। वि॰ पार्थिव, जात, उत्पन्न, पैदा।

सुतधार–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सूत्रधार)* सूत्रधार, नियंता।

सुतना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) सूतना, सोना, संज्ञा, पु॰ (दे॰) सुधना, पायजामा।

सुतनी–वि॰ स्त्री॰(सं॰) सुत या पुत्रवाली, पुत्रवती।

सुतनु–वि॰ (सं॰) सुन्दर देह या शरीर वाला। संज्ञा, स्त्री॰ सुन्दर शरीरवाली, कृशांगी स्त्री।

सुतर-नाल–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ यौ॰ *(फ़ा॰ शुतुर नाल)* एक प्रकार की तोप जो ऊँट पर चलती है।

सुतरां–अव्य॰ *(सं॰ सुतराम्)* इस हेतु, इस कारण, किंपुनः, और भी, किं बहुना, अतः, अपितु, निदान।

सुतरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक आभूषण, कड़ा, वाला।

सुतरी†–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सुतली, सन की बनी रस्सी या डोरी, तुरही नामक एक बाजा।

सुतल– संज्ञा, पु॰ (सं॰) सात पातालों में से एक पाताल या लोक।

सुतली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सूत+ली प्रत्य॰)* सन की रस्सी, डोरी, सुतरी।

सुतवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (**सुलवाना**) सुलवाना, सुताना (दे॰)।

सुतहर, सुतहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ (**हि॰ सुतार**) सुतार, शिल्पकार, बढ़ई। वि॰ (दे॰) सूत वाला, सुतहा।

सुतहा–वि॰ (दे॰) सूत वाला, सुतली से बना या बुना हुआ।

सुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पुत्री, लड़की, कन्या, बेटी।

सुतार–संज्ञा, पु॰ दे॰ अ (**सं॰ सूत्रकार**) कारीगर, बढ़ई, शिल्पकार। वि॰ (सं॰) अच्छा, उत्तम, सूत वाला। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ सुभीता) सुभीता, सुविधा। **मु॰ सुतार बैठना (होना)**–सुभीता या सुविधा होना।

सुतारी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सूत्रकार)* जूता आदि सीने का मोचियों का सूजा या सुआ, सुतार या बढ़ई का काम। संज्ञा, पु॰ *(हि॰ सुतार)* शिल्पकार, कारीगर, बढ़ई

सुतिहार†–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ सुतार)* सुतार, बढ़ई, कारीगर, शिल्पकार।

सुती–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुत्र वाला, लड़के वाला।

सुतीखन–वि॰ दे॰(सं॰ *सुतीक्ष्णा)* अति तीक्ष्ण या पैना।

सुतीखा–वि॰ (हि॰) अति कटु या पैना।

सुतीक्ष्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुतीक्ष्ण, अगस्त्य जी के भाई जो बनवास में श्रीराम से मिले थे। वि॰ (सं॰) अति भीषण।

सुतीछी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अति पैनी या चोखी, धारदार, सुतीखी।

सुतुही–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(वि॰ शुक्ति)* छोटी शुक्ति, सूती, सीपी।

सुतून–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) स्तंभ, खंभा।

सुथना, सुथना–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सूथन, पायजामा, सुत्थन (आ॰)।

सुथनी, सुत्थना–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰)स्त्रियों का एक ढीला पायजामा, रतालू, पिंडालू।

सुथरा–वि॰ दे॰ *(सं॰ स्वच्छ)* निर्मल, साफ़, स्वच्छ। स्त्री॰ सुथरी। यौ॰ साफ़-सुथरा।

सुथराई–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ सुथरा)* सुथरापन स्वच्छता, सफ़ाई।

सुथरापन–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ सुथरा+पन प्रत्य॰)* सफ़ाई, निर्मलता, स्वच्छता, सुथराई।

सुथरेशाही–संज्ञा, पु॰ *(हि॰ सुथरा+शाह-महात्मा)* गुरु नानक के शिष्य, सुथराशाह का संप्रदाय, इस शाह के अनुयायी, सुथरेसाई।

सुदती–वि॰ (सं॰) सुंदर दाँतों वाली स्त्री, सुदंती।

सुदर्शन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु का चक्र, सुमेरु, शिव, सुदरसन (दे॰)। वि॰ देखने में सुन्दर, मनोहर, मनोरम, रुचिर। यौ॰ **सुदर्शन–चुर्ण**–सर्व ज्वर-नाशक एक प्रसिद्ध औषधि या चुर्ण या अर्क (वैद्य॰)।

सुदरसन–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुदर्शन)* विष्णु का चक्र, सुमेरु, शिव।

सुदामा–संज्ञा, पु॰ *(सं॰ सुदामन)* श्रीकृष्ण जी के मित्र, एक दरिद्र ब्राह्मण जिन्हें उन्होंने ऐश्वर्यशाली बना दिया था।

सुदास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रसिद्ध वैद्य राजा दिवोदास के पुत्र, एक जनपद (प्राचीन)।

सुदि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ सुदी) सुदी।

सुदिन–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सु दिन)* शुभ या अच्छा दिन।

सुदी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ शुद्ध या शुल्क)* किसी महीने का शुक्ल पक्ष, उजेला पाख।

सुदीपति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सुदीप्ति)* सुदीप्ति, अधिक उजेला या प्रकाश। यौ॰ *(हि॰ सुदी पति सं॰)* चंद्रमा।

सुदूर–वि. (सं.) अति दूर।

सुदृढ़–वि. (सं.) अति दृढ़, बहुत मज़बूत या पक्का। संज्ञा, स्त्री. सुदृढ़ता ।

सुदृश्य–वि. (सं.) सुन्दर, मनोज्ञ, दर्शनीय, देखने योग्य, मनोहर, उत्तम, अच्छा।

सुदेष–संज्ञा, पु. (सं.) देवता।

सुदेश–संज्ञा, पु. (सं.) सुन्दर या उत्तम देश, उपयुक्त स्थान, यथा-योग्य ठौर। वि. सुन्दर, मनोहर।

सुदेस–संज्ञा, पु. *(सं. सुदेश)* सुदेश।

सुदेह–वि.(सं.)सुन्दर मनोहर, कमनीय। संज्ञा, पु. (सं.) शरीर।

सुद्दा (सुद्दी)–संज्ञा, पु. *(स्त्री.)* दे. (अ. सुद्दः) पेट में जमा सूखा मल।

सुद्धा–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सह)* समेत, युक्त, सहित।

सुद्धि–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. शुद्धि)* शुद्धि, पवित्रता, स्वच्छता। संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सुधि)* स्मरण, स्मृति, याद, ख्याल ध्यान।

सुधंग–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सु+ढंग)* उत्तम या अच्छा ढंग अच्छी रीति।

सुध, सुधि–संज्ञा,, स्त्री. दे. *(सं शुद्ध–बुद्धि)* याद, संस्मरण स्मृति, ख्याल, ध्यान, पता, ख़बर, चेत। **मु. सुध दिलाना**–याद दिलाना। **सुध न रहना (होना)**–भूल जाना, याद न रहना। **सुध बिसरना**–भूल जाना। **सुध बिसराना या बिसारना**--किसी को भूल जाना। **सुध भूलना**–सुध बिसरना। यौ. सुधबुध **(सुधि-बुधि)**–होश-हवास। **मु. सुध बिसरना**–चेत या होश में न रहना। **सुध बिसराना–बेहोश या अचेत करना।** वि. दे. *(सं. शुद्ध)* शुद्ध। संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सुधा)* सुधा, अमृत, सुधी।

सुध बिसरराना–बेहोश या अचेत करना। वि. दे.*(सं. शुद्ध)* शुद्ध। संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सुधा)* सुधार, अमृत, सुधी।

सुधन्ता–संज्ञा, पु. *(सं. सुधन्वन्)* विष्णु, श्रेष्ठ धनुर्धर, विश्वकर्मा, अंगिरस, एक राजा (महा.)। संज्ञा, पु. (हि.) अच्छा धनुष।

सुधमना*†–वि. दे. *(हि. सुय–होश+मन)* सजग, सचेत, सावधान, जिसे चेत हो। स्त्री. सुधमनी।

सुधरना–क्रि. अ. दे. *(सं. शोधन)* सँभलना, दुरुस्त होना, संशोधन होना, बिगड़े हुये का बन जाना। **सं. रूप**–सुधारना, **प्रे. रूप**–सुधरवाना, सुधराना।

सुधराई–संज्ञा,स्त्री. *(हि. सुधरना)* सुधार, बनाव, सुधारने की मज़दूरी, सुधरने का भाव।

सुधर्म्म–संज्ञा, पु. (सं.) सुन्दर या उत्तम धर्म, गुण्य-कार्य, श्रेष्ठ कर्त्तव्य।

सुधरवाना–क्रि. स. दे. *(हि. सुधरना का प्रे. रूप)* कोई दोष या त्रुटि मिटाना, संशोधन करना, ठीक या दुरुस्त कराना, **सुधराना**।

सुधराना–क्रि. स. (दे.) सुधार कराना।

सुधांग–संज्ञा, पु. यौ. *(सं. सुधा+अंग सुधांशु)* चन्द्रमा।

सुधांशु–संज्ञा, पु. यो. (स. सुधा+अंशु) चन्द्रमा, सुधाकर, चाँद।

सुधा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पीयूष, अमृत, जल, गंगा मकरंद, दूध, मधु, रस, मदिरा, अर्क, पृथ्वी, बिष, एक वर्णिक वृत्त (पिं.)।

सुधाई–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सूधा–सीधा)* सीधापन, सिधाई, सरलता।

सुधाकर–संज्ञा, पु. (सं.) चंद्रमा।

सुधागेह–संज्ञा, पु. यौ. *(सं. सुधा+गेह हि.)* चन्द्रमा, सुधागृह।

सुधाधर–संज्ञा, पु. (सं.) चन्द्रमा।

सुधाधाम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चन्द्रमा।

सुधाधार–सज्ञा, पु. यौ. (सं.) चन्द्रमा।

सुधानिकेत–सुधानिकेतन–संज्ञा, पु. यौ.(सं.) चन्द्रमा, सागर।

सुधानिधि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **सुधानिकेत,** चन्द्रमा, समुद्र, क्रम से 16 बार गुरु और लघु वर्ण वाला, दंडक छंद का एक भेद, (पिं.)।

सुधापाणि–सज्ञा, पु. यौ. (सं.) पीयूषपाणि, धन्वंतरि। वि. यौ. (सं.) जिसके हाथ में सुधा किसी शक्ति हो।

सुधामयूख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सुधाकर, चन्द्रमा, **सुधामरीची**।

सुधायोनि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चन्द्रमा।

सुधार–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सुधारना)* संस्कार, संशोधन, सुधारने का भाव। संज्ञा, वि. दे. *(हि. सीधा)* सीधा। स्त्री. (हि.) सुन्दर धारा, सुबार।

सुधारक–संज्ञा, पु. (हि. सुधार+क प्रत्य.) दोषों और त्रुटियों का सुधार करने वाला, संशोधक, धार्मिक या समाजिक

सुधारों में प्रयत्नशील, (अं.) रिफॉर्मर।

सुधारना–क्रि. स. (हि. सुधरना) दोषों या त्रुटियों का मिटाना, बुराई दूर करना, संशोधन करना, ठीक करना, बिगड़े को बनाना। वि. सुधरने वाला। स्त्री. **सुधारनी**।

सुधारश्मि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सुधाकर, चन्द्रमा।

सुधारा–वि. दे. (हि. सुधा) सीधा, सरल, निष्कपट। संज्ञा, स्त्री. (हि.) सुन्दर धारा, सुधार।

सुधि–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. शुद्ध बुद्धि) याद, स्मृति स्मरण, समाचार, ख़बर, पता, सुध (दे.)।

सुधियाना–क्रि. सं. दे. (हि. सुधि) सुधि करना, याद करना।

सुधी–संज्ञा, पु. (सं.) वुद्धिमान, विद्वान, पंडित। वि. (सं.) चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान, समझदार, धार्मिक।

सुधेश–संज्ञा, पु. यौ. (सं. सुधा ईश) चन्द्रमा, सुधेश्वर।

सुनंदिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स, ज, स, ज, (गण) और एक गुरु वर्ण वाला एक वर्णिक छंद, प्रबोधिता, मंजुभाषिणी (पिं.)।

सुकातर–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार का मटमैला साँप।

सुनकिरवा–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. सोना+किरवा–कीड़ा) एक कीड़ा जिसके पंख सोने के रंग से होते हैं।

सुनखी–वि. (सं.) सुन्दर नख वाला।

सुनगुन–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सुनना गुन)* भेदभाव, सुराग, खोज, टोह, कानाफूसी।

सुनना–क्रि. स. दे. *(सं. श्रवण)* श्रवण करना, कानों से किसी की बात पर ध्यान देना, भली-बुरी बातें सुन कर सह लेना, शब्द-ज्ञान करना। **म. सुनी-अनसुनी करना या कर देना**–सुन कर भी उसकी ओर ध्यान न देना। **स. रुप–सुनाना, सुनावना, सुनवाना**।

सुनफा–संज्ञा, पु. (दे.) एक अह-योग (ज्यो.)। विलो. अनफा।

सुनबहरी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. *(हि. सुल+बहरी)* वह रोग जिसमें सारा शरीर शुन्न हो जाता है और गरमी सरदी का ज्ञान नहीं होता, वह रोग गलित कुष्ठ का पूर्व रूप है।

सुन-बहिरी–संज्ञा, स्त्री. यौ. दे. *(हि. सुनना)* सुनी-अनसुनी करने की क्रिया।

सुनय–संज्ञा, पु. (सं.) सुनीति, श्रेष्ठ, नीति।

सुनरा, सुनार–संज्ञा, पु. (दे.) सोनार, स्वर्णकार। संज्ञा, स्त्री. सुनारी (दे.) सोना, का काम, सुन्दर स्त्री।

सुनवाई–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सुनना वाई प्रत्य)* मुकदमे या शिकयत आदि का सुना जाना, सुनने की क्रिया।

सुनवार–वि. दे. (हि. *सुनना+वाई प्रत्य.*) सुनने वाला।

सुनवैया–वि. दे. *(हि. सुनना+वैया प्रत्य.)* सुनने या सुनाने वाला, **सुनवार** (सं.) **सुनैया** (दे.)।

सुनसर–संज्ञा, पु. (दे.) एक प्रकार का गहना।

सुनसान–वि. यौ. दे. *(सं. शुन्य-स्थान)* जन-हीन, निर्जन देश, उजाड़, वीरान, जहाँ कोई न हो। संज्ञा, पु. (दे.) सन्नाटा।

सुनहरा-सुनहला–वि. दे. *(हि. सोना हरा, हला प्रत्य.)* सोने का, सोने के रंग का, **सोनहरा** (दे.)। स्त्री. **सुनहरी, सुनहरी**।

सुनाना–क्रि. स. *(हि. सुनना)* श्रवण कराना, खरी-खोटी या बुरी-भली कहना, कथा आदि कहना।

सुनाम–संज्ञा, पु. (सं.) सुदर्शन चक्र।

सुनाम–संज्ञा, पु. (सं.) कीर्त्ति, यश। विलो. कुनाम।

सुनार–संज्ञा, पु. दे. *(सं. स्वर्णकार)* स्वर्णकार, **सोनार**, चाँदी-सोने के गहने बनाने वाली एक जाति।

सुनारी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. सुनार+ई प्रत्य.)* सुनार काम, सुनार की स्त्री, सुनारिन, सुन्दर, श्रेष्ठ स्त्री. **सुनारि**।

सुनावट–संज्ञा, स्त्री. (दे.) सुनाहट, मौन, चुपचाप।

सुनावना–क्रि. स. दे. *(हि. सुनाना)* सुनाना।

सुनावनी–क्रि. स. दे. *(हि. सुनाना+आवनी प्रत्य.)* किसी नातेदार की मृत्यु के समाचार का दूर से आना, ऐसी ख़बर से किया गया स्नानादि शौच-कृत्य।

सुनासीर–संज्ञा, पु. *(सं.+नासीर=सीना का अग्रभाग)* इन्द्र।

सुनाहक–क्रि. वि. दे. *(फ़ा. ना+हक अ.)* निष्प्रयोजन, व्यर्थ, बेमतलब।

सुनीति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुन्दर, श्रेष्ठ, नीति, ध्रुव की माता। वि. सुनीतिज्ञ।

सुन्न–वि. दे. *(सं. शुन्य)* निश्चेष्ट, निस्तब्ध, निर्जीव, चेष्टा-रहित, स्पन्दन-हीन। संज्ञा, पु. दे. *(सं. शून्य)* शूनय, बिन्दी, सिफर, सुन्ना (आ.)

सुन्नन–संज्ञा, स्त्री. (अ.) ख़तना, सुसन्ना भानी, बालक की लिंगेन्द्रिय के अतिम भाग के चमड़े को काटने की एक रस्म *(सुनत.)* सुनति, सुन्नति (दे.)।

सुन्ना–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ शुन्य)* शुन्य, बिंदी, साईफ़र।

सुन्नी–संज्ञा, पु॰ (अ॰) चारयारो, चारी ख़लीफ़ाओं को प्रधान मानने वाला मुसलमानों का एक समुदाय। विलो॰ **शिया**।

सुपंथ–संज्ञा, पु॰ (हि॰) सुन्दर मार्ग, सदाचार, अपना मार्ग या कर्त्तव्य, **स्वपथ** (सं॰)।

सुपक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भली-भाँति पका हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ सुपकता।

सुपच–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ श्वपच)* चांडाल, डोम, भंगी।

सुपत–वि॰ दे॰ (सं॰ सु+पत =इज़्ज़त हि॰) प्रतिष्ठित, सम्मानित।

सुपत्थ–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुपथ)* सुपंथ, उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता, सन्मार्ग, अच्छा पथ्य।

सुपथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सत्पथ, सदाचार, सन्मार्ग, उत्तम रास्ता, अच्छी राह, सदाचरण, द न भ, र *(गण)* और गुरु वर्णो वाला एक वर्णिक छंद (पिं॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सुपथ्य) सुन्दर या उचित पथ्य। वि॰ (सं॰ सु+ पथ) समतल, बराबर।

सुपना, सपना–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ स्वम)* स्वप्न, सोना, सपना।

सुपर्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्षी, गरुड़, विष्णु, किरण, घोड़ा। संज्ञा, पु॰(सं॰) सुन्दर पत्र।

सुपर्णी–संज्ञा, स्त्री॰ (स॰) गरुड़ की माता, सुपर्ण, पद्मिनी, कमलिनी। सज्ञा, पु॰ *(सं॰ सु+ पर्ण+ ई प्रत्य॰)* सुन्दर पत्तों वाला।

सुपात्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी कार्य के योग्य या उचित व्यक्ति, श्रेष्ठ या उत्तम, सुयोग्य पात्र, उपयुक्त व्यक्ति, अच्छा बरतन। संज्ञा, स्त्री॰ **सुपात्रता**।

सुपारी,सुपाड़ी–संज्ञा, स्त्री . दे॰ *(स॰ सुप्रिया)* पूग, छालिया *(प्रान्ती॰)*। पूँगीफल, नारियल की जाति का एक पेड़ जिसके छोटे फल पान में काट कर खाये जाते हैं। इस पेड़ के बेर जैसे कड़े फल, **गुवाक** *(प्रान्ती॰)*। **मु॰ सुपारी लगना**–सुपारी का हृदय देश में अटकना जो दुखदायी होता है। **सुपारी फोड़ना**–निठल्ले बैठे रहना। **सुपारी में खेलना**–व्यर्थ अपव्यय या हानिप्रद कार्य करना। **सुपारी देना या लेना**–किसी की हत्या करने या करवाने का वचन देना या लेना।

सुपार्श्व–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जैन मत के 24 तीर्थंकरों में से 7वें तीर्थंकर, सुन्दर, सुखद, पड़ोस।

सुपास–संज्ञा, पु॰ (दे॰) आराम, सुख, सुवास, सुखद निवास-स्थान या पड़ोस।

सुपासी–वि॰ दे॰ *(हि॰ सुपास)* सुखद, सुखदायी, सुख देने वाला।

सुपुत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अच्छा लड़का, **सुपूत** (दे॰)।

सुपुर्द–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(फ़ा॰ सिपुर्द)* सौंपना, सिपुर्द करना, सुपुरुद, **सिपुरद** (आ॰)।

सुपूत–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुपुत्र)* सपूत। अच्छा लड़का, **सुपुत्र**। लोक छाँड़ि तीनै चले, सायर, सिंह, सुपूत''– नीति।

सुपूती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सुपूत+ प्रत्य॰)* सुपुत्रता, **सपूती** (दे॰), सुपूतपन, सुपूत होने का भाव।

सुपेनी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(फ़ा॰ सफ़ेदी)* सफ़ेदी होने का भाव, श्वेतता, धवलता, सफ़ेद रज़ाई या तोशक।

सुपेली–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सूप)* छोटा सूप।

सुप्त–वि॰ (सं॰) सोता या सोया हुआ, निंद्रित, बंद, ठिठुरा हुआ, मुँदा हुआ। गौ॰ **सुप्तावस्था**।

सुप्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मनुष्य की चार दशाओं में से एक दशा, नींद, निद्रा, ऊंचाई।

सुप्रज्ञ–वि॰ (सं॰) अत्यंत ज्ञानी या बुद्धिमान।

सुप्रतिष्ठ–वि॰ (सं॰) अत्यंत प्रतिष्ठा वाला, अति प्रसिद्ध या विख्यात।

सुप्रतिष्ठा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रसिद्धि, नामवरी, ख्याति, 4 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

सुप्रतिष्ठित–वि॰ (सं॰) सम्मानित, विशेष माननीय, सम्मान्य, बड़ाई या प्रतिष्ठा के योग्य, अति बढ़ाई वाला।

सुप्रसिद्ध–वि॰ (सं॰) अति विख्यात, बहुत नामी, बहुत प्रसिद्ध, मशहूर। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सुप्रसिद्धि**।

सुप्रिया–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक चौपाई जिसके अंत के एक या दो वर्ण तो गुरु तथा शेष सब लघु होते हैं (पिं॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अति प्रिया या प्रेमिका, प्रेमिका, प्रेयसी, प्रियतमा। पु॰ **सुप्रिय**।

सुफल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुन्दर परिणाम, अच्छा फल या नतीजा। वि॰ सुन्दर फलवाला (वृक्ष अस्त्र) सफल, कृतार्थ, कृतकार्य, संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰)सुफलता। **मु॰ सुफल**

कविता–स्वास्तिवाधन करना।

सुवरन–संज्ञा, पु. दे. *(सं. सुवर्ण)* सोना, सुवन (दे.)।

सुबल–संज्ञा, पु. (सं.) शिवजी, गंधार देश का राजा शकुनि का पिता। वि. अति बली, अति दृढ़, बलवान्।

सुबस–अव्य. दे. *(सं. स्ववश)* स्वाधीन, स्वतंत्र, स्वच्छंद। वि. भली-भाँति बसा हुआ।

सुबह–संज्ञा, पु. (अ.) प्रातः, प्रभात, सवेरा, प्रातःकाल।

सुबहान–संज्ञा, पु.(अ.) पवित्र भगवान, निर्दोष या निष्कलंक, परमेश्वर।

सुबहान-अल्ला–अव्य. यौ. (अ.) परमेश्वर पवित्र है, हर्ष या आश्चर्य सूचक पद, सुभानअल्ला (दे.)।

सुबास–संज्ञा, स्त्री. *(सं. सु+बास)* सुगंध, सुरभि, अच्छी महक। संज्ञा, पु. अच्छा निवास, अच्छा वस्त्र, एक प्रकार का धान। वि. **सुबासित**।

सुबासना–संज्ञा, पु. स्त्री. दे. *(सं. सु+बास)* सुगंध, खुशबू, सुन्दर वासना या इच्छा। क्रि. स. (दे.) सुगंधित करना, महकाना।

सुबासिक, सुबासित–वि. (सं.) सुगंधित, सौरभित, सुगंधि से बसाया हुआ।

सुबाहु–संज्ञाए, पु. (सं.) एक राक्षस जो मारीच का भाई था। धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि देश का राजा *(महा.)*। सेना, कटक। वि. हढ़ या सुन्दर हाथों या बाहुओं वाला।

सुकिस्ता, सुबीता–संज्ञा, पु. दे. *(हि. सुमीता)* सुभीता, समाई, सामर्थ्य।

सुबुक–वि. (फ़ा.) हलका, सुन्दर। संज्ञा, पु. घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि–वि. (सं.) सुधी, ज्ञानी श्रीमान, बुद्धिमान, अच्छी बुद्धि वाला। संज्ञा, स्त्री. (स.) उत्तम बुद्धि।

सुद्द–संज्ञा, पु. दे. *(अ. सुबह)* प्रातःकाल, सबेरा, तड़का।

सुबूत–संज्ञा, पु. दे. *(अ. सबूत)* सबूत, सिद्धांत, प्रमाण, जिससे कोई बात सिद्ध या प्रमाणित हो।

सुबोध–वि. (सं.)सुधी, ज्ञानी, पंडित, बुद्धिमान, सहज ही में समझने वाला, जिसे अच्छा बोध हो, स्पष्ट, सरलता से समझ में आने वाला। संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुबोधता।

सुब्रहागय–संज्ञा, पु. (दे.) विष्णु, शिव, दक्षिण देश का एक पुराना प्रांत।

सुभ–वि. दे. (सं. शुभ) शुभ, कल्याणकारी, मंगल कारक।

सुभग–वि. (सं.) सुन्दर, अच्छा, मनोरम, भाग्यवान्, प्रियतम, सुखद, प्रिय। संज्ञा,, स्त्री. सुभगता।

सुभगा–वि. स्त्री. (सं.) सुन्दरी रूपवती, सौभाग्यवती, सुहागिन। संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रेयसी, प्रियतमा, स्वामिप्रिया, अपने पति को अति प्यारी स्त्री। पंच वर्षीया कुमारी।

सुभाग–वि. दे. *(स. सुभग)* सौभाग्यशाली, सुभाग, सुंदर। संज्ञा, स्त्री. (हि.) सौभाग्य सुन्दर भाग्य।

सुभट–संज्ञा, पु. (सं.)बड़ा वीर या योद्धा।

सुभटपंत–वि.(सं. सुभ्ट) वीर, बली, योद्धा।

सुभट्ट–संज्ञा, पु. (सं.) बड़ा पडित, भारी योद्धा।

सुभद्र–संज्ञा, पु. (सं.) सनत्कुमार, विष्णु, सौभाग्य, श्रीकृष्ण जी के एक पुत्र, कल्याण, मंगल। वि. सज्जन, भाग्यशाली।

सुभद्रा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की स्त्री. दुर्गा जी। सुभद्रिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) न, न, र (गण) तथा लघु गुरु वाला एक वर्णिक वृत्त या छंद (पिं.)।

सुभर–वि. दे. (सं. शुभ्र) शुभ्र, सुभ्र (दे.) सुफ़ेद, उज्ज्वल।

सुभा–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सुभा)* अमृत, सुधा, सोभा, हड़, हरीतकी, पर-स्त्री।

सुभाइ, सुभाउ*†–संज्ञा, पु. दे. *(सं. स्वभाव)* सुभाग्य, स्वभाव, प्रकृति, सन्दर भाव, अच्छा भाई, आदत, सुभाऊ। क्रि. वि. (दे.) सुभाये (दे.) सहज भाव से, स्वभावतः।

सुभाग*‡–संज्ञा, पु. दे. (सं. सौभाग्य) सौभाग्य, अच्छा भाग्य, सुहाग (दे)। संज्ञा, पु. (सं.) सुन्दर भाग या हिस्सा।

सुभागा–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सौभाग्यवती)* सौभाग्यवती, सधवा, सुहागिन।

सुभागिनि–वि. दे. *(सं सौभाग्य, सुभाग)* सौभाग्यवान्, सुहागिनि।

सुभागी–वि. दे. *(सं. सुभाग)* भाग्यवान, सौभाग्यवान्, अच्छे भाग वाला।

सुभान–अव्य. दे. *(अ. सुबहान)* पाक, पवित्र, परमेश्वर। यौ. (दे.) सुभान-अल्ला।

सुभाना*†–क्रि. अ. दे. *(हि. शोमना)* शोभित होना, देखने में अच्छा लगना, **सुहाना, सोहना, सोहाना** (दे.)।

सुभाय*†–संज्ञा, पु. दे. *(सं. स्वभाव)* स्वभाव, प्रकृति, सहज,

सुन्दर भाव, अच्छा भाई, **सुभाइ** (दे.)। स्त्री. **सुभाइ**। क्रि. वि. (दे.) स्वभावतः, सुन्दर भाव से।

सुभायक*–वि. दे. *(सं. स्वाभाविक)* स्वाभाविक, प्राकृतिक, सुन्दर भाव वाला।

सुभाव*†–संज्ञा, पु. दे. *(सं. स्वभाव)* स्वभाव, प्रकृति, आदत। संज्ञा,, पु. (सं.) सुन्दर भाव। क्रि. वि. (दे.) स्वभावतः सहज में।

सुभाषित–वि. (सं.) भली-भाँति या अच्छी तरह कहा हुआ, सुन्दर रूप या रीति से कहा गया, सुकथित सुव्यक्त।

सुभाषी–वि. *(सं. सुभाषिन्)* मधुर भाषी, प्रिय या मीठा बोलने वाला, अच्छे रूप या रीति से बोलने वाला। स्त्री. सुभाषिणी।

सुभिक्ष–संज्ञा, पु. (सं.) सुभिच्छ (दे.), सुकाल, ऐसा वर्ष जिसमें अनाज बहुत उपजे। विलो. सुभिक्ष।

सुभी–वि. स्त्री. दे. (सं. शुभ) कल्याणकारिणी, शुभकारिणी, शुभी।

सुभीता–संक्षा, पु. (दे.) सुविधा, सुयोग, सुगमता, सुअवसर, सहूलियत, समाग्री, सामर्थ्य मु. **सुभीते से**–सुविधानुसार।

सुभ्र–वि. दे. *(सं. शुभ्र)* सफ़ेद, धवल, उज्ज्वल। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **सुभ्रता**।

सुभ्रु–वि. (सं) सुन्दर भौंहों वाला।

सुभ्रु–वि. स्त्री. (सं.) सुन्दर भौंहों वाली स्त्री।

सुमंगल–संज्ञा, पु. (सं.) शुभ समय, शुभ, कल्याण, कुशल-मंगल-समय।

सुमंगली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) विवाह में सप्तपदी-पूजन के बाद, पुरोहित की दक्षिणा या उसका नेग।

सुमत–संज्ञा, पु. दे. *(सं. सुमंत्र)* राजा दशरथ के मंत्री।

सुमंत्र–संज्ञा, पु. (सं.) राजा दशरथ के सारथी और मंत्री।

सुमंत्रन–संज्ञा, पु. (सं.) भली भाँति मथना *(मंदर पर्वत से सिंधु-मँथन)*।

सुमंद्र–संज्ञा, पु. (सं.) अंत में गुरु-लघु के साथ 27 मात्राओं का एक मात्रिक छंद, **सरसी छंद** (पिं.)।

सुम–संज्ञा, पु. (फ़ा.) घोड़े की टाप, **सुम्मा** (आ.), चौपायों के खुर।

सुमत–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सुमति)* अच्छी बुद्धि, सुमति। संज्ञा, पु. (सं.) सुन्दर मत या विचार।

सुमति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राजा सगर की स्त्री, मेल-जोल। प्रार्थना, सुन्दर या अच्छी मति, सुबुद्धि, भक्ति। संज्ञा, पु. राजा जनक के एक बंदीजन। वि. अच्छी बुद्धि वाला, बुद्धिमान्।

सुमन–संज्ञा, पु. *(सं. सुमनस्)* देवता, विद्वान, पंडित, फूल। वि. दयालु, सरस, सहृदय, सुन्दर, अच्छे मन वाला। स्त्री. **सुमना**।

सुमनचाप–संज्ञा, पु. यो. (सं.) कामदेव, पुष्पधन्वा।

सुमनस–संज्ञा, पु. दे. *(सं. सुमनस्)* देवता, सुमनस्। विद्वान, पंडित, फूल। वि. सहृदय, प्रसन्नचित, सुन्दर मन वाला।

सुमनित–वि. दे. *(सं. सुमणि त+ प्रत्य.)* श्रेष्ठ, मणि-जटित।

सुमरन, सुमिरन–संज्ञा, पु. दे. *(सं. स्मरण)* स्मरण, ध्यान, याद, जप, भजन।

सुमरना*†–क्रि. स. दे. *(सं. स्मरण)* ध्यान या स्मरण करना, याद करना, जपना, सुमिरन, प्रे. **रूप-सुमराना,** सुमरावना।

सुमरनी*†–संज्ञा, स्त्री. *(हि. सुमरना)* **स्मरणी,** छोटी माला, जप करने की 27 दानों वाली माला, सुमिरनी (दे.)।

सुमानिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सात वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

सुमारग–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सुमार्ग*) सुमार्ग, सुपथ, अच्छा, पंथ, सदाचार।

सुमार्ग–संज्ञा, पु. (दे.) सत्पथ, उत्तम पंथ, अच्छा रास्ता, सदाचार, उत्तम या श्रेष्ठ मार्ग। विलो. **कुमार्ग**। वि. **सुमार्गी**।

सुमालिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छा वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

सुमाली–संज्ञा, पु. *(सं. सुमालिन्)* रावण का नाना एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी कुंभकर्ण, रावण, शूर्पणखा और विभीषण की माँ थी।

सुमित्रा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राजा दशरथ की तीसरी रानी और लक्ष्मण और शत्रुघ्न जी की माता।

सुमित्रानंद-सुमित्रानंदन–संज्ञा, पु. यौ. (स.) लक्ष्मण और शत्रुघ्न जी।

सुमिरणा, सुमिरन*–संज्ञा, पु. दे. *(दे. स्मरणा)* स्मरण, जप, भजन, ध्यान।

सुमिरना–क्रि. स. दे. *(सं. स्मरण)* याद करना, समरण या

ध्यान करना। **प्रे॰ रूप–सुमिराना, सुमिरावना।**

सुमिरनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सुमिरना)* स्मरणी, जप करने की छोटी माला।

सुमुख–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु, शिव, गणेश, आचार्य, पंडित। वि॰ सुन्दर मुख शदा, मनोहर, सुन्दर, प्रसन्न, दयालु।

सुमुखी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दर मुख वाली स्त्री॰। 11 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰), दर्पण।

सुमृत, सुमृति*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्मृति) **स्मृति,** धर्म्मशास्त्र सुधि, याद।

सुमेध–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुमेधस्)* बुद्धिमान्।

सुमेधा–वि॰ दे॰ *(सं॰ सुमेधस्)* बुद्धिमान्।

सुमेर–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुमेरु)* समेरु, पहाड़।

समेरु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव समस्त पर्वतों का राजा, एक सोने का पहाड़ (पुरा॰), माला का सब से ऊपर या बीच की दाना, उत्तरीय ध्रुव, 17 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं॰) वि॰ बहुत ऊँचा, सुन्दर।

सुमेरुवृत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह कल्पित रेखा जो उत्तरीय ध्रुव से 233 अक्षांश पर है (भूगो॰)।

सुयम्–अव्य॰ दे॰ *(सं॰ स्वमयु)* आप से आप, आप, खुद व खुद।

सुयश–सज्ञा, पु॰ (सं॰) सुकीर्ति, सुख्याति, अच्छी कीर्ति, सुनाम, सुजस (दे॰)। वि॰ *(सं॰ सुयशस्)* यशस्वी। वि॰ सुयशी।

सुयोग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अच्छा संग, सुन्दर योग, अच्छा मेल, संयोग, सुअवसर, अच्छा मौका, सुजोग (दे॰)

सुयोग्य–वि॰ (सं॰) अत्यंत योग्य या लायक।

सुयोधन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कौरवों का सब से बड़ा भाई, दुर्योधन, सुजोधन (दे॰)।

सुरंग–वि॰ (सं॰) सुन्दर या अच्छे रंग का सुन्दर, मनोरम, सुडौल, रस-मय एक वर्ण का, साफ़, निर्मल, स्वच्छ, लालप संज्ञा, पु॰—नारंगी, शिंगरफ़ रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सुरंगा) बारूद से उड़ाकर पहाड़ या भूमि के तले बनाई हुई राह, किले की दीवाल के नीचे वह छेद जिसमें बारूद भर कर उसे उड़ाते हैं, शत्रुओं के जहाज़ों के नष्ट करने का एक यंत्र (आयु॰), सेंध, संधि।

सुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विबुध, देवता, सुर्य, ऋषि, मुनि, विद्वान, पंडित। संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ स्वर)* ध्वनि, स्वर। **मु॰ सुर में सुर मिलाना**–हाँ में हाँ मिलाना, चापलूसी करना।

सुरकंत–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *सुरकांत)* इन्द्र, विष्णु।

सुरक–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुर)* नाक पर भाल के आकर का एक तिलक।

सुरकना–क्रि॰ सं॰ (अनु॰) वायु-वेग से द्रव वस्तु को धीरे-धीरे ऊपर को खींचना, नाक से पीना, **सुड़कना** (दे॰)।

सुरकरी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(सं॰ सुरकरिन्)* ऐराबत, सुर-राज, देवताओं का हाथी, दिग्गज, इन्द्र, सुरराज।

सुरकांता–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवबधूटी, देवी।

सुरकानन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देव-वन, नंदन विपिन या इंद्र का बाग, देवाराम, **सुरोपवन।**

सुरकेतु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इंद्र, इंद्र या देवताओं का झंडा, देव-ध्वजा।

सुरक्षणा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुरक्षा, रखवाली भली-भाँति रक्षा करना। वि॰ **सुरक्षणीय।**

सुरक्षित–वि॰ (सं॰) जिसकी रक्षा अच्छी तरह से या भली-भाँति की गयी हो, रहित।

सुरख, सुरखा–वि॰ दे॰ (फ़ा॰) सुर्ख, लाल, सुरुख (दे॰)।

सुरखाब–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) चकवा। **मु॰ सुरख़ाब का पर लगना**–कुछ विशेषता या विचित्रता।

सुरख़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (**फ़ा॰ सुर्खी**) लालरंग, सुर्खी, ईटों का महीन चूर्ण जो इमारत बनाने के काम आता है, लाली, अरुणता, शीर्षक।

सुरखरू, सुर्खरू–वि॰ दे॰ यौ॰ (**फ़ा॰ सुर्खरू**) प्रतिष्ठित, यशस्वी या कीर्तिवान्, प्रतापी, तेजस्वी। संज्ञा, पु॰ (दे॰) सुर्ख़रुई।

सुरगाय, सुरगौ–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰) सुरधेनु, कामधेनु, सुरागाय, एक जंगली गाय।

सुरगिरी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुमेरु, **देवाद्रि सुराद्रि सुराचल।**

सुरगुरू–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वृहस्पति, जीव।

सुरगैया–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰सुर+ गो)* कामधेनु, सुरागाय।

सुरचाप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र-धनुष, सुर-धनु।

सुर-जन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) देव समूह या सूर-वृंद वि (दे॰) सुजन, सज्जन, चतुर।

सुरझना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(हि॰ सुलझना)* सुलझाना, हल होना। बिलो॰ **उरझना।**

सुरझाना, सुरझावना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(हि॰ सुलझाना)* सुलझाना, हल कराना, हल करना, खोलना। विलो॰ **सुरझाना। प्रे॰ रूप–सरझवाना।**

सुरत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मैथुन, संभोग। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्मृति) सुरति, सुधि, याद, ध्यान। वि॰ (सं॰) अति ली सुनिमान। **मु॰ सुरत विसारना (बिसरना)**–भूल जाना।

सुरतंगिनी, सुरतरंगिणी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सुर-नदी, गंगानदी, आकाश-गंगा, देव-नदी, **सुनतटनी, देवापगा।**

सुरतटनी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देव-नदी, गगन गंगा, **सुर-सुरिता।**

सुरतरु–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कल्प वृक्ष।

सुरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुर का भाव या कार्य, देवत्व देव-वृंद, सुरत्व। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सुरत)* स्मरण, याद, खयाल, ध्यान, चिंता, सुधि, चेत। वि॰ होशियार, चतुर, स्याना।

सुरतान, सुरंतान–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(अ॰ सुलतान)* सुलतान, बादशाह, राजाधिराज।

सुरति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰)भोग-विलास, प्रसंग, संभोग, काम-केलि, मैथुन। संज्ञा, स्त्री॰ द॰ *(सं॰ स्मृति)* स्मरण, सुधि, याद। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ सुरत) सूरत, रूप, आकृति, सुरति (दे॰)।

सुरति-गोपना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह नायिका जो अपनी रति-क्रीड़ा को सखियों यादि से छिपाती हो, **सुरति-संगोपना।**

सुरतिवंत–वि॰ दे॰ (सं॰) **सुरतिवान्,** कामातुर।

सुरति-विचित्रा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह नापिका जिसकी रति क्रिया अनोखी हो (आ॰)।

सुरतिय–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ *(सं॰ सुर+तिय हि॰)* देव-बधूरी।

सुरती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सुरतनगर)* पान के साथ या यों हीं खाने का तंबाकू, खैनी (प्रान्ती॰)।

सुरतीला–वि॰ दे॰ *(हि॰ सुरत+ईला प्रत्य॰)* स्मरण-कर्त्ता, सावधान, सुचेत, याददाश्त रखने वाला।

सुरतैन–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) रखी हुई स्त्री।

सुर-त्राण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देव-रक्षक, सुर-त्राता, विष्णु।

सुरत्राता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(सं॰ सुरत्रातृ)* इंद्र, देव रक्षक, कृष्ण, सुर-त्राण, विष्णु।

सुरथ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दुर्गा जी के एक सर्वप्रथम आराधक चंद्रवंशीय राजा (पुरा॰), सुन्दर रथ, जयद्रथ का एक पुत्र, एक पहाड़।

सुरदार–वि॰ दे॰ *(हि॰ सुर+ दार फ़ा॰)*सुरवर, सुरीला, जिसका स्वर अच्छा हो। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सुरदारा)* देव-नारी, देव-स्त्री, देव-दारा, सुर-बधूटी।

सुरदारा–संज्ञाए, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देव-बधूटी।

सुरदीर्घिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आकाश-गंगा।

सुरदोषी, सुरद्रोही–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सुरद्वेषी)* देवशत्रु, सुरद्वेषी।

सुरद्रुष–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुर-तरु, कल्प वृक्ष, देव-वृक्ष।

सुर-धाम–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(सं॰ सुरधामन्)* स्वर्ग, बैकुंठ, देवलोक।

सुराधिप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुराधिपति, देवनाथ, इंद्र, देवराज।

सुरधुनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गंगाजी, देव-नदी, सुर-नदी।

सुरधेनु–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कामधेनु।

सुर-नदी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवागंगा, गंगा जी, देव-नदी, आकाश-गंगा,

सुरनायक,सुरनाथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इंद्र, देवनाथ, देवराज, सुरपति।

सुरनारी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवताओं की स्त्री, देव-वधू, अमर-बधूटी।

सुरनाह–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ सुरनाथ)* सुरनाथ, देवनाथ, इन्द्र, देवराज।

सुर-निकेत, सुर-निकेतन–संज्ञा, स्त्री॰ पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्ग, वैकुंठ, अमरावती, देवालय, देव-स्थान, **सुर-सदन।**

सुर-निलय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुमेरु पहाड़।

सुरप*–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुरपति)* इन्द्र।

सुर-पति–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुराधिपति, सुरेश, इन्द्र, विष्णु।

सुर-पथ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नभ, आकाश, व्योम, गगन।

सुरपाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ सुरपालक)* इंद्र, देव-राज।

सुर-पालक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इंद्र।

सुर-पुर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्ग, देव-लोक, बैकुंठ।

सुर-बहार–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(हि॰ सुर+बहार फ़ा॰)* सितार जैसा एक बाजा विशेष।

सुर-बाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देव-बधूटी, देवांगना, सुर बधू, अमर-बधू।

सुर-बधू, सुर-बधूटी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देवागना, देव-बधूटी।

सुरवृच्छ*–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. सुर वृक्ष)* सुर-तरु, कल्पवृक्ष, सुर-विरिछ (सं.)।

सुर-बेल, सुर-बेलि, सुर-बेली–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सुरबल्की)* कल्पलता, कल्प-लच्छी, अमर बेल।

सुर-भवन–संज्ञा, पु. यौ.(सं.) देव-मंदिर, देवालय, देव-स्थान, देव-लोक, सुर-पुरी, अमरावती, सुर-भौन (दे.)।

सुरभान–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. सुर+ भानु)* सूर्य, इन्द्र।

सुरभि–संज्ञा, पु. (सं.) बसंत ऋतु, मधु, चैत्रमास, स्वर्ण, कंचन, सोना। संज्ञा, स्त्री. गौ, पृथ्वी, गायों की अधिष्ठात्री, और आदि जननी कामधेनू, मदिरा, सुरा, सौरभ, सुगंधि, तुलसी। वि. सुवासित, सुगंधित, मनोज्ञ, मनोहर, सुन्दर, उत्तम, श्रेष्ठ।

सुरभित–संज्ञा, वि. (सं.) सुवासित, सुगंधित, सौरभित।

सुरभी–संज्ञा, सत्री. (सं.) सुवास, सुगंधि, खुशबु, सौरभ, अच्छी महक, चंदन, गाय, कामधेनू, सुरागाय।

सुरभी-पुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गोलोक।

सुरभीला–वि. *(हि. सुरभि+ ईला प्रत्य.)* सुगंधि देने वाला।

सुरभूप–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विष्णु, इन्द्र। सुर-राज, सुरेश।

सुरभोग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अमृत, पीयूष।

सुर-पंडल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवताओं का मंडल, एक तरह का बाजा। स्त्री. **सुर-मंडली**।

सुरमई, सुरमयी–वि. (फ़ा.) सुरमें के रंग का, हलका नीला, सुरमे से युक्त। संज्ञा, पु. एक तरह का हलका नीला रंग, इस रंग का एक कपड़ा। वि. सुरों से युक्त।

सुर-मणि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देव-मणि, चिंतामणि, सुरमनि (दे.)।

सुरमा–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. सुरमः) एक नीले रंग का खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण आँखों में लगाया जाता है।

सुरमादानी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(फ़ा. सुरमः +दान प्रत्य.)* सुरमा रखने का शीशी जैसा एक पात्र, सुरमेदानी।

सुरमौर, सुरमौरि–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. सुर+ मौलि, मौर हि.)* विष्णु।

सुरम्य–वि. (सं.) सुरमणीक, अति अनोरम, अति सुन्दर, अत्यंत सुशोभित। संज्ञा, स्त्री. सुरम्यता।

सुर-राइ, सुर-राई*–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. सुरराज)* देवराज, विष्णु, इन्द्र।

सुर-राउ, सुर-राउ*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. सुरराज) सुरराज विष्णु इन्द्र।

सुर-राज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवराज, विष्णु, इन्द्र।

सुर-राय, सुर-राय–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. सुरराज)* देवराज, सुर-राज, विष्णु, इन्द्र।

सुर-रिपु–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दैत्य, दानव, राक्षस, असुर, **सुरारि, देवारि**।

सुर-रुख–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *नुररुक्ष)* सुर-तरु, कल्पवृक्ष।

सुर-लतिका, सुर-लता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देवलता, कल्पलता।

सुरली–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. सु+रली हि.)* सुन्दर खेल या क्रीड़ा।

सुर-लोक–(सं.) पु. (सं.) देवलोक, स्वर्ग।

सुर-वल्ली, सुर-बल्लरी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) कल्पलता, सुर-वृत्तती।

सुर-बधु–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देवांगना, सुर-बधूटी।

सुर-वृक्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सुर-तय, कल्पतरु, कल्पवृक्ष, सुर-पादप।

सुरश्रेष्ठ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवताओं में श्रेष्ठ-विष्णु, शिव, ब्रह्म, इन्द्र, सुरोत्तम।

सुरस–वि. (सं.) रसीला, सुस्वाद, स्वादिष्ट, अच्छे रस का, मधुर, सरस। (सं.) पु. दे. *(सं. स्वरस)* गीली औषधि का निकाला हुआ रस।

सुरसती, सुरसती*†–संज्ञा, स्त्री, दे. *(सं. सरस्वती)* सरस्वती, वाणी, शारदा, गिरा, सरसुती (दे.)।

सुर-सदन, सुर-सद्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवालोक, स्वर्ग, देवालाय, देवालय, देव-मंदिर।

सुर-सर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देव-ताल, मानसरोवर। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. सुरसरी) देवसरी, गंगा जी, सुरसरि।

सुरसर-सरिता–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. *(सुरसरित्)* देवनदी, गंगा जी, गोदावरी।

सुर-सुरित, सुर-सरिता–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) देवनदी, गंगाजी।

सुरसा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हनुमान जी को सिन्धु लाँघने में रोकने वाली एक नाग माता, (रामा.) एक अप्सरा। ब्राह्मीबूटी, तुलसी, दुर्गा जी, एक छंद या वृत्त (पिं.)।

सुर-साई–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ सुरस्वामी)* इन्द्र जी, विष्णु शिव जी, सुर-सैंया (दें॰)।

सुरसारी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (*सं॰ सुरसरी)* देव-नदी, गंगा जी।

सुरसाला, सुरसालु*–वि॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ सुर+सालना हि॰)* देव-पीड़क, देव-शत्रु, देवताओं को सताने वाला, सुरारि।

सुर-साहब, सुर-साहिब, सुर-साहेब–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ सुर+साहिब अ॰)* देवनाथ, देवराज, इन्द्र, विष्णु, शिव।

सुर-सुदरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवांगना, देवी, अप्सरा, दुर्गा, देवकन्या, एक योगिनी।

सुर-सुरभी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) कामधेनू।

सुरसुराना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰) शरीर पर कीड़े आदि के रेंगने से उत्पन्न खुजली, खुजली होना। संज्ञा, स्त्री॰ सुरसुराहट, सुरसुरी।

सुर-सैंया*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ सुर स्वामी)* देवनाथ, इन्द्र, विष्णु, शिव।

सुर-स्वामी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवनाथ, इन्द्र।

सुरहना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) भर आना।

सुरहरा–वि॰ (धनु॰) सुर सुर शब्द करने वाला, जिसमें सुर सुर शब्द हो।

सुरही–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ सुरभी)* सुरभी, कामधेनु। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ सोलह)* जुआ खेलने की चित्तीदार सोलह कौढ़ियाँ, इनसे खेला जाने वाला जुआ का खेल, सोलही, सोरही।

सुरांगना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवांगना, देव-पक्षी, अप्सरा।

सुरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मधु, मदिरा, शराब, मद्य, वारुणी।

सुराख–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(फ़ा॰ सराख)* बिल, छिद्र, छेद। संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ सुराग़) खोज, टोह, पता।

सुराग–संज्ञा, पु॰ *(सं॰ सु+राग)* अति प्रेम, अति अनुराग। (दे॰) सुन्दर राग, (संगीत॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ *(अ॰ सु+राग)* पता, खोज।

सुरा-गाय–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰सुर+भी)* एक प्रकार की दो नस्ल वाली गाय जिसकी झबरीली पूँछ से चँबर बनाते हैं।

सुराज, सुराजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ सुराज्य)* अच्छा राज्य। संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ स्वराज्य)* अपना या निज का राज्य। संज्ञा, पु॰ सुराजा, अच्छा राजा।

सुराज्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुख-शांति पूर्ण, सुन्दर राज्य। संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ स्वराज्य)* प्रजा-तंत्र या अपना राज्य।

सुराधिप, सुराधीश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र, देव-राज, सुरपति, सुराधीश्वर।

सुरानीक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देव-सेना।

सुराप, सुरापी–वि॰ (सं॰) मदिरा या शराब पीने वाला।

सुरापगा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देव-नदी, गंगा जी, **देवापगा**।

सुरा-पात्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मदिरा पीने या रखने का बरतन।

सुरा-पान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मदिरा पीना, **मद्यपान**।

सुरारि, सुरारी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ *(सं॰ सुरारि)* **सुराशत्रु,** देवारि, असुर, राक्षस।

सुरालय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बैकुंगठ, स्वर्ग, मंदिर, देव-भवन, देवलोक, सुमेरु, देवालय, मधुशाला, शराबख़ाना (सं॰सुरा+आलाय)।

सुरावती–संज्ञा, स्त्री॰ *(सं॰ सुराततिं)* देव-माता, अदिति *(कश्यप-पत्नी)*।

सुराष्ट्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुन्दर राष्ट्र, एक देश या राज्य *(काठियावाड़ या सूरत, मतांतर से)*।

सुरासुर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देव-दैत्य, देवासुर, देवदानव, सुर और असुर।

सुरासुर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शिव जी, कश्यप मुनि।

सुराही–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰)वाली रखने का बरतन, जोशन, बालू आदि में उगाने की सुराही के आकार की वस्तु।

सुराहीदार–वि॰ (अ॰ *सुराही+दार)* सुराही के आकार का लम्बा और गोलाकार।

सुरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) देवांगना।

सुरीला–वि॰ (हि॰ *सुर+इला प्रत्य॰)* सुस्वर पुरुष, मधुर गला और स्वर वाला, सुस्वर कंठ, मधुर स्वर वाला। स्त्री॰ **सुरीली**।

सुरुख–वि॰ दे॰ (सं *सु+रुख* फ़ा॰) प्रसन्न, अनुकूल, सदय। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **सुर्ख** (फ़ा॰) **सुरख**। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सुरुखी**।

सुरुखरु–वि॰ दे॰ (फ़ा *सुर्खरु)* यशस्वी। प्रतिष्ठित, सम्मानित, जिसे किसी कार्य में यश मिला हो।

सुरुचि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) राजा उत्तानपाद की रानी और उत्तम कुमार की माता तथा ध्रुव की विमाता. अच्छी रुचि। वि॰ जिसको उत्तम या श्रेष्ठ रुचि हो।

सुरुज-मुखी‡–वि॰ दे॰ (सं॰ *सूर्य-मुखी*) सूर्यमुखी, गेंदा का फूल, सूरजमुखी।

सुरूप–वि॰(सं॰) रूपवान, सुन्दर व्यक्ति, खूबसूरत। स्त्री॰ **सुरूपा**। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सुरूपता**। संज्ञा, पु॰ कुछ देव-व्यक्ति, कामदेव, अश्विनी कुमार, पुरूरवा, नकुल, सांब, नल-कूवर। *संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वरूप*) स्वरूप।

सुरूपता–संज्ञा, स्त्री (सं॰) सुन्दरता, खूबसूरती।

सुरूपा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दरी।

सुरूर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) **सरूर** (फ़ा॰)।

सुरेंद्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र, राजा, देवेन्द्र, सुरेश।

सुरेंद्र-चाप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्रधनुष।

सुरेंद्र-वज्रा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) त, त, ज, (गण) और दो गुरु वर्णों वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त, इन्द्र वज्रा।

सुरेश–संज्ञा, पु॰ दे॰ शिशुमार, सूँस।

सुरेश, सुरेश्वर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) इन्द्र, विष्णु, शिव, लोकपाल, कृष्ण, **सुरेसुर** (दे॰)।

सुरेश्वर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रुद्र, इंद्र, ब्रह्मा, विष्णु।

सुरेश्वरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा जी, स्वर्ग-गंगा।

सुरैत, सुरैतिन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुरति*) उपपत्नी, बैठा ली गई स्त्री, रखनी, रखैली।

सुरोचिप–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चन्द्रमा, कांतिमान।

सुर्ख़–वि॰ (फ़ा॰) लाल। संज्ञा, पु॰ गहरा लाल रंग, **सुरख**, **सुरुख** (दे॰)। संज्ञा, स्त्री॰ **सुर्खी**।

सुर्ख़रू–वि॰(फ़ा॰) जिसके मुख की कांति (लाली) किसी कार्य में सफलता न होने से रह गई हो, प्रतिष्ठित, कांतिमान, प्रतापी, तेजस्वी। संज्ञा, स्त्री॰ **सुर्ख़रूई**।

सुर्ख़ी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) अरुणिमा, लाली, लालिमा, लेख-प्रबन्धादि का शीर्षक, रक्त, लोहू, खून, ईट का चूर्ण, **सुरख़ी** (दे॰)।

सुर्ता–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुरति=स्मृति*) स्मरण, बाद, चतुर, समझदार, श्रीमान।

सुर्ती–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सुरती, तम्बाकू।

सुर्मा–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) सुरमा (नेत्रों में लगाने का)।

सुलंक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सोलंक*) क्षत्रियों की एक पदवी, **सोलंक**। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दर लंका, सुन्दर कटि।

सुलक्षण–वि॰ (सं॰) अच्छे चिह्नों वाला, भाग्यवान, गुणी, **सुलच्छन** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ शुभ लक्षण, शुभ चिह्न। सात मात्राओं पर गुरु और लघु के साथ तब विराम वाला 14 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं॰)।

सुलक्षण–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) अच्छे चिह्नों या लक्षणों वाली स्त्री।

सुलक्षणी–वि॰ स्त्री॰ (सं॰ *सुलक्षण*) सुलक्षण, **सुलच्छनी** (दे॰)।

सुलग–अव्य॰ दे॰ (हि॰ *सुलगना*) पास, निकट, समीप।

सुलगना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *सु+लगना*) दहकना, जलना, बहुत संताप होना। स॰ **रूप–सुलगना, मे॰ रूप–सुलगवाना**।

सुलच्छन–वि॰ दे॰ (सं॰ *सुलक्षण*) सुलक्षण, **सुलक्खन** (आ॰)।

सुलच्छनी–वि॰ (दे॰) **सुलक्षण** (सं॰)।

सुलछ–वि॰ दे॰ (सं॰ *सुलक्ष*) सुन्दर।

सुलझन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सुलझना*) सुलझन, सुलझना क्रिया का भाव **सुरझनि** (दे॰)। विलो॰ **उलझन**।

सुलझना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *उलझना*) उलझे हुए पदार्थ की उलझना दूर होना, मिटना या खुलना, जटिलताओं का नष्ट होना। **सुरझना** (दे॰)। सं॰ **रूप–सुलझाना,** पे॰ **रूप–सुलझवाना**।

सुलटा–वि॰ दे॰ (हि॰ *उलटा*) सीधा। स्त्री॰ **सुलटी**। विलो॰ **उलटा**।

सुलतान–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बादशाह।

सुलताना चंपा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (अ॰ *सुलताना: चंपा*) एक प्रकार के चंपा का पेड़, पुजताश।

सुलतानी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ *सुलतान*) राज्य, बादशाही, बादशाहत, एक रेशमी कपड़ा। वि॰ (दे॰) लाल रंग का।

सुलप, सुलुप*–वि॰ दे॰ (सं॰ *स्वल्प*) स्वल्प, थोड़ा, किंचित्, रंच। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सु+आलाप*) सुंदर आलाप।

सुलफ–वि॰ दे॰ (सं॰ *सु+लपना* हि॰) लचने वाला, कोमल, लचीला, लफनेवाला।

सुलफ़ा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सुल्फ़:*) बिना तवा की चिलम में भरकर पीने का तंबाकू या चरस। **मु॰ सुलफ़ा फूँकना**।

सुलफ़े बाज़–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुलफ़ा बाज फ़ा॰*) चरस या गाँजा पीने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ **सुलफ़े बाज़ी**।

सुलभ–वि॰ (सं॰) सहज, सुगम, सरलता से प्राप्त होने वाला, आसान, साधारण। संज्ञा, स्त्री॰ **सुलभता, सुलभत्व**।

सुलभ्य–वि॰ (सं॰) सहज में मिलने वाला, सुगम, सुलभ, मामूली। विलो॰ **अलभ्य**।

सुलह–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मेल-मिलाप, लड़ाई के पीछे किया गया मेल, मिलाप।

सुलहनामा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (अ॰ *सुलह+ नामः* फ़ा॰) संधि-पत्र, मेल होने का लेखपत्र, परस्पर युद्ध करने वाले राजाओं के द्वारा सुलह या मेल की शर्तों का कागज़, दो लड़ने वाले व्यक्तियों या दलों के समझौते की शर्तों का लेख।

सुलगना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सुलगना*) सुलगना, प्रज्वलित होना, **सुलुगाना**।

सुलाना–क्रि॰ स॰ (हि॰ *सोना*) शयन कराना, किसी को सोने में लगाना, लाल देना, लिटाना, **सीवाना** (दे॰)।

सुलेखक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उत्तम लेख या प्रबंध लिखने वाला, लेखक, सुलेख या सुन्दर लिखने वाला।

सुलेमान–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैग़म्बर माना गया है (यहूदी)। पंजाब और बल्यूचिस्तान के बीच का एक पहाड़।

सुलेमानी–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) सफ़ेद आँखों का घोड़ा, एक दो रंग का पत्थर। वि॰ सुलेमान संबंधी, सुलेमान का।

सुलोचन–वि॰ (सं॰) सुनयन, सुनेत्र, अच्छी आँखों वाला। स्त्री॰ **सुलोचना**।

सुलोचना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अप्सरा, मेघनाद की स्त्री, नरेश माधव की स्त्री। वि॰ (स्त्री॰) सुन्दर नेत्रों वाली।

सुलोचनी–वि॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुलोचना*) सुन्दर नेत्रों वाली सुनयनी।

सुल्तान–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *सुलतान*) बादशाह, **सुरतान** (दे॰)।

सुव–संज्ञा॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *सुत*) सुत, पुत्र, सुवन।

सुवक्ता–वि॰ (सं॰ *सुवक्त*) वाक्पटु, वाग्मी, उत्तम व्याख्यान देने वाला, अच्छा कहने वाला।

सुवचन–वि॰ (सं॰) मधुर भाषी, सुन्दर बोलने वाला। स्त्री॰ **सुवचनी**।

सुवटा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शुक*) शुक, तोता, सुग्गा, सुआ, **सुअटा** (आ॰)।

सुवन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चंद्रमा, सूर्य, अग्नि। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सुत*) सुअन, पुत्र, बेटा।

सुवरन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (स॰ *सुवर्ण*) सोना।

सुवर्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वर्ण, सोना, धन, दश माशे की एक स्वर्ण-मुद्रा (प्राचीन), धतूरा, **सुबरन** (दे॰)। एक छंद (पिं॰), 16 माशे की एक तौल। वि॰ सुन्दर वर्ण या रंग का, सोने के रंग का, पीला, उज्ज्वल, बड़ी या सुंदर जाति का।

सुवर्ण करणी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ *सुवर्ण+ करण*) एक जड़ी या औषधि जो शरीर के रंग को सुन्दर कर देती है।

सुवर्ण-रेखा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) राँची (बिहार) से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी (भूगो॰), **सुबरुन-रेख** (दे॰), सुवर्ण की रेखा (कसौटी पर)।

सुवस*–वि॰ दे॰ (सं॰ *स्ववश*) स्वतंत्र, स्वाधीन, भली-भाँति जो वश में हो, अपने यश में।

सुवाँग, सुआँग‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *स्वांग*) दूसरे का रूप बनाना, भेष, रूप, हँसी का खेल या तमाशा, अभिनय, नकल, जलने के लिए बनाया हुआ कपट-रूप।

सुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शुक*) शुक, तोता, सुग्गा, सुआ।

सुवार*‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सूपकार*) रसोइया, पाक-कर्त्ता। संज्ञा, पु॰ अच्छा दिन।

सुवास–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुगंधि, अच्छी महक, सुरभि, खुशबू, सुन्दर घर, न, ज (गण और एक लघु वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (।।।, ।ऽ।, ।–पिं॰)।

सुवासिका–वि॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुवासिक*) सुवास देने वाली, सौरभीली।

सुवासित–वि॰ (सं॰) सुरभित, सुगंधित, खुशबूदार।

सुवासिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) युवावस्था में भी पिता के घर पर रहने वाली थो, चिरंटी (प्रान्ती॰) सधवा की, **सुआसिन** (दे॰)।

सुविचार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अच्छा विचार, सुन्दर न्याय या निर्णय, श्रेष्ठ भाव या मत।

सुविज्ञ–वि॰ (सं॰) अति चतुर, प्रवीण, पंडित, विद्वान। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **सुविज्ञता**।

सुविधा–संज्ञा॰ स्त्री॰ (सं॰) सुभीता, समाई।

सुवृत्ता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अप्सरा, 19 वर्णों वाला एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

सुवेल–संज्ञा, पु॰ (सं) लंका का त्रिकूटाचल (रामा॰)।
सुवेष–वि॰ दे॰ (सं॰ *सुदेश*) सुन्दर, सुसज्जित, सुन्दर वेश-युक्त।
सुवेषित–वि॰ दे॰ (सं॰ *सुवेश*) सुसिज्जत, सुन्दर वेश-युक्त।
सुवेसउ–वि॰ दे॰ (सं॰ *सुवेश*) मनोहर, सुन्दर, सुवेश-युक्त।
सुव्रत–वि॰ (सं॰) सुदृढ़ता से मत का पालन करने वाला।
सुशिक्षित–वि॰ (सं॰) भली-भाँति शिक्षा प्राप्त, भली-भांति सीखा हुआ। स्त्री॰ **सुशिक्षिता**। संज्ञा, स्त्री॰ **सुशिक्षा**।
सुशील–वि॰ (सं॰) उत्तम स्वभाव वाला, शीलवान, साधु, सज्जन, विनीत। स्त्री॰ सुशील। संज्ञा, स्त्री॰ **सुशीलता**।
सुशृंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शृंगी ऋषि, सुन्दर शृंग या सींग वाला।
सुशोभन–वि॰ (सं॰) अति सुन्दर, दिव्य, अति शोभनीय। वि॰ **सुशोभनीय**।
सुशोभित–वि॰ (सं॰) अति शोभायमान, अत्यन्त शोभित।
सुश्राव्य–वि॰ (सं॰) जो सुनने में प्रिय लगे, श्रुति-प्रिय।
सुश्री–वि॰ (सं॰) अतिशोभित, शोभायुक्त, अत्यन्त सुन्दर या धनी, कांतिमान, स्त्रियों के किए प्रयुक्त सम्मान सूचक शब्द।
सुश्रुत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुप्रसिद्ध सुश्रुत-संहिता के रचयिता एक प्रमुख आयुर्वेदाचार्य, उनका ग्रंथ।
सुश्रूखा–(वि॰) सुश्रूषा*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शुश्रूषा*) सेवा, परिचर्य्या, टहल, खुशामद। यौ॰ **सेवा-सुश्रूषा**।
सुश्लोक–वि॰ (सं॰) यशस्वी, विख्यात, प्रसिद्ध, धर्मात्मा।
सुषमना-सुषमनि*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुषुम्ना*) एक नाड़ी (हठ योग)।
सुषमा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अति शोभा, अति सुन्दरता, **सुखमा** (दे॰)। 10 वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं॰)।
सुषिर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बेंत, बाँस, अग्नि, वायु-वल के बजने वाला एक बाजा। वि॰ पोला, छिद्रयुक्त, छेददार।
सुषुप्त–वि॰ (सं॰) गहरी निद्रा से युक्त, गहरी नींद में सोया हुआ, अति निद्रित। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुषुप्ति*) सोने की दशा या अवस्था।
सुषुप्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) घोर निद्रा, गहरी नींद, अज्ञान (वेदा॰), चार अवस्थाओं में से एक अवस्था, चित्त की वह अनुभूति या वृत्ति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता हुआ भी उसका ज्ञान नहीं रखता (पा॰ योग॰)।
सुषुआ–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शरीर की तीन प्रमुख नाड़ियों में से नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित रहने वाली एक नाड़ी (हड योग), 14 प्रमुख नाड़ियों में से नाभि के मध्य में स्थित एक नाड़ी (वैद्य॰)
सुषेण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु, राजा परीक्षित का एक पुत्र, वरुण-पुत्र एक बानर जो अंगद का नाना और सुग्रीव का राजवैद्य था, सुखेन (दे॰)।
सुष्ठ–क्रि॰ वि॰ (सं॰) भली भाँति, अच्छी तरह। वि॰ सुन्दर, उत्तम, भला, अच्छा। संज्ञा, पु॰ **सौष्ठव**। विलो॰ दुष्ट।
सुष्ठता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दरता, सौभाग्य, सोष्ठव।
सुष्मना*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुषुम्ना*) सुषुम्ना नाड़ी।
सुसंग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सुसंगति*) सत्संग, अच्छा साथ, अच्छी मित्रता या संगति, अच्छों का साथ या संग। विलो॰ **कुसंग**।
सुसंगति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सत्संगति, अच्छों का संग या साथ, सुसंग, अच्छों की मैत्री, अच्छी संगति।
सुस–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *स्वसृ*) बहिन।
सुसकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सिसकना*) सिसकना, रोना।
सुसज्जित–वि॰ (सं॰) अलंकृत, भली-भाँति सजाया हुआ, अति सजा हुआ, अत्यन्त शोभायमान।
सुसताना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (फ़ा॰ *सुस्त*) थकावट मिटाना, विश्राम या आराम करना, दम लेना।
सुसती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *सुस्ती*) सुस्ती, ढीलापन।
सुसमय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुकाल, **सुसमै** (दे॰) सुभिक्ष, अच्छा समय। विलो॰ **कुसमय**।
सुसमा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुषमा*) सुषमा, शोभा, सुन्दरता।
सुसमुझि, सुसामुझि*–वि॰ दे॰ (हि॰ *समझ*) बुद्धिमान, अक्ल, अच्छी समझ।
सुसर, सुसरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्वसुर*) श्वशुर, ससुर, पति या पत्नी का पिता।
सुसराल, सुसुराल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्वशुरालय*) ससुर का घर या गाँव, **ससुरार, ससुरारि** (दे॰)।
सुसरित, सुसरिता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰) गंगा नदी, अच्छी नदी।
सुसरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *ससुरी*) सासु पत्नी या पति की

माता। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सुरसरी*) गंगा नदी।

सुसा*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्वसृ) बहन, बहिन। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक चिड़िया।

सुसाध्य–वि॰ (सं॰) सुख-साध्य, जो सहज या सरलता से किया जा सके, आसानी से हो। संज्ञा, स्त्री॰ **सुसाध्यता**।

सुसाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *साँस*) सिसकना।

सुसिद्धि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अलंकार जहां करता तो कोई है और फल दूसरा भोगता है (साहि॰)। श्रम या उद्योग कोई करे, फल कोई पावे। वि॰ (सं॰) **सुसिद्ध**–सुप्रमाणित।

सुसीतलाई*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सुशीतलता) **सुशीतलता**, सुन्दर ठंडक, **सुसितलाई** (दे॰)।

सुसुकना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सिसकना*) सिसकना, रोना, **सुसकना** (दे॰)।

सुसुप्ति*–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सुपुप्ति** (सं॰) गहरी निद्रा। वि॰ (दे॰) **सुसुप्त**।

सुस्त–वि॰ (फ़ा॰) मंदगति वाला, आलसी, ढीला, चिन्तादि से निस्तेज, उदासीन, हतप्रभ, धीमा, तत्परता-रहित, जिसकी तेज़ी या गति धीमी हो गई हो।

सुस्तना, सुस्तनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुन्दर स्तनों वाली, **मनोज्ञयौवना**।

सुस्ताई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *सुस्ती*) शिथिलता, सुस्ती, आलस्य, थकावट।

सुस्ताना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (फ़ा॰ *सुस्ती*) **सुसताना**–(दे॰) विश्राम का आराम करना, थकाई मिटाना।

सुस्ती–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) आलस्य, ढीलापन, शिथिलता।

सुस्तैन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वस्त्ययन*) स्वस्त्ययन, मंगल कार्य में पढ़े जाने वाले स्वस्तिवाचक वेद-मंत्र।

सुस्थ–वि॰ (सं॰) आरोग्य, तंदुरुस्त, नीरोग, भला चंगा, प्रसन्न, भले प्रकार स्थित या ठहरा हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ **सुस्थता, सुस्थत्व**।

सुस्थिर–वि॰ (सं॰) अविचल, अतिदृढ़, या स्थिर, भली-भाँति ठहरा हुआ। स्त्री॰ **सुस्थिरा**। संज्ञा, स्त्री॰ **सुस्थिरता**।

सुस्वर–वि॰ (सं॰) सुरीला, सुकंठ, मधुर स्वर वाला। स्त्री॰ **सुस्वरा**। संज्ञा, स्त्री॰ **सुस्वरता**।

सुस्वादु–वि॰ (सं॰) अत्यन्त स्वादिष्ट, अति स्वाद युक्त, बहुत मज़ेदार **सुसवाद** (दे॰)।

सुहबत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) संग, साथ, सोहबत। वि॰ **सुहबती**।

सुहव–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सोहन*) सूहाराग (संगी॰)।

सुहवी*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सूहा*) सूहाराग (संगी॰)।

सुहाई–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहाना*) अच्छी लगना, शोभा देना।

सुहाग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सौभाग्य*) अहिवात, सौभाग्य, **सोहाग** (दे॰), सधवा रहने की दशा, विवाह में वर का जामा, स्त्रियों के गाने का मंगल गीत (वर-पक्ष)।

सुहागा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सुभग*) गर्म गंधकी स्रोतों से निकला एक प्रकार का क्षार, **सोहागा**।

सुहागिन, सुहागन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ सुहाग, सं॰ *सौभाग्य*) सधवा स्त्री, सौभाग्यवती, **सोहागिन, सोहागिनी** (दे॰)।

सहागिनि, सुहागिनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सौभाग्यवती*) सौभाग्यवती, सधवा स्त्री, अहिवाती, **सोहागिनी**।

सुहागिल–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सुहागिन, सधवा, सौभाग्यवती।

सुहाता–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहाना*) प्रिय, जो अच्छा लगे, सहने योग्य, सह्य, **सोहाता** (दे॰)।

सुहाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *शोभन*) शोभा देना, अच्छा लगना, भला जान पड़ना। वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहावना*) सुहावना, **सोहाना** (दे॰)।

सुहाय*–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहावना*) सुहावना, सुन्दर, सोहाया (दे॰)।

सुहारी, सुहाली‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सु+आहार*) पूड़ी, पूरी, **सोहारी** (दे॰)।

सुहाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सुहारी*) एक प्रकार की नमकीन पूड़ी या पकवान।

सुहाय*–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहावना*) सुहावना, प्रिय। संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सु+हाव*) सुन्दर हाव।

सुहावता‡–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहावन*) सुहावना, अच्छा लगने वाला।

सुहावन, सुहावना*–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहाना*) मनोरम, अच्छा लगने वाला, सुन्दर, शोभित, प्रिय, प्रिय दर्शन। स्त्री॰–**सुहावनी**। क्रि॰ अ॰ सुहाना, अच्छा लगना।

सुहावल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सहावल।

सुहावा–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहावना*) शोभित, प्रिय, सुहावना, सुन्दर, मनोरम।

सुहास–वि॰ (सं॰) मधुर या सुन्दर हँसी वाला। स्त्री॰–**सुहासा**। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) सुन्दर हास।

सुहासी–वि॰ (सं॰ *सुहासिन्*) सुन्दर या मधुर हँसी वाला, चारुहासी, अच्छा हँसने वाला। स्त्री॰ **सुहासिनी**।

सुहृत्, सुहृद्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मित्र, सखा, साथी, जिसका मन अच्छा हो। संज्ञा, स्त्री॰ **सुहृता**। विलो॰ दुहृत् दुहृद्।

सुहेल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) एक शुभ तारा (खगो॰)। वि॰ शुभ, सुखद, सुन्दर।

सुहेलरा–वि॰ दे॰ (सं॰ *शुभ*) सुन्दर, सुहावना, सुखद।

सुहेला–वि॰ दे॰ (सं॰ *शुभ*) सुन्दर, सुहावना, सुखद, रुचिर। संज्ञा, पु॰ स्तुति। मांगलिक गीत।

सूँगरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) भैंस का बछड़ा, पड़वा।

सूँघना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सघ्राणा*) महक या बास लेना, सुगंधि लेना। **मु॰ सिर सूँघना**–मंगल कामना या प्रेमादि से बड़े लोगों का छोटों का सिर सूँघना। बहुत ही कम भोजन करना (व्यंग), साँप का काटना।

सूँघनी, सुँघनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सुँघना*) हुलास, नास।

सूँघा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सूँघना*) पुरुष जो केवल सूँघकर बतावे कि इस स्थान पर पृथ्वी के नीचे पानी है या धन; जासूस, भेदिया।

सूँट–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मौन, चुप्पी, अवाक।

सूँड़, सूँड़ि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शुण्ड*) हाथी की लम्बी नाक, शुंडादंड, शुंड।

सूँड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शुंडी*) एक प्रकार का छोटा कीड़ा। पु॰ **सूँड़ा**।

सूँस, सूस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शिशुमार*) **सूईस, सुइस** (आ॰)। मगर की जाति का एक बड़ा जल जंतु।

सूँह–अव्य॰ दे॰ (सं॰ *सम्मुख*) सम्मुख, सामने, आ, **सौंह** (अ॰)।

सूँही–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार का रंग।

सूअर, सुअर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शूकर*) सुवर, सूकर (दो भेद 1-वनैला, 2-पालतू), एक गाली, एक स्तनधारी जंतु। स्त्री॰ **सूअरी, सुअरिया**।

सूआ, सूआ‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शुक*) शुक, **सुषा** (दे॰) सुग्गा, तोता। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि *सुई*) बड़ी सूई, सूजा।

सूई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सूची*) एक ओर छोटे छेद तथा दूसरी ओर नोकदार एक पतले तार का टुकड़ा जिससे सीते हैं। सूजी, **सुई, सूची**, अन्नादि का अँखुआ, किसी बात का सूचक काँटा या तार।

सूकर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शूकर, सुअर।

सूकरक्षेत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक प्राचीन तीर्थ सोरौं, सूकरखेत (दे॰)।

सूकरा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सूअर की मादा।

सूक्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वेद-मंत्रों का समूह, श्रेष्ठ कथन। वि भले प्रकार कहा हुआ, सुकथित।

सूक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) श्रेष्ठ उक्ति या कथन, सुन्दर पद या वाक्यादि।

सूक्ष्म–वि॰ (सं॰) अति लघु, छोटा, महीन या बारीक, संक्षिप्त। संज्ञा, स्त्री॰ सूक्ष्मता। संज्ञा, पु॰ परब्रह्म, परमाणु, लिंग शरीर, एक अलंकार जहाँ सूक्ष्म चेष्टा से चित्त-वृत्ति के दिखाने या लक्षित करने का कथन हो।

सूक्ष्मता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सूक्ष्मत्व, बारीकी, महीनपन, स्वरूपता, अणुता। क्रि॰ वि॰ सूक्ष्मतः, सूक्ष्मतया।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) खुर्दबीन जिससे छोटे पदार्थ बड़े दीख पड़ते हैं। (अं॰) माईक्रोस्कोप।

सूक्ष्मदर्शिता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कठिन या बारीक बातों के सोचने या समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी–वि॰ (सं॰ *सूक्ष्मदर्शिन्*) कठिन, गूढ़ या बारीक बातों का समझने वाला, तीव्र बुद्धि।

सूक्ष्मदृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) ऐसी बुद्धि जिससे गूढ़ और कठिन बातें या विषय भी शीघ्र समझ लिए जावें। संज्ञा, पु॰ (सं॰) **सूक्ष्मदर्शी**।

सूक्ष्मशरीर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियों, पाँच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि का समूह।

सूखछड़ा–संज्ञा, स्त्री॰(दे॰) क्षयी रोग, यक्षमारोग।

सूखना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शुष्क*) किसी पदार्थ से नमी या तरीका निकल जाना, आर्द्रता या गीलापन न रहना, रस-हीन हो जाना, पानी का नाश या कम हो जाना, **झुरना** (आ॰), उदास या मलिन होना, तेज या कांति का नष्ट हो जाना, करना, सन्न होना, कृश या दुर्बल

होना, नष्ट होना। स॰ **रूप–सुखाना, प्रे॰ रूप–सुखवाना।**

सूखा–वि॰ दे॰ (सं॰ *शुष्क*) शुष्क, जिसकी नमी, तरी या पानी नष्ट हो गया हो या जाता रहा हो, कोरा, उदास, कांति-हीन, कठोर, कड़ा, क्रूर, हृदयहीन, नीरस, निर्दय, निरा, कोरा, केवल। स्त्री॰ **सूखी। मु॰ सूखा (कोरा) जवाब देना**–साफ़-साफ़ नाहीं कर देना, साफ़ इनकार करना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) तम्बाकू का सूखा पत्ता, अनावृष्टि, पानी ना बरसना, जल-हीन स्थान, नदी-तट, एक खाँसी, हब्बा-डब्बा रोग, लड़कों का एक रोग, **सुखंडी।**

सूचक–वि॰ (सं॰) बताने या सूचना देने वाला, बोधक, ज्ञापक। स्त्री॰ **सूचिका**। संज्ञा, पु॰ सूची, सुई, दर्ज़ी, सीने वाला, कुत्ता, सूत्रधार, नाटककार।

सूचना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विज्ञप्ति, विज्ञापन, इश्तहार, किसी को बताने, सावधान करने या जताने की बात, किसी को सूचित की जाने वाली बात का कागज़ या पत्र, चेतावनी, नोटिस (अं॰)। *क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *सूचना*) बतलाना, छेदना, बेधना।

सूचना-पत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विज्ञप्ति, इश्तहार (फ़ा॰), विज्ञापन, **नोटिस** (अं॰)।

सूचा–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सूचना*) सूचना, विज्ञप्ति, विज्ञापन। संज्ञा, †स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सुचित्त*) सावधान, सचेत, सुचित्त।

सूचिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुई, हस्ति-शुंड, हाथी की सूँड़, तालिका, सूची (सं॰ सूची)।

सूचिकाभरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सन्निपात आदि मारक रोगों की अन्तिम महौषधि (वैद्य॰)।

सूचित–वि॰ (सं॰) ज्ञापित, प्रकाशित, जताया या प्रकट किया हुआ, जिससे या जिसकी सूचना दी गई हो सूचना प्राप्त।

सूचा–संज्ञा, पु॰ (सं॰ *सूचिन्*) भेदिया, चर, गुप्तदूत, चुगलखोर, दुष्ट, खल। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दृष्टि, कपड़ा सीने की सुई, सेना का एक व्यूह, तालिका, सूत्रीपत्र, मात्रिक छंद भेदों में आद्यत लघु या गुरु की संख्या जानने की एक रीति या विधि (पिं॰)।

सूचाकर्म–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *सूचीकर्मन्*) दरज़ी का सिलाई का काम, सुई का काम, **सुईकारी।**

सूचापत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह छोटी पुस्तक आदि जिसमें एक ही भाँति के अनेक पदार्थों अंगादि की क्रम से नामावली हो, सूची, तालिका, **फेहरिस्त।**

सूच्यार्थ–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जो अर्थ शब्दों की व्यंजना-शक्ति से ज्ञान हो।

सूज, सूजन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सूजन*) शोथ, फुलाव, सूजने का भाव।

सूजना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (फ़ा॰ *सोजिश*) चोट आदि के कारण शरीर के किसी अवयव का फूल उठना, फूलना, शोथ होना, **उसुवाना** (आ॰)।

सूजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सूची*) बड़ी और मोटी सुई, सूआ।

सूज़ाक–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) मूत्रकृच्छ्र रोग, दाह और पीड़ायुक्त एक मूत्रेन्द्रिय रोग, औपसर्गिक प्रमेह, सूज़ाक (दे॰)।

सूजाख़–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सूज़ाक*) सूजाक रोग, मूत्र-कृच्छ।

सूजी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शुचि*) गेहूँ का मोटा आटा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सूची*) सुई। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सूची*) दरज़ी, सूचिक।

सूझ–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सूझना*) दृष्टि, निगाह, नज़र, सूझने का भाव। यौ॰ **सूझ-बूझ**–समझ, बुद्धि, ज्ञान, अक्ल, अनोखी कल्पना, उपज, उद्‌भावना।

सूझना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *संज्ञान*) देख पड़ना, दिखलाई देना, दृष्टि या समझ में आना छुट्टी पाना, ध्यान का ख़्याल में आना, ज्ञात होना। सं॰ **रूप–सुझाना, प्रे॰ रूप–सुझावना, सुझवाना।**

सूटा‡–संज्ञा, पु॰ (*अनु॰*) गाँजे या तम्बाकू आदि के धुआँ को वेग से खींचना।

सूत, सूता–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सूत्र*) रुई, रेशम या ऊन का महीन तार, तागा, डोरा, धागा, सूत्र, तंतु, डोरी, नापने का एक मान, लकड़ी, पत्थर आदि पर चिह्न करने की डोर, (वढ़ई, राज, संगतराश)। लो॰–**"सूत न कपास कोरियों में लट्ठम लट्ठा।" मु॰ सूत धरना**–चिह्न बनाना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) निशान, खोज, पता। **मु॰ सूत मिलना**–पता या चिह्न मिलना। **सूत में सूत मिलना (बैठना)**–बात पर बात मिलना, जैसे को तैसा मिलना। संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक वर्ण-संकर जाति। स्त्री॰ **सूती**। रथ चलने या रथ हाँकने वाला, सारथी, चारण, भाट, बदीजन,

पौराणिक, पुराण वक्ता, कथा-वाचक, वढ़ाई, सूत्रधार, सूत्रकार, सूर्य। वि॰ (सं॰) प्रसूत, उत्पन्न। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सूत्र) अल्प शब्दों किन्तु अधिक अर्थ वाला वचन, पद या शब्द समूह। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सूत्र=सूत*) अच्छा, भला। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सुत*) लड़का, बेटा।

सूतक—संज्ञा, पु॰ (दे॰) जन्म, किसी के उत्पन्न होने या मरने से जो अशौच कुटुंबियों को होता है।

सूतक-गेह—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *सूतिकागृह*) **सूतिकागार, सूतिकालय**, ज़च्चाख़ाना, प्रसूता स्त्री के रखने का स्थान।

सूतकाघर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) सूतिका का स्थान, सूतिकागृह।

सूतकी—वि॰ (सं॰ *सूतकिन्*) वह पुरुष जिसे सूतक लगा हो, जिसके घर या वंश में कोई उत्पन्न या मरा हो।

सूतधार—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सूत्रधार*) सूत्रधार (नाटक॰) बढ़ई।

सूतना—क्रि॰ अ॰ (दे॰) सोना, नींद लेना। स॰ रूप—**सूताना**।

सूतपुत्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सारथि, सारथी कर्ण।

सूता—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सूत्र*) डोरा, सूत, तंतु। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) **प्रसूता**।

सूति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) प्रसूत, जन्म, पैदाइश, जनन, उत्पत्ति का स्थान या घर, उद्‌गम।

सूतिका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ऐसी स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना हो, जच्चा (फ़ा॰)।

सूतिकागार, सूतिकागृह—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रसवभवन, **सौर, सोधर** (दे॰), सूतिकालय, ज़च्चाख़ाना (फ़ा॰)।

सूति—वि॰ दे॰ (हि॰ *सूत*) सूत से बुना या बना हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शुक्ति*) सीपी, शुक्ति।

सूत्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूत, तागा, धागा, ढोरा, जनेऊ, यज्ञोपवीत, लकीर, रेखा, कटि-भूषण, कटि सूत्र, करधनी। करगता (प्रान्ती॰), व्यवस्था, नियम, थोड़े अक्षरों में कहा हुआ ऐसा शब्द या शब्द समूह जो अधिक अर्थ प्रकट करे, सुराग़, पता। यौ॰ **सूत्रपात**।

सूत्रकार—संज्ञा, पु॰ (दे॰) सूत्र-रचयिता, सूत्रों का रचने या बनाने वाला, जुलाहा, बढ़ई, कुविंद।

सूत्र-ग्रंथ—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वे पुस्तकें जो सूत्रों में हों, जैसे—योग-सूत्र।

सूत्रधर, सूत्रधार—संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाट्यशाला का प्रमुख नट या व्यवस्थापक, बढ़ई, एक वर्णसंकर जाति (पुरा॰), काष्ठ-शिल्पी।

सूत्रपात—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रारंभ। दाग बेलि।

सूत्रपिटक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बौद्ध-सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह-ग्रंथ।

सूत्रात्मा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *सूत्रात्मम्*) जीव, जीवात्मा।

सूथन, सूथना—संज्ञा, पु॰ (दे॰) ढीला पायजामा, **सुथना, सुत्थन** (दे॰)।

सूथनी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छोटा पायजामा, **सुथनिया, सुथनी** (दे॰)।

सूद—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) ब्याज, लाभ, नफ़ा, वृद्धि। **मु॰ सूद दर सूद**—चक्रवृद्धि ब्याज, ब्याज पर ब्याज। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शूद्र*) नीच जाति।

सूदन—वि॰ (सं॰) नाश करने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) हनन, बधन, मारने या वध करने का कार्य, फेंकना, अंगीकरण।

सूदना—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं सूदन) नाश करना, मार डालना या वध, हनना।

सूदी—वि॰ (फ़ा॰) ब्याज पर उठा धन, ब्याजू।

सूद्र—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शूद्र*) शूद्र, नीच, जाति।

सूध, सूधा*—वि॰ दे॰ (हि॰ *सीधा*) ऋजु, सीधा, सरल।

सूधना*—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शुद्ध*) सिद्ध होना, सत्य या ठीक होना। सं॰ **रूप—सुधाना**—सीधा करना, **सुधियाना**।

सूधे—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *सीधा*) सीधे, सौधे से। वि॰ (दे॰) **सूधा** का बहुवचन।

सून—संज्ञा, पु॰ (सं॰) जनन, प्रसव, पुत्र, कलिका, फूल, फल। *†संज्ञा, पु॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *शून्य*) शून्य, सूना, ख़ाली।

सूना—वि॰ दे॰ (सं॰ *शून्य*) शून्य, ख़ाली, निर्जन, सुनसान। स्त्री॰ **सूनी**। संज्ञा, पु॰ एकांत, निर्जन स्थान। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कन्या, बेटी, पुत्री, क़साईख़ाना, हत्या-स्थान, गृहस्थ-घर में जीव-हिंसा की सम्भावना के स्थान, चूल्हा-चक्की आदि, घात, हत्या।

सूनापन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि *सूना+पन प्रत्य॰*) सन्नाटा, सूना होने का भाव।

सुनु—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुत्र, लड़का, बेटा, संतान, अनुज, छोटा भाई, दौहित्र, नाती, सूर्य, भानु।

सूप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्की दाल या उसका रसा, रसेदार

तरकारी, व्यंजन, रसोइया, वाण, पाचक। संज्ञा, पु. दे. (सं *शूर्प*) अन्न फटकने या पछोरने का सींक, सरई या बाँस का छात्र, सूपा। लो.–"लाला परे सूप के कौन"– कहा.। (अं.) सब्जियों का डब्बा रस, सूप।

सूपक–संज्ञा, पु. (सं.) सुवार, रसोइया, रसोई बनाने वाला, **रोटकरा** (आ.)।

सूपकार–संज्ञा, पु. (सं.) सुवार, पाचक, रसोइया।

सूपच*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *श्वपच*) श्वपच, डोमार, डोम, **सुपच** (दे.)।

सूपनखा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शूर्पणाखा*) शूर्पणखा।

सूपशास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **सूप-विद्या,** पाक-शास्त्र, पाक-विद्या या कला।

सूपा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूर्प*) अन्न पछोरने का सूप।

सूफ़–संज्ञा, पु. (अ.) ऊन, पश्म, देशी काली स्याही की दवात में डालने का लत्ता।

सूफ़ी–संज्ञा, पु. (अ.) उदार मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय। (ला.) शुद्ध सात्वकी वृत्ति का पुरुष।

सूबा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) किसी देश का एक भाग, प्रदेश, प्रांत। वि. (दे.) सूबेदार।

सूबेदार–संज्ञा, पु. (फ़ा.) प्रांत या प्रदेश का शासक, सूबे का हाकिम, सेना में एक छोटा ओहदा, गवर्नर (अं.) आधुनिक राज्यपाल।

सूबेदारी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) सूबेदार का ओहदा, प्रांताधीश का पद या कार्य।

सूम–वि. दे. (अ. *शूम*) कंजूस, कृपण, मूँज़ी। संज्ञा, स्त्री. **सूमता, सूमताई, सूमई**।

सूर–संज्ञा, पु. (सं.) अर्क, सूर्य, मदार, आचार्य, पंडित (दे.). सूरदास; अंधा, 16 गुरु और 120 लघु वाले छप्पय छंद का 55वाँ भेद (पिं.)। स्त्री. **सूरी**। *†संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूर*) बहादुर, वीर। *†संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूकर*) सुअर, भूरे रंग का घोड़ा। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूल*) बरछी, भाला, पेट का दर्द। संज्ञा, पु. (दे.) पठानों की एक जाति।

सूरकांत–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सूर्यकांत*) मार्तंड-मणि, सूरजमुखी या आतशी शीशा, एक तरह का बिछौर या स्फटिक।

सूर-कुमार–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शूरसेन+कुमार*) शूरसेन के पुत्र, वसुदेव जी।

सूरज–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सूर्य*) सूर्य। **मु. सूरज पर थूकना या धूल फेंकना**–किसी निर्दोष या साधु को दोष लगाना। **सूरज को दीपक दिखाना**–बड़े भारी गुणी को सिखाना, सुविख्यात व्यक्ति का परिचय देना। संज्ञा, पु. (सं.) शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण राजा, सूरदास। संज्ञा, पु. दे. (सं *सूरज*) वीर-पुत्र, शूरपुत्र।

सूर-तनया, सूर-तनुजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) सूर्य तनया, सूर्य सुता, सूर्य तनजा, सूर्य-तनूजा, यमुना।

सूरज-मुखी–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सूर्यमुखी*) दिन में सूर्य की ओर मुख रखने और सूर्यास्त या संध्या में नीचे झुक जाने वाले पीले फूल का एक पौधा, एक प्रकार की आतिशवाज़ी, एक तरह का पंखा या छत्र, आतशी शीशा।

सूरज-सुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सूर्यसुत*) सूर्यात्मज, सुग्रीव कर्ण, शनि, यम।

सूरज-सुता–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *सूर्यसुता*) सूर्यसुता, यमुना जी, तरनि तनूजा, भानुजा, रविजा।

सूरत, सूरति–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) शक्ल, आकृति, रूप। **मु. सूरत विगड़ना**–मुँह का रंग फीका पड़ना। **सूरत बनाना**–रूप बनाना, भेस बदलना, नाक-भौं सिकोड़ना, मुँह बनाना। **सूरत दिखाना**–सम्मुख आना। सुंदरता, सौंदर्य, छवि, छटा, शोभा, युक्ति, उपाय, ढंग, दशा, अवस्था। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्मृति*) स्मरण, सुधि। वि. दे. (सं. *सुरत*) अनुकूल, कृपालु। संज्ञा, गुजरात का एक नगर। संज्ञा, स्त्री. (अ. *सूरः*) कुरान का अध्याय।

सूरता-सूरताई–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. **शूरता**) शूरता, वीरता, बहादुरी।

सूरति–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *सूरत*) सूरत, शक्ल, आकृति। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सुरति*) **सुरति** (दे.), स्मरण, सुधि।

सूरदास–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रसिद्ध सिद्ध कृष्ण-भक्त तथा हिन्दी के महाकवि जो अंधे थे।

सूर्यनंदन–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *सूर्यनंदन*) सूर्य सुत शनि। स्त्री. **सूरनंदिनी** (युमना)।

सूरन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सूरण*) ज़मीकद, एक कंद विशेष, **आल** (प्रान्ती.)।

सूर-पुत्र, सूर-पूत (दे.)–संज्ञा, पु. (सं.) यम, शनि, सुग्रीव, कर्ण, **सूर-नंदन**।

सूर-वीर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शूरवीर*) बहादुर पुरुष।

सूरमा–संज्ञा, पु. दे. (सं. **शूरमानी**) योद्धा, वीर, बहादुर।

सूरमापन–संज्ञा, पु. दे. (हि.) शूरमा, वीरता, बहादुरी, वीरत्व।

सूरमुखी–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं.) सूर्यमुखी, सूरजमुखी।

सूरमुखी-मुनि‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सूर्यकांतमणि*) सूर्यकांतमणि, आतशी शीशा।

सूरवाँ‡–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सूरमा*) सूरमा, वीर, सूर।

सूर-सावंत, सूर-सामंत–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शूर+सामंत*) सेनापति, युद्ध-मंत्री, सरदार, नायक।

सूर-सुत–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सूर्य+सुत*) शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण।

सूर-सुना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रविजा, यमुना जी, भानुजा।

सूर-सुषन, सूर-सुअन–संज्ञा, पु. दे. यौ. (*सूर्यसुत*) सूर्य-पुत्र।

सूरसेन*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूरसेन*) वसुदेव जी के पिता।

सूरसेनपुर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शूरसेन पुर*) मथुरा नगरी।

सूरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सूर*) सूरदास, अंधा, शूर, वीर, एक कीड़ा। (प्रा.) एक लोकगीत, होली (ब्रज)।

सूराख़–संज्ञा, पु. (फ़ा.) बिल, छेद, छिद्र।

सूरि–संज्ञा, पु. (सं.) ऋत्विज, यज्ञ कराने वाला, विद्वान् आचार्य, पंडित, सूर्य, कृष्ण।

सूरी–संज्ञा, पु. (सं. *सूरिन्*) पंडित, विद्वान। संज्ञा, स्त्री. (सं.) पंडिता, विदुषी, कुंती, सूर्य-पत्नी। *†संज्ञा, स्त्री. (दे.) सूली, शूली (सं.)। *†संज्ञा, पु. दे. (सं. *शूल*) भाला, बरछी।

सूर्पणखा, सूर्पनखा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सूर्पणखा*) सूर्पणखा, सूपनखा, रावण की बहिन।

सूर्य–संज्ञा, पु. (सं.) **सूरज** (दे.), मार्तंड, अके भास्कर, भानु रवि, आदित्य, दिवाकर, दिनकर, प्रभाकर आकाश में ग्रहों के बीच सबसे बड़ा एक ज्वलंत पिंड जिसकी परिक्रमा सब ग्रह करते तथा जिससे गर्मी और प्रकाश पाते हैं, आक, मदार, बारह की संख्या, **सूरज, सुरिज, सूरिज** (दे.)। स्त्री. **सूर्या, सूर्याणी**।

सूर्यकांत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूरजमुखी, शीशा, आतशी शीशा, एक तरह का बिछौर या स्फटिक। यौ. सूर्यकांतमणि। (अं.) सदी।

सूर्यकन्या, सूर्यकन्यका–संज्ञा, स्त्री यौ. (सं.) यमुना।

सूर्यग्रहण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य का ग्रहण जब सूर्य चंद्रमा की छाया में आता है, **सूरजगहन** (दे.)।

सूर्य-तनय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्यनंदन, सूर्य पुत्र कर्णादि।

सूर्य-तनया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यमुना, रवि-तनया।

सूर्य-तापिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक उपनिषद्।

सूर्यनंदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य-सुत। स्त्री. **सूर्यनंदिनी**–यमुना।

सूर्य-पत्र–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सूर्य-प्रिया, संज्ञा।

सूर्य-पुत्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य-तनय, शनि, यम, वरुण, सुग्रीव, कर्ण, सूर्य-सुत, **सूरज पूत** (दे.)।

सूर्य-पुत्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सूर्य-कन्या, यमुना, बिजली (क्र.)।

सूर्यप्रभ–वि. (सं.) सूर्य के सदृश्य कांतिमान या प्रकाशवान।

सूर्यप्रभा, सूर्य प्रतिभा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) **सूर्याभा,** सूर्य की कांति या रोशनी, सूर्य का प्रकाश, धूप, धाम, सूर्यप्रिया, सूर्य पत्नी, दीप्ति।

सूर्य-प्रिय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कमल, माणिक।

सूर्य-मंडल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रवि-मंडल। (अं.) सीवर सिस्टम।

सूर्य-मणि–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सूर्यकांत-मणि*) सूर्यकांत मणि, आतशी शीशा, रूबी।

सूर्यमुखी–संज्ञा, पु. यौ. (सं. *सूर्यमुखिन्*) **सूरजमुखी** (दे.), दिन में ऊपर और संध्या में नीचे झुक जाने वाले पीले फूल का एक पोधा।

सूर्य-लोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य का लोक (कहा जाता है कि रण में मरे वीर इसी लोक में जाते हैं)।

सूर्य-वश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) भानु वंश, इक्ष्वाकु वंश, क्षत्रियों के दो प्रधान और आदि के कुलों में से एक कुल, जिसका आदि राजा इक्ष्वाकु से होता है।

सूर्य-वंशी–वि. (सं. *सूर्यवंशिन्*) सूर्य-वंश का, सूर्य वंश में उत्पन्न। वि. **सूर्यवंशीय**।

सूर्य-संक्रांति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सूर्य का एक राशि से दूसरी में जाना (ज्यो.)।

सूर्य-सारथी–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अरुण।

सूर्य-सुत–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्यपुत्र, **सूरजसुता**।

सूर्य-सुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) यमुना, **सूरज-सुता** (दे॰)।

सूर्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सूर्य की स्त्री, सूर्य-प्रिया, रवि पत्नी, संज्ञा।

सूर्याभा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सूर्य की प्रभा, घाम, धूप।

सूर्यावत्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हुलहुल पौधा, एक प्रकार का अर्ध शिर-शूल, आधा-शीशी।

सूर्यास्त–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सायंकाल, संध्या, सूर्य का डूबना या छिपना।

सूर्योदय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सूर्य का उदय या प्रकट होना, प्रकाशित होना, निकलना, प्रातःकाल।

सूर्योपासक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **सूर्याचंक,** सूर्य-पूजक, सूर्य की पूजा या उपासना करने वाला, सौर।

सूर्योपासना–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सूर्य की पूजा या उपासना, **सूर्याराधन, सूर्याचक**।

सूल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शूल*) बरछा, भाला, साँग, काँटा, कोई चुभने वाली चीज़, एक प्रकार की चुभने की सी पीड़ा, कसक, दर्द, पेट की पीड़ा, भाला का ऊपरी भाग।

सूलधर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शूलधर*) शिव जी।

सूलना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰) भाले से छेदना, पीड़ित करना। क्रि॰ अ॰ (दे॰) भाले से छिदना, पीड़ित या व्यथित होना, वेदना पाना, दुखना।

सूल-पानि*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शूलपाणि*) **शूलपाणि,** शिव जी।

सूली–संज्ञा॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शूल*) दंडित व्यक्ति को एक नुकीले लोहे पर बैठा कर ऊपर से आघात कर प्राण-दंड देने की एक पुरानी रीति, फाँसी। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शूलिन्*) शूली, शिवजी।

सूवना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *सवण*) बहना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शुक*) तोता, सुआ, सुअना, सुगना।

सूवा–संज्ञा॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *शुक*) तोता, सुग्गा, सुवा, सुगना।

सूस, सुसि–संज्ञा॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *शिशुमार*) मगर जैसा एक जल-जंतु, **सुइस**।

सूसी–संज्ञा॰ स्त्री॰ (दे॰) एक प्रकार का कपड़ा।

सूसुम–वि॰ (दे॰) कुनकुना, थोड़ा गरम।

सूहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सोहना*) एक तरह का लाल रंग, एक मिश्रित राग, (संगी॰)। वि॰ (स्त्री॰ *सूही*) लाल, लाल रंग का।

सूही–वि॰ स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सोहना*) लाल रंग, सूहा।

सृंगला*–संज्ञा॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शृंखला*) शृंखला, ज़ंजीर, जंजीर।

सृंग*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शृंग*) **सींग** (दे॰), चोटी।

सृंगवेरपुर*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शृंगवेरपुर*) शृंगवेरपुर निषाद-नगर, **सिंगरौर** (वर्तमान)।

सृंगी (रिपि)–संज्ञा, पु॰ (दे॰) शृंगी (ऋषि)।

सृंजय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मनुजी के एक पुत्र धृष्टद्युम्न का वंश।

सृक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बरछा, शूल, भाला, हवा, वायु तीर, वाण, शर। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सज्, स्रक्, स्रग्*) हार, गजरा, माला।

सृकाल, सृगाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ शृंगाल) सियार, गीदड़।

सृग*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सृक*) शूल, बरछा, भाला, शर, तीर। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सज्, स्रक*) गजरा, माला, हार।

सृग्विनी*‡–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *स्रविणी*) चार रगण का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

सृजक*–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विरचि, सृष्टि का बनाने या उत्पन्न करने वाला, सर्जक, ब्रह्म, **सिरजनहार** (दे॰)।

सृजन*–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सृष्टि के उत्पादन या रचने का कार्य, सृष्टि, **सिरजन** (दे॰)।

सृजनहार*–संज्ञा॰ पु॰ दे॰ (सं॰ *सृज*) या (सं॰ *सृजन+हार हि॰ प्रत्य॰*) सृष्टिकर्ता, स्रष्टा, विरंचि, **सिरजनहार** (दे॰)।

सृजना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सृजन*) **सिरजना** (दे॰), सृष्टि का उत्पन्न करना या बनाना, रचना, बनाना। सं॰ **रूप**–**सृजाना सृजवाना**।

सृति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आवागमन, रास्ता, जन्म।

सृष्ट–वि॰ (सं॰) उत्पन्न, उद्‌भूत, विरचित, निर्मित, युक्त, मोक्ष, छोड़ा हुआ, उत्पादित।

सृष्टा–संज्ञा, पु॰ वि॰ (सं॰) विरचि, ब्रह्मा, सृष्टिकर्त्ता, रचने वाला।

सृष्टि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) उत्पत्ति, रचना, निर्माण, बनावट, विश्व की उत्पत्ति, संसार, जगत, जहान, निसर्ग, प्रकृति।

सृष्टिकर्त्ता–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *सृष्टिकर्त्ता*) संसार को उत्पन्न करने या बनाने वाला, विधाता, ब्रह्मा, विधि, विरंच,

परमेश्वर।

सृष्टिविज्ञान—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार किया गया हो, **संसृति शास्त्र, सृष्टिविद्या**।

सेंक—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सेंकना*) सेंकने की क्रिया का भाव।

सेंकना—क्रि. स. दे. (सं. *श्रेवण*) किसी वस्तु को आग में भूनना या पकाना, किसी वस्तु में गरमी पहुँचाना। **मु. आँख सेंकना**—सुन्दर रूप देखना। धूप सेंकना—धूप से देह गरम करना।

सेंगर—संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंगार*) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है, एक प्रकार का अगहनी धान। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शृंगीवर*) क्षत्रियों की एक जाति।

सेंगरी—संज्ञा, स्त्री. (हि. *सेंगर*) बंदूल की फली, **सिंगरी,** छेमी।

सेंटा—संज्ञा, पु. (दे.) सरपत, मोटी सींक।

सेंत—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संहित*) बिना मूल्य, बेदाम, बिना ख़र्च, बिना कुछ लगे या ख़र्च पड़े, मुफ़्त। यौ. (दे.) **सेंत-मेंत। मु. सेंत का**—जिसमें कुछ दाम न लगा हो, मुफ़्त का। *बहुत, ढेर का ढेर। **सेंत में**—बिना कुछ दाम दिए, मुफ़्त में। व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फ़जूल, निरर्थक। *वि. (दे.) ढेर सा, बहुत।

सेंतना*†—क्रि. स. दे. (हि. *सैंतना*) **सैंतना** (दे.), रक्षा में देखना, इकट्ठा करना।

सेंत-मेंत—क्रि. वि. दे. (हि. *सेंत+मेंत अनु.*) बिना मूल्य दिए, मुफ्त में, व्यर्थ, नाहक।

सेंति, सेंती*†—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सेंत*) बिना दाम दिए, बिना मोल दिए, मुफ़्त में, व्यर्थ।

सेंदुर*†—संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंदूर*) सिंदूर। **मु. सेंदुर चढ़ना**—कन्या का ब्याह होना। **सेंदुर देना (भरना)**—पति का पत्नी की माँग भरना (ब्याह में)।

सेंदुरिया—संज्ञा, पु. दे. (सं. *सिंदूर*) लाल फूलों का एक सदाबहार पौधा। वि. सिंदूर के रंग का, गाढ़ा लाल। संज्ञा, पु. एक प्रकार का लाल-पीला आम।

सेंदुरी—संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सेंदुर*) लाल गाय।

सेंद्रिय—वि. (सं.) इन्द्रियों के सहित।

सेंध—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संधि*) संधि, बड़ा छेद, सुरंग, नक़ब, चोरी करने को दीवाल में किया गया बड़ा छेद। **मु. सेंध लगाना (पारना)**—चोरी करने को दीवाल में संधि या बड़ा छेद करना।

सेंधना—क्रि. स. दे. (सं. *संधि*) सेंध का सुरंग लगाना।

सेंधा—संज्ञा, पु. दे. (सं. *सैंधव*) एक खनिज नमक, सेंधौ (दे.), सैंधय या लाहौरी नमक।

सेंधिया—वि. दे. (हि. *सेंध*) सेंध करने वाला, नक़ब लगाने वाला, चोर। संज्ञा, पु. दे. (मरा. *शिंदे*) सिंधिया, ग्वालियर के मरहटा राजवंश की पदवी।

सेंधी—संज्ञा, पु. (दे.) खजूर का रस।

सेंधर‡—संज्ञा, पु. दे. (हि. *सेंदुर*) सेंदुर, सिंदूर।

सेंधौ—संज्ञा, पु. दे. (सं. सैंधव) सेंधा नमक।

सेंमर, सेंमल—संज्ञा, पु. दे. (हि. *सेमर*) सेमर पेड़, शाल्मली।

सेंमई, सेंवई—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सेविका*) मैदे से बने सूत के से लच्छे जिन्हें दूध में पकाकर खाते हैं।

सेंहुड़, सेंहुड़ा—संज्ञा, पु. दे. (हि. *थूहर*) थूहर की जाति का एक कटीला पेड़।

से—प्रत्य. दे. (प्रा. *सुंती*) तृतीया या करण और पंचमी या अपादान कारक की विभक्ति। (हि. *सा का बहुवचन*) सदृश, समान, तुल्य। *सर्व. (हि. *सो का बहु. व.*) ये, ते (अय.)।

सेइ—क्रि. स. (ब्र.) सेवा करके, सेवन करके।

सेउ*†—संज्ञा, पु. दे. (हि. *सेव*) एक मीठा फल, सेव। क्रि. स. वि. (ब्र. *सेवना*)।

सेक—संज्ञा, पु. (सं.) जल-सिंचन, छिड़काव, जल-प्रक्षेप, सिंचाई, गरमाहट (सेंक)

सेख*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *शेष*) शेष, अवशिष्ट, शेषनाग जी। संज्ञा, पु. (अ. *शेख*) **मुसलमानों** की एक जाति। वि. (दे.) शेषबाकी।

सेखर*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *शेखर*) शेखर, शीश, सिर।

सेग़ा—संज्ञा, पु. (अ.) सीग़ा (उ.) महकमा, विभाग, क्षेत्र, विषय।

सेचक—वि. (सं.) सींचने वाला।

सेचन—संज्ञा, पु. (सं.) पानी सींचना, सिंचाई, सिंचन, अभिषेक, मार्जन, छिड़काव। वि. सेचनीय, सेचित, सेच्य।

सेज—संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शय्या*) शय्या, पलंग, चारपाई।

सेजरिया, सेज्या*†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शय्या*) सेज, शय्या, पलँग, सेजिया (दे॰)।

सेझदादि*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सह्याद्रि*) सहयाद्रि पर्वत (दक्षिण)।

सेझना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *सेझना*) हटना, अलग या दूर होना, सीझना।

सेटना, सेंटना*†—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *श्रत*) ख़्याल करना, मानना, समझना, महत्त्व स्वीकार करना, कुछ समझना।

सेठ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्रेष्ठ*) बड़ा महाजन या साहूकार, कोठीवाल, बड़ा धनी, थोक व्यापारी, सुनार, सराफ़। स्त्री॰ **सेठानी**।

सेढ़ा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) नाक का मैल।

सेत*—वि॰ दे॰ (सं॰ *श्वेत*) सफ़ेद, श्वेत, उजला। संज्ञा, दे (सं॰ *सेतु*) पुल, बाँध, धुस्स, मेंड़, सीमा, मर्यादा, नियम, व्यवस्था।

सेतकुली—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *श्वेत-कुलीय*) सफ़ेद जाति के नाग।

सेतदुति*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्वेत द्युति*) चन्द्रमा।

सेतवाह, सेतवाहन*—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *श्वेत वाहन*) अर्जुन, चन्द्रमा (पिं॰)।

सेतु, सेतू (दे॰)—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाँध, धुस्स, बँधाव, मेंड़, नदी आदि का पुल, डाँड, मार्ग, हद, सीमा, नियम या व्यवस्था, मर्यादा, व्याख्या, ओंकार, प्रणव।

सेतुक—अव्य॰ (दे॰) सौतुक, सामने। संज्ञा, पु॰ (सं॰) छोटा पुल।

सेतुबंध—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुल की बंधाई, लंका पर आक्रमणार्थ समुद्र पर रामचन्द्र का बँधाया पुल। यौ॰ **सेतुबंध-रामेश्वर**।

सेतुषा‡—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शक्तु*) सत्तू, सित्तू, सितुआ, भूने हुए जवों ओर चनों का आटा, **सेतुआ** (आ॰)। संज्ञा, पु॰ (*प्रान्ती॰*) सूस जन्तु।

सेथिया—संज्ञा, पु॰ दे॰ (तेलगू॰ *चोटि*) आँखों की दवा करने वाला, नेत्र-चिकित्सक।

सेद*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ स्वेद) पसीना।

सेदज*—वि॰ दे॰ (सं॰ *स्वेदज*) स्वेदज, पसीने से उत्पन्न कीड़े, चीलर, जूँ।

सेन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) देह, जीवन, एक भक्त नाई, बंगालियों की एक जाति। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्येन*) बाज़ पक्षी। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सेना*), फ़ौज, सैन, आँख का इशारा।

सेनजित—वि॰ यौ॰ (सं॰) सेना को जीतने वाला। संज्ञा, पु॰ श्रीकृष्ण जी का एक लड़का।

सेनप, सेन-पति*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सेनापति*) सेनापति।

सेन-वंश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बंगाल का एक राजवंश जिसने 300 वर्ष (11हवीं से 14हवीं शताब्दी) तक राज्य किया (इति॰)।

सेना—संज्ञा, स्त्री (सं॰) कटक, दल, फौज, पलटन, युद्ध शिक्षा-प्राप्त शस्त्रास्त्र सज्जित मनुष्य दल, इन्द्र का बड़ा, भाला, इन्द्राणी, शची। क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सेवन*) सेवा सुश्रूषा या टहल करना। यौ॰ **मु॰ चरण-सेना**—नीच नोकरी करना या बजाना। पूजना, आराधना करना, नियमपूर्वक व्यवहार करना, लगातार निवास करना, लिए बैठे रहना, कभी न छोड़ना, मादा चिड़िया का गर्मी पहुँचाने को अंडों पर बैठना।

सेनाप्रिय, सेनाधीश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेनापति, सेना-नायक।

सेनाध्यक्ष, सेनाधीश्वर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सेनापति, **सेनप**।

सेनानायक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सेनापति।

सेनानी—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेनापति, कार्तिकेय, षडानन, एक रुद्र।

सेनापति-सेनाधिपति—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सेनाध्यक्ष, सेनानायक, **सेनप, सेनाधिप**।

सेनापत्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेनापति का पद, अधिका या कार्य।

सेनापाल-सेनापालक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेना रक्षक, सेनापति, सेनाध्यक्ष।

सेनामुख—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सेना का अग्रभाग, फ़ौज के आगे का हिस्सा, हराबुल, सफ़रमैना, 3 या 5 हाथी, 3 या 9 रथ, 9 या 27 घोड़े, और 15 या 45 पैदल वाला सेना का एक भाग।

सेनाव्यूह—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सैन्य-विन्यास, सेना की नियुक्ति या स्थापना, भिन्न-भिन्न स्थानों पर सेना के विविधाओं की व्यवस्था।

सेनिक—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्रेणी*) श्रेणी, पंक्ति, सेनी।

सेनिका—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्येनिका*) मादा बाज, एक छंद (पिं॰)।

सेनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ *सीनी*) सीनी, बड़ी तश्तरी। *संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्वेती*) मादा बाज। *संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *श्रेणी*) श्रेणी, क़तार, पंक्ति, ज़ीना, सीढ़ी। संज्ञा, पु॰ सहदेव का अज्ञातवास में नाम।

सेब–संज्ञा, पु॰ (फ़ा) नाशपाती की जाति का एक छोटा पेड़ और उसका स्वादिष्ट फल (एक मेवा)।

सेम–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिंवा*) एक फली जिसकी तरकारी बनती है।

सेमई*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सेविका*) सँवई (दे॰) गेहूँ के मैदे से बने बारीक तारों के लच्छे जो दूध में पका कर खाए जाते हैं।

सेमर-सेमल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शाल्मली*) लाल फूलों और रुई सी चीज़ दार फलों वाला एक बड़ा पेड़।

सेर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सेत*) सोलह छँटाक या अस्सी रुपये भर की तौल। संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *शेर*) व्याघ्र, बाघ, फ़ारसी का छंद, शेर। वि॰ (फ़ा॰) अघाना, तृप्त।

सेरसाहि–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (फ़ा॰ *शेरशाह*) दिल्ली का एक बादशाह, शेरशाह।

सेरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सिर*) पलंग में सिर की ओर की पट्टी, **सिरवा, सेरवा** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सेराज*) पानी से तर ज़मीन, सिंची भूमि।

सेराना, सिराना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शीतल*) सिरावना (दे॰) शीतल या ठंडा होना, तृष्ट या तृप्त होना, समाप्त होना, बीतना, मर जाना, तै होना, चुकना, भूल जाना। मूर्ति आदि का पानी में प्रवाह करना।

सेराब–वि॰ (फ़ा॰) जलार्द्र, पानी से तर, सींचा हुआ, शूराघोर।

सेरा–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा) तृष्टि, तृप्ति, आसूगी।

सेल–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शल*) भाला, बरछा। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) माला, बद्धी।

सेलखड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शिला, शैल+खटिका*) एक प्रकार की खड़िया, **सेलखरी, सिलाखरी** (दे॰)।

सेलना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शैल*) मर जाना।

सेला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शल्लक*) रेशमी चादर।

सेलिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) घोड़े की एक जाति।

सेली–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *सेल*) छोटा भाला। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *सेला*) छोटा दुपट्टा, गांती (प्रान्ती॰) यती-योगियों के गले की माला या सिर में लपेटने की बद्धी, स्त्रियों का एक भूषण।

सेल्ल, सेल्ला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शल*) भाला, बरछा, सेल।

सेल्ह–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शल*) सेल, भाला, बरछा।

सेल्हा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शल्लक*) सेला, रेशमी चादर।

सेवई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सैविक*) सेमई।

सेवँर*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शाल्मली*) सेमर, सेमल, वृक्ष विशेष।

सेब–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सैबिका*) मोटे बोरे जैसे चने के आटे या बेसन से बना एक पकवान। *संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सेवा*) सेवा। संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सेब*) सेब फल (मेवा)।

सेवक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेवा या टहल करने वाला, किंकर, अनुचर, छोड़कर कहीं न जाने वाला, दास, नौकर, भृत्य, चाकर, भक्त, उपासक, निवास करने वाला, दरज़ी, प्रयोग करने या काम में लाने वाला। स्त्री॰ **सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी**।

सेवकाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सेवक+आई* हि॰ *प्रत्य॰*) सेवक का काम, सेवा, टहल, नौकरी, दासता।

सेवड़ा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) जैन मत के साधुओं का एक भेद। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सेव*) भैदे का मोटा सेव या पकवान विशेष।

सेवति*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *स्याति*) स्वाति नक्षत्र।

सेवती–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सफ़ेद गुलाब।

सेवन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ख़िदमत, सेवा, आराधना, परिचर्या, वास करना, उपासना, उपयोग, नियमित व्यवहार, गूँथना प्रयोग, उपभोग, सीना, खाना, पीना। स्त्री॰ **सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य**।

सेवना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सेवन*) सेवा करना, उपासना करना, पूजना, प्रयोग या उपभोग करना, (अंडा) सेना।

सेवनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) परिचारिका, दासी, अनुचरी।

सेवनीय–वि॰ (सं॰) सेवा या पूजा के योग्य, उपभोग या व्यवहार, के योग्य, प्रयोग के लायक, सीने योग्य।

सेवर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शवर*) शबर, एक जंगली जाति। वि॰ (प्रान्ती॰) आँच से कम पका हुआ।

सेवरा*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सेवड़ा*) जैन साधुओं का एक भेद। वि॰ (दे॰) **आँच** से कम पका, कच्चा। स्त्री॰ **सेवरी**।

सेवल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) ब्याह में एक रीति या रस्म।

सेवा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आराधना, पूजा, परिचर्या, टहल, ख़िदमत, नौकरी, दासता, उपासना, दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। **मु॰ सेवा में**–सम्मुख, समीप, पास। शरण, आश्रय, रक्ष, मैथुन संयोग, रति।

सेवा-टहल–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰+हि॰) परिचर्या, ख़िदमत, सेवा-शुश्रूषा।

सेवाती–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *स्वाति*) स्वाति नक्षत्र. सेवती का पुष्प।

सेवाधारी–संज्ञा, पु॰ (सं॰) उपासक, पुजारी।

सेवापन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सेवा+ पन* हि॰ *प्रत्य॰*) सेवावृत्ति, नौकरी, दासता।

सेवा-बंदगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सेवा+ बंदगी* फ़ा॰) पूजा, उपासना, आराधना।

सेवार-सेवाल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शैवाल*) पानी में फैलने वाली एक घास।

सेवा-वृत्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) नौकरी, दासत्य, दासता, भृत्य-जीविका।

सेवि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेवी का समास में रूप, सेवा करने वाला। *वि॰ (दे॰) सेव्य, सेवित।

सेविका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किंकरी, दासी, नौकरानी, सेवा करने वाली, अनुचरी, परिचारिका।

सेवित–वि॰ (सं॰) पूजित, जिसकी पूजा या सेवा की गई हो, व्यवहृत, उपयोग या उपभोग किया हुआ, प्रयुक्त, आधारित, जिसका भोग या प्रयोग किया हो।

सेवी–वि॰ (सं॰ सेविन्) सेवा या पूजा करने वाला, सेवन या संभोग करने वाला।

सेव्य–वि॰ (सं॰) पूज्य, उपास्य, जिसकी सेवा करना उचित हो, जिसकी सेवा की जाए या करना हो, सवा और आराधना करने योग्य, उपभोग या प्रयोग के योग्य, रक्षण और संभोग के योग्य। संज्ञा, पु॰ स्वामी, प्रभु, पीपल वृक्ष, अश्वत्य, पानी, जल। स्त्री॰ **सेव्या**।

सेव्य-सेवक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वामी और दास। यौ॰ **सेव्य-सेवक भाव**–भक्ति मार्ग में उपासना का वह भाव जिसमें भक्त अपने को दास और उपास्य देव को अपना स्वामी मानता है, दास्य भाव।

सेश्वर–वि॰ (सं॰) परमेश्वर के सहित, ईश्वर-संयुक्त, जिसमें परमेश्वर की स्थिति मानी गई हो।

सेष*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *शेख़*) मुसलमानों की एक जाति, शेख, **सेख** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) शेषनाग (सं॰) **शेष**, अवशिष्ट।

सेस*–संज्ञा, पु॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *शेष*) शेषनाग, शेषजी, जो बाक़ी बचे, अवशिष्ट, शेषावतार लक्ष्मण।

सेषनाग*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ *शेषनाग*) शेषनाग।

सेसर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सेहसर तीन वाली*) ताश का खेल, जाल, जालसाज़ी, वि॰ (दे॰) तिगुना।

सेसरिया–वि॰ (हि॰ *सेसर+इया प्रत्य॰*) छल छन्द से धन हरने वाला, जालिया, जालसाज़।

सेहत–संज्ञा स्त्री॰ (अ॰) आरोग्यता, तन्दुरुस्ती, सुख-चैन, रोग-मुक्ति।

सेहरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *सिर+ हार*) वर के यहाँ विवाह में गाने के मंगल-गीत, पगड़ी में बाँधकर मौर के नीचे दूल्हे के मुख के सामने लटकाने के फूल, गोटे आदि की मालाएँ। **मु॰ किसी के सिर सेहरा बाँधना (बँधना)**–किसी का कृतकार्य करना (होना)। **किसी के सिर सेहरा होना**–किसी का कृतकार्य या सफल होना, उसी पर कृतार्थता का निर्भर होना।

सेहो–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *सेधा*) साही या स्याही नामक काँटेदार छोटा जंगली जंतु।

सेहुँड़*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सेंहुड़*) थूहर की जाति का एक काँटेदार पेड़।

सेहुआँ–संज्ञा, पु॰ (दे॰) विवर्णता कारक एक प्रकार का चर्म रोग, सेहुवाँ।

सैंतना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सञ्चय*) हाथ से समेटना, बटोरना, एकत्रित या संचित करना, सहेजना, सँभाल कर रखना, सइँतना (आ॰)।

सैंथी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *शक्ति*) भाला, बरछा, शक्ति।

सैंधव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सेंधा नामक, सैंधव (दे॰) सिंध प्रदेश का घोड़ा, सिंध देश का रहने वाला। वि॰ (सं॰) सिंध देश का, सिंधु-संबंधी, समुद्र का।

सैंधव, नायक, सैंधव-नृप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जयद्रथ, **सैंधव-नृपाल, सैंधव-नृपति**।

सैंधव पति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) राजा जयद्रथ, सैंधवाधिप, सिंध-नरेश।

सैंधवाधिपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सिंधनृप, जयद्रथ।

सैंधवी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सब रागों की एक रागिनी, (स्त्री)।

सैंबर‡–संज्ञा, पु. दे. (हि. साँभर) साँभर, नमक।

सै‡–वि. संज्ञा, पु. दे. (सं. *शत*) सौ। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सत्य*) तत्व, सत्य, सार, शक्ति, वीर्य, वृद्धि बरकत, बढ़ती।

सैकड़ा, सैकरा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शत-कांड*) सौ का समूह, शत-समष्टि।

सैकड़े–वि. (हि. सैकड़ा) कई सौ, बहुसंख्यक, प्रतिशत, प्रति सौ के हिसाब से, फ़ीसदी।

सैकड़े‡–वि. (हि. *सैकड़ा*) अगणित, बहुसंख्यक, कई सौ।

सैकत–वि. (सं.) सिकतामय, रेतीला, बालू का बना, बलुआ। स्त्री. **सैकती**।

सैक़ल–संज्ञा, पु. (अ.) शस्त्रास्त्र पर सान रखने या उनके साफ़ करने का कार्य।

सैक़लगर–संज्ञा, पु. (अ. *सैक़ल+ गर* फ़ा.) शस्त्रास्त्र पर बाढ़ या सान रखने वाला।

सैग, सइग–संज्ञा, स्त्री. (अ.) समानता, बराबरी। वि. (आ.) पूरा, **सहिग**।

सैगर–वि. दे. (सं. *सकल*) अधिक, बहुत, **सइगर** (आ.)।

सैथी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शक्ति*) बरछी।

सैद‡–संज्ञा, पु. दे. (अ. *सैयद*) सैयद, मुसलमानों की एक जाति, अमीर, (फ़ा.) कैद।

सैद्धांतिक–संज्ञा, पु. (सं.) सिद्धांत का ज्ञाता, विद्वान, पंडित, तांत्रिक। वि. सिद्धांत-संबंधी, तत्व विषयक।

सैन–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *संज्ञपन*) संकेत, इंगित, चिह्न, इशारा, निशान। *†संज्ञा, पु. दे. (सं. *शयन*) शयन, सोना। संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्येन*) श्येन, बाज पक्षी। *†संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सेना*) सेना, कटक, फ़ौज। रामा.। *†संज्ञा, पु. (दे.) एक तरह का बंगला।

सैननाथ-सैनपति*–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सेनापति*) सेनापति, **सेना-नायक, सैनाधिपति, सैनप, सैन-नायक** (दे.)।

सैनभोग–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *शयन+ भोग*) रात्रि के समय का नैवेद्य, मंदिरों में देव मूर्ति पर चढ़ाने का नैवेद्य (भोजन) और शयन।

सैना*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सेना*) सेना, कटक, दल। संज्ञा, पु. दे. (सं. *संज्ञपन*) सैन, इशारा, संकेत।

सैनाधिप, सैनाधिपति–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सेनापति*) **सैनापति,** सेनानायक।

सैनापत्य–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सेनापति का कार्य या पद, सेनापतित्य। वि. सेनापति संबंधी।

सैना-सैनी–वि. (दे.) इशारे से बात करना।

सैनिक–संज्ञा, पु. (सं.) सिपाही, सेना का तिलंगा, संतरी, फौजी आदमी। वि. सेना-संबंधी, सेना का।

सैनिकता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सेना या सैनिक का कार्य, लड़ाई, युद्ध, **सैनिकत्व**।

सैनिका–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *श्येनिका*) एक छंद (पिं.)।

सैनियाना–क्रि. स. (दे.) सैन या संकेत करना, आँख से इशारा करना।

सैनी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सेनाभक्त*) नाई, हज्जाम। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सेना*) सेना, फ़ौज, कटक, दल। संज्ञा स्त्री. (दे.) श्रेणी (सं.) कतार, **सेनी** (दे.), श्रेणी, पंक्ति।

सैनू–संज्ञा, पु. (दे.) बेल बूँटेदार मैनू कपड़ा।

सैनेय*–वि. (सं. *सेना*) लड़ने-योग्य।

सैनेश, सैनेस–संज्ञा, पु. दे. यौ. (सं. *सेनेश, सैयेश*) सेनापति, सेनानायक।

सैन्य–संज्ञा, पु. (सं.) कटक, सेना, फ़ौज, सिपाही, सैनिक, छावनी, शिविर। वि. सेना का, सैन्य-संबंधी।

सैफ़–संज्ञा, स्त्री. (अ.) तलवार।

सैफ़ी–वि. (अ. सैफ़) टेढ़ा, तिरछा।

सैमंतिक–संज्ञा, पु. (सं.) सेंदुर, सिंदूर।

सैयद–संज्ञा, पु. (अ.) मुहम्मद साहिब के नाती हुसैन के वंश के लोग, मुसलमानों की चार जातियों में से एक ऊँची जाति, सैय्यद।

सैयाँ*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वामी*) स्वामी, साँई, मालिक, पति सइयाँ, साइयाँ (दे.)।

सैया*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शय्या*) शय्या, पलंग।

सैरंध्र–संज्ञा, पु. (सं.) घर का दास या नौकर, एक वर्ण-संकर-जाति। स्त्री. **सैरंध्री**।

सैरंध्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अन्तःपुर की दासी या नौकरनी,

सैरंध्र जाति की स्त्री, द्रौपदी।

सैर–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) बाहर जाना, बहार, मन बहलाने को बाहर घूमना-फिरना, कौतुक, तमाशा, मौज, आनंद, मित्रों का बगीचे आदि में नाच-रंग, खान-पान करना। **सैर-सपाटा**।

सैल‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *सैर*) सैर, घूमना-फिरना। संज्ञा, स्त्री. दे. (फ़ा. *सैलाब*) पानी की बाढ़, बहाव, स्रोत, जल-प्लावन। संज्ञा, पु. दे. (सं. *शैल*) पहाड़, पर्वत।

सैलजा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. **शैलजा**) गिरिजा, पार्वती। यौ. **सैलजानंदन**–गणेश।

सैल-तनया–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *शैलतनया*) शैलतनया, गिरिजा, पार्वती।

सैलतनूजा–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *शैलतनुजा*) पार्वती, **शैलतनुजा, सैलतनुजा**।

सैलसुता*–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. (सं. *शैलसूता*) शैल-सुता, गिरिजा, पार्वती, **सैलपुत्री, सैलकन्या**।

सैलात्मजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) **शैलात्मजा** (सं.), गिरिजा, पार्वती।

सैलानी–वि. दे. (फ़ा. *सैर*) आनंदी, मन-माना घूमने-फिरने वाला, सैर करने वाला, मन-मौजी, रंगी-तरंगी।

सैलाब–संज्ञा, पु. (फ़ा.) पानी की बाड़, जल-प्लावन।

सैलाबा–वि. (फ़ा.) बाढ़ वाला, वह स्थान जो बाढ़ आने पर डूब जाता है, **कछार**। संज्ञा, स्त्री. तरी, सीड़, सील, नमी।

सैलूख, सैजूप–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शैलूस*) नाटक खेलने वाला नट, बहुरूपिया, छली।

सैवल-सैवाल*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शैवाल*) सिवार, पानी की घास, **सेवार** (दे.)।

सों सौं*†–*प्रत्य.* दे. (*प्रा. सुत्ती*) करण और अपादान कारकों की विभक्ति (ब्र.), से, द्वारा। वि. (म.) सा, समान। संज्ञा, स्त्री. (अ.) सौंह का अल्प. रूप, शपथ, सौगंध। अव्य. (ब्र.) सौंह, सम्मुख। क्रि. वि. संग, साथ। सर्व. (दे.) सो, वह।

सोंच-सोच–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोच*) चिंता, फ़िक्र, शोक, दुख, पछतावा।

सोंचर (नोन या लोन)–संज्ञा, पु. (दे.) काला नमक, सोचर नमक।

सोंटी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शुण्ड*) मोटी छड़ी, लाठी, डंडा, मोटा डंडा (भाँग घोंटने का), **स्वाँटा** (आ.)।

सोंटा (सोंटे) बरदार–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *सोंटा+बरदार* फ़ा.) आसाबल्लाम-बरदार। संज्ञा, स्त्री. सोंटेबरदारी।

सोंठ–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शुगठी*) सुबटी, सूखी अद्रक। **मु. सोंठे करना**–खूब मारना, चलना।

सोंध*–अव्य. दे. (ब्र. *सौह*) सौगंध, शपथ। वि. दे. (सं. सुगंध) सुगंधित, खुशबूदार, महकदार, **सोंधा, सौंधा** (आ.)।

सोंधा–वि. दे. (सं. सुगंध) महकदार, खुशबदार, सुगंधित, भुने चने या मिट्टी के नये बर्तन में पानी पड़ने की सी महक या वैसा स्वाद, **सौंध** (आ.)। स्त्री.। **सोंधी**। संज्ञा, पु. दे. (सं. *सुगंधि*) सिर मलने का सुगंधित मसाला (स्त्रियों के), गरी के तेल को सुगंधित करने का एक मसाला। संज्ञा, पु. **सुगंधि**। संज्ञा, स्त्री. **सोंधाई**।

सोंधाना–क्रि. अ. (दे.) सोंधी सुगंधि या सोंधा स्वाद देना।

सोंधु–वि. दे. (हि. *सोंधा*) सोंधा, सुगंधित।

सोंपना–क्रि. स. (दे.) सौंपना।

सोंवनिया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सुवर्ण*) नाक का एक गहना।

सोंह, सौंह*†–अव्य. दे. (हि. *सौंह*) सम्मुख, सामने, आगे। संज्ञा, स्त्री. (ब्र.) सौगंध, शपथ।

सौंही–*अव्य.* (दे.) सौंह।

सो–सर्व. दे. (सं. सः) वह। *वि सा, समान, तुल्य, ऐसा सौं, लौं (ब्र.)। *अव्य.* (दे.) निदान, इस हेतु, अतः इसलिए।

सोऽहम्–सर्व. यौ. (सं. *सः+अहम्*) वही मैं हूँ, मैं वही ब्रह्म हूँ, (जीव और ब्रह्म का एकत्वसूचक वेदान्तीय सिद्धान्त का प्रतिपादक पद), तत्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि (उपनिषद्) **सोह** (दे.)।

सोऽहमस्मि–*वाक्य.* (सं. *सः+अहम् अस्मि*) मैं वही ब्रह्म हूँ, सोऽहम्।

सोआ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मिश्रेण*) एक तरह की भाजी या साग, **सोया स्वावा, सोवा** (दे.)।

सोइ, सोई–सर्व. ब्र. (हि. सों) वही। अव्य. सो, सा, तुल्य, समान। क्रि. अ. (हि. *सोना*) सोकर, सो गई।

सोक–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोक*) शोक, दुख, पछितावा, खेद।

सोकन–संज्ञा, पु. (दे.) सोखना, अनेक शोक। यौ. (हि.) वेरुण, शोक-रहित।

सोकना*–क्रि. स. दे. (सं. *शोक*) शोक या दुख करना, रंज करना, खिन्न या दुखित होना, सोखना।

सोकन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सीखन*) सोखना, गज़ब कर लेना।

सोख–वि. दे. (फ़ा. *शोख़*) धृष्ट, ढीठ, गाढ़ा, गहरा। संज्ञा, स्त्री. **सोखी,** शोख़ी।

सोसक*–वि. दे. (सं. *शोषक*) सोखने या शोषण करने वाला, नष्ट करने वाला।

सोखता–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *सीख्तः*) स्याही सुखाने वाला एक ख़ुरदरा कागज़, ब्लाटिंग पेपर (अं.)। वि. जला हुआ।

सोखन–संज्ञा, पु. (दे.) एक जंगली धान, **फ़सई** (आ.), शोषण, शोखना। वि. **सोखनीय, सोखित**।

सोखना–कि. स. दे. (सं. *शोषण*) शोषण करना, सुखा डालना, चूस लेना। सं. रूप–**सोखाना,** प्रे. रूप–**सोखवाना**।

सोख़्ता–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *सोख़्ता*) स्याही सोखाने वाला एक ख़ुरदरा कागज़, ब्लाटिंग पेपर (अं.)।

सोग–संज्ञा, पु. (फ़ा.) शोक, दुख, खेद, पछतावा।

सोगिनी*–वि. दे. (हि. *सोग*) शोकाकुल, शोकर्ता, शोक करने वाली, दुखिया।

सोगी–वि. दे. (सं. *शोक*) शोकाकुल, दुखित शोक करने वाला। स्त्री. **सोगिनी**।

सोच–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोच*) संताप, शोच, पश्चाताप, खेद या दुख, चिंता, खिन्नता, फिक्र, रंज, सोचने का भाव।

सोचना–क्रि. अ. दे. (सं. *शोचन*) मन में किसी विषय पर विचार करना, ध्यान करना, चिंता या फिक्र कराना, पछताना, खेद या दुख करना। स. **रूप–सोचना, प्रे. रूप–सोचवाना**। यौ. **सोचना-विचारना, सोचना-समझना**।

सोच विचार–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) समझबूझ, ध्यान, **सोच समझ**।

सोचना–क्रि. स. दे. (हि. *सुचाना*) **सोचावना,** सुचाना, **सोचवाना**।

सोचु, सोच्यू*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोच*) खेद, शोक, सोच, पछतावा।

सोज–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सूजना*) शोध, सूजन। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शय्या*) शय्या, पलंग, खाट, **सौंज** (प्रान्ती.)।

सोज़न–संज्ञा, पु. (फ़ा.) **सुई, सूई, सूची**।

सोज़िश–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) शोध, सूजन।

सोझ-सोझा–वि. दे. (सं. *सम्मुख*) सम्मुख की ओर गया हुआ, सीधी, सरल। स्त्री. **सोझी**।

सोडर–वि. (दे.) सोड (दे.) वे समझ, बेवकूफ, मूर्ख, भोंदू।

सोत-सोता–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्रोतस्*) निर्झर, झरना, निरंतर प्रवाहित जल-प्रवाह की पतली धारा, चश्मा (फ़ा.)।

सोति–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्रोत*) धारा, स्रोत, झरना, सोता। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्वाति*) स्वाति नक्षत्र। संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्रोत्रिय*) श्रोत्रिय, वेदपाठी, **सोतिय** (द्रे.)।

सोतिय–संज्ञा, पु. दे. (सं. स्रोत) सोता।

सोती–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्वाति*) स्याति, नक्षत्र। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. स्रोत) सोता, झरना। *क्रि. ब्र. सा. भू. स्त्री.* (हि. *सोना*)।

सोदन–संज्ञा, पु. (सं.) सहोदर भ्राता, सगा भाई। स्त्री. सोदरा, सोदरी। वि. एक ही माँ के पेट से उत्पन्न।

सोदरा, सोदरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सगी बहन, सहोदरा।

सोध*†–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोध*) खोज, पता, ख़बर, टोह। सुधारना, संशोधन, चुकता या अदा होगा। संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौध*) प्रासाद, महल।

सोधन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोधन*) खोज, तलाश, दृढ़ संशोधन सुधार। वि. **सोधनीय, सोधित**।

सोधना†–क्रि. स. दे. (सं. *शोधन*) शुद्ध या ठीक करना, साफ़ करना, सुधारना, दोष मिटाना, त्रुटि या भूल-चूक ठीक करना, निर्णय करना, सुधारना, जाँचना, खोलना, ढूँढ़ना, तलाश करना, निश्चित करना। सही या दुरुस्त करना, ऋण चुकाना या अदा करना, धातुओं या विषोपविषों का औषधार्थ संस्कार करना, **शोधना** (दे.)।

सोधाना†–क्रि. स. दे. (हि. *सोधना*) सोधने का काम दूसरे

से कराना। प्रे. **रूप-सोधावना, सोधवाना**।

सोन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोण*) गंगा की सहायक एक बड़ी नदी। संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वर्ण*) सोना, सुवर्ण, स्थान (दे.) संज्ञा, पु. (दे.) एक जल पक्षी, एक फूल, **सोन जुही**। वि. दे. (सं. *शोण*) अरुण, लाल। संज्ञा, पु. (सं. *स्वान*) कुत्ता।

सोनकीकर–संज्ञा, पु. यौ. (हि. *सोना+कीकर*) एक बहुत बड़ा पेड़।

सोनकेला–संज्ञा, पु. यौ. (हि.) **कनककदली**, चंपाकेला, पीला केला, सुवर्ण केला, कंचन केला।

सोनचिरी, सानचिड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. गौ. (हि.) सोने की चिड़िया, नटीं, **सोन चिरैया** (दे.)।

सोनज़रद, सोनज़र्द–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सोनजूही*) सोन-जूही नामक फूल का पौधा।

सोनजुही, सोनजूही–संज्ञा, स्त्री. यौ. (हि.) पीली जूही, स्वर्ण-यूथिका, पीले फूलों की जुड़ी।

सोनभद्र–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोणभद्र*) गंगा की सहायक एक नदी।

सोनहला, सोनहरा–वि. दे. (हि. सुनहला) सुनहला, सोने के रंग का, पीला। स्त्री. **सोनहली, सोनहरी**।

सोनहा–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शुन–कुत्ता+हा–मार डालने वाला*) कुत्ते की जाति का एक छोटा जगली जंतु।

सोनहार–संज्ञा, पु. (दे.) एक समुद्री पक्षी।

सोना–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वर्ण*) स्वर्ण, काँचन, हेम, हाटक, कनक, सुवर्ण, सुंदर अरुणिमा लिए पीले रंग की एक क़ीमती धातु। राजहंस, कोई सुंदर और क़ीमती वस्तु। **मु. सोने का घर मिट्टी होना (में मिलना)**–सर्वस्व नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। **सोने में घुन लगना**–असंभव या अनहोनी बात होना। **सोने में सुगंधि (सोना और सुगंध)**–किसी अच्छी वस्तु में कोई और अधिक विशेषता होना। संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक तरह की मछली। क्रि. अ. दे. (सं. *शयन*) आँख लगना, शयन करना, नींद लेना। **मु. सोना हराम होना**–कार्य या चिंता से सोने को समय न मिलना। **मु. सोते जागते**–सदा प्रत्येक समय, देह के किसी अंग का सुन्न (संज्ञा, शून्य) होना। संज्ञा, पु. (दे.) एक वृक्ष।

सोना-गेरू–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि.) एक प्रकार का **गेरू**।

सोना-पाठा, सोनापाढ़ी–संज्ञा, पु. दे. (*सं. शोण+पाठा* हि.) एक ऊँचा पेड़ जिसकी छाल, फल और बीज औषधि के काम आते हैं।

सोनामक्खी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वर्ण-माक्षिक*) ***सोनामाखी*** (दे.), एक खनिज पदार्थ (उपधातु)।

सोनार–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सुनार*) (सं. स्वर्णकार) **सुनार** (दे.), सोने का काम बनाने वाली एक जाति।

सोनित*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शोषित*) शोणित, रुधिर, रक्त, लोहू।

सोपान–संज्ञा, पु. (सं.) सीढ़ी, ज़ीना।

सोपानित–वि. (सं.) सोपान-युक्त, सीढ़ी-दार।

सोपि, सोऽपि–वि. यौ. (सं. *सः+अपि*) वही, वह भी।

सोफता–संज्ञा, पु. दे. (*हि. सुभीता*) निर्जन या एकांत स्थान, निराला, ठौर, निराली जगह, रोगादि में कमी होना।

सोफ़ा–संज्ञा, पु. (अं.) गई, गद्दीदार कुर्सी।

सोफ़ियाना–वि. (अ. *सूफ़ी+इयाना फ़ा. प्रत्य.*) सूफ़ी-संबंधी, सूफियों का सा, देखने में सादा परन्तु अतिप्रिय और सुन्दर।

सोफ़ी–संज्ञा, पु. दे. (अ. सूफ़ी) एक प्रकार के मुसलमान।

सोभ*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शोभा*) शोभा, सुन्दरता।

सोभना*†–क्रि. अ. दे. (सं. *शोभन*) दजना, सजना, सोहना, सुशोभित होना, प्रिय या अच्छा लगना, सुन्दर होना।

सोभनीक, सोभनीय–वि. दे. (सं. *शोभनीय*) सुंदर, सुहावना।

सोभा–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शोभा*) शोभा, सुंदरता।

सोभाकर, सोभाकरी–वि. दे. (सं. *शोभाकर*) सुंदर, **सोभाकरि**।

सोभित–वि. दे. (सं. *शोभित*) शोभित, शोभायमान। वि. (दे.) **सोभनीय**।

सोम–संज्ञा, पु. (सं.) मादक रस वाली एक लता जिसका रस वैदिक ऋषि पान करते थे (प्राची.), चंद्रमा, एक प्राचीन देवता, (वैदिक काल) यम, कुबेर, अमृत, वायु, जल, एक सोम यज्ञ, आकाश, स्वर्ग, सोमवार, चंद्रवार, एक सोम से भिन्न, अश्यलता जिसका प्रयोग काया-कल्प में होता है (वैद्य.)।

सोमकर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रमा की किरण, सोमरश्मि।

सोमजाजी–संज्ञा, पु. (दे.) **सोमयाजी,** (सं.) सोमयज्ञ करने वाला।

सोम-तनय, सोम-तनुज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बुध।

सोमनंदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सोमात्मज, बुध, सोम-सुत, सोम-पुत्र।

सोमान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौमन*) एक अस्त्र।

सोमनस–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौमनस्य*) प्रसन्नता।

सोमनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी मूर्ति, 12 ज्योतिलिंगों में से एक शिवमूर्ति, इसकी मूर्ति गुजरात (काठियावाड़) के पश्चिमीय तट के एक प्राचीन नगर में है।

सोमपान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सोमरस पीना।

सोमपायी–वि. (सं. *सोमपासिन्*) सोमरस पीने वाला। स्त्री. **सोमपायिनी**।

सोमपूत–संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. *सोमपुत्र*) सोम-पुत्र, बुध।

सोमदोष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सोमवार का व्रत।

सोमयज्ञ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ, **सोमयाग**।

सोमयाग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक वार्षिक या त्रैवार्षिक यश जिसमें सोमरस पिया जाता था, **सोम-यश** (वैदिक)।

सोमयाजी–संज्ञा, पु. (सं. *सोमयाजिन्*) सोमयज्ञ करने वाला।

सोमरस–संज्ञा, पु. यो. (सं.) सोमलता का रस।

सोमराज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चन्द्रमा, **सोमराय** (दे.)।

सोमराजी–संज्ञा, पु. (सं. *सोमराजिन्*) बकुची, दो बगण वाला एक छंद (पिं.)।

सोमलता–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **सोमलतिका, सोमवल्ली, सोमवल्लरी** एक लता।

सोमवंश–संज्ञा, पु. यौ (सं.) चंद्र वंश।

सोमवंशीय–वि. (सं.) चंद्र-वंश संबंधी, चंद्र-वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

सोमवती-अमावास्या–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या जिसे शुभ मानते हैं (पुरा.)।

सोमवल्लरी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) ब्राह्मी-बूटी, र, ज, र, ज र (गण) वाला एक वर्णिक छंद, तूण चामर छंद (पिं.)।

सोमवल्ली–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सोमलता।

सोमवार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चंद्रवार।

सोमवारी–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सीमवती*) सोमवती अमावस्या, **सोमवारी अमावस**।

सोम-सुत–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बुध।

सोमात्मज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बुध, चंद्रात्मज।

सोमावती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) चंद्रमा की माता।

सोमास्त्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक अस्त्र या बाण।

सोमेश, सोमेश्वर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिवजी, सोमनाथ जी, एक संगीताचार्य।

सोया*–सर्व. दे. (हि. *सोही+ई*) सोई, यही, सो। क्रि. अ. पू. का. (हि. *सोना*) सोकर।

सोया–संज्ञा, पु. दे. (सं. *मिश्रेय*) सोआ, सोवा, एक प्रकार की भाजी या साग। सा. भु. क्रि. अ. (हि. *सोना*)।

सोर*–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *शोर*) शोर, कोलाहल, हल्ला, प्रसिद्धि, ख्याति, नाम। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं *शूटा*) मूल, जड़।

सोरठ–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौराष्ट*) दक्षिणी काडियावाड़ या गुजरात का पुराना नाम, वहाँ की राजधानी (सूरत नगर)। संज्ञा, पु. (हि.) सोरठा छंद (पिं.) एक ओड़व राग (संगी.)।

सोरठा–संज्ञा, पु. दे. (सं. सौराष्ट्र) 48 मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरण में ग्यारह-ग्यारह और दूसरे और चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं, दोहे को उलट देने से सोरठा बन जाता है।

सोरनी‡–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सँवारना+ई प्रत्य.*) झाड़, बुहारी, कूचा, त्रिरात्रि-नासक एक मृतक-संस्कार जो तीसरे दिन होता है।

सोरवा–संज्ञा, पु. (दे.) शोरबा, रसा, **सुरुवा** (दे.)।

सोरह-सोलह–वि. दे. (सं. *पोडश*) पोडश, दश और छै। संज्ञा, पु. छै अधिक दश की संख्या, **षोडश** या अंक, 16। **मु. सोलहो आने**–पूरा-पूरा, संपूर्ण, सबका सब। **सोलह आने पावरत्ती** (मु.)।

सोरही-सोलही–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सोलह*) जुआ खेलने की सोलह चित्ती कौड़ियाँ, इनसे खेले जाने वाला जुआ।

सोरा, स्वारा*†–संज्ञा, पु. दे. (फ़ा. *शोरा*) शोरा। वि. दे. (हि. *सोलह*) सोलह।

सोलंकी–संज्ञा, पु. (दे.) क्षत्रियों का एक राजवंश जो प्राचीन काल मे गुजरात का अधिकारी था।

सोलहसिंगार–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰) शृंगार। सब शृंगार मिलकर, उबटन स्नानादि, **सोरहसिंगार**।

सोला–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक ऊँचा झाड़ जिसकी डालियों के छिलकों से टोप (हैड) बनता है। संज्ञा, पु॰ वि॰ (दे॰) सोलह, आग की लपट।

सोलाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सुलाना*) **सुखाना**।

सोवज–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सावज (हि॰) यह वन पशु जिसका लोग शिकार करते हैं।

सोवन*†–संज्ञा, पु॰ (दे॰ *सोवना*) सोवने की क्रिया का भात।

सोवना*†–क्रि॰, अ॰ दे॰ (हि॰ *सीना*) सोना, नींद लेगा।

सोवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सीया*) सोध्या, एक प्रकार की भाजी या साग, सोया।

सोवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सुलाना*) सुलाना, **सुवाना**।

सोषक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शोषक*) सोखने वाला, शोषक।

सोषण-सोषन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शोषण*) सोखने वाला। वि॰ सोषनीय, सोषित।

सोषना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सोखना*) सोखना। सं॰ **रूप–सोषाना, प्रे॰ रूप–सोषवाना**।

सोषु, सोसु*–वि॰ (हि॰ *सीखना*) सोखने वाला।

सोसन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सौसन*) एक फूल, सोखन, शोषण (सं॰)। यौ॰ **गुलेसौसन**।

सोसनी–वि॰ दे॰ (फ़ा॰ *सौसनी*) सोखन के फूल के रंग का, लाली मिला नीला रंग।

सोऽसि–वाक्य॰ (सं॰ *सोऽसि*) सो तू है, तत्वमसि।

सोऽस्मि*–वा॰ गौ॰ (सं॰) सोऽहम्, वह मैं हूँ, सोऽहमस्मि।

सोहं-सोहंग–वा॰ दे॰ (सं॰ सोऽहम्) सोऽहम्।

सोहगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सोहाग*) तिलक चढ़ने के बाद ब्याह की एक रीति जिसमें लड़की के हेतु वस्त्राभरण और सिंदूर भेजे जाते हैं, मेहंदी, सिंदूर वस्त्राभूषणादि सोहगी की वस्तुएँ।

सोहन–वि॰ दे॰ (सं॰ *शोमन*) सुहावना, अच्छा लगने वाला, सुंदर। संज्ञा, पु॰ (दे॰) नायक, सुंदर व्यक्ति। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक बड़ा पक्षी विशेष। स्त्री॰ **सोहनी**।

सोहन-पपड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰) एक प्रकार की मिठाई, **सोहनपपरी** (दे॰)।

सोहन-हलवा, सोहन-हलुवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ *सोहन+हलवा* अ॰) स्वादिष्ट मिठाई।

सोहना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शोभन*) छजना, सजना, **फबना**, सुशोभित होना, अच्छा या प्रिय लगना, सोमना। स॰ **रूप–सोहाना, सुहाना**। *वि (दे॰) शोभन, मनोहर, सुन्दर, सुहावना, सोहावना। स्त्री॰ **सोहनी**।

सोहनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शोधनी*) झाड़ू, बुहारी, बढनी। वि॰ स्त्री॰ (हि॰ *सोहना*) सुंदर, सुहावनी, एक राग (संगी॰)

सोहवत–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *मुहब्बत*) संग, साथ, संभोग संगत, प्रसंग। वि॰ **सोहवती**।

सोहंसेहमस्मि–वा॰ (सं॰) सोऽहम्, सोऽहमस्मि।

सोहर, सोहल, सोहला–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सोहना*) मांगलिक गीत, बच्चा पैदा होने पर स्त्रियों से गाया जाने वाला गीत, **स्वाहर** (ग्रा॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (स॰ *सूत का*) सूतिका-गृह, सोवा, सौरी।

सोहरत–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ *शोहरत*) (अ॰) प्रख्याति, कीर्ति, **शुहरत**।

सोहराना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *सुहलाना*) धीरे-धीरे मलना या हाथ फेरना, **सोहनावना, सोहलाना**।

सोहाइन*†–वि॰ दे॰ (हि॰ *सुहावना*) सुहावना, सुंदर, मनोरम, **सुहावन**, शोभन।

सोहाई–क्रि॰ स॰ (हि॰ *सोहाना*) शोभा देना, अच्छा या सुंदर जान पड़ना। वि॰ स्त्री॰ (दे॰) रुधिर, सुंदरी, प्रिय। सं॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ *सोहना*) निराने की क्रिया या मजदूरी।

सोहाग†–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सुहाग*) सौभाग्य, सुहाग।

सोहागिन-सोहागिनि-सोहागिनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सुहागिनी*) सुहागिनी सौभाग्यवती, **सोहागन**।

सोहागिल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सुहागिनी*) सुहागिनी, सौभाग्यवती।

सोहाता–वि॰ (हि॰ *सोहना*) अच्छा, सुंदर, शोभित, सुहावना, अच्छा, रुचिर, सुन्दर, रोचक। स्त्री॰ **सोहती**। यौ॰ **सोहाना, सोहाता**–इतना गर्म या ज़ोर का कि सहा जा सके, **सुहाता** (दे॰)। स्त्री॰ **सोहाती**। यौ॰ **ठकुर सोहाती**।

सोहाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ *शोभन*) रुचना, खजना, शोभित, रुचिर होना, प्रिय, रोचक या अच्छा लगना, सुन्दर या उचित जान पड़ना, **सुहाना** (दे॰)।

सोहाया–वि॰ दे॰ (हि॰ *सोहाना*) सुंदर, सुशोभित, रुचिर।

स्त्री. **सोहाई**।

सोहरद, सोहारद†*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौहार्द*) सुहृद् का भाव, मित्रता, मैत्री, **सौहारद**।

सोहारी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *सुहाना*) पूड़ी, पूरी, **सुहारी** (दे.)।

सोहावना–वि. दे. (हि. *सुहावना*) सुन्दर, सुहावना। क्रि. अ. दे. (हि. *सोहाना*) सोहाना, रुधना, सजना।

सोहिं-सोहिं–क्रि. वि. दे. (सं. *सम्मुख*) सम्मुख, सामने, आगे की ओर।

सोहिनी–वि. स्त्री. (हि. *सोहना*) सुहावनी। संज्ञा, स्त्री. करुण रस की एक रागिनी (संगी.)।

सोहिल–संज्ञा, पु. दे. (अ. *सुहैल*) अगस्त्य तारा।

सोहिला–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सोहना*) सोहर, वे गीत जो बच्चा उत्पन्न होने पर गाये जाते हैं, मांगलिक गीत।

सोंही–क्रि. वि. (दे.) सम्मुख (सं.) सामने।

सोहैं–क्रि. वि. दे. (सं. *सम्मुख*) सम्मुख, सामने, आगे संज्ञा, पु. (हि. *सौंह* का ब. द.) क्रि. अ. दे. (हि. *सोहना*) शोभा दें, अच्छे लगें, सौं हैं।

सौं*–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. सौमंद) सौंहँ, शपथ, क़सम। अव्य. (ब्र.) सों, से, द्वारा, करण और अपादान का एक चिह्न (व्याक.)। प्रत्य. (दे.) सा, सों।

सौंगी–वि. दे. (सं. *सरल*) सीधे, सरल। **मु.** (दे.) **सौंगी न आना**–सीधा न होना, ठीक न होना।

सौंगियाना–क्रि. सं. (दे.) ठीक या सीधा करना।

सौंधा–वि. दे. (हि. *महँगा का उलटा*) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, ठीक, उचित।

सौंधाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. सौंधा) ज्यादती, अधिकता, उत्तमता, उपयुक्तता।

सौंचना†–क्रि. सं. दे. (सं. *शौभ*) मलत्यागादि कर्म करना, जल त्याग पर गुह्येन्द्रिय को जल से धोना, सगैंचना (आ.)।

सौंचर–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सोचर*) सोचर नमक, **सचिर**।

सौंचाना†–क्रि. स. दे. (हि. *सौंचना*) मल-त्याग कराना, तथा गुदादि को धुलाना, शौत्र कराना।

सौंज*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *शय्या*) **सौज**, साज-सामान, सामग्री, उपकरण।

सौंतुख*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सम्मुख*) सम्मुख, सामने। क्रि. वि. आँखों के आगे, प्रत्यक्ष।

सौंदन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सौंदना*) धोबियों का कपड़ों को रेह-मिले पानी में भिगोना। स्त्री. **सौंदनि**।

सौंदना–क्रि. स. दे. (सं. *संघन्*) सानना, परस्पर मिलाना, ओत-प्रोत करना, कपड़ों को रेह मिले पानी में भिगो कर रौंदना। स. **रूप–सौंदाना, प्रे. रूप–सौंदवाना**।

सौंदर्य–संज्ञा, पु. (सं.) सुधराई, सुन्दरता।

सौंदर्यता–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) सौंदर्य, सुंदरता।

सौंध*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौध*) महल, हवेली, प्रासाद। संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. **सुगंधि**) सुगंध, सुवास।

सौंधना–क्रि. स. दे. (सं. *सुगंध*) सुवासित या सुगंधित करना, वासना। स. **रूप–सौंधाना, प्रे. रूप–सौंधवाना**।

सौंधा–वि. दे. (हि. *सोंधा*) सोंधा, रुचिकर, अच्छा सुगंधित। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **सौंधाई**।

सौंनमक्खी-सौनामाखी–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सोनामक्खी,* सं. *स्वर्ण-माक्षिक*) सोना मक्खी।

सौंनी–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सुनार*) सुनार।

सौंपना–क्रि. स. दे. (समर्पण) सिपुर्द करना, सहेजना, हवाले करना। सं. **रूप–सौंपना, प्रे. रूप–सौंपवाना**।

सौंफ़–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. शतपुष्प) एक विख्यात छोटा पौधा जिसके बीज औषधि और मसाले में पढ़ते हैं।

सौंफ़िया-सौंफ़ी–संज्ञा, स्त्री. (हि.) सौंफ़ की मदिरा। वि. सौंफयुक्त।

सौंभरि–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौभरि*) एक ऋषि।

सौंर, सौर–संज्ञा, स्त्री. (हि. *सौर*) ओढ़ने का भारी कपड़ा रज़ाई, लिहाफ़, चादर। संज्ञा, स्त्री. (हि. *सौरी*) ज़च्चाख़ाना, सौरी, सोवर।

सौंरई†–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *श्यामता* हि. *साँवरा*) साँवलापन, श्यामता।

सौंरना*–क्रि. स. दे. (सं. स्मरण) स्मरण या याद करना, **सुमिरना** (दे.)। **स. रूप–सौंराना, प्रे. रूप–सौंरवाना**। क्रि. अ. (दे.) **सवारना**।

सौंह*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सौगंद*) क़सम, शपथ, सौं, सोंह, सों। क्रि. वि. संज्ञा, पु. दे. (सं. *सम्मुख*) समक्ष, सामने।

सौंहन–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सोहन,* सं. *शोभन*) सुहावना,

सुन्दर।

सौंहाना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) सीधा करना, सामने जाना।

सौंही–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक हथियार।

सौ–वि॰ दे॰ (सं॰ *शत*) नब्बे और दस, शत, पाँच बीस, पचास का दूना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) दश के दश घात की संख्या या अंक, 100। वि॰ (दे॰) सा, समान। **मु॰ सौ बात की एक बात**–निचोड़, तत्व, सारांश, तात्पर्य। **एक (बात) की सौ सुनना**–बहुत उत्तर प्रत्युत्तर देना (लड़ाई या विवाद में)।

सौक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सौत*) सपत्नी, सौत। वि॰ एक सौ। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **शौक़** (अ॰) **सौख** (आ॰)।

सौकन†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सौत*) सौत।

सौकर्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुकरता, सुविधा, सुसाध्यता, सुभीता, सुअरपन, सूकरता।

सौकुमार्य्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मार्दव, कोमलता, मृदुलता, सुकुमारता, यौवन, नज़ाकत (फ़ा॰) काव्य का एक गुण, जिसमें ग्राम्य और कण-कटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य है।

सौख*†–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *शौक़*) शौक़ उत्सुकता, उत्कंठा, चाह, **सउख**। वि॰ (दे॰) **सौखी, सौखीन**, शौकीन (फ़ा॰)। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) **सौखीनी**।

सौख्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुखत्य, सुख, आराम, सुख का भाव।

सौगंद–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *सौगंद*) शपथ, क़सम, **सौगंध**, **सौंह**।

सौगंध–संज्ञा, पु॰ (दे॰) सौगंद, शपथ, सौंह। संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुगंधित, तेल इत्यादि का व्यापारी, गंधी, सुवास, सुगंध।

सौग़ात–संज्ञा, स्त्री॰ (तु॰) भेंट, उपहार, तोहफ़ा (फ़ा॰), परदेश से इष्ट मित्रों को देने के हेतु लाई हुई चीज़, **सौगात** (दे॰)।

सौधा†–वि॰ दे॰ (हि॰ *महँगा का उलटा*) सस्ता, मद्दा, कम दाम या मोल का।

सौच–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शौच*) शौच।

सौज–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शय्या*) उपकरण, साज सामान, सामग्री।

सौजना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *राजना*) सजना, सँवरना, आभूषित होना।

सौजन्य–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुजनता, शिष्टता, भलमनसाहत, (अ॰) कर्टसी।

सौजन्यता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰) सौजन्य, सुजनता, भलमनसाहत।

सौजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *साजब*) शिकार का बनैला पशु या पक्षी, **साउज** (दे॰)।

सौत-सौति–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सपत्नी) किसी स्त्री के प्रेमी या पति की दूसरी प्रेमिका या स्त्री, सपत्नी, **सवति** (दे॰)। **मु॰ सौतियाडाह**–दो सौतों की आपस की ईर्ष्या, द्वेष, वैर-भाव, जलन।

सौतन-सौतिन–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सौत*) सौति, सौत, सपत्नी, **सौतिनि** (दे॰)।

सौतुक, सौतुख*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *सौतुख*) सामने, जागने की दशा में।

सौतेला–वि॰ दे॰ (हि॰ *सौत+ पला प्रत्य॰*) सौत का पुत्र, सौत से उत्पन्न, सौत का, सौत संबंधी। स्त्री॰ **सौतेली**।

सौतामणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) इन्द्र के प्रसन्नतार्थ एक यज्ञ।

सौदा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बेचने-ख़रीदने का पदार्थ, वस्तु, माल, लेन-देन, क्रय-विक्रय, व्यवहार, व्यापार। यौ॰ **सौदा-सुलुक**–मोल लेने की वस्तु या सामान, **सौदासूत**, व्यवहार। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) उन्माद, पागलपन, एक उर्दू के शायर का उपनाम।

सौदाई–संज्ञा, पु॰ (अ॰ *सौदा*) पागल, उन्मादी, बावला।

सौदागर–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) व्यवसायी, व्यापारी, व्यापार करने वाला।

सौदागरी–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) व्यापार, व्यवसाय, उद्यम, रोज़गार, तिजारत, धंधा।

सौदामनी, सौदामिनी (दे॰)–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *सौदामनी*) बिजली, विद्युत।

सौध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) महल, प्रासाद, भवन, रजत, चाँदी, दूधिया पत्थर।

सौधना–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ *सोधना*) सोधना।

सौन*–क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ सम्मुख), सामने, आगे। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्रवण*) कान, स्रौन।

सौनक–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *शौनक*) शौनक।

सौनन, सौननि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ *सौंदन*) सौंदन, स्रौनन,

कानों।

सौना*–संज्ञा, पु. दे. (हि. *सोना*) सोना।

सौपना*–क्रि. स. दे. (हि. *सौंपना*) सौंपना, सिपुर्द करना, सहेजना।

सौबल–संज्ञा, पु. (सं.) गंधार-नरेश सुबल का पुत्र, शकुनि।

सौभ–संज्ञा, पु. (सं.) कामचारि पुर, एक पुराना प्रदेश, वहाँ के प्राचीन राजा, आकाश में राजा हरिश्चंद्र की एक कल्पित नगरी।

सौभग–संज्ञा, पु. दे. (सं.) सौभाग्य, संपत्ति, ऐश्वर्य, धन, आनंद, सुख, सुन्दरता।

सौभद्र–संज्ञा, पु. (सं.) सुभद्रा पुत्र, अभिमन्यु, सुभद्रा के कारण हुआ युद्ध। वि. सुभद्रा-संबंधी, सुभद्रा का।

सौभरि–संज्ञा, पु. (सं.) एक ऋषि जिन्होंने राजा मानधाता की 50 कन्याओं से ब्याह करके पाँच हजार पुत्र पैदा किए (पुरा.)।

सौभागिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सौभाग्य*) सोहागिनि, सधवा या सौभाग्यवती स्त्री।

सौभाग्य–संज्ञा, पु. (सं.) सुन्दर भाग्य, खुशक़िस्मती, कल्याण, आनंद, सुख, कुशलक्षेम, सुहाग, अहिवात, वैभव, सौंदर्य, ऐश्वर्य।

सौभाग्यवती–वि. स्त्री. (सं.) सधवा-स्त्री, सुहागिन, सुहागिनी, भाग्यशाली स्त्री।

सौभाग्यवान्–वि. (सं. *सौभाग्यवत्*) बड़ा भाग्यवान्, **सौभाग्यशाली, सुखी** और संपन्न। स्त्री. **सौभाग्यवती**।

सौम*–वि. दे. (सं. *सौम्य*) सोम संबंधी, सोम का, शीतल, स्निग्ध, सुशील, शांत, शुभ, सुन्दर। संज्ञा, पु. सोम-यज्ञ, बुध, ब्राह्मण, आगहन मास, एक संवत्सर, सज्जनता, एक अस्त्र।

सौमन–संज्ञा, पु. (सं.) एक अस्त्र।

सौमनस–वि. (सं.) सुमन या फूलों का, रुचिकर, मनोरम, प्रिय। संज्ञा, यु. आनंद, प्रफुल्लता, पश्चिम दिशा का दिग्गज (पुरा.) अस्त्र, निष्फलकारक एक अस्त्र।

सौमनस्य–संज्ञा, पु. (सं.) प्रसन्नता।

सौमित्र–संज्ञा, पु. (सं.) सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण और शत्रुघ्न, भिन्नता, मैत्री।

सौमित्रा*–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *सुमित्रा*) सुमित्रा रानी, **सुमितरा** (दे.)।

सौमित्रि–संज्ञा, पु. (सं.) सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण, शत्रुघ्न।

सौम्य–वि. (सं.) चंद्रमा या सोमलता सम्बन्धी, शीतल, स्निग्ध, शान्त, सुशील, सीधा, शुभ, सुन्दर माँगलिक। स्त्री. **सौम्या**। संज्ञा, पु. (सं.) सोम यज्ञ, चन्द्रात्मज, बुध, ब्राह्मण, सज्जनता, 60 संवत्सरों में से एक, एक दिव्यास्त्र, मार्गशीर्ष या अगहन का महीना। संज्ञा, पु. (सं.) **सौम्यता**।

सौम्यकृच्छ्–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक मत, उपवास।

सौम्यता–संज्ञा, पु. (सं.) सुशीलता, सज्जनता, शान्तता, सौंदर्य, सुन्दरता, सौम्य का भाव या धर्म।

सौम्य-दर्शन–वि. यौ. (सं.) सुन्दर, मनोरम, प्रिय-दर्शन।

सौम्य-शिखा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) विषम मुक्तक वृत्त के दो भेदों में से एक भेद (पिं.)।

सौम्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अच्छे स्वभाव की स्त्री, सुन्दर और सशीला स्त्री, आर्या छंद का एक भेद (पिं.)।

सौर–वि. (सं.) सूर्य से उत्पन्न, सूर्य का, सूर्य-संबंधी। *संज्ञा, पु. (सं.) सूर्योपासक, शनिश्चर। *संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. *सौंड*) ओढ़ना, रजाई, लिहाफ़, चादर।

सौरज*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *सौर्य*) सूर्य से उत्पन्न, सूर्य का, सूर्य-सम्बन्धी। संज्ञा, पु. सूर्य का उपासक, सूर्य-सुत, शनिश्चर। संज्ञा, पु. (दे.) **शौर्य** (सं.) **शूरता**।

सौर-दिवस–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक सूर्योदय से दूसरे तक साठ घड़ी का समय।

सौरभ–संज्ञा, पु. (सं.) सुगंध, सुवास, अच्छी महक, सुरभि, केसर, आम।

सौरभक–संज्ञा, पु. (सं.) एक वर्णिक छंद (पिं.)।

सौरभित–वि. (सं. *सौरभ*) सुरभित, सुगंधिक, महकने वाला, सुवासित।

सौर मास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक संक्रान्ति से दूसरी तक का समय, सूर्य के एक राशि के पार करने का समय।

सौर वर्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक मेष की संक्रान्ति से दूसरी तक का समय, एक पक्का वर्ष।

सौरसेन–संज्ञा, पु. दे. (सं. *शौरसेन*) शूरसेन का पुत्र, वसुदेव जी।

सौरसेनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **शौरसेनी** (सं.) शूरसेन प्रान्त की

प्राकृत भाषा।

सौराष्ट्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) काठियावाड़ और गुजरात का देश (प्राचीन), **सोरठदेश** (दे॰), सोरठ-वासी, एक वर्णिक छन्द (पिं॰)।

सौराष्ट्र-मृत्तिका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) गोपी चन्दन।

सौराष्ट्रिक–वि॰ (सं॰) सोरठ देश-संबंधी, सौराष्ट्र देश का।

सौरास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक दिव्यास्त्र, सूर्यास्त्र।

सौरि–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*शौरि*) श्रीकृष्ण, वसुदेव। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सोवर, सौरी, प्रसूता-गृह। संज्ञा, पु॰ (सं॰) शनि।

सौरी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *सूतिका*) सूतिका-गृह, सूतिकागार, ज़च्चाख़ाना स्त्री के बच्चा जनने का कमरा। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शफरी*) एक प्रकार की मछली। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सुअरिया, शूकरी (सं॰) सोरी (दे॰)।

सौरीय-सौर्य–वि॰ (सं॰) सूर्य-सम्बन्धी, सूर्य का। संज्ञा, पु॰ (दे॰) **शौर्य** (सं॰) **सौर्ज** (दे॰)।

सौवर्चल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोंचर नमक।

सौवर्ण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुवर्ण या सोने का, सोना।

सौवीर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सिंधु नदी के समीप का प्रदेश (प्राचीन), उस देश का निवासी या राजा।

सौवीराँजन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुरमा।

सौष्ठव–संज्ञा, पु॰ (सं॰ सुष्ठु) सुडौलपन, सौंदर्य, सुन्दरता, उपयुक्तता, नाटक का एक अंग (नाट्य॰)।

सौसन–संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सोसन*) एक फूल।

सौसनी–वि॰ संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ *सोसनी*) सोसन फूल के रंग का।

सौहैं–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ *शपथ*) शपथ, क़सम, सौगंद, सौगंध। क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ *सम्मुख*) समक्ष, सामने, आगे, सम्मुख।

सौहार्द-सौहार्थ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मैत्री, मित्रता, सुहृद, का भाव।

सौहीं-सौहैं–क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ *सौंह*) सामने, सम्मुख, आगे।

सौहृद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मित्रता, मैत्री, दोस्ती, मित्र, साथी। संज्ञा, पु॰ सौहृद्य।

स्कंद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गिरना, बहाना, निकलना, ध्वंस, विनाश, शिव-सुत जो देव सेनापति और युद्ध के देवता हैं, कार्तिकेय, शिव, देह, शरीर, बालकों के 9 घातक ग्रहों या रोगों में से एक ग्रह या रोग।

स्कंदगुप्त–संज्ञा, पु॰ (सं॰) गुप्तवंश का एक सम्राट् (ई॰ सन् 450 से 467 तक)।

स्कंदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रेचन, कोठे की सफ़ाई, निकलना, गिरना, बहना। वि॰ **स्कंदनीय, स्कंदित**।

स्कंदपुराण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अठारह पुराणों में से एक महापुराण जिसमें कार्तिकेय का वर्णन है।

स्कंदित–वि॰ (सं॰) निकला हुआ, स्खलित, गिरा हुआ, पतित, स्रवित।

स्कंध–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मोढा, कंधा, कौंधा, पेड़ की डालियों के फूटने का स्थान, दंड, कांड, शाखा, डाली, वृन्द, झुंड, समूह, ब्यूह, सेना का अंग, पुस्तक का विभाग जिसमें एक पूर्ण प्रसंग हो, शरीर, खंड, आचार्य, मुनि, युद्ध, रण, संग्राम, आर्या छन्द का एक भेद (पिं॰), पाँच पदार्थ—रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा, संस्कार (बौद्ध) रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द (दे॰ शास्त्र)।

स्कंधावार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा का शिविर या डेरा, ख़ीमा, छावनी, सेना-निवास, सेना, कैंप (अं॰)।

स्कंभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्तंभ, खम्भा, ईश्वर, ब्रह्म।

स्खलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पतन, गिरना, निकलना, फिसलना, चूकना। वि॰ **स्खलनीय**।

स्खलित–वि॰ (सं॰) पतित, विचलित, गिरा हुआ, च्युत, फिसला हुआ, चूका हुआ।

स्तंभ–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्थंभ, खम्भा, थंभा, थूनी, तरु-स्कंध, पेड़ की पेड़ी या तना, शरीर के अंगों की गति का अवरोध, अचलता, जड़ता, रुकावट, प्रतिबंध, किसी शक्ति के रोकने का एक तांत्रिक प्रयोग, शरीर के जड़वत् हो जाने का एक सात्विक भाव (सा॰)।

स्तंभक–वि॰ (सं॰) अवरोधक, रोकने वाला, वीर्य के पतन को रोकने वाला, भलावरोध-कारक।

स्तंभन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) निवारण, रुकावट, अवरोध, वीर्य के स्खलन में रुकावट, विलंब या बाधा, वीर्य-पात के रोकने की औषधि, जड़ या निश्चेष्ट करना, जड़ी-करण, किसी की शक्ति या चेष्टा को रोकने का एक तान्त्रिक प्रयोग, पाँच बाणों में से एक, मलावरोध, मदन के कब्ज। वि॰ **स्तंभनीय, स्तंभित**।

स्तंभित–वि, (सं.) जड़, अचल, स्तब्ध, निश्चल, सुख, निस्तब्ध, अवरुद्ध, रुका या रोका हुआ।

स्तन–संज्ञा, पु. (सं.) मादा पशुओं या स्त्रियों के दूध रहने का अंग, पयोधर, धन, अस्तन, अस्थन (दे.), उरोज, चूँची, छाती। **मु. स्तन पीना**–शिशु का स्तनों से दूध पीना, शैशव का सा व्यवहार करना (व्यंग्य)।

स्तनंधय–संज्ञा, पु. (सं.) बालक, लड़का।

स्तनन–संज्ञा, पु. (सं.) मेघ-गर्जन, बादल, गर्जना, ध्वनि, आर्त्तनाद।

स्तन-पान–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्तनों या थनों से दूध पीना, स्तन्यपान।

स्तनपायी–वि. (सं. *स्तनपायिन्*) माता के स्तनों या थनों से दूध पीने वाला, शिशु, छोटा बालक, बच्चा।

स्तब्ध–वि. (सं.) अचल, जड़ीभूत, दृढ़, स्तंभित, निश्चेष्ट, स्थिर, धीमा, मन्द।

स्तब्धता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जड़ता, निश्चेष्टा, दृढ़ता, स्थिरता, स्तब्ध का भाव।

स्तर–संज्ञा, पु. (सं.) परत, तह, थर, तबक, तल्प, शय्या, सेज, पृथ्वी-विद्या में भिन्न-भिन्न कालों में बनी तहों के आधार पर भूमि की बनावट और विभाग का विचार, **अस्तर** (दे.), दोहरे कपड़े का भीतरी वस्त्र।

स्तरण–संज्ञा, पु. (सं.) फैलना या बखेरना, छितराना। वि. **स्तरणीय, स्तरित**।

स्तव–संज्ञा, पु. (सं.) स्तुति, स्तोत्र, किसी देवता या महापुरुष का गुणगान या रूपादि का पद्यबद्ध वर्णन।

स्तवक–संज्ञा, पु. (सं.) फूलों का फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता। समूह, राशि, ढेर, पुस्तक का परिच्छेद या अध्याय, स्तुति करने वाला, अस्तवक (दे.)।

स्तवन–संज्ञा, पु. (सं.) स्तुति, स्तव, यशोगान, कीर्ति-कीर्तन, गुण-कथन। वि. **स्तवनीय**।

स्तीर्ण–वि. (सं.) फैलाया, छितराया या बिखेरा हुआ, विकीर्ण, विस्तृत।

स्तुत–वि. (सं.) प्रशंसित, जिसकी स्तुति की गई हो।

स्तुति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्तवन, यशोगान, कीर्ति-कीर्तन, गुण-कथन, प्रशंसा, प्रशंस्ति, बड़ाई, दुर्गा, **अस्तुति** (दे.)।

स्तुति-पाठ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रशस्ति पाठ, स्तुति पड़ना।

स्तुति-पाठक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्तवन करने वाला, स्तुति पढ़ने वाला, भाट, मागध, चारण, सूप, बंदीजन।

स्तुतिवाचक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्तुति या प्रशंसा करने वाला, खुशाबंदी, कीर्ति कहने वाला।

स्तुत्य–वि. (सं.) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, कीर्तिनीय, स्तुति या बड़ाई के योग्य।

स्तूप–संज्ञा, पु. (सं.) ऊँचा टीला या दूह, वह ऊँचा टीला जिसके तले भगवान बुद्ध या अन्य किसी महात्मा की हड्डियों या केशादि स्मृति-चिह्न रखे हों।

स्तेय–संज्ञा, पु. (सं.) चोरी, चौर्य।

स्तोक–संज्ञा, पु. (सं.) बिंदु, बूँद, चातक, पपीहा।

स्तोता–वि. (सं. *स्तोतृ*) प्रशंसक, स्तुति करने वाला।

स्तोत्र–संज्ञा, पु. (सं.) किसी देवी देवता का पद्यबद्ध रूप, गुण, यशादि का कथन, स्तुति, स्तव, गुण या यश का कीर्तन, स्तवन।

स्तोम–संज्ञा, पु. (सं.) स्तवन, स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ, राशि, समूह, एक यज्ञ विशेष।

स्त्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नारी, **तिरिया** (दे.), पत्नी, जोरू, औरत, मादा, दो गुरु वर्णो का एक वर्णिक वृत्त (पिं.)। संज्ञा, स्त्री. (दे.) इस्तिरी।

स्त्रीत्व–संज्ञा, पु. (सं.) स्त्रीपन, स्त्री का भाव या धर्म, ज़नानापन, स्त्रीलिंग सूचक प्रत्यय (व्याक.)।

स्त्रीधन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) जिस धन पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो।

स्त्रीधर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्त्री-दर्शन, स्त्रियों का रजस्वला होना, मासिक-धर्म, मंथली कोर्स (अं.)। यौ. (सं.) स्त्रियों का कर्तव्य।

स्त्री-प्रसंग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संभोग, मैथुन, रति।

स्त्रीलिंग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) योनि, स्त्रियों का गुह्य स्थल, भग, स्मर-मन्दिर, जिस शब्द से स्त्री का बोध हो (व्याक.), जैसे—लड़की स्त्रीलिंग है। विलो. पुल्लिंग।

स्त्री-समागम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रसंग, मैथुन, सम्भोग, रति, स्त्री, स्त्री-सहवास।

स्त्रैण–वि. (सं.) स्त्री-सम्बन्धी, स्त्रियों का स्त्री-रत, स्त्रियों के अधीन या वश में रहने वाला, जनखा।

स्थ–प्रत्य. (सं.) यह शब्दों के अंत में लग कर स्थिति

(सत्ता), उपस्थिति (वर्तमान), निवासी (रहने वाला), लीन (रत) आदि का द्योतक है।

स्थकित–वि. (हि. *थकित*) आन्त, क्रान्त, थका हुआ।

स्थगित–वि. (सं.) आच्छादित, अवरुद्ध रोका हुआ, मुलतबी, जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो।

स्थपति–संज्ञा, पु. (सं.) बढ़ई, शिल्पी।

स्थल–संज्ञा, पु. (सं.) जल-रहित भू-भाग, जल-रहित या सूखी भूमि, खुश्की, मरुभूमि, जगह, स्थान, मौक़ा, अग्रसर, कर। स्त्री. **स्थली**।

स्थलकमल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूखी भूमि में होने वाला कमल, गुलाब।

स्थलचर, स्थलचारी–वि. (सं.) सूखी भूमि पर रहने या चलने वाला।

स्थलज–वि. (सं.) सूखी भूमि में उत्पन्न होने वाला।

स्थलपद्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्थल, कमल, गुलाब।

स्थलयुद्ध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **स्थल-रण,** सूखी भूमि पर होने वाला संग्राम, युद्ध या लड़ाई। विलो. **जल-युद्ध**।

स्थली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सूखी भूमि, स्थान, जगह, थली (दे.)।

स्थलीय–वि. (सं.) सूखी भूमि संबंधी, स्थल का, सूखी भूमि पर का, किसी स्थान का, स्थानीय।

स्थविर–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्मा, बुड्ढा, वृद्ध, पूज्य, वृद्ध, बौद्ध, भिक्षु।

स्थाई–वि. दे. (सं. *स्थायी*) स्थायी, **थाई** (दे.)।

स्थाणु–संज्ञा, पु. (सं.) स्तंभ, खंभा, थूनी, ठूँठा पेड़, शिव जी। वि. स्थिर, अटल, अचल।

स्थान–संज्ञा, पु. (सं.) जगह, ठाँव, ठौर, ठाम, टिकाव, स्थल, ठहराव, घर, डेरा, आवास, स्थिति, मैदान, भू-भाग, कार्यालय, ओहदा, पद, देवालय, मंदिर, मौका, अवसर, असथान (दे.)।

स्थानच्युत–वि. यौ. (सं.) जो अपनी जगह या स्थान से हट या गिर गया हो।

स्थानभ्रष्ट–वि. यौ. (सं.) स्थानच्युत, जो अपने स्थान से हट या गिर गया हो।

स्थानांतर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दूसरी जगह दूसरा घर, प्रस्तुत या प्रकृत स्थान से भिन्न।

स्थानांतरित–वि. यौ. (सं.) जो एक स्थान को छोड़ दूसरे पर गया हो। (अं.) ट्रांसफर।

स्थानापन्न–वि. (सं.) एवज़, क़ायम-मुक़ाम, प्रतिनिधि, दूसरे के स्थान पर अस्थाई रूप से कार्य करने वाला।

स्थानिक–वि. (सं.) स्थान या ठौर वाला, स्थानीय, उस जगह का जिसका उल्लेख हो।

स्थानीय–वि. (सं.) स्थानिक, उसी स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो।

स्थापक–वि. (सं.) सूत्रधार या सहयोगी (नाटय.) स्थापना करने वाला, क़ायम करने या रखने वाला, मूर्त्ति स्थापित करने या बनाने वाला, संस्थापक, स्थापनकर्ता, कोई संस्था खड़ी करने या खोलने वाला।

स्थापत्य–संज्ञा, पु. (सं.) राजगीरी, गेगारी, भवन-निर्माण, भवन-निर्माण के सिद्धान्तादि के विवेचन की विद्या।

स्थापत्यवेद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) चार उपवेदों में से एक, शिल्पवेद, वास्तु-शिल्प-शास्त्र, कारीगरी की विद्या।

स्थापन–संज्ञा, पु. (सं.) रखना, उठाना, खड़ा करना, जमाना, किसी विषय को प्रमाणों से सिद्ध करना, प्रतिपादन या सावित करना, निरूपण, नया काम जारी करना, थापन (दे.)। वि. **थापनीय, स्थापित**।

स्थापना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) **थापना** (दे.), बैठाना, जमाना, रखना, स्थित या प्रतिष्ठित करना, सिद्ध या प्रतिपादन करना, सावित करना।

स्थापित–वि. (सं.) प्रतिष्ठित, व्यवस्थित, निश्चित, निर्दिष्ट, जिसकी स्थापना की गई हो, **थापित** (दे.)

स्थायित्व–संज्ञा, पु. (सं.) स्थिरता, सुदृढ़ता, स्थायी होने का भाव।

स्थायी–वि. (सं. *स्थायिन्*) स्थिर रहने या टिकने वाला, टिकाऊ, ठहरने वाला, दृढ़, बहुत दिनों तक रहने या चलने वाला, **थाई** (दे.)।

स्थायीभाव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) विभावादि में अभिव्यक्त हो रसत्व को प्राप्त होने वाले तथा रस में सदा स्थित रहने वाले तीन प्रकार के भावों में से एक, इसके नौ भेद हैं। हास्य, शोक, भय, जुगुप्सा या घृणा, रति, क्रोध, उत्साह, विस्मय और निर्वेद (साहि.)।

स्थायी समिति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) किसी सभा या

सम्मेलन के दो अधिवेशनों के बीच के समय में उसका कार्य संचालन करने वाली समिति है।

स्थाल–संज्ञा, पु. (सं. *स्थल*) बड़ी थाली, बड़ी हाँड़ी, रकाबी, **थाल** (दे.)।

स्थाली–संज्ञा, स्त्री. (हि. *स्थाल*) **थाली** (दे.), तश्तरी, रकाबी, हाँड़ी।

स्थाली-पुलाक-न्याय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) एक बात को जानकर उसके संबंध की अन्य सब बातें जान लेना।

स्थावर–वि. (सं.) अलल, अटल, स्थिर, गैरमनकूला (फ़ा.), जो एक जगह से दूसरी पर न लाया जा सके। संज्ञा, स्त्री. **स्थावरता**। विलो. **जंगम**। संज्ञा, पु. पहाड़, पेड़, अचल धन या संपत्ति।

स्थावरविष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वृक्षादि स्थावर पदार्थों में होने वाला विष।

स्थाविर–संज्ञा, पु. (सं.) बुढ़ापा बुढ़ाई।

स्थित–वि. (सं.) अपने स्थान पर स्थित या ठहरा हुआ, अवलंबित, आसीन, बैठा हुआ, स्वप्रण पर जमा हुआ, उपस्थित, विद्यमान, ऊर्ध्व, निवासी, अवस्थित, खड़ा हुआ, रहने वाला।

स्थितता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्थित, ठहराव।

स्थितप्रज्ञ–वि. (सं.) सब मनोविकारों से रहित, स्थिर विचार-शक्ति या विवेकबुद्धि वाला, आत्मसंतोषी।

स्थिति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) परिस्थिति, ठहराव, टिकाव, रहना, ठहरना, निवास, दशा, अवस्था, अवस्थान, दर्जा, पद, एक दशा या स्थान में रहना, सदा बना रहना, अस्तित्व, स्थिरता, पालन।

स्थितिस्थापक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह शक्ति या गुण जिसके कारण कोई वस्तु गई स्थिति में आकर भी फिर अपनी पूर्व दशा को प्राप्त हो जाए। वि. किसी पदार्थ को उसकी पूर्व दशा में प्राप्त कराने वाली शक्ति, लचीला।

स्थिति-स्थापकता–(स्त्री.) **स्थिति-स्थापकत्व**–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लचीलापन, स्थिति स्थापक का भाव।

स्थिर–वि. (सं.) अचल, निश्चल, शाश्वत, अटल, ठहरा हुआ, शांत, स्थायी, दृढ़, मुक़र्रर, नियत, निश्चित। संज्ञा, पु. शिव, देवता एक योग (ज्यो.), पहाड़, एक छंद (पिं.)।

स्थिरचित्त–वि. यौ. (सं.) जिसका मन अचल या स्थिर हो, दृढ़मन, थिरचित (दे.)। संज्ञा, स्त्री. **स्थिरचित्तता**।

स्थिरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) निश्चलता, अचलत्व, ठहराव, दृढ़ता, धैर्य, स्थायित्व, **थिरता** (दे.)।

स्थिरबुद्धि–वि. यौ. (सं.) दृढ़चित्त, अटल मन, जिसकी बुद्धि स्थिर हो, स्थिरधी।

स्थूल–वि. (सं.) पीवर, पीन, मोटा, मोटी, वस्तु, सहज में समझ में आने या दिखलाई देने वाला। विलो. **सूक्ष्म**। संज्ञा, पु. इंद्रिय-ग्राह्य पदार्थ, गोचर वस्तु। क्रि. वि. यौ. (सं.) **स्थूल रूप से, स्थूलदृष्टि से**।

स्थूलता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मोटाई, मोटापन, स्थूल का भाव, भारीपन, पीनता, वीररत्व। संज्ञा, पु. **स्थूलत्व**।

स्थैर्य्य–संज्ञा, पु. (सं.) दृढ़ता, स्थिरता।

स्नपित-स्नात–वि. (सं.) नहाया हुआ।

स्नातक–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ण कर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हुआ व्यक्ति स्त्री. स्नानिक। (अं.) ग्रेजुएट।

स्नान–संज्ञा, पु. (सं.) अवगाहन, नहाना, स्वच्छतार्थ शरीर को पानी से धोना, देह साफ़ करना, **असनान, अन्हान, न्हान, नहान** (दे.), देह को वायु या धूप में रख उस पर उनका प्रभाव पड़ने देना।

स्नानागार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्नानालय, नहाने का कमरा या स्थान।

स्नायविक–वि. (सं.) नाड़ी या स्नायु-सम्बन्धी।

स्नायु–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वेदना तथा स्पर्शादि का ज्ञान कराने वाली शरीर की भीतरी नाड़ियाँ या नसें।

स्निग्ध–वि. (सं.) जिसमें तेल या स्नेह हो, चिकना, प्रेम-युक्त, मृदुल।

स्निग्धता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मसृणता, चिकनापन, चिकनाहट, प्रियता, प्रिय होने का भाव।

स्नुषा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पुत्रवधू, पतोहू।

स्नेह–संज्ञा, पु. (सं.) प्यार, प्रेम, छोह, मुहब्बत, चिकना पदार्थ, चिकना, चिकनाई या चिकनाहट वाली वस्तु, तेल, मृदुलता, मसृणता, स्नेह, नेह (दे.)।

स्नेहपात्र–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) प्रेम करने योग्य, प्रेम पात्र, प्यारा, चिकनाई का बरतन।

स्नेहपन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कुछ विशिष्ट रोगानुसार तेल,

घी आदि का पीना (वैद्य.)।

स्नेही–संज्ञा, पु. (सं. *स्नेहिन्*) नेही, प्रेमी, प्रिय, प्यारा, प्रेम करने वाला, मित्र, साथी, **अस्नेही, सनेही, नेही** (दे.)।

स्पंद, स्पंदन–संज्ञा, पु. (सं.) धीरे-धीरे काँपना या हिलना, स्फुरण, हृदय या अंग का फड़कना। वि. **स्पंदित, स्पंदनीय**।

स्पर्द्धा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रगड़, डाह, संघर्ष, द्वेष, साम्य, किसी के मुक़ाबिले में उससे आगे बढ़ने की इच्छा, हौसिला, होड़, साहस, बराबरी। वि. **स्पर्द्धिनृ**, (अं.) कम्पटीशन।

स्पर्द्धी–वि. (सं. *स्पर्द्धिन्*) डाही, द्वेषी, स्पर्द्धा करने वाला, ईर्षालू, (अं.) कम्पटीशन।

स्पर्श–संज्ञा, पु. (सं.) दो वस्तुओं का इतना सामीप्य कि उनके तल परस्पर छू या लग जाएँ, छू जाना, छूना, त्वचा-इन्द्रिय का वह विषय या गुण जिससे उसे किसी वस्तु के दबाव या छू जाने का ज्ञान हो। उच्चारण के आभ्यंतर प्रयत्न के चार भेदों में से स्पष्ट नामक एक भेद जिसमें क से लेकर म तक के 25वें व्यंजन वर्ण हैं जिनके उच्चारण में वागेंद्रिय का द्वार बंद रहता है। (व्याक.), ग्रहण में छवि या शशि पर छाया पड़ने का प्रारम्भ (ज्यो.)। (यो.)–**कोण**–पु. परिधि के किसी बिंदु पर किसी सीधी रेखा का संपर्क होने से बनने वाला कोण।–**क्लिष्ट**–वि. जिसका स्पर्श कष्टदायक हो।–**ग्राह्य**-वि. जिसे स्पर्श द्वारा जाना समझा जाए (टैक्टाइल)।–**क्षम्**–वि. जिसका स्पर्श किया जा सके, स्पर्शयोग।–**ज**–वि. स्पर्श से उत्पन्न होने वाला।–**जन्य**–वि. दे. 'स्पर्शज'। –**तन्मात्र**–पु. वह तत्त्व जिसका स्पर्श से ज्ञान हो। –**दिशा**–स्त्री. ग्रहण में छाया के स्पर्श की दिशा।–**द्वेष**–पु. स्पर्श से शीघ्र प्रभावित होने का गुण।–**मणि**–पु. पारस पत्थर।–**प्रभव**–पु. सोना।–**रसिक**–वि. कामुक।–**रेखा**–स्त्री. परिधि के किसी बिंदु को छूने वाली रेखा, (टैनजेंट) वृत्त की परिधि को एक बिंदु पर स्पर्श करती हुई बाहर ही बाहर एक ओर से दूसरी ओर जाने वाली सरल रेखा।–**लज्जा**–स्त्री. लज्जालु।–**वज्रा**–स्त्री. एक बौद्ध देवी।–**वर्ग**–पु. 'क्' से 'म्' तक के वर्ण।–**बिहार**–पु. सुविधाजनक, सुखद अस्तित्व।–**वैद्य**–वि. स्पर्श के द्वारा जिसका इलाज हो।–**शुद्धा**–स्त्री. शतमूली।–**संकोच**–पु. लज्जालु।–**संकोची (चिन्)**–पु. पिंडालू।–**संचारी (रिन्)**–वि. संक्रामक। पु. शूक रोग का एक भेद।–**सुख**–वि. जिसका स्पर्श आनंददायक हो।–**स्नान**–पु. ग्रहण आरंभ होने के समय का स्नान।–**स्पंद**–पु. मेडक–।–**हानि**–स्त्री. त्वचा के स्पर्श से संवेदन ग्रहण करने की शक्ति का नष्ट हो जाना।

स्पर्शक–वि. (सं.) छूने वाला; अनुभव करने वाला।

स्पर्शन–वि. (सं.) छूने वाला; हाथ लगाने वाला; प्रभावित करने वाला। पु. छूने की किया; स्पर्शजन्य संवेदन; स्पर्शेंद्रिय; दान; वायु।

स्पर्शनक–संज्ञा, पु. (सं.) वह जो छूने का काम करे, त्वचा।

स्पर्शना–सज्ञा, स्त्री. (सं.) स्पर्श-शक्ति।

स्पर्शनीय–वि. (सं.) छूने योग्य।

स्पर्शनेंद्रिय–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्पर्श की इंद्रिय, त्वचा।

स्पर्शन्य (वत्)–वि. (सं.) जिसका स्पर्श हो सके; कोमल; छूने में आनंददायक।

स्पर्शा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कुलटा, पुंश्चली।

स्पर्शाक्रामक–वि. (सं.) संक्रामक।

स्पर्शाज–वि. (सं.) स्पर्श ज्ञान से रहित, संवेदन-शून्य।

स्पर्शानंदा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अप्सरा।

स्पर्शासन–संज्ञा, पु. (सं.) एक देव वर्ग।

स्पर्शासह, स्पर्शासहिष्णु–वि. (सं.) जो स्पर्श सहन न कर सके।

स्पर्शास्पर्श–संज्ञा, पु. (सं.) छूतछात, छूने या न छूने का विचार।

स्पर्शिक–वि. (सं.) जिसका स्पर्श से ज्ञान हो। पु. वायु।

स्पर्शिता (तृ)–वि. (सं.) स्पर्श करने वाला।

स्पर्शी (र्शिन्)–वि. (सं.) छूने वाला, प्रवेश करने वाला। (समासांत में)।

स्पर्शेंद्रिय–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्पर्श का ज्ञान या यह ज्ञान प्राप्त करने वाली इंद्रिय; त्वचा।

स्पर्शोपल–संज्ञा, पु. (सं.) पारस पत्थर।

स्पर्ष्टा (ष्ट)–पु. (सं.) शरीर की अस्त व्यस्तता, रोग। वि. स्पर्श करने वाला।

स्पश–संज्ञा, पु. (सं.) गुप्तचर, जासूस; युद्ध; पुरस्कार के

उद्देश्य से जंगली जानवरों से लड़ने वाला; ऐसा युद्ध।

स्पष्ट–वि. (सं.) जो साफ़-साफ़ देखा जा सके; व्यक्त; प्रत्यक्ष; वोधगम्य; सरल, सीधा (वक्र का उलटा); वास्तविक, सत्य; सही; विकसित; साफ़-साफ़ देखने वाला।–**कथन**–पु. कथन का एक प्रकार जिसमें कथित वाक्य ज्यों का त्यों कहा जाता है (डाइरेक्ट स्पीच)।–**गर्भी**–स्त्री. वह स्त्री जिसके गर्भ के चिह्न साफ़ देख पड़ें।–**तारक**–वि. साफ़ दिखाई देनेवाले तारोंवाला (आकाश)। –**प्रतिति**–स्त्री. स्पष्ट ज्ञान या निश्चय–**भाषी (षिन्)**, –**वक्ता**–**वादी (दिन्)**–वि. साफ़-साफ़ कहने वाला।

स्पष्टतया–अ. (सं.) स्पष्ट रूप से; साफ़-साफ़।

स्पष्टाक्षर–वि. (सं.) जिसका अक्षरशः स्पष्ट उच्चारण किया गया हो।

स्पष्टार्थ–वि. (सं.) जिसका अर्थ साफ, सुबोध हो। पु. साफ़ अर्थ।

स्पष्टीकरण–संज्ञा, पु. (सं.) किसी बात को सुबोध करके समझाना, स्पष्ट करना; विस्तृत व्याख्या करना।

स्पष्टीकृत–वि. (सं.) स्पष्ट किया हुआ।

स्पार्शन–वि. (सं.) जिसका स्पर्श से ज्ञान हो।

स्पिरिट–स्त्री. (अं.) आत्मा; प्रेतात्मा; सूक्ष्म शरीर; साहस; जीवशक्ति; सुरासार, उग्र सुरा।

स्पीकर–संज्ञा, पु. (अं) वक्ता; असेंबली, कौंसिल का अध्यक्ष, व्यवस्थापक सभा का अध्यक्ष; लार्ड-सभा का अध्यक्ष (ब्रिटेन)।

स्पीच–संज्ञा, स्त्री. (अं.) कथन, भाषण; व्याख्यान; प्रवचन; वाक्शक्ति।

स्पीड–संज्ञा, स्त्री. (अं.) गति, चाल।

स्पीशीज–संज्ञा, स्त्री. (अं.) ऐसे प्राणियों का समूह, जिसके सभी प्राणी गुण, लक्षण, स्वभाव आदि में एक दूसरे के साथ बहुत अधिक समानता रखते हों; उनमें अन्त-प्रजनन हो सकता हो; तथा वे सभी एक ही पूर्वज की सन्तति माने जा सकते हों।

स्पृत–वि. (सं.) रक्षित; प्राप्त; विजित।

स्पृत्–वि. (सं.) अपने को किसी चीज से मुक्त करने वाला, हटाने वाला; प्राप्त करने वाला। स्त्री. एक तरह की ईंट।

स्पृश–वि. (सं.) छूने वाला; पहुँचने वाला। पु. स्पर्श; संपर्क।

स्पृशी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कंटकारी।

स्पृश्य–वि. (सं.) छूने लायक; अधिकृत करने योग्य।

स्पृश्या–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नौ समिधाओं में से एक।

स्पृष्ट–वि. (सं.) छूआ हुआ...से प्रभावित छूकर नापाक किया हुआ; उच्चारणांगों के पूर्ण स्पर्श से बना हुआ। पु. 'क्' से 'म्' तक के वर्णों के उच्चारण में होने वाला आभ्यंतर प्रयत्न।–**मैथुन**–वि. मैथुन के कारण जिसकी पवित्रता नष्ट हो गई हो।–**रोदनिका**–स्त्री. लजालू।

स्पृष्टक–पु. (सं.) आलिंगन का एक प्रकार।

स्पृष्टास्पृष्ट–संज्ञा, पु. **स्पृष्टास्पृष्टि**–स्त्री. (सं.) छुआछूत, स्पर्शास्पर्श, परस्पर स्पर्शन।

स्पृष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्पर्श; संपर्क।

स्पृष्टिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शरीर के विभिन्न अंगों का स्पर्श (शपथ ग्रहण में)।

स्पृष्टी (ष्टिन्)–वि. (सं.) स्पर्श करने वाला, जिसने स्पर्श किया है।

स्पृहण–संज्ञा, पु. (सं.) किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए इच्छा या प्रयत्न करना।

स्पृहणीय–वि. (सं.) जिसके लिए स्पृहा की जाय, अभिलषणीय; ईर्ष्या करने योग्य; रणमीय, मोहक; गौरवपूर्ण; प्रशंसनीय–**शोभा**–वि. जिसका सौंदर्य ईर्ष्या का कारण हो।

स्पृहयालु–वि. (सं.) इच्छा करने वाला; अभिलाषी; ईर्ष्यालु।

स्पृहा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अभिलाषा; धर्मानुकूल पदार्थ की प्राप्ति की कामना (न्या.); ईर्ष्या।

स्पृहालु–वि. (सं.) दे. 'स्पृहयालु'।

स्पृहित–वि. (सं.) जिसकी प्राप्ति की अभिलाषा की गई हो, जो ईर्ष्या को विषय हो।

स्पृही (हिन्)–वि. (सं.) इच्छुक, अभिलाषी; ईर्ष्या करने वाला।

स्पृह्य–वि. (सं.) वांछनीय। पु. बिजौरा नींबू।

स्पेक्ट्रम–संज्ञा, पु. (अं.) सूर्य का श्वेत प्रकाश जब काँच के प्रिज्म में से गुजरता है तो दूसरी ओर हमें प्रकाश की

एक रंगीन पट्टी मिलती है, जिसमें इन्द्रधनुष के सातों रंग उसी क्रम से पाए जाते हैं। इस रंगीन पट्टी को स्पेक्ट्रम नाम दिया गया है; वर्णक्रम।

स्पेशल–वि. (अं.) विशेष, खास; असाधारण; जो विशेष व्यक्ति या अवसर के निमित्त हो। स्त्री. विशेष व्यक्ति या कार्य के लिए चलने वाली ट्रेन।

स्पेशलिस्ट–पु. (अं.) विशेषज्ञ।

स्प्रष्टव्य–वि. (सं.) छूने, हाथ लगाने योग्य; जिसका स्पर्श से ज्ञान प्राप्त किया जाए। पु. स्पर्श।

स्प्रष्टा (ष्ट्)–वि. (सं.) छूने वाला। पु. रोग।

स्प्रिंग–संज्ञा, स्त्री. (अं.) स्थिति-स्थापक गुण से युक्त लोहे की कमानी।–**दार**–वि. कमानीदार।

स्प्रिचुअलिज्म–संज्ञा, पु. (अं.) प्रेतविद्या; अध्यात्मविद्या।

स्प्लिंट–पु. (अं.) अस्थिभंग ठीक करने के लिए उस पर बाँधी जाने वाली लकड़ी की पट्टी।

स्फट–संज्ञा, पु. (सं.) 'फट'-'फट' की ध्वनि; साँप का फन; रवा।

स्फटा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) साँप का फन; फिटकिरी।

स्फटिक–संज्ञा, पु. (सं.) बिलौर; सूर्यकांत मणि; कपूर; फिटकिरी; (क्वार्ट्ज) प्राकृतिक क्रिस्टलीय सिलिका। प्रायः यह श्वेत अपारदर्शी रूप में मिलता है, कभी-कभी रंगहीन क्रिस्टलीय रूप में भी। स्फटिक के लेंस तथा प्रिज्म आदि स्पेक्ट्रम उत्पन्न करने के यंत्रों में प्रयुक्त किए जाते हैं।–**कुड्य**–पु. बिल्लौर की दीवार। –**घड़ी**–स्त्री. (क्वार्ट्ज क्लॉक) ऐसी घड़ी जिसमें समय का नियंत्रण स्फटिक क्रिस्टल के कम्पन द्वारा किया जाता है। यह बहुत सही समय देती है।–**पात्र**–पु. बिल्लौर का पात्र–**प्रभ**–वि. स्फटिक जैसा चमकीला, पारदर्शी। –**भित्ति**–स्त्री. दे. 'स्फटिककुड्य'।–**मणि**–पु.,–**शिला**–स्त्री. बिल्लौर पत्थर।–**विष**–पु. दारुमोच नामक विष।–**शिखरी (रिन्)**–पु. कैलास पर्वत।–**स्कंभ**–पु. बिल्लौर का खंभा।–**हर्म्य**–पु. बिल्लौर का बना हुआ प्रासाद।

स्फटिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) फिटकिरी; कपूर।

स्फटिकाख्या–संज्ञा स्त्री. (सं.) फिटकिरी।

स्फटिकाचल–संज्ञा, पु. (सं.) कैलास पर्वत।

स्फटिकात्मा (त्मन्)–संज्ञा, पु. (सं.) बिल्लौर।

स्फटिकाद्रि–संज्ञा, पु. (सं.) कैलास पर्वत।–**भिद्र**–पु. कपूर।

स्फटिकाभ्र–संज्ञा, पु. (सं.) कपूर।

स्फटिकारि, स्फटिकारिका, स्फटिकारी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) फिटकिरी।

स्फटिकाशा (श्मन्)–संज्ञा, पु. (सं.) बिल्लौर पत्थर।

स्फटिकी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) फिटकिरी।

स्फटिकीकरण–संज्ञा, पु. (क्रिस्टेलिजेशन) ऐसी प्रक्रिया करना जिससे कोई वस्तु स्फटिक का (या स्फटिक सदृश) रूप ग्रहण कर लें; मणिभीकरण: निश्चित और ठोस आकार धारण करना।

स्फटिकीय–वि. (क्रिस्टलाइन) पीसने पर जिसके कण चमकीले और खुरदरे जान पड़ें; मणिभीय।

स्फटिकोपम–संज्ञा, पु. (सं.) कपूर; जस्ता धातु; चंद्रकांत मणि।

स्फटिकोपल–संज्ञा, पु. (सं.) बिल्लौर।

स्फटित–वि. (सं.) विदीर्ण।

स्फरण–संज्ञा, पु. (सं.) काँपना; फड़कना; प्रवेश करना।

स्फाटकी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) फिटकिरी।

स्फाटिक–संज्ञा, पु. (सं.) स्फटिक। वि. बिल्लौर का।–**सौध**–पु. बिल्लौर-निर्मित प्रासाद।

स्फाटिकोपल–संज्ञा, पु. (सं.) बिल्लौर।

स्फारित–वि. (सं.) फाड़ा हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

स्फात–वि. (सं.) बढ़ा हुआ, परिवृद्ध; फूला हुआ।

स्फाति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वृद्धि, बढ़ती।

स्फार–वि. (सं.) बड़ा; बढ़ा हुआ; विकट; घना; ऊँचा (स्वर); फैला हुआ; बहुत, प्रचुर। पु. वृद्धि; धक्का; आघात; (सोने में पड़ी हुई) फुटकी; कंपन, फड़कना; प्राचुर्य; व्यक्त होना; टंकोर; अर्बुद या इस तरह निकली हुई कोई चीज।

स्फारण–संज्ञा, पु. (सं.) स्फुरण, कंपन।

स्फारित–वि. (सं.) फैलाया हुआ।

स्फाल–संज्ञा, पु. (सं.) कंपन, स्फुरण।

स्फालन–संज्ञा, पु. (सं.) हिलाना, कँपाना; फटफटाना; थपथपाना; घर्षण।

स्फिक् (च्)–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नितंब, चूतड़।–**स्राव**–पु.

एक रोग।

स्फिग्दघ्न–वि॰ (सं॰) चूतड़ तक पहुँचने वाला।

स्फिर–वि॰ (सं॰) विशाल; बहुत दूर।

स्फीत–वि॰ (सं॰) बढ़ा हुआ; घना; मोटा; फूला हुआ; सफल; समृद्ध; बहुत अधिक; प्रसन्न; शुद्ध; पैतृक रोग से ग्रस्त। **नितंबा**–स्त्री॰ नितंबिनी।

स्फीति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वृद्धि; प्राचुर्य; विस्तार, (अं॰ इन्फ्लेशन); समृद्धि, अभ्युदय।

स्फुट–वि॰ (सं॰) फटा हुआ; खिला हुआ, विकसित, व्यक्त, प्रकट; स्पष्ट; श्वेत; चमकीला; प्रथित; फैला हुआ; अत्युच्च (स्वर); प्रत्यक्ष, सत्य; असाधारण,...से युक्त या पूर्ण; संशोधित; फुटकर। पु॰ साँप का फन; जन्म कुंडली में ग्रहों की कला दिखाना (ज्यौ॰)।–**चंद्रतारक**–वि॰ चंद्रमा ताराओं से प्रकाशित।–**तार**–वि॰ जिनमें तारे स्पष्ट दिखाई देते हों।–**त्वचा**–संज्ञा स्त्री॰ महाज्योतिष्मती।–**ध्वनि**–पु॰ सफ़ेद पंडुक।–**पुंडरीक**–स्त्री॰ पु॰ (हृदय का) खिला हुआ कमल।–**पौरुष**–वि॰ जिसने अपनी शक्ति प्रकट की है।–**फल**–संज्ञा पु॰ तुंबुरु; त्रिभुजका क्षेत्रफल; किसी गणित का फल।–**फेनराजि**–वि॰ जो फेनराशि से चमकीला देख पड़ता हो।–**बंधनी**–स्त्री॰ दे॰ 'स्फुटवल्कलि'।–**रंगिणी**–स्त्री॰ लताविशेष।–**वक्ता (क्तृ)**–वि॰ स्पष्टवक्ता।–**वल्कलि**–स्त्री॰ ज्योतिष्मती।–**सूर्यगति**–स्त्री॰ सूर्य की स्पष्ट चाल।

स्फुटन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फटना, विदीर्ण होना; विकसित होना; (जोड़ों का) चटकना।

स्फुटा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साँप का फन।

स्फुटि, स्फुटी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विवाई; एक फल, फूट।

स्फुटिका–स्त्री॰ (सं॰) छोटा टुकड़ा।

स्फुटित–वि॰ (सं॰) फटा हुआ; खिला हुआ; स्पष्ट किया हुआ; नष्ट किया हुआ; परिहसित।–**कांडभग्न**–पु॰ अस्थि भंग का एक प्रकार।–**चरण**–वि॰ जिसके पैर फैले हों।

स्फुटीकरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रकट, स्पष्ट करना; ठीक करना, सुधारना।

स्फुत्कर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आग।

स्फुत्कार–संज्ञा, (सं॰) फुफकार।

स्फुर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्फुरण, कंपन; वृद्धि; ढाल; 'फुर'-'फुर' करना।

स्फुरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) काँपना, हिलना, फड़कना (अंग); फूटकर व्यक्त होना; चमकना; मन में एकाएक आना; स्फूर्ति।

स्फुरणा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अंगों का फड़कना।

स्फुरित*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ 'स्फूर्ति'।

स्फुरदीप्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (अं॰ फ़ास्फोरेसेंस) प्रकाश से उद्‌भासित होने के उपरान्त किसी वस्तु से प्रकाश तरंगों का उत्सर्जित होना। बाह्य प्रकाश स्रोत हटा लेने पर भी स्फुरदीप्ति का प्रकाश कुछ देर तक उत्सर्जित होता रहता है।

स्फुरदुल्का–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) उल्कापिंड।

स्फुरदोष्ठ, स्फुरदोष्ठक–वि॰ (सं॰) जिसके ओंठ फड़कते हों।

स्फुरद्‌गंध–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) फैली हुई गंध।

स्फुरना*–अ॰ क्रि॰ हिलना; फड़कना; व्यक्त होना; प्रकाशित होना।

स्फुरित–वि॰ (सं॰) स्फुरणयुक्त, स्पंदनयुक्त, कंपित; अस्थिर; चमकता हुआ; बढ़ा हुआ; व्यक्त, प्रकट। पु॰ स्फुरण, कंपन; मानसिक उथल-पुथल; चमक, कांति; एकाएक प्रकट होना।

स्फुर्तना, स्फुर्दना*–संज्ञा, स्त्री॰ स्फुर्ति; किसी बात का अचानक ज्ञान होना; स्पष्टतः देख पड़ना; प्रकाशित होना।

स्फुल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) खेमा, तंबू।–**मंजरी**–स्त्री॰ हुलहुल।

स्फुलन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) कंपन, स्फुरण।

स्फुलिंग–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अग्निकण, चिनगारी (स्पार्क)।

स्फलिंगा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 'स्फुलिंग'।

स्फुलिंगिनी–स्त्री॰ (सं॰) अग्नि की सात जिह्वाओं में एक।

स्फुलिंगी (गिन्)–वि॰ (सं॰) स्फुलिंगों वाला, जिसमें से चिनगारियाँ निकलती हों।

स्फूर्छित–वि॰ (सं॰) फैलाया हुआ; भूला हुआ।

स्फूर्ज–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बादलों की गड़गड़ाहट; इंद्र का वज्र; एकाएक स्फोट होना; नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसमें आनंद के साथ भय मिला होता है; स्फूर्जक नामक पौधा; एक राक्षस।

स्फूर्जक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक वृक्ष, तिदुक, तेंदु; सोनापाढ़ा।

स्फूर्जथु–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बिजली की गड़गड़ाहट; एक साग, चौलाई।

स्फूर्जन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) तिंदुक, तेंदू; गड़गड़ाहट; स्फोट।

स्फूर्जिन–वि॰ (सं॰) गर्जित; गरजने वाला। पु॰ बादलों की गड़गड़ाहट।

स्फूर्ण–वि॰ (सं॰) दे॰ 'स्फूर्छित'; गरजा हुआ।

स्फूर्त–वि॰ (सं॰) कंपित; जिसकी अचानक स्मृति हुई हो।

स्फूर्ति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कंपन, स्फुरण; उछलना; मानसिक आवेश, उत्तेजना; डींग, घमंड; विकसित होना; व्यक्त, प्रकट होना; मन में प्रकट होना; काव्य की प्रेरणा; तेजी, फुरती।–**कारक**–वि॰ फुर्ती लाने वाला।

स्फूर्तिमान् (मत्)–वि (सं॰) कंपनयुक्त; कोमलचित्त। पु॰ शिव का आराधक।

स्फोट–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फूटकर निकलना; फैलना; (किसी बात का) प्रकट हो जाना; फोड़ा; अर्बुद; टुकड़ा, छोटा खंड; फटना; विस्फोट (इरपृशन); शब्द के श्रवणा से मन में उत्पन्न होने वाला भाव; नित्य शब्द (मीमांसा); ओंकार, प्रवण; मोती।–**बीजक,**–**हेतुक**–पु॰ भिलावाँ।–**लता**–स्त्री॰ एक लता, कनफोड़ा।–**वाद**–पु॰ नित्य शब्द को संसार का कारण मानने कर सिद्धांत।

स्फोटक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) फोड़ा; फुंसी; भल्ला तक। वि॰ फट पड़नेवाला (वम, आदि)।

स्फोटन–संज्ञा पु॰ (सं॰) फाड़ना, विदारण करना; व्यक्त करना, अचानक फट पड़ना; वायु के प्रकोप से होने वाला सिर-दर्द जिसमें ऐसा लगता हो कि सिर फटा जा रहा है; परस्पर मिले हुए व्यंजनों का अलग-अलग उच्चारण; अनाज फटकना; उँगलियाँ चटकाना; व्रणपीड़ा; शिव; (हाथ) हिलाना।

स्फोटनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बरमा।

स्फोटा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साँप का फन; हाथ हिलाना; सफ़ेद अनंत मूल।

स्फोटिक–पु॰ (सं॰) पत्थर, ज़मीन तोड़ना, फोड़ना।

स्फोटिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) फोड़ा; हापुत्रिका नामक पक्षी।

स्फोटित–वि॰ (सं॰) जिसका स्फोट किया गया हो; प्रकटित। वि॰ फटना।–**नयन**–वि॰ जिसकी आँखें फोड़ दी गई हों।

स्फोटिनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कर्कटी, ककड़ी।

स्फोरण–पु॰ (सं॰) दे॰ 'स्फुरण'।

स्मय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) आश्चर्य; गर्व, घमंड; हास।–**दान**–पु॰ दंभमय दान।–**नृत्ति**–स्त्री॰ गर्व चूर करना।

स्मयन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मंद-हास, मुस्कान।

स्मयी (यिन्)–वि॰ (सं॰) मंद हास युक्त, मुस्काने वाला।

स्मर–वि॰ (सं॰) स्मरण करने वाला। पु॰ स्मृति, स्मरण; प्रेम, प्रणय; कामदेव; एक राग।–**कथा**–स्त्री प्रणयालाप प्रेमवार्ता।–**कर्म (न्)**–पु॰ कामुतापूर्ण व्यवहार।–**कार**–वि॰ कामोद्दीपक।–**कूप,**–**कूपक**–पु॰,–**कूपिका**–स्त्री॰ भग।–**गुरु**–पु॰ विष्णु।–**गृह**–पु॰ भग।–**चंद,**–**चक्र**–पु॰ एक रतिबंध।–**छत्र**–पु॰ भगशिश्निका।–**ज्वर**– पु॰ कामज्वर, कामजन्य ताप।–**दशा**–स्त्री॰ शरीर की कामजन्य अवस्था (असौष्ठव, ताप, पांडुता, कृशता, अरुचि, अधृति, अनालंबन, तन्मयता, उन्माद और मरण)।–**दहन**–पु॰ शिव।–**दायी-(यिन्),**–**दीपन**–वि॰ कामोद्दीपक।–**दुर्मद**–वि॰ प्रेमप्रमत्त।–**ध्वज**–पु॰ एक वाद्य (संगीत); पुरुषेंद्रिय; भग; एक पौराणिक मत्स्य (जो कामदेव का चिह्न है)।–**ध्वजा**–स्त्री॰ चाँदनी रात–**निपणु**–वि॰ काम काल में प्रवीण।–**पीड़ित**–वि॰ कामदेव का सताया हुआ।–**प्रिया**–स्त्री॰ रति।–**वाण-पंक्ति**–स्त्री॰ कामदेव के पाँच बाणों का समाहार।–**भासित**–वि॰ कामोद्दीप्त, कामतप्त।–**भू**–वि॰ कामज।–**मंदिर**–पु॰ योनि।–**मुद्र-(ष्)**–पु॰ शिव।–**मोह**–पु॰ कामजन्य संज्ञाहीनता।–**रुक् (ज्)**–स्त्री॰ कामजन्य रोग।–**लेख**–पु॰ प्रेमपत्र।–**लेखनी**–स्त्री॰ शारिका, मैना।–**वधू**–स्त्री॰ कामदेव की स्त्री।–**वल्लभ**–पु॰ अनिरुद्ध।–**वीथिका**–स्त्री॰ वेश्या।–**वृद्धि**–स्त्री॰ एक पौधा (जिसक बीज कामोद्दीपक होता है)।–**शत्रु**–पु॰ शिव।–**शबर**–पु॰ बर्बर प्रेम।–**शर**–पु॰ कामदेव के बाण।–**शासन**–पु॰ शिव।–**शास्त्र**–पु॰ कामशास्त्र।–**सख**–पुर॰ ऋतुराज; चंद्रमा; वि॰ कामोद्दीपक।–**सह**–वि॰ कामोद्दीन करने में समर्थ।–**स्तंभ**–पु॰ शिश्न, पुरुषेंद्रिय।–**स्मरा**–स्त्री॰ सेवती।–**स्मर्य**–पु॰ गर्दभ।–**हर**–पु॰ शिव।

स्मरण–संज्ञा, पु. (सं.) स्मृति, याद; चिंता; स्मृतिशक्ति; स्मृति के आधार पर हस्तांतरित होना; देवता के नाम का जप (भक्ति का एक प्रकार); खेदपूर्ण स्मृति; एक अर्थालंकार जहाँ पहले देखी हुई किसी वस्तु के समान अन्य वस्तु के देखने, सुनने से उसका स्मरण हो आए। –**पत्र**,–**पत्रक**–पु. याद दिलाने के लिए लिखा हुआ पत्र (रिमाइंडर);–**पदवी**–स्त्री. मृत्यु।–**भू**–पु. कामदेव। –**शक्ति**–स्त्री. याद रखने की शक्ति (मैमरी)।

स्मरणापत्यतर्पक–संज्ञा, पु. (सं.) कच्छप।

स्मरणसक्ति–संज्ञा, पु. (सं.) ईश्वर के स्मरण में होने वाली आसक्ति।

स्मरणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जप करने की माला, सुमिरनी।

स्मरणीय–वि. (सं.) स्मरण करने योग्य; याद रखने योग्य।

स्मरना*–स. क्रि. याद करना।

स्मरांकुश–पु. (सं.) नख; प्रणयी, कामातुर व्यक्ति; लिंग।

स्मरांध–वि. (सं.) कामांध।

स्मराकुल, स्मराकुलित–वि. (सं.) काम रोग से, ग्रस्त, कामविह्वल।

स्मराकृष्ट–वि. (सं.) प्रेमाभिभूत।

स्मरागार–संज्ञा, पु. (सं.) दे. 'स्मरागृह'।

स्मरातुर–वि. (सं.) कामातुर।

स्मराधिवास–संज्ञा, पु. (सं.) अशोक वृक्ष।

स्मराम्र–संज्ञा, पु. (सं.) एक तरह का आम, राजाम्र।

स्मरारि–संज्ञा, पु. (सं.) शिव।

स्मरार्त–वि. (सं.) कामतप्त।

स्मरासव–संज्ञा, पु. (सं.) लाला रस।

स्मरोत्सुक–वि. (सं.) कामातुर।

स्मरोद्दीपन–वि. (सं.) कामोद्दीपक। पु. एक तरह का केश तैल।

स्मरोन्माद–संज्ञा, पु. (सं.) काममद।

स्मरोपकरण–संज्ञा, पु. (सं.) सुगंधित द्रव्य आदि काम-संबंधी वस्तुएँ।

स्मर्तव्य–वि. (सं.) स्मरण के योग्य; जिसकी केवल स्मृति शेष रह गई हो।

स्मर्ता (र्तृ)–वि. (सं.) याद करने, रखने वाला। पु. आचार्य।

स्मर्य–वि. (सं.) स्मरणीय।

स्मशान, स्मसाना†–पु. दे. 'श्मशान'।

स्मार–पु. (मेमो) दे. 'ज्ञापन'।

स्मारक–वि. (सं.) याद दिलाने वाला। पु. किसी की स्मृति-रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित संस्था, भवन, स्तंभ आदि (मेमोरियल); स्मरणपत्र, अभ्यावेदन।–**ग्रंथ**–पु. (कमेमोरेशन वाल्यूम) किसी विद्वान् दार्शनिक, नेता आदि की स्मृति बनाए रखने के लिए रचित ग्रंथ।

स्मारण–संज्ञा, पु. (सं.) याद दिलाना; फिर से गिनना, लेखे की जाँच करना।

स्मारणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) ब्राह्मी लता।

स्मारिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) किसी घटना या समारोह स्थल का रक्षित रखने के उद्देश्य से प्राप्त की गई वस्तु; ऐसी वस्तु, समारोह या प्रसिद्ध व्यक्ति से संबंधित बीती हुई मुख्य घटनाओं की स्मृति बनाए रखने वाली विवरणात्मक सचित्र पुस्तिका (सुवेनीर), स्मृति-उपायन।

स्मारित–संज्ञा, पु. (सं.) स्मरण होने पर वादी द्वारा स्वपक्ष का समर्थन करने के लिए समाहूत साक्षी। वि. स्मरण दिलाया हुआ।

स्मारी (रिन्)–वि. (सं.) स्मरण रखने वाला; याद दिलाने वाला।

स्मार्त–वि. (सं.) स्मृति-संबंधी; जो स्मृति में हो; स्मृति के आधार पर बना हुआ, स्मृति विहित, वैध; संज्ञा स्मृति को मानने वाला; गृह-संबंधी (जैसे अग्नि)। पु. स्मृतिविहित कर्म; स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक संप्रदाय; इस संप्रदाय का अनुयायी; स्मृतियों का ज्ञाता ब्राह्मण।–**कर्म (न्)**–पु. स्मृति विहित कर्म।–**काल**–पु. वह काल जब तक स्मृति बनी रह सके। (कुछ के मत से सौ वर्ष)।–**पंडित**–पु. स्मृतियों का ज्ञाता ब्राह्मण।

स्मार्तिक–वि. (सं.) जो स्मृति शास्त्र पर आधारित हो।

स्मार्य–वि. (सं.) स्मरण करने योग्य।

स्माल काज़ कोर्ट–पु. (अं.) छोटी अदालत, अदालत खफीफ़ा।

स्मित–संज्ञा, पु. (सं.) मंद हास, मुसकान। वि. खिला हुआ; मुसकाता हुआ।–**दृशी**–स्त्री. हँसमुख या सुंदर स्त्री। –**पूर्व**–वि. मंदहास युक्त।–**मुख**–वि. हँसमुख।–**वाक् (च)**–वि. मुसकराहट के साथ बोलने वाला।–**शाली (लिन्)**–वि. मंदहास युक्त।

स्मिति–स्त्री. (सं.) मंदहास; हास।

स्मितोज्ज्वल–वि. (सं.) हँसते हुए (नेत्र)।

स्मृत–वि. (सं.) स्मरण किया हुआ; उल्लिखित; स्मृति विहित। पु. एक प्रजापति; स्मरण, याद।–**मात्र**–वि. जिसका केवल स्मरण किया गया हो।

स्मृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्मरण, याद (मेमरी); अनुस्मरण (रिफ़्लेक्शन); चिंतन; एक संचारी भाव; धर्मशास्त्र; अट्ठारह की संख्या; एक वृत्त, इच्छा।–**उपायन**–पु. (सूवेनीर) पुरानी घटनाओं, अवसरों, स्थानों आदि की स्मृति बनाए रखने के लिए रखा गया या किसी को भेंट में दिया गया चित्रादि का संग्रह या अन्य कोई वस्तु।–**कार**–पु. स्मृति का निर्माता।–**कारक**–वि. स्मरण शति बढ़ाने वाला। पु. ऐसी दवा।–**कारी (रिन्)** –वि. स्मृति, जाग्रत करने वाला।–**चिह्न**–पु. निशानी।–**जात**–पु. कामदेव।–**तंत्र**–पु. धर्मशास्त्र।–द–वि. स्मृति पुष्ट करने वाला।–**पत्र**–पु. ज्ञानपत्र।–**पथ,**–**वर्त्म** (**न**)–पु. स्मृति का विषय।–**पाठक**–पु. धर्मशास्त्री; विधानज्ञ व्यक्ति।–**प्रत्यवमर्श**–पु. स्मृति बनाये रखने की शक्ति।–**भू**–पु. कामदेव।–**भ्रंश**–पु. स्मृति का नष्ट हो जाना, याद न रहना; ज्ञान न रहा।–**रोध,**–लोप–पु. क्षणिक विस्मरण।–**वर्धनी**–स्त्री. ब्राह्मी।–**विद्**–वि. धर्मशास्त्रज्ञ।–**विनोद**–पु. कर्तव्य का स्मरण दिलाते हुए भर्त्सन करना।–**विभ्रम**–पु. स्पष्ट स्मरण न होना; स्मृतिभ्रंश।–**विरुद्ध**–वि. शास्त्र विरुद्ध।–**शास्त्र**–पु. धर्मशास्त्र।–**शेष**–वि. जिसकी केवल स्मृति रह गई हो, गत, मृत; प्राचीन खंडहर या टूटा फूटा अंश (रेलिक); किसी महात्मा या महापुरुष के शरीर की अस्थि, केश दाँत आदि अथवा उसका कोई वस्त्र, खड़ाऊँ, पात्र आदि जो उसकी मृत्यु के बाद उसकी स्मृति के रूप में सुरक्षित रखा गया हो।–**शैथिल्य**–पु. स्मरण शक्ति की दुर्बलता।–**संस्कार**–पु. स्मृति जन्य छाप।–**सम्मत**–वि. धर्मशास्त्र विहित।–**साध्य**– वि. शास्त्र द्वारा प्रमाणित करने योग्य।–**सिद्ध**–वि. शास्त्र विहित।–**हिता**–स्त्री. शंखपुष्पी।–**हीन**–वि. जो स्मरण न रख सके, विस्मरणशील।–**हेतु**–पु. स्मृति का कारण; मन पर पड़ी हुई छाप।

स्मृतिक–संज्ञा, पु. (सं.) जल।

स्मृतिमान् (मत्)–वि. (सं.) स्मृति विशिष्ट; चिंतावान्।

स्मृत्यपेत–वि. (सं.) विस्मृत; शास्त्र-विरुद्ध।

स्मृत्युक्त–वि. (सं.) शास्त्रविहित।

स्मेर–वि. (सं.) मंदहास युक्त; विकसित; गर्वीला; प्रत्यक्ष।–**मुख**–वि. हँसमुख।–**विष्किर**–पु. मयूर।

स्यंद–संज्ञा, पु. (सं.) रिसना, चूना, टपकना, स्राव; प्रवाहित होना; पसीना निकलना; गलना, पानी होना; एक नेत्र-रोग; चंद्रमा; तीव्र गति; रथ।

स्यंदक–संज्ञा, पु. (सं.) तेंदू का पेड़।

स्यंदन–वि. (सं.) तेजी से जाने वाला (जैसे रथ); बहने वाला; रिसने वाला; गलने वाला। पु. रथ; युद्धरथ; एक अस्तमंत्र; वायु; गत उत्सर्पिणी के 23वें अर्हत्; तीव्र गति या प्रवाह; स्राव; जल; तिनिश वृक्ष; तिंदुक वृक्ष।–**द्रुम**–पु. तिनिश वृक्ष (लकड़ी से पहिया बनने के कारण)।–**ध्वनि**–स्त्री. रथ के चलने की आवाज।

स्यंदनारूढ़–वि. (सं.) रथारूढ़।

स्यंदनि–पु. (सं.) तिनिश वृक्ष।

स्यंदनिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लार की बूँद; सोता, छोटी नदी।

स्यंदनी–स्त्री. (सं.) लार, लाला; मूत्र नलिका।

स्यंदिता (तृ)–वि. (सं.) तेज दौड़ने वाला।

स्यंदिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लाला; एक साथ दो बछड़े देने वाली गाय।

स्यंदी (दिन्)–वि. (सं.) स्राव करने वाला, रिसने वाला; प्रवाहित होने वाला; तेज़ जाने वाला।

स्यंदोलिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) झूलने की क्रिया या झूला।

स्यद–पु. (सं.) तेज गति, वेग।

स्यन्न–वि. (सं.) रिसा हुआ, टपका हुआ; रिसने वाला (जलादि)।

स्यमंतक–संज्ञा, पु. (सं.) एक प्रसिद्ध मणि (जो सत्राजित् को सूर्य से और अंत में कृष्ण को जांबवान् से मिला था। कहा जाता है कि इसमें रोज सोना देने और संकटों से रक्षा करने की शक्ति थी)।

स्यमंतपंचक–संज्ञा, पु. (सं.) एक तीर्थ (कहा जाता है कि यहाँ परशुराम-पितरों का दर्पण रक्त से किया था)।

स्मिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बाँबी, वल्मीक; एक वृक्ष; बादल; समय।

स्मोक–संज्ञा, पु॰ (सं॰), बाँबी, वल्मीक; समय; बादल; जल; एक प्राचीन राजवंश।

स्मीका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नील का पौधा; एक कीड़ा।

स्यात्–अं॰ (सं॰) कदाचित् शायद।

स्याद्वाद–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जैनों का संशयवाद, अनेकांवाद; जैन धर्म।

स्याद्वादिक, स्याद्वादी (दिन्)–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्याद्वाद का अनुयायी जैन।

स्यान*–वि॰ दे॰ 'स्याना'।–**प,–पल,–पन**–पु॰ चतुरता, चालाकी।

स्याना–वि॰ चतुर, होशियार; धूर्त; बालिग, प्रौढ। पु॰ बड़ा-बूढ़ा; ओझा; नंबरदार, मुखिया; हकीम।–**चारी**†–स्त्री॰ गाँव के मुखिया को मिलने वाला रसूम।–**पन**–पु॰ बालिग होने की अवस्था, युवावस्था; होशियारी, चालाकी; धूर्तता।

स्यापा–पु॰ दे॰ 'सियापा'। **मु॰–छाना,–पड़ना**–रुदन-क्रंदन होना; सुनसान, उजाड़ होना। गर्म, होना।

स्याम–संज्ञा, पु॰ बरमा के पूरब स्थित एक देश; *दे॰ 'श्याम'। *वि दे॰ 'श्याम'।–**करंन***–पु॰ दे॰ 'श्यामकर्ण'।–**ता,–ताई***–स्त्री॰ दे॰ 'श्यामता'।

स्यामक*–संज्ञा, पु॰ वासुदेव के एक भाई, श्यामक।

स्यामल*–वि॰ दे॰ 'श्यामल'।–**ता**–स्त्री॰ श्यामलता, साँवलापन।

स्यामा*–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ 'श्यामा'।

स्यार–संज्ञा, पु॰ गीदड़, सियार।–**काँटा**–पु॰ सत्यानासी।–**जन**–पु॰ डरपोक आदमी।–**पन**–पु॰ शृंगाल की-सी आदत।–**लाठी**–स्त्री॰ अमलतास।

स्यारी–संज्ञा, स्त्री॰ शृंगाली, गीदड़ी;† कातिक-अगहन में तैयार होने वाली फ़सल, ख़रीफ़ (बुंदेल॰)।

स्याल–संज्ञा, पु स्यार; (सं॰) साला, श्याल।–**कंटा**–पु॰ (हिं॰) स्यार काँटा।

स्यालिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पत्नी की छोटी बहन, साली।

स्यालिया†–संज्ञा, पु॰ गीदड़, सियार।

स्याली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) साली।–**पति**–पु॰ साली का पति, साढू।

स्यालू†–संज्ञा, पु॰ ओढ़नी, चादर, सालू।

स्याह–वि॰ (फ़ा॰) दे॰ 'सियाह' (समास भी)।–**काँटा**–पु॰ एक कँटीला पौधा।–**कलम**–पु॰ मुग़ल चित्र शैली के बिना रंग-भरे रेखाचित्र (लाइन ड्राइंग)।–**गोसर**†–पु॰ दे॰ 'सियाह-गोश'।–**जबान**–पु॰ काली जीभ वाला हाथी या घोड़ा।–**जीरा**–पु॰ काला जीरा।–**तालू**–पु॰ वह घोड़ा जिसका तालू काला हो (यह अशुभ माना जाता है)।–**दिल**–वि॰ दुष्ट, दिल का काला।–**पोश**–पु॰ शो की काली पोशाक पहने हुए।

स्याहा–संज्ञा, पु॰ दे॰ 'सियाहा'।

स्याही–संज्ञा, स्त्री॰ साही नामक जानवर; (फ़ा॰) कालापन; अँधेरा; कालिख; काजल; रोशनाई; दाग; ऐब।–**चट**–पु॰ सोख़्ता।–**दान**–पु॰ दवात।–**साज़**–पु॰ स्याही बनाने वाला।–**तोख**–पु॰ सोख़्ता, 'ब्लाटिंग पेपर'। **मु॰–जाना**–उम्र ढलना।–**दौड़ना**–स्याही छा जाना।–**धो जाना**–दुर्भाग्य या दोष दूर होना।–**लगना**–कालिख पुत जाना, बदनामी होना।–लगाना–मुँह काला करना, बदनाम करना।

स्यू–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सूत, धागा।

स्यूत–वि॰, (सं॰) सिया हुआ; बुना हुआ; भिदा हुआ। पु॰ मोटे कपड़े की थैली; बोरा।

स्यूति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सिलाई; बुनाई; संतान; थैला।

स्यूत्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रसन्नता, आनंद।

स्यून–संज्ञा, पु॰ (सं), बोरा, थैला; प्रकाश-रश्मि, किरण; सूर्य।

स्यूना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) किरण; कमरबंद।

स्यम–पु॰ (सं॰) जल; किरण; आनंद।

स्यूमक–पु, (सं॰) आनंद।

स्या, स्यो*–अ॰ सहित; नजदीक, पास।

स्योत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बोरा, थैला।

स्योती†–स्त्री॰ दे॰ 'सेवती'।

स्योन–वि॰ (सं॰) सुंदर; प्रिय; शुभ, मंगलकारक। पु॰ किरण; सूर्य; बोरा, थैला; आनंद।

स्योनाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक वृक्ष, सोनापाढ़ा।

संग–संज्ञा, पु॰ दे॰ 'शृंग'।

स्रंस–संज्ञा, पु. (सं.) पतन; शयन, सोना।

स्रंसन–वि. (सं.) दस्तावर, रेचक; ढीला, करने वाला। पु. गिरने या गिराने की क्रिया; ढील करना; गर्भपात; दस्तावर पदार्थ या दवा।

स्रंसित–वि. (सं.) गिगया हुआ; ढीला किया हुआ।

स्रंसिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक योनि रोग।–**फ**–पु. एक वृक्ष, शिरीष।

स्रंसी (सन्)–वि. (सं.) फिसलने, गिरने वाला; लटकने वाला; ढीला पड़ने वाला; पात होने वाला (गर्भ)। पु. पीलु वृक्ष; सुपारी का पेड़।

स्रक् (ज)–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पुष्पहार (विशेषकर सिर पर बाँधने का); माला; एक वृक्ष; एक वृत्त; एक योग (ज्यो.)।

स्रगाल*–संज्ञा, पु. गीदड़।

स्रग्णु–संज्ञा, (सं.) माला के रूप में लिखित मंत्र।

स्रग्दाम (न्)–संज्ञा, पु. (सं.) पुष्पहार का डोरा।

स्रग्धर–वि. (सं.) पुष्पहार धारण करनेवाला।

स्रग्धरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वृत्त; एक देवी (बो.)।

स्रग्वान् (वत्)–वि. (सं.) माला-युक्त।

स्रग्विणी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णवृत्त; एक देवी।

स्रग्वी (ग्विन्)–वि. (सं.) माला विशिष्ट।

स्रज्–संज्ञा, पु. (सं.) एक विश्वेदेव। स्त्री. माला।

स्रजन*–संज्ञा, पु. सृष्टि, सर्जन।

स्रजना*–सं. क्रि. रचना, बनाना, निर्माण करना।

स्रज्वा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) रस्सी।

स्रज्वा (ज्वन्)–संज्ञा, पु. (सं.) मालाकार, माली; प्रजापति।

स्रद्धा*–स्त्री. दे. 'श्रद्धा'।

स्रद्धू–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अपान वायु का त्याग।

स्रवंती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जलप्रवाह; नदी; एक बूटी; यकृत्-प्रदेश।

स्रव–संज्ञा, पु. (सं.) क्षरण, स्राव; निर्झर; प्रवाह, धारा; मूत्र; *श्रवण।–**द्रंग**–पु. मेला; बाजार।

स्रज्वा–संज्ञा, पु. (सं.) बहना, प्रवाहित होना; गर्भपात; प्रस्वेद; मूत्र; *कान।–**क्षेत्र**–पु. वह क्षेत्र जहाँ वर्षा का जल एकत्र होकर किसी नदी का मूल रूप धारण करता हो; अपवाह क्षेत्र (कैचमेंट एरिया)।

स्रवत्–वि. (सं.) चूता हुआ; बहुता हुआ।–**तोया**–स्त्री. रुदंती नामक पौधा।–**पाणिपादा**–स्त्री. वह स्त्री जिसके हाथ-पैर आर्द्र रहते हों।–**स्वेदजल**–वि. पीसने से तर-बतर।

स्रवग्दर्भा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) वह स्त्री या कोई मादा पशु जिसका गर्भ गिर गया हो।

स्रवन*–संज्ञा, पु. दे. 'श्रवण'।

स्रवना*–अ. क्रि. टपकना, चूना; गिरना। स. क्रि. बहाना, टपकना; गिरना।

स्रवा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मूर्वा; जीवंती।

स्रष्टव्य–वि. (सं.) सर्जन करने योग्य।

स्रष्टा (ष्ट्)–वि. (सं.) स्राव करने वाला; निर्माण, रचयिता। पु. सृष्टि का निर्माण करने वाला, ब्रह्मा; शिव; विष्णु।

स्रष्टार–संज्ञा, पु. (सं.) दे. 'स्रष्टा'।

स्रस्त–वि. (सं.) च्युत, पतित; ढीला पड़ा हुआ; हिलता हुआ; विच्छिन्न।–**कर**–वि. हिलती हुई सूँड़ वाला।–**गात्र**–वि. जिसका शरीर ढीला पड़ गया हो।–**मुष्क**–वि. जिसका अंडकोश हिल रहा हो।– स्कंध–वि. जिसके कंधे झुक गए हों; लज्जित।–**हस्त**–वि. जिसने पकड़ ढीली कर दी हो।

स्रस्तर–संज्ञा, पु. (सं.) आसन; सोफा।

स्रस्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) गिरना; लटकना; ढीला पड़ना।

स्राप*–संज्ञा, पु. दे. 'शाप'।

स्रापित*–वि. दे. 'शापग्रस्त'।

स्राव–संज्ञा, पु. (सं.) बहाव, क्षरण; टपकना, रिसना (सीक्रेशन); गर्भपात; निर्यास।

स्रावक–वि. (सं.) बहाने, स्राव कराने वाला। पु. काली मिर्च।

स्रावर–वि. (सं.) बहाने वाला, स्राव कराने वाला; पात कराने वाला।

स्रावणी–संज्ञा. स्त्री, (सं.) श्रद्धि नाम की ओषधि।

स्रावनी*–संज्ञा, स्त्री. दे. 'श्रावणी'।

स्रावित–वि. (सं.) स्राव कराया हुआ।

स्रावी (विन्)–वि. (सं.) बहाने वाला; टपकाने वाला; चुलाने वाला।

स्राव्य–वि. (सं.) स्राव कराने योग्य।

स्रिय*–संज्ञा, स्त्री॰ श्री, मंगल, कल्याण।

स्रुक् (घ्)–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यज्ञाग्नि में घी डालने के लिए पलाश या खदिर की बनी हुई स्रुवा।

स्रुघ्निका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) सज्जी।

स्रुघ्नी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) सज्जी।

स्रुत–वि॰ (सं.) बहा हुआ, क्षरित; जो रिसक खाली हो गया हो; *दे॰ 'श्रुत'।–**जल**–वि॰ जिसका पानी वह गया हो।

स्रुता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) हिंगुपत्री।

स्रुति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) वहाव; क्षरण; निर्यास; स्रोत, प्रवाह; वेदी के चारों ओर खींची जाने वाली रेखा; 'श्रुति'।–**कीर्ति***–स्त्री॰ 'श्रुतिकीर्ति। शत्रुघ्न की स्त्री (सं.)–**माथ***–पु॰ विष्णु।

स्रुव–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक तरह की छोटी स्रुवा।–**तरु,**–**द्रुम**–पु॰ विकंकत वृक्ष।–**दंड**–पु॰ स्त्रुवका दस्ता।–**प्रगुह्ण**–पु॰ [redacted] अपने लिए रख लेना।–**हस्तु**–पु॰ शिव।–**होम**–पु॰ स्त्रुवसे दी हुई आहुति।

स्रुवा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) घी की आहुति डालने की करछी। (लकड़ी की बनी); शल्की; मूर्वा।–**वृक्ष**–पु॰ विकंकत वृक्ष।

स्रु–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) स्रुवा; निर्झर, झरना।

स्रोवि–संज्ञा, पु॰ (सं.) नितम्ब।

स्रोत–संज्ञा, पु॰ (सं.) धारा, सोता; जरिया (आमदनी का–)।–**नदीभव**–पु॰ (यमुना नदी में उत्पन्न) सुरमा या अंजन।

स्रोत (स्)–संज्ञा, पु॰ (सं.) जलप्रवाह, धारा; नदी; तीव्र वेग; शरीरस्थ पोषण पहुँचाने वाली मार्ग; शरीर के रंध्र (जो पुरुषों में नौ और स्त्रियों में ग्यारह होते हैं); तरंग; जल; ज्ञानेंद्रिय; हाथी की सूँड; वंश परंपरा।

स्रोतआपत्ति, स्रोतापति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) (निर्वाण की) नदी में प्रवेश करना–निर्वाण के पथ पर अग्रसर होना (बौ.)।

स्रोतआपन्न–वि., सं. जो (निर्वाण की) नदी में प्रवेश कर चुका है–जो निर्वाण के पथ पर अग्रसर हो चुका है।

स्रोतईश–संज्ञा, पु॰ (सं.) समुद्र।

स्रोतस्य–संज्ञा, पु॰ (सं.) शिव; चोर।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) नदी।

स्रोता*–संज्ञा, दे॰ 'श्रोता'।

स्रोतोंजन (स्रोतोऽजन)–संज्ञा, पु॰ (सं.) सुरमा।

स्रोतोज–संज्ञा, पु॰ (सं.) सुरमा।

स्रोतोजव–संज्ञा, पु॰ (सं.) धारा का वेग।

स्रोतोद्भव–संज्ञा, पु॰ (सं.) दे॰ 'स्रोतोज'।

स्रोतोनदीभव–संज्ञा, पु॰ (सं.) 'स्रोतोजन।'

स्रोतोनुगत (स्रोतोऽनुगत्)–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक प्रकार की समाधि।

स्रोतोरंध्र–संज्ञा, पु॰ (सं.) हाथी की सूँड़ का छिद्र।

स्रोतोवहा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) नदी।

स्रोन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ 'श्रवण'।

स्रोनित*–संज्ञा, पु॰ दे॰ 'शोणित'।

स्रौग्मत–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक साम।

स्रौघ्निका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं.) सब्जी।

स्रौत–संज्ञा, पु॰ (सं.) एक साम।

स्रौतिक–संज्ञा, पु॰ (सं.) सीप।

स्रौतोवह–वि॰ (सं.) नदी-संबंधी।

स्रौव–वि॰ (सं.) श्रुवा-संबंधी; यज्ञ-संबंधी।

स्लिप–संज्ञा, स्त्री॰ (अं.) चिट, परचा; कागज़ का लंबा कटा हुआ टुकड़ा (जो लेख आदि लिखने के लिए तैयार किया जाता है)।

स्लीपर–संज्ञा, पु॰ (अं॰ स्लिपर') एड़ी की ओर खुली हुई जूती; लकड़ी का चौकोर लंबा टुकड़ा (जो रेल की पटरिया के नीचे बिछाते हैं); बड़ी धरन; रेल में यात्रियों के सोने के लिए आरक्षित डिब्बा।

स्लेज–संज्ञा, स्त्री॰ (अं.) बर्फ पर घिसटती हुई चलने वाली एक तरह की गाड़ी।

स्लेट–संज्ञा, स्त्री॰ (अं.) एक तरह के काले पत्थर की चौकोर पट्टी जो लिखने के काम आती है।

स्लो–वि॰ (अं.) सुस्त, मंदगति से चलने वाला; उचित से समय से पीछे (घड़ी)।

स्वंग–वि॰ (सं.) अच्छे अंगों वाला। पु॰ आलिंगन।

स्वंजन–संज्ञा, पु॰ (सं.) आलिंगन करना।

स्वंत–वि॰ (सं.) जिसका अंत अच्छा हो; शुभ, मंगलकारी।

स्वः–पु॰ (सं.) 'स्वर' का समासगत रूप। **पति**–पु॰ स्वर्गपति।–**पथ**–पु॰ मृत्यु।–**पाल**–पु॰ स्वर्ग की देखभाल

करने वाला।–पृष्ठ–पु॰ कई सामों के नाम।–सद्–पु॰ देवता।–**सरिता**–स्त्री॰ (हि॰) दे॰ 'स्वः सरित्'।–**सरित्,–सिंधु**–स्त्री॰ स्वर्गंगा।–**सुंदरी**–स्त्री॰ अप्सरा।–**स्पंदन**–पु॰ इंद्र का रथ।–**स्रवंती**–स्त्री॰ गंगा।

स्व–पु, (सं॰) कुटुंब, आत्मीय जन, संबंधी; आत्मा; विष्णु; धन, संपत्ति; धन राशि (ग॰)। वि॰ आत्मीय, अपना; सहजात, स्वाभाविक; अपनी जाति या वर्ग का।–**अजित**–भू॰ कृ॰ स्वयं उपार्जित, स्वयं प्राप्त (सेल्फ़एक्वायर्ड)।–**कंपन**–पु॰ वायु।–**कंबला**–स्त्री॰ एक नदी।–**करण**–पु॰ किसी स्त्री से विवाह करना; स्वत्व जताना।–॰**भाव**–पु॰ स्वत्व प्रमाणित किए बिना किसी वस्तु पर अधिकार करना।

स्वभावज–वि॰ (सं॰) प्राकृतिक, स्वाभाविक, सहज, स्वभाव से उत्पन्न, स्वभाव।

स्वभावतः–अव्य॰ (सं॰ *स्वभावतस्*) निसर्गतः, स्वभाव से, वस्तुतः, प्रकृति प्रभाव से, सहज ही **स्वभावतया**।

स्वभावसिद्ध–वि॰ यौ॰ (सं॰) स्वाभाविक, प्राकृतिक, प्रकृति-सिद्ध, सहज ही, स्वभावतः सिद्ध।

स्वभाषोक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु या विषय के यथावत प्राकृतिक स्वरूप का या अवस्थानुसार उसकी जाति का वर्णन हो।

स्वभू–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मा, विष्णु। वि॰ आपसे आप होने वाला, **स्वयंभू**।

स्वयं–अव्य॰ (सं॰ *स्वयम्*) स्वतः, आप, खुद, आपसे आप, खुद-ब-खुद।

स्वयं-दूत–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नायिका के प्रति अपनी वासना प्रगट करने में दूत का काम आप ही करने वाला नायक (सा॰)।

स्वयंदूती–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) स्वतः दूती का कार्य (स्ववासना-प्रकाशन) करने वाली परकीया नायिका।

स्वयंप्रकाश–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जो आप ही आप प्रकाशित हो, जैसे–सूर्य, परमेश्वर, परब्रह्म, परमात्मा, खुदरोशन।

स्वयंभू–संज्ञा, पु॰ (सं॰) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काल, कामदेव, स्वायंभुव, मनु। वि॰ जो आपसे आप पैदा हुआ हो, **स्वभू**।

स्वयंवर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुछ उपस्थित। व्यक्तियों में से कन्या का अपना पति आप ही चुनना, वह स्थान जहाँ कन्या स्वयं पति चुने।

स्वयंवरण–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वयंवर।

स्वयंवरा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वर्य्या, पतिवरा, इच्छानुसार अपना पति चुनने वाली कन्या या स्त्री।

स्वयंसिद्ध–वि॰ यौ॰ (सं॰) वह बात जिसकी सिद्धि के हेतु प्रमाण या तर्क अनावश्यक हो, स्वतःसिद्ध।

स्वयंसेवक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वेच्छा सेवक, स्वेच्छादास, स्वेच्छा से पुरस्कार के बिना ही किसी कार्य में योग देने वाला। स्त्री॰ **स्वयंसेविका**।

स्वयमेव–क्रि॰ वि॰ यौ॰ (सं॰) स्वतः, आप ही, स्वयं ही, खुद ही।

स्वर्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बैकुण्ठ, स्वर्ग, आकाश, परलोक।

स्वर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) जीवधारी के गले से या किसी बाजे या पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न, कोमलता, शुदात्तता गुदात्तता तथा तीव्रतादि गुण वाला शब्द, एक निश्चित रूप वालों वह ध्वनि जिसके आरोहावरोह का अनुमान सहज में सुनते ही हो, सुर (दे॰), ऐसे स्वर क्रम से सात हैं–1. षड्ज। 2. ऋषभ। 3. गाँधार। 4. माध्यम। 5. पंचम। 6 धैवत। 7. निषाद (सा, रे, ग, म, प, ध, नी)। **मु॰ स्वर उतारना**–स्वर धीमा (मंद) या नीचा करना। **स्वर चढ़ाना**–स्वर को ऊँचा करना, व्याकरण में वे वर्ण जो स्वतन्त्रतापूर्वक आपसे आप उच्चरित हों और व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं, अ (आ) इ (ई) उ (ऊ) ऋ लृ ए (ऐ) ओ (औ), संस्कृत में 6 और हिंदी में 11 (लृ-सहित) हैं, वेद में शब्दों का उतार-चढ़ाव। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *स्वर*) अंतरिक्ष, आकाश।

स्वरग*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (*स्वर्ग*) स्वर्ग, बैकुण्ठ, **सरग** (दे॰)।

स्वर-भंग–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कंठ स्वर बैठ जाने का एक रोग।

स्वरमंडल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक तारदार आजा।

स्वरबेधी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शब्द बेधी।

स्वर-शास्त्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर-विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें स्वर-विषयक विवेचन हो।

स्वरस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पत्ती आदि को कूट-पीस और कपड़े

से छान कर निकाला हुआ रस।

स्वरांत—वि. यौ. (सं.) वह शब्द जिनके अंत में कोई स्वर हो, जैसे—विष्णु, शिव।

स्वराज—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्वराज्य।

स्वराज्य—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अपना राज्य, वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी ही स्वदेश का शासन या प्रबन्ध करते हैं, प्रजातन्त्र, **स्वराज** (दे.)।

स्वराट—संज्ञा, पु. (सं.) परमात्मा, ब्रह्म, ब्रह्मा, स्वराज-शासन प्रणाली वाले राज्य का शासक या राजा। वि. जो स्वयं प्रकाशमान होता हुआ औरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरित—संज्ञा, पु. (सं.) वह स्वर जो मध्यम स्वर से उच्चरित हो, जिसका उच्चारण न तो बहुत ज़ोर से ही हो और न धीरे से ही हो। वि. स्वर-युक्त, गूँजता हुआ।

स्वरूप—संज्ञा, पु. (सं.) अपना रूप, आकृति, आकार, शक्ल, सूरत, मूर्त्ति, चित्र, वह पुरुष जो किसी देवतादि का रूप बनाए हो, देवादि का धारण किया रूप। वि. सुन्दर, समान, तुल्य। अव्य. रूप में, तौर पर। संज्ञा, पु. (दे.) सारूप्य।

स्वरूपज्ञ—संज्ञा, पु. (सं.) तावश, आत्मा और परमात्म के मधार्य रूप का ज्ञाता, स्वरूपज्ञाता। संज्ञा, स्त्री. **स्वरूपज्ञाता**।

स्वरूपमान्*—संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वरूप्य*) स्वरूपवान्, सुरूपवान, सुन्दर।

स्वरूपवान्—वि. (सं. *स्वरूपवत्*) सुन्दर, मनोरम, खूबसूरत, अच्छे रूपवाला। स्त्री. **स्वरूपवती, सुरूपा**।

स्वरूपी—वि. (सं. स्वरूपिन्) सुन्दर, स्वरूपयुक्त, स्वरूप वाला, जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो। **स्त्री. स्वरूपिणी**। *संज्ञा, पु. (दे.) **सारूप्य**।

स्वरोचिस—संज्ञा, पु. (सं.) स्वारोचिष् मनु के पिता और कलि नामक गंधर्व के पुत्र।

स्वरोद—संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वरोदन*) एक तारदार बाजा, विशेष, सरोद।

स्वरोदय—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा शुभाशुभ के जानने को बताया गया है।

स्वर्गंगा—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) मंदाकिनी।

स्वर्ग—संज्ञा, पु. (सं.) देव-लोक, नाक, बैकुंठ, **सरग** (आ.), सात लोकों में से तीसरा लोक जिसमें पुण्यात्माएँ मृत्युपरान्त जाकर निवास करती हैं (हिन्दू. पुरा.)। **मु. स्वर्ग के पथ पर पैर देना**—मरना, जान को जोखिम में डालना। **स्वर्ग जाना या सिधारना**—मारना, देहावसान होना। यौ. **स्वर्ग-सुख**—बहुत ही उच्च कोटि का सुख। **स्वर्ग की धार**—आकाश-गंगा। दिव्य सुख स्थान, सुख, आकाश, ईश्वर।

स्वर्ग-गमन—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मरना, मृत्यु।

स्वर्ग-गामी—वि. (सं. *स्वर्गगामिन्*) देवलोक को जाने वाला, मृत, मरा हुआ, स्वर्गाव।

स्वर्ग-तट—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवतरु, कल्पवृक्ष।

स्वर्गद—वि. (सं.) स्वर्ग देने वाला।

स्वर्गनदी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) स्वर्गगा, आकाश, गंगा, **स्वर्ग-सरिता, स्वर्ग-सलिला**।

स्वर्ग-पुरी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) **स्वर्ग-नगरी,** अमरावती अरमपुरी। पु. यौ. स्वर्ग-पुर, देव-पुर। •

स्वर्ग-लोक—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देवलोक, देव-पुरी, बैकुंठ।

स्वर्ग-वधू, स्वर्ग-बधूटी—संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) अप्सरा, देव-बधूटी।

स्वर्ग-वाणी—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गगन-गिरा, आकाश-वाणी।

स्वर्ग-वास—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) देव-लोक जाना, मरना।

स्वर्ग-वासी—वि. (सं. *स्वर्गवासिन्*) स्वर्ग में रहने वाला, मरा हुआ, मृत, **स्वर्गीय**। स्त्री. **स्वर्गवासिनी**।

स्वर्गारोहण—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्वर्ग-गमन, स्वर्ग को जाना या सिधारना, मरना।

स्वर्गीय—वि. (सं.) स्वर्ग का या स्वर्ग-संबंधी, जो मर गया हो, मृत। स्त्री. स्वर्गीया।

स्वर्ण—संज्ञा, पु. (सं.) सोना, हेम, हिरण्य, कंचन, कनक, सुवर्ण, धतूरा, **स्वन, सुबरन, सुवर्ण, सुवर्न** (दे.)।

स्वर्ण-कमल—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कनक, कमल, रक्त या लाल कमल।

स्वर्णकार—संज्ञा, पु. (सं.) सुनार।

स्वर्ण-गिरि—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सुमेरु पहाड़, **स्वर्णाचल, हेमाद्रि, स्वर्णादि**।

स्वर्ण-पर्पटी—संज्ञा, पु. यौ. (सं.) संग्रहणी रोग-नाशक एक

औषधि विशेष।

स्वर्णमय–वि॰ पु॰ (सं॰) जो सर्वधा सोने का हो, हिरण्यमय। स्त्री॰ **स्वर्णमयी**।

स्वर्णमाक्षिक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) **सोनामक्खी, सोनामाखी**।

स्वर्णमुद्रा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अशरफी।

स्वर्ण यूथिका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पीली जूती।

स्वर्णाचल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कनकाचल, सुमेरु पर्वत।

स्वर्णाद्रि–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सुमेरु, कंचनाचल, हेमाद्रि।

स्वर्धुनी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गंगा नदी, **सुरधुनी** (दे॰)।

स्वर्नगरी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अमरावती। पु॰ **स्वर्नगर**–अमरपुर।

स्वर्नदी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्गंगा।

स्वर्भिषग्–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देव वैद्य अश्विनी कुमार।

स्वर्लोक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्ग बैकुंठ।

स्वर्वधू, स्वर्वधूटी–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देव-वधूटी, अप्सरा, **स्वर्गांगना**।

स्वर्वेश्या–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अप्सरा, **स्वर्वरांगना, स्वर्गांगना**।

स्वर्वैद्य–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अश्विनी कुमार, **स्वचिकित्सक**।

स्वल्प–वि॰ (सं॰) अत्यंत थोड़ा।

स्ववरन*–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सुवर्ण*) स्वर्ण, सुवर्ण, **सुवरन, सुवर्न**।

स्वशुर, स्वसुर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्वशुर*) पति या पत्नी के पिता, **ससुर** (दे॰)।

स्वशुराल, स्वसुराल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ *श्वशुरालय*) ससुराल, **ससुरार** (दे॰)।

स्वसा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ *स्वसृ*) बहिन।

स्वस्ति–अव्य॰ (सं॰) कल्याण या मंगल हो (आशीष)। संज्ञा, स्त्री॰ कल्याण, मंगल, ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक स्त्री, सुख।

स्वस्तिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हठ योग का एक आसन, एक शुभचिह्न, ऐवन-चिह्न, पानी में पिसे चावलों के चूर्ण से बनाया गया एक माँगलिक द्रव्य जिसमें देववास मानते हैं। प्राचीन काल में शुभावसरों पर शुभ वस्तुओं से बनाने का एक मांगलिक चिह्न।

स्ववरन–संज्ञा, स्त्री॰ देह के विशेष अंगों पर उभारना हिन्दू रिवाज (शुभ, सामु॰); स्वर्ण।

स्वस्तिवाचन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शुभ कार्यारम्भ पर देव-पूजन और माँगलिक वेदमंत्रों के पाठ के रूप में एक धार्मिक कृत्य (कर्मकांड)। वि॰ **स्वस्तिवाचक**।

स्वस्त्ययन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विशिष्ट शुभ कार्यारम्भ पर शुभ-स्थापनार्थ वेद के माँगलिक मंत्रों का पाठादि (एक धार्मिक कृत्य)।

स्वस्थ–वि॰ (सं॰) नीरोग, तंदुरुस्त, आरोग्य, भला-चंगा, सावधान। संज्ञा, स्वस्थता।

स्वहाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ *सोहाना*) सुहाना, सोहाना, अच्छा या प्रिय लगना।

स्वाँग–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *सु+अंग*) रूप, भेस, मज़ाक़ का खेल, तमाशा नक़ल, दूसरे का रूप बनाने को धरा गया। बनावटी वेष, धोखा देने को बनाया गया कोई **रूप, सुराँग** (प्रा॰)।

स्वाँगना*–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ *स्वाँग*) स्वाँग बनाना, बनावटी भेस धरना।

स्वाँगी–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *स्वाँग*) स्वाँग बनाने तथा यों ही जीविकोपार्जन करने वाला, बहुरुपिया, **सुराँगी** (प्रा॰)। वि॰ रूप धरने वाला।

स्वाँत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मन, अंताकरण।

स्वाँस–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्वास*) स्वास, साँस, **स्वाँसा**।

स्वाँसा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ *श्वास*) स्वास, साँस। **लो॰** "जब लौं स्वाँसा सब लौं आखा।" **मु॰ स्वाँसा साधना**–प्राणायाम करना, शुभाशुभ विचारार्थ, दाहिने या बाँयें श्वास की गति देखना (स्वरो॰)।

स्वाक्षर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हस्ताक्षर, दस्तख़त।

स्वाक्षरित–वि॰ (सं॰) अपने हस्ताक्षर से युक्त, अपना दस्तख़त किया हुआ।

स्वागत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अगवानी, अभ्यर्थना, पेशवायी, अतिथि या आगंतुकादि के आने पर उसका आदर- सत्कार से अभिनंदन करना।

स्वागतकारिणी सभा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह सभा जो किसी बड़ी सभा में आने वाले प्रतिनिधियों या अन्य लोगों के स्वागतादि की व्यवस्था के लिए संगठित की जाए।

स्वागत-पतिका–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह नायिका जो

पति के परदेश से आने पर प्रसन्न होती है, आगत-पतिका।

स्वागत प्रिया–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह नायक जो अपनी प्रिया के परदेश से आने के कारण प्रसन्न हो, आगत-प्रिया।

स्वागता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) र, न, भ (गण) तथा दो गुरु वर्णों (ऽ।ऽ + ।।। + ऽ।। + ऽऽ) वाला एक वर्णिक छंद (पिं.)।

स्वागताध्यक्ष–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्वागतकारिणी सभा का सभापति।

स्वातंत्र्य–संज्ञा, पु. (सं.) स्वतन्त्रता।

स्वात–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. *स्वाति*) स्वाति नक्षत्र।

स्वाति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वाती, पंद्रहवाँ नक्षत्र, जो शुभ माना गया है (फ. ज्यो.)।

स्वातिपथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) आकाश-गंगा, **स्वातीपथ**।

स्वातिसुन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **स्वाति पुत्र, स्वाति-तनय, मुक्ता, मोती**।

स्वातिसुवन–संज्ञा, पु. (सं.) मोती, **स्वाती-पूत (दे.), स्वाति-तनुज**।

स्वाती–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वाति*) ख्याति नक्षत्र।

स्वाद–संज्ञा, पु. (सं.) मज़ा, ज़ायका, रसानुभूति, किसी वस्तु के खाने या पीने से रसना को होने वाला अनुभव या आनंद, सवाद (दे.)। **मु. स्वाद (मज़ा) चखाना (चखना)**–किसी को किसी अपराध का यथावत दण्ड देना (पाना)। वांछा, चाह, आकांक्षा, कामना, इच्छा। **मु. स्वाद (न) जानना**–किसी वस्तु का आनंद (न) जानना, अनुभूति रखना। **स्वाद मिलना (पाना)**–रसानुभूति होना, बुरे काम का बुरा फल मिलना (व्यंग्य.)।

स्वादक–संज्ञा, पु. (सं. *स्वाद*) स्वाद जानने वाला, स्वादु-विवेकी, वह व्यक्ति जो भोजन के तैयार होने पर उसे पहले चख कर जाँचता है, (अं.) टेस्टर।

स्वादन–संज्ञा, पु. (सं.) स्वाद लेना, चखना, मज़ा या आनंद लेना। वि. **स्वादनीय, स्वादित**।

स्वादिष्ट (दे.), स्वादिष्ट–वि. (सं.) अच्छे स्वाद वाला, सुस्वादु, ज़ायक़ेदार, मज़ेदार।

स्वादी–वि. (सं. *स्वादिन्*) स्वाद लेने या चखने वाला, रसिक, मज़ा लेने वाला, **सवादी** (दे.)

स्वादिल†, स्वादीला–वि. दे. (सं. *स्वादिष्ट*), स्वादिष्ट मज़ेदार **सवादिल**।

स्वादु–संज्ञा, पु. (सं.) मधुरता, मधुराई, मीठा रस, दूध, गुड़ मिठास, स्वाद, ज़ायका। मज़ा। वि. मीठा, मिष्ट, मधुर स्वादिष्ट, ज़ायक़ेदार, सुन्दर।

स्वाद्य–वि. (सं.) स्वाद लेने के योग्य।

स्वाधीन–वि. यौ. (सं.) जो परतंत्र या पराधीन न हो स्वतंत्र, स्वच्छंद, मनमानी करने वाला, आज़ाद, निरंकुश संज्ञा, पु. समर्पण, सुपुर्द, हवाला, स्वाधीनता।

स्वाधीनता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वच्छंदता, स्वतंत्रता, आज़ादी

स्वाधीन पतिका–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) वह नायिका जिसक पति उसके वश में हो।

स्वाधीनप्रिया–संज्ञा, पु. (सं.) वह पुरुष जिसकी प्यारी उसवे वशीभूत हो।

स्वाधीन भर्तृका–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) स्वाधीन पतिका, वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।

स्वाधीनी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) स्वाधीनता।

स्वाध्याय–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नियमपूर्वक निरंतर वेदाध्ययन वेद पढ़ना, अध्ययन, पढ़ना, अनुशीलन।

स्वान–संज्ञा, पु. दे. (सं. *श्वान*) कुत्ता, *सुवर्ण*।

स्वाना*†–क्रि. स. दे. (हि. सुलाना) **सोवाना,** सुलाना।

स्वापन–संज्ञा, पु. (सं.) शुत्रओं को निद्रित करने वाला एव अस्र (प्राचीन.)। वि. नींद लाने वाला, निद्राकारी।

स्वाभाषिक–वि. (सं.) स्वभाव-सिद्ध, नैसर्गिक, प्राकृतिक जो स्वतः हो, कुदरती।

स्वाभाविकी–वि. (सं.) प्राकृतिक, नैसर्गिक, स्वभाव-सिद्ध कुदरती।

स्वामि*–संज्ञा, पु. दे. (सं. *स्वामी*) प्रभु, स्वामी, नाथ, पति ईश्वर। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **स्वामिता**।

स्वामिकार्त्तिक–संज्ञा, पु. (सं.) शिवसुत, स्कंद, षड़ानन कार्त्तिकेय।

स्वामिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रसुता, स्वामित।

स्वामित्य–संज्ञा, पु. (सं.) प्रमुख, स्वामिता, स्वामी क भाव।

स्वामिन, स्वामिनी–संक्षा, दे. *(सं. स्वामिनी)* श्रीराधिका, गृहिणी, स्वामिनी, स्वस्थाधिकारिणी, मालकिनी।

स्वामिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) राधा जी, मालकिनी, सुगृहिणी, स्वामिनी। रफु.।

स्वामी–संज्ञा, पु. *(सं. स्वामिन्)* प्रभु, नाथ, मालिजक, स्वत्वाधिकारी, पति, शौहर, अन्नदाता, भगवान, राजा, घर का प्रधान, मुखिया, धर्माचार्यादि की उपाधि, कार्त्तिकेय, संन्यासी, साधु। स्त्री. स्वाममिनी।

स्वायंभुव–संज्ञा, पु. (सं.)स्वयंभू, ब्रह्मा के पुत्र, 14 मनुवों में से प्रथम।

स्वायंभू–संज्ञा, पु. *(सं. स्वायंभुव)* स्वायंभुव, एक मनु।

स्वायत्त–वि. (सं.) जो अपने वश में हो, जो अपने अधीन हो, जिस पर अपना ही अधिकर हो।

स्वायत्तशासन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्वराज्य, स्वानिक स्वराज्य, वह शासन जो अपने अधिकार में हो । लोकल सेल्फ गवर्नमेंट।

स्वारथ*†–संज्ञा, पु. दे. *(सं. स्वार्थ)* स्वार्थ, अपना प्रयोजन या मतलब, अपना लाभ या उद्देश्य, अपनी भलाई। विलो. **परार्थ, परमार्थ**। तुल.। वि. दे. (सं. सार्थ) सफल, सार्थक, सिद्ध, **सुआरथ** (दे.)। गु. **स्वारथ चीन्हना**–स्वार्थ देखना या पहचानना।

स्वारथी–वि. दे. *(सं. स्वार्थी)* स्वार्थी, खुदगर्ज़, अपना प्रयोजन सिद्ध या लाभ करने वाला।

स्वारस्य–वि. (सं.) रसीलापन, सरसता, स्वाभाविकता।

स्वाराज्य–संज्ञा, पु. (सं.) स्वर्ग या वैकुंठलोक, स्वाधीन राज्य, स्वर्ग का राज्य।

स्वारोचिप–संज्ञा, पु. (सं.) स्वरोचिषात्मज, दूसरे मनु।

स्वार्थ–संज्ञा, पु. (सं.) अपना प्रयोजन या मतलब, अपना लाभ या हित, अपना उद्देश्य, अपनी भलाई, स्वारथ (दे.)। मु. *(किसी बात में)* **स्वार्थ लेना (रखना)**–दिलचस्पी लेना (रखना), अनुराग या प्रेम रखना (आयु.)। **स्वार्थ चीन्हना**–स्वार्थ ही देखना। वि. दे. (सं. सार्थक) सार्थक, सफल।

स्वार्थता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) निज प्रयोजन या उद्देश्य, खुदगर्ज़ी स्वलाभ, स्वहित, स्वार्थ का भाव।

स्वार्थत्याग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अपने लाभ का विचार छोड़ कर परोपकार करना, किसी भले कार्य के लिये स्वाहित का ध्यान न रखना।

स्वार्थ त्यागी–संज्ञा, पु. यौ. *(सं. स्वार्थ तयागिन्)* परार्थ या परोपकार के हेतु अपने लाभ का विचार न करने वाला।

स्वार्थपर–वि. (सं.) स्वाहित का ही ध्यान रखने वाला, स्वार्थी, खुदगर्ज़।

स्वार्थपरता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वार्थता, खुदगर्ज़ स्वार्थ पर होने का भाव, अपन प्रयोजन या उद्देश्य की ही सिद्धि का ध्यान रखना।

स्वार्थपरायण–वि. यौ. (सं.) स्वार्थी, स्वार्थपर, खुदगरज़, मतलबी। संज्ञा, स्त्री. स्वार्थपरायणता।

स्वार्थसाधन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) अपने मतलब या प्रयोजन को सिद्ध करना, अपना काम निकालना, अपना लाभ या हित साधना। वि. स्वार्थसाधक।

स्वार्थांध–वि. यौ. (सं.) स्वार्थ के वश हो कुछ विचार न करने वाला, अपने मतलब के लिये अंधे के समान कुछ न देखने वाला। संज्ञा, स्त्री. (सं.) **स्वार्थांधता**।

स्वार्थी–वि. (सं. स्वार्थिन्) स्वार्थ-परागण, पतलबी, खुदग़रज़ अपने ही प्रयोजन की सिद्धि में तत्पर, अपना ही लाभ या हित देखने वाला, **स्वारथी** (दे.)।

स्वावस–संज्ञा, पु. दे. *(सं. श्वास)* श्वास, प्राणवायु, साँस।

स्वास*–संज्ञा, पु. दे. *(सं. श्वास)* श्वास, साँस।

स्वासा–संज्ञा, स्त्री. दे. *(स.श्वास)* श्वास, साँस लो. **मु. स्वासा साधना**–प्राणायाभ करना, स्वास-गति *(शुभाशुभार्थ)* देखना (स्वरो.)।

स्वास्थ्य–संा, पु. (सं.) आरोग्य, नीरोग, स्वस्थ होने की दशा, तदुरुस्ती, सावधान। **स्वास्थ्यकर, स्वास्थ्यकारक, स्वास्थ्यकारी** वि. (सं.) अरोगय-वर्द्धक, तंदुरुस्त या नीरोग रखने वाला।

स्वास्थ्य-रक्षा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) आरोगय का रक्षा या तंदुरुस्ती का बचाव। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्वास्थ्य-रक्षण।

स्वास्थ्यवर्धन–संज्ञा, वि. यौ. (सं.) आरोग्यता को बढ़ाने वाला। संज्ञा, पु. यौ. (सं.) **स्वास्थ्यवर्धन**।

स्वास्थ्य-सुधार–संज्ञा, पु. यौ. *(सं. स्वास्थ्य+सुचार हि.)* बिगड़े स्वास्थ्य का बनाना।

स्वाहा–अल्प. (सं.) इसका प्रयोग हवन के समय होता है,

देवताओं के हवि देने में प्रयुक्त होने वाला एक शब्द विशेष। जैसे–"इन्द्राय स्वाहा"। **मु॰ स्वाहा करना (होना)**–नष्ट या नाश करना (होना), जला देना (जल जाना)। संज्ञा, स्त्री॰ अग्निदेव की पत्नी। **स्वीकरण**–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वीकार या अंगीकार करना, कुबूल या मंजूर करना, अपनाना, राज़ी होना, मानना। वि॰ **स्वीकरणीय**।

स्वीकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) अंगीकार, मंजूर, कुबूल, लेना, स्वीकृत। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्वीकारता।

स्वीकारोक्ति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) ऐसा बयान जिसमें अभियुक्त अपना दोषापराध आप ही मान ले या स्वीकार कर ले।

स्वीकार्य–वि॰ (सं॰) स्वीकार या अंगीकार करने के योग्य, मानने के योग्य, मान्य।

स्वीकृत–वि॰ (सं॰) स्वीकार या अंगीकार किया हुआ, कुबूल या माना हुआ, मंजूर किया हुआ।

स्वीकृति–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मंजूरी, रज़ामन्दी, सम्मति, स्वीकार का भाव।

स्वीय–वि॰ (सं॰) अपना, निज का। संज्ञा, पु॰ सम्बन्धी, आत्मीय, स्वजन।

स्वे*–वि॰ दे॰ (सं॰ स्व) अपना, निज का।

स्वेच्छा–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अपनी इच्छा या अभिलाषा।

स्वेच्छाचार–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वेच्छाचार, मनमानी करना। संज्ञा, स्त्री॰ स्वेच्छाचारिता।

स्वेच्छाचारी–वि॰ (सं॰ स्वेच्छाचारिन्) अवाध्य, मनमानी करने वाला, निरंकुश, **स्वच्छनदाचारी**। स्त्री॰ **स्वेच्छाचारिणी**। संज्ञा, स्त्री॰ **स्वेच्छाचारिता**।

स्वेच्छानुचर–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वयं सेवक।

स्वेच्छासेवक–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वयं सेवक।

स्वेत*–वि॰ दे॰ (सं॰ श्वेत) श्वेत, उज्ज्वल, धवल, सफ़ेद, सेत (दे॰)। संज्ञा, (सें॰) स्वेतता।

स्वेद–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रस्वेद, पसीना, वाष्पकण, वाष्प, भाफ, गरमी, ताप, **सेत, सेद** (दे॰)। **स्वेदक, स्वेदकर, स्वेदकारक, स्वेदकारी**–वि॰ (सं॰) प्रस्वेद-कारक, पसीना लाने वाला।

स्वेदज–वि॰ (सं॰) पसीने से पैदा होने वाला *(जूँ, खटमल आदि जीव)*।

स्वेदन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पसीना निकलना।

स्वेदित–वि॰ (सं॰) बफारा दिया या सेंका हुआ, पसीने से युक्त।

स्वै*–वि॰ दे॰ (सं॰ स्वीय) अपना निजी, निजका सर्व॰ (दे॰) सो।

स्वैर–वि॰ (सं॰) स्वतंत्र, स्वच्छंद, स्वाधीन, मनमाना करने वाला, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ, मन्द, धीमा।

स्वैरचारी–वि॰ (सं॰ स्वैरचारिन्) व्यभिचारी, निरंकुश, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी। स्त्री॰ स्वैरचारिणी।

स्वैरता–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्वेच्छाचारिता, यथेच्छाचारिता।

स्वैरिणी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) व्यभिचारिणी, स्वेच्छाचारिणी।

स्वैरिता–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्वेरता) स्वैरता, यथेच्छाचारिता।

स्वोपार्जित–वि॰ (सं॰) अपना कमाया या उपार्जित किया हुआ, निज का पैदा किया हुआ।

ह

ह–संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला का 33वाँ तथा उच्चारण-विचार से ऊष्म वर्णों का अंतिम वर्ण संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव, मंगल, शुभ, शून्य, आकाश, जल, ज्ञान, हँसी, हास, घोड़ा।

हँक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* किसी के बुलाने को ज़ोर से निकाला शब्द, हाँक, हुँकर, गर्जन, ललकार।

हंकड़ना, हंकरना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (हि॰ हाँक) घमंड से बोलना, ललकारना।

हँकराना–क्रि॰ सं॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* बुलाना, पुकारना, टेरना, बुलवाना।

हँकारना–क्रि॰ सं॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* हाँक देकर बुलाना, टेरना, पुकारना, बुलवाना।

हुँकवा–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* शेर के शिकार में उसे हाँक देकर शिकारी की ओर कर देने वाला, शेर के शिकार का यह ढंगं संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हंकवाई– हँकाई।

हँकवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ हाँकना)* बुलवाना, हाँक लगवाना, हाँकने का काम दूसरे से कराना।

हंकवैया*†–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ हाँकना+ वैया प्रत्य.)* हाँकने वाला।

हंका–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* ललकार।

हँकाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हाँकना)* हाँकने की क्रिया या मजूदरी, हाँकने का भाव।

हँकाना–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* हाँकना, पुकारना, चलानाउ, बुलाना, हँकवाना, चलवाना, बुलवाना।

हँकार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ हँकार)* ज़ोर की पुकार। ऊँचे स्वर से बुलाने या सम्बांधित करने का शब्द, ज़ोर से पुकारना। मु॰ **हँकार पड़ना**–बुलाने को टेर लगाना, पुकारना।

हँडिया–संज्ञा, स्त्री॰ *(सं॰ माँढिका)* मिट्टी का एक छोटा पात्र, शोभार्थ लटकाने का ऐसा ही कांच का पात्र या हांडी, एक क़लवा।

हंडी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ मांडिका)* हाँडी।

हंत–अभ्य॰ (सं॰) शोक या खेद सूचक शब्द।

हंता–संज्ञा, पु॰ *(सं॰ हंतृ)* वध करने वाला, मारने वाला। स्त्री॰ **हंत्री**।

हंत्री–संज्ञा, स्त्री॰ वि॰ (सं॰) मारने वाली, नाशक, वध करने वाली।

हँफनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हाँफना)* हाँफने का भाव या क्रिया। **मु॰ हँफनि मिटाना**–सुस्ताना, आराम करना, थकी मिटाना।

हंस–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बड़ी झील में रहने वाला बत्तख जैसा एक जल-पक्षी, मराल, परमात्मा, जीवात्मा सूर्य, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, ब्रह्म, परमेश्वर, माया से निर्लिप्त जीव, आत्मा, परमहंस, संन्यासियों का एक भेद, प्राण वायु, 14 गुरु और 20 लधु वर्ण वाला दो का एक भेद, एक भगण और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)। स्त्री॰ हंसिनि, हंसिनी।

हंसक–संज्ञा, पु॰ (सं.)मराल, हंस पक्षी, पैर की उँगली का बिछुवा *(गहना)*।

हंसगति–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) हंस की स्त्री, सुन्दर मन्द गति, सापुज्य मुक्ति 20 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं॰)

हंसगामिनी–वि॰ स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) हंस की सी सुन्दर धीमी चाला से चलने वाली स्त्री, **हंस-गमिनि** (दे॰)।

हंसतनय–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सूर्य सुत, बम, शनि, **हंसात्मज, हंसतनुज**। संज्ञा, **स्त्री॰ हंसतनया**–यमुना, **हंसतनुजा**।

हँसतामुखी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(हि॰ हँसता+ मुख)* प्रसन्न मुख, हँसते मुखवाली स्त्री। स्मितांगना, हँसमुखी।

हँसन, हँसनि–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हँसना)* हँसने का भाव, क्रिया या ढंग।

हँसना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(सं॰ हसन)* प्रसन्नता से मुख फैला कर एक प्रकार का शब्द निकालना, हास करना, खिलखिलाना, कहकहा लगाना। स॰ रूप–**हँसाना, प्रे॰** रूप–**हँसवाना**। सौ॰ **हँसना-बोलना**–प्रसन्नता की बातचीत करना। **हँसना-हँसना**–मनोरंजन या मनोविनोद करना। **हँसना-खेलना**–आनंद करना। **पु॰ किसी पर हँसना**–विनोद या दिल्लगी की बात कह कर मूर्ख या तुच्छ ठहराना, उपहास या हँसी करना। **हँसते-हँसते**–खुशी या अति हर्ष से। **ठठा कर** (ठट्ठा मार कर) **हँसना**–अट्टहास करना, जोर से हँसना। **बात हँसकर** (हँसी में) **उड़ाना (टालना)**–किसी बात को तुच्छ या साधाण समझ कर दिल्लगी में टाल देना। (किसी बात को) **हँस कर टालना**–फवती या लगती बात पर ध्यान न देना, पूरा न मानना, विनोद में उड़ा देना। हँसी या दिल्लगी करना, प्रसन्न, सुखी या खुश होना, खुशी मनाना, रम्य लगना, रौनक या गुलज़ार होना। क्रि॰ स॰ किसी का उपहास करना, अनादर करना हँसी उड़ाना।

हँसनि*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हँसना)* हँसना, हँसने की क्रिया, भाव, या ढंग।

हंसनी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ हँसी)* हँस की मादा, **हंसिनी, हँसिनि** (दे॰)।

हंसपदी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक लता।

हँसपुत्र–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हंसपूत (दे॰) सूर्य-सुत। स्त्री॰ हंसपुत्री।

हँसमुख–वि. यौ. *(हि. हँसना मुख)* प्रसन्नवदन, जिसके मुख से प्रसन्नता या हर्ष प्रकट हो, दास्यप्रिय, विनोदी, विनोदशील।

हंसराज–संज्ञा, पु. (सं.) समलपत्ती, एक पर्वतीय बूटी, एक अगहनी धान। यौ. हँसों में राजा, विधि–हंस, श्रेष्ठ हंस।

हँसली, हँसुली–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. अंसली)* गले के नीचे की धनुषाकार हड्डी, (स्त्रियों का) गले में पहनने का एक गोलाकार गहना, सुतिया।

हँस-वंश–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्यवंश, रघुवंश।

हंसवाहन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ब्रह्मा।

हंस-वाहिनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) सरस्वती।

हंस-सुत–संज्ञा, पु. यौ. सं. सुर्य-सुत, हंसतनय, शनि, यम, कर्ण।

हँससुता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सुर्यसुता, यमुना नदी, हंसतनया।

हँसाई–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. हँसना) हँसने का भाव या क्रिया, अकीर्ति, बदनामी, निंदा, अपयश, उपहास।

हंसात्मज–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्यसुत, कर्ण, यम, शनि।

हसात्मजा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) यमुनाजी।

हँसाना–क्रि. स. *(हि. हँसना)* दूसरे व्यक्ति को हँसने में लगाना, हँसावना (दे.)।

हँसाय*†–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. हँसना) हँसाई, निंदित, निन्दा, बदनाम। गिर. ।

हंसालि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हंसाबलि, हंसों की पंक्ति या समूह, हँस-माल, 37 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं.)।

हंसिनि, हंसिनी–संज्ञा, पु. स्त्री. (सं. हंसी) हंसी।

हँसिया–संज्ञा, स्त्री. (दे.) एक लोहे का औज़ार जिससे खेत की घास या साग आदि काटी जाती है, दुरांती (प्रान्ती.)।

हंसी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हंस की मादा हंसिनी, 32 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)।

हँसी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हँसना)* हँसने की क्रिया या भाव, हास, निंदा बदनामी। यौ. हँसी-खुशी–राज़ी-खुशी, प्रसन्नता।

हँसी-खेल–तमाशा, साधारण या कम काम। हँसीठट्ठा–मज़ाक़, दिल्लगी, आनंद, विनोद क्रीड़ा, विनोद। **हँसी दिल्लगी**–उपहास, विनोद मज़ाक़। **हँसी-मज़ाक**–उपहास दिल्लगी, विनोद। **मु. (किसी पर या किसी बात पर) हँसी आना**–मूर्खतापूर्ण तथा कौतुक या हास समझना, बच्चों का खेल या मज़ाक़ सा ज्ञात होना। **मु. हँसी छूटना**–हँसी आना, कौतुक या विनोद सा सरल और सुनने में प्रिय लगना, मुर्खता जान पड़ना। विनोद दिल्लगी। यौ. **हँसी-खेल**–विनोद, कौतुक, दिल्लगी, सहज या साधारण बात। **मु. हँसी समझना या हँसी-खेल समझना**–आसान, सरल या साधारण बात समझना। **हँसी में उड़ाना (टालना)**–साधारण कौतुक या विनोद समझ टालना, परिहास की बात कह कर टाल देना। **हँसी में कहना**–मज़ाक या विनोदार्थ कहना। **हँसी करना (कराना)**–उपहास या निंदा करना (कराना)। **हँसी में होना या ले जाना**–किसी बात की मज़ाक़ समझना, लोक-निंदा, अनादर, उपहास, अनादर-सूचक **हँसी-हँसी में टालना**–साधारण तथा मज़ाक़ के रूप में लेना, विनोदार्थ समझ ढाल देना। **मु. हँसी उड़ाना**–उपहास करना, व्यंग्यपूर्वक निंदा करना।

हँसुआ, हँसुवा–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हँसिया)* हसिया, दराँती।

हँसली–संज्ञा, स्त्री. (दे.) हँसली, हँसुली (दे.)।

हँसोड़, हँसोर–वि. दे. (हि. हँसना ओड़ प्रत्य.) मज़ाकिया, दिल्लकिया, दिल्लगीबाज़, मसख़रा, हँसी-ठट्ठा करने वाला, विनोदप्रिय विनोदी।

हइ–संज्ञा, पु. (दे.) हय, घोड़ा।

हई–संज्ञा, पु. दे.(सं. हयन्) अश्वारोही, घोड़े का सवार। संज्ञा, स्त्री. (हि. ह) आश्चर्य। क्रि. अ. (अव.) हूँ, **अहो** (आ.)।

हउँ*--क्रि. अ. सर्व. (हि. हौं) मैं, हौं।

हओ–अव्य. (आ.) हाँ, स्वीकार-सूचक अव्यय।

हक–वि. (अ.) सत्य, सच, उपयुक्त, उचित, ठीक, न्याय। संज्ञा, पु. किसी वस्तु को काम में लाने या रखने या लेने का अधिकार, स्वत्व, कोई काम करने या कराने का इख़्तियार, हक्क (आ.)। **मु. हक़ में**–विषय में पक्ष में कर्त्तव्य, धर्म, फ़र्ज़। **मु. हक अदा या पूरा करना**–कर्त्तव्य पालन करना। पाने, रखने या काम में लाने का, न्याय से जिस पर अधिकार हो वह वस्तु, निश्चित

रीति से मिलने वाला धन, दस्तुरी, उचित पक्ष या बात, न्याय पक्ष। **मु॰ हक पर होना (रहना)**–ठीक बात की हठ या आग्रह करना, खुदा, परमेश्वर (मुस॰)।

हक़दार–संज्ञा, पु॰ *(अ॰ हक+दार फ़ा॰)* अधिकार या स्वत्व रखने वाला संज्ञा, स्त्री हक़दारी।

हक़, नाहक़–अव्य॰ यौ॰ *(अनु॰ फ़ा॰)* बलात्, धींगा-धींगी, ज़बरदस्ती, अकारण, निष्प्रयोजन, फ़जूल, व्यर्थ।

हक़बक़ाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(अनु॰ हक़ाबक़ा)* घबरा जाना, हक्का-बक्का हो जाना, भौचक रह जाना।

हकला–वि॰ दे॰ *(हि॰ हक़लाना)* हक़लाने या रुक-रुक कर बोलने वाला।

हक़लाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ (अनु॰ हक) रुक-रुक या अटक-अटक कर बोलना।

हकेशुफ़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) गाँव के रिस्तेदारों को वहाँ की ज़मींदारी के मोल लेने में औरों से अधिक अधिकार या हक़।

हक़ीकत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) असलियत, सचाई, तत्व, ठीक बात, तथ्य, सत्य बात, असली हाल। **मु॰ हक़ीक़त में (दरहक़ीक़त)**–वास्तव में, सचमुच **मु॰ हक़ीक़त खुलना (का पता लगना)**–असली बात का पता लगना।

हकीम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) आचार्य, विद्वान, वैद्य, चिकित्सक (यूनानी रीति का)।

हकीमी–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ हकीम+ई प्रत्य॰) हकीम का पेशा या काम, यूनानी चिकित्सा शास्त्र।

हक़ीयत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ वह वस्तु जिस पर अधिकार स्वत्व या हक़ हो, **हक्कियत** (दे॰)।

हक़ीर–गि॰ (अ॰) तुच्छ, नाचीज़, नगराय।

हकूमत*†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ हुकूमत) बादशाही, शासन।

हक्काक़–संज्ञा, पु॰ (दे॰) नग को काटने, सान पर चढ़ाने और जड़ने आदि का काम करने वाला, जड़िया।

हक्का-बक्का–वि॰ दे॰ (अनु॰ एक, धक) विकल, घबराया हुआ, विस्मित, अचंभित, भौचक। **मु॰ हक्का-बक्का (भूल जाना)** विस्मित या विकल हो जाना।

हक्कियत–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हक़।

हगना–क्रि॰ सं॰ दे॰ (सं॰ भग) झाड़ा या पाख़ाना फिरना, मल त्याग करना, झख़मार कर लेना। स॰ रूप–**हगाना,** प्रे॰ रूप–**हगवाना।**

हगनौटी–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हगने की भूमि, आड़े की जगह।

हचकना–क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ हचका) धक्का देकर किसी वस्तु को हिलाना। स रूप–**हचकाना,** प्रे॰ **हचकवाना।**

हचका–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ हचका) खाट, गाड़ी आदि के हिलने-डोलने का धक्का।

हचकाला, हचकोरा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ *हचका*) खाट, गाड़ी आदि के हिलने-डोलने का धक्का।

हचरमचर–संज्ञा, पु॰ (दे॰) हिलन डोलन, ढीलापन, विवाह, आगा-पीछा, सोच-विचार, अटकना।

हचहचाना–क्रि॰ अ॰ (दे॰) हिलाना, डोलना।

हज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुसलमानों का मक्के जाना और काबे के दर्शन करना, हज्ज (दे॰)।

हज़म–संज्ञा, पु॰ (अ॰) पेट में भोजन के पचने की क्रिया या भाव, पाचन। वि॰ पेट में पचा हुआ, अधर्म या अन्याय से अधिकार किया, अपनाया या लिया हुआ।

हज़रत–संज्ञा, पु॰ (अ॰) महापुरुष, महात्मा, महाशय, चालाक, छोटा या बुरा मनुष्य (व्यंग्य॰)।

हजामत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) बाल बनाने का काम, क्षौर, सिर और दाढ़ी के बढ़े हुये और कटाने या बनवाने योग्य बाल। **मु॰ हज़ामत बनाना**–दाढ़ी या सिर के बाल साफ़ करना या काटना, लूटना, धन छीन लेना, मारना-पीटना। **उलटे छुरे से हजामत बनाना (मूँड़ना)**– बुरी तरह किसी को लूटना या धनापहरण करना, मारना, पीटना।

हज़ार–वि॰ (फ़॰) सहस्र, दस सौ, अनेक, बहुत से। संज्ञा, पु॰ दस सौ की गिनती, या संख्या या अंक (1000)। क्रि॰ वि॰ कितना ही चाहे जितना अधिक, **हज़ार** (दे॰)।

हज़ारा–वि॰ (फ़ा॰) सहस्र दल वाला पुष्प, हज़ार या अधिक पंखड़ी वाला फूल। पु॰ फौवारा, फुहारा।

हज़ारी–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) एक हज़ार सिपाहियों का सरदार, वर्ण संकर, दोगला, हज़ारिया (दे॰)।

हज़ूर–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ हुज़ूर) किसी बढ़े पुरुष की संनिकटता, समक्षता, राजा या हाकिम का दरबार, कचहरी, बहुत

बड़े लोगों का संबोधन।

हज़ूरी–संज्ञा, पु. दे. (अ. हुज़ूर) नौकर, दास, दरबारी, मुसाहब, राजा का निकटवर्ती अनुचर। वि. हुज़ूर का, सरकारी।

हजो–संज्ञा, स्त्री. दे. (अ. हज्व) निंदा।

हज्ज–संज्ञा, पु. दे. (अ. हज) मक्के जा कर काबे के दर्शन करना।

हज्जाम–संज्ञा, पु. (अ.) नापित, नाई, नाऊ, हजामत बनाने वाला, नउवा (प्रा.)।

हटक, हरक*†–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हटकना)* वारण, वर्जन। **मु. हटक-मानना**–रोकने या मना करने पर किसी काम को न करना। गायों के हाँकने की क्रिया या भाव।

हटकन, हरकन–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हटकना)* वारण, वर्जन, गायों के हाँकने की क्रिया या भाव, चौपायों के हाँकने की छड़ी या लाठी।

हटकना, हरकना–क्रि. स. दे. *(हि. हट–दूर करना)* रोकना, निषेध या मना करना, चौपायों को किसी ओर जाने से रोक कर दूसरी ओर ले जाना। **मु. हटकि**–बलात्, अकारण।

हटतार†–संज्ञा, पु. दे. (हि. हरताल) हरताल, हड़ताल। संज्ञा, पु. दे. *(हि. हठतार)* माला का सूत्र।

हटना–क्रि. अ. दे. *(सं. घट्टन)* खिसकना, टलना, सरकना, पीछे सरकना, एक स्थान से दूसरे पर चला जाना, न रह जाना, भागना, जी चुराना, सम्मुख से दूर होना, या चला जाना, दूर होना, टलना, स्थिर या हट न रहना, (बात पर)। *†क्रि. स. दे. *(हि. हटकना)* **निषेध या मना करना**। स. रूप–**हटाना, हटावना, प्रे. रूप–हटवाना**।

हटवा–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाट)* दूकानदार, बनियाँ बाजार।

हटवाई*†–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हाट+वाई प्रत्य.)* सौदा ख़रीदना या बेचना, क्रय-विक्रय। संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. हटवाना) हटाई की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

हटवाना–क्रि. स. *(हि. हटाना)* हटाने का कार्य किसी दूसरे से कराना। वि. (दे.) हटवय्या।

हटवार*†–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाट+वारा या वाला प्रत्य.)* बाज़ार में सौदा बेचने वाला, दूकानदार।

हटाना–क्रि. स. दे. *(हि. हटना)* टालना, खिसकाना, सरकाना, दूर करना, नियत स्थान पर न रहने देना, एक स्थान से दूसरे पर करना, भगाना, जाने देना, आक्रमण से भगाना।

हटिया–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हट्ट)* बाज़ार, हाट।

हटौती–संज्ञा, स्त्री. *(हि. हटाना)* शरीर की गठन।

हट्ट–संज्ञा, पु. (सं.) बाज़ार, दूकान। यौ. चौहट्ट–चौक-बाज़ार।

हट्टा-कट्टा–वि. दे. यौ. *(सं. हट्ट +हाट्ट)* मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट। स्त्री. हट्टी-कट्टी।

हट्टी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हाट)* दुकान।

हठ–संज्ञा, पु. (सं.) ज़िद, आग्रह, टेक, किसी बात के लिये रुकना या अड़ना। वि. हठी, हठीला। **मु. हठ पकड़ना (करना)**–ज़िद करना। **हठ रखना**–जिसके लिये अड़ना उसे पूरा करना या लेना, ज़िद पूरी करना, जिसके हेतु किसी की हठ हो उसे वही देना। **हठ में पड़ना (आना)**–ज़िद करना। **हठ माँड़ना**–हठ ठानना, प्रण करना। अचल संकल्प, हठ प्रतिज्ञा, ज़बरदस्ती, बलात्कार।

हठधर्म–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सत्यासत्य का विचार छोड़ अपनी ही बात पर अड़ रहना, दुराग्रह, कट्टरपन। संज्ञा, स्त्री. हठधर्मता। संज्ञा, स्त्री. वि. हठधर्मी।

हट-धर्मी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हठ+ धर्म)* अपनी हो बात पर जमे या अटल रहना, सत्यासत्य, योग्यायोग्य या धर्माधर्म्मादि का कुछ विचार न करना, अपने ही मत या सम्प्रदाय की बात पर अड़ने की प्रवृत्ति, दुराग्रह, अड़जाना, अड़ा रहना, कट्टरपन।

हठना–क्रि. अ. दे. *(हि. हठ)* ज़िद या हठ करना या पकड़ना, दुराग्रह करना, हट प्रतिज्ञा या संकल्प करना। **मु. हठ कर**–ज़बरदस्ती, बलात्। **स. रूप**–हठाना, **प्रे. रूप**–हठवाना।

हठयोग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) नेती धौती कठिन आसन और मुद्रादि, जैसे कठिन साधनों से शरीर के साधने का योगसम्बन्धी एक विधान।

हठात्–प्रत्य. (सं.) इठयुक्त, हठपूर्वक, दुराग्रह के साथ, ज़बरदस्ती, बलात्, अवश्य।

हठाना–क्रि. स. (दे.) हठ करने में प्रवृत्त करना, **हठावना** (दे.)।

हठी–वि. *(सं. हठिन्)* ज़िद्दी, टेकी, हठ करने वाला।

हठीला–वि. दे. *(सं. हठ+ईला प्रत्या.)* हठी, ज़िद्दी, टेकी, दुराग्रही, हठ करने वाला, हठ प्रतिज्ञ, बात का पक्का या धनी, संग्राम में अटल, धीर। स्त्री. हठीली।

हठौना–क्रि. स. दे. *(हि. हठ)* हठावना, हठ कराना।

हड़–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हरीतकी)* हरड़, एक बड़ा वृक्ष जिसके फल औषधि के काम, आते हैं, हर, हर्र, हड़ जैसा एक गहना, लटकन।

हड़कंप–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. *हाड़+काँपना)* बड़ी हलचल, खलभल, तहलक़ा, **हलकंप** (दे.)। **मु. हड़कंप मचना (होना)**–हलचल होना।

हड़क, हुड़क–संज्ञा, स्त्री. (अनु.) पागल कुत्ते के काटने पर पानी के हेतु अति आकुलता, किसी पदार्थ के पाने की बड़ी धुन, गहरी अभिलाषा, उत्कट इच्छा, धुन, रट, झक।

हड़कना–क्रि. अ. (दे.) (हि. *हड़क)* तरसना, अति उत्कंठित होना, किसी वस्तु के न मिलने से अति दुखी होना, हुड़कना (आ.)।

हड़काना–क्रि. स. हलकाना, लहकारना, किसी वस्तु के न मिलने का दुख होना, तरसाना, किसी वस्तु के अभाव का दुख देना, कोई वस्तु के याचक को न देकर भगवाना या आक्रमण तक करने को पीछे लगाना।

हड़काया–वि. दे. *(हि. हड़क)* बावला, **हड़कायल,** पागल कुत्ता।

हड़गिल्ला, हड़गीला–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाड़+गिलनाए)* बगुले की जाति का एक पक्षी।

हड़जोड़, हरजोर–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाड़+जोड़ना)* एक प्रकार की औषधि-लता, कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल, हरताल–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हड्ड+ताला)* किसी बात से असंतोष सूचनार्थ, बाज़ार या अन्य कारबार बन्द कर देना। संज्ञा, स्त्री. (दे.) हरताल, पीले रंग की एक खनिज वस्तु।

हड़ना–क्रि. अ. दे. *(हि. धड़ा)* तौल में जाँचा जाना, किसी से बुरी तरह तंग होना।

हड़प–वि. (अनु.) पेट में डाला हुआ, निगला या लीला हुआ, छिपाया या ग़ायब किया हुआ।

हड़कना–क्रि. स. *(अनु. हड़प)* खा जाना, निगल या लील जाना, छीन या उड़ा लेना, अनुचित रीति से ले लेना।

हड़बड़–संज्ञा, स्त्री. (अनु.) हरबर, उतावली या जल्दबाज़ी-सूचक, गति-विधि।

हड़बड़ाना–क्रि. अ. (अनु.) उतावली, जल्दी या शीघ्रता करना, आतुर होना, **हरबराना** (दे.)। क्रि. स. (दे.) किसी को जल्दी करने को कहना।

हड़बड़िया–वि. *(हि. हड़बड़ी+इया प्रत्य.)* आतुर, हड़बड़ करने वाला, जल्दबाज़ उतावला, हरबरिया।

हड़बड़ी–संज्ञा, स्त्री. (अनु.) उतावली, जल्दी, जल्दी के मारे बबराहट अतुरता, **हरबरी।**

हड़हड़ाना–क्रि. स. (अनु.) उतावली करके या जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

हड़ावरि, हड़ावल–संज्ञा, स्त्री. दे. (हि. हाड़+अवलि सं.) हड्डियों की माला या समूह, हड्डियों का ढाँचा, ठठरी, कंकाल।

हड्डा–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हड चिका)* बर्र, भिड़ मधुमक्खी जैसा एक कीड़ा, बड़ी हड्डी।

हड्डी–संज्ञा स्त्री. दे. (*सं. अस्थि)* हाड़, अस्थि, जीवों के देह की मूल कड़ी वस्तु जिससे देह का ढाँचा वनता है। **मु. हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना**–बहुत मारना, पीटना। **हड्डियाँ निकल आना (रह जाना)**–शरीर का अति दुबला होना। **(किसी की) हड्डी चूसना**–सर्वस्व लेकर और छीनना। **पुरानी हड्डी**–पुराने मनुष्य का सुदृढ़ शरीर। कुटुम्ब, वंश, कुल, ख़ानदान।

हत–वि. (सं.) मारा या पीटा हुआ, वध किया हुआ, ताड़ित, आहत, खोया या गँवाया हुआ, विहीन, रहित, जिस पर या जिसमें ठोकर या धक्का लगा हो, नष्ट-भ्रष्ट किया या बिगड़ा हुआ, अस्त्र, पीड़ित, गुणित, गुणा किया हुआ (गणि.)।

हतक–संज्ञा, स्त्री. (अ.) बेइज़्ज़ती, निरादर, अप्रतिष्ठा, हेठी।

हतक-इज़्ज़ती–संज्ञा, स्त्री. यौ. *(अ. हतक+इज़्ज़त)* बेइज़्ज़ी, मान-हानि, अप्रतिष्ठा।

हतदैव–वि. (सं.) अभागा, कमबख़्त, भाग्यहीन, बदक़िस्मत, **हत-विधि।**

हतना–कि. स. दे. *(सं. हत+ना प्रत्य.)* मार डालना, वध करना, मारना-पीड़ना, न मानना, न पालना।

हतप्रभ–वि. यौ. *(सं. हत+प्रभा)* क़ांति या प्रभा हीन, निष्प्रभ।

हतबुद्धि–वि. यौ. (सं.) बुद्धि-रहित, हतधी, निर्बुद्धि, बेअक्ल, मूर्ख।

हतभाग–वि. यौ. (हि.) हतभाग्य, जिसका भाग हर लिया गया हो।

हतभा, हतभागी–वि. दे. *(सं. हत+भाग्य)* वद-क़िस्मत, कमबख़्त, अभागा, भाग्य-हीन, हतभाग्य। स्त्री. **हतभागिनि, हतभागिनी**।

हतभाग्य–वि. (सं.) भाग्यहीन, अभागा, वदक़िस्मत, हतभाग (दे.)।

हतवाना–क्रि. स. दे. (हि. हतना) मरवा डालना, मरवाना, वध कराना।

हता–क्रि. स. *(होनाप का भूत.)* था।

हताना–क्रि. स. दे. *(हि. हतना)* मारना, मार डालना, वधाना, वध कराना।

हताभा–वि. यौ. (सं.) हतप्रभ, निष्प्रभ।

हताश–वि. यौ. (सं.) निराश, ना उम्मेद।

हताहत–वि. यौ. (सं.) मारे गये और घायल।

हतोत्साह–वि. यौ. (सं.)जिसमें कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हत्थ–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाथ सं. हस्त)* हाथ।

हत्था–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाथ या हत्थ)* दस्ता, मूठ, अस्त्रादि का वह भाग जो हाथ में रहता है, बेंट, हथेरा, हाथा, केले के फलों की बौद, खेत की नालियों का पानी उलीचने का लकड़ी का बल्ला।

हस्थि–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हस्ती)* हाथी।

हत्थी–संज्ञा, स्त्री. *(हि. हाथ, हत्था)* औज़ार या हथियार की वेंटी, मूठ, दस्ता। पु. (दे.) हाथी।

हत्थे–क्रि. वि. *(सं. हस्त, हिव. हत्थ, हाथ)* हाथ में। **मु. हत्थे लगना या (अड़ना)**–प्राप्त होना, हाथ में आना, वंश होना। **हत्थे पर काटना**–प्राप्ति के समय वाधा डालना।

हत्या*†–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मार डालने की क्रिया, खून, वध। **मु. हत्या लगना**–किसी के मार डालने का पाप लगना, वध का दोष लगना। **झंझट, उपद्रव, बखेड़ा। हत्या चढ़ना (सवार होना)**–वध करने का प्रवृत्ति जगना।

हत्यार, हत्यारा–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हत्या+कार)* वध या हत्या करने वाला, वधिक, ख़ूनी, पापी--स्त्री. **हत्यारिन, हत्यारिनी**।

हत्यारी–संज्ञा, स्त्री. *(हि. हत्यारा)* प्राण लेने, वध या हत्या करने वाली, हत्या का पाप, वध करने का दोष, हत्यारे का काम, हत्या की प्रवृत्ति।

हथ–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाथ, सं. हस्त)* हाथ का संछिप्त रूप (समास में)।

हथकंडा–संज्ञा, पु. यौ. *(हि. हाथ+कांड सं.)* हस्त-कौशल, हस्तलाघव, हाथ की सफ़ाई, चालीकी का ढंग, गुप्तचाल।

हथकड़ी–संज्ञा, स्त्री. *(हि. हाथ+कड़ी)* क़ैदी या वंदी के हाथ में पहनाने का लोहे का कड़ा, **हतकड़ी** (दे.)। यौ. **हथकड़ी-बेड़ी**।

हथनाल–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. हाथी+नाल)* हाथी पर चलने वाली तोप, गज-नाल।

हथनी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हाथी+नी प्रत्य.)* हाथी की मादा, **हथिनी** (दे.)।

हथफूल–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. हाथ+फूल)* हथेली के पीछे पहनने का एक गहरना, हथसाँकर, हथमंकर (प्रान्ती.)।

हथफेर–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. हाथ+फेरना)* प्यार से किसी के देह पर हाथ फेरने का कार्य, दूसरे का धन सफाई से उड़ा लेना, थोड़े दिनों के हेतु लिया या दिया जाने वाला ऋण-धन, हथ-उधार। संज्ञा, स्त्री. यौ. (दे.) हथफेरी।

हथलेवा–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. हाथ+लेना)* विवाह में वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेना, परिणाग्रहण।

हथबाँस–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. हाथ+बाँस)* नाव चलाने का बाँस या पतवार, डाँढ आदि सामान।

हथबाँसना–क्रि. स. (दे.) हाथ में लेना,

हथवाल–संज्ञा, पु. दे. (हि. हाथी+बाला) महावत।

हथसाँकर–संज्ञा, पु. दे. यौ. (हि. हाथ+साँकर) हथफूल (भूषण)।

हथसार–संज्ञा, स्त्री. दे. यौ. *(सं. हस्ति शाला)* फ़ीज़-ख़ाना,

हाथी के रहने का घर या स्थान।

हथाहथी*†–अव्य. दे. *(हि. हाथ)* हाथों-हाथ, तुरंत, शीघ्र जल्दी।

हथिनी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हस्ती)* हाथी की मादर, हस्तिनी, हथनी (दे.)।

हथिया–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हस्त)* हस्त नक्षत्र, हाथी।

हथियाना–क्रि. स. दे. *(हि. हाथ+आना या गाना प्रत्य.)* अपने आधीन या वशीभूत करना, ले लेना, हाथ में करना, धोखे से ले लेना, उड़ा लेना, हाथ में पकड़ना, हाथ लगाना।

हथियार–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हथियाना)* औज़ार शस्त्रास्त्र, तलवार, भाला आदि, किसी कार्य का साधन, हथ्यार (दे.)। **मु. हथियार लेना (उठाना, गहना)**–मारने के लिये अस्त्र हाथ में लेना, लड़ने को तैयार होना। **हाथ में हथियार होना**–युद्ध का साधन-सामान होना, बल होना। **हथियार-बंद**–वि. दे. यौ. *(हि. हथियार+फ़ा. बंद)* सशस्त्रास्त्र, जो हथियार बाँधे हो।

हथेरी, हथेली–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हस्त तल)* करतल, कलाई से आगे हाथ का उँगलियों वाला भाग। **मु. हथेली में आना (होना)**–प्राप्त होना, मिलना, सुलभ होना, आधीन या वश में होना। **हथेली पर जाना (होना)**–जान जाने के भय की स्थिति होना। **हथेली पर जान लेना**–मरने से न डरना।

हथेव–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाथ)* हथौड़ा, हथौना।

हथौरी*†–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हथेली)* हथेली, **गदोरी** (प्रान्ती.)।

हथौटी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हाथ+ औती प्रत्य.)* हस्त-कौशल, किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव, किसी काम में हाथ लगाने का ढंग।

हथौड़ा–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हाथ+औड़ा प्रत्य.)* लोहे का वह औज़ार जिससे कारीगर लोग किसी धातु के टुकड़े को बढ़ाते या गढ़ते हैं, **मारतौल** (प्रान्ती.), कील, खूँटी आदि के गाड़ने का हथियार। स्त्री. अल्पा. हथौड़ी।

हथौड़ी–संज्ञा, स्त्री. *(हि. हथौड़ी)* छोटा हथौड़ा।

हथ्याना–क्रि. स. दे. *(हि. हथियाना)* छीन लेना हाथ में करना, हथियाना, ग़ायब करना।

हथ्यार*†–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हथियार)* हथियार, औज़ार अस्त्र शस्त्र।

हद–संज्ञा, स्त्री. (अ.) मर्यादा, सीमा, किसी वस्तु की लंबाई चौड़ाई, ऊँचाई आदि की अंतिम पहुँच, हद (दे.)। **मु. हद बाँधना**–सीमा नियत या निर्धारित करना। भूव.। किसी बात का नियत किया गया अंतिम परिणाम। **मु. हद से ज़्यादा**–बेहद, अत्यन्त, अत्यधिक। **हद या हिसाब नहीं**–अत्यंत, बहुत अधिक। **हद दर्जे का**–सब से अधिक, बहुत अधिक। किसी बात की उचित मर्यादा या सीमा।

हदीस–संज्ञा, (अ.) मुसलमानों का स्मृति जैसा धर्म-ग्रंथ जो मुहम्मद साहिब की बातों का संग्रह है।

हद्द–संज्ञा, स्त्री. (दे.) हद, सीमा।

हनन–संज्ञा, पु. (सं.) वध करना, मार डालना, आघात करना, मारना-पीटना, गुणा करना, (प्रान्ती.) वि. हननीय, हनित, हन्य।

हनना†*–क्रि. स.दे. *(सं. हनन)* आघात या वध करना, मार डालना, मारना-पीटना, प्रहार करना, ठोंकना, लकड़ी से ठोंक या पीअ कर बलाना।

हनवाना–क्रि. स. *(हि. हनना का प्रे. रूप)* हनने का काम किसी दूसरे से कराना। क्रि. अ. (दे.) अन्हाना, नहवाना, नहलाना, स्नान कराना, **अन्हवाना**।

हनाना–क्रि. अ. (दे.) स्नान करना, नहाना।

हनिवंत, हनुवंत–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हनुमत्)* हनुमान् महावीर।

हनुँवा, हनुवान–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हनुमत्)* हनुमान्, महावीर।

हनु–संज्ञा, स्त्री. (सं.)चिकुक, ठोढ़ी, ठुड्डी, जबड़ा, डाढ़ की हड्डी।

हनुमंत, हनुवंत–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हनुमत्)* हनुमान्, महावीर।

हनुमान्–वि. *(सं. हनुमत्)* बड़े जबड़े या दाढ़ वाला, ठुड्डी वाला, अति बड़ा या भारी शूरवीर। संज्ञा, पु. पवनात्मज, मारुति, पंपा के एक अति वीर बंदर जो सुग्रीव के मंत्री थे जिन्होंने राम की बड़ी सहायता और सेवा की (रामा.), महावीर।

हनुफाल–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हनु+ फाल हि.)* बारह मात्रायें और अंत में गुरु लघु वाला एक मात्रिक छंद (पिं.)।

हनुमान्–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हनुमत्)* हनुमान्, महावीर।

हनोज़–अव्य. (फ़ा.) अभी तक, अभी।

हप–संज्ञा, पु. (अनु.) जल्दी से किसी वस्तु को मुख में रखकर होंठ बंद करने का शब्द। **मु. हप कर जाना**–शीघ्र खा जाना।

हपहपाना–क्रि. अ. (दे.) हाँफना।

हफ्ता–संज्ञा, पु. (अ.) सप्ताह, (फ़ा.) हप्ता।

हबकना†–क्रि. अ. *(अनु. हप)* खाने या काटने को शीघ्र मुख खोलना। क्रि. स. (दे.) दाँत से काटना।

हबर-हबर–क्रि. वि. दे. *(अनु. हड़बड़)* उतावली या शीघ्रता, जल्दी-जल्दी, हड़बड़ी से, शीघ्रता के कारण उचित रीति से नहीं।

हबराना†*–क्रि. अ. दे. *(हि. हड़बड़ाना)* शीघ्रता या उतावली करना, हड़बड़ाना।

हबशी–संज्ञा, पु. (फ़ा.) हबश देश का अति काला कुरूप निवासी, **हबसी** (दे.)।

हबिला–वि. (दे.) बढ़दन्ता जिसके आगे के दाँत हों।

हबूब–संज्ञा, पु. दे. *(अ. हबाब)* पानी का बुलबुला, बुल्ला, झूठ बात।

हबेली–संज्ञा, स्त्री. पु. दे. *(अ. हबेली)* बड़ा महल, विशाल-फैला हुआ आवास।

हब्बा-ढब्बा–संज्ञा, पु. दे. (हि. *हाँक+ ढब्बा अनु.)* बच्चों की डब्बे की बीमारी जिसमें ज़ोर से साँस और पसली चलती है।

हब्स–संज्ञा, पु. (अ.) क़ैद।

हम–सर्व. दे. *(सं. अहम्)* उत्तम पुरुष एक वचन में सर्वनाम का बहुवचन रूप। संज्ञा, पु. अहंकार, घमंड, हम का भाव। अव्य. फ़ा. संग, साथ, तुल्य, समान, बराबर।

हमजोली–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(फ़ा. हम+ जोड़ी हि.)* संगी-साथी, मित्र, सखा, सहयोगी सम वयस्क।

हमता*–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हम+ ता प्रत्य.)* अहंकार, घमंड, अहंभाव, हमत्व।

हमदर्द–संज्ञा, पु. यौ. (फ़ा.) दुख में सहानुभूति रखने वाला।

हमदर्दी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) समवेदना, सहानूभूति।

हमरा†–सर्व. दे. *(हि. हमारा)* हमारा, हमरो (ब्र.)। स्त्री. हमारी।

हमराह–अव्य. (फ़ा.) कहीं जाने में किसी के संग या साथ में जाना, साथ, संग।

हमराही–संज्ञा, पु. वि. *(फ़ा.हमराह+ ई प्रत्य.)* साथी, संगी।

हमल–संज्ञा, पु. (सं.) गर्भ, स्त्री के पेट का बच्चा, स्त्री के पेट में बच्चे का होना।

हमला–संज्ञा, पु. (अ.) धावा, चढ़ाई, युद्ध-यात्रा, प्रहार, आक्रमण, युद्धार्थ चढ़ दौड़ना, विरोध में कही गई बात, मारने को झपटना, वार।

हमवार–वि. (फ़ा.) सपाट, समतल, बराबर सतह वाला, समधरातल।

हमसर–संज्ञा, पु. वि. (फ़ा.; सहश, समान, पक्ष, गुणादि में सम व्यक्ति, तुल्य। संज्ञा, स्त्री. (हि.) **हमसरी**।

हमसरी–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) समता, बराबरी, तुल्यता।

हमहमी–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हम, सं. अहम्)* स्वार्थपरता, अहंकार, अपने-अपने लाभ का उतावली से उपाय।

हमाम–संज्ञा, पु. दे. (**अ. हम्माम**) स्नानागार।

हमार-हमारा–सर्व. दे. *(हि. हम+ आर, आरा प्रत्य.)* हम का संबंध कारक में रूप, हमारो (ब्र.) हमरा (आ.)।

हमाल–संज्ञा, पु. दे. (**अ. हम्माल**) बोझा उठाने या वहन करने वाला, मज़दूर, कुली, रक्षक।

हमा-हमी–संज्ञा, स्त्री. दे *(हि. हम)* स्वार्थपरता, अहंकार, घमंड, निज स्वार्थ या लाभ को आतुर प्रयत्न।

हमीर–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हम्मीर)* एक मिश्रित राग (संगी.) रणथम्भौर के राजा हम्मीर देव (इति.)।

हमें–सर्व दे. (हि. हम) हम का कर्म और संप्रदान कारक में रूप, हमको, हमारे हेतु या लिये, हमहिं। (अव.), हमैं (दे.)।

हमेल–संज्ञा, स्त्री. दे. *(अ. हगायल)* चाँदी सोने के सिक्कों या मोहरों का हार जिसे गले में पहनते हैं, **हुमेल**।

हमेव*†–संज्ञा, पु. दे. *(सं. अहम्+ एवं)* हमी, अहंकार, घमंड, अहमेव, अहंमन्यता।

हमेशा–अव्य. (फ़.) संतत, सदा, सर्वदा, निरंतर, सदैव, सब दिन या सब काल, सतत, **हमेसा, हमेस** (दे.)।

हमेस-हमेसा*–अव्य. दे. *(फ़ा. हमेशा)* सदा, सर्वदा सदैव, सब दिन, सब काल।

हमैं*–अव्य. दे. (हि. हम) हमें, हमको, हमारे हेतु, हमहि (अव.)।

हम्माम–संज्ञा, पु. (अ.) उष्ण जल का स्नानागार, नहाने की

गर्म कोठरी।

हम्मीर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) रणाथंभौर के एक वीर चौहान राजा जो 1300 सं॰ में अलाउद्दीन के साथ लड़ कर मरे (इति॰)। **यौ॰ मु॰ हम्मीर-हठ**–हठ, आग्रह या हठ।

हयंद*–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(सं॰ हयेंद्र)* बड़ा और बढ़िया घोड़ा।

हय–संज्ञा, पु॰ (सं॰) इन्द्र अश्व, घोड़ा। 4 मात्राओं का एक छन्द (पिं॰)। 7 की मात्रा का सूचक शब्द (काव्य)। स्त्री॰ **हया, हयी**।

हयग्रीव–संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु के 24 अवतारों में से एक अवतार, कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रावस्था में वेद उठा ले जाने वाला एक राक्षस (पुरा॰)।

हयना*–क्रि॰ स॰ दे॰ *(सं॰ हत+ना प्रत्य॰)* मार डालना, वध या हिंसा करना, जीव मारना, मारना-पीटना, प्राण लेना, ठोंकना-बजाना, रहने न देना, नष्ट करना, मिटा देना।

हयनाल–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (**सं॰ हय+नाल हि॰**) घोड़ों से खींची जाने वाली तोप।

हयमेध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अश्वमेध यज्ञ।

हयशाला–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अस्वशाला, अस्तबल, घुड़सार, **हयसार** (दे॰)।

हया–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शर्म, लज्जा, यौ॰ **हया-शर्म**।

हयात–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) जीवन, आयु, ज़िंदगी। **आवे हयात**–अमृत।

हयादार–संज्ञा, पु॰ यौ *(अ॰ हया+दार फ़ा॰)* शर्मिन्दा, लज्जाशील, शर्मदार। संज्ञा, स्त्री॰ **हयादारी**।

हर–वि॰ (सं॰) लूटने, छीनने या हरने वाला, दूर करने या मिटाने वाला, विनाश या वध करने वाला वाहक, वहन करने या ले जाने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) शंकर जी, शिव जी। विभीषण का मंत्री एक राक्षस, *(भिन्न में)* वह संख्या जिससे भाग दिया जावे, *(विलो॰ अंश)*, भाजक (गणि॰), अग्नि, अग्नि, छप्पय छंद का 10 वाँ भेद, टगण का प्रथम भेद (पिं॰)। †संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ हल)* हल। वि॰ (फ़ा॰) प्रत्येक, एक-एक। **मु॰ हर एक (हरके)**–प्रत्येक, एक-एक। **हरख़ास ओ आम**–सर्व साधारण। **हर-रोज़**–प्रति दिन। **हरदम** (वक्त)–सदा, प्रत्येक समय। **हर दिल-अजीज**–सर्व-प्रिय।

हरउद–संज्ञा, पु॰ (दे॰) पहने की गीत।

हरएँ, हरुएँ–अव्य॰ दे॰ *(हि॰ हरुवा)* रसे-रसे, धीरे-धीरे।

हरकत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) चाल, गति, क्रिया, चेष्टा, छेड़-छाड़, हिलना-डोलना, नटखटी, दुष्टता। **मु॰ हरकत से बाज़ न आना**–नटखटी या दुष्टता न छोड़ना।

हरकना*†–क्रि॰ स॰ दे॰ (**हि॰ हटकना**) हटकना, रोकना, मना करना।

हरकारा, हरकाला–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) चिट्ठीरसाँ, डाकिया, दूत।

हरख*‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ हर्ष)* हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।

हरखना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(सं॰ हर्ष हि॰ हरख)* प्रसन्न होना, हर्षित या मुदित होना, हरषना (दे॰)।

हरखाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(हि॰ हरखना)* हरखना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, प्रमुदित होना। स॰ क्रि॰ (दे॰) मुदित या प्रसन्न करना, आनंदित या हर्षित करना।

हरखित–वि॰ (दे॰) हर्षित, मुदित, प्रसन्न।

हरगिज़–अव्य॰ (फ़ा॰) किसी दशा में भी, कभी, कदापि।

हरचंद–अव्य॰ (फ़ा॰) यद्यपि, अगरचे, कितना ही, बहुत या बहुत वार, हर तरह से। संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) शिव-शीश पर की चन्द्रकला, राजा हरिचंद, हरिश्चंद्र।

हरचंदन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) श्वेत चंदन, मलयाचल-चन्दन।

हरज–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(अ॰ हर्ज)* हर्ज, क्षति, (दे॰), हानि, नुक़सान, अड़चन, वाधा, अड़चन।

हरजा–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ *हर्ज*) हर्जा (दे॰), हानि, क्षति, नुक़सान बाधा, अड़चन।

हरजाई–(सं॰) पु॰ *(फ़ा॰) हर जगह* रहने या घूमने वाला, आवारा, वहल्ला (प्रान्ती॰)। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(फ़ा॰ हर जामा-सं॰)* कुलटा, स्वैरिणी, व्यभिचारिणी स्त्री।

हरजाना–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) क्षति-पूर्ति, नुक़सान या हानि का बदला।

हरट्ट, हरिस्ट–वि॰ दे॰ *(सं॰ हट)* हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा, मज़बूत, दृढ़, **हिरिस्ट**।

हरण–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लूटना या छीनना, हटाना, चुराना, मिटाना, नाश या दूर करना, संहार करना, विनाश, वहन, ले जाना, भाग देना, बाँटना, घटाना, **हरन** (दे॰)।

वि. **हरणीय**।

हरता–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हर्तृ)* हर्त्ता, नाशक, लूटने या छीन लेने वाला, हरने वाला, चुराने वाला।

हरतार-हरताल–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं.) हरिताल पीले रंग का एक खनिज पदार्थ। **मु.–किसी बात पर हरताल लगाना (फेरना)**–रद या नष्ट करना, मिटा देना।

हरद-हरदी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हरिद्रा)* हरिद्रा, हलदी, **हर्दी** (दे.)।

हरदौर-हरदौल–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हरदत्त)* ओरछा के राजा जुझारसिंह *(सन् 1626–35 ई.)* के भ्रातृ भक्त अनुज, जिन्हें हरदियादेव या हरदेव भी कहते हैं।

हरद्वार–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हरिद्वार)* एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ गंगा जी पर्वतों से भूमि पर उतरती हैं, हरिद्वार।

हरना–क्रि. स. दे. *(सं. हरण)* हरण करना, लूटना, छीनना, चुरा लेना, हटाना, उड़ा ले जाना, दूर करना, नाश करना या मिटाना, बटाना, भाग देना। **मु. चित्त या मन (हिय-हृदय) हरना**–मन लुभाना, चिन्ताकर्षित करना, खींचना। **प्राण हरना**–मार डालना, बहुत दुख देना। क्रि. अ. दे. (हि. हरिना) हारना। *†संज्ञा, पु. दे. *(सं. हरिण)* हरिण, हरिना, हिरना (दे.)।

हरनाकुस, हरिनाकुस*‡–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हिरण्यकशिपु)* दैतय-राज, हिरण्यकशिपु, प्रहलाद का पिता।

हरनाच्छ-हरिनाच्छ*–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हिरण्याक्ष)* हिरण्याक्ष नामक दैत्य, हिरण्यकशिपु का छोटा भाई।

हरनी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हिरन)* मृगी, छिगारी, हिरन की मादा, **हरिनी, हिरनी**।

हरनौटा–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हिरन)* हिरन का बच्चा, **हिरनौटा, हरिनौटा**।

हरफ़–संज्ञा, पु. (अ.) वर्ण, अक्षर, हर्फ़, हरूफ (दे.)। **मु. किसी पर हरफ़ आना**–दोष या अपराध लगना, कलंक लगना। **हरफ़ उठाना**–वर्ण या अक्षर पहिचान कर पढ़ लेना।

हरफा-रेवड़ी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हरि-पर्वरी)* कमरख की जाति का एक पेड़ और उसके फल।

हरबर–क्रि. वि. दे. *(सं. शीघ्र, हि. हड़बड़)* हड़बड़, शीघ्रता, शीघ्र, घबराहट के साथ। संज्ञा, स्त्री. (दे.) **हरबरी**–शीघ्रता, आतुरता।

हरबराना*†–क्रि. अ. दे. *(हि. हड़बड़ाना)* हड़बड़ाना, शीघ्रता करना, शीघ्रता के कारण घबरा जाना।

हरबा–संज्ञा, पु. दे. *(अ. हरबः)* औज़ार, अस्त्र, हथियार।

हरबोंग–वि. दे. यौ. *(हि. हल+बोंग)* लट्ठमार, गँवार, देहाती, अक्खड़, मूर्ख, जड़। संज्ञा, पु. अत्याचार, अंधेर, उपद्रव, कुशासन।

हरम–संज्ञा, पु. (अ.) जनानख़ाना, अंतःपुर। संज्ञा, स्त्री. रखेली स्त्री, मुताही, दासी, पत्नी। यौ. **हरमसरा**–अंतःपुर, जनानख़ाना।

हरमज़दगी, हरामज़दगी–संज्ञा, स्त्री. *(फ़ा. हरामज़ादः)* नटखटी, बदमाशी, शठता, दुष्टता, शरारत। वि. **हरामज़ादा**।

हरये–अव्य. दे. *(हि. हरुवा)* धीरे-धीरे, रसे-रसे, हौले-हौले, हरएँ, हरवई

हरवल–संज्ञा, पु. दे. *(तु. हरावल)* सेना का अग्रभाग, वे सिपाही जो सेना में सब से आगे रहते हैं।

हरवली–संज्ञा, स्त्री. *(तु. हरावल)* फ़ौज की अफ़सरी या सरदारी, सेना की अध्यक्षता।

हरवा–संज्ञा, पु. दे. (सं. हार) माला, हार। वि. हरुवा, हलका।

हरवाना–क्रि. अ. दे. (हि. हड़बड़) शीघ्रता, या जल्दी करना, उतावली या आतुरता करना। क्रि. स. दे. (हि. *हारना)* हारना का प्रे. रूप।

हरवाह-हरवाहा–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हलबाह)* हल चलाने या जोतने वाला। स्त्री. **हरवाहिन**। संज्ञा, स्त्री. **हरवाही**।

हरष–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हर्ष)* आनंद, प्रमोद खुशी, सुख मोद, प्रसन्नता, हरख (दे.)। संज्ञा, पु. (दे.) **हरषन, हर्षण** (सं.)।

हरषना–क्रि. अ. दे. *(सं. हर्ष+ना प्रत्य.)* प्रसन्न या हर्षित होना, मुदित होना, आनंदित होना, हरखना (दे.)।

हरषना–क्रि. अ. दे. *(हि. हरष+आना प्रत्य.)* प्रसन्न या हर्षित होना, खुश होना, **हरखाना** (दे.) क्रि. स. हर्षित या प्रसन्न करना।

हरषित–वि. दे. (**सं. हर्षित**) हर्षित, प्रसन्न, मुदित।

हरसना–क्रि. अ. दे. *(हि. हरषाना)* प्रसन्न या हर्षित होना, मुदित होना। स. रूप–**हरसाना;हरसावना**।

हरसिंगार–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(सं. हार+सिंगार)* परजाता

(प्रान्ती.), नारंगी रंग की डाँड़ी और 5 पंखड़ियों वाले एक सुन्दर फूल का पेड़। संज्ञा, पु. यौ. दे. (सं. हर शृंगार) सूर्य, चंद्रमा।

हरहा–संज्ञा, पु. (दे.) चौपाया, जानवर।

हरदाई–वि. स्त्री. दे. *(हि. हार)* जंगली, नटखट दुष्ट, बनैली गाय।

हर-हार–संज्ञा, पु. यौ. (स.) शिव जी की माला, साँप, सर्प, शेषनाग।

हरा–वि. दे. *(सं. हरति)* हरित, घास वा पत्ती के रंग का, सब्ज, ताज़ा, प्रसन्न अम्लान, अमूर्च्छित, प्रफुल्ल, वह घाव जो सूखा या भरा न हो, कच्चा दाना या फल। स्त्री. **हरी**। **मु. हरा बाग (हरा गुलाब) दिखाना**–व्यर्थ आशा देने या बाँधने वाली बात करना। यौ. **हराभरा**–तरताज़ा, हरा, हरे पेड़-पत्तों से भरा। संज्ञा, पु. हरित वर्ण हरीतिमा, पत्ती या घास जैसा रंग। *‡संज्ञा, पु. दे. (हि. हार) माला, हार। संज्ञा, स्त्री. (सं.) हर की स्त्री, पार्वती।

हराई–संज्ञा, स्त्री. *(हि. हारना)* हार, हारने की क्रिया या भाव, खेत का वह भाग जो एक बार में जोता जाता है, हल में चलाना।

हराना–क्रि. स. दे. *(हि. हारना)* रण में शत्रु या प्रतिद्वंद्वी को पीछे हटाना, पराजित या परास्त करना, बैरी को विफल मनोरथ या शिथिल-प्रयत्न करना, थकाना। प्रे. रूप. **हरवाना, हरावना**।

हरापन–संज्ञा, पु. *(हि. हरा पन प्रत्य.)* सब्ज़ी. हरितता, हरे होने का भाव, हरीतिमा।

हराम–वि. (अ.) अनुपयुक्त, निषिद्ध, अनुचित, विधि-विरुद्ध दूषित, बुरा। संज्ञा, पु. वह बात या कर्म जिसका धर्म-शास्त्र में निषेध हो, सुअर (मुस.) **मु. कोई बात (काम) हराम करना**–किसी कार्य का करना कठिन कर देना। **कोई काम या बात हराम होना**–किसी कार्य का कठिन होना। पाप, अधर्म, बेईमानी। **मु. हराम का**–अनुचित रूप या अन्याय से प्राप्त, मुफ़्त का, सेंत का, स्त्री. पुरुष का अनुचित सम्बन्ध से उत्पन्न बच्चा। व्यभिचार, स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।

हरामख़ोर–संज्ञा पु. यौ. *(अ.+फ़ा.)* पाप की कमाई खाने वाला, सेंत का खाने वाला, मुफ़्तखोर, निकम्मा, आलसी, सुस्त। संज्ञा, स्त्री. हरामख़ोरी।

हरामज़ादा–संज्ञा, पु. यौ. *(अ. हराम+फ़ा. ज़ाद:)* वर्णसंकर, दोगला, पाजी, दुष्ट, बदमाश (गाली)। स्त्री. हरामज़ादी।

हरामी–वि. दे. *(अ. हराम+ई प्रत्य.)* व्यभिचार से पैदा, पाजी, दुष्ट, पापी, (गाली)। संज्ञा, पु. हरामीपन।

हरारत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) ताप, उष्णता, गरमी, ज्वरांश, हलका ज्वर।

हरावरि*–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हड़ावरि)* अस्थि समूह, हाड़ों का पंजर। संज्ञा, पु. *(तु. हरावल)* सेना का अग्र भाग।

हरावल–संज्ञा, पु. (तु.) सेना का अग्र भाग, वे सैनिक जो सेना में सब से आगे रहते हैं, हरौल (दे.)।

हरास–संज्ञा, पु. दे. *(फ़ा. हिरास)* आशंका, भय, शंका, डर, खटका शोक, दुख, नैराश्य। संज्ञा पु. दे. (सं. हास) ह्रास, घटती, कमी।

हराहर*–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हलाहल)* विष, ज़हर, माहुर, मगरज।

हरि–वि. (सं.) पीला, बादा या भूरा. हरित्, हरा। संज्ञा, पु. विष्णु, विष्णु, इन्द्र, बंदर, घोड़ा, सिंह, चन्द्रमा सूर्य, दादूर, मेंढक, साँप, मोर, पानी, अग्नि वायु, श्री कृष्ण, शिव, राम, एक वर्ष, एक पहाड़, एक भूखंड, 18 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं.)। अव्य. दे. (हि. हरुए) धीरे, आहिस्ता।

हरिअर-हरियर‡*–वि. दे. *(सं. हरित)* हरित, हरा।

हरिअरी*†–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हरिआली)* हरियली, हरियाली, हरेरी (आ.) सब्ज़ी, **हरियरी, हरिआरी** (दे.)।

हरिआली, हरियाली, हरियारी- संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. हरित आलि) हरियाई (दे.), हरेपन का फैलाव या विस्तार, घास और पेड़ पौधों का विस्तृत समूह, **हरिआरी**।

हरिकथा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) परमेश्वर या उनके अवतारों का चरित्र-चित्रण।

हरि-कीर्त्तन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) ईश्वर या उनके अवतारों का यशोगान, हरि-स्तवन।

हरि-कुमार–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) शिव-सुत इन्द्र-पुत्र, पवन-कुमार, सूर्य-सुत, कृष्ण या राम के पुत्र।

हरिगीतिका–संज्ञा स्त्री. यौ. (सं.) 5, 12, 16, 26 वीं मात्रा लघु, और अंत में लघु-गुरु के साथ 28 मात्राओं का

एक मात्रिक छंद, 7-7 मात्राओं या 14, 14 या 16, 12 मात्राओं पर विराम के साथ 28 मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं.)। "हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका।" इस उच्चारण से छन्द पूर्ण होता है।

हरिचंद्र–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हरिश्चन्द्र)* महाबली राजा हरिश्चन्द्र; हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि और नाटकार।

हरिचंदन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.)एक तरह का चंदन।

हरिजन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) परमेश्वर का दास पा भक्त। शुद्र या नीच जाति का व्यक्ति (आयु.)।

हरिजान–संज्ञा पु. दे. यौ. *(सं. हरि+यान)* भगवान की सवारी, गरुड़।

हरिण–संज्ञा, पु. (सं.) हंस, सूर्य, हिरन, मृग, छिगार, हरिन, **हरिना, हरिन, हिरना** (दे.)। स्त्री. **हरिणी**।

हरिणप्लुता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक वर्णिक अर्धसम छंद जिसके विषम पदों में तीन सगण, दो भगण और एक रगण हो (पिं.)।

हरिणाक्षी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) हिरन के से सुन्दर नेत्रों या आँखों वाली, सुन्दरी स्त्री, मृगनयनी, मृगलोचनी।

हरिणा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिरनी, मृगी, स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद जिसे चित्रिणी भी कहते हैं (काम.), 17 वर्णों का एक वर्णिक छंद, दस वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं.)।

हरित्–वि. (सं.) भूरे या बादामी रंग का, हरा, कपिश, सब्ज़। सूर्यका घोड़ा हरिदश्व, भकत, पन्ना, सूर्य, सिंह।

हरित–वि. (सं.) हरा, पीला, सब्ज़, बादामी या भूरे रंग का।

हरित मणि–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पन्ना, मरकत मणि।

हरिताल–संज्ञा, पु. (सं.) हरताल, एक खनिज पदार्थ जो पीला होता है।

हरितालिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भादों सुदी तीज या तृतीया (स्त्रियों का एक व्रत)।

हरिद्रा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हलदी, जगल, वन, मंगल, सीसाधातु (अनंकार्थ.)।

हरिद्राग–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह पूर्व राग जो पक्का या स्थायी न हो (सा.)।

हरिद्वार–संज्ञा, पु. (सं.) एक विख्यात तीर्थ जहाँ से गंगा से नहर निकाली गयी है, और गंगा पहाड़ों से समतल भूमि पर उतरी है। यौ. (सं.) ईश्वर का द्वार।।

हरिधाम–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वैकुंठ, हरिपुर।

हरिन–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हरिण)* मृग, छिगार, हिरन, **हरिण**। स्त्री. **हरिनी**।

हरिनग*–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) साँप का मणि।

हरिनाकुस*‡–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हिरणय-कशिपु)* प्रह्लाद का पिता, हिरण्यकशिपु।

हरिनाक्ष–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हिरणयाक्ष)* हिरण्याक्ष, प्रहलाद का चाचा, **हरिनाच्छ, हरिनाछ** (दे.)।

हरिनाथ–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हनुमान जी, सर्पराज, उच्चैश्रवा, हरि-नायक।

हरिनाम–संज्ञा, पु. यौ. *(सं. हरिनामन्)* भगवान का नाम।

हरिनायक–संज्ञा, पु. यौ (सं.) मारुति, शेष, उच्चैश्रवा।

हरिनी–संज्ञा, स्त्री. (हि. *हरिन*) मृगी हरिणी, हिरनी (दे.), हरिन की मादा।

हरिपद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बैकुण्ठ, विष्णु-लोक, भगवान के चरण, एक मात्रिक छन्द जिसके विषम चरणों में 16 और सम में 11 मात्राएँ होती हैं और अंग में गुरु-लघु होना आवश्यक है (पिं.)।

हरिपति–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सपेश, अश्वपति।

हरिपुर–संज्ञा, पु. (सं.) बैकुंठ।

हरिपुत्र हरिपूत (दे.)–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) सूर्य-सुत, इन्द्र-सुत, शिव सुत, कृष्ण या राम के पुत्र।

हरि-पैंडी–संज्ञा, स्त्री. (दे.) विष्णु-घाट।

हरिप्रिया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) लक्ष्मी, तुलसी, लाल चन्दन, 46 मात्राओं और अंत में गुरु वर्ण वाला एक मात्रिक छन्द, चंचरी छन्द (पिं.)।

हरिप्रीता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक शुभ मुहूर्त्त (ज्यो.) हरि प्रिया।

हरि-भक्त–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कृष्णा-नुरागी, भगवान का प्रेमी, भगवान की भजन-उपासना करने वाला, हरिभगत (दे)।

हरि-भक्ति–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) हरि-प्रीति, भगवान का प्रेम, हरिभगति (दे.)।

हरियर, हरियारा‡–वि. दे. *(हि. हरा सं. हरित)* हरा।

हरियरी–संज्ञा, स्त्री. (दे.)। हरापन, हरियाली, हरेरी।

हरियल–संज्ञा, पु. (दे.) हरा कबूतर।

हरियाई†*–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हरियाली)* हरियाली, हरे रंग का फैलाव, हरे-हरे पेड़-पौधों का बिस्तार या समूह।

हरियाना–क्रि. स. दे. *(हि. हरा)* फिर हरा होना, पनवना ताज़ा या बचा होना। संज्ञा, पु. (1) भारत का एक प्रान्त।

हरियारी–(सं.) स्त्री. हरियाली। यौ. (हि.)।

हरियाली-तीज, हरियारी-तीज–संज्ञा, स्त्री. (हि.) सावन कृष्ण पक्षीय तृतीय या तीज, **हरेरी तीजा** (ग्रा.)।

हरि-रस, हरि-राग–संज्ञा, पु. यो. (सं.) ईश्वर-प्रेम, कृष्णानुराग।

हरिलीला–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) भगवान का चरित्र, 14 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पि.)।

हरिलोक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) स्वर्ग, बैकुंठ, विष्णु-लोक।

हरिवंश–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) कृष्ण जी का कुटुम्ब, कृष्ण कुल, एक पुराण जिसमें श्रीकृष्ण जी और उनके कुटुम्व का वृत्तांत है। यौ. हरिवंश पुराणा। वि हरिवंशी।

हरि-वास–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पीपल वृक्ष, जिसमें शिव का वास हो।

हरि-वासर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) रविवार, सोमवार, एकादशी, विष्णु का दिन, जन्माष्टी रामनवमी, वावन द्वादशी, नृसिंह चतुर्दशी।

हरि-वाहन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) गरुड़।

हरिशयनी–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) आषाढ़ सुदी एकादशी, जब देव सोते हैं।

हरिश्चंद्र–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य-वंश के अट्ठाईसवें राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे, ये बड़े सत्यवादी और दाना थे, **हरिचन्द्र** हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, भारतेन्दु।

हरिस–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हलीषा)* ईषा, हल की सबसे बड़ी वह लकड़ी जिसके एक छोर पर फाल वाली लकड़ी और दूसरे पर जुआ रहता है।

हरिहर-क्षेत्र–संज्ञा, पु. (सं.) एक तीर्थ (बिहार), जहाँ कार्तिक की पूर्णमासी को बड़ा भारी मेला होता है, **हरिहरछेत्र** (दे.)।

हरिहाई*–वि. स्त्री. दे. *(हि. हरहाई)* दुष्ट गाय, हरहाई।

हरी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) 14 वर्णो का एक वर्णिक छंद, अनन्द (पिं.)। वि. स्त्री. (हि.) हरा का स्त्रीलिङ्ग। संज्ञा, पु. दे. (सं. *हरि*) हरि भगवान कृष्ण।

हरीतकी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हर, हड़, हरड़, हरें।

हरीफ़–संज्ञा, पु. (सं.) शत्रु, वैरी, (दे.) चंट, चालाक। **संज्ञा,** स्त्री. हरीफ़ी।

हरीरा–संज्ञा, पु. दे. *(अ. हरारः)* मसाला और मेवा आदि को दूध में औटाने से बना एक पेय पदार्थ, हरेरा (दे.)। *†वि. दे. *(हि. हरिश्रि)* हरेश, हरा, सब्ज़, प्रसन्न, हर्षित, प्रफुल्ल। स्त्री **हरीरी**।

हरीस–संज्ञा, स्त्री. दे (हरिस) हरिस, हल की सबसे बड़ी लकड़ी। संज्ञा, पु. (दे.) हरीश, वानरेश, उच्चैश्रवा, शेष।

हरुअ-हरुआ*†–वि. *(सं. लघुक)* थोड़ा, हलका, हलका, हरुय (दे.)। विलो. गरु. गरुआ, गरुअ।

हरुआ†*–वि. दे. *(सं. लघुक)* हलका।

हरुआई-हरुवाई†–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हरुआ)* फुरती, हलकापन।

हरुआना-हरुवाना†–क्रि. अ. दे. *(हि. हरुआ)* लघु या हलका होना, फुरती होना।

हरुए†*–क्रि. वि. दे. *(हि. हरुआ)* हौले हौले, धीरे-धीरे, रसे-रसे (ग्रा.), चुपचाप, बिना आहट के। वि. हलके, लघु।

हरु–वि. (हि. हरुआ) हलका।

हरुफ़–संज्ञा, पु. *(अ. हरफ़ का बहुबचन)* अक्षर समूह, वर्णमाला, अक्षर, वर्ण।

हरे, हरैं, हरै–क्रि. वि. दे. *(हि. हरुए)* मन्द-मन्द, धीरे-धीरे या रसे-रसे, धीमा, कोमल (शब्द), नर्म, हलका (स्पर्शाधाता) (दे.)। संज्ञा, पु. *(सं. हरि का सं बो.)* हे भगवान्।

हरेव–संज्ञा, पु. (दे.) मंगोल जाति, मंगोलों का देश, मंगोलिया। यौ. हर जैसा।

हरेवा–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हरा)* हरी बुलबुल, हरे रंग का एक छोटा पक्षी।

हरे, हरैं–क्रि. वि. (दे.) (हि. हरुण) धीरे, रसे रसे, हरे।

हरे, हरैं–क्रि. वि. (दे.) धीरे-धीरे।

हरैया†*–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हरना)* हरने वाला या दूर करने वाला, मिटाने वाला, चोर, हारने वाला।

हरौल–संज्ञा, पु. दे. *(अ. हरावल)* सेनाग्र भाग, सेनाग्रगामी, सैनिकों का समूह, हरावल।

हर्कत–संज्ञा, स्त्री. (दे.) हरक़त (फ़ा.)।

हर्गिज़–क्रि. वि. (दे.) हरगिज, कदापि नहीं, कभी।

हर्ज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) बाधा, हानि, अड़चन, रुकावट, **हरज, हरजा, हर्जा** (दे॰)। संज्ञा, पु॰ **हर्जाना**–क्षति-पूर्ति।

हर्त्ता–संज्ञा, पु॰ (सं॰ हर्तृ) हरण या नाश करने वाला, चुराने वाला, हरता (दे॰)। स्त्री॰ हर्त्री।

हर्त्तार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हर्त्ता, हरतार (दे॰)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) हरतार, हरताल।

हर्फ़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) अक्षर, वर्ण हरफ़, हरूफ़ (दे॰)। मु॰ हर्फ़ आना–क्षति होना, हानि पहुँचना।

हर्म्म–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ हरम) बड़ा भारी महल, प्रासाद, हर्म्य (सं॰) हरम।

हर्र–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हरीतकी (सं॰), हड़, हरढ़।

हर्रइया–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) स्त्रियों के हाथ का एक गहना।

हर्रा–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ हरीतकी)* बड़ी जाति की हड़। लो॰–**हर्रा लगै न फिटकरी रँग चोखा आवै।**

हर्रे–संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ हड़) हड़। व॰ व॰ हर्रैं।

हर्ष–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुफल्लता, प्रसन्नता, आनन्द, हर्षादि से रोमांच होना, खुशी, **हरष, हख** (दे॰)।

हर्षणा–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रफुल्लित करना या होना, हर्षादि से रोमांच होना, मदन के पाँच वाणों में से एक बाण, एक योग (ज्यो॰), हरपन (दे॰)। वि॰ हर्षणीय।

हर्षना–क्रि॰ अ॰ *(सं॰ हर्षण)* प्रसन्न होना, हरवना, हरखना। स॰ रूप–हर्षाना, हर्षावना।

हर्षवर्द्धन–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वैस क्षत्रिय वंशीय एक बौद्ध धर्मानुयायी भारत-सम्राट् जिसकी सभा में बाण कवि रहते थे (इति॰)।

हर्षाना*–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(सं॰ हर्ष)* मुदित होना, प्रसन्न या आनन्दित होना, प्रफुल्लित या हर्षित होना। क्रि॰ स॰ प्रसन्न या हर्षित करना, हर्षावना।

हर्षित–वि॰ (सं॰) प्रसन्न, आनन्दित, हरषित (दे॰)।

हर्षोत्फुल्ल–वि॰ यौ (सं॰) हर्ष से प्रफुल्लित, प्रमुदित।

हल्–संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वर-रहित शुद्ध व्यंजन वर्ण।

हलंत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह शब्द जिसके अंत में हल् वर्ण हो, हल्।

हल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सीर, भूमि जीतने का यंत्र हर (दे॰) **मु॰ हल जोतना (चलाना)**–खेती करना, हल चलाना। एक अस्त्र (बलराम)। संज्ञा, पु॰ (अ॰) गणित करना, हिसाब लगाना, किसी समस्या का उत्तर निकालना, मिश्रण, मिलाना। मु॰ **हल होना (करना)**–मिलना, मिलाना।

हलकंप–संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ *(हि॰ हलना, हिलना–कंप =काँपना)* हलचल, हड़कंप, सर्वत्र फैली हुई घबराहट। मु॰ **हलकंप मचना** (मचाना)।

हलक़–संज्ञा, पु॰ (अ॰) गले की नली, गला, कंठ। मु॰ हलक़ के नीचे उतरना–पेट सें जाना, *(बात का)* मन में बैठना।

हलकई†–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ हलका ई+प्रत्य॰) हलकापन, तुच्छता, ओछापन, अप्रतिष्ठा, हेठी, हलुकई (दे॰)।

हलकना†*–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(सं॰ हल्लन)* पानी आदि द्रव पदार्थों का हिलना-डोलना या शब्द करना, लहराना, हिलोरें लेना, हिलना, दीपक की लौ का झिलमिलाना, लहकना (आ॰)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) हलका। स्त्री॰ हलकनि।

हलका–वि॰ (लघुक) तौल में जी भारी न हो, जो गहरा या गाढ़ा न हो, जो चटकीला न हो, पतला, उथला, जो उपजाऊ न हो, हरुआ, थोड़ा कम, मंद जो ज़ोर का ऊँचा न हो (शब्द), आसान, सुख-साध्य, निश्चिंत, ताज़ा, पतला, घटिया, महीन, छूँछा, रिक्त, ख़ाली, तुच्छ, नीच, ओछा, टुच्चा। स्त्री॰हलकी **मु॰ हलका करना**–तुच्छ ठहराना, अपमानित करना।

हलके-हलके–धीरे धीरे। †संज्ञा, पु॰ दे॰ *(अनु॰ हलहल)* लहर, तरंग।

हलक़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मंडल, गोला, वृत्त, परिधि, गोलाई, घेरा, मंडल्ली, दल-वृन्द, झुंड, हाथियों का झुंड, किसी कार्यर्थ निर्धारित कई गाँवों या नगरों का समूह।

हलकाई†–संज्ञा, स्त्री॰ *(हि॰ हलका)* हलकापन, हलुकई, हलुकाई।

हलकान‡–वि॰ दे॰ *(अ॰ हैरान)* हैरान, परेशान, तंग, हलाकान।

हलकाना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(हि॰ हलका+ना प्रत्य॰)* हलका होना, बोझा कम होना। क्रि॰ स॰ *(हि॰ हिलकना)* लहराना, हिलोरें देना। क्रि॰ स॰ *(हि॰ हिलगना)* हिलगना, उलझना, लुटकना।,

हलकापन–संज्ञा, पु॰ *(हि॰ हलका+पन प्रत्य॰)* लघुता, नीचता, तुच्छता, ओछापन, हेठी, अप्रतिष्ठा, हलका होने का भाव।

हलकोरना, हरकारा‡–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(फ़ा॰ हरकारा:)* पत्रवाहक, हरकारा, चिट्ठीरसाँ, दूत।

हलकोराना–क्रि॰ स॰ *(हि॰ हलकोरा)* समेटना, बटोरना, हलोरना, हिलाना, लहराना, हलकाना।

हलकोरा†–संज्ञा, पु॰ (अनु॰) लहर, तरंग, झोंका।

हकोवा–संज्ञा, पु॰ (आ॰) कंपन, लहर।

हलचल–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ *(हि॰ हलना+चलना)* जनता में फैली अधीरता, घबराहट, शोरगुल, खलबली, धूम, कंपायमान, विचलन, दंगा, उपद्रव। **मु॰ हलचल मचना (मचाना)**–हुललड़ होना (करना), शोर-गुल होना (करना)। वि॰ हिलता या डगमगाता हुआ कंपायमान, कंपित।

हलद–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ हरिद्रा)* हलदी।

हलद-हात, हलद-हाथ–संज्ञा, स्त्री॰ दे यौ॰ *(हि॰ हलद+हाथ)* व्याह में हलदी के साथ पीले करने की रीति, हरदहाथ (दे॰)।

हलदिया–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार का विष, एक रोग जिसे पीलिया (पांदु) कहते हैं। जिसमें शरीर पीला हो जाता है।

हलदियाइँध, हरदियाइँध–संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हलदी की गंध।

हलदी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ हरिद्रा)* एक पौधा जिसकी गँठीली जड़ मसाले, रँगाई या औषधि के काम में आती है, इसकी गाँठ, हरिद्रा नामक औषधि, हरदी। **मु॰ हलदी उठना या चढ़ना**–व्याह के प्रथम वर-कन्या के शरीरों में हलदी-तेल लगाने की रीति। **हलदी लगना**–व्याह होना। **हलदी (हरा) लगै न फिटकरी रँग चोखा आवै**–कुछ भी खर्च न पड़े, काम बन जाये, सेंत मेत, मुफ़्त।

हल्दू–संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक बहुत ऊँचा पेड़।

हलधर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) बलदेव जी, बलराम जी।

अलना†*–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(सं॰ हल्लन)* डोलना, हिलना, पैठना, घुसना।

हलफ़–संज्ञा, पु॰ *(अ॰ शपथ)* क़सम, सौगंद, सौगंध। **मु॰ हलफ़ उठाना**–शपथ या क़सम खाना। **हलफ़ से (पर)**–शपथ पूर्वक।

हलफ़-नामा–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(अ॰+फ़ा॰)* वह कागज़ जिस पर शपथ के साथ ईश्वर को साक्षी कर कोई बात लिखी गई हो। (अं॰) एफीडेविट

हलका–संज्ञा, पु॰ *(अनु॰ हलहल)* तरंग, लहर, हिलोर।

हलफ़िया–वि॰ (अ॰) अलफ़ या शपथ के साथ, क़समिया।

हलबल†*–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ हल+बल)* हरबर, हलचल, खलबली, धूम। यौ॰ (हि॰) हल के बल से।

हलब, हलब्बी–वि॰ दे॰ *(हलब देश)* देश का शीश, बढ़या अच्छा शीशा।

हभल, हलभली–संज्ञा, स्त्री॰ *(हि॰ हल-बल)* हलचल, खलभली, धूम, उतावली, उत्पात, शोरगुल, दंगा।

हलमुखी–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) र, न, स (गण) युक्त एक वर्ण-वृत्त (पिं॰)।

हलरा–संज्ञा, पु॰ (दे॰) तरंग, लहर, हिलोर।

हलराई–संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ *हलराना)* हलराने का भाव किया या मज़दूरी।

हलराना–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ हिलोरना)* हाथ में लेकर किसी वस्तु को इधर-उधर हिलाना, झुलाना।

हलरावना–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ हिलोरना)* बहलावना, विनोद करना, हिलाना, झुलाना।

हलवा, हलुवा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मोहन-भोग, हलुआ, एक प्रकार का मीठा भोजन।

मु॰ हलवे-माँडे से काम–केवल स्वार्थ साधन से प्रयोजन, अपने ही लाभ या फ़ायदे से मतलब।

हलवाई, हेलवाई–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(अ॰ हलवा+ई प्रत्य॰)* मिठाई बनाने ओर बेचने वाला। स्त्री॰ हलवाइन।

हलवाह, हलवाहा (दे॰)–संज्ञा, पु॰ *(सं॰ हलवाह)* दूसरे के यहाँ हल जोतने वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) हलवाहन, हलवाहक।

हलवाही–संज्ञा, स्त्री॰ *(सं॰ हलवाह)* हल चलाने की क्रिया या भाव, हलवाह का पद, काम या मज़दूरी, हरवाही (दे॰)।

हलहलाना†–क्रि॰ स॰ दे॰ *(अनु॰ हलहल)* बड़े ज़ोर से हिलाना-डुलाना, झक्झोरना। क्रि॰ अ॰ काँपना, थरथराना, हिलाना।

हलहलाहट–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हल हलाना)* ज्वर या जाडे से थर-थर काँपना, थरथराहट।

हलहलिया–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ हलाहल)* बिष, ज़हर, जूड़ी

ज्वर।

हलहली–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हलहालना)* जाड़े का ज्वर, जूड़ी व्याधि, रोग।

हलाई–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हल+आई प्रत्य.)* खेत की जोताई या बुआई, हिलने (हलने) का भाव।

हलाक़–वि. *(अ. हलाक़त)* भारा हुआ।

हलाकान‡–वि. *(अ. हलाक)* हैरान, परेशान, तंग। संज्ञा, स्त्री. हलाकानी।

हलाकानी–संज्ञा, स्त्री. *(अ. हलाकान)* हैरानी, परेशानी, तंगी।

हलाकी–वि. *(अ. हलाक)* मार डालने वाला, धातक, बधिक, मारू।

हलाकू–वि. *(अ. हलाक)* हलाक़ करने या मार डालने वाला, घातक। संज्ञा, पु. चंगेज़खाँ का पोता, एक हत्याकारी तुर्क सरदार (इति.)।

हलाभला–संज्ञा, पु. यौ. दे. *(अनु. हला+गला हि.)* निर्माण, परिणाम, निबटाना। दे. (वि.) साधारण, काम-चलाऊ। स्त्री. हलीभली।

हलायुध–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) बलदेव जी, एक प्रसिद्ध संस्कृत-कोष।

हलाल–वि. (अ.) शरअ या मुसलमानी धर्म-पुस्तक के अनुकूल, दुरुस्त, जायज़। संज्ञा, पु. वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म में आज्ञा हो। **मु. हलाली चढ़ना**–पशु बध की प्रवृत्ति होना। हलाल करना–ज़बह करना, किसी पुशु को शरअ के अनुसार धीरे-धीरे गला काट कर मारना (खाने के लिये)। **हलाल का**–ईमानदारी से प्राप्त। **हलाल का खाना**–मेहनत कर ईमानदारी से प्राप्त कर खाना।

हलालख़ोर–संज्ञा, पु. यौ. *(अ. हलाल+ख़ोर फ़ा.)* परिश्रम करके जीविका करने वाला, भंगी, मेहतर। संज्ञा, स्त्री. हलालख़ोरी।

हलाहल–संज्ञा, पु. (सं.) वह विकट और भयंकर विष जो समुद्र मन्थन से निकला था, तेज़ तीव्र विष या गरल, एक विषैला पौधा।

हलिया–संज्ञा, पु. (दे.) बैलों का समूह या झुंड।

हलियाना–क्रि. अ. (दे.) जी मचलाना, उबकाई या मिचली आना।

हली–संज्ञा, पु. (सं.)बलराम जी।

हलीम–वि. (अ.) शांत, सीधा।

हलुआ, हलुवा–संज्ञा, पु. दे. *(अ. हलवा)* मोहनभोग, एक मीठा भोजन, हेलुवा (दे.)।

हलुक-हलुका†*–वि. दे. *(हि. हलका)* हलका, हरुआ, तुच्छ, जो भारी या गरू न हो।

हलुकाना–क्रि. अ. (दे.) हलका होना।

हलूक–संज्ञा, स्त्री. (अनु.) कै, वमन।

हलेरा, हलोर, हलोरा†*–संज्ञा, पु. दे. (हि. हिलोरा) लहर, तरंग, मौज, हिलोर, हिलोरा।

हलोरना–क्रि. स. दे. *(हि. हिलोर)* साथ डाल कर पानी आदि द्रव पदार्थों को मथना। पानी में हाथ कर हिलाना-डुलाना, अनाज फटकना, किसी पदार्थ को अधिकता से इकट्ठा करना।

हलोरा†*–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हिलोरा)* लहर, तरंग मौज, हिलोर, हिलोरा।

हलोरे–संज्ञा, पु. (दे.) समेटे, बटोरे लहर या तरंग।

हल्दी–संज्ञा, स्त्री. दे. *(हि. हलदी)* हलदी।

हल्लक–संज्ञा, पु. (दे.) लाल कमल।

हल्ला–संज्ञा, पु. (अनु.) कोलाहल, चिल्लाहट, शोरगुल, हाँक, ललकार (युद्ध में) धावा, आक्रमण, हमला; यौ. **हल्ला-गुल्ला**–शोरगुल।

हल्लीश–संज्ञा, पु. (सं.) नृत्य-प्रधान एक एकांकी उपरूपक (नाटय.)।

हवन–संज्ञा, पु. (सं.) होम, किसी देवता के लिए मन्त्रादि पढ़ कर अग्नि में तिल, जौ, घी आदि डालना, आहुति, अग्नि, हवन का चमचा, ध्रुवा।

हवनोय–वि. (सं.) हवन के योग्य। संज्ञा, पु. हवन के समय अग्नि मे डालने में डालने की वस्तु।

हवलदार–संज्ञा, पु. *(अ. रावल+फ़ा. दार)* सेना का सबसे छोटा अफ़सर या सरदार, राज-कर वसूल करने तथा फ़सल की निगरानी करने वाला अफ़सर *(शाही समय में अब पुलिस में)* संज्ञा, स्त्री. हवलदारी।

हवस–संज्ञा, स्त्री. (अ.) चाह, इच्छा, हौस, लालसा, तृष्णा, कामना।

हवा–संज्ञा, स्त्री. (अ.) पवन, वायु, भू-मण्डल के चारों ओर

फैला हुआ प्रवाहरूप प्राणियों के जीवन के लिये आवश्यक एक सूक्ष्म पदार्थ। **मु॰ हवा उड़ना**–ख़बर फैलना। **हवा और होना**–हवा बदलना। **हवा करना**–पंखा हाँकना, उड़ा देना, रद्द करना। **हवा के घोड़े पर सवार**–बहुत ही उतावला या जल्दी में। **हवा खाना**–टहलनाः शुद्ध पवन सेवन के हेतु घर से बाहर जाना, घूमना, सैर करना, घूमना-फिरना, भ्रमण करना, अकृतकार्य होना। (जाओं) **हवा खाना (खाओ)**–निराश लोट जाना। **हवा पीकर (खाकर) रहना**–भोजन जाना रहना *(व्यंग्य में भी)*। **हवा निकल जाना**–आश्चर्य से स्तम्भित या चकित हो जाना, डर जाना, शंकित हो जाना। **हवा बताना**–टाल दना, वंचित रखना। *(किसी की)* हवा बँधना–रंग जमाना, रंग जमाना, रोब या धाक होना, विश्वास या सम्मान होना। **हवा बाँधना**–शेखी हाँकना, गप हाँकना या उड़ाना, धाक या रोब जमाना, रंग जमाना, लंबी-चोड़ी बात करना। **हवा पलटना (फिरना या बदलना)**–दूसरी ओर को हवा चलने लगना, दूसरी अवस्था या स्थिति (दशा) होना, परिस्थिति या हालत बदलना। **हवा बिगड़ना**–रोब या धाक कम होना, विश्वास या धाक होना, विश्वास या आदर न रहना, नष्ट करना, बदनामी करना, शंकित करना, संक्रामक रोब फेलना, रीति या या चाल बिगड़ना, बुरे विचार फैलना। *(किसी की)* **हवा बिगाड़ना**–शेखी या रोब बिगाड़ना। **हवा सा**–बहुत ही बारीक या हलका। **हवा से लड़ना**–अकरण लड़ना। **हवा से बातें करना**–बहुत वेग से चलना या दौड़ना, गप उड़ाना, व्यर्थ आप ही आप बहुत बोलना, अभिमान होना। **(किसी की हवा लगना)**–किसी की संगति का प्रभाव होना। **हवा हो जाना**–अति वेग या शीघ्रता से भाग जाना, रह न जाना, एकबारगी छिप या लुप्त हो जाना। भूत-प्रेत, ख्याति, अच्छा नाम, प्रसिद्धि, उत्तम व्यवहार या बड़प्पन का विश्वास, साख। मु॰ **हवा बँधना** *(बाँधना)* अच्छा नाम हो जाना, साध या रोब होना। **हवा ठीली होना (करना)**–चकित या भयभीत होना (करना)। यौ॰ **हवाख़ोरी**–सैर-सपाटा, हवा खाना, किसी बात की धुन या सनक।

हवाई–वि॰ **(ह॰ हवा)** वायु-सम्वन्धी, वायु का, हवा में चलने वाला, झुंड या कल्पित, निर्मूल, निराधार। संज्ञा, स्त्री॰ एक प्रकार की आतिशबाज़ी, वान, आसमानी। **मु॰ मुँह पर हवाइयाँ उड़ाना**–मुँह का रंग फीका पड़ जाना, विर्णता होना।

हवा-चक्की–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(अ॰ हवा+हि॰ चक्की)* वायु बल से चलने वाली आटा पीसने की चक्की।

हवाई-जहाज़–संज्ञा, पु यौ॰ (अ॰) वायुयान, हवा में चलने वाला जहाज़।

हवादार–वि॰ (फ़ा॰) वह मकान जिसमें वायु के आने-जाने का मार्ग, द्वार या खिड़कियाँ हों। संज्ञा, पु॰ बादशाहों की सवारी का एक हलका तख़्त।

हवाल–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(अ॰ अहवाल)* गति, वृत्तांत, हाल, समाचार, हालात, परिणाम, दशा, अवस्था। यौ॰ **हाल-हवाल**।

हवालदार–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(उर्दू हवलदार)* एक सैनिक अफ़सर, हवलदार।

हवाला–संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रमाणोल्लेख, वृष्टांत, उदाहरण, मिसाल, सुपुर्दगी, ज़िमेदारी, उत्तरदायित्व। मु॰ किसी के हवाले करना–किसी के सुपुर्द करना, सौंपना।

हवालात–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) क़ैद, पहरे में रखने की क्रिया या भाव, नज़रबंदी, अभियुक्त की साधारण क़ैद, जो मुक़दमें के रिर्णय से पूर्व उसे रोकने को दी जाती है, हाजत, क़ैदख़ाना, अभियुक्त के रखने का स्थान, बंदीगृह।

हवास–संज्ञा, पु॰ (अ॰) इन्द्रियां, संवेदन, होश, संज्ञा, चेतना। यौ॰ होश-हवास। **मु॰ हवास गुम होना**–भय से स्तंभित होना। होश उड़ जाना या ठिकाने न रह जाना। **हवास फाख़्ता होना**–होश उड़ जाना।

हवि–संज्ञा, पु॰ *(सं॰ हविस्)* हवन की वस्तु, आहुति का पदार्थ, आहुति का शेषांश, अग्नि का प्रसाद।

हविस–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हवस, इच्छा।

हविष्य–वि॰ (सं॰) हवन करने योग्य। संज्ञा, पु॰ हवि, आहुति, बलि, होम करने या किसी देवता के लिये अग्नि में डालने की वस्तु।

हविष्यान्न–संज्ञा, पु॰ यो॰ (सं॰) यज्ञ के समय का भोजन या आहार।

हवेली, हवेली (दे॰)–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) प्रासाद, महल, बड़ा

पक्का बर, स्त्री, पत्नी।

हविष्य–संज्ञा, पु. (सं.) होम की सामग्री, हवन का पदार्थ, हवि, आहुति।

हविर्भुज–संज्ञा, पु. पु. *(सं. हविर्भुज्)* अग्नि, आग।

हशमत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) वैभव, बढ़ाई ऐश्वर्य, गौरव।

हमद–संज्ञा, पु. (अ.) डाह, ईर्या।

हसन–संज्ञा, पु. (सं.) हँसना, हास, परिहास, विनोद, दिल्लगी। संज्ञा, पु. (अ.) इमाम हुसेन के भाई

हसब–श्रव्य (अ.) हस्व (दे.) मुताबिक, अनुसार, अनुकूल।

हसरत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शोक, अफ़सोस, दुःख, रंज, दिली इच्छा, लालसा, हार्दिक कामना।

हसित–वि. (सं.) जिस या जिस पर लोग हँसते हों, जो हँसा हो या हँसा गया हो। संज्ञा, पु. हँसना, हास्य, हँसी-ठट्ठा, मदन धनुष।

हसीन–वि. (अ.) ख़ुबसूरत, सुन्दर। संज्ञा, पु. सुन्दर व्यक्ति।

हस्त–संज्ञा, पु. (सं.) हाथ, हाथी की सूँड़, हाथ के आकार वाला पाँच तारों का एक समूह या एक नक्षत्र (ज्यो.) हाथ या चौबीस अंगुल की नाप, हाथ का लिखा लेख, लिखावट।

हस्तकौशल–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) किसी कार्य में हाथ चलाने की निपुणता, करकौशल।

हस्तक्रिया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) हाथ का काम, दस्तकारी, हाथ से इन्द्रिय संचालन, सर का कूटना (मारना), हस्त मैथुन।

हस्तक्षेप–संज्ञा, पु. (सं.) सिकी होते हुए काम में हाथ लगाना, या कुछ कर देना, दखल देना।

हस्तगत–वि. (सं.) करगत, हाथ में आया हुआ, प्राप्त, लब्ध।

हस्तच्छाया–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) रक्षा, शरण।

हस्तत्राण–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हस्तत्राण से रक्षा के लिये हाथ में पहनने का दास्ताना।

हस्तमैथुन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हाथ से इंद्रिय संचालन,

हस्तरेखा–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) हथेली की लकीरें जिनसे शुभाशुभ का विचार किया जाता है। (सामु.)।

हस्तलाघव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हाथ की तेज़ी या फुरती, हाथ की सफ़ाई।

हस्तलिखित–वि. यौ. (सं.) हाथ का लिखा हुआ *(पुस्तकादि)*।

हस्तलिपि–संज्ञा, स्त्री. यौ. (सं.) हाथ की लिखावट या लेख।

हस्तलेख–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हाथ का लिखा हुआ।

हस्ताक्षर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) दस्तख़त, किसी लेखादि के नीचे अपने हाथ से लिखा गया अपना नाम।

हस्तामलक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) वह बात या जन्तु जो सब ओर पूर्ण रूप से स्पष्ट और ज्ञात होकर दिखलाई देती हो, जैसे हाथ पर का आँवला।

हस्ति–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हस्तिन्)* हस्ती, हाथी।

हस्तिकंद–संज्ञा, पु. यौ. (सं.)एक पौधा जिसका कंद लोग खाते हैं, हाथीकंद (दे.)।

हस्तिदंत–संज्ञा, पु. यौ. हाथी-दाँत।

हस्ति-दंतक–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) मूली।

हस्तिनापुर–संज्ञा, पु. (सं.) वर्तमान दिल्ली से कुछ दूर पर कौरवों की राजधानी का एक प्राचीन नगर।

हस्तिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हथिनी, मादा हाथी, स्त्रियों के चार भेदों में से एक निकृष्ठ भेद (काम.)।

हस्तिपक–संज्ञा, पु. (सं.) महावत, हाथीवान, हथवान।

हस्ती–संज्ञा, पु. *(सं. हस्तिन्)* हाथी। स्त्री. हस्तिनी। संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) अस्तित्व, होने का भाव।

हस्ते–अव्य (सं.) मारफ़त, हाथ से, हत्थे (दे.)।

हस्व–अव्य. (दे.) हसब (फ़ा.) अनुसार।

हस्ली–संज्ञा, स्त्री. (दे.) स्त्रियों के गले का एक गहना, हसली, हँसुली, हसुली, (दे.)।

हहर–संज्ञा, स्त्री. *(हि. हहरना)* कँपकँपी, भय, डर, थर्राहट। संज्ञा, पु. (दे.) वायु या जल के वेग का शब्द।

हहरना–क्रि. अ. (अनु.) काँपना, थर्राना, डर से काँप उठना, थरथराना, दंग रह जाना, दहलना, चकित या स्तंभित होना, सिहाना या डाह करना, अधिकता देख चकपकाना।

हहराना–क्रि. अ. (अनु.) काँपना, थरथराना, भयभीत होना या डरना, हरहराना (दे.)। क्रि. स. दहलाना, डराना, भयभीत करना।

हहा–संज्ञा, स्त्री. (अनु.) ठट्ठा, हँसने का शब्द, गिड़गिड़ाने

का दीनता, शोकादिसूचक शब्द हा! हा! हाय हाय। **मु॰ हहा (हाहा) खाना**–बहुत गिड़गिड़ाना, हाहाकार करना।

हाँ–अव्य॰ दे॰ *(सं॰ ओम्)* स्वीकृति, स्वीकार या सम्मति-सूचक शब्द, किसी बात के ठीक या उपयुक्त होने का सूचक शब्द, ठीक। **मु॰ हाँ करना**–राज़ी होना, स्वीकार करना, सम्मत होना। **हाँ जी–हाँ जी करना**–ख़ुशामद करना, यहाँ।

हाँक–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ हुँकार)* सिकी के बुलाने या डाँट बताले को ज़ोर से चीखा गया शब्द, ललकारने का शब्द। **मु॰ हाँक देना या हाँक लगाना**–ज़ोर से पुकारना। **हाँक मारना**–हाँक लगाना। **हाँक-पुकार कर कहना**–सब के सम्मुख वेधड़क और निस्संकोच कहना, ललकार, गर्जन, हुंकार, प्रोत्साहक और उत्तेजक शब्द, बढ़ावा देने का शब्द, सहायतार्थ की हुई पुकार, दुहाई, गोहार।

हाँकना–क्रि॰ स॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* चिल्ला कर पुकारना या बुलाना, आक्रमण या सग्राम में गर्व से चिल्लाना, हुंकारना, सीटना, बढ़-बढ़ कर बातें करना, बोल कर या मार कर जानवरों को आगे बढ़ाना या चलाना, गाड़ी-रथादि के पशुओं को चला कर गाड़ी को चलाना, बोल या मार कर पशुओं को भगाना, पंखे से हवा करना। **स॰ रूप**–हँकाना। **प्रे॰ रूप॰**–हँकवाना। **मु॰ गप हाँकना**–झूठी बातें कहना। **दून की हाँकना**–बढ़-बढ़ बात करना।

हाँका–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ हाँक)* गर्जन, ललकार, पुकार, टेर, हँकवा (दे॰) सिंहादि को उत्तेजित कर हाँकने वाला।

हाँगी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हाँ)* स्वीकृत, स्वीकार, मंज़ूरी, हामी (दे॰)। **मु॰ हाँगी भरना**–स्वीकार करना, मंज़ूर करना, हामी भरना।

हाँड़ना†–क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ भंडन) व्यर्थ इधर-उधर घूमना-फिरना, आवारा घूमना-फिरना। वि॰ स्त्री॰ **स्त्री॰ हाँड़नी**–आवारा घूमने फिरने वाली।

हाँड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ भाँड़) हँड़िया, हंड़ी मिट्टी का मझोला बटलोई सा बरतन। **मु॰ हाँड़ी मकना**–हाँड़ी की चीज़ पकना, षड्यंत्र या चक्र रचा जाना, भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। ***(काठ की)* हाँड़ी दुबारा न चढ़ना**–छल-कपट का फिर न चलना। **हाँड़ी चढ़ना**–कोई वस्तु पकाने को हाँड़ी आग पर चढ़ाया जाना। शोभार्थ कमरे में टाँगने का काँच का हाँड़ी के आकार का पात्र।

हाँता*–वि॰ दे॰ *(सं॰ हात)* अलग या दूर किया हुआ, छोड़ा या हटाया हुआ। स्त्री॰ हाँती।

हाँपना-हाँफना–क्रि॰ अ॰ *(अनु॰ हँक १)* श्रम, रोगादि से सवेग, जल्दी जल्दी साँस लेना, तीव्र गति से साँस लेना, हँफना। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हँफी।

हाँफा–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ हाँफन)* तीव्र और क्षिप्र श्वास, हाँफने की क्रिया या भाव।

हाँसना‡*–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(हि॰ हंसना)* हँसना।

हाँसल–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(हि॰ हांस)* देह में मेंहदी के से रंग का किन्तु काले पैरों वाला घोड़ा, हिनाई, कुम्मैत।

हाँसी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ हास)* हँसी, परिहास, उपहास, दिल्लगी, मज़ाक, हँसी-ठट्ठा, हँसने की क्रिया या भाव, निन्दा।

हाँ हाँ–अव्य॰ दे॰ यो॰ *(हि॰ अहाँ नहीं)* रोकने या मना करने का शब्द, निषेध या निवारण-सूचक शब्द, स्वीकार-सूचक शब्द-युग्म।

हाँ-हुज़ूर–वि॰ यो॰ *(हि॰ हाँ हुज़ूर फ़ा॰)* चापलूस, ख़ुशामदी। संज्ञा, स्त्री॰ **हाँ हुज़ूरी**।

हा–अव्य॰ (सं॰) दुःख या शोक-सूचक शब्द, आश्चर्याह्लाद या भय सूचक-शब्द। पु॰ मार डालने वाला, हनन या नाश करने वाला।

हाइ‡*–अव्य॰ दे॰ *(सं॰ हा)* हाय, शोक।

हाई–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ घात)* अवस्था, दशा, हालत, ढंग, तौर, घात, दव।

हाऊ–संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰) भकाऊ, हौवा, जूजू।

हाकल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) 15 मात्राओं और दीर्घानत वाला एक मात्रिक छंद (पिं॰)।

हाकलिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 15 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

हाकली–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) 10 वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)।

हाकिम–संज्ञा, पु. (अ.) शासक, बड़ा अफ़सर, हुकूमत करने वाला।

हाकिमी–संज्ञा, स्त्री. *(अ. हाकिम)* हुकूमत, शासन, प्रभुत्व, हाकिम का काम। वि. हाकिम का। हाकिम-संबंधी।

हाजत–संज्ञा स्त्री. (अ.) आवश्यकता, ज़रूरत, चाह, हिरासत, पहरे में रखना। –सौदा.। **मु. हाजत दूर (रफ़ा.) करना**–शौचादि से निवृत्त होना। **हाजत में देना या रखना**–पहने के भीतर देना, क़ैद या हवालात में रखना।

हाज़मा–संज्ञा, पु. (अ.) पाचन की शक्ति या क्रिया, भोजन पचने की क्रिया।

हाज़िम–वि (अ.) पाचक, हज़म करने या पचाने वाला।

हाज़िर–वि. (अ.) उपस्थित, प्रस्तुत, मौदूद, विद्यमान, सम्मुख।

हाज़िर-जवाब–वि. यौ (अ.) किसी बात का तत्काल अच्छा उत्तर देने में प्रवीण या कुशल, वाक् चतुर, प्रत्युत्पन्नमति। संज्ञा, स्त्री. **हाज़िर-जवाबी**।

हाज़िरात–संज्ञा, स्त्री. (अ.) वेदना, या मंत्रादि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा बुलाना जिससे वह विविध प्रकार की बिना देखी बातें बता सके।

हाज़िरी–संज्ञा, स्त्री. (अ.) उपस्थिति, विद्यमानता।

हाजी–संज्ञा, पु. (अ.) वह पुरुष जो हज कर आया हो (मुसल.)।

हाट–संज्ञा, स्त्री. दे. (सं. हट्ट) बाज़ार दुकान, पैंठ। यौ.–**हाट-बज़ार**। **मु. हाट करना**–दुकान लगा कर बैठना, सौदा लेने बाज़ार जाना। **हाट लगना (लगाना)**–बाज़ार या दुकान में विक्री के पदार्थ रखे जाना (रखना)। **हाट चढ़ना**–बाज़ार में बिकने आना। **हाट चढ़ना (उतरना, घटना)**–चीज़ों का भाव बढ़ (घट) जाना। बाज़ार का दिन।

हाटक–संज्ञा, पु. (सं.) कनक, स्वर्ण, कंचन, सोना, हेम, हिरणय।

हाटकपुर–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) लंकापूरी, स्त्री. हाटकपुरी।

हाटकलोचन–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) हिरणयाक्ष।

हाटू–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हट्टू)* बाज़ार करने वाला, बाज़ार में सौदा बेचने या लेने वाला।

हाड़†*–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हड्ड)* अस्थि, हड्डी, कुलीनता, कुल या जाति की मर्यादा।

हाड़ा–संज्ञा, पु. दे. *(हड्डा)* एक प्रकार की बर्र या भिड़, बरैया, क्षत्रियों की एक जाति।

हाता–संज्ञा, पु. दे. (**अ. अहाता**) बाड़ा, घेरा हुआ स्थान, देश, विभाग, सूबा, हलका, प्रांत, हद, सीमा। सुर.। वि. (सं. हात) अलग, पृथक् दूर किया हुआ, बरबाद, विनष्ट। स्त्री. हाती। संज्ञा, पु. दे. *(सं. हता)* मारने वाला।

हातिम–संज्ञा, पु. (अ.) दक्ष, कुशल, पटु, निपुण, होशियार, चतुर, किसी काम में पक्का, उस्ताद, एक परोपकारी, उदार दानी, अरब-सरदार (हातिमताई) **मु. उदार हातिम की क़बर पर लात मारना**–अत्यंत परोपकार या उदारता करना (व्यंग्य)। अति दानी व्यक्ति।

हाथ–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हस्त)* हस्त, कर, भुजा, बाहु से पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली। **मु. हाथ में आना या पड़ना**–अधिकार या वश में आना, मिलाना, हाथ लगना। **हाथ उठना**–स्वीकारता सूचनार्थ हाथ ऊपर करना। **(किसी को) हाथ उठाना**–प्रणाम या बंदगी सलाम करना। **(किसी पर) हाथ उठाना**–किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना, मारना। **हाथ ऊँचा होना**–दान देना, दान देने में प्रवृत्त होना, समपन्न होना। **(बाँये) हाथ का खेला होना**–अति सरल या साधारण होना। **हाथ फटा लेना (बैटना)**–प्रतिज्ञा-बद्ध कर लेना (हो बैठना), बचन या प्रतिज्ञा-बद्ध होना। **हाथ कट जाना**–कुछ करने योग्य न रहना, प्रण आदि से बँध जाना। **हाथ का मैल**–अति साधारण वस्तु, तुच्छ पदार्थ। हाथ की सफ़ाई-हाथ का कौशल, हस्त-कौशल, कर-कौतुक। **हाथ ख़ाली होना**–पास में धन या काम न रह जाना। **हाथ खुजलाना**–मारने की इच्छा होना, प्राप्ति के लक्षण दिखाई देना। **हाथ खुल जाना**–बंधन से मुक्त हो जाना, व्ययाधिक्य में प्रवृत्त होना, मारने की आग-सी पड़ना। **हाथ खींचना, खींच लेना (हटाना)**–किसी काम से अलग हो जाना, या किसी कार्य में योग न देना बंद करना। **(हाथ चलना) चलाना**–मारना, थप्पड़ तानना। **हाथ चूमना**–कारीगरी पर प्रसन्न होकर सिकी के हाथों को सस्नेह देखना। **हाथ छोड़ना**–प्रहार या आघात करना, मारना। **हाथ छुड़ाना (बांह छुड़ाना)**–

पीछा छुटाना। **हाथ छोटा होना**–कंजूस होना। **हाथ बड़े (विशाल) होना**–अति उदार या दानी होना। **हाथ जोड़ना**–नमस्कार या प्रणाम करना, विनती या अनुनय-विनय करना, मनाना। **दूर से हाथ जोड़ना**–संबंध या साथ न रखना, अलग या किनारे रहना, त्यागना या छोड़ देना। **हाथ जोड़ाना**–विनय कराना, आधीन कर लेना। **हाथ डालना**–*(किसी काम में)* हाथ लगाना, योग देना, करना, आरंभ करना। **हाथ ढीला करना**–सुविधा के लिये आवश्यकता से कुछ अधिक व्यय करना, काम में सुस्ती करना। **हाथ तंग होना**–तंग-हाल होना, ख़र्च के लिये पर्याप्त धन रहना। **(किसी बात या वस्तु से) हाथ धोना**–खो देना, प्राप्ति की आशा या सम्भावना न रखना, नष्ट कर देना, छोड़ना, त्यागना। **हाथ धोकर पीछे पड़ना**–जी जान से खग जाना, हानि पहुँचाने को उतारू होकर विविध उपाय करना। **हाथ धो रखना (हाथ धोकर आना)**–तैयार हो जाना (आना)। **हाथ दवना**–योग्यता या शक्ति सामर्थ्य न रहना, तंग-हाल होना, व्ययार्थ पर्याप्त धन न रह जाना। **(किसी के) हाथ देना**–मारना (खड्ग या हाथ से)। **हाथ पकड़ना**–मना करना, रोकना, आशय या शरण देना या स्वरक्षा में लेना, शरण में लेना (आना या ?ना), ब्याह या पाणिग्रहण करना। **किसी के हाथ पड़ना**–प्राप्त होना, मिल जाना, पाले पड़ना, हाथ पड़ना, किसी पर हाथ का आघात या मार पड़ना। **हाथ पत्थर तले दवना**–बड़ी कठिनता या वड़े संकट में पड़ना, विवश या लाचार होना, कठिन परिस्थिति में पड़ना। **हाथ पर हाथ धरे बैटे रहना**–बिना काम-धंधे के रहना, कुछ काम धंधा न करना, बेकार या निठल्ला रहना। **हाथ पसारना या फैलाना**–माँगना, याचना, आगे हाथ बढ़ाना। **हाथ-पैर (पाँव) चलना**–श्रम से काम करने की सामर्थ्य या योग्यता होना। **हाथ-पाँव चलाना**–काम-धंध करना, श्रम या प्रयल करना, उद्योग करना। **हाथ-पाँव ठण्डे (सुन्न) होना**–मरने के समीप होना, भय से व्याकुल या स्तब्ध होना। **हाथ-पाँव (पैर) ढीले पड़ना**–निराशादि से शिथिलता आना, हतोत्साह या अशक्त हो जाना। **हाथ-पाँव निकालना**–मोटा-ताजा या हष्ट-पुष्ट होना, सीमा का उल्लंधन करना या लाँघना, शरारत करना। **हाथ-पाँव फूलना**–भय या शोक से घबरा जाना, हतोत्साह या निराश हो अशक्त हो जाना। **हाथ पाँव (पैर) पटकना**–तड़पना, प्रयत्न या दौड़-धूप करना। **हाथ-पाँव (के) होना (न होनना)**–समर्थ या योग्य होना (न होना)। **हाथ-पाँव पटकना (फटफटाना)**–छटपटाना, फरफराना, उद्योग या प्रयत्न करना। **(किसी के) हाथ-पाँव (पैर) जोड़ना**–विनय करना। **हाथ-पाँव मारना या हिलाना**–बहुत प्रयत्न या उपाय करना, बड़ा उद्योग या परिश्रम करना। **हाथ-पैर (पाँव) पसारना (फैलाना)**–अधिक पाने की इच्छा करना, आगे बढ़ना। हाथ-पीले करना (होना)–व्याह करना (होना) या व्याह में हाथों को हल्दी से रँगना (रँग जाना)। **(किसी वस्तु पर)** हाथ फेरना– ले लेना, उड़ा लेना। **(किसी पर) हाथ फेरना**–सान्त्वना और प्रोत्साहन देना, प्यार करना। **हाथ फैलाना (पसारना, बढ़ाना)**–माँगने को हाथ बढ़ाना। **(किसी काम में किसी का) हाथ बटाना**–सम्मिलित, शामिल या शरीक होना, योग देना, सहायक होना। **हाथ बाँधे खड़े रहना**–सेवा में बराबर उपस्थिति रहना। **हाथ-मँजना (मांजना)**–हाथ से किसी काम के करने का अभ्यास होना (करना)। **हाथ मलना**–बहुत पछिताना, निराश तथा दुखी होना। **(किसी वस्तु पर) हाथ मारना**–छिपा देना, उड़ा लेना, ग़ायव कर देना। **हाथ (में) आना**–प्राप्त होना। **हाथ में करना**–कब्ज़े या वश में कर लेना, ले लेना, स्वाधिकार में या आधीन करना। **(मन) हाथ में करना**–मन लुभाना, मोहित करना। **(अपना मन) हाथ में करना (होना)**–मन को स्वाधीन करना (होना)। **हाथ में होना**–वश या अधिकार में होना, सामर्थ्य में होना। **हाथ रँगना**–घूस या रिशवत लेना। **हाथ रोपना या ओड़ना**–माँगना, हाथ फेलाना या पसारना। **हाथ बढ़ाना**–किसी की सहायता करने को उद्यत होना, हाथ बटाना। **(किसी काम के लिये) हाथ बढ़ाना**–किसी कार्य के करने को प्रथम या आगे उद्यत या तैयार होना। **(कोई वस्तु) हाथ लगना**–प्राप्त होना, मिलाना, हाथ में आना। **(किसी काम में किसी का हाथ होना**–सहयोग या राय होना, अधिकार होना, सम्मिलित होना। **(किसी काम में) हाथ लगना**–आरंभ या शुरू किया जाना या

होना, किसी के द्वारा किया जाना। **(किसी वस्तु में) हाथ लगना**–स्पर्श होना, छु जाना। **(किसी काम में) हाथ लगाना**–योग देना, आरंभ या शुरू करना। **(किसी चीज़ में) हाथ लगाना**–स्पर्श करना, छूना, ले लेना। **हाथ लगे मैला होना**–इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ लगने से गंदा हो जाये। **(सोना) हाथ लगे मिट्टी होना**–सब कार्य में असफलता होना। **विलो॰ मिट्टी हाथ लगे सोना होना**–सब काम में सफलता होना। **हाथों-हाथ**–एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुये। **हाथों हाथ लेना**–बड़े आदर और सम्मान से स्वागत करना। **हाथ ख़ाली होना**–फ़ुरसत होना, कार्य न होना, पास में पैसा न होना। **खाली हाथ हिलाते आना**–कुछ लेकर न आना। **(किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति का किसी के) हाथ में होना**–उसके अधीन, अधिकार या वश में होना। **हाथ चलना (चलाना)**–मारने की प्रवृत्ति होना (मारना)। **हाथों-हाथ बिकना**–तेज़ी से बिकना। मनुष्य की कुहनी से पंजे के सिरे तक की नाप,आधे गज़ की लंबाई, जुए या ताश आदि के खेल में एक मनुष्य की बारी, दाँव। **यौ॰ हाथ का खिलौना**-पूर्णतया अपने वश में या आधीन।

हाथ-पान–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) हथेली की दूसरी ओर पहनने का एक गहना (स्त्रियों का)।

हाथ-फूल–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) स्त्रियों की हथेली के दूसरी ओर पहनने का एक गहना, हथ-फूल (दे॰)।

हाथा–संज्ञा, पु॰ (हि॰ हाथ) दस्ता, गुठिया, बेंट, गीले पिसे चावल और हल्दी से दीवार आदि पर लगाया हुआ पंजे या हाथ का छापा या चिन्ह।

हाथा-जोड़ी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यो॰ *(हि॰ हाथ+जोड़ना)* एक औषधीय पौधा।

हाथा-पाँई, हाथा-बाँही–संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ *(हि॰ हाथ-पाँव या बाँह)* मल्ल युद्ध, कुश्ती, धौल-धप्पल, भिदंत, मार-पीट।

हाथी–संज्ञा, पु॰ दे॰ *(सं॰ हस्तिन)* एक बड़ा भारी सूँड़ के रूप की विलक्षण नाक और दो बड़े बाहर निकले दाँतों वाला स्तनपायी प्रसिद्ध पशु, गज, नाग, कुंजर, हस्ती। स्त्री॰ हथिनी। मु॰ हाथी की राह–आकाश-गंगा, हथ डहर। **हाथी पर चढ़ना**–बहुत अमीर होना। **हाथी-बाँधना**–बहुत अमीर या धनी होना, अत्यधिक व्यय का कार्य करना। (द्वार पर) **हाथी झूमना**–अति धनी और सम्पन्न होना। **हाथी के संग गाँड़े खाना**–अत्यंत वड़े भारी बलवान की बराबरी करना। लो॰– "हाथी अपनी राह जाता है, कुत्ते भूंकते हैं"। **हाथी के दाँत (देखने के और खाने के और)**–यथार्थ और दिखावटी बात। संज्ञा, स्त्री॰ *(हि॰ हाथ)* हाथ का सहारा।

हाथी-ख़ाना–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(हि॰ हाथी+ख़ानाः फ़ा॰)* फ़ील-ख़ाना, हथसार, हस्तिशाला, हाथी के रखने का घर।

हाथी-दाँत–संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ *(हि॰ हाथी+दाँत)* मुँह के दोनों के छोरों पर निकले हुए हाथी के दो बड़े सफ़ेद दिखावटी दाँत, उन दाँतों की हड्डी।

हाथी-नाल–संज्ञा, स्त्री॰ यो॰ *(हि॰ हाथी+नाल)* हाथ नाल, गजनाल, हाथी पर चलने वाली तोप।

हाथी-पाँव–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) पील-पांव॰ या फीलपान नामक एक पैर के मोटे हो जाने का रोग।

हाथीवान–संज्ञा, पु॰ *(हि॰ हाथी वान प्रत्य॰)* महावत, फीलवान, हथवाल, हथवान।

हादसा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) दुर्घटना।

हान*‡–संज्ञा,, स्त्री॰ दे॰ *(सं॰ हानि)* हानि, घटी, क्षति।

हानि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) क्षति, घटी, नुकसान, टोटा, घाटा, स्वास्थ्य में बाधा, श्राव, बुराई, अनिष्ट, अभाव, अपकार। **"हानि लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ"**-रामा॰।

हानिकर–वि (सं॰) क्षति पहुँचाने वाला, हानि करने वाला, आरोग्यता या तंदुरुस्ती बिगाड़ने वाला, बरा फल देने वाला। **स्त्री॰ हानिकारी**।

हानिकारक–वि॰ (सं॰) हानिकार, हानिप्रद।

हानिकारी–वि॰ *(सं॰ हानिकारिन्)* हानिकर, हानिकारक, क्षतिप्रद। स्त्री॰ हानिकारिणी।

हाफ़िज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) वह मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो।

हामी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हाँ)* स्वीकार, हाँ करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति। **मु॰ हामी भरना**–स्वीकार या मंजूर

करना। संज्ञा, पु॰ सहायक, सहायता या हिमायत करने वाला।

हाय–अव्य॰ दे॰ *(सं॰ हाँ)* दुख, कष्ट शोक-सूचक शब्द। संज्ञा, स्त्री, (दे॰) कष्ट, पीड़ा दुख। **मु॰ (किसी की) हाय पड़ना (लगना)**–दुख देने का बुरा परिणाम या फल होना। **हाय खाकर मरना**–दुःख के कारण मर जाना।

हाय-हाय–अव्य॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ हाँ हाँ) दुख, क्लेश या शारीरिक कष्ट-सूचक शब्द। संज्ञा, स्त्री॰ दुख, कष्ट, शोक, झंझट, परेशानी। मु॰ **हाय हाय करना**–झींखना, झंझट करना। **हाय हाय में पड़ना**–परेशानी या झंझट में पड़ना।

हायन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वर्ष, साल।

हायल–वि॰ (दे॰) मुछिंत, घायल, बकाम, शिथिलं वि॰ पु॰ (अ॰) दो वस्तुओं के बीच में पड़ने वाला, अंतर्वर्ती,रोकने वाला।

हार–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ हरि) खेल, लड़ाई या चढ़ा-ऊपरी में प्रतिद्वंदी के सम्मुख न जीतना, पराजय, शिकस्त, थकावट, हानि। मु॰ **हार खाना**–हारना, पराजित होना। शिथिलता, थकावट, क्षति, हानि, घटी, ज़ब्ती, वियोग, विरह, राज्य से अपहरण। संज्ञा, पु॰ (सं॰) चाँदी, सोना और मोतियों आदि की माला, ले जाने या वहन करने वाला, सुन्दर, भाजक (गणि॰), गुरु मात्रा (पिं॰), विनाशक, एक प्रत्यय (व्या॰) वन, जंगल, खेत। **प्रत्य॰ दे॰ (हि॰ हारा) वाला,** जैसे–**टूटनहार**।

हारक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) चोर, लुटेरा, हरण करने वाला, सुंदर, मनोहर, भाजक *(गणि॰)* माला, हार। "नव उज्ज्वल जलधार हार हीरक सी सोहति"–हरि॰।

हारद, हारदिक–वि॰ (सं॰) हार्दिक, हृदय-सबंधी, हृदय का।

हारना–क्रि॰ अ॰ दे॰ *(सं॰ हार)* पराजित होना, शिकस्त खाना, रण या प्रतिद्वंद्वितादि में शत्रु के सम्मुख बिफल होना, थक जाना, शिथिल होना, प्रयत्न में असमर्थ या निराश होना। **मु॰ हारे दर्जे**–विवश होकर, लाचार या मजबूर होकर। **हार कर**–लाचार या असमर्थ होकर। क्रि॰ स॰ खोना, गँवाना, छोड़ देना, दे देना, रख न सकना, लड़ाई, बाज़ी आदि को सफलता से न पूरा करना।

हारबंध–संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक चित्र-काव्य जिसमें पद्य माला के रूप में रखे जाते हैं।

हारज–संज्ञा, पु॰ (दे॰) अपने चंगुल में लकड़ी लिये रहने वाला एक पक्षी, हारिल।

हार-बार–*संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हड़बड़ी)* शीघ्रता, आतुरता, जल्दी, हड़बड़ी, हरबरी।

हारसिंगार–संज्ञा, पु॰ (दे॰) हरसिंगार, पारिजात।

हारा†–प्रत्य॰ दे॰ *(सं॰ भार–रखने वाला)* शब्द के आगे आकर, कर्तव्य, संयोग, धारणादि सूचक एक प्रत्यय, हार। स्त्री॰ **हारी**। वि॰ *(हि॰ हारना)* पराजित।

हारिल–संज्ञा, पु॰ (दे॰) अपने चंगुल में लकड़ का टुकड़ा लिये रहने वाला एक मझोला पक्षी। मु॰ हारिल की लकड़ी–सदा पास रहने वाली प्रिय वस्तु।

हारी–वि॰ *(सं॰ हारिन्)* हरण करने वाला, चुराने वाला, ले जाने या पहुँचाने वाला, नाश या दूर करने वाला, मोहित करने वाला। स्त्री॰ हारिणी। संज्ञा, पु॰ एकत गण और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)। सा॰ क्रि॰ भू॰ दे॰ (हि॰ हारना) हार गयी।

हारीत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लुटेरा, चोर, चोरी, लुटेरापन, कण्व ऋषि का एक शिष्य।

हारीतकी–संज्ञा, स्त्री, (सं॰) हरीतकी, हरड़।

हार्दिक–वि॰ (सं॰) हृदय-संबंधी, हृदय का, हृदय से निकला, सच्चा, मानसिक, आँतरिक।

हाल–संज्ञा, पु॰ (अ॰) वृत्तांत, समाचार, संवाद, विवरण, ब्यौरा, आख्यान कथा, चरित्र, अवस्था, दशा, माजरा, परिस्थिति, परमेश्वर में तन्मयता, लीनता (मुस॰)। यौ॰ **हाल-चाल, हाल-हवाल**। वि॰ वर्तमान, उपस्थित, विद्यमान, चलता, मौजूद। **फ़िल-हाल**–संप्रति। **मु॰ हाल में**–थोड़े ही दिन बीते या हुये। **हाल का**–हाली, ताज़ा, नया, तुरन्त का। अव्य॰ अभी, इस समय, शीघ्र, तुरंत। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ *(हि॰ हालना)* हिलने की क्रिया या भाव, कंप, पहिये के चारों ओर चढ़ाने का लोहे का बंद।

हाल-गोला–संज्ञा, पु॰ यौ॰ *(हि॰ हाल?+गोला)* गेंद, गोलाहाल।

हालडोल–संज्ञा, पु. दे. यौ. *(हि. हालना+ डोलना)* हलचल, हलकंप, कंप, गति, बिस्तर-बंद, होलडोल, भूकंप, हलाडोल (दे.)।

हालत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) अवस्था, दशा, परिस्थित, कैफ़ियत, आर्थिक या साम्पत्तिक दशा या स्थिति, संयोग।

हालना†*–क्रि. अ. दे. *(सं. हल्लान)* हरकत करना, डोलना, हिलना, झूमना, कांपना।

हाल में–क्रि. वि. दे. *(अ. हाल)* अभी, शीघ्र, जल्दी, थोड़ा समय हुए।

हालरा–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हालना)* लड़कों को झोका देकर हिलाना-दुलाना, लहर, हिलोर, झोका।

हालाँकि–अव्य. (फ़ा.) यद्यपि, अगर्चे, गोकि, ऐसा है फिर भी।

हालाहल–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हलाहल)* समुद्र से निकला अति तीव्र विष, विकट विष, महा विष या गरल।

हालिम–संज्ञा, पु. (दे.) एक पौधा जिसके बीज औषधि के काम आते हैं, चंसुर।

हाली–अव्य. (अ. हाल) हाल का, शीघ्र, जल्दी, ताज़ा, इसी समय का, तुरंत का।

हालीम–वि. (अ.) सहनशील, बुदंयार।

हालों–संज्ञा, पु. दे. *(हि. हालिम)* चंसुर।

हाव–संज्ञा, पु. (सं.) नायिका की संयोग समय की वे स्वाभाविक चेष्टायें जो नायक को लुभाती हैं, वे अनुभावों के अन्तर्गत हैं और संख्या में 11 हैं। **हावन-दस्ता**–संज्ञा, पु. (फ़ा.) खरल-बट्टा, खल-लोढ़ा।

हाव-भाव–संज्ञा, पु. यौ. (सं.) पुरुषों का मन आकर्षित करने वाली स्त्रियों की मनोरम चेष्टायें, नाज़-नखर।

हाशिया–संज्ञा, पु. दे. *(अ. हाशिय:)* मगजी, गोट, पाड़, किनारा, किनारे पर का लेख, नोट, टिप्पणी, हासिया (दे.)। **मु. हाशिये का गवाह**–वह गवाह जिसका हस्ताक्षर दस्तावेज़ के किनारे पर हो। **हाशिया चढ़ाना**–टिप्पणी लगाना, अधिकता करना, कुछ और मिलाना, विनोदार्थ कुछ बात जोड़ना।

हास–संज्ञा, पु. (सं.) हँसी, दिल्लगी, उपहास, ठट्ठा, मज़ाक, परिहास, हँसने की क्रिया या भाव।

हासिल–वि. (अ.) मिला या पाया हुआ, लब्ध प्राप्त। संज्ञा, पु. जोड़ या गुणा करने में इकाई के रखने के पीछे का अंक किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेषाँक के कहीं रखने पर बच रहे (गणि.), पैदावार, उपज, नफ़ा, लाभ, लगान, जमा, गणित की क्रिया का फल।

हासी–वि. (सं. हासिन्) हँसने वाला, हाँसी, हँसी। स्त्री. हासिनी।

हास्य–वि. (सं.) हँसने या उपहास के योग्य जिसे या जिस पर लोग हँसें। संज्ञा, पु. हँसी, हँसने की क्रिया या भाव। स्थायी भावों या रसों में से एक भाव या रस। निन्दायुक्त हँसी, उपहास, मज़ाक, दिल्लगी।

हास्यास्पद–संज्ञा, पु. यौ (सं.) वह व्यक्ति जिसके बुरे ढंग को देख हँसी हो, हँसी करने योग्य।

हा-हंत–अव्य. यौ. (सं.) अति शोक सूचक शब्द।

हा हा–संज्ञा, (अनु.) हँसने का शब्द। यौ. हाहा-हीही हाहा-ठीठी–हँसी-ठट्ठा, बहुत बिनती की पुकार, दुहाई, गुहार। **मु. हाहा करना (खाना)**–अति अनुनय-विनय या विनती करना, अति गिड़गिड़ाना। अव्य. (सं. हा) अति शोक। "हा हा कहि सब लोग पुकारें"–रामा.।

हाहाकार–संज्ञा, पु. (सं.) कोलाहल, कुहराम, घबराहट की चिल्लाहट।

हाहू†*–संज्ञा, पु. (अनु.) कोलाहल, कुहराम, हल्ला-गुल्ला, धम, हलचल।

हाहूबेर–संज्ञा, पु. यौ. *(दे. हाहू+ बेर हि.)* जंगली बेर, झड़बेरी का थेर, एक औषधि, हाऊबेर (प्रान्ती.)।

हिंकरना–क्रि. अ. (दे.) हिनहिनाना।

हिंकार–संज्ञा, पु. (सं.) गाय के रम्भाने का शब्द।

हिंगलाज–संज्ञा, स्त्री. दे. *(सं. हिंगुलाजा)* दुर्गा देवी की मूर्ति जो सिंध देश में है।

हिंगु–संज्ञा, पु. (सं.) हींग, रामठ।

हिंसोट–संज्ञा, पु. दे. *(सं. हिंगुपत्र)* एक जंगली कटीला पेड़ जिसके गोल छोटे फलों से तेल निकाला जाता है, इंगुदी।

हिंछा*‡–संज्ञा, स्त्री. (दे.) इच्छा।

हिंडन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) भ्रमण; संभोग; लेखन।

हिंडिक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) लग्नाचार्य, ज्योतिषी।

हिंडिर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दे॰ 'हिंडीर'।

हिंडी–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा। -कांत,-प्रियतम-पु. शिव।

हिडीर–संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्रफेन; पुरुष, नर; वार्ताकु; रुचक; दाडिम।

हिंडुक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव।

हिंडोरना*–संज्ञा, पु॰ दे॰ 'हिंडोला' –स॰ क्रि॰ दे॰ 'हिंडोलना'।

हिंडोल–संज्ञा, पु॰ हिंडोला; एक राग।

हिंडोलना–संज्ञा, पु॰ 'हिंडोला'। स॰ क्रि॰ आलोडित करना, हँघोलना।

हिंडोला–संज्ञा, पु॰ झूला; पालना; नीचे ऊपर चक्कर खाने वाला एक तरह का झूला, चरखी।

हिंताल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) छोटी जातिका एक जंगल खजूर।

हिन्द–संज्ञा, पु॰ (फा॰) भारतवर्ष, हिन्दुस्तान (यह नाम 'सिंधु' का फारसी और परिवर्तित रूप है)।

हिंदवी–संज्ञा, स्त्री॰ हिंदुस्तान की भाषा (उर्दू-फ़ारसी और कुछ पुराने हिंदी-लेखकों द्वारा प्रयुक्त हिंदी का पुराना नाम)।

हिंदी–वि॰ (फा॰) हिंद, हिंदुस्तान से संबद्ध। पु॰ हिंदनिवासी, भारतवर्ष में रहने वाला। स्त्री॰ भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा (जो उत्तर प्रदेश, बिहार आदि में मुख्य रूप से बोली जाती है)। –दां-वि॰ हिंदी भाषा जानने वाला। -रेवंद-पु॰ एक पौधा जो दवा के काम आता है। **-मु॰ -की चिंदी निकालना**-कुतर्क; व्यर्थ के दोष निकालना।

हिंदुत्व–संज्ञा, पु॰ (फा॰) हिंदुओं का निवास-स्थान, भारतवर्ष; भारतवर्ष का उत्तरी भाग जो गंगा तथा यमुना के द्वाबे के मध्य में पड़ता है, जिसे प्राचीन समय में अंतर्वेद या मध्य देश कहते थे।

हिंदुस्तानी–वि॰ हिंदुस्तान-संबंधी। पु॰ हिंदुस्तान में रहने वाला व्यक्ति, भारतवासी। स्त्री॰ हिंदुस्तान की भाषा; समाज, परिवार आदि में नित्यप्रति के व्यवहार में आने वाली खड़ी बोली का ऐसा स्वाभाविक रूप जिसमें अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत और अंग्रेजी के भी प्रचलित तत्सम तथा तद्भव शब्द हों; खड़ी बोली हिंदी का वह बनावटी रूप जिसमें अरबी, फारसी, उर्दू के तत्सम शब्दों का बाहुल्य तथा संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी शब्दों की विरलता हो। –**संगीत**–पु॰ उत्तर भारत में प्रचलित संगीत; कर्णाटिकी संगीत से भिन्न संगीत।

हिंदुस्थान–संज्ञा, पु॰ दे॰ 'हिंदुस्तान'।

हिंदू–संज्ञा, पु॰ (फा॰) प्रत्यक्षतः या परोक्षतः वेदोक्त विचार के आधार पर बने आचार-व्यवहार, रीति-नीति, समाज-व्यवस्था, धर्म आदि में किसी न किसी रूप में विश्वास करने और उन पर चलने वाला भारतीय। –**पन**–पु॰ दे॰ 'हिंदुत्व'।

हिंदूकुश–संज्ञा, पु॰ (फा॰) अफगानिस्तन के उत्तर में स्थित एक पर्वत-श्रेणी जो हिमालय में मिली हुई है।

हिंदोरना–स॰ क्रि॰ घंघोलना।

हिंदोल–संज्ञा, पु॰ (सं॰) झूला, हिंडोला; श्रावण के शुक्ल पक्ष में होने वाला झूलोत्सव; एक राग; भगवद्‌यात्रा।

हिंदोलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) झूला; पालना।

हिंदोस्तान–संज्ञा, पु॰ दे॰ 'हिंदुस्तान'।

हिंदोस्तानी–वि॰, पु॰, स्त्री॰ दे॰ 'हिंदुस्तानी'।

हियाँ*–अ॰ यहाँ।

हिंस*–संज्ञा, स्त्री॰ घोड़े के हिनहिनाने की आवाज, हिनहिनाहट, हींस।

हिंसक–संज्ञा, वि॰ (सं॰) हिंसा करने वाला; घातक; बुराई करने वाला, हानिकर; शत्रुता करने वाला। पु॰ हिंस्र पशु, खूंखार जानवर; शत्रु; तांत्रिक ब्राह्मण।

हिंसन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मारना; चोट पहुँचाना; सताना; शत्रु।

हिंसना'–अ॰ क्रि॰ हींसना, हिनहिनाना। स॰ क्रि॰ मार डालना; चोट पहुँचाना; सताना; नुकसान पहुँचाना। स्त्री॰ (सं॰) मारने, चोट पहुँचाने की क्रिया।

हिंसनीय–वि॰ (सं॰) हिंसा करने योग्य; मार डालने योग्य; वध्य (जैसे पशु)।

हिंसा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) घात, मारण, हत्या; नाश; चोट या हानि पहुँचाना; क्षति; बुराई; लूट; चोरी। –**कर्म** (न्)–पु॰ नुकसान पहुँचाने वाला काम, बुराई का काम; तंत्र प्रयोग द्वारा मारण, उच्चाटन आदि कार्य। –**प्राणी** (**णिन्**)–पु॰ जंगली, खूँखार जानवर। ***प्राय**–वि॰ हानिकरप्राय। –**रत**,–**रुचि**–वि॰ मारपीट, तोड़फोड़ करने

या उसमें रुचि लेने वाला; बुराई करने में आनंद मानने वाला। **–विहार**–वि. घूम-फिरकर बुराई करने में आनंद मानने वाला।

हिंसात्मक–वि. (सं.) जिसमें हिंसा हो, हिंसायुक्त; बुराई करने वाला, हानिकारक। **–आन्दोलन**–पु. ऐसा आन्दोलन जिसमें तोड़फोड़, आगजनी, मारकाट आदि की जाती है।

हिंसारु–पु. (सं.) हिंस्र पशु; बाघ।

हिंसालु–वि. (सं.) हिंसा करने वाला, हिंसक; हिंसात्मक प्रवृत्ति, प्रकृति वाला। पु. हिंसाशील कुत्ता।

हिंसालुक–संज्ञा, पु. (सं.) हिंसाशील कुत्ता, शिकारी कुत्ता; कटहा कुत्ता।

हिंसित–वि. (सं.) मारा हुआ; आहत; जिसे हानि या क्षति पहुँचाई गई हो। पु. क्षति, नुकसान।

हिंसितव्य–वि. (सं.) हिंसा-योग्य, मार डालने, पीड़ा पहुँचाने, चोट पहुँचाने योग्य।

हिंसीन–संज्ञा, पु. (सं.) जंगली, हिंस्र पशु।

हिंसीर–संज्ञा, वि. (सं.) हानिकारक, बुराई करने वाला; नाशक। पु. व्याघ्र; खग; बुराई करने वाला व्यक्ति।

हिंस्य–वि. (सं.) वध्य; सताये जाने योग्य।

हिंस्र–वि. (सं.) हानिकारक, बुराई करने वाला; घातक; निष्ठुर, निर्दय; भयानक; जंगली, खूँखार। पु. दूसरों के उत्पीड़न में आनंद मानने वाला व्यक्ति; शिकारी जानवर; शिव; भीमसेन; निष्ठुरता, कठोरता। **–जंतु,–पशु**–पु. खूँखार जानवर। **–यंत्र**–पु. कष्ट या क्षति पहुँचाने वाला आला, फंदा; एक अभिचार-मन्त्र।

हिंस्रक–संज्ञा, पु. (सं.) हिंस्र पशु, खूँखार जानवर।

हिंस्रा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अपकार करने वाली स्त्री; मांसी; जटामासी; एलावली; काकादनी; शिरा; वसा।

हिंस्रिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शत्रुओं अथवा डाकुओं की नौका।

हि*–संज्ञा, प्र. एक विभक्ति जो कई कारकों, विशेषकर कर्म और संप्रदान में प्रयुक्त होती थी। अ. ही।

हिअ, हिआ*–संज्ञा, पु. वक्ष, छाती; हृदय।

हिआउ, हिआव*–संज्ञा, पु. हिम्मत, साहस।

हिकमत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) बुद्धिमानी, चतुराई; बुद्धि; चाल, युक्ति; चिकित्साकार्य, हकीमी। **–अमली**–स्त्री. नीति, राजनीति; चतुराई; चाल, जोड़-तोड़।

हिकमती–वि. चालाक, जोड़-तोड़ लगाने वाला।

हिकायत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) कहानी, किस्सा; बात। –गर-वि. कहानी कहने वाला; हाल बताने वाला।

हिकारत–संज्ञा, स्त्री. दे. 'हकारत'।

हिक्कल–संज्ञा, पु. बौद्ध भिक्षुओं का दंड।

हिक्का–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिचकी; हिचकाका रोग; अस्पष्ट ध्वनि; उल्लूक। **–श्वासी(सिन्)**–वि. जिसे हिचकी का रोग हो।

हिक्किा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिचकी; खर्राटा।

हिचक–संज्ञा, स्त्री. सफलता में सन्देह, सामर्थ्यहीनता आदि के कारण किसी काम के करने में मनका रुकना; आगा-पीछा करना, हिचकिचाहट, झिझक।

हिचकना–अ. क्रि. कोई काम करने से पहले, किसी आशंका, असमर्थता आदि के कारण कुछ रुकना, आगा-पीछा करना; हिचकी लेना।

हिचकिचाना–अ. क्रि. मन का आगा-पीछा करना।

हिचकिचाहट–संज्ञा, स्त्री. दे. 'हिचक'।

हिचकिची–संज्ञा, स्त्री. दे. 'हिक्का'; अत्यधिक रोने के बाद एक साथ तीन-चार बार जोर-जोर से साँस लेने की क्रिया। **मु. –बँध जाना,–लगना**–ज्यादा रोने से साँस रुकने लगना। **हिचकियाँ लगना**–प्राणांत के समय वायु का मुख से निकलने के प्रयत्न के कारण ठहर-ठहर कर हिचकी का आना; मृत्यु के निकट होना। **–लेना**–रोते समय साँस का रुक-रुककर निकलना।

हिचर-मिचर, हिचिर-मिचिर–संज्ञा, पु. हिचक; आलस्य, असमर्थता आदि के कारण किसी काम की टालने, न करने की प्रवृत्ति, टाल-मटोल।

हिजड़ा–संज्ञा, पु. नपुंसक, खोजा (यूनक)।

हिजरत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) संकट में देशत्याग। हिजरी सन का प्रारंभ।

हिजरी–संज्ञा, पु. (अ.) मुसलमानी संवत् जो मुहम्मद के मक्का से मदीना पलायन करने की तिथि-15 जुलाई सन् 622-से आरंभ होता है; हिज्रतवाला।

हिजा–संज्ञा, स्त्री. (अ.) निंदा; अपवाद; बुराई; अक्षरों क

मात्रा के साथ उच्चारण। हिज्जे।

हिजाज–संज्ञा, पु. (अ.) अरब का एक भाग।

हिजाब–संज्ञा, पु. (अ.) परदा, ओट; लज्जा। **मु.** –**उठना**–परदा, रोक न रहना; निर्लज्ज हो जाना।

हिज्ज, हिज्जल–संज्ञा, प. (सं.) वृक्षविशेष।

हिज्जे–संज्ञा, पु. (अ.) किसी शब्द में आए हुए वर्णों तथा मात्राओं को अलग-अलग कहना, वर्ण-विवृति, अक्षरी; 'स्पेलिंग'। **मु.**– **करना**–अक्षरों को जोड़ना; किसी मामले में खाहमखाह हुजतें निकालना। –**निकालना**–टुकड़े-टुकड़े करना; एतराज करना। –**पकड़ना**–गलती निकालना।

हिज्र–संज्ञा, पु. (अ.) वियोग, विरह, जुदाई। –**नसीब**–वि. जिसके भाग्य में वियोग ही वियोग हो।

हिटकना–स. क्रि. दे. 'हटकना'।

हिटलर, एडोल्फ–संज्ञा, पु. 1889-1945; जर्मनी का अधिनायक–चांसलर 1933 से 1945 तक।

हिडंब–संज्ञा, पु. (सं.) एक विशालकाय राक्षस जिसे भीम ने मारा था। –**जित्**–, –**द्विट्(ष्)**,–**निसूदन**, –**भिद्**, –**रिपु**–पु. भीम।

हिडिंबा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक राक्षसी जो हिडिंब की बहन थी। (इसने अपने को सुन्दर स्त्री के रूप में परिवर्तित कर भीम से ब्याह किया। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम घटोत्कच था)। –पति, –रमण–पु. भीम;

हिडोरा, हिडोला–संज्ञा, पु. हिंडोला।

हित–वि. (सं.) रखा हुआ; गृहीत, उपयुक्त; उचित, अच्छा; लाभदायक, उपयोगी; अनुकूल, स्वास्थ्यकर; सद्भावपूर्ण; प्रेषित; प्रेरित; प्रस्थित, गया हुआ; शुभ, मंगलकारक; निर्दिष्ट। पु. मित्र; संबंधी; भलाई चाहने वाला; लाभ, भलाई; उपयुक्त वस्तु; कल्याण, मंगल; सद्भाव, प्रेम। अ. (हिं.) के निमित्त, के लिए। –कर–वि. मित्र-सा व्यवहार करने वाला, हितेच्छु; उपयोगी, लाभप्रद; आरामदेह, स्वास्थ्यवर्धक। **कर्ता(र्तृ)**–उपकार करने वाला। पु. उपकारी व्यक्ति। –काम–वि. हितेच्छु, **मंगलाकांक्षी**। –**काम्या**–स्त्री. दूसरे के लिए मंगलकामना। –**कारक**,–**कारी(रिन्)**,– कृत–वि. दे. 'हितकर'। –**चिंत**–वि. किसी की भलाई के लिए सोचने, बिचारने, चिंतना करने वाला।–**चिंतन** –पु. किसी की भलाई, उपकार की बात सोचना, किसी की भलाई चाहना। –**प्रणी**–पु. गुप्तचर। –**प्रेप्सु**–वि. दे. 'हितकाम'। –**बुद्धि**–स्त्री. मैत्रीपूर्ण भावना। वि. सद्भावना वाला। –**मित्र**–पु. भलाई की बात कहने वाला; सत्परामर्श देने वाला। –**हरिवंश**–पु. (सं.) राधावल्लभी सम्प्रदाय के संस्थापक एक प्रसिद्ध महात्मा, ब्रज भाषा के एक कवि (सं. 1559-1609)।

हितक–संज्ञा, पु. (सं.) बच्चा, पशुशावक।

हितता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भलाई।

हितवना*–अ. क्रि. हित, मित्र जैसा आचरण करना।

हितवार*–संज्ञा, पु. प्रेम, स्नेह।

हिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) प्रणाली, नाली; शिराविशेष। –**भंग**–पु नालीका भंग हो जाना।

हिताई–संज्ञा, स्त्री. संबंध, रिश्ता; संबंधी का घर।

हिताकांक्षी(क्षिन्)–वि. (सं.) भलाई चाहने वाला।

हिताधायी(यिन्)–वि. (सं.) हितकर।

हिताधिकारी–संज्ञा, पु. (बेनीफिशियरी) वह जिसे किसी वस्तु, व्यवस्था आदि से लाभ हो रहा हो या होने की संभावना हो।

हिताना*–अ. क्रि. मित्र सदृश होना, भलाई करने वाला होना; प्रेमयुक्त होना, किसी की ओर प्रेम की दृष्टि होना; प्रिय लगना, अनुकूल मालूम पड़ना, अच्छा प्रतीत होना।

हितार्थी(र्थिन्)–वि. (सं.) मंगलाकांक्षी, हितेच्छु।

हितावह–वि. (सं.) कल्याणकारी।

हिताहित–संज्ञा, पु (सं.) भलाई-बुराई, मंगल-अमंगल; लाभालाभ। हिती–वि. हितैषी, भलाई चाहने वाला। पु. हितैषी व्यक्ति, मित्र, दोस्त।

हितु, हितू*–संज्ञा, पु. हतेच्छु व्यक्ति, मित्र, सखा, दोस्त; संबंधी।

हितेच्छा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हितकामना; किसी की भलाई की इच्छा।

हितेच्छु–वि. (सं.) भलाई चाहने वाला, मंगलकामना करने वाला।

हितैषणा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हितेच्छा।

हितैषिता–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हितैषी होने का भाव, किसी की हितकामना-की वृत्ति।

हितैषी(विन्)–वि. (सं.) हितेच्छु। पु. मित्र।

हितोक्ति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) सत्परामर्श, अच्छी, नेक सलाह।

हितोपदेश–संज्ञा, पु. (सं.) हितकारी उपदेश, सत्यपरामर्श, नेक सलाह; विष्णुशर्माकृत नीतिशास्त्र-संबंधी एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

हित्ती–संज्ञा, पु. पश्चिमी एशिया की एक प्राचीन जाति, हिटाइट; इस जाति की भाषा।

हितौनाू*–अ. क्रि. दे. 'हिताना'।

हिदायत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) मार्ग-प्रदर्शन, रहनुमाई; आदेश (इन्सट्रक्शन)। **–कार**–वि. अनुदेशक, निर्देशक, निर्देष्टा। **–वामा**–पु. हिदायतों, आदेशों आदि की किताब।

हिद्दत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) तेजी, तीव्रता; गर्मी; क्रोध।

हिनकाना–अ. क्रि. (घोड़े का) हिनहिनाना।

हिनवाना–संज्ञा, पु. तरबूज।

हिनहिनाना–अ. क्रि. (घोड़े का) हींसना।

हिनहिनाहट–पु. स्त्री. (घोड़े के) हींसने की आवाज।

हिना–संज्ञा, स्त्री. (अ.) मेंहदी। **–बंदी**–स्त्री. मुसलमानों में होने-वाली ब्याह की एक रस्म। **–का चोर**–हाथ में वह सफ़ेद जगह जहाँ मेंहदी न लगी हो (स्त्री.)।

हिनाई–वि. मेंहदी के रंग का। स्त्री. पीलापन लिए हुए सुर्ख रंग; हीनता; मानहानि। **–कागल**–पु. एक तरह का कागज़।

हिप्पी–अमेरिका के समाजत्यक्त ऐसे लोगों का समूह जो नशीले पदार्थों के प्रयोग द्वारा आत्मसाक्षात्कार करने का ढोंग करता है। इनमें अन्य यूरोपीय देशों के भी अनेक युवक सम्मिलित हैं। ये सभी प्रकार के विधि-निषेधों को तोड़ना अपना उद्देश्य मानते हैं।

हिफाजत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) रक्षा, रखवाली, निगरानी, वचाव। –खुद इख्तियारी–स्त्री. आत्मरक्षा।

हिफज–संज्ञा, पु. (अ.) हिफाजत, रक्षा। वि. कंठस्थ, बरजबान (करना, होना)। **–सेहत**–पु. स्वास्थ्यरक्षा।

हिफजान–संज्ञा, पु. (अ.) हिफाजत, रक्षा; संरक्षण।

हिबुक–संज्ञा, पु. (सं.) चौथा लग्न, पाताल।

हिब्बा–संज्ञा, पु. दे. 'हब्बा'; दान, नज़र। **–नामा**–पु. दानपत्र।

हिमंचल–संज्ञा, पु. दे. 'हिमाचल'।

हिमंतू*–संज्ञा, पु. दे. 'हेमंत'।

हिम–वि. (सं.) ठंडा, शीतल। पु. बर्फ़, पाला; शीत, ठंडक; जाड़ा; हेमंत ऋतु; हिमालय पर्वत; चंदन; चंद्रमा; नवनीत, मक्खन; कपूर; मोती; पद्मकाष्ठ; कमल; रंग, राँगा; रात्रि; एक वर्ष , भूभाग। **–उपल**–पु. ओला, पत्थर। **–ऋतु**–स्त्री. जाड़े का मौसम, हेमंत ऋतु। **–कण**–पु. ओस की बूँदें; बर्फ़ के कण। **–कर**–पु. चंद्रमा; कपूर। वि. ठंडक लाने वाला। **–॰तनय**–पु. बुध ग्रह। **–कारी मिश्रण**–पु. (फ्रीजिंग मिक्शचर) कुछ लवण बर्फ़ के चूरे के साथ मिलाए जाने पर बर्फ़ का ताप घटा देते हैं। अतः इस मिश्रण को हिमकारी मिश्रण कहते हैं। यह कुलफी की बर्फ आदि को जमाने के काम आता है। **–किरण**–पु. चंद्रमा। **–किरीटिनी**–स्त्री. (सं. हिम का मुकुट धारण करने वाली, भारत माता। **–कूट**–पु. शिशिर ऋतु; हिमालय पर्वत; हिमालय की चोटी। **–खंड**–पु. ओला। **–गर्भ**–वि. वर्फ़ से भरा हुआ। **–गह्वर**–पु. पत्थरों के बहने के कारण बरफ़ीले पहाड़ों में बना गहरा गोलाकर गड्डा। **–गिरि**–पु. हिमालय पर्वत। **–॰सुता**–स्त्री. पार्वती। **–गु॰**पु. चंद्रमा। **–गृह,-गृहक**–पु. वह कमरा जो ठंढक लाने वाली चीज़ों के जरिए ठंडा बनाया गया हो; सर्दख़ाना। **–गौर**–वि. वर्फ़ जैसा सफ़ेद। **–घ्न**–वि. हिम का निवारण करने वाला। **–ज**–पु. मैनाक पर्वत। वि. ठंडक से उत्पन्न; हिमालय में उत्पन्न। **–जा**–स्त्री. पार्वती गिरि-सुता; शची; क्षीरिणी वृक्ष, खिरनी का पेड़। **–ज्वर**–जाड़ा-बुखार। **–झंझावात**–पु. बरफ़ीला तूफ़ान (ब्लिजर्ड, स्नो स्टॉर्म)। **–झंटि,-झटि**–स्त्री. पाला। **–तैल**–पु. कपूर के योग से बना हुआ तेल। **–दंश**–पु. दे. 'हिमाघात'। **–दीधिति**–पु. चंद्रमा। **–दुग्धा**–स्त्री. पाला। **–द्रुट(ह्)**–पु. सूर्य। **–द्रुम**–पु. महानिंब वृक्ष। **–घर**–पु. हिमालय पर्वत। **–धातु**–पु. हिमालय पर्वत। **–धामा(मन्)**–पु. चंद्रमा। **–ध्वस्त**–वि. पाले का मारा हुआ। **–नद**–पु. (ग्लेशियर) ऊँचे पहाड़ों की घाटी में बर्फ़ की विशाल राशि जो धीरे-धीरे ढाल की ओर खिसकती जाती है।

शुरू–हिमनद के प्रवाह का वेग लगभग एक फुट प्रतिदिन होता है। –**पात**–पु. पालेका पड़ना; ओले का गिरना।– **पुरुष**–पु. दे. 'हिममानव', येती। –**प्रस्थ**–पु. हिमालय।–**बालुक,–वालुक**–पु.,– **बालुका,–वालुका**–स्त्री. कर्पूर। –**भानु**–पु. चंद्रमा। –**भूभृत्**–सु. हिमालय पर्वत। –**मय वृष्टि**–स्त्री. (स्लीट) वह वर्षा जिससे पानी के साथ-साथ ओलों या हिम की भी वर्षा हो। –**मयूख**–पु. चंद्रमा। –**मानव**–पु. हिमालय की बरफ़ीली चोटियों पर प्राप्त बड़े-बड़े पदचिह्न वाला एक कल्पित रहस्यमय जंतु, येती (स्नो मैन)। –**युक्त**–पु. एक तरह का कपू। –**रश्मि,–रुचि**–पु. चंद्रमा। –**रेखा**–स्त्री. (स्नोलाइन) पर्वतों की ऊँचाई पर मानी गई वह रेखा जिसके ऊपर बरफ़ निरंतर जमी रहती है, गर्मी में नहीं पिघलती। –**वारि**–पु. ठंडा पानी। –**वृष्टि**–स्त्री. पाला पड़ना; ओले गिरना। –**शर्करा**–स्त्री. यवनाल निकली चीनी। –**शिखरी (रिन्)**–पु. हिमालय। –**शिलास्खल**– पु. (एवेलांश) हिमराशि का मिट्टी, पत्थर आदि से मिलकर बड़ी चट्टान जैसा रूप धारण करने के बाद वेगपूर्वक नीचे खिसक पड़ना। –**शीतल**–वि. बहुत ठंडा; जमा देने वाला (शीत)। –**शुभ्र**–वि. बर्फ जैसा सफ़ेद। –**शैल**–पु. हिमालय पर्वत; समुद्र में पहाड़ों की तरह तैरती हुई बरफ़ की चट्टानें (आइस बर्ग)। –**जा**–स्त्री पार्वती। –**श्रथ,–श्रथन**–पु. बर्फ़ का पिघलना। – **संघात**–पु.,–**संहित**–स्त्री. बर्फ़ का ढेर। –**सर (स्)**–पु. ठंडा पानी। –**सुत्**–पु. चंद्रमा। –**हानकृत्** –पु अग्नि। –**हासक**–पु. हिंताल वृक्ष, खजूर का पेड़।

हिमक–संज्ञा, पु. (सं.) विककत वृक्ष।

हिमचल–संज्ञा, पु. (सं.) मोर्ती।

हिमवान (वत्)–संज्ञा, पु. (सं.) हिमालय; कैलास। वि. बर्फ़ीला। –**(वत्) कुक्षि**–स्त्री. हिमालय की दरी। –**पुर** –पु. हिमालय की राजधानी, ओषधिप्रस्थ। –**प्रभव**– वि. हिमालय से उत्पन्न। –**सुत**–पु. मैनाक। –**सुता**–स्त्री. पार्वती; गंगा।

हिमांक–संज्ञा, पु. (सं.) कपूर; (फ्रीजिंग पाइंट) वह तापमान जहाँ पानी जमकर बर्फ़ बनने लगता है (फारेनहाइट का 32 अंश अथवा सेंटीग्रेड तापमापक यंत्र में शून्य अंश)।

हिमांत–संज्ञा, पु. (सं.) जाड़े के मौसम की समाप्ति।

हिमांबु, हिमांभ (स्)–संज्ञा, पु. (सं.) ठंडा पानी; ओस।

हिमांशु–संज्ञा, पु. (सं.) चंद्रमा; कपूर।

हिमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हेमंत; छोटी इलायची; रेणु का; भद्रमुस्ता; नागमुस्ता; पृक्का; दुर्गा।

हिमाक़त–संज्ञा, स्त्री. दे. 'हमाक़त'।

हिमागम–संज्ञा, पु. (सं.) जाड़े का आरंभ।

हिमाघात–संज्ञा, पु. (फॉस्ट बाइट) अतिशय ठण्ड के सम्पर्क में आने पर शरीर के ऊतकों का प्रभावित होना, जिससे चमड़ी पर सूजन, जलन होती है और उसमें विगलन या सड़न शुरू हो जाती है; हिमदंश।

हिमाचल–संज्ञा, पु. (सं.) हिमालय पर्वत।

हिमाच्छादित–वि. (सं.) बरफ़ से ढका हुआ।

हिमाच्छन्न–वि. (सं.) तुषारावृत।

हिमाद्रि–संज्ञा, पु. (सं.) हिमालय पहाड़– **जा**–स्त्री. गंगा; पार्वती; खिरनी। –**तनया**–स्त्री. दुर्गा; गंगा।

हिमानिल–संज्ञा, पु. (सं.) सर्द हवा, बर्फ़ीली हवा।

हिमानी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिम–समूह; बरफ़ का ढेर जो पहाड़ पर से खिसकता हुआ नीचे आता है; पाले का समूह, ओसकण–समूह; हिमशर्करा। –**विशद**–वि. बर्फ़ जैसा सफ़ेद।

हिमापत- संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि।

हिमाब्ज–संज्ञा, पु. (सं.) नील कमल।

हिमाभ–वि. (सं.) बर्फ जैसा।

हिमाम्र–संज्ञा, पु. (सं.) कपूर।

हिमायत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) तरफदारी; मदद; रखवाली। –**गर**–**वि**. पक्षपाती।

हिमायती–वि. तरफदारी करने वाला, पक्ष ग्रहण करने वाला।

हिमाराति–संज्ञा, पु. (सं.) सूर्य; अग्नि; अर्क वृक्ष; चित्रक वृक्ष।

हिमारि–संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि।

हिमारुण–वि. (सं.) जो पाले से भूरा-सा हो गया हो।

हिमार्त–वि. (सं.) पाले से ठिठुरा, जमा हुआ।

हिमाल–संज्ञा, पु. (सं.) हिमालय।

हिमालय–संज्ञा, पु. (सं.) भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर स्थित एक पर्वतमाला (इसकी चोटियाँ बहुत ऊँची-ऊँची हैं और उन पर बराबर वर्फ़ जमी रहती है। सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट है जिसकी ऊँचाई 29,002 फुट है और जो संसार की सबसे ऊँची चोटी है); श्वेत खदिर वृक्ष। –**सुता**–स्त्री. पार्वती।

हिमावती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वर्णक्षीरी।

हिमाविल–वि. (सं.) वर्फ से ढका हुआ।

हिमाहति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिमपात।

हिमाह्वय–संज्ञा, पु. (सं.) कपूर; कमल।

हिमि*–संज्ञा, पु. दे. 'हिम'।

हिमिका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पाला, तुषार।

हिमित–वि. (सं.) जो बर्फ़ में परिणत हो गया हो।

हिमी–वि. (सं.) हिम सम्बन्धी (फॉस्टी)। –**वर्षा**–स्त्री. वह वर्षा जिसमें पानी के साथ ओले भी बरसें (स्लीट)।

हिमीकर–वि. (रिफ्रीजरेटर) हिमकी तरह (ठंडा) बना देने वाला। पु. (खाद्य पदार्थों की) ठंडा बनाकर सड़ने या नष्ट होने से बचाने का यंत्र, प्रशीतक।

हिमेश–संज्ञा, पु. (सं.) हिमालय।

हिमोत्तरा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) कपिल द्राक्षा।

हिमोपल–संज्ञा, पु. (सं.) जाड़ों में वर्षा के साथ गिरनेवाले ओले।

हिमोत्पन्ना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दे. 'हिमशर्करा'।

हिमोद्भवा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) शटी; क्षीरिणी।

हिमोस्र–संज्ञा, पु. (सं.) चंद्रमा।

हिम्न–संज्ञा, पु. (सं.) वृद्ध ग्रह।

हिम्मत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) साहस; वीरता, बहादुरी; पौरुष, पराक्रम। –**वर**–स्त्री. **साहसी**। –**शिकनु**–वि. उत्सा भंग करने वाला। –**मु.**–**पड़ना**–साहस होना। –**हारना** –पस्त हो जाना, साहस छोड़ना, किसी काम के साहस का न रह जाना।

हिम्मती–वि. साहसी; बहादुर, वीर; पराक्रमी, पुरुषार्थी।

हिम्य–वि. (सं.) सर्द; बर्फ़ीला; बर्फ़ से ढका हुआ; बहुत ठंडा।

हिय*–संज्ञा, पु. हृद् मन; वक्ष-स्थल, सीना। **मु.**–**हारना**– हिम्मत हारना, शारीरिक या मानसिक दृष्टि से थक जाना।

हियरा*–पु. दे. 'हिय'।

हियाँ†–अ. यहाँ।

हिया–संज्ञा, पु. दे. 'हिय'। –**मु.**–**जलना**–बहुत गुस्सा होना। –**ठंडा होना**–कलेजा ठंडा होना, हृदय शांत होना, सुख, आनंद का अनुभव होना। –**फटना**–कलेजा फटना, शोक, दुःख, पीड़ा के अतिरेक का अनुभव होना। –**भर आना**–करुणार्द्र होना, शोककातर होना, दुखार्त होना। –**भर लेना**–शोक, दुःख पीड़ा आदि के कारण लम्बी साँस लेना; शोक, दुःख पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति करना। –**शीतल होना**–दे. 'हिया ठंडा होना'। –**(ये) का अंधा**–भीतरी आँखों से हीन, अज्ञात; मूर्ख, बेवकूफ़। –**की फूटना**–सत्-असत् का विवेक न रहकर ज्ञान का रहना। –**पर पत्थर धरना**– सब्र कर लेना। –**लोन-सा लगना**–कटे पर लोन लगने की तरह मन में बहुत पीड़ा होना। –**लगना**–गले से लगना, भेंटना, आलिंगन करना।

हिया*–संज्ञा पु. साहस। **मु.** –**खुलना**–धड़का खुलना, साहस, दृढ़ता का आना। –**पड़ना**–हिम्मत पड़ना।

हिरंगु–संज्ञा, पु. (सं.) राहु।

हिर–संज्ञा, पु. (सं.) पट्टी; मेखला।

हिरकना*–अ. क्रि. धीरे-धीरे परचना; किसी व्यक्ति या वस्तु से सटना, चिपकना।

हिरकाना*–स. क्रि. परचाना; निकट ले जाना, सटाना, स्पर्श कराना।

हिरगुनी†–संज्ञा, स्त्री. एक प्रकार की बढ़िया कपास।

हिरण–संज्ञा, पु. (सं.) स्वर्ण; वीर्य, शुक्र; वराटक, कौड़ी; *हिरन, मृग।

हिरण्मय–वि. (सं.) सोने का, सोने का बना; सुनहरा। संज्ञा पु. ब्रह्मा; एक ऋषि; अग्नीध्रका एक पुत्र; संसार के नौ खंडों में से एक। –**कोश**–पु. सूक्ष्म और शरीर, आत्मा के सप्त आवरणों में से एक जो अंतिम है।

हिरण्य–संज्ञा, पु. (सं.) सुवर्ण; स्वर्णपात्र; चाँदी; कोई बहुमूल्य धातु; संपत्ति; वीर्य, शुक्र, कौड़ी; एक मान; नित्य पदार्थ; धतूरा; तेज़; अमृत; हिरण्मय वर्ष; एक दैत्य; अग्नीध्रका एक पुत्र। वि. स्वर्ण निर्मित। –**कंठ**–वि.

सोने के कंठ वाला। —**कक्ष**—वि. सुनहला करमबंद धारण करने वाला। —**कर्ता (र्तृ)**—पु. सुनार। —**कवच**— वि. सोने के कवच वाला। पु. शिव। —**कशिपु**—पु. कश्यप और अदिति का पुत्र और प्रसिद्ध भक्त प्रह्लाद का पिता जिसे विष्णु ने नरसिंह के रूप में खंभे से प्रकट होकर मारा था। —**कामधेन**—स्त्री. स्वर्ण निर्मित कामधेनु (जिसका दान सोलह महादारों में परिगणित है)। —**कार**—पु. सुनार। —**कृतचूड**—पु. शिव। — **कृत्**—पु. अग्नि। —**केश**—वि. सोने के बालों वाला। पु. विष्णु। —**खादि**—वि. सोने का काँटा या क्लिप लगाने वाला। —**गर्भ**—पु. ब्रह्मा (सोने के अंडे से उत्पन्न होने के कारण); विष्णु; सूक्ष्म शरीर धारण करने वाली आत्मा, सूत्रात्मा; एक लिंग। वि. ब्रह्मा-संबंधी। —**गर्भा**— स्त्री. एक नदी। —**द**—पु. समुद्र। वि. सुवर्ण देने वाला। —**दा**—स्त्री. पृथ्वी; एक नदी। —**नाम**—पु. मैनाक पर्वत; विष्णु; एक तरह का मकान जिसमें पूरब, पश्चिम और उत्तर बड़े-बड़ कमरे हों। —**पर्वत**—पु. एक पहाड़। —**पुर**—पु. असुरों का एक आकाशीय नगर। —**पुरुष**— पु. स्वर्ण निर्मित पुरुष-प्रतिमा। —**पुष्पी**—स्त्री. एक पौधा। —**बाहु**—पु. शिव; सोन नद; एक नागासुर। —**बिंदु**—पु. अग्नि' एक पर्वत; एक तीर्थ। —**माली (लिन्)**—वि. सोने की माला धारण करने वाला। —**रशन** —वि. सोने की करधनी पहनने वाला। —**रेता (तस्)**—पु. अग्नि; सूर्य; शिव; चित्रक वृक्ष; बारह आदित्य में से एक। वि. स्वर्ण बीज वाला। —**रोमा (मन्)**—पु. एक लोकपाल (मरीचि के पुत्र); भीष्मक। —**लोमा (मन्)**— वि. पाँचवें मन्वतर के एक ऋषि। —**वर्चस**—वि. सोने की सी कांति वाला। —**वर्णा**—स्त्री. नदी। —**वस्त्र**—पु. वैदिक काल में बनाया जाने वाला सुनहल तारों का एक कपड़ा। —**वान्**—वि. सोने वाला, जिसके पास सोना हो। पु. अग्नि। —**वाह**—पु. सोन नद; शिव। —**बिंदु**—पु. अग्नि, एक तीर्थ, एक पर्वत। **वीर्य**—पु. अग्नि; सूर्य। —**शकल**—पु. सोने का छोटा टुकड़ा। —**शृंग**—पु. एक पर्वत। —**ष्ठीव**—पु. एक पर्वत। —**ष्ठीवी-(विन्)**—वि. सोना वमन करने वाला (एक पक्षी)। - **संकाश**—वि. सोने की तरह चमकने वाला। —**सर (स्)**—पु. एक तीर्थ। —**स्याल**—पु. सोने क कटोरा। —**स्रक्**—स्त्री. सोने की माला या तिकड़ी।

हिरण्यक—संज्ञा, पु. (सं.) स्वर्ण की इच्छा।

हिरण्यय—वि. (सं.) सोने का (दे.)।

हिरव्यव—संज्ञा, पु. (सं.) देवसंपत्ति, देवस्य; स्वर्णाभूषण।

हिरव्या—संज्ञा, स्त्री. (सं.) अग्नि की एक जिह्वा।

हिरव्याक्ष—संज्ञा, पु. (सं.) हिरण्यकशिपु का यमज भाई जिसे विष्णु ने वराह का रूप धारण कर मारा था। —**रिपु,**—**हर**—पु. विष्णु।

हिरण्याश्व—संज्ञा, पु. (सं.) सोलह महादानों में से एक जिसमें सोने का घोड़ा दान किया जाता है। —**रथ**—पु. दानार्थ स्वर्ण निर्मित अश्व और रथ (सोलह महादानों में से एक)।

हिरदय*—संज्ञा, पु. दे. 'हृदय'।

हिरदा*—संज्ञा, पु. हृदय।

हिरदावल—संज्ञा, पु. घोड़े के सीने पर की भौंरी जो अशुभ है।

हिरन—संज्ञा, पु. हरिण, मृग। —**खुरी**—स्त्री. एक बरसाती लता। —**मूसा**—पु. चूहा की तरह का जंतु जो हिरन की तरह छलाँगें भरता है। **मु.** —**हो जाना**—चंपत हो जाना, लुप्त हो जानपा; तुरत भागकर दूर हो जाना।

हिरना†—अ. क्रि. हरण होना, छीना जाना। पु. 'हिरन'।

हिरनाकुल*—संज्ञा, पु. दे. 'हिण्यकशिपु'।

हिरनौटा—संज्ञा, पु. मृगशावक, हिरन का बच्चा।

हिरफ़त—संज्ञा, स्त्री. (अं.) पेशा; हुनर; चालाकी, धूर्तता। —**बाज**—वि. चालाक, चालबाज।

हिरमज़ी हिरमिज़ी—संज्ञा, स्त्री. (फा.) एक तरह की लाल मिट्टी जिससे दीवार आदि रँगते हैं; एक तरह का लाल फूल जिससे कपड़े रँगते हैं; एक रंग।

हिरस†—संज्ञा, स्त्री. दे. 'हिर्स'।

हिरा—संज्ञा, स्त्री. (सं.) शिरा।

हिरात—संज्ञा, पु. अफ़गानिस्तान सीमा के पास का एक स्थान।

हिराती—वि. हिरात-संबंधी। पु. एक तरह का घोड़ा (जो हिरात में होता है)।

हिराना—अ. क्रि. खो जाना; लुप्त हो जाना, गायब हो जाना; अस्तित न रह जाना, अभाव होना; सुध-बुध खो देना,

अपने को भूल जाना; स्तब्ध रह जाना, अत्यंत आश्चर्यान्वित होना; नष्ट होना। स. क्रि. याद न रखना, विस्मरण करना, भूलना; ढूँढ़वाना खाद की गरज से भेड़ आदि पशुओं को खेत में रखना।

हिरावल–पु. दे. 'हरावल'।

हिरसा–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) डर, भय, दशहत; नैराश्य, मायूसी। वि. दे. **हिरासाँ**'।

हिरासत–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) निगरानी, पहरा; नज़रबंदी; अभिरक्षा, परिरक्षा (कस्टडी); निगरानी में रखने का स्थान; हवालात (लॉक अप)। **मु. –में करना,–में लाना**–हवालात में रखना।

हिरासाँ–वि. (फ़ा.) भीत, डरा हुआ, त्रस्त; निराश, मायूस।

हिरोदक–संज्ञा, पु. (सं.) रक्त।

हिरौल*–संज्ञा, पु. दे. 'हरावल'।

हिर्ज़–संज्ञा, पु. (अ.) तावीज, रक्षा कवच; दृढ़ स्थान। –**(ज़ें)** पु. प्राणों की रक्षा का कवच; अत्यन्त प्रिय वस्तु।

हिर्फ़त–स्त्री. (अ.) दे. 'हिरफ़त'।

हिर्म–वि. (अ.) खानपान के लिए निषिद्ध पदार्थ।

हिर्मा–संज्ञा, पु. (अ.) निराशा, दुर्भाग्य। –**ज़दा**–वि. अभागा, निराश।

हिर्मास–संज्ञा, पु. (अ.) शेर, सिंह।

हिर्स–संज्ञा, स्त्री. (अ.) लोभ, लालच; तृष्णा, हवस। **मु. –करना,–होना**–लालच होना। –**छूटना**–लालच होना। –**दिलाना, देना**–लालच देना।

हिर्साहा–वि. लालची।

हिर्साहिर्सी–अ. दूसरों को करते देखकर, देखा-देखी।

हिर्सी–वि. लालची। –**टट्टू**–पु. ऐसा लालची आदमी जिसे दूसरों की देखा-देखी लालच आ जाए।

हिलकना† –अ. क्रि. 'हिहकना'; हिचकना; सिसकना। स. क्रि. **सिकोड़ना**।

हिलकी*–संज्ञा, स्त्री. हिचकी–सिसवाने की क्रिया, सिसक; उमंग, लहर।

हिलकोर–संज्ञा, पु. जल की तरंग, हिल्लोल।

हिलकोरना–सं. क्रि. जल को तरंगित करना, पानी में लहरें उठाना।

हिलकोरा–संज्ञा, पु. दे. 'हिलकोर'। **मु. –देना**–पानी को धक्के से हिलाना, तरंगित करना। –**लेना**–तरंगित होना।

हिलग–संज्ञा, स्त्री. परचने का भाव, मेलजोल; प्रेम।

हिलगना–अ. क्रि. परचना; मेलजोल होना; हिरकना; चिपकना; उलझना, फँसना; अटकना, ठहरना, रुकना; पास आना।

हिलगाना–स. क्रि. परचाना; मेलजोल कायम करना; फँसाना, उलझाना; पास लाना।

हिलना–अ. क्रि. अस्थिर होना, चंचल होना; (मन का) डिकना; किसी स्थान पर स्थिर, स्थित, जमी, अवस्था से इधर-उधर होना; किसी स्थान से इधर-उधर जाना, डोलना, होना; काँपना; झूमना; ढीला होना; सरकना; जल में प्रविष्ट होना; परचना, परिचित होना। **मु. हिल जाना**–परच जाना। **हिलना-डोलना**–चंचल होना; घूमना-फिरना; काम-धाम करना; अद्यम, प्रयत्न, कोशिश करना। –**मिलना**–घुलना-मिलना, एक ही जाना; भेंट-मुस्लाकात करते रहना।

हिलमोचि, हिलमोचिका, हिलमोची–संज्ञा, स्त्री (सं.) एक शाक।

हिलसा–संज्ञा, स्त्री. एक तरह की मछली।

हिलाना–स. क्रि. चंचल करना; अस्थिर करना, किसी चीज़ को इधर-उधर करना, डोलना; किसी वस्तु या व्यक्ति को किसी स्थान से हटाना, खिसकाना; कँपाना; जल में प्रविष्ट कराना; परचाना; किसी वस्तु को ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ ले जाना, डोलाना।

हिलाल–संज्ञा, पु. (अ.) नया चाँद; नया और आख़िरी चाँद; पगड़ी की उठी हुई ऐंठन।

हिलोर–संज्ञा, स्त्री. हिल्लोल, जल-तरंग।

हिलोरना–स. क्रि. 'हिलकोरना';†दे. 'हलोरना'।

हिलोरा–संज्ञा, पु. हिलोर। **मु.–लेना**–हिलकोरा लेना, तरंगित होना।

हिलोल–संज्ञा, पु. हिल्लोल, लहर।

हिल्लोल–संज्ञा, पु. (सं.) लहर; मन की तरंग; हिंडोल राग; एक प्रकार का रतिबंध, धुन, सनक।

हिल्वला–संज्ञा, स्त्री. (सं.) मृगशिरा नक्षत्र के सिर के पास के पाँच छोटे तारे।

हिवंचल†–संज्ञा, पु. हिमालय; पाला, हिम; बरफ।

हिवाँर–संज्ञा, पु. हिम, पाला। **मु. –होना**–बहुत शीतल

होना।

हिस, हिस्स–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अनुभूति; किसी ज्ञानेंद्रिय द्वारा जानना, संवेदन; गति, चेष्टा।

हिसका–संज्ञा, स्त्री॰ ईर्ष्या, डाह; होड़।

हिसाब–संज्ञा, पु॰ (अ॰) गिनती, गणना; किसी आर्थिक व्यवहार का विवरण, लेन-देन, खरीद-वेची आदि का ब्यौरा, लेखा; गणित विद्या; गणित का प्रश्न; भाव, निर्ख, नियम, रीति; हाल; ढंग, तरीका; लेन-देन; राय, खयाल, समझ; किफायत। -**किताब–पु॰** आर्थिक व्यवहार का ब्यौरा, लेखा; लेन-देन; बही-खाता; (ला॰) ढंग, तरीका। –**चोर**–पु॰ वह जो हिसाब करने में कोई रकम दबा ले। –**दाँ**–वि॰ हिसाब जानने वाला, गणितज्ञ। –**दार**– पु॰ हिसाब रखने वाला। –**वही**–स्त्री॰ वह वही जिसमें आमदनी खर्च का ब्यौरा लिखा जाए। **मु॰ –करना**– देना पावना, समझना, जोड़ना; देना-पावना चुकता करना। –**चुकता करना**–देना चुका देना। –**तलब करना**– हिसाब माँगना, हिसाब समझाने को कहना। –**देना**– हिसाब समझाना। –**न होना**–वेहिसाब होना, गिनती न होना। –**पर चढ़ना**–वही या खाते में लिखा जाना। –**पाक करना**–देना चुका देना। –**पूछना**–हिसाव माँगना। –**बेबाक करना**–खाते में कुछ बाकी न रहने देना। –**बैठना**–ब्योंत बैठना, सब कामों, आवश्यकताओं का उपाय निकल आना; मेल मिलना। –**साफ़ करना**– हिसाब चुकता (करना)। –**से**–अंदाज से, परिमित मात्रा में, किफायत से (हिसाब से खर्च करो, चलो); क्रम से···मात्रा में (जिस हिसाब से ज्वर बढ़ेगा···); हिसाब के मुताबिक। **(किसी से)–से**–की दृष्टि-से,···के विचार से। –**से चलना**–नाप-तौल पर काम करना; किफायत से खर्च करना।

हिसाबिया–संज्ञा, पु॰ हिसाब (गणित) का अच्छा जानकार; आगा पीछा छोड़कर काम करने वाला।

हिसाबी–वि॰ हिसाब जानने वाला; हिसाब से चलने वाला।

हिसार–संज्ञा, पु॰ (अ॰) घेरा, इहाता; परकोटा; किला। –**बन्द** –वि॰ किले में बद होकर बैठने वाला; मंत्र की कुंडली के भीतर बैठनेवाला। **मु॰–करना**–घेरा डालना। –**बाँधना**– घेरा डालना; चारों ओर सैनिकों की पाँत या कोई दूसरी रोक खड़ी कर देना।

हिसिषा*–संज्ञा, स्त्री॰ ईर्ष्या किसी से चढ़ा-ऊपरी करने की भावना, होड़।

हिस्टीरिया–संज्ञा, पु॰ (अं॰) एक तरह का मूर्च्छा रोग जो विशेषतः स्त्रियों को होता है।

हिस्न–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रक्षास्थल; क़िला, दुर्ग।

हिस्सा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) भाग, अंश, खंड; बाँट, बखरा; विभाग; अंशाधिकार, साझा; अंग (बदन के किसी हिस्से में)। –**बखरा**–पु॰ अंश, भाग। (**मु॰ –होना**–बँटवारा होना, जायदाद का हिस्सेदारों में बँट जाना।) –**रसदी**–अ॰ हिस्से के अनुसार, जितना जिसके हिस्से में आए। –**(स्से) दार**–पु॰ अंश का अधिकारी, जिसका किसी संपत्ति या रोजगार में हिस्सा हो, साझी। –**दारी**–स्त्री॰ हिस्सेदार होना, साझा। **मु॰ –लेना,–शिरकत करना**–भाग लेना। –**(स्से) करना**–बाँटना। –**में आना**–बाँटे में पड़ना, बँटवारे से मिलना।

हिहिनाना*–अ॰ क्रि॰ दे 'हिनहिनाना'।

हीँग–स्त्री॰ दे॰ 'हिंगु'

हीँछना*–अ॰ क्रि॰ इच्छा करना, चाहना; कामना करना।

हीँछा–संज्ञा, स्त्री॰ इच्छा, कामना।

हीँडना†–स॰ क्रि॰ घंघोलकर गंदा करना (भोज॰); हड़कना (बुंदेल॰)।

हीँताल–पु॰ (सं॰) हिंताल वृक्ष।

हीँस–संज्ञा, स्त्री॰ घोड़े की हिनहिनाहट।

हीँसना–अ॰ क्रि॰ घोड़े की हिनहिनाना।

हीँ हीँ–संज्ञा, स्त्री॰ हँसने से उत्पन्न ध्वनि, शब्द।

ही–अ॰ इसका प्रयोग निश्चय, सीमा, कमी, अकेलापन, अनन्यता आदि के अवसरों पर होता है। सभी अवस्थाओं में यह किसी बात पर ज़ोर देने तथा निश्चय के लिए ही प्रयुक्त मिलता है। पु॰ हिय, हृदय। *अ॰ क्रि थी।

हीअ*–पु॰ दे॰ 'हिय'।

हीक–संज्ञा, स्त्री॰ एक प्रकार की दुर्गंध जिससे प्रायः मतली आती है; हिचकी। **मु॰ –मारना**–बार-बार बुरी महक फेंकना, गंधाना।

हीचना*–अ॰ क्रि॰ हिचकिचाना, किसी काम के करने में आगा-पीछा देखना।

हीछना†–अ. क्रि दे. 'हीँछना'।

हीछा†–स्त्री. दे. 'हीँछा।

हीठना–अ. क्रि. जाना, निकट जाना, पास फटकना।

हीनमन्यता–स्त्री. दे. 'हीनग्रंथ', लघुमन्यता (अं.) इनफीरियोरिटी कम्लैक्स।

हीन–वि. (सं.) अधम, नीच; निंद्य, गर्ह्य; रहित, वर्जित; परित्यक्त; निम्न कोटि का; जिसकी आर्थिक स्थिति बुरी हो; दीन; दबता हुआ, कमजोर; अनुपयुक्त; पद, मार्ग, स्थान आदि से च्युत, भ्रष्ट; सदोष; अधूरा; क्षीण। पु. अयांग्य गवाह, दोषपूर्ण साक्षी; व्यवकलन, घटाव; कमी, अभाव; अधम नायक (सा.)। **–कर्मा (र्मन्)**–वि. धार्मिक दृष्टि से विहित कार्मों–योग, यज्ञादि को न करने वाला; नीच काम करने वाला। **–कुल**–वि. नीच कुल का, कलंकित वंश का। **–कुष्ठ**–पु. क्षुद्रकुष्ठ (?)। **–कोश**–वि. जिसका खज़ाना खाली हो। **–ऋतु**–वि. यज्ञ न करने वाला। **–क्रम**–पु. काव्य–संबंधी एक दोष जिसमें वर्णित विषयों के क्रम का निर्वाह न हुआ हो। **–चरित**–वि. कदाचारी, बुरे आचरण का। **–ज**–वि. नीच कुल में उत्पन्न। **–जाति**–वि. नीची जाति का; जातिच्युत। **–नायक**–वि. जिसका नायक अधम हो (ना.)। **–पक्ष**–पु. तर्क द्वारा समर्थित न होने वाला पक्ष, दलील की दृष्टि से कमज़ोर पक्ष। वि. अरक्षित। **–प्रतिज्ञ**–वि. प्रतिज्ञा का पालन न करने वाला। **–बल**–वि. निर्बल, कमज़ोर। **–बाहु**–पु. शिव का एक गण। **–बुद्धि,–मति**–वि. बुद्धिहीन, मूढ़, मूर्ख। **–भावना**–हीनता की भावना; हीनक मनोग्रंथि। **–मूल्य–वि.** कम कीमत का। पु. अल्प मूल्य। **–यान** –पु. बौद्ध मत की दो शाखाओं में से एक (दूसरी शाखा का नाम 'महायान' है–पहले हीनयान का ही प्रवर्तन हुआ और इसके अनुयायी बुद्ध के वचन को ही प्रमाण मानते हैं)। **–योग**–वि. योगभ्रष्ट। **–योनि**– वि. बुरे खानदान में उत्पन्न, नीच जाति का। **–रस**–पु. काव्यगत एक दोष जो रसविरोधी भाव के प्रसंग की नियोजना से होता है। **–रोमा (मन्)**–वि. केशहीन, गंजा। **–वर्ग,–वर्ण**–पु. शूद्र वर्ण; नीच जाति। वि. नीच जाति का; शूद्र वर्ण का। **–वाद**–पु. दोषपूर्ण तर्क; विरोधी बात या दलिल; कमजोर दलील; दोषी प्रमाण, साक्ष्य। **–वादी (दिन्)**–वि. परस्पर विरोधी बातें कहने वाला, (ऐसा व्यक्ति या गवाह) जिसकी पूर्वा पर कही बातें असंगत हों, विरुद्धार्थवादी; गूँगा, मूक। **–वीर्य**–वि. बलहीन, कमज़ोर। **सख्य**–वि. नीचों से मित्रता करने वाला। **–सेवा**–स्त्री. नीचों की टहल।

हीन–संज्ञा, पु. (अ.) काल, जमाना। **–हयात**–पु. जीवनकाल। अ. जीवन काल में, जीते जी; ज़िंदगी भर। **–हयाती**–वि. जिस पर ज़िंदगी भर अधिकर रहे, जीवन काल के लिए प्राप्त। **–काश्तकार**–पु. वह काश्तकार जिसे अपनी ज़मीन पर ज़िंदगी भर क़ब्ज़ा रखने का अधिकार है।

हीनक–वि. (सं.)...से वंचित, रहित।

हीनता–स्त्री., **हीनत्व**–संज्ञा पु. (सं.) सदोषता; राहित्य, अभाव; नीचता; बुराई **–ग्रंथि**–स्त्री. दूसरों से अपने को हीन समझने की भावना, हीनमन्यता।

हीनांग–वि. (सं.) अंगहीन, विकलांग।

हीनांगी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छोटी चींटी।

हीनांशु–वि. (सं.) किरण रहित; अँधेरा।

हीनार्थ–वि. (सं.) जिसका प्रयोजन सिद्ध न हुआ हो।

हीनित–वि. (सं.)···से वंचित,···में वियुक्त; घटाया हुआ।

हीनोपमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें बड़े की उपमा छोटे से दी जाए।

हीमिया–संज्ञा, स्त्री. (अ.) जादू, इन्द्रजाल। **–गर,–दां**–वि. जादूगर।

हीय-हीयरा, हीया*–पु. दे. 'हिय'।

हीर–संज्ञा, पु. एक पंजाबी प्रेमगीत।

हीर–संज्ञा, पु. सार अंश, गूदा; वीर्य, शक्ति; (सं.) एक रत्न; हीरा; वज्र; शिव; सिंह; सर्प; एक वृत्त; मोतियों की माला।

हीरक–संज्ञा, पु. (सं.) हीरा नामक रत्न; एक वृत्त। **–जयंती**–स्त्री. किसी के शासन, विवाहित जीवन आदि के साठवें वर्ष का उत्सव; किसी संस्था आदि की स्थापना का साठवाँ वार्षिकोत्सव, 'डायमंड जुबिली'।

हीरा–संज्ञा, पु. एक बहुमूल्य रत्न जो अत्यन्त कठिन और श्वेत कांति युक्त होता है, हीरक; (ला.) उत्तम व्यक्ति या वस्तु। स्त्री. (सं.) लक्ष्मी; पिपीलिका; काश्मीर;

–आदमी–पु॰ वहुत नेक आदमी, भला मानुस। –कट–वि॰ हीरे की तरह कटा हुआ। –कसीस–पु॰ गंधक के योग से उत्पन्न लोहे का विकार। –दोषी–स्त्री॰ विजय साल का गोंद। –नखी–पु॰ एक बढ़िया धान। –मन–पु॰ लोककथा में वर्णित तोते की एक कल्पित जाति। मु॰ –खाना–आत्महत्या करने के विचार से हीरे का कण खा लेना; ईर्ष्या से जान देना। –चाटना–हीरा चाटकर मर जाना। –(रे) की कनी खाना या चाटना–दे॰ 'हीरा खाना'।

हील–संज्ञा, पु॰ (सं॰) वीर्य, शुक्र; (अं॰) जूते की एड़ी; †पनालेका कीचड़। स्त्री (फ़ा॰) छोटी इलायची।

हीलना–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) क्षति। *अ॰ क्रि दे॰ 'हिलना'।

हीला–पु॰ (अ॰) बहाना, मकर, बनावट; वसीला; रोजगार, काम; †कीचड़। –तराश–वि॰ नये-नये बहाने गढ़ने वाला। –हवाला–पु॰ टालमटोल। (ले) गर,–बाज़,–साज़–वि॰ बहाने बनाने वाला। –गरी,–बाज़ी,–साज़ी–स्त्री॰ बहानेबाजी, होना; मु॰ –निकलना–उपाय निकल आना। –होना–बहाना होना; नौकर होना; कोशिश होना।

हीसका*–संज्ञा, स्त्री॰ ईर्ष्या; स्पर्द्धा।

हीहा–संज्ञा, स्त्री॰ जोर से हँसने की ध्वनि, उच्च हास्य-ध्वनि; हीनता प्रदर्शित करते हुए हँसना।

हुँ–अ॰ बात करते समय बात सुनने या उस बात की स्वीकृति का सूचक शब्द; हाँ *दे॰ 'हूँ'।

हूँकना, हुँकरना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'हुँकारना'।

हुँकार–संज्ञा, पु॰ (सं॰) दर्पयुक्त होकर 'हूँ' शब्द करना; गर्जना; ललकार; सूअर का गुर्राना; धनुष की टंकोर।

हुँकारना–अ॰ क्रि॰ दर्पयुक्त होकर 'हुँ' शब्द का उच्चारण; करना; गर्जन करना; चिंग्घाड़ना। स॰ क्रि॰ युद्ध, लड़ाई-झगड़े, प्रतियोगिता आदि में अपने शत्रु, प्रतिद्वंद्वी आदि को ललकारना।

हुँकारी–स्त्री॰ 'हुँ-हुँ' शब्द द्वारा स्वीकृति सूचित करने की क्रिया; विकारी। मु॰ –भरना–कहानी सुनते समय 'हूँ-हूँ' शब्द द्वारा कहानी सुनते रहने की सूचना देना; किसी काम के लिए स्वीकृति देना।

हुंकृत–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हुंकार; सूअर की गुर्राहट; मेघगर्जन; मंत्र; रँभाने का शब्द।

हुंकृति–स्त्री॰ दे॰ 'हुंकार'।

हुंजिका–संज्ञा, स्त्री (सं॰) एक राग।

हुंड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) व्याघ्र; मेढ़ा; ग्रामशूकर; भारत की एक प्राचीन बर्बर जाति; राक्षस; मूर्ख व्यक्ति; एक जनपद; नाज की बाल।

हुंडन–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव का एक गण; अंग का निश्चेष्ट होना, लकवा मार जाना।

हुंडनेश–संज्ञा, पु॰ (सं॰) शिव।

हुंडा–संज्ञा, पु॰ वर की ओर से कन्या को दिया जाने वाला धन; खेत के मालिक को ठेकेदार से नियत परिणाम में मिलने वाला गल्ला। स्त्री॰ (सं॰) आग के चिटखने का शब्द। –भाड़ा–पु॰ महाजनी बोली में महसूल आदि चुकाकर कहीं पर माल पहुँचाने की जिम्मेदारी।

हुंड़ार–संज्ञा, पु॰ भेड़िया; मोटा ताजा किन्तु निकम्मा व्यक्ति।

हुंडावन–संज्ञा, पु॰ हुंडी की दरतूरी, हुंडी की दर।

हुंडि–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पिंडित ओदन।

हुंडिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'हुंडी'; सेना के निर्वाह के लिए प्राचीन काल में दिया जाने वाला आदेश पत्र।

हुंडी–संज्ञा, स्त्री॰ वह पत्र जो आपस में लेन-देन करने वाले महाजन किसी को रुपया दिलाने के लिए भेजते हैं, महाजनी 'चेक'; (ड्राफ्ट, बिल या बिल ऑफ़ एक्सचेंज); कर्ज देने का एक तरीका जिसमें महाजन सूद की रक़म मूल में पहले ही शामिल करके एक बार या किस्त करके लेता है। –बही–स्त्री॰ हुंडियों का ब्योरा रखने की बही; वह बही जिसमें से हुंडी काटकर दी जाए। मु॰ –करना–हुंडी लिखना। –खड़ी करना–किसी वजह से हुंडी की मुल्तवी रखना। –पटना–हुंडी के रुपये का अदा होना। –भेजना–हुंडी द्वारा द्रव्य चुकता करना, अदा करना। –सकारना–हुंडी में लिखी रक़म देना स्वीकार करना।

हुँ, हुँते–प्र॰ हिंदी के करण तथा अपादान कारकों की विभक्ति, से, द्वारा, (किसी की) ओर से; (किसी के) लिए, हेतु, वास्ते।

हु*–अ॰ भी।

हुआँ–संज्ञा, पु॰ गीदड़ों के बोलने की आवाज़। † अ॰ वहाँ

हुआना–अ॰ क्रि॰ गीदड़ का 'हुआँ-हूआँ' शब्द करके बोलना।

हुक–संज्ञा, पु॰ (अं॰) एक ओर मुड़ी कील, कँटिया जिसमें या जिससे कोई चीज़ फँसायी जाती है। † स्त्री॰ गर्दन या पीठ की नसों का तनाव जिससे उस अवयव को हिलाना-डुलाना मुश्किल होता है और ऐसा करने से चिलक होती है।

हुकना–अ॰ क्रि॰ वार खाली जाना, निशाना चूकना।

हुकना–संज्ञा, पु॰ (अ॰) दवा की बत्ती या पिचकारी जो पाख़ाना आने के लिए दी जाए, वस्ति।

हुकरना–अ॰ क्रि दे॰ 'हुँकरना'।

हुकारना–अ॰ क्रि॰, स॰ क्रि॰ दे॰ 'हुँकारना'।

हुकुम†–पु दे॰ 'हुक्म'।

हुकुर-पुकुर, हुकुर-हुकुर–संज्ञा, स्त्री॰ शारीरिक कमज़ोरी, भय, आशंका आदि के कारण हृदगति का तीव्र होना, कलेजे का जल्दी-जल्दी धड़कना।

हुकूक़–पु॰ (अ॰) 'हक़' का बहु॰।

हुकूमत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शासन, राज्य; अधिकार, प्रभुत्व। **मु॰ –चलाना**–अधिकार का उपयोग करना; दूसरे पर हुक्म चलाना। **–जताना**–अधिकार, प्रभुत्व का प्रदर्शन करना।

हुक्का–दे॰ 'हुक़्क़ा'। **–तमाखू**–पु॰हुक़्क़ा पिलाने का सत्कार (करना, होना)। **–पानी**–पु॰ दे॰ 'हुक़्क़ा पानी'।

हुक़्क़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) तंबाकू पीने का, नरकुल की दो नलियों और फरशी के योग से प्रस्तुत यंत्र, गुड़गुड़ी; जवाहिरात रखने की डिबिया। **–पानी**–पु॰ हुक़्क़ा पीने-पिलाने का व्यवहार, जाति-बिरादरी संबंध। (**मु॰ –॰पिलाना**–आवभगत करना। **–॰बंद करना**– बिरादरी से ख़ारिज कर देना, खान-पान बंद करना।) **–बरदार**–पु॰ हुक़्क़ा लेकर साथ चलनेवाला टहलू। **–बाज़**–पु जो बहुत हुक़्क़ा पीये; मदारी, बाज़ीगर। **मु॰ –ताजा करना**–फरशी का पानी बदलना और नैचे को तर करना। **–भरना**–चिलम पर तंबाकू और आग रखकर हुक़्क़ा तैयार करना।

हुक्काम–पु॰ (अ॰) 'हाकिम' का बहु॰।

हुक्म–संज्ञा, पु॰ (अ॰) आज्ञा, आदेश; फैसला; शरई फैसला, फतवा; इजाज़त; हुकूमत, अधिकार; ताश का एक रंग, काला पान। **–उदूली**–स्त्री॰ आज्ञा की उपेक्षा, अवज्ञा; सरकशी। **–क़तई**–पु॰ अंतिम निर्णय। **–गश्ती**–पु॰ वह आज्ञा जो सब जगह फिराई जाए। **–दरमियानी**– पु॰ अंतिम निर्णय या कतई हुक्म के पहले दी जाए। **–नामा**–पु॰ आज्ञापत्र। **–बरदार**–वि॰ आज्ञापालक। **–बरदारी**–स्त्री॰ आज्ञा का पालन, फ़रमांबरदारी। **–रान**–वि॰ हुक्म चलाने वाला; शासन करने वाला। **–रानी**–स्त्री॰ हुकूमत, शासन। **मु॰ –की तामील**– आज्ञापालन। **–चलना**–हुकूमत होना, अधिकार होना। **–वजा लाना**–आज्ञा पालन करना। **–में होना**– आज्ञाधीन होना; अधिकार में होना। **–लगाना**–पक्की राय देना, फैसला करना।

हुक्मी–वि॰ अचूक, खता न करने वाला (**–दवा**); आज्ञाधीन; को हुक्म मिले वह करने वाला (–बंदा)। **–बंदा**–हुक्म का गुलाम।

हुचकी–स्त्री॰ दे॰ 'हिचकी'।

हुजरा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) कोठरी; उपासना करने का कमरा।

हुजूअ–सुज्ञा, पु॰ (अ॰) निद्रा; स्वप्न; शांति; सुख।

हुजूद–संज्ञा, पु॰ (अ॰) रात्रि जागरण।

हुजूम–संज्ञा, पु॰ (अ॰) जनसमूह, भीड़।

हुजूर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) हाजिर होना, सामने आना, उपस्थिति; दरबार, इजलास; सम्मान्य जन का संबोधन, श्रीमान् जनाबआली (मातहत कर्मचारी अफ़सर का तथा वकील मुख्तार जज-कलेक्टर आदि का इसी शब्द से संबोधन करते हैं)। **–तहसील**–स्त्री॰ सदर तहसील। **–वाला**– पु॰ (संबोधन) श्रीमन् जनाबआली। (**किसी के**)**–में**– दरबार में; सामने; सेवा में।

हुजूरी–संज्ञा, स्त्री॰ समीपता; हाज़िरी; शाही दरबार। पु॰ (राजा आदि का) ख़ास नौकर; दरबारी।

हुज्जत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) दलील; बहस; विवाद, झगड़ा; प्रमाण। **–(तु) ल्लाह**–स्त्री॰ ईश्वर के सत्य होने का प्रमाण।

हुज्जती–वि॰ हुज्जत करनेवाला, झगड़ालू।

हुज्न–संज्ञा, पु॰ (अ॰) दुःख, शोक, संताप, खेद।

हुड–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मेष; एक युद्धास्त्र या युद्ध का उपकरण; चोरों के निवारणार्थ ज़मीन में गाड़ा हुआ लोहे का

काँटा; (रथ पर बना हुआ) मल-मूत्र त्याग का स्थान; लगुड़; (अं.) मोटर, रिक्शे आदि की कमानीदार छाजन जो इच्छानुसार चढ़ाई-उतारी जा सकती है; सिर का ढक्कन (बरसाती आदि का)।

हुड़कना–अ. क्रि. छोटे बच्चे का अपने प्रिय व्यक्ति (जिससे वह हिला-मिला हो) के न मिलने पर रोना, डरना, खाना-पीना छोड़ देना आदि।

हुड़का–संज्ञा, पु. विरहजनित पीड़ा (विशेषतः बच्चों को होने वाली), दे. 'हुडुक'।

हुड़काना–स. क्रि. तड़फाना, दुःखित करना।

हुड़दंग, हुड़दंगा–संज्ञा, पु. ऊधम, उपद्रव, हुल्लड़।

हुडुंब–संज्ञा, पु. (सं.) भूना हुआ चिउड़ा।

हुडु–संज्ञा, पु. (सं.) मेष।

हुडुक–संज्ञा, पु. दे. 'हुडुक्क'।

हुडुक्क–संज्ञा पु. (सं.) एक बाजा जो डमरू की शक्ल का, पर आकर में उससे बड़ा होता है; एक पक्षी, दात्यूह; मतवाला आदमी; अर्गला; लोहा जुड़ा हुआ डंडा, लोहबंदा। –**हिक्का**–स्त्री. हुड़के की ध्वनि।

हुडुत्–संज्ञा, पु. (सं.) वृषभ का शब्द; धमकी।

हुड्ड–वि. बेशऊर; मूढ़।

हुढक्क–संज्ञा, पु. हुडुक बाजा।

हुत–वि. (सं.) हवन किया हुआ; जिसके निमित्त हवन किया गया है। पु. शिव; हवन-सामग्री। *अ. क्रि 'होना' का भूतकाल, था। –**भक्ष**–पु. अग्नि। –**भृक् (ज्)**–पु. अग्नि; चित्रक; एक तारा। –॰**प्रिया**–स्त्री. अग्निभार्या, स्वाहा। –**भोक्ता (क्तृ)**,–**भोजन**–पु. दे. 'हुतभक्ष'। –**वह**–पु. अग्नि। –**शिष्ट**,–**शेष**–पु. हवन का बचा हुआ अंश। –**होम**–पु. वह ब्राह्मण जिसने हवन किया है।

हुतमा–संज्ञा स्त्री. (अ.) प्रचण्ड अग्नि, तेज आग।

हुता*–अ. क्रि. दे. 'हुत'।

हुताग्नि–वि. (सं.) हवन करने वाला; अग्नि में हव्य डालने वाला। स्त्री. हवन की अग्नि, यज्ञाग्नि।

हुतात्मा (त्मन्)–वि. पु. (सं.) (मार्टिर) किसी अच्छे कार्य में अपने को बलि कर देने वाला, शहीद।

हुताश–संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि; तीन की संख्या; चित्रक वृक्ष; भय, त्रास। –**वृत्ति**–स्त्री. अग्नि के सहारे चलने वाली जीविका। –**शाल**–स्त्री. अग्निशाला।

हुताशन–संज्ञा, पु. (सं.) अग्नि।

हुताशना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक योगिनी।

हुताशनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) फाल्गुनी पूर्णिमा (जिस दिन होलिका-दहन होता है)।

हुति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) होम, हवन। *प्र. करण और अपादान की विभक्ति।

हुतो*–अ. क्रि. दे. 'हुत', था।

हुदकाना *–स. क्रि. उभाड़ना।

हुदना *–अ. क्रि. आश्चर्यचकित होना, ठक रह जाना।

हुदहुद–संज्ञा, पु. (अ.) कठफोड़ा पक्षी।

हुदूद–पु., स्त्री. 'हद' का बहु. चारों ओर की सीमा, चतुरसीमा; चारों दिशाएँ। –(**दे**) **शरई**–पु. धर्मशास्त्र की सीमाएँ।

हुन–संज्ञा, पु. स्वर्ण, सोना; स्वर्ण मुद्रा, सोने का सिक्का। **मु.** –**बरसना**–द्रव्य का आधिक्य होना।

हुनना–स क्रि. हव्य-धृत, यव आदि–अग्नि में डालना, आहुति देना; यज्ञ करना, होम करना।

हुनर–संज्ञा, स्त्री. (फ़ा.) फन, कारीगरी; हाथ की कारीगरी; खूबी; निपुणता; योग्यता। –**आश्ना**–वि. गुणी। –**मंद**–वि. हूनर जानने वाला; गुणी; निपुण, कुशल। –**मंदी**–स्त्री. कारीगरी; कुशलता, निपुणता।

हुबाब–पु. (अ.) दे. 'हबाव'।

हुबाबी–वि. दे. 'हवाबी'।

हुबूर–संज्ञा, पु. (अ.) बुद्धिमान लोग; हर्ष, प्रसन्नता।

हुब्ब–संज्ञा, स्त्री. (अ) प्रेम, मुहब्बत; मित्रता; चाह।

हुब्बुलवतन, हुब्बेवतन–स्त्री. (सं.) स्वदेश प्रेम, वतन की मुहब्बत।

हुमकना, हुमगना–अ. क्रि. उल्लसित होना, आनंदातिरेक से उछलना-कूदना; छोटे बच्चों का अल्हड़पन के साथ चलना, ठुमकना; चोट करने के लिए पैर की फुर्ती से उठाना, तानना; पैरे के पूरे जोर से किसी वस्तु को ठेलना।

हुमसाना, हुमसावना*–सं. क्रि. मन में कामना, इच्छा, विचार आदि उठाना, हृदय के भावों, मन के विचारों को उत्तेजित करना; उठाना; खड़ा करना।

हुमा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) एक कल्पित पक्षी (कहा जाता है कि

यह जिसके सिर से गुज़र जाए वह राजा हो जाए; वह हमेशा उड़ता रहता है, हड्डियाँ खाता है और किसी को नहीं सताता)।

हुमाई–वि. हुमा-संबंधी; भाग्यशाली

हुमेल–संज्ञा, स्त्री. स्त्रियों के गले का एक गहना जो अशर्फियों, रुपयों या इस आकार के सोने-चाँदी के नक्काशीदार टुकड़ों में कोंढ़ा जोड़कर और उन्हें तागों में गूँथकर पहनने के योग्य बनाया जाता है (पशुओं के गले का भी यह गहना है)।

हुरकनी†–संज्ञा, स्त्री. वेश्या।

हुरदंग, हुरदंगा–पु. दे. 'हुड़दंग'।

हुरमत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) इज़्ज़त, आबरू; बड़ाई, प्रतिष्ठा, सतीत्व; निषेध। **–वाला**–वि. प्रतिष्ठित, इज्जतदार। **–मु.–उतारना,–लेना**–आबरू लेना, इज़्ज़त बिगाड़ना।

हुरहुर–संज्ञा, पु. एक बरसाती पौधा जिसके कई भेद होते हैं और जो दवा के भी काम आता है।

हुरहुरिया†–संज्ञा, स्त्री. एक चिड़िया।

हुरिजक–संज्ञा, पु. (सं.) निषाद और कवटी से उत्पन्न एक संकर जाति।

हुरिहाई*–स्त्री. होली खेलने वाली।

हुरिहार*–संज्ञा, पु. होली का राग-रंग करने वाला, होली खेलने वाला।

हुरुट्टक–संज्ञा, पु. (सं.) (हाथी का) अंकुश।

हुरुमीय–संज्ञा, स्त्री. नृत्य का एक प्रकार।

हुरूफ़–संज्ञा, पु. (अ.) 'हर्फ' का बहु.; अक्षरमाला। **–शनास**–वि. कम पढ़ा लिखा, केवल अक्षर पहचाने वाला।

हुर्रा–संज्ञा, पु. (अ.) एक प्रकार की हर्ष ध्वनि। (अ.) सेवा-मुक्त दासी, स्वतंत्र स्त्री।

हुर्रीयत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) स्वाधीनता, आज़ादी। **–परस्त**–वि. प्राण देकर भी पराधीनता से मुक्ति चाहने वाला।

हुल–संज्ञा, पु. (सं.) दोधारा छुरा। **–मातृका**–स्त्री. लंबी कटार।

हुलकना–अ. क्रि. वमन करना, कै करना।

हुलकी–संज्ञा, स्त्री. उलटी, वमन कै।

हुलना–अ. क्रि. लाठी आदि का ठेला जाना।

हुलसना–अ. क्रि. उल्लसित, आनंदित होना; स्फुति होना, उमड़ना; *शोभित होना–*स. क्रि. उल्लसित करना।

हुलसाना–स. क्रि. आनंदित करना। *अ. क्रि. दे. 'हुलसना'।

हुलसी–संज्ञा, स्त्री. हुलास, उल्लास, मन की तरंग; गोस्वामी तुसलीदास की माता का नाम (कुछ लोगों के मत से)।

हुलहुल–पु. दे. 'हुरहुर'।

हुलहुली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आनंद-मंगल के असवर पर उच्चरित स्त्रियों का अस्पष्ट शब्द।

हुलाग्रका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक अस्त्र।

हुलाना†–सं. क्रि. दे. 'हूलना'।

हुलास–संज्ञा, पु. उल्लास, मन की उमंग, आनंद की उठान; उत्साह। †स्त्री. सुँघनी। **–दानी**–स्त्री. नस रखने की डिबिया, नसदानी।

हुलासी–वि. उल्लासपूर्ण, आनंदयुक्त; उत्साहपूर्ण, उत्साही।

हुलिया–संज्ञा, पु. (अ.) चेहरे की बनावट; चेहरा; शक्ल; नख-शिख, शक्ल-सूरत का ब्यौरा; आभूषण; ज़ेवर। **–नामा**–पु. शक्ल-सूरत आदि का विवरण-पत्र। **मु.–काटना,–कराना,–लिखाना**–भगे या खोये हुए आदमी की पहचान पुलिस में लिखाना। **–तंग होना**–परेशानी में पड़ना। **–बताना,–बयान करना**–शक्ल-सूरत का हाल बताना। **–बिगड़ना**–बुरी हालत होना; गत बनना। **–बिगाड़ देना,–बिगाड़ना**–मुँह पर ऐसा मारना कि सूरत बिगड़ जाए।

हुलिहुली–संज्ञा, स्त्री. (सं.) भूकना; गर्जन; विवाह के समय गाया जाने वाला गीता।

हुलु–संज्ञा, पु. (सं.) मेष।

हुलूका†–संज्ञा, पु. एक तरह का बंदर। पु. (अ.) विनाश।

हुल्ल–संज्ञा, पु. (सं.) नृत्य का एक प्रकार।

हुल्लड़–संज्ञा, पु. शोर-गुल, हो-हल्ला; उत्पात, ऊधम; दंगा-फसाद; गड़बड़।

हुल्लास–संज्ञा, पु. एक मात्रिक छंद।

हुश्–अ. किसी को अकरणीय कार्य करने या करने के प्रयत्न से विरत करने के लिए झटके से मुँह से निकालने वाला एक शब्द; पशु-पक्षी आदि को भागने का शब्द।

हुसियार*–वि. दे. 'होशियार'।

हुसैन–संज्ञा, पु. (अ.) अली के दूसरे बेटे जो करबला के युद्ध में शहीद हुए। **–बंद**–पु. जंजीर से जुड़े हुए चाँदी

के दो छल्ले जिन्हें मुसलमान स्त्रियाँ मुहर्रम के दिनों में बच्चों को पहना देती हैं।

हुसैनी–संज्ञा, पु. एक तरह का चर्मपात्र; एक तरह का अंगूर; एक रागिनी। –**कान्हड़ा**–पु. एक राग।

हुस्न–पु. संज्ञा (अ.) भलाई, खूबी; सुंदरता, लावण्य; शोभा। –**परस्त**–वि. सौंदर्य की पूजा करने वाला, सौंदर्यप्रेमी। –**परस्ती**–स्त्री. सौंदर्य-प्रेम, सौंदर्योपासना। –**फ़रोश**–स्त्री. रूपाजीवा, गणिका। –**शिनास**–वि. सौंदर्योपास। –(**स्ने**) **खुदादाद**–पु. सहज सौंदर्य। –**ज़न**–**पु.** (किसी के विषय में) अच्छा गुमान, सद्भावना। –**तलब** –पु. किसी चीज को इशारे से माँगना, खूबसूरती से माँगना। **हुस्न का आलम**–खूबसूरती का जमाना।

हुस्यार*–वि. दे. 'होशियार'।

हुहद–संज्ञा, पु. (सं.) एक नरक।

हुहु, हुहू–पु (सं.) एक गंधर्व।

हूँ–अ. दे. 'हुं'; दे 'हूँ'। अ. क्रि. उत्तम पुरुष के एक-वचन के साथ प्रयुक्त होने वाला 'होना' क्रिया का वर्तमानकालिक रूप। * सर्व. हों, मैं।

हूँकना–अ. क्रि. 'हुं' शब्द करना, हुंकार करना, गर्जन करना, मानसिक या शारीरिक पीड़ा से ज़ोर-ज़ोर से रोना, पीड़ा के कारण गाय का रँभाना, बोलना, हुड़कना।

हूंकार–पु. (सं.) दे. 'हुंकार'।

हूँठ–वि. साढ़े तीन।

हूँठा–संज्ञा पु. साढ़े तीन का पहाड़ा।

हूँड़–संज्ञा, स्त्री. सिंचाई आदि खेती के कामों में किसानों की आपकी सहायता।

हूँस–संज्ञा, स्त्री. किसी को सकारण और अकारण भी कटूक्ति कहते रहने की क्रिया, भर्त्सना; ईर्ष्या, ... किसी भी प्रकार किसी वस्तु को पाने की इच्छा; बुरी नजर।

हूँसना–स. क्रि. बुरी नजर से देखना, नज़र लगाना। अ. क्रि. ईर्ष्या करना, जलना; कुढ़ना, बुरा-भला कहना।

हू–पु. (सं.) गीदड़ के बोलने की ध्वनि। *अ. भी। –**रव**–पु. गीदड़। (फा.) ब्रह्म; ईश्वर; शून्य। का मकान, भुजहा पर।

हूक–संज्ञा, स्त्री. साल; पीड़ा, कसक; मानसिक पीड़ा; खटका।

हूकना–अ. क्रि. पीड़ा होना, दर्द करना; सालना।

हटना*–अ. क्रि. विलग होना, पृथक् होना; विमुख होना, मुँह मोड़ना।

हूठा–संज्ञा, पु. अँगूठा; ठेंगा। **मु.** –**देना**–अँगूठा दिखाना।

हूड़–वि. हुड्ड, अनाड़ी, मूढ़; लापरवाह।

हूण, हून–संज्ञा, पु. (सं.) एक म्लेच्छ जाति जिसने भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर कई बार आक्रमण किया था और जिसे एक बार विक्रमादित्य ने बुरी तरह हराया भी था; स्त्री. एक स्वर्णमुद्रा। **मु.** –(**नें**) **बरसाना**–अत्यधिक आमदनी होना।

हूत–वि. (सं.) बुलाया हुआ, आमंत्रित।

हूति–संज्ञा, स्त्री (सं.) आह्वान, आमंत्रण; ललकार; नाम, संज्ञा।

हूतो*–अ दे 'हुति'।

हूदा–संज्ञा, पु. पीड़ा, शूल; धक्का।

हून–संज्ञा, पु (अ.) अपमान, तिरस्कार, बेइज़्ज़ती।

हूनना–स. क्रि. आग में डालकर भूनना।

हूब† –संज्ञा, स्त्री. उत्साह, हिम्मत। पु. (अ.) पाप, हत्या।

हूबहू–वि. ज्यों का त्यों, वैसा ही।

हूय–संज्ञा, पु. (अ.) बिहिश्त या स्वर्गलोक की स्त्री, अप्सरा; (ला.) परम सुंदरी, परी जैसी सुंदर स्त्री; * दे 'हूल'। – **का बच्चा**–बहुत सुंदर आदमी।

हूरना–स. क्रि पेलना, ठेलना; चुभाना, गड़ाना।

हूरहूण–संज्ञा, पु. (सं.) एक जाति, हूणों की एक शाखा।

हूरा–संज्ञा, पु. लाठी आदि का छोर।

हूर्छन–संज्ञा, पु. (सं.) वक्र गति से चलना, टेढ़ी चाल चलना; धूर्तता करना।

हूर्छिता (तृ)–वि. (सं.) टेढ़ चाल चलने वाला; कुटिल, धूर्त।

हूल–संज्ञा, स्त्री. लाठी के हूरे, तलवार, भाले आदि की नोक तेज़ी से कहीं गड़ाने, गोदने, भोंकने की क्रिया; पीड़ा, वेदना, शूल; वमन, कै की प्रवृत्ति का होना; उलट-पलट; हल्ल-गुल्ला, शोरगुल; आनंद ध्वनि, खुशी से उत्पन्न आवाज; प्रसन्नता, हर्ष; युद्ध आदि के हेतु आह्वान, ललकार; बहेलिया का चिड़िया फँसाने का लासा लगा बाँस। –उठना. कैकरने की इच्छा होना।

हूलना–सं. क्रि. दे. 'हूरना'।

हूला–पु. हूलने, हूरने की क्रिया।

हूश–वि. (फा.) जाहिल, जंगली, उजड्ड; आचार, व्यवहार आदि संबंधी तौर-तरीके से अपरिचित, असंस्कृत, अशिष्ट।

हूह–संज्ञा, स्त्री. युद्ध की ललकार; हुंकार, गर्जन।

हूहक़–संज्ञा, स्त्री. (अ.) हाहा हूहू, शोरगुल।

हूहू–पु. आग के जलने का शब्द; (सं.) दे. 'हुहु'।

हृच्छय–वि. (सं.) हृदय में रहने वाला। पु. कामदेव; प्रेम। **–पीड़ित**–वि. कामपीड़ित। **–वर्धन**–वि. प्रेमवर्धक; कामोद्दीपक।

हृच्छूल–संज्ञा, पु. (सं.) हृदय का शूल, कलेजे की एंठन।

हृच्छोष–संज्ञा. पु. (सं.) अंदर की शुष्कता।

हृणिया, हृणीया–संज्ञा, स्त्री. (सं.) निंदा; लज्जा, व्रीडा; दया, अनुकंपा।

हृत–वि. (सं.) हरण किया हुआ; गृहीत; वहन किया हुआ, ले जाया गया हुआ; वंचित; मुग्ध; स्वीकृत; विभक्त। पु. भाग, हिस्सा **–चंद्र**–वि. चंद्रमा से रहित (कुमुद)। **–ज्ञान**–वि. ज्ञानहीन। **–दार**–वि. पत्नी रहित। **–द्रव्य-वित्त**–वि. संपत्ति से वंचित। **–प्रतिदान**–पु. (रेस्टीट्यूशन) छीनी हुई या जब्त की हुई वस्तु, संपत्ति आदि का पुनः लौटा दिया जाना। **–प्रत्यर्पण**–पु. (रेस्टोरेशन) हरे हुए, छीने हुए व्यक्ति या राज्यादि को पुनः अर्पित कर देना, सौंप देना; दे. 'पूर्ववत्करण'। **–प्रसाद**–वि. जिसकी शांति नष्ट हो गई हो। **–मानस**–वि. बेसुध, संज्ञा हीन। **–राज्य**–वि. राज्य से वंचित। **–वासा (सस्)**–वि. वस्त्र विरहित। **–सर्वस्व**–वि. जिसका सब कुछ ले लिया या नष्ट कर दिया गया हो।

हृताधिकार–वि. (सं.) अधिकार वंचित, पदच्युत।

हृति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अपहरण, ले लेने, लूटने की क्रिया; ध्वंस, नाश।

हृत्–वि. (सं.) (समासांत में) हरण करने वाला; ग्रहण करने वाला; ले जाने वाला; आकृष्ट, मुग्ध करने वाला; पु. 'हृद्' का समासगत रूप। **–कंप**–पु. दिल की धड़कन (पल्पिटेशन ऑफ़ हार्ट)। **–कमल**–पु. योग में माने हुए छः चक्रों में से एक जो हृदय के पास स्थित है। **–ताप**–पु. हृदय की जलन, मनोव्यथा। **–पंकज,–पद्म**–पु. कमलवत् हृदय। **–पिंड**–पु. सीने के पास स्थित अंग-विशेष, हृदय। **–पीडन**–पु. हृदय को कष्ट देना। **–पीड़ा**–स्त्री. मनोव्यथा। **–पुंडरीक,–पुष्कर**–पु. दे. 'हृत्पंकज'। **–प्रिय**–वि. हृदय को प्रिय लगने वाला। **–स्तंभ**–पु. हृदय का निश्चेष्ट होना। **–स्थ**–वि. हृदय में स्थित। **–स्फोट**–पु. हृदय का विदीर्ण होना; भग्न हृदय।

हृदयंगम–वि. (सं.) मर्मस्पर्शी; सुंदर, मनोहर; हृदयगत; आकर्षक; आनंददायक; प्रिय; हृदय से निकलने वाला; हृदय में अच्छी तरह बैठा हुआ; भली प्रकार समझ में आया हुआ; उपयुक्त; वांछित। पु. उपयुक्त वचन।

हृदय–संज्ञा, पु. (सं.) वक्ष के भीतर बाईं ओर स्थित मांस का रक्तकोश जिसमें भरा शुद्ध रक्त नाड़ियों द्वारा सारे शरीर में प्रवाहित होता है, दिल; छाती, सीना (हार्ट); मन, अंतःकरण; आत्मा; नीरक्षीरविवेकिनी बुद्धि; भीतरी रहस्य; किसी स्थान का भीतरी भाग जो प्रायः महत्त्वपूर्ण होता है; सार वस्तु, तत्त्व, हीर; बहुत ही प्रिय, प्यारा व्यक्ति। **–कंप**–पु. दे. 'हृत्कंप'। **–कंपन**–वि. हृदय को क्षुब्ध करने वाला। **–क्लम**–पु. दिल की कमज़ोरी, बुजदिली। **–क्षोभ**–पु. मन को अशांति। **–गत**–वि. हृदय-संबंधी, हार्दिक, आंतरिक; हृदयस्थित। **–ग्रंथि**–स्त्री. हृदय की गाँठ, दिल को कष्ट देने वाली बात। **–ग्रह**–पु. कलेजे की ऐंठन। **–ग्राह**–पु. रहस्य जान लेना। **–ग्राहक**–वि. दिल को विश्वास करने वाला। **–ग्राही (हिन्)**–वि. मनोहर; मनोरंजक; सुन्दर; रुचिकर; अभीष्ट। **–चोर,–चोर**–पु. हृदय का हरण करने वाला व्यक्ति। **–च्छिद्**–वि. हृदय का छेदन करने वाला। **–ज**–पु. पुत्र। **–ज्ञ**–वि. दिल की बात समझने वाला; रहस्य जानने वाला। **–ज्वर**–पु. दिल की जलन। **–दाही (हिन्)**–वि. हृदय जलाने वाला। **–देश**–पु. हृदय का क्षेत्र। **–दौर्बल्य**–पु. दिल की कमज़ोरी। **–द्रव**–पु. दिल का बहुत तेज़ी के साथ धड़कना। **–निकेत, निकेतन**–पु. मनोज, कामदेव। **–पीड़ा**–स्त्री. दे. 'हृत्पीड़ा'। **–पुंडरीक**–पु. दे. 'हृत्पुंडरीक'। **–पुरुष**–पु. दिल की धड़कन। **–प्रभावी (विन्)**–वि. मन को क्षुब्ध करने वाला; मुग्ध करने वाला। **–प्रस्तर**–वि. संगदिल, निष्ठुर। **–प्रिय**–वि. दिल को प्यारा, स्वादिष्ठ **–बंधन**–वि. मुग्ध करने वाला। **–रोग**–पु. हृदय में होने वाला रोग। **–लेख**–पु. ज्ञाप; चिंता **–लेख्य**–वि. आनंददायक।

–वल्लभ–पु. प्राणप्रिय व्यक्ति, प्रियतम। **–वान (वत्)**–वि. सहृदय, दिलदार, रसिक; भावुक, दयालु, कोमल हृदय। **–विदाक**–वि. हृदय को विदीर्ण करने वाला, शोक, करुणा आदि उत्पन्न करनेवाला **–विधू,–वेधी (धिन्)**–वि. मर्माहत करनेवाला। **–विरोध**–पु. हृदय का पीड़न। **–वृत्ति**–स्त्री. मन की प्रवृत्ति। **–व्यथा**–पु मानसिक पीड़ा। **–व्याधि**–स्त्री हृदय का रोग। **–शल्य**–पु. दिल का काँटा; दिल का जख्म। **–शून्य**–वि. दे. 'हृदयहीन'। **–शैथिल्य**–पु. विषण्णता। **–शोषण**–वि. दिल को सुखाने वाला। **–संघट्ट**–पु. हृदय की गति का रुकना। **–संसर्ग**–पु. हृदयों का मेल। **–सम्मित**–वि. सीने के बराबर ऊंचा। **–स्थ**–वि. जो हृदय में स्थित हो; शरीरस्थ (जैसे कीटाणु)। **–स्थली**–स्त्री ,**–स्थान**–पु. वक्षःस्थल। **–स्पृक् (श्)**–वि हृदय को छूने वाला। **–स्पर्शी (शिन्)**–वि हृदय को प्रभावित करने वाला। **–हारी (रिन्)**–वि मन को मुग्ध करने वाला। **–हीन**–वि. निष्ठुर; अरसिक। **मु. –उमड़ना,–भर आना**–प्रेम, करुणा आदि के कारण चित्त का द्रवित होना, विकल होना। **–विदीर्ण होना**–शोक, मानसिक पीड़ा अथवा करुणा आदि के कारण अत्यधिक कष्ट होना; ऐसा लगना मानों हृदय फट जाएगा। **–से लगाना**–आलिंगन करना; आत्मीय और प्रिय बनाना।

हृदयाकाश–संज्ञा, पु. (सं.) हृदय का आकाश।

हृदयातिपात–संज्ञा, पु. (सं.) हृदय का छन्द हो जाना (हार्ट फ़ेल्योर)।

हृदयात्मा (त्मन्)–संज्ञा, पु. (सं.) कंक पक्षी।

हृदयानुग–वि. (सं.) हृदय को तुष्ट करने वाला।

हृदयामय–संज्ञा, पु. (सं.) हृद्रोग।

हृदयालु–वि. (सं.) दे. 'हृदयवान्'।

हृदयावर्जक–वि. (सं.) हृदय जीतने वाला।

हृदयिक, हृदयी (यिन्)–वि. (सं.) दे. 'हृदयवान्'।

हृदयेश, हृदयेश्वर–संज्ञा, पु. (सं.) पति; परम प्रिय व्यक्ति।

हृदयेशा, हृदयेश्वरी–स्त्री. (सं.) पत्नी, प्रियतमा।

हृदयोन्मादिनी–स्त्री. (सं.) एक श्रुति (संगीत)। वि. स्त्री मन को उन्मत्त या मुग्ध करने वाली।

हृदामय–संज्ञा, पु. (सं.) हृदय का रोग।

हृदावर्त–संज्ञा, पु. (सं.) घोड़े के सीने पर की भँवरी।

हृदिशय–वि. (सं.) हृदय में रहने वाला।

हृदिस्थ–वि. (सं.) जो हृदय में हो; प्रिय।

हृदिस्पृक् (श्)–वि (सं.) हृदय को स्पर्श करने वाला; मुग्धकारी, सुंदर।

हृदुत्क्लेद, हृदुत्क्लेश–संज्ञा, पु. (सं.) हृदय का पेट का रोग; मतली, वमन।

हृद्–संज्ञा, पु. (सं.) दिल, मन; आत्मा; सीना; किसी पदार्थ का भीतरी भाग, सार। **–ग**–वि सीने तक पहुँचने वाला (जैसे पानी)। **–गत**–वि. मन में आया हुआ; हृदयस्थ; हृदय-संबंधी; वांछित; प्रिय; आनंददायक; अभिप्रेत। पु. अभिप्राय। **–गद**–पु. हृद्रोग। **–गम**–वि. हृदय में प्रवेश करने वाला। **–गोल**–पु. एक पर्वत। **–ग्रंथ**–पु. दे 'हृद्व्रण'। **–ग्रह**–पु कलेजे की ऐंठन। **–घटन**–पु. हृदय का एक रोग। **–दाह,–विदाह**–पु. हृदय की जलन। **–देश**–पु. हृदय का क्षेत्र; वक्षःस्थल। **–द्रव**–पु. दिल का तेज़ी से धड़कना। **–द्वार**–पु. हृदय का द्वार। **–रुक् (ज्)**–स्त्री. हृदय का रोग; हृदय का शूल। **–रोग**–पु. हृदय का रोग; शोक; प्रेम; दे. क्रम में। **–वैरी (रिन्)**–पु. अर्जुन वृक्ष। **–वंटक**–पु. जठर। **–वर्ती (र्तिन्)**–वि. हृदयस्थ। **–व्यथा**–स्त्री. मनोव्यथा; हृदय का स्पंदन **–व्रण**–पु. कलेजे का जख्म।

हृद्य–वि. (सं.) हार्दिक; प्रिय; वांछित; अनुकूल; आनंददायक; सुंदर, मनोहर; स्वादिष्ठ; हृदय से उत्पन्न। पु. दारचीनी; एक वशीकरण मंत्र; वृद्धि नामक ओषधि; बेल का पेड़; श्वेत जीरक; दही; मधु से बनी हुई शराब; कैथ। **–गंध**–वि. सुगंधित, खुशबूदार। पु. बेल का पेड़, क्षुद्र जीरक; सौवर्चल लवण। **–गंधक**–पु. सोवर्चल लवण। **–गंधि**–पु. क्षुद्र जीरक।

हृद्यांशु–संज्ञा, पु. (सं.) चंद्रमा।

हृद्रोग–संज्ञा, पु (सं.) कुंभ राशि; दे. 'हृद्' में।

हृल्लास, हृल्लासक–संज्ञा, पु (सं.) हृदय की धड़कन; हिचकी।

हृल्लेख–पु (सं.) चिंता, ज्ञान, समझ।

हृषि–संज्ञा, (सं.) प्रसन्नता, आनंद; संतोष; दीप्ति; कांति। पु. झूठ बोलनेवाला आदमी।

हृषित–वि. (सं.) प्रसन्न, आनंदित, उल्लसित; रोमांचित;

ताजा; चकित; प्रतिहत, भोथरा; प्रणत; वर्मित, शस्त्रसज्ज; हताश।

हृषोक–संज्ञा पु. (सं.) इंद्रिय। **–नाथ**–पु. विष्णु या कृष्ण।

हृषीकेश–संज्ञा, पु. (सं.) परमात्मा, इंद्रियों का स्वामी; सभी इंद्रियों का संचालक, मन; विष्णु या कृष्ण; वर्ष का दसवाँ महीना, पौष मास; एक तीर्थस्थान जो हरिद्वार के निकट है।

हृषीकेश्वर–संज्ञा, पु. (सं.) विष्णु का कृष्ण।

हृषु–वि. (सं.) प्रसन्न; झूठ बोलने वाला। पु. अग्नि; सूर्य; चंद्रमा।

हृष्ट–वि. (सं.) हर्षित, प्रसन्न; रोमांचित; विस्मित; कड़ा, जिसमें लोच न हो; कुंठित। **–चित्त,–चेतन,–चेता (तस्)**–वि. प्रसन्नचित्त। **–तनूरुह**–वि रोमांचित। **–तुष्ट**–वि. प्रसन्न और संतुष्ट। **–पुष्ट**–वि. तगड़ा, हट्टा-कट्टा। **–मन (नस्),–मानस**–वि. प्रसन्नचित्त। **–रोमा (मन)**–वि. रोमांचयुक्त। पु. एक असुर। **–वदन**–वि प्रसन्न मुद्रा वाला। **–संकल्प**–वि प्रसन्न, संतुष्ट। **–हृदय**–वि. प्रसन्नचित्त।

हृष्टि–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हर्ष, प्रसन्नता, आनंद; रोमांच; दर्प, गर्व। **–योनि**–पु. एक तरह का अर्धक्लीव पुरुष, ईर्ष्यक।

हृष्यका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक मूर्च्छना (संगीत)।

हेँगा–संज्ञा, पु. जोती हुई ज़मीन बराबर करने का पटरा, पटेला।

हेँ हेँ–संज्ञा, पु. धीरे-धीरे हँसने की ध्वनि; गिड़गिड़ाने के वक्त निकलने वाला शब्द। **मु. –करना**–गिड़गिड़ाना; जी-हुजूरी करना।

हे–अ. (सं.) संबोधन, आह्वान के लिए प्रयुक्त शब्द; अवज्ञा, घृणा-सूचक शब्द। *अ. क्रि. थे।

हेकड़–वि. वलवान् (बुरे अर्थ में), ज़बरदस्त; अशिष्ट, जाहिल; उजड्ड; मज़बूत शरीर वाला, तंदुरुस्त।

हेकड़ी–संज्ञा, स्त्री. ज़बरदस्ती; बलात् कुछ करने की प्रवृत्ति; अशिष्टता, उजड्डपन।

हेक्का–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हिक्का, हिचकी।

हेक्टेयर–संज्ञा, पु. (अं.) भूमि की एक माप, लगभग 2 एकड़।

हेच–वि. (फ़ा.) निकम्मा; फजूल, वेकार; अकिंचन, क्षुद्र, तुच्छ; निस्तत्त्व, सारहीन। पु. थोड़ी-सी चीज़। **–कस**–वि. अधम, कमीना। **–दाँ**–वि. कुछ न जानने वाला, मूर्ख। **–दानी**–स्त्री. नादानी। **–पोच**–वि. मामूली, अदना, घटिया; वेफ़ायदा; निकम्मा। पु. तुच्छ व्यक्ति; मामूली हैसियत का आदमी; मामूली चीज़। **–मदाँ**–वि. निपट मूर्ख। **–मर्द**–वि. दीन, दुःखी व्यक्ति।

हेजाज़–पु. (अ.) दे. 'हिजाज़'।

हेट*–संज्ञा, पु. सहेट, संकेत स्थल।

हेठ*–वि. कम; नीचा; हीन। अ. नीचे। पु. (सं.) क्षति; चोट; वाधा।

हेठा–वि. दे. 'हेठ'। **–पन**–पु. क्षुद्रता; नीचता।

हेठी–संज्ञा, स्त्री. अप्रतिष्ठा, मानहानि; हीनता।

हेड–संज्ञा, पु. (सं.) उपेक्षा, अवमानना। **–ज**–पु. क्रोध; अप्रसन्नता।

हेड–पु. (अं.) सिर; प्रधान व्यक्ति, सर्वोच्च अधिकारी। **–ऑफिस**–पु. प्रधान कार्यालय। **–क्वार्टर**–पु. प्रधान व्यक्ति या सर्वोच्च अधिकारी का आवास, सदर मुकाम। **–मास्टर**–पु. प्रधान अध्यापक।

हेडावुक्क–संज्ञा, पु. (सं.) घोड़े का व्यापारी।

हेडिंग–संज्ञा, स्त्री. (अं.) शीर्षक।

हेड़ी†–संज्ञा, स्त्री. वि

हेत*–संज्ञा, पु. हेतु. प्रीति, प्रेम। अ. लिए।

हेति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) अस्त्र; सूर्य किरण; आग की लपट, लौ; प्रकाश, तेज; ज़ख्म; औज़ार; अँखुवा; एक असुर।

हेती*–संज्ञा, पु. प्रेमी हित-मित्र; हितू; संबंधी।

हेतु–संज्ञा, पु. (सं.) कारण; लक्ष्य, मक़सद; अभिप्राय, उद्देश्य (मोटिव); ऐसी घटना, काम आदि जिसके बिना हुए दूसरी घटना, दूसरी कम न हो, मूल कारण, एकमात्र कारण; एक अर्थालंकार जहाँ कारण को ही कार्यरूप में वर्णित करते हैं; तर्क, दलील; तर्कशास्त्र; व्यापक ज्ञापक कारण, ऐसा कारण जो व्याप्ति, अव्याप्ति और अतिव्याप्ति नामक दोषों से दूषित न हो; * प्रेम। **–दुष्ट**–वि. जिसकी बात तर्कसंगत न हो। **–दृष्टि**–स्त्री. कारण की परीक्षा। **–बलिक**–वि. तर्कप्रबल, तर्ककुशल। **–भेद**–पु. ग्रहयुद्ध का एक भेद (ज्यो.)। **–मात्रता**–स्त्री. केवल वहाना होना। **–युक्त**–वि. सकारण, साधार

–रूपक–पु. रूप का एक एक प्रकार जो सकारण होता है। **–लक्षण**–पु. हेतु की विशेषताएँ। **–वचन**–पु. तर्कयुक्त वात। **–वाद**–पु विवाद-हेतु का उल्लेख। **–वादी (दिन्)**–पु. तर्क करने वाला, तार्किक; नास्तिक। **–विद्या**–स्त्री.,**–शास्त्र**–पु तर्कशास्त्र। **–शून्य**–वि. हेतु रहित, निराधार **–हानि**– स्त्री. तर्क का न दिया जाना। **–हिल**–पु. एक बड़ी संख्या (बौ.)। **–हेतुमद्भाव**–पु. कारण और कार्य का संबंध। **–हेतुमद्भूत**–पु. भूत काल का एक भेद जिसमें कारण रूप क्रिया न होने पर कार्यरूप क्रिया का न होना दिखलाया जाता है।

हेतुक–वि. (सं.) कारण रूप होने वाला, उत्पन्न करने वाला (समासांत में)। पु. कारण; तार्किक; शिव का एक गण; एक बुद्ध।

हेतुकी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) निदानशास्त्र (इटियालॉजी)।

हेतुमान् (मत्)–वि. (सं.) जो सकारण हो; तर्कयुक्त; साधार।

हेतूत्प्रेक्षा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद जहाँ अहेतु को हेतु मानकर उत्प्रेक्षा की जाए।

हेत्वपदेश–संज्ञा, पु. (सं.) हेतु का उल्लेख।

हेत्वपह्नुति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें प्रकृत के निषेध का हेतु व्यक्त रहता है।

हेत्वाभास–संज्ञा, पु. (सं.) वह हेतु जो किसी कार्य का कारण तो न हो परंतु हेतु-सा आभासित हो, कुतर्क, हेतुदोष (फ़ेलिसी)।

हेना–पु. दे. 'हिना'।

हेमंत–संज्ञा, पु. (सं.) छः ऋतुओं में एक जो मार्गशीर्ष और पौष में पड़ती है। **–नाथ**–पु. कपित्थ, कैथ। **–मेघ**–पु. जाड़े का बादल। **–समय**–पु जाड़े का मौसिम।

हेमंती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) जाड़े का मौसिम।

हेम–संज्ञा, पु. (सं.) सुवर्ण; धतूरा; काले या भूरे रंग का घोड़ा; एक स्वर्णमान, माशा; बुध ग्रह।

हेम (न्)–संज्ञा, पु. (सं.) सोना; जल; पाला, हिम; धतूरा; केसर का फूल; वुध ग्रह। **–कंदल**–पु. प्रवाल, मूँगा। **–कक्ष**–पु. सोने का कमरबंद। **–कर**–पु शिव। **–करक**–पु. स्वर्णपात्र। **–कर्ता (र्तृ)**–पु. सुनार, एक पक्षी। **–कलश**–पु. (गुंबद पर लगाने की) सोने की कलसी, स्वर्णनिर्मित शृंगकलश। **–कल्याण**–पु. संगीत में कल्याण राग का एक भेद। **–कांति,–कारक**–पु. सुनार। **–कारिका**–स्त्री. एक पौधा। **–किंजल्क**–पु. नागकेसर। **–कुंभ**–पु. सोने का कलश। **–कूट**–पु. हिमालय के उत्तर का एक पर्वत। **–केतकी**–स्त्री. केतकी। **–केलि**–पु. अग्नि। **–केश**–पु शिव। **–गंधिनी**–स्त्री. रेणु का नामक गंधद्रव्य। **–गर्भ**–पु उत्तर का एक पर्वत। वि. जिसके अंदर सोना हो। **–गिरि**–पु. मेरु पर्वत। **–गुह**–पु. एक नागासुर। **–गौर**–वि. सोने जैसा गोरवर्ण युक्त। पु. किंकिरात वृक्ष; अशोक वृक्ष। **–घ्न**–पु सीसा। **–घ्नी**–स्त्री. हलदी। **–चंद्र**–वि. सोने के चाँद से अलंकृत (जैसे रथ)। पु. एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा; एक जैनाचार्य। **–चक्र**–वि. सोने के पहियों वाला। **–चूली (लिन्)**– वि. स्वर्ण शिखर युक्त। **–ज**–पु टीन; राँगा। **–जट**– पु. किरातों की एक जाति। **–जीवंती**–स्त्री एक पौधा। **–ज्वाल**–पु. अग्नि। **–तरु**–पु धतूरा। **–तार**–पु तूतिया। **–ताल**–पु. उत्तर का पहाड़ी प्रदेश। **–तुला**– स्त्री. सोने का तुलादान। **–दंता**–स्त्री. एक अप्सरा। **दुग्ध,–दुग्धक,–दुग्धी (ग्धिन्)**–पु. गूलर। **–दुग्धा–**, **–दुग्धी**–स्त्री. स्वर्णक्षीरी। **–धन्वा (न्वन्)**–पु. ग्यारहवें मनु का एक पुत्र। **–धान्य**–पु. तिल। **धान्यक**–पु. डेढ़ माशे का एक तौल। **–धारण**–पु. आठ पल की एक तौल। **–नेत्र**–पु एक यक्ष। **–पर्वत** –पु सुमेरु पर्वत; (महादान के लिए बना हुआ) सोने का पर्वत। **–पुष्प**–पु. चंपा; अशोक-पुष्प; नागकेसर; अमलतास। **–पुष्पक**–पु चंपक-पुष्प; लोध्र। **–पुष्पिका** –स्त्री. स्वर्ण यूथिका। **–पुष्पी**–स्त्री मंजिष्ठा; स्वर्ण जीवंती; इंद्रवारुणी; स्वर्ण ली; मुसली; कंटकारी। **–पृष्ठ** –वि. सोने का मुलम्मा किया हुआ। **–प्रतिमा**–स्त्री. सोने की मूर्ति। **–प्रभ**–वि. सोने की कांतिवाला। **–फला**–स्त्री. स्वर्ण कदली। **–भस्त्रा**–स्त्री. सोने की थैली। **–माक्षिक**–स्त्री. सोने का हार। **–माली (लिन्)**–वि. सोने का हार धारण करने वाला; सोने से अलंकृत। पु. सूर्य; खर नामक राक्षस का पिता। **–माशा** –स्त्री. सोने की एक तौल। **–मुद्रा**–स्त्री. सोने का सिक्का, मोहर, अशर्फी। **–यूथिका**–स्त्री. स्वर्ण यूथिका। **–रागिनी**–स्त्री. हरिद्रा। **–रेणु**–पु. त्रसरेणु। **–लंब,–लंबक**–पु. 31वाँ संवत्सर।

–ल–पु. स्वर्णकार; गिरगिट; छिपकली; कसौटी। –लता–स्त्री. स्वर्ण जीवंती। –**वर्ण**–वि. सोने का रंग का। पु. गरुड़ का एक पुत्र; एक वृद्ध। –**वल**–पु. मोती। –**वल्ली**– स्त्री. स्वर्ण जीवंती। –**शंख**–पु. विष्णु। –**शिखा**– स्त्री.,–**शीत**–पु. स्वर्णक्षीरी। –**शृंग**–पु. एक पर्वत। –**शैल**–पु. एक पर्वत। –**सागर**–पु. एक पौधा। –**सार**–पु. तूतिया। –**सुता**–स्त्री. पार्वती। –**सूत्र**,– **सूत्रक**–पु. हारविशेष। –**हस्तिरथ**–पु. महादान विशेष (जिसमें सोने का हस्तिरथ दिया जाता है)।

हेमक–संज्ञा, पु. (सं.) स्वर्ण; स्वर्ण खंड; एक अरण्य; एक दैत्य।

हेमांक–वि. (सं.) स्वर्णालंकृत।

हेमांग–संज्ञा पु. (सं.) ब्रह्मा; विष्णु; गरुड़, सिंह; सुमेरु; चंपक वृक्ष। वि. सुनहला।

हेमांगद–वि. (सं.) सोने का विजयाठ पहनने वाला। पु. एक गंधर्व; एक कलिंग नरेश; वसुदेव का एक पुत्र।

हेमांगा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वर्णक्षीरी।

हेमांड, हेमांडक–संज्ञा, पु. (सं.) ब्रह्मांड।

हेमा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पृथ्वी; सुंदर स्त्री; एक अप्सरा; माधवी लता।

हेमा (मन्)–संज्ञा, पु. (सं.) बुध ग्रह।

हेमाचल–संज्ञा, पु. (सं.) दे. 'हेमपर्वत'।

हेमाढय–वि. (सं.) सोने से भरापूरा।

हेमाद्रि–संज्ञा, पु. (सं.) मेरु। –**जरण**–पु. स्वर्णक्षीरी।

हेमाद्रिका–संज्ञा पु. (सं.) स्वर्णक्षीरी।

हेमाभ–वि. (सं.) सोने जैसी चमक वाला।

हेमाल–संज्ञा, पु. एक राग।

हेमाह्व–संज्ञा, पु. (सं.) वनपंचक; धतूरा।

हेमाह्वा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) स्वर्णजीवंती; स्वर्णक्षीरी।

हेम्न–संज्ञा, पु. (सं.) बुध ग्रह।

हेम्ना–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक राग।

हेम्य–वि. (सं.) सोने का; सुनहला।

हेय–वि. (सं.) त्याज्य; बुरा, खराब; घटाए जाने योग्य।

हेरंब–संज्ञा, पु. (सं.) गणेश; भैंसा; शौर्यगर्वित, धीरोद्धत नायक; बुद्ध विशेष। –**जननी**–स्त्री. दुर्गा। –**मंत्र**–पु. गणेश का एक मंत्र। –**हट्ट**–पु. दक्षिण का एक प्राचीन भू भाग।

हेर–संज्ञा, पु. (सं.) हरिद्रा, हलदी; एक प्रकार का मुकुट; आसुरी *माया। स्त्री. खोज, तलाश।

हेरक–संज्ञा, पु. (सं.) शिव का एक दैत्य-गण; गुप्तचर। 'हर-एक' का यौगिक।

हेरना*–स. क्रि. किसी चीज को ढूँढ़ना, तलाश करना, खोजना; देखना, निहारना; किसी वस्तु को विवेकपूर्वक देखना, परीक्षा करना, जाँच-पड़ताल करना, परखना। **मु. –फेरना**–एक जगह की चीज दूसी जगह करना, उलट-पलट करना, अदल-बदल करना, परिवर्तन करना।

हेरफेर–संज्ञा, पु. परिवर्तन, उलट-पलट की क्रिया; अदल-बदल करने का काम; रद्दोबदल (आलट्रेशन); विनिमय; भेद, अंतर, दूरी; टेढ़ी-सीधी बात, साफ़-साफ़, सीधे-सीधे बात न करने की क्रिया; चालबाज़ी। –**कर**–किसी-न-किसी तरह, घूम-फिरकर।

हेरवाना†–स. क्रि. पता लगवाना, खोजवाना; खोना।

हेरना*–स. क्रि. दे. 'हेरवाना'। अ. क्रि. गायब हो जाना, खो जाना; एकदम न रह जाना, अभाव हो जाना; अपन को भूल जाना, अपनी सुख-बुध खोना।

हेरा-फेरी–संज्ञा, स्त्री. हेर-फेर; उलट-पलट, वस्तुओं का यथास्थान न रह जाना, चीजों का इधर-उधर होना।

हेरिक–संज्ञा, पु. (सं.) भेदिया, गुप्तचर।

हेरी*–संज्ञा, स्त्री. आह्वान, पुकार, गुहार। –**मु. –देना**–गुहार लगाना, आह्वान करना।

हेरुक–संज्ञा, पु. (सं.) गणेश; शिव का एक गण; एक बोधिसत्त्व; नास्तिकों का एक भेद।

हेलंची–संज्ञा, स्त्री. (सं.) एक साग, हिलमोचिका।

हेल–संज्ञा, पु. परिचय ('मेल' के साथ प्रयुक्त); कीचड़ गोबर आदि का ढेर; ढेर; अवज्ञा, उपेक्षा; घृणा। –**मेल**–पु. मेल-जोल, घनिष्ठता।

हेलन–संज्ञा, पु. (सं.) अवहेलना, तिरस्कार; रस-क्रीड़ा, किलोल।

हेलना–स्त्री. (सं.) दे. 'हेलन'। *अ. क्रि. राग-रंग-मनाना, किलोल, क्रीड़ा करना; निश्चिंत रहना, परवाह न करना; (जान पर) खेलना; (जल में) प्रवेश करना; हँसी-मज़ाक करना। स. क्रि. अवहेलना, उपेक्षा करना, तुच्छ समझना; तैरना, हलकर पार करना।

हेलनीय–वि॰ (सं॰) उपेक्षा के योग्य।
हेलया–अ॰ (सं॰) खेल ही खेल में, आसानी से ('हेला' का करण कारक का रूप)।
हेला–संज्ञा, पु॰ मेहतर; आह्वान, पुकार, उतारा आक्रमण, धावा; ठेलने की क्रिया, धक्का; खेवा, खेप। स्त्री॰ (सं॰) तिरस्कार, अवज्ञा; अपमान; केलि, क्रीड़ा; चंद्रिका; आनंद, प्रसन्नता; आसानी, सरलता; स्त्रियों में सूरत की बलवती इच्छा; एक मूर्च्छना (संगीत); स्त्रियों का शृंगारसूचक व्यक्त हाव जो एक प्रकार का सत्त्वज अलंकार है।
हेलाल–पु॰ दे॰ 'हिलाल'।
हेलि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य। स्त्री॰ आलिंगन; रास्ते पर जाती हुई बरात।
हेलिक–पु॰ (सं॰) सूर्य।
हेलिन, हेलिनी–संज्ञा, स्त्री॰ मेहतरानी।
हेली*–संज्ञा, स्त्री॰ सखी; सहेली; घर, मकान।
हेली-मेली–पु॰ जिससे हेल-मेल हो, संगी-साथी।
हेल्थ–संज्ञा, पु॰ (अं॰) तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।
हेवज्र–संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक बौद्ध देवता।
हेवाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रबल इच्छा।
हेवाकस–वि॰ (सं॰) तीव्र, प्रबल (इच्छा)।
हेवाकी (किन्)–वि॰ (सं॰) बहुत इच्छुक; लीन।
हेषा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'हेष'।
हेषी (षिन्)–संज्ञा, पु॰ (सं॰) घोड़ा।
है–अ॰ क्रि॰ 'है' का बहुवचन रूप। अ॰ आश्चर्यसूचक शब्द; अस्वीकृति, निषेधसूचक शब्द।
हैंगिंग–वि॰ (अं॰) लटकने वाला। **–गार्डेन**–पु॰ झूला बाग। **–ब्रिज**–पु॰ झूला पुल। **–लैंप**–पु॰ वह लैंप जो छत से लटकाकर जलाया जाए।
हैंगुल–वि॰ (सं॰) हिंगुल से संबद्ध, ईंगुर-संबंधी; ईंगुर के रंग का।
हैंडबिल–संज्ञा, पु॰ (अं॰) नोटिस, पर्चा।
हैंडबैग–संज्ञा, पु॰ (अं॰) चमड़े का छोटा बक्स जिसमें प्रायः व्यापार, पढ़ने-लिखने आदि के अत्यावश्यक सामान रखते हैं।
हैंडिल–संज्ञा, पु॰ (अं॰) मुठिया, दस्ता।
हैंस†–संज्ञा, स्त्री॰ एक पोधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।
है–अ॰ क्रि॰ 'होना' का वर्तमान काल का एकवचन रूप। *पु॰ हय, अश्व, घोड़ा। **–वर**–पु॰ सुंदर, अच्छा घोड़ा।
हैकड़–वि॰ दे॰ 'हेकड़'।
हैकल–संज्ञा, स्त्री॰ चौकोर, पान के तथा अन्य प्रकार के आकार के कई अंतरों से बना गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना, हुमेल।
हैज–संज्ञा, पु॰ (अ॰) मासिक रजःस्राव।
हैज़ा–संज्ञा, पु॰ (अ॰) संक्रामक माना जाने वाला एक रोग जिसमें कै और दस्त आते हैं, विषूचिका। स्त्री॰ रजस्वला।
हैट–संज्ञा, पु॰ (अं॰) अंग्रेज़ी टोप।
हैडिंबि–संज्ञा, पु॰ (सं॰) हिडिंबा का पुत्र, घटोत्कच।
हैतुक–वि॰ (सं॰) कारण रूप होनेवाला; हेतु-संबंधी; सहेतु, सकारण; हेतु, तर्क-संबंधी, तार्किक। पु॰ कारण; तार्किक; मीमांसक; नास्तिक; धार्मिक विषयों में उदार विचारों वाला व्यक्ति; एक वृक्ष; शिव का एक गण।
हैदर–संज्ञा, पु॰ (अ॰) शेर। **–अली**–पु॰ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध मुसलिम शासक, टीपू का पिता।
हैना*–स॰ क्रि॰ मारना, हनन करना।
हैफ़–पु॰ (अ॰) खेद, अफसोस। अ॰ हा, हंत, अफ़सोस।
हैबत–संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) डर, भय, दहशत। **–जदा**–वि॰ भीत, डरा हुआ। **–नाक**–वि॰ डरावना। **–सुलतानी**–स्त्री॰ बादशाह का डर या रुआब। **मु॰ –छाना**–डर जाना। **–दिलाना**–डरा देना। **–मचना**–घबड़ाहट होना।
हैमंत–वि॰ (सं॰) हेमंत-संबंधी; जाड़े में उत्पन्न होनेवाला; जाड़े के उपयुक्त। पु॰ हेमंत ऋतु।
हैमंतिक–वि॰ (सं॰) 'हेमंत'। पु॰ शालि धान्य।
हैम–वि॰ (सं॰) हिम-संबंधी; हिम से उत्पन्न; जाड़े में होने वाला; बर्फ़ से ढका हुआ; हिमालय-संबंधी; सोने का बना हुआ; सोने के रंग का। पु॰ हिम, पाला; ओस; शिव; भूनिब, चिरायता। **–मुद्रा, –मुद्रिका**–स्त्री॰ सोने का सिक्का। **–वल्कल**–वि॰ सोने का पत्तर चढ़ा हुआ। **–शैल**–पु॰ एक पर्वत।
हैमन–वि॰ (सं॰) जाड़े का, शीतकालीन; जाड़े के उपयुक्त; सोने का बना हुआ। पु॰ हेमंत ऋतु; मार्गशीर्ष मास;

शालि धान्य।

हैमल–पु. (सं.) हेमंत।

हैमवत–वि. (सं.) बर्फ़ीला; हिमालय-संबंधी; हिमालय पर उत्पन्न; हिमालय पर स्थित। पु. भारतवर्ष; एक प्रकार का विष; मोती; हिमालय के निवासी; एक तरह के दैत्य; बौद्धों का एक भेद। **–वर्ष**–पु. भारतवर्ष।

हैमवतिक–संज्ञा, पु. (सं.) हिमालय के निवासी।

हैमवती–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हरीतकी; स्वर्णक्षीरी; श्वेत वचा; कपिलद्राक्षा; अतसी; रेण का; पार्वती; गंगा; कौशिक की भार्या।

हैमा, हैमी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) पीत यूथिका। (अ.) पु. बेपानी का जंगल।

हैयंगवीन–संज्ञा, पु. (सं.) एक दिन के बासी दूध के मक्खन से बना घी; ताजा घी; एक दिन का बासी मक्खन।

हैरंब–वि. (सं.) गणेश का; गणेश-संबंधी। पु. गाणपत्य संप्रदाय।

हैरण्य–वि. (सं.) स्वर्णमय, सोने का बना हुआ; स्वर्णवहन करने वाला (नद), सोना देने वाला (हाथ)। **–वासा–(सस्)**–वि. सुनहला पंख लगा हुआ (बाण)।

हैरण्यक–पु (सं.) स्वर्णकार; स्वर्ण निधि का निरीक्षक; एक वर्ष (देश)।

हैरण्यगर्भ–वि. (सं.) हिरण्यगर्भ-संबंधी।

हैरिण्यक–संज्ञा, पु. (सं.) स्वर्णकार।

हैरत–संज्ञा, स्त्री. (अ.) अचंभा, विस्मय। **–अंगेज़**–वि. विस्मयजनक। **–जदा**–वि. चकित, विस्मित; भौंचक्का।

हैरान–वि. (अ.) चकित; हतबुद्धि, भौंचक्का, भटकने वाला; परेशान।

हैरानी–स्त्री. विस्यम; परेशानी।

हैरिक–संज्ञा, पु. (सं.) चोर; गुप्तचर।

हैल–संज्ञा, स्त्री. (अ.) शक्ति, बल, ताक़त।

हैलोजेन–संज्ञा, पु. (अं. हैलोजेन) फ्लोरीन, क्लोरीन, ब्रोमीन तथा आयडीन 'हैलोजेन' के नाम से पुकारे जाते हैं, क्योंकि इनके रासायनिक गुणों में बहुत अधिक समानता है।

हैवान–संज्ञा, पु. (अ.) प्राणी; पशु, जानवर; (ला.) मूर्ख; उजड्ड, जंगली। **–(ने) ज़ाहिक**–पु. बंदर, हँसने वाला प्राणी। **–नातिक**–पु. बोलने वाला प्राणी, मनुष्य।

हैवानात–पु. (अ.) 'हैवान' का बहुवचन।

हैवानियत–संज्ञा, स्त्री. पशुभाव, पशुता; जंगलीपन; निष्ठुरता; कठोरता।

हैवानी–वि. जानवर का, पाशव; अमानुषिक।

हैस–संज्ञा, स्त्री. (अ.) युद्ध, कलह; गलत राह।

हैसबैस–संज्ञा, पु. (अ.) बहस, विवाद।

हैसियत–स्त्री. (अ. 'हैसीयत') ढंग, तौर; योग्यता; सामर्थ्य; बिसात; मालियत; आर्थिक योग्यता; धन-संपत्ति; दरजा, श्रेणी; मान-प्रतिष्टा। **–दार**–वि. हैसियत वाला, जिसके पास पैसे या जायदाद हो।

हैहय–संज्ञा, पु. (सं.) एक देश या यहाँ का निवासी; यदु का प्रपौत्र, कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन; एक पर्वत। **–राज**–पु. सहस्रार्जुन।

हैहात–स्त्री. (अ.) हा हंत, हाय हाय, अफ़सोस।

हैहेय–संज्ञा पु. (सं.) अर्जुन कार्तवीर्य।

हैहै–अ. शोक, दुःख आदि का सूचक शब्द, हाय-हाय।

हों–अ. क्रि. 'होना' का संभावना-सूचक (बहुवचन) रूप।

होंठ–संज्ञा, पु. मुँह के बाहर का ऊपर का नीचे का भाग, ओष्ठ, दंतच्छद। **मु. –काटना, –चबाना**–क्रोध, शोक आदि के आवेश में दाँतों से होंठ को काटना। **–चाटना**–कोई स्वादिष्ट पदार्थ अधिक से अधिक खाने की इच्छा करना; किसी अच्छी चीज़ का स्वाद याद आना। **–चिपकना**–किसी मनचाही मीठी चीज़ का नाम सुनते ही उसे पाने की प्रबल इच्छा होना। **–चूसना**–अधर (रस) पास करना। **–मिलाना**–चुंबन करना। **–सी लेना**–मौन हो जाना। **–हिलाना**–बोलना; धीरे से कुछ कहना। **होंठों पर छठी का दूध याद आ जाना**– बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ना।

होंठल–वि. बड़े और मोटे होंठों वाला।

हो–अ. क्रि. 'होना' का संभावना सूचक (अन्य पुरुष, एक वचना) रूप; 'होना' का सामान्य भूत, था। अ. संबोध में प्रयुक्त शब्द, है।

होजरी–संज्ञा, स्त्री. (अं.) गंजी, मोजा, आदि वस्तु (–की दूकान)।

होटल–संज्ञा, पु. (अं. 'होटल) द्रव्य देकर यात्रियों तथा अन्य

लोगों के भी खाने, रहने, मनोरंजन आदि की आधुनिक ढंग की व्यवस्था से युक्त स्थान।

होड–संज्ञा, पु. (सं.) बेड़ा, भेला; नाव।

होड़–संज्ञा, स्त्री. किसी विषय में एक दूसरे से बढ़ जाने की चाह और प्रयत्न, लाग-डाट, चढ़ा-ऊपरी, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता, प्रतियोगिता; किसी काम में हार-जीत होने पर पूर्व निश्चय के अनुसार किसी को कुछ देने या उससे कुछ लेने की प्रतिज्ञा, बाज़ी, शर्त।

होड़ाबादी–संज्ञा, स्त्री. दे. 'होड़'।

होड़ाहोड़ी–संज्ञा, स्त्री दे. 'होड़'। अ. होड़ लगाकर।

होढ- वि. (सं.) चुराया हुआ। पु. चोरी का माल।

होतव, होतव्यता*–स्त्री. होने वाली बात, भवितव्यता, होनहार।

होतव*–वि. होने योग्य।

होतव्य–वि. (सं.) हवन करने योग्य।

होता (तृ)–वि. (सं.) हवन करने वाला। पु. मंत्र पढ़ते हुए यज्ञ-कुंड में हव्य डालनेवाला व्यक्ति, यज्ञकर्ता; यज्ञ करानेवाला पुरोहित; शिव; अग्नि। **–(तृ) कर्म (न्)**–पु. होता का कार्य। **–चमस**–पु. होता द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले पात्र–स्रुवा आदि। **–प्रवर**–पु. होता का चुनाव। **–षदन**–पु. होता के बैठने का स्थान।

होतृक–संज्ञा, पु. (सं.) दे. 'होत्रक'।

होत्र–संज्ञा, पु. (सं.) हवि, होम; हवन-सामग्री, घी आदि।

होत्रक–संज्ञा, पु. (सं.) होता का सहायक।

होत्रा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) यज्ञ; स्तुति।

होत्री–स्त्री. (सं.) यजमान के रूप में शिव की मूर्ति, शिव की आठ मूर्तियों में से एक।

होत्री (त्रिन्)–संज्ञा, पु. (सं.)।

होत्रीय–वि. (सं.) होता से संबंध रखने वाला। पु. होता, यज्ञकर्ता पुरोहित; हवनगृह, यज्ञ-मंडप।

होत्वा (त्वन्)–संज्ञा, पु. (सं.) यज्ञकर्ता।

होनहार–वि. होने वाला, अवश्यमेव होने वाला; भविष्य के विकास, उत्कर्ष, समृद्धि आदि का आभास देनेवाला। पु., स्त्री. भवितव्यता, अवश्यमेव घटित होने वाली घटना, बात आदि।

होना–अ. क्रि. कायम, मौजूद, विद्यमान रहना; परिस्थिति; अवस्था आदि में परिवर्तन आना, एक स्थिति से दूसरी स्थिति का आना, कुछ से कुछ होना; प्रस्तुत होना, बनना; तैयार होना; किसी कार्य का पूरा होना, निर्मित होना; शरीर में किसी प्रकार की व्याधि का होना; समय का व्यतीत होना, दिन बीतना; किसी घटना का घटित होना; उत्पन्न होना, पैदा होना; काम चलना, निकलना किसी काम का हो जाना। **(जो) हुआ सो हुआ**–जो घटना या बात हो चुकी उसके लिए चिंता करने की आवश्यकता नहीं; जो घटना या बात हो चुकी उसे पुनः भविष्य में न होने देना चाहिए, काम तो बुरा हुआ, अब फिर इसे कदापि न करना चाहिए। **तो क्या हुआ?**–जाने दो, कोई परवाह नहीं (नहीं करना चाहते हो तो कोई परवाह नहीं)। **हुआ-हुआ**–किसी से कोई काम न होने पर कही जाने वाली उक्ति (व्यंग्य रूप में प्रयुक्त होने के कारण यह निषेध के रूप में न होने पर भी निषेध का अर्थ देता है); बहुत कुछ कह चुकने पर किसी को मना करने के लिए कही गई बात। **हो आना**–कहीं जाकर लौट आना; किसी से भेंट-मुलाकात करने जाना; मिलने जाना। **होकर**–पास से, समीप से, बीच से, मध्य से। **होकर रहना**–जरूर होना, अवश्य घटित होना। **हो गुज़रना**–घटना का घटित होने; समाप्त होना। **हो चलना**–समाप्ति के निकट आना; बहुत हो जाना। **हो चुकना**–समाप्त हो जाना, तमाम हो जाना; खर्च हो जाना; मर जाना किसी बात, वस्तु आदि का सीमा तक पहुँच जाना, हद हो जाना। **हो चुका**–सम्भव; नहीं हो सकता; कभी नहीं होगा। **हो जाना**–असम्भव; नहीं हो सकता; कभी नहीं होगा। **हो जाना**–काम पूरा हो जाना, काम बन जाना; कहीं आकर चला जाना; किसी ने मिलकर चला जाना; मर जाना; बन जाना, किसी भी क्षेत्र में स्थिति का अच्छा हो जाना; (किसी काम का) खत्म हो जाना; लड़ाई झगड़ा, मारपीट हो जाना; कुछ लायक हो जाना; भूत प्रेत का प्रभाव पड़ जाना; भोजन आदि का तैयार हो जाना; **(किसी को) कुछ हो जाना)**–स्वभाव, स्वास्थ्य आदि की चिंता की कोई बात हो जाना। **होते-सोते**–उपस्थित रहते। **होते हुए**–दे. 'होकर'। **हो न हो**–कौन जाने (अनिश्चय सूचनार्थ)। **(किसी का) होना**–किसी का प्रिये, प्रेमी, विश्वासपात्र,

कुटुंबी, सेवक आदि होना। **(लाखों में एक) होना**–किसी का अनेक में श्रेष्ठ होना, अत्यन्त उच्च कोटिका होना। **हो निकलना**–होकर जाना, पास से जाना, किसी जगह आ जाना। **होने का**–होने वाला। **होने लगना**–किसी काम का आरम्भ होना। **हो पड़ना**–अकस्मात् कुछ घटित हो जाना; अचानक झगड़ा-तकरार हो जाना **हो बैठना**–हो जाना, वन पड़ जाना; कुछ जो जाना (बड़ा आदमी आदि); दे. 'हो पड़ना'। **हो रहना**–हो जाना, होना। **(कहीं का) हो रहना**–कहीं से लौटने में बहुत देर लगाना; कही से न लौटना। **(किसी का) हो रहना**–किसी का प्रिय या प्रेम हो जाना। **हो लेना**–हो चुकना, समाप्त होना; पूरा होना, पूर्ण रूप से होना; कोई मार्ग ग्रहण कर लेना; किसी पक्ष का हो जाना; साथ चलना; पैदा होना, उत्पन्न होना; लड़ाई-झगड़ा होना। **(पीछे) हो लेना**–पीछे-पीछे जाना, चलना; किसी की पैरवी करना। **हो सो हो**–चाहे जो कुछ हो (निश्चायर्थक)। **हो-हवा चुकना**–हो चुकाना। **हो-होकर**–दे. 'होकर'।

होनिहार*–वि. पु. दे. 'होनहार'।

होनी–संज्ञा, स्त्री. होनहार, भविव्यता; उत्पत्ति।

होम–संज्ञा, पु. (सं.) हवन, यज्ञ; ब्राह्मणों द्वारा नित्य किया जाने वाला पंच महायज्ञों में से एक देवयज्ञ। **–कर्म (न्)**–पु यज्ञ संबंधी कर्तव्य या विविधाँ। **–कल्प**–पु. होम करने की विधि। **–काल**–पु. यज्ञ का समय। **–काष्ठी**–स्त्री. यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने की फुँकनी। **–कुंड**–पु. हवन करने के लिए बना हुआ कुंड। **–तरंग**–पु. यज्ञ का घोड़ा। **–दर्वी**–स्त्री. स्रुवा। **–द्रव्य**–पु. हवन की सामग्री, घी आदि। **–धान**–पु. यज्ञभवन। **–धान्य**–पु. तिल। **–धूम**–पु. होम की अग्नि का धुआँ। **–धेनु**–स्त्री. हवन के लिए दूध देने वाली गाय। **–भस्म (न्)**–पु. हवन की राख। **–झांड**–पु. हवन में काम आनेवाले पात्र। **–यूप**–पु. यज्ञस्तंभ। **–वेला**–स्त्री. होमकाल **–शाला**–स्त्री. यज्ञशाला। **मु. – करते हाथ जलना**–किसी का उपकार करते (उपकार करने वाले का) अपकार होना। **–कर देना**–बलिदान कर देना, उत्सर्ग कर देना; अग्नि में जला डालना; जलाकर नष्ट कर देना, खराब कर देना।

होमक–संज्ञा, पु. (सं.) होता; होत्रक।

होमना–स. क्रि. हवन करना; बलिदान करना; नष्ट करना।

होमर–संज्ञा. पु. ग्रीक भाषा का प्राचीन कवि, जिसने 'इलियड' तथा 'आडिसी' नामक महाकाव्यों की रचना की थी (580 ईसवी पूर्व)।

होमरूल–संज्ञा, पु. (अं.) अपने देश पर अपना शासन, स्वराज; (लोकमान्य तिलक, श्रीमती ऐनी बेसेण्ट आदि द्वारा स्वायत्त शासन के लिए चलाया गया आन्दोलन।

होमाग्नि–संज्ञा, स्त्री. **होमानल**–पु. (सं.) यज्ञाग्नि।

होमार्जुनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दे. 'होम-धेनु'।

होमि–संज्ञा, पु. (सं.) धृत; जल; अग्नि; चित्रक वृक्ष।

होमियोपैथ–संज्ञा, पु. (अं.) होमियोपैथिक पद्धति के अनुसार चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति।

होमियोपैथिक–वि. (अं.) होमियोपैथी-संबंधी।

होमियोपैथी–संज्ञा स्त्री. (अं.) हीनमान द्वारा आविष्कृत एक चिकित्सा-पद्धति जिसमें प्रायः विषौषध द्वारा रोग-निवारण करते हैं।

होमी (मिन्)–संज्ञा, पु. (सं.) होमकर्ता।

होमीय–वि. (सं.) होम-संबंधी; हवन के उपयुक्त। **द्रव्य**–पु. हवन के काम आने वाले पदार्थ, घृत आदि।

होमेंधन–संज्ञा, पु. (सं.) यज्ञकाष्ठ।

होम्य–वि. (सं.) दे. 'होमीय'। पु. घृत।

होर–वि. ठहरा, रुका हुआ *पु ओर, मार्ग।

होरसा–संज्ञा, पु. रोटी बेलने या चंदन आदि घिसने का पत्थर का बना चौका।

होरहा† –संज्ञा, पु. चुने का फलदार हरा पौधा; आग पर भूना हुआ जौ, चने आदि का हरा दाना हीरा।

होरा–संज्ञा, पु. दे. 'होलक'। स्त्री. (सं.) ज्योतिष शास्त्रोक्त लग्न; ढाई घड़ी; आधी राशि; होराज्ञापक शास्त्र, जन्मपत्नी; चिह्न, रेखा। **–विद्**–वि. जन्मपत्री देखने में कुशल। **–शास्त्र**–पु. फलित ज्योतिष।

होरिल, होरिलवा, होरिला*–संज्ञा, पु. शिशु; नवजात शिशु।

होरिहार*–संज्ञा, पु. होली खेलने वाला।

होरी–संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ 'होली', जहाज पर माल लादने और उस पर से उतारने के काम आने वाली बड़ी नाव।

होलक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) मटर, चने आदि की आग पर भूनी हुई अधपकी फलियाँ।

होला–पु॰ दे 'होलक'। स्त्री॰ (सं॰) होली का त्योहार। **–खेलन** –पु॰ फाग खेलना।

होलाक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) पसीना निकलने का एक उपचार (जिसमें गरम राख की सहायता लेते थे)।

होलाका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वसंतोत्सव, होली का त्योहार; फाल्गुन की पूर्णिमा।

होलाष्टक–संज्ञा, पु॰ (सं॰) होली के पूर्व के आठ दिन जिन में विवाह नहीं होता।

होलिका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) होली को त्योहार; लकड़ी, पेड़, घास-फूस आदि का ढेर जिसका दहन फाल्गुन की पूर्णिमा की रात में होता है; एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की भगिनी थी।

होली–संज्ञा, स्त्री॰ एक त्योहार; कपड़े आदि के ढेर का जला दिया जाना (ला॰); एक प्रकार का गीत जो विशेष रूप से होली के अवसर पर गाया जाता है; दे॰ 'होलिका'। **–मु॰ –खेलना**–फाग खेलना, एक दूसरे पर रंग आदि डालना।

होल्ड-ऑल, होल्डाल–संज्ञा, पु॰ (अं॰) सफर के काम आने वाला एक तरह का थैला जिसमें ज़रूरी कपड़े रखकर लेटने के लिए बिस्तर की तरह डाल लेते और चलते समय लपेटकर बंडल की तरह बना लेते हैं।

होल्डर–संज्ञा, पु॰ (अं॰) लकड़ी आदि का बना अँगरेज़ी कलम का हाथ से पकड़ा जाने वाला अंश जिसके निचले भाग में निब लगी रहती है; बिजली के तार में लगा हुआ वह साधन जिसमें बल्ब अटकाया जाता है।

होश–संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) जीव की अपनी संज्ञा, जीवित रहने का ज्ञान, चेतना; सुधबुध; स्मरण; अक्ल, बुद्धि, समझ। **–फाख़्ता**–वि॰ हतसंज्ञ, जिसका दिमाग ठिकाने न हो। **–मंद**–वि॰ बुद्धिमान्, समझदार **–मंदी**–स्त्री॰ बुद्धिमानी, समझदारी। **–रुबा**–वि॰ होश उड़ा देने वाला। **–वाला**–वि॰ अनुभवी, समझदार। **–हवास**–पु॰ सुधबुध। **–मु॰ –आना**–समझ आना, समझदार होना, चतुर होना, अक्ल, बुद्धि आना; आपे में आना, चेतनायुक्त होना; स्मरण होना, ख़याल आना। **–उड़ जाना,–उड़ना,**–उड़ा देना,**–उड़ाना**–बदहोश हो जाना, घबड़ा जाना; आश्चर्यचकित हो जाना, हैरत में आ जाना; अक्ल खोना। **–काफ़ूर होना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–खोना**–दे॰ 'होश से बाहर होना'। **–गुम होना**–होश उड़ना। **–जाता रहना,–जाना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–ठिकाने रहना**–होश-हवास दुरुस्त रहना। **–ठिकाने होना**–अक्ल, ठीक होना। **–दंग होना**–दे॰ 'होश उड़ना'। **–दिलाना**–स्मरण कराना, याद दिलाना। **–न रहना**–ख़बर न रहना, होश उड़ जाना; बेहोश हो जाना **–न होना**–होश-हवास दुरुस्त न होना। **–पकड़ना**–उमर में बढ़ना, सयाना होना; होशियार होना। **–पैतरे होना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–बाख़्ता (फ़ाख़्ता) होना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–बिखरना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–में आना**–ज्ञान प्राप्त करना, अक्ल हासिल करना; तमीज़ सीखना, व्यवहार सीखना; समझदार, होशियार होना; आपे में आना, सँभलना। **–रखना**–बुद्धिमान् होना, अक्ल रखना। **–रहना**–होश दुरुस्त रहना। **–सँभालना**–सयाना होना, बड़ा होना; आचार-व्यवहार, तमीज़ सीखना। **–से बाहर होना**–चेतनाहीन होना, बेहोश होना, बेखुद हो जाना। **–हवा होता,–हिरन होना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–होना**–अक्ल होना; खबर होना; होश-हवास दुरुस्त होना; किसी प्रकार के नशे में न होना; बड़ा होना सयाना होना।

होशियार–वि॰ (फ़ा॰) अक्लमंद, बुद्धिमान्; ख़बरदार, सावधान, सजग; प्रवीण; अनुभवी। **मु॰–करना**–असावधान को सावधान करना। **–रहना**–सावधान रहना, चौकस रहना। **–हो जाना**–सावधान हो जाना; गफ़लत दूर होना।

होशियर–संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) बुद्धिमानी; सावधानी; चालाकी; अनुभव।

होस्टल–संज्ञा, स्त्री॰ (अं॰ 'होस्टेल') छात्रावास।

होहल्ला–संज्ञा, पु॰ शोरगुल, हुल्लड़।

हौ†–सर्व॰ उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम मैं। अ॰ क्रि॰ वर्तमान-कालिक क्रिया 'होना' के उत्तम पुरुष एकवचन

का रूप, हूँ।

हौँकना*–अ. क्रि. हुंकारना, गर्जन करना; हाँफना; † पंखे आदि की हवा से आग को दहकाना; पंखे आदि से हवा करना।

हौँस–स्त्री. दे. 'हौस'।

हौँसला†–पु. दे. 'हौसला'।

हौ*–अ. क्रि. 'होना' का मध्यम पुरुष एकवचन का वर्तमान कालिक रूप, हो; 'होना' का भूतकालिक रूप, था।

हौआ–संज्ञा, पु. एक कल्पित वस्तु जिसका नाम लेकर स्त्रियाँ बच्चों को डराया करती हैं, भकाऊँ; असाधारण और डरावनी चीज़ (बॉगी)। स्त्री. दे. 'हौवा'।

हौका–संज्ञा, पु. खाने की तृष्णा, पेटूपन; लोभ, लालच।

हौज़–संज्ञा, पु. (अं.) कुंड; चहबच्चा; नाँद।

हौज़ा–संज्ञा, पु. (फ़ा.) हौदा, हाथी की अम्मारी।

हौतभुज–वि. (सं.) अग्नि-संबंधी। पु. कृत्तिका नक्षत्र।

हौताशन–वि. (सं.) अग्नि-संबंधी। **–लोक**–पु. अग्नि-लोक। **–कोण**–पु. अग्निकोण।

हौताशनि–संज्ञा, पु. (सं.) स्कंद; नील नाम का बंदर।

हौतृक–वि. (सं.) होता से संबद्ध। पु. होता का काम; होता का सहायक।

हौत्र–संज्ञा, पु. (सं.) होता का कर्म। वि. दे. 'हौतृक'।

हौत्रिक–वि. (सं.) होता के कार्य से संबंध रखने वाला।

हौद–संज्ञा, पु. हौज, कुंड; नाँद।

हौदा–संज्ञा, पु. दे. 'हौज़ा'; दे. 'होज़'।

हौन*–संज्ञा, पु. अपनापन। होनि–संभावित योग्यता, अं. पोटेशियय

हौमीय–वि. (सं.) दे. 'होमीय'।

हौम्य–संज्ञा, स्त्री. (सं.) घी। **–धान्य**–पु. दे. 'होमधान्य'।

हौरे-हौरे*–अ. धीरे-धीरे, हौले-हौले, आहिस्ते से।

हौल–संज्ञा, पु. (अ.) भीति, भय, डर, दहशत; आसपास शक्ति। **–शौल,–जौल**–स्त्री. जल्दी, शीघ्रता; उतावली; शीघ्रताजनित उद्विग्नता, घबराहट। **–ज़दा**–वि. भयभीत, त्रस्त। **–दिल**–स्त्री. दिल की धड़कन, हृत्कंप; दिल धड़कने की एक बीमारी। वि. भीत, डरा हुआ; व्यग्र, व्याकुल; जिसे दिल की धकड़न (की बीमारी) होती हो। **–दिला**–वि. डरपोक। **–दिली**–स्त्री. यशव नामक पत्थर का छोटा टुकड़ा जो डोरे में पिरोकर यह मानकर गले में पहनते हैं कि इससे कलेजे की धड़कन आदि दूर होगी। **–नाक**–वि. भयंकर, ख़ौफ़नाक। **मु. –पैठन,–बैठना**–मन में डर पैदा होना, दहशत समाना।

हौलाजौली–संज्ञा, स्त्री. जल्दी; हड़बड़ी।

हौलिगी–वि. (अ., फा.) त्रस्त, भयभीत, उद्विग्न, व्याकुल।

हौली–संज्ञा, स्त्री. शराब बिकने की जगह, कलवरिया, मदिरालय।

हौले-हौले–अ. धीरे-धीरे, आहिस्ते से।

हौवा–संज्ञा, स्त्री. (अ.) आदमकी पत्नी, इसलाम, ईसाई-यहूदी धर्मों के अनुसार मानव जाति की माता (ईव)। पु. दे. 'हौआ'।

हौश–संज्ञा, पु. स्थान।

हौस–संज्ञा, स्त्री. हवस, हौसला; मन की तरंग, उमंग उत्कंठा प्रबल इच्छा।

हौसला–संज्ञा, पु. (अ.) सामर्थ्य; साहस, हिम्मत, उत्साह; लालसा। **–मंद**–वि. हौसले वाला, उत्साही। **–शिकन**–वि. उत्साह तोड़ने वाला। **मु. –निकालना**–अरमान पूरा करना, हवस निकालना। **–पस्त होना**–जोश ठंडा पड़ना, हिम्मत टूट जाना।

ह्नुत–वि. (सं.) छिपाया हुआ; अलग किया हुआ।

ह्नुति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) दुराव, छिपाव; इनकार।

ह्यः (ह्यस्)–अ. (सं.) बीता हुआ कल, गत दिन– **कृत**–वि. कल किया हुआ, कल घटित।

ह्यस्तन–वि. (सं.) गत दिवस-संबंधी। **–दिन**–पु. गत दिवस।

ह्यस्त्य–वि. (सं.) दे. 'ह्यस्तन'।

ह्याँ*–अ. यहाँ।

ह्यो*–पु. हिया, हृदय।

ह्योभव–वि. (सं.) जो कल हुआ हो।

ह्रणिया, ह्रणीया–स्त्री. (सं.) दे. 'हृणिया'।

ह्रद–संज्ञा, पु. (सं.) गहरा जलाशय; गहरी झील; प्रकार की किरण; ध्वनि; मेष। **–ग्रह**–पु. कुंभीर, घड़ियाल।

ह्रदिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) नदी; विद्युत्।

ह्रसित–वि. (सं.) संक्षिप्त किया हुआ, छोटा किया हुआ, घटाया हुआ; ध्वनित।

ह्रसिमा (मन्)–संज्ञा, स्त्री. (सं.) छोटापन, लघुता; अल्पता।

ह्रस्व–वि. (सं.) छोटा, लघु (दीर्घ का उलटा); नाटा; ठिगना; तुच्छ; नीचा, अनुच्च (जैसे द्वार)। पु. बौना; एकमात्रिक, लघु स्वर; यम; पुष्पकासीस। **–कर्ण**–पु. एक राक्षस। **–कुश**–पु. कुश का एक भेद, श्वेत कुश। **–गर्भ**–पु. कुश। **–गवेधका**–स्त्री. गांगेरुकी, नागवल्ली। **–जंबू**–पु. क्षुद्रजंबू। **–जातरोग**–पु. एक रोग जिसमें चीज़ें छोटी दिखाई देती हैं। **–जात्य**–वि. छोटी किस्म का। **–तंदुल**–पु. एक तरह का धान, राजान्न। **–दुर्भ**–पु. दे. 'ह्रस्वकुश'। **–दा**–स्त्री. गंधद्रव्य देने वाला वृक्ष, शक्ल की। **–निर्वांशक**–पु. छोटी तलवार। **–पत्रक**–पु. पहाड़ी महुवा। **–पत्रिका**–स्त्री. छोटा पीपल, अश्वत्थी। **–पर्ण**–पु. पाकर। **–प्लक्ष**–पु. पाकर का छोटा वृक्ष। **–प्रवासी**–पु. थोड़े समय के लिए परदेश जाने वाला व्यक्ति (कौ.)। **–फल**–पु. खजूर। **–फूला**–स्त्री. भूमि जंबू। **–बाहु**–वि. छोटी बाहों वाला। पु. राजा नल का नाम। **–बाहुक**–वि. दे. 'ह्रस्वबाहु'। **–मूर्ति**–वि. ठिगना, छोटे कद का। **–मूल**–पु. लाल गन्ना, रक्तेक्षु। **–शाखाशिफ**–पु. क्षुप, झाड़ी। **–सभा**–स्त्री. तंग दालान।

ह्रस्वक–वि. (सं.) बहुत छोटा।

ह्रस्वांग–वि. (सं.) वामन, बौना, ठिगना। पु. जीवक नामक पौधा; बौना आदमी।

ह्रस्वाग्नि–संज्ञा, पु. (सं.) अर्क, मदार का पेड़।

ह्राद–संज्ञा, पु. (सं.) शब्द, ध्वनि; मेघगर्जन; एक नागासुर; हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

ह्रादिनी–संज्ञा, स्त्री. (सं.) बिजली; इंद्र का वज्र; नदी; शल्लकी।

ह्रादी (दिन्)–वि. (सं.) शब्दमय, शब्द करने वाला, गरजने वाला।

ह्रास–संज्ञा, पु. (सं.) क्षय, क्षीणता, अवनति; अभाव, कमी; शब्द ध्वनि; छोटी संख्या।

ह्रासक–वि. (सं.) क्षय करने वाला; कम करने वाला।

ह्रासन–पु. (सं.) क्षीण करने की क्रिया; कम करने का काम घटाना।

ह्रासनीय–वि. (सं.) कम करने, पटते योग्य।

ह्रिणिया, ह्रिणीया–स्त्री. (सं.) दे. 'हृणिया'।

ह्रित–वि. (सं.) हरण किया हुआ, लाया हुआ, नीत; लज्जित; विभक्त। पु. अंश।

ह्रिति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) हृति, हरण।

ह्री–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लज्जा, व्रीडा, संकोच; जैनो की एक देवी; दक्ष की पुत्री जो धर्म को ब्याही थी। **–जित्**–वि. लज्जा के वशीभूत, लज्जाशील, संकोची। **–देव**–पु. एक बौद्ध देवता। **–धीर (रिन्)**–वि. लज्जा अनुभव करने वाला, शरमीला **–निरास**–पु. लज्जा का परित्याग, निर्लज्जता। **–निषेद**–वि. विनयी, नम्र। **–पद**–पु. लज्जा का कारण। **–बल**–वि. अति नम्र; संकोची। **–भय**–पु. लज्जा का डर। **–मूढ**–वि. लज्जा से घबड़ाया हुआ।

ह्रीक–संज्ञा, पु. (सं.) नेवला।

ह्रीका–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लज्जा; संकोच; भय।

ह्रीकु–वि. (सं.) लज्जित; सलज्ज। पु. बिल्ली; लाख; राँगा, टीन।

ह्रीण, ह्रीत–वि. (सं.) लज्जित। **–मुख**–वि. लज्जित मुखवाला।

ह्रीति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) लज्जा, संकोच।

ह्रीबेर, ह्रीवल, ह्रीवेलक–संज्ञा, पु. (सं.) एक गंधद्रव्य, बालक।

ह्रेपण–संज्ञा, पु. (सं.) लज्जित करने की क्रिया।

ह्रेपित–वि. (सं.) लज्जित किया हुआ।

ह्रेवा–संज्ञा, स्त्री. (सं.) (घोड़े की) हिनहिनाहट।

ह्रेषित–वि. (सं.) हिनहिनाया हुआ। पु. हिनहिनाहट।

ह्रेषी (षिन्)–वि. (सं.) हिनहिनाने वाला।

ह्रेषुक–पु. (सं.) एक तरह की कुदाल।

ह्लति–संज्ञा, स्त्री. (सं.) आनंद, प्रसन्नता।

ह्लन्न–वि. (सं.) प्रसन्न, संतुष्ट।

ह्लाद–पु. संज्ञा (सं.) ताजगी; प्रसन्नता, आनंद; हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

ह्लादक–वि. (सं.) प्रसन्न करने वाला।

ह्लादन–संज्ञा, पु. (सं.) आनंदित करने की क्रिया। वि. प्रसन्न करने वाला।

ह्लादित–वि. (सं.) आनंदित।

ह्लादिनी–वि. स्त्री. (सं.) आनंद देनेवाली। स्त्री. दे. 'ह्रादिनी'; एक शक्ति; बिजली।

ह्लादी (दिन्)–वि. (सं.) आनंदयुक्त; प्रसन्न करने वाला; बहुत

शब्दवाला।

ह्लीका–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लज्जा।

ह्लीकु–वि॰ पु॰ (सं॰) दे॰ 'ह्लीकु'।

ह्लेषा–संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'हेषा'।

ह्वलन–पु॰ (सं॰) लुढ़कना, लड़खड़ाना।

ह्वाँ†–अ॰ वहाँ।

ह्वान–संज्ञा पु॰ (सं॰) शोरगुल; प्रकार; निकट बुलाना; आह्वान।

ह्वायक–वि॰ (सं॰) पुकारनेवाला।

ह्वायी (यिन्)–वि॰ (सं॰) आह्वान करने वाला; ललकारने वाला।

ह्विस्की–संज्ञा स्त्री॰ (अं॰) एक प्रकार की अँगरेज़ी शराब जो जौ आदि से बनाई जाती है।

ह्वेल–संज्ञा पु॰ (अं॰) एक बहुत ही बड़ा समुद्री जंतु जिसका शिकार तेल, चरबी, हड्डी आदि के लिए किया जाता है।





Books N' Books

131, Mukerji Nagar, Delhi-110009